इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपीं उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥
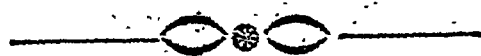
जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अने
के ललित छन्दों में अठारहपर्व्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण कि
पुस्तक सर्वपुराण और वेदका सारहै बरन बहुधालोग इस विचित्र मनोह
कको पंचमवेद बताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोई कथा व इतिहास औ
कथित धर्माचार की कोई बात इससे छूट नहीं गई मानो यह पुस्तक वेद
का पूर्णरूपहै अनुमान ६० वर्षके बीते कि कलकत्ते में यह पुस्तक छपीथ
समय यह पोथी ऐसी अलभ्य होगई थी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० दे
राज़ी थे पर नहीं मिलतीथी पहले सन् १८७३ ई० में इस छापेख़ाने में छ
और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिबी १२) थे जैसा कारख़ानेका दस्तूरहै
अब दूसरीवार डबलपैका बड़े हरफ़ों में छापी गई जिस को अवलोकन
रनेवालों ने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरी के वास्ते इससे भी क़ीम
किफ़ायत होसक्ती है ॥

इस महाभारतके भाग नीचे लिखे अनुसार अलग २ भी मिलते हैं ॥

पहले भाग में (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) वनपर्व्व ॥

दूसरे भाग में (४) विराटपर्व्व (५) उद्योगपर्व्व (६) भीष्मपर्व्व (७
द्रोणपर्व्व ॥

तीसरे भागमें (८) कर्णपर्व्व (९) शल्यपर्व्व (१०) सौप्तिकपर्व्व (१
ऐषिक व विशोकपर्व्व (१२) स्त्रीपर्व्व (१३) शान्तिपर्व्व राजधर्म्म अ
द्धर्म्म, मोक्षधर्म्म ॥

चौथेभाग में (१४) शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेधपर्व्व (
मवासिकपर्व्व (१६) मौसलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व

अथ शल्य व गदापर्व्व महाभारतभाषाका सूचीपत्र प्रारम्भः ॥

इति शल्यपर्वका सूचीपत्र समाप्तहुआ ॥

अथ गदापर्व्वका सूचीपत्र ॥

इतिमहाभारत शल्य व गदापर्व्व भाषा का सूचीपत्र समाप्तम् ॥

महाभारत भाषा शल्यपर्व्वणि ॥

मङ्गलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराण्मस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामकेशवम् १ याभातिवीणामिववादयन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बाप्रयमभानःप्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतंयेन तंवन्देबादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं वन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंमंजुलशल्यपर्वणानुवादंविदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ शल्यपर्व्वणिभाषा बार्त्तिक प्रारम्भ ॥

श्री नारायणजी को नरोत्तमनरको और सरस्वती देवी को नमस्कार करके जयनाम इतिहासको वर्णन करते हैं १ जनमेजय बोला कि हे ब्राह्मण इसप्रकार अर्जुनके हाथसे युद्धमें कर्णके गिरानेपर थोड़ेसे बचेहुये कौरवों ने क्याकिया १ कौरव दुर्य्योधनने अपनी सेनाको साहससेरहित देखकर समयके अनुसार पाण्डवों के साथ कौनसा कर्म्मकिया २ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ मैं यह सुनना चहताहूं आप इसको वर्णन कीजिये क्योंकि मैं अपने प्राचीन वृद्धों के चरित्रोंके सुनने तृप्त नहींहोताहूं ३ बैशम्पायन बोले हे राजा फिर कर्णके मरनेपर धृतराष्ट्रका पुत्र दुर्य्योधन बड़े शोकसमुद्रमें डूबकर सब प्रकारसे दुःखीहुआ ४ हायकर्ण हाय कर्ण इसप्रकार बारम्बार शोचता मरनेसे बचेहुये शेषराजाओं समेत बड़े दुःखसे अपने डेरेको आया ५ सूतपुत्र कर्णके मरनेको स्मरणकरते और शास्त्र निश्चित हेतुओंसे राजाओं के समझानेपर भी दुर्य्योधनने सुखको नहींपाया ६ वह राजा दैवइच्छा को बलवान् मानकर युद्धके निमित्त निश्चय करके फिर युद्ध करने के लिये निकसा ७ हे राजा वह राजाओं में श्रेष्ठ दुर्य्योधन बिधिपूर्व्वक शल्य को

सेनापति करके मरनेसे बचेहुये शेषराजाओं समेत युद्धके लिये चला ८ हे भर-तर्षभ इसके अनन्तर कौरवीय और पाण्डवीय सेनाकायुद्ध देवासुर युद्धके स-मान महाकठिनहुआ ९ हे महाराज तब राजा शल्य युद्धमें सेनाका नाशकरके अपनी सेनाके मरजानेके पीछे मध्याह्न के समय धर्म्मराजके हाथसे मारागया १० इसके पीछे राजा दुर्य्योधन उन लोगोंको जिनके कि बान्धव मारेगये युद्ध भूमिसे हटाकर शत्रुओंके भयसे बड़े गम्भीर तड़ागमें प्रवेश करगया ११ इसके पीछे उसदिनके तीसरे प्रहरमें महारथियोंसे घेरकर हृदसे बुलाकर बड़े वेग पूर्वक भीमसेनके हाथसे गिरायागया १२ हे राजेन्द्र उस बड़े धनुषधारीके मरनेपर शेष बचे हुये महारथियोंने रात्रिके समय पाञ्चालदेशी सेनाके लोगोंको मारा १३ उसके पीछे दुःख और शोचसे संयुक्त संजय प्रातःकाल के समय अपने डेरे से चलकर महादुःखित चित्तहोकर पुरमें आया १४ वह सूत संजयपुरमें प्रवेशकरके महाक्लेशितमन अपनी भुजाओंको ऊपर करके कांपताहुआ फिर राजमन्दिर में आया १५ हे नरोत्तम वह अत्यन्त दुःखी हायराजा हायराजा यह कहताहुआ रोदन करनेलगा बड़े कष्टकी बातहै कि हम महात्माके मरनेसे नाश होगये १६ आश्चर्य है कि काल बड़ा बली है उसीप्रकार उसकी गतिभी टेढ़ी है जिस स्थान पर कि इन्द्रके समान महापराक्रमी सब शूरवीर पाण्डवों के हाथसे मारेगये १७ हे राजाओंमें श्रेष्ठ जनमेजय वह सब मनुष्योंके समूह नगरमें संजयको देखतेही सब सबओरको बड़ेदुःखोंसे संयुक्तहुये १८ हे नरोत्तमकुमार बालकोंतक अत्यन्त व्याकुल वह सब नगर चारोंओर से हायराजा हायराजा इसप्रकार ऊंचे स्वरोंसे पुकारता रोदन करनेलगा इसकेपीछे राजाको मराहुआ सुनकर सबने महापीड़ाके शब्दकिये उससमय वहां हमने उन स्त्री पुरुषोंको भी दौड़ताहुआ देखा जोकि नाशमान चित्त उन्मत्त और शोक से महापीड़ामान थे इसप्रकार महा व्याकुल मन उस सूतने राजमन्दिर में प्रवेश करके राजाओं में श्रेष्ठ ज्ञानरूप नेत्र रखनेवाले निष्पाप चारोंओर को पुत्र बन्धुओं समेत गान्धारी बिदुर और अन्य इष्टमित्र और जातवालों से घिरेहुये कर्णके मरनेके बिषयमें उसी प्रयोजन को ध्यानकरते बैठेहुये महाराज धृतराष्ट्र को देखा हे जनमेजय वह दुःखीचित्त सूत अश्रुपातोंसे युक्त गद्गद बाणी से रोताहुआ राजा धृतराष्ट्र से यह बचन बोला कि हे नरोत्तम मैं संजयहूं हे भरतर्षभ तुमको नमस्कार है १९ । २० । २१

२२।२३।२४।२५ मद्रदेशका राजाशल्य मारागया उसीप्रकार सौबलका पुत्र शकुनी मारागया हे पुरुषोत्तम दृढ़ पराक्रमी कैतव्य, उलूक और शकुनी समेत सब काम्बोजदेशी और संसप्तक मारेगये और म्लेच्छ पहाड़ी और यवन मारे गये २६।२७ हे महाराज राजा धृतराष्ट्र सब पूर्वीय दक्षिणीय उत्तरीय और पश्चिमीय राजालोग मारेगये २८ इनके सिवाय सब राजा और राजकुमार मारे गये और राजा दुर्योधन भी उसीप्रकारसे मारागया जैसे कि पांडव भीमसेन ने सभामें प्रतिज्ञा करीथी २९ हे महाराज वह टूटी जंघासे धूलमें पड़ा सोताहै धृष्टद्युम्न और अपराजित शिखण्डीभी मारागया ३० इसीप्रकार नरोत्तम उत्तमौजा, युधामन्यु, प्रभद्रक नाम क्षत्री पांचालदेशी और चंदेरीदेशी मारेगये ३१ हे भरतवंशी आपके सबपुत्र और द्रौपदी के सब बेटे मारेगये और कर्णका पुत्र बड़ा शूरवीर वृषसेन मारागया ३२ सब मनुष्य मारेगये हाथी नाशहुये रथसवार और घोड़े युद्धमें गिरपड़े ३३ हे समर्थ परस्पर सम्मुख होकर आपके बेटे पांडवों के और कौरवोंके कुछ डेरे बाक़ीरहे ३४ यह संसार बहुधा कालसे मोहित स्त्रियोंका शेष रखनेवाला हुआ पांडवोंकी ओर से सात और आपकी ओर के तीन शेष रहगये हैं ३५ अर्थात् वह पांचों भाई वासुदेवजी और सात्यकी और आपकी ओर विजयी लोगोंमें श्रेष्ठ कृपाचार्य्य, कृतवर्मा और अश्वत्थामा शेषरहे हैं ३६ हे राजाओंमें श्रेष्ठ महाराजा धृतराष्ट्र इकट्ठी होनेवाली आपकी सब अक्षौहिणियोंमें आपके यह तीनरथी जीवते रहेहैं ३७ हे भरतर्षभ महाराजा धृतराष्ट्र यही केवल बचेहैं और सब नाशहोगये हे भरतवंशी निश्चयकरके शत्रुता पूर्वक दुर्योधनको आगे करके सब जगत् कालसे मारागया ३८ वैशम्पायन बोले हे महाराज वह राजा धृतराष्ट्र इस कठिन और महादुःखदायी बचनको सुनकर अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ३९ उस धृतराष्ट्रके पृथ्वीपर गिरनेपर शोक और दुःखसे पीड़ामान बड़े यशमान विदुरजी भी गिरपड़े ४० हे राजेन्द्र गान्धारी आदि सब कौरवों की स्त्रियां भी उन कठोर बचनोंको सुनकर अकस्मात् पृथ्वीपर गिरपड़ीं ४१ तब राजमण्डल निरर्थक वचनों से युक्त अचेत होकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बड़े बस्त्रपर खैंचाहुआ चित्र होताहै ४२ उसके पीछे पुत्रके दुःखसे राजा धृतराष्ट्रने बड़े दुःख पूर्वक धीरे धीरे प्राणोंको प्राप्तकिया ४३ फिर वह राजा सचेतताको पाकर कम्पताहुआ महादुःखी सब दिशाओं को देखकर विदुरजी से यह

वचन बोला ४४ हे बुद्धिमान् बड़ेज्ञानी भरतर्षभ बिदुरजी मुझ सबपुत्रोंसे विहीन और अनाथ के तुम्हीं गतिहो ४५ इसप्रकार कहकर फिर अचेत होकर गिरपड़ा इस रीतिसे पड़ेहुये उस धृतराष्ट्रको देखकर ४६ जो कोई उसके बान्धवथे उन्होंने उसको शीतल जलोंसे सींचा और ब्यजनों से हवाभी की फिर वह राजा बहुत देरके पीछे चैतन्यहुआ ४७ हे राजा मटकेमें डालेहुये सर्पकी समान श्वासलेते और पुत्रके शोकसे पीड़ामान और मौन उस राजाने ध्यानकिया ४८ फिर वह राजाको दुःखी देखकर संजयभी रोया उसीप्रकार यशवन्ती गान्धारी और सब अन्य स्त्रियां भी रोदन करनेलगीं ४९ इसके पीछे बारम्बार मोहित राजा धृतराष्ट्र बहुत देरके पीछे बिदुरजी से वह वचन बोला ५० कि सब स्त्रियां और यशवान् गान्धारी और मेरे सब सुहृद् जनलोग यहां से चलेजायँ मेराचित्त अत्यन्त मूर्च्छित होताहै ५१ हे भरतर्षभ इसके पीछे उसके उस वचनको सुनकर बिदुरजीने उन बारम्बार कम्पायमान स्त्रियोंको बड़े धीरजसे बिदाकिया ५२ तब सब स्त्रियां उस स्थानसे निकल गईं और सब सुहृद् लोगभी राजाको देखकर चलेगये ५३ इसके पीछे संजयने उस राजाको सचेतता युक्त महादुःखी और रोदन करनेवाला देखा ५४ उस बारम्बार श्वास लेनेवाले महाराजको बिदुरजीने हाथजोड़कर मधुरवाणी से बिश्वास कराया ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिधृतराष्ट्रप्रमोहोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले हे महाराज तब स्त्रियों के बिदाकरदेने पर अम्बिकाके पुत्र धृतराष्ट्रने बिलाप किया और महादुःखको पाया १ हे महाराज बारम्बार अपने हाथोंको कँपाते उस धृतराष्ट्रने उष्ण श्वासाओंको लेकर और बहुत चिन्तायुक्त होके यह वचन कहा २ हे सूत यह महादुःख और दुःखका स्थानहै जो मैं तुम्हारे पांडवोंको कुशल पूर्वक अबिनाशी सुनताहूं ३ निश्चय करके मेराहृदय बज्रके समान कठोरहै जो पुत्रोंको मराहुआ सुनकर हजारों टुकड़े नहींहोताहै ४ हे संजय उन्हों की बालक्रीड़ा और अवस्थाको शोचकर और अब बेटों को मृतक सुनकर मेराचित्त अत्यन्त फटताहै ५ जो अन्धेपने से मुझको उनके रूपका दर्शन नहीं होताथा परन्तु पुत्रतासे उत्पन्नहुई प्रीति सदैव उनपर नियतथी ६ हे

निष्पाप मैं उनको बाल्यावस्था के व्यतीत करनेवाले और तरुण सुनकर अत्यन्त प्रसन्नहोताथा ७ अब उन पुत्रोंके दुःखसमुद्रमें डूबाहुआ मैं उन बड़े तेजस्वियोंको ऐश्वर्य्य से रहित और मराहुआ सुनकर कहीं शान्ती को नहीं पाता हूं ८ हे राजेन्द्र पुत्र अब मुझ अनाथके सम्मुख आवो आवो हे महाबाहु मैं तुझ से रहितहोकर किसगतिको पाऊंगा ६ हे तात तुम किसप्रकार मिलेहुये राजाओं को छोड़कर प्राकृत नीच मन्त्री रखनेवाले राजाके समान मृतकहोकर पृथ्वीपर सोतेहो १० हे महाराज बीर तुम जातवाले और सुहृदजनों के गति होकर मुझ अन्धे और वृद्धको त्यागकर कहां जाओगे ११ हे राजा तेरी वह कृपाप्रीति और शिष्टाचारथा युद्धों में अजेय होकर तुम पाण्डवों के हाथ से कैसे मारेगये १२ समयपर उठनेवाला होकर मुझको बारंबार कौनकहैगा कि हे तात हे महाराज और हे लोकनाथ १३ प्रीति से आर्द्रनेत्र होकर तुम कण्ठ से मिलकर मुझ को शिक्षाकरो हे कौरव उस शुभवचनको मुझसे कहो १४ हे पुत्र निश्चयकरके मैंने तेरे इस वचनको सुना कि यह बहुत पृथ्वी जैसे मेरी है वैसे कुन्तीके पुत्रकी नहीं है १५ भगदत्त, कृपाचार्य्य, शल्य, अवन्तिदेशकाराजा, जयद्रथ, शल, सोमदत्त बाह्लीक १६ अश्वत्थामा, कृतवर्म्मा, महाबली मगधकाराजा, बृहद्बल, काशी का राजा, सौबलका पुत्र राजाशकुनी १७ बहुत से हजारों म्लेच्छ देवताओं समेत शक, सुदक्षिण, काम्बोज, राजा त्रिगर्त्त १८ भीष्मपितामह, भारद्वाज, द्रोणाचार्य्य, गौतम कृपाचार्य्य, पराक्रमी श्रुतायु, अच्युतायु, शतायु १६ जलसन्ध, आर्ष्यशृंगी, अलायुध राक्षस महाबाहु अलंबुष, महारथी सुबाहु २० हे राजर्षि यह सब राजा और अन्य बहुतसे राजा सब बड़े युद्धमें प्राणों को त्याग करके मेरे निमित्त तैयार हैं २१ उन्हों के मध्य में नियत और भाइयों से संयुक्त मैं युद्ध में सब पाण्डव और पाञ्चालों से युद्ध करूंगा २२ हे राजाओं में श्रेष्ठ मैं युद्धमें चन्देरी देशी राजा द्रौपदी के पुत्र सात्यकी कुन्तभोज और घटोत्कच राक्षसके साथ युद्ध करूंगा हे महाराज मैं क्रोधयुक्त अकेलाभी युद्ध में सम्मुख दौड़नेवाले इनपांडवोंके हटाने में समर्थहूं २३ । २४ फिर पाण्डवोंके साथ शत्रुता करनेवाले सब बीरलोग साथ होकर क्यों न समर्थ होंगे हे राजेन्द्र अथवा यह सबलोग पांडवोंके आगे पीछेवाले सब शूरबीरोंसे लड़ेंगे २५ और उनको युद्ध में मारेंगे अकेला कर्णही मेरे साथ होकर पांडवोंको मारेगा २६ इसकेपीछे राजा

लोग मेरी आज्ञामें नियतहोंगे और जो उन्होंका स्वामी और रक्षक वासुदेव है २७ हे राजा वह शस्त्रोंको नहीं धारण करेगा उसने मुझसे यह प्रतिज्ञा करली है हे सूत मैंने बहुधा अपने सम्मुख कहेहुये उसके बचनको सुना २८ कि युद्धमें शक्तिसे पांडवों को मृतक देखताहूं उन्होंके मध्यमें युद्धके उपाय करनेवाले मेरे पुत्र उस वायुके पुत्र भीमसेनके हाथसे बहुधा युद्धमें अधिकतर मरते हैं २९ इस में प्रारब्धके सिवाय दूसरी बात क्याहै जिस स्थानपर लोकनाथ प्रतापवान् भीष्मजी ३० शिखण्डीको सम्मुख पाकर ऐसे मारेगये जैसे कि शृगालोंको पाकर महामृगेन्द्र सिंह माराजाता है जिस स्थानपर सब अस्त्र शस्त्रों में कुशल द्रोणाचार्य्य ब्राह्मण पाण्डवों के हाथसे मारेगये तो प्रारब्ध से दूसरी कौन बात है इस युद्धमें भूरिश्रवा सोमदत्त ३१।३२ और महाराज बाह्लीक मारेगये और हाथियों के युद्धमें कुशल भगदत्त मारागया इसमें प्रारब्धके सिवाय कौनसी बातहै ३३ और जयद्रथ मारागया अथवा सुदक्षिण पौरव जलसन्ध मारागया वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्या है ३४ श्रुतायु अच्युतायु मारेगये और उसीप्रकार सब शस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ महाबली पाण्ड्य युद्धमें पाण्डवोंके हाथसे मारागया वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्याहै जिस स्थानपर महाबली बृहद्बल मागध ३५।३६ और धनुषधारियों का ध्वजा रूप पराक्रमी उग्रायुध दोनों अवन्तिदेश के राजा और राजात्रिगर्त्त मारेगये ३७ और बहुत से संसप्तक मारेगये वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्याहै उसीप्रकार राजा अलंबुष और अलायुध राक्षस ३८ और अष्यशृङ्ग राक्षस मारागया वहां प्रारब्धसे दूसरी बात क्याहै जिसस्थानमें युद्ध दुर्मद गोपाल और नारायण नाम शूरवीर मारेगये ३९ और हजारों म्लेच्छ मारेगये वहां प्रारब्धसे दूसरी बात क्याहै जिस स्थानपर सौबलका पुत्र महाबली बीर शकुनी कैतव्य ४० सेना समेत मारागया वहां प्रारब्धसे दूसरी बात क्याहै हे सूत संजय जिस स्थानपर शूरमहात्मा और सब अस्त्रशस्त्रों में कुशल ४१ महाइन्द्रके समान पराक्रमी नानाप्रकार के देशोंके स्वामी बहुत से क्षत्री ४२ युद्धमें मारेगये वहां प्रारब्धसे दूसरी बात क्याहै मेरे महाबली पुत्र और पौत्र ४३ समान अवस्थाके भाई मारेगये वहां दूसरीबात क्याहै निश्चय करके मनुष्य प्रारब्ध को साथ लेकर उत्पन्न होताहै जो प्रारब्धवान्है वह सुखको पाताहै ४४ हे सञ्जय अपने प्रारब्ध और पुत्रों से रहित शत्रुओं की आधीनता में वर्त्तमान वृद्ध मैं अब कैसे रहूंगा

हे समर्थ यहां वनवास के सिवाय दूसरी बात श्रेष्ठ नहीं मानताहूं ४५ सौ पुत्रोंमें और अपने जातके लोगोंसेरहित मैं जातवालों के नाशहोने पर बनको जाऊंगा बनमें जानेके सिवाय कोई दूसरीबात मेरेकल्याणकी नहीं है ४६ हे सञ्जय जोकि मैं परकैंच पक्षीके समान इस दशा का पानेवालाहूं जिस युद्धमें दुर्योधन, शल्य ४७ महाबली दुश्शासन, शल और महाबली बिकर्ण मारागया तब मैं भीमसेन के कठोर शब्दों को कैसे सुनूंगा ४८ जिस अकेले ने युद्धमें मेरे सब पुत्रों को मारा दुर्योधनके मरनेसे दुःखी और शोचसे अत्यंत संतप्तहोकर मैं उस बारम्बार वार्त्तालाप करनेवाले भीमसेनके कठोर बचनोंको नहीं सुनूंगा ४६।५० बैशम्पायन बोले कि जिसके बान्धव मारेगये वह राजा इसप्रकार शोक से तपा हुआ बारम्बार अचेत पुत्रोंके शोकमें डूबेहुये ५१ अम्बिकाके पुत्र भरतर्षभ बड़ेशोकसे पूर्णदुःखी धृतराष्ट्रने बड़ी देरतक विलापकर लम्बी श्वासा लेकर अपनी पराजय को शोचकरके फिर गोकनके पुत्र सूत संजयसे मुख्यवृत्तांत पूछा ५२।५३ धृतराष्ट्र बोले कि मेरे पुत्रोंने भीष्म द्रोणाचार्यको मृतक और सेनाके स्वामी कर्णको गिराया हुआ सुनकर किसको सेनापतिकिया ५४ मेरेपुत्रोंने जिस २ को स्वामी और सेनापति बनाया पाण्डवों ने थोड़ेही समयमें उस २ को मारा ५५ युद्ध के मस्तक पर वर्त्तमान भीष्मजी तुम्हारे देखतेहुये मारेगये इसी प्रकार द्रोणाचार्य्य भी सबके देखते मारेगये ५६ ऐसेही राजाओंसमेत तुम सबके देखते सूतका पुत्र प्रतापवान् कर्ण अर्जुन के हाथसे मारागया ५७ मुझको प्रथमही महात्मा बिदुर जीने समझाया था कि यह सबसृष्टि दुर्य्योधनके अपराधसे नाशको पावेगी ५८ पर कोई अज्ञानी बहुत बिचारकर अच्छीरीति पर ध्यान नहीं करते हैं यह कच्चा बिचार मुझ अज्ञानीकाही है वह बचन वैसाहीहुआ ५९ सब धर्म्मों के जानने वाले उन बिदुरजी ने जो जो कहाथा वह सत्य २ कहाहुआ बचन उसीप्रकारसे प्रत्यक्षहुआ ६० पूर्व्वसमय में दैवसे हतचित्त मैंने जो उनके बचनोंको नहीं किया उसी अन्याय का यह फल वर्त्तमानहुआ हे संजय अब फिर कहो कि ६१ कर्ण के गिरानेपर सेनाओंका मुख्य अर्थात् सेनापति कौनहुआ और कौन सारथी अर्ज्जुन और वासुदेवजी के सम्मुखगया ६२ युद्धमें युद्धाभिकांक्षी शल्यके दाहिनेचक्र को किसने रक्षितकिया और किसने उस बीरके बामचक्रकी रक्षाकरी और किसने पीछे से रक्षाकरी ६३ हे संजय तुमलोगों के एकत्र स्थित होनेपर

महावली शल्य और मेरा पुत्र युद्धमें कैसे पांडवों के हाथसे मारागया ६४ भरतवंशियों के उस सब वड़े नाशको मुख्यता से कहो जिसप्रकार युद्ध में मेरापुत्र दुर्य्योधन मारागया ६५ और जैसे २ सब पांचाल धृष्टद्युम्न शिखंडी अपने पीछे चलनेवालों समेत और द्रौपदी के पांचोंपुत्र मारेगये ६६ और जैसे कि सब पाण्डव दोनों यादव कृपाचार्य्य कृतवर्म्मा और भरद्वाज का पौत्र अश्वत्थामा यह सब युद्ध से बचे ६७ इसके पीछे जिसप्रकार जो २ जैसा युद्धहुआ उस सबको सुना चाहताहूं हे संजय तुम वर्णन करनेमें वड़े कुशलहो ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिधृतराष्ट्रविलापोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे राजा सावधान होकर उसको सुनो जैसे कि परस्पर सम्मुख होकर कौरव और पाण्डवोंकी सेनाका नाशहुआहै महात्मा पाण्डव अर्जुनके हाथसे कर्णके मारने और बारम्बार बुलाईहुई सेनाके भागने और युद्ध भूमिमें मनुष्यों के शरीर और उत्तम हाथियों का घोर नाश होनेपर १ । २ कर्ण के मरनेपर फिर पाण्डवों ने सिंहनाद को किया हे राजा तब उस सिंहनाद से उत्पन्न होनेवाला भय आपके पुत्रों में प्रवेश करगया ३ कर्णके मरनेपर आपके किसी शूरवीरकी बुद्धि सेनाकी चढ़ाई और पराक्रम करनेमें नहींहुई ४ जैसे कि अथाह समुद्रमें नौकाके टूटनेपर बिना नौकाके कारण व्यापारी लोग भयभीत होते हैं उसीप्रकार अर्ज्जुन के हाथसे द्वीपरूप कर्ण के मरनेपर युद्धरूपी अपार समुद्रमें पार जानेके अभिलाषी हुये ५ हे राजा कर्ण के मरनेपर भयभीत और वाणों से घायल वह अनाथ नाथके चाहनेवाले सिंहसे पीड़ित मृगों के समान और टूटे शृङ्ग बैलोंकी सदृश टूटीडाढ़ सर्प्प के तुल्य और अर्ज्जुनसे पराजित होकर हमलोग सायंकालकेसमय अपने डेरेको चलेआये ६ । ७ हे राजा सूतपुत्र के मरनेपर तीक्ष्णधारवाले बाणों से टूटेअंग पराजित आपके वह पुत्र जिनके बहुतसे वीर मारेगये भयकरके भागे ८ शस्त्र और बलसे रहित भयसे भागेहुये अचेत और परस्पर प्रहार करनेवाले भयसे दिशाओंको देखनेवाले वहसब ९ यह मानतेहुये कि अर्जुन और भीमसेन मेरेहीसम्मुख आते हैं ऐसा जानकर गिरपड़े और मरणप्राय होगये १० कोई महारथी बेगवान् घोड़ोंपर और कितनेहीने हाथि-

थोंपर सवारहोकर भयसे पदातियोंको त्यागकिया ११ हाथियोंसे रथ टूटे अश्वसवार बड़ेरथों से मारेगये और कठिनभागनेवाले घोड़ोंके समूहों से पदातियोंके समूह मारेगये जैसे कि सर्प्प और चोरोंसे व्याप्त वनमें अपने साथियोंसे पृथक् मनुष्य होतेहैं उसीप्रकार सूतपुत्रके मरनेपर आपकेपुत्रभी उसी दशावालेहुये१२।१३ तब मृतक सवारवाले हाथी उसीप्रकार टूटीसूंड़ और भयसे पीड़ित अन्य२ हाथियोंनेभी सबलोक को अर्जुनरूप देखा १४ दुर्योधन उन सब भागनेवाले और भीमसेनके भयसे पीड़ावान् सेनाके मनुष्योंको देखकर हाय २ करके अपने सारथी से यह वचनबोला कि १५ अर्जुन मुझ्कधनुषहाथमें रखनेवाले और सेनाके जघन स्थानपर वर्त्तमान होनेवालेको उल्लंघन नहीं करेगा तू शीघ्र घोड़ोंको चलायमानकर १६ कुन्तीका बेटा अर्जुन युद्धभूमिमें मुझ लड़नेवालेके उल्लंघन करने को ऐसे उत्साह नहीं करेगा जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्य्यादाको नहीं उल्लंघन करता १७ अब गोविन्दसमेत अर्जुनको और भागेहुये भीमसेन को और शेषबचेहुये शत्रुओंको मारकर कर्णकी अऋणताको पाऊंगा १८ सारथीने कौरवराजके उन वचनोंको जोकि शूर और उत्तम पुरुषोंके समानथे सुनकर घोड़ों को बड़े धीरेपने से चलायमान किया १९ हेश्रेष्ठ हाथी घोड़े और रथसे विहीन पच्चीसहज्जार पदाती बड़े धीरेपने से चले २० अत्यन्तक्रोधयुक्त भीमसेन और धृष्टद्युम्नने चारअंग रखनेवाली सेनासमेत चारोंओरसे घेरकर बाणोंसेमारा २१ तब वहसब उस भीमसेन और धृष्टद्युम्नसे युद्ध करनेलगे वहां प्रतिपक्षियोंने भीमसेन और धृष्टद्युम्नके नामोंको लिया उससमय भीमसेन युद्धमें उन युद्धभूमि में नियतवीरसे युद्ध करनेलगा अर्थात् वहगदा हाथमें रखनेवाला भीमसेन शीघ्रही रथसे उतरकर युद्ध करनेवाला २२। २३ उस भुजबल में आश्रित धर्म्म से सम्बन्ध रखनेवाला रथसवार कुन्तीका पुत्र भीमसेन उनपृथ्वीपर नियतहुये शूरवीरों से नहीं लड़ा २४ और दण्डधारी यमराजके समान भीमसेन ने सुवर्ण से मढ़ीहुई बड़ी गदाको ले कर आपके सब शूरवीरों को मारा २५ अत्यन्त क्रोधयुक्त जीवन त्यागनेवाले वह सब पदाती बान्धव भीमसेनकी ओर ऐसेदौड़े जैसे कि पतंग अग्निकी ओर दौड़ते हैं २६ तब युद्ध में दुर्मद महाक्रोधयुक्त वह सब भीमसेनको पाकर अकस्मात् ऐसे नाशवान् होगये जैसे कि काल को देखकर सब जीवों के समूह नाशको प्राप्त होते हैं २७ भीमसेन खड्ग और गदाके साथ

बाज पक्षीके समान अच्छीरीतिसे भ्रमण करनेलगा और आपके पचीस हज़ार शूरवीरोंको मारडाला २८ सच्चापराक्रमी वह महाबली भीमसेन उसपदाती सेना को मारकर और धृष्टद्युम्नको आगे करके फिर नियतहुआ २९ पराक्रमी अर्जुन रथकी सेनाके सम्मुख हुआ और प्रसन्नचित्त मारने के अभिलाषी बड़े पराक्रमी नकुल और सहदेव महारथी सात्यकीसमेत शकुनी के सम्मुख गये वह उसके बहुत घोड़ोंको तीक्ष्ण बाणोंसे मारकर ३०। ३१ शीघ्रही उसके सम्मुख दौड़े वहां बड़ा युद्धहुआ हे राजा इसके पीछे अर्जुन ने रथकी सेनाको भँझाया ३२ और तीनों लोकोंमें विख्यात गांडीव धनुषको टंकारा श्रीकृष्णको सारथी और श्वेत घोड़े रखनेवाले आतेहुये रथको देखकर ३३ और शूरवीर अर्जुनको भी देखकर आपके शूरवीरोंने घेरलिया रथ और घोड़ोंसेरहित बाणोंसे रोकेहुये पचीसहज़ार पदातियों ने अर्जुनको घेरलिया पांचालों का महारथी बड़ा धनुषधारी शत्रुओं के समूह का मारनेवाला बड़ायशस्वी राजा पांचाल का बेटा श्रीमान् धृष्टद्युम्न उस पदाती सेनाको मार भीमसेन को आगेकरके थोड़ीही देर में सम्मुख वर्त्त-मान हुआ आपके शूरवीर कपोत वर्ण घोड़े और कोविदारका चिह्नरखनेवाली ध्वजा धारण करनेवाले धृष्टद्युम्न को देखकर भयसे भागे और यशवान् नकुल सहदेव और सात्यकी उस शीघ्र अस्त्र चलानेवाले गान्धार के राजापर चढ़ाई करके ३४। ३५ ३६। ३७। ३८ थोड़ीही देरमें सम्मुख दृष्टपड़े हे श्रेष्ठ चेकितान शिखण्डी और द्रौपदी के पुत्रोंने ३९ आपकी बड़ी सेनाको मारकर फिर शंखों को बजाया वह लोग आपके सब शूरवीरों को भागेहुये और मुख फेरनेवाला देखकर ४० मारतेहुये चारोंओरको ऐसे दौड़े जैसे कि बहुतसे बैल एक बैलको विजय करके दौड़तेहैं हे राजा बलवान् पांडव अर्जुन आपकेपुत्रकी उस शेष बची हुई सेना को देखकर ४१ क्रोधयुक्त हुआ उसके पीछे अकस्मात् उसको बाणों से आच्छादित करदिया ४२ फिर उठीहुई धूलसे कुछ दिखाई नहीं पड़ा हे महाराज लोकके अन्धकाररूप और पृथ्वीके बाणरूप ४३ होजानेपर आपके शूरवीर भयभीत होकर सब दिशाओं को भागे हे राजा सेनाओं के छिन्न भिन्न होने पर ४४ चारोंओर से अपने शत्रुओं के सम्मुख जाकर भरतर्षभ दुर्योध-न ने सब पाण्डवों को ४५ युद्ध के निमित्त ऐसे बुलाया जैसे कि पूर्व्वसमय में राजा बलि ने देवताओं को बुलायाथा नानाप्रकार के शस्त्र चलानेवाले क्रोध-

युक्त वारंवार घुड़कनेवाले वह लोग सब साथ होकर इस सम्मुख गर्जने वालेके सम्मुख गये भयसे उत्पन्न व्याकुलतासे पृथक् दुर्य्योधन ने भी उन शत्रुओं को बाणोंसे हटाया ४६। ४७ वहांपर हमने आपके पुत्रके अपूर्व पराक्रम और वीरता को देखा कि सब पाण्डव उसके सम्मुख नियतहोनेको समर्थ नहींहुये ४८ दुर्यो-धनने बहुतदूर न पहुँचनेवाली और भागनेमें बुद्धि करनेवाली अपनी सेनाको देखा ४६ हे राजेन्द्र इसके पीछे आपका बेटा बड़ी बुद्धिमानी से सबको प्रसन्न करताहुआ उन शूरवीरों को नियतकरके यह वचन बोला ५० कि मैं पृथ्वी और पर्व्वतों में किसी ऐसे स्थान को अथवा देश को नहीं देखता हूं जहां पर जाने वाले तुम लोगोंको पाण्डव नहींमारें तुमको भागनेसे क्या प्रयोजनहै ५१ उन्हों की सेनाभी थोड़ी है और श्रीकृष्ण वा अर्जुन अत्यन्त घायल हैं जो यहां हम सब नियत होजायँ तो इससमय अवश्य हमारी पूर्णविजय होजाय ५२ यहपाप करनेवाले पाण्डव तुम हटनेवाले और छिन्नभिन्न होनेवालों को पीछाकरके मा-रेंगे युद्धमें हमारा मरना शुभदायकहै क्षत्रियधर्म्म से लड़नेवालेका युद्धमें मरण होना सुखहै मराहुआ दुःखको नहीं जानताहै और मरकर अत्यन्त सुखको भो-गताहै ५३। ५४ सब क्षत्रियलोग सुनो जितने कि यहां इकट्ठे हैं तुम क्रोधयुक्त शत्रु भीमसेन के अधीनहोगे क्षत्रियका पापकर्म्म भागने से अधिक नहीं है हे कौरव्य धर्म्मयुद्ध से श्रेष्ठ स्वर्गमार्ग्ग नहीं है ५५। ५६ युद्धकर्त्ता थोड़ेही समय में प्राप्त होनेवाले लोकोंको शीघ्र भोगताहै महारथी क्षत्रिय उस राजादुर्योधनके वचन की प्रशंसा करके ५७ फिर भी पराजयको न सहनेवाले पराक्रममें प्रवृत्त-चित्तहोकर पाण्डवोंके सम्मुख वर्त्तमानहुये ५८ उसके पीछे फिरभी आपके युद्ध-कर्त्ता और दूसरे प्रतिपक्षी लोगों का बड़ा भयकारी देवासुरों के युद्ध के समान युद्ध जारीहुआ ५९ हे महाराज आपका बेटा दुर्य्योधन सब सेनासमेत उन पा-ण्डवों के सम्मुख दौड़ा जिनका कि अग्रवर्त्ती युधिष्ठिर था ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिकौरवसैन्यापयानंनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

हे भरतवंशी गिरेहुये रथों के नीड़ और महात्माओं के रथोंको और युद्ध में मरेहुये हाथी और पत्तियों को देखकर १ और रुद्रजी के विहार क्रीड़ास्थान के

समान बड़ी भयानक युद्धभूमिको वा अपकीर्त्ति पानेवाले सैकड़ों हज़ारों राजा- ओंको २ और अर्जुनके पराक्रम को देखकर आपके बेटे के मुख फेरने शोक से घायल चित्तहोने सेनाओंके अत्यन्त व्याकुल होने ३ सेनाके दुःखी ध्यान करने वाले होनेपर मथीहुई सेनाओं के कठिनशब्दको सुनकर ४ और युद्धमें राजा- ओंकी पहिंचानों के चिह्नों को टूटाहुआ देखकर और आयु और शीलस्वभाव से युक्त कृपासे पूर्ण वह तेजस्वी वार्त्तालापमें कुशल गुरु कृपाचार्य्यजी ५ राजा के पास जाकर बड़े क्रोधयुक्त होकर उस दुर्य्योधनसे बोले ६ कि हे भरतर्षभ जो मैं तुमसे कहताहूं उसको समझो हे महाराज उसको सुनकर जो तुमको अच्छा लगे उसको करना ७ हे राजेन्द्र निश्चय करके धर्मयुद्ध से अधिक कोई कल्याण करनेवाला मार्ग नहीं है हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ उत्तम क्षत्रियलोग भी उसी मार्गमें नियत होकर लड़ते हैं ८ बेटा, भाई, पिता, भानजा, मामा, नातेदार, भाई, बन्धु के साथ लड़नेके योग्य हैं ९ मरने में श्रेष्ठ धर्म्म है और भागना महाअधर्म्म है इसी हेतुसे जीवनकी इच्छा रखनेवाले क्षत्रियोंने भयकारी घोर जीविकाको प्राप्त किया है १० वहां मैं तुमसे कुछ वृद्धि करनेवाला वचन कहताहूं कि भीष्म द्रो- णाचार्य्य महारथी कर्ण ११ जयद्रथ आपके बहुतसे भाई और आपके बेटे ल- क्ष्मण के मरनेपर किस शेष बचेहुये प्रधान की वर्त्तमानता करें १२ हम जिनके ऊपर भार रखकर राज्य में अपना प्रबन्ध जारी करते थे उन शूरवीरों ने शरीरों को त्याग करके ब्रह्मज्ञानियों की गतियों को पाया १३ हम उन प्रशंसनीय म- हारथियों के विना बहुत से राजाओं को गिराकर दुःखी रहेंगे १४ श्रीकृष्ण को प्रधान रखनेवाला महाबाहु अर्जुन देवताओं से भी दुःखसे सम्मुखता के योग्य और सब जीवधारियों से अजेय है १५ इन्द्रधनुष और वज्ररूप इन्द्रध्वजाके स- मान ऊंची वानरध्वजा को पाकर वह बड़ी सेना कम्पायमानहुई १६ भीमसेनके सिंहनाद पांचजन्य शङ्खका शब्द और गाण्डीवधनुष के शब्दोंसे हमारे चित्त व्याकुल होतेहैं १७ चक्षुके प्रकाशको चुराता घूमता और बड़ी बिजलीके समान आलातचक्र के समान घूमता गाण्डीव धनुष दिखाई पड़ा १८ सुवर्णजटित धनुष बड़ा दिशाओंमें चलायमान ऐसे दिखाईपड़ा जैसे कि बादलों में बिजली दिखाई देतीहै १९ श्वेतचन्द्रमा के समान प्रकाशमान अपनी तीव्रता से युक्त घोड़े आकाशको पानकरते रथमें संयुक्त हैं २० जैसे कि वायुसेयुक्त बादल होतेहैं

उसीप्रकार श्रीकृष्णजी की सवारी से युक्त सुवर्णजटित अङ्गवाले घोड़े युद्ध में अर्जुनको लेचलते हैं २१ हे राजा अस्त्रज्ञों में श्रेष्ठ अर्ज्जुन ने युद्धभूमि में उस आपकी सेनाको ऐसे भस्म करदिया जैसे कि उठाहुआ अग्नि बड़े घने शुष्क वनको भस्म करदेताहै २२ हमने चारदांत रखनेवाले हाथीके समान सेनाओंके मँझानेवाले महाइन्द्रके समान प्रकाशमान अर्जुनको देखा २३ जैसे कि कमल के वनको हाथी छिन्नभिन्न करदेताहै उसीप्रकार आपकी सेनाके छिन्नभिन्न करनेवाले और राजाओंको भयभीत करनेवाले अर्जुन को देखो २४ और जैसे कि सिंह मृगोंके समूहोंको भयभीत करताहै उसीप्रकार धनुषके शब्द से डरानेवाले पाण्डव अर्जुनको फिर देखा २५ सब लोकके बड़े धनुषधारियों में श्रेष्ठ कवचधारी श्रीकृष्ण और अर्जुनलोकमें शोभायमानहुये २६ हे भरतवंशी अब युद्धमें चारों ओरके मरनेवालों के महाघोरयुद्धों के सत्रहदिन व्यतीतहुये २७ आपकी सब सेना चारोंओरसे ऐसे पृथक् २ होगई जैसे कि वायुसे शरदऋतुके बादलोंके समूह पृथक् २ होजाते हैं २८ हे महाराज अर्जुन ने आपकी सेनाको ऐसे अत्यन्त कम्पायमान किया जैसे कि समुद्र में वायु से घूमनेवाली और चारोंओर से डूबने वाली नौका होतीहै तेरा सेनापति कर्ण कहांगया और पीछे चलनेवालों समेत द्रोणाचार्य कहांगये मैं कहां और तेरा शरीर कहां कृतवर्मा कहां २९। ३० और भाइयों समेत तेरा भाई दुश्शासन कहां है बाणोंके लक्ष्योंमें वर्त्तमान जयद्रथको देखकर ३१ उसीप्रकार नाते रिश्तेदार भाई साथी और मामा आदिकों को देख कर किसकी वर्त्तमानता करें सब के देखते पराक्रम करके सब लोकको मस्तकपर उल्लंघन करके ३२ राजा जयद्रथ को मारा फिर और कौन से शेष बचेहुये की वर्त्तमानता करें यहां ऐसा कौनसा मनुष्य है जो पाण्डव अर्जुनको विजय कर सक्ता है ३३ उसमहात्माके अस्त्र बड़े दिव्य और नानाप्रकारके हैं और गांडीव धनुष का शब्द हमारे बल पराक्रमों को हरता है ३४ जैसे कि चन्द्रमा से रहित रात्रि अशोभित होतीहै उसप्रकारकी यह सेनाहै जिसका कि प्रधान मारागया और जैसे हाथीसे तोड़ेहुये वृक्षवाली नदी होती है उसीप्रकारसे इस सेनाने भी महाव्याकुलता को पाया ३५ जिसका कि प्रधान मारागयाहै उस सेनामें महाबाहु अर्जुन स्वेच्छाचारी होकर ऐसे घूमेगा जैसे कि सूखे बनमें ज्वलित अग्नि घूमती है ३६ सात्यकी और भीमसेन इन दोनोंका जो वेगहै वह सब पर्वतों को

तोड़कर समुद्रों को भी शुष्ककरसक्ता है ३७ हे राजा भीमसेन ने सभाके मध्यमें जो जो वचन कहेथे वह सब सत्य किये और आगे भी करेगा ३८ तब कर्ण के सम्मुख नियत होनेपर गांडीवधनुषधारी से अलंकृत और रक्षित वह पाण्डवीय सेना कठिनता से सम्मुखता के योग्य और रक्षितहुई तुमने भी वह कर्म किये जो कि साधुओं के मध्यमें नीचकर्म्म गिनेजाते हैं और वह सब कर्म्म तुमने निर्हेतुक किये इसी से उनका फल तुमको प्राप्तहुआहै ३९। ४० हे भरतर्षभ तुमने उपायों से सब पृथ्वी को विजय किया हे तात वह सब पृथ्वी और तेरा शरीर सन्देहोंमें प्रवृत्तहै ४१ हे दुर्योधन अ त्माकी रक्षाकर आत्माही सबका पात्रहै हे तात पात्रके खण्डित होनेपर उसमें भी सब वस्तु इधर उधर दशोंदिशाओं में बहजातीहैं ४२ विनाश पानेवाले सीधे मनुष्य से सन्धि करलेना योग्यहै और वृद्धियुक्तसे युद्ध करना योग्यहै यह बृहस्पतिजी की नीति है ४३ हे समर्थ सो हम अपने बल प-राक्रममें पाण्डवोंसे न्यून हैं सो यहां अब पाण्डवों से सन्धि करनाही मैं उचित मानताहूं ४४ जो कल्याणको नहीं जानताहै और कल्याणका अपमान करताहै वह शीघ्रही राज्य से क्षीण और रहित होकर कल्याण को नहीं पाताहै ४५ जो हम राजाको झुककर राज्यको पावें तो हमारा कल्याण होय हे राजा अज्ञानता से पराजय पानेके योग्य नहीं है ४६ दयावान् राजा युधिष्ठिर राजा धृतराष्ट्र और गोविन्दजी के वचनोंसे तुमको राज्यसे संयुक्त करेगा ४७ इन्द्रियोंके स्वामी श्री कृष्णजी अजेय राजा युधिष्ठिर से और अर्जुन भीमसेन से भी जो कुछ कहैंगे वह सब उनके कहनेको निस्सन्देह करेंगे ४८ श्रीकृष्णजी कौरव धृतराष्ट्रके वचन को उल्लंघन नहीं करेंगे और पाण्डव भी श्रीकृष्णजी के वचनको उल्लंघन नहीं करेगा यह मैं निश्चय मानताहूं ४९ मैं पाण्डवों के साथ तेरी सन्धिको शुभ क-ल्याणकारी मानताहूं शत्रुताको नहीं मानताहूं मैं अशूरता और प्राणों की रक्षा के अर्थ तुझसे नहीं कहताहूं मैं केवल तेरे कल्याण के अर्थ उपकारी वचन क-हताहूं नहीं तो तू युद्धभूमिमें पड़ाहुआ होकर मेरे वचनोंको स्मरण करेगा इस प्रकार वह वृद्ध सारद्वत कृपाचार्य्यजी यह विलाप करके लम्बी और उष्णश्वा-साओं को छोड़कर महाअचेत होगये ५०। ५१॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय॥

संजय बोले कि हे राजा यशवान् गौतम कृपाचार्य्यके ऐसे २ वचनोंको सुनकर राजादुर्य्योधनभी लम्बी और उष्णश्वासाओंको लेकर मौनहोगया १ वह शत्रुओं का तपानेवाला महासाहसी दुर्य्योधन एक मुहूर्त्त ध्यानकरके शारद्वत कृपाचार्य्य से यह वचनबोला २ कि जो कुछ शुभचिन्तकों को कहना योग्य है वह सबबातें मैंने सुनीहैं उन सबकहनेवाले शुभचिन्तकोंने भी प्राणों को त्याग करके आपकेसाथ युद्धकिया ३ महातेजस्वी महारथी पांडवोंके साथ लड़नेवाले और सेनाओंके मँझानेवाले तुमको सबलोकोंने देखा ४ मुझको जो आप शुभचिन्तकोंने ऐसे वचन सुनायेहैं यहसब आपलोगों के वचन मुझे ऐसे प्रसन्नता नहीं करतेहैं जैसे कि मरने के इच्छावान्को औषधी प्रसन्न नहींकरतीं ५ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ महाबाहु सहेतुक हितकारी वचनों से मुझको प्रसन्नता नहीं प्राप्त होती है वह बड़ाधनाढ्य राजायुधिष्ठिर पाशों के द्यूतमें हमसे पराजित हुआ है और राज्यसे भी रहित कियागयाहै वह हमारे ऊपर कैसे विश्वासकरेगा ६।७ अर्थात् वह हमारे वचनों पर कैसे श्रद्धाकरेगा इसीप्रकार दूत होकर आनेवाले और पाण्डवों की वृद्धिमें प्रीति करनेवाले इन्द्रियों के स्वामी श्रीकृष्णजी भी ८ ठगेगये उसकर्मको आपने नहीं विचारा हे ब्राह्मण वह किसप्रकारसे मेरे बचनों को अंगीकार करेगा ९ जो द्रौपदीने सभाकेमध्यमें विलापकियाहै उसको और उसप्रकारके राज्यहरणको श्रीकृष्णजी कभी नहीं सहेंगे १० श्रीकृष्ण और अर्जुन दोनों एकप्राण और मित्रहैं ऐसा पूर्वसमय में हमने सुनाहै हे प्रभु अब मैं उसको देखताहूं ११ केशवजी अपने भानजेको मृतकसुनकर दुःखसे सोतेहैं हम उसके अपराधीहैं वह हमारे निमित्त ऐसा कैसेकरेंगे और अर्जुनभी अभिमन्यु के नाशमान होनेसे आनन्दको नहींपाताहै वह प्रार्थना करनेसे भी मेरी वृद्धि में कैसे उपाय करेगा १२।१३ मँझला पांडव महाबली भीमसेन बड़ातीव्रहै उसने उग्र प्रतिज्ञाकरी है वह अवश्य शत्रुताकरेगा कभी शांतीको नहीं पावेगा १४ वह नकुल और सहदेव दोनों बीर खड्ग और कवचधारी दोनों शत्रुता करनेवाले और अश्विनीकुमारों के समानहैं १५ और धृष्टद्युम्न वा शिखण्डी मेरेसाथ शत्रुता करनेवालेहैं हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वह दोनों मेरी वृद्धिमें कैसेउपाय करसक्ते

हैं १६ दुश्शासनने सबलोकोंके देखतेहुये एकवस्त्र रखनेवाली रजस्वला द्रौपदी को जो सभाकेमध्यमें दुःखीकिया १७ उसबातको अबतक वह पाण्डव स्मरण कर के दुःखको पाते हैं वह शत्रुओंके तपानेवाले पाण्डव युद्धसे हटाने के योग्य नहीं हैं १८ जब द्रौपदीको दुःख दियागयाथा तब उसमहादुःखी कृष्णा द्रौपदीने मेरे नाश और अपने सुहृदोंके प्रयोजनकी सिद्धीके निमित्त बड़े तपकोकियाहै १९ और तबतक सदैव पृथ्वीपर शयन करती है जबतक कि शत्रुताका अन्तहोगा वासुदेवजीकी सगीबहिन अपनी प्रधानता और अहंकारको त्यागकर २० और द्रौपदी सदैव दासीरूपहोकर सेवाकरती है यहसब अच्छीरीतिसे क्रोधमें भरेहुये हैं किसीप्रकारसे भी शांतीको नहीं पासक्ते २१ अभिमन्युके नाश होनेसे किस प्रकार वह युधिष्ठिर मेरेसाथ सन्धिकरने को योग्यहोगा और प्रकटहै कि इससा-गराम्बरा पृथ्वीको भोगकर २२ फिर किसप्रकारसे पाण्डवोंकी कृपापाकर इसको भोगूंगा और मैं किसरीतिसे राज्यको करूंगा निश्चय करके सूर्य्यकेसमान सब राजाओंके ऊपर प्रकाशमान होकर २३ फिर कैसे मैं दासकेसमान होकर युधि-ष्ठिरके पीछे २ चलूंगा अपने आप बड़ेबड़े भोगोंको भोगकर और देनेके योग्य अनेकदानोंको देकर २४ किसप्रकार से नीचोंकेसाथ नीच जीविका से अपना निर्वाहकरूंगा मैं आपके वचनोंकी निन्दानहींकरताहूं आपने मधुर स्वच्छ और प्रियकारी बचन कहे हैं २५ मैं किसी दशामें भी समयके अनुसार सन्धिको श्रेष्ठ नहींमानताहूं हे शत्रुओंके तपानेवाले मैं युद्धमें अच्छी नीतिको देखताहूं २६ यह समय युद्ध करनेकाहै नपुंसकबनने का नहीं है मैंने बहुत से यज्ञोंसे पूजन किये और ब्राह्मणों को दक्षिणा दानकरी २७ सब अभीष्टों को प्राप्तकिया वेदों को श्रवण किया शत्रुओं के मस्तकपर नियतहुआ और दासोंका पोषणकरके मैंने दुःखीलोगोंकोभी दुःखोंसे छुटाया २८ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ मैं पाण्डवोंसे ऐसा कहनेको उत्साह नहींकरताहूं दूसरों के देशोंको विजयकिया अपने देशका पो-षणकिया २९ नानाप्रकार के भोगभोगे और मैंने धर्म अर्थ काम इनतीनोंवर्गों का भी सेवनकिया क्षत्रीधर्म और पितृलोग इनदोनोंके ऋणोंसे भी अऋणता प्राप्तकरी ३० इसलोक में सुख अविनाशी नहीं है राज्य और यशकहां है यहां केवल कीर्त्तिही प्राप्त करनेके योग्यहै परन्तु वह कीर्त्ति युद्धसे प्राप्तहोती है दूसरे प्रकारसे नहीं होतीहै ३१ घरमें जो क्षत्रीकी मृत्युहै वहभी निन्दाके योग्यहै जो

घरमें शय्यापर मरता है यह महाअधर्म्म है ३२ जो मनुष्य बनमें अथवा युद्धमें शरीर को त्यागकरता है वह यज्ञोंके फलोंको पाकर बड़ी वृद्धताको पाताहै ३३ वृद्धावस्थासेयुक्त रोगीमनुष्य दुःखकी बातोंको करता और रोताहुआ रुदनकरने वाले जातवालोंमें जो मरताहै वह पुरुषनहीं है ३४ मैं अभी नानाप्रकारके भोगों को त्यागकरके शुभयुद्धसे परमगति पानेवाले पुरुषों के लोकोंको और इन्द्रकी सालोक्यताको पाऊंगा अर्थात् सदैव इन्द्रकेही पास रहूंगा निश्चयकरके शूरबीर श्रेष्ठ चलन युद्धमें मुख न फेरनेवाले बुद्धिमान् सत्यसंकल्प सबयज्ञोंके करनेवाले और शस्त्ररूपी यज्ञ स्नानसे पवित्र पुरुषोंका निवास स्वर्गमें है निश्चय बात है कि युद्धमें अप्सराओं के समूह आनन्दपूर्वक देखते हैं ३५। ३६। ३७ और यह भी निश्चयहै कि पितृलोग उनदेवताओं की सभामें पूजित अप्सराओंसे व्याप्त उनस्वर्ग्गमें आनन्द करनेवालों को देखते हैं देवताओं से चलायाहुआ मार्ग्ग दूसरों से अधिककर्म करनेवाले उनशूरोंसेभी प्राप्त कियागयाहै हम उसमार्ग्ग में चढ़नाचाहते हैं ३८। ३९ वृद्धभीष्मपितामह उसीप्रकार वृद्ध बुद्धिमान् द्रोणाचार्य जयद्रथ कर्ण और दुश्शासनने भी वह मार्ग्ग प्राप्तकिया ४० इस मेरे प्रयोजन केलिये उपाय करनेवाले शूरवीर राजालोग मारेगये वह सबलोग रुधिरमें लिप्त बाणों से विदीर्णअंग पृथ्वीपर सोते हैं ४१ उत्तम अस्त्रोंके ज्ञाता महाशूर वेदोक्त रीतिसे यज्ञकरनेवाले न्यायके अनुसार युद्धमें प्राणोंको त्यागकरके इन्द्रभवनमें नियत हैं ४२ चढ़ाई करनेवाले बड़े वेगवान् और इसलोक में सद्गतिको पाने वाले उनलोगों से यह दुष्प्राप्यमार्ग्ग रचागया है जो कि फिर कठिनता से प्राप्त होगा ४३ जो शूर मेरेनिमित्त मारेगये उनके कर्म्मको स्मरण करता और उनके ऋणोंसे अनृण होनेके निमित्त राज्यमें अपना चित्तनहीं करता हूं ४४ समान अवस्थावाले भाई और पिता पितामहादिकों को गिराकर जो अपने जीवनकी रक्षाकरूंगा तो निश्चयकरके सब संसार मेरी निन्दाकरेगा ४५ पाण्डवको झुक-कर मित्र शुभचिन्तक और बान्धवों से रहित मुझ राजाका वह राज्य कैसा हो-गा ४६ सो मैं इसप्रकार से इस संसार के नाशको करके उत्तम युद्ध के द्वारा स्वर्ग्गको पाऊंगा यह बिपरीत नहीं है ४७ इसप्रकारसे उसके बचनोंको सुनकर उसकी प्रशंसा करके सब क्षत्री लोग राजा से यह बचन बोले कि धन्य है धन्य है ४८ वह सब पराजयके न शोचनेवाले पराक्रम करने में प्रवृत्तचित्त युद्धकरने में

निश्चय करके बड़े साहसीहुये ४९ इसके पीछे युद्धको स्वीकार करनेवाले सब कौरवों ने सवारियों को बिश्वास देकर कुछ कम दो योजन पर जाकर नियत हो ५० चारोंओरसे प्रकाशमान वृक्षों से रहित पवित्र हिमाचल पर्व्वत के सुन्दर शुभ शिखरपर अरुणवर्णा सरस्वती को पाकर उसमें स्नान किया और उसके जलकोभी पानकिया ५१ तब फिर आपके पुत्रके द्वारा साहस रखनेवाले वह सब शूरवीर परस्पर चित्तको स्थिरकरके वहां से लौटे अर्थात् हे राजा कालकी प्रेरणा से सब क्षत्री लौटआये ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठा अध्याय ॥

सञ्जय बोले हे महाराज इसके पीछे उस हिमालयके शिखरपर युद्धको उत्तम माननेवाले सब शूरबीर इकट्ठे हुये १ महारथी शल्य, चित्रसेन, शकुनि, अश्व-त्थामा, कृपाचार्य्य, यादव कृतबर्मा, २ पराक्रमी सुषेण, अरिष्टसेन, धृतसेन और जयत्सेन नाम वह सब राजा लोग रात्रि में निवासी-हुये इसके पीछे ३ युद्ध में बीरकर्ण के मारेजाने पर बिजयसे शोभा पानेवाले पाण्डवों से भयभीत आपके पुत्रों ने विना हिमाचल पर्व्वतके आनन्दको नहीं पाया ४ हे राजा तब वहां युद्ध में उपाय करनेवाले वहलोग एक साथही शल्य के सम्मुख बिधिपूर्व्वक प्रशंसा करतेहुये राजासे यह वचनबोले ५ कि आप अभी अपना सेनापति नियतकरके शत्रुओं से लड़ने के योग्यहो और ऐसा सेनापति करिये जिससे कि हमलोग युद्धमें रक्षितहोकर शत्रुओंको बिजयकरें ६ तबतो दुर्य्योधन उत्तम रथमें नियत होकर अश्वत्थामाजी से बोला कि जो युद्धों में सबप्रकारके युद्धों के चमत्कारों के जाननेवाले युद्धमें कालके समान ७ उत्तम अंगोंसे गुप्त शिरवाला कंबुग्रीव प्रियभाषी प्रसन्नचित्त कमलके समान नेत्र व्याघ्रके समान मुख रखनेवाला मेरु पर्व्वतके समान गौरवता रखनेवाला ८ स्कन्ध गति और शब्दसे नन्दीगण के समान हृष्टपुष्ट श्लिष्ट आयत भुजावाला और बहुत बड़ेसघन बक्षस्स्थलवाला ९ तीव्रता और बलमें बायु और गरुड़के समान तेजमें सूर्य्य के समान और बुद्धि में शुक्रजी के समान १० कान्ती रूप और मुख इनतीनों ऐश्वर्य्यों से चन्द्रमाके सदृश सुनहरी कमल समूहों के समान स्वच्छ अंगके जोड़ ११ गोल टांग कमर

और जंघावाला सुन्दरचरण उंगली और नख रखनेवाला है ईश्वर ने बारम्बार गुणों को स्मरण करके उपायसे उत्पन्न किया है १२ और अन्य सब लक्षणों से युक्त वह सावधान वेदोंका समुद्र और वेगों से शत्रुओंका बिजय करनेवाला बल पराक्रमके द्वारा शत्रुओं से अजेयहै १३ जो दशअंग और चारचरण रखनेवाले बाण और अस्त्रों को मूलसमेत जानता है और अंगों समेत चारोंवेद जिन में पांचवां इतिहासहै उनसबको अच्छीरीतिसे पढ़ा १४ वह बड़ा तेजस्वी उपायके द्वारा उग्रतपोंसे शिवजीको आराधनकरके योनिसे जन्म न लेनेवाले द्रोणाचार्य से उसस्त्री में उत्पन्नहुआ जो कि योनिसे उत्पन्न नहीं है १५ आपका पुत्र उस अनुपम कर्म्म और रूपसे पृथ्वीपर असादृश्य सबविद्याओंमें पूर्ण गुणोंके समुद्र शत्रुओं के बिजय करनेवाले १६ अश्वत्थामाजीके पास जाकर बड़ी शीघ्रतासे उनसे बोला कि हम साथहोकर जिसको अग्रगामीकरके पांडवोंको बिजयकरें १७ उसको आप बताइये आप गुरूजीके पुत्रहैं इस हेतुसे आपकी आज्ञासे उसका निर्णय होना चाहिये कि मेरा सेनापति कौन होय १८ अश्वत्थामा जी बोले कि कुल तेज बल यश लक्ष्मी और सब गुणों से पूर्ण यह शल्य हमारा सेनापति होय १९ उपकारका ज्ञाता बड़ी सेनाका स्वामी महाबाहु दूसरे स्वामिकार्त्तिकके समान यह शल्य अपने निजभानजोंको त्यागकरके हमारेपास आया २० हे उत्तम राजा लोगो इस शल्य राजाको अपना सेनापति बनाकर हमलोग ऐसे शत्रुओंके बिजय करनेको योग्यहोंगे जैसे कि स्वामिकार्त्तिकजीको सेनापति बनाके देवताओंको बिजय प्राप्तहुई २१ अश्वत्थामा के इसप्रकारके बचनों को सुनकर सब महारथी राजा शल्यको घेरकर चारोंओरको खड़े हुये और बिजयके शब्दोंको किया २२ युद्धमें सबने बुद्धिकी और उत्तम निवासस्थान को प्राप्त किया इसके पीछे दुर्य्योधन उस रथसवार युद्धमें द्रोणाचार्य्य और भीष्मके समान शल्यको २३ हाथ जोड़कर बोला हे मित्रोंके प्यारे अब मित्रोंका वह समय वर्त्तमान हुआ है २४ जिसमें कि बुद्धिमान् लोग अपने मित्र और शत्रुओंकी परीक्षा लेतेहैं सो हे शूर आप हमारी सेनाके मुखपर सेनापति हूजिये २५ जिससे कि हमलोग युद्ध करनेवाले पांडवोंको सम्मुख पाकर बिजयकरें आपके युद्ध करनेपर निर्बुद्धी पाण्डव अपने मंत्री और पांचालों समेत उपायोंसे रहित होंगे २६ शल्यबोला कि हे राजा जो तुम मुझको मानतेहो हेकौरवराज मैं इसको

करूंगा क्योंकि मेरे तन धन प्राण और राज्य सब तेरेही हितके निमित्तहैं २७ दुर्य्योधनबोला हे मामाजी मैं आप श्रेष्ठ पुरुषको सेनापति बनाना चाहताहूं सो आप युद्धमें हमारी ऐसी रक्षाकरो जैसे कि स्वामिकार्त्तिकजीने युद्धमें देवताओंकी रक्षाकरी थी २८ हे राजेन्द्र ऐसे अभिषिक्त होजाओ जैसे कि देवताओं के सेनापति अग्निरूप शिवजीके पुत्र स्वामिकार्त्तिकजीने अभिषेचनपायाथा और शत्रुओंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र दानवोंको मारताहै २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिदुर्य्योधनवाक्यनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि हे राजा तब प्रतापवान् राजा मद्रने राजादुर्य्योधन के वचन को सुनकर इस वचनको कहा १ हे महाबाहु राजादुर्य्योधन इस वचनको सुनो जिन इनरथ सवार श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनको तू रथियों में श्रेष्ठ मानताहै २ यह दोनों भुजबलमें किसीप्रकार से भी मेरे समान नहीं हैं क्रोधयुक्त होकर मैं युद्ध के मुखपर देवता असुर और मनुष्यों समेत युद्ध में सन्नद्ध होकर सब पृथ्वी के मनुष्यों से युद्ध करसक्ताहूं फिर पाण्डवों से कैसे नहीं लड़सक्ता युद्धमें सम्मुख आनेवाले पाण्डव और सोमकोंको बिजय करूंगा ३। ४ मैं निस्सन्देह तेरा सेनापतिहूंगा और ऐसे व्यूहको रचूंगा जिसको कि प्रतिपक्षीलोग नहीं तरसक्के ५ हे दुर्य्योधन यह मैं निस्सन्देह सत्य सत्यही कहता हूं इसके अनन्तर इसप्रकार कहेहुये राजाने शीघ्रही मद्रके राजाको सेनामें अभिषेककराया हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र उसप्रसन्नरूप दुर्य्योधनने शास्त्रोक्त विधिके अनुसार ऐसा किया ६। ७ इसके पीछे उसके अभिषेक करनेपर बड़े सिंहनाद हुये और आप की सेना में बाजेबजे ८ इसके अनंतर मद्रदेशी महारथी शूरबीर लोग बहुत प्रसन्नहुये और युद्धको शोभा देनेवाले राजाशल्य की प्रशंसाकरी ९ कि हे राजा तेरी विजय होय और तुम सम्मुख आनेवाले शत्रुओं को मारो और महाबली धृतराष्ट्र के पुत्र आपके भुजबल को पाकर १० शत्रुओं से रहित होकर इस पृथ्वीपर राज्य करो निश्चयकरके तुम युद्ध में देवता असुर और मनुष्यों के बिजय करने को समर्थहो ११ फिर यहां मरण धर्म्मवाले सोमक और सञ्जयलोग क्या पदार्थ हैं इसप्रकारसे प्रशंसित होनेपर मद्रदेशका स्वामी राजाशल्य बहुत प्रसन्नहुआ १२

शल्य बोला कि हे राजा अब मैं युद्ध में सब पाञ्चालों को पाण्डवों समेत मारूंगा अथवा मरकर स्वर्गको जाऊंगा १३ अब लोग निर्भयके समान मुझ घूमनेवाले को देखें अब सब पाण्डव सात्यकी समेत बासुदेवजी १४ पांचालदेशी चन्देरी देशी, सब द्रौपदी के पुत्र, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सब प्रभद्रकभी १५ मेरे पराक्रमको और धनुषके बड़े बलको देखो और युद्धमें मेरे भुजबलकी हस्तलाघवता और अस्त्रबलको देखो १६ अब सब पाण्डव सिद्धचारणों समेत मेरी भुजाओं में जैसा बलहै और जैसे कि अस्त्रों में मेरी बिज्ञता है उसको देखें १७ अब पाण्डवों के महारथी मेरे पराक्रम को देखकर और सम्मुखता में सहायक होकर नानाप्रकारके कर्मकरो १८ हे समर्थ कौरव अब मैं युद्धमें द्रोणाचार्य भीष्म और कर्णको उल्लंघनकर पाण्डवों की सेनाओं को चारोंओर से भगाऊंगा और तेरे हितके लिये युद्धभूमि में लड़ताहुआ घूमूंगा १९ सञ्जय बोले कि हेबड़ाई देनेवाले भरतर्षभ उससमय शल्यके सेनापति होनेपर आपकी सेनामें किसी नेभी कर्णके दुःखको नहीं माना २० और सेनाके लोग बहुत प्रसन्न चित्त हुये और पाण्डवों को राजामद्रके आधीन माना २१ हे भरतर्षभ फिर आपकी सेना बड़ी प्रसन्नताको पाकर उस रात्रिमें सुखसे सोनेवाली होकर चित्तसे सावधानहुई २२ राजा युधिष्ठिर सेनाके उस शब्दको सुनकर सब क्षत्रियोंके समक्षमें श्रीकृष्णजी से यह बचन बोला २३ हे माधवजी दुर्य्योधन ने बड़े धनुषधारी सब सेनामें पूजित मद्रके राजा शल्यको अपना सेनापति कियाहै २४ हे माधवजी यह जैसा हुआहै उसको जानकर जो उचितहोय उसको करिये आप हमारे स्वामी और रक्षक हैं इससे जैसा जानिये वैसा बड़ी शीघ्रतासे करना योग्यहै २५ हे महाराज यह सुनकर बासुदेवजी राजा युधिष्ठिर से बोले कि हे भरतर्षभ मैं शल्यको मुख्यता समेत जानताहूं २६ वह अधिकतम पराक्रमी महात्मा बड़ातेजस्वी अभ्यस्त अपूर्व्व युद्धकर्त्ता और हस्तलाघवता से संयुक्त है २७ युद्ध में जैसे कि भीष्म द्रोणाचार्य और कर्णथे मेरे मतसे राजामद्र भी उनके समान अथवा उनसे भी अधिक है २८ हे भरतबंशी राजा युधिष्ठिर मैं शोचता हुआ भी उस युद्धभूमिमें लड़नेवाले शूरबीर शल्यके समान किसीको भी उससे लड़नेके योग्य नहीं पाताहूं २९ हे भरतबंशी वह शल्य बलमें इन शिखण्डी अर्ज्जुन भीमसेन सात्यकी और धृष्टद्युम्न से भी अधिक है ३० हे महाराज सिंह और हाथी के स-

मान पराक्रमी निर्भय राजामद्र समय पर ऐसा घूमेगा जैसे कि क्रोधयुक्त काल संसारकी सृष्टिमें घूमताहै ३१ हे पुरुषोत्तम अब मैं युद्धमें तुझ शार्दूलके समान पराक्रमी के सिवाय उसकी सम्मुखता करनेवाला नहीं देखताहूं ३२ हे कौरवनन्दन देवताओं समेत इस सम्पूर्ण सृष्टिमें तुझसे अधिक दूसरा पुरुष नहीं है जो कि युद्धमें क्रोधयुक्त हुये राजामद्र को मारे ३३ इस हेतुसे युद्धभूमि में प्रतिदिन युद्ध करनेवाले और तेरी सेनाके छिन्न भिन्न करनेवाले इसशल्यको युद्धमें ऐसे मारो जैसे कि इन्द्र ने शम्बरको माराथा ३४ यह वीर अजेय और दुर्य्योधन से प्रशंसाके साथ प्रतिष्ठा पानेवाला है युद्धमें इस राजामद्रके मरनेपर तेरीही विजय है ३५ हे पाण्डव उसके मरनेपर दुर्योधन की सब बड़ी सेना मृतकरूपहै हे महाराज अब तुम मेरे इस वचनको सुनकर ३६ युद्ध में महारथी शल्य के सम्मुख जावो हे महाबाहु इसको ऐसे मारो जैसे कि इन्द्र ने नमुचिको माराथा ३७ इस पर अपना मामा जानकर दया न करना चाहिये तुम क्षत्री धर्मको आगे करके राजामद्र को मारो ३८ कर्ण रूप पाताल से उत्पन्न होनेवाले भीष्म और द्रोणाचार्य्य रूपी समुद्र को तरकर सेना समूह समेत इस गोपदके समान स्रोतरूपी शल्यको पाकर इसमें मतडूबो ३९ अपने तपके बलको और क्षत्रीपनेके बलको दिखलाओ और इस महारथी को मारो ४० इसके पीछे पाण्डवोंसे पूजित शत्रुओंके वीरोंके मारनेवाले केशवजी इस वचनको कहकर सायंकालके समय अपने डेरेको गये ४१ फिर केशवजी के चलेजाने पर धर्मराज युधिष्ठिर सब भाई पांचाल और सेनाके लोगोंको विदा करके ४२ बिना घायल हाथीके समान उस रात्रिमें सोया और कर्णके मरनेसे बड़े प्रसन्नचित्त वह सब पाण्डव और पांचाल भी आनन्दसे सोये ४३ हे श्रेष्ठ सूतपुत्र के मरनेपर पाण्डवोंकी सेनावाले जो कि बड़ेधनुषधारी और पारहोनेवाले होकर महारथीथे विजयको पाकर तापसे रहित अत्यन्त प्रसन्नहुये ४४। ४५

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिशल्यसेनापतिनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

संजय बोले कि फिर रात्रिके व्यतीत होनेपर दुर्य्योधन आपके सब शूरवीरों से बोला हे महारथियो सन्नद्ध होकर अलंकृत होजावो तब राजा के विचार को

जानकर वह सेना अलंकृत हुई और शीघ्रही रथोंको जोड़ २ कर उसीप्रकारसे शूरबीर लोग चारोंओरसे दौड़े १। २ हाथी अलंकृत होकर पतियां सन्नद्ध हुईं बाजोंके शब्द प्रकटहुये ३ हे भरतबंशी इसके पीछे युद्धके निमित्त शूरबीर सेना के लोगोंकी बार्त्तालाप करतेहुये शेष बचीहुई सब सेना ४ मृत्युको लौटाकर हृष्टपड़ी महारथी लोग मद्रके राजाशल्यको सेनापति करके ५ और सब सेनाको विभाग करके अनेकनाम भागोंसे युक्तहुये और वह सेनाभी आकर नियतहुई इसके पीछे कृपाचार्य्य कृतबर्म्मा अश्वत्थामा शल्य शकुनि और अन्य अन्य शेष बचेहुये राजाओंने अपनी अपनी सब सेनाओं समेत इकट्ठे होकर आपके पुत्रसे मिलकर यह सलाहकरी ६।७ कि किसीदशामेंभी एक मनुष्यको पांडवों के साथ युद्ध न करना चाहिये जो अकेला पाण्डवोंके साथ युद्धकरे अथवा जो अकेले लड़नेवाले को त्याग करे ८ वह पातक और उपपातकनाम पांच पापों से संयुक्तहोय परस्पर रक्षा करनेवाले और साथ रहनेवाले हमलोगों को लड़ना चाहिये ९ वहां वह सब महारथी इसप्रकारसे नियमकरके और राजामद्रको आगे करके शीघ्रही शत्रुओंके सम्मुख गये १० हे राजा इसीप्रकार सब पाण्डवभी अपनी सब सेनाको अलंकृत करके बड़े युद्ध में युद्धाभिलाषी होकर चारोंओर से कौरवों के सम्मुखगये ११ हे भरतर्षभ वह सेना जिसमें रथ और हाथी चढ़ाई करनेवाले थे व्याकुल समुद्र के समान शब्दायमान उठेहुये समुद्र के रूपहुई १२ धृतराष्ट्र बोले कि मैंने द्रोणाचार्य्य भीष्म और कर्णका गिराना सुना फिर अब तुम शल्य और मेरे पुत्रका गिराना मुझसे कहो १३ हे सञ्जय युद्ध में शल्य किसप्रकारसे धर्म्मराजके हाथसे मारागया १४ संजय बोले कि हेराजा उसयुद्ध में जो घोड़े हाथी आदिके शरीरोंके नाशहुये उनको सावधान होकर सुनो १५ भीष्म द्रोणाचार्य्य और कर्णके गिराने पर आपके पुत्रोंको बड़ीप्रबल आशाहुई थी १६ कि शल्य युद्धमें सब पाण्डवों को मारेगा हे श्रेष्ठ भरतर्षभ उसआशाको हृदयमें धरकर बड़े बिश्वास युक्त होकरके १७ और युद्धमें महारथी राजामद्रके आश्रित होकर आपके पुत्रने अपने को सनाथ माना १८ हेराजा जब कर्ण के मरनेपर पाण्डवोंने सिंहनाद किये तब धृतराष्ट्रके पुत्रोंको महाभय उत्पन्नहुआ १९ हेमहाराज उस समय प्रतापवान् राजामद्र उनको बिश्वास युक्त करके और सब सामान से अलंकृत सर्बतोभद्रनाम व्यूहको रचकर २० प्रतापवान् महारथी

शल्य अत्यन्त उत्तम सिन्धुदेशी घोड़ों के उत्तम रथपर सवार होकर रत्नों से जटित बड़ेभार के सहनेवाले महावेगवान् धनुषको चलायमान करताहुआ पाण्डवों के सम्मुखगया हे महाराज वहांजाकर उसके नियत रथके सारथी ने उस रथ समेत सिन्धुदेशी घोड़ों को शोभायमान किया २१ । २२ हे राजा शत्रुओं को पीड़ा देनेवाला शूरबीर उस रथपर सवार वह राजा शल्य आप के पुत्रों के भयको दूरकरताहुआ युद्धभूमिमें नियतहुआ २३ उस युद्धमें कवचधारी शस्त्रों से युक्त वह राजा शल्य मद्रदेशी बीर और कठिनतासे बिजय होनेवाले कर्णके पुत्रोंसमेत ब्यूहका मुखहुआ २४ और उत्तम २ कौरवोंसे रक्षितहोकर वह दुर्योधन सेना के मध्य में नियतहुआ और त्रिगर्त्तदेशियों से वेष्टित कृतबर्म्मा बाम भागपर नियतहुआ २५ और शक और यवनों समेत कृपाचार्य्य दक्षिण भाग पर नियतहुये और काम्बोज देशियोंको साथलेकर अश्वत्थामा पीछे की ओर हुये २६ और घोड़ोंकी बड़ी सेनासे युक्त महारथी शकुनी और कैतब्य सब सेना समेत चले २७ तब वह बड़े धनुषधारी निर्द्दोष पाण्डव सेना को अलंकृत और तीनभाग करके आपकी सेना के सम्मुख दौड़े २८ महारथी धृष्टद्युम्न शिखंडी और सात्यकी यह सब बड़ी शीघ्रता से शल्यकी सेना के सम्मुख दौड़े २९ हे भरतर्षभ अपनी सेना से युक्त मारनेका अभिलाषी राजा युधिष्ठिर शल्यके सम्मुख दौड़ा ३० और शत्रुओं का मारनेवाला अर्जुन वेगयुक्त होकर बड़े धनुषधारी कृतबर्मा और संसप्तकों के समूहों के सम्मुखगया ३१ हे राजेन्द्र युद्धमें शत्रुओं के मारने के इच्छावान् महारथी सोमकनाम क्षत्री और भीमसेन कृपाचार्य के सम्मुखगये ३२ और सेनासमेत वह नकुल और सहदेव युद्धमें उन सेनासमेत नियत होनेवाले महारथी शकुनि और उलूकके सम्मुख नियतहुये ३३ इसी प्रकार नानाप्रकारके शस्त्र हाथ में रखनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त हजारों आप के शूरबीर युद्ध में पाण्डवों के सम्मुख बर्त्तमान हुये ३४ धृतराष्ट्र बोले कि युद्ध में महारथी महाधनुषधारी भीष्म द्रोणाचार्य्य और कर्ण के मरने और कौरवीय पाण्डवीय सेनाके थोड़े लोगों के शेषरहनेपर ३५ और पाण्डवों के अत्यन्त क्रोध युक्त होकर चढ़ाई करनेपर हमारेमित्र और दूसरोंकी सेना कितनी बाकीरही ३६ संजय बोले कि हे राजा जैसे प्रकारसे हम और हमारे प्रतिपक्षी युद्धके निमित्त सम्मुख नियतहुये और युद्धसे जितनी सेना बाकीरही उसको मुझसे सुनिये ३७

हेभरतर्षभ रथोंकी संख्या ग्यारह हज़ार हाथियोंकी दशहज़ार सातसौ ३८ घोड़ों की पूर्ण संख्या दोहज़ार यह आपकी सेना बारहकोटि पदातियोंसमेत शेषरही और रथों की संख्या छःहज़ार हाथी छः हज़ार घोड़े दशहज़ार और दो करोड़ पदाती यह पाण्डवोंकी सेना बाक़ीरही हे भरतवंशी यह सब मिलकर युद्धके निमित्त आये ३९।४०।४१ हे राजेन्द्र इसप्रकार राजामद्रके मनमें नियत विजयके लोभी क्रोधयुक्त हमलोग सेनाओं को विभाग करके पांडवों के सम्मुख गये ४२ इसीप्रकार विजयसे शोभापानेवाले शूरपाण्डव और यशवान् नरोत्तम पांचाल सम्मुखआये ४३ हेप्रभु महाराज इसप्रकार परस्पर विजयाभिलाषी नरोत्तमलोग प्रातःकालकी संध्या के समय सम्मुखहुये ४४ इस के पीछे परस्पर मारनेवाले पाण्डव और आपकेपुत्रोंका युद्ध महाघोररूप होकर भयानक जारीहुआ ४५॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वण्यष्टमोऽध्यायः ८॥

नवां अध्याय॥

हे राजा फिर कौरवोंका युद्ध जो सृंजियोंके साथ जारीहुआ वह घोरभयका वढ़ानेवाला देवासुर युद्धके समानथा चढ़ाई करनेवाले हज़ारों मनुष्य और रथ घोड़ोंके समूह अश्वसवार और घोड़े परस्पर में भिड़े १।२ भयानकरूप हाथियोंके भागने के ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि समयपर आकाश में बादलों के शब्द होते हैं ३ हाथियों से घायल कितनेही रथसवार रथों समेत गिरपड़े और युद्धमें मतवाले हाथियोंसे भगायेहुये वीरभागे ४ हे भरतवंशी वहां शिक्षापाने वाले रथसवारों ने घोड़ोंके समूहों को और चरणरक्षकों को बाणोंसे परलोक में भेजा ५ और इसीप्रकार युद्ध में घूमनेवाले शिक्षित अश्वसवारों ने महारथियों को प्रास शक्ति और दुधारे खड्गोंसेमारा और कितनेही धनुषधारी मनुष्यों ने महारथियों को घेरकर वहुतोंने एकको पाकर यमलोक में भेजा और रथियों में श्रेष्ठ दूसरे महारथियोंने हाथीको घेरकर मारा ६।७ हे महाराज इसीप्रकार मौके से लड़नेवाले महारथी को और बहुत बाणोंसे लड़नेवाले क्रोधयुक्त रथीको ८ हाथियोंने चारोंओर से घेरकरमारा हे भरतवंशी हाथीने हाथीको सम्मुख होकर मारा और रथीने रथी को ९ शक्ति तोमर और नाराचों से मारा रथ हाथी और घोड़े पदातियोंको मर्द्दनकरते १० बड़ी व्याकुलताको उत्पन्नकरते युद्धमें दिखा-

ईपड़े और चामरोंसे शोभायमान घोड़े मानों पृथ्वीको पानकरते चारोंओर को ऐसे दौड़े ११ जैसे कि हिमालयके शिखरपर हंस दौड़ते हैं हे राजा उन घोड़ों के खुरोंसे चिह्नित पृथ्वी १२ ऐसे शोभायमान हुई जैसे कि स्त्री हाथों से उत्पन्न नखोंसे विदीर्ण होती है घोड़ोंके खुरोंके शब्द रथनेमियों के शब्द १३ पत्तियोंके शब्द हाथियों की चिग्घाड़ बाजों के शब्द और शंखों के शब्दों से १४ पृथ्वी ऐसी शब्दायमानहुई हे भरतवंशी जैसे कि परस्पर आघात करनेवाली हवाओं के पृथ्वी पर गिरने से उत्पन्न होनेवाले शब्द होते हैं उस समय शब्द करने-वाले धनुष प्रकाशित खड्ग १५ और शरीरके कवचों के प्रकाशों से कुछ नहीं जानागया गजराज की सूंड़ के समान टूटी हुई बहुतसी भुजा १६ व्याकुल और अधिक चेष्टा करती हुई भयानक वेगों को करती थीं हे महाराज पृथ्वी पर गिरतेहुये शिरों के ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि ताल के वृक्षों से गिरतेहुये फलों के शब्द होते हैं रुधिर से लिप्त पड़ेहुये शिरों से पृथ्वी ऐसे प्रकाशमान हुई १७ । १८ जैसे कि समयपर सुनहरी कमलों से शोभित होती है हे राजा फैलेहुये नेत्र निर्जीव और अत्यन्त घायल उन नरोंसे १९ युक्तहोकर वह पृथ्वी ऐसे शोभायमानहुई जैसे कि कमलोंसे शोभित होती है चन्दनसेलिप्त बहुमूल्य रत्नमयी केयूर रखनेवाली २० पड़ीहुई भुजाओंसे पृथ्वी ऐसे प्रकाशयुक्तहुई जैसे कि इन्द्रकी ध्वजाओं से बड़े युद्धमें काटीहुई महाराजाओं की जंघाओं से हो-जाती है और हाथीकी सूंड़के समान दूसरी जंघाओंसे वह युद्धभूमि व्याप्त हो-गई सैकड़ों घड़ोंसे आच्छादित छत्र चामरों से व्याकुल २१ । २२ वह सेनारूप वन ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि फूलोंसे चिताहुआ वन होताहै हे महाराज वहां निर्भयके समान घूमनेवाले शूरवीर २३ रुधिरसे लिप्त अंग ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि प्रफुल्लित किंशुकके वृक्ष होते हैं बाण और तोमरों से पीड़ावान् हाथी भी २४ जहां तहां टूटेहुये बादलोंके समान गिरतेहुये दृष्टपड़े और महात्माओं के हाथसे घायलहुई वह हाथियों की सेना २५ सब दिशाओंमें ऐसे छिन्न भिन्न होगई जैसे कि वायु से छिन्न भिन्न बादल होते हैं अर्थात् वह बादल के स्वरूप हाथी चारोंओर से ऐसे गिरपड़े २६ हे समर्थ जैसे कि प्रलयकाल में वज्रसे टूटे हुये पहाड़ गिरते हैं सवारों समेत पृथ्वीपर पड़ेहुये घोड़ोंके समूह जहां तहां प-र्व्वत के समान दिखाई दिये फिर युद्धभूमि में परलोक की ओर को बहनेवाली

नदी उत्पन्न हुई २७ । २८ जिस में रुधिर जल रथ भवँर ध्वजा वृक्ष हाड़ कंकड़ भुजा नक्र धनुष झिरने हाथी पर्व्वत घोड़े पाषाण २९ वसा कीच छत्र हंस और गदा उडुपक्षी वह नदी कवच और पगड़ियोंसे पूर्ण और पताकारूपी सुन्दर वृक्ष रखनेवाली ३० रथके पहिये रूप चक्रावली से पूर्ण त्रिवेणुरूप दण्डक से संयुक्त शूरोंकी प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाली और भयभीतों के भयोंकी बढ़ानेवाली ३१ कौरव और सृंजियोंसे व्याकुल महारुद्र नदी जारीहुई परिघरूप भुजारखनेवाले वह शूरलोग पितृलोक के निमित्त बहनेवाली उस बड़ी भयानक नदी को सवारीरूप नौकाओं के द्वारा तरे हेराजा इसप्रकार उस अमर्यादारूप युद्धके जारीहोने पर ३२ । ३३ जो कि पूर्व्वसमय में होनेवाले देवासुर युद्धके समान था और घोर चतुरंगिणी सेनाके नाशवान् होनेपर जहां तहां अन्य बान्धव पुकारे ३४ पुकारनेवाले उन बान्धवोंके कारणसे भयसे पीड़ावान् दूसरे शूरवीर नियत हुये इसप्रकार उस अमर्य्याद भयानक युद्धके वर्त्तमानहोनेपर ३५ अर्ज्जुन और भीमसेन ने शत्रुओं को अचेत किया तब हेराजा वह आपकी बड़ी सेना महाघायल होकर ३६ जहां तहां ऐसी अचेतहुई जैसे कि नशेकी दशामें स्त्री अचेत होजाती है वहां भीमसेन और अर्ज्जुन ने उस सेनाको अचेत करके ३७ शङ्खोंको बजाकर सिंहनादों को किया फिर बड़े शब्दको सुनतेही धृष्टद्युम्न और शिखण्डी ३८ धर्मराजको आगेकरके राजामद्रके सम्मुख गये हे राजा तब वहां हमने एक भयानकरूप आश्चर्य्यको देखा ३९ जो शल्य से भिड़हुये शूरभागी होकर युद्ध करनेलगे फिर वेगवान् अस्त्रज्ञ युद्धदुर्म्मद शीघ्रता से युक्त आपकी सेनाके विजय करनेके अभिलाषी नकुल और सहदेव सम्मुख गये हे भरतर्षभ इसके पीछे वह आपकी सेना लौटी ४० । ४१ जो कि विजयसे शोभित पांडवों के बाणोंसे अत्यन्त घायलथी फिर उस घायल सेनाने आपके पुत्रोंके देखते ४२ हुये दिशाओं को सेवन किया वह सब सेना बाणोंकी वर्षासे अत्यन्त संयुक्तथी हे राजा तब आपके शूरवीरों का बड़ा हाहाकार उत्पन्न हुआ ४३ और युद्ध में परस्पर विजयाभिलाषी महात्मा पाण्डवों समेत क्षत्रियोंके तिष्ठ २ शब्दहुये ४४ इसके पीछे पाण्डवोंकेहाथ पराजित आपकी सेनाकेलोग युद्धमें अपने प्यारेपुत्र भाई और पिता बाबाओंको त्यागकरके ४५ घोड़े हाथियोंको शीघ्र चलानेवाले शूरवीर मामा भानजे आदि नातेदारोंको छोड़ २ कर चारोंओरसे चलदिये ४६

अर्थात् हे भरतर्षभ आपके शूरवीर अपनी रक्षामें उत्साह करनेवालेहुये ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि प्रतापवान् राजामद्र उस पराजितहुई सेनाको देखकर अपने सारथीसे बोला कि मनके समान इन शीघ्रगामी घोड़ोंको शीघ्रता से चलायमान करो यह पाण्डुका पुत्र राजा युधिष्ठिर श्वेत शोभायमान छत्र को धारण किये शोभायमान होकर नियतहै १ । २ हे सारथी वहां जल्दीसे मुझको पहुँचाकर मेरे बलको देख अब युद्ध में पाण्डव लोग मेरे आगे नियत होनेको समर्थ नहीं हैं ३ इसप्रकारके वचनको सुनकर वह राजा मद्रका सारथी वहांहीको चला जहांपर कि सत्यसंकल्प धर्म्मराज राजा युधिष्ठिर था ४ और वह पाण्डवों की सेना भी अकस्मात् चढ़ाई करनेवाली हुई और अकेले शल्यनेही युद्ध में उन सबको ऐसे रोका जैसे कि उठेहुये समुद्रको मर्यादा रोकती है ५ हे श्रेष्ठ तब पाण्डवोंकी सेनाका समूह शल्यको पाकर युद्धमें ऐसे नियत हुआ जैसे कि पर्वत को पाकर समुद्रका वेग नियत होताहै ६ फिर युद्धके निमित्त युद्धभूमिमें नियत राजामद्रको देखकर मृत्युको पीछे करके सब कौरव लौटे ७ हे राजा वह भागकी हुई लोग उन अलंकृत सेनाओं के लौटने पर रुधिररूप जल रखनेवाला महारौद्र युद्ध प्रारम्भ हुआ ८ युद्धमें दुर्मद नकुल ने चित्रसेनको सम्मुख पाया उन दोनों अपूर्व्व धनुषधारियों ने परस्पर सम्मुखहोकर ९ युद्धमें बाणरूपी जलोंसे परस्पर ऐसे सींचा जैसे कि दक्षिण और उत्तरसे उठेहुये वर्षाकरनेवाले दो बादल होते हैं १० वहां हमने पाण्डवोंके अथवा अन्य लोगोंके अन्तरको नहीं देखा वह दोनों अस्त्रज्ञ बलवान् रथचर्या अर्थात् मार्गों में सावधान ११ परस्पर मारने में उपाय करनेवाले छिद्रोंके अन्वेषण में प्रवृत्तथे हे महाराज फिर चित्रसेनने पीत वर्ण तीक्ष्णधार भल्लसे १२ नकुलके बड़े धनुषको मूठके स्थानपर काटा फिर भयसे उत्पन्न व्याकुलतासे रहितने इसटूटे धनुषवालेको सुनहरी पुंख और तेजधार १३ तीन बाणों से ललाटपर घायल किया और उसके घोड़ों को भी अपने तीक्ष्ण बाणों से कालवशकिया १४ इसप्रकार ध्वजा और सारथीकोभी तीन तीन बाणों से गेरा हेराजा वह नकुल शत्रुकी भुजासे छूटेहुये ललाटपर नियत तीनबाणों

से १५ तीन शिखरवाले पर्व्वत के समान शोभायमानहुआ वह टूटे धनुष रथसे विहीन होकर वीर नकुल ढाल तलवारको लेकर १६ रथ से ऐसे उतरा जैसे कि पर्व्वत के शिखर से केसरी सिंह उतरता है तब उसने उस पदाती आनेवाले के ऊपर बाणों की वर्षाकरी १७ उस तेज पराक्रमी नकुलने भी बल के द्वारा उस बाणवृष्टि को निष्फल किया फिर अपूर्व शूरवीर थकावटको जीतनेवाला महाबाहु नकुल चित्रसेन के रथको पाकर १८ सब सेना के देखतेहुये उसपर चढ़ा वहांजाकर उस नकुल ने सुन्दरमुख बड़े नेत्र कुण्डल और मुकुटधारी १६ चित्रसेनके शिरको उसके शरीरसे जुदाकिया वह सूर्य्य के समान महातेजस्वी रथके बैठने के स्थानपर गिरपड़ा २० फिर वहां महारथियों ने मारेहुये चित्रसेन को देखकर धन्य धन्य शब्दों से प्रशंसा करी और बड़े सिंहनादों को किया २१ कर्ण के पुत्र महारथी सुषेण और सत्सेन मरेहुये अपने भाई को देखकर नाना प्रकारके बाणोंको छोड़ते २२ शीघ्रही रथियों में श्रेष्ठ पाण्डव नकुलको मारने के अभिलाषीहोकर ऐसे सम्मुख दौड़े जैसे कि महावनमें हाथी के मारनेके अभिलाषी दोव्याघ्र दौड़ते हैं २३ वह दोनों बाण समूहों को अच्छीरीति से छोड़ते इस महारथी के ऊपर ऐसे वर्षा करनेवाले हुये जैसे कि दो बादल जलकी बर्षा करते हैं २४ सबओर को बाणों से घायल और अत्यन्त प्रसन्न पराक्रमी नकुल दूसरे धनुष को लेकर और रथपर चढ़कर २५ क्रोधयुक्त कालके समान युद्ध में नियत हुआ हे राजा उन दोनों भाइयोंने टेढ़े पर्व वाले बाणों से २६ उस के रथको खण्ड २ करना प्रारम्भ किया उसके पीछे नकुलने हँसकर अपने तीक्ष्णधार चारबाणों से २७ सत्सेनके चारों घोड़ोंको मारा फिर सुनहरी पुंख तीक्ष्ण धार नाराचको धनुष पर चढ़ाकर २८ सत्सेन के धनुषको भी काटा इसके पीछे दूसरे रथमें सवारहोकर दूसरे धनुष को लेकर २६ सत्सेन और सुषेण नकुल के सम्मुख दौड़े हे महाराज भयजनित व्याकुलता से रहित प्रतापवान् नकुल ने युद्धके मुखपर दो २ बाणोंसे उन दोनोंको छेदा इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी हँसतेहुये सुषेणने अपने क्षुरप्रसे नकुलके बड़े धनुषको काटा ३०। ३१ तब पीछे क्रोधसे मूर्च्छित नकुलने दूसरे धनुषको लेकर पांच बाणोंसे सुषेणको छेदा एक बाणसे ध्वजाको काटा ३२ और बड़े वेगसे युद्धमें सत्सेन के धनुष और हस्तत्राणकोभी काटा इस हेतुसे लोगोंने बड़ा उच्चशब्द किया ३३ इसके पीछे शत्रु

के मारनेवाले भारके साधनेवाले दूसरे धनुष को लेकर बाणों की वर्षासे उसने पाण्डुनन्दन नकुलको सब ओरसे आच्छादित करदिया ३४ शत्रुओंके मारने वाले नकुलने उन बाणोंको हटाकर सत्सेन और सुषेणको दो २ बाणोंसे छेदा ३५ हे राजा उन दोनों ने भी अपने जुदे २ बाणों से उसको छेदा और उसके सारथीको तीक्ष्णबाणोंसे घायलकिया ३६ फिर हस्तलाघवी प्रतापवान् सत्सेन ने नकुलके धनुष और रथके ईशादण्ड को पृथक् २ बाणोंसे काटा ३७ उस रथ पर नियत अतिरथी ने सुनहरीदण्ड स्वच्छधार तेलसे मलीहुई बड़ी निर्मल रथ शक्ति जो कि ओठोंकी चाटनेवाली बड़ी विषैलीनागकन्या के समानथी उसको उठाकर युद्ध में सत्सेन के ऊपर छोड़ा ३८ । ३९ हे राजा उस शक्तिने युद्ध में सत्सेन के हृदय के सौखण्ड करदिये तब वह अचेत और निर्जीवहोकर रथसे पृथ्वीपर गिरपड़ा ४० क्रोधसे मूर्च्छामान सुषेण अपने इस भाईको भी मराहुआ देखकर तीक्ष्णबाणों से पदाती नकुलपर वर्षा करनेलगा ४१ वह कर्णका पुत्र चारबाणों से चारों घोड़ोंको पांचबाणोंसे ध्वजाको काटकर और तीन बाणों से सारथीको मारकर गर्जा ४२ फिर युद्धमें पिताको चाहताहुआ सुतसोम उसके पासगया इसके पीछे भरतर्षभ नकुल सुतसोम के रथपर सवारहोकर ४३ ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि पर्व्वत पर नियत केसरी सिंहहोता है उसने दूसरे धनुषको लेकर सुषेणसे अच्छा युद्धकिया ४४ उन दोनों बड़े महारथियों ने परस्पर सम्मुख होकर बाणों की वर्षा से परस्पर मारने में उपाय किये ४५ इसके पीछे क्रोधयुक्त सुषेण ने पाण्डवको और सुतसोम को तीन तीन बाणों से उसकी छाती और भुजाओं पर घायल किया ४६ इसके पीछे शत्रुहन्ता क्रोधयुक्त वेगवान् नकुलने बाणोंसे उसकी दिशाओंको ढकदिया ४७ उसके पीछे तीक्ष्ण नोक सुन्दर बेतवाले वेगवान् अर्द्धचन्द्र नाम बाणको लेकर युद्धमें कर्णकेपुत्र पर फेंका ४८ हे राजाओंमें श्रेष्ठ सब सेनाके लोगोंके देखते उस बाणहीसे उस के शिरको काटडाला यह आश्चर्य्यसा हुआ ४९ फिर उस महात्मा नकुल के हाथसे माराहुआ वह वीर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बड़ा भारी नदीके तटका वृक्ष नदीके वेगसे गिर पड़ताहै ५० हे भरतर्षभ आपकी सेना कर्णके पुत्रोंके मरण को और नकुलके पराक्रमको देखकर भयभीतहोकर भागी ५१ उससमय शत्रुओंके विजय करनेवाले प्रतापवान् शूरसेनापति, राजामद्र, युद्धमें उस सेनाको

रक्षित किया ५२ और आप उस सेनाको नियत करके धनुषके भयानक शब्द और बड़े सिंहनादको करके निर्भय होकर नियतहुआ ५३ हे राजा युद्धमें दृढ़ धनुषधारी से रक्षित और पीड़ासे रहित वह सबलोग शत्रुओंके सम्मुखगये ५४ और युद्धाभिलाषी बड़े साहसी शूरवीर उस बड़े धनुषधारी राजाको चारोंओरसे मध्यवर्ती करके उसके चारोंओर नियतहुये ५५ सात्यकी पाण्डव भीमसेन नकुल और सहदेव इन सबवीरोंने लज्जावान् शत्रुओंके विजय करनेवाले युधिष्ठिरको आगेकरके ५६ और चारोंओरसे अपना मध्यवर्ती करके सिंहानाद किये और वारंवार बाणोंके उग्र शब्द और नानाप्रकार के सिंहनादों को किया ५७ इसीप्रकार अत्यन्त क्रोधयुक्त आपके सब शूरवीरों ने बड़े वेगसे राजा मद्र को अपना मध्यवर्ती करके फिर युद्ध करना स्वीकार किया ५८ इसके अनन्तर मृत्युको पीछे करके आपके शूरवीर और प्रतिपक्षियोंके वह युद्ध जारीहुये जोकि भयभीतों के भयके बढ़ानेवाले थे ५९ हे राजा जैसे कि पूर्व्व समय में देवासुर नाम संग्राम हुआ था उसी प्रकार इन निर्भय लोगों के युद्ध यमराजके देशके बढ़ानेवाले हुये ६० हे राजा इसके पीछे बानर ध्वजाधारी पाण्डुनन्दन अर्ज्जुन युद्ध में संसप्तकों को मारकर उस कौरवीय सेनाके सम्मुख गया ६१ उसीप्रकार सब पांडव जिनमें अग्रगामी धृष्टद्युम्नथा तीक्ष्णबाणोंको छोड़तेहुये उस सेनाके सम्मुखगये ६२ पाण्डवों से घिरेहुये उन लोगोंका ऐसा बड़ा मोह उत्पन्न हुआ कि सब सेना ने दिशा और विदिशाओं को नहीं पहिंचाना ६३ पाण्डवों से चलायमान तीक्ष्णधार बाणोंसे पूर्ण बहुत मृतक शूरोंवाली पराजित चारोंओर से चलायमान ६४ वह कौरवीयसेना महारथी पाण्डवों के हाथ से मारीगई हे राजा इसीप्रकार आपके पुत्रों के बाणों से पाण्डवोंकी भी हजारों सेना युद्ध में चारोंओर से मारीगई वह दोनों सेना अत्यन्त पीड़ित और घायल ६५ । ६६ होकर ऐसी व्याकुल हुई जैसे कि वर्षाऋतु में दो नदियां व्याकुल होती हैं हे राजेन्द्र इसके पीछे उस प्रकारके बड़े युद्ध में आपके पुत्र और पाण्डवों में बड़ा भय उत्पन्नहुआ ६७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिसंकुलयुद्धेदशमोऽध्यायः १० ।

ग्यारहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि उससमय परस्पर युद्ध करनेवाली वह दोनोंसेना ऐसी छिन्न भिन्न और व्याकुल होगईं जैसे कि वर्षाऋतु में दो नदियां होती हैं १ हे राजा उस बड़ेयुद्ध में शूरवीरों के भागने हाथियोंके चिंघाड़ने पुकारने गर्जने पदातियों के भागने २ । ३ बहुत प्रकारसे घोड़ोंके भागने सब जीवों के भयकारी बड़े नाशके वर्त्तमान होने ४ और युद्ध में मतवाले पुरुषों के प्रसन्न करनेवाले भयभीतोंके भय बढ़ानेवाले रथ और हाथियों से युक्त नानाप्रकार के भिड़ने ५ परस्पर मारने के अभिलाषी शूरवीरों के सेना में प्रवेश करने और बड़े घोर जीव नाशरूपी द्यूतके होनेपर ६ पाण्डवोंने यमराजके देशके बढ़ानेवाले घोररूप युद्ध में तीक्ष्ण बाणोंसे आपकी सेना को छिन्न भिन्न करदिया ७ उसीप्रकार आपके वीरों ने भी पाण्डवोंकी सेनाके लोगों को मारा भयभीतों के भयके उत्पन्न करने वाले उस युद्धके जारीहोने पर ८ सूर्य्योदय के पीछे दिनके प्रथमभाग के वर्त्तमान होनेपर महात्मा से रक्षित लक्ष्यभेदन करनेवाले प्रतिपक्षी ९ मृत्युको पीछे करके आप की सेना से युद्ध करनेलगे उन बलवान् अहंकारी लक्ष्यभेदी और प्रहार करनेवाले पाण्डवों से १० कौरवीयसेना ऐसे पीड़ामान हुई जैसे कि अग्निसे व्याकुल मृगी और जैसे कि निर्बल गौ कीचमें फँसी पीड़ित होती है तब उस प्रकारसे पीड़ामान सेनाको देखकर ११ उनके छुटाने का अभिलाषी राजा शल्य पाण्डवीय सेनाके सम्मुख गया अर्थात् अत्यन्त क्रोधयुक्त राजामद्र उत्तम धनुषको लेकर १२ युद्ध में मारनेका अभिलाषी होकर पाण्डवों के सम्मुख गया हे महाराज युद्ध से विजयी शोभायमान पाण्डवों ने भी १३ राजामद्रको पाकर तीक्ष्णधारवाले बाणों से घायलकिया इसके पीछे बड़े पराक्रमी राजामद्र ने सैकड़ों बाणों से उस सेनाको धर्म्मराजके देखतेहुये पीड़ामान किया हे राजा इस के अनन्तर बहुतसे अशुभ लक्षणोंके चिह्न प्रकटहुये और पर्व्वतों समेत शब्द करनेवाली पृथ्वी भी कम्पायमान हुई चारोंओर से फटनेवाली दण्ड और शूल रखनेवाली प्रकाशित उल्का १४ । १५ । १६ सूर्य्यमण्डल को भेदकर स्वर्ग से पृथ्वीपर गिरी हेराजा बहुधा मृग भैंसे और पक्षियोंने भी १७ आपकी सेनाको दक्षिण किया शुक्र और मंगल बुधसे संयुक्तहुये १८ यह शकुन पाण्डवोंके पीछे

और अन्य सबराजाओंके आगेहुये और नेत्रोंको घायलकरके बरसनेवालीज्वाला शस्त्रोंकी नोकोंपर प्रकटहुईं और काक उलूक ध्वजा और शिरों पर बैठगये उसकेपीछे सेनाके समूहों में घूमनेवालोंका महाउग्र युद्धहुआ १६।२० इसकेपीछे कौरव सब सेनाओं पर चढ़ाई करनेवाले होकर पाण्डवों की सेनाके सम्मुख गये २१ फिर प्रसन्नचित्त शल्य बाणोंकी वर्षाकरता कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिरपर बर्षा करने लगा २२ बड़ेपराक्रमी ने सुनहरीपुंखवाले और तीक्ष्ण धारवाले दश २ बाणों से भीमसेन और सब द्रुपदके पुत्रोंसमेत नकुल सहदेव २३ धृष्टद्युम्न सात्यकी और शिखण्डी को भी घायल किया २४ इसके पीछे ऐसी बाणोंकी बर्षाकरी जैसे कि बर्षा ऋतुमें इन्द्र करताहै हे राजा इसके पीछे हजारों सोमक और प्रभद्रक नाम क्षत्री२५ शल्यके बाणों से गिरतेहुये ऐसे दिखाईपड़े जैसे कि भौंरों के झुंड और टीड़ियों के समूह दीखते हैं २६ और जैसे कि बादलों से बिजली गिरती है उसी प्रकार शल्यके बाण गिरे हाथी घोड़े पति रथी यह सब पीड़ामान २७ शल्यके बाणों से महाव्याकुल घूमते और शब्दोंको करते गिरपड़े राजामद्र क्रोध और शूरतामें पूर्ण होकर २८ कालसृष्टि में अन्त के समान गर्जने बादल के समान शब्दायमान बड़े बलवान् राजा मद्रने युद्धमें शत्रुओंको अच्छीरीतिसे आच्छादितकिया २९ शल्यके हाथसे घायल पाण्डवी सेना कुन्ती के पुत्र अजातशत्रु युधिष्ठिरकी ओर दौड़ी ३० इसके पीछे बड़े पराक्रमी शल्य ने तीक्ष्णबाणों से उस सेनाको युद्धमें मर्द्दनकरके बड़ी बाणों की बर्षा से युधिष्ठिर को पीड़ामान किया ३१ क्रोधयुक्त राजा युधिष्ठिर ने पति और घोड़ों समेत उस आतेहुये शल्यको तीक्ष्णबाणों से ऐसे रोका जैसे कि अंकुशों से मतवाले हाथीको रोकते हैं शल्यने बिषैले सर्पके समान घोरबाण उसके ऊपर छोड़ा ३२ वह बाण महात्मा युधिष्ठिर को छेदकर बड़ी तीव्रता से पृथ्वी पर गिरा इसके पीछे क्रोधयुक्त भीमसेनने शल्यको पांच बाणोंसे घायलकिया ३३ सहदेव ने पांचसे और नकुलने दशबाणोंसे घायल किया और द्रौपदी के पुत्र उस शत्रुओंके मारनेवाले शल्य पर ३४ बाणों की ऐसी बर्षा करनेलगे जैसे कि बादल पर्व्वत पर करते हैं इसके पीछे चारोंओर को पाण्डवों के हाथसे पीड़ामान शल्यको देखकर ३५ अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतबर्मा और कृपाचार्य सम्मुख दौड़े और बड़ा पराक्रमी उलूक और सौबलका पुत्र शकुनी यह सब सम्मुखगये ३६ फिर युद्धमें महाबली अश्वत्थामा

और आपके सब पुत्रोंने धीरेपने से मिलकर शल्यकी रक्षाकरी ३७ कृतबर्मा ने शिली मुख नाम तीनबाणों से भीमसेन को छेदकर बड़ी बाणों की वृष्टि से उस क्रोधरूपको रोका ३८ इसके पीछे क्रोधयुक्तने बाणोंकी बर्षा से धृष्टद्युम्नको पीड़ामानकिया शकुनी द्रौपदी के पुत्रोंके और अश्वत्थामा नकुल और सहदेव के सम्मुख गया ३९ युद्ध कर्त्ताओं में श्रेष्ठ बड़ा तेजस्वी पराक्रमी दुर्य्योधन युद्धमें अर्जुन और केशवजी के सम्मुखगया और बाणोंसेभी घायलकिया ४० हे राजा इसप्रकार जहां तहां आपके शूरबीरों के सैकड़ों द्वन्द्वयुद्ध शत्रुओं के साथ महा घोररूप और अपूर्वहुये ४१ भोजबंशी कृतबर्म्मा ने युद्धमें भीमसेनके रीछ बर्ण घोड़ोंको मारा मृतक घोड़ेवाले उस पांडुनन्दन भीमसेनने रथकी बैठकसे उतर कर ४२ कालदंडके समान हाथमें गदाको लेकर युद्धकिया राजामद्र ने सहदेव के सम्मुख उन घोड़ोंको मारा ४३ फिर सहदेवने शल्यके पुत्रको खड्गसे मारा और कृपाचार्य्य धृष्टद्युम्न से युद्ध करनेलगे ४४ भयजनित व्याकुलता से रहित उपाय करनेवाले आचार्य्य के पुत्र गुरूजी उस भ्रांती से रहित उपाय करनेवाले धृष्टद्युम्नसे अच्छेप्रकारसे लड़े न्यून क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने मन्द मुसकानके साथ द्रौपदी के प्रत्येक शूरबीर पुत्र को दश दश बाणों से घायल किया इसके पीछे भीमसेन के घोड़ों को मारा ४५ । ४६ मृतक घोड़ेवाले बड़े पराक्रमी उस पाण्डुनन्दन भीमसेनने शीघ्रही रथ से उतरकर कालदण्ड के समान गदा को उठाकर ४७ कृतबर्म्मा के रथ और घोड़ों को चूर्ण किया कृतबर्म्मा भी उस रथ से कूदकर हटगया ४८ हे राजा फिर सोमक और पाण्डवों को मारते अत्यन्त क्रोधयुक्त शल्यने भी तीक्ष्णबाणोंसे युधिष्ठिरको फिर पीड़ामान किया ४९ क्रोधयुक्त दांतों को पीसकर पराक्रमी भीमसेन ने युद्ध में उसके नाश के निमित्त अवकाश देखकर गदाको लिया ५० जो कि यमराजके दण्डरूप कालरात्रि के समान ऊंची हाथी घोड़े और मनुष्यों के प्राणों की नाश करनेवाली सुबर्ण के वस्त्रोंसे मढ़ीहुई ज्वलित उल्काके समान ५१ शैक्यमें रहनेवाली सर्पिणी के समान बड़ीउग्र बज्रके समान लोहमयी चन्दन और अगर से लिप्त स्वेच्छाचारी तरुण स्त्रीके समान बसा रुधिरसे लिप्त अङ्ग बिरवती देवी की जिह्वाके समान सैकड़ों सुंदर घण्टों के समान शब्दायमान इन्द्रबज्रके समान ५२ । ५३ कांचली से छुटे बिषधर सर्प्पकी समान हाथीके मदों से सम्बन्ध रखनेवाली शत्रुओं

की सेनाओं को भयभीत करनेवाली अपनी सेनाओंकी प्रसन्नकरने वाली ५४ त्रिलोकी में बिख्यात पर्वतोंके शिखरोंकी तोड़नेवालीथी जैसे कि बलवान् भीमसेन ने कैलास भवन में शिवजी के मित्र ५५ अत्यन्त क्रोधयुक्त कुबेरजी को बुलाया और मन्दिरके लिये मायारूप अहंकारी बहुतसे गुह्यकों को गंधमादन पर्व्वतपर मारा बहुत से रुकेहुये और द्रौपदी के हितमें नियतहोकर भीमसेन ने ऐसा पराक्रम किया ५६। ५७ वह महाबाहु बज्रमणि और रत्नोंसे जटित अष्टकोण रखनेवाली बज्रके समान महाभारी उसगदाको उठाकर युद्ध में शल्यके सम्मुखगया ५८ उस युद्ध कुशल ने इस भयकारी शब्दवाली गदासे शल्यके चित्तके समान शीघ्रगामी चारोंघोड़ोंको मारा ५९ इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त गर्जतेहुये बीर शल्यने तोमरको भीमसेनकी बड़ी छातीपर मारा वह उसके कवच को काटकर गिरपड़ा ६० फिर भयजनित व्याकुलता रहित भीमसेनने उसी तोमरको उठाकर राजा मद्रके सारथीको छातीपर छेदा वह टूटे कवच चित्तसे भयभीत रुधिरको बमन करता ६१ महादुःखीहोकर समत्तमेंही गिरपड़ा और राजा मद्र हटगया आश्चर्य्य चित्त धैर्य्यमती बुद्धिवाले राजाशल्यने कर्मके बदले कर्म को देखकर गदाको लेकर शत्रुको देखा ६२ उसके पीछे प्रसन्न चित्त पाण्डवोंने युद्धमें साधारण कर्मवाले भीमसेनके उसकर्मको देखकर उसकी प्रशंसाकरी ६३॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिसंकुलयुद्धेएकादशोऽध्यायः ११॥

बारहवां अध्याय॥

संजयबोले कि हे राजा तब शल्य सारथीको गिराहुआ देखकर केवल लोहमयी गदाको तीव्रतासे लेकर पर्वतके समान निश्चय होकर नियतहुआ १ भीमसेन तीव्रतासे बड़ी गदाको लेकर उसप्रकाशित कालाग्निके समान पाशधारी यमराज शिखरधारी कैलास के समान बज्रधारी इन्द्रके २ शूलधारी रुद्रके और वनके मतवाले हाथीके समान शल्यके सम्मुख दूटा ३ उसके पीछे शंखादि हजारों बाजोंके कठिन शब्द और शूरोंकी प्रसन्नताके बढ़ानेवाले सिंहनाद उत्पन्न हुये ४ सब ओरसे उस रणभूमिके बड़े हाथीरूप भीमसेन और शल्यको देखकर आपके और पाण्डवोंके शूरवीरों ने धन्य धन्य शब्दकिया ५ युद्धमें शल्य और यदुनंदन बलदेवजी के सिवाय दूसरा मनुष्य भीमसेन के बेगके सहनेको समर्थ

नहीं होसक्ता है ६ उसी प्रकार युद्धमें भीमसेनके सिवाय दूसरा शूरवीर महात्मा शल्यकी गदाके वेगके सहने को उत्साह नहीं करसक्ताहै ७ वह चेष्टा करनेवाले वृषभकेतुल्य गर्जनेवाले गदाधारी शल्य और भीमसेन मण्डलों को घूमे ८ मंडल घूमने के मार्ग और गदाके प्रहारों में उनदोनों पुरुषोत्तमों का युद्ध समान हुआ ९ शल्यकी घुमाई हुई वह गदा तपायेहुये सुवर्ण की बनीहुई प्रज्वलित अग्निके समान उज्वल वस्त्रोंसे भयकी बढ़ानेवाली हुई १० इसीप्रकार मण्डलों में मार्गों के घूमनेवाले महात्मा भीमसेन की गदा बिजली बादल के समान शोभायमान हुई ११ हे राजा राजामद्रकी गदासे घायल आकाशमें चलनेवाले के समान भीमसेनकी गदाने अग्निकी ज्वालाओं को छोड़ा १२ इसी प्रकार भीमसेनकी गदासे घायल शल्यकी गदा अंगारों की वर्षा करनेवाली हुई वह आश्चर्य्यसाहुआ १३ जैसे दोबड़े हाथी दांतों से और बड़े बैल सींगों से प्रहारकरैं उसीप्रकार उनदोनोंने भी परस्पर गदाओं से प्रहार किया फिर वहदोनों क्षणमात्रमेंही रुधिर से लिप्तशरीर गदासे घायल अंग ऐसे देखने के योग्यहुये जैसे कि किंशुकके दो वृक्षहोते हैं १४ । १५ शल्य की गदासे वाम और दक्षिणओर से घायल वह पर्वतके समान भीमसेन कंपायमान नहीं हुआ १६ उसीप्रकार भीमसेनकी वेगयुक्त गदासे वारम्बार घायल शल्यभी ऐसे पीड़ामान नहींहुआ जैसे कि हाथी से घायल पर्व्वत पीड़ामान नहीं होता १७ उनदोनों पुरुषोत्तमों की गदाओं के आघातित शब्द जो कि वज्र के शब्द की समान थे दशोंदिशाओं में सुनेगये १८ गदा ऊंची करनेवाले बड़े पराक्रमी वह दोनों लौटकर फिर मार्गों में नियत होकर मण्डलों को घूमे १९ इसके पीछे आठचरण पास जाकर और गदाको उठाकर बुद्धिसे बाहर कर्म करनेवाले उन दोनों की चढ़ाइयां लोहके दंडों से हुईं २० तब वह दोनों बड़े कुशल महा अभ्यासी विजय के चाहनेवाले दोनों मण्डलों को घूमे उससमय दोनों ने अपने अपने मुख्य कर्म्मों को दिखाया २१ इसके पीछे उन दोनों ने शिखरधारी पर्वतों के समान घोर गदाओं को उठाकर परस्पर में ऐसे घायल किया जैसे कि भूकम्प में दो पर्व्वत परस्पर घायल करते हैं २२ वह दोनों वीर परस्पर क्रोधयुक्त गदाओं से अत्यन्त घायल इन्द्रध्वजा के समान एक साथही गिरपड़े २३ तब दोनों सेनाओं के वीर लोग हाहाकार करनेलगे मर्म स्थलों में अत्यन्त घायल दोनों

अचेत होगये २४ इसकेपीछे पराक्रमी कृपाचार्य राजामद्रको अपने रथपर बैठा कर युद्धभूमि से दूर लेगये २५ भीमसेन नशेकरनेवाले के समान एक निमिष मेंही अचेततासे सचेत होकर उठा और गदा हाथमें लेकर राजामद्रको बुलाया २६ इसके पीछे नानाप्रकार के शस्त्रों से संयुक्त आपके शूरबीरों ने नानाबाजों समेत पाण्डवीय सेना से युद्ध किया २७ हे महाराज इसके अनन्तर वह सब शूरवीर जिनका अग्रवर्त्ती दुर्य्योधनथा दोनों भुजा और शस्त्रों को ऊंचा करके बड़े शब्दों समेत सम्मुख गये २८ फिर वह पाण्डुनन्दन उस सेना को सम्मुख देखकर सिंहनादों समेत दुर्य्योधनादिकके सम्मुखगये २९ हे भरतर्षभ आप के पुत्रने शीघ्रही उन आते हुओं के मध्यमें चेकितानको प्रासते हृदयपर कठिन घायलकिया ३० आपके पुत्रसे घायल रुधिरसे लिप्त वह चेकितान बड़ी अचेतताको पाकर रथ के बैठने के स्थानपर गिरपड़ा ३१ पाण्डवों के महारथियों ने चेकितानको घायल और अचेत देखकर वारी २ से वाणोंकी बर्षाको बरसाया३२ हे महाराज विजय से शोभायमान और चारोंओर से दर्शनीय पाण्डव लोग आपकी सेनामें घूमनेलगे ३३ बड़े पराक्रमी कृपाचार्य्य, कृतबर्मा और शकुनी ने जिनमें अग्रवर्त्ती राजामद्रथा उन सबने धर्म्मराज से युद्धकिया ३४ हे राजा आपके पुत्रकी प्रेरणासे उन तीनहजार रथियोंने जिनके अग्रवर्त्ती अश्वत्थामा थे अर्जुनसे युद्धकिया ३५ बिजयमें संकल्प करनेवाले और युद्धमें जीवन को त्यागनेवाले आपके शूरवीरों ने सेनामें ऐसे प्रवेशकिया जैसे कि हंस बड़े सरोवरमें प्रवेश करते हैं ३६ इसके पीछे परस्पर मारने के अभिलाषी उन बीरों का महाघोर युद्धहुआ जोकि परस्पर मारने की अभिलाषा से युक्त और अन्योन्य प्रीति बढ़ानेवालाथा ३७।३८ हे श्रेष्ठ राजा वीरोंके नाशकारी उस युद्धके जारी होनेपर हवासे उठाईहुई घोर धूल पृथ्वीसे उठी ३९ पाण्डवोंके कहने और नामों के सुननेसे हमने परस्परमें उनको जाना जो निर्भयके समान युद्ध करतेथे ४० हे पुरुषोत्तम वह धूल रुधिरसे शान्तहोगई उस अँधेरेके दूरहोनेपर साफ २ दिशा विदितहुईं इसप्रकार भयभीतों के भय के बढ़ानेवाले ४१ घोर युद्ध के बर्त्तमान होनेपर आपके और प्रतिपक्षियोंके शूरबीरों मेंसे किसीने मुखको नहीं मोड़ा ४२ युद्धभूमिमें शुभयुद्धसे विजयके अभिलाषी और स्वर्ग के चाहनेवाले लोग ब्रह्म लोक के अभिलाषी होकर चढाई करनेवाले हुये ४३ तब स्वामी के कार्य्य में

निश्चय करनेवाले और स्वर्ग में प्रवृत्तचित्त शूरबीर स्वामी के अन्नोदकके बिमोक्षार्थ युद्ध करनेलगे ४४ महारथी लोग नानाप्रकारके शस्त्रों को छोड़ते परस्पर सम्मुख गर्जते हुये युद्धमें प्रवृत्तहुये और प्रहार करनेलगे ४५ उससमय आपकी और उनकी सेनामें मारो छेदो पकड़ो प्रहारकरो यहीशब्द सुनेगये ४६ हे महाराज इसके पीछे मारने के अभिलाषी शल्य ने महारथी धर्म्मराज युधिष्ठिर को तेजधार बाणों से घायलकिया ४७ फिर मर्मके ज्ञाता हँसतेहुये युधिष्ठिरने मर्मों को लक्ष्यकरके चौदह नाराचोंकोमारा ४८ फिर युद्धमें क्रोधयुक्त राजा मद्रने कंक पक्षवाले बहुतसे बाणों से युधिष्ठिरको ढककर घायलकिया ४९ हे महाराज फिर सब सेनाके देखते टेढ़े पर्व्ववाले बाणों से भी युधिष्ठिरको घायलकिया ५० क्रोधयुक्त बड़ेयशवान् धर्म्मराजनेभी तीक्ष्णधार कंक और मोरपक्षसे जटित बाणोंसे राजामद्रको घायलकिया ५१ इसको घायलकरके महारथीने चन्द्रसेन को सत्तर बाणसे सारथीको नौ बाणसे और द्रुमसेनको चौंसठ बाणोंसे घायल किया ५२ हे राजा महात्मा पाण्डव के हाथ से चक्र के रक्षक के मरने पर शल्य ने पच्चीस चन्देरी देशियोंको मारा ५३ रणभूमिमें पच्चीस बाणसे सात्यकी को सातबाण से भीमसेनको और सौ बाणोंसे नकुल और सहदेवको घायलकिया ५४ क्षत्रियोंके नाश करनेवाले पाण्डवने बिषैले सर्पकी समान बाणों को उस इसप्रकार घूमने वालेके ऊपर फेंके ५५ कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने इससम्मुख बर्त्तमानकी ध्वजाको रथके युद्ध द्वारा जुदाकिया ५६ हँसतेहुये पाण्डव ने इसप्रकार से उसकी ध्वजा को काटा और हमने पर्व्वतके टूटे शिखरके समान उसको गिरतेहुये देखा ५७ मद्रका राजा गिरीहुईध्वजाको और सम्मुखबर्त्तमान युधिष्ठिरकोदेखकर अत्यन्त क्रोध युक्त होकर बाणों की वर्षा करने लगा ५८ क्षत्रियों में श्रेष्ठ बड़ा साहसी शल्य वर्षा करनेवाले बादलों के समान बाणोंकी वर्षासे क्षत्रियों पर वर्षा करने लगा ५९ और उसने सात्यकी, भीमसेन, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव इनको पांच २ बाणों से छेदकर युधिष्ठिर को पीड़ामान किया ६० इसके पीछे युधिष्ठिर की छाती पर उठेहुये मेघ जालकी समान फैलेहुये बाण जालों को देखा ६१ युद्धमें क्रोधयुक्त महारथी शल्यने गुप्तग्रन्थीवाले बाणों से उसकीदिशा और विदिशाओं को ढकदिया ६२ इसके पीछे बाणजालों से पीड़ामान राजा युधिष्ठिर पराक्रमसे ऐसे रहित होगया जैसे कि इन्द्रके हाथसे जृम्भअसुर हुआथा ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिसंकुलयुद्धोनामद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले हे श्रेष्ठ राजामद्रके हाथसे धर्म्मराजके पीड़ामान होनेपर सात्यकी भीमसेन और नकुलने १ रथों से शल्यको घेरकर युद्धमें पीड़ामान किया बहुत से महारथियों के हाथसे उस अकेले को पीड़ामान देखकर २ बड़ा धन्यबाद का शब्द उत्पन्नहुआ और सिद्धलोग बहुत प्रसन्नहुये और मिलेहुये मुनियोंने भी आश्चर्य माना ३ भीमसेन ने पराक्रम में भालुरूप शल्यको युद्धमें एकबाण से घायलकरके फिर सातबाणोंसेछेदा ४ फिर सात्यकी धर्मपुत्रकी इच्छासे सौबाणों से राजा मद्रको ढककर सिंहनादको गर्जा ५ नकुल ने पांचबाण से और सहदेव ने सात बाणोंसे उसको छेदकर फिर शीघ्रही उसको पांचबाणों से छेदा ६ फिर उन महारथियोंसे पीड़ामान युद्धमें उपाय करनेवाले शूर शल्यने बेगके नाशक और भारके धारण करनेवाले घोरबाण को खैंचकर ७ सात्यकी को पचीसबाण से भीमसेन को तिहत्तर बाणसे और नकुलको सातबाणसे घायल किया इसके पीछे ८ शल्यने धनुषधारी सहदेव के धनुषको विशिख नाम बाणसमेत भल्लसे काटकर उसको इकीस बाणसे छेदा ९ इसके पीछे सहदेवने दूसरे धनुषको तैयार करके बड़े तेजस्वी मामाको उन पांच बाणोंसे घायल किया १० जो कि बिषैले सर्पके समान और प्रज्वलित अग्निके समान थे फिर अत्यन्त क्रोधयुक्तने टेढ़े पर्ववाले बाणसे उसके सारथीको ११ अत्यन्त छेदा और उसको भी तीनबाणों से घायल किया भीमसेन ने सत्तर बाणसे सात्यकीने नौबाणोंसे १२ और धर्मराजने साठ बाणोंसे शल्यको अङ्गोंपर घायलकिया हे महाराज फिर उन महारथियोंके हाथसे घायलहुये शल्यने १३ अपने अङ्गोंसे रुधिरको ऐसे गिराया जैसे कि पर्बत धातुओंको गिराताहै तब उसने पांच२ बाणोंसे उन सब बड़े२ धनुषधारियोंको १४ बेगसे छेदा यह आश्चर्यसा हुआ हे श्रेष्ठ फिर उसमहारथीने युद्धमें दूसरे भल्लसे धर्मपुत्रके धनुषकोकाटा १५ फिर धर्मपुत्रनेभी दूसरे धनुषको लेकर १६ शल्यको घोड़े सारथी ध्वजा और रथके साथ ढक दिया धर्मपुत्रके शायकों से ढकेहुये उस शल्यने १७ तेजधार दशबाणोंसे युधिष्ठिरको छेदा फिर बाणोंसे धर्मपुत्रके पीड़ित होनेपर क्रोधयुक्त सात्यकीने १८ मद्रदेशियोंके राजाको बाण समूहों से हटाया उसने भी क्षुरप्रसे सात्यकी के बड़े धनुषको काटा १९ और उन

भीमसेनादिकों को तीन २ वाणसे पीड़ित किया हे महाराज सत्यपराक्रमी क्रोधयुक्त सात्यकीने सुनहरी दण्डवाले बहुमूल्य तोमरको उसपर चलाया २० फिर भीमसेनने ज्वलित सर्प के समान नाराचको नकुलने शक्तिको और सहदेव ने शुभगदाको चलाया २१ युद्धमें शल्यके मारने के अभिलाषी धर्म्मराजने शतघ्नीको चलाया पांचोंके हाथसे छोड़ेहुये और आतेहुये अस्त्र समूहोंको २२ युद्ध में राजामद्रने रोका शल्यने सात्यकी के चलाये हुये तोमरको भल्लसे काटा २३ हस्तलाघवी प्रतापवान् शल्यने भीमसेनके चलाये हुये सुवर्ण से अलंकृत वाण को भी युद्धमें दो खण्ड किया २४ और नकुलकी चलाई हुई महाभयकारी शक्तिको और सहदेवकी फेंकीहुई गदाको वाणों के समूहों से काटा हे भरतवंशी दो वाणों से राजाकी उस शतघ्नीको काटा २५ और सब पाण्डवों के देखते सिंहनादोंसे गर्जा सात्यकी ने युद्ध में शत्रुकी विजयको नहीं सहा २६ तब क्रोधसे मूर्च्छमान सात्यकी ने दूसरे धनुषको लेकर दोवाण से शल्यको घायल करके तीन वाणसे सारथीको घायल किया २७ इसके पीछे क्रोधभरे शल्यने उन सब को दशवाणों से ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि अंकुशों से बड़े २ हाथियों को करते हैं वह शत्रुओंके मारनेवाले महारथी युद्ध में राजामद्र से रोकेहुये होकर २८ उसके सम्मुख नियत होनेको समर्थ नहींहुये इसके पीछे राजादुर्योधन ने शल्यके पराक्रमको देखकर २९ पाण्डव पांचाल और सृञ्जियों को मृतकरूप माना हेराजा फिर प्रतापवान् महाबाहु भीमसेनने ३० चित्त से जीवनको त्याग करके राजा मद्रसे युद्धकिया और बड़े पराक्रमी नकुल सहदेव और सात्यकी ने ३१ शल्यको घेरकर चारों ओरको वाणोंसे आच्छादित करदिया फिर पाण्डवों के बड़े धनुषधारी महारथियों से ३२ घिरेहुये उस प्रतापवान् राजामद्र ने सबसे युद्ध किया हेराजा तब धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरने बड़े युद्ध में अपने क्षुरप्र से ३३ उस राजामद्रके चक्र रक्षकको शीघ्रतासे मारा फिर उस शूर महारथी चक्ररक्षकके मारे जानेपर ३४ बड़े बलवान् राजामद्रने वाणों से सेनाके सब लोगों को ढक दिया इसके पीछे धर्म्मराज युधिष्ठिरने युद्ध में वाणों से ढकेहुये उन सेनाके लोगों को देखकर ३५ चिन्ताकरी कि माधवजीका वह वचन कैसे निश्चय करके सत्यहोय ३६ कि हे पाण्डवोंके बड़ेभाई युद्धमें क्रोधयुक्त राजाशल्य तेरी सेनाका नाश नहीं करेगा इसके अनन्तर चारों ओरसे पीड़ित करते पाण्डवों ने रथ हाथी और

घोड़ों समेत जाकर ३७ राजा मद्रको प्राप्त किया राजाने नानाप्रकार के शस्त्रों समेत उठीहुई बाणवृष्टि को ३८ युद्धमें ऐसे छिन्नभिन्न किया जैसे कि बायु बड़े बड़े बादलों को अलग २ करदेता है इसके पीछे शल्यजनित आकाश में वर्त्त-मान सुनहरी पुंखों के बाणवृष्टिको शलभाओं के समूहों के समान देखा युद्धके मुखपर राजामद्रके चलायेहुये ३९। ४० वह बाण चलतेहुये पक्षियोंके समूहोंके समान दिखाई पड़े हे राजा शल्यके छोड़ेहुये सुवर्ण से अलंकृत बाणों से ४१ आकाश अत्यन्त ब्याप्त होगया वहां पाण्डवों का और हमारा कोई शूरबीर दृ-ष्टिनहीं पड़ा ४२ उस बड़ेयुद्धमें बलवान् राजामद्रकी हस्तलाघवता और बाणों की बर्षासे महा अन्धकार होनेपर ४३ और समुद्ररूपी पाण्डवोंकी सेनाको छिन्न भिन्न किया हुआ देखकर देवता गन्धर्व और दानवोंने बड़ाआश्चर्य किया ४४ श्रेष्ठ फिर वह शल्य सब ओरसे उन लोगोंको युक्ति पूर्व्वक बाणों से पीड़ामान करके धर्मराजको आच्छादितकरके सिंहके समान बारंबार गर्जा ४५ तब युद्धमें उसके बाणोंसे ढकेहुये पाण्डवोंके महारथी युद्धमें उस महारथी के सम्मुख जाने को समर्थ नहीं हुये ४६ भीमसेनादिक रथियों ने जिनके अग्रवर्त्ती धर्मराज थे युद्ध को शोभा देनेवाले शूरबीर शल्यको रण में त्यागनहीं किया ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिशल्ययुद्धेत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

चौदहवां अध्याय॥

सञ्जय बोले कि युद्ध में अश्वत्थामा और उसके आगे पीछेवाले त्रिगर्त्त देशियों के शूर महारथियोंके बाणोंसे छिदेहुये अर्ज्जुनने १ युद्धमें तीन शिली-मुख बाणोंसे अश्वत्थामाको घायल किया उसीप्रकार अन्य शूरबीरोंकोभी अ-र्ज्जुनने दोदो बाणों से छेदा २ हे महाराज फिर बाणों की बर्षासे आच्छादित करदिया हेभरतर्षभ बाणोंसे बिदीर्ण उन आपके शूरवीरोंने ३ जोकि तेजबाणों से पीड़ामान थे अर्ज्जुनको पाकर त्याग नहीं किया वह महारथी जिनके अग्र-वर्त्ती अश्वत्थामाजी थे उन्होंने रथोंके समूहोंसे ४ अर्ज्जुनको घेरकर युद्धकिया हे राजा उनके छोड़ेहुये सुवर्णसे अलंकृत बाणों ने ५ वेगसे अर्ज्जुन के रथके बैठने के स्थानको भरदिया उसी प्रकार सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ बड़े धनुषधारी श्रीकृष्ण और अर्ज्जुनको ६ बाणोंसे घायल अंग देखकर युद्धमें दुर्म्मद शूरवीर

प्रसन्न हुये हे समर्थ तब कूबर रथचक्र, रथ, योक्त्र, युग, अनुकर्ष यह सब रथके अंग बाणरूप होगये ७ हेराजा पूर्बसमयमें वहां आपके शूरबीरों ने जैसीदशा अर्ज्जुनकी करी वैसी दशा पूर्बसमय में न देखीगई न सुनीगई ८ वह रथ पुंख-युक्त तीक्ष्णबाणों से सब ओरको ऐसा दिखाई देताथा जैसे कि पृथ्वीपर सैकड़ों उल्काओंसे प्रकाशमान बिमान होताहै ९ हे महाराज फिर अर्ज्जुनने गुप्तग्रन्थी वाले वाणोंसे उसकी सेनाको ऐसा ढकदिया जैसे बादल अपनी बर्षासे पर्व्वत को ढक देताहै १० युद्धमें उन बाणोंसे जिनपर कि अर्ज्जुनका नाम चिह्नितथा घायल और उसप्रकारके अर्ज्जुनको देखतेहुये उनलोगोंने लोकको अर्जुनरूप माना ११ उस अर्ज्जुनरूपी अग्नि ने जिसकी क्रोधरूपी ज्वालासे उत्पन्न होने वाले बाण हवा और धनुषके बड़े शब्दथे उस अग्निने शीघ्रही सेनारूपी इंधन को भस्मकिया १२ हे भरतबंशी महाबाहु धृतराष्ट्र अर्ज्जुनके रथमार्ग्गों में पृथ्वी पर गिरते चक्र रथ युग तूणीर और रथोंसमेत पताका ध्वजा १३ ईशा, अनुकर्ष त्रिबेणु, अक्ष, योक्त्र और सबप्रकार के चाबुक १४ कुण्डल और बेष्टनधारी गिरे हुये शिर भुजा कन्धे १५ व्यजनोंसमेत छत्र और मुकुटोंकेढेर चारोंओर दिखाई पड़े १६ हेराजा इसके पीछे क्रोधयुक्त अर्ज्जुनके रथमार्ग्ग में पृथ्वी दुर्ग्गम्य और मांस रुधिरकी कीच रखनेवाली होगई १७ हे भरतर्षभ वह रणभूमिमें रुद्रजी के क्रीड़ास्थानके समान भयभीतों का भय बढ़ानेवाला और शूरबीरोंकी प्रसन्नता का बढ़ानेवाला हुआ १८ फिर शत्रुओंका तप्तकरनेवाला अर्ज्जुन युद्धमें कवच धारी दोहज़ार रथियोंको मारकर निर्धूम अग्निके समान प्रकाशमान हुआ १९ हे राजा जैसे कि प्रलयकालमें भगवान् अग्नि सब जड़ चैतन्योंको भस्मकरके निर्धूम दिखाई देते हैं उसी प्रकार कुन्तीका पुत्र अर्ज्जुन दिखाई पड़ा २० फिर अश्वत्थामाने युद्धमें अर्ज्जुनके पराक्रमको देखकर बड़ी पताकावाले रथसमेत अर्ज्जुनको रोका २१ तब परस्पर मारने के अभिलाषी धनुषधारियों में श्रेष्ठ वह दोनों पुरुषोत्तम परस्पर सम्मुखहुये २२ हेमहाराज उन दोनोंकी बाणबृष्टि ऐसी बड़ी भयकारी हुई जैसे कि बर्षाऋतुमें बर्षा करनेवाले दो बादलोंकी होती है २३ तब परस्पर ईर्षा करनेवाले उन दोनोंने गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे ऐसे परस्पर घा-यलकिया जैसे कि सींगोंसे दोबैल परस्पर घायल करते हैं २४ हे महाराज उन दोनोंका युद्ध देरतक सीधाहुआ इसके पीछे वहां शस्त्रोंका घोर संघट्टनहुआ २५

तब अश्वत्थामा ने सुनहरी पुंख और सुन्दरबेतवाले बारह बाणों से अर्ज्जुनको और दश बाणोंसे बासुदेवजी को घायल किया २६ इसके पीछे अर्ज्जुनने बहुत हँसकर गाण्डीव धनुष को टंकारा और उस बड़े युद्धमें एक मुहूर्त्त गुरूका पुत्र मानकर २७ महारथी अर्ज्जुन ने घोड़े सारथी और ध्वजासे रहित किया इसके पीछे बड़ी मृदुतासे तीनशायकों सेभी उसको घायलकिया २८ तब मृतक घोड़े वाले रथपर नियत मन्दमुसकानकरते अश्वत्थामाने परिघाके समान मूशलको अर्ज्जुनके ऊपर फेंका २९ शत्रुओंके मारनेवाले बीर अर्ज्जुनने उस स्वर्णमयी वस्त्रसे अलंकृत अकस्मात् आतेहुये मूशलको सातखण्डकिये ३० बड़ेक्रोधयुक्त अश्वत्थामाने मूशलको टूटाहुआदेखकर हिमालयके शिखरकीसमान महाघोर परिघको हाथमेंलिया ३१ युद्धमें सावधान अश्वत्थामाने उसको अर्जुनकेऊपर फेंका पाण्डुनन्दन अर्ज्जुनने उसकालरूप क्रोधभरी हुई परिघको देखकर शीघ्र ही पांच उत्तम बाणोंसे खण्ड २ किया ३२ हे भरतर्षभ बड़े युद्धमें अर्जुनके बाणों से टूटीहुई वह परिघ पृथ्वीके महाराजाओं के चित्तोंको विदीर्णकरतीहुई पृथ्वी-परही गिरपड़ी ३३ उसके पीछे अर्जुनने अन्य तीनबाणोंसे अश्वत्थामाको घा-यल किया तब बलवान् अर्ज्जुनके हाथसे अत्यन्त घायल वह बड़े पराक्रमी ३४ अश्वत्थामाजी अपनी वीरतामें नियतहुये इसके पीछे महारथी भारद्वाज अश्व-त्थामाने सुरथनाम क्षत्रीको ३५ सब क्षत्रियोंके देखते बाणोंके समूहोंसे ढकदिया इसके अनन्तर पांचालोंका महारथी सुरथ रणभूमिमें बादलके समान शब्दा-यमान रथकी सवारी से अश्वत्थामाके सम्मुख वर्त्तमान हुआ सब भारके सहने वाले उत्तम दृढ़ धनुषको खैंचतेहुये ३६। ३७ उसने अग्नि और सर्पके समान बाणोंसे उसको ढकदिया आतेहुये महारथी सुरथको क्रोधयुक्त देखकर ३८ अ-श्वत्थामाने दण्डसे घायल सर्पके समान युद्धमें क्रोधकिया होठोंको चाटते अ-श्वत्थामाने भृकुटीको तीन शिखावाली करके ३९ बड़े क्रोधसे उसबीर सुरथको देखकर धनुषकी प्रत्यंचाको चढ़ाकर यमदण्डके समान प्रकाशित तीक्ष्ण नारा-चको छोड़ा ४० इन्द्रबज्रके समान छोड़ाहुआ वह नाराच उसके हृदयको तोड़ पृथ्वी को चीरकर बड़े बेगसे प्रवेश करगया ४१ इसके पीछे नाराच से बिदीर्ण वह बीर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बज्रसे फटनेवाले पहाड़का शिखर गि-रताहै ४२ उस वीरके मरनेपर रथियोंमें श्रेष्ठ प्रतापवान् अश्वत्थामा शीघ्रही उसी

रथपर सवारहुये हे महाराज फिर युद्धदुर्मद महाअलंकृत युद्धमें संसप्तकों समेत अश्वत्थामा ने फिर अर्ज्जुन से युद्धकिया ४३। ४४ वहां मध्याह्नवर्त्ती सूर्य्य के वर्त्तमान होनेपर एकका बहुतों के साथ वह बड़ा युद्धहुआ जोकि यमराज के देशका बढ़ानेवाला था ४५ वहां हमने उन्होंके पराक्रमको देखकर बड़ा आश्चर्य्यकिया जो अकेला अर्ज्जुन एक साथ होनेवाले बहुतसे वीरोंसेलड़ा ४६ एकका बहुतोंके साथ ऐसा बड़ा युद्धहुआ जैसे कि पूर्व्वसमयमें इन्द्रका युद्ध दैत्यों की बड़ी सेनाके साथ हुआथा ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिसंकुलयुद्धोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले हे महाराज दुर्य्योधन और धृष्टद्युम्नने भी बड़ा युद्धकिया वह युद्धभी बाण और शक्तियों से व्याप्तथा १ हे महाराज उन दोनों की बाणधारा ऐसे प्रकटहुईं जैसे कि समयपर चारों ओर से बादलों की जलधारा होती है २ फिर राजा दुर्य्योधनने शीघ्रगामी पांचबाणोंसे धृष्टद्युम्नको घायलकरके उग्रबाण रखनेवाले द्रोणाचार्य्य के मारनेवाले धृष्टद्युम्नको सातबाणोंसे छेदा ३ फिर बलवान् दृढ़ पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने युद्धमें दुर्य्योधन को सत्तर विशिखोंसे पीड़ामान किया ४ हे भरतर्षभ तब उसके सगे भाइयों ने राजाको पीड़ामान देखकर बड़ी सेनासमेत घेरलिया ५ उससमय सबओरको उन अतिरथियों से घिराहुआ वह शूर युद्धमें अस्त्रोंकी तीव्रता दिखाता हुआ अच्छेप्रकार से भ्रमण करनेलगा ६ प्रभद्रकनाम क्षत्रियों से संयुक्त शिखण्डी ने धनुषधारी महारथी कृपाचार्य्य और कृतवर्मासे युद्धकिया ७ हे राजा प्राणोंके द्यूतरूपी युद्धमें प्राणों के त्यागनेवाले उनलोगों का घोररूप महायुद्धहुआ ८ फिर दिशाओंमें बाणवृष्टिको करतेहुये शल्यने पांडवोंको सात्यकी और भीमसेन समेत पीड़ितकिया ९ हे राजेन्द्र इसी प्रकार अश्विनीकुमारोंके समान पराक्रमी उन दोनों नकुल और सहदेवसेभी बलपराक्रम और अस्त्रोंकी सामर्थ्यके द्वारा युद्धकिया १० उस बड़े युद्धमें किसी महारथीने शल्यके शायकोंसे घायल पांडवोंके रक्षकको नहींपाया ११ उसकेपीछे माद्रीनन्दन शूर नकुल धर्मराजके अत्यन्त पीड़ामान होनेपर तीव्रतासे मामाजी के सम्मुखगया १२ शत्रुओंके मारनेवाले मन्दमुसकान करते नकुल ने युद्धमें

इस शल्यको ढककर उन बड़े उग्र दशबाणोंसे छातीपर घायल किया जोकि लोहमयी कारीगरके हाथसे साफ सुनहरी पुंख तेजधार धनुषरूपी यंत्रसे प्रेरणा किये हुयेथे १३।१४ फिर उस महात्मा भानजेके हाथसे पीड़ामान शल्यने टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे नकुलको पीड़ामान किया १५ इसके पीछे राजायुधिष्ठिर भीमसेन सात्यकी माद्रीनन्दन सहदेव यह सब राजामद्रके सम्मुखगये १६ दिशाओंको रथों के शब्दों से पूर्णकरते और पृथ्वीको कँपाते शीघ्र आतेहुये उन बीरों को १७ युद्धमें शत्रु बिजयी सेनापति शल्यने रोका तीनबाणसे युधिष्ठिरको पांचसे भीमसेनको १८ सात्यकीको सौबाणों से और सहदेव को तीनबाणोंसे छेदा हे श्रेष्ठ फिर भी राजामद्रने महात्मा नकुलके धनुषबाण को १९ क्षुरप्रसेकाटा तब शल्य के शायकों से कटाहुआ वह धनुष गिरपड़ा २० इसके पीछे महारथी नकुलने दूसरे धनुषको लेकर शीघ्रही राजामद्र के रथको बाणोंसे भरदिया २१ हे श्रेष्ठ फिर युधिष्ठिर और सहदेव ने दश २ बाणों से इस मद्रके राजाको छाती पर घायल किया २२ और भीमसेनने राजामद्रके सम्मुख जाकर कंकपक्षयुक्त साठबाणों से और सात्यकी ने दश बाणों से उसको घायल किया २३ इसके पीछे क्रोधयुक्त राजामद्र ने सात्यकी को टेढ़े पर्ववाले नौ और सत्तरबाणों से घायलकिया २४ इसके अनन्तर इसके धनुषको भी बाण समेत मूठके स्थानपर काटकर चारोंघोड़ों को भी कालके वशकिया २५ महारथी राजामद्र ने सात्यकी को विरथ देखकर सौ बिशिखों से उसको चारोंओर से घायलकिया २६ हे कौरव फिर क्रोधसे पूर्णने माद्रीके दोनोंपुत्र भीमसेन और युधिष्ठिरको दश २ बाणों से घायलकिया २७ वहां हमने राजामद्रके अपूर्व्व पराक्रमको देखा कि सब पांडव मिलकर भी उसके साथ युद्धमें सम्मुख नहीं हुये २८ इसके पीछे बलवान् सत्य पराक्रमी सात्यकी दूसरे रथपर नियत होकर राजामद्रके आधीन और पीड़ामान पांडवों को देखकर २९ तीव्रता से शल्यके सम्मुखगया युद्धका शोभा देनेवाला शल्य रथकी सवारी से उस आतेहुये रथीके सम्मुख ऐसे गया ३० जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथी के सम्मुख होता है शूर सात्यकी का और राजामद्रका वह युद्ध ऐसा कठिनहुआ ३१ जैसा कि पूर्व्वसमय में सम्बर और देवराज का युद्ध हुआथा ३२ सात्यकीने युद्धमें सम्मुख वर्त्तमान राजामद्रको देखकर दशबाणों से घायल करके तिष्ठ २ शब्दकिया ३३ फिर उस महात्माके हाथसे कठिन घा-

यल राजामद्रने अपूर्व पुंखवाले तीक्ष्णबाणों से सात्यकी को घायल किया ३४ इसके पीछे बड़े धनुषधारी पांडव सृञ्जय और यादव रथोंकी सवारी में मामाके मारने की इच्छाओं से शीघ्र सम्मुखगये ३५ उसके पीछे सिंहके समान गर्जने वाले शूरबीरों का महाकठिन युद्ध रुधिररूपी जल रखनेवाला जारी हुआ ३६ हे महाराज युद्धमें मांसके अभिलाषी सिंहों के समान गर्जनेवाले उन वीरों की परस्पर चढ़ाई बहुत अच्छी हुई ३७ उन्हों के बाणों के हजारों समूहों से पृथ्वी आच्छादित होगई और अन्तरिक्षभी अकस्मात् बाणरूप होगया ३८ वहां चारों ओर से अनेक प्रकारके बाणों का अन्धकार करनेपर महात्माओं के छोड़े हुये बाणोंसे बादलों की सी छाया उत्पन्न होगई ३६ हे राजा वहां सुनहरी पुंखवाले प्रकाशमान कांचली से छुटे सर्पों की समान छोड़े हुये बाणों से दिशा शोभायमान हुई ४० शत्रुओं के मारनेवाले शल्यने बड़ा अपूर्व कर्मकिया जो अकेलेही शूरबीर ने युद्धमें बहुतों के साथ लड़ाईकरी ४१ राजामद्रकी भुजासे छोड़े हुये कंक और मोरके परोंसे जटित गिरते हुये घोरबाणों से पृथ्वी आच्छादित होगई ४२ वहां बड़े युद्ध में शल्यके घूमते हुये रथको ऐसे प्रकारका देखा जैसे कि पूर्व समयमें असुरों के नाशमें इन्द्रका रथ हुआथा ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिसंकुलयुद्धेपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

संजय बोले कि हेसमर्थ इसकेपीछे आपकी सेनाके लोग जिनका अग्रवर्त्ती राजामद्रथा बड़ी तीव्रता से फिर पांडवों के सम्मुख गये १ युद्ध में मतवाले और पीड़ामान दौड़ते हुये आपके उन सब शूरबीरों ने आधिक्यता से क्षणभर में ही पांडवोंको छिन्नभिन्न करदिया २ कौरवोंसेघायल वह पांडव श्रीकृष्ण और अर्जुन के देखते भीमसेन से रोकेहुयेभी युद्धमें नियत नहींहुये ३ उसके पीछे क्रोधयुक्त अर्जुनने कृपाचार्य और कृतबर्मा को उनके साथियों समेत बाण समूहों से ढक दिया ४ सहदेव ने शकुनी को उसकी सेना समेत हटाया नकुलने एक भागमें नियत होकर राजामद्रको देखा ५ और द्रौपदीके पुत्रोंने भी बहुतसे राजाओंको रोका पांचालदेशी शिखण्डीने अश्वत्थामाको रोका ६ और गदाधारी भीमसेन ने राजादुर्य्योधनको रोका कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने सेनासमेत शल्यको रोका ७

इसके पीछे युद्ध से न लौटनेवाले आपके शूरबीर और प्रतिपक्षियों के शूरबीरों का युद्ध जहां तहां बहुत कठिन हुआ ८ वहां हमने युद्ध में शल्यके बहुत बड़े कर्मको देखा जोकि अकेलेनेही पाण्डवोंकी सब सेनाओं से युद्ध किया ९ तब शल्य उस युद्धमें युधिष्ठिर के समक्षमें ऐसा दिखाई पड़ा जैसे कि चन्द्रमाके सम्मुख शनीचर नक्षत्र दिखाई देताहै १० फिर बिषैले सर्पकी समान बाणोंसे राजा को पीड़ामान करके भीमसेनके सम्मुख दौड़ा और बाणों की बर्षा से ढकदिया ११ आपकी और दूसरोंकी सेनाओं ने उसकी हस्तलाघवता और अस्त्रज्ञताकी प्रशंसा करी १२ फिर शल्यके हाथसे पीड़ामान अत्यन्त घायल पाण्डव युधिष्ठिरको पुकारतेहुये युद्धको छोड़भागे १३ राजामद्रके हाथसे सेनाओं के घायल होनेपर धर्म्मराज पाण्डव युधिष्ठिर क्रोध के बशीभूत हुये १४ इसके पीछे बिजय होय वा पराजयहोय यह निश्चय करनेवाले युधिष्ठिर ने बीरता में नियत होकर राजामद्रको पीड़ामान किया १५ सबभाई और माधव श्रीकृष्णजी को बुलाकर बोला कि भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कर्णआदिक जो अन्य राजालोग थे १६ कौरवोंके निमित्त उपाय करनेवाले उन लोगों ने युद्धमें नाशको पाया आपलोग भाग और उत्साहके समान पराक्रम करनेवाले १७ यह महारथी अकेला शल्य मेरा भाग शेषहै सो मैं अब युद्धके द्वारा राजामद्रको बिजय करने की आशा करता हूं १८ अब जो मेरे चित्तकी इच्छा है वह सब आपसे कहता हूं माद्रीके पुत्र शूर नकुल और सहदेव मेरे चक्रके रक्षकहोयँ १९ जोकि युद्धमें इन्द्रसेभी अजेयहोकर बीरों के अङ्गीकृत हैं अच्छाहै यह युद्ध में क्षत्रीधर्म को आगे करनेवाले २० प्रतिष्ठाके योग्य सत्यसंकल्प नकुल और सहदेव मेरे निमित्त मामा से युद्धकरें शल्य युद्धमें मुझको मारेगा अथवा मैं उसको मारूंगा तुम्हारा कल्याणहोय २१ हे लोकबीर राजालोगो तुम मेरे इस सत्य सत्य बचनको जानो मैं क्षत्री धर्म से मामाके साथ लड़ूंगा २२ मैं बिजय वा पराजय को निश्चय करके लड़ूंगा अब मेरे सब शस्त्र और सामानों को २३ रथ जोड़नेवाले मनुष्य बहुत शीघ्रता से शास्त्रके अनुसार रथपर रक्खें सात्यकी दक्षिणीचक्रकी और धृष्टद्युम्न उत्तरचक्र की रक्षाकरें अब मेरे पृष्ठका रक्षक पाण्डव अर्जुन होय और अग्रवर्त्ती शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बलवान् भीमसेन होय २४। २५ इसप्रकार भीमसेनके कारण युद्ध में अधिक हूंगा इसप्रकारके बचन सुनकर राजाके हित चाहनेवाले सब लोगोंने

उसीप्रकार किया २६ इसके पीछे सेना में बड़ी प्रसन्नता उत्पन्नहुई विशेष करके पांचाल सोमक और मत्स्यदेशी लोगोंकी प्रसन्नता बहुत प्रकटहुई २७ तब राजायुधिष्ठिर प्रतिज्ञाको करके शल्यके सम्मुखगया उसकेपीछे पांचालों ने सैकड़ों शंख और उत्तमभेरियोंको बजाया २८ और सिंहनादोंको किया और क्रोधयुक्त होकर उस राजामद्र के सम्मुख दौड़े २९ फिर श्रेष्ठकौरव प्रसन्नतासे उत्पन्न बड़े शब्दवाले हाथियों के घंटे और शंखोंके शब्द और ३० तूरी बाजेके बड़ेशब्दसे पृथ्वीको शब्दायमान करते सम्मुखहुये उससमय आपकेपुत्र और पराक्रमी राजा मद्रने उन सब पाण्डवोंको ऐसे रोका ३१ जैसे कि अस्ताचल और उदयाचल पर्व्वत बहुतसे बड़े २ बादलों को रोकते हैं फिर युद्धमें प्रशंसनीय शल्य बाणोंकी बर्षा से शत्रुओं के बिजय करनेवाले धर्म्मराजपर बर्षा करनेलगा जैसे कि जल की वर्षा इन्द्र बरसाताहै उसीप्रकार बड़े साहसी कौरवराजने भी द्रोणाचार्य्य की नाना शिक्षाओं को दिखलाते बाणोंकी बर्षा को बरसाया वह बाणवृष्टि अपूर्व्व तीक्ष्ण और मनोहरथी ३२।३३।३४ और युद्धमें घूमतेहुये उसके छिद्रको किसी ने नहीं देखा उन दोनोंने नानाप्रकार के बाणोंसे परस्पर ऐसे घायलकिया ३५ जैसे कि मांसके अभिलाषी युद्ध में पराक्रम करनेवाले दो शार्दूल होते हैं फिर भीमसेन उस युद्धमें कुशल आपके पुत्रसे लड़ा ३६ धृष्टद्युम्न, सात्यकी, पांडव नकुल और सहदेवने शकुनी आदिक बीरों को चारोंओर से रोका ३७ हेराजा आपकी कुमन्त्रता होनेपर बिजयाभिलाषी आपके पुत्र और प्रतिपक्षियों का फिर युद्ध जारीहुआ ३८ दुर्य्योधन ने टेढ़ेपर्ववाले बाणसे भीमसेनकी उसध्वजा को जोकि सूर्य्यकेसमान प्रकाशमान और सुवर्णसे अलंकृतथी ३९ काटा हे बड़ाई देनेवाले भीमसेनकी वह ध्वजा जोकि क्षुद्रघंटिकाओंके बड़ेजालसे सुंदर दर्शन और चित्त रोचक थी युद्धभूमिमें गिरपड़ी ४० फिर राजाने उसके उस धनुषको जो कि रत्नोंसे जटित और गजराजकी सूँड़के समान था तीक्ष्णधारवाले क्षुरप्रसे काटा ४१ उसटूटे धनुषवाले तेजस्वी पराक्रमीने रथशक्तिसे आपकेपुत्रको छाती पर छेदा तब वह रथके बैठने के स्थानपर गिरपड़ा तब उसके अचेत होनेपर भीमसेनने क्षुरप्रसे उसके सारथीके शिरकोकाटा ४२।४३ हे भरतवंशी राजा धृतराष्ट्र तब उसके वह घोड़े जिनका कि सारथी मारागया रथको लेकर दिशाओं को भागे उस हेतुसे बड़ा हाहाकार हुआ ४४ बड़ा बलवान् अश्वत्थामा, कृपा-

चार्य्य, कृतबर्मा, आपकेपुत्रके चाहनेवाले यहसब रक्षाकेनिमित्त उसकी ओरको दौड़े ४५ उस सेनाके चलायमान होनेपर उसके पीछे आगेवाले लोग भयभीत हुये तब गाण्डीव धनुषधारीने धनुषको टंकारकर उनको बाणोंसेमारा ४६ फिर क्रोधयुक्त युधिष्ठिर चित्तकेसमान शीघ्रगामी अपने श्वेतबर्णके घोड़ेको चलायमान करता राजामद्रके सम्मुख दौड़ा ४७ वहां हमने कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिर में अपूर्व्व चमत्कार को देखा कि जो प्रथम मृदु और जितेन्द्री होकर फिर कठिन हुआ ४८ फिर फैलेनेत्र क्रोध से कम्पायमान कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिरने तीक्ष्णधार भल्लोंसे लाखों शूरबीरों को मारा ४९ हे राजा वह बड़ा पाण्डव जिस २ सेनाके सम्मुखगया उस उससेनाको बाणोंसे ऐसागिराया जैसे कि उत्तम बज्रोंसे पर्वतों को गिराते हैं ५० अकेला पराक्रमी घोड़े सारथी ध्वजा और रथसमेत बहुतसे रथ सवारों को गिराता ऐसा क्रीड़ा करनेवाला हुआ जैसे बायु बादलोंको गिराकर क्रीड़ा करनेवाला होता है ५१ उसने युद्ध में अश्वसवार घोड़े और पतियों को ऐसे हजारों प्रकारसे नाशकिया जैसे कि क्रोधरूप रुद्रजी पशुओंका नाशकरते हैं ५२ चारोंओर बाणोंकी बर्षासे रणभूमिको निर्जन करके राजामद्रके सम्मुख जाकर तिष्ठ २ शब्दों को किया ५३ आपके सब शूरबीर उसभयकारी कर्मकर्त्ता युधिष्ठिर के उसकर्म्म को युद्धमें देखकर भयभीतहुये फिर शल्य उसके सम्मुख गया ५४ तब वहदोनों अत्यन्त क्रोधयुक्त शङ्खोंको बजाकर परस्पर बुलाते और घुड़कतेहुये सम्मुखहुये ५५ तब शल्यने बाणोंकी बर्षासे युधिष्ठिरको पीड़ामान किया और कुन्तीकेपुत्रने भी बाणों की वृष्टियों से राजाशल्यको ढकदिया ५६ तब शल्य और युधिष्ठिर दोनोंबीर बाणोंसे चितेहुये रुधिरसे पूर्ण शरीर दिखाई पड़े ५७ बनमें प्रफुल्लित शाल्मली और किंशुकनाम वृक्षों के समान दोनों शोभायमानहुये उन प्रकाशमान प्राणोंके द्यूतसे दुर्मद दोनों को ५८ देखकर सब सेनाके लोगोंने बिजयको नहीं निश्चयकिया अर्थात् यह सङ्कल्प बिकल्प करने लगे कि अब न जानिये पाण्डव शल्यको मारकर पृथ्वीको भोगेगा व पाण्डव को मारकर शल्य इस पृथ्वी को भोगेगा ५९ अथवा शल्य पाण्डवको मारकर इस सब पृथ्वीको दुर्य्योधनके अर्थदेगा हे भरतर्षभ वहां शूरबीरोंको यह निश्चय नहीं हुआ ६० युद्ध करनेवाले धर्म्मराज के सब शकुनादिक दाहिनेहुये इसके पीछे शल्यने सौबाणोंको युधिष्ठिरपर छोड़ा ६१ और उसके धनुषको तीक्ष्णधार

वाले क्षुरसेकाटा उसने दूसरे धनुषको लेकर शल्यको तीनसौ बाणोंसे छेदा ६२ और क्षुरसेही उसके धनुषकोकाटा फिर टेढ़े पर्ववाले बाणोंसे उसके चारों घोड़ोंको मारा ६३ और तीक्ष्ण दोबाणोंसे दोनों आगे पीछेवालों समेत सारथीको मारा फिर प्रकाशित पीतवर्ण तीक्ष्णधार बाण से ६४ और भल्लसे उसकी ध्वजा को काटा हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले इसके अनन्तर वह दुर्य्योधनकी सेना छिन्न भिन्न होगई ६५ उसके पीछे अश्वत्थामाजी उस दशावाले शल्यकी ओर दौड़े और उसको अपने रथपर बैठाकर शीघ्रता से चलदिये ६६ वहदोनों एक मुहूर्त्त चलकर युधिष्ठिरके गर्जने पर नियतहुये तब राजा शल्य उस दूसरे रथपर सवार हुआ ६७ जोकि बिधिके अनुसार अलंकृत बड़े बादलकेसमान शब्दायमान बड़े बड़े अस्त्र शस्त्र यन्त्रोंसे पूर्ण और शत्रुओंके रोमांचोंका खड़ा करनेवालाथा६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिषोड़शोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसके अनंतर पराक्रमी राजाशल्य बड़े बेगवान् दूसरे धनुष को लेकर युधिष्ठिरको छेदताहुआ सिंहके समान गर्जा १ फिर बड़ा साहसी क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ शल्य बर्षाके बादलोंके समान बाणोंकी बर्षासे क्षत्रियोंके ऊपर बर्षा करनेलगा २ सात्यकी को दशबाण से भीमसेन को तीनबाणसे सहदेव को भी तीनबाणसे छेदकर उसने युधिष्ठिरको पीड़ामान किया ३ बिशिखनाम बाणोंसे उन उन बड़े धनुषधारियोंको घोड़े रथ और कूबरों समेत ऐसा पीड़ामान किया जैसे कि उल्काओंसे हाथियों को पीड़ित करतेहैं ४ उस रथियोंमें श्रेष्ठने हाथी हाथीके सवार घोड़े घोड़ोंके सवार और रथोंको रथ सवारों समेत मारा ५ और तीव्रतासे शस्त्र और ध्वजाओं समेत ध्वजाओंको काटा और पृथ्वीको शूरबीरों से ऐसा आच्छादित करदिया जैसे कि यज्ञकी बेदीको कुशाओंसे आच्छादित करतेहैं ६ अत्यन्त क्रोधयुक्त पाण्डव पांचाल और सोमकोंने उसप्रकार कालके समान शत्रुओं की सेनाके मारनेवाले शल्यको चारोंओरसे घेरलिया ७ इसके पीछे पुरुषोत्तम नकुल सहदेव सात्यकी और भीमसेनने भयकारी बलवाले राजा युधिष्ठिर से भिड़ेहुये समर्त्थ शल्यको परस्पर बुलाया ८ इसके पीछे शूरोंने उस शूरबीरों में श्रेष्ठ नरवीर महाराज शल्यको पाकर और युद्धमें उसको घेरकर बड़े

बेगवान् बाणोंसे घायलकिया ९ भीमसेन,नकुल,सहदेव और सात्यकी से अच्छे प्रकार रक्षित धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर ने बड़े बेगवान् बाणों से राजामद्र को छाती पर घायल किया १० इसके पीछे अच्छी अलंकृत बड़े उत्तम आपके रथियों के समूहोंने युद्धमें राजामद्रको बाणोंसे पीड़ामान देखकर दुर्योधनके मतसे शल्यको आगेसे मध्यवर्त्ती किया ११ इसके पीछे राजामद्रने युद्धमें युधिष्ठिर को शीघ्रता पूर्वक सातबाणोंसे घायल किया हे महाराज महात्मा युधिष्ठिर ने भी तुमुल युद्ध में पृषत्कनाम नौ बाणों से उसको घायल किया १२ तब युद्ध में दोनों महारथी युधिष्ठिर और शल्यने कानतक खैंचकर छोड़ेहुये तेलसे साफ कियेहुये बाणों से परस्पर ढकदिया१ ३ फिर परस्पर अवकाश ढूंढ़नेवाले शत्रुओंसे निर्भय बड़े बलवान् महारथी राजाओंमें श्रेष्ठ दोनोंने शीघ्रही बाणोंसे कठिन घायलकिया१४ परस्पर बाण समूहों समेत धनुष खैंचनेवाले महात्मा राजाशल्य और युधिष्ठिर की प्रत्यंचाके ऐसे बड़े शब्दहुये जो कि महाइन्द्रके बज्रके समान शब्दायमान थे १५ वह दोनों महाबन में मांसाभिलाषी ब्याघ्रों के बच्चोंके समान घूमनेवाले हुये और युद्धमें अहङ्कारी दोनोंने बड़े दन्ती हाथियों के समान परस्पर घायल किया १६ उसके पीछे महात्मा राजामद्रने भयानक पराक्रम वाले राजा युधिष्ठिर को रोककर सूर्य्याग्निके समान प्रकाशित बाणोंसे उस बड़े बेगवान् बीरको हृदयपर घायलकिया १७ हे राजा इसके पीछे अत्यंत घायल युधिष्ठिरने भी अच्छे प्रकार चलाये हुये बाण से राजामद्र को घायल किया और बहुत आनन्द को पाया १८ इस पीछे इन्द्रके समान प्रभाव वाले क्रोधसे रक्त नेत्र महाराज शल्य ने एक मुहूर्त्तही में सचेतता को पाकर सौ बाण से शीघ्रही पाण्डव को घायल किया १९ तब शीघ्रता करते धर्म्मपुत्र महात्मा ने क्रोधयुक्त होकर पृषत्कनाम नौबाणों से शल्यकी छाती और सुबर्ण के कवच को छेदकर दूसरे छःपृषत्कों से भी घायल किया २० इसकेपीछे बड़े प्रसन्न राजामद्रने धनुषको खैंचकर पृषत्कों को छोड़ा और कौरवों में श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिरके धनुषको दोबाणों से काटा २१ इसप्रकार युद्ध में महात्मा राजायुधिष्ठिर ने भी बड़े घोर दूसरे नवीन धनुष को लेकर तीक्ष्णनोक वाले बाणों से शल्यको चारों ओर से ऐसे घायल किया जैसे कि महाइन्द्र ने नमुचि असुर को घायल किया था २२ तब महात्मा शल्य ने नौपृषत्कों से भीमसेन और राजा युधिष्ठिर के सुन्दर स्वर्णमयी कवचों को

काटकर इन दोनों की भुजाओं को घायल किया २३ इसके पीछे सूर्य्याग्नि के समान प्रकाशित क्षुर से राजा के धनुष को तोड़ा और कृपाचार्य्य ने छः बाणों से उसके सारथी को मारा तब वह सारथी सम्मुख गिरपड़ा २४ राजामद्र ने भी चारोंओरसे युधिष्ठिरके चारों घोड़ोंको मारकर उस धर्म्मराजके शूरबीरोंका बड़ा बिनाश किया २५ राजा के उस दशावाला करनेपर महात्मा भीमसेन ने शीघ्रही तीव्रगामी बाण से राजामद्रके धनुषको काटकर दो बाणों से राजा को कठिन घायलकिया २६ फिर उपाय पूर्व्वक दूसरे बाणसे उसके सारथी के शिर को देह से जुदा किया और महाक्रोधित होकर उस बायुपुत्र ने शीघ्रही चारों घोड़ों को भी मारा २७ और सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ उस भीमसेन ने युद्ध में अकेले घूमनेवाले बड़े बेगवान्को सौबाणोंसे घायलकिया २८ इसीप्रकार माद्री के पुत्र सहदेवने भी भीमसेन के शायकों से शल्यको मोहित देखकर बाणों से उसके कवचको काटा भीमसेन और सहदेव के हाथसे टूटे कवचवाला महात्मा राजामद्र हजार नक्षत्र रखनेवाली ढाल २९ और खड्गको लेकर रथसे कूदके कुंती के पुत्रके सम्मुख दौड़ा फिर वह भयकारी पराक्रमवाला नकुलके रथके ईशादंड को काटकर युधिष्ठिरके सम्मुख दौड़ा ३० तदनन्तर धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पुत्र शिखण्डी और सात्यकी भी अकस्मात् उस क्रोधयुक्त उछलते और कालके समान आतेहुये राजा शल्यके सम्मुखहुये ३१ तब अत्यन्त प्रसन्न और गर्जते महात्मा भीमसेन ने नौ पृषत्कों से उसकी अनुपम ढालको काटा और आपकी सेना में गर्जते हुये उसने खड्ग को भी पकड़ने की मूठपर काटा ३२ उन पाण्डवों के अत्यन्त उत्तम और प्रसन्नचित्त रथ समूहों ने भीमसेन के उस कर्म्मको देखकर बड़े आश्चर्य्यित होकर शब्दकिये और चन्द्रमाके समान प्रकाशित शंखों को बजाया ३३ फिर उस भयकारी शब्दसे आपकी अजेय सेनाके समूह व्याकुल रुधिर से लिप्त शरीर और अचेत होकर नाशमान हुये ३४ भीमसेन जिनका अग्रवर्त्ती था उन पाण्डवों के श्रेष्ठ शूरबीरों से घायल वह राजामद्र अकस्मात् तीव्रतासे युधिष्ठिरके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि मृगके पकड़ने को सिंह जाता है ३५ मृतक घोड़े और सारथीवाले क्रोधसे ज्वलित रूप अग्निके समान प्रकाशित उस धर्मराजने बलसे सम्मुख दौड़नेवाले अपने शत्रु शल्यको देखकर ३६ शीघ्रही गोविन्दजीके वचनको विचारकर शल्यके मारनेका विचारकिया मृतक

घोड़े और सारथीवाले रथपर नियत उस धर्म्मराजने शक्ती को चाहा ३७ उस स्थानपर भी महात्मा युधिष्ठिरने महात्मा शल्यके कर्मको देखकर और शेष बचे हुये अपनेही भागको बिचारकरके शल्य के मारने में ऐसे चित्तकिया जैसे कि श्रीकृष्णजी ने कहाथा ३८ उस धर्म्मराज ने मणि और सुबर्ण से जटित दण्ड युक्त सुबर्ण के समान प्रकाशित शक्ती को लिया और अकस्मात् प्रकाशवान् नेत्रों को खोलकर क्रोध से पूर्ण चित्तने राजामद्रको देखा ३९ उस पवित्रात्मा और पापों से रहित नरदेव राजा युधिष्ठिरसे देखाहुआ यह शल्य अत्यन्त भस्म नहीं हुआ हे राजा यही मुझको बड़ा आश्चर्य्य होताहै ४० इसके पीछे कौरवों में अत्यन्त श्रेष्ठ महात्मा युधिष्ठिर ने उस सुन्दर उग्रदंडवाली मणियों से जटित अग्निरूप अत्यन्त प्रकाशित शक्तिको बड़े बेगसे राजामद्रके ऊपरफेंका ४१ उस के पीछे सब इकट्ठेहुये कौरवों ने उस प्रकाशित और स्फुलिंग संयुक्त अकस्मात् बड़े बेगसे गिरतीहुई शक्तिको ऐसे देखा जैसे कि प्रलयकालके समय आकाश में बड़ी उल्काओं को देखते हैं ४२ पाशधारी कालरात्रिके समान यमराजकी उग्र-रूप धात्री के समान ब्रह्मदण्डकी सूरत उस सफल शक्तिको युद्धमें उपाय करने-वाले धर्मराजने छोड़ा ४३ जो कि पांडवोंकी ओरसे बड़े उपाय पूर्बक सुगंध, माला, आसन, भोजन और पानसे पूजित सम्बर्त्तकनाम अग्निके स्वरूप ज्वलित रूप अथर्वाङ्गिरसी नाम उग्रकृत्याके समान ४४ शिवजीके लिये त्वष्टा देवताकी बनाईहुई शत्रुओंके प्राण और शरीरोंकी भक्षण करनेवाली और हठकरके पृथ्वी अन्तरिक्ष आदिकों के रहनेवाले और जलमें रहनेवाले जीवोंके मारने में समर्थ ४५ घंटा, पताका और मणि बज्रकी माला रखनेवाली बैडूर्य्य से जटित स्वर्ण-मयी दण्डधारी बड़ेनियम और उपायके द्वारा त्वष्टा देवताकी बनाईहुई ब्राह्मणों से शत्रुता करनेवालों की नाश करनेवाली सफल ४६ बल और बड़े उपाय से उस बेगवान् शक्तिको घोर मन्त्रोंसे संयुक्तकरके उसराजा मद्रके मारनेके निमित्त उत्तम रीतिसे छोड़ा ४७ जैसे कि शिवजीने अन्धकके नाश करनेवाले बाणको छोड़ाथा उसीप्रकार क्रोधसे नाचतेहुये और हे पापी माराहै इसप्रकार गर्जतेहुये युधिष्ठिरने बहुत दृढ़ सुन्दर हाथवाली भुजाको फैलाकर छोड़ा ४८ युधिष्ठिरकी सब सामर्थ्यसे छोड़ीहुई अपूर्ब पराक्रम और घृतकी धारासे अच्छेप्रकारसे होमी हुई अग्निके समान उस सुन्दर शक्तिको पकड़ने के निमित्त सम्मुख गर्जा ४९

वह निर्लेपशक्ति उसके सब मर्मस्थलों समेत उज्वल और बड़ी छातीको फाड़-
कर राजाके बड़े यशको विख्यात करतीहुई पृथ्वी और जलमें प्रवेश करगई ५०
तब वह शल्य नाक आंख कान और मुखसे निकलनेवाली चेष्टा करनेवाले घा-
वसे उत्पन्न होनेवाले रुधिरसे अच्छेप्रकार लिप्ताङ्गहोकर जैसे कि स्वामिकार्त्तिक
जीके हाथसे घायल क्रौंचनाम बड़ा पर्वत हुआथा ५१ उसीप्रकार वह महात्मा
इन्द्रके गजराजकी सूरत और युधिष्ठिर की शक्ति से टूटे मर्मस्थलवाला शल्यभु-
जाओं को पसारकर रथसे पृथ्वी पर ऐसे गिरा जैसे कि वज्रसे ताड़ित पर्व्वतका
शिखर होता है ५२ इसके पीछे मद्रका राजा धर्म्मराज के सम्मुख भुजाओं को
पसारकर इन्द्रकी ध्वजाके समान ऊंचा पृथ्वी पर गिरपड़ा ५३ इसप्रकार सब अं-
गोंसे घायल रुधिरसे भराहुआ वह नरोत्तम शल्य प्रीतिसे सम्मुख जानेवाले के
समान पृथ्वी पर गिरपड़ा ५४ वह प्रभु पृथ्वी को अपनी प्यारी स्त्री के समान
बहुत कालतक भोगकर गिरताहुआ शोभायमान ५५ सब अंगों से प्यारी स्त्री
के साथ छातीपर मिलकर शयन करनेवाले के समान धर्मात्मा धर्म्मपुत्रके हाथ
से धर्म्मरूपी युद्धमें मरनेपर इसप्रकार शान्त हुआ ५६ जिसप्रकार यज्ञमें अच्छे
प्रकार होमीहुई स्विष्टनाम अग्नि देवता होते हैं शक्ति से फटा हृदय टूटे शस्त्र
और ध्वजावाले मृतक राजा मद्रको इस दशामेंभी शोभा ने नहीं छोड़ा इसके
पीछे युधिष्ठिरने इन्द्रधनुषके समान प्रकाशवान् धनुषको लेकर ५७। ५८ युद्धमें
शत्रुओंको ऐसे छिन्न भिन्नकिया जैसे गरुड़ सर्पोंको करताहै और तेजधार भल्लों
से शत्रुओंके शरीरोंको एकक्षणभरमेंही नाश करदिया ५९ इसकेपीछे पाण्डवों
के बाणसमूहोंसे ढकेहुये बंदनेत्र आपकी सेनाकेलोग शस्त्रोंको चलाते परस्पर
कठिन मर्द्दितहुये ६० और शरीरों से रुधिरों को छोड़ते शस्त्र और जीवनसे जु-
देहुये इसके पीछे शल्य के गिरनेपर राजामद्रका छोटा तरुण अवस्था वाला ६१
सब गुणों में भाई के समान रथी पाण्डव युधिष्ठिर के सम्मुखगया और शीघ्रता
करनेवाले नरोत्तमने बहुत नाराचोंसे घायलकिया ६२ वह युद्धमें दुर्म्मद मृतक
भाईका बदला लेनेका अभिलाषी हुआ फिर शीघ्रता करनेवाले धर्मराजने छः
बाणों से उसको घायल किया ६३ बाणोंसेही उसके धनुष ध्वजा को काटकर
प्रकाशमान अत्यन्यदृढ़ और तीक्ष्ण ६४ भल्लसे उस सम्मुख वर्त्तमानके शिरको
काटा तब वह कुंडलधारी शिर रथसे गिरताहुआ ऐसा दिखाईपड़ा ६५ जैसे कि

शुभकर्म्म फलके नाशको पाकर स्वर्गसे च्युत मनुष्य होताहै फिर शिरसे रहित उसका शिर रथसे गिरपड़ा ६६ रुधिरसे लिप्त शरीरको देखकर सेना छिन्न भिन्न होगई उस अपूर्व कवचधारी शल्यके छोटे भाईके मरनेपर ६७ हाहाकार करनेवाले कौरव भागे तब शल्यके छोटेभाईको मराहुआ देखकर आपके शूरबीर जीवन के त्यागनेवाले धूलसे अत्यन्त लिप्त शरीर पाण्डव युधिष्ठिरके भय से भयभीत होगये हेभरतर्षभ शिनीका पौत्र सात्यकी बाणों से ढकता उसप्रकार छिन्नभिन्न होनेवाले कौरवोंके सम्मुख वर्त्तमानहुआ ६८।६९ तब शीघ्रता करनेवाले कृतबर्माने निर्भयके समान उस बड़ेधनुषधारी सहने के अयोग्य कठिनतासे सम्मुखताके करनेकेयोग्य आतेहुये सात्यकीको रोका ७० वह दोनों महात्मा बड़ेअजेय सिंहोंके समान बलसे मतवाले यादव कृतबर्म्मा और सात्यकी सम्मुख हुये ७१ सूर्य्यके समान तेजस्वी वह दोनों शुद्ध प्रकाशवान् बाणोंसे परस्पर ऐसे ढकनेवालेहुये जैसे कि सूर्य्य की किरणों से ढकजाते हैं ७२ हमने उन दोनों उत्तम यादवोंके धनुष मार्ग्ग और बलसे उठेहुये आकाश में वर्त्तमान बाणोंको शीघ्रगामी पक्षियों के समान देखा ७३ कृतबर्म्मा ने दशबाण से सात्यकी को और तीन बाणसे उसके घोड़ोंको घायलकरके टेढ़े पर्ववाले एक बाणसे उसके धनुष को काटा ७४ सात्यकी ने उस टूटेहुये उत्तम धनुषको डालकर ७५ तीव्रता से दूसरे दृढ़ धनुषको लिया सब धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ सात्यकी ने उस धनुषको लेकर ७६ दश बाणों से कृतबर्म्मा को छातीपर घायल किया इसके पीछे रथयुग और ईशादण्डको अपने श्रेष्ठ चलाये हुये भल्लसे काटकर ७७ शीघ्रही उसके घोड़े सारथी और पीछे चलनेवालेको मारा हे प्रभु तब पराक्रमी शारद्वत कृपाचार्य्य उसको बिरथ देखकर ७८ शीघ्रता से अपने रथपर चढ़ाकर दूर लेगये हे राजा राजा मद्रके मरने और कृतबर्म्मा के बिरथ होनेपर ७९ दुर्य्योधन की सब सेना फिर मुख फेरनेवाली हुई इसहेतुसे और धूलसे सेनाके ढकजाने पर दूसरे पक्षवाले नहीं जानेगये ८० तब वह बहुत मारीहुई सेना मुखोंको फेरगई हे पुरुषोत्तम इसके पीछे उनलोगोंने एक मुहूर्त्तमेंही उठीहुई पृथ्वीकी धूलको ८१ नानाप्रकार के रुधिरोंके बहनेसे छिड़का हुआ देखा उससमय दुर्य्योधनने सम्मुख से अपनी सेनाको छिन्न भिन्न देखकर ८२ तीव्रतासे आनेवाले सब पाण्डवोंको अकेलेनेही रोका रथ सवार पाण्डवों को धृष्टद्युम्नको ८३ और अजेय सात्यकी

को तीक्ष्णवाणों से रोका उससमय शत्रुलोग उसके सम्मुख ऐसे नहीं हुये जैसे कि मरण धर्म्मवाले जीव आयेहुये कालके सम्मुख नहीं वर्त्तमान होते हैं ८४ इसके पीछे कृतबर्म्मा भी दूसरे रथपर सवार होकर लौटा तब शीघ्रता करनेवाले महारथी राजा युधिष्ठिरने ८५ चारवाणों से कृतबर्म्मा के घोड़ोंको मारकर कृपाचार्य्यको भी सुन्दर वेतवाले छः भल्लों से घायल किया ८६ इसके पीछे अश्वत्थामाजी राजाके आघातसे घोड़े और रथसे विहीन कृतबर्म्मा को अपने रथके द्वारा युधिष्ठिरके सम्मुखसे हटालेगया ८७ इसके पीछे कृपाचार्य्य नेभी छःबाणों से युधिष्ठिर को घायल किया और उसी प्रकार तेजधार आठ शिलीमुख नाम वाणों से घोड़ों को भी घायल किया ८८ हे भरतवंशी महाराज राजा धृतराष्ट्र पुत्रसमेत आपकी कुमन्त्रतासे यह शेष लोगोंका युद्ध वर्त्तमान हुआ ८९ युद्ध में श्रेष्ठ कौरवके हाथसे उस धनुषधारियों में श्रेष्ठ शल्यके मारेजाने पर अत्यन्त प्रसन्नचित्त पाण्डव लोगोंने इकट्ठे होकर शंखोंको बजाया ९० और युद्धभूमिमें युधिष्ठिरकी ऐसी प्रशंसाकरी जैसे कि पूर्वसमयमें वृत्रासुरके मारने पर देवताओं ने इन्द्रकी प्रशंसा करीथी फिर उनलोगों ने चारोंओरसे पृथ्वी को शब्दायमान करके नानाप्रकारके बाजोंको बजाया ९१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिशल्यवधोनामसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

संजय बोले हे राजा शल्य के मरने पर उस राजामद्र के आगे पीछे चलने वाले सातसौ महारथी वीर बड़ी सेनाको साथलेकर बाहर निकले १ फिर शिरपर धारण किये छत्रोंसे और चामरोंसे युक्त दुर्य्योधनने पर्वताकार हाथीपर चढ़कर २ मद्र देशियों को निषेध किया कि तुमको न जाना चाहिये न जाना चाहिये दुर्य्योधन से बारम्बार रोकेहुये वह वीर ३ युधिष्ठिर के मारने के अभिलाषी होकर पाण्डवों की सेनामें पहुँचे हे महाराज फिर लड़ने में प्रवृत्तचित्त वह शूरवीर ४ धनुषों के बड़े शब्दोंको करके पाण्डवों से युद्ध करनेलगे शल्यको मृतक और धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरको राजामद्रके हितकारी मद्रदेशी महारथियोंसे पीड़ामान सुन कर अर्जुन अपने गांडीवधनुषको टंकारताआया ५।६ वह महारथी अर्जुन सब दिशाओं कोशब्दोंसे पूर्णकरता युद्धमें आपहुँचा उसकेपीछे पांडव अर्जुन भीम-

सेन नकुल सहदेव ७ नरोत्तम सात्यकी द्रौपदी के सब पुत्र धृष्टद्युम्न शिखंडी और सोमकोंसमेत सब पांचाल ८ इन सब युधिष्ठिरके चाहनेवाले लोगों ने राजा युधिष्ठिरको मध्यवर्त्ती किया चारोंओरसे घिरेहुये उन पुरुषोत्तम पांडवोंने ९ उस सब सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे कि समुद्रको मगर छिन्न भिन्नकरता है और आप के पुत्रोंको ऐसे कंपायमान किया जैसे कि वृक्षोंको बड़ी तीव्र बायु कंपायमान करती है १० हेराजा तब पांडवी सेना भी फिर ऐसे उथल पुथल हुई जैसे सम्मुखकी बायु से गंगानदी ब्याकुल होती है ११ महात्मा महारथी लोग बड़ी सेनामें प्रवेश करके जहां तहां पुकारे कि वह राजायुधिष्ठिर कहां है १२ और उसके वह शूरबीर भाई कहां हैं वहां कोई दिखाई नहीं देते हैं धृष्टद्युम्न सात्यकी द्रौपदी के सब पुत्र १३ बड़ेपराक्रमी पांचाल और महारथी शिखंडी कहां हैं इस प्रकार वार्त्तालाप करनेवाले उन शूरोंको द्रौपदी के महारथी पुत्रोंने १४ और युयुधानने घायलकिया राजामद्र के पीछे चलनेवाले कितनेही तो बाणोंसे मर्द्दित और कितनेही टूटीहुई बड़ी ध्वजाओं से बिनाशहुये १५ युद्धमें आपके शूर बीर शत्रुओं के हाथसे मरेहुये दिखाई पड़े हे भरतबंशी वह लोग युद्धमें पांडवों को और चारोंओर से शूरबीरों को देखकर १६ आपके पुत्र से रुके हुये होकर बड़ी तीव्रता पूर्व्वक गये और क्रोधके दूरकरने के लिये दुर्योधन ने मधुर बचन कहकर उन बीरोंको रोका १७ तब वहां किसी महारथी ने भी उसकी आज्ञाको नहीं किया इसकेपीछे गांधार देशके राजाका पुत्र १८ वार्त्तालापमें कुशल शकुनी दुर्योधनसे बोला कि हे भरतबंशी यह क्याबात है कि जो हमारे देखतेहुये मद्रदेशियोंकी सेना मारीजाती है १९ युद्धमें तेरे नियत होनेपर यहबात उचित और योग्य नहीं है इनके साथ होकर भी युद्धकरना चाहिये क्योंकि तुमने नियम कियाहै हे राजा फिर किस हेतुसे मरनेवाले दूसरे मनुष्यों को क्षमाकरताहै २० दुर्योधन बोला कि प्रथम मेरे रोकने पर भी मेरे बचन को नहीं किया यह सब पांडवी सेना में प्रवेशकरके मारेगये २१ शकुनिने कहा कि युद्ध में क्रोध युक्त बीर स्वामी की आज्ञाको नहीं करतेहैं क्रोधको दूर करिये यह समय उन लोगों के त्यागनेका नहींहै २२ घोड़े रथ और हाथियों समेत हम सब निश्चय करके राजामद्र के पीछे चलनेवाले बड़े धनुषधारियों की रक्षाके लिये चलें २३ हे राजा बड़े उपायोंसे परस्पर रक्षाकरें ऐसा बिचारकर वह सब वहांगये जहांपर

कि वह सेनाके लोगथे २४ इसकेपीछे बड़ी सेना समेत राजादुर्योधन पृथ्वीको सिंहनादों से कँपाताहुआ चलदिया २५ हे भरतबंशी फिर आपकी सेना का यह कठिन शब्द हुआ कि मारो छेदो पकड़ो प्रहार करो शिरों को काटो फिर पाण्डव राजामद्रके पीछे चलनेवालोंको एक साथ देखकर मध्यवर्ती गुल्मनाम सेनाके भागमें नियत होकर सम्मुख बर्त्तमान हुये २६। २७ हे राजा राजामद्र के पीछे चलनेवाले वह वीर युद्ध में एक मुहूर्त्त भरमेंही मरेहुये दिखाईपड़े २८ इसके पीछे हमारे जानेपर मद्रदेशियों के मारनेवाले बेगवान् प्रसन्नचित्त प्रतिपक्षियों ने एक साथही किलकिला शब्द किया २९ सब ओर से उठे हुये धड़ दिखाई पड़े और सूर्य्यमंडल के मध्यसे बड़ी उल्का पातहुई ३० टूटेरथ युगअक्ष मृतक महारथी और पड़ेहुये हाथियों से पृथ्वी आच्छादित होगई ३१ हे महाराज वहां युद्धभूमि में शूरबीर बायु के समान शीघ्रगामी और जहां तहां युगों से चिपटे हुये घोड़ों समेत दिखाई दिये ३२ युद्ध में कितनेही घोड़े टूटे पहियों वाले रथोंको लेचले और कितनेही अधिरथीको लेकर दशोंदिशाओं को भागे ३३ जहांतहां पोक्तरों से चिपटे हुये घोड़े दृष्टिपड़े हे राजाओं में श्रेष्ठ कहीं गिरते हुये रथी ऐसे दृष्टिगोचर हुये ३४ जैसे कि शुभकर्म फलों के समासहोने पर आकाश से गिरेहुये सिद्ध दिखाई देते हैं राजामद्रके पीछे चलनेवाले शूरवीरों के मरनेपर ३५ विजयके लोभी प्रहार करनेवाले महारथी पांडव हमलोगों को आताहुआ देखकर तीव्रता से सम्मुख बर्त्तमान हुये ३६ शंखोंके शब्दों से संयुक्त बाणोंका शब्द करते हम लोगों को पाकर लक्ष्यभेदन करनेवाले प्रहार करनेवाले ३७ और धनुषके चलायमान करनेवालों ने सिंहनादोंको किया उसके पीछे राजामद्रकी बड़ी सेनाको मराहुआ देखकर ३८ और युद्ध में शूरबीर राजामद्रको युद्धभूमि में गिराहुआ देखकर दुर्योधन की सब सेना फिर मुखफेरनेवाली हुई ३९ हे महाराज बिजय से शोभायमान दृढ़ धनुषधारी पांडवों से घायल भयसे व्याकुल भयभीत सेनाने दिशाओंको सेवन किया ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

सञ्जयबोले कि युद्धमें अजेय महारथी राजामद्रके मरनेपर आपकेपुत्र और

युद्धकर्त्ता लोग बहुधा मुख फेरनेवाले हुये १ जैसे कि अथाह और बिना नौका वाले समुद्रमें नौकाके टूटनेपर ब्यापारी लोग पारहोनेके अभिलाषी होते हैं उसी प्रकार महात्मा युधिष्ठिरके हाथसे शूर शल्यके मारे जानेपर अपारमें पारके चाह-ने वालेहुये २ हे महाराज वह भयभीत बाणोंसे घायल अनाथ होकर इसप्रकार नाथोंके चाहनेवालेहुये जिसप्रकार सिंहसे पीड़ामान मृग ३ टूटे सींगवाले बैल और टूटे दांतोंवाले हाथी होते हैं उसीप्रकार अजात शत्रु युधिष्ठिरसे बिजयकिये हुये हमलोग भी मध्याह्नके समय हटआये ४ हे राजा शल्यके मरनेपर आपके किसी शूरवीर का साहस सेना इकट्ठी करने और पराक्रम करने में नहींहुआ ५ हे भरतबंशी भीष्म द्रोणाचार्य्य और कर्ण के मरनेपर आपके शूर लोगोंको जो दुःख और भयहुआथा हे राजा वही अब हुआ ६ हमारा वहभय और शोक फिर बर्त्तमान हुआ महारथी शल्यके मरनेपर उस बिजयमें अनाशाहुई ७ हे राजा राजामद्रके मरनेपर वह शूरबीर जो कि तीक्ष्णबाणोंसे घायल पराजितहुये और जिनके बड़ेबीर मारेगये थे सब भयभीत होकर भागे ८ कोई महारथी घोड़ों पर कोई रथोंपर कोई हाथियोंपर सवारहोकर भागे और पदातीही तीव्रतासे भागे ६ शल्यके मरनेपर पर्वतकेरूप प्रहार करनेवाले दोहजार हाथी अंकुश और अंगूठे से चलायमान होकर भागे १० हे भरतर्षभ वह आपके शूरबीर युद्धसे दिशाओं को भागे और बाणोंसे घायल श्वासलेते और दौड़तेहुये दिखाई पड़े ११ बिजय के अभिलाषी पांचाल और पांडव उन असाहसी पराजित छिन्नभिन्न और भागे हुओंको देखकर पीछे दौड़े १२ शूरबीरों के बाणोंके उत्तम शब्द सिंहनाद और शङ्खों के शब्द महाभयकारी प्रकट हुये १३ पाण्डवों समेत पांचाल लोग उन कौरवीय सेनाके लोगोंको भयभीत और भागेहुये देखकर परस्पर में यह बचन बोले १४ कि अब सच्चे धैर्य्यवाला राजा युधिष्ठिर मृतक शत्रुओंवाला है अब दुर्योधन प्रकाशवान् राजलक्ष्मी से रहित हुआ १५ अब राजा धृतराष्ट्र पुत्रको मराहुआ सुनकर पृथ्वी पर पड़ाहुआ अचेत होकर रोगग्रस्त होगा १६ अब अर्जुन को सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ और समर्थ जानो अब वह पापकर्मी दु-र्बुद्धी अपनीही निन्दा करेगा १७ अब हितकारी बचनके कहनेवाले बिदुरजी के बचनों को स्मरणकरेगा अब से लेकर नौकरकेसमान युधिष्ठिरकी उपासना करता १८ राजा धृतराष्ट्र उसदुःखको जानेगा जो पाण्डवोंने पायाथा अब राजा

श्रीकृष्णकेभी माहात्म्यको जानेगा १६ अब युद्धमें अर्जुनके धनुषकेघोर शब्द को और लड़ाई में दोनोंभुजा और अस्त्रों के सब बलको जानेगा २० जैसे कि इन्द्रके हाथसे बलिनाम असुर मारागया उसीप्रकार युद्धमें अब मद्रराजके मरने पर महात्मा भीमसेन के घोर पराक्रमको जानेगा २१ जिस भीमसेनने दुश्शासनके मारने में जो कर्म किया उस कर्मको महात्मा भीमसेन के सिवाय दूसरा कौन मनुष्य करसक्ता है २२ देवताओं से भी अजेय राजामद्र को मृतक सुन कर बड़े पाण्डव के पराक्रमको भी जानेगा २३ अब शूरवीर शकुनि और सब गान्धार देशियों के मरने पर युद्धमें पाण्डव नकुल और सहदेवकोभी जानेगा २४ उन लोगोंकी बिजय कैसेनहीं होसक्ती जिन्हों के शूरवीर अर्जुन सात्यकी भीमसेन धृष्टद्युम्न २५ द्रौपदी के पांचो पुत्र पाण्डव नकुल सहदेव बड़ाधनुषधारी शिखण्डी और राजा युधिष्ठिरहैं २६ और सब जगत्के स्वामी दुष्टसंहारी श्रीकृष्णजी जिन्हों के नाथ हैं और धर्म जिन्हों का आश्रय स्थानहै उन्हों की बिजय कैसे नहीं होसक्ती २७ भीष्म द्रोणाचार्य्य कर्ण राजामद्र और अन्य सैकड़ों हज़ारों राजाओं को युद्धमें बिजय करनेको पाण्डव युधिष्ठिर के सिवाय कौन समर्थ है सदैव धर्म और यशके भंडार इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजी जिसके स्वामी हैं २८। २६ इसप्रकार वार्त्तालाप करते बड़े आनन्दसे युक्त अन्तःकरणसे अत्यन्त प्रफुल्लित वह लोग आपके भागेहुये शूरबीरों के पीछेचले ३० पराक्रमी अर्जुन रथकी सेना के सम्मुख वर्त्तमान हुआ और महारथी सात्यकी नकुल और सहदेव यह तीनों शकुनीके सम्मुखहुये ३१ तब दुर्योधन उन सबको भीमसेन के भयसे पीड़ामान और भागताहुआ देखकर आश्चर्य्य करताहुआ अपने सारथीसे बोला ३२ कि धनुष हाथमें लिये सम्मुख नियत अर्जुन मुझको उल्लंघन करताहै सब सेनाओंके मध्यमें मेरे घोड़ों को पहुँचाओ ३३ कुन्ती का पुत्र अर्ज्जुन मुझ सेनाके मध्यमें वर्त्तमान हुयेके उल्लंघन करनेको ऐसे उत्साह नहीं करेगा जैसे कि महासमुद्र मर्यादा को नहीं उल्लंघन करसक्ता है ३४ हे सूत पाण्डवोंसे पराजितहुई सेनाको देखो और चारोंओरसे इससेनाकी उठीहुई धूल को देखो ३५ और बड़े भयकारी घोर सिंहनादोंको सुनो इसहेतुसे हे सूत सेनाके मध्यकी रक्षा करताहुआ धीरे२ चल ३६ सेनामें मेरे नियतहोने और पांडवोंके रोकनेपर शीघ्रही मेरी सेना तीव्रतासे फिर लौटेगी ३७ सारथीने आपके पुत्रके

उसशूर और श्रेष्ठ पुरुषों के योग्य वचनको सुनकर सुवर्णके सामान से ढकेहुये घोड़ोंको धीरेपनेसे चलायमान किया ३८ हाथी घोड़े और रथियोंसे रहित देह की प्रीतिको त्यागनेवाले इक्कीस हज़ार पदाती युद्ध करने को नियतहुये ३९ तब नाना देशों में उत्पन्न होनेवाले अपूर्व नगरों में रहनेवाले शूरबीर बड़ेयशको चाहते नियतहुये ४० वहां उन प्रसन्नचित्त आनेवालोंका वह परस्पर बड़ा युद्ध उत्पन्नहुआ जो कि घोररूप और भयानक था ४१ हे राजा तब भीमसेन और धृष्टद्युम्न ने चतुरंगिणी सेनासमेत उन नानादेश निवासियों को रोका ४२ फिर सिंहनाद और भुजदण्डों के शब्दों समेत अत्यन्त प्रसन्न बीर लोकोंके जानेके अभिलाषी अन्य पदाती भीमसेन के सम्मुख बर्त्तमान हुये ४३ क्रोधयुक्त युद्ध-दुर्मद धृतराष्ट्रके पुत्र भीमसेनको पाकर गर्जना करनेलगे और दूसरी कथाको नहीं कहा ४४ उन सबने युद्धमें भीमसेन को घेरकर चारोंओर से घायल किया इसके पीछे युद्धमें पदाती समूहोंसे घिराहुआ और घायल वह भीमसेन अपने नियत स्थानसे ऐसे चलायमान नहींहुआ जैसे कि मैनाक पर्वत निश्चल होता है हे महाराज फिर पाण्डवोंके महारथी क्रोधयुक्तहुये ४५। ४६ और मारनेमें प्रवृत्त होकर अन्य २ शूरबीरों को रोका तब भीमसेन युद्ध में उनचारों ओरको नियत पदातियोंके कारणसे क्रोधयुक्त हुआ ४७ और शीघ्रही रथसे उतर सुवर्णसे मढ़ी हुई बड़ी गदाको लेकर आपभी पदाती होकर नियतहुआ ४८ और दण्डधारी कालकेसमान होकर आपके शूरबीरोंसमेत रथ घोड़ेसेरहित पदातियों को मारा ४९ अर्थात् उस युद्धमें इक्कीस हज़ार पदातियोंको मारकर रुधिरलिप्त शरीरसे शोभायमान हुआ ५० और थोड़ेही समयमें धृष्टद्युम्नको आगेकरके दृष्टिगोचर हुआ और वह सब पदाती मृतक रुधिरसे लिप्तहोकर पृथ्वीपर शयन करगये जैसे कि पुष्पित कर्णिकारके वृक्ष हवासे टूटकर गिरेहोयँ उसी प्रकार नानाप्रकार के शस्त्रोंसे संयुक्त नानाप्रकारके कुण्डल रखनेवाले ५१। ५२ नानाजाति के बहुत प्रकारके देशों से आनेवाले शूरबीर मारेगये पताका और ध्वजाओं से ढकीहुई पदातियों की बड़ी सेनाके लोग लेटेहुये ५३ महाघोर रूप और भयानक होकर शोभायमानहुये और सब सेनाके लोग और महारथी जिनके अग्रवर्त्ती युधिष्ठिर थे वह सब आपके पुत्र महात्मा दुर्योधन के सम्मुख दौड़े उन सब ने बड़े धनुष-धारी और मुख फिरेहुये आपके शूरबीरों को देखकर ५४। ५५ आपके पुत्र को

ऐसे उल्लंघन नहीं किया जैसे कि समुद्रको मर्यादा नहीं उल्लंघन करसक्ती वहां हमने आपके पुत्रकी उस अपूर्व बीरता को देखा ५६ जो सब पाण्डव उस अकेले को युद्धमें उल्लंघन करनेको समर्थ नहींहुये बहुतदूर न जानेवाले भागने में प्रवृत्तचित्त ५७ अत्यंत घायल अपनी सेनासे यह बचन कहा कि मैं पृथ्वी और पर्व्वतोंमें भी उस देशको नहीं देखता हूं ५८ जहांपर जानेवाले तुम लोगोंको पाण्डव नहीं मारें अर्थात् उनसे कहीं नहीं बचसक्ते तो भागनेसे क्या प्रयोजनहै उन्होंकी सेनाथोड़ी है और श्रीकृष्ण समेत अर्जुन अत्यन्त घायल हैं ५९ जो हम सब यहां नियतहोजायँ तो अवश्य हमारी विजयहोय अनहित करनेवाले पाण्डव भागेहुये और छिन्नभिन्न होनेवाले तुमलोगोंको ६० पीछा करके मारेंगे इससे युद्धमेंही हमारा मरना श्रेष्ठहै जितने क्षत्री यहां इकट्ठे हैं वह सब सुनो ६१ जब कि काल सदैव शूर और भयभीतोंकोभी मारता है तो कौन अज्ञान पुरुष असल क्षत्रीहोकर युद्धनहींकरे ६२ क्रोधयुक्त भीमसेनके सम्मुख हमारा कल्याण नियतहै क्षत्रीधर्म से लड़नेवालों का युद्धमेंही मरना सुखदायी है ६३ मनुष्य को घरमें भी कभी अवश्य मरनाहै क्षत्रीधर्म्म से लड़नेवाले की मृत्यु सनातन है ६४ यहां विजय करके सुखको पाताहै और मराहुआ परलोकमें बड़े फलको पाताहै हे कौरव निश्चय करके स्वर्गका मार्ग धर्मयुद्धसे उत्तम कोई नहीं है ६५ युद्धमें मरनेवाला थोड़ेही समयमें प्राप्त होनेवाले लोकोंको भोगताहै राजालोग उसके बचनको सुनकर और बड़ी प्रशंसा करके ६६ शस्त्रोंको धारण करके फिर पाण्डवों के सम्मुख आकर बर्त्तमानहुये अलंकृत सेना समेत शस्त्रधारी विजय के आकांक्षी और क्रोधयुक्त वह पाण्डव शीघ्रही उन आनेवालों के सम्मुखगये पराक्रमी अर्जुन रथकी सवारी से युद्धभूमि में बर्त्तमान हुआ और तीनोंलोकमें विख्यात गांडीव धनुषको टंकारा ६७। ६८ बड़ा पराक्रमी सात्यकी नकुल और सहदेव यह तीनोंबीर तीव्रता से उस ओर शकुनी के सम्मुखगये जिधरको कि आपकी सेनाथी ६९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिएकोनविंशतितमोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि सेना के समूहके लौटनेपर म्लेक्षों के समूहों का राजा महा

क्रोधयुक्त शाल्व पाण्डवों की बड़ी सेनाके सम्मुखगया १ मतवाले पर्वताकार अहंकारी ऐरावतके समान शत्रुओं के समूहों के मर्द्दन करनेवाले बड़े हाथीपर सवार २ जो भद्रनाम बड़े कुलमें उत्पन्न सदैव दुर्य्योधन से पूजितथा शास्त्र के निश्चय जाननेवाले मनुष्यों से अलंकृत हाथी युद्ध में जिसकी सदैव सवारी था ३ हे राजा वह राजाओं में श्रेष्ठ हाथीपर नियत होकर उसप्रकारका बिदित होताथा जैसे कि प्रातःकालके समय उदयाचलपर नियत सूर्य होताहै उस अत्यन्त उत्तम हाथीकी सवारी से उन इकट्ठे होनेवाले पाण्डवों के सम्मुखगया ४ और उसने बड़े तेजवान् बेगवान् इन्द्र वज्र के समान व महाघोर पृषत्कों से पाण्डवों को घायलकिया इसके पीछे बड़े युद्धमें बाणोंको छोड़नेवाले और शूरवीरोंको यमलोकमें पहुंचानेवाले ५ इस राजाका छिद्र अपने और दूसरे शूरबीरों ने भी ऐसे नहीं देखा जैसे कि पूर्वसमयमें ऐरावत हाथीपर सवार सेनाके मर्द्दन करनेवाले वज्रधारी इन्द्रके छिद्रोंको देवताओं ने और असुरों ने नहीं देखाथा ६ उन पाण्डव सोमक और सृञ्जियों में चारोंओर को हजारों प्रकार से घूमनेवाले उस अकेले हाथीको सम्मुख ऐसे देखा जैसे कि महा इन्द्रके हाथीको देखाथा ७ तब प्रतिपक्षियोंकी सेना चारोंओरसे भागीहुई और मरणप्राय दिखाईपड़ी और युद्ध में परस्पर अत्यन्त मर्द्दन पायेहुये भयसे नियत नहीं हुये ८ फिर पाण्डवों की वह बड़ी सेना उस राजा के हाथसे अकस्मात् पराजितहुई और गजेन्द्र के उस बेगके पारको न पाकर अकस्मात् चारोंओरको दौड़ी ९ आपके सब उत्तम शूरवीरोंने युद्धमें उस बेगवान् सेनाको पराजितहुई देखकर उसराजाकी प्रशंसा करी और चंद्रवर्ण श्वेत शंखोंको बजाया १० पाण्डव और सृञ्जियों के सेनापति धृष्टद्युम्नने कौरवोंकी वह शंखों के द्वाराकीहुई गर्जना सुनकर सहन नहीं किया ११ इसकेपीछे शीघ्रता करनेवाला महात्मा धृष्टद्युम्न बिजयके निमित्त उस हाथी के सम्मुख ऐसेगया जैसे कि इन्द्र के सम्मुख जृंभनाम असुर इन्द्रकी सवारी के गजराज ऐरावत के सम्मुख गयाथा १२ उस राजाओं में श्रेष्ठने उस अकस्मात् आतेहुये धृष्टद्युम्नको देखकर शीघ्रतासे अपने उस हाथीको द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न के मारनेके निमित्त चलायमान किया १३ उस धृष्टद्युम्नने अग्निके रूप कारीगरके हाथसे सफा कियेहुये तेजधार प्रकाशित और बड़े बेगवान् उत्तम पृषत्क नाम तीनबाणों से उस अकस्मात् आतेहुये हाथी को घायल किया १४ इसके

पीछे उसी महात्माने अन्य पांचसौ नाराचों को उस हाथी के कुं भपर छोड़ा तब वह उत्तम हाथी युद्ध में उन वाणों से अत्यन्त घायल और घूमकर तीव्रता से भागा १५ फिर शाल्व ने अकस्मात् भागे हुये और चलायमान उस गजराज को लौटाकर धृष्टद्युम्नके रथको जतलाकर शीघ्र चाबुक और अंकुशों के द्वारा भेजा १६ फिर अकस्मात् आतेहुये उस हाथीको देखकर भयसे व्याकुल शरीर वीर धृष्टद्युम्न शीघ्रही अपनी गदाको रथसे लेकर तीव्रता पूर्व्वक पृथ्वीपर वर्त्त-मानहुआ १७ उस बड़े गर्जतेहुये हाथी ने उस सुवर्ण से अलंकृत रथको घोड़े और सारथी समेत अकस्मात् सूंड़ से उठाकर पृथ्वीपर चूर्ण करडाला १८ तब उस उत्तम हाथी से पीड़ामान राजा द्रुपद के पुत्रको देखकर भीमसेन सात्यकी और शिखण्डी यह तीनों अकस्मात् बड़ी तेजी से उसकी ओर दौड़े १९ और अकस्मात् उस आनेवाले हाथी के वेगको रोका वह हाथी उन रथियों से युद्ध में घेरा और रुकाहुआ कम्पायमानहुआ २० इसके पीछे राजा शाल्व पृषत्कों की चारोंओरसे ऐसी वर्षा करनेलगा जैसे कि किरणोंके जालको सूर्य वरसाता है उन शीघ्रगामी वाणोंसे घायल रथोंके समूह एक साथही जहां तहांभागे २१ हे राजा नरों में उत्तम और हाहाकारों से शब्द करनेवाले सब पाञ्चाल मत्स्य और सृञ्जय देशियों ने शाल्व के उस कर्मको देखकर उस हाथीको चारोंओरसे रोका २२ हे भरतवंशी वह शत्रुओं का मारनेवाला शूरबीर द्रुपदका पुत्र शी-घ्रही भ्रान्ती से रहित पर्व्वतके शिखरकी समान गदाको लेकर तीव्रतासे हाथी की ओर चला २३ फिर धृष्टद्युम्नने उस गदाको लेकर उस पर्व्वताकार वादल के समान मदझाड़नेवाले हाथीको वहुत घायलकिया २४ वह पर्व्वतसम हाथी टूटाकुंभ अकस्मात् गर्जकर मुखसे वहुत रुधिर को छोड़ता ऐसे गिरपड़ा जैसे कि भूकम्प होने से पर्व्वत गिरता है २५ तव गजराज के गिराने और आपके पुत्रकी सेना के हाहाकार करनेपर उस शिनियों में बड़े वीर सात्यकी ने राजा शाल्व के शिरको भल्लसे काटा २६ युद्धमें यादव के हाथसे कटाशिर वह राजा गजराज समेत पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि देवराज के चलायमान वज्र से टूटा पर्वतका वड़ा शिखर होताहै २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिविंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि उस युद्धके शोभा देनेवाले शूर शाल्वके मरनेपर आप की सेना तीव्रतासे ऐसी पृथक् २ हुई जैसे कि वायुसे बड़े वृक्ष पृथक् २ होजाते हैं १ बड़े वलवान् शूरबीर महारथी कृतबर्म्मा ने उस सेना को पृथक् २ हुआ देखकर युद्धमेंही रोका २ हेराजा वहबीर उस पर्वतके समान युद्धमें नियत बाणों से ढके हुये यादवको युद्ध में देखकर लौटे ३ इसके अनन्तर मृत्युको पीछेकर लौटने-वाले कौरवों का युद्ध पांडवोंके साथ जारीहुआ ४ वहां यादव का युद्ध प्रतिप-क्षियों के साथ अपूर्व हुआ जो अकेलेनेही कठिनतासे रोकने के योग्य पांडवी सेनाको रोका ५ परस्पर शुभचिन्तक उस लोगोंके कठिन कर्म्म करनेपर अत्य-न्ततासे उनलोगों के सिंहनाद आकाश अथवा स्वर्ग के भी स्पर्श करनेवाले हुये ६ हे भरतर्षभ उस शब्दको सुनकर पांचालदेशी भयभीत हुये फिर शिनी का पौत्र महाबाहु सात्यकी उसके सम्मुख बर्त्तमानहुआ ७ उसने बड़े पराक्रमी राजा क्षेमकीर्त्ति को पाकर तेज धारवाले सातबाणों से यमलोक में पहुँचाया ८ तब बुद्धिमान् कृतबर्म्मा तीव्रता से उस तेजबाणों के फेंकनेवाले आतेहुये महा-बाहु सात्यकी के सम्मुख दौड़ा ९ अत्यन्त उत्तम शस्त्रों के धारण करनेवाले रथियों में श्रेष्ठ धनुषधारी सिंहों के समान गर्ज्जनेवाले दोनों सम्मुख दौड़े १० उन दोनोंके घोर संग्राम में पाण्डव आदिक उत्तम २ राजालोग और पाञ्चालों समेत अन्य अन्य शूरवीर देखनेवाले हुये ११ अत्यंत प्रसन्न हाथीके समान उस बृष्णी और अन्धक कुलके महारथियों ने नाराच और बत्सदन्तनाम बाणों से परस्पर घायल किया १२ नानाप्रकारके मार्गोंको घूमनेवाले वह दोनों कृतबर्मा और सात्यकी परस्परकी बाणबृष्टी से बारम्बार गुप्तहोगये १३ हमने उन बृष्णि-योंमें श्रेष्ठोंके धनुषोंकी तीव्रता और बलसे ऊंचे फेंके हुये बाणोंको आकाश में शीघ्रगामी पक्षियों के समान देखा १४ हार्द्दिक्यके पुत्र कृतबर्म्माने उस अकेले सत्यकर्मीको पाकर तेजधार चारबाणोंसे उसके चारोंघोड़ोंको घायल किया१५ उस लम्बी भुजावाले अत्यन्त क्रोधयुक्त चाबुकसे पीड़ामान हाथी के समतुल्य ने आठ उत्तम बाणोंसे कृतबर्म्मा को घायल किया १६ उसके पीछे कृतबर्म्मा ने अच्छेप्रकार खैंचकर तेजधार तीन बाणोंसे सात्यकी को घायल करके एकबाण

से धनुषको काटा फिर शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकी ने उस टूटे धनुष को डालकर बड़े बेगसे बाणसमेत दूसरे धनुषको हाथमें लिया १७।१८ सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ बड़ा पराक्रमी बुद्धिमान् बलवान् और कृतबर्म्मा के हाथसे धनुषके तोड़ने को न सहनेवाला क्रोधयुक्त अतिरथी सात्यकी उस उत्तम लिये हुये धनुष को चढ़ा कर शीघ्रही कृतबर्म्मा के सम्मुख गया १६।२० वहां जाकर सात्यकी ने अत्यन्त तेजधार दशबाणों से कृतबर्म्मा के ध्वजासमेत सारथी और घोड़ों को मारा २१ इसके पीछे बड़े धनुषधारी महारथी बड़े क्रोधयुक्त सात्यकी के मारनेके इच्छावान् कृतबर्म्मा ने सुबर्णके समानवाले रथको मृतक घोड़े सारथीवाला देखकर शूलको उठाकर अपनी भुजाके बेगसे फेंका २२।२३ युद्धभूमि में माधव को मोहित करते यादव कृतबर्म्मा के फेंकेहुये उस शूलको सात्यकी ने तेजधार बाणोंसे काटकर चूर्ण करके गिराया २४ इसके पीछे दूसरे भल्लसे उसको कठिन घायल किया उस शुभ युद्धमें बड़े अस्त्रज्ञ सात्यकी के हाथसे मृतक घोड़े और सारथीवाले कृतबर्म्मा ने पृथ्वीको प्राप्त किया उस द्वैरथ युद्धमें सात्यकी के हाथ से बीर कृतबर्म्मा के विरथ करने पर २५।२६ सब सेनाओं को बड़ाभय बर्त्तमान हुआ और आपका पुत्रभी महाब्याकुल हुआ २७ हे राजा सूतसारथी के मरने और कृतबर्म्मा के बिरथ होनेपर उस शत्रुओं के बिजयी को मृतक सारथी और घोड़ेवाला देखकर २८ सात्यकी के मारनेके अभिलाषी कृपाचार्य्य सम्मुख दौड़े और सब धनुषधारियों के देखते हुये उस महाबाहु को रथके बैठने के स्थान में बैठाकर २६ शीघ्रही युद्धभूमि से दूरलेगये हे राजा सात्यकी के नियतहोने और कृतबर्म्मा के बिरथ होनेपर ३० दुर्य्योधनकी सब सेना फिर सुखोंको फेरगई सेना की धूल से ढकेहुये प्रति पक्षियों ने उसको नहीं जाना ३१ हे राजा उस समय सिवाय राजा दुर्योधनके और सब आपके शूरबीरभागे फिर दुर्य्योधनने सम्मुख से अपनी सेना को देखकर ३२ तीव्रता से शीघ्रही सम्मुख आकर अकेलेनेही सबको रोका और अत्यन्त क्रोधयुक्तने सब पाण्डव धृष्टद्युम्न ३३ द्रौपदी के पुत्र पांचालों की सेनाओं के समूह केकय सोमक और सृञ्जियों को तीक्ष्णबाणों से रोका ३४ आपका पुत्र बड़ा बलवान् सावधान और अजेय युद्ध में भ्रान्ती से रहित होकर नियत हुआ ३५ राजा दुर्य्योधन सब ओरसे तपाता हुआ युद्धमें उस प्रकार नियत हुआ जैसे कि यज्ञमें मन्त्रसेपवित्र बड़ा अग्नि होता है ३६

और प्रतिपक्षीलोग युद्धमें उसके सम्मुख ऐसे नहीं वर्त्तमान हुये जैसे कि मृत्यु के आगे मर्त्यलोक के रहनेवाले नहीं वर्त्तमान होते इसके पीछे कृतवर्म्मा दूसरे रथपर सवार होकर युद्धभूमि में आया ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिएकविंशतितमोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज रथियों में श्रेष्ठ रथमें सवार आपका पुत्र युद्ध में उत्साहवाला ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि प्रतापवान् रुद्र जी नियत होकर शोभित होते हैं १ उसके हजारों बाणोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई उसने शत्रुओंको बाणोंसे ऐसे सींचा जैसे कि धाराओं से बादल पहाड़ों को सींचताहै २ पाण्डवों के सेनासागर में ऐसा कोई मनुष्य घोड़ा हाथी और रथ नहीं था जो कि उसके बाणों से विदीर्ण न हुआ हो ३ हे भरतबंशी राजाधृतराष्ट्र हमने जिस जिस शूरबीरको युद्धमें देखा वह वह आपके बेटे के बाणों से छिदाहुआ था ४ जिसप्रकार सेनाकी उठीहुई धूलसे सेना ढकीहुई दिखाईपड़ी उसीप्रकार महात्मा दुर्य्योधन के बाणोंसे भी ढकीहुईथी ५ हे राजा हस्तलाघवी धनुषधारी दुर्य्योधन के हाथसे बाणरूप कीहुई पृथ्वी को हमने देखा ६ आपके और प्रतिपक्षियों के हजारों शूरबीरों के मध्यमें वह अकेला दुर्य्योधनही पुरुषसिंह हुआ यह मेरामत है ७ हे भरतबंशी वहां हमने आपके पुत्रके इस अपूर्व पराक्रमको देखा जो सब मिलकरभी पाण्डव लोग उसके सम्मुख वर्त्तमान नहीं हुये ८ हे भरतर्षभ उसने युद्धभूमिमें युधिष्ठिरको सौबाणसे भीमसेनको सत्तरबाणसे सहदेवको सातबाण से ९ नकुलको चौंसठ बाणसे धृष्टद्युम्नको पांचबाण से द्रौपदी के पुत्रोंको और सात्यकी को तीनबाण से घायल किया १० हे श्रेष्ठ उसने भल्लसे सहदेवके धनुष को काटा तब प्रतापवान् माद्रीका पुत्र उस टूटे धनुषको डालकर ११ दूसरे धनुष को लेकर राजाके सम्मुख दौड़ा और दशबाणों से दुर्य्योधन को घायल किया १२ इसके पीछे बीर नकुल घोररूप बड़े नौबाणों से राजाको घायल करके बड़ी ध्वनिसे गर्जा १३ सात्यकीने भी टेढ़े पर्ववाले एकबाणसे द्रौपदी के पुत्रोंने तिहत्तर बाणों से धर्मराजने पांच बाणसे १४ और भीमसेनने सत्तर बाणों से राजा को पीड़ामान किया चारोंओर महात्माओंके बाणोंकी वर्षासे ढकाहुआ दुर्यो-

धन १५ सब सेनाके देखतेहुये कम्पायमान नहीं हुआ सब मनुष्यों ने महात्मा की हस्तलाघवता सौष्टवता और बलको भी १६ सब जीवधारियों से अधिक देखा हे राजेन्द्र थोड़े अन्तरको न देखनेवाले कवचधारी आपके शूरवीरपुत्र राजा के चारोंओर आकर बर्त्तमानहुये उन चढ़ाई करनेवालेके ऐसे घोर शब्द उत्पन्न हुये १७ । १८ जैसे कि वर्षाऋतु में बेगमें आनेवाले समुद्रके शब्दहोते हैं फिर वह बड़े धनुषधारी युद्धमें अजेय राजाको पाकर १९ शस्त्रधारी पांडवों के सम्मुख गये अश्वत्थामाने क्रोधयुक्त भीमसेनको युद्धमें रोका २० हे महाराज इसकेपीछे सब दिशाओंसे छोड़ेहुये बाणोंके कारणसे बीरों ने दिशा विदिशाओंको नहीं जाना २१ उन दोनों निर्दयकर्मी कठिनतासे सहने के योग्य अस्त्रों के काटने वालोंने घोररूप युद्ध किया २२ जो कि प्रत्यंचाके आघात से कठिन चर्म रखने वाले और सब दिशाओंको भयसे पूर्ण करनेवाले थे इसके अनन्तर बीरशकुनी ने युद्धमें युधिष्ठिरको घायलकिया २३ युद्धमें सब सेनाओंको कम्पायमान करते उस सौबल के पुत्रने उसके चारों घोड़ों को मारकर कठोर शब्दकिया २४ इसी अन्तरमें प्रतापवान् सहदेव युद्धमें अजेयबीर राजाको रथके द्वारा दूरलेगया २५ इसके पीछे धर्मराज युधिष्ठिरने दूसरे रथपर सवार होकर नौबाणों से शकुनीको घायलकरके फिर पांचबाणसे घायलकिया २६ और सब धनुष धारियों में अत्यंत श्रेष्ठ बड़े शब्दसे गर्जा हे श्रेष्ठ वह युद्ध अपूर्व्व भयकारी रूप २७ देखनेवालों की प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला और सिद्धचारणों से सेवित हुआ फिर बड़ा साहसी उलूक चारोंओरसे बाणोंकी वृष्टियों समेत उस बड़े धनुषधारी युद्धदुर्मद नकुलके सम्मुखगया उसीप्रकार शूरबीर नकुलने युद्धमें शकुनीके पुत्रको २८ । २९ बाणोंकी बर्षा के द्वारा चारोंओर से रोका उसयुद्ध में वह दोनोंबीर कुलीन महारथी ३० परस्पर अपराध करनेवाले लड़तेहुये दिखाईपड़े उसी प्रकार शत्रु-ओंका तपानेवाला सात्यकी कृतबर्मासे ३१ लड़ताहुआ ऐसा शोभायमानहुआ हे राजा जैसे कि युद्ध में बलिसे लड़ताहुआ इन्द्र शोभितहुआ था इसके पीछे दुर्य्योधनने युद्धमें धृष्टद्युम्न के धनुषको काटकर ३२ इस टूटेधनुषवाले को तीक्ष्ण धारवाणों से घायलकिया तब धृष्टद्युम्न भी युद्धमें उत्तम शस्त्रको लेकर ३३ सब धनुषधारियों के देखते राजासे युद्ध करनेलगा हे भरतर्षभ इसके पीछे युद्धभूमि में ऐसा बड़ाभारी युद्धहुआ ३४ जैसे मद झाड़नेवाले दो मतवाले हाथियोंका

युद्ध होताहै इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त बीर कृपाचार्य्य ने बड़े बलवान् द्रौपदीके पुत्रोंको ३५ गुप्त ग्रन्थीवाले बहुत बाणोंसे घायल किया इनका उनकेसाथ ऐसा युद्धहुआ जैसे कि शरीरवालेका युद्ध इन्द्रियोंकेसाथ होताहै ३६ घोररूप बन्धुओंका अयोग्य और बेमर्यादा युद्ध बर्त्तमानहुआ परन्तु उनको ऐसा पीड़ामान नहीं किया जैसे कि इन्द्रियां बालकको पीड़ित नहीं करतीं ३७ क्रोधयुक्त होकर उन्होंने युद्ध में उनके साथ युद्ध किया हे भरतबंशी इसप्रकार उनका उन्हों के साथ ऐसा अपूर्वयुद्ध हुआ ३८ जैसे कि शरीरवालेका युद्ध उठउठकर इन्द्रियोंसे होताहै मनुष्य मनुष्योंके साथ हाथी हाथियोंके साथ ३९ घोड़े घोड़ोंकेसाथ और रथी रथियोंके साथ भिड़गये इस रीतिसे वह युद्ध महाघोररूप और संकुल हुआ ४० हे प्रभु महाराज यह अपूर्व है घोरहै रुद्रहै इसप्रकारके बहुत घोरयुद्धहुये ४१ उन शत्रुओं के बिजय करनेवालों ने युद्धमें परस्पर एकएक को पाकर घायल किया और मार ४२ हे राजा तब उन्होंके शस्त्रोंसे प्रकटहोनेवाली बड़ी धूलदिखाई पड़ी और बहुत से अश्वसवारोंकी हवासे ऊंची उठी ४३ रथकी नेमियों से और हाथियोंकी स्वासाओं से उठनेवाली सायंकालकी सी अरुणतासे युक्त सूर्य्य के मार्ग में गई ४४ उस धूलसे ढकाहुआ सूर्य्य प्रकाशसे रहितहुआ तब पृथ्वी और वह महारथी शूर ढकगये ४५ हे भरतर्षभ फिर एक मुहूर्त्तमेंही चारोंओर से सब स्वच्छ होगया क्योंकि बीरोंके रुधिरसे आर्द्र पृथ्वीपर ४६ वह घोरदर्शन कठिन धूल शांतहोगई हे भरतबंशी महाराज फिर द्वन्दनाम युद्धोंको देखा ४७ मध्याह्न के समय बल पराक्रमके समान बड़ा भयकारी वह युद्धहुआ हे राजेन्द्र तब वहां कवचोंके स्वच्छप्रकाश दिखाईपड़े ४८ और युद्धमें गिरनेवाले बाणोंके ऐसे कठोर शब्दहुये जैसे कि पर्व्वतपर जलतेहुये बांसोंके बड़े२ बनोंके शब्दहोते हैं ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि इसप्रकार वहां घोररूप भयकारी आपके बेटोंका युद्ध पांडवों के साथ वर्त्तमान होनेपर सेना छिन्न भिन्नहुई १ फिर आपके पुत्रने बड़े उपायों से उन महारथियों को रोककर पांडवों की सेनासे युद्धकिया २ आपके पुत्रकी बिजय चाहनेवाले शूरवीर अकस्मात् लौटे और उन्हों के लौटनेपर ३ आपके

शूरवीर और दूसरों के शूरवीरों का युद्ध देवासुर संग्रामक समान बड़ा भयानक हुआ दूसरों में और आपकी सेनामें किसी ने भी मुखको नहीं मोड़ा ४ ध्यान और नामोंके द्वारा परस्पर लड़तेथे तब उन परस्पर युद्ध करनेवाले बीरोंका बड़ा विनाश हुआ ५ इसके पीछे बड़ेक्रोधभरे युद्धमें राजाओं समेत धृतराष्ट्रके पुत्रों के विजय करने के अभिलाषी राजायुधिष्ठिर ने ६ सुनहरी पुंख तीक्ष्णधार तीन बाणों से कृपाचार्य्यको घायलकरके चार नाराचों से कृतवर्मा के घोड़ोंको मारा ७ अश्वत्थामाजी उस यशवान् कृतवर्माको युद्धभूमि से दूरलेगये इसकेपीछे कृपाचार्य्य ने आठबाणों से युधिष्ठिरको घायल किया ८ तब राजादुर्योधन ने सातसौ रथियों को युद्ध में उस स्थानपर भेजा जहांपर कि यह धर्म्मपुत्र राजायुधिष्ठिर था ९ शीघ्र बायुके समान शीघ्रगामी वह रथ रथियों समेत युद्धमें युधिष्ठिर के रथकी ओरगये १० हे महाराज उन सब रथियों ने चारोंओर से युधिष्ठिरको घेर कर शायकोंसे ऐसा गुप्तकरदिया जैसे कि सूर्य्यको बादल गुप्तकर देते हैं ११ उन अत्यन्त क्रोधयुक्त शिखण्डी आदिक रथियों ने कौरवों से उस प्रकार घिरे हुये युधिष्ठिरको देखकर सहन नहीं किया १२ उत्तम घोड़ों से युक्त क्षुद्रघंटिकाओं से अलंकृत रथों की सवारीसे आपहुंचे और कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिर को चारोंओर से रक्षित करनेवाले हुये १३ इसके पीछे पाण्डव और कौरवोंका वह युद्धजारी हुआ जोकि रुद्ररूप रुधिररूपी जलसे युक्त यमराज के देशका बढ़ानेवाला था पांचालोंसमेत पाण्डवों ने सातसौ रथियोंको मारकर कौरवों के युद्धकर्त्ताओंको रोका १४।१५ वहां पांडवों से और आपके पुत्रसे ऐसा बड़ा युद्धहुआ जैसा न देखाथा न सुनाथा १६ इसप्रकार चारोंओरोंको वे मर्य्याद युद्धों के जारीहोने पर और आपके और दूसरों के शूरवीरों के मरनेपर १७ और उत्तम शंखों के बजने ऊंचे सिंहनाद होने धनुषधारियोंके गर्जनाके साथ शूरबीरोंके गर्जनेपर १८ बड़े युद्धोंमें मर्मस्थलोंके घायल होने और विजयाभिलाषी शूरवीरोंके दौड़नेपर १९ सबओर से पृथ्वीपर शोकके उत्पन्न करनेवाले नाशके उत्पन्न होने और बहुत उत्तमकुलाङ्गनाओं के मांग सिंदाने २० बड़ेभयानक और अमर्याद युद्धके वर्त्तमानहोनेपर नाशके द्योतन करनेवाले महाभयानक उत्पात प्रकटहुये २१ पर्वत और बनोंकेसमेत शब्द करनेवाली पृथ्वी कम्पायमान हुई और हे राजा दण्ड ज्वालाओं समेत चारोंओरको फैलीहुई उल्का २२ सूर्य्यमण्डलको घायलकरके

स्वर्गसे पृथ्वीपर गिरी और कङ्कड़ पत्थर बरसानेवाली बायुप्रकटहुई २३ हाथियोंने आंसूडाले और कठिन कम्पन उत्पन्नहुआ इन बड़े भयानक और घोर उत्पातोंको अनादरकरके २४ पीड़ासे रहित स्वर्गके अभिलाषी क्षत्री लोग युद्ध करनेका मताकरके सुंदर धर्मके मूल कुरुक्षेत्रमें नियतहुये २५ इसके पीछे गांधार देशके राजाका पुत्र शकुनी यह बोला कि तुम तबतक आगेसे युद्धकरो जबतक कि मैं पीछेकी ओरसे पाण्डवों को मारूं २६ इसके पीछे चढ़ाई करनेवाले हम लोगोंके मध्यमें बेगवान् प्रसन्नचित्त मद्रदेशी और अन्य २ शूरबीरोंने किलकिला शब्द किया २७ लक्ष्यके प्राप्त करनेवाले कठिनता से सम्मुखताके योग्य और धनुषोंको चलायमान करनेवाले उन पाण्डवोंने हमको फिर पाकर बाणों की बर्षासे आच्छादित किया हे राजा फिर राजामद्रकी सेना शत्रुओंके हाथसे मारीगई उसको देखकर दुर्य्योधन की सेना फिर मुखफेर चली २८। २९ तब गान्धारके राजा पराक्रमी शकुनी ने यह बचनकहा कि हे धर्म्म के न जाननेवाले बीरलोगो लौटो युद्धकरो तुमको भागने से क्या प्रयोजनहै ३० हे भरतर्षभ राजा गान्धार के शूरबीर जोकि बड़े २ प्रासों से लड़नेवाले थे उन्हीं की घोड़ोंवाली दशहज़ार सेनाथीं ३१ मनुष्योंके नाश बर्त्तमान होनेपर उस सेनासमेत पराक्रम करके तेजधार बाणों से पाण्डवी सेनाको पीछेकी ओरसे मारा ३२ हे महाराज जैसे कि वायुसे हटायाहुआ बादल चारोंओरसे फटजाताहै उसीप्रकार पाण्डवों की वह बड़ी सेना छिन्न भिन्नहुई ३३ उसके पीछे सावधान युधिष्ठिरने अपनी सेनाको सम्मुख से छिन्न भिन्न देखकर बड़े पराक्रमी सहदेवको प्रेरणाकरी ३४ कि यह सौबलका पुत्र हमारी जघन सेनाको पीड़ामानकरके नियतहै और सेनाको माररहाहै हे पाण्डव तुम इस दुर्बुद्धी को देखो ३५ तुम द्रौपदी के पुत्रों समेत जाओ और इस सौबलके पुत्र शकुनीको मारो हे निष्पाप मैं धृष्टद्युम्नको साथलेकर रथकी सेनाका नाशकरूंगा सब हाथी घोड़े और तीन हज़ार पदाती तेरे साथजायँ उन सब सेनाओं से युक्त होकर तुम शकुनीको मारो इसके पीछे धनुषधारियोंसे युक्त सातसौ हाथी और पांच हज़ार घोड़े पराक्रमी सहदेव ३६। ३७ तीन हज़ार पदाती और द्रौपदी के पुत्र यह सब मिलकर उस युद्धदुर्मद शकुनी के सम्मुखगये ३८। ३९ हे राजा इसके अनन्तर शकुनी को उल्लंघन करके बिजयाभिलाषी प्रतापवान् सहदेवने पीछेकी ओरसे मारा ४० फिर बेग-

वान् पांडवों के क्रोधयुक्त अश्वसवार उनरथियोंको उल्लंघनकर शकुनीकी सेना में पहुंचे ४१ वहां युद्धमें नियत उन अश्वसवारों ने शकुनी की बड़ी सेनाको बाणोंकी वर्षासे ढकदिया ४२ हे राजा आपकी कुमन्त्रतासे वह युद्ध जारीहुआ जोकि गदा और प्रास उठानेवाले महात्माओंसे सेवितथा ४३ जिसमें धनुषोंकी प्रत्यञ्चाओंके शब्द बन्दहोगये रथी कुतूहल दर्शीहुये और अपने और दूसरोंकी मुख्यता भी दृष्टि न पड़ी ४४ हे भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ उनकौरव और पाण्डवोंकी भुजाओं से छोड़ी हुई शक्तियों का गिरना नक्षत्रों के आकाश से पतन होनेके समान हुआ ४५ हे राजा जहां तहां गिरेहुये निर्म्मल दुधारा खड्गों से संयुक्त आकाश बहुत शोभायमान हुआ ४६ हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र तब चारोंओर से गिरते हुये प्रासों के रूप ऐसेहुये जैसे कि आकाशमें शलभाकेसमूहोंके रूप होते हैं ४७ रुधिरसे लिप्त सम्पूर्ण शरीर और बाणों से घायल हज़ारों घोड़े चारों ओर से गिरे ४८ परस्पर सम्मुख होकर चूर्ण होगये मुखोंसे रुधिरकी बमनकरते घायल दृष्टिपड़े ४९ शत्रुओं के विजय करने पर फिर सेनाकी धूलसे संयुक्तहोने पर घोर अन्धकार हुआ तब अन्धकार से ढकजाने पर उन घोड़ों और मनुष्यों को उस स्थानसे हटाहुआ देखा कितनेही रुधिरकी बमन करतेहुये पृथ्वीपर गिरपड़े ५०।५१ घोड़ोंकी पीठ से परस्पर खैंचनेवाले बाणों से चिपटे हुये मनुष्य अंगोंकी चेष्टा करनेको समर्थ नहीं हुये ५२ मल्लों के समान मिलकर परस्पर में मारा और बहुत से निर्जीव मनुष्य घोड़ों से दूरदूरतक खैंचेगये ५३ बहुतसे विजयाभिलाषी अपने को शूर माननेवाले मनुष्य जहां तहां पृथ्वीपर पड़े हुये दिखाईपड़े ५४ रुधिरसे लिप्त टूटेभुज केशोंसेरहित हजारों मनुष्योंसे आच्छादित पृथ्वी दिखाईपड़ी ५५ सवारों समेत मृतक घोड़ों से पृथ्वी के आच्छादित होनेपर घोड़ेकी सवारीसे दूरजाना असंभव होगया ५६ रुधिरसे लिप्त सब शरीर शस्त्र धनुषआदि के उठानेवाले नानाप्रकार के प्रहार करनेवाले घोररूप परस्पर मारने के अभिलाषी ५७ युद्ध में सेना के मनुष्यों के समीपवर्त्ती जिनके कि बहुत से मनुष्य मारेगये उन लोगों समेत युद्ध में एक मुहूर्त्त भर लड़कर वह शकुनी शेष बचेहुये छःहजार घोड़ों समेत हटगया ५८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणित्रिविंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि उसीप्रकार रुधिर से लिप्त थकी सवारीवाली पाण्डवीयसेना भी शेष बचेहुये छः हजार घोड़ों समेत हटगई १ बहुत समीपी युद्धमें जीवनके त्यागनेवाले रुधिरसे भरे पाण्डवीय अश्वसवार बोले २ कि यहां जब कि हाथियों से लड़ना असंभवहै तो बड़े हाथियों से लड़ना कैसे संभवहोगा रथ रथोंके और हाथी हाथियोंकेही सम्मुखजायँ ३ वह सम्मुख होनेवाला शकुनी अपनी सेना में नियतहै राजाशकुनी फिर युद्धको प्राप्त नहीं करेगा ४ इसके पीछे द्रौपदी के पुत्र और मतवाले बड़े हाथी वहां गये जहांपर कि पांचालदेशी महारथी धृष्टद्युम्न था ५ धूलके बादल उठनेपर कौरव्य सहदेव भी अकेला वहांगया जहांपर राजा युधिष्ठिरथे ६ इसके पीछे उनकी चढ़ाईहोने पर क्रोधयुक्त शकुनी ने अपने पक्ष में नियत हुई धृष्टद्युम्नकी सेनाको मारा ७ फिर प्राणोंको त्यागकर परस्पर मारने के अभिलाषी आपके और प्रतिपक्षियों के शूरबीरों का वह कठिन युद्ध वर्त्तमान हुआ हे राजा उस बीरोंकी सम्मुखता में उन्होंने परस्पर देखा सैकड़ों हजारों शूरबीर चारोंओर से दौड़े ८। ९ संसार के नाश में खड्गों से कटनेवाले शिरों के ऐसे बड़े शब्द प्रकटहुये जैसे कि गिरते हुये तालफलों के शब्द होते हैं १० हे राजा कवचोंसे रहित टूटेअंग पृथ्वीपर गिरतेहुये शरीर शस्त्रधारी भुजा और जंघाओं के चटचटानाम शब्द बड़े कठोर और रोमांच खड़े करनेवाले उत्पन्नहुये तीक्ष्णधार शस्त्रों से भाई पिता और पुत्रों को मारते ११। १२ शूरबीर चारोंओरसे ऐसे दौड़े जैसे कि मांस के निमित्त पक्षी परस्पर क्रोधयुक्त एक दूसरे को पाकर १३ प्रथम मैं प्रथम मैं इसप्रकार से कहकर हजारों ने प्रहार किये और कठिन प्रहारों से निर्जीव आसनोंसे च्युत अश्वसवारों के कारणसे हजारों घोड़े चारोंओरको दौड़े हे राजा फड़कते मर्दन युक्त तीव्रगामी घोड़ों के १४।१५ और अलंकृत गर्जनेवाले मनुष्यों के और शक्ति प्रास और दुधारे खड्गों के कठोर शब्द वर्त्तमान हुये १६ हे राजा आपके कुबिचार में शत्रुके मर्म्मस्थलों के काटनेवाले पुरुषों के बड़े शब्दहुये परिश्रमसे दबाये क्रोधयुक्त प्यासे थकीसवारीवाले १७ और तेजबाणों से अत्यंत घायल आपके शूरबीर सम्मुख वर्त्तमान हुये वहां रुधिर की गन्ध से मतवाले और अचेत बहुत मनुष्यों ने १८ समीप

आनेवाले शत्रुओं समेत अपनेही शूरबीरों को मारा और विजयाभिलाषी मरे-हुये बहुत से क्षत्री बाणों की बर्षा से घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े १६ । २० आप के पुत्र के देखते हुये सेना का घोर नाश हुआ हे राजा पृथ्वी मनुष्य और घोड़ों के शरीरों से ढकगई २१ रुधिररूप जल रखनेवाली महाअपूर्ब भयभीतोंका भयबढ़ानेवाली होगई हे भरतबंशी खड्ग पट्टिश और शूलों से बारंबार घायल २२ पाण्डव और आपके शूरबीर नहीं लौटे जबतक शरीर में प्राण शेष रहे तबतक सामर्थ्य के अनुसार युद्ध करतेरहे २३ व्रणों से रुधिरको डालतेहुये शूरबीर चारोंओर को दौड़े और धड़ अर्थात् रुंड शिरको बालोंसे पकड़कर २४ रुधिरसे भरेहुये तीक्ष्ण खड्गको उठाकर दिखाई दिया हे राजा इसके पीछे बहुत रुंडोंके उठनेपर २५ उसप्रकारके रुधिरकी गंधसे शूरबीर मूर्च्छित होनेलगे उसके पीछे शब्दके न्यून होनेपर शकुनी थोड़े शेष बचेहुये घोड़ों समेत पांचाल देशियोंकी बड़ीसेनाके सम्मुख बर्त्तमान हुआ इसकेपीछे विजयाभिलाषी पांडव शीघ्रही सम्मुख दौड़े २६ । २७ शस्त्र उठानेवाले युद्धके अन्तपर पहुँचने के इच्छावान् पदाती हाथी और अश्वसवारों ने उसको चारोंओर में सबप्रकारसे घेर कर २८ नानाप्रकारके शस्त्रों से घायल किया फिर आपके रथ घोड़े पत्ति और हाथी सबओरसे चढ़ाई करनेवाले उन पाण्डवों को देखकर सम्मुख पहुँचे और शस्त्रोंसे कितनेही शूरबीर पदातियोंने युद्धमें चरणघात और मुष्टिकाओं से परस्पर २९ । ३० घायल किया और घायल करके फिर गिरपड़े रथी रथपरसे और हाथीके सवार हाथी परसे ऐसे गिरपड़े ३१ जैसे कि पुण्य फलके क्षीणहोने से बिमानपर चढ़ेहुये सिद्ध स्वर्गसे गिरते हैं इसप्रकार महादुःखित शूरबीरोंने परस्पर प्रहार किये और इसीप्रकार अन्य लोगोंने पिता भाई समान बयवाले और पुत्रों कोभी मारा हे भरतर्षभ इसप्रकार प्रासखड्ग और बाणोंसे युक्त बड़ा भयानकयुद्ध बर्त्तमान होनेपर बड़ीही बेमर्यादाहुई ३२ । ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि उसशब्दके मृदुहोने और पाण्डवोंके हाथसे सेनाके मारेजाने पर शकुनी शेष बचेहुये सातसौ घोड़ों समेत हटगया १ युद्ध में शीघ्रताकरता

हुआ वह शकुनी सेनाके पास शीघ्र पहुँचकर यह बारम्बार बचन बोला कि हे अत्यन्त प्रसन्नचित्त और शत्रुओं के बिजय करनेवालो तुम युद्ध करो २ और वहां सब क्षत्रियोंसे पूछा कि वह दुर्योधन कहां है हे भरतर्षभ तब वह क्षत्रीलोग शकुनीके बचनको सुनकर बोले ३ कि वह महारथी कौरव युद्धमें वहां बर्त्तमानहै जहां वह पूर्णचन्द्रमा के समान उसका छत्र दिखाई देताहै ४ जहां पर कि यह कवचधारी शस्त्रलिये रथीलोग नियतहैं और वहां जहांपर यह बादलके समान उत्तम घोरशब्द बर्त्तमानहै ५ हेराजा तुम वहां शीघ्रजावो जाकर तुम उसकौरव-राजको देखोगे उन शूरोंके ऐसे बचन सुनकर वह शकुनी वहांगया ६ हे राजा वहांपर वह आपका पुत्र युद्धमें मुख न मोड़नेवाले बीरोंसे चारोंओर को रक्षित था ७ वहां रथकी सेना समेत दुर्योधनको नियत देखकर आपके सब रथियोंको प्रसन्न करता ८ प्रसन्नमूर्त्ति अपने को कृतकृत्य मानता शकुनी राजा दुर्य्योधन से यह बचन बोला ९ हे राजा अब तुम रथकी सेनाको मारो मैंने सब घोड़े बि-जय किये युद्धमें जीवनको त्यागन करके युधिष्ठिर बिजय करने के योग्य नहीं है १० पाण्डवों से रक्षित उस रथकी सेनाके मरनेपर इन हाथी पदाती आदि सब को मारेंगे ११ बिजयाभिलाषी प्रसन्नचित्त आपके पुत्र उसके बचन को सुनकर तीव्रता से पाण्डवों की सेना के सम्मुख दौड़े १२ सब तूणीर बांधे धनुषों को चलायमान करते धनुषधारियों ने सिंहनाद किये १३ हे राजा इसके पीछे प्रत्य-ञ्चा और तलों समेत अच्छे प्रकार से छोड़ेहुये बाणों के फिर महाभयकारी श-ब्द प्रकटहुये १४ कुन्ती का पुत्र अर्ज्जुन उन सम्मुख बर्त्तमान तीव्रतासे धनुष उठानेवालों को देखकर श्रीकृष्णजी से यह बचन बोला १५ कि आप भ्रान्तिसे रहित होकर घोड़ों को चलायमान करो और सेनारूपी समुद्र में प्रवेश करिये अब मैं तेजधारवाले बाणों से शत्रुओं के नाश को करूंगा १६ हे जनार्द्दनजी परस्पर सम्मुख होतेहुये इस महाभारी युद्ध को होतेहुये अब अठारह दिन हुये १७ इन महात्माओं की असंख्य सेना ने अब युद्ध में नाशको पाया दैव को देखिये कि कैसा है १८ हे अविनाशी माधवजी समुद्रकी समान दुर्य्योधन की सेना हमको पाकर गोपदके समान देखनेमें आई १९ हे माधवजी भीष्मके मरने पर जो यह सन्धि करलेता तो यहां के सब लोगों की कुशल होजाती परन्तु अज्ञान निर्बुद्धि दुर्य्योधन ने उसको नहीं माना २० हे माधवजी भीष्मजी ने

भी जो बड़ा हितकारी शुभदायक वचन कहाथा इस निर्बुद्धि दुर्योधन ने उस को भी नहीं किया कठिन युद्ध में उन भीष्मजी के पृथ्वी पर गिरनेपर मैं नहीं जानताहूं कि कौनसा कारणहै जिससे कि युद्ध जारीहुआ २१। २२ मैं सबप्रकारसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंको अज्ञान और निर्बुद्धि मानताहूं कि जिन्होंने भीष्मजी के भी गिरनेपर युद्ध किया २३ इसके अनन्तर ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य कर्ण और विकर्णके मरनेपर भी विनाशने शान्तिको नहीं पाया २४ इससेना के थोड़े बाकी रहने और नरोत्तम कर्णके पुत्र समेत गिरानेपर नाशने शान्ति को नहीं पाया २५ वीर श्रुतायुश पौरव जलसिन्धु और राजा श्रुतायुधके मरने पर भी नाशहोना बन्द नहींहुआ २६ हेजनार्द्दनजी भूरिश्रवा शल्यशाल्व और दोनों अवन्ति देशके वीर राजालोगों के भी मरनेपर नाशहोना बन्द नहींहुआ २७ जयद्रथ अलायुध राक्षस बाह्लीक सोमदत्त २८ शूर भगदत्त काम्बोज सुदक्षिण और दुश्शासन के मरनेपर भी यह क्षत्रियोंका नाश बन्द नहींहुआ २९ हे कृष्णजी पृथक् २ मण्डलवाले शूरवीर पराक्रमी राजाओं को युद्धमें मराहुआ देखकर भी नाशबन्द नहीं हुआ ३० भीमसेन के हाथसे अक्षौहिणी के प्रधान लोगों को मृतक देखकर मोह और लोभसे नाश बन्दनहीं हुआ ३१ राजाओं के घराने मुख्यकर कौरवों के घरानेमें उत्पन्नहोकर दुर्योधनके सिवाय कौनपुरुष निरर्थक बड़ी शत्रुता को करेगा ३२ गुण बल और शूरता से भी अधिक जानकर हानि लाभको जानता हुआ कौनसा बुद्धिमान् मनुष्य युद्ध करेगा ३३ जो तुम्हारे भी हितकारी बचनों के कहने से उस दुर्योधनका चित्त पाण्डवों के साथ सन्धि करने में नहीं हुआ वह फिर दूसरेके बचनको कैसे सुनसक्ताहै ३४ सन्धि के विषय में भीष्म द्रोणाचार्य्य और विदुरजी को भी जिसने उत्तर दिया अब उसका कौनसा इलाज है ३५ हे जनार्द्दनजी जिसने अपनी अज्ञानता से हितकारी बचनों के कहनेवालेवृद्धपिता और माताओं कोभी बारम्बार अनादर करके उत्तरदिया वह कैसे दूसरे के बचनों को अंगीकार करसक्ता है हे मधुसूदनजी प्रकटहै कि यह कुलका नाश करनेवाला उत्पन्नहुआ ३६।३७ हे विशाम्पते उसी प्रकार इसकी चेष्टा और नीयत देखी जाती है कि यह हमको राज्य नहीं देगा हे अविनाशी मेरा यह मतहै ३८ हे बड़ाई देनेवाले भाई मुझसे बहुधा महात्मा विदुरने कहा था कि दुर्योधन कभी अपने जीते जी राज्यका भाग नहीं

देगा ३९ दुर्योधन जबतक जीवताहै तबतक हम निरपराधियों के साथ पापकर्म करेगा ४० हे माधवजी वह बिना युद्धकिये और किसीप्रकारसेभी बिजय करनेके योग्य नहीं है न्यायके देखनेवाले बिदुरजीने सदैव मुझसे यही कहा कि ४१ सो अब उसदुरात्माके सब निश्चयको और जो बचन उसमहात्मा बिदुरजी ने कहाहै उसको जानूंगा ४२ जिस दुर्बुद्धिने परशुरामजी के सत्य और परिणाममें हितकारी बचनोंको सुनकर अपमान किया इससे निश्चय ज्ञातहोताहै कि वहनाश के सम्मुख नियत हुआ है ४३ दुर्य्योधन के उत्पन्न होने पर बहुत सिद्धलोगों ने कहाथा कि इस दुरात्मा दुर्बुद्धिको प्राप्त होकर बहुत से क्षत्रियों के कुलनाश होजायँगे ४४ हे जनार्द्दनजी उन्होंका बारम्बार कहाहुआ वहबचन अब सत्य होरहा है कि दुर्य्योधन के कारण से बहुतसे असंख्य राजाओं का नाशहोगया ४५ सो हे माधवजी अब मैं युद्ध में सब शूरबीरों को मारूंगा क्षत्रियों के शीघ्र मरने और डेरों के जल्दीसे खालीहोने पर ४६ अपने मरणके लिये वह दुर्योधन हमारे साथ युद्ध करने को अंगीकार करेगा हे जनार्द्दनजी अनुमान से बिदित होता है कि शत्रुताका अन्त वही होगा ४७ हे श्रीकृष्णजी मैं अपनी बुद्धि से शोचता बिदुरजीके बचन और इसदुरात्माके कर्म से ऐसाही देखताहूं ४८ हे बीर इस हेतुसे आप उस सेनामें चलो जबतक युद्धमें तेजबाणों से इस दुरात्मा दुर्योधनको और इसकी सेनाको मारूंगा ४९ हे गरुड़ध्वजजी अब मैं दुर्य्योधन के देखते इस निर्बल सेनाको मारकर धर्म्मराजकी कुशलताको करूंगा ५० संजय बोले कि अर्जुन के इसप्रकार बचन को सुनकर हाथ में रस्सी पकड़नेवाले श्रीकृष्णजीने निर्भयतासे उससेनामें प्रवेशकिया ५१ बड़ेसाहसी गोबिन्दजी बड़ी पताकावाले रथकी सवारी से उस सेनाको मँझाते हुये घूमने लगे जो कि प्रास खड्ग और बाणों से भयानक शक्तिरूपी कांटों से पूर्ण गदा और परिघसूरतमार्ग रखनेवाला रथ हाथी रूप बड़े बृक्षवाला घोड़े और पत्तिरूपी लताओं से संयुक्त सेनारूपी बनथा ५२।५३ हे राजा युद्धमें श्रीकृष्णजी से चलायमान वह श्वेत घोड़े अर्ज्जुनको सवार कियेहुये सब दिशाओं में दिखाई पड़े ५४ इसके पीछे शत्रुओंका तपानेवाला अर्जुन सैकड़ों बाणजालों को फैलाता रथकी सवारी से युद्ध में ऐसे आया जैसे कि जलकी धाराओं को बरसाता बादल आता है ५५ युद्धमें अर्जुनके बाणों से ढकेहुये शूरबीर और टेढ़े पर्बवाले बाणों के बड़े शब्द

प्रकटहुये ५६ गांडीव धनुषसे चलाये हुये इन्द्रवज्रकी समान स्पर्शवाले कवचों पर लगतेहुये वाण समूह पृथ्वीपर अच्छे गिरे ५७ हे राजा वह बाण हाथी और घोड़ों को मारकर पक्षियों के समान युद्धभूमि में गिरपड़े ५८ गांडीव धनुष के चलायेहुये बाणों से सब पृथ्वी ऐसी ढकगई कि युद्धमें दिशा और विदिशा भी नहीं जानीगई ५९ अर्ज्जुनके नामों से अंकित सुनहरी पुंख तेलसे साफ किये हुये और कारीगरके मांजे हुये बाणों से सब जगत् पूर्ण होगया ६० अग्नि के समान अर्ज्जुनसे भस्म होनेवाले तेज बाणों से घायल उन घोररूप हाथियों ने अर्जुनको त्याग नहीं किया ६१ सूर्य के समान प्रकाशमान तेजस्वी धनुष बाण धारी अर्ज्जुन ने युद्ध में लड़नेवालों को ऐसे भस्मकिया जैसे कि ज्वलितरूप अग्नि सूखे वनको भस्म करताहै ६२ जैसे कि वनके समीप वनवासियोंसे छोड़ा हुआ कालामार्ग्ग अथवा बड़े शब्द रखनेवाली वृद्धि युक्त प्रतापी अग्नि उस सूखे वनको भस्मकरे जोकि बहुतसे वृक्षों से पूर्ण होकर सूक्ष्म लताओं से आ-च्छादित होय ६३ इसी प्रकार नाराचों से संतप्त करनेवाले बाणरूप छोटी बड़ी ज्वाला रखनेवाले बड़े तेजस्वी वेगवान् अशान्तचित्त अर्जुनने आपके पुत्रकी सब सेनाको नाशकरदिया ६४ अच्छे प्रकारसे छोड़ेहुये सुनहरी पुंख जीवनके हरनेवाले उसके बाण कवचोंको भेदकर पारहोगये उसने मनुष्य घोड़े और उ-त्तम हाथीपर भी एकके सिवाय दूसरे बाणको नहीं मारा ६५ उस अकेले ने म-हारथियोंकी सेनामें प्रवेशकरके बहुत प्रकारके रूपवाले बाणों से आपके पुत्रकी सेनाको ऐसे मारा जैसे कि दैत्य लोगोंको वज्रधारी इन्द्र मारताहै ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि अर्जुनने गाण्डीव धनुषके द्वारा उन धनुषधारी उपाय करने वाले और मुख न मोड़नेवाले शूरबीरों के संकल्पों को निष्फल करदिया १ वह इन्द्रवज्रके समान स्पर्शवाले असह्य महा प्रकाशित बाणों को छोड़ता ऐसे दि-खाई देताथा जैसे कि जलधाराओं को छोड़ता बादल दिखाई पड़ताहै २ हे भर-तर्षभ अर्जुनके हाथसे घायल वहसेना आपके पुत्रके देखतेहुये युद्धसे भागी ३ कितनेही भाई पिता और समान अवस्था वालों को भी छोड़करभागे कोईमृतक

घोड़ेवाले और कोईमृतक सारथीवाले रथ दिखाई पड़े ४ हे राजा कितनेही रथ टूटे ईशादण्ड युग और चक्रवालेहुये और दूसरोंके सायकों ने नष्टताको पाया बहुतेरे बाणोंसे पीड़ावान्हुये ५ कितनेही बिना घायलहुयेही भयसे पीड़ित होकरभागे और जिनके बहुतभाई बन्धुमारेगये ऐसेबहुतसे मनुष्य पुत्र भाई आदि को लेकरभागे ६ कोई पिताको कोई साथी बान्धव नातेदार और भाइयों को पुकारे ७ और हे राजा कितनेही जहां तहां सामान को छोड़कर भागे फिर वहां बहुतसे महारथी कठिन घायल और अचेतहोकर ८ अर्जुन के बाणों से घायल और श्वास लेते दिखाई पड़े बहुत से उनको रथपर सवार करके एक मुहूर्त्त विश्वास कराके थकावटसे रहित अच्छेप्रकार तृप्तकरके फिर युद्धके निमित्त भेजेगये कितने युद्धाभिलाषी लोग उनको छोड़कर ६। १० आपके पुत्रकी आज्ञा को मानकर फिर युद्धमेंगये बहुतसे युद्धदुर्मद जलको पीकर सवारी को आराम देकर और कितनेही कवचोंको बदलकर युद्धमेंगये हे भरतर्षभ कितनेही अपने भाइयों को डेरे में छोड़ बिश्वासदेकर चलदिये ११। १२ किसीने पुत्रोंको किसीने पिताओंको डेरोंमें छोड़कर युद्धकोही स्वीकार किया और कितनेही शूरवीरोंने उत्तम रथोंको अलंकृतकरके १३ पांडवीयसेनामें प्रवेशकरके फिर युद्धको स्वीकार किया वह शूर क्षुद्रघंटिकाओंके जालोंसेयुक्त ऐसे शोभायमान हुये १४ जैसे कि तीनोंलोकों की बिजय में प्रवृत्त दैत्य और दानव होते हैं कितनेही शूरबीरों ने सुवर्ण से अलंकृत रथोंकी सवारी से १५ पाण्डवों की सेना में आकर धृष्टद्युम्न से युद्धकिया पांचालदेशी धृष्टद्युम्न महारथी शिखण्डी १६ और नकुलकेपुत्र सतानीकने रथकी सेनासे युद्धकिया इसके पीछे क्रोधयुक्त और बड़ी सेनासेयुक्त १७ मारनेको सन्नद्ध धृष्टद्युम्न आपकेपुत्रों के सम्मुखगया फिर उस धृष्टद्युम्न के आने पर आपकेपुत्र राजा दुर्य्योधनने १८ बाणोंके बहुतसे समूहों को चलाया हेराजा इसके अनन्तर आपके धनुषधारी पुत्र से घायलहुये धृष्टद्युम्न ने १९ शीघ्रकर्मी कारीगरके हाथसे मांजेहुये नाराच अर्द्धनाराच और वत्सदन्त नाम बाणोंसे २० आपके पुत्र के चारों घोड़ों को मारकर दोनोंभुजा और छातीपर घायल किया चाबुकसे पीड़ित हाथीके समान अत्यन्त घायल उसबड़े धनुषधारीने २१ बाणों से उसके चारोंघोड़ोंको मारडाला और उसके सारथी के शिरको भी भल्लकेद्वारा धड़से अलग किया २२ फिर शत्रुबिजयी राजा दुर्य्योधन रथ टूटने से घोड़ेकीही

पीठपर चढ़कर थोड़ीदूर हटगया २३ हे महाराज फिर आपका बड़ा बलवान् पुत्र सेनाको पराक्रमसे हीन देखकर वहांगया जहांपर कि शकुनी था २४ तदनन्तर रथोंके टूटनेपर तीनहज़ार बड़े हाथियोंने पांचों महारथी पाण्डवोंको चारोंओर से घेरलिया २५ हे भरतबंशी युद्धमें हाथियों की सेनासे घिरेहुये वह पांचों नरोत्तम ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि बादलों से घिरेहुये ग्रहहोतेहैं २६ इसकेपीछे श्वेत घोड़े और श्रीकृष्णको सारथी रखनेवाला लक्ष्यभेदी महाबाहु अर्जुन रथ की सवारी से बाहर निकला २७ चारोंओर पर्व्वताकार हाथियों से घिरेहुये उस अर्जुन ने निर्मल और तीक्ष्ण नाराचों से हाथियों की सेनाका नाशकिया २८ वहांपर हमने अर्जुनके एकही बाणसे बड़े हाथियों को घायल मृतक और गिरताहुआ देखा २९ फिर मतवाले हाथीकेसमान पराक्रमी भीमसेन उन हाथियों को देखके गदाको हाथमेंलिये हाथियों के सम्मुखगया इसके पीछे दण्ड हाथ में रखनेवाले कालकेसमान शीघ्ररथसे कूदकर गदा उठानेवाले उसपांडवों के महारथीको देखकर ३० । ३१ आपकी सेनाके लोग भयभीत हुये और बिष्ठामूत्रको भी गिराया भीमसेन के गदा हाथ में लेने से सब सेना व्याकुल हुई ३२ हमने भीमसेन की गदा से उन पर्ब्बताकर मदझाड़नेवाले हाथियों को टूटेकुंभ और दौड़ताहुआ देखा ३३ फिर भीमसेनकी गदासे घायल वहहाथी भागे और टूटे पक्षवाले पर्बतोंकेसमान शब्द करते पृथ्वीपर गिरपड़े ३४ आपकी सेनाके लोग उनटूटे कुंभ इधर उधरसे भागते और गिरते हुये बहुतसे हाथियोंको देखकर भयभीतहुये ३५ क्रोधयुक्त युधिष्ठिर और पाण्डव नकुल सहदेवने भी गृध्रपक्ष से जटित तीक्ष्ण बाणोंसे लोगोंको यमलोकमें पहुंचाया ३६ धृष्टद्युम्न युद्ध में राजा को पराजय करके और अश्वकी सवारी से आपके पुत्रके हटजाने पर ३७ सब पांडवोंको हाथियों से घिराहुआ देखकर सबप्रभद्रकों समेत ३८ हाथियोंके मारने का अभिलाषी होकर चल दिया और शत्रुबिजयी दुर्योधन को रथोंकी सेना में देखकर ३९ उन अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्म्माने क्षत्रियों से पूछा कि दुर्योधन कहांगया ४० अर्थात् मनुष्यों का नाश बर्त्तमान होनेपर वहां आप के पुत्र महारथी राजाको न देखते और मृतकहुआ मानते ४१ उनबीरों ने मुख को रूपांतर करके सबसे आपके पुत्रको पूछा कितनेही लोगोंने तो यहकहा कि सारथीके मरनेपर वह वहां गया है जहांपर कि राजा शकुनी है ४२ तब अत्यन्त

घायल दूसरे क्षत्रीबोले कि दुर्योधन से आपको क्या काम है देखो जो जीवता है ४३ सब मिलकर युद्धकरो राजा तुम्हारा क्याकरेगा जिनकी बहुतसी सवारियां मारीगईं वहक्षत्री घायल अंग ४४ बाणोंसे पीड़ित बड़े धीरपनेसे यहबोले कि हम इस सब सेनाको मारें जिससे कि चारोंओरको घिरेहुये हैं ४५ यह सब पाण्डव हाथियोंको मारकर सम्मुखआये फिर उन्होंके बचनको सुनकर बड़ेपराक्रमी अश्वत्थामा ४६ कृपाचार्य कृतवर्म्मा यह तीनों कठिनता से सम्मुखता के योग्य राजा पांचाल की सेनाको चीरकर वहांगये जहांपर कि शकुनी था ४७ अर्थात् यहदृढ़ धनुषधारी शूर रथोंकी सेनाको त्यागकरके वहांगये हेराजा इनके चलेजानेपर धृष्टद्युम्नको अग्रवर्त्ती रखनेवाले ४८ पांडव आपके शूरबीरोंको मारतेहुये वहां आपहुँचे तब उन अत्यन्त प्रसन्न आतेहुये महारथियों को देखकर ४९ और उसप्रकार पराक्रम करनेवाले बीरोंको जानकर आपकी सेना जीवनसे निराश होकर अत्यन्त बिवर्णमुखवाली होगई ५० हे राजा मैं उन नाशवान् सेनाओं को और चारोंओर से घिरेहुओं को देखकर अपने जीवन को त्यागकरके दो अंग रखनेवाली सेना समेत ५१ उसस्थानपर गया जहांपर कि कृपाचार्य्य बर्त्तमानथे वहां नियतहोकर अपने शरीरसे पांचवें राजा पांचालकी सेना से युद्ध करनेलगा ५२ अर्जुनके बाणों से पीड़वान् हमपांचों पीड़ितहुये वहां धृष्टद्युम्नसे हमारा महारौद्र और घोरयुद्धहुआ ५३ हम सब उससे पराजय होकर वहां से हटआये इसकेपीछे मैंने सम्मुख आनेवाले सात्यकी को देखा ५४ वहबीर चारसौ रथियों समेत मेरे सम्मुख दौड़ा और मैं कुछ थकी सवारीवाले धृष्टद्युम्नसे छूटा ५५ और कृतवर्माकी सेनाकी ओर ऐसे दौड़ा जैसे पापी नरक को जाताहै वहांपर एकमुहूर्त्त तक घोरयुद्धहुआ ५६ फिर महाबाहु सात्यकी ने मेरे घोड़े आदिको मारकर मुझ अचेत और पृथ्वीपर गिरेहुये को जीवता पकड़लिया ५७ इसके एक मुहूर्त्तमेंही भीमसेन की गदा और अर्जुन के नाराचोंसे वह हाथियों की सेना नाशवान्हुई ५८ चारोंओरसे पर्वतोंके समान चूर्णशरीरवाले बड़े हाथियों से पाण्डवों का मार्ग्ग अबिदितसा होगया ५९ हे महाराज इसके पीछे हाथियों को हटाते बड़े पराक्रमी भीमसेनने पाण्डवों के रथमार्ग्गको साफ़किया ६० अश्वत्थामा,कृपाचार्य्य, यादव कृतबर्म्मा रथकी सेनामें उस शत्रुबिजयी दुर्योधनको न देखनेवाले इनसब लोगोंने ६१ आपकेपुत्र महारथी राजा

दुर्य्योधनको निश्चय और खोजकिया और धृष्टद्युम्न को छोड़कर वहांगये जहां पर कि शकुनी था यहसब मनुष्यों का नाशहोने पर और राजाको न देखने से व्याकुल हुये ६२ ॥ इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्वणिषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि पाण्डव अर्जुनके हाथसे उस रथकी सेनाके मारने और युद्ध में भीमसेन के हाथसे सेनाके नाशहोनेपर १ और क्रोधयुक्त प्राणों के हरनेवाले दण्डधारी कालके समान घूमते शत्रुविजयी भीमसेन को देखकर २ मरनेसे शेष बचेहुये आपकेपुत्र युद्ध में इकट्ठेहोकर अपने बड़ेभाई कौरव दुर्योधन के दिखाई न देनेपर ३ सबसगेभाई इकट्ठे होकर भीमसेन के सम्मुख गये उनकेनाम दुर्मर्षण, श्रुतान्त, जयत्र, भूरिबल, रबि ४ जयत्सेन, सुजात, शत्रुहन्ता, दुर्वश, दुर्विमोचन, दुष्प्रधर्ष ५ महाबाहु श्रुतर्वा युद्ध में कुशल इन सब आपके पुत्रों ने साथ होकर ६ चारोंओरसे भीमसेनके सम्मुख जाकर सब दिशाओं से रोका हे महाराज तब तो भीमसेन फिर अपने रथपर सवारहुये ७ और आपके पुत्रों के मर्मस्थलोंपर तेजधारवाले बाणों को मारा वड़ेयुद्ध में भीमसेन के हाथसे घायल उन आपके पुत्रों ने ८ भीमसेन को ऐसे घेरलिया जैसे कि नीचेस्थान से हाथी को घेरलेते हैं तदनन्तर क्रोधयुक्त भीमसेन ने दुर्मर्षण के शिर को ९ क्षुरप्र से काटकर शीघ्रही पृथ्वी पर गिराया फिर भीमसेन ने सब कवचों के काटनेवाले दूसरे भल्ल से १० आपके पुत्र महारथी श्रुतान्तको मारा फिर हँसतेहुये शत्रुविजयीने जयत्सेनको नाराचसे घायल करके ११ उस कौरवको भी रथके स्थानसे गिराया हे राजा वह शीघ्रही रथसे गिरतेही मरगया १२ इस के पीछे आप के पुत्र क्रोधयुक्त श्रुतर्वा ने गृध्रपक्षसे जटित टेढ़े पर्ववाले सौबाणों से भीमसेन को घायलकिया १३ इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त भीमसेन ने विष अग्निके समान तीनवाणों से जयत्र भूरिबल और रबि इन तीनोंको घायलकिया १४ वह मृतक महारथी रथोंसे ऐसे गिरपड़े जैसे कि बसन्तऋतु में कटेहुये पुष्पित किंशुक के वृक्ष गिरते हैं १५ इसके पीछे शत्रुसंतापी भीमसेन ने दूसरे भल्लनाम नाराच से दुर्विमोचन को घायल करके मृत्युके वशकिया १६ वह महारथी मृतक होकर रथ से ऐसे गिरपड़ा जैसे कि पर्व्वतपर उत्पन्न होनेवाला वायु से टूटाहुआ वृक्षगि-

रताहै १७ इसके पीछे सेनाके मुखपर दुष्प्रधर्ष और सुजातनाम आपके पुत्रोंको युद्ध में दो २ बाण से मारा १८ वह उत्तमरथी शिलीमुख बाण से घायल शरीर होकर पृथ्वीपर गिरपड़े इसके पीछे भीमसेन ने युद्धभूमि में गिरतेहुये आप के पुत्रको देखकर १९ दुर्व्वेशको भी भल्लसे युद्धमेंगिराया वह मराहुआ सब धनुषधारियोंके देखते रथसे गिरपड़ा २० युद्धमें एक के हाथसे मरेहुये बहुत भाइयों को देखकर क्रोधमें भराहुआ श्रुतर्वा भीमसेनके सम्मुखगया २१ सुवर्ण से अलंकृत बड़े धनुषको टंकारता विष अग्निके समान बहुत बाणों को छोड़ता हुआ गया २२ हे राजा इसने उस बड़े युद्धमें भीमसेन के धनुषको काटकर इसटूटे धनुषवाले को बीस बाणसे घायलकिया २३ इसके पीछे महारथी भीमसेनने दूसरे धनुष को लेकर आपके पुत्रको घायलकरके तिष्ठ २ बचन कहा २४ उन दोनों का महा अपूर्व और भयकारी युद्ध ऐसा शोभायमान हुआ जैसा कि पूर्व्वसमयमें जंभ और इन्द्रका युद्ध शोभितहुआ था २५ वहां उन दोनों के यमराज के दण्डके समान तेजबाणों से सब पृथ्वी आकाश और दिशा बिदिशा ढकगई २६ हे राजा इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतर्वाने धनुषको लेकर युद्धमें शायकोंसे भीमसेनको दोनों भुजाओंसमेत छातीपर घायलकिया २७ हे महाराज आपके धनुषधारी पुत्रके हाथसे अत्यन्त घायलहोकर क्रोधयुक्त वह भीमसेन ऐसे वेगमें प्राप्तहोगया जैसे कि पर्वकाल में समुद्र वेगवान् होजाता है २८ हे श्रेष्ठ इसके पीछे क्रोधसे पूर्ण भीमसेन ने बाणोंसे आपके पुत्रके सारथी और चारोंघोड़ों को यमलोक में पहुँचाया २९ हस्तलाघव को दिखाते हुये बड़े साहसी भीमसेनने उसको विरथदेखकर विशिखोंसे ढकदिया ३० हे राजा रथसेरहित श्रुतर्वाने खड्ग और ढालकोलिया फिर खड्ग और सौ चन्द्रमा रखनेवाली प्रकाशित ढालके धारण करनेवाले इस श्रुतर्वाके शिरको भी भीमसेनने क्षुरप्रकेद्वारा शरीरसे जुदाकरदिया ३१। ३२ तब उसका शरीरभी पृथ्वी को शब्दायमान करता रथसेगिरपड़ा उसबीरके गिरनेपर भयसे अचेत ३३ युद्धके अभिलाषी आप के शूरबीर लोग युद्धमें भीमसेन के सम्मुखगये मरनेसे शेषबचीहुई समुद्र के समान शीघ्र आनेवाली सेनाकेकवच शस्त्रधारी शूरबीरोंको प्रतापवान् भीमसेन ने शीघ्रही रोका उन्होंनेभी उसको पाकर चारोंओरसे घेरलिया ३४। ३५ इसके पीछे घिरेहुये भीमसेन ने आपके उन सबशूरबीरों को तीक्ष्णधारवाले बाणों से

ऐसे पीड़ावान् किया जैसे कि असुरोंको इन्द्र पीड़ावान् करताहै ३६ इसके पीछे युद्धमें पांचसौ कवचधारी महारथियों को मारकर फिर सातसौ हाथियोंकी सेना को मारा ३७ वह श्रेष्ठ भीमसेन बाणोंसे दशहजार पत्तियों और आठसौ घोड़ों को मारकर शोभायमान हुआ ३८ हे प्रभु कुन्तीके पुत्र भीमसेनने आपके पुत्रों को मारकर अपने को अभीष्ट प्राप्तकरनेवाला और सफलजन्मवाला माना ३६ हे श्रेष्ठ आपकी सेनाके लोगोंने उसप्रकार युद्ध करनेवाले और आपके शूरोंके मारनेवाले उस भीमसेनके देखनेको उत्साह नहीं किया ४० फिर सब कौरवोंको भगाकर और उन पीछे चलनेवालोंको मारकर बड़े हाथियोंके डरानेवालेने बड़ी भुजाओं से शब्द किया ४१ हेमहाराज राजा धृतराष्ट्र फिर आपकीसेना जिस के कि बहुतसे शूरवीर मारेगये वह कुछशेष और दुखीआकर वर्त्तमानहुये ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

सञ्जय बोले हे महाराज तब मरने से शेषबचेहुये आपके पुत्र दुर्य्योधन और सुदर्शन युद्ध में घोड़ोंके मध्यवर्त्ती होकर वर्त्तमानहुये १ इसकेपीछे देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी घोड़ोंके मध्यमें दुर्योधन को देखकर कुन्तीके पुत्र अर्जुनसे बोले २ कि शत्रु बहुत नाशयुक्तहुये और जातवाले हटायेगये और यह सात्यकी सञ्जय को पकड़कर लौटा ३ हे भरतबंशी नकुल और सहदेव धृतराष्ट्रके पुत्र और उनके सब साथियों से लड़ते २ थकगये ४ और कृपाचार्य्य कृतवर्मा और महारथी अश्वत्थामा यह तीनों दुर्य्योधन को त्यागकरके नियतहुये ५ बड़ी शोभासे युक्त यह धृष्टद्युम्न दुर्योधनकी सेनाको मारकर सबप्रभद्रकों समेत नियत है ६ हेराजा शिरपर धारण कियेहुये छत्र समेत बारम्बार देखता हुआ यह दुर्योधन घोड़ों के मध्यवर्त्ती ७ सब सेनाको अलंकृत करके युद्धभूमि में उपस्थित होकर नियत है इसको तीक्ष्ण बाणों से मारकर कृतकृत्य होजायगा रथकी सेनाको मृतक और तुझ शत्रुविजयी को वर्त्तमान देखकर जबतक यह लोग नहींभागें तबतक इस दुर्योधनको मारें ८।९ कोई धृष्टद्युम्नके पास जाकर उसको जल्दीसे लावे जबतक वह नहीं आवेगा तबतक यह थकीहुई सेनावाला पापी नहीं छूटेगा धृतराष्ट्र का पुत्र युद्धमें आपकी सब सेनाको मारकर पाण्डवोंको विजय कियाहुआ मानकर

बड़े रूपको धारण करताहै १०। ११ वह राजा पाण्डवोंके हाथसे अपनी सेनाको मराहुआ और पीड़ावान् देखकर युद्धमें अपने मरनेके लिये अवश्य वर्त्तमान होगा १२ यह वचन सुनकर अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से यह बचन कहा कि धृत-राष्ट्रके सब पुत्र भीमसेनही के हाथसे मारेगयेहैं १३ हे श्रीकृष्णजी जो यह दोनों नियत हैं वह अब नहीं रहैंगे अर्थात् मारेजायँगे भीष्मजी मारेगये द्रोणाचार्य मारेगये और इसीप्रकार कुंडल कवचका दान करनेवाला कर्णभी मारागया १४ राजाशल्य और जयद्रथ मारागया हे श्रीकृष्णजी सौबलके पुत्र शकुनीके अभी पांचसौ घोड़े शेष रहगयेहैं १५ हे जनार्दनजी उसके सौ रथ कुछ ऊपर सौहाथी और तीनहजार पदाती शेष रहेहैं १६ अश्वत्थामा कृपाचार्य राजात्रिगर्त्तउलूक शकुनी और यादव कृतवर्मा १७ हे माधव इतनी दुर्य्योधन की सेना बाकी है निश्चयकरके पृथ्वी पर कालसे किसीका बचना नहीं है १८ इसीप्रकार सेना के मरनेपर दुर्य्योधन को नियत देखो महाराज युधिष्ठिर आजके दिन मृतक शत्रु-वालाहोगा १९ शत्रुओं में मेरे हाथसे कोई नहीं बचकर जाताहै यह विचारकर हे श्रीकृष्णजी आजके दिन जो यह मदोत्कट लोग युद्ध त्याग नहींकरेंगे २० तो निश्चय करके चाहै इनमें मनुष्यों के विशेष देवता आदिक भी होंगे तौभी इनसबको मारूंगा अब युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर मैं तेजबाणोंसे शकुनी को मारकर राजा युधिष्ठिर के बड़े जागरण को दूर करूंगा निश्चय करके दुरा-चारी शकुनी ने छलसे जिन रत्नोंको २१। २२ सभामें द्यूतके मध्यमें लियाहै मैं फिर उनको लूंगा अब हस्तिनापुरकी सब स्त्रियांभी २३ युद्धमें पाण्डवों के हाथ से मारे हुये अपने पति और पुत्रों को जानेंगी हे श्रीकृष्णजी अबहीं निश्चय करके सबकार्य्य पूर्णहोगा २४ अब दुर्य्योधन अपनी प्रकाशित लक्ष्मी समेत प्राणों को भी त्याग करेगा जब कि वह भयभीतताके कारण मेरे युद्ध से नहीं हटताहै २५ हे श्रीकृष्णजी बड़े अज्ञानी दुर्य्योधन को आप मृतकही जानो हे शत्रुओं के विजय करनेवाले यह घोड़ों के समूह २६ मेरी प्रत्यञ्चा और तलके शब्दों के सहने को असमर्थहैं आप चलिये मैं जबतक इन्हींको मारूं हे राजा बड़े साहसी अर्ज्जुन के इसप्रकार बचनों को सुनकर श्रीकृष्णजी ने घोड़ों को दुर्य्योधन की सेनामें चलायमान किया २७ हे श्रेष्ठ उस सेनाको देखकर तीनों कवच और शस्त्र धारणकरनेवाले महारथी भीमसेन, अर्ज्जुन और सहदेव सिं-

हनादों समेत दुर्य्योधन के मारने की इच्छासे चले २८ । २९ शकुनी तीव्रता पूर्व्वक सब साथ मिलेहुये उन धनुषोंके उठानेवालों को देखकर युद्धमें मारनेका अभिलाषी होकर पाण्डवों के सम्मुख गया ३० आपका पुत्र सुदर्शन भीमसेन के सम्मुखगया सुशर्म्मा और शकुनी अर्जुनके साथ युद्ध करनेलगा ३१ घोड़े की पीठपर सवार आपका पुत्र दुर्य्योधन सहदेव के सम्मुख गया हे राजा फिर आपके पुत्रने शीघ्रही उपाय पूर्वक ३२ प्राससे सहदेव के शिरपर कठिन प्रहार किया आपके पुत्रसे घायल वह सहदेव रथके बैठनेके स्थानपर ३३ रुधिरसेलिप्त शरीर और विषैले सर्पकी समान श्वासलेता गिरपड़ा हे राजा थोड़ी देरपीछे सहदेवने सचेतताको पाकर ३४ बड़े क्रोधयुक्तने तेजबाणोंसे दुर्योधनको घायल किया कुन्तीके पुत्र अर्जुनने भी युद्धमें पराक्रम करके ३५ शूरोंके शिरोंको घोड़ोंकी पीठपर काटकर उससेनाको तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे छिन्नभिन्न किया ३६ इसप्रकार से वह सब घोड़ोंको गिराकर त्रिगर्त्तदेशी रथियों के सम्मुख गया तब उन त्रिगर्त्तदेशियों के रथियों ने इकट्ठे होकर ३७ अर्जुन और बासुदेवजी को बाणोंकी वर्षाओं से ढकदिया फिर बड़े यशस्वीने क्षुरप्रसे सत्कर्म्मा को गिराकर ३८ उसके रथके ईशाको तेजधार क्षुरप्रसे काटा ३९ और अकस्मात्ही सुवर्णके कुण्डलों से अलंकृत शिरको भी काटा तब वह आपके शूरवीरों के देखते हुये युद्धमें गिरपड़ा ४० हे राजा जिसप्रकार बनमें भूखा सिंह मृगको मरता है उसी प्रकार अर्जुनने उसको मारकर तीनबाणों से सुशर्मा को घायल करके ४१।४२ सुवर्ण के भूषणों से अलंकृत उन सब रथियों को मारा इसके पीछे बहुत काल से इकट्ठे कियेहुये क्रोधके बिषको छोड़ता अर्जुन उसप्रस्थलके राजाके सम्मुख दौड़ा हे भरतर्षभ अर्जुनने उसको सौ पृषत्कोंसे घायल करके उस धनुषधारी के घोड़ोंको मारा इसके पीछे हँसतेहुये अर्जुनने यमराज के दण्ड के समान बाण को चढ़ाकर ४३ । ४४ सुशर्माको लक्ष्य बनाकर शीघ्रतासे छोड़ा उस क्रोधयुक्त धनुषधारी के छोड़ेहुये बाणने ४५ सुशर्माको युद्धमें हृदयपर छेदा हे महाराज फिर वह निर्जीवहोकर ४६ सब पाण्डवों को प्रसन्न करता और आपके पुत्रोंको पीड़ा देताहुआ पृथ्वीपर गिरपड़ा सुशर्म्मा को युद्ध में मारकर उसके पैंतालीस महारथी पुत्रों को शायकों से यमलोक में पहुँचाया ४७ इसके अनन्तर इसके सब अनुगामियों को तेजधार बाणों से मारकर ४८ वह महारथी मरने से शेष

बचीहुई भरतबंशियों की सेनाके सम्मुख गया और युद्धमें क्रोधयुक्त हँसते हुये भीमसेन ने ४९ सुदर्शन को बाणों से गुप्त करदिया फिर क्रोधभरे हँसतेहुये ने इसके शिरको भी शरीरसे जुदा किया ५० तब वह अत्यन्त तेज क्षुरप्रसे मृतक होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा उस बीरके मरनेपर बिशिख नाम बाणोंको फैलाते उस के पीछे चलनेवालों ने ५१ भीमसेन को घेरलिया इसके पीछे भीमसेनने इन्द्र-बज्रके समान स्पर्श तेजधारवाले बाणों से आपकी सेनाको सबओरसे घायल किया हे भरतर्षभ भीमसेनने एक क्षणमेंही उस सेनाको मारा ५२ । ५३ उनके मरनेपर बड़े पराक्रमी सेनाके प्रधानोंने भीमसेन को पाकर युद्धकिया ५४ तब भीमसेनने उन सबकोभी तेजबाणोंसे घायल किया हे राजा इसीप्रकार आपके शूरबीरों ने महारथी पाण्डवों को ५५ बड़ी बाणोंकी बर्षासे चारोंओर को रोका पाण्डवों का और आपके शूरबीरों का वह युद्ध महाब्याकुल करनेवाला हुआ उस समय वहां अपने बान्धवोंको शोचते परस्पर घायल दोनों सेनाओंके शूर-बीर चढ़ाई करनेवाले हुये ५६ । ५७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिअष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हेराजा मनुष्य हाथी और घोड़ोंके नाशकारी उस युद्धके जारी होनेपर सौबलका पुत्र शकुनी सहदेव के सम्मुखगया १ इसके पीछे उस प्रता-पवान् सहदेवने शीघ्रही उस आतेहुये के ऊपर सूर्य्यादिकके समान शीघ्रगामी बाणों के समूहोंको चलाया २ फिर उलूकने दशबाणों से युद्ध में भीमसेन को घायलकिया हे राजा फिर शकुनीने तीनबाणोंसे घायलकरके नब्बे शायकोंसे सहदेवको ढकदिया ३ हेराजेन्द्र उन शूरोंने युद्धमें सम्मुखहोकर उन कंक और मोरपक्षों से जटित तीक्ष्णबाणों से घायल किया ४ जो कि सुनहरी पुङ्ख शिला से स्वच्छ हुये कानतक खैंचकर छोड़े थे उन्हों के धनुष और भुजासे छोड़ीहुई बाणवृष्टिने ५ सब दिशाओंको ऐसे ढकदिया जैसे कि जलकी धाराओंसे बादल ढकदेता है इसके पीछे युद्ध में क्रोधयुक्त भीमसेन और पराक्रमी सहदेव दोनों महाबली युद्ध में प्रलय को करतेहुये भ्रमण करनेलगे हेभरतबंशी तब आपकी वह सेना उन्होंके बाणोंसे ढकगई ६ । ७ जहां तहां आकाश अन्धकाररूप हुआ

और बाणोंसे ढकेहुये चारोंओर दौड़ते ८ और बहुत मृतकोंको खैंचतेहुये घोड़ोंसे जहांतहां मार्ग संयुक्तहुआ हे श्रेष्ठ अश्वसवारोंके साथ मृतक घोड़ोंके समूह ९ टूटे कवच प्रास खड्ग शक्ति और तोमरों से १० पृथ्वी चारोंओर से ऐसी गुप्त विदितहुई जैसे कि पुष्पों से शवल गुप्तहोते हैं हे महाराज वहां शूरवीर परस्पर सम्मुखहोकर ११ युद्धमें क्रोधयुक्त परस्पर मारते अच्छेप्रकारसे भ्रमण करनेलगे क्रोधसे फैले नेत्र दोनों ओष्ठोंके काटनेवाले कुण्डलधारी कमलकी किंजल्कके समान मुखों से पृथ्वी ढकगई १२ हे समर्थ महाराज गजराजकी सूंडकी समान बाजूबन्द कवच खड्ग और फरसा धारण करनेवाली टूटीभुजा १३ और युद्ध में टूटेखड़े और नृत्य करते अन्य २ रुण्डोंसे पृथ्वी महाघोर और मांसाहारी जीवोंके समूहोंसे पूर्ण होगई १४ फिर थोड़ीसेना शेष रहनेपर पाण्डवोंने अत्यन्त प्रसन्नहोकर बड़े युद्धमें कौरवोंको यमलोक में पहुंचाया १५ हेराजा उसीअन्तर में प्रतापवान् शकुनीने प्राससे सहदेव के शिरपर कठिन प्रहारकिया हे महाराज उस भारी प्रहारसे वह सहदेव व्याकुल होकर रथके बैठने के स्थानपरही बैठगया इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रतापवान् भीमसेनने सहदेवको देखकर १६।१७ सब सेनाओं को रोका और हजारों शूरवीरों को नाराचों से छेदा १८ फिर उस शत्रुविजयी ने उनको छेदकर सिंहनाद किया उस शब्दसे शकुनीके सबहाथी घोड़े और हाथियों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े १९ और भयभीतहोकर अकस्मात् भागे फिर राजादुर्य्योधन ने उन छिन्न भिन्न सेनाओं से कहा २० हे धर्म्म के न जाननेवाले शूरवीरो लौटो युद्धकरो युद्धसे भागने में तुम्हारा क्या प्रयोजन है जो वीर युद्ध में पीठको न दिखाताहुआ सम्मुख होकर अपने प्राणों को त्याग करताहै वह इसलोक में शुभकीर्तिको पाकर मरनेके पीछे शुभलोकोंको भोगता है राजाके इसप्रकार कहनेपर शकुनी के वह साथी २१।२२ मृत्युको पीछेकरके पाण्डवों के सम्मुख वर्त्तमान हुये हे राजा वहां भागने दौड़नेवाले वीरों ने बड़े भयकारी शब्दकिये २३ वह सेना वेगयुक्त सागरके समान सब ओरसे व्याकुल होगई हे महाराज इसके पीछे विजयके निमित्त सन्नद्ध पाण्डव शकुनी के उन साथियों को आगे देखकर २४ सम्मुखगये फिर अजेय सहदेव ने बिश्रामलेकर २५ दशबाणों से शकुनीको घायल करके तीनबाणों से उसके घोड़ोंको घायल किया और हँसतेहुये ने बाणों से शकुनी के धनुषको काटा इसके पीछे युद्ध में

दुर्मद शकुनी ने दूसरे धनुषको लेकर साठबाण से नकुलको और सातबाण से भीमसेन को घायलकिया २६। २७ हे राजा जङ्गमें पिताके चाहनेवाले उलूक ने भी सातबाण से भीमसेन को और सत्तरबाणसे सहदेव को घायलकिया २८ भीमसेनने उसको नौबाणसे शकुनीको चौंसठबाणसे और इधर उधरके पक्षवर्त्ती शूरबीरोंको तीन २ बाणों से घायलकिया २९ भीमसेनके तीक्ष्णनाराचों से घायल और क्रोधयुक्त उन शूरबीरों ने युद्ध में बाणों की वर्षा से सहदेव को ऐसे ढकदिया जैसे कि बिजली रखनेवाले बादल जलकी धाराओं से पहाड़को ढक देते हैं हे महाराज इसकेपीछे प्रतापवान् शूर सहदेव ने इस सम्मुख दौड़नेवाले ३०। ३१ उलूकके शिरको भल्लसेकाटा वह रुधिरसे लिप्तशरीर सहदेवका गिराया हुआ युद्धमें पाण्डवोंको प्रसन्न करता हुआ रथसे पृथ्वीपर गिरा हे भरतबंशी तब शकुनी अपने पुत्रको मराहुआ देखकर ३२। ३३ बिदुरजीके बचन को स्मरण करता आंसुओं से पूर्णकण्ठ बड़े श्वासलेकर एक मुहूर्त्ततक चिन्ता करने लगा फिर अश्रुपूरित नेत्रवाले उस शकुनी ने ३४ सहदेव को पाकर तीन शायकों से घायल किया हे महाराज प्रतापवान् सहदेव ने अपने बाण समूहों से उन छोड़े हुये बाणोंको हटाकर युद्ध में धनुष को काटा हे राजेन्द्र धनुष के टूटनेपर सौबलके पुत्र शकुनी ने ३५। ३६ बड़े खड्गको लेकर सहदेव के ऊपर चलाया तब हँसते हुये सहदेव ने उस अकस्मात् आतेहुये शकुनी के घोररूप खड्ग को ३७ खण्ड खण्ड करदिया खड्ग को खण्डित देखकर बड़ी गदा को लेकर ३८ सहदेवके ऊपर फेंका वह गदा भी निष्फल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनी ने महाघोर कालरात्रि के समान उठाई हुई घोरशक्तिको सहदेवपर चलाया हँसतेहुये सहदेवने अपने स्वर्ण भूषित बाणोंसे उस आतीहुई शक्तिको ३९। ४० युद्धमें तीन खण्ड करदिये वह सुबर्ण से अलंकृत तीनस्थानोंसे टूटीहुई शक्ति पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ी ४१ जैसे कि प्रकाशित गिरनेवाली बिजली आकाशसे गिरती है शक्तिको टूटी और शकुनीको पीड़ावान् देखकर ४२ भय उत्पन्न होनेपर शकुनी समेत आपके सब शूरबीर भागे इसके पीछे बिजय से शोभायमान पांडवोंकी ओरका बड़ा शब्दहुआ ४३ तब आपके सब शूरबीर मुख फेरगये माद्री के पुत्र प्रतापवान्ने उनको उदास चित्त देखकर ४४ युद्धमें हजारों बाणोंसे रोका फिर सहदेवने हृष्टपुष्ट गांधार देशी घोड़ों

से रक्षित विजयमें प्रवृत्तचित्त ४५ युद्धमें वर्त्तमान होनेवाले शकुनी को सम्मुख पाया हे राजा सहदेव उस सम्मुख नियत होनेवाले शकुनी को अपना भाग स्मरणकरके सुवर्ण के अङ्गवाले रथकी सवारीसे सम्मुखगया ४६ और बड़े बल-वान् दृढ़ धनुषको चढ़ाकर टंकारा ४७ उस क्रोधयुक्तने शकुनी के सम्मुख जा-कर गृध्रपक्षयुक्त तीक्ष्णबाणों से ऐसे कठिन घायल किया जैसे कि चाबुकों से बड़े हाथीको घायल करते हैं ४८ वह बुद्धिमान् उसको रोककर स्मरण कराता हुआ बोला कि क्षत्रियधर्म्म में नियत और शूरताकरके युद्धकरो ४६ हे अज्ञानी जब सभामें पाशोंके द्यूतमें जो तुम प्रसन्नहुये थे हे दुर्बुद्धि अब उस दुष्टकर्म्म के फलको देखो ५० वह सब दुरात्मा तो मारेगये जो पूर्व्व में हमको हँसेथे अब इस दुर्योधनके कुलके भस्म करनेवाले अग्निरूप तुम्हीं हमारे मामाजी शेषरहेहो ५१ अब क्षुरप्रसे काटेहुये तेरे शिरको ऐसे जुदाकरूंगा जैसे कि प्रहार करनेवाली लाठी से वृक्षका फल तोड़ते हैं ५२ हे महाराज अत्यन्त क्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी नरोत्तम सहदेवने इसप्रकार कहकर बड़े बेगसे उसको घायलकिया ५३ बड़े अ-जेय शूरबीरों के प्रधान क्रोधसे जलते हुये सहदेवने बलवान् धनुषको खैंचकर ५४ दशबाणोंसे शकुनीको और चारबाणसे उसके घोड़ोंको घायलकरके उसके छत्र ध्वजा धनुषको काटकर सिंहके समान गर्जनाकी ५५ अर्थात् वह शकुनी सहदेवके हाथसे टूटे धनुष ध्वजा और छत्रवाला कियागया और बहुत शायकों से सब मर्मस्थलोंपर अत्यन्त घायलहुआ ५६ हे महाराज इसकेपीछे प्रतापवान् सहदेवने कठिनता से सहने के योग्य बाणों की बर्षा को फिर शकुनी के ऊपर किया ५७ तबतो अत्यन्त क्रोधयुक्त और युद्धमें सुवर्ण से जटित प्रासके द्वारा माद्रीनन्दन सहदेवके मारने की इच्छासे शीघ्रही अकेला शकुनी उसके पास गया ५८ फिर माद्रीके पुत्रने एकसाथ तीनभल्ल से उसके उठायेहुये प्रास और सुन्दरगोल भुजाओंको युद्धके मुखपर काटा और बड़े बेगसे युद्धभूमिमें उच्चस्वर से गर्जनाकरी ५६ फिर शीघ्रता करनेवाले सहदेवने सुनहरी पुंख दृढ़ शिलापर घिसेहुये सब कवच आदिसे पारहोनेवाले श्रेष्ठरीति से चलायेहुये भल्लसे उसके शिरको शरीरसे जुदाकिया ६० सुवर्ण से अलंकृत सूर्य्य के समान प्रकाशमान अच्छेप्रकार चलायेहुये सहदेवके बाणसे युद्धमें कटाहुआ शिर पृथ्वीपर गिर-पड़ा ६१ उस क्रोधयुक्त पाण्डवों ने सुनहरी पुंख तेजधार बेगवान् बाणसे उसके

उस कटेहुये शिरको बहुत दूरफेंका जोकि कौरवोंके अन्यायका मूलथा ६२ आपके शूरबीर उस टूटे और पृथ्वीपर पड़ेहुये रुधिरमें लिप्तशरीर शकुनीको देखकर भयसे पराक्रमहीन होकर दिशाओंको भागे ६३ शुष्कमुख अचेत और गांडीव धनुषके शब्दसे बिदीर्ण भयसे पीड़ित टूटे और घायल रथ घोड़े और हाथी वाले पदाती होकर दुर्योधन समेत भागे ६४ हे भरतबंशी इसके अनन्तर रथसे शकुनी को गिराकर प्रसन्नतायुक्त अत्यन्त हर्षित अन्तःकरण और केशवजी समेत सेनाके लोगोंको प्रसन्नकरनेवाले पाण्डवोंने युद्धमें शंखोंको बजाया ६५ तब सब प्रसन्न लोगोंने युद्धमें उससहदेवकी पूजन पूर्वक प्रशंसाकरी हे बीर यह छली और दुरात्मा शकुनी प्रारब्धसेही पुत्र समेत तेरे हाथसे मारागया ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशल्यपर्व्वणिशकुन्युलूकबधेएकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

संजय बोले हे महाराज इसके पीछे शकुनी के क्रोधयुक्त साथियों ने जीवन को त्यागकरके पांडवों को चारोंओरसे रोका १ सहदेवकी बिजयमें प्रवृत्तचित्त अर्जुन और क्रोधयुक्त बिषैले सर्प के समान दिखाई देनेवाला तेजस्वी भीमसेन इन दोनों ने उन सब शकुनी के साथियों को रोका २ अर्जुन ने गांडीव धनुष के द्वारा शक्ति दुधारे खड्ग और प्रास हाथमें रखनेवाले सहदेवके मारनेके अभिलाषी उन लोगोंका संकल्प निष्फलकिया ३ और भल्लों से उन सम्मुख दौड़ने वाले शूरबीरों के शस्त्रधारी भुजाओं समेत शिरोंको भी काटा ४ तब वह मृतक निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिरपड़े उस लोकबीर घूमनेवाले अर्जुन के हाथसे सब मारेगये ५ इसके पीछे शत्रुओं का तपानेवाला क्रोधयुक्त आपका पुत्र राजा दुर्योधन अपनी सेनाका नाश देखकर मरने से शेष बचेहुये बहुत से रथ हाथी घोड़े और पदातियों के समूहों को इकट्ठाकरके उनसे यह बचन बोला ६।७ कि युद्धमें पाकर मित्र समूहों समेत पाण्डवों को और सेना समेत धृष्टद्युम्न को भी मारकर शीघ्र लौटो ८ युद्धमें दुर्मद वह सब बीर उसके वचन को शिरसे अंगीकार करके पाण्डवों के सम्मुख गये ९ पाण्डवों ने बड़े युद्ध में बिषैले सर्प्प की समान बाणों से मरने से शेष बचेहुये सम्मुख आनेवालों को घायल किया १० हे भरतर्षभ एक मुहूर्त्तमेंही वह सब सेना युद्ध को पाकर महात्माओं के हाथसे

मारीगई और किसी अपने रक्षकको नहीं पाया ११ वह शस्त्रधारी सेना भयभीत होकर नियत नहीं होती थी चारोंओर को दौड़नेवाले घोड़ों की धूल से व्याप्त दिशा और बिदिशा नहीं जानीगई इसके पीछे पांडवीय सेनासे बहुत मनुष्यों ने निकलकर १२।१३ युद्धमें एक मुहूर्त्तभरमेंही आपकी सेनाके लोगोंको मारा हे भरतवंशी तब आपकी वह सेना समाप्त होगई १४ हे प्रभु आपके पुत्र की इकट्ठी होनेवाली वह ग्यारह अक्षौहिणी युद्धमें पाण्डव और सृञ्जयों के हाथसे मारीगई १५ हे राजा आपके उन हजारों महात्मा राजाओं में से केवल अकेला राजा दुर्य्योधन अत्यन्त घायल दिखाई पड़ा १६ इसके पीछे सब दिशाओं को देखकर और सब शूरबीरों से रहित पृथ्वी को और युद्ध में प्रसन्नता पूर्व्वक अभीष्ट प्राप्त करनेवाले चारोंओर से गर्जनेवाले पाण्डवों को देखकर और उनमहात्माओं के वाणों के शब्दोंको सुनकर १७।१८ दुर्योधन मूर्च्छा से पूर्णहुआ फिर सेना और सवारियों से रहित ने हटजाने में चित्तकिया १९ धृतराष्ट्र बोले हे सूत मेरी सेनाके मरने और डेरों के खाली करनेपर पाण्डवों की सेना में तब क्या शेषरहा २० हे संजय इस मेरे प्रश्नको कहौ क्योंकि तुम वर्णन करनेमें बड़े सावधान और कुशलहो और उससमय मेरेपुत्र अभागे दुर्योधनने सेनाकेनाश को देखकर अकेलेनेंही जो किया उसकोभी कहौ २१ संजय बोले कि दोहजार सातसौ हाथी पांचहजार घोड़े और दशहजार पदाती २२ यह बड़ी सेना तो पाण्डवोंकी बाकीथी जिसको कि धृष्टद्युम्न युद्धमें अलंकृतकरके नियतथा २३ हे भरतर्षभ इसके पीछे रथियों में श्रेष्ठ अकेले राजादुर्योधन ने युद्धमें किसी साथीको नहीं देखा २४ हे महाराज उस अकेले राजाने उसप्रकार गर्जते हुये शत्रुओं को और अपनी सेनाके नाशको देखकर २५ ग्यारह अक्षौहिणीसेनाओंका स्वामी आपकापुत्र दुर्य्योधन अपने मृतक घोड़े को छोड़कर युद्ध से पूर्वकीओर भागा २६ और बड़ी तेजस्वी अपनी गदाको लेकर ह्रदकोचला फिर पैदलही थोड़ीदूर जाकर २७ उसने धर्म्म के अभ्यासी महाबुद्धिमान् बिदुर जी के बचनको स्मरण किया कि निश्चय करके पूर्वसमय में बड़े ज्ञानी बिदुरजी ने २८ युद्ध में हमलोगोंके और अन्य२ सब क्षत्रियों के नाशको जानलिया था हे राजा वह दुर्योधन इसप्रकार अधिक चिन्ताकरता ह्रदमें प्रवेश करजाने का अभिलाषी २९ सेनाके नाश को देखकर शोक से महादुःखी हुआ हे महाराज राजाधृतराष्ट्र इसके पीछे

वह सब पाण्डव जिनका अग्रवर्त्ती धृष्टद्युम्न था ३० अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर आपकी सेनाके सम्मुख दौड़े अर्जुन ने गाण्डीव धनुषकेद्वारा उन सम्मुख गर्जनेवाले शक्ति दुधाराखड्ग और प्रासों को हाथ में रखनेवाले शूरबीरों का ३१ सङ्कल्प निष्फल किया उन सबको मन्त्री और बान्धवों समेत तीक्ष्ण धारवाले बाणों से मारकर ३२ श्वेत घोड़ेवाले रथपर अर्ज्जुन बहुत शोभायमान हुआ घोड़े हाथी और रथोंसमेत सौबलकेपुत्र शकुनी के मरनेपर ३३ आपकी सेना टूटहुये महाबन की समान होगई बीर अश्वत्थामा कृतबर्म्मा गौतम कृपाचार्य्य और आपकेपुत्र राजादुर्योधन के सिवाय दूसरा जीवता हुआ कोई महारथी देखने में नहीं आया फिर धृष्टद्युम्न मुझको देखकर हँसताहुआ सत्यकी से बोला ३४। ३५। ३६ कि इसके पकड़ेहुये से क्या प्रयोजन है और जीवतेहुये से भी कुछभी प्रयोजन सिद्ध नहीं है तब महारथी सात्यकी धृष्टद्युम्नके बचनको सुनकर ३७ और तेजधार खड्गको उठाकर मेरे मारने को उद्युक्त हुआ तब बड़ेज्ञानी ब्यासजी ने आकर उससे कहा कि ३८। ३९। ४० सञ्जय को जीवता छोड़ो इस को कभी न मारना चाहिये ब्यासजी के बचन को सुनकर हाथजोड़के सात्यकी मुझको छोड़कर मुझसे यह बचन बोला कि हे सञ्जय तुम कल्याणका साधन करो तब मैं उसकी आज्ञापाकर कवच और शस्त्रोंको त्यागकर रुधिरसे भराहुआ सायंकालके समय जिधर नगरथा उधरकी ओरको चलदिया एककोस हटआने वाले गदा हाथमेंलिये नियत ४१ अत्यन्त घायल शरीर मैंने राजादुर्य्योधनको देखा हे राजा उससमय वह अश्रुओं से पूर्णनेत्र मेरीओर देखनेको समर्थ नहीं हुआ ४२ इसप्रकार दुःखी नियत मुझको देखकर ठहरारहा और मैंभी युद्ध में शोचकरनेवाले उस अकेलेको देखकर ४३ बड़ेदुःख से संयुक्त होकर एक मुहूर्त्त भर भी बार्त्तालाप करने को समर्थ नहीं हुआ इस के अनन्तर मैंने अपने सब पकड़े जानेका वृत्तान्त उससे कहा ४४ और ब्यासजीकी कृपासे अपने जीवते हुये छुटआने को बर्णनकिया इसकेपीछे उसने एक मुहूर्त्त ध्यानकरके सचेतता को पाकर ४५ भाइयोंसमेत सब सेनाके लोगों को मुझसे पूछा तब अपने नेत्र से देखनेवाले मैंने सब वृत्तान्त उससे कहा ४६ सब भाइयों का मरना और सेना का नाशहोना बर्णन किया हे राजा निश्चयकरके आपके तीनरथी बाकी हैं ४७ यह वृत्तान्त चलतेसमय ब्यासजीने मुझसे कहाहै तब लम्बीश्वासा लेकर और

बारम्बार शोचकर ४८ उस आपके पुत्रने मुझको हाथ से स्पर्शकरके यह वचन कहा कि हे सञ्जय इस युद्धमें तेरे सिवाय अब कोई जीवता नहीं है ४९ यहां किसी दूसरे को नहीं देखता हूं और पाण्डव सहायतावाले हैं हे सञ्जय अब तुम उस ज्ञानरूपी नेत्र रखनेवाले महाराज धृतराष्ट्र से कहना कि आपका पुत्र दुर्य्योधन ह्रदमें प्रवेश करगया उसप्रकारके मित्र पुत्र और भाइयों से रहितहुआ ५०।५१ पांडवों से राज्यहरण होनेपर मुझसा कौन मनुष्य जीवता रहसक्ता है इस सब वृत्तान्तको और बड़ेयुद्धमें से छुटाहुआ ५२ इस ह्रदके जलमें गुप्त अत्यन्त घायल जीवता हुआ मुझको कहदेना हे महाराज सञ्जय से ऐसा कहकर वह उस बड़े ह्रदमें प्रवेश करगया ५३ वहां ह्रदमें जाकर राजाने अपनी मायासे जलको नियत किया ह्रदमें उसके प्रवेश करजानेपर मुझ अकेलेने उस स्थानपर आने के अभिलाषी थकी सवारीवाले तीन रथियोंको देखा ५४ अर्थात् शारद्वत कृपाचार्य रथियोंमें श्रेष्ठ वीर अश्वत्थामा ५५ भोजवंशी कृतवर्मा इनतीनोंको बाणोंसे घायल साथ २ आनेवालोंको देखा उन सबने मुझको देखकर शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया ५६ और समीप आकर मुझसे बोले कि हे सञ्जय तू प्रारब्धसे जीवताहै यहकहकर सबने आपके पुत्र राजाको मुझसे पूछा ५७ कि हे सञ्जय वह हमारा राजादुर्योधन जीवताहै तब मैंने उसराजाकी कुशलताकही ५८ और वह सब बातें भी उनसे कहीं जो दुर्योधनने मुझसे कहीथीं और उस ह्रदको भी बताया जिसमें कि राजा प्रवेश किये हुयेथा ५९ हे राजा अश्वत्थामाने उस मेरे वचन को सुनकर उस बड़े ह्रदको देखकर दयासे विलाप किया ६० कि अहो धिक्कारहै कि वह राजा हमको जीवता नहींजानताहै उसके साथहोकर हमलोग शत्रुओं से युद्ध करनेको समर्थ हैं ६१ वह रथियों में श्रेष्ठ महारथी वहां बहुत देर तक बिलापकरके और युद्धमें पाण्डवोंको देखकर भागे ६२ मरनेसे बचेहुये वह तीनोंरथी कृपाचार्य्य के अच्छे अलंकृत रथपर मुझको बैठाकर सेनाके निवास स्थान में आये ६३ वहां सूर्यके अस्त होनेपर भयभीत होकर सब गुल्म अर्थात् वृत्त आपके पुत्रों का नाश सुनकर पुकारे ६४ हे महाराज इसके पीछे स्त्रियों के रक्षक वृद्ध मनुष्य रानी आदि को लेकर नगरको चले ६५ वहां उस सेना के नाशको सुनकर पुकारती और रोतीहुई सब स्त्रियों के बड़े शब्द प्रकटहुये ६६ हे राजा बारम्बार शब्द करनेवाली उन स्त्रियोंने कुरी पक्षीके समान अपने आ-

त्तेंशब्दोंसे पृथ्वीको शब्दायमान किया ६७ तब जहां पुकारतीहुई स्त्रियोंने उंगलियों और हाथोंसे अपने २ शिरोंको पीटा और शिरों के बालोंको उखाड़ा ६८ हे राजा वहां हाहाकार करके शब्द करनेवाली और छाती पीटनेवाली शोचती पुकारती स्त्रियां रोदन करनेलगीं ६९ इसके पीछे दुर्योधन के प्रधान जो कि आंसुओं से गद्गद कण्ठ और अत्यन्त दुःखी थे रानी आदि को लेकर नगरको चलदिये ७० हे राजा हाथ में बेतलिये रक्षक लोग और द्वाराध्यक्ष बहुमूल्य के उज्ज्वल शयनोंको लेकर ७१ शीघ्रतासे नगरको गये कितनेही मनुष्य खिच्चरों से युक्त रथोंपर सवारहोकर ७२ अपनी २ स्त्रियोंको लेकर नगरको गये हे महाराज जो स्त्रियां महलों में से प्रथम कभी सूर्य्यसे भी नहीं देखीगईथीं उन स्त्रियों को पुरमें जातेहुये लोगोंने देखा हे भरतर्षभ वह कोमल शरीरवाली स्त्रियां ७३। ७४ जिनके स्वजनबान्धव मारेगये शीघ्रही नगरको चलीं और गोपाल बिपाल आदिक सब नगरकी ओर दौड़े ७५ भीमसेनके भयसे पीड़ित और भ्रान्तीसे युक्त मनुष्य चले उन्होंको भी बड़ा असह्य और कठिनभय उत्पन्नहुआ ७६ तब परस्पर देखतेहुये नगरकी ओर दौड़े इसप्रकार उस अत्यन्त भयानक भगोड़के वर्त्तमान होनेपर ७७ शोकसे अचेत युयुत्सूने समयके अनुसार चिन्ताकरी कि युद्ध में भयानक पराक्रमवाले पाण्डवों ने ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके स्वामी दुर्य्योधनको बिजयकिया उसकेभाई मारेगये और वह सब कौरवलोग जिनके कि अग्रवर्त्ती भीष्म और द्रोणाचार्य्य थे वह भी मारेगये ७८। ७९ मैं अकेला प्रारब्ध और ईश्वरकी इच्छासे बचाहूं सब डेरे आदिके लोग चारोंओरसे भागे ८० जिनके स्वामी मारेगये वह कान्ति शोभासे रहित अपूर्व्वरूप दुःखसे पीड़ामान भयसे व्याकुलचक्षु इधर उधरसे ऐसे भागते हैं कि ८१ जैसे कि सिंहसे भयभीत मृग दशोंदिशाओं को देखतेहुये भागते हैं दुर्य्योधनके प्रधान और सलाहकार जो कुछ बाकीरहे ८२ वह राजकी स्त्रियोंको लेकर नगरकी ओर दौड़े हे प्रभु मैं उनके साथ नगरमें पहुंच जानाही समयके अनुसार उचित जानताहूं महाबाहु युयुत्सूने युधिष्ठिर और भीमसेनको जतलाकर इस प्रयोजनको प्रकटकिया ८३। ८४ सदैव दयावान् राजा युधिष्ठिर उसपर प्रसन्नहुआ तब महाबाहु ने मिलकर उस युयुत्सूको बिदा किया उसके पीछे उसने रथपर सवार होकर शीघ्रही घोड़ों को चलायमान किया और भागतीहुई राजस्त्रियोंको पुरमें लेगया ८५। ८६ सूर्य

के अस्तहोनेपर आंसुओंसे पूर्णनेत्र और गद्गदकण्ठ युयुत्सू उन सबको साथ लिये शीघ्रही हस्तिनापुरमें पहुंचा ८७।८८ और आर्द्रनेत्र शोकसेव्याकुलचित्त बड़ेज्ञानी राजाको और समीपसे निकलेहुये बिदुरजीको देखा वह सच्चे धैर्य्यवाले बिदुरजी उस नम्रीभूत आगे नियत होनेवाले युयुत्सूसे बोले हे पुत्र इस कौरवों के नाश होनेमें तुम प्रारब्धसे जीवतेहो ८९ राजाके पहुंचने बिना तू यहां क्यों आयाहै इस सब कारणको ब्योरे समेत मुझसेकहो ९० युयुत्सू बोला कि हे तात ज्ञाति पुत्र बांधवों समेत शकुनीके मरनेपर मरनेसे शेष बचेहुये परिवारका रखने वाला राजा दुर्योधन अपने घोड़ेको छोड़कर भयसे पूर्वकी ओर भागगया सेना के निवास स्थानके लोग राजाके दूर चलेजानेपर ९१।९२ भयसे व्याकुल हो-कर सब नगर को भागे इसके पीछे प्रधान अधिकारी और नौकर चाकर लोग राजा दुर्योधन समेत सब भाइयोंकी स्त्रियोंको ९३ सवारियों पर बैठाकर सेनासे भागे उसके पीछे मैं केशव जी समेत राजा युधिष्ठिर से पूछकर ९४ दौड़तेहुये मनुष्यों की रक्षा करताहुआ हस्तिनापुरमें आया युयुत्सूके कहेहुये इस बचनको सुनकर ९५ सर्व्व धर्म्मज्ञ बड़े बुद्धिमान् बिदुरजी ने युयुत्सूकी प्रशंसाकरी और यह बचन कहा कि यह सब समयके अनुसारहै ९६ और यह सब भी समय के अनुसार योग्य है जो तुमने भरतबंशियों के नाश होनेपर दया से अपने कुल और धर्म्म की रक्षाकरी ९७ हे बीर हम प्रारब्धसे बीरों के भयकारी इस युद्ध से बचकर पुर में आयेहुये तुझको ऐसे देखते हैं जैसे कि सृष्टि सूर्य्य को देखती है ९८ हे पुत्र लोभी अदूरदर्शी बहुत समझायेहुये दैवसे घातित बुद्धि अंधेराजा धृतराष्ट्र की लाठी ९९ तूही अकेला उस आपत्तिसे बचकर सबप्रकार जीवताहै अब तू यहां रहकर प्रातःकाल युधिष्ठिरके पासजायगा आंसूभरे बिदुरजीने इतनी बात कहकर और युयुत्सूसे पूछकर राजमहलमें प्रवेश किया १००।१०१ पुरवा-सियोंने भी बड़े दुःख और हाय २ के शब्द किये वह पुर प्रसन्नता और शोभासे रहित अप्रकाश टूटे बागवाले स्थानके समान १०२ उजाड़रूप और बड़े दुःखसे दुःखरूपहुआ और सब धर्म्मोंके ज्ञाता बिदुरजी अन्तरात्मा समेत व्याकुल १०३ श्वासलेते धीरे २ नगर में पहुंचे हे राजा युयुत्सू भी उस रात्रिको अपने घर में रहा १०४ वह महादुःखी भरतबंशियों के परस्पर नाश को शोचताहुआ अपने लोगोंसे प्रशंसित भी आनन्द युक्त नहींहुआ १०५॥ इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्यां संहितायांवैयासिक्यांशल्यपर्व्वणिदुर्योधनह्रदप्रवेशे[illegible] ॥

महाभारतभाषा गदापर्व्व ॥

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिम्पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणम्पापाटवीपावकं स्वाराएमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ याभातिवीणामिववादयन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानःप्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतंयेन तंवन्दे बादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं वन्देगुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंरम्यगदाह्व पर्व्वभाषानुवादंविदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ गदापर्व्व भाषा वार्त्तिक प्रारम्भः ॥

श्रीनारायणजी को नरोत्तम नरको और श्रीसरस्वती देवीको नमस्कार करके जयनाम इतिहासको वर्णन करताहूं--धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्धभूमि में पाण्डवोंके हाथसे सब सेनाके मरनेपर मेरी उन शेषबचीहुई सेनाओंने कौनसा कर्म किया १ उससमय पराक्रमी कृतवर्मा, कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा और निर्बुद्धि राजा दुर्योधन ने क्या किया २ संजय बोले कि महात्मा क्षत्रियों की स्त्रियों के शीघ्र चलेजाने भागजाने और डेरों के खाली होनेपर बिजयके अभिलाषी अत्यंत व्याकुल तीनोंरथियों ने ३ बिजय करनेवाले पाण्डवोंके शब्दोंको सुनकर और सायंकालके समय डेरेको भागाहुआ देखकर ४ वहां निवासको स्वीकार नहीं किया और वहां से चलकर फिर वह ह्रदकेही समीपगये धर्मात्मा युधिष्ठिर भी भाइयोंसमेत युद्धमें ५ प्रसन्नचित्त दुर्य्योधनके मारने की इच्छा से चारोंओर को भ्रमण करनेलगा हे राजा फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त आपके पुत्रके बिजयकरनेके अभिलाषी पांडव उसके खोजको करनेलगे ६ बिचार पूर्वक उपायसे ढूंढ़नेवालोंने राजाको नहीं देखा वह बड़े बेगसमेत गदाहाथमें लेकर दूर चलागया ७

और अपनी मायासे जलको रोककर उस ह्रदमें प्रवेश करगया जब सब पांडव बहुतथकी सवारीवाले हुये ८ तब डेरे को पाकर अपनी सेनाके लोगोंसमेत डेरे में नियतहुये इसके पीछे कृपाचार्य्य, अश्वत्थामा ९ पाण्डवोंके डेरेमें प्रवेशकरने पर बड़ी सावधानी और अलक्ष्यता से उसह्रदके पासगये उन्होंने उस ह्रद को जहांपर कि राजा सोताथा पाकर १० जलमें सोनेवाले अजेय राजादुर्योधन से कहा कि हे राजा उठो हमारेसाथ होकर युधिष्ठिरसे युद्धकरो ११ और उसको विजयकरके पृथ्वीको भोगो अथवा मृतकहोकर स्वर्गको पावो हे दुर्योधन तुमने भी उन्होंकी सब सेनामारी १२ और वहां जो सेनाकेलोग बाकी हैं उनको अत्यन्त घायल किया हे राजा वह आपके वेग सहने को समर्थ नहीं हैं १३ जब कि तुम हमसे रक्षितहोकर लड़ोगे हे भरतबंशी इस कारणसे आप उठो तब दुर्य्योधन बोला कि प्रारब्धसे इसप्रकारके पाण्डव और कौरवोंके मनुष्योंके नाश होनेपर युद्धसे बचे १४ और जीवतेहुये तुम नरोत्तमोंको देखताहूं विश्राम करनेवाले और थकावटसे रहित हमलोग सब मिलकर विजयकरेंगे १५ आप थकेहुये हैं और हम अत्यन्त घायल हैं और उन्होंकी सेना बड़ी है इस हेतु से युद्धको स्वीकार नहीं करताहूं १६ हे बीरलोगो यह अपूर्व बात नहीं है जो तुम्हाराचित्त बड़ा उत्साहयुक्तहै और हममें बड़ी सामर्थ्य है परन्तु पराक्रम का समय नहीं है १७ अब मैं एक रात्रि विश्राम करके आप लोगों के साथ प्रातःकाल के समय युद्ध में शत्रुओं से लड़ूंगा इसमें मुझको संशय नहींहै १८ संजयबोले कि इस प्रकार दुर्य्योधनके वचनोंको सुनकर अश्वत्थामाजी उस युद्धदुर्मद राजासे बोले हे राजा उठो आपका भलाहोय हम शत्रुओंको बिजयकरेंगे १९ हे राजेन्द्र अब मैं यज्ञ वा बावड़ी आदिक सुकर्म दान सत्यता और विजयकी शपथ खाताहूं कि मैं सोमकों को मारूंगा २० मैं यज्ञ करनेवाले सज्जनोंके योग्य फलों को नहीं पाऊं जो इस रात्रिके व्यतीत होनेपर युद्धमें शत्रुओंको नहीं मारूं २१ हे समर्थ सब पांचालोंको बिनामारेहुये कवचको नहीं उतारूंगा यह तुमसे सत्य २ कहताहूं हे राजा उसको मुझसे सुनो २२ उन्हों की वार्त्तालाप करनेकी दशामें मांसके भार से थकेहुये वधिक लोग दैवयोग से उस स्थानपर आये २३ हे समर्थ महाराज वह वधिक सदैव बड़ी भक्तिपूर्व्वक मांसों के भारोंको भीमसेन के पास लातेथे २४ परस्पर मिलेहुये और वहांपर वर्त्तमान होनेवाले उन वधिकोंने एका-

न्तमें उन्होंके सब बचन और दुर्य्योधनके बचनोंको सुना २५ तब कौरवके युद्ध से अनिच्छावान् होनेपर उन सब युद्धाभिलाषी बड़े धनुषधारियोंने भी युद्धके निमित्त बड़ा हठकिया २६ हे राजेन्द्र उन बधिकों ने कौरवों के उन महारथियों को उसप्रकार देखकर और युद्धसे अनिच्छावान् ह्रदमें नियत राजाको जान-कर २७ उन्होंकी और जल में वर्त्तमान राजाकी बार्त्तालाप को सुनकर जलमें नियत दुर्य्योधनको जाना २८ दैवकी इच्छासे समीप जानेवाले उन बधिकों से राजा के खोज करनेवाले पाण्डवों ने पूछा आपके पुत्रको २६ हे राजा तब वह मृगोंके मारनेवाले पाण्डवों के वचनको स्मरण करके धीरपने से परस्पर में यह बोले ३० कि जो हम दुर्य्योधन को बतादेंगे तो पाण्डव हम को धन देंगे राजा दुर्य्योधन इस जल में गुप्त है इस हेतुसे हम सब उस जल में सोनेवाले क्रोधयुक्त दुर्य्योधन के प्रकट करने को वहांपर चलें जहां पर कि राजा युधिष्ठिर हैं ३१। ३२ हम सब इस जल में सोनेवाले धृतराष्ट्र के पुत्रको उस बुद्धिमान् धनवान् भीमसेन से वर्णन करें ३३ इस बातको सुनकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त वह भीमसेन हम को बहुत धन देगा हम को इस सूखे और आघात से उत्पन्न कठिन मांस से क्यालाभ है ३४ तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त धनके अभिलाषी वह बधिक इस प्रकार कहकर और मांस के बोझों को लेकर डेरे में गये ३५ हे म-हाराज लक्ष्यको प्राप्त प्रहारकर्त्ता युद्ध में नियत दुर्य्योधनको न देखनेवाले ३६ और उसपापी के छलके अन्तपर पहुँचनेके अभिलाषी उन पाण्डवों ने भी उस युद्धभूमिमें चारोंओर दूतों को भेजा ३७ उसके पीछे धर्म्मराजकी सब सेना के लोगों ने एकसाथ आकर दुर्योधन का गुप्तहोना वर्णनकिया हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ राजा ने उन दूतों के उस बचनको सुनकर कठिन चिन्ता को पाया और बारम्बार श्वासलिया ३८। ३९ हे भरतर्षभ समर्थ धृतराष्ट्र इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले वह बधिक उस स्थानसे चलकर दुःखीचित्त नियत होनेवाले पांडवों के ४० डेरेको आये और राजा दुर्य्योधन को देखकर प्रसन्नचित्त और रोकेहुये भी भीमसेन के देखतेहुये प्रवेश करगये ४१ वहां उन्हों ने बड़े बलवान् पाण्डव भीमसेन को पाकर वह सब वृत्तान्त जो वहां सुनाथा भीमसेन से कहा ४२ हे राजा इसकेपीछे शत्रुके तपानेवाले भीमसेनने उन्होंको बहुतसा धन देकर वह सब वृत्तान्त धर्मराज से कहा कि ४३ हे राजा उस दुर्योधनका पता बधिकों के

कहने से मुझको विदितहुआहै वह जल को स्थिरकरके सोता है जिसके लिये आप दुःख मानते हो ४४ हे राजा वह कुन्तीका पुत्र अजातशत्रु युधिष्ठिर भीमसेनके उस प्रियबचनको सुनकर सगे भाइयों समेत बहुत प्रसन्नहुआ ४५ ह्रद के जलमें प्रवेश करनेवाले बड़े धनुषधारी उस दुर्योधन को सुनकर श्रीकृष्णजी को आगे करके शीघ्रता से वहां पहुँचे ४६ और अत्यन्त प्रसन्न सब पाण्डव और पांचालों के कलकलनाम शब्द प्रकटहुये ४७ हे भरतर्षभ इसकेपीछे सिंहनाद और शब्दोंको भी किया हे राजा शीघ्रता करनेवाले क्षत्री व्यासजी के ह्रदको गये ४८ वहां अत्यन्त प्रसन्नमूर्त्ति सोमक युद्ध में चारोंओर से बारम्बार पुकारे कि पापी दुर्योधनको जानलिया और देखाहै ४९ हे पृथ्वीनाथ वहां उन शीघ्र चलनेवाले बेगवान् रथियोंके कठिन शब्द स्वर्गको स्पर्श करनेवालेहुये ५० वह थकी सवारीवाले दुर्योधन के चाहनेवाले बड़ी शीघ्रता करनेवाले क्षत्री जहांतहां राजा युधिष्ठिरके पीछे चले ५१ अर्जुन, भीमसेन, पाण्डव नकुल, सहदेव, पांचालदेशका राजा धृष्टद्युम्न, अजेय शिखण्डी ५२ उत्तमौजा, युधामन्यु, महारथी सात्यकी और जो पांचालों के शेष रथी थे वह और द्रौपदी के पुत्र ५३ सब घोड़े हाथी और सैकड़ों पदाती पीछे चले हे महाराज इसके पीछे प्रतापवान् धर्मराज ५४ व्यासजीके उस घोरह्रदपर पहुँचे जिसमें कि दुर्योधनथा और जो कि शीतलता युक्त निर्मल जलसे पूर्ण बड़ा प्रिय ह्रद दूसरे सागरके समान था ५५ जिसमें आपका पुत्र मायासे जलको रोककर नियतथा हे भरतवंशी वह बड़ी अपूर्व बुद्धिवाला और दैवयोगसे ५६ जलके मध्यमें वर्त्तमान शूरबीरोंका मारनेवालाथा हे प्रभु महाराज धृतराष्ट्र वह गदाधारी राजा दुर्योधन किसी मनुष्यको भी मिलना असंभवथा ५७ उसके पीछे जलके मध्य में वर्त्तमान राजा दुर्योधनने बादलोंकी गर्जनाके समान कठिन शब्दको सुना ५८ हे राजेन्द्र महाराज फिर राजा युधिष्ठिर अपने सगे भाइयों समेत आपके पुत्र को मारने के लिये उस ह्रदपर आये ५९ शंखके और रथनेमियों के बड़े शब्द समेत बड़ीधूल को उठाते और पृथ्वी को भी कंपायमान करते आपहुँचे ६० महारथी कृतबर्मा, कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा, युधिष्ठिर की सेना को देखकर राजासे यह वचन बोले ६१ कि अत्यन्त प्रसन्नचित्त बिजयसे शोभापानेवाले यह सब पांडव आते हैं तबतक हमको आप आज्ञादें कि हम यहांसे हटजायँ ६२ हे प्रभु तब उस दु-

र्योधनने उन बेगवानोंके उस बचनको सुनकर और बहुत अच्छा कहकर माया से उस जलको रोकदिया ६३ हे महाराज फिर शोक से पूर्ण कृपाचार्य आदिक रथी राजाको पूछकर दूर चलेगये ६४ हे श्रेष्ठ वह तीनों दूर मार्गपर जाकर एक बटके बृक्षको देखकर अत्यन्त थकेहुये राजाके बिषयमें शोचते निवासीहुये ६५ बड़ा बलवान् दुर्योधन जलको रोककर सोया और युद्धके अभिलाषी पांडव भी उस स्थानपर पहुँचे ६६ किसप्रकारसे युद्धहोगा और कैसे राजाहोगा और कैसे पाण्डवलोग उस कौरव दुर्योधनको पावेंगे ६७ हे राजा इसप्रकार चिन्ता करते उन कृपाचार्य आदिक रथियोंने रथोंसे घोड़ोंको छोड़कर वहां निवासकिया६८॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिदुर्योधनान्वेषणेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके उन तीनों रथियों के दूरचलेजाने पर उन पाण्डवोंने उस ह्रदको पाया जिसमें कि दुर्योधनथा १ हे कौरवों में श्रेष्ठ तब दुर्योधनसे अचल कियेहुये उस व्यासह्रदको और जलमें सोनेवाले राजाको देखकर २ कौरवनन्दन युधिष्ठिर बासुदेवजीसे यहबचन बोले कि दुर्योधनकी जलमें संयुक्तकीहुई इस मायाकोदेखो ३ कि जलको रोककर सोताहै इसको मनुष्यसे भयनहीं है इस दैवीमाया को प्रकट करके जलके मध्य में बर्त्तमान ४ छल संयुक्त बुद्धि का रखनेवाला यह दुर्योधन मेरेहाथसे अब जीवताहुआ नहीं बचसक्ता जो आप बज्रधारी युद्धमें इन्द्रभी इसकी सहायताकरें ५ तौभी हे माधवजी युद्धमें इसको सबलोग मराहुआ देखेंगे बासुदेवजी बोले कि हे भरतबंशी माया करनेवालेकी इस माया को मायाकेहीद्वारा नाशकरो ६ मायावी पुरुष मायाहीके द्वारा मारने के योग्यहै हे युधिष्ठिर यह सत्यहै कि यह राजादुर्योधन बहुत उपाय और कर्मों के द्वारा जलमें मायाको संयुक्त करके सोताहै ७ हे भरतर्षभ तुम इस मायात्मा अर्थात् छलीकोमारो इन्द्रने भी कर्म और उपायोंके द्वारा दैत्य और दानवोंको मारा है ८ महात्मा इन्द्रके हाथ से बहुत कर्म और उपायोंकेही द्वारा राजाबलि बांधागया और बड़े २ कर्म और उद्योगों के द्वारा महाअसुर हिरण्याक्ष ९ और हिरण्यकशिपु दोनोंभाई मारे गये हेराजा वृत्रासुरभी कर्म्मोंकेहीद्वारा निस्सन्देह मारागया १० हे राजा इसीप्रकार पुलस्त्यका पुत्र रावणनाम राक्षस अपने सब

भाई साथियों समेत श्रीरामचन्द्रजी के हाथसे मारागया ११ इसीप्रकार तुम भी कर्मकरने में नियत होकर पराक्रमकरो हे समर्थ राजायुधिष्ठिर उसी प्रकार कर्म्म और उपायों के द्वारा दोनों प्राचीन राक्षस मेरे हाथ से मारेगये १२ बड़ा दैत्य तारक और पराक्रमी बिप्रचित्ति बातापी इल्वल और त्रिशिरा भी मारेगये १३ इसीप्रकार सुन्द उपसुन्द असुरभी कर्मसेही मारेगये हे समर्थ इन्द्रभी कर्म और उपायों के द्वारा स्वर्ग को भोगताहै १४ हे राजा युधिष्ठिर कर्मप्रबलहै दूसरा कुछ प्रबलनहीं है दैत्य दानव राक्षस उसीप्रकार राजालोग १५ कर्म और उपायोंकेही द्वारा मारेगये इस हेतुसे कर्मको अच्छीरीति से करो संजयबोले हे महाराज भरतवंशी धृतराष्ट्र बासुदेवजी से समझाये हुये तेजव्रत हँसतेहुये कुन्ती के पुत्र पाण्डव युधिष्ठिरने १६ उस जलमें नियत बड़े बलवान् आपके पुत्र से यह कहा कि १७ हे दुर्योधन तुमने जलके मध्यमें यह प्रारम्भ कर्म किस निमित्त किया हे राजा सब क्षत्रियों के कुलों को और अपने कुलको मरवाकर १८ अब अपने जीवन को चाहताहुआ ह्रदमें घुसाहुआ बैठाहै हे दुर्योधन उठो और हमारेसाथ युद्धकरो १९ हे नरोत्तम वह तेरा अभिमान और अहम्भाव कहांगया जो भयभीत होकर तुम जलको रोककर नियत हुयेहो २० सब लोग तुझको सभामेंशूर कहते हैं जलमें सोनेवाले आपकी उस शूरताको निरर्थक मानताहूं २१ हे राजा उठो युद्धकरो कुलीन क्षत्रीहो और अधिकतर कौरवबंशी हो अपने कुल और जन्मको यादकरो २२ सो कौरव कुलमें अपने जन्मको कहताहुआ कैसे युद्ध से भयभीत होके जलमें प्रवेश करके नियतहै २३ युद्धका और राज्यका त्याग अथवा स्वर्ग के निमित्त उपाय न करना यह प्राचीन धर्म नहीं है हे राजा युद्ध से भागना नीचों का कर्महै स्वर्ग का देनेवाला नहीं है २४ निश्चय करके युद्ध में पारको न पाकर किसरीति से तुम जीवन के अभिलाषी हो इन पड़ेहुये पुत्र भाई और वृद्धपुरुषों को देखकर २५ नातेदार समानबय मामा और बान्धवोंको मरवाकर अब कैसे ह्रद में नियतहै २६ अपने को शूरमानता है परन्तु तू शूर नहीं है हे भरतबंशी दुर्बुद्धि सब लोगों के समक्ष में तुम मिथ्या कहतेहो कि मैं शूर हूं २७ शत्रुओं को देखकर शूरबीर किसीप्रकार से भी नहीं भागते हैं तुम जिस वृत्ति से युद्ध को त्याग करतेहो २८ उसको कहो अब तुम उठो युद्धकरो और अपने भयको दूरकरो हे दुर्य्योधन सब भाई और सेना को मरवाकर युद्ध

करो २९ और क्षत्रीधर्म में नियत होकर धर्म करनेकी इच्छासे तुझसरीखे राजा को अब जीवनमें बुद्धि न करनी चाहिये ३० कर्ण और सौबलके पुत्र शकुनी के आश्रय होकर अपनेको सदैव जीवनेवाला माना इस भूलसे जो तुमने अपनेको नहीं जाना ३१ हे भरतबंशी वह पाप बड़ा दुःखरूपहै सम्मुख होकर युद्ध करो तुझसा राजाहोकर मोहसे किसप्रकार भागने को अङ्गीकार करे ३२ हे सुयोधन तेरी वह वीरता और अहङ्कार कहांगये और वह पराक्रम और बड़ी गर्जना कहां गई ३३ तेरी अस्त्रज्ञता कहांगई तड़ाग में क्यों सोता है हे भरतबंशी इस से तुम उठकर क्षत्रीधर्म्म से युद्धकरो ३४ हमको बिजय करके इस पृथ्वीपर राज्यकरो अथवा हमारे हाथसे मराहुआ होकर पृथ्वीपर सोवेगा ३५ हे महारथी महात्मा ईश्वर ने यह तेरा उत्तम धर्म्म उत्पन्न किया है इसको बिधिपूर्ब्बक करो और राजा होजाओ सञ्जय बोले हे महाराज जलमें नियत और बुद्धिमान् धर्मराजके इसप्रकारके बचनों को सुनकर आपका पुत्र यह बचन बोला ३६। ३७ हे महाबाहु यह अपूर्व बात नहीं है जो जीवधारी में भय प्रवेश होय हे भरतबंशी मैं जीव के भय से डरा हुआ नहीं बैठा हूं ३८ रथ और तूणीर से रहित मृतक सारथी और साथवाला होकर अपने समूह से पृथक् होकर युद्धमें अकेला होकर मैंने इस विश्राम को अङ्गीकार किया ३९ हे राजा प्राणों के कारण भय से और व्याकुलता से मैं इस जलमें नहीं घुसाहूं मैंने केवल थकावट से यह कर्म्म कियाहै ४० हे कुन्ती के पुत्र तुम विश्रामकरो और जो तेरे ओर पास वाले हैं वह भी विश्रामकरें मैं इस जलसे निकलकर युद्धमें तुम सबसे लड़ूंगा ४१ युधिष्ठिर बोले कि हम विश्राम करचुके हैं और बिलम्ब से तुझको अन्वेषण करते हैं हे सुयोधन इस हेतु से अब उठो और यहां युद्धकरो ४२ युद्ध में पाण्डवों को मारकर वृद्धियुक्त राज्यको पाओ अथवा युद्ध में हमारे हाथ से मरकर बीरलोक को पाओगे ४३ दुर्य्योधन बोले हे कौरवनन्दन राजायुधिष्ठिर मैं जिन कौरवों के लिये राज्यको चाहताथा वह सब मेरे भाई मारे गये ४४ मैं इस रत्नों से रहित मृतक उत्तम क्षत्रियोंवाली विधवास्त्री के समान पृथ्वी के भोगनेको उत्साह नहीं करताहूं ४५ हे भरतर्षभ युधिष्ठिर मैं अब भी पाण्डवों समेत पांचालों के उत्साहों को तोड़कर तेरे बिजय करने को आशाकरता हूं ४६ अब मैं द्रोणाचार्य्य कर्ण और भीष्मपितामह के मरनेपर किसीसमय भी युद्ध से अपने कार्य्यको नहीं

मानताहूं ४७ हे राजा अब यहसब पृथ्वी तेरीहो अपने साथियोंसे रहित होकर कौनसा राजा राज्यपर राज्यशासन करनेकी इच्छाकरेगा ४८ उसप्रकारके मित्र पुत्र भाइयों और वृद्धोंकोभी मारकर और आपलोगोंसे राज्यहरण होनेपर मुझसा कौन मनुष्य जीवतारहैगा ४९ हे भरतवंशी मैं मृगचर्म को धारणकरनेवाला होकर वनको जाऊंगा जिसके पक्षवाले लोग मारेगये उस राज्य में मेरी प्रीति नहीं है ५० हे राजा जिसमें बहुत बान्धव घोड़े और हाथी आदिक मारेगये वहसब पृथ्वी तेरी है इसको तुम विगतज्वरहोकर भोगो ५१ मैं मृगचर्मको धारणकरके वनकोजाऊंगा हे समर्थ अब जीवन में मुझ भाई पुत्रोंसे जुदेहोनेवाले की इच्छानहीं है ५२ हे राजेन्द्र तुमजाओ और इस पृथ्वीको जिसके स्वामी और शूरवीर मारेगये और जिसमें रत्नों का नाशहुआ और गढ़ प्रकोष्ठादिक जीर्णहोगये सुखपूर्वक भोगो ५३ संजय बोले कि बड़ा यशस्वी युधिष्ठिर ऐसे दीन वचनों को सुनकर उस जल में निवास करनेवाले आपके पुत्र दुर्य्योधन से बोला ५४ हे भाई जलमें नियत तुम पीड़ा के प्रलापों को मतकहो हे राजा पक्षीके समान निवासकरना मेरे चित्तमें नहीं है ५५ हे सुयोधन जो तुम देनेके निमित्त भी समर्थहो तौभी मैं तेरी दीहुई पृथ्वीपर राज्यशासन करनेकी इच्छा नहीं करताहूं ५६ तेरी दीहुई इस पृथ्वीको अधर्म से नहीं लूंगा दानलेना क्षत्री का धर्म नहीं कहागया है ५७ मैं तेरी दीहुई इस सम्पूर्ण पृथ्वीको नहीं चाहता तुझको युद्ध में विजयकरके इसपृथ्वी को भोगूंगा ५८ हे राजा तुम स्वामी न होकर पृथ्वीको कैसे देनाचाहते हो तुमने यह पृथ्वी उससमयपर कुलकी शान्ति के लिये धर्मसे मांगनेवाले हमलोगों को क्योंनहींदी प्रथम बड़ेबलवान् श्रीकृष्णजी को उत्तरदेकर ५९ । ६० अब तुम क्योंदेतेहो तेरे चित्तकी भ्रान्ति क्याहै कौन पराजयहोनेवाला राजा पृथ्वीको देनाचाहै ६१ हे कौरवनन्दन अब तुम पृथ्वी के देनेको स्वामी नहींहो न बलसे लेनेको समर्थहो सो कैसे देनाचाहतेहो मुझको युद्धमें विजयकरके इसपृथ्वीका पालनकरो ६२ हे भरतवंशी सुईके अग्रभागभरभी पृथ्वी जो तुमने हमको पूर्वसमय में नहींदी अब उससब पृथ्वीको कैसे देतेहो ६३ । ६४ प्रथम तो सुईके अग्रभागके भी समान पृथ्वीको नहींदिया अब उस पृथ्वीको कैसे त्यागकरतेहो इसप्रकारके ऐश्वर्यको पाकर और इस पृथ्वीपर राज्यकरके ६५ कौनसा अज्ञानी अपने शत्रुको उस पृथ्वीकेदेनेको नि-

श्चयकरेगा तुम महाअज्ञानीहोकर केवल अज्ञानतासेही सावधान नहीं होतेहो ६६ पृथ्वीकेदेने का अभिलाषी भी होकर तू जीवताहुआ नहीं बचसक्ता तुम हमको बिजयकरके इस पृथ्वीपर राज्यकरो ६७ अथवा हमारे हाथसे मरकर उत्तम लोकोंको जाओ हे राजा निश्चय मेरे और तेरे जीवतेरहनेपर हमदोनों की इच्छानुसार सब जीवधारियोंको सन्देह होगा हे दुर्बुद्धि तेराजीवन मुझमें बर्त्तमान है ६८ । ६९ मैं जीवता रहूंगा परन्तु तुम जीवते रहनेको समर्थ नहींहो हे राजा तुमने हमारे नाशकरने में बड़े बड़े उपायकिये ७० अर्थात् तुमने हमलोगों को विषधर सर्पोंके विषसे जलके डुबोनेसे और राज्यके छीनलेनेसे निरादर किया ७१ अयोग्य अप्रिय बचन और द्रौपदी के खैंचने से पीड़ावान् किया हे पापी इस कारण से तू जीवताहुआ नहीं बचसक्ता ७२ उठ उठ युद्धकर इसी से कल्याण होगा हे राजा उनबीरोंने वहां इसप्रकार विजयसेयुक्त नानाप्रकार के बचनों को बारम्बार कहा ७३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि शत्रुओंका तपानेवाला स्वभावसे क्रोधयुक्त वह मेरा पुत्र बीर राजादुर्योधन इसप्रकार के कठोर वचनोंको सुनकर कैसी दशावाला हुआ १ उसने पूर्व में कभीभी निन्दित और अप्रतिष्ठित बचन नहीं सुने वह राजाहोने से सवलोकका माननीय हुआ २ जिसके अभिमानसे छत्रकी छाया भी सूर्य के ताप से रक्षाकरनेके कारण दुःखके निमित्त होतीथी वह ऐसेप्रकार के बचनों को कैसे सहसक्ताहै ३ हे संजय तेरे नेत्र के समक्षमें यह सम्पूर्ण पृथ्वी म्लेच्छ और आटविकाओं समेत जिसकी प्रसन्नतासे सजीवरहतीथी वह अधिकतर पाण्डवों से घुड़काहुआ निर्जनबनमें अपने नौकरों से रहित और शत्रुओंसे घिराहुआ था ४ । ५ उसने बिजय से संयुक्त कटुबचनों को बारम्बार सुनकर पाण्डवों से क्याकहा हे संजय वह मुझसे कहो ६ संजय बोले हे राजेन्द्र तब भाइयों समेत युधिष्ठिरसे घुड़केहुये जलमें नियत आपके पुत्र आपत्ति में नियत राजादुर्योधनने ७ कटुबचनों को सुना तब वह बारम्बार लम्बी उष्णश्वास लेकर बारम्बार हाथोंको भी कँपाताहुआ जलसे बाहर निकला और युद्ध के निमित्त चित्तको

करके राजा युधिष्ठिर से बोला ८ । ९ हे पाण्डवलोगो तुम सब रथ घोड़े और मित्रों समेतहो और मैं अकेला थकाहुआ विरथ और मृतक सवारीवाला १० अकेला अशस्त्र होकर शस्त्रउठानेवाले बहुतसे रथसवार शूरवीरों से संयुक्त आप लोगों से कैसे लड़नेको उत्साह करसक्ता हूं हे युधिष्ठिर तुम एक एक होकर मेरे साथ युद्धकरो युद्धमें एक मनुष्य बहुतों के साथ न्यायसे लड़ने को योग्यनहीं है ११ । १२ अधिकतर कवच से रहित थका हुआ आपत्ति में फँसा हुआ और अत्यन्त घायल अंग मृतक सवारी सेनावाला १३ हे राजा मुझको तुझसे भय नहीं है पाण्डव भीमसेन, अर्जुन, वासुदेवजी और पांचालों से भी भयनहीं १४ नकुल, सहदेव, सात्यकी से और जो अन्य अन्य आप की सेना के लोग हैं उन से भी भय नहीं है युद्ध में क्रोधयुक्त होकर मैं अकेलाही तुम सब को रोकूं गा १५ हे युधिष्ठिर अच्छेलोगों की शुभ कीर्त्ति धर्म्म का मूल रखनेवाली है मैं यहां धर्म और कीर्त्तिको पालन करताहुआ यह कहता हूं १६ कि मैं उठकर तुम सबके सम्मुख जाकर युद्धमें ऐसे लडूंगा जैसे कि वर्षकी समाप्ती में सब ऋतु- ओंके सम्मुख होकर वर्षका युद्धहोता है १७ अब शस्त्रोंसे रहित विरथहोकर भी रथ घोड़े रखनेवाले तुम सबको ऐसे नाशकरूंगा जैसे कि रात्रिके समाप्त होनेपर सब नक्षत्रोंको सूर्य्य नष्टकर देताहै हे पाण्डवलोगो नियत होजाओ मैं तुम सब को अपने तेजसे नाशकरूंगा अब मैं यशवान् क्षत्रियोंकी अऋणताको पाऊं- गा १८ । १९ हे भरतर्षभ अब तुझ को तेरे सब भाइयों समेत मारकर वाह्लीक द्रोणाचार्य्य, भीष्म, महात्माकर्ण, शूरजयद्रथ २० मद्रका राजा शल्य, भूरिश्रवा अपने पुत्र, सौबलके पुत्रशकुनी, मित्र, शुभचिन्तक और बान्धवों की अऋ- णताको पाऊंगा वह राजा इतना वचन कहकर मौन होगया २१ । २२ युधिष्ठिर बोले हे सुयोधन तुमभी प्रारब्धसे क्षत्रियधर्म्म को जानतेहो हेमहाबाहु प्रारब्धही से तेरीबुद्धि युद्धके लिये वर्त्तमानहै २३ हे कौरव प्रारब्धसेही शूरहोकर तू युद्ध को जानताहै जो अकेलाही होकर तू हम सबसे लड़ना चाहताहै २४ जो शस्त्र तुझको अंगीकृत है उसको लेकर चाहै जिस अकेलेसेही भिड़कर युद्धकर हम सब तेरा तमाशा देखने को नियतहैं २५ हे वीर अब फिर मैं तेरे इसअभीष्ट को देताहूं हम पांचो में एकको मारकर तेरा राज्यहोय अथवा मरकर तू स्वर्गको पावे २६ दुर्योधन बोला कि जो अब युद्धमें लड़ने को एकशूर मुझे देतेहो तो

आपके मतसे शस्त्रोंमें से यह गदाभी चाहीगई २७ एकको मारकरही जो राज्य के मिलने न मिलनेकी प्रतिज्ञा है तो तुममें एकशूर जो मुझको योग्य मानता है वह पदाती होकर गदाके द्वारा युद्धमें मुझसे युद्धकरे २८ प्रथम स्थान २ पर रथोंके बिचित्र युद्ध जारीहुये अब यहां गदाका युद्ध अपूर्व और बड़ा होय २९ मनुष्य अस्त्रोंकी भी रचना को करना चाहते हैं अब तेरी बुद्धिसे युद्धों की भी रचना होय ३० हे महाबाहु अब मैं गदासे तुझको तेरे छोटे भाइयोंसमेत बिजय करूंगा पाञ्चाल सृञ्जीआदि जो अन्य २ तेरी सेनाके लोगहैं उनको भी बिजय करूंगा हे युधिष्ठिर कभी इन्द्रसेभी मुझको भय नहीं है ३१ युधिष्ठिर बोले हे गान्धारी के पुत्र सुयोधन उठ और मुझसे युद्धकर बलवान् और अकेला युद्ध में गदाकेद्वारा एकके साथ भिड़कर ३२ शूरहोजा और हे गान्धारीके पुत्र अच्छी सावधानी से युद्धकरो अब जो इन्द्रभी तेरी सहायताकरें तोभी तेराजीवन नहीं है ३३ संजय बोले कि उसनरोत्तम जलके मध्यवर्त्ती सर्पकेसमान महाश्वास लेते आपके पुत्रने इस बातको नहींसहा ३४ हे राजा उसप्रकारके बचनरूपी कोड़ों से घायल उस दुर्य्योधन ने उन वचनों को ऐसे नहींसहा जैसे कि उत्तम घोड़ा चाबुकको नहीं सहताहै ३५ वह पराक्रमी वेगसे जलको छिन्नभिन्न करके सुनहरी बाजूबन्दोंसे अलंकृत लोहेकी गदाको लेकर ३६ सर्पराज के समान श्वास लेता जलके मध्यमें से उठा अर्थात् वह आपका पुत्र उस रोकेहुये जलको हटा कर लोहेकी गदा को कन्धेपर रखकर ३७ सूर्य्यके समान तपाता हुआ जलसे बाहर निकला उसके पीछे शैक्यमें रहनेवाली लोहेकी भारी सुवर्ण जटित गदा को ३८ बुद्धिमान् बड़ेपराक्रमी दुर्य्योधनने अपने हाथमें लिया शिखर रखनेवाले पर्वतकेसमान गदा हाथमें रखनेवाले उस दुर्य्योधनको देखकर ३९ उसको क्रोध युक्त नियत होनेवाले शिवजीके समान माना वह भरतवंशी सूर्य्यके समान तपाताहुआ शोभायमानथा ४० सब जीवोंने उस जलसे बाहर आयेहुये महाबाहु गदा हाथमें लिये शत्रुबिजयी दुर्य्योधन को दण्डधारी यमराज के समानमाना ४१ सब पाञ्चालों ने आपके पुत्र राजा दुर्य्योधन को उसप्रकारका देखा जैसे कि वज्रधारी इन्द्र और शूलधारी रुद्रजीको देखते हैं ४२ सबलोग जलसे बाहर निकलनेवाले उस दुर्य्योधनको देखकर बहुत प्रसन्नहुये और उन पाञ्चाल और पाण्डवोंने ताली बजाई ४३ फिर आपका पुत्र दुर्य्योधन उनकी ताली बजाने को

अपनाहास्य मानकर दोनों नेत्रोंको खोलके क्रोधयुक्त पाण्डवोंको भस्म करता हुआसा ४४ भ्रुकुटीको तीन शिखावाली करके दांतोंकी पंक्तिको काटता केशवजी समेत पाण्डवोंसे यह उत्तर वचन बोला ४५ कि हे पाण्डवलोगो तुम इस हास्यके फलको पाओगे और पाञ्चालों समेत मुझसे मरकर शीघ्रही यमलोकको जाओगे ४६ संजय बोले कि वह जलसे निकलाहुआ आपका पुत्र दुर्योधन भयसे युक्त गदा हाथमें लेकर नियत हुआ ४७ तब उस भयसेयुक्तका शरीर जलसे आर्द्र उसप्रकारका बिदित होताथा जैसे कि झरनाओं से युक्त पर्वत होताहै ४८ वहां पाण्डवोंने उस गदाऊंची करनेवाले वीरको क्रोधयुक्त दंडधारी यमराजके समान माना ४९ उसके पीछे प्रसन्नतासे बृषभके समान गर्जनेवाले बादल के समान शब्दायमान पराक्रमी उस दुर्य्योधन ने गदाके द्वारा युद्ध में पाण्डवों को बुलाया ५० दुर्य्योधन बोला हे युधिष्ठिर तुम युद्धमें एक २ मेरे सम्मुखआओ अकेला बीर बहुतोंकेसाथ युद्धमें लड़नेको न्यायके अनुसार योग्य नहीं है ५१ अधिकतर कवचत्याग थकाहुआ जलसे आर्द्रशरीर अत्यन्त घायल अङ्ग मृतक सवारी और सेनाके लोगवाला ५२ सबको मेरे साथ अवश्यही लड़ना चाहिये तुम सदैव योग्य और अयोग्य बातों को जानतेहो ५३ युधिष्ठिर बोले हे सुयोधन यह तेरी बुद्धि नहीं हुई यह बात तब कैसी हुईथी जब कि बहुतसे महारथियों ने युद्धमें अकेले अभिमन्युको मारा ५४ क्षत्रियधर्म्म अत्यन्त निर्द्दय और असंबन्धितहै उससमय उस दशावाले अभिमन्युको विपरीत रीति से कैसे मारा ५५ आप सब धर्म्मों के जाननेवाले शूर और शरीर की प्रीति के त्यागनेवाले थे न्यायसे उत्तम रीतिके युद्ध करनेवालोंकी इन्द्रलोकमें उत्तम गति कही है ५६ जो अकेला बहुतों के हाथसे मारने के योग्य नहीं यही धर्म्म है तो उससमय तेरी बुद्धिसे बहुतसे शूरवीरों ने मिलकर अकेले बालक अभिमन्युको कैसेमारा ५७ दुःख में पड़ेहुये सबजीव धर्म्मदर्शन को बिचारते हैं और अपने स्थानपर नियत परलोकके द्वारको बन्दमानते हैं ५८ हे वीर कवचको धारणकरो और शिरके बालोंको बांधो हे भरतवंशी जो दूसरी और कोई बस्तु तेरे पास न होय उसको भी लो ५९ और हे बीर फिर मैं तेरे इस एकमनोरथको देताहूं कि पांचों पाण्डवों में से जिसकेसाथ तुम लड़ना चाहतेहो ६० निश्चय उसको मारकर आप राजाहोगे अथवा मरकर स्वर्गको जाओगे हे बीर युद्ध में जीवन के

सिवाय तेरी कौनसी शिष्टाचारीको करें ६१ सञ्जयबोले हे राजा इसकेपीछे आप के पुत्रने सुनहरीकवच और जांबूनद सुवर्ण से जटित शिरस्त्राणको लिया ६२ तब वह आपकापुत्र शिरस्त्राणको बांधनेवाला उज्ज्वल स्वर्णमयी कवच धारण करनेवाला सुवर्ण के पर्व्वतके समान शोभायमानहुआ ६३ हे राजा कवचधारी महा अलंकृत गदाधारी आपकापुत्र दुर्य्योधन युद्ध के मुखपर खड़ा होकर सब पांडवोंसे बोला ६४ कि आप सब भाइयों में से एकभाई गदालेकर मेरेसाथ युद्ध करे सहदेव भीमसेन अथवा नकुलके साथ युद्धकरूंगा ६५ हे भरतर्षभ अथवा अब मैं युद्धको पाकर अर्जुनकेसाथ वा तेरेसाथ लडूंगा और रणभूमिमें तुमको विजय करूंगा ६६ हे पुरुषोत्तम अब मैं स्वर्णवस्त्रों से मढ़ीहुई गदाकेद्वारा बड़े दुःखसे मिलने के योग्य शत्रुताके अन्तको पाऊंगा ६७ गदायुद्ध में मेरेसमान कोई नहीं है यही अपने चित्तमें विचारताहूं सम्मुख आनेवाले तुम सबको गदा सेही मारूंगा ६८ तुमसब न्यायसे मेरेसाथ लड़ने को समर्थ नहीं हो इसप्रकार अहंकारसे प्रेरितबचन अपनी ओरसे कहने के योग्य नहीं हूं ६९ अथवा आप लोगोंके आगे इस बचनको सफल करूंगा इस मुहूर्त्त में यह बात सत्यहोय वा असत्यहोय तुममें से वह मनुष्य गदाको हाथमें ले जो कि अब मेरेसाथ में लड़ना चाहता है ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

सञ्जयबोले कि हे राजा इसप्रकार वारंबार दुर्योधन के गर्जनेपर युधिष्ठिर के ऊपर क्रोधित होकर वासुदेवजी यह बचन बोले १ कि हे युधिष्ठिरजी यह युद्धमें तुझको अर्जुनको नकुलको सहदेवको भी बुलावे २ तो क्याहोगा हे राजा तुम ने विना विचारके यह ऐसावचन क्योंकहा कि रणभूमिमें एककोही मारकर कौरवों में राजाहोय ३ उसगदा हाथमें लेनेवाले दुर्योधनके युद्धमें तुमको समर्थनहीं मानताहूं यहां इसने तेरह वर्षतक भीमसेन के मारने की इच्छासे लोहेकी मूर्त्ति पर कृत्यासिद्धकरी है हे भरतर्षभ हमलोगोंकीओर से अब कैसे कार्य्य होसक्ता है ४ । ५ हे राजेन्द्र तुमने दयाकरके बिनाबिचारे यह कर्म किया मैं युद्धमें उसके सम्मुख लड़नेवाला राजाओंमें से किसी राजाकोभी नहीं देखताहूं ६ सिवाय

पाण्डव भीमसेन के कि वह भी अत्यन्त अभ्यास करनेवाला नहीं है यह द्यूत फिरभी आपने प्रारम्भकिया जैसा कि पूर्व में कियाथा ७ हे राजा शकुनिकी और तेरी विषमता है भीमसेन बलवान् और समर्थ है राजादुर्य्योधन कर्मकर्त्ता है ८ बलवान् और कर्मकर्त्ता में कर्मकर्त्ता अधिक है हेराजा इस शत्रुको तुमने सत्य मार्गमें प्रवृत्तकिया ९ और अपनेको बड़ी आपत्ति में डालकर हमको भी दुःख में संयुक्तकिया कौन मनुष्य सब शत्रुओंको विजयकरके दुःखमें पड़ेहुये अकेले शत्रुकेसाथ १० प्राप्तहोनेवाले राज्यको हारताहै मैं लोकमें अब उसपुरुषको नहीं देखताहूं जोकि युद्धमें ११ । १२ गदाहाथमें रखनेवाले दुर्य्योधनके विजयकरने को समर्थहो चाहे देवताभी होय वहभी विजयकरने को समर्थ नहीं है क्योंकि राजादुर्य्योधन कर्मकर्त्ता है हे भरतवंशी सो तुम किसप्रकार शत्रुसे कहतेहो कि तुम गदासे युद्धकरो १३ और हमारे मध्यमेंसे एकको मारकर राजाहो भीमसेन को पाकर न्यायसे युद्धकरनेवाले हमलोगोंकी विजय में सन्देह है १४ क्योंकि यह बड़ाबलवान् दुर्य्योधन कर्मकर्त्ता है फिर तुमने यहभी कहाहै कि हममेंसे एक को मारकर राजाहोगे निश्चय करके पाण्डु और कुन्तीकी सन्तान राज्य भोग- नेवाली नहीं है केवल बड़े बनबास और वारंवार भिक्षा मांगने के अर्थ उत्पन्न करीगई है १५ । १६ भीमसेन बोले हे मधुदैत्यके मारनेवाले यदुनन्दनजी व्याकु- लता मतकरो अब उसी कठिन और दुष्प्राप्य शत्रुताके अन्तको पाऊंगा १७ अब मैं युद्ध में दुर्य्योधन को मारूंगा इसमें कुछ सन्देह नहीं है हे श्रीकृष्णजी धर्मराज की पूर्ण और अचल बिजय दिखाई देती है १८ यह मेरी गदा अर्द्ध भागमें बहुत भारी है ऐसी दुर्य्योधनकी नहीं है हे माधवजी पीड़ामतकरो १९ मैं युद्धमें गदा से इसके साथ लड़ने को उत्साह करताहूं हे जनार्द्दनजी आप सब लोग मेरे युद्धके देखनेवाले रहो २० हे श्रीकृष्णजी मैं युद्धमें नानाप्रकारके श- स्त्रधारी देवताओं समेत तीनों लोकोंसे भी युद्ध करसक्ताहूं तो अब दुर्य्योधनसे क्यों न करूंगा २१ फिर प्रसन्नचित्त वासुदेवजी ने उसप्रकार वार्त्ता करने वाले भीमसेनकी प्रशंसाकरी और यह वचन बोले २२ हे महाबाहु यह धर्मराज युधि- ष्ठिर तुम्हारे आश्रितहोकर निस्संदेह मृतक शत्रुवाला और अपनी प्रकाशमान लक्ष्मीको प्राप्तहै २३ युद्धमें धृतराष्ट्रके सब पुत्र तेरेही हाथसे मारेगये राजा राज- कुमार और हाथीभी गिरायेगये २४ हे पाण्डुनन्दन कलिंग मगधपूर्वीय और

गान्धारदेशियों समेत कौरवलोग तुझको बड़े युद्धमें पाकर मारेगये २५ हेकुंती के पुत्र अब तू दुर्य्योधन को भी मारकर इस सागराम्बरा पृथ्वी को धर्मराज के ऐसे सुपुर्दकरो जैसे कि विष्णुने इन्द्रको सुपुर्दकरी थी २६ पापी दुर्य्योधन युद्ध में मुझको पाकर नाशको पावेगा तुम इसकी जंघाको तोड़कर अपनी प्रतिज्ञा का पालन करोगे २७ हे भीमसेन यह दुर्य्योधन सदैव उपाय पूर्व्वक लड़ने के योग्यहै यह सदैव कर्म्मकर्त्ता बलवान् और युद्धमें कुशलहै २८ हे राजा इसके पीछे सात्यकी पांचाल और धर्म्मराज समेत सब पाण्डवों ने उस भीमसेन की प्रशंसाकरी २९ अर्थात् सबनेही भीमसेन के उस वचन की प्रशंसाकरी उसके पीछे भयानक पराक्रमी भीमसेन ३० उस सृंजियोंसमेत नियत सूर्य्यके समान संतप्त करनेवाले युधिष्ठिर से बोले कि मैं युद्ध में इसके सम्मुखहोकर लड़ने को उत्साह करताहूं ३१ यह नीच पुरुष युद्ध में मेरे बिजय करने को समर्थ नहीं है अब मैं हृदय में रक्खेहुये कठिन क्रोधको ३२ धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्य्योधन पर ऐसे छोडूंगा जैसे कि खाण्डवबन में अर्ज्जुननें छोड़ाथा हे पाण्डव अब मैं गदासे पापीको मारकर आपके हृदय में रहनेवाले भल्लको उखाडूंगा ३३ हे राजा अब प्रसन्न होजाओ हे निष्पाप अव मैं कीर्त्तिरूपी मालाको आपके कंठमें डालूंगा ३४ अब यह सुयोधन राज्यलक्ष्मी समेत अपने प्राणोंको त्यागेगा और राजा धृत-राष्ट्र मेरे हाथसे मारेहुये पुत्रको सुनकर ३५ उस दुष्ट कर्मको स्मरण करेगा जो कि शकुनी की बुद्धिसे उत्पन्नहोकर श्रेष्ठ भरतर्षभ लोगोंपर गिरा यह कहकर भीमसेन गदाको उठाकर खड़ाहुआ ३६ और युद्धके निमित्त उसको ऐसे बु-लाया जैसे कि इन्द्रने वृत्रासुरको बुलायाथा आपका बड़ा पराक्रमी पुत्र उसके बुलानेको न सहता हुआ ३७ शीघ्रता से ऐसे सम्मुखहुआ जैसे कि मतवाला हाथी मतवाले हाथीके सम्मुख जाताहै सबपाण्डवों ने गदा हाथ में रखनेवाले और सम्मुखनियत आपके पुत्रको ३८ शिखर रखनेवाले कैलासके समानदेखा अपने यूथसे जुदा हाथीके समान अकेले बड़े बलवान् दुर्योधनको पाकर ३९ सबपाण्डव अत्यन्तप्रसन्नहुये दुर्योधनको व्याकुलता भय ग्लानि और पीड़ा ४० नहींहुई और युद्धमें सिंहकेसमान नियतहुआ हे राजा तब भीमसेनने उसगदा उठानेवाले शिखरधारी कैलासके समान दुर्योधनको देखकर ४१ यहबचनकहा कि राजाधृतराष्ट्रने और तुमने जो हमारे साथकिया ४२ व जो वारणावतनगर

में किया उसपापकर्म को स्मरणकरो और जो रजस्वला द्रौपदीको सभामें दुःखी किया ४३ और जो शकुनिकी बुद्धिके निश्चयसे राजायुधिष्ठिरको द्यूतमें छलसे विजयकिया और हे दुर्बुद्धी इनके सिवाय जो २ तुमने अन्य पापोंको ४४।४५ निरपराधी पाण्डवोंके साथकिया है उसके बड़े फलको देखकर तेरेकारणसे मृतक बड़ेयशवान् गांगेय हमसबके पितामह भरतर्षभ भीष्मजी शरशय्यापर सोते हैं प्रतापवान् शल्य कर्ण और द्रोणाचार्य्यजी मारेगये ४६ और शत्रुताका आदि कारण वह शकुनि भी युद्धमें मारागया और सेनाके लोगों समेत तेरे शूरभाई पुत्रादिक भी मारेगये ४७ और युद्धमें पराङ्मुख न होनेवाले शूरबीर राजालोग मारेगये इनकेसिवाय अन्य २ हजारों उत्तमक्षत्रिय मारेगये ४८ उसप्रकार द्रौपदी के दुःख का उत्पन्न करनेवाला पापी प्रातकामी मारागया कुलका नाशकरने वाला नीचपुरुष अकेला तूहीं शेष रहगयाहै ४९ अब तुझको गदासे निस्संदेह मारूंगा हे राजा अब मैं युद्धमें तेरे सबअहंकारको नाशकरूंगा और बिजयकी बड़ी आशासमेत पाण्डवोंके साथ तेरे दुष्टकर्म्मको भी दूरकरूंगा ५० दुर्य्योधन ने कहा हे भीमसेन अधिक बार्त्तालाप करनेसे क्या लाभ है अबतू मेरेसाथ युद्धकर मैं तेरे युद्धकरने के उत्साह को दूरकरूंगा ५१ हे पापी हिमाचलके शिखर के समान बड़ी गदाको लेकर गदायुद्ध में नियत होनेवाले मुझको क्या नहीं देखता है ५२ हे दुष्टात्मा अब कौन शत्रु अथवा देवताओं में इन्द्र भी न्याय से युद्धकरनेवाले मुझ गदाधारी के मारने को उत्साह करताहै ५३ हे कुन्ती के बेटे जलसे खाली शरदृऋतु के बादल के समान निरर्थक क्यों गर्जताहै युद्धमें अपने बलको दिखलाओ जहांतक तुझसे पराक्रम होसके उससबको दिखलाव ५४ विजयाभिलाषी सबपाण्डवोंने सृंजियोंसमेत उसके उसबचनको सुनकर उसबचनकी प्रशंसाकरी ५५ हे राजा मनुष्यों ने उसहाथी के समान मतवाले राजा दुर्य्योधनको प्रत्यंचा के शब्दोंसे फिर प्रसन्नकिया ५६ वहां हाथी चिग्घाड़े घोड़े बारम्बारहीसे और इच्छावान् पाण्डवोंके शस्त्रप्रकाशितहुये ५७॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय॥

संजय बोले हे महाराज उस बड़े भयकारी युद्ध के वर्त्तमान होने और सब

महात्मा पाण्डवोंके बैठजाने १ और उनदोनों शिष्योंके युद्ध नियतहोनेपर ताल ध्वजाधारी हलधर बलदेवजी भी उसयुद्धको सुनकर आपहुंचे २ उनको देखकर केशवजी समेत सबपाण्डवलोग अत्यन्त प्रसन्नहुये उनके समीपजाकर बड़े आदर मानसमेत लाकर विधिपूर्वक पूजनकिया ३ हे राजा पूजनकरनेके पीछे सब लोग यहवचनबोले कि हे बलदेवजी युद्धमें दोनों शिष्योंकी सावधानीको देखो ४ तब बलदेवजी पाण्डवोंसमेत श्रीकृष्णजीको और हाथमें गदालिये सम्मुख नियत दुर्योधनको देखकरबोले ५ कि अब मुझ तीर्थयात्रा करनेवालेके बयालीस दिन व्यतीतहुये पुष्यनक्षत्रमें गयाहूं और पितृलोक संबन्धी श्रवण नक्षत्रमें फिर लौट आयाहूं अर्थात् इस नक्षत्रमें शरीर त्याग करनेवालों को दिव्य शरीर और स्वर्ग मिलताहै ६। ७ हेमाधव निश्चय करके मैं अपने शिष्यके गदायुद्धके देखने का अभिलाषी हूं इसके पीछे गदा हाथमें रखनेवाले रणभूमि में वर्त्तमान दोनों वीर दुर्य्योधन और भीमसेन अत्यन्त शोभायमान हुये तदनन्तर राजायुधिष्ठिर ने हलधारी बलदेवजी से मिलकर ८ बुद्धिके अनुसार स्वागतपूर्वक उनकी कुशलक्षेमको पूछा बड़े धनुषधारी अत्यन्त प्रसन्न प्रीतिमान् और कीर्त्तिमान् श्रीकृष्णजी और अर्ज्जुनभी नमस्कार करके मिले हे राजा उसीप्रकार शूर नकुल सहदेव और द्रौपदी के पांचों पुत्र ९। १० बड़े बलवान् बलदेवजीको नमस्कार करके नियत हुये हे राजा इसके पीछे बलवान् भीमसेन और आपके पुत्र ११ गदा उठानेवालों ने बलदेवजीका पूजन किया वहांपर वह सब लोग चारोंओर से स्वागतपूर्व्वक प्रतिष्ठा करके १२ बलदेवजी से बोले कि हे महाबाहु युद्धको देखो इसप्रकार से सब राजाओंने बलदेवजी से कहा १३ तब बड़े तेजस्वी बलदेवजीने पाण्डव सृंजी आदि सब महात्मा राजाओं से मिलकर उनकी कुशल क्षेम पूछी १४ इसप्रकार उन सबने मिलकर बलदेवजी से चित्तके आनन्द को पूछा फिर बलदेवजीने सब महात्मा क्षत्रियों को नमस्कारादिक करके १५ और अवस्थाके अनुसार कुशलक्षेमके शब्दोंसे युक्त वार्त्तालाप करके बड़ी प्रीतिपूर्वक श्रीकृष्ण और सात्यकीसे मिलाप किया १६ और उन दोनोंको मस्तकपर सूंघ कर कुशल मंगलकोपूछा हे राजा उनदोनोंने भी उन गुरूजीका विधिपूर्वक ऐसे पूजन किया १७ जैसे कि प्रसन्नचित्त इन्द्र और उपेन्द्र ब्रह्माजीका पूजन करते हैं इसके पीछे धर्म्मके पुत्र युधिष्ठिर उन शत्रुविजयी बलदेवजी से बोले १८ कि हे

बलदेव जी दोनों भाइयों के इस बड़े युद्धको देखो यह सुनकर हे भरतवंशी उन महारथियोंसे प्रतिष्ठापूर्वक पूजित अत्यंत प्रसन्न महाबाहु श्रीमान् बलदेवजी उनके मध्यमें बैठगये नीलाम्बर गौरवर्ण बलदेवजी राजाओंके मध्यमें नियत होकर ऐसे शोभायमान हुये १९। २० जैसे कि स्वर्ग में नक्षत्रोंके समूहों से घिराहुआ चन्द्रमा शोभित होताहै २१ हे राजा इसके पीछे आपके उनदोनों पुत्रों का युद्ध बड़ा कठिन और रोमहर्षण करनेवाला शत्रुताका अन्त करनेवाला हुआ २२॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवागमनेपंचमोऽध्यायः ५॥

छठा अध्याय॥

संजयबोले प्रथमही उस युद्धके वर्त्तमान होनेपर जब प्रभु बलदेवजी केशवजीसे पूछकर वृष्णियोंके साथ यह कहकरगये १ कि हे केशवजी मैं पाण्डवोंकी और दुर्य्योधन की सहायता नहीं करूंगा जैसे आयाहूं वैसेही चलाजाऊंगा २ अर्थात् तब शत्रुओंके मारनेवाले बलदेवजी ऐसा कहकर चलेगये फिर जनमेजयनेकहा कि हे ब्रह्मन् आप फिर उनके आगमनके वृत्तांतको मूलसमेत वर्णन करनेको योग्यहो कैसे सम्मुख वर्त्तमानहुये और कैसे युद्धको देखा हे श्रेष्ठ आप वर्णन करनेमें समर्थहो ३। ४ वैशंपायन बोले कि उपप्लवी स्थानपर महात्मा पांडवोंके निवास करनेपर सब शरीरधारियों के आनन्द के अर्थ सन्धिके निमित्त मधुसूदनजी धृतराष्ट्रके सम्मुख भेजेगये हेमहाराज श्रीकृष्णजी ने हस्तिनापुर में पहुँच धृतराष्ट्रसे मिलकर ५। ६ सत्य २ सबकी वृद्धिका करनेवाला वचनकहा परन्तु बहुतसा कहनेपर धृतराष्ट्रने उसको नहीं किया ७ तब यहां पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी सन्धिको न पाकर उपप्लवी स्थानको आये ८ अर्थात् वह मधुसूदनजी दुर्य्योधनसे बिदाहोकर उपप्लवी स्थानपर आकर सन्धिके न होने से पांडवों से यह वचनबोले ९ कि कालसे प्रेरितहोकर कौरवलोग मेरे वचनको नहीं करते हैं हे पांडवो तुम मेरे साथ पुष्यनक्षत्रमें यात्राकरो १० उसके पीछे सेनाओंके विभक्त होनेपर बलवानों में श्रेष्ठ बड़े साहसी बलदेवजी अपने भाई श्रीकृष्णजीसे बोले ११ हे महाबाहु मधुसूदनजी उन्होंकी भी सहायताकरो परन्तु श्रीकृष्णजीने उनके उस वचनको नहीं किया १२ इसके पीछे क्रोधसे पूर्ण चित्त बड़े यशवान् यदुनन्दन बलदेवजी सरस्वती तीर्थको यात्राकरगये १३ अर्थात् अनुराधा नक्षत्र

के प्रारम्भमें यादवोंसमेत चलेगये फिर शत्रुविजयी कृतवर्मा दुर्य्योधनमें आकर मिला १४ और सात्यकी समेत वासुदेवजी पांडवों में संयुक्तहुये शूर बलदेवजी के जानेपर मधुसूदनजी पुष्य नक्षत्र में १५ पाण्डवों को आगे करके कौरवों के सम्मुखगये फिर चलतेहुये मार्गमें नियत बलदेवजीने सेवकोंको आज्ञाकरी १६ कि तीर्थयात्रा में सब सामान और शस्त्रादिकों को लाओ और द्वारकासे अग्नियों समेत यज्ञकरानेवालों को भी लाओ १७ सोना चांदी गौ वस्त्र हाथी रथ खच्चर ऊंट आदि सवारियां १८ और सबप्रकार के सामान को तीर्थयात्राके निमित्त शीघ्रलाओ और तुम शीघ्रता से चलकर सरस्वती के तटपर आओ १९ और सैकड़ों उत्तम वेदपाठी याज्ञिक ब्राह्मणों को भी लाओ तब कौरवोंके नाश होनेपर वह बड़े बलवान् बलदेवजी इसप्रकारकी आज्ञा अपने नौकरों को देकर तीर्थयात्राकोगये और चारोंओरके सरस्वती तीर्थोंकी यात्राकरी २०।२१ ऋत्विज् मित्रवर्ग अन्य श्रेष्ठ २ ब्राह्मण, रथ, हाथी, घोड़े, नौकर, चाकर २२ बैल खच्चर और ऊंटोंसे युक्त बहुतसी सवारियों समेत थके थकावटसे पीड़ावान् शरीर बालक, वृद्ध और आकांक्षा करनेवालोंके पूजनकेलिये दानके योग्य नानाप्रकार की अनेक बस्तुओंको प्रत्येक स्थानपर वर्त्तमानकिया २३।२४ हे राजा तब जोजो ब्राह्मण जहां जहां भोजन करनेकी इच्छा करताथा वहांवहां उसके अभीष्ट भोजनको वर्त्तमान किया २५ हे राजा वहां बलदेवजीकी आज्ञासे जहांतहां सेवक अहल्कार लोग चारोंओर को खानपान के पदार्थोंको करतेथे २६ वहां सुख चाहनेवाले वेदपाठी ब्राह्मणोंके पूजनकेलिये बहुमूल्य वस्त्र पलँग और उनके वस्त्र तैयार किये २७ हे भरतवंशी जहांपर जो ब्राह्मण अथवा क्षत्रियभी जिसवस्तुको चाहताथा वहांपर उसकी अभीष्टवस्तु तैयारहुई दिखाई पड़ी २८ हे भरतर्षभ उस समय सब लोग बड़े आनन्द और सुखपूर्वक जाते थे और उत्तम उत्तम स्थानों पर निवास करते जाते थे वहां मनुष्यों ने चलनेवालों की सवारियों को और प्यासों की पान करनेवाली वस्तुओं को २९ और क्षुधायुक्तों के स्वादिष्ट भोजन वस्त्र और भूषणों को वर्त्तमान किया ३० हेवीर राजा जनमेजय तब चलनेवाले मनुष्यों का वह मार्ग सबका सुखदायी होकर स्वर्ग के समान शोभायमान हुआ ३१ सदैव प्रसन्न लोगों से संयुक्त स्वादिष्ट भोजन रखनेवाली मङ्गलकारी मार्ग में वर्त्तमान दूकानों से और बेंचने के योग्य वस्तु रखनेवाले नानाप्रकारके

सैकड़ों मनुष्यों से व्याप्त अनेकप्रकारके वृक्ष बल्लियों से युक्त भांतिभांति के रत्नों से अलंकृत था ३२ हे राजा उसके पीछे महात्मा नियम में नियत चित्त यादवों में बड़े वीर प्रसन्नचित्त बलदेवजी ने धर्म्मकी वृद्धि के कारण तीर्थों पर ब्राह्मणों के निमित्त धन और यज्ञकी दक्षिणाको दिया ३३ दूध देनेवाली सुन्दर पोशाक युक्त सुवर्णशृङ्गी गौवें और नानाप्रकार के देशोंमें उत्पन्न होनेवाले उत्तम घोड़े सवारियां और शुभ दासोंको ब्राह्मणों के अर्थ दान किया ३४ बलदेवजीने रत्न मणि, मोती, मूंगा, श्रेष्ठसुवर्ण, शुद्ध चांदी और लोहे तांबे के पात्रभी बड़े बड़े उत्तम ब्राह्मणों को दान किये ३५ इसप्रकार उस महात्मा ने सरस्वती के उत्तम तीर्थों पर बहुतसा धनदिया वह अनुपम प्रभाववाले उत्तम वृत्तीवाले बलदेवजी क्रमपूर्वक कुरुक्षेत्रकोगये ३६ जनमेजयबोले हे द्विपादोंमें श्रेष्ठ वैशम्पायनजी सरस्वतीके तीर्थोंके गुण उत्पत्तिफल और यात्राकी विधिकोभी मुझसेकहो ३७ हे वदतांवर ब्रह्मज्ञानी समर्थ वैशम्पायनजी मुझको बड़ाही उत्साहहै आप तीर्थोंको क्रमपूर्वक वर्णन कीजिये ३८ वैशम्पायन बोले हे राजेन्द्र राजा जनमेजय तीर्थों के क्रम सर्वगुण और उत्पत्ति को मैं सम्पूर्णताके साथ तुझको सुनाताहूं तू उस धर्मकी वृद्धि करनेवाले माहात्म्यको मनसेसुन ३९ हे महाराज प्रथम वह यादवों में बड़े वीर बलदेवजी ऋत्विज् मित्र और ब्राह्मणों समेत उस प्रभासक्षेत्र नाम उत्तम और पवित्र तीर्थकोगये जिसपर कि चन्द्रमा यक्ष्मानामरोगसे दुःखीहोकर गयाथा ४० और शापसे निवृत्त होकर तृतीयाके दिनसे सब जगत्को प्रकाशित करता है इस रीति से उस चन्द्रमाकी अत्यन्त प्रकाशित किरणों से उत्पन्नहुआ वह अत्यन्त उत्तम तीर्थ है और इसी हेतुसे उसकानाम प्रभासक्षेत्र होगयाहै ४१ जनमेजयने पूछा कि भगवान् चन्द्रमाजीको कैसे यक्ष्मारोग उत्पन्नहुआ और कैसे वहरोग उस अत्यन्त उत्तमतीर्थ के प्रभावसे नष्टहुआ ४२ वह चन्द्रमा किस प्रकार उस तीर्थमें स्नानकरके फिर वृद्धियुक्त हुआ हे महामुनि उस सब वृत्तान्त को ब्योरे समेत वर्णनकरो ४३ वैशम्पायन बोले हे राजा दक्षकी जो वहकन्या उत्पन्नहुई उनमें से सत्ताईस कन्या चन्द्रमाको दीं ४४ वह कन्या नक्षत्र योग में अधिकारी होकर उनकी संख्याके निमित्त हुई हे राजेन्द्र जो कि उस शुभकर्म्म करनेवाले चन्द्रमा की स्त्रियांथीं ४५ वह सब दीर्घनेत्रा और स्वरूपमें अनुपमथीं उन सत्ताईसों में रोहिणी स्वरूप और लावण्यतामें सबसे अधिकथी ४६ इससे

उस भगवान् चन्द्रमाने उसी में अधिक प्रीतिकी वही उसके चित्तकी प्यारी हुई इसहेतुसे सदैव उसीको भोगा ४७ हे राजेन्द्र चन्द्रमा पूर्वसमय में रोहिणीकेही समीप अधिक स्थितरहा उस हेतु से महात्मा चन्द्रमाको नक्षत्रनामसे विख्यात वह सब स्त्रियां क्रोधयुक्तहुई ४८ और बड़ी सावधानों ने अपने पिता दक्ष प्रजापति के पासजाकर कहा कि चन्द्रमा हमारेपास कभी निवास नहीं करता सदैव रोहिणीको चाहताहै ४९ हे सृष्टिके स्वामी सो हम सब उचितआहार करनेवाली और तपकरने में प्रवृत्त आपके सम्मुख निवास करेंगी ५० तब दक्षप्रजापतिजी उन सबके वचनोंको सुनकर चन्द्रमासे बोले कि तुम सब स्त्रियों में समान भाव से बर्तावकरो इस से तुमको बड़ा अधर्म स्पर्श नहीं करेगा ५१ फिर दक्षजी उन सबसे बोले कि चन्द्रमा के पासजाओ चन्द्रमा मेरी आज्ञासे सबके पास बराबर निवास करेगा ५२ तब उस प्रकारसे बिदा की हुई वह सब स्त्रियां शीतांशु चन्द्रमाके भवनको गई हे राजा इसपर भी भगवान् चन्द्रमा उसीप्रकार ५३ बारंबार प्रीति करनेवाले होकर रोहिणीकेही पास रहतेथे इसके अनन्तर उन सबोंने फिर अपने पितासे कहा ५४ कि हम सब आपकी सेवामें प्रवृत्तहोकर आपकेही पास निवास करेंगी क्योंकि चन्द्रमा हमारे पास निवास नहीं करता है उसने आपके भी वचनको नहीं किया ५५ दक्षजी ने उन सबके उस वचन को सुनकर फिर चन्द्रमासे कहा कि हे अत्यन्त प्रकाशमान तुम स्त्रियों में बराबर बर्ताव करो जो मेरा कहना न करोगे तो मैं तुझको शापदूंगा ५६ फिर भगवान् चन्द्रमा दक्षके वचनको अनादर करके रोहिणीकेही पास निवासी हुये इस हेतु से वह स्त्रियां फिर क्रोधयुक्तहुई ५७ तब उन्होंने जाकर शिरसे प्रणाम करके पितासे कहा कि चन्द्रमा हमारे पास निवास नहीं करता है अब आपही हमारे रक्षकहूजिये ५८ भगवान् चन्द्रमा सदैव रोहिणीके पासही निवास करते हैं आपके वचनको कुछ नहीं गिनते हैं और हमपर प्रीतिकरना नहीं चाहते हैं ५९ इसकारणसे हमसब की ऐसी रक्षाकरो जिसके भय से चन्द्रमा हमको अपने पास ठहरावे हे राजा क्रोधयुक्त भगवान् दक्षप्रजापतिने उसको सुनकर क्रोधसे यक्ष्मानाम रोगको ६० चन्द्रमाके ऊपर छोड़ा तब वह चन्द्रमामें प्रवेश करगया फिर यक्ष्मा रोगसे ग्रसित शरीर होकर वह चन्द्रमा प्रतिदिन क्षीणतासे युक्तहुये ६१ हेमहाराज जनमेजय चन्द्रमाने नानाप्रकारके यज्ञों से पूजनकरके उस यक्ष्मारोगके दूरकरने के अनेक

उपायभी किये ६२ परन्तु शाप से निवृत्त नहीं हुआ और सदैव क्षीणताकोही पाया तब चन्द्रमाके क्षीणतायुक्त होनेपर औषधियां पृथ्वीपर उत्पन्न नहींहुईं ६३ सब ओरसे सब रस स्वादुओंसे रहित और निर्बल हुये और औषधियों का विनाश होनेपर जीवोंका भी नाशहुआ ६४ चन्द्रमा के विनाश युक्त होनेपर सब सृष्टिकेजीव दुर्बलशरीर हुये इसकेपीछे सब देवताओंने मिलकर चन्द्रमासे कहा कि आपका यह ऐसा रूप कैसे होगयाहै कि प्रकाश नहीं करता अब जिनसे तुमको बड़ाभयहै उन सब कारणोंको आप हमसे कहो ६५। ६६ जब हमसे सब वृत्तान्त कहोगे तब हम सब देवता उसका उपाय करेंगे देवताओं के इन वचनों को सुनकर चन्द्रमाने उनसे ६७ अपने शापका कारण और यक्ष्मारोग होनेका सब वृत्तान्त कहा तब देवता चन्द्रमाके वृत्तान्त को सुनकर दक्षके पास जाकर बोले ६८ कि हे भगवन् आप चन्द्रमाके ऊपर प्रसन्नहूजिये और अपने शापको लौटाइये यह चन्द्रमा नाशवान् होकर कुछ शेष बाकीरहा दीखताहै ६९ हे देवताओं के ईश्वर उसके विनाशवान् होने से सृष्टि भी नाशयुक्त होगई है वीरुध औषधी और नानाप्रकार के बीजोंने विनाशको पाया ७० उनके नाशसे हमारा नाश है और हमारे विना जगत् कैसाहोगा हे लोकगुरू इसबात को जानकर आप कृपाकरने के योग्यहो ७१ इसप्रकारके देवताओं के वचनों को सुनकर प्रजापतिजी ने देवताओं से यहवचनकहा कि मेरावचन विपरीत करना उचित नहीं है ७२ हे महाभागो मेराशाप इसीबहाने से लौटेगा कि चन्द्रमा सदैव सब स्त्रियों में बराबर वर्त्तावकरे ७३ हे देवता लोगो सरस्वती के उत्तम तीर्थ में ग्रीवा पर्य्यन्त जलमें गोते लगानेवालाहोकर फिर वृद्धियुक्त होगा यह मेरावचन सत्य है ७४ चन्द्रमा सदैव आधेमास तक क्षीणताको पावेगा और आधेमहीने वृद्धि को पावेगा यह मेरा वचन भी सत्य है ७५ पश्चिमीय समुद्र के जिस स्थानपर कि सरस्वती समुद्रका मिलापहै वहांपर जाकर देवताओं के ईश्वरका आराधन करके तेजको पावेगा ७६ इसकेपीछे वह चन्द्रमा ऋषिकी आज्ञानुसार सरस्वती तीर्थको गये प्रथम सरस्वती तीर्थको जाकर फिर प्रभास क्षेत्रकोगये ७७ अमावास्याके दिन उसमें स्नान करके बड़े तेजस्वी और उत्तम कान्तिवालेनें लोकों को प्रकाशितकिया और किरणोंकी शीतलताको पाया ७८ हे राजेन्द्र फिर सब देवता प्रभासक्षेत्रनाम उत्तम तीर्थको पाकर चन्द्रमा समेत दक्षजीके सम्मुखहुये

इसकेपीछे प्रजापतिजीने सब देवताओंको बिदाकिया फिर प्रसन्नचित्त भगवान् प्रजापति ऋषि चन्द्रमासे यह वचनबोले ७९। ८० कि हे पुत्र स्त्रियोंका अपमान और ब्राह्मणों का अपमान तू कभी मतकर अबजाओ और सदैव प्रवृत्त होकर मेरी आज्ञाको करो ८१ हे महाराज फिर उनसे विदाहोकर वह चन्द्रमा अपने लोकको गया और सब सृष्टिभी प्रसन्न होकर पूर्वकेही समान फिर नियतहुई ८२ यह सब चन्द्रमाके शापका और शापसे निवृत्तहोनेका वृत्तान्त और प्रभास तीर्थ का सब तीर्थों में अत्यन्त श्रेष्ठतर होनेका भी उत्तम वृत्तांत मैंने तुझसे कहा ८३ हे महाराज श्रीमान् चन्द्रमा सदैव अमावास्या के दिन प्रभासनाम उत्तम तीर्थमें स्नानकरके वृद्धिको पाताहै ८४ हे राजा इसहेतुसे इसतीर्थको प्रभासक्षेत्र जानते हैं चन्द्रमाने उसमें गोते लगाकर बड़ेप्रकाशको पाया ८५ इसकेपीछे बलवान् और अजेय बलदेवजी उस चमस्तोद्भेद तीर्थको गये जिसको लोग चमसोद्भेद तीर्थ कहते हैं ८६ फिर हलायुध बलदेवजी वहां उत्तम दानों को देकर एक रात्रि निवासकर विधिपूर्वक स्नानकरके ८७ शीघ्रताकरनेवाले केशवजीके बड़े भाई उस उदपाननाम तीर्थकोगये जहांपर कि बड़ेप्राचीन और कल्याणकारी उत्तम फलको पाया ८८ हे राजेन्द्र जनमेजय औषधियों से और पृथ्वी के स्वच्छता युक्त सचिक्कण होनेसे सिद्धलोग गुप्तहोनेवाली सरस्वतीकोभी जानते हैं ८९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांचन्द्रशापविमोचनेषष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले हे महाराज इस कारण से बलदेवजी यशवान् त्रितसी के उदपान तीर्थको जो कि नदी में वर्त्तमानथा गये १ वहां बहुतसा धन दानपुण्य कर ब्राह्मणों को पूज और उसी तीर्थ में स्नानकरके बलदेवजी अत्यन्त प्रसन्न हुये २ वहांपर वह बड़ा तपस्वी त्रित धर्म्मका करनेवाला बड़ा पूर्ण सिद्धहुआ जिस महात्माने कूपमें निवासकरके अमृतको पान किया ३ वहां इसको उसके दोनों भाई कूपमें छोड़कर अपने २ घरोंको चलेगये इसके पीछे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ त्रितने उन दोनोंको शापदिया ४ जनमेजय बोला हे ब्रह्मन् किसप्रकारका कूप था और वह बड़ा तेजस्वी उस कूपमें किसरीति से गिरा और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ दोनों भाइयों ने उसको क्यों त्यागकिया ५ और दोनों भाई उसको किसप्रकार

कूपमेंही छोड़कर घरोंको चलेगये और कैसे अमृतको पानकिया हे ब्रह्मन् जो उसको आप मेरे सुननेके योग्य मानतेहो तो मुझसे वर्णनकरो ६ वैशम्पायन बोले हे राजा सतयुगमें तीनभाई मुनिहुये जो कि एक द्वित और त्रितनाम से विख्यात सूर्य्यके समान तेजस्वी थे ७ सब प्रजापति के समान सन्तानवाले तपस्याके द्वारा ब्रह्मलोकको विजय करनेवाले और ब्रह्मवादी थे ८ धर्म्म में प्रीति रखनेवाला उनका पिता गौतम उन्होंके तप,नियम और जितेन्द्रियपने से सदैव प्रसन्न रहताथा ९ फिर वह भगवान् गौतमऋषि बहुतकाल पीछे उन्होंकी प्रीतिको पाकर अपने योग्य स्थानको गये १० हे जनमेजय जो जो राजा उस महात्माके यजमानथे उनसब ने उन गौतमजी के स्वर्ग जानेपर उनके पुत्रों को पूजा ११ फिर उनमेंसे उस त्रितने अपने कर्म्म और वेदपाठ आदिक आचरणों से वैसीही प्रतिष्ठाको पाया जैसी कि उसके पिताने पाईथी १२ उसीप्रकार पवित्र लक्षणवाले महाभाग सब मुनियों ने भी उस महाभाग को ऐसा पूजा जैसे कि पूर्वसमयमें उसके पिताको पूजतेथे १३ हेराजा इसके अनन्तर किसीसमय एक और द्वितनाम उसके दोनों भाइयोंने यज्ञके और धनके निमित्त इच्छाकरी १४ हे शत्रुके तपानेवाले उन दोनोंका यह विचारहुआ कि त्रितकोलेकर सब यजमानोंको इकट्ठाकर दक्षिणामें गौवेंलेकर १५ बड़े फलवाले यज्ञको पाकर प्रसन्नतासे अमृतको पानकरेंगे हेराजा तीनों भाइयोंने वैसेहीकिया १६ फिर वह गोरूप दक्षिणाके निमित्त सबयजमानों के पास उसीप्रकार घूमकर यजमानों को यज्ञकराके १७ उसयज्ञकर्म के द्वारा विधिपूर्व्वक बहुत से धन और पशुओं को लेकर वह सब महर्षि पूर्वदिशाको गये १८ हे महाराज प्रसन्नचित्त त्रित उन्होंके आगेजाताथा और पीछे २ एक और द्वित यहदोनों पशुओंको हांकतेहुये जातेथे १९ उस पशुओंके बड़ेसमूहको देखकर उनदोनोंको चिन्ताहुई कि इसत्रित के विनायह गौ किसप्रकारसे हमारी होसक्ती है हेराजा यह विचारकर एक और द्वितदोनों पापी भाइयोंने परस्पर मिलकर यह वचनकहा उसको समझो २०।२१ कि त्रित यज्ञमें सावधानहै और वेदोंकाभी पूर्णज्ञाताहै इससे वह त्रित बहुतसी अन्य २ गौओं को प्राप्त करलेगा २२ इसहेतुसे हमदोनों साथहोकर गौओं को हांकतेहुये चलदें और हम दोनोंसे पृथक् होकर त्रितभी स्वेच्छापूर्वक जाय २३ चलनेवाले मार्गमें नियत उनके आगे एक भेड़िया वर्त्तमानहुआ और

वहांही सरस्वतीके किनारेपर एक बड़ा कूपथा २४ इसके अनन्तर त्रित मार्ग्ग में नियत भेड़िये को देखकर बड़ा भयभीतहोकर हटा और उस कूप में गिरपड़ा २५ जो कि बड़ा अगाध घोर और सब जीवों के भयका उत्पन्न करनेवाला था हे महाराज तब तो मुनियों में श्रेष्ठ कूप में नियत त्रितने २६ पीड़ा के शब्द किये और उन दोनों भाई मुनियोंनेभी सुने तब एक और द्वित दोनोंभाई उस कूपमें पड़ेहुये त्रितको जानकर २७ भेड़िये के भयसे और लोभसे उसको उसी कूप में पड़ाहुआ छोड़कर चलेगये पशुओंको पानेवाले और दोनों भाइयों से त्यागेहुये उस बड़ेतपस्वी २८ त्रितने उस निर्ज्जल धूलसेयुक्त तृणोंसे आच्छादित कूपमें २९ अपनेको इसप्रकार डूबादेखकर जैसे कि पापी नरकमें डूबाहोय तव उस ज्ञानी मृत्युसे भयभीत और अमृतपान न करनेवाले ने बुद्धि से बिचार किया ३० कि यहां पर नियतहोकर मैं कैसे अमृतका पानकरसक्काहूं हे भरतर्षभ राजा जनमेजय उस वड़ेतपस्वी ने उसकूपकेभीतर ३१ इसप्रकार निश्चयकरके वहां दैवयोगसे लटकती हुई एकलताको देखा उसके पीछे धूल से आच्छादित कूप में मुनिने जलको ध्यानकरके ३२ अग्नियों को कल्पना करके अपने को होता कल्पना किया तब उस बड़े तपस्वी मुनिने उस बीरुधको अमृत कल्पना करके ३३ यजुर्वेद और सामवेदकी ऋचाओं को चित्तसे ध्यान किया हे राजा उसने कङ्कड़ोंको खाँड़बनाकर चूर्णकिया ३४ और जलको घृतबनाकर देवताओंके भागोंको बिचार किया और अमृत के यज्ञको करके बड़ी ध्वनिकरी ३५ हे राजा फिर उस त्रितका वह शब्द स्वर्ग में ऐसे पहुँचा जैसे कि ब्रह्मवादियों से कियाहुआ पहुँचताहै इसरीतिसे उस यज्ञको प्राप्त ३६ होनेवाले महात्मा त्रित के यज्ञके वर्त्तमान होने पर सब स्वर्ग व्याकुल होगया परन्तु कोई कारण नहीं जानागया ३७ उसके पीछे देवताओं के पुरोहित बृहस्पतिजी ने भी उस बड़े शब्दको सुनकर सब देवताओं से कहा ३८ कि हे देवताओ त्रितकायज्ञ वर्त्तमानहै उसमेंचलो वह बड़ातपस्वी क्रोधयुक्त होकर दूसरे देवताओंको भी उत्पन्न करसक्काहै ३९ उनके उस बचनको सुनकर सब देवता वहां गये जहां त्रितका वह यज्ञ वर्त्तमानथा ४० उन देवताओं ने उस कूपमें जाकर जहां वह यज्ञकर्म्मों में दीक्षित त्रित वर्त्तमानथा उस महात्मा को देखा ४१ बड़ी शोभा से युक्त उस महात्माको देखकर देवतालोग उस महाभाग से बोले कि भाग के चाहनेवाले

हम सब देवता वर्त्तमान हैं ४२ इसके पीछे वह ऋषि देवताओं से बोला कि हे देवताओ इस भयकारी कूपमें डूबाहुआ बुद्धिसे हीन मुझको देखो ४३ हे महाराज इसके अनन्तर त्रितने मंत्रों से युक्त भागोंको विधिपूर्वक उनके अर्थ दिया तब वह प्रसन्न हुये ४४ उसके पीछे विधिपूर्वक मिलेहुये भागों को पाकर प्रसन्न चित्त देवताओंने उसको वह वरदिये जिनको कि वह मनसे चाहताथा ४५ तब उसने इन वरों को मांगा कि हे देवताओ प्रथम तो मुझको इस कूप से निकालकर रक्षाकरो फिर यह वरदानकरो कि जो इस कूपमें स्नान आचमन करे वह अमृतपान करनेवाले की गतिको पावे ४६ हे राजा उस कूपमें तरङ्गों की रखने वाली सरस्वती ऊपर आई उनसे उछालाहुआ वह ऋषि देवताओं को पूजता हुआ ऊपर नियतहुआ ४७ हे राजा फिर देवता इसप्रकारसे कहकर अपने लोकों को गये तब प्रसन्नचित्त त्रित भी अपने स्थानको आया ४८ क्रोधयुक्त बड़ेतपस्वी त्रितने उन दोनों ऋषि भाइयों को पाकर कठोर वचनकहे और शापदिया ४९ कि जो तुम पशुओं के लोभ में युक्तहोकर मुझको छोड़कर भागआये उस हेतुसे वगले के समान भयानकरूप चारों ओर को घूमनेवाले और डाढ़ रखने वाले होगे ५० मेरे शापकेद्वारा इसपापकर्म के कारणसे तुम ऐसी दशावालेहोगे और तुम दोनों की सन्तान गोलांगूल रीछ और बन्दर होगी ५१ हे राजा तब उसके इसप्रकार कहनेपर उस सत्यवक्ता के कहतेही वह दोनों उसीक्षण में उस रूपवाले दिखाईपड़े ५२ बड़ेपराक्रमी बलदेवजीने वहां भी आचमन और स्नान पूर्व्वक नानाप्रकारके दान देकर ब्राह्मणोंको पूजकर और नदीमें वर्त्तमान उस कूपको देखकर वारम्वार प्रशंसा करके बिनशन तीर्थ को प्राप्तकिया ५३ । ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांतीर्थकथनेसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे राजा इसके अनन्तर बलदेवजी उस बिनशन तीर्थ को गये जहां पर कि शूद्रआभीरों की शत्रुता से सरस्वती गुप्त होगई १ इसहेतु से ऋषियों ने सदैव से उसको बिनशन कहा है बड़े बलवान् बलदेवजी वहां भी सरस्वती में स्नान आचमन करके २ फिर सरस्वती के उत्तम किनारेपर उस सुभूमिक तीर्थकोगये जहांपर कि निर्मलमुख निरालस्य अप्सरागण सदैव स्वच्छ

क्रियाओं से क्रीड़ा करती हैं ३ हे राजा वहांपर देवता गन्धर्व हरमहीने में उस ब्राह्मणोंसे सेवित पवित्र तीर्थको जाते हैं उस स्थानपर अप्सरा और गन्धर्वों के समूह दिखाईपड़े ४ । ५ हे राजेन्द्र वहांपर देवता और पितर साथ मिलकर समय पूर्व्वक सुखको पाकर वीरुधियों समेत सदैव ६ पवित्र दिव्य पुष्पों से बारम्बार युक्तहोकर क्रीड़ा करते हैं उन अप्सराओं की वह शुभभूमि है ७ और सरस्वती के उत्तम तटपर सुसूमिका नामसे प्रसिद्धहै बलदेवजी वहांपर स्नानकरके ब्राह्मणोंको धनदेकर ८ उस गीत बाद्योंके शब्दोंको सुनकर गन्धर्व राक्षसोंकी बड़ी २ छायाओंको देखतेहुये गन्धर्वों के तीर्थको गये वहां प्रीतिसे युक्त विश्वावसुनाम गन्धर्व ९ । १० बड़े चित्तरोचक गीत बाद्यों को करते हैं हलधर भी वहां बहुतसे ब्राह्मणोंको नानाप्रकार के धनोंको देकर भेड़ बकरी गौ खच्चर ऊंट और सुवर्ण चांदी आदि को दानकरके बड़ी प्रसन्नता से उत्तम पदात्थौं के द्वारा ब्राह्मणों को भोजन कराके बड़ी दक्षिणाओं से तृप्तकर ११ । १२ ब्राह्मणों से स्तूयमान महाबाहु रेवतीरमणजी उस गान्धार तीर्थसेचले १३ उसकेपीछे बलदेवजी गर्गस्रोत तीर्थको गये हे जनमेजय वहांपर तपसे शुद्ध अन्तःकरण वृद्ध महात्मा गर्गजीने १४ त्रिकाल ज्ञानकी गतिके द्वारा नक्षत्रोंका व्यतिक्रम और अशुभ भयकारी उत्पातोंको सरस्वतीके शुभ तीर्थपर बिदित किया उन्हींके नामसे वह तीर्थ गर्गस्रोतनामसे विख्यात है १५।१६ हे प्रभु राजा जनमेजय वहांपर सुन्दर व्रतवाले ऋषिलोग सदैवकाल ज्ञानके निमित्त महात्मा गर्गऋषि के पास वर्त्तमान रहते थे १७ हे राजा श्वेतचन्दन लगानेवाले बलदेवजी वहां जाकर और शुद्ध अन्तःकरणवाले मुनियों को धनदेकर १८ नानाप्रकारके भोजन के पदार्थ ब्राह्मणों को भोजन कराके बड़े यशवान् नीलाम्बरधारी होकर शङ्खतीर्थ को गये १९ वहांपर महामेरुपर्व्वत के समान ऊंचे श्वेतपर्व्वत की समान ऋषियोंके समूहों से सेवित महाशङ्खनाम २० वृक्षको उस तालध्वजाधारी बलवान् बलदेवजीने देखा जो कि सरस्वतीके किनारेपर था जहांपर हजारों सिद्ध यक्ष विद्याधर और बड़े २ तेजस्वी राक्षस २१ और बड़े बलवान् पिशाचादिकोंने उस वृक्षके फलोंको २२ व्रत और नियमोंसमेत समय २ पर भोजन किया और उन २ प्राप्त होनेवाले नियमों से पृथक् २ बिचरनेवाले हुये २३ हे पुरुषोत्तम वह सब मनुष्यों की दृष्टिसे गुप्त भ्रमण करनेवाले हुये हे नरोत्तम इसप्रकार से वह वृक्ष

इसलोक में विख्यात हुआ २४ इसके पीछे वह यादवों में श्रेष्ठ सरस्वतीके उस विख्यात पवित्र तीर्थ को जाकर तीर्थपर गौओं को दानकरके २५ तांबे लोहेके बर्त्तन और नानाप्रकारके वस्त्रोंसमेत ब्राह्मणोंको पूजकर और आपभी ब्राह्मणोंसे स्तुतिमान २६ बलदेवजी द्वैतबननाम पवित्र सरोवरपरगये वहांजाकर बलदेवजी ने नानाप्रकारकी पोशाकधारी मुनियोंको देखकर २७ जलमें स्नानकर ब्राह्मणों को पूज उन ब्राह्मणोंकेअर्थ बड़े २ अभीष्ट पदार्थोंको दिया २८ फिर बलदेवजी सरस्वती के दक्षिणओर चले और थोड़ी दूरजाकर २९ धर्मात्मा अविनाशी ने उस नागधन्वानाम तीर्थकोपाया जहांपर कि सर्पोंके राजा महातेजस्वी राजावा-सुकीका स्थान बहुतसे सर्पोंसे व्याप्तथा वहांही चौदहजार ऋषियोंनेभी निवास कियाथा ३०।३१ जहांपर देवताओंने इकट्ठेहोकर सर्पोंमें उत्तमसर्पोंके राजा वा-सुकीको बिधिपूर्बक अभिषेक कराया ३२ हे कौरव वहां उनको सर्पों से भय नहीं हुआ वहांभी ब्राह्मणों के अर्थ रत्नसमूहों को बिधिपूर्व्वक देकर ३३ पूर्व्व दिशा को गये वहां पदपदपर लाखों तीर्थोंको देखा ३४ और जैसे जैसे ऋषियोंने कहा उसी उसीप्रकारसे उन तीर्थों में स्नानकर उपबास नियमादिक करके सबप्रकार के दानोंको देके ३५ उन तीर्थबासी मुनियोंको दण्डवत् करके मार्गपूछकर वहां से सरस्वती के पूर्बमुख होकर ३६ फिर ऐसे लौटे जैसे कि बायुसे प्रेरित बादल लौटते हैं अर्थात् नैमिषबासी महात्मा ऋषियोंके दर्शनोंके निमित्तलौटे हे राजा श्वेतचन्दन से लिप्त शरीर हलायुध बलदेवजी वहांपर उस नदियोंमें श्रेष्ठ लौटी हुई सरस्वतीको देखकर अत्यन्त आश्चर्य्ययुक्त हुये ३७।३८ जनमेजयने पूछा कि हे ब्राह्मण सरस्वती किसहेतुसे पूर्ब्बाभिमुख लौटी हे अध्वर्यों में श्रेष्ठ मैं इस सब बर्णन को सुना चाहताहूं ३९ वहांपर यदुनन्दन बलदेवजी किसकारण से आश्चर्य्ययुक्त हुये और वह उत्तमनदी किसहेतु से और किसप्रकार इसरीति से लौटी ४० वैशाम्पायनबोले कि हे राजा पूर्ब सतयुगमें नैमिषवासी बहुतसे तपस्वी ऋषि बारहवर्षके बड़े यज्ञके वर्त्तमानहोनेपर ४१ उस यज्ञमें आये वह महाभाग उस यज्ञ में बिधिपूर्ब्बक निवासकरके ४२ नैमिषारण्यमें बारहबर्ष के यज्ञ समाप्त होनेपर तीर्थके कारण से वहांगये ४३ हे राजा तब ऋषियों की आधिक्यता से सरस्वती के दक्षिण तटके तीर्थों की संख्या न होसकी ४४ हे नरोत्तम जहांतक समन्तपंचक है वहांतक वह उत्तम ब्राह्मण तीर्थ के लोभसे नदी के किनारे पर

निवासीहुये ४५ वहांपर उन हवनकरनेवाले शुद्ध अन्तःकरणवाले मुनियोंके बड़े वेदपाठ से दिशा पूर्ण होगई ४६ वहांपर उन महात्माओं के कियेहुये प्रकाशित अग्निहोत्रों से वह उत्तमनदी चारोंओर से शोभायमान हुई ४७ हे महाराज बालखिल्य अस्मकुट दन्तोलूखली प्रसंख्यान ४८ बायुभक्षी जलाहारी और वृक्षों के पत्ते खानेवाले नानाप्रकार के नियमों से युक्त मैदान में सोनेवाले तपस्वी ४६ मुनि सरस्वती के सम्मुख ऐसे ठहरेहुये थे जैसे कि नदियों में श्रेष्ठ श्रीगंगा जी को शोभायमान करते देवता होते हैं ५० यज्ञ से पूजन करनेवाले सैकड़ों ऋषि आये उन बड़ेव्रतवालों ने सरस्वती के अवकाशको नहीं देखा ५१ इसके पीछे उन ऋषियों ने यज्ञोपवीतों से उस तीर्थ को रचकर अग्निहोत्रादिक अनेकप्रकारकी क्रियाओं को किया ५२ हे राजेन्द्र इसके पीछे सरस्वती ने उन्हों की प्रसन्नताके लिये उस निराश चिन्तासे युक्त ऋषि समूहको अपना दर्शन दिया ५३ हे जनमेजय इसके पीछे वह श्रेष्ठ नदी पवित्र तपकरनेवाले ऋषियोंकी दया से बहुत कुञ्जोंको करके लौटी ५४ हे राजेन्द्र इसीहेतु से वह श्रेष्ठ सरस्वती उनके लिये लौटकर फिर पश्चिमाभिमुख जारी हुई ५५ और कहा कि मैं तुम्हारे आने को सफल करके फिर जातीहूं यह उस महानदी ने बड़ा अपूर्व कर्मकिया ५६ हे राजा इसप्रकार से वह कुञ्ज नैमिषी नामसे प्रसिद्ध है हे कौरवोत्तम तुम इस कुरुक्षेत्रमें बड़ी क्रियाको करो ५७ वहां बहुत कुञ्जों समेत लौटीहुई सरस्वती को देखकर उन महात्मा बलदेवजी को बड़ा आश्चर्यहुआ ५८ उस तीर्थमेंभी यदुनन्दन बलदेव जी विधिपूर्वक स्नानकर ब्राह्मणों को नाना प्रकारके दान देकर नानाभक्ष्य भोज्य पदार्थों से ब्राह्मणोंको तृप्त करके और ब्राह्मणों से पूजितहोके चले ५६। ६० फिर हलधारी बलदेवजी उस सप्तसारस्वत तीर्थ को गये जोकि सरस्वती के तीर्थोंमें श्रेष्ठ नानाप्रकारके पक्षीगणों से युक्त बदरी, इंगुद, काश्मर्य्य, प्लक्ष, पीपल, विभीतक, कंकोल, पलाश, करील, पीलू और सरस्वती के तीर्थपर उत्पन्न होनेवाले नानाप्रकारके वृक्षों से शोभित ६१। ६२ करूषवर, बिल्व, आम्रातक, अतिमुक्तक, अखण्ड और पारिजातकों से शोभित केलोंके बहुत बन रखने वाला प्रिय देखने के योग्य चित्तरोचक बायु जल फल और पत्तों के खानेवाले दांतों को उलूखल रखनेवाले ६३। ६४ पाषाणपर कूटनेवाले बनबासी बहुत से मुनियों से युक्त वेदध्वनि से शब्दायमान मृगोंके अनेक यूथों से व्याकुल हिंसा

रहित और धर्मको उत्तम जाननेवाले मनुष्योंसे सेवितथा और जहांपर महामुनि सिद्ध मंकणक ने तपस्या करीथी ६५ । ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिवलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

जनमेजय बोले कि सप्तसारस्वत नाम किसहेतुसे हुआ और मङ्कणकनाम मुनि कौनथा और वह समर्थ और सिद्ध कैसेहुआ उसका नियम क्याथा १ हे ब्राह्मणोत्तम वह किसके कुल में उत्पन्न होकर क्या क्या पढ़ा था इसको आप विधिपूर्वक मुझसे वर्णन कीजिये २ वैशम्पायन बोले हे राजा सात सरस्वती हैं जिनसे कि यह जगत् व्याप्तहै बलवानों से बुलाईहुई सरस्वती जहां तहां प्रकट हुईं ३ उनके नाम यहहैं सुप्रभा, कांचनाक्षी, विशाला, मनोरमा, ओघवती, सुरेणु, विमोलदका ४ ब्रह्माजीका बड़ा यज्ञ वर्त्तमान होने और यज्ञके विस्तृत बाड़ेमें निर्म्मल पुण्याहवाचन के शब्द वेदध्वनियों समेत ब्राह्मणों के सिद्धहोने और यज्ञ विधिमें देवताओंके सावधान होने ५ । ६ और वहां ब्रह्माजी के दीक्षित होनेपर सब अभीष्ट वस्तुओं से बृद्धियुक्त यज्ञकेद्वारा उन ब्रह्माजीको पूजन करते ७ धर्म्म अर्थमें कुशल पुरुषोंके मनसे विचारेहुये अर्थ जहां तहां ब्राह्मणोंके पास नियतहुये हे राजेन्द्र तब वहां गन्धर्वों ने गाया अप्सरागणों ने नृत्यकिया और वेगसे दिव्य बाजोंको बजाया ८ । ९ उस यज्ञकी ध्वनि आदिकसे देवतादिकभी प्रसन्नहुये तो मनुष्य कैसे न प्रसन्न होगा १० हे राजा इसीप्रकार पुष्करजीमें ब्रह्माजी के नियत होने और यज्ञके वर्त्तमान होनेपर ऋषि बोले कि यह यज्ञ बड़े विशेषवाला नहीं है ११ इसहेतुसे कि यहां नदियोंमें श्रेष्ठनदी सरस्वती दिखाई नहीं देती तब भगवान् ब्रह्माजी ने उनके बचनको सुनकर सरस्वतीको स्मरण किया १२ हे राजेन्द्र वहां पुष्करों में यज्ञ करनेवाले ब्रह्माजी की बुलाई हुई सरस्वती सुप्रभानाम प्रकट हुई १३ मुनिलोग उस शीघ्रता से युक्त ब्रह्माजी की प्रतिष्ठा करनेवाली सरस्वतीको देखकर प्रसन्नहुये और उस यज्ञको भी बड़ा माना १४ इसप्रकार यह नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वती ब्रह्माजीकी और बुद्धिमान् ऋषियोंकी प्रसन्नताके लिये प्रकटहुई तब सब मुनिलोग नैमिष में इकट्ठेहोकर बैठगये और वेदके विषयमें अपूर्व कथाहोनेलगी १५ । १६ हे राजा जहांपर अनेकप्रकार

की ऋचा जाननेवाले वह मुनि बैठेथे उन मुनियोंने मिलकर सरस्वतीको स्मरण किया १७ तब यज्ञोंसे पूजन करनेवाले ऋषियोंसे ध्यानकी हुई धर्मकी वृद्धिका हेतु वह महाभाग कांचणाक्षी नाम सरस्वती इकट्ठे होनेवाले महात्मा ऋषियों की सहायताके निमित्त वहां नैमिष में आपहुँची और यज्ञसे पूजन करनेवाली मुनियों के आगे प्रकटहुई १८।१९ अर्थात् वह नदियोंमें श्रेष्ठ महापूजित नदी वहांपर आई इसके पीछे वह श्रेष्ठ नदी गयदेशमें बड़े यज्ञों से पूजन करनेवाले राजा गयकी बुलाईहुई गयके यज्ञ में प्रकटहुई तेजव्रत ऋषियों ने उस गयकी बुलाईहुई सरस्वती को विशाला कहा २०।२१ वह शीघ्र चलनेवाली नदी हिमाचलकी कुक्षसे उत्पन्नहुई हे भरतवंशी इसीप्रकार उसपूजन करनेवाले औद्दालकके यज्ञ में २२ सब ओरसे वृद्धियुक्त इकट्ठे होनेवाले मुनियों के मण्डल में कौशलदेशके पवित्र भागपर महात्मा २३ पूजन करनेवाले औद्दालकसे ध्यान की हुई सरस्वती उस ऋषिके निमित्तसे उसदेशमें आपहुँची २४ जो कि केवल मृगचर्मधारी मुनियों के समूहोंसे पूजित थी उनके मनसे प्रकटकी हुई वह सरस्वती मनोरमा नाम से प्रसिद्धहुई २५ यज्ञकरनेवाले महात्मा कुरुके इसकुरुक्षेत्र में जो कि राजऋषियों से सेवित पवित्र और उत्तम द्वीपमें वर्त्तमानहै वहां सुरेणु नाम महाभाग सरस्वतीआई हे राजा महात्मा वशिष्ठजीसे २६ बुलाईहुई दिव्य जल रखनेवाली ओघवती नाम सरस्वती कुरुक्षेत्र में प्रकटहुई और गंगाद्वारपर यज्ञ करनेवाले दक्षसे बुलाईहुई २७।२८ शीघ्रगामी सरस्वती सुरेणु नामसे प्रसिद्धहुई फिर यज्ञ करनेवाले ब्रह्माजीसे बुलाईहुई बिमलोदानाम भगवती सरस्वती २९ पवित्र हिमाचल पर्वतपर गई फिर सब एकत्रहोकर उस तीर्थपर आईं ३० इसीसे वह तीर्थ इस पृथ्वीपर सप्त सारस्वतनाम से विख्यातहुआ यह सातों सरस्वती नामों समेत वर्णनकरीं ३१ इसप्रकारसे वह पवित्र तीर्थ सप्त सारस्वत नामसे विख्यात किया गयाहै हे राजा बाल्यावस्थासे ब्रह्मचारी ३२ नदीके जल में स्नान करनेवाले मंकणकनाम ऋषिकेभी उत्तम चरित्रको सुनो हे भरतवंशी महाराज किसीसमय वहां दैवइच्छा से जलमें ३३ स्नान करनेवाली एक अति मनोहर श्रेष्ठ नेत्रवाली निर्दोष नंगीस्त्रीको देखकर सरस्वती के जल में इनका बीर्य गिरपड़ा ३४ फिर उस बड़े तपस्वीने उस बीर्य्यको कलशमें रखदिया फिर कलशमें नियत उस बीर्य्यने सातभागों को पाया ३५ अर्थात् उसमें वह सात

ऋषि उत्पन्नहुये जिन्होंने मरुद्गणों में अवतार लियाथा उनके नाम यहहैं वायु-वेग, वायुवल, वायुहा, वायुमण्डल ३६ वायुज्वाल, वायुरेता और पराक्रमी वायु-चक्र इसप्रकार मरुतों के यह ऋषि उत्पन्नहुये ३७ हे राजेन्द्र पृथ्वीपर बड़े आ-श्चर्य्यकारी उस महर्षीके चरित्रको सुनो जो कि तीनोंलोकों में विख्यात है ३८ हे राजा निश्चय करके पूर्व्वसमय में मंकणक नाम सिद्ध कुशाओं की नोकसे घायलहुआ था तव उसके हाथसे शाकरस टपकाथा यह सुनागया ३६ वह ऋषि अपने हाथसे टपकेहुये शाकरस को देखकर प्रसन्नता से नृत्य करनेलगा हे वीर फिर उसऋषिके नृत्य करनेपर सब संसारके जड़ चैतन्यजीव उसके तेजसे नृत्य करनेलगे ४०।४१ हे राजा तव ब्रह्मादिक देवता और तपोधन ऋषियोंने महा-देवजी से प्रार्थनाकरी कि हे देवताओंके देवता जैसे यह ऋषि नृत्यको न करे वही आप उपाय करने को योग्यहो ४२ इसके पीछे देवता महादेवजी मुनिको अत्यन्त प्रसन्नता में पूर्ण देखकर देवताओंके प्रियकारी हितके लिये यह बचन बोले ४३ हे धर्म्मज्ञ ब्राह्मण आप किस निमित्त नृत्य करतेहो हे मुनि आपको इतनी प्रसन्नता किसहेतु से हुईहै हे श्रेष्ठ ब्राह्मण धर्म्ममार्ग्ग में तपस्वीकी प्रसन्न-ताका कारण क्याहै ४४ ऋषिबोला हे ब्राह्मण मेरे हाथसे टपकेहुये इस शाकरस को क्या तुम नहीं देखतेहो हे समर्थ मैं इसी शाकरस को देखकर बड़े आनन्द युक्त होकर नाचताहूं ४५ तब देवता शिवजी उस रागसे मोहित मुनिसे अच्छे प्रकार हँसकर बोले कि हे वेदपाठी मुझको आश्चर्य्य नहीं होता है तुम मुझको देखो ४६ हे राजेन्द्र उस श्रेष्ठ मुनिसे इसप्रकार कहकर बुद्धिमान् महादेवजी ने अँगूठे की नोकसे अपने अँगूठे को घायल किया ४७ हे राजा उस घावसे बर्फ के समान श्वेतभस्म निकली उसको देखकर बड़ी लज्जापाकर वह मुनि उनके दोनों चरणोंपर गिरपड़ा (आशय) शरीरका भस्मरूप होना बड़ी सिद्धी है रुद्रजी उसको दिखलाकर उसके अहङ्कार को दूर करते हैं ४८ उसने उसको दे-वताओंका भी देवता महादेव माना और आश्चर्य्यित होकर यह बचन बोला कि मैं रुद्रदेवतासे उत्तम और बड़ा दूसरे किसी देवताको नहीं मानताहूं ४६ हे शूलधारी तुम देवता असुर आदिक समेत सब जगत्की गतिहो तुमसे सब ज-गत् उत्पन्न हुआहै ऐसा इस लोकमें पण्डित लोग कहते हैं ५० प्रलय कालके पीछे फिर यह सब जगत् तुममेंही लय होता है तुम देवताओंसेही जानने को

योग्य नहीं हो तो मुझ अल्पबुद्धी से कैसे जाननेके योग्यहोगे ५१ जो प्रकाश रूपभाव जगत्में नियतहैं वह सब आपके रूपमें दिखाई पड़तेहैं हे निष्पाप ब्रह्मादिक देवताओं ने भी तुम्ही बरदाता की उपासना करी है ५२ देवताओं के उत्पन्न करनेवाले और सबको कर्म्मों में प्रवृत्त करनेवाले आपही हो इसलोकमें सब देवता आपकीही कृपासे निर्भयहोकर आनन्द करते हैं ५३ वह ऋषि महादेवजीकी इसप्रकार स्तुति करके नम्रहोगया और कहनेलगा कि हे देवता मैंने जो अहङ्कारादिक चपलताकरी है ५४ उस सबसेही आपको प्रसन्नकरताहूं और यह चाहताहूं कि मेरा तप नाशको न पावे इसके पीछे प्रसन्नचित्त शिवजी उस ऋषि से बोले ५५ हे ब्राह्मण मेरी कृपासे तेरातप हजार प्रकार से वृद्धियुक्त होय और मैं इस आश्रम में सदैव तेरे साथ निवास करूंगा ५६ जो मनुष्य इस सप्त सारस्वततीर्थ में मुझको पूजेगा उसको इसलोक और परलोक में कोई दुष्प्राप्य बस्तु नहींहै अर्थात् जोचाहैगा सोई मिलैगा ५७ और निस्सन्देह वह सारस्वत लोक में जायगा यह बड़े तेजस्वी मंकणकनाम ऋषिका चरित्र है ५८ वह बैठा हुआ इसी सुकन्यामें उत्पन्नहुआहै ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले कि हलधारी बलदेवजीने वहां निवासकरके और आश्रमवासियों को अच्छीरीति से पूजकर मंकणकऋषि में शुभ प्रीतिकरी १ हे भरतवंशी बड़े बलवान् हलायुध बलदेवजी ब्राह्मणों को दानदेके उसरात्रि वहां निवासकर बड़े प्रातःकाल उठकर मुनियोंके समूहोंसे पूजित होकर २ और आपभी सब मुनियों को पूजकर स्नान आचमनकर तीर्थ के निमित्त शीघ्र चलदिये ३ इसके पीछे बलदेवजी शुक्रजी के कपालमोचननाम तीर्थ को गये हे महाराज राजा जनमेजय जहांपर पूर्व्वसमयमें रामचन्द्रजीके फेंकेहुये राक्षसके बड़े शिरसे निगलीहुई जंघावाले महोदरनाम महामुनि मुक्तहुये ४ । ५ वहां पूर्व्वकालमें बड़े महात्मा शुक्रजीने तपकिया जहांपर उस महात्माकी सम्पूर्ण नीति प्रकटहुई ६ वहांही नियत होकर शुक्रजी ने दैत्य और दानवोंके परस्पर बिरोधको शोचा हे राजा राजाबलिने उस अत्यन्त श्रेष्ठ तीर्थको पाकर बिधिपूर्व्वक महात्मा ब्राह्मणों

को धनदिया ७ जनमेजय ने कहा हे द्विजवर्य्य इस तीर्थका कपालमोचननाम कैसेहुआ उसमें महामुनि कैसे छूटे और उस राक्षसका शिर किसहेतुसे उनकी जंघामें चिपटा ८ बैशम्पायन बोले हे राजेन्द्र पूर्व्वसमयमें दण्डक वनमें निवास करनेवाले राक्षसोंके मारनेके अभिलाषी महात्मा रामचन्द्रजीने ९ जिस स्थान में दुरात्मा राक्षसका शिरकाटा वहां उसबनमें तेजधार क्षुरसे काटाहुआ वह शिर उछला १० निश्चय करके दैवयोग से वह शिर महोदर की जंघापर चिपटगया अर्थात् वह शिर बनमें घूमनेवाले महोदरके हाड़को छेदकर कुछ चेष्टा करनेलगा ११ तब वह बड़ाज्ञानी ब्राह्मण उस चिपटे हुये शिरके कारण से तीर्थ और देवालयों के जाने को समर्थ नहींहुआ १२ उस चिपटेहुये दुर्गन्धित शिरके कारण दुःखसे पीड़ामानभी वह महामुनि पृथ्वीके सब तीर्थोंको गया यह हमने सुना है १३ उस बड़े तपस्वी ने सब नदियोंपर और समुद्रोंपर जाकर वह सब वृत्तान्त शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषियों के सम्मुख जाकर वर्णन किया १४ सब तीर्थों में स्नान करनेवाले ने उस शिरसे पृथक्ता को नहीं पाया तब फिर उस ऋषिने मुनियोंके बड़े इन बचनोंको सुना १५ कि सरस्वतीका एक उत्तम तीर्थ औशनस नामसे बिख्यात सब पापोंका दूर करनेवाला सिद्धीका क्षेत्र और श्रेष्ठ तरहै १६ उसके पीछे उस ब्राह्मणने उस औशनस तीर्थमें जाकर स्नान किया तब औशनस तीर्थमें स्नान करनेवाले उस ऋषिके चरणको छोड़कर वह शिर जलके मध्यमें गिरपड़ा उस शिरसे छुटेहुये ने बड़े आनन्द को पाया १७ । १८ और उस शिरनेभी जलके मध्यमें गुप्तताको पाया हे राजा उसके पीछे उसशिर से पृथक् पवित्र शरीर पापोंकी लिप्ततासे रहित १९ सुखी और कृतकर्मी होकर वह महोदरऋषि अपने आश्रमको आया वहां उस शिरसे छुटे उस बड़े तपस्वी ने पवित्र आश्रमको जाकर उस सब वृत्तान्तको शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषियों से वर्णन किया हे बड़ाई देनेवाले इसके पीछे इकट्ठे होनेवाले उन ऋषियोंने उसके वचनको सुनकर उस तीर्थका नाम कपालमोचन रक्खा तब उस महर्षिने भी उस अत्यन्त उत्तम तीर्थको जाकर २० । २१ । २२ जलको पानकरके बहुत बड़ी सिद्धी को पाया वहांभी वृष्णियों में श्रेष्ठ हलधर बलदेवजी बहुत दानोंको देकर ब्राह्मणों को पूजकर २३ उस रुषंगों के आश्रम को गये जहांपर आर्ष्टिषेण ने बड़ी घोर तपस्याकरीथी २४ वहांही महामुनि विश्वामित्रने ब्राह्मण वर्णको पाया वह बड़ा

स्थान २५ सब अभीष्टोंसे वृद्धियुक्त और सदैव मुनि ब्राह्मणोंसे सेवितहै हे समर्थ राजेन्द्र इसके पीछे ब्राह्मणों समेत श्रीबलदेवजी वहांगये २६ जहांपर कि रुषंगोंने अपने शरीरोंको त्यागा हे भरतबंशी सदैव तप करनेवाले वृद्ध ब्राह्मण २७ शरीरके त्यागने में प्रवृत्तचित्त रुषंगने बहुत प्रकारकी चिन्ता करके अपने सब पुत्रोंको बुलाकर २८ सबसे कहा कि मुझको पृथूदक तीर्थ को लेचलो उन तपोधन ऋषिकुमारोंने उस तपोधन रुषंगको वृद्ध जानकर २९ सरस्वतीके उस तीर्थपर पहुंचाया जोकि धर्म्मकी वृद्धिका कारण सैकड़ों तीर्थोंसे युक्त और वेदपाठियों से सेवितथा ३० हे राजा वह बड़ा तपस्वी ऋषियों में श्रेष्ठ रुषंग वहां विधि पूर्व्वक स्नान करके ३१ तीर्थ के गुणों को जानकर अत्यन्त प्रसन्नहोकर समीप बैठेहुये सब पुत्रोंसे बोला ३२ कि जो जपमें प्रवृत्तहोकर मनुष्य सरस्वती के उत्तरीयतट में बर्त्तमान पृथूदक तीर्थपर अपने शरीर को त्यागकरेगा उसको कलियुगमें मरना दुःखी नहीं करेगा अर्थात् अबिनाशी होकर स्वर्ग्गको पावेगा ३३ उन ब्राह्मणों के प्यारे बलदेवजी ने वहां भी जाकर स्नान आचमनादि करके बहुतसा दान ब्राह्मणों को दिया ३४ जहांपर भगवान् लोकपितामह ने लोकोंको उत्पन्न किया और जहां पर तेजब्रत आर्ष्टिषेण ने ३५ बड़े तपसे ब्राह्मण बर्णको पाया ऋषियों में श्रेष्ठ बड़े तपस्वी राजर्षि सिन्धद्वीप और देवापी ने ३६ ब्राह्मण बर्ण को पाया इसी प्रकार जहांपर महातपस्वी उग्रतेज बड़े तप वाले समर्थ बिश्वामित्र मुनिने भी ब्राह्मण बर्णको पाया ३७ वहांभी प्रतापवान् बलभद्रजी गये ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

जनमेजयने पूछा कि भगवान् आर्ष्टिषेण ने किसप्रकारसे बड़ी तपस्या को किया और सिन्धद्वीप देवापी और बिश्वामित्र ने किसप्रकार ब्राह्मण बर्ण को पाया हे भगवन् वह सब मुझसे कहो क्योंकि मुझको सुननेका बड़ा उत्साह है १। २ बैशम्पायन बोले हे राजा पूर्व्व सतयुग में द्विजों में श्रेष्ठ आर्ष्टिषेण सदैव वेदपाठ में प्रीति रखनेवाले सदा गुरुकुलमेंही निवास करते रहे ३ सदैव गुरुकुलमें निवास करने परभी उस राजऋषि की विद्या और वेदों ने सम्पूर्णताको

नहीं पाया ४ इसके पीछे उस व्याकुल चित्त तपस्वी ने बड़े तप को तपा तब उस तपकेद्वारा वेदोंको पाकर ५ उस बुद्धिमान् वेदज्ञ सिद्ध और ऋषियोंमें श्रेष्ठ बड़े तपस्वी ने उस तीर्थके अर्थ यह तीन बरदिये ६ अर्थात् अबसे लेकर इस महानदीके तीर्थमें स्नान करनेवाला मनुष्य अश्वमेधके बड़े फलको पावेगा ७ और अबसे लेकर यहां सर्प्प से किसी को भय नहींहोगा और थोड़ेही समय में उत्तम फलको पावेगा ८ बड़े तेजस्वी मुनि इसप्रकार कहकर स्वर्ग को गये वह भगवान् प्रतापवान् आर्ष्टिषेण इसप्रकारसे सिद्धहुये ९ हे महाराज तब उस तीर्थ में प्रतापवान् सिन्धद्वीप और देवापीनें बड़े ब्राह्मणभावको पाया १० हे तात उसी प्रकार सदैव तप करनेवाले जितेन्द्री बिश्वामित्रने अच्छेप्रकार से तपेहुये तपके द्वारा ब्राह्मण बर्णको पाया ११ एकगाधिनाम क्षत्री इस पृथ्वीपर बड़ा विख्यात हुआ उसका पुत्र बिश्वामित्रभी बड़ा प्रतापवान् हुआ १२ हे तात निश्चयकरके वह राजा कौशिक बड़ा बुद्धिमान् और प्रज्ञहुआ उस बड़े तपस्वीने बिश्वामित्र नाम पुत्रको राज्य पर अभिषेक कराके १३ शरीर त्यागमें चित्तको प्रवृत्त किया तब हाथजोड़कर प्रजालोगोंने उससे कहा कि हे बड़े ज्ञानी आपको बन में न जाना चाहिये हमको आप बड़े भयसे रक्षाकरो १४ इसके पीछे इसप्रकार से प्रजाके बचनको सुनकर गाधिने प्रजालोगों को उत्तर दिया कि मेरा पुत्र संसार भरेका रक्षकहोगा १५ हे राजा राजागाधि ऐसा बचन कहकर और बिश्वामित्र को राज्यसिंहासन पर बैठाकर स्वर्ग्गको गया और बिश्वामित्र राजा हुये १६ बिश्वामित्र भी अनेक उपायों से पृथ्वीकी रक्षाकरनेको समर्थ नहीं हुआ इसके पीछे उस राजाने राक्षसों से बड़े भयको सुना १७ और चतुरंगिणी सेना समेत नगरसे निकला और बहुत दूर मार्ग्ग चलकर बशिष्ठजी के आश्रमको गया हे राजा वहां उसकी सेनाके लोगोंने बड़े अन्याय किये तब ब्रह्माजीके पुत्र भगवान् ब्राह्मण बशिष्ठजी ने १८। १९ सब महाबनको टूटा और बिगड़ा देखा तब उसपर क्रोधयुक्त होकर मुनियों में श्रेष्ठ बशिष्ठजी ने २० अपनी गौसे कहा कि घोर शबरों को उत्पन्नकर उनकी आज्ञासे उसगौने घोर दर्शनवाले मनुष्योंको उत्पन्न किया २१ उन्हों ने बिश्वामित्रकी सेनाको पाकर सब दिशाओं में छिन्न भिन्न किया गाधिके पुत्र बिश्वामित्र ने उस अपनी भागीहुई सेनाको भागा हुआ सुनकर २२ तपको श्रेष्ठ माननेवाले ने तपहीमें चित्त किया हे राजा उस

सावधान बिश्वामित्र ने सरस्वती के उत्तम तीर्थपर २३ नियम और ब्रतकेद्वारा अपने शरीरको दुर्बल और कृशाङ्ग किया और जल बायु और पत्रोंका आहार करनेवाला हुआ २४ और स्थंडिलशायी अर्थात् मैदान में शयन करनेवाला हुआ और बहुतसे अनेक पृथक् २ नियमों को भी बारम्बार किया फिर देवताओंने उसके ब्रतका बिघ्नकिया २५ परन्तु इस महात्माकी बुद्धि नियमसे पृथक् नहीं हुई फिर उत्तम उपायोंसे बहुत प्रकारके तपको करके २६ वह गाधिका पुत्र तेज से सूर्यके समान हुआ तब बड़े बरदाता ब्रह्माजी ने इसप्रकार तप में प्रवृत्त बिश्वामित्र को और उसके उत्तम तपको स्वीकार किया २७ और मांगने की आज्ञाकरी तब उसने यह बरमांगा कि मैं ब्राह्मण होजाऊं २८ उस समय सब लोकोंके पितामह ब्रह्माजी बोले कि ऐसाही होय वह बड़ा यशवान् बड़ीतपस्या से ब्राह्मण बर्णको पाकर २९ अभीष्ट सिद्धिकरनेवाला देवताओंके समानहोकर सब पृथ्वीपर घूमा बलदेवजी ने उस उत्तम तीर्थपर बहुत प्रकारका धनदेकर ३० दुग्धवती गौ सवारी बस्त्र भूषण भक्ष्य भोज्य और पानकी बस्तु ३१ यह सब दानकी हे राजा इसप्रकार से बलदेवजी उन उत्तम ब्राह्मणों को पूजकर समीपही उस बकके आश्रमकोगये जहांपर दाल्भोवकने कठिन तपस्याको कियाथा यह सुना जाताहै ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय॥

बैशम्पायनजी बोले कि यदुनन्दन बलदेवजी उस ब्रह्मयोनि तीर्थसे संयुक्त तीर्थको गये जहांपर अपने आश्रममें नियत बड़े तपस्वी दाल्भोवकने बिचित्रबीर्य्यके पुत्र धृतराष्ट्रके देशको हवन किया और घोररूप तपसे अपने शरीरको दुर्बल करता १। २ धर्म्मात्मा प्रतापवान् बड़े क्रोधसे पूर्णहुआ पूर्व्वसमय में नैमिषनिवासियों का बारहबर्ष का यज्ञ ३ समाप्त होनेपर बिश्वजिति यज्ञके अन्त में ऋषिलोग पांचाल देशोंमें गये उन ज्ञानी ऋषियों ने वहांपर दक्षिणाके निमित्त राजासे याचना करी ४ उस राजा ने बलवान् न्यून अवस्था और नीरोग इक्कीस गौओं को दिया दाल्भोवक उनसे बोले कि पशुओं को बिभाग करो ५ मैं इन पशुओं को छोड़कर उस उत्तम राजासे भिक्षा मांगूंगा हे राजा ब्राह्मणों

में श्रेष्ठ प्रतापवान् दाल्भोवक सब ऋषियों से इसप्रकार कहकर ६ धृतराष्ट्रके भ-वनकोगये और राजा धृतराष्ट्रके सम्मुख जाकर ७ उससे पशुओंको मांगा तब उस श्रेष्ठ राजाने दैवयोग से गौ बैलों को मृतक देखकर बड़े क्रोधपूर्व्वक उनसे कहा ८ हे ब्रह्मबन्धो जो तू चाहताहै तो इनपशुओंको शीघ्र लेजाओ तब धर्मज्ञ ऋषिने उसप्रकार के बचनको सुनकर बड़ी चिन्ताकरी ९ कि बड़े दुःखकी बात है कि इसने मुझको सभामें ऐसे निर्दय और अनादरताके वचन कहे तब क्रोध से पूर्ण उस श्रेष्ठ ब्राह्मणने एक मुहूर्त्तभर चिन्ताकरके १० राजा धृतराष्ट्रके नाश करने का बिचार किया पूर्व्वसमय में उस श्रेष्ठ मुनिने मृतक पशुओं के मांसको काटकर ११ राजाधृतराष्ट्रके देशको हवन करदिया अर्थात् हे महाराज सरस्वती के अवकीर्ण तीर्थ में अग्निको प्रज्वलितकरके १२ वह बड़ा तपस्वी दाल्भोवक बड़े नियममें नियत हुआ और उन मांसखण्डों से उसके देशको होमा १३ हे राजा इसके पीछे विधिके अनुसार उस भयानक यज्ञके जारी होनेपर धृतराष्ट्रका देश नाशको प्राप्तहुआ १४ और राजाका वह राज्य ऐसा अत्यन्त नाशहुआ जैसे कि फरसेसे कटाहुआ बड़ाबन होताहै १५ वह सबदेश महाआपत्तिमें फँसा नाशयुक्त होकर अचेत होगया हे राजा वह राजा अपने देशको इसप्रकार ना-शयुक्त देखकर १६ महादुःखी चित्त हुआ और बड़ी चिन्तासे युक्त होकर उसने ब्राह्मणोंसमेत राज्यके आपत्तिसे बचनेके अनेक उपायकिये १७ परन्तु कल्याण को नहींपाया अर्थात् देशका नाशहोना बन्द नहींहुआ हे निष्पाप जनमेजय जब वह राजा समेत सब ब्राह्मण दुःखीहुये तब १८ सबने प्रश्नोंके बतानेवालोंसे पूछा उन लोगोंने कहा कि पशुओं के बिषयमें तुमसे अनादर कियाहुआ १९ एक मुनि गौवोंके मांसों से तेरे देशको होमताहै उससे होमेहुये इस तेरे देश को बड़ानाश होरहाहै २० यह उसीके तपका बड़ा कर्म है जिससे कि तेरा बड़ा नाशहै हे राजा सरस्वती के जलकुञ्जमें उसको प्रसन्नकरो २१ हे भरतर्षभ इसके पीछे उस राजा ने सरस्वती को जाकर हाथजोड़ शिर से पृथ्वी पर गिरकर उस वकमुनिसे कहा २२ हे भगवन् मैं आपको प्रसन्न करताहूं मेरे अपराध को क्षमा करो मुझ दुःखी लोभी और अज्ञानतासे निर्बुद्धीकी तुम गतिहो २३।२४ तुम मेरे नाथहो मुझपर कृपाकरने के योग्यहो इसप्रकार बिलाप करनेवाले शोक से नि-र्बुद्धी उस राजाको देखकर उसके दया उत्पन्नहुई और उस देशके नाश न होने

के लिये फिर अग्निमें आहुतिदी इसकेपीछे देशको निर्विघ्नकर बहुतसे पशुओं को लेकर २५। २६ प्रसन्नहोकर फिर नैमिषारण्यको गये और धर्मात्मा सावधान बड़े साहसी भी बड़े बुद्धिवाले राजाधृतराष्ट्र ने भी अपने नगरको प्राप्तकिया हे महाराज उसी तीर्थपर बड़े बुद्धिमान् बृहस्पतिजी ने २७।२८ असुरोंके नाश और देवताओंकी वृद्धिके निमित्त मांसोंसे यज्ञमें हवनकिया इसहेतुसे असुरोंने बिनाशको पाया २९ और युद्ध में बिजयसे शोभायमान देवताओं के हाथ से राक्षस नाशको प्राप्तहुये बड़े यशस्वी बलदेवजी वहांभी ब्राह्मणोंके अर्थ बिधिपूर्वक ३० घोड़े हाथी और खच्चरोंसे युक्त रथ बहुमूल्य रत्न और बहुतसे धनधान्यको देकर ३१ फिर महाबाहु बलदेवजी ययाति तीर्थ को गये हे पृथ्वीनाथ महाराज वहां नहुषके पुत्र महात्मा ययाति के यज्ञमें सरस्वती ने ३२ घृत और दूधको बहाया सब पृथ्वीका स्वामी पुरुषोत्तम ययाति वहां यज्ञकोकरके ३३ प्रसन्नतासे ऊपरके उत्तमलोकोंकोगया और श्रेष्ठलोकों को पाया इसके अनन्तर महाप्रभु राजाययातिके यज्ञ करतेहुये ३४ बड़ी उदारता और सनातन भक्तिको चित्तमें धारण करके ब्राह्मणोंको उन उन अभीष्ट बस्तुओंका दानकिया जो २ इच्छाके समान जैसी २ बस्तुको चाहता था ३५ यज्ञरचनामें बुलाया हुआ जो २ पुरुष यहां निवासी था उस २ पुरुषको उस उत्तम नदीने गृहोंसमेत उत्तम शयनों को दिया ३६ षट्रस भोजनपूर्वक अनेकप्रकारके दानदिये राजाके उत्तमदान को स्वीकार करनेवाले ३७ उन प्रसन्न ब्राह्मणोंने शुभ आशीर्बादों को देकर राजाको प्रसन्नकिया वहां गंधर्वों समेत सब देवता यज्ञके सामानोंसे प्रसन्नहुये और सब मनुष्य यज्ञकी उस सामग्री आदिको देखकर आश्चर्यितहुये ३८ इसकेपीछे तालध्वजाधारी बड़े धर्मध्वज महात्मा शुद्ध अन्तःकरण सदैव बड़े दानी साहसी और धैर्यमान् बलदेव जी बशिष्ठजीके उस भयानक बेगवाले तीर्थको गये ३९॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय॥

जनमेजय बोले कि यह बशिष्ठजी का अपवाह नाम तीर्थ जो भयानक बेगवालाहै वह कैसेहुआ और उस उत्तम नदीने उसको कैसेबहाया १ उसकी शत्रुता कैसेहुई हे प्रभु उसका क्या हेतुहै हे बड़ेज्ञानी आप मुझसे बर्णन कीजिये मैं उ-

सके सुननेसे तृप्त नहीं होताहूं २। ३ बैशम्पायन बोले हे भरतबंशी राजा जन्मेजय ब्रह्मर्षि बशिष्ठ और विश्वामित्र के तपकी ईर्षा से उत्पन्न होनेवाली बड़ी शत्रुता हुई शिवजी के तीर्थ पर बशिष्ठजी का बड़ा आश्रम हुआ और पूर्वीय पक्षमें बुद्धिमान् बिश्वामित्रका आश्रम हुआ ४ हे महाराज जहांपर शिवजीने उत्तम तपको तपाथा वहांहीं ज्ञानीलोग इसके घोर कर्म्मको कहते हैं ५ हे प्रभु जहांपर प्रभु शिवजी ने यज्ञकरके सरस्वतीका पूजन कर स्थाणुनाम से प्रसिद्ध उस तीर्थको नियत किया ६ हे राजा देवताओं ने जिस तीर्थपर असुरोंके मारने वाले स्वामिकार्त्तिकजी को देवताओं के सेनापतिके अधिकारपर अभिषेक कराया ७ उस सारस्वततीर्थ में बिश्वामित्र महामुनि ने उग्रतपके द्वारा बशिष्ठजी को चलायमान किया ८ हे भरतबंशी उन तपोधन बशिष्ठजी और बिश्वामित्र जीने तपके कारण से उत्पन्न होनेवाली कठिन ईर्षाको प्रतिदिन किया ९ वहां भी अत्यन्त दुःखी महामुनि बिश्वामित्रने बशिष्ठजी के तेजको देखकर बड़ी चिन्ताको पाया १० हे भरतबंशी तब सदैव धर्मपर चलनेवाले उस बिश्वामित्र की यह मतिहुई कि यह सरस्वती शीघ्रही उस तपोधन ११ और जपकरनेवालों में श्रेष्ठ बशिष्ठजीको मेरे सम्मुख लावेगी यहां जब आवेंगे तब उस आयेहुये उत्तम ब्राह्मण को निस्सन्देह मारूंगा १२ इसप्रकार उस महामुनि क्रोधसे रक्तनेत्र विश्वामित्र ने निश्चय करके नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती को स्मरण किया १३ उस मुनिके ध्यान करतेही उस प्रकाशमान सरस्वती ने बड़ी ब्याकुलता को पाया और इस बड़े पराक्रमी बिश्वामित्रको बड़ा क्रोधयुक्त जाना १४ तब इसके पीछे कम्पायमान रूपान्तमुख हाथजोड़कर सरस्वती इस मुनियों में श्रेष्ठ बिश्वामित्र के सम्मुख खड़ी हुई १५ और जैसे कि मृतक बीरोंवाली स्त्री होती है उसीप्रकार वह सरस्वती भी अत्यन्त दुःखीहुई और उस श्रेष्ठ मुनिसे बोली कि कहो क्या आज्ञाहै १६ तब क्रोधयुक्त मुनि उससे बोले कि मैं बशिष्ठजी को मारूंगा इससे तुम शीघ्र उनको लाओ यह बचन सुनकर वह नदी बड़ी पीड़ामानहुई १७ वह कमललोचन अत्यन्त भयभीत हाथजोड़कर ऐसे कम्पायमानहुई जैसे कि बायु से ताड़ित लता होती है १८ तब वह मुनि उसप्रकार के रूपवाली नदी से बोले कि तुम बिना बिचारके बशिष्ठजी को मेरे पास लाओ १९ वह उनके बचन को सुनकर और पाप करनेकी इच्छा जानकर पृथ्वीपर बशिष्ठजी के अतुल प्रभाव

को जानतीहुई २० उस सरस्वतीने बशिष्ठजीकेपास जाकर इसबातको कहदिया नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वतीसे बुद्धिमान् विश्वामित्रने जो कहाथा २१ उससे और बशिष्ठजीके शापसे भयभीत और बारम्बार कम्पायमान महाशाप को बिचारकर ऋषिसे अत्यन्त भयभीतथी २२ हे राजा द्विपादोंमें श्रेष्ठ धर्मात्मा बशिष्ठजी उस दुर्बल बिपरीत रूपांतरकिये चिंतासेयुक्त सरस्वतीको देखकर यहबचनबोले कि हे नदियोंमें श्रेष्ठ शीघ्रगामिनी तू अपनी रक्षाकर और मुझको शीघ्रलेचल नहीं तो विश्वामित्र तुझको शापदेगा इसमें तू बिचार मतकर २३।२४ हे कौरव तब तो उसनदीने इनकरुणाभ्यासी वशिष्ठजीके बचनोंको सुनकर चिन्ताकरी कि कौनसी रीति और उपायसे शुभकर्म्महोय २५ उसको यह चिंता उत्पन्नहुई कि बशिष्ठजीने मुझपर सदैव दयाकरी है मुझको इनका हितकरना योग्य है २६ हे राजा तब सरस्वतीने अपने तटपर जपहोमादिक करनेवाले ऋषियोंमें श्रेष्ठ विश्वामित्रको देखकर चिन्ताकरी २७ कि यह समयहै इसके पीछे उस नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वतीने अपने बेगसे किनारेको हटाया २८ बशिष्ठजी उसकिनारेके हटाने से सवार कियेगये हेराजा तब उसजलपर सवार ऋषिने सरस्वतीकी प्रशंसाकरी २९ कि हेसरस्वती तुम ब्रह्माजीकी नदीसे जारीहुईहो और यह सबसंसार तेरेही उत्तम जलोंसे व्याप्तहै ३० हे देवी आकाशमें बर्त्तमान होकर तुमहीं बादलोंमें अमृतको छोड़तीहो और सबजलभी तुम्हींहो हम तुमसे वेदोंको पढ़तेहैं ३१ तुम्हीं पुष्टि द्युतिकीर्त्ति सिद्धि बुद्धि उमा और बाणी होकर तुम्हीं स्वाहाहो यहजगत् तुम्हारे आधीन है ३२ तुम्हीं इन चारोंप्रकारके जीवोंमें वासकरतीहो हे राजा इस प्रकार महर्षि से स्तुत्यमान सरस्वती ने ३३ उसब्राह्मण को बेगसे बिश्वामित्रके आश्रममें पहुँचाया और लेजाकर बिश्वामित्रसे उनका आना बारम्बार बर्णन किया ३४ तब सरस्वतीके लायेहुये उसऋषिको देखकर क्रोधसेयुक्त बिश्वामित्र ने बशिष्ठजीके नाश करनेवाले शस्त्रको चाहा ३५ सावधान नदीने उस क्रोधयुक्त बिश्वामित्रको देखकर ब्रह्महत्या के भयसे बशिष्ठजी को पूर्बदिशाकी ओर बहाया ३६ दोनोंके बचनको करनेवाली सरस्वतीने बिश्वामित्रको छलकर ऐसा कर्मकिया तब अत्यन्त अशान्तचित्त क्रोधयुक्त बिश्वामित्रबोले कि हे उत्तमनदी जैसे तुम मुझको छलकर चलीगई हो ३७। ३८ इसहेतुसे हे कल्याणिनि तुम राक्षसगणों के स्वीकृत रुधिरको धारणकरो इसके पीछे बुद्धिमान् बिश्वामित्रसे

शापित सरस्वती ने ३९ एक वर्षतक रुधिरयुक्त जलको वहाया इसके अनन्तर ऋषिदेवता अप्सरा और गन्धर्व्व ४० उसप्रकारकी सरस्वतीको देखकर अत्यन्त दुःखीहुये हे राजा इसप्रकार वशिष्ठजीका अपवाह लोकमें प्रसिद्धहुआ ४१ तब वह श्रेष्ठ नदी फिर अपने मार्ग्गको आई ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिहलधरतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेत्रयोदशोऽध्याय: १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि क्रोधयुक्त बुद्धिमान् बिश्वामित्रसे शापित सरस्वती ने उस उत्तम और उज्ज्वल तीर्थपर रुधिर को बहाया १ हे भरतवंशी राजा जनमेजय इसकेपीछे वहां राक्षसआये और वह सब रुधिरको पानकरतेहुये सुखपूर्वक रहनेलगे २ उस रुधिरपानकरने से वह राक्षस स्वर्ग के बिजय करनेवाले पुरुषोंके समान अत्यन्त तृप्त सुखी और तपों से रहित हर्षयुक्तहुये ३ इसके पीछे तपोधन ऋषि किसीसमय सरस्वती के तीर्थपर तीर्थयात्राको गये ४ वह तपकेलोभी पंडित और श्रेष्ठमुनि उनसब तीर्थोंमें स्नानकर श्रेष्ठ प्रीतिको प्राप्तकरके ५ वहांसे चलेगये और जिसमार्ग से रुधिर का बहानेवाला तीर्थथा उस भयानकतीर्थ पर भी वह महाभाग सब ऋषि गये वहां रुधिर से युक्त सरस्वती के जल को बहुत राक्षसों से पान कियाहुआ देखकर और उन राक्षसोंको भी देखकर उन तेजव्रत मुनियों ने सरस्वती की रक्षा में बहुत उपाय किया ६ । ७ । ८ अर्थात् वह सब महाभाग बड़े व्रतवाले ऋषि नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती को बुलाकर यह वचन बोले ९ हे कल्याणिनि इस तेरे ह्रदने किस हेतुसे इस महाव्याकुलताको पाया है इसका सब बृत्तान्त वर्णनकरो हम सुनकर इसका निश्चय करेंगे १० इसके पीछे उस कम्पित सरस्वती ने सब बृत्तान्त वर्णन किया वह तपोधन ऋषि उस दुःखी को देखकर कहनेलगे ११ कि हे निष्पाप हमने हेतु और शाप दोनोंसुने हम सब तपोधन ऋषि इसके उपायका विचारकरेंगे १२ उस श्रेष्ठ नदी से ऐसा कहकर फिर ऋषि परस्पर बोले कि हम सब इस सरस्वती को निष्पाप करें १३ हे राजा तब उन सब ब्राह्मणों ने तप नियम और नानाकठिन व्रत और जितेन्द्रियपने से १४ पशुओंके स्वामी जगत्पति महादेवजी को आराधनकरके इस नदियों में श्रेष्ठ देवी सरस्वतीको पाप अंशसे मुक्तकिया १५ वह सरस्वती उन्होंने

के प्रभावसे उसीप्रकारके मुख्यरूप और स्वभाववाली हुई जैसी कि पूर्वमें थी १६ शाप से मुक्त वह श्रेष्ठ नदी पूर्व्वकेही समान शोभायमान हुई उन मुनियों से शुद्ध कीहुई उस सरस्वतीको देखकर १७ क्षुधार्त्त राक्षस उनकी शरणमें गये हे राजा वह क्षुधासे पीड़ित राक्षस हाथ जोड़कर १८ उन दयावान् मुनियों से बारंबार यह बचन बोले कि हम क्षुधासे दुःखीहोकर सनातन धर्म्म से रहितहैं १९ यह इच्छा के अनुसार प्रवृत्ति नहीं है जो हम पापों को करते हैं अब आपकी कृपासे पाप कर्म्म से छूटजायँ २० वह हमारे पाप जिनसे कि हम ब्रह्मराक्षस हैं और बढ़तेजाते हैं उन सब पापों को सुनो स्त्रियोंके उस पापसे जोकि उत्पत्तिस्थान योनिदोष से सम्बन्ध रखनेवाला है हम ब्रह्मराक्षस होते हैं २१ इसप्रकार बैश्य शूद्र और क्षत्रियोंमें से जो लोग ब्राह्मणों से शत्रुता रखते हैं वह इसलोक में राक्षस होते हैं २२ जो लोग गुरू ऋत्विज आचार्य्य और वृद्ध मनुष्यों समेत सब जीवधारियोंका अपमान करते हैं वह इसलोकमें राक्षस होते हैं २३ हे उत्तम ब्राह्मणलोगो आप हमारी रक्षाकरो आप सबलोकोंके भी तारनेमें समर्थ हैं २४ मुनियोंने उन्होंके बचनोंको सुनकर महानदी की स्तुतिकरी और बड़े सावधान उन मुनियों ने उन राक्षसों की मोक्ष के निमित्त उससे कहा २५ क्षुत कीटयुक्त उच्छिष्टसमेत केश रखनेवाला त्यागाहुआ नेत्रोंके अश्रुओंसे युक्त जो अन्नहोय २६ इनकारणों से इसलोकमें त्यागकिया हुआ अन्न राक्षसों का भागहै इस हेतु से बुद्धिमान् मनुष्य अच्छेप्रकार जानकर सदैव ऐसे अन्नों को उपाय पूर्व्वक त्यागकरे २७ जो ऐसेअन्नको खाताहै वह राक्षसोंके अन्नको खाताहै इसके पीछे उन तपोधन ऋषियों ने उस तीर्थ को पवित्रकरके राक्षसों की मोक्षकेलिये उस नदीको चलायमान किया हे पुरुषोत्तम फिर उसउत्तम नदीने महर्षियोंका बिचार जानकर २८ । २९ अपने अरुण नाम शरीर को वहां वर्त्तमान किया वह राक्षस उस अरुणामें स्नानकर अपने २ शरीरको छोड़कर स्वर्गको गये ३० हे महाराज वह तीर्थ ब्रह्महत्याका दूर करनेवालाहै निश्चय सौयज्ञ करनेवाला देवताओंका इन्द्र इस बातको जानकर उस उत्तम तीर्थमें स्नानकर पापों से निवृत्त हुआ ३१ जनमेजयने कहा कि हे भगवान् इन्द्रने कैसे ब्रह्महत्याको पाया और कैसे इसतीर्थ में स्नानकरके पापों से छूटा ३२ बैशम्पायन बोले हे राजा इस वृत्तान्तको सुनो यह बृत्तान्त जैसाहै और जिसप्रकार इन्द्रने पूर्वसमय में नमुचि

की प्रतिज्ञाको भंगकिया ३३ अर्थात् इन्द्रसे भयभीत होकर नमुचि सूर्य्यकी कि-
रणोंमें प्रवेशकरगया इन्द्रने उससे मित्रताकरी और यह बचनपूर्व्वक प्रतिज्ञाकरी
कि हे असुरोंमें श्रेष्ठ मैं जल थल और रात्रि दिनमें भी तुझको कभी न मारूंगा
हे मित्र मैं सत्यतासे तुझ से शपथ खाताहूं ३४ । ३५ हे राजा उस ईश्वर इन्द्र ने
वचन प्रतिज्ञा करके नीहारको देखकर जल के फेनसे उसके शिरको काटा ३६
तव वह कटाहुआ नमुचिका शिर समीपसे यह बचन कहता हुआ इन्द्रके पीछे
चला कि हे मित्रके मारनेवाले पापी ३७ कहां जाता है इसप्रकार उस शिर से
बारंबार कहेहुये महादुःखी इन्द्रने उस बृत्तान्तको ब्रह्माजीसे निवेदन किया ३८
तब लोकके गुरू ब्रह्माजी ने उससे कहा कि हे देवेन्द्र तुम विधिपूर्व्वक पापों के
भयके दूर करनेवाले अरुणा तीर्थपर यज्ञकरके स्नानकरो ३९ हे इन्द्र मुनियों से
रचाहुआ पवित्र जलवाला यह तीर्थ है प्रथम भी इसलोकमें उस तीर्थकी यात्रा
गुप्तहोती थी ४० इसके पीछे इन्द्रने अरुणादेवीके पास जाकर जलसे अपनेको
पवित्रकिया सरस्वती और अरुणा देवीका यह बड़ा पवित्र संगम है ४१ हे दे-
वेन्द्र यहां तुम यज्ञकरो और बहुत प्रकारके दानोंको दो तुम इस तीर्थमें स्नान
करके बड़े घोर पापोंसे छूटोगे ४२ हे जनमेजय ब्रह्माजी के इस वचनको सुनकर
इन्द्रने सरस्वती के कुञ्जमें यज्ञकरके अरुणामें स्नान किया ४३ ब्रह्महत्याके उस
पापसे छुटाहुआ वह प्रसन्नचित्त इन्द्र स्वर्गको गया ४४ हे राजाओं में श्रेष्ठ भर-
तवंशी नमुचि के उस शिरने भी इसी तीर्थ में स्नानकरके अभीष्टों के प्राप्तकरने-
वाले अविनाशी लोकों को पाया ४५ वैशम्पायन बोले कि महात्मा और बड़े
कर्म करनेवाले बलदेवजी उस तीर्थमें भी स्नानकरके अनेक प्रकारके दानों के
देनेसे धर्मको प्राप्तकरके चन्द्रमाके उस बड़े तीर्थको गये ४६ हे महाराज जहांपर
साक्षात् चन्द्रमाने पूर्व्व समयमें विधिपूर्वक राजसूययज्ञ कियाथा उस उत्तमयज्ञमें
बुद्धिमान् ब्राह्मणों में श्रेष्ठ महात्मा अत्रिजी होताहुये ४७ जिसतीर्थ के पास
दानवदैत्य और राक्षसों का महायुद्ध देवताओंके साथहुआ था और जहां ता-
रकनाम कठिन युद्धहुआ जिसमें स्वामिकार्त्तिकजी ने तारक असुरको मारा ४८
और जहांपर महासेननाम दैत्योंके नाशकरनेवाले स्वामिकार्त्तिकजीने देवता-
ओंकी सेनापती को पाया और साक्षात् कुमार कार्त्तिकेयजी स्थितहुये यहांपर
वह प्लक्षनाम राजतीर्थ था ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिचतर्दशोऽध्याय: १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

जनमेजय बोले हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ तुमने यह सरस्वती का प्रभाव कहा हेद्विजवर्य्य कुमारके अभिषेक को भी आप कहने को योग्यहो १ हे वदतांवर वह प्रभु भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी जिसदेश में जिससमय जिसबिधि से उत्पन्नहुये और जिन २ देवताओंने इन कुमारजी को अभिषेक किया २ और उन्होंने जैसे दैत्योंके बड़े नाशको किया यह सब वृत्तान्त मुझसे कहिये क्योंकि मुझको उसके सुनने की बड़ी उत्कण्ठा है ३ बैशम्पायन बोले हे जनमेजय यह तेरा सुनने का उत्साह कौरवबंश के योग्यहै यह बचन मेरी प्रसन्नताको उत्पन्नकरता है ४ हे राजा बहुत अच्छा मैं कुमारजीके अभिषेक और प्रभावको तुझसे कहताहूं ५ पूर्वसमय में शिवजी का तेजरूप बीर्य अग्निमें गिरा सबके भस्म करनेवाले भगवान् अग्नि उस अबिनाशी के भस्मकरने को समर्थ नहींहुये ६ उसके कारण वह प्रकाशित अग्नि अत्यन्त तेजस्वी हुये परन्तु उस तेजरूप गर्भ को धारण नहीं करसके ७ उसप्रभु अग्निने ब्रह्माजीकी आज्ञासे गंगाजीमें जाकर उस सूर्य के समान महातेजस्वी दिव्य गर्भको नियतकिया तदनन्तर उस गर्भके धारण करनेको अक्षम श्रीगंगाजी ने भी देवताओं से पूजित सुन्दर हिमालय पर्बत पर उसको छोड़ा ८।९ वह अग्निका पुत्र वहांपर अपने तेजसे लोकोंको ब्याप्त करके बड़ाहुआ इसके पीछे कृत्तिकाओंने उस अग्निरूप गर्भको देखा १० पुत्रकी अभिलाषी वह सब उस अग्निके पुत्र महात्मा ईश्वरको शरस्तम्बपर देखकर यह हमारा है ऐसा कहकर पुकारीं ११ तब भगवान् प्रभुने उन दुग्धपान कराने की उत्सुक माताओं के उस भावको जानकर छः मुखों से उनके दूधको पान किया १२ दिव्य दुग्धधारी कृत्तिकाओंने उस बालकके अतुल प्रभावको जानकर बड़ा आश्चर्यमाना १३ हे कौरव्य जहां कि उस पर्बतके मस्तकपर वह कुमार गंगाजी के हाथसे छोड़ागयाथा वह सब पर्ब्बत सुबर्ण का होकर शोभायमान हुआ १४ उस बढ़नेवाले बालकसे पृथ्वीभी रंगोंसे युक्त होगई इसहेतु से सब पर्ब्बत सुबर्ण की खानेंहोगये १५ बड़ा पराक्रमी कुमार कार्त्तिकेय अर्थात् कृत्तिकाओं का पुत्र कहागया वह कुमार बड़े योगबलसे युक्त प्रथम गंगाजीके पुत्रहुये १६ हेराजेन्द्र अन्तःकरणसे जितेन्द्रिय तप पराक्रमसमेत चन्द्रमाके समान अपूर्व दर्शनवाला

वह कुमार वहुत बड़ाहुआ १७ वह शोभासे युक्त गन्धर्व और मुनियोंसे स्तुत्य-मानहोकर उसदिव्य सुवर्णके शरस्तम्बपर सदैव शयन करताथा १८ उसीप्रकार दिव्य वाद्य और नृत्योंकी ज्ञाता प्रशंसा करनेवाली सुन्दर दर्शनवाली हजारों देवकन्या इसकेपास आकर नृत्यकरनेलगीं १९ नदियों में श्रेष्ठ श्रीगंगाजी उसके पास नियतहुई और उत्तमरूप को धारण करके पृथ्वीने उसको धारणकिया २० वहां बृहस्पतिजीने उसके जातकर्म आदिक क्रियाओं को किया और चारमूर्त्ति धारण करनेवाला वेदभी हाथजोड़कर इसकेसम्मुख वर्त्तमानहुआ २१ चारचरण रखनेवाला धनुर्वेद और संग्रहोंसमेत अस्त्रोंके समूह भी इसकेपास आकर वर्त्त-मानहुये और वहां साक्षात् केवल वाणी भी उसके पास वर्त्तमानहुई २२ उसने पार्वतीजी समेत पुत्र और जीवधारियों के अनेक समूहों सहित बड़े पराक्रमी देवताओं के भी देवता शिवजी महाराजको देखा २३ अत्यन्तसुन्दर और अपूर्व दर्शनरूप और भूषण रखनेवाले २४ व्याघ्र,सिंह,रीछ, विडाल,मकर,बिलाव,हाथी और ऊंटके समान मुखरखनेवाले २५ कोई उलूक, गिद्ध, शृगाल, क्रौंच, कपोत और रंकनाम मृगोंके समान मुख रखनेवाले २६ श्वावित, शल्लक, गोधा, बकरी, भेड़ और बैलोंके समान शरीरों को दूसरे पार्षदोंने जहां तहां धारणकिया २७ कितनेही पर्व्वत और वादलके रूप चक्र गदाधारी कितनेही कज्जल समूह के समान और कोई श्वेत पर्वताकारथे २८ हे राजा सप्तमाताओं समेत साध्य,वि-श्वेदेवा, मरुद्गण, अष्टवसु, सब पितर २९ एकादशरुद्र, द्वादशसूर्य, सिद्ध,सर्प दानव, गरुड़ादिकपक्षी और विष्णुजी समेत अपने आप प्रकट होनेवाले भ-गवान् ब्रह्माजी ३० इसीप्रकार इन्द्रभी उस अजेय उत्तम कुमारके देखने को पास आये नारदादिक ऋषि, देवता,गन्धर्व ३१ देवऋषि सिद्ध जिनके अग्रवर्त्ती बृ-हस्पतिजी थे और देवताओंके भी देवता जगत्में श्रेष्ठ पितृगण सब याम और धाम यह सब भी आये फिर बड़े योगबलसे युक्त वह बालक भी ३२ । ३३ शूल और पिनाक धनुष हाथमें रखनेवाले देवताओं के ईश्वर शिवजी के पासगया उस आतेहुये कुमारको देखकर शिवजीके चित्तमें यह विचारहुआ ३४ कि यह वालक एकवारही पार्व्वती गंगा और अग्नि इन तीनों में से किस के महत्त्व और गौरव से प्रथम किसके पासजायगा ३५ और मेरे पास भी आवेगा या नहीं उन शिवजी के चित्तमें यह ध्यानहुआ उस कुमार ने उन सबके इस अ-

भिप्रायको जानकर ३६ एक साथही योगमें नियत होकर नानाप्रकारके शरीरों को उत्पन्न किया इसकेपीछे वह भगवान् प्रभु क्षणभरमेंही चारमूर्त्तिवाला हुआ ३७ शाख विशाख और नैगमेय नाम मूर्त्तियां उसके पृष्ठभाग से प्रकटहुई इस प्रकार उस भगवान् प्रभुने अपने को चार रूपवाला करके ३८ जिधर रुद्रजीथे उधरही वह अपूर्व्वदर्शन स्वामिकार्त्तिकजी गये और जिधर देवी पार्व्वती थीं उधर विशाखगया और वायुरूप भगवान् शाख अग्निके पासगया और अग्नि के समान प्रकाशित कुमार नैगमेय गंगाजीके पासगये ३९। ४० वहचारों सूर्य के समान शरीर रखनेवाले सब एकरूप सावधान उनके पासगये यह आश्चर्य सा हुआ ४१ अपूर्व और शरीरके रोमाञ्च खड़े करनेवाले उस बड़े आश्चर्य्यको देखकर देव दानव और राक्षसोंका बड़ा हाहाकारहुआ ४२ उसके पीछे रुद्र, देवी, अग्नि और गंगाजी इन सबने जगत्पति ब्रह्माजी को दण्डवत् करी ४३ और विधिपूर्व्वक दण्डवत् करके स्वामिकार्त्तिकजी की प्रसन्नता के अर्थ यह बचन कहा ४४ कि हे देवताओं के ईश्वर भगवान् हमारे हित के लिये इस बालकको इसके योग्य अधिकार देनेको योग्यहो ४५ इसके पीछे लोकों के पितामह बुद्धिमान् ब्रह्माजी ने चित्त से विचार किया कि इसको कौनसा अधिकार दियाजाय ४६ प्रथमही इस तेजस्वी ने देवता गन्धर्व राक्षस भूत यक्ष पक्षी और सर्प इन सबके ऐश्वर्य्योंको ४७ महात्माओं के समूहों में उपदेश कियाहै इसीसे बड़े बुद्धिमानोंने उसको सब ऐश्वर्य्योंमें समर्थ मानाहै ४८ इसके पीछे देवताओंकी वृद्धि में नियत देवताओं में श्रेष्ठ ब्रह्माजीने एक मुहूर्त्त ध्यानकरके उस कुमारको सब जीवधारियों का सेनापति किया ४९ और उन सब जीवोंको उनके आज्ञाकारी होनेकी आज्ञादी जो कि सब देवसमूहोंके राजा प्रसिद्धथे ५० इसके पीछे ब्रह्मादिक सब देवता मिलकर कुमारको लेकर अभिषेक के लिये गिरिराज के समीप ५१ धर्म्मकी वृद्धिके हेतु नदियों में श्रेष्ठ उस हिमाचलकी पुत्री देवीसरस्वती के पास गये जो कि तीनों लोकों में प्रसिद्ध समन्तपंचक देश में है ५२ बड़े प्रसन्नचित्त सब देवता गन्धर्व्व उस सरस्वती के पवित्र पुण्यकारी किनारेपर जाकर बैठगये ५३॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिपंचदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले इसके पीछे बृहस्पतिजी ने शास्त्रोक्तरीति से अभिषेककी सब सामग्रियों को इकट्ठा करके वृद्धियुक्त अग्निमें विधिपूर्वक अग्नि देवताकी आहुतिदी १ इसके पीछे देवगणों ने हिमाचल के दिये हुये अत्यन्त उत्तम मणियों से शोभित दिव्य रत्नोंसे जटित धर्मकी बृद्धिके हेतुरूप उत्तम आसनपर बिराजमान को २ सब मंगलरूप सामग्रियों समेत विधिपूर्वक मंत्रों के द्वारा अभिषेककी वस्तुओं से अभिषेक कराया ३ बड़े पराक्रमी बिष्णुजी इन्द्र, सूर्य, चन्द्रमा, धाता, विधाता, अग्नि, बायु ४ पूषा, भग, अर्यमा, अंश, बिवस्वत और मित्र, वरुण समेत एकादश रुद्र ५ अष्टवसु, द्वादशसूर्य्य, दोनों अश्विनीकुमार विश्वेदेवा, मरुद्गण, पितृ, साध्यगण ६ गन्धर्ब, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, सर्प, असंख्य, ब्रह्मऋषि, देवऋषि ७ वायुभक्षी, सूर्यांशुको पानकरनेवाले वैखानस वालखिल्य ऋषि भृगुबंशी अङ्गिराबंशी महात्मा यती ८ सर्प विद्याधर और पवित्र योगवाले सिद्ध पुरुषों समेत ब्रह्माजी पुलस्त्य पुलह बड़ेतपस्वी अङ्गिरा ९ कश्यप, अत्रि, मरीचि, भृगु, क्रतुहर, प्रचेता, मनुदक्ष १० सब ऋतु, उत्तमग्रह, नक्षत्रादिक प्रकाशित शरीरवाली मूर्त्तिमान नदियां, सनातन वेद, ह्रद, नानाप्रकार के तीर्थ, पृथ्वी, स्वर्ग, दिशा, वृक्ष, देवताओंकीमाता, अदिति, ह्री, श्री, स्वाहा, सरस्वती, उमा, शची, शिनीबाली, अनुमति, कुहू ११। १२। १३ राका, धिषणा और देवताओंकी अन्य अन्य स्त्रियां हिमाचल बिंध्याचल और अनेक शिखरधारी मेरुपर्व्वत १४ साथियों समेत ऐरावतहाथी, कलाकाष्ठा, मास, पक्ष, ऋतु, दिन, रात १५ घोड़ों में श्रेष्ठ उच्चैःश्रवा सर्पोंकाराजा बासुकी अरुण गरुड़ औषधियोंसमेत बृक्ष १६ भगवान् धर्म देवता, काल, यम, मृत्यु और जो २ यमराज के आगे पीछे चलनेवाले हैं वह सब मिलहुये वहांआये १७ और जो नानाप्रकारके देवगण बृद्धितासे नहीं कहेगये वह कुमारके अभिषेककेलिये जहां तहां से आये १८ हे राजा इसकेपीछे उन सब देवताओं ने अभिषेकके पात्र और सब माङ्गलिकवस्तुओं को लिया १९ हे राजा अत्यन्त प्रसन्नचित्त देवताओं ने दिव्य सामग्रियोंसेयुक्त और सरस्वती के पवित्ररूप दिव्यजलोंसे पूर्णसुबर्ण के कलशों से २० उस कुमारको अभिषेक कराया जो कि असुरोंके भयका उत्पन्न करनेवाला

महात्मा सेनापतिथा २१ हे महाराज पूर्व्वसमय में जैसे कि जलकेस्वामी बरुण को अभिषेक कराया था उसीप्रकार सब लोकके पितामह भगवान् ब्रह्माजी २२ और बड़ेतेजस्वी कश्यपादिक ऋषि जो लोकमें बिख्यात हैं उन सबने मिलकर अभिषेक कराया प्रसन्न प्रभु ब्रह्माजीने इस कुमारके निमित्त बलवान् और बायु के समान शीघ्रगामी २३ इच्छानुसार पराक्रमी सिद्ध महापार्षदोंको दिया उनके नाम नन्दिसेन, लोहिताक्ष, घंटाकर्ण २४ इसका चौथा अनुचर कुमुदमाली नाम से प्रसिद्ध हे राजेन्द्र उसकेपीछे बड़ेतेजस्वी प्रभु शिवजीने २५ सैकड़ों मायाधारी इच्छानुसार बल पराक्रमी असुरों के नाश करनेवाले महापार्षद कामनाम को स्वामिकार्त्तिक को दिया २६ उस क्रोधयुक्तने देवासुर नामयुद्धमें दोनों हाथोंसे भयकारी कर्म करनेवाले चौदह प्रयुत दैत्यों को मारा २७ उसीप्रकार देवताओं ने असुरोंकी नाशकरनेवाली अजेय और नैर्ऋत असुरोंसे युक्त बिष्णुरूप सेना को उस के निमित्त दिया २८ तब इन्द्र समेत सब देवता, गन्धर्ब, यक्ष, राक्षस मुनि और पितरों ने बिजय का शब्द किया २९ उसके पीछे यमराजने दो अनुचर दिये वह दोनों कालरूप बड़ेपराक्रमी और तेजस्वी उन्माथ और प्रमाथ नाम थे ३० प्रसन्नचित्त प्रतापवान् सूर्य्यने सुभ्राज और भास्करनाम उन दोनों अनुचरों को स्वामिकार्त्तिक के निमित्त दिया जो कि दोनों सूर्य्य के पीछे चलनेवाले थे ३१ चन्द्रमाने भी मणि और सुमणिनाम उन दो अनुचरों को दिया जो कि कैलासके शिखरकेरूप श्वेतमाला और चन्दनधारी थे ३२ उसी प्रकार अग्निने भी अपने पुत्र के लिये ज्वालाजिह्व और ज्योति नाम दोनों अनुचर जो कि शूर और शत्रुकी सेनाके नाशकारी थे उनको दिया ३३ अंश देवता ने भी बुद्धिमान् स्वामिकार्त्तिक के अर्थ पांच अनुचर दिये उनके नाम परिघ, बट, बलवान् भीम, दहति, दहन यह पांचों अत्यन्त शीघ्रगामी और अङ्गीकृत पराक्रमीथे ३४ शत्रुबिजयी इन्द्रने उस अग्निके पुत्रकेलिये उत्क्रोश, पंचक, बज्रधारी, दण्डधारी इन चारों अनुचरोंको दिया ३५ उन दोनों बज्रधारी और दण्डधारीने युद्धमें महाइन्द्रके बहुत शत्रुओं को माराथा ३६ बड़े यशवान् बिष्णुजी ने कुमारको बड़ा बलवान् चक्र, बिक्रमक और संक्रम यह तीन अनुचरदिये ३७ वैद्योंमें श्रेष्ठ प्रसन्न चित्त अश्विनीकुमारों ने बर्द्धन और नन्दननाम दो अनुचर स्वामिकार्त्तिक को दिये वह दोनों भी सब बिद्याओं में कुशलथे ३८ बड़े यश-

वान् धाताने उस महात्माकेलिये नीचेलिखेहुये अनुचरदिये कुन्द, कुसुम, कुमुद, डंबर, अडम्बर ३९ त्वष्टाने स्वामिकार्त्तिक को चक्र, अनुचक्र यह दोनों अनुचर दिये वह दोनों बड़ेमायावी बलमें मतवाले बड़े बलवान् मेघोंकी सेना रखनेवाले थे ४० प्रभुमित्रने महात्माकुमारके निमित्त सुव्रत और सत्यसंध यह दोनों अनुचरदिये जो कि तप और विद्याके धारण करनेवाले महात्माथे ४१ विधाताने महात्मा सुव्रत और शुभकर्म को स्वामिकार्त्तिक के निमित्तदिया जो कि प्रसन्न मूर्त्तिवरदाता तीनोंलोकमें विख्यातथे हे भरतवंशी पूषाने बड़ेमायावी पानीतक और कालकनाम ४२ पार्षदों को स्वामिकार्त्तिकके अर्थदिया हे भरतर्षभ वायुने बड़े बलवान् और मुखवाले बल और अतिबलनामको ४३। ४४ स्वामिकार्त्तिक के लिये दिया सत्यसङ्कल्प बरुणने निमि मत्स्यकेसमान मुखरखनेवाले बड़ेबलवान् यम और अतियम नाम अनुचरोंको ४५ स्वामिकार्त्तिक के लिये दिया हे राजा हिमाचलने सुवर्चस और अतिवर्चस नाम अनुचरों को ४६ अग्निके पुत्र के लिये दिया महात्मा मेरुपर्वतने स्थिर और अस्थिर नाम पार्षदोंको मेरुपर्वत ने महात्मा कांचन और मेघमाली नाम उन अनुचरोंको अग्निके पुत्रकोदिया जो कि बड़ेबल पराक्रम रखनेवाले थे विन्ध्याचलने उच्छृङ्ग अतिशृङ्ग नाम बड़े पाषाणोंसे लड़नेवाले ४७। ४८। ४९ दोपार्षदोंको अग्निके पुत्रकोदिया समुद्र ने भी गदाधारी संग्रह और विग्रहनाम ५० दो महापार्षदों को दिया इसीप्रकार उन्माद पुष्पदंत और शंकुकर्ण ५१ पार्षदोंको शुभदर्शन पार्वतीजी ने दिया हे पुरुषोत्तम सर्पोंके राजा बासुकीने जय और महाजयनाम सर्पोंकोदिया इसप्रकार साध्य रुद्र वसु पितृ ५२। ५३ सागर नदियां और बड़े २ बलवान् पर्वतोंने सेना के अप्सरोंकोदिया जो कि शूल पट्टिश धारण करनेवाले ५४ दिव्य अस्त्र शस्त्रों से युक्त और नानाप्रकार की पोशाकों से अलंकृतथे उन्होंके नामोंको भी सुनो और स्वामिकार्त्तिक के जो अन्य २ सेनाके लोग ५५ नाना शस्त्रधारी अपूर्व भूषणोंसे अलंकृतथे उनकेनाम यहहैं शंकुकर्ण, निकुंभ, पद्म, कुमुद ५६ अनंत, द्वादश, भुज, कृष्ण, उपकृष्णक, घ्राणश्रवा, प्रतिस्कंध, कांचनाक्ष, जलन्धम ५७ अक्षसंतर्जन, कुनदीक, तमोन्तकृत, एकाक्ष, द्वादशाक्ष, प्रभु एकजटा ५८ सहस्राबाहु, विकट, व्याघ्राक्ष, क्षितिकंपन, पुण्यनामा, सुनामा, सुचक्र, प्रियदर्शन ५९ परिश्रुत कोकनद, प्रियमाल्यानुलेपन, अजोदर, गजशिरा, स्कंदाक्ष, शत-

लोचन ६० ज्वालाजिह्व, करालाक्ष, शितिकेशी, जटी, हरि, परिश्रुत, कोकनट, कृष्णकेश, जटाधर ६१ चतुर्दंष्ट्र, उर्ध्वजिह्व, मेघनाद, पृथुश्रव, विद्युताक्ष, धनुर्बक्र, जाठर, मारुताशन ६२ उदाराक्ष, रथाक्ष, बज्रनाभ, बसुप्रद, समुद्र वेग, शैलकंपी ६३ वृष, मेष,प्रवाह, नन्द, उपनन्दक, धूम्र, श्वेत, कलिन्द, सिद्धार्थ, बरद, प्रियक, एकनन्द, प्रतापवान् गोनन्द, आनन्द, प्रमोद, स्वस्तिक, ध्रुवक ६४। ६५ क्षेमबाह, सुबाह, सिद्धपात्र, गोब्रज, कनका, पीड़नाम, महापार्षदोंका ईश्वर, गायन, हसन, बाण पराक्रमी खड्ग, वैताली गतितालौ, कथक, बार्त्तिक ६६। ६७ हंसज, पङ्कदिग्धांग, समुद्रोन्मादन, रणोत्कट,प्रहास, श्वेतसिद्ध, नन्दक ६८ कालकण्ठ, प्रभास इसीप्रकार दूसरा कुभाण्डक, कालकाक्ष, इसीप्रकार जीवोंको मथन करनेवाला सत ६९ यज्ञबाह, प्रबाह, देवयाजी, सोमप, बड़ा तेजस्वी, मज्जान, क्रथ, क्राथ ७० तुहर, तुहार, पराक्रमी चित्रदेव मधुर, सुप्रसाद, बलवान् किरीटी ७१ वत्सल, मधुवर्ण, कलशोदर, धर्म्मद, मन्मथकर, पराक्रमी सूचीवक्र ७२ श्वेतवक्र, सुवक्र, चारुवक्र, पाण्डुर, दंडबाहु, सुबाहु,रज, कोकिलक ७३ अचल, कंकाक्ष, जो कि बालकोंकाभी प्रभुहै चंचारक, कोकनद, गृध्रप, जम्बुक ७४ लोहाजवक्र, जवन, कुम्भवक्र, कुम्भक, स्वर्णग्रीव, कृष्णौजा, हंसवक्र, चन्द्रभ ७५ पाणिकूर्चा, शम्बूक, पञ्चवक्र, शिक्षक, चाषवक्र जम्बूक शाकवक्र, कुंजल ७६ यह सब योगसे संयुक्त सदैव महात्मा ब्राह्मणों के प्यारे बड़े साहसी ब्रह्माजीके पुत्र पार्षदहैं ७७ हे जनमेजय हजारों तरुण बालक और वृद्ध कुमार के पास आकर नियतहुये ७८ और जो पार्षद नानाप्रकारके मुख रखनेवाले थे उनकोभी सुनो कच्छ और कुक्कुटके समान मुखवाले शश उलूकके समान मुख रखनेवाले ७९ गर्दभ, ऊंट, शूकर, मार्जार और शशवक्र के समान दीर्घ मुख रखनेवालेथे ८० इसीप्रकार दूसरे पार्षद नौला, उलूक,काक,चूहेका मुख रखनेवाले और मयूरकेसमान मुख रखनेवालेथे ८१ बहुतसे अन्यपार्षद मत्स्य, मेष, बकरी, भेड़, भैंसा, रीछ, शार्दूल और सिंहका मुख रखनेवालेथे ८२ इसीप्रकार भयानक रूप हाथी, नक्र, गरुड़, कङ्क, भेड़िया और काकका मुख रखनेवाले थे ८३ बैल गर्दभ ऊंट बृष दंश मुखवाले बड़ा उदर चरण अंग रखनेवाले और नक्षत्रोंके समान नेत्रवाले थे ८४ हे भरतर्षभ वहुत से कपोतमुखी, बृषमुखी, कोकिलामुखी बाजमुखी और तीतरमुखीथे ८५ कृकलासमुखी दिव्य वस्त्रधारी, व्यालमुखी, शू-

लमुखी, चंडमुखी और शुभमुख थे ८६ डाढ़ में बिष रखनेवाले चीरधारी बैल के समान नाक मुख रखनेवाले स्थूल,उदर, कृशशरीर, स्थूलशरीर और सूक्ष्म उदर वाले ८७ छोटी गर्द्दन और बड़े कान नानाप्रकारके सर्प्पों का भूषण रखनेवाले गजराज के चर्म्मकी पोशाक और काले मृगचर्म्म की पोशाक रखनेवाले और कृष्ण मृगचर्म्म के धारण करनेवालेथे ८८ हे महाराज बहुतेरे कन्धेपर मुख रखने वाले उदर पीठ ठोढ़ी अथवा जंघापर भी मुख रखनेवाले ८९ उसीप्रकार बहुतसे पार्षद कुक्षिमें और अनेकप्रकारके स्थानोंपर कीट पतंगोंके समान मुखवाले होकर सेना समूहोंके ईश्वरथे ९० बहुतेरे अनेक प्रकारके सर्पोंकी समान मुखवाले बहुत भुजा शिर और उदर रखनेवाले कोई नानाप्रकारके वृक्षोंकी समान भुजा रखनेवाले और कोई कमरपर शिर रखनेवालेथे ९१ सर्प्पके फणकी समान मुख वाले बहुत से सेनाके भागमें निवास करनेवाले चीरधारी नानाप्रकारकी स्वर्णमयी पोशाक रखनेवाले ९२ अनेकप्रकारकी पोशाक रखनेवाले नानाप्रकारकी माला और चन्दनादिसे संयुक्त शरीर बहुत प्रकारके वस्त्रधारी चर्म्म वस्त्रोंसे अलंकृत ९३ वेष्टनसमेत सुंदर मुकुटधारी सुन्दरग्रीवा बड़ेतेजस्वी किरीटसे शोभित पांचशिखा रखनेवाले और स्वर्ण केशधारी ९४ तीनशिखा दो शिखा और सात शिखाधारी शिखण्डी मुकुटधारी जटाधारी ९५ और चित्रमालाधारी इसीप्रकार कोई मुखपर रोम रखनेवाले सदैव युद्धको स्वीकार करनेवाले उत्तम देवताओं से भी अजेय ९६ श्यामरूप मांससे रहित मुख मोटी पीठ परन्तु छोटाउदर स्थूल पृष्ठ सूक्ष्म पृष्ठ अत्यन्त लम्बोदर लिंगेन्द्रीयुक्त ९७ बड़ी भुजा और छोटी भुजावाले छोटाडील बौना कुबड़े अल्पजंघा हाथी के समान कान शिर और पेट रखनेवाले ९८ इसीप्रकार बहुतसे हाथी कछुआ और बगले के समान नाक रखनेवाले लम्बीश्वास रखनेवाले लम्बीजंघा रखनेवाले बिकरालरूप अधोमुख ९९ बड़ी डाढ़ छोटीडाढ़ और चारडाढ़ रखनेवालेथे हेराजा बहुतसे पार्षद गजेन्द्रके समान भयङ्कररूपथे १०० सुडौल शरीर प्रकाशित अच्छेअलंकृत पिंगलाक्ष शङ्कु श्रोत्र रक्तनासिकावाले १०१ मोटीडाढ़ बड़ीडाढ़ मोटे होठ और पिंगलबर्ण थे बहुतसे केशधारी नानाप्रकारके चरण होठ डाढ़ हाथ और ग्रीवा रखनेवाले थे १०२ वह सब नानाप्रकारके मृगचर्मों से ढकेहुये नानाप्रकारके देशोंकी भाषा बोलनेवाले और उनमें कुशल परस्पर वार्त्ताकरनेवाले ईश्वर प्रसन्नचित्त १०३ महापार्षद चारों

ओरसे आये जो लम्बीगर्दन नख चरण और भुजाओं के रखनेवाले १०४ पिंगलाक्ष नीलकण्ठ लम्बेकानवाले वृकोदरके समान कितनेही अंजनके रूप १०५ श्वेताक्ष,रक्तग्रीव और पिंगलाक्षथे हे भरतबंशी राजा जनमेजय इसीप्रकार बहुतसे पार्षद कल्माषवर्ण, चित्रवर्ण १०६ चामरा पीडकसमान, श्वेतरक्त पंक्ति रखनेवाले नानावर्ण सवर्ण मयूरके सदृश वर्णधारी प्रकाशमान थे १०७ अब मैं इन सबके शस्त्रोंका बर्णन करताहूं उनको तुम सुनो कोई हाथोंसे पाश उठानेवाले, फैलेमुख, गर्दभके समानमुख, पृष्ठपर नेत्र रखनेवाले नीलकण्ठ और परिघ शस्त्र की समान भुजा रखनेवाले थे १०८।१०९ कोई शतघ्नी चक्रको हाथ में धारण करनेवाले, मूशल हाथ में रखनेवाले खड्ग मुद्गर और दण्डधारण करनेवाले ११० गदा भुशुंडी और तोमर हाथमें रखनेवाले नानाप्रकारके घोर शस्त्रोंसे युक्त बड़े साहसी और शीघ्रगामी १११ बड़े बलवान् वेगवान् युद्ध को प्रिय मानने वाले महापार्षद यह सब कुमारके अभिषेक को देखकर प्रसन्नहुये ११२ घण्टा जालसे अलंकृत शरीर बड़ेतेजस्वी वह सब पार्षद नृत्य करनेलगे और अन्य२ बहुतसे महापार्षदभी ११३ यशवान् कीर्त्तिमान् प्रतापी महात्मा स्वामिकार्त्तिकके पास आकर बर्त्तमानहुये स्वर्ग आकाश और पृथ्वी से सम्बन्ध रखनेवाले बायु के समान ११४ यह सब शूरबीर देवताओं के आज्ञावर्त्ती होकर कुमार स्वामिकार्त्तिकजी के अनुचर हुये उसप्रकार के हजारों करोड़ों किन्तु अर्बुदों पार्षद ११५ उस अभिषेक किये हुये महात्मा कुमारके चारोंओर से परिधि रूप होकर उसके समीप वर्त्तमान हुये ११६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिषोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले हे बीर राजा जनमेजय अब मुझसे इन माताओंके समूहों को सुनो जोकि शत्रु समूहों को मारनेवाले और कुमारके पीछे चलनेवाले हैं १ हे भरतबंशी इन यशवान् माताओंके नामों को सुनो जिन कल्याण रूप नामोंसे तीनोंलोक बिभाग पूर्व्बक व्याप्तहैं २ प्रभावती, बिशालाक्षी, पालिता, गोस्तनी, श्रीमती, बहुला, बहुपुत्रका ३ अप्सुजाता, गोपाली, बृहदा, अम्बालिका, जयावती, मालतिका, ध्रुवरत्ना, अभयंकरी ४ वसुदामा, सुदामा, बिशोका, नन्दि-

नी, एकचूड़ा, महाचूड़ा, चक्रनेमि ५ उत्तेजसी, जयत्सेना, कमलाक्षी, शोभना, शत्रुंजया, क्रोधना, शलभी, खरी ६ माधवी, शुभवक्रा, तीर्थसेनी, गीतप्रिया, कल्याणी, रुद्ररोमा, अमिताशना ७ मेघस्वना, भोगवती, सुभ्रू, कनकावती, अलाताक्षी, वीर्य्यवती, विद्युज्जिह्वा ८ पद्मावती, सुनक्षत्रा, कन्दरा, बहुयोजना, संतानिका कमला, महाबला ९ सुदामा, बहुदामा, सुप्रभा, यशस्विनी, नृत्यप्रिया, शतोलूखलमेखला १० शतघण्टा, शतानन्दा, भाविनी, वपुष्मती, चन्द्रशीता, भद्रकाली, ऋक्षांबिका, निस्कुटिका, बामा, चत्वरबासिनी, सुमंगला, स्वस्तिमती, बुद्धिकामा, जयप्रिया ११।१२ धनदा, सुप्रसादा, भवदा, एड़ी, भेड़ी, समेड़ी, बेतालजननी, गण्डूती, कालिका, देवमित्रा, वसुश्री, कोटिरा, चित्रसेना, अबला १३।१४ कुक्कुटिका, शंखलिका, अशकुनिका, कुंडारिका, कौकुलिका, कुंभिका, शतोदरी १५ उत्क्रोधनी, जनेना, महावेगा, कंकणा, मनोजवा, कंटकिनी, परिघा, पूतना १६ केशयंत्री, त्रुटि, क्रोशना, तड़ित्प्रभा, मन्दोदरी, मुंडी, कोटरा, मेघबाहिनी १७ सुभगा, लम्बिनी, लम्बोदरा, ताम्रचूड़ा, बिकाशिनी, ऊर्ध्वबेणी, धरा, पिंगाक्षी, लोहमेखला १८ पृथुवक्त्रा, मधुनिका, मधुकुंभा, पक्षालिका, मत्कुणिका, जरायुट, जर्जरानना १९ ख्याता, दहदहा, धमधमा, खण्डखण्डा, पूषणा, मणिकुट्टिका २० अमोघा, लम्बपयोधरा, बेणुबीणाधरा, पिंगाक्षी, लोहमेखला २१ शशोलूकमुखी, कृष्णा, खरजंघा, महाजवा, शिशुमारमुखा, श्वेता, लोहिताक्षी, विभीषणा २२ जटालिका, कामचरी दीर्घजिह्वा, बलोत्कटा, कालोहिका, बामनिका, मुकुटा २३ लोहिताक्षी, महाकाया, हरिपिण्डा, एकत्वचा, सुकुसुमा, कृष्णकर्णा २४ क्षुरकर्णी, चतुष्कर्णी, कर्णप्राबर्णा, चतुष्पथ, निकेता, गोकर्णा, महिषानना २५ खरकर्णी, महाकर्णी, भेरीस्वना, महास्वना, शङ्ख, कुम्भश्रवा, भगदा, महाबला २६ गणा, सुगणा, भीति, कामदा, चतुष्पथरता, भूतितीर्था, अन्यगोचरा, पशुदा, वित्तदा, सुखदा, महायशा, पयोदा, गोमहिषदा, सुबिशाला २७।२८ प्रतिष्ठा, सुप्रतिष्ठा, रोचमाना, सुरोचना, नौकर्णी, मुखकर्णी, बिशरामंथिनी २९ एकचन्द्रा, मेघकर्णा, मेघमाला, विरोचना हे भरतर्षभ यह सब और अन्य २ बहुतसीमाता ३० स्वामिकार्त्तिकके पीछे चलनेवालीं नानारूपवालीं हजारोंथीं लंबेनख लम्बेदांत लम्बामुख रखनेवाली ३१ बलवान्, मधुरबचन, तरुण, अच्छे अलंकृत महत्वतासे युक्त स्वेच्छाचारी रूप धारण करनेवाली ३२ मांससे रहित

शरीर श्वेतबर्ण और काञ्चनरूप थी हे भरतर्षभ इसीप्रकार दूसरी देवी कृष्णमेघ की सूरत धूम्रबर्ण ३३ अरुणबर्ण महाभाग लम्बेकेश रखनेवाली कोई लम्बी मेखला रखनेवाली ३४ लम्बा उदर कान और स्तन रखनेवाली उसीप्रकार दूसरी देवी लम्बेरक्तनेत्र लालबर्ण पिंगलाक्षी ३५ वरदाता इच्छानुसार कर्मकर्त्ता सदैव प्रसन्न यमराज रुद्र और चन्द्रमा समेत कुबेर से सम्बन्ध रखनेवाले बड़े बलवान् लोग ३६ बरुण महाइन्द्र अग्नि वायुकुमार और ब्रह्माजी से सम्बन्ध रखनेवाली देवियां ३७ उसी प्रकार बिष्णु सूर्य्य और बाराहजी से सम्बन्ध रखनेवाली बड़ी बलवान् स्वरूपमें अप्सराओंके समान चित्तरोचक मनको प्रसन्न करनेवाली ३८ बार्त्ताओं में कोकिलाओं के समान धनमें कुबेरकी तुल्य युद्ध में रुद्र इन्द्रकेसम तुल्य और तेजमें अग्निके सदृश थीं ३९ वह सदैव शत्रुओं के युद्ध में भयकी देनेवाली होती हैं उसीप्रकार इच्छानुसार रूपधारण करनेवाली बेगमें वायुके समान ४० ध्यानसे बाहर बल पराक्रम रखनेवाली बृक्ष चत्वर और निर्जन बनमें निवास करनेवाली ४१ गुफा और श्मशानवासिनी पर्वतों के झिरनों में निवास करनेवाली ४२ नानाप्रकारके भूषण और माला रखनेवाली नानाप्रकारके बिचित्र वेष रखनेवाली यह और अन्य२ बहुतसे शत्रुसमूहों को भय उत्पन्न करनेवाली ४३ उस देवराज की आज्ञासे महात्मा कुमारके पीछे चलीं इसके पीछे भगवान् इन्द्रने शक्तिअस्त्र ४४ असुरों के नाशके लिये स्वामिकार्त्तिक को दिये हे भरतर्षभ शब्दायमान और बड़े घण्टेवाली प्रकाशित श्वेतप्रभा रखनेवाली सूर्य्यके वर्ण अरुण पताकाको भी दिया पशुपतिजी ने सब जीवोंकी उस बड़ी सेनाको उसके निमित्तदी ४५ । ४६ जो कि महाउग्र नानाप्रकार के शस्त्रों को धारण करनेवाली तप बल पराक्रमसे युक्त अजेय उत्तम गुणवाली धनञ्जयनाम से विख्यात ४७ और रुद्रजीके समान तीनअयुत शूरबीरोंसे संयुक्तथी वह सेना कभी युद्धसे मुखफेरना नहीं जानतीथी ४८ और बिष्णुजीने बलको बढ़ानेवाली बैजयन्तीमालादी उमादेवी ने सूर्य्य के समान प्रकाशमान दो दिव्य वस्त्र दिये ४९ श्रीगंगाजी ने बड़ी प्रीतिसे दिव्य और अमृतका उत्पन्न करनेवाला उत्तम कुण्डल दिया और बृहस्पतिजी ने कुमारके अर्थ दण्ड दिया ५० गरुड़जी ने बिचित्र पुच्छवाला सुन्दर मोरदिया अरुणने चरणायुधवाला तोमरचूड़ अर्थात् कुक्कुट दिया ५१ फिर राजा बरुणने बल पराक्रमसे युक्त नागदिया इसके अन-

न्तर प्रभु ब्रह्माजीने उस वेदब्राह्मणोंके रक्षक कुमारको कृष्णमृगदिया ५२ और युद्धोंमें बिजयको भी दिया तब स्वामिकार्त्तिकजी सब देवगणों के सेनानीपद को पाकर ५३ दूसरे प्रज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुये फिर पार्षदों और माताओंसेयुक्त ५४ स्वामिकार्त्तिकजी उत्तम देवताओंको प्रसन्नकरके दैत्योंके नाश करनेकेलिये चले और राक्षसोंकीभी वह भयानकरूप सेना घंटे ऊंची ध्वजा ५५ भेरी शङ्ख मुरजा शस्त्र और पताका रखनेवाली प्रकाशित शरीरोंसे शोभायमान शरदऋतुके आकाशकी समान प्रकाशमानथी ५६ इसके पीछे देवताओंके समूह और सावधान नानाप्रकारके जीवसमूहोंने उत्तम भेरी और शङ्खोंको बजाया ५७ फिर इन्द्रसमेत सब देवताओंने कुमार स्वामिकार्त्तिककी स्तुतिकी देवगन्धर्वोंने गाया और अप्सराओंके गणोंने नृत्यकिया ५८।५९ तदनन्तर अत्यन्त प्रसन्नरूप स्वामिकार्त्तिकजी ने देवताओंके निमित्त यह बरदानदिया कि मैं उन शत्रुओंको मारूंगा जो तुम्हारे मारनेके अभिलाषी हैं ६० तब प्रसन्नचित्त महात्मा देवताओंने उस श्रेष्ठ देवतासे बरप्रदानलेकर शत्रुओंको मराहुआ माना ६१ महात्माकी ओरसे बरके देनेपर सबजीव समूहोंके प्रसन्नता के ऐसे शब्द उत्पन्नहुये जिनकेमारे तीनोंलोक पूर्णहोगये ६२ बड़ी सेनासमेत वह स्वामिकार्त्तिकजी युद्धमें दैत्यों के मारने को और देवताओं के रक्षाके निमित्त यात्राकरनेवालेहुये ६३ हे राजा निश्चय करके धर्मसिद्धी लक्ष्मी धृति स्मृति यह सब स्वामिकार्त्तिकजी की सेनाके आगे चलीं ६४ वह स्वामिकार्त्तिक देवता भयानक शूल मुद्गर हाथमें रखनेवाले ज्वलित शस्त्रधारी जड़ाऊ भूषण और कवच धारणकरनेवाले ६५ गदा मूशल नाराच शक्ति और तोमरधारी उन्मत्त सिंहके समान गर्जनेवाले सेनाके साथ गर्जतेहुये चले ६६ भयसे महाव्याकुल सबदैत्य दानव और राक्षस चारोंओर सब दिशाओं में भागे ६७ नानाप्रकार के शस्त्रों को हाथ में रखनेवाले देवताओं के सम्मुख गये तब तेज बलसे युक्त भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी ने उस सेना को देख वारम्बार क्रोधयुक्त होकर भयानकरूप शक्तीको छोड़ा और अपने तेजको ऐसे धारण किया जैसे कि हव्यसे वृद्धियुक्त अग्नि तेजको धारणकरताहै ६८। ६९ हे महाराज बड़े तेजस्वी स्वामिकार्त्तिक से शक्ति अस्त्र के छोड़नेपर उल्का की ज्वलित अग्नि पृथ्वीपरगिरी ७० इसीप्रकार वायु से वायुके संघट्टनों के शब्द शब्दको उत्पन्न

करते ऐसे पृथ्वीपरगिरे जैसे कि प्रलयकाल में बड़े घोरशब्द होते हैं ७१ हे भरतर्षभ जब अग्निके पुत्रके हाथसे वह बड़ीघोर शक्ति छोड़ीगई उस शक्तिसे करोड़ों शक्तियां उत्पन्नहोगईं ७२ उसकेपीछे प्रसन्नचित्त भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी ने बड़े बल पराक्रमवाले तारकअसुर को मारा ७३ हे राजा बलवान् आठ पद्म एकलाख शूरबीर दैत्योंसेयुक्त महिषासुरको भी कुमारने युद्ध में मारा ७४ फिर उस ईश्वर ने एक करोड़ दैत्योंसमेत त्रिपादको और नानाप्रकार के शस्त्रों को हाथमें रखनेवाले दश निखर्ब दैत्योंसमेत ह्रदोदरको मारा ७५ इसप्रकारसे शत्रुओंके मरनेपर दशोंदिशाओं को पूर्णकरते कुमारके साथियोंने बड़े शब्दकिये और प्रसन्नहोकर नृत्यकरतेहुये चेष्टाओंको करते प्रसन्नहुये ७६ । ७७ हे राजेन्द्र इसकेपीछे शक्ति अस्त्रके चारोंओर को प्रज्वलित होनेसे तीनोंलोक सबओरसे भयभीतहुये ७८ बहुत से शस्त्रोंसमेत हजारों दैत्य स्वामिकार्त्तिकजी के शब्दों सेही भस्महोगये और कितनेही असुर पताकासे घायलहोकर मरगये कितनेही घंटोंके शब्दोंसे पृथ्वीपर भयभीत होकर बैठगये और कितनेही असुर अस्त्रों से खण्डित अंग मरकर गिरपड़े ७९ । ८० इसप्रकार बलवान् बीरपराक्रमी स्वामिकार्त्तिकजी ने उन मारने के अभिलाषी असंख्य दैत्य राक्षसादिकोंको मारा ८१ इसकेपीछे बलिके पुत्र महाबली बाणनाम दैत्यने क्रौंचपर्व्वत में आश्रितहोकर देवताओंके समूहोंको पीड़ावान् किया ८२ तब बड़े बुद्धिमान् स्वामिकार्त्तिकजी उस देवताओंके शत्रु बाणके सम्मुखगये उसने स्वामिकार्त्तिकजी के भयसे क्रौंचपर्व्वत की शरणली ८३ इसकेपीछे बड़े क्रोधयुक्त भगवान् स्वामिकार्त्तिक ने क्रौंचपक्षी के समान गर्जनेवाले उस क्रौंचपर्व्वत को अग्निकी दीहुई शक्ति से घायल किया ८४ जो कि शालबृक्ष के गुद्दोंसे शबलवर्ण भयानक बानर और हाथीवाला और बहुत उड़नेवाले व्याकुल पक्षियोंवाला बिलसे बाहर दौड़नेवाले सर्पोंवाला ८५ गोलांगूल भागे रीछोंके समूहोंसे और कुरंगों के शब्दों से शब्दायमान पृथ्वी और बन रखनेवालाथा ८६ अकस्मात् दौड़नेवाले और भागनेवाले शरभ और सिंहों से शोचग्रस्तदशाको प्राप्तहोनेवाला वह पर्व्वत भी शोभायमानहुआ ८७ उस पर्व्वत के शिखरपर रहनेवाले विद्याधर उछले और शक्तिके संघात शब्दसे घायल किन्नरलोग व्याकुलहुये ८८ इसकेपीछे बिचित्र भूषण रखनेवाले हजारों दैत्य अत्यन्त ज्वलितरूप उस उत्तम पहाड़ से बाहर

को दौड़े ८९ कुमारके पीछे चलनेवालोंने युद्धमें उनको पराजयकरके मारा तब उसक्रोधयुक्त भगवान्ने भी दैत्यराजके पुत्रको ९० उसके भाईसमेत ऐसेमारा जैसे कि देवराजने वृत्रासुरको माराथा शत्रु के बीरों के मारनेवाले महाबली अग्निके पुत्रने बहुत रूपवाला और एक रूपवालाकरके शक्तिसे क्रौंच पर्ब्बतको घायल किया युद्ध में फेंकी हुई शक्ति बारम्बार उसके हाथमें आतीथी ९१ । ९२ इसके अनन्तर ऐसे प्रभाववाले भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी शूरता द्विगुणित योग तेज यश और शोभासे महाप्रभाववाले हुये ९३ उनके हाथसे क्रौंच पर्ब्बत टूटा और हजारों दैत्यलोग मारेगये उस भगवान् देवता ने असुरों को मारकर ९४ सुरों से सेवित होकर बड़े आनन्द को पाया हे भरतवंशी राजा जनमेजय फिर देवताओं के दुन्दुभी और शंख बजे ९५ और देवताओं की हजारों स्त्रियों ने उस योगियों के ईश्वर देवता कुमार के ऊपर पुष्पोंकी उत्तम वर्षाको किया ९६ और सुन्दर दिव्य गन्धियोंको लेकर पवित्र बायुचली गन्धर्वों समेत यज्ञ करनेवाले महर्षियों ने स्तुतिकरी ९७ कोई इस प्रभुको ब्रह्माजीका वह पुत्र निश्चय करते हैं जो कि ब्रह्माजी से प्रकट होनेवाले सब के आदिभूत सनत्कुमार नाम हैं ९८ कोई महेश्वरजीका पुत्र कोई उमा गंगा अग्नि और कृत्तिकाओंका पुत्र कहते हैं ९९ उस योगेश्वर महाबली देवता को एक रूप दो रूप चाररूप और हजारों लाखों रूपवाला कहते हैं १०० हे राजा कार्त्तिकेयजी का यह अभिषेक मैंने तुमसे कहा अब सरस्वती के उत्तम तीर्थ के मूल हेतुरूप वह धर्म की वृद्धि को सुनो १०१ हे महाराज कुमारके हाथसे असुरों के मरनेपर वह अत्यन्त उत्तम तीर्थ दूसरे स्वर्ग के समानहुआ १०२ वहांपर नियत होनेवाले ईश्वर कुमार ने पृथक् २ राज्य शासनों समेत तीनोंलोकों को देवताओं को दिया १०३ इसप्रकार उस तीर्थपर दैत्यों के कुलके नाश करनेवाले वह भगवान् देव सेनापति देवताओं की ओरसे अभिषेक कियेगये १०४ हे भरतर्षभ वह तीर्थ तैजस नामसे प्रसिद्धहै जिस तीर्थपर जलके स्वामी बरुण देवता देवसमूहों से अभिषेक किये गये १०५ बलदेवजी ने उस उत्तम तीर्थपर स्नान करके स्वामिकार्त्तिकजी को पूजकर सुबर्ण वस्त्र और भूषणादिक ब्राह्मणों को दान किये १०६ शत्रुके बीरों के मारनेवाले माधव हलधारी बलदेवजी वहां एकरात्रि निवासकरके उस तीर्थराज महापूज्य तीर्थ को और उसके जल को स्पर्श करके १०७ बड़े प्रसन्नचित्त

हुये हे राजा जो तुमने पूछा कि कैसे स्वामिकार्त्तिकजीका अभिषेक हुआ वह सब मैंने तुमसे कहा १०८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

जनमेजय बोले कि हे द्विजवर्य्य मैंने कुमार के इस अत्यन्त अपूर्व्व अभिषेक को बिधिपूर्व्वक मूल समेत सुना १ हे तपोधन मैं जिसको सुनकर अपने को पवित्र जानताहूं मेरे शरीर के रोमांच प्रसन्नता से पूर्ण हैं और चित्तभी मेरा अत्यन्त प्रसन्नहै २ कुमारके अभिषेक और दैत्यों के नाशको सुनकर मुझ को बड़ा आनन्द हुआ ३ हे बड़े ज्ञानी श्रेष्ठ वैशम्पायनजी इस तीर्थपर प्राचीन समयमें बरुण देवता कैसे २ देवताओं से अभिषेक करायेगये उसको आप कहिये क्योंकि आप सर्व्वज्ञहैं ४ वैशम्पायन बोले हे राजा इस अपूर्व्व वृत्तान्त को जैसे कि पूर्व्व कल्पमें हुआहै उस सबको यथार्थतासे सुनो कि सतयुगके प्रारम्भमें ५ सब देवता बरुण से मिलकर यह बचन बोले कि जैसे देवराज इन्द्र हमको सदैव भयों से रक्षित करताहै ६ उसीप्रकार तुम भी सब नदियों के स्वामीहो हे देवता आपका निवास मकरोंके निवासस्थान सागरमें होय ७ यह नदियोंका स्वामी समुद्र आपके आधीन होगा और आपके बृद्धि क्षय चन्द्रमाके साथहोंगे ८ तब बरुण देवता उन देवताओं से यह बचन बोले कि ऐसाही होय इसकेपीछे सब देवताओं ने समुद्रमें निवास करनेवाले बरुण से मिलकर ९ वेदोक्त कर्मके द्वारा बरुणको जलोंका स्वामी किया फिर देवता लोग जलों के स्वामी बरुणको अभिषेक कराके १० और पूजनादिक करके अपने २ लोकोंको गये तब देवताओं से अभिषेक कियेहुये बड़े यशवान् बरुण ने भी ११ नदी सागर नद और सरोवरों को भी बिधिसे ऐसे पोषणकिया जैसे कि मनुष्य इन्द्रियों को पोषण करता है १२ इसकेपीछे प्रलम्बके मारनेवाले बड़ेज्ञानी बलदेवजी उस तीर्थमें भी स्नान आचमन करके नानाप्रकार के धनका दानदेकर उस अग्नितीर्थ को गये १३ जहांपर कि देवतालोग सबलोकोंके पितामह ब्रह्माजीके समीप नियतहुये और कहनेलगे हे भगवन् वहां अग्नि गुप्तहोगये परन्तु इसका हेतु हमनहीं जानते हैं १४ शमीगर्भ में वह गुप्तहोनेवाले अग्नि दिखाई नहीं पड़ते हैं सो हे निष्पाप

सब गुप्त प्रकट संसार के नाश प्रकटहोने में १५ सब जीवों का नाश न होय हे समर्थ इससे आप अग्निको उत्पन्न करो जनमेजय बोले कि लोकभावन् भगवान् अग्नि किस निमित्त गुप्तहुये १६ और किस रीति से उनको देवताओं ने जाना यह सबवृत्तान्त आप मुझसे कहिये वैशम्पायन बोले कि भृगुजी के शाप से अत्यन्त भयभीत प्रतापवान् १७ भगवान् अग्नि जब शमीगर्भ को पाकर अदृश्यहुये तब इन्द्र समेत सब देवता अग्निके गुप्तहोनेपर १८ अत्यन्त दुःखी हुये और उस गुप्त होनेवाले अग्नि को अन्वेषण किया फिर अग्नितीर्थ को पाकर शमीगर्भ में नियत होनेवाले अग्निको १९ विधिपूर्वक पूजन करके शमीमेंही देखा हे नरोत्तम इन्द्रसमेत वह सब देवता जिनके अग्रवर्त्ती बृहस्पतिजी थे २० उस अग्निको पाकर बहुत प्रसन्नहुये तदनन्तर अपने २ लोकों को गये हे राजा वह अग्नि भृगुजी के शापसे सर्वभक्षी हुये २१ उस तीर्थ में भी ब्रह्मवादियोंके कहनेसे वह ज्ञानी बलदेवजी स्नान करके ब्रह्मयोनि नाम तीर्थको गये २२ जहांपर कि सब लोकों के पितामह प्रभु भगवान् ब्रह्माजी नें संसारकी पूर्व सृष्टिमें देवताओं समेत उस तीर्थमें स्नानकरके २३ विधि के अनुसार देवताओं के तीर्थों को उत्पन्न किया बलदेवजी वहांपर स्नानकर अनेक प्रकारके धनोंका दानकरके २४ कुबेर तीर्थको गये बड़े तपस्वी प्रभु कुबेरजी ने वहां बड़ी तपस्या करके धनोंकी ईश्वरता को पाया २५ हे राजा सब धन और रत्नों की खानें उस तीर्थपर नियत होनेवाले कुबेरजी के पास आकर वर्त्तमान हुईं हे नरोत्तम हलधारी बलदेवजी ने उस तीर्थपर जाकर २६ विधिपूर्वक स्नान करके ब्राह्मणों के अर्थ धनदिया वहां उन्हों ने कुबेरजी के उत्तम वन में उस स्थान को भी देखा २७ जहांपर यक्षराट् महात्मा कुबेरजी ने बड़ी तपस्या करके श्रेष्ठ बरों को प्राप्त किया था २८ सब धनों की ईश्वरता बड़े तेजस्वी रुद्रजी के साथ मित्रता देवभाव लोकपाल का अधिकार और नलकूबर नाम पुत्रको पाया २९ हे महाराज वहांहीं कुबेरजी ने ऊपर लिखेहुये अभीष्टों को पाकर उसी स्थानमें मरुद्गणों समेत अभिषेककोभी प्राप्तकिया ३० और उनको नैर्ऋतनाम राक्षसों का राज्य और वह दिव्यसवारी दीगई जो कि हंसों से सेवित मनके समान शीघ्रगामी पुष्पक बिमान है ३१ बलदेवजी वहां स्नान करके उत्तमदानों को देकर शीघ्रही उसश्वेतानुलेपन नाम तीर्थ को गये ३२ जो कि सबप्रकार के जीवों से

सेवित अत्यन्त शुभ और सदैव फलफूल रखनेवाला बदरपाचन नामहै २३॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिवलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेअष्टादशोऽध्यायः१८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि इसके पीछे वलदेवजी तपस्वी और सिद्धलोगोंसे सेवित उस बदरपाचन नाम उत्तम तीर्थकोगये जहांपर व्रतधारी १ भरद्वाज ऋषि की पुत्री रूपमें पृथ्वीपर अनुपम कुमारी ब्रह्मचारिणी २ बहुत नियमवाली तेजस्विनी श्रुतावतीनाम कन्याने यह निश्चयकरके कि देवराज इन्द्र मेरा पतिहोय महाउग्र तपकिया ३ हे कौरव्य स्त्रियोंसमेत उनतीव्र महादुःखसे करनेके योग्यनियमोंके करनेमें उसकन्याके सौवर्ष व्यतीतहुये ४ हे राजा भगवान् इन्द्र उसके उस चलन भक्ति और तपसे प्रसन्नहुये ५ देवराज प्रभुइन्द्र महात्मा ब्रह्मर्षि वशिष्ठजीके रूपको धारण करके उसके आश्रममें आये ६ हे भरतवंशी उसने उन उग्रतपस्वी तपस्वियों में श्रेष्ठ वशिष्ठजी को देखकर मुनियों से सीखेहुये आचारों से उनका पूजनकिया ७ और बड़ी नम्र मधुरवाणीसे वह नियम धर्मवाली कल्याणी यह वचनवोली हे प्रभु भगवान् मुनियों में श्रेष्ठ आप क्या आज्ञाकरते हो ८ हे सुंदर व्रतवाले अब मैं इन्द्रके प्रभावसे सामर्थ्य के अनुसार जो आप चाहेंगे सो सब दूंगी परन्तु किसीदशामेंभी तुझको अपना हाथ न दूंगी ९ हे तपोधन तीनोंभुवनों का ईश्वर इन्द्र व्रत नियम और तपस्याकेद्वारा मुझसे प्रसन्न करनेके योग्य है १० हे भरतवंशी इसप्रकारके वचन सुनकर भगवान् देवता मन्दमुसकानकरता उसको देखकर और उसके नियमको जानकर बड़ीमधुरवाणीसे यहबचनबोला ११ हे सुंदरव्रतवाली कल्याणिनि मुझको वह सब विदितहै जिस प्रयोजनकेनिमित्त यह कर्मका प्रारम्भ तेरे चित्तमें वर्त्तमान हुआहै और उग्रतपको करती है १२ हे सुन्दरमुखी जैसा तेरे चित्तमें विचारहुआहै वह सबहोगा और जैसा तैंने विचार किया है वह तपस्याकेही द्वारा प्राप्तहोता है हे शुभमुखी जैसे कि देवताओं के दिव्य लोकहैं वह तपसे प्राप्त होनेके योग्य हैं बड़े सुखकामूल तपहै १३। १४ हे कल्याणिनि इसप्रकार मनुष्य घोरतपस्याकरके अपनेशरीरको त्यागकर देवभाव को पाते हैं अब तू मेरे वचनको सुन हे सुंदरव्रत और ऐश्वर्य्यवाली तुम इनपांच बदरीफलों को पकाओ भगवान् इन्द्र इतना कहकर चलेगये १५। १६ और उस

ने भी उसकल्याणी से पूछकर वहां जपको जपा इसकेपीछे उसआश्रमसे थोड़ी दूरपर वह उत्तम तीर्थ १७ तीनोंलोकों में इन्द्रतीर्थनाम से प्रसिद्ध हुआ हे बड़ाई देनेवाले उस देवराज भगवान् इन्द्रने उसकी परीक्षा के लिये १८ बदरफलोंका परिपाकहोना बन्द करदिया हे राजा तब वह बड़ीतपस्विनी वार्त्तालाप में चतुर थकावटसे रहित १९ उसमेंही प्रवृत्त पवित्र शरीरवालीने अग्निमें लकड़ी रक्खी हे राजाओं में श्रेष्ठ उसबड़े व्रतवाली ने उन बदरफलोंको पकाया २० और परिपक्व करतेहुये उस पकानेवाली का बहुत समय व्यतीतहुआ पर वह फल नहीं पके और दिन समाप्तहोगया २१ इसका जितना इंधनका ढेरथा वह सब अग्नि में भस्महोगया फिर उसने अग्निको इंधनसे खाली देखकर अपने शरीरको भी भस्म करदिया २२।२३ प्रथम अपने दोनोंचरणोंको अग्निमें डालकर फिर उस निष्पापने जलेहुये चरणोंको आगे आगे बढ़ाना प्रारम्भकिया महर्षिकी इच्छा से कठिनकर्म्म करनेवाली निर्दोषने जलतेहुये चरणों से कुछभी दुःखसे चिन्ता नहीं की २४ पैरों के जलने पर भी उसके चित्तमें उदासीनता और रूपान्तरता नहींहुई शरीरको अग्निसे प्रज्वलितकरके जलमें वर्त्तमान होनेकेसमान प्रसन्न थी २५ हे भरतवंशी उसका वह बचन बारम्बार हृदयमें वर्त्तमान हुआ कि सब दशामें बदरफल पकाने के योग्यहैं उस शुभकन्याने २६ महर्षि के उस बचनको चित्तमें नियतकरके बदरफलोंको पकाया परन्तु वह नहींपके २७ भगवान् अग्निने आप उसके चरणोंको जलाया तबभी उसके चित्तमें किसीप्रकार के दुःख का लवलेश नहींहुआ २८ इसकेपीछे तीनों भुवनका ईश्वर इन्द्र उसके कर्मको देखकर प्रसन्नहुआ और अपना मुख्यरूप कन्याको दिखलाया २९ और उसदृढ़ व्रतवाली कन्यासे बोले कि हे शुभे मैं तेरे नियम भक्ति और तपस्या से प्रसन्न हूं ३० हे शुभदर्शन अब तेरा अभीष्ट सिद्धहोगा हे महाभाग तू इस शरीर को त्यागकरके स्वर्ग में मेरेसाथ सुखपूर्व्वक निवासकरेगी ३१ हे सुन्दर भृकुटीवाली यह तेरा बदरपाचननाम उत्तम तीर्थ सबपापोंका दूरकरनेवाला लोकमें विख्यात होकर नियतहोगा ३२ जो कि तीनोंलोकोंमें विख्यात और ब्रह्मर्षियों से स्तूयमानहै हे महाभाग निष्पाप निश्चय करके इस शुभ और उत्तम तीर्थपर ३३ सप्तर्षि अरुन्धतीको त्यागकरके हिमालय पर्व्वतपर गये इसके पीछे वह बड़े महाभाग तेजव्रतधारी वहां जाकर ३४ आजीविका के निमित्त उत्तम फलमूलों के

लेनेको वहां ठहरे तब उसहिमालयके बनमें उनजीविकाके अभिलाषी ऋषियों के निवास करनेपर ३५ बारहबर्षका दुर्भिक्ष बर्त्तमान हुआ तब वह सातोंतपस्वी वहां आश्रम को बनाकर ठहरे ३६ उस समय वह कल्याणिनी अरुन्धती भी सदैव तपस्या करने में प्रवृत्तहुई फिर अरुन्धती को तीव्र नियममें नियत देखकर ३७ अत्यन्त प्रसन्नमूर्त्ति सबबरों के देनेवाले शिवजी महाराज आपहुँचे अर्थात् बड़े यशवान् देवता महादेवजी ब्राह्मणका रूप धारण करके ३८ उसके पृष्ठभाग में जाकर बोले कि हे शुभस्त्री मैं भिक्षा को चाहता हूं तब उस सुन्दर दर्शनने उस ब्राह्मणको उत्तरदिया ३९ कि हे वेदपाठी अनाजका ढेर नाशहुआ यहां आप बदरफलों को भक्षणकरो यहबात सुनकर महादेवजी ने कहा कि हे सुन्दरब्रत तुम इनबदरफलों को पकाओ ४० इसप्रकार शिवजी के बचन को सुनकर उस यशस्विनी ने ब्राह्मणके हितके लिये उन बदरफलों को प्रकाशित अग्निपर चढ़ाकर पकाया ४१ और चित्तरोचक धर्मकी वृद्धि के हेतुरूप दिव्य कथाओं को भी सुनाया उतने अन्तर में वह बारहवर्ष का दुर्भिक्ष समाप्त हुआ ४२ उस भोजन न करनेवाली और शुभकथा सुनानेवाली अरुन्धती का वह बड़ा भयानक समय एक दिनके समान व्यतीत हुआ ४३ इस के पीछे मुनि लोग पर्वतसे फलोंको लेकर आगये इसहेतुसे वह प्रसन्नचित्त भगवान् शिवजी अरुन्धतीसे बोले ४४ कि हेधर्मकी जाननेवाली मैं तेरे धर्मरूपीतप और नियमसे प्रसन्नहूं अब तुम प्रथमके समान इन ऋषियोंके पासजाओ ४५ तदनन्तर भगवान् हर ने अपने रूपका अच्छे प्रकारसे दर्शन दिया और उसके बड़े कर्म्मको ऋषियोंके आगे वर्णन किया ४६ कि आपलोगोंने हिमवान् पर्व्वत पर जो तप प्राप्तकिया और इसकाभी जो तपहै हे ब्राह्मणो वह तुम्हारा तप इसके तपकी समान मेरी बुद्धि से नहीं है ४७ इस तपस्विनीने बड़ी कठिनतासे करनेके योग्य तपको तपाहै इस भोजन न करनेवाली और बदर पकानेवालीने बारहबर्ष व्यतीत किये ४८ इसके पीछे शिवजी उस अरुन्धती से फिर बोले कि हे कल्याणिनि जो तेरे हृदय में इच्छाहोय उसबरको मांगो ४९ तब वह रक्त और दीर्घ नेत्र रखनेवाली अरुन्धती सप्तर्षियों की सभा में देवता शिवजी से बोली कि हे भगवन् जो आप मुझपर प्रसन्नहैं तो यह तीर्थ अपूर्व होजाय ५० अर्थात् सिद्ध देवर्षियों का प्यारा बदरपाचन नामसे बिख्यात होय हे देवेश इसप्रकार से इस

तीर्थपर तीनरात्रि निवास करनेवाला पवित्र मनुष्य ५१ व्रतके द्वारा बारहबर्षके व्रतके फल को पावे तब देवताने उस तपस्विनी अरुन्धती से कहा कि ऐसाही होय ५२ तदनन्तर सप्तर्षियों से स्तूयमान होकर देवता शिवजी स्वर्ग को गये ऋषियों ने भी उस अरुन्धती को देखकर बड़े आश्चर्य्य को पाया ५३ जो कि थकावट से रहित विपरीत रूप और क्षुधा पिपासासे युक्तथी इसरीति से उस अत्यन्त पवित्र अरुन्धती ने बड़ी सिद्धिको पाया ५४ हे स्तुतिमान् व्रतयुक्त महाभाग कल्याणिनि जिसप्रकारसे कि तुमने मेरे निमित्त इसव्रतमें अधिकताकरी ५५ हे श्रेष्ठ कल्याणिनि इसप्रकार के तेरे नियमसे अत्यन्त प्रसन्नहोकर मैं यह मुख्यबर तुझको देताहूं ५६ महात्मा शिवजीने जो वर उस अरुन्धतीको दिया है कल्याणिनि मैं उसके प्रभाव और तेरे तेजसे ५७ यहां बिधिपूर्बक श्रेष्ठ बरको फिर कहताहूं अर्थात् जो अत्यन्त सावधान मनुष्य एकरात्रि इसतीर्थ में निवास करेगा ५८ वह स्नानके फलसे अपने शरीरको त्यागकर बड़े दुष्प्राप्य लोकों को पावेगा प्रतापवान् भगवान् इन्द्रदेवता ५९ श्रुतावतीको यह बचन कहकर अपने पवित्र स्वर्गको गये हे भरतर्षभ राजा जनमेजय बज्रधारी इन्द्रके जाने पर ६० उस स्थानमें पवित्र सुगंधित दिव्य पुष्पोंकी बर्षाहुई और बड़े शब्दों से देवताओंने दुन्दुभी बजाई ६१ और पवित्र सुगन्धवाली शीतल मन्दवायु चली और उस शुभस्त्रीने इन्द्रकी स्त्रीभावको पाया हे अजेय वहस्त्री उग्रतपके द्वारा उसको पाकर उसकेसाथ क्रीड़ा करनेवाली हुई ६२ जनमेजय बोला हे भगवन् उस स्त्री की माता कौनथी और उसने कहां पोषणपाया हे द्विजवर्य्य मुझको सुनने का बड़ा उत्साह है इसलिये उसको आप वर्णन कीजिये ६३ बैशम्पायन बोले कि बड़े दिव्यनेत्रवाली एकसमय आतीहुई घृताची अप्सराको देखकर महात्मा ब्रह्मर्षि भारद्वाजजी का बीर्य पतन हुआ ६४ और उसजापकों में बड़ेश्रेष्ठने अपने गिरेहुये बीर्यको हाथमेंलिया तब एक दोने में गिरपड़ा उसमें वह कन्या उत्पन्नहुई ६५ उस महामुनि तपोधन भारद्वाज मुनिने जातकर्मादिक सब क्रियाओंको करके उसका नामकरणकिया ६६ धर्मात्माने देवर्षियोंके समूहों की सभामें श्रुतावती उसकानाम रक्खा उसको अपने आश्रममें छोड़कर हिमालयके बनको गये ६७ तब वह महानुभाव बलदेवजी वहां भी स्नान आचमन करके बहुतसे उत्तम ब्राह्मणोंको धनोंका दान देकर चित्तसे बड़े सावधान होकर इन्द्रके पासगये ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिएकोनविंशोऽध्यायः १९॥

बीसवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले कि इसके पीछे यादवों में अत्यन्त श्रेष्ठ बलदेवजी ने इन्द्र तीर्थमें जाके उसमें विधिपूर्व्वक स्नानकरके ब्राह्मणोंके निमित्त धन रत्नादिकका दानकिया १ वहां पर उस देवेन्द्रने सौयज्ञसे पूजन कियाथा तब उसने बृहस्पति जीको बहुतसा धनदियाथा २ अर्थात् वहां इन्द्रने अर्गला रहित कपाटोंके रखने वाले नानाप्रकार के धन और दक्षिणा रखनेवाले यज्ञों की वैसीही तैयारी करी जैसी कि वेदोंके पूर्णज्ञाता ऋषियोंने कहीथी ३ हे भरतर्षभ बड़े तेजस्वी इन्द्रने उन यज्ञोंको सौबार बिधिपूर्व्वक पूर्णकिया इसीहेतुसे उसकानाम शतक्रतु प्रसिद्धहुआ ४ उसके नामसे वह तीर्थ जो कि कल्याणरूप धर्मकी वृद्धिका हेतु सब पापोंसे छुटानेवाला और प्राचीनहै इन्द्रतीर्थ नामसे बिख्यातहुआ ५ मुशलधारी बलदेवजी वहांभी विधिपूर्व्वक स्नान आचमन करके उत्तम भोजन वस्त्रादि से ब्राह्मणोंको पूजकर ६ वहांसे उस रामतीर्थ को गये जोकि तीर्थोंमें उत्तम और शुभहै और जहां पर महाभाग भार्गव परशुरामजीने ७ वारम्बार उस पृथ्वी को जिसमें कि उत्तम २ क्षत्री मारेगये बिजयकरके मुनियोंमें श्रेष्ठ उपाध्याय कश्यपजीको आगेकरके ८ सौ अश्वमेधोंसे पूजनकिया और समुद्रोंसमेत सब पृथ्वी को दक्षिणामें दिया ९ नानाप्रकारके रत्न गौ हाथी घोड़े दास दासी और भेड़ बकरियों से युक्त वहुत प्रकारके दानोंको देकर बनकोगये १० वहां पवित्र और श्रेष्ठ देवर्षियोंके गणोंसे सेवित तीर्थपर मुनियोंको दण्डवत् करके यमुना तीर्थ पर गये ११ हे राजा जहां पर अदितिके पुत्र महाभाग श्वेतवर्ण बरुणने राजसूय यज्ञको प्राप्त किया १२ वहां शत्रुओं के बीरों के मारनेवाले वरुणने युद्धमें नरलोकबासी जीव और देवताओं को भी विजय करके उत्तम यज्ञकी तैयारी की १३ उस उत्तम यज्ञके जारी होनेपर देवता और दानवों का वह युद्ध जारी हुआ जो कि तीनोंलोकके भयको उत्पन्न करनेवाला था १४ । १५ हे जनमेजय यज्ञों में श्रेष्ठ राजसूयके समाप्त होनेपर क्षत्रियों में बड़ा घोरयुद्ध जारीहुआ वहां भी अभीष्ट बस्तुओं के देने में समर्थ बलदेवजी महर्षियों से स्तुतिमान होकर वहांसे उस आदित्य तीर्थको गये १६ । १७ हे राजर्षभ जहांपर ज्योतिरूप भगवान् सूर्य्य ने पूजन करके प्रकाशित पदार्थोंके राज्य और भावको पाया १८ हे

शत्रुसंतापी राजा जनमेजय उस नदी के तटपर इन्द्रादिक सब देवता विश्वेदेवा मरुद्गण, गन्धर्व्व, अप्सरा १९ व्यासजी, शुकदेवजी, मधुदैत्यसंहारी श्रीकृष्णजी यक्ष राक्षस और पिशाचभी निवासी हुये २० यह और अन्य २ हजारों सरस्वती के उस कल्याणरूप पवित्र तीर्थपर योग सिद्धहुये २१ हे भरतर्षभ पूर्व समयमें विष्णुजीने मधुकैटभनाम दैत्यको मारकर उस अत्यन्त पवित्र तीर्थमें स्नानकरके २२ और व्यासजीने भी वहीं स्नानकरके परम योगको पाकर सिद्धीको पाया २३ बड़ेतपस्वी असित और देवलने भी उस तीर्थपर परम योगमें नियत होकर ऋषि योगको पाया २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिविंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायनबोले कि पूर्वसमयमें असित और देवलऋषि जो कि धर्मात्मा और तपरूप धनरखनेवाले गृहस्थ धर्म में नियतहोकर उसीतीर्थपर निवास करनेवाले हुये १ यह दोनोंऋषि सदैव धर्मकरनेवाले पवित्र जितेंद्री दण्डकेत्यागी महातपस्वी मन वाणी और शरीरसे सबजीवों में समानदृष्ट २ क्रोधरहित निन्दास्तुतिको समान जाननेवाले प्रिय अप्रियमें समान बुद्धिवाले यमराजकेसमान समदर्शी ३ सुवर्ण लोहको तुल्य जानने और देखनेवाले महातपस्वी और देवताओं समेत ब्राह्मण और अतिथियोंको सदैव पूजते ४ सदाब्रह्मचर्य्य में प्रवृत्त और सदैव धर्मकोही श्रेष्ठ माननेवालेथे हे राजा इसकेपीछे महाभाग बुद्धिमान् सावधान महातेजस्वी जैगीषव्यनाम मुनि संन्यासी उसतीर्थपर आके योगमें नियतहोकर देवल के आश्रममें बसे ५।६ हे महाराज वह महातपस्वी सदैव योगमें नियत और सिद्ध था देवलने वहां निवास करनेवाले उस महामुनि जैगीषव्यको ७ देखतेही अतिथिधर्म्म से युक्त किया हे महाराज इसीरीति से उन दोनों का बहुतसा समय व्यतीतहुआ ८ देवल ने मुनियों में श्रेष्ठ जैगीषव्य को नहीं देखा हे जनमेजय तब वह बुद्धिमान् धर्म्मज्ञ संन्यासी ९ आहार और भिक्षा के समयपर देवल के पासआकर नियतहुआ तब देवलऋषिने उस भिक्षुकरूपसे आनेवाले महामुनि को देखकर बड़ी प्रतिष्ठापूर्व्वक अत्यन्तप्रीति प्रकटकी १० हे भरतवंशी सावधान देवलऋषि ने ऋषियोंकी बताई विधिसे सामर्थ्य के अनुसार बहुत बर्षोंतक उस

का पूजनकिया दैवयोगसे एकसमयपर देवलऋषिको ११। १२ उस महातेजस्वी मुनिके देखने से यह बड़ी चिन्ताहुई कि मुझ को इस मुनिका पूजन करतेहुये बहुतबर्ष व्यतीत हुये १३ परन्तु आजतक इस उदासीनकर्म्मी भिक्षुक ने कभी कोईबात नहीं कही इसप्रकार बिचारकरते वह अन्तरिक्षचारी श्रीमान् देवलऋषि कलश को लेकर महासमुद्र को गये हे भरतबंशी इसकेपीछे नदियों के स्वामी समुद्र को जातेहुये उस धर्मात्माने १४। १५ प्रथम गयेहुये जैगीषव्य को देखा उसको वहां देखकर उस बड़े तेजस्वी ने आश्चर्य्य करके चिन्ताकरी १६ कि यह भिक्षुक कैसे समुद्रको आया और कैसे इसने स्नानकिया तब उस महर्षिने ऐसे चिन्ताकरी १७ और विधिवत् समुद्र में स्नानकरके उस पवित्र ने जपको जपा जब और संध्या करनेवाले श्रीमान् देवलऋषि १८ जलसे पूर्णकलशको लेकर अपने आश्रमको आये हे जनमेजय फिर अपने आश्रम स्थान में प्रवेश करते हुये उस मुनिने १९ वहां आश्रममें बैठेहुये जैगीषव्यको देखा और उस समय परभी जैगीषव्यने किसीप्रकार से कुछ नहीं कहा २० फिर वह महातपस्वी काठ रूप आश्रम स्थान में निवासी हुआ उस देवलऋषि ने उसको समुद्रके समान समुद्रके जलमें स्नान कियाहुआ देखकर २१ प्रथमही आश्रममें बैठाहुआ देखा हे राजा तब बुद्धिमान् असित देवलने चिन्ताकरी २२ अर्थात् उस मुनियों में श्रेष्ठने जैगीषव्यके योगसे उत्पन्नहोनेवाले तपको देखकर बड़ी चिन्ताकरी २३ कि मैंने तो इसको समुद्रपर देखाथा अब यह मुझसे प्रथमही इस आश्रममें कैसे आगया हे राजा तब वह मन्त्र बिद्यामें पूर्ण देवलमुनि इसप्रकार बिचारकरते २४ जैगीषव्य संन्यासीकी परीक्षाके अर्थ उसआश्रमसे ऊपर आकाशकी ओर उछले २५ अन्तरिक्षचारी और सावधान सिद्धोंको देखते उस देवलऋषि ने जैगीषव्य को उन सिद्धोंसे पूजित और प्रतिष्ठावान् देखा २६ तदनन्तर उस क्रोधयुक्त दृढ़ व्रतवाले असितदेवलने वहांसे चलनेवाले जैगीषव्यको देखा २७ उसने वहांसे उसको पितृलोकमें जानेवाला देखा और पितृलोकसे यमलोकमें भी जानेवाला उसको देखा २८ और उन लोकोंसे भी उछलकर चन्द्रलोक में जानेवाला उस महामुनि जैगीषव्यको देखा २९ फिर अच्छे यज्ञ करनेवालों के शुभलोकों में भी उसको उछलकर जानेवाला देखा और वहांसे भी अग्निहोत्रियों के लोकों को उछले ३० जो तपोधनऋषि अमावस और पूर्णमासीकेदिन यज्ञों से पूजन करते

हैं अथवा पशुओं के यज्ञ करनेवालोंके लोकोंसे निर्म्मल और देवपूजित लोक को जानेवाले मुनिको उस बुद्धिमान् देवलने देखा जो तपोधन कि चातुर्मास्य नाम नानाप्रकारके यज्ञोंसे पूजनकरते हैं ३१।३२ वहांसे उनके लोकोंमें और अग्निष्ठोम यज्ञकरनेवालों के लोकोंको जानेवाले मुनिकोदेखा जो तपोधन अग्निष्टुतयज्ञसे पूजन करते हैं ३३ उनके जो लोकहैं उस लोकमें भी जातेहुये मुनिको देवलऋषिने देखा इसीप्रकार बहुत सुवर्णवाले यज्ञोंमें श्रेष्ठ बाजपेय यज्ञको ३४ जो बड़े ज्ञानी करते हैं उनके भी लोकोंमें जातेहुये मुनिको देखा जो लोग राजसूय और पुण्डरीक यज्ञोंसे पूजन करते हैं ३५ उनके लोकों मेंभी उस जैगीषव्यको देवलनेदेखा इसीप्रकार जो नरोत्तमपुरुष यज्ञोंमेंश्रेष्ठ अश्वमेध और नरमेध को करते हैं ३६ उनके भी लोकोंमें उसकोदेखा जो लोग कठिनतासे प्राप्तहोनेवाले सर्वमेध और सूत्रामणि यज्ञको करते हैं ३७ उनके लोकों में भी देवलने उस जैगीषव्यको देखा हे राजा जो लोग द्वादशाह नाम नानाप्रकारके यज्ञोंसे पूजन को करते हैं ३८ उस देवलने उस जैगीषव्यको उनके भी लोकों में देखा इसके पीछे असित देवलने अदितिके पुत्र मित्रावरुण और सूर्य्यादिक की ३९ सालोक्यता पानेवाले जैगीषव्यको देखा ग्यारहरुद्र अष्टवसु और बृहस्पतिजी का जो स्थानहै ४० असित देवलने उन सब लोकोंको जैगीषव्य से उल्लंघन किया हुआ देखा इसकेपीछे गोलोकको चढ़कर ब्रह्मयज्ञ करनेवालोंके लोकोंकोगया ४१ फिर असित देवलने अपने तेजसे तीनोंलोकोंको त्यागकर अन्यलोकोंके जानेवाले जैगीषव्यको देखा ४२ और पतिव्रताओं के भी लोकों में जानेवाले उस मुनिको देखा तब असित देवलने उस मुनियोंमें श्रेष्ठ योगमें नियत अन्तर्द्धान होनेवाले जैगीषव्य को नहीं देखा ४३ हे शत्रुविजयी जनमेजय उस महाभाग देवलने जैगीषव्यके ४४ प्रभाव व्रतकी उत्तमता और योग की बड़ीसिद्धी को विचार किया तब असित देवलने लोकोंमें श्रेष्ठ सिद्धोंसे पूछा ४५ अर्थात् उस पण्डित देवलने हाथ जोड़कर उन ब्रह्मयज्ञ करनेवालों से कहा कि मैं अब उस जैगीषव्यको नहीं देखताहूं ४६ उस बड़े तेजस्वी का सबवृत्तान्त वर्णन कीजिये मुझको उनके वृत्तान्त सुननेकी बड़ी उत्कण्ठा है सिद्ध बोले कि हे दृढ़व्रतवाले देवल हम तुमसे इसका वृत्तान्त कहते हैं तुम मनलगाकर सुनो निश्चय करके वह जैगीषव्य सनातन ब्रह्मलोकको गया ४७ वैशम्पायन बोले कि वह असित

देवल उन ब्रह्मयज्ञ करनेवाले सिद्धों के वचन को सुनकर शीघ्र ऊपर को चला परन्तु गिरपड़ा ४८ इसके पीछे वह सब सिद्धलोग देवलसे बोले कि हे तपोधन बलरखनेवाले देवल उस ब्रह्मलोकमें जानेको तेरीगति नहीं है हे वेदपाठी जिस को कि जैगीषव्यने पाया ४९ वैशम्पायनने कहा कि फिर वह देवलजी उनसिद्धों के बचन को सुनकर क्रमपूर्व्वक अपने लोकों को उतरे ५० और पक्षी के समान अपने पवित्र स्थान आश्रमको आये आश्रम में प्रवेश करनेवाले उस देवलने जैगीषव्य को देखा ५१ फिर देवलने जैगीषव्य के योगसे उत्पन्न होने वाले तपके प्रभावको देखकर धर्मयुक्त बुद्धिके द्वारा विचार किया ५२ और नम्रता से झुकेहुये उस देवलने महात्मा महामुनि जैगीषव्य के पास जाकर यह बचन कहा ५३ हे भगवन् मैं मोक्षधर्म्म में नियतहोना चाहताहूं तब जैगीषव्य ने उसके उस बचनको सुनकर उपदेश किया ५४ अर्थात् शास्त्रके द्वारा योग और कार्य्याकार की परम विधि को उपदेश किया इसके पीछे बड़े तपस्वी ने संन्यासमें प्रवृत्तचित्त उसदेवलको देखकर ५५ वेदोक्त कर्मोंके द्वारा उसकी सब क्रियाओं को किया इसके पीछे पितर लोगोंसमेत सब जीवधारी उस संन्यास में बुद्धि लगानेवाले देवलको ५६ देखकर अत्यन्त रोदन करके कहनेलगे कि हम को कौन अव भागदेगा इसप्रकार दशोंदिशाओं में बचन कहनेवाले दुःखित वचनोंको सुनकर देवलने ५७ मोक्षके त्याग करनेको चित्त किया हे भरतवंशी फिर पवित्र फलमूल ५८ और हजारों औषधियां भी रोदन करनेलगीं कि निश्चयकरके वह नीच और दुर्बुद्धी देवल फिर हमको काटेगा ५९ जोकि सब जीवोंको निर्भयता देकर सावधान नहीं होताहै इसके पीछे मुनियों में श्रेष्ठ देवलने अपनी बुद्धि से फिर बिचार किया ६० कि मोक्ष और गृहस्थ धर्म इन दोनों में से कौनसा धर्म कल्याणका करनेवाला है हे राजाओं में श्रेष्ठ उस देवलने चित्तसे निश्चय करके ६१ गृहस्थ धर्म्मको त्यागकर मोक्ष धर्म्म को स्वीकार किया फिर देवलने निश्चयसे उनको और अन्य २ सब बातोंको विचारकर ६२ परमसिद्धी समेत परमयोग को पाया इसके पीछे उन देवताओं ने जिनमें कि अग्रवर्त्ती बृहस्पतिजीथे आकर ६३ जैगीषव्यकी और इसतपस्वी के तपकी प्रशंसाकरी इसके अनन्तर ऋषियों में श्रेष्ठ नारदजी देवताओं से बोले ६४ कि जैगीषव्यमें तप नहीं है जोकि असितको आश्चर्ययुक्त करताहै इसप्रकारसे क-

हनेवाले वह देवता उसवीरसे बोले ६५ कि ऐसा नहीं है फिर महामुनि जैगीषव्य की प्रशंसा करतेहुये बोले कि प्रभाव में इससे बड़ा और समान भी कोई नहीं है ६६ इस महात्मा के तेज तप और योग के समान कोई नहीं है धर्मात्मा जैगीषव्य और असित देवल भी ऐसेही प्रभाववाले हैं ६७ इन दोनों उत्तम महात्माओं का यह श्रेष्ठ आश्रम और तीर्थ है इसके पीछे वह परमार्थकर्मी महात्मा बलदेवजी उस तीर्थपर भी स्नान आचमनकर ब्राह्मणों को बहुत धनदेकर धर्म्म को पाकर चन्द्रमा के तीर्थको गये ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले हे भरतबंशी जहांपर चन्द्रमाने राजसूययज्ञ से पूजनकिया उस तीर्थपर तारकासुर से सम्बन्ध रखनेवाला बड़ा युद्धहुआ १ ज्ञानी धर्मात्मा बलदेवजी वहां भी स्नान आचमनकरके दानों को देकर सारस्वतमुनिके तीर्थ को गये २ वहां पूर्बकालमें सारस्वतमुनिने बारहबर्षके दुर्भिक्ष में उत्तम ब्राह्मणों को कैसे वेदपढ़ाया बैशम्पायन बोले हे महाराज पूर्ब्बसमय में एक बुद्धिमान् ब्रह्मचारी जितेन्द्री दधीचि नामसे विख्यात मुनिथे ३।४।५ हे समर्थ उसकी तपस्या से इन्द्र सदैव भयभीत रहताथा और उसको नानाप्रकार के फलोंसे लुभाताथा परन्तु वह किसी फलसे भी नहीं लोभितहुये ६ इसके पीछे इन्द्रने उसके लुभाने के लिये दिव्य पवित्र और दर्शनीय अलंबुषानाम अप्सराको उनके पासभेजा ७ हे महाराज वह प्रकाशमान अप्सरा सरस्वतीपर देवताओं का तर्पणकरनेवाले उस महात्माके सम्मुखहुई ८ उस दिव्यशरीरवाली अप्सराको देखकर उस शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषिकावीर्य स्खलितहोकर सरस्वती में गिरा उस नदीने उस को धारणकिया ९ हे पुरुषोत्तम उसनदीने ऋषिकेवीर्यको अपनी कुक्षिमें धारणकिया अर्थात् उस नदीने अपने पुत्रार्थ उस गर्भको अपने उदर में धारण किया १० हे प्रभु फिर कुछ समयपीछे उस श्रेष्ठ नदीने पुत्रको भी उत्पन्नकिया और पुत्रकोलेकर उसऋषिके पासगई ११ हे राजेन्द्र वह नदी ऋषियों की सभा में उस श्रेष्ठ मुनिको देखकर उनके उस पुत्रको उनको देती हुई यहबचन बोली १२ हे ब्रह्मर्षि यह तेरापुत्रहै मैंने तेरीभक्तिसे अपनेमें इसको धारणकिया अर्थात्

पूर्व्वकाल में अलंबुषा अप्सराको देखकर जो तेरावीर्य्य पतन होगयाथा १३ उस को हे ब्रह्मर्षि मैंने भक्तिसे और इस निश्चयसे कि तेरा यहतेज नाशको न पावे इसहेतुसे उस गर्भको अपनी कोखमें धारणकिया १४ मेरे दियेहुये इस निर्दोष अपने पुत्रको लो इस प्रकारके सरस्वती के बचन को सुनकर ऋषिने उस पुत्र को लेकर बड़ा आनन्दमाना १५ तब उस श्रेष्ठ ब्राह्मणने बड़े प्रेमसे अपने पुत्र के मस्तक को सूंघा और बड़ी बिलम्बतक उस श्रेष्ठ मुनिने अपने पुत्र को गोदी में लेकर १६ सरस्वती को यह बर दिया कि हे सुन्दरि ऐश्वर्य्यवान् पितरों समेत विश्वेदेवा गन्धर्व्व अप्सराओं के गण १७ तेरे जलसे तृप्तहोकर आनन्द को पावेंगे यह कहकर बचनों से भी उस महानदी को प्रसन्न किया १८ हे राजा उस प्रसन्न और अत्यन्त आह्लादचित्त ने जैसे प्रकारसे प्रसन्न किया उस को सुनो हे महाभाग श्रेष्ठ तुम ब्रह्माजी के सरोवर से निकली हो १९ हे उत्तम नदी तुमको प्रशंसनीय व्रतवाले मुनिलोग जानते हैं हे प्रियदर्शन तुम सदैव मेरा प्रियकरनेवाली भी हो २० हे सुन्दरी इसी हेतु से तेरा बड़ा सारस्वत नाम होगा और तेरा पुत्र लोकभावन होकर तेरेही नाम से विख्यात होगा २१ अर्थात् यह महातपस्वी सारस्वत नामसे प्रसिद्धहोगा यह महाभाग सारस्वत बारह बर्ष के दुर्भिक्ष में उत्तम ब्राह्मणों को २२ वेदपढ़ावेगा हे शुभ महाभाग सरस्वती तुम मेरी कृपा से सदैव पवित्र नदियों से भी महापवित्र नदी होगी हे भरतर्षभ इसप्रकार उस ऋषि से स्तूयमान वह महानदी बरको पाकर २३ । २४ बड़े आनन्दपूर्वक अपने पुत्रको लेकर चलीगई उसी समय में देवता और दानवों में परस्पर बिरोध हुआ २५ इस हेतु से इन्द्र ने उनके मारनेवाला अस्त्र बहुत ढूंढ़ा परन्तु ऐसा अस्त्र कोई न मिला जोकि असुरों के मारनेको समर्थ होय तब इन्द्र ने देवताओं से कहा कि दधीचिऋषिके अस्थिके बिना किसी अस्त्रसे भी देवताओं के शत्रु महाअसुरों के मारने को मैं समर्थ नहीं होसक्ता इसकारण से हे उत्तम देवता लोगो उस उत्तम ऋषिसे प्रार्थना पूर्वक यह याचनाकरो २६ । २७ । २८ कि हे दधीचि आप हमपर कृपाकरके अपने हाड़ोंको दो उन आपके हाड़ों से हम अपने शत्रुओं को मारेंगे हे कौरव्य तब उसीप्रकार से उन देवताओं से याचना किये हुये उस महाश्रेष्ठ ऋषि ने श्रेष्ठरीति से २९ बिचार किये बिनाही अपने प्राणोंको त्याग किया और अबिनाशी लोकोंको पाया ३० उसके प्राण

त्यागके पीछे अत्यन्त प्रसन्न इन्द्रने उसके हाड़ों से नानाप्रकार के दिव्य अस्त्र शस्त्रों को तैयार करवाया ३१ अर्थात् वज्र, चक्र, गदा और ऐसे भारी दण्डों को जोकि तपसे पूर्ण और श्रेष्ठ थे ब्रह्माजी के पुत्र संसार के प्यारे भृगुऋषि से निर्मित बड़े तेजस्वी शरीर धारण करनेवाले संसारमें अद्वितीय पर्व्वताकार हृष्ट पुष्ट शरीर बड़े लम्बे महान्ता से युक्त भरतबंशी भगवान् इन्द्र ने उस ब्रह्मतेज से उत्पन्न होनेवाले तेज संयुक्त शव्दायमान छोड़ेहुये वज्रसे ३२।३३।३४।३५ आठसे दश दैत्य दानवों के बड़े बीरोंको मारा हे राजा इसकेपीछे अत्यन्त भयकारी बड़े समय के अन्त होनेपर ३६ बारहबर्ष का दुर्भिक्ष वर्त्तमान हुआ उस बारहबर्ष के दुर्भिक्ष में महर्षीलोग ३७ क्षुधासे ब्याकुल आजीविका के निमित्त दशों दिशाओं को चलेगये तब सारस्वत मुनिने दिशाओं में भागनेवाले उन ऋषियोंको देखकर ३८ चलनेका बिचारकिया उससमय सरस्वती उनसे बोली कि हे पुत्र यहां से तुमको जाना योग्य नहीं है मैं सदैव तेरे आहारके निमित्त ३९ अत्यन्त उत्तम मछलियों को दूंगी हे भरतबंशी ऐसे माताके बचन सुनकर उस ऋषिने उसीप्रकारसे देवता और पितरोंको तृप्तकिया ४० पुराण और वेदों को धारणकरते उस ऋषिने सदैव आहार किया फिर उस दुर्भिक्षके समाप्त होने पर महर्षियों ने ४१ वेदज्ञताके कारण परस्पर पूंछा हे राजेन्द्र क्षुधार्त्त और चारों ओरको दौड़नेवाले उन सब ऋषियों के वेद बिस्मरण होगये ४२ और किसीने नहीं जाना इसके अनन्तर उनमेंसे किसी ऋषिने उस सारस्वत ऋषिको पाया ४३ जोकि तीक्ष्ण बुद्धि और वेदपाठ करनेवाले ऋषियों में श्रेष्ठथे उसने जाकर उस बड़े तेजस्वी ४४ देवताके समान निर्जन बनमें वेदपाठ करनेवाले सारस्वत ऋषि को उन अपने साथी ऋषियों से बर्णन किया तब वह सब ऋषि मिलकर वहांगये ४५ और मिलेहुओं ने मुनियों में श्रेष्ठ सारस्वत मुनिसे यहवचन कहा कि हे मुनि आप हम सब मुनियों को वेद पढ़ावो तब उस मुनिने उन ऋषियों से कहा ४६ कि तुम बिधिपूर्व्वक मेरी शिष्यताको प्राप्तकरो तब वह महामुनियों के समूह यहवचन बोले कि हे पुत्र तुम बालकहो ४७ तब वह सारस्वत मुनियों से बोले कि मेरा धर्म नाशहोगा निश्चयकरके जो अधर्मसे कहे और अधर्मही से लेवे ४८ उन दोनोंका शीघ्रही नाशहोताहै अथवा वह दोनों परस्पर शत्रु होजाते हैं यह सुनकर ऋषियों ने वर्षों की आधिक्यता श्वेतबाल धन और

बान्धवों के कारणसे ४९ उत्पन्न होनेवाले धर्मको नहीं किया और कहा कि जो शिक्षा आदिक छओं अंगों समेत वेदोंका पढ़नेवालाहै वही हममें बड़ाहै ऐसा विचारकर मुनियों ने विधिके अनुसार ५० उस सारस्वत मुनि से वेदोंको पाकर फिर धर्मोंको किया अर्थात् साठहजार मुनियों ने ५१ वेद पढ़नेके कारणसे उस परमऋषि सारस्वतकी शिष्यता को पाया तदनन्तर वह सब उस परमऋषि के आसन के लिये एक मुट्ठी कुशालाये और उस बालकके अधीनता में नियत हुये ५२ इसके पीछे केशवजी के बड़ेभाई महाबली बलदेवजी वहांभी धनों को दानकरके क्रमपूर्वक उस प्रसिद्ध तीर्थपर गये जहांपर कि एक बहुतवृद्ध कन्या ठहरीथी ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

जनमेजय बोले कि हे भगवान् पूर्व्व समयमें वह कुमारी कैसे तप में प्रवृत्त हुई किस निमित्त तपस्याकरी और उसका क्या नियमथा १ हे ब्राह्मण मैंने तुम से यह महा श्रेष्ठ और बड़े कष्टसे करने के योग्य तप सुना अब उसका वह सब मूल समेत वृत्तान्तकहो जैसे कि वह तपमें प्रवृत्तहुई २ वैशम्पायन बोले कि हे राजा बड़े पराक्रमी और यशमान् एक कुणिगर्गनाम ऋषिहुये उस महातपस्वी ने बड़ी तपस्या करके ३ मनसे सुन्दरी बेटीको उत्पन्नकिया तब यशस्वी कुणि-गर्गमुनि उस कन्या को देख और बहुत प्रसन्नहोकर ४ इसलोक में शरीर को त्यागकर स्वर्गको गये इसकेपीछे वह सुन्दर भृकुटी कमललोचना कल्याणी ५ निर्द्दोष बड़ेभारी उग्रतप के द्वारा परिश्रम करके व्रतों समेत देवता और पितरों की पूजन करनेवाली हुई ६ हे राजा उस उग्रतपमेंही उसका बड़ा समय व्यतीत हुआ और उस पिता से दीहुई निर्द्दोष ने भी कभी पतिकी इच्छा नहींकी इस हेतुसे कि उसने अपने योग्य पतिको नहीं पाया तब वह बड़े उग्रतपसे अपने शरीरको पीड़ितकरके ७ । ८ निर्जनवन में देवता और पितरोंके पूजनमें प्रवृत्त हुई हे राजेन्द्र परिश्रम से रहित अपने को अभीष्ट प्राप्त करनेवाली मानकर वह कन्या ९ बड़ी तपस्यासे जीर्ण शरीरहुई जब कि वह अपने चरणों से कहीं च-लने फिरने को भी समर्थ नहींहुई १० तब परलोकके जाने में विधिपूर्व्वक बुद्धि

की फिर नारदजी उस शरीर त्यागनेकी इच्छावान् कुमारी से बोले ११ हेनिष्पाप तुझ संस्कारसे रहित कन्याके लोक कैसे होसक्तेहैं हे महाव्रत हमने देवलोकमें ऐसा सुना है १२ तुमने बड़ी तपस्याकरी परन्तु लोकों को बिजय नहींकिया हे महाव्रत यह भी हमने देवलोक में सुना है १३ तब तो वह कुमारी नारदजी के इन बचनों को सुनकर ऋषियों की सभा में बोली १४ हे उत्तम ऋषि मैं आधे तपकाफल अपने पतिको दूंगी ऐसा कहनेपर इसके हाथको गालवके पुत्र शृङ्गवान् ऋषिने पकड़ा और इस नियमको कहा कि हे शोभायमान अब मैं तेरे पाणिको इस प्रतिज्ञा के साथ ग्रहण करताहूं १५ कि जो तू एकरात्रि मेरे साथ निवासकरे तब उसने कहा तथास्तु ऐसी प्रतिज्ञाकरके उसने अपना पाणि उस के हाथमेंदिया १६ गालवके पुत्र शृङ्गवान्ने वेदोक्त विधिसे अग्निमें हवनकरके उसका पाणिग्रहण करके विवाह किया १७ हे राजा वह स्त्री रात्रि में तरुण दिव्य भूषण और बस्त्रों से अलंकृत और दिव्य सुगन्धियोंसे युक्तशरीर हुई १८ गालव के पुत्र शृङ्गवान् उस लक्ष्मी के समान प्रकाशमान उस स्त्रीको देखकर प्रसन्नचित्त होकर एकरात्रि उसके साथ निवासीहुये तब वह स्त्री प्रातःकाल के समय उस ऋषिसे बोली १९ हे तप करनेवालों में श्रेष्ठ ब्राह्मण तुमने जो प्रतिज्ञा मुझ से करीहै इसीहेतुसे मैं तेरे पासरही हूं तेरा कल्याण और शुभहोय अब मैं जातीहूं २० तब वहां से निकलकर वह स्त्री फिर बोली जो सावधान पुरुष इस तीर्थमें देवताओं को तृप्तकरके एकरात्रि निवासकरे २१ वह उस फलकोपावे जो कि अट्ठावन वर्षतक श्रेष्ठ रीति से ब्रह्मचर्य्यको करे २२ इसकेपीछे वह पतिव्रता ऐसा कहकर शरीरको त्यागकर स्वर्गको गई और वह ऋषि भी उसके रूपको शोचताहुआ महा दुःखीहुआ २३ नियम के कारण से उसका आधातप बड़ी कठिनता से लिया और उसने आत्माको साधन करके उस की गतिको पाया २४ हे भरतर्षभ उसके रूप और तेजबलसे महादुःखीने ऐसा किया इसप्रकार से उसने उस वृद्धकन्याके शुभचरित्र २५ ब्रह्मचर्य्य और शुभगति को उससे कहा उस स्थानपर नियत होनेवाले बलदेवजी ने शल्य को मृतक हुआ सुना २६ अर्थात् शत्रुओं के तपानेवाले बलदेवजी ने वहां भी ब्राह्मणों को दान देकर शल्य को मृतकहुआ सुना २७ इसके पीछे माधव बलदेवजी ने समन्तपञ्चकके द्वारसे निकलकर कुरुक्षेत्र के फलको ऋषियोंसे पूछा २८ हे समर्थ उन यादवों

में श्रेष्ठ बलदेवके इसबचनको सुनकर उन महात्माओंने उस कुरुक्षेत्रका ठीक २ फल बर्णन किया २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिबलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेत्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय॥

ऋषिबोले हे बलदेवजी यह समन्तपञ्चक ब्रह्माजी की सनातन उत्तरवेदी कही जाती है जहांपर कि बड़े दाता देवताओं ने उत्तम यज्ञकेद्वारा अच्छेप्रकार से पूजन किया १ पूर्वसमय में राजर्षियों में श्रेष्ठ बड़े बुद्धिमान् और तेजस्वी महात्मा कुरुने इसक्षेत्र को जोताथा इस हेतु से इसकानाम लोकमें कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध हुआ २ बलदेवजी बोले हे तपोधन ऋषियो कुरुने इसक्षेत्रको किसहेतुसे जोता मैं इसका सब बृत्तान्त सुना चाहताहूं ३ ऋषिबोले हे बलदेवजी निश्चय करके पूर्व्वसमयमें इन्द्रने स्वर्गसे यहां आकर उस सदैव सन्नद्ध और जोतने में प्रवृत्तचित्त राजा कुरु से इसकाहेतु पूछा अर्थात् इन्द्रने कहा कि हे राजेन्द्र बड़े उपायसमेत आप यह क्याकाम करते हैं हे राजर्षि आपकी इसमें क्या करनेकी इच्छाहै जिसके कारण यह पृथ्वी आप जोतते हैं ४।५ कुरुबोले हे इन्द्र जो पुरुष इस क्षेत्रमें शरीरको त्यागकरेंगे वह अपने पुण्यसे निष्पापलोकों को जायँगे ६ इसके पीछे इन्द्र हँसकर अपने स्वर्ग को चलेगये इसी प्रकार वह राजर्षि दुखी होहोकर उसक्षेत्रको जोताकरताथा और इन्द्र बारम्बार इसीप्रकारसे पूछ २ और हँस २ कर चलेजातेथे ७।८ जब राजाने उग्रतप से पृथ्वी को जोता तब उस राजर्षि के मनकी इच्छाको इन्द्रने देवताओं से कहा ९ देवता यह सुनकर इन्द्रसे यह बचन बोले कि हे इन्द्र जो बनसके तो इस राजर्षि को बर से लुभाना योग्यहै १० जो इस लोक में मनुष्य यज्ञों से हमको न पूजकर इस क्षेत्र में मरकर स्वर्गको जायँगे उस दशामें हमारे भागोंकी नष्टता होगी ११ इसके पीछे इन्द्र ने आकर उस राजर्षि से कहा आपको कष्ट करना योग्य नहीं है मैं कहूं सो कीजिये १२ हे राजा जो सावधान मनुष्य यहां निराहार होकर अथवा युद्ध में अच्छीरीति से मरणको पाकर शरीरको त्यागकरेंगे यद्यपि तिर्य्यक् योनिमें भी उनका जन्महोजाय तौभी १३ हे बड़े बुद्धिमान् राजेन्द्र वह स्वर्गभागी होंगे इन्द्र के इस बचन को सुनकर राजाकुरु ने इन्द्रसे कहा कि ऐसाही होय तब तो इन्द्र

अत्यन्त प्रसन्नचित्तसे उससे पूछ शीघ्रही स्वर्गको गये १४।१५ हे यादवों में श्रेष्ठ इस प्रकारसे पूर्व्वसमय में यह क्षेत्र राजर्षि कुरुसे जोतागया है और उसीप्रकार देवताओं ने और ब्रह्मा ने इन्द्रको आज्ञाकरी १६ इससे श्रेष्ठतर धर्मकी वृद्धिका हेतु पृथ्वी पर कोई स्थान नहीं होगा जो कोई मनुष्य यहां उत्तम तपस्याकरेंगे १७ वह सब शरीर को त्यागकर ब्रह्मलोक को जायँगे और जो पुण्यात्मालोग यहां धनादिकका दान करेंगे १८ उन्होंका वह दान थोड़ेही समयमें सहस्रगुना होगा और भलाचाहनेवाले मनुष्य सदैव यहां निवास करेंगे १९ वह कभी यमराजके देशको नहीं देखेंगे और जो राजालोग यहां बड़े यज्ञों से पूजनकरेंगे २० उन्होंका निवास स्वर्गमें तवतक होगा जबतक कि यह पृथ्वी नियतहै यहां देवताओं के राजा इन्द्रनेभी आप उस गाथाको गायाहै २१ जोकि कुरुक्षेत्र से सम्बन्ध रखनेवाली है हे वलदेवजी उसको आप सुनिये कि इस कुरुक्षेत्रमें वायु से उड़ाई हुई धूल भी पापी मनुष्य को परमगति देती है २२ हे नरोत्तम यहां उत्तम देवता ब्राह्मण और नृगआदिक श्रेष्ठ राजाओंनेभी बड़े २ पूजित यज्ञोंसे पूजनकरके अपने अपने शरीरोंको त्यागकर उत्तम गतिको पाया २३ तरन्तुक और आरन्तुक, परशुरामजी के ह्रद और मचक्रकका जो अन्तरहै यह कुरुक्षेत्र समन्तपञ्चक नाम ब्रह्माजीकी उत्तरवेदी कहीजाती है २४ यह कल्याणरूप और धर्मकी वड़ी वृद्धिका कारण देवताओंका अङ्गीकृत और सब गुणोंसे युक्तहै इस हेतुसे यहां सदैव युद्धमें मरेहुये राजालोग पवित्र और अविनाशी गतिको पावेंगे २५ तब ब्रह्माजीसमेत इन्द्रने आप अपने मुखसे यह वर्णनकिया और ब्रह्मा विष्णु महेश्वर इनतीनों ने उस सबको अङ्गीकार किया २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिवलदेवतीर्थयात्रायांसारस्वतोपाख्यानेचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे जनमेजय इसकेपीछे यादव वलदेवजी कुरुक्षेत्र को देख दानादि देकर उस बड़े दिव्य आश्रमकोगये १ जो कि मधूक और आम्रके वनों से संयुक्त प्लक्ष और न्यग्रोध नाम वृक्षोंसे व्याप्त चिरविल्व वृक्षोंसेसंयुक्त पुण्यकारी पनस और अर्जुन नाम वृक्षोंसे संकुलथा २ यादवोंमें श्रेष्ठ पवित्र लक्षणवाले बलदेवजीने उस आश्रमको देखकर उन सब ऋषियोंसे पूछा कि यह अति उत्तम

किसका आश्रमहै ३ हेराजा फिर उन सब महात्माओंने बलदेवजीसे कहा कि हेबलदेवजी यह जैसे प्रथम जिसका आश्रमहै उसका मूलसमेत सबबृत्तांत सुनो ४ जहांपर पूर्वसमयमें विष्णु देवताने उत्तमतपको तपाहै और यहांहीं उनके सब सनातन यज्ञभी बिधिपूर्बक पूर्णहुये ५ इस स्थानमें कौमार ब्रह्मचारिणी ब्राह्मणी सिद्धहुई वह तपसे सिद्ध योगसे संयुक्त तपस्विनी स्वर्गकोगई ६ हेराजा महात्मा शांडिल्य ऋषिकी पुत्री श्रीमती ब्रतधारिणी पतिब्रता ब्रह्मचारिणीहुई ७ ब्रह्मचा-रिणी होकर वह महाभाग देवता ब्राह्मणोंसे पूजित स्त्रियोंकेसाथ कठिनतासे क-रनेके योग्य घोर तपको तपकर स्वर्गकोगई ८ इसके पीछे महा अजेय बलदेवजी ऋषियोंके बचनको सुनकर उस आश्रमको गये और उनऋषियों को दण्डवत् करके हिमवान् पर्बतके पार्श्व में ९ सन्ध्याके सबकर्मोंको करके उसपर्बतपर चढ़े इसके पीछे तालध्वजाधारी पराक्रमी बलदेवजी ने थोड़ी दूर पर्बत पर जाकर १० धर्मकी वृद्धिके हेतुरूप उत्तम तीर्थको सरस्वती के प्रभावको और प्लक्षनाम भिर-नेको देखकर आश्चर्यको पाया ११ और वहांसे चलकर कारपवन नाम अत्यंत उत्तम तीर्थको पाया महावली बलदेवजी वहां भी दानको देकर १२ पवित्र शी-तलनिर्मल और धर्म की वृद्धिके कारणरूप जल में स्नान करनेवाले युद्धदुर्मद ने देवता और पितरोंको अच्छीरीतिसे तृप्तकिया १३ फिर वह अजेय यती और ब्राह्मणों समेत वहां एकरात्रि निवासकरके मित्रावरुणके पवित्र आश्रमको गये १४ इसीपीछे कारपवनसे उस यमुना देशकोगये जहांपर कि पूर्व्व समयमें इन्द्र अग्नि और अर्यमानाम देवताओंने परम प्रीतिको पायाथा १५ उस तीर्थमें भी स्नानकर धर्मात्मा बलदेवजीने परमप्रीति को पाया ऋषि सिद्धों समेत बैठेहुये महावली बलदेवजीने उज्ज्वल कथाओंकोसुना उसप्रकार उन लोगोंके बैठनेपर भगवान् नारदऋषि १६। १७ उसस्थानपर आये जहांपर बलदेवजी थे हे राजा वह जटामण्डल समेत स्वर्णमयी बस्त्रधारी महातपस्वी १८ स्वर्णदण्ड धारी कमं-डल हाथमें लिये नृत्यगानमें सावधान देवता ब्राह्मणोंके पूजित कलहोंके करने-वाले सदैव कलहप्रिय नारदजी उस चित्तरोचक शब्दवाली अपनी कच्छपी नाम बीणाको लेकर १९।२० उस देशकोगये जहांपर कि श्रीमान् बलदेवजी नि-यतथे बलदेवजीने अभ्युत्थान पूर्वक उस सावधानब्रत देवर्षि नारदजीको सुंदर रीतिसे पूजकर कौरवोंका बृत्तान्त पूछा तब सर्वधर्मज्ञ नारदजी ने बलदेवजी से

कौरवों के बड़े कठिन नाशको वर्णन किया तब बलदेवजीने भी खेदयुक्त होकर नारदजीसे कहा २१।२२।२३ कि जो राजालोग वहां वर्त्तमानथे वह सब क्षत्रियों का समूह कैसाहै हे तपोधन इसको मैंने पूर्व सुनाहै परन्तु अब व्यौरेसमेत सब पूरा२ वृत्तान्त आपसे सुनना चाहताहूं २४ नारदजी बोले कि भीष्मजी तो प्रथमही मारेगये उसीप्रकार द्रोणाचार्य और जयद्रथ मारेगये २५ हे बलदेवजी भूरिश्रवा और पराक्रमी राजामद्र मारेगये इनके विशेष अन्य २ बहुतसे ऐसे बलवान् लोगभी २६ कौरवोंकी विजयके निमित्त अपने २ प्यारे प्राणोंको त्यागकर मारे गये जो कि युद्धों में मुख न फेरनेवाले राजा और राजकुमारथे २७ हे महाभाग माधवजी वहां जो २ जीवते बचेहैं उनकोभी मुझसे सुनों युद्धमें मर्द्दनकरनेवाले तीनपुरुष तो दुर्य्योधनकी सेना में बचे हैं २८ अर्थात् कृपाचार्य्य, कृतवर्मा और पराक्रमी अश्वत्थामा हे बलदेवजी वह तीनोंभी भयभीतहोकर दशों दिशाओं को भागे २९ शल्यके मरने और कृपाचार्य्यादिक तीनों बचेहुये शूरबीरोंके भागजाने पर अत्यन्त दुखी दुर्योधन व्यासजीके द्वैपायननाम ह्रदमें प्रवेश करगया ३० वहां श्रीकृष्णजी समेत पाण्डवोंने उसजलमें नियत और शयन करनेवाले दुर्य्योधन को उग्र बचनोंसे पीड़ावान् किया ३१ हे भगवन् बलदेवजी तब वह वीर चारों ओर के दुर्व्वचनों से पीड़ावान् होकर उस ह्रद से गदाको लेकर उठा ३२ सो वह भीमसेनसे सम्मुख लड़नेको गया अब दोनोंका भी महाभयानक युद्धहोगा ३३ हे माधवजी जो आपको उस युद्धके देखनेका उत्साहहै तो शीघ्रजाओ देर मतकरो आप अपने दोनों शिष्योंके घोरयुद्ध को देखिये ३४ बैशम्पायन बोले कि बलदेवजीने नारदजी के वचनको सुनकर उन उत्तम ब्राह्मणोंको अच्छी रीतिसे पूजकर विदाकिया जो उनके साथमें आयेथे ३५ और बड़े प्रसन्नचित्त महाअजेय बलदेवजीने साथियोंको आज्ञाकरी कि तुम द्वारका को जाओ पर्व्वतों में महाश्रेष्ठ प्लक्षनाम शुभ झरनेसे उतरकर ३६ और तीर्थ के बड़े फलको सुनकर ब्राह्मणोंके सम्मुख इस श्लोकको कहा कि ३७ सरस्वतीपर निवास करने के सिवाय कोई कहीं उत्तमगुण नहीं है सब मनुष्य इस सरस्वती को पाकर स्वर्गकोगये और वह सदैव सरस्वती नदीको स्मरण करेंगे ३८ सब नदियों में सरस्वती नदी बड़े धर्म्मका कारण है सरस्वती सदैव लोकका भला करनेवाली है मनुष्य इस सरस्वती को पाकर सदैव इस लोक और परलोक में

पापको नहीं शोचते हैं ३६ इसके पीछे शत्रुसंतापी बलदेवजी प्रीतिसे बारम्बार सरस्वती को देखते सुन्दर घोड़ेवाले उज्ज्वल रथपर सवारहुये ४० शिष्यों का बर्त्तमान युद्ध देखनेके अभिलाषी वह बलदेवजी उस शीघ्रगामी रथकी सवारी से उनके सम्मुख जा पहुँचे ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिपञ्चविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे जनमेजय जिस स्थान पर दुखी राजा धृतराष्ट्र ने यह बचन कहा कि १ हे सञ्जय मेरापुत्र गदायुद्धके बर्त्तमान होनेपर बलदेवजी को सम्मुख देखकर कैसे युद्धमें प्रवृत्तहुआ और किसप्रकारसे युद्धहुआ सञ्जयबोले कि आप का पुत्र महाबाहु युद्धाभिलाषी दुर्य्योधन बलदेवजी की बर्त्तमानता देखकर वहुत प्रसन्नहुआ २ । ३ और हे भरतबंशी बड़ी प्रीतिसे युक्त राजायुधिष्ठिरने हलधारी बलदेवजी को आयाहुआ देखकर बड़ेसत्कारपूर्व्बक ४ उनको उत्तम आसन दिया और उनके कुशल मङ्गलको पूछा तब बलदेवजी ने युधिष्ठिर से बड़ा मधुर धर्म्म से युक्त और शूरोंका हितकारी यह बचन कहा कि ५ हे राजाओंमें श्रेष्ठ मैंने ऋषियोंके मुखसे सुनाहै कि कुरुक्षेत्र धर्म्मकी बृद्धिका बड़ा कारणरूप महापवित्र स्वर्ग का देनेवाला होकर देवता ऋषि और महात्मा ब्राह्मणों से सेवित है ६ । ७ वहां पर जो युद्ध करनेवाले मनुष्य अपने शरीर को त्याग करेंगे उनका निवास निश्चयकरके स्वर्ग में इन्द्रके साथ होगा ८ हे राजा इस हेतु से शीघ्रही यहां से समन्तपञ्चक को चलें वह देवलोक में ब्रह्माजी की उत्तर वेदी प्रसिद्धहै उस अत्यन्त पवित्र तीनों लोकके सनातन तीर्थ पर युद्धमें मरणको पाकर निश्चय स्वर्ग होगा ६ । १० हे महाराज कुन्ती का पुत्र प्रभु वीर युधिष्ठिर बहुतअच्छा कहकर समन्तपञ्चक के सम्मुख गया ११ इसके पीछे तेजस्वी राजा दुर्य्योधन क्रोधसे बड़ी गदाको लेकर पांडवों के साथ पदातीही चला १२ अन्तरिक्षचारी देवताओं ने उस गदा और कवचधारी दुर्योधन को देखकर धन्य२करके बड़ीप्रशंसाकरी १३ और जो बायुकेसाथ चलनेवाले सिद्धचारणथे वहभी उसको देखकर प्रसन्नहुये वह आपका पुत्र कौरवराज दुर्य्योधन पाण्डवों से घिराहुआ १४ मतवाले गजराजकीसी चालमें नियत होकर चला फिर शङ्ख

भेरियोंके बड़ेशब्द १५ और शूरोंके सिंहनादोंसे सब दिशा पूर्णहुई और थोड़ेही समयमें वह नरोत्तम कुरुक्षेत्रमें पहुंचे १६ वहां जैसे आपके पुत्रने बतलाया उसी प्रकार जाकर वह पश्चिम ओरका देश चारोंओर सब दिशाओं में युक्त होकर परिधिरूपहुआ १७ जोकि सरस्वती के दक्षिण ओरसे दूसरा उत्तमतीर्थ है वहां हरित भूमियुक्त देशमें युद्ध करना स्वीकार करके नियत किया १८ इसके पीछे कवचधारी भीमसेन ने बड़ी कोटिवाली गदाको लेकर गरुड़के समान रूपको धारण किया १९ युद्धमें शिरस्त्राण और सुवर्णका कवचधारी आपका पुत्र सुवर्णके गिरिराजके समान शोभायमान हुआ २० वह कवचधारी भीमसेन और दुर्य्योधन दोनोंवीर युद्धमें क्रोधयुक्त हाथियोंके समान दिखाई पड़े २१ हे महाराज युद्धमण्डल में नियत दोनों नरोत्तम भाई उदयमान सूर्य्य और चन्द्रमाके समान शोभायमान हुये २२ हे राजा परस्पर मारने के अभिलाषी नेत्रोंसे भस्म करनेवाले बड़े हाथियों के समान क्रोधमें पूर्णहोकर दोनों ने परस्पर देखा २३ तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त कौरव दुर्य्योधन गदा को लेकर होठों को चाबता और क्रोधसे रक्तनेत्र श्वासको लेता गदालेकर नियतहुआ २४ तदनन्तर पराक्रमी दुर्य्योधन ने गदाको लेकर भीमसेनको देखकर बुलाया जैसे हाथीहाथी को २५ बुलाताहै उसीप्रकार पराक्रमी भीमसेनने गदाको लेकर राजा को ऐसे बुलाया जैसे कि वनमें सिंहको सिंहबुलाताहै २६ वह हाथ में गदा उठानेवाले दुर्य्योधन और भीमसेन युद्ध में ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि दो शिखरधारी पर्व्वत होते हैं २७ वह दोनों अत्यंत क्रोधयुक्त भयानक पराक्रमी गदायुद्धमें बड़े कुशल और बलदेवजी के शिष्यथे २८ यमराज और इन्द्रकी समान कर्म्म करनेवाले दोनों महाबली वरुणके समान कर्म्मकर्त्ता थे २९ हे महाराज इसीप्रकार वह दोनों वासुदेवजी परशुरामजी कुबेर देवता और मधुकैटभ दैत्योंके समानहोकर ३० दोनों सुंद, उपसुंद, राम, रावण और बालि, सुग्रीवके समान कर्म करनेवालेथे ३१ वैसेही शत्रुओं के तपानेवाले वह दोनों कालमृत्युकी समान मतवाले बड़े हाथियों के समान परस्पर सम्मुख दौड़नेवाले थे ३२ वह भरतवंशियों में श्रेष्ठ शरदऋतुके मध्यमें हथिनीके मिलापमें मत्त अहंकारी मतवाले बिजयाभिलाषी हाथियोंके समान थे ३३ फिर वह दोनों शत्रुसंतापी परस्पर क्रोधयुक्त देखनेवाले और सर्पों के समान क्रोधके प्रकाशित बिषोंके उगलनेवालेथे ३४ दोनों भरतर्षभ पराक्रमी

से भरे सिंहों के समान अजेय और गदायुद्ध में कुशलथे ३५ दोनों नख दंष्ट्रा रूप शस्त्र रखनेवाले बीर ब्याघ्रोंके समान दुःखदायी उत्सववाले सृष्टिके नाशमें क्रोधभरे दो समुद्रों के समतुल्यथे ३६ जैसे पूर्व्व पश्चिमकी बायुसे उत्पन्न होने वाली बायु से चलायमान दोबादल होते हैं उसीप्रकार वह दोनों महारथी भी क्रोधसंयुक्त होकर दौड़नेवालेथे ३७ वर्षाऋतु में कठिन गर्जनाकरते किरणों से युक्त दोबादलकेसमान तेजस्वी पराक्रमीहोकर महासाहसीथे ३८ कौरवोंमें श्रेष्ठ वह दोनों उदयहुये दोकालरूपी सूर्यकेसमान अत्यन्त क्रोधी ब्याघ्रोंके समान गर्जनेवाले दोबादलकेरूप दिखाईपड़े ३९ केसरी सिंहोंकेसमान महाक्रोधी हाथियों के समान और ज्वलितअग्नि के समान दोनों महाबाहु ने आनन्द को पाया ४० क्रोधसे चलायमान दोनोंहोठ परस्पर देखनेवाले दोनोंमहात्मा शिखरधारी पर्व्वतोंकेसमान दृष्टिगोचरहुये ४१ वह दोनोंमहात्मा नरोत्तम गदाओं को हाथमें लेकर सम्मुख हुये दोनों अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर परस्पर अङ्गीकृत थे ४२ वह दुर्य्योधन और भीमसेन हिंसनेवाले उत्तमघोड़े चिग्घाड़नेवालेहाथी और डकारनेवाले बैलोंके समान दिखाई दिये ४३ वह पराक्रमसे मतवाले दोनों नरोत्तम दैत्यों के समान शोभायमान हुये हे राजा इसके पीछे दुर्य्योधनने महात्मा श्रीकृष्ण और बड़े पराक्रमी बलदेवजी और भाइयोंसमेत नियत युधिष्ठिरसे बड़े अहङ्कारियों केसमान यह बचन कहा ४४ । ४५ कि जो बड़ेसाहसी पाञ्चाल सृञ्जी और कैकयदेशियों से अपने को बड़ा अहंकारी मानता था उस भीमसेन से मेरा युद्ध निश्चयहुआ ४६ हे युधिष्ठिर तुम इन उत्तम राजाओं समेत इस मेरे और भीमसेन के युद्ध को देखो तब युधिष्ठिरने दुर्य्योधन के बचन को सुनकर वैसाहीकिया ४७ इसके अनन्तर वह सब राजमण्डल वहां बैठगया और बैठकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाशमें सूर्य्यमण्डल शोभित होताहै ४८ हे महाराज उन सबके बीच में केशवजी के बड़े भाई महाबाहु श्रीमान् बलदेवजी भी बैठगये ४९ उज्ज्वल बर्ण नीलाम्बरधारी बलदेवजी उन राजाओं के मध्यमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि रात्रिमें नक्षत्रों से संयुक्त पूर्ण चन्द्रमा होताहै ५० हे महाराज उसीप्रकार वह दोनों गदा हाथमें लिये कठिनतासे सहने के योग्य परस्पर उग्रबचनों से घायल करते नियतहुये ५१ अर्थात् वह कौरवों में श्रेष्ठ वहां अयोग्य अप्रिय बचनों को परस्पर कहकर ऊपर को

देखते ऐसे नियत हुये जैसे कि युद्धमें इन्द्र और बृत्रासुर नियत हुये थे ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिगदायुद्धेषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले हे जनमेजय इसकेपीछे प्रथम तो वार्त्तालापकाही कठिनयुद्ध हुआ उससमय वहां दुःखित होकर राजाधृतराष्ट्रने यहवचनकहा १ कि निश्चय करके इस मनुष्य शरीरको धिक्कार है जिसकी कि ऐसी दशाहै हे निष्पाप जिस स्थानपर ग्यारह अक्षौहिणी का स्वामी मेरापुत्र २ सब राजाओंपर शासन करके इस पृथ्वीको भोगकर गदाको लेकर बड़ी तीव्रतासे युद्धमें पैदलचला जो मेरा पुत्र जगत्का स्वामीहोकर अनाथकेसमान गदाको उठाकर चला इसमें प्रारब्ध से दूसरी बात क्याहै ३ । ४ हे सञ्जय मेरे पुत्रने बड़े दुःखकोपाया दुःखित पीड़ित राजाधृतराष्ट्र इसप्रकार कहकर मौनहोगया ५ सञ्जय बोले कि तब प्रसन्न चित्त बैलकेसमान गर्जते उस पराक्रमी बादलकेसमान शब्दायमान दुर्य्योधनने पार्थ भीमसेन को युद्धके निमित्त बुलाया हे महात्मा कौरवराज दुर्य्योधनकी ओरसे भीमसेन के बुलाने पर नानाप्रकार के घोररूप उत्पात जारीहुये ६ । ७ परस्पर आघातित शब्दों समेत वायुचलीं धूलकी वर्षाहुई सब दिशा अन्धकार से पूर्ण हुईं ८ शरीरके रोमांचोंकी खड़ीकरनेवाली बायुओंके कठिन आघात बड़ेशब्दों के करनेवालेहुये पृथ्वीपर बड़ी शब्दायमान सैकड़ों उल्का आकाशसे गिरीं ९ हे राजा पर्व्वके विनाही राहुने सूर्यकोग्रसा अर्थात् विनापर्वके ग्रहण पड़ा और पृथ्वी वनके सब वृक्षोंसमेत कंपायमानहुई १० नीचे से कंकड़ पत्थर खैंचनेवाली बड़ी घोर और प्रकाशित बायुचलीं और पर्व्वतों के शिखर पृथ्वी पर गिरे ११ अनेकरूपवाले मृग दशोंदिशाओंको दौड़े और घोररूप ज्वलित भयानक शृगालभी शब्द करनेलगे १२ महाघोर निर्घातभी शरीरके रोमांच खड़े करनेवाले हुये हे राजा ज्वलितरूप दिशाओंमें अशुभसूचक मृग महाघोर अशुभके प्रकट करनेवाले हुये १३ उस समय कूपों के जलभी चारोंओर को अत्यन्त वृद्धियुक्त हुये आकाशवाणी भी सुनीगई १४ भीमसेनने इसप्रकार के उत्पातोंको देखकर अपने बड़ेभाई धर्मराज युधिष्ठिरसे यह बचनकहा १५ कि यह अभागा दुर्योधन युद्धमें मेरे बिजयकरनेको समर्थ नहीं है अब मैं अपने बहुतकालके संचित क्रोध

को १६ कौरवराज दुर्य्योधन पर ऐसे छोड़ूंगा जैसे कि खाण्डव बनमें अग्निको छोड़ाथा हे पाण्डव अब मैं तेरे हृदय के बड़े शूलको उखाड़ूंगा १७ अर्थात् मैं गदासे इसकौरवोंके कुलमें महानीच पापीको मारकर कीर्त्तिरूप मालाको आप के शरीरमें धारण करूंगा १८ अब मैं इस युद्धमें इस पापकर्मीको मारकर इसके शरीरको इसगदासे खंड२ करूंगा १९ यह अब दुबारा हस्तिनापुर नगरमें प्रवेश न करेगा हे भरतर्षभ अब मैं उनसब आगेलिखे दुःखोंके अन्तको प्राप्तहूंगा जैसे कि शयनपर सर्पका छोड़ना, भोजनमें बिषदेना, प्रमाण कोटी में गिराना, लाक्षा गृहमें जलाना, सभा में हास्यकरना, सर्बस्वहरण २०। २१ एकबर्ष अज्ञातहोकर बनमेंबास २२ इन सबदुःखरूपी ऋणोंसे एकहीदिनमें इसको मारकर अऋणहूंगा हे भरतर्षभ अब दुर्बुद्धी म्लान अन्तःकरणवाले दुर्य्योधन की आयुर्दा पूर्णहुई २३ माता पिताका दर्शनभी समाप्तहुआ हे महाराजेन्द्र अब दुर्बुद्धी कौरवराज का सुख २४ और स्त्रियोंका दर्शनभी सम्पूर्ण हुआ अब यह शन्तनुके कुलको कलंक लगानेवाला दुर्योधन २५ लक्ष्मी, राज्य और प्राणोंको त्यागकर पृथ्वीपर सोवेगा अब राजाधृतराष्ट्र मरेहुये अपने पुत्रको सुनकर २६ अपने उसदुष्टकर्मको यादकरेगा जो कि शकुनीकी बुद्धिसे उत्पन्नहुआ हे राजाओंमें श्रेष्ठ पराक्रमीभी-मसेन ऐसीबातें कहकर गदाको हाथमें लेकर २७ युद्धके निमित्त दुर्योधनको ऐसे बुलाताहुआ सम्मुख नियतहुआ जैसे कि इन्द्र वृत्रासुरको बुलाताहुआ नियत हुआथा शिखरधारी कैलासके समान उस गदाउठानेवाले दुर्य्योधन को देखकर २८ क्रोधयुक्त भीमसेनने फिर कहा कि हे दुर्य्योधन राजाधृतराष्ट्रसमेत तुम अपने उन पापकर्म्मों को स्मरणकरो जो कि बारणावतनगर में हुये और सभामें रज-स्वला द्रौपदीको दुःखदिया २९।३० और जो तैंने और शकुनीने राजायुधिष्ठिरको द्यूतमें ठगा और हमसबने महाबनोंमें जिस तेरेकारणसे बड़े२ दुःखोंको पाया ३१ और योन्यन्तरके समानहोकर हमलोगोंने जिस दुःखको बिराटनगरमें पाया अब मैं उन सबदुःखों के कारण रूपको मारताहूं हे दुर्बुद्धी तुझको प्रारब्ध से देखा है और तेरेही कारण से शिखण्डी के हाथसे मारेहुये यह रथियोंमें श्रेष्ठ श्रीगंगाजी के पुत्र प्रतापवान् कौरवों के पितामह भीष्मजी शरशय्यापर सोते हैं ३२। ३३ द्रोणाचार्य्य कर्ण और प्रतापवान् शल्यमारागया और शत्रुताकी अग्निका उ-त्पन्नकरनेवाला सौबलका पुत्र शकुनी मारागया ३४ फिर द्रौपदीका क्लेश उत्पन्न

करनेवाला पापी प्रातिकामी मारागया सिंहकेसमान युद्धकरनेवाले शूरवीर तेरे सबभाई मारेगये ३५ तेरेही कारण से यहसब और अन्य बहुतसे राजा मारेगये अब मैं तुझको निस्सन्देह गदासे मारूंगा ३६ हे राजेन्द्र सत्यपराक्रमी और निर्भय आपका पुत्र इसप्रकार बड़ेउच्चस्वरसे वार्त्तालाप करनेवाले भीमसेनसे बोला ३७ कि हे कुलमें महानीच भीमसेन बहुत बातोंसे क्याप्रयोजनहै तुम युद्धकरो अब मैं तेरे युद्धके उत्साहको भंगकरूंगा ३८ हे नीच मैं दुर्य्योधन तुझ सरीखे किसीमनुष्यके वचनसे डरनेकेयोग्य नहींहूं बहुतकालसे चाहता हृदयमें नियत तेरे साथ मेरा यह गदायुद्ध प्रारब्धकेही द्वारा देवताओं से प्राप्तहुआहै ३९ । ४० हे दुर्बुद्धी बहुत वार्त्तालाप और अपनी प्रशंसाकरने से क्यालाभ है यह वचन कर्मकेही द्वारा प्राप्तकरना योग्यहै विलम्ब मतकरो ४१ उसके उस वचनको सुनकर उन राजालोगों ने और सोमकों ने जो वहां इकट्ठे थे उसकी प्रशंसाकी ४२ इसकेपीछे वह शरीरके रोम २ से प्रसन्न सबसे स्तूयमान वह कौरवनन्दन दुर्य्योधन युद्धके लिये बुद्धिकेद्वारा फिर धैर्य्यमें प्रवृत्तहुआ ४३ राजाओंने क्रोधयुक्त उस दुर्य्योधन को जो कि मतवालेहाथीके समानथा तलकेशब्दों से फिर प्रसन्न किया ४४ महात्मा पांडव भीमसेन अपनी गदाको उस करतीव्रतासे उस बड़े साहसी दुर्य्योधनके सम्मुखगया ४५ उसके जातेही वहां हाथी चिग्घाड़े बारंबार घोड़ेहींसे और विजयाभिलाषी पाण्डवों के शस्त्रभी प्रकाशित हुये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

संजयबोले कि इसके पीछे बड़ा साहसी दुर्य्योधन बड़ी तीव्रता से गर्जता उसप्रकारसे आतेहुये भीमसेन को देखकर सम्मुखगया १ और शृंगधारी बैलों के समान परस्परमें दोनों दौड़े और गदाके प्रहारोंके बड़े शब्द उत्पन्न हुये २ उन दोनों विजयाभिलाषियों का युद्ध महाकठोर और रोमहर्षण करनेवाला ऐसा हुआ जैसे कि युद्ध से परस्पर विजयाभिलाषी इन्द्र और प्रह्लादका हुआ था ३ रुधिरसे लिप्त सब शरीर गदा हाथों में लिये बड़े साहसी दोनों महात्मा फूलेहुये किंशुक वृक्षके समान दिखाई पड़े ४ इसप्रकार उस बड़े भयानक घोर युद्धके वर्त्तमान होनेपर आकाश दर्शनीय होकर ऐसा शोभायमानहुआ जैसे

कि पटवीजनों के समूहों से होताहै ५ इसप्रकार उस कठिनतर संकुलनाम युद्ध के वर्त्तमान होनेपर वह शत्रुओं के बिजय करनेवाले दोनों शूरभी थकगये ६ शत्रुसन्तापी उनदोनोंने एक मुहूर्त्त समाश्वासित होकर शुभगदाओंको पकड़कर परस्पर विश्रामकिया ७ फिर उन महापराक्रमी विश्राम कियेहुये नरोत्तमोंको हथिनीकेलिये मतवाले बलवान् हाथियोंके समान ८ एकसेपराक्रमी गदापकड़नेवाले दोनोंको अच्छीरीतिसे देखकर देवता मनुष्य और गन्धर्वोंने बड़े आश्चर्य्य को पाया ९ गदा पकड़नेवाले उन दुर्य्योधन और भीमसेन को देखकर बिजय होनेमें सबजीवोंको संदेह प्राप्तहुआ १० इसकेपीछे बलवानों में श्रेष्ठ परस्पर अन्तर चाहनेवाले दोनों भाई भिड़कर प्रत्यन्तर के समान भ्रमण करनेलगे ११ हे राजा अवलोकन करनेवालोंने उसरौद्री मारनेवाली भारी और इन्द्रवज्रकेसमान उठाईहुई यमराज के दण्डकी समान गदाको देखा १२ युद्ध में भीमसेन के हाथसे मारतीहुई गदाका एक मुहूर्त्त बड़ा कठिन और घोरशब्द वर्त्तमानहुआ १३ इसके अनन्तर वह दुर्योधन उस कठिन तीव्रता रखनेवाली गदा के मारनेवाले अपने शत्रु भीमसेन को देखकर आश्चर्य्ययुक्तहुआ १४ हे भरतबंशी उससमय भीमसेन नानाप्रकारके मार्ग और मण्डलोंको घूमताहुआ शोभायमान हुआ १५ परस्पर अपनी २ रक्षामें सावधान उन दोनोंने अन्योन्य सम्मुखहोकर बारम्बार ऐसे प्रहारकिये जैसे खानेकी बस्तुकेलिये दोबिलार परस्पर प्रहारकरते हैं १६ भीमसेन इसप्रकार के बहुत से मार्गोंको घूमा फिर सम्मुख तिर्य्यक् विचित्रमण्डल १७ अपूर्व्व अस्त्रान्तर बहुत प्रकारके दाहिने बायें प्रहारस्थानोंका छोड़ना बचाना दाहिने बायें करना १८ तीव्रता से सम्मुखजाना गिराना और अचल होना शत्रुके उठनेपर फिर युद्धकरना शत्रुके मारनेको चारोंओर जाना शत्रु के हटजानेका स्थानरोकना प्रहार बचानेकेलिये झुककर हटजाना मध्यगति १९ समीप जाकर शस्त्रका मारना चारोंओरको घूमकर पीछेकी ओर वर्त्तमान होके हाथसे शत्रुको घायल करना इन मार्गों में घूमते उन गदायुद्ध में कुशल दोनों ने अनेकप्रकार से परस्पर घायल किया २० फिर धोखादेनेवाले होकर वह कौरवोत्तम दोनों भ्रमण करनेलगे और क्रीड़ा करनेवाले वह दोनों पराक्रमी मण्डलोंको घूमे २१ युद्धमें चारोंओरसे युद्धकी क्रीड़ाको दिखलाते उन दोनों शत्रुसन्तापियोंने गदाओं से अकस्मात् ऐसे घायल किया २२ जैसे कि दांतोंसे दो

हाथी परस्पर घायल करते हैं हे महाराज वह दोनों रुधिर से लिप्त शरीर परस्पर सम्मुखहोकर शोभायमानहुये २३ इसप्रकार दिवस के अन्तपर वह घोररूप युद्ध सबके समक्ष में ऐसाहुआ जैसे कि वृत्रासुर और इन्द्रका हुआथा २४ फिर वह दोनों महाबली गदा हाथोंमें लेके मण्डलों में प्रवृत्तहुये उससमय दुर्योधन दाहिने मण्डल में वर्त्तमानहुआ २५ और भीमसेन बायें मण्डल में वर्त्तमानहुआ हे महाराज इसप्रकार से उस युद्ध के मुखपर भीमसेनको घूमते २६ दुर्योधन ने कुक्षिमें घायलकिया हे भरतर्षभ फिर आपके पुत्रसे घायल २७ और उसप्रहारको विचार न करते भीमसेनने भारीगदाको घुमाया हे महाराज उनलोगोंने इन्द्रवज्र के समान घोर यमराज के दण्डकीसमान उठाईहुई २८ भीमसेन की उस गदा को देखा तब आपके पुत्र नें गदाउठानेवाले भीमसेनको देखकर २९ उठाईहुई उस घोरगदाको ताड़ितकिया हे शत्रुसन्तापी भरतवंशी आपके पुत्रकी गदारूप वायुकी तीव्रता से ३० कठोरशब्द होकर अग्नि उत्पन्नहुई फिर भीमसेनने भी अपनी गदासे दुर्योधनकी गदाको ताड़ितकिया ३१ उससमय वह दोनों समान बलवाले भीमसेन और दुर्योधन नानाप्रकार के मार्ग और मण्डलोंको घूमतेहुये महाशोभायमानहुये फिर पूर्णवेगसे भीमसेनसे ताड़ित बड़ी गदाने ३२ धूमसमेत अग्निको प्रकटकरके बड़ी ज्वालाको प्रकाशितकिया तब दुर्योधन भीमसेन से कम्पायमान अपनी गदाको देखकर ३३ लोहमयी बड़ीभारी गदाको घुमाता महाशोभायमान हुआ उस महात्मा की गदारूपी वायुकी तीव्रता को देखकर ३४ सोमकों समेत सब पाण्डवों को भय उत्पन्नहुआ युद्ध में चारोंओर से युद्ध क्रीड़ा को दिखलाते ३५ वह शत्रुसन्तापी गदाओं से अकस्मात् परस्पर घात करनेलगे हे महाराज जैसे कि दो हाथी डाढ़ों से युद्ध करते हैं उसीप्रकार वह दोनों परस्पर पाकर ३६ रुधिरसे लिप्तहोकर शोभायमानहुये इसप्रकार दिन समाप्त होनेपर वह घोररूप और महा कठिन ऐसा युद्ध हुआ ३७ जैसे कि इन्द्र और वृत्रासुर का हुआथा आपका महाबली पुत्र अपने सम्मुख भीमसेन को देखकर ३८ अपूर्वतर मार्गों को घूमता कुन्ती के पुत्रके सम्मुख गया तब क्रोधयुक्त भीमसेनने उस क्रोधयुक्त दुर्योधनकी स्वर्ण जटित रत्नोंसे अलंकृत गदाको ताड़ित किया उससमय उन दोनों के संघट्टन से उत्पन्न होनेवाला शब्द स्फुलिंगों समेत ३९। ४० ऐसा प्रकटहुआ जैसे कि छोड़ेहुये दो वज्रों के संघट्टन

से होताहै हे महाराज वहां भीमसेनकी गिरतीहुई ४१ उस बेगवान् गदासे पृथ्वी अत्यन्त कम्पायमान हुई दुर्योधन ने भी युद्धमें ताड़ित उस गदाको ऐसे नहीं सहा ४२ जैसे कि क्रोधयुक्त मतवाला हाथी सम्मुख आनेवाले हाथी को नहीं सहता है ऐसे निश्चय करनेवाले राजा ने बायें मंडल को घूमकर ४३ भीमसेन को अपनी भयानक बेगवाली गदासे मस्तकपर घायलकिया हे महाराज आप के पुत्रकी उस गदासे घायल पाण्डव भीमसेन ४४ कम्पायमान नहीं हुआ वह आश्चर्य्यसा हुआ हे राजा सब सेना के लोगों ने उसके उस अपूर्व्व धैर्य्य की बड़ी प्रशंसाकरी ४५ जो गदासे मस्तकपर घायलहोकर भी भीमसेन चरणों से एक पदभर भी कम्पायमान नहीं हुआ तब भयानक पराक्रमी भीमसेनने बहुत भारी प्रकाशित स्वर्णालंकृत गदाको ४६ दुर्योधनके निमित्त छोड़ा भयजनित व्याकुलतासे रहित बड़े बलवान् दुर्योधनने अपनी हस्तलाघवता से उस प्रहार को निष्फल किया ४७ यह भी महाआश्चर्य्यसा हुआ हे राजा फिर भीमसेन से चलाई हुई वह मेघके समान शब्दायमान गदा पृथ्वी को कंपित करके कौशिक नाम मार्गों में नियत होकर बारम्बार उछली ४८। ४९ गदाके गिरने को और भीमसेनको ठगाहुआ जानकर अत्यन्त क्रोधयुक्त महाबली कौरवोत्तम दुर्योधन ने उसप्रकार गदासे भीमसेनको छलकर छातीपर घायल किया तब बड़े युद्धमें आपके पुत्रकी गदासे घायल और अचेत भीमसेन ने ५०। ५१ करनेके योग्य कर्मको नहीं जाना हे राजा इसप्रकार उसयुद्धके बर्त्तमान होनेपर सोमक और पाण्डव ५२ अत्यन्त हतसंकल्प होकर चित्तसे दुःखी हुये फिर उस प्रहार से हाथीके समान क्रोधयुक्त ५३ हाथीके समान भीमसेन उस हाथीहीके समान आपके पुत्र के सम्मुखगया अर्थात् फिर भीमसेन बड़ी तीव्रता से गदा समेत आपके पुत्रके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि सिंह बड़ी तीव्रतासे जंगलके हाथीके सम्मुख जाताहै हे राजा गदा छोड़ने में सावधान भीमसेनने राजाके पास जाकर ५४। ५५ उस आपके पुत्रको लक्ष्य बनाकर गदाको घुमाया और उस गदा से भीमसेन दुर्योधनको पार्श्व अर्थात् कुक्षिस्थानमें घायलकिया ५६ उस प्रहार से व्याकुल वह दुर्य्योधन जंघाकेबल पृथ्वीपर गिरपड़ा उस कौरव कुलमें श्रेष्ठ दुर्योधनको जंघा के बलसे पृथ्वीपर गिरनेपर ५७ सृञ्जियों के शब्द प्रकटहुये हे राजा वह जगत्पति आपका पुत्र उन सृञ्जियोंकी गर्जनाओंको सुनकर ५८

अशांतीसे क्रोधयुक्त बड़े सर्प के समान श्वासालेते नेत्रों से भस्मकरते महाबाहु दुर्योधनने उठकर ५९ भीमसेनको देखा और गदा हाथमें लेकर भीमसेनके सन्मुखगया ६० युद्धमें भीमसेन के शिरको मर्द्दन करना चाहते बड़े साहसी और भयानक पराक्रमी राजा दुर्योधनने महात्मा भीमसेनको शंख स्थानमें घायल किया परन्तु वह पर्व्वताकार कंपायमान नहीं हुआ हे राजा युद्धमें गदासे घायल और रुधिरसे लिप्त वह भीमसेन मद झाड़नेवाले हाथीके समान फिर शोभायमान हुआ ६१।६२ इसके पीछे शत्रुसंतापी अर्ज्जुन के बड़ेभाई भीमसेनने वीरोंकी मारनेवाली बज्रबिजलीके समान शब्दायमान लोहेकी गदाको पकड़कर बड़ेबल और पराक्रमसे शत्रुको घायलकिया ६३ भीमसेनके हाथसे घायल होकर अत्यन्त कंपायमान शरीरमें जोड़वाला आपका पुत्र ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बनमें अच्छा पुष्पित शालका वृक्ष वायुसे ताड़ित घूमताहुआ गिरताहै ६४ इसके पीछे आपके पुत्रको पृथ्वी पर गिराहुआ देखकर सब पाण्डव लोग गर्जे और प्रसन्नहुये फिर आपकापुत्र सचेतहोकर ऐसे उछला जैसे कि ह्रदनाम तड़ागसे हाथी उछलताहै ६५ तब सदैव क्रोधयुक्त शिक्षा पायेहुयेके समान चारों ओर को घूमते उस महारथी राजाने आगे नियत होनेवाले पाण्डव को घायल किया उस ब्याकुलनेभी पृथ्वीको स्पर्शकिया ६६ वह कौरव बलसे भीमसेन को पृथ्वी पर गिराकर सिंहनाद को गर्जा और बज्रके समान बड़ी तेजस्वी गदाके प्रहारसे उसके कवचकोतोड़ा ६७ इसकेपीछे आकाशसे गर्जनेवाले देवता और अप्सराओं के बड़े शब्दहुये और देवताओं ने उत्तम पुष्पोंकीभी बर्षाकरी ६८ इसके पीछे पृथ्वीपर पड़ेहुये नरोत्तम को देखकर प्रतिपक्षियों में बड़ाभय उत्पन्न हुआ कौरवको बलसे पूर्ण और भीमसेनके अत्यन्त दृढ़ कवचके टूटनेको देखकर सब अत्यन्त भयभीत हुये ६९ इसके पीछे भीमसेन एक मुहूर्त्त में सचेतता को पाकर रुधिर से भरेहुये अपने मुखको साफकरके धैर्य्य को धारणकर दोनों नेत्रोंसे अवलोकनकर अपने को बड़े बलसे थांभकर नियत हुआ ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिभीमसेनदुर्य्योधनसंग्रामेअष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसके पीछे अर्ज्जुन उन कौरवोंमें श्रेष्ठ भीमसेन और दुर्यो-

धनके युद्ध को देखकर यशमान् बासुदेवजी से यह बचन बोला १ हे जनार्द्दन जी इन दोनों बीरोंके युद्धमें आपके बिचारसे कौन बिशेषहै अथवा किसमें कौनसा अधिक गुणहै उसको आप कहिये २ बासुदेवजी ने कहा दोनोंकी शिक्षा बराबरहै और भीमसेन अधिक बलवान्है परन्तु यह दुर्य्योधन भीमसेनसे अधिक अभ्यासी और उपाय करनेवालाहै ३ भीमसेन धर्म्मसे युद्धकरके इसको बिजय नहीं करसक्ता और जो अन्यायसे लड़ेगा तो अवश्य दुर्य्योधन को बिजय करेगा ४ और यह भी हमने सुना है कि असुरलोगों को देवताओं ने छलसेही बिजय कियाहै निश्चय करके उस बिरोचनको छलही से इन्द्रने बिजय कियाथा ५ और छलही से इन्द्रने बृत्रासुर को भी बिजय किया इसकारण भीमसेन मायारूप पराक्रममें नियत होकर लड़े ६ हे अर्जुन भीमसेन ने द्यूतके समय उस दुर्य्योधनसे प्रतिज्ञा करीथी कि युद्धमें तेरी जङ्घाओं को गदासे तोड़ूंगा ७ सो यह शत्रुसन्तापी भीमसेन उस प्रतिज्ञा को भी पूराकरे छलसेही छली राजा को मारे ८ जो यह बलमें नियत होकर न्यायपूर्बक प्रहार करेगा तो राजा युधिष्ठिर अवश्य आपत्ति में फँसेगा ९ हे पाण्डव जो मैं कहताहूं उसको सुनो कि धर्मराजके अपराधसे हमको फिर भय प्राप्तहुआ १० बहुत बड़े कर्म्मोंको करके और भीष्मादिक बड़े २ कौरवों को भी मारकर बिजयपूर्बक अत्यन्त उत्तम यश और शत्रुताके बदलेको प्राप्तकिया ११ इसप्रकारकी प्राप्तहोनेवाली विजयको फिर सन्देहसे युक्त किया हे अर्ज्जुन धर्मराजकी यह बड़ी निर्बुद्धिताहै १२ जो बिजय में इसप्रकार के एककेही साथ घोरयुद्ध की प्रतिज्ञाकरी दुर्य्योधन अभ्यासी बीर और एकसे चित्तवालाहै १३ और शुक्रजीका कहाहुआ यह प्राचीन और मुख्य प्रयोजनसे युक्त श्लोकभी सुनाजाताहै उसको तुम मुझसेसुनो १४ कि लौटकर आनेवाले पराजित जीवनकी इच्छा करनेवाले और एकाकीपनेमें बँधेहुये मनुष्योंसे भयकरना चाहिये क्योंकि वह एकसे चित्तवाले हैं हे अर्ज्जुन अकस्मात् चढ़ाई करनेवाले जीवनसे निराश शूरबीरोंके आगे इन्द्रसेभी नियतहोना सम्भव नहींहै इस पराजित मृतक सेनावाले ह्रदमें वर्त्तमान हारेहुये बनको चाहनेवाले और राज्यपानेमें आशारहित दुर्य्योधनको १५।१६ कौनसा बुद्धिमान् फिर द्वन्द्व युद्धमें बुलावे दुर्योधन हमारे विजय कियेहुये राज्यको हरण नहींकरसक्ता १७।१८ जो निश्चय करनेवाला दुर्य्योधन भीमसेनके मारनेकी इच्छासे तेरहवर्षसे गदाके

द्वारा ऊंची नीची और तिरछी गतिकरताहै १९ जो महाबाहु भीमसेन इसप्रकार इसको अन्यायसे नहीं मारेगा तो यह कौरव दुर्योधन तुम्हारा राजाहोगा २० फिर अर्ज्जुनने महात्मा केशवजीके इस बचनको सुनकर भीमसेनके देखते हुये बाईं जङ्घा को ठोंका २१ इसके पीछे भीमसेन उस संकेत को पाकर युद्ध में गदाके द्वारा यमक आदिक बहुतसे बिचित्र मण्डलोंको घूमा २२ हे राजा पाण्डव भीमसेन शत्रुको अचेत और मोहित करता गोमूत्रकनाम मण्डलों को घूमा २३ उसीप्रकार गदामार्ग में सावधान आपका पुत्रभी भीमसेनके मारनेकी इच्छासे तीव्रतासे अपूर्व मार्गोंको घूमा २४ चन्दन अगरसेयुक्त घोर गदाओंको चलायमान करनेवाले शत्रुताका अन्त चाहते युद्धमें यमराजके समान क्रोधयुक्त २५ परस्पर मारनेके अभिलाषी बड़ेबीर पुरुषोत्तम वह दोनों ऐसे युद्ध करनेवालेहुये जैसे कि सर्पोंका मांस चाहनेवाले दो गरुड़ युद्ध करते हैं २६ वहां बिचित्र मण्डलोंके घूमनेवाले राजादुर्योधन और भीमसेन की गदाओं के प्रहारसे उत्पन्न होनेवाली अग्निकी ज्वाला प्रकटहुई २७ हेराजा वहां बराबर प्रहार करनेवाले उन पराक्रमी शूरों का घोरशब्द ऐसा उत्पन्नहुआ जैसे कि वायुसे वेगयुक्त दो समुद्रों का घोरशब्द होताहै २८ मतवाले हाथीके समान बारम्बार प्रहार करनेवाले उन दोनोंके प्रहार करनेसे परस्पर गदाओंके संघट्टनसे बड़ाशब्द उत्पन्न हुआ २९ तब उस भयानक और व्याकुल युद्ध में लड़नेवाले वह दोनों शत्रुसंतापी थकगये ३० अर्थात् शत्रुओंके तपानेवाले क्रोधयुक्त वहदोनों एकमुहूर्त्त समाश्वसितहोके दोनों गदाओंको पकड़कर फिर विश्राम युक्तहुये ३१ हेराजेंद्र गदाओं के प्रहारों से परस्पर प्रहार करनेवाले उन दोनोंका घोररूप युद्ध सबके देखते हुये हुआ ३२ फिर युद्ध में चलायमान उन दोनों श्रेष्ठ नेत्रवाले बीरोंने परस्पर ऐसे घायलकिया जैसे कि हिमालय पर्वतपर फूलेहुये दो किंशुकके वृक्ष होते हैं ३३ । ३४ भीमसेन से कुछ छिद्र दिखानेपर थोड़ासा प्रसन्नचित्त दुर्योधन अकस्मात् दौड़ा ३५ बुद्धिमान् बलवान् भीमसेनने युद्धमें उस समीप वर्त्तमान दुर्योधन को देखकर बड़ी तीव्रतासे उसके ऊपर गदाकोमारा ३६ हेराजा आपका पुत्र उस गदा चलानेवालेको देखकर उस स्थानसे हटगया वह गदा निष्फल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ३७ हे कौरवोत्तम तब आपके पुत्रने बड़ी व्याकुलता समेत उस प्रहारको बिचारकर भीमसेनको गदासे घायलकिया ३८ रुधिरके च-

लायमान होने और बड़े प्रहार के गिरने से उस बड़े तेजस्वी को मूर्च्छा होगई ३९ दुर्योधन ने उस युद्ध में पीड़ावान् भीमसेन को नहीं जाना और भीमसेन ने अत्यन्त पीड़ित शरीरको धारणकिया ४० आपके पुत्रने युद्धमें उसको नियत और प्रहार करने का इच्छावान् माना इसहेतु से फिर उसपर प्रहार नहीं किया ४१ हे राजा इसकेपीछे प्रतापवान् भीमसेन एक मुहूर्त्त विश्राम करके तीव्रतासे सम्मुख वर्त्तमान दुर्योधन के समक्ष में दौड़ा ४२ हे भरतर्षभ उस क्रोधयुक्त बड़े तेजस्वी आतेहुयेको देखकर उसके उस प्रहारको निष्फल करनेकी इच्छासे ४३ बड़े साहसी भीमसेनको छलना चाहते आपके पुत्रने अवस्थान अर्थात् ठहरने में मतिकरके उछलना चाहा ४४ परन्तु भीमसेन ने उस राजाके कर्म करने की इच्छाको जानलिया और सम्मुख जाकर सिंहके समान गर्जना करके ४५ भीमसेन ने गदाको बड़ी तीव्रतासे उस कालरूपके ठगनेवाले और फिर उछलने के अभिलाषी की जंघाओं पर चलाया ४६ भयकारी कर्मकर्त्ता भीमसेनसे चलाई हुई और वज्र के समान घिसावटवाली उस गदाने दुर्योधन की दर्शनीय जंघाओं को तोड़ा ४७ हे राजा भीमसेनके हाथसे टूटी जंघावाला वह आपका नरोत्तम पुत्र पृथ्वीको शब्दायमान करताहुआ गिरपड़ा ४८ उससमय परस्पर संघट्टन करती बायुचलीं धूलकी बर्षाहुई और बृक्ष बन पर्वतोंसमेत पृथ्वी कंपायमानहुई ४९ सब राजाओंके स्वामी और सब पृथ्वीके अधिपति उस दुर्योधन के गिरने पर बड़ी शब्दायमान प्रकाशित और परस्पर संघट्टनवाली बायुसमेत ५० बहुतसी उल्कागिरीं और रुधिरसमेत धूलकीभी बर्षाहुई ५१ हे भरतर्षभ वहां दुर्योधन के गिरनेपर इन्द्रने बर्षाकरी इसी प्रकार यक्ष राक्षस और पिशाचों के भी बड़े शब्द अन्तरिक्ष में सुनाई पड़े ५२। ५३ उस घोर शब्द से बहुत से पशु पक्षियों के भी बड़े घोरशब्द सब दिशाओंमें उत्पन्नहुये और जो वहां मनुष्योंसमेत घोड़े हाथी आदिकथे ५४ उन्होंनेभी दुर्योधनके गिरनेपर बड़ेशब्द किये भेरी शङ्ख और मृदङ्गों के बड़े शब्दहुये ५५ आपकेपुत्र दुर्योधनके गिरने पर पृथ्वीके भीतर भी शब्दहुये सब दिशा बहुतसे चरण भुजाओंसे और घोर दर्शन ५६ नृत्य करनेवाले भयकारी रुण्डोंसे पूर्णहोगईं ५७ ध्वजासमेत शस्त्रधारी बीर भी कम्पायमानहुये हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र आपके पुत्र दुर्योधनके गिरनेपर तड़ाग और कूपोंने भी ऊपरको रुधिरबहाया ५८ बड़ी शीघ्रगामी न-

दियां उल्टीवहीं स्त्रियां पुरुषोंकेसमान और पुरुष स्त्रियोंके समान होगये ५६ हे राजा आपके पुत्र दुर्योधन के गिरने पर पांचालों समेत सब पाण्डव उन अपूर्व उत्पातोंको देखकर चित्तसे ब्याकुलहुये ६०। ६१ इसीप्रकार देवता गन्धर्व्व और अप्सरा आपके पुत्रों के अपूर्व्व युद्धको वर्णन करते हुये इच्छानुसार चलेगये और हे राजेन्द्र इसीप्रकार शुद्धबायुके साथ चलनेवाले चारण लोग भी ६२ उन दोनों नरोत्तमोंकी प्रशंसा करते अपने २ स्थानोंको चलेगये ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिदुर्य्योधनवधेएकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

संजय बोले कि इसके अनन्तर शाल वृक्षके समान ऊंचे गिरायेहुये उस दुर्योधनको अत्यन्त प्रसन्नचित्त सब पाण्डवोंने देखा १ और रोम २ से प्रसन्न उन सब सोमकोंने भी सिंहके हाथसे गिरायेहुये मतवाले हाथीके समान दुर्योधनको देखा २ इस रीतिसे प्रतापवान् भीमसेनने दुर्य्योधन को मारकर उस गिरायेहुये मृतकप्राय कौरवेन्द्र के पास जाकर यह कहा ३ कि हे दुर्मति अभागे जो पूर्व्व कालमें तुमने सभाके मध्यमें हमारा हास्यकरके एकवस्त्रा द्रौपदी से जो हे गौ हे गौ कहा ४ उस हास्यके फलको अब तुमने पाया यह कहकर उसने अपने बाम पादसे उसके मुकुटको स्पर्शकिया ५ इसीप्रकार शत्रुकी सेनाके पीड़ावान् करनेवाले क्रोधसे रक्तवर्ण भीमसेनने उस राजाओंमें श्रेष्ठ दुर्योधनके शिरको पैरोंसे ठुकराया ६ इसके पीछे भी जो २ बचन कहे उनको भी सुनो जो अज्ञानी पूर्व्व कालमें हे गौ हे गौ ऐसा कहतेहुये हमारे सम्मुख नृत्य करनेवाले हुये ७ उनके सम्मुख अब हम नाचते हैं कि हे गौ हे गौ इस रीतिसे कहो हमारा छलना अग्निका लगाना द्यूतका पांसा और ठगना नहीं है हम अपने भुजबलके आश्रित होकर शत्रुओंको पीड़ा देते हैं ८ वह भीमसेन उस बड़ी शत्रुताके अन्तको पाकर हँसकर बड़े धीरपने से युधिष्ठिर, केशवजी, अर्ज्जुन, नकुल, सहदेव और सृञ्जियोंसे यह बचन बोले ९ कि जोपुरुष रजस्वला द्रौपदीको लाये और लाकर जिन्होंने सभामें नंगी किया अथवा नङ्गी करनाचाहा उन धृतराष्ट्रके पुत्रों को युद्धमें द्रौपदीके तेज और पाण्डवोंके पराक्रमसे मृतकहुआ देखो १० पूर्वसमय में राजा धृतराष्ट्रके जिन निर्दय पुत्रोंने हमको नपुंसक कहाथा वह अपने सब

समूहों और सहायकों समेत हमारे हाथसे मारेगये इससे हमको स्वर्ग होय अ-थवा नरकहोय ११ फिर उसने पृथ्वीपर गिरेहुये राजाके कन्धेपर बर्त्तमान गदा को मर्द्दनकर बामपादसे शिरको अच्छे प्रकार से मल उसछली दुर्योधनसे कहा १२ हे राजा सोमकों समेत श्रेष्ठ २ महात्माओंने राजा दुर्योधनके मस्तकपर उस प्रसन्नचित्त नीचात्मा भीमसेनके चरणको रक्खाहुआ देखकर अच्छा नहींमाना १३ उसप्रकार आप के पुत्रको मारकर वार्त्तालाप करनेवाले और बहुत रीतों से नाचनेवाले भीमसेनसे धर्मराजने यह बचन कहा कि तुमने शत्रुताकी अनृ-णताको प्राप्तकिया १४ और अपनी प्रतिज्ञा को पूराकिया अब शुभाशुभ कर्मों से पृथक् होकर चरणसे इसके शिरको मर्द्दन मतकर धर्म तुझको उल्लंघन करने-वाला न होय हे निष्पाप यह राजा और अपना भाई मारागया यह तेरी बात न्यायके योग्य नहीं है १५। १६ हे भीमसेन ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके स्वामी कौरवोंके राजा अपने भाईको चरणसे मत ठुकराओ १७ मृतक भाई मन्त्री और नाशयुक्त सेनावाला यह राजादुर्योधन युद्धमें मारागया यह सब प्रकार से शो-चने के योग्य है हास्यके योग्य नहीं है १८ यह मृतक मन्त्री भाई सन्तान और पिण्डवाला और आपभी नाशको प्राप्तहुआ भाई है तुमने यह न्याय के योग्य नहीं किया १९ पूर्व्व समयमें लोगोंने कहाहै कि यह भीमसेन धर्मका अभ्यासी है हे भीमसेन तुम धर्म्मज्ञ होकर इस राजाको किस निमित्त चरणों से ठुकराते हो २० फिर अश्रुओं से पूर्ण राजा युधिष्ठिर भीमसेन से ऐसे बचन कहकर महा दुःखी होकर उस शत्रुविजयी दुर्य्योधन के पास जाकर यह बचन बोले २१ कि हे तात तुझको क्रोध न करना चाहिये और अपना भी शोच न करना चाहिये निश्चयकरके पूर्व्वका किया हुआ घोरकर्म फलको अवश्य देताहै २२ हे कौरव्य निश्चय करके ईश्वरसे बिपरीत अशुभ और अपवित्र फलवाला कर्म्म उपदेश किया गयाहै जो तुमहमको और हमतुमको मारतेहैं २३ हे भरतवंशी निश्चयही अपने अपराधसे उसप्रकार के बड़े दुःखको प्राप्त कियाहै जो कि लोभ अहङ्कार और अज्ञानता से प्राप्तहुआ है २४ हमारे भाई समानबय पिता पुत्रपौत्र और अन्य २ लोगों को मरवाकर आपभी नाशहुआ २५ तेरेही अपराधसे तेरे सब भाई हमारे हाथसे मारेगये और जातवाले भी मारे इससे मैं प्रारब्धकोही कठि-नतासे पारहोनेके योग्य मानताहूं २६ हेनिष्पाप तेरा आत्मा शोचके योग्यनहीं

है तेरी मृत्यु प्रशंसाके योग्यहै परन्तु हे कौरव अब हम सब दशामें शोचके यो-ग्यहैं २७ उन भाइयोंसे रहित होकर हम दुःखसे अपना जीवन करेंगे और भाई पुत्रादिकों के शोकसे व्याकुल होंगे २८ शोकमें पूर्ण बिधवा बधुओं को किस प्रकारसे देखूंगा हेराजा तुम अकेलेचले निश्चय तुमको स्वर्गहोगा २९ हमलोग अवश्य नरकगामी हैं और बड़े कठिन दुःखोंको पावेंगे धृतराष्ट्रके पुत्रपौत्रों की स्त्रियां व्याकुल शोकसे पीड़ित और विधवाहोकर हमारी निन्दाकरेंगी ३० सञ्जय बोले कि दुःखसे पीड़ावान् वह धर्मका पुत्र राजा युधिष्ठिर इसप्रकार कहकर और श्वासोंको लेकर अत्यन्त पीड़ावान्हुआ ३१॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणित्रिंशोऽध्यायः ३०॥

इकतीसवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोले हे सूत तब माधवों में श्रेष्ठ बड़े बलवान् बलदेवजी ने अधर्म से मारेहुये राजाको देखकर क्या कहा १ गदा युद्धमें कुशल माधव बलदेवजी ने जो किया वह सब मुझसे कहो २ सञ्जयबोले कि प्रहारकर्त्ताओं में श्रेष्ठ बलवान् बलदेवजी भीमसेन के चरणोंसे घातित आपके पुत्रको देखकर बड़े क्रोधयुक्तहुये ३ इसके पीछे राजाओं के मध्यमें ऊंची भुजा करनेवाले बलदेवजी पीड़ित शब्दोंसे यह बचन बोले कि हे भीमसेन धिक्कारहै धिक्कारहै धिक्कारहै ४ जो युद्धमें तैंने नाभिके नीचे धर्मके बिरुद्ध प्रहारकिया यह गदायुद्ध में कभी नहीं देखाथा जिसको कि हे भीमसेन तुमने किया ५ नाभिके नीचे प्रहारकरना अधर्म है यह शास्त्रको न जाननेवाला अज्ञान भीमसेन अपनी इच्छासे कर्म करताहै ६ ऐसे अनेक बातों को कहकर उन बलदेवजी का बड़ाक्रोध प्रकटहुआ इसकेपीछे वह महाबली अपने हलको उठाकर भीमसेन के सम्मुखगये ७ उस समय उस ऊंची भुजा करनेवाले महात्माकारूप बहुत अनेक धातुयुक्त श्वेत पर्वतके समानहुआ ८ तब नम्रतासेयुक्त पराक्रमी केशवजीने बड़े उपायकेद्वारा हृष्टपुष्ट लम्बी भुजाओं से उछलनेवाले बलदेवजीको बड़े बलसे पकड़लिया ९ तब मृदुस्वभाववालों में श्रेष्ठ गौर और श्याम वर्णवाले वह दोनों महात्मा ऐसे अधिक शोभायमान हुये हेराजा जैसे कि दिनके अन्तमें वर्त्तमानहोनेवाले चन्द्रमा और सूर्य शोभितहोते हैं १० केशवजी उन क्रोधयुक्त बलदेवजी को शान्तकरके यह वचनबोले कि अ-

पनी वृद्धि, शत्रुकानाश, अपने मित्रकी वृद्धि, शत्रुके मित्रकानाश और अपने मित्रके मित्रकी वृद्धि और शत्रुके मित्रके मित्रका नाश ११ यहछःप्रकारकी अपनी वृद्धिहै जब अपने में और मित्रोंमें अन्तरहोगा १२ तब चित्तग्लानिको पावेगा उससमय कोई अशुभ न होगा पवित्र बीरतावाले पांडव हमारे भाई और मित्रहैं १३ अपनी फूफीके पुत्रहैं उनका शत्रुओं ने अनादर कियाथा हम इसलोक में प्रतिज्ञाके पूरेकरनेको क्षत्रीका धर्म्मजानते हैं १४ पूर्व समयमें भीमसेनने सभाके मध्यमें प्रतिज्ञाकरीथी कि मैं बड़े युद्धमें दुर्योधनकी जंघाको अपनी गदासे तोडूंगा १५ हे शत्रुसंतापी पूर्व्व में मैत्रेय महर्षि ने इसको शाप दियाथा कि युद्धमें भीमसेन गदासे तेरी जङ्घाओंको तोड़ेगा १६ इसकारण मैं दोषको नहीं देखताहूं हे बलदेवजी आप क्रोध न करो पांडवों से हमारी नातेदारी है प्रथम योनिसम्बंध से अर्थात् हमारेबाबा और पाण्डवोंके नाना एकहैं दूसरे अपनी प्रीतिसे अर्थात् अर्जुनबहनोई और मित्रभी है १७ उन्हींकीही वृद्धि से हमारी वृद्धिहै हे पुरुषोत्तम क्रोध न करो धर्मज्ञ बलदेवजी ने बासुदेवजी के बचनको सुनकर कहा १८ कि छःगुणोंसे अच्छीरीति करके अभ्यास कियाहुआ धर्मकहाहै और दोगुणों से हानिको पाताहै वह दोगुण यह हैं कि बड़ेलोभीका अर्थ और अति प्रसंगी काकाम १९ जो पुरुष कामसे धर्म अर्थको अर्थ से धर्म कामको और धर्मसे काम अर्थको पीड़ावान् न करता धर्म अर्थ कामको प्राप्त होताहै वह बड़ेसुखको पाता है २० सो धर्मके पीड़ावान् करने से भीमसेन ने यह सब व्याकुलता से किया हे गोबिन्द जी तुमने मुझसे अपनी इच्छानुसार कहा है धर्म के अनुसार नहीं कहाहै २१ श्रीकृष्ण जी बोले कि आप इस लोक में क्रोधरहित धर्मात्मा और सदैव धर्मबत्सल बिख्यातहो इस हेतुसे आप शान्त हूजिये क्रोध न करिये अब आप कलियुगको वर्त्तमान हुआ जानिये और पाण्डवोंकी प्रतिज्ञा को समझो पाण्डवलोग शत्रुता और प्रतिज्ञा की अऋणता को पावें २२। २३ सञ्जयबोले हे राजा उन अप्रसन्नमन बलदेवजी ने केशवजी से इस छलसंयुक्त धर्म्मको भी सुनकर सबके समक्ष में इस बचन को कहा २४ कि पाण्डव भीमसेन धर्म्मात्मा राजादुर्य्योधन को अधर्म्म से मारकर इस लोकमें अधर्मयुद्ध करनेवाला प्रसिद्ध होगा २५ धर्म्मात्मा दुर्य्योधन भी सनातन गति को पावेगा क्योंकि सत्ययुद्ध करनेवाला राजादुर्य्योधन मारागया २६ युद्धदीक्षाको प्राप्तकर और युद्धभूमि में

युद्धरूपी यज्ञकी रचनाकरके अपने को शत्रुरूपी अग्नि में होमकर शुभकीर्त्ति रूपी यज्ञस्नान को इसने पाया २७ श्वेतशिखर और स्वच्छ बादलरूप बलदेव जी यह कहकर रथपर सवारहोकर द्वारका को चलेगये २८ हे राजा बलदेवजी के द्वारकाजानेपर पाण्डवोंसमेत सब पाञ्चाल अत्यन्त प्रसन्न नहीं हुये २९ इस केपीछे बासुदेवजी उस दुःखी शोचग्रस्त नीचाशिर करनेवाले शोकसे हतसंकल्प युधिष्ठिरसे यह बचनबोले ३० कि हे धर्मराज तुम किस निमित्त अधर्म्म को स्वीकार करतेहो हे राजा तुम धर्मज्ञहोकर जो इस मृतक भाईवाले अचेत गिरेहुये दुर्य्योधन के शिरको भीमसेन के पैरों से मर्दन कियाहुआ देखकर निषेध नहीं करतेहो इसका क्याहेतुहै ३१ । ३२ युधिष्ठिरबोले हे श्रीकृष्णजी यह मैं नहीं चाहताहूं जो भीमसेनने क्रोधसे राजाके शिरको चरणसेछुआ इस कुलके नाश में मैं प्रसन्न नहीं होताहूं ३३ हमलोग धृतराष्ट्र के पुत्रों के छलों से छलेगये इन लोगोंने बड़े २ कठोर और असह्य बचन कहकर हम सबको बनमें भेजाथा ३४ वह कठिन दुःख भीमसेन के हृदय में बर्त्तमान है हे श्रीकृष्णजी मैंने यह बिचार कर तरहदी है ३५ इसहेतुसे पाण्डव भीमसेन उस निर्बुद्धि लोभी और कामकी आधीनतामें बर्त्तमान दुर्य्योधन को मारकर धर्मसे वा अधर्म करके भी प्रयोजन को सिद्ध करसक्ताहै ३६ सञ्जयबोले कि धर्मराज के इसप्रकार कहनेपर बासुदेव जी इस बचन को दुःखसे बोले कि यह इच्छाकेअनुसार होय ३७ भीमसेन का प्रिय और हित चाहनेवाले बासुदेवजी के इसप्रकार कहेहुये बचन को सुनकर धर्मराज ने उस सब अपराधको क्षमाकिया जोकि युद्धमें भीमसेनसे कियागया था ३८ हे राजा युद्धभूमिमें आपके पुत्रको मारकर क्रोधसेरहित अत्यन्त प्रसन्न हाथ जोड़ेहुये प्रसन्नता से प्रकाशितनेत्र बिजयसे शोभायमान महातेजस्वी भीमसेनने भी दण्डवत्करके आगे नियतहोकर धर्मराज युधिष्ठिरसे कहा ३९ । ४० कि हे राजा अब निष्कण्टक और क्षेमकारी यह सब पृथ्वी तेरी है हे महाराज इसपर राज्यकरो और अपने धर्म्म को पालनकरो ४१ जो छली छलसे ही इस शत्रुता का पालन करनेवाला था हे राजा वह माराहुआ इस पृथ्वीपर पड़ाहुआ सोताहै ४२ और तुमको कठोरबचन कहनेवाले आपके शत्रु कर्ण शकुनि और दुश्शासनादिक सब भाईभी मारेगये ४३ हे महाराज यह रत्नोंसे पूर्ण मृतक शत्रुवाली पृथ्वी बन पर्वतोंसमेत अब आपको प्राप्तहुई ४४ युधिष्ठिरबोले कि राजा

दुर्योधनको मारा इससे अब शत्रुताका अन्तप्राप्तहुआ और श्रीकृष्णजीके बिचारमें नियतहोकर हम सबलोगोंने इसपृथ्वीको बिजयकिया ४५ आपने प्रारब्ध सेही दोनों माताओं के क्रोधकी अनृणताको पाया है अजेय आप प्रारब्धसेही बिजय करते हो और प्रारब्धही से यहसब शत्रुमारेगये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय युद्धमें भीमसेनके हाथसे मृतक देखकर पांडव और सृंजियों ने क्या किया १ सञ्जय बोले हे महाराज जिसप्रकार सिंहके हाथसे मरे हुये मतवाले जङ्गली हाथीको देखते हैं उसीप्रकार युद्धमें भीमसेन के हाथ से दुर्य्योधनको मराहुआ देखकर २ श्रीकृष्णजी समेत प्रसन्नचित्त पाण्डव पांचाल और सृंजियों ने कौरवनन्दन के मरनेपर ३ दुपट्टों को घुमा घुमाकर सिंहनाद किये परंतु पृथ्वीने इनप्रसन्नतासे पूर्ण बीरोंको नहींसहा ४ किसी किसीने धनुषों को टङ्कारा किसीने ज्याको शब्दायमान किया बहुतों ने बड़े शंखोंको बजाया कितनोंने दुन्दुभियोंको बजाया ५ इसीप्रकार बहुतेरे क्रीड़ा करनेवाले हुये और आपके बहुत से शत्रु प्रसन्नमनहुये यह सबबीर बारम्बार भीमसेन से यह बचन बोले ६ कि अब युद्धमें तुमने थकेहुये कौरवराजको अपनीगदासे मारकर बड़ा कठिन कर्म्मकिया ७ मनुष्यों ने आपके हाथसे युद्धमें उस शत्रुके मरने को इस प्रकार का माना जैसे कि इन्द्रके हाथसे वृत्रासुर का मरण हुआ था ८ भीमसेन के सिवाय कौनसा मनुष्य उस सबप्रकार के मार्गों समेत घूमने वाले शूरबीर दुर्य्योधनको मारसक्ता था ९ तुमने यहां शत्रुताके अन्तको पाया यह आपका कर्म दूसरों से बड़ी कठिनता से भी करने के योग्य न था १० हे बीर तुमने युद्धभूमि में प्रारब्धसे मतवालेहाथी के समान दुर्य्योधनके शिरको अपने चरणों से मर्द्दनकिया हे निष्पाप तुमने उत्तम युद्धकरके प्रारब्धसेही दुश्शासन के रुधिर को ऐसे पानकिया जैसे कि भैंसेके रुधिरको सिंह पान करताहै ११ । १२ जिन्होंने धर्मात्मा राजा युधिष्ठिरका अपमानकियाथा उनके शिरपर तुमने अपने कर्म्मके द्वारा अपनाचरण रक्खा १३ हे भीमसेन प्रारब्धसेही तुम शत्रुओंके ऊपर बिराजमान हो और दुर्य्योधनके मारने से तेरी बड़ी कीर्त्ति पृथ्वीपर हुई १४ निश्चय

करके कि वृत्रासुरके मरनेपर बन्दीजनों ने जैसे इन्द्रको प्रसन्न कियाथा हे भरत-बंशी उसीप्रकार हम सबभी निश्शत्रुहोकर तुमको प्रसन्नकरते हैं १५ दुर्योधनके मरनेसे जो हमारे रोम २ हर्षितहुये वह अबतक शरीरपर उठेहुये नहीं बैठते हैं हे भरतबंशी इसको सत्य सत्यही जानो १६ इसप्रकारसे भीमसेनकी प्रशंसाकरतेही में उस स्थान पर बार्तिकजन इकट्ठेहुये पाण्डवों समेत एकसी बार्त्ता करनेवाले उन पुरुषोत्तम पांचालों को देखकर १७ मधुसूदनजी बोले कि हेराजाओ मृतक शत्रुको फिर मारना नीतिके बिपरीतहै १८ यह निर्बुद्धी कठोर बचनों से बारंबार घायलहुआ यह पापी इसी हेतुसे मारागया जब कि इसने निर्लज्ज १९ लोभी और पापियोंका साथी होकर शुभचिन्तकोंकी आज्ञाओं के बिना कर्मोंकोकिया इस दुष्टात्मा ने बहुधा बिदुर, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, भीष्मपितामह, सृञ्जी २० और पाण्डवों से प्रार्थना करनेपर भी पिताके बिभागको नहीं दिया यद्यपि यह नीचपुरुष मित्र अथवा शत्रुभी था तो भी इसका हास्यकरना योग्यनहीं है २१ वचनों से घायल काष्ठके समान इसदुर्य्योधनसे हमारा क्या प्रयोजनहै हे राजा-ओ शीघ्र रथपर सवार होजाओ अब यहांसे चलेंगे २२ यह पापात्मा मंत्री भाई और ज्ञातिवालों समेत प्रारब्धसेही मारागया राजादुर्य्योधन श्रीकृष्णजीसे ऐसे निन्दाके वचनों को सुनकर २३ और क्रोधके आधीन होके दोनों हाथोंसे पृथ्वी को आश्रितहोकर स्फिगनाम अंगके सहारे से बैठगया २४ और अपनी दृष्टिको और भृकुटीको टेढ़ीकरके बासुदेवजी के ऊपर फेंका हेभरतबंशी अर्द्धशरीर ऊंचा करनेवाले राजाकारूप २५ दबेहुये क्रोधयुक्त बिषैले सर्प के समान हुआ प्राणों के नाश करनेवाली महाघोर पीड़ाको कुछ ध्यान न करते २६ उस दुर्य्योधनने कठोर बचनोंसे वासुदेवजी को अत्यन्त पीड़ावान् किया अर्थात् यह कठोर वचन कहा कि हे कंसके दासके पुत्र तुझको निश्चय करके इससे लज्जा नहीं आती है २७ जो मैं गदायुद्ध में भीमसेन के हाथसे तुझ निरर्थक स्मरण करानेवाले के अधर्म से गिरायागया अर्थात् तैंने यह स्मरण कराया कि इसकी जंघाओं को तोड़ो २८ सत्ययुद्धसे हजारों राजाओंको मरवाकर यह मुझको क्यों नहीं जत-लाया जो अर्जुनको बताया २९ बहुतसे विपरीत उपाय कर्मोंसे तुझको न लज्जा है न दयाहै प्रतिदिन शूरोंके बड़े नाशके करनेवाले ३० भीष्मपितामह को तुम ने शिखण्डी को आगे करके मरवाया हेदुर्बुद्धी अश्वत्थामाके सनाम हाथीको

मारकर ३१ आचार्य्यजी को शस्त्रों से रहित किया क्याकरूं वह मैंने नहींजाना वह पराक्रमी तेरेही कारण से इस निर्दयी धृष्टद्युम्नके हाथसे ३२ गिरायागया तुमने उसको देखकर निषेध नहीं किया पाण्डव अर्जुनके मारनेवाली चाहीहुई शक्तिको ३३ घटोत्कच के ऊपर फेंकवाकर निष्फल किया तुझसे अधिक पाप करनेवाला कौनहै इसीप्रकार हाथटूटाहुआ शरीरत्यागनेके अर्थ नियम करने-वाला पराक्रमी भूरिश्रवा ३४ तेरीही आज्ञापाकर महात्मा सात्यकी के हाथ से मारागया अर्जुन के विजय करने की इच्छा से कर्ण उत्तमकर्म्म का करनेवाला हुआ ३५ सर्पराजके पुत्र अश्वसेन के दुःखसे और फिर रथके चक्रके पृथ्वी में धसजाने की आपत्तिमें फंसा हुआ पराजय किया ३६ अर्थात् मनुष्यों में श्रेष्ठ रथचक्रके घुसजानेसे व्याकुलचित्त कर्ण युद्धमें गिरायागया जो मिलेहुये द्रो-णाचार्य, भीष्म, कर्ण और मुझसे भी ३७ सत्य २ युद्धकरते तो तुम्हारी विजय कभी नहीं होसक्तीथी और तुम्हरी निर्गुणी और कुमार्गी के कारणसे ३८ अपने धर्म्मपर आरूढ़ होनेवाले राजा लोग और बहुत से अन्य २ लोग वह सब भी मारेगये वासुदेवजी बोले हे गान्धारी के पुत्र पापमार्ग में चलनेवाले तुम अ-पने भाई पुत्र बान्धव और मित्रोंके समूहों समेत मारेगये हो तेरेही दुष्टकर्म्मों से शूरवीर भीष्म और द्रोणाचार्य्य गिरायेगये ३९। ४० और तेरा साथी कर्म्मकर्त्ता कर्ण भी युद्धमें मारागया हे अज्ञानी तुमने लोभ और शकुनी के वचनके नि-श्चय से मेरे बहुतसे कहनेपर भी पाण्डवों के बाप दादोंके राज्यके भागको नहीं दिया तुमने भीमसेन को विषदिया और माता समेत सब पाण्डवों को ४१।४२ लाक्षागृहमें भस्म किया और सभामें द्यूतके मध्य रजस्वलास्त्री द्रौपदीको दुःखी किया ४३ हे कठोरचित्त उसीसमय तुम मारडालनेके योग्यथे जब कि द्यूतविद्या के छलके जाननेवाले शकुनी के द्वारा द्यूतकर्म में अकुशल धर्मज्ञ युधिष्ठिर को छलसे विजय कियाथा ४४ इन सब कारणों से तू युद्धमें मारागया है आखेटमें पाण्डवके जानेपर तृणविन्दुके आश्रमके समीप वनमें द्रौपदी को पापी जयद्रथ ने जो दुःखदिया और जो अकेला अभिमन्यु तेरे दोषोंसे युद्धमें बहुतसे शूर-वीरों के हाथसे मारागया ४५। ४६ हेपापी तू इन कारणोंसे युद्धमें मारागया है और हमारे कियेहुये जिन करनेके अयोग्य कर्मोंको कहता है ४७ वह सब भी तेरेही दुराचारसे कियेगये हैं तुमने बृहस्पतिजी और शुक्रजीकी शिक्षाको नहीं

सुना ४८ वृद्धोंका सत्सङ्ग नहीं किया तुमने क्षेमकारक वचनों को नहीं सुना तुम ईर्षा और लोभके आधीनहुये ४९ इन सब दुष्ट कर्म्मोंको जो तुमने कियाहै उसके फलको भोगो दुर्य्योधन ने कहा कि वेदोंको पढ़ा विधि पूर्व्वक दानदिये सागरों समेत सब पृथ्वीपर राज्य किया ५० और शत्रुओंके मस्तकोंपर नियत हुआ मुझसे अधिक सफल शुभकर्मी कौनहै अपने धर्म्मके देखनेवाले क्षत्रियों का जो हितकारी और प्रियहै ५१ वही मरण मैंने पायाहै मुझसे अधिक शुभ-कर्मी कौनहै मैंने राजाओंसे दुष्प्राप्य शरीरके योग्य संसारी सुख ऐश्वर्य्योंको प्राप्त किया ५२ और उत्तम राज्यको पाया मुझसे अधिक सुकृती कौनहै हे अविनाशी मैं अपने मित्रवर्ग और सब छोटे भाइयों समेत स्वर्गको जाऊंगा ५३ तुम नष्ट-संकल्प होकर अपना जीवन करोगे सञ्जयबोले कि उस बुद्धिमान् कौरवराजके इस वचन के समाप्त होनेपर ५४ पवित्र सुगन्धित पुष्पोंकी बड़ी वर्षाहुई और गं-धर्वोंने बड़े चित्तरोचक बाजोंको बजाया ५५ अप्सराओंने राजाकी शुभकीर्त्ति स-म्बन्धी गानोंको गाया और सिद्धोंने धन्य २ शब्द किया शीतल मन्द सुगंधित वायुचली सब आकाश दिशाओंसमेत वैडूर्य मणिके रंगके समान शोभायमान हुआ ५६।५७ वासुदेवजी जिनमें मुख्य हैं वह सब पाण्डवादिक उस अपूर्वता और दुर्योधनकी पूजाको देखकर लज्जितहुये ५८ भीष्म, द्रोणाचार्य,कर्ण और भूरिश्रवा को अधर्म्म से माराहुआ सुनकर शोक से पीड़ित होकर उनवीरों ने शोचकिया ५९ बादल और दुन्दुभी के समान शब्दवाले श्रीकृष्णजी उन पा-ण्डवोंको चिन्तायुक्त और दुःखीचित्त देखकर यह वचन बोले ६० कि बहुतशीघ्र अस्त्र चलानेवाला यह दुर्य्योधन और वह सब पराक्रमी महारथी युद्धमें सत्य २ युद्धके द्वारा तुम्हारे हाथसे मारने के योग्य नहीं थे ६१ यह राजा दुर्य्योधन अ-थवा भीष्मादिक बीर बड़े धनुषधारी महारथी कभी धर्म्मसे किसीसे भी मारनेके योग्य न थे ६२ आपलोगों के भले चाहनेवाले मैंने बहुतसे उपाय और माया योगोंके द्वारा रणभूमिमें वह सब वारम्बार मारे ६३ जो मैं कदाचित् ऐसी माया को न करता तौ तुम्हारी बिजय और राज्य धन नहीं प्राप्तहोते ६४ वह चारोंम-हात्मा अतिरथी इस पृथ्वीपर साक्षात् लोकपालोंसेभी धर्मकेद्वारा मारनेके योग्य न थे ६५ इसीप्रकार यह गदा हाथमेंलिये अश्रमित दुर्य्योधन दण्डधारी कालसे भी धर्मके द्वारा मारने के योग्य न था तुमको चित्तमें इस शत्रुके मारनेका कोई

विचार न करना चाहिये उसीप्रकार बहुतसे शत्रु छलके द्वारा आपसे मारने के योग्यहैं ६६ । ६७ प्राचीन बृद्धलोग और असुरों के मारनेवाले देवता आदि सत्पुरुषों से चलाया हुआ मार्ग है इसी हेतुसे वह सबसे चलाया जाताहै ६८ तात्पर्य्य यहहै कि हम सायङ्कालके समय निवासस्थानों में बिश्राम किया चाहते हैं हेराजालोगो हम सब घोड़े हाथी और रथोंसमेत बिश्रामकरें ६९ तब अत्यंत प्रसन्नचित्त पाण्डवों सहित पाञ्चाल बासुदेवजी के बचन को सुनकर सिंहों के समूहों के समान गर्जे ७० हे पुरुषोत्तम इसके पीछे राजालोग शङ्खों को और माधवजी पांचजन्य शङ्खको बजाते दुर्य्योधनको मृतकदेखकर प्रसन्नहुये ७१ ॥

इतिश्रीमन्महाभारतेगदापर्व्वणिकृष्णपाण्डवसंवादेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले कि इसके पीछे परिघके समान भुजारखनेवाले बड़े प्रसन्नचित्त शङ्खोंको बजातेहुये वह सब राजालोग बिश्राम करनेके निमित्तचले १ हेराजा हमारे डेरेको जानेवाले पाण्डवों के पीछे बड़ा धनुषधारी युयुत्सु और सात्यकी चले २ धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और द्रौपदीके सबपुत्र और अन्य २ सब धनुषधारी अपने २ डेरों को गये ३ इसके पीछे मनुष्यों के भागजाने पर वह सब पाण्डव दुर्य्योधनके उस डेरे में जो कि प्रकाश रहित और मृतक राजावाला था उसमें इसरीति से प्रवेशित हुये जैसे कि युद्धभूमि में प्रवेशकरते हैं वह स्थान उत्सव से रहित पुरके समान और जिसका नाग मारागया उस ह्रदके समान उत्तम स्त्रियोंके बड़े समूहों से और बृद्ध मंत्रियों से पूर्णथा ४ । ५ हे राजा वहां कषाय और मलिन बस्त्रों के धारण करनेवाले दुर्य्योधनके परस्पर लोग हाथ जोड़कर उनके पास आकर बर्त्तमान हुये ६ हे महाराज रथियों में श्रेष्ठ पाण्डवलोग कौरवराज के डेरेको पाकर रथों से उतरे ७ हेभरतर्षभ इसके पीछे केशवजी जोकि सदैव पाण्डवों की शुभचिन्तकता में नियत थे गाण्डीव धनुषधारी से बोले ८ हे भरतर्षभ इस गाण्डीव धनुषको और दोनों अक्षय तूणीरों को उतारो पीछे से मैंभी उतरूंगा ९ तुम आप उतरो हे निष्पाप इसमें तेरा कल्याण है यह सुनकर उस बीर अर्ज्जुनने वैसेही किया १० इसके अनन्तर पूर्ण बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी घोड़ों की बागडोरों को छोड़कर अर्ज्जुन के रथसे उतरे ११ फिर सब जीवों

के ईश्वर परमात्मा के उतरने पर अर्ज्जुन की दिव्यध्वजा और हनुमान्जी अन्तर्द्धान होगये १२ हे महाराज कर्ण और द्रोणाचार्य्य के दिव्य अस्त्रों से भस्मीभूत वह महान् रथभी शीघ्रही बिना अग्निके प्रज्वलित अग्निरूप होगया १३ अर्ज्जुन का वह रथ उपासङ्ग बागडोर घोड़े और युगबन्धुर समेत भस्म होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा १४ हे प्रभु राजा धृतराष्ट्र पाण्डव लोग उस प्रकार से भस्म होनेवाले उस अर्ज्जुन के रथको देखकर बड़े आश्चर्य्यित हुये तब अर्ज्जुन यह वचन बोला १५ अर्थात् हाथ जोड़कर बड़ी नम्रतासे अर्जुनने कहा कि हे भगवान् गोबिन्दजी यह रथ किस हेतुसे अग्निके द्वारा भस्म होगया १६ हे यदुनन्दनजी यह क्या बड़ा आश्चर्य्य हुआ हे महाबाहु जो सुनानेके योग्य मुझको जानतेहो तो उस सब बृत्तान्तको मूलसमेत मुझसे वर्णनकरो १७ वासुदेव जी बोले हे अर्जुन यह रथ प्रथमही बहुत प्रकारके अस्त्रोंसे भस्मरूप होगयाथा हे शत्रुसंतापी मेरे सवार होनेसे यह पृथ्वीपर नहींगिरा १८ हे अर्जुन अब मुझसे पृथक् होनेपर और तेरे कृतकृत्य होने पर यह रथ भस्मीभूत होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा यह ब्रह्मास्त्र के तेज से भस्म हुआ है १९ शत्रुओं के मारनेवाले और मन्द मुसकान करते भगवान् केशव जी राजा युधिष्ठिर से मिलकर बोले २० हे राजा युधिष्ठिर तुम प्रारब्धसे शत्रुओंको बिजय करतेहो और प्रारब्धसे तेरे सब शत्रु पराजितहुये प्रारब्धसे ही गाण्डीव धनुषधारी अर्जुन भीमसेन २१ नकुल सहदेव और आपभी कुशलता युक्तहो अब हे मृतकशत्रुवाले वीरों के नाशकर्त्ता तुम इस युद्धसे निवृत्तहुये २२ हेभरतबंशी अब करनेके योग्य आगेके कर्मों को करो पूर्व्व समयमें मधुपर्क निवेदन करके उपप्लव्य स्थानमें पहुँचेहुये मुझसे जो आपने अर्ज्जुन को साथ लेकर कहा था कि हे महाबाहु श्रीकृष्ण जी यह तुम्हाराभाई और मित्र अर्जुन २३ सब आपत्तियों में तुमसे रक्षाके योग्य है इस प्रकार आपके कहनेको मैंने अङ्गीकार का वचन कहाथा २४ । २५ हे राजा वह सत्यपराक्रमी तेराभाई शूर अर्जुन भाइयोंसमेत बिजयी और रक्षित २६ वीरोंके नाशकारी रोमहर्षण करनेवाले इस महाघोर युद्धसे निवृत्तहुआ हे महाराज श्रीकृष्णजीके इस वचनको सुनकर रोम २ से हर्षित युधिष्ठिरने २७ जनार्द्दनजी को उत्तरदिया कि हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले द्रोणाचार्य्य और कर्णके छोड़ेहुये ब्रह्मास्त्र को २८ आपके सिवाय साक्षात् वज्रधारी इन्द्रभी सहने को योग्य नहीं

है आपकीही कृपासे संसप्तकोंके समूह विजयकिये २९ जो उस बड़ेभारी युद्धमें अर्ज्जुन कभी पराङ्मुख नहीं हुआ हे महाबाहुप्रभु इसीप्रकार मैंने अनेकप्रकार से ३० कर्मोंके विस्तारको और तेजकी गतिको जाना उपप्लवी स्थानपर व्यास महर्षिने मुझसे कहाथा कि ३१ जिधर धर्म्म है उधरही श्रीकृष्णजी हैं और जिधर श्रीकृष्णजी हैं उधरही विजयहै हे भरतवंशी इसप्रकार कहने पर उन वीरोंने आपके डेरे में ३२ प्रवेशकरके रत्न और धनोंके समूहों को पाया अर्थात् चांदी, सोने, मणि और मोतियोंके हार इत्यादिक ३३ उत्तमभूषण, दुशाले, मृगचर्म्म, असंख्य दासी दास और राज्य के वहुत से सामानों को पाया ३४ हे भरतर्षभ महाराज वह महाभाग शत्रुओं के विजयी आपके असंख्य धनको पाकर बड़े उच्चस्वरसे पुकारे ३५ वह वीरपाण्डव और सात्यकी सवारियोंको छोड़कर वारम्बार विश्वसित होकर डेरों में नियतहुये ३६ हे महाराज इसके पीछे वड़े यशस्वी वासुदेवजी वोले कि हम लोगों को मङ्गलके निमित्त डेरों से वाहर निवास करना चाहिये ३७ यह सुनकर वह पाण्डव और सात्यकी उनकी आज्ञा को मानकर वासुदेवजी के साथ मङ्गलके लिये डेरेसे वाहरगये ३८ हे राजा फिर वह सब पाण्डव और सात्यकी धर्म्मकी वृद्धिकी हेतुरूप ओघवती नदीको पाकर वहीं उस रात्रिको वसे ३९ इसके पीछे यादव श्रीकृष्णजीको हस्तिनापुर भेजा तव प्रतापवान् वासुदेवजी शीघ्रही तीव्रता से दारुकके रथपर वैठकर वहां को चले जहां पर राजा धृतराष्ट्रथे उससमय पाण्डवलोग उस यात्रा करनेके उत्सुक शैव सुग्रीव नाम घोड़े रखनेवाले श्रीकृष्णजी से वोले कि ४० । ४१ तुम यशस्विनी मृतपुत्रा गान्धारी को आश्वासनकरो पाण्डवों से समझाये हुये श्रीकृष्णजी उस पुरको गये और शीघ्रही उस मृतपुत्रा गान्धारी को पाया ४२ । ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिवासुदेववाक्येत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवा अध्याय ॥

जनमेजयवोले हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ धर्मराज युधिष्ठिरने किसहेतुसे शत्रुओं के विजयकरनेवाले वासुदेवजीको गान्धारीके पासभेजा १ जव प्रथम श्रीकृष्णजी सन्धिके निमित्त कौरवों के पासगये और अपने अभीष्टको नहीं पाया २ इसी कारणसे यह महायुद्धहुआ अब शूरवीरोंके मरने और राजादुर्योधन के घायल

होने और इस पृथ्वीपर पाण्डवों को रणभूमि में निश्शत्रु करने ३ मनुष्यों के भागने डेरोंके खालीहोने और उत्तम शुभकीर्त्तिके प्राप्तहोजानेपर ऐसा कौनसा कारणहै जिसके हेतुसे श्रीकृष्णजी हस्तिनापुरको गये ४ हे बड़े ज्ञानी ब्राह्मण मुझको यह अल्पकारण नहीं मालूम होताहै जिस स्थानपर कि बड़े ज्ञानी श्रीकृष्णजी आपगये ५ हे अध्वर्य्यों में श्रेष्ठ इससब वृत्तान्त को मूलसमेत वर्णन करो ६ वैशम्पायन बोले कि हे भरतबंशी जो तैंने मुझसे पूछाहै यह प्रश्न तेरे पूछनेकेही योग्यहै हे भरतर्षभ मैंभी उसको यथार्थही कहताहूं ७ हे राजा युद्ध में भीमसेन के हाथसे अमर्य्यादापूर्व्वक बड़े शूरबीर धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्य्योधन को न्याय से विरुद्ध गदायुद्ध में मराहुआ देखकर युधिष्ठिरको बड़ाभय उत्पन्न हुआ ८। ९ तपसे युक्त महाभाग गान्धारी से भयभीत और चिन्ताकरताहुआ भय से उद्विग्नचित्तहुआ कि वह घोरतपवाली गान्धारी अपने कोप से तीनों लोकोंको भी भस्मकरसक्ती है १० इसहेतु से उस चिन्ताकरनेवाले युधिष्ठिरको बिचारहुआ कि प्रथम क्रोधसे प्रज्वलित गान्धारी के क्रोधकी शान्तीकरनी योग्यहै ११ क्योंकि वह हमारे हाथ से इसप्रकार करके अपने पुत्रका मरणसुनकर क्रोधसे पूर्ण अपने अग्निरूप मनसे हमको भस्मकरेगी १२। १३ भय और क्रोधसे युक्त धर्मराजने इसप्रकारकी बहुतसी चिन्ताकरके बासुदेवजी से यह बचन कहा १४ हे अबिनाशी गोबिन्दजी आपकी कृपासे यह अकण्टक राज्य हमको प्राप्तहुआ जोकि मनसे भी महादुष्प्राप्यथा १५ हे यादवनन्दन महाबाहु रोमहर्षण करनेवाले युद्ध में मैंने देखाहै कि तुमने बड़े युद्धको प्राप्तकिया १६ तुमने पूर्व्वसमय के देवासुरोंके युद्ध में असुरोंके मारनेके निमित्त देवताओंकी जिस प्रकार से सहायताकरी और देवताओंके शत्रुमारेगये १७ हे महाबाहु अबिनाशी श्रीकृष्णजी उसीप्रकार से आपने हमारी भी सहायता करीहै और अपने रथवानी करनेसे हमारी रक्षाकरी १८ जो तुम बड़े युद्धमें अर्जुन के स्वामी न होते तो इस सेनारूपी समुद्रको कैसे पारहोकर बिजयकरते १९ हे श्रीकृष्णजी तुमने हमारे कारण से गदा, परिघ, शक्ति, भिन्दिपाल, तोमर और फरसोंके बड़े प्रहार २० कठोरबचन और युद्ध में बज्रस्पर्श के समान शस्त्रोंके गिरनेको भी सहा २१ हे अविनाशी दुर्योधन के मरनेपर वह आपके कठिन दुःख सफलहुये हे श्रीकृष्णजी अब जिसप्रकार से वह सब आप के उपकार नाश न होयँ वही

आपको करना उचितहै २२ हे माधवजी बिजयी होनेपर भी हमारा चित्त संदेहोंमें हिंडोलेके समान झूलताहै हे महाबाहु आप गान्धारी के क्रोधको जानिये २३ वह महाभाग यशस्विनी सदैव बड़े२ तापों से बड़ी पीड़ावान्है वह अपने पुत्र पौत्रादिकों के नाशको सुनकर अवश्य हमलोगोंको भस्मकरेगी २४ हे बीर मेरे बिचारसे उसका प्रसन्नकरना समयके अनुसारहै हेपुरुषोत्तम आपके सिवाय कौन पुरुष उस क्रोधसे रक्तनेत्र और पुत्रों के शोकसे पीड़ावान् के देखने को समर्थ है हे शत्रुओंके बिजयकरनेवाले माधवजी क्रोधसे ज्वलितरूप गान्धारी के क्रोधके दूरकरनेको वहां आपकाजाना मुझको स्वीकारहै क्योंकि तुम्हीं सबसृष्टिकेकर्त्ता नाशकर्त्ता और उत्पत्ति के हेतुरूपहोकर अविनाशीहो २५।२६।२७ हे महाबाहु तुमकार्य्यकारणसेयुक्त समयकेअनुसार बचनोंसे शीघ्रही गान्धारीको शान्तकरोगे २८ वहां हमारे पितामह भगवान् व्यासजीभीहोंगे हे यादवेन्द्र पाण्डवोंके हितकारी तुमको सबरीतिसे उसमहाभाग गान्धारीका क्रोधशान्तकरना योग्यहै यादवेन्द्रजीने धर्मराजके बचनकोसुनकर २९।३० दारुकको बुलाकरकहा कि रथतैयारकरो इसके पीछे केशवजी के वचनको सुनकर शीघ्रता करनेवाले दारुकने ३१ रथको तैयारकरके महात्मा केशवजीकेपास बर्त्तमानकिया फिर यादवेन्द्र शत्रुसंतापी केशवजी उसरथपर सवारहोकर ३२ शीघ्रही हस्तिनापुरकोगये और बड़ेपराक्रमी और साहसी श्रीकृष्णजी हस्तिनापुरमें पहुँचे और रथकेशब्दों से शब्दको उत्पन्नकर वह बीर श्रीकृष्णजी नगरमें प्रवेशकरके ३३।३४ धृतराष्ट्र के जानेहुये उत्तम रथसे उतरकर धृतराष्ट्रके महलमें पहुँचे ३५ उन जनार्दन केशवजी ने वहां पूर्वसे गयेहुये और बैठेहुये ऋषियोंमें श्रेष्ठ ब्यास महर्षिजी को देखा ब्यासजीके और राजाके भी चरणोंको स्पर्शकरके ३६ सावधान केशवजी ने गान्धारी को भी दण्डवत् की हे राजा इसके पीछे यादवेन्द्र श्रीकृष्णजी ३७ धृतराष्ट्र को हाथसे पकड़कर बड़े शब्दसे रोदन करनेलगे और एक मुहूर्त्त तक शोकजनित अश्रुपातों को करके ३८ जलसे दोनों नेत्रोंको धोकर बिधिपूर्वक आचमन करके समय के अनुसार धृतराष्ट्र से बचन कहा ३९ कि हे भरतबंशी तीनोंकाल के बृत्तान्तोंको आप अच्छी रीतिसे जानतेहो अर्थात् समयकाजैसा जो कुछ बृत्तांतहै वह सब आपको बिदितहै ४० हे भरतबंशी तेरे चित्तके समान कर्मकर्त्ता सब पाण्डवों से जो यह कुलका और सब क्षत्रियों का नाशहुआ वह

कैसे न होय अवश्यही होना उचित था क्योंकि धर्मबत्सल युधिष्ठिरने प्रतिज्ञा करके क्षमाकरी और छलद्यूत से पराजित पवित्रात्मा पाण्डवों को बनबासहुआ ४१।४२ उन लोगोंने नानावेषों को धारणकरके अज्ञातवासचर्या आदिक अनेक प्रकारके क्लेशोंको अपने ऊपर सहा अर्थात् असमर्थों के समान होकर पाण्डवों ने अन्य२ भी बहुत से कठिन दुःखोंको पाया ४३ मैंने आपयुद्धके प्रवृत्त होनेके समय आपके पासआकर सब लोगोंके समक्षमें पाँचगाँव तुमसे माँगे४४ परन्तु कालसे प्रेरित होकर तुमने लोभसे अपने पुत्रों को निषेध नहीं किया हे राजा आपके अपराध से सब क्षत्रियोंके समूहों का नाशहुआ ४५ भीष्म, सोमदत्त, वाह्लीक, कृपाचार्य्य, पुत्रसमेत द्रोणाचार्य और बुद्धिमान् बिदुरजी ने ४६ सन्धिके निमित्त आपसे बारम्बार प्रार्थना करी परन्तु तुमने उनमें से किसीके भी बचन को नहीं किया हेभरतबंशी काल से घायलचित्त सब मनुष्य ऐसे अचेत होजाते हैं ४७ जैसे कि पूर्वसमय में इस प्रयोजनके वर्त्तमान होनेपर आप अज्ञानहुये कालयोग से दूसरी क्या बातहै निश्चय प्रारब्धही सबसे प्रबल है ४८ हे बड़े ज्ञानी आप पाण्डवों में दोषोंको न लगाओ महात्मा पांडवों में थोड़ीसी भी अमर्यादा नहीं है ४९ हे शत्रुसंतापी आप अपनेही अपराधसे उत्पन्न होने वाली इन सब बातोंको जानकर धर्म न्याय और प्रीतिसे ५० पाण्डवों के गुणोंमें दोष लगानेकेयोग्य नहीं हो कुल वंश पिण्ड और जो पुत्रहोनेका धर्मफलहै वह सब आपका और गान्धारी का पाण्डवों में नियत है हे कौरव्य नरोत्तम आप और यशस्विनी गान्धारी ५१।५२ पाण्डवों के अपराधों को मतबिचारो अपनी ही इससब अमर्यादगी को ध्यानकरके ५३ अपने कल्याण बचनों से पांडवोंकी रक्षा करो हे भरतर्षभ आपको नमस्कारहै हे महाबाहु प्रीति और स्वभावसे धर्मराजकी जो आपमें भक्तिहै उसको आप जानतेहो वह युधिष्ठिर अवज्ञा करनेवाले क्षत्रियोंका नाशकरके ५४।५५ अहर्निश जलताहै और कल्याणको नहीं पाताहै हेनरोत्तम वह पुरुषोत्तम तुमको और यशस्विनी गान्धारीको ५६ शोचता हुआ शान्ति को नहीं पाताहै और बड़ी लज्जासेयुक्त वह युधिष्ठिर तुम्हारे पास भी नहीं आताहै ५७ जो कि पुत्रशोक से दुःखी ब्याकुलबुद्धि और इन्द्रियवाले हो हे महाराज इस प्रकारसे श्रीकृष्णजी राजा धृतराष्ट्र से कहकर ५८ शोक से महापीड़ित गान्धारी से यह बचन बोले कि हे सौबलकी पुत्री जो अब मैं तुम

से कहूं उसको सुनकर चित्तसे समझो ५९ हे शुभे अब इसलोक में तेरेसमान कोईस्त्री नहीं है हेरानी मैं जानताहूं जैसे कि सभाकेमध्य मेरेसमक्षमें ६० तुमने धर्मअर्थ से युक्त दोनों ओरका हितकारी बचन कहाथा हेकल्याणी तेरे पुत्रोंने उसको नहीं किया ६१ और तुमने दुर्योधनसे भी यह कठोरवचन कहे कि हेअ-ज्ञानी मेरे बचनको सुन जिधर धर्म है उधरही विजयहै ६२ सो हे राजपुत्री वह तेरा कहाहुआ बचन बर्त्तमानहुआ हे कल्याणी इस प्रकारसे जानकर शोकमें चित्त मतकरो ६३ पाण्डवोंके नाशके लिये तेरी बुद्धि कभी मतहोय हेमहाभाग तुम क्रोधसे ज्वलित नेत्रोंकी अग्नि और तपके बलसे इस सब जड़ चैतन्यों स-मेत पृथ्वी को भस्म करनेके समर्त्थहो गान्धारी बासुदेवजी के बचनको सुनकर बोली ६४। ६५ कि हे महाबाहु केशवजी यह ऐसेही है जैसे कि आप कहतेहो परन्तु चित्तके अनेक दुःखोंसे मुझ जलनेवाली की बुद्धि चलायमानहुई है ६६ हे जनार्द्दन केशवजी आपके बचनों को सुनकर अब वह मेरी बुद्धि स्थिर हुई है द्विपादोंमें श्रेष्ठ तुम बीर पाण्डवोंके साथ इसअन्धे बृद्ध और असन्तान राजा की गतिहो वह गान्धारी इतना कहके अपने मुखको वस्त्रसे ढककर ६७। ६८ पुत्रशोक से दुःखी होकर बहुत रोदन करनेलगी इसके पीछे महाबाहु केशवजी ने उस शोकपीड़ित गान्धारी को ६९ हेतुकारणसंयुक्त बचनों के द्वारा बिश्वास कराया माधवजी ने उस धृतराष्ट्र और गान्धारी को बिश्वास देकर ७० अश्व-त्थामाके हृदयके बिचारको जाना तब तो केशवजी शीघ्रही मस्तकसे ब्यासजी के चरणोंको दण्डवत् करके फिर कौरवराज धृतराष्ट्रसे बोले कि हेकौरवों में श्रेष्ठ तुमको मैं नमस्कार करताहूं आप शोकमें चित्त मतकरो ७१। ७२ अश्वत्थामा का पापरूप चित्त हुआहै इसहेतुसे मैं शीघ्रतासे उठाहूं उसने रात्रिके समय पा-ण्डवों के मारने का बिचार पक्का प्रकट किया है ७३ महाबाहु धृतराष्ट्र गान्धारी समेत इस बचन को सुनकर केशी दैत्य के मारनेवाले केशवजी से बोले ७४ हे महाबाहु आप शीघ्रजाओ और पाण्डवों की रक्षाकरो हे जनार्द्दन जी मैं फिर आप से शीघ्र मिलूंगा ७५ इसके पीछे अबिनाशी केशव जी शीघ्रही दारुक समेत गये हे राजा बासुदेवजी के जानेपर ७६ बड़े बुद्धिमान् और लोकमान्य ब्यासजी ने राजा धृतराष्ट्र को बिश्वास कराया धर्मात्मा बासुदेवजी भी प्राप्तम-नोरथ होकर ७७ पाण्डवों के देखनेकी इच्छासे हस्तिनापुर से डेरेको गये और

रात्रि के समय डेरे को पाकर पाण्डवों के पासगये और वह सब बृत्तान्त उनसे कहकर उन समेत सावधान हुये ७८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिधृतराष्ट्रगान्धारीप्रबोधनेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय पांवसे मस्तकपर दबायेहुये टूटी जंघा पृथ्वी पर गिरे हुये मेरे अहङ्कारी पुत्रने क्या कहा १ अर्थात् अत्यन्त क्रोधयुक्त और पाण्डवों के साथ शत्रुता करनेवाले बड़े संकटको प्राप्त राजाने बड़े युद्ध में क्या किया २ सञ्जय बोले हेराजा जैसा बृत्तान्तहै उससब बृत्तान्त को मैं कहताहूं अर्थात् उस दुःखके प्राप्तहोनेपर टूटेअंगवाले राजाने जो कहाहै उसको आप सुनिये ३ हेराजा टूटीजंघा धूलसे लिप्त शिरके केश बाँधनेवाले उस राजाने वहां दशों दिशाओं को देखकर ४ सर्प्पकी समान श्वासलेतेहुये ने उपायसे बालोंको बाँधकर क्रोध और अश्रुओंसे पूर्णनेत्रोंसे मुझको देखकर ५ मतवाले हाथीके समान अपनी भुजाओंको बारम्बार मलकर बिखरेहुये बालोंको कँपाते दाँतों से दाँतोंको दबाते ६ और युधिष्ठिरकी निन्दाकरते दुर्योधनने श्वासलेकर यह कहा कि शंतनुके पुत्र भीष्मजी, शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ कर्ण, कृपाचार्य्य, शकुनि, महाअस्त्रज्ञ द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, शल्य और शूर कृतवर्मा के नाशहोनेपर ७।८ मैंने इस दशा को पाया निश्चयकरके काल बड़ेदुःखसे उल्लंघनकेयोग्यहै जो कि ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके मुख्य स्वामी ने भी इसदशाको पाया ९ हे महाबाहु कोई मनुष्य कालको उल्लंघन नहीं करसक्ताहै अब तुम उन मेरे शूरवीरों का वर्णन करो जो इसयुद्धमें जीवते हैं १० जिसप्रकार नियमको उल्लंघनकर भीमसेनके हाथसे मारागयाहूं इससे बिदितहोताहै कि पांडवोंकीओरसे बहुतनिर्दयकर्म कियेगये हैं ११ निर्दय पांडवोंकीओरसे अपकीर्त्तिसे उत्पन्न होनेवाला यह कर्म भूरिश्रवा, कर्ण, भीष्म और श्रीमान् द्रोणाचार्य के भी साथमें कियागया १२ इसहेतुसे वह सब पाण्डव मेरीबुद्धिसे सत्पुरुषोंमें अपमानको पावेंगे छलसे प्राप्तहोनेवाली विजय को करके पराक्रमी पुरुषकी कौनसी प्रसन्नताहै १३ कौन बुद्धिमान् समयके स्वामीका अपराध करनेको योग्यहै और कौनसा पण्डित अधर्मसे विजयको पाकर ऐसे प्रसन्नहोगा १४ जैसे कि पापी भीमसेन प्रसन्न होताहै अब इससे अपूर्व क्या

है जो मुझ टूटीजंघावालेके शिरको १५ क्रोधयुक्त भीमसेनने चरणोंसे मर्द्दनकिया सन्तप्तकरनेवाले लक्ष्मी से सेवित बान्धवोंके मध्यमें वर्त्तमान पुरुषको १६ जो मनुष्य ऐसीदशावाला करे हे संजय वही पूजितहै मेरे माता पिताभी धर्म्मयुद्धको अच्छीरीति से जानते हैं १७ हे संजय वहदोनों दुःखी मेरे बचनोंसे जतलानेके योग्यहैं अच्छेप्रकार यज्ञादिककिये प्रजापालनकिया और समुद्रोंसमेत सबपृथ्वी पर राज्यकिया १८ हे संजय जीवते शत्रुओंके मस्तकपर नियतहुआ सामर्थ्य के अनुसार दानकिये मित्रोंका हितकिया १९ सबशत्रु पीड़ामान्किये मुझसे अधिक सुकर्मी कौनहै सबबान्धवों की प्रतिष्ठाकरी और अपने आश्रित कार्य्यकर्त्ताओंको प्रसन्नकिया २० धर्म अर्थ कामादिक सब सेवनकिये मुझ से अधिक सुकर्मी सुकृती कौनहै उत्तम२ राजाओंपर आज्ञाकरी बड़े दुःखसे प्राप्तहोनेवाली आज्ञा से उत्पन्नहोनेवाली प्रतिष्ठाको पाया २१ आजानेय प्रकारवाले घोड़ों के द्वारा सवारीकी मुझसे अधिक सुफलवाला कौनहै वेदपढ़कर विधिपूर्वक दान किया नीरोग आयुर्द्दापाई २२ अपने धर्मसे लोक प्राप्तकिये मुझसे अधिक सुकर्मी कौनहै मैं प्रारब्ध से युद्धमें बिजयवाला नहीं हुआ २३ और हे प्रभु प्रारब्धसेही जो मेरी बड़ी लक्ष्मीथी वह मेरे मरनेपर दूसरे को प्राप्तहुई अपने धर्मपर चलनेवाले क्षत्रियोंका जो हित और प्रियहै २४ वह मरण मैंनेपाया मुझसे विशेष शुभकर्मी कौनहै मैं प्रारब्धहीसे साधारण मनुष्यकी शत्रुता से नहीं हटा २५ और प्रारब्धसेही किसी अपमानको पाकर पराजय नहींहुआ जैसे कि सोतेहुये को नशेसे अचेतको अथवा विषपान कियेहुयेको कोई मारताहै २६ इसीप्रकार धर्म्म के त्यागनेवालेने नियमको त्यागकर मारा महाभाग अश्वत्थामा, यादव कृतवर्मा, २७ शारद्वत, कृपाचार्य्य मेरे बचनसे कहनेके योग्यहैं कि अनेकप्रकार के अधर्म के कर्त्ता नियमों के त्यागनेवाले २८ पाण्डवों का बिश्वास आपको करना उचित नहीं है आपका पुत्र सत्यपराक्रमी राजादुर्योधन वातिक नाम सिद्धों से बोला कि जैसे मैं अधर्मकीरीति से भीमसेन के हाथ से मारागया सो मैं स्वर्गवासी द्रोणाचार्य्य, कर्ण, शल्य, २९।३० महात्मा वृषसेन, सौबलकापुत्र शकुनि, महापराक्रमी जलसिन्ध, राजाभगदत्त, ३१ बड़ेधनुर्धारी सोमदत्त, सिन्धका राजा जयद्रथ, उसीप्रकार आत्मा के समान दुश्शासनादिक भाई, ३२ पराक्रमी दुश्शासनका पुत्र और लक्ष्मण इन दोनों पुत्रोंके और अन्य२ हज़ारों अपने

शूरवीरों के पीछे ऐसे जाऊंगा ३३ जैसे कि अपने साथी समूह से पृथक् बिदेशी जाताहै मेरी बहिन दुश्शला भाइयोंसमेत अपने पतिको मराहुआ सुनकर रोतीहुई कैसी महादुःखी होगी मेरा वृद्ध पिता राजाधृतराष्ट्र पुत्र पौत्रोंकी ३४।३५ स्त्रियों और गान्धारीसमेत किसगति को पावेगा निश्चयकरके मृतक पुत्र और पतिवाली लक्ष्मण की माता जोकि कल्याणी और बड़े नेत्रवाली है वहभी शीघ्रही नाश को पावेगी जो ब्राह्मणरूपधारी संन्यासी वार्त्तालाप में सावधान चार्वाकनाम राक्षस इसबात को जानेगा तो वह महाभाग अवश्य मेरा बदला पाण्डवों से लेगा मैं इस पवित्र और तीनोंलोकों में बिख्यात स्यमन्तपंचक में ३६।३७।३८ मृत्युको पाकर प्राचीन लोकोंको पाऊंगा हे श्रेष्ठ इसके अनन्तर अश्रुओं से पूर्णनेत्र हज़ारों मनुष्य ३९ राजाके उस बिलापको सुनकर दशोंदिशाओं को भागे पृथ्वी समुद्र बन और जड़चैतन्य जीवोंसमेत घोररूप ४० शब्दायमान होकर काँपनेलगी और दिशा सबप्रभासे रहितहुईं उन्होंने अश्वत्थामा को पाकर जैसा वृत्तान्तथा सब वर्णनकिया ४१ हे भरतवंशी वह सब गदायुद्ध के व्यवहारको और दुर्योधन के गिराने को अश्वत्थामाजी के सम्मुख वर्णनकरके ४२ बड़ीदेरतक ध्यानकरके पीड़ावान् होकर अपने२ स्थानोंको चलेगये ४३॥

इतिश्रीमहाभारतेगदापर्व्वणिदुर्योधनविलापेपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

संजय बोले हे राजा मरनेसे शेषबचे कौरवोंके तीनों महारथी १ अश्वत्थामा, कृपाचार्य्य और यादव कृतवर्मा दूतोंके मुखसे राजा दुर्य्योधन को मराहुआ सुनकर शीघ्रगामी घोड़ोंकी सवारीसे बड़े शीघ्रही रणभूमि में आये वहां आकर गदा, तोमर, शक्ति और तेजबाणों से अत्यन्त घायल गिरायेहुये महात्मा दुर्योधनको ऐसे देखा जैसे कि बड़ेबनमें बायुके वेगसे गिरेहुये बड़े शालके वृक्ष को देखते हैं उसको पृथ्वीपर तड़फता रुधिरसे लिप्त ऐसा देखा २।३।४ जैसे कि वनमें व्याधके हाथसे गिरायेहुये बड़े हाथीको देखते हैं बहुतप्रकार से रूपान्तर रुधिरसमूह से लिप्त ५ दैव इच्छासे गिरेहुये सूर्य्यकी किरणों में घूमनेवाले चक्रकी समान बड़े बायुके वेगसे उठेहुये घोर समुद्रके तुल्य ६ आकाशमें शीतयुक्त मंडलवाले पूर्णचन्द्रमाके सदृश धूलसे लिप्त लम्बी भुजावाले हाथीके तुल्य

पराक्रमी ७ चारों ओर भूत प्रेतों से व्याप्त और मांसभक्षी जीवसमूहों से ऐसे संयुक्त देखा जैसे कि धनके अभिलाषी सेवकों से घिरेहुये उत्तम राजाको देखते हैं ८ टेढ़ी भृकुटीवाले क्रोधसे फैले नेत्र क्रोधमें पूर्ण नरोत्तमको ऐसे देखा जैसे कि गिरेहुये व्याघ्रको देखते हैं ९ उन कृपाचार्यादिक सब रथियों ने उस बड़े धनुषधारी पृथ्वीपर गिरेहुये राजाको देखकर बड़े मोहको पाया १० रथोंसे उतरकर राजाके सम्मुखगये और दुर्योधनको देखकर सब पृथ्वीपर बैठगये ११ हेमहाराज इसके पीछे अश्रुओंसे पूर्ण नेत्र श्वासाओं को लेतेहुये अश्वत्थामाजी उस सब राजाओं के महाराज भरतर्षभ दुर्योधनसे बोले १२ हेपुरुषोत्तम निश्चयकरके इस नरलोक में कोई सत्यबात वर्त्तमान नहीं है जहां कि आप सरीके लोग धूल में लिप्त होकर सोते हैं १३ हे राजेन्द्र तुम पूर्व्वकाल में राजा होकर पृथ्वीपर राज्यशासनकरके अब कैसे निर्जन वनमें नियतहो १४ मैं दुश्शासन महारथी कर्ण और उन सब सुहृदों को भी नहीं देखताहूं हे भरतर्षभ यह क्या बातहै १५ निश्चय करके किसी दशामें भी काल और लोकों की गति जाननी कठिनहै जहां कि धूलसे लिप्त आप सोतेहो १६ यह शत्रुओंका तपानेवाला राजाओं के आगे चलकर धूलको कठिनता से स्पर्श करताहै इस विपरीत समय को देखो १७ हे राजा वह तेरा निर्मलछत्र बचन और तेरी बड़ी भारी सेना कहाँगई १८ निश्चय करके गुप्तरूप होने पर परिणाम दुःख से जानने के योग्यहै जो लोकगुरू होकर आपने इस दशाको पाया १९ सब इन्द्रसे ईर्षाकरनेवाले आपके कठिन दुःखको देखकर सब मनुष्यों में लक्ष्मी का रूप विनाशवान् दिखाई देता है २० संजयने कहा हे राजा आपका पुत्र दुर्योधन उस महाखेदभरे अश्वत्थामाके उस बचनको सुनकर हाथों से अपने दोनों नेत्रोंको साफ़करके शोकके आंसुओंको छोड़ता उन सब कृपाचार्य्यादिक वीरों से समयके अनुसार यह बचन बोला २१।२२ कि यह ऐसालोक ईश्वरसे उपदेश कियाहुआ धर्म कहा जाताहै सब जीवोंके नाशने विपरीतही विपरीत समयको प्राप्तकिया २३ वही अब मुझकोभी प्राप्तहुआहै जोकि आप लोगों के समक्षमें वर्त्तमानहै मैंने पृथ्वीका पोषणकरके इस दशाको पाया २४ मैं प्रारब्धसे किसी आपत्ति में भी रणसे पराङ्मुख नहीं हुआ हे श्रेष्ठो मैं प्रारब्धसे मुख्य करके पापियों के छलसे मारागयाहूं २५ युद्धका अभिलाषी होकर मैंने प्रारब्धही से उत्साह किया और ज्ञाति बान्धवोंसमेत युद्ध में मारागः

या २६ मैं प्रारब्धसे ही इस मनुष्यों के नाशसे रहित कल्याणयुक्त आप लोगों को देखता हूं यह मरण मेरा बड़ा प्रियतम अभीष्टहै २७ जो आपको वेदप्रमाण है तो यहां पर आपलोग मित्रतासे मेरे मरनेमें दुःखीमतहो क्योंकि मैंने अविनाशी लोक बिजय किये २८ मैं बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णजी के प्रभाव को माननेवालाहुआ इस हेतुसे मैं अच्छी रीति से कियेहुये क्षत्रियधर्म्म से नहीं गिराया गया हूं २९ वह मैंने अच्छी रीति से प्राप्तकिया मैं कभी शोचके योग्य नहीं हूं आप लोगोंने अपने योग्य कर्म्म किये ३० और सदैव बिजय में उपाय किये परन्तु दैव दुःखसे उल्लंघनके योग्यहै हे राजेन्द्र इतना वचन कहकर आँसुओंसे व्याकुलनेत्र ३१ अत्यन्तखेदयुक्त वह राजा दुर्य्योधन मौनहोगया फिर अश्वत्थामाजी उसप्रकार राजाको शोक और अश्रुओं से संयुक्त देखकर ३२ क्रोधसे ऐसे प्रज्वलितहुये जैसे कि प्रलयकालमें सृष्टि के नाश करने को अग्नि प्रज्वलित होती है उसक्रोध भरेने हाथों को मीड़कर ३३ अश्रुओं से नेत्रोंको भरकर बड़े आकुलित बचनों के द्वारा राजासे यह बचन कहा कि नीचोंके अत्यन्त निर्द्दयकर्म्म से मेरापिता मारागया उससे ऐसा दुःख नहीं पाताहूं जैसे कि अब इस तेरी दशाको देखकर क्लेशित होता हूं हे प्रभु मुझ सत्यतापूर्व्वक कहनेवाले और कूप बापी तड़ाग यज्ञ दान धर्म्म और अपने पुण्यकी शपथखानेवाले के इस बचन को सुनो कि अब मैं सब उपायों से सब पांचालों को बासुदेवजी के देखतेहुये ३४ । ३५ । ३६ यमलोक में पहुंचाऊंगा हे महाराज आप मुझे आज्ञा देने को योग्यहो ३७ कौरवराज दुर्योधन अश्वत्थामा के इस बचनको जो कि मनके हर्षका बढ़ानेवाला था सुनकर कृपाचार्य्यसे यह बोला ३८ हे आचार्यजी शीघ्रही जलपूर्ण कलश को लाओ वह ब्राह्मणों में श्रेष्ठ आचार्य्यजी राजा के उस बचन को जानकर ३९ पूर्णकलश को लेकर राजाके पासगये तब हे महाराज राजा धृतराष्ट्र आपकापुत्र आचार्यजी से बोला ४० कि हे ब्राह्मणश्रेष्ठ आपका कल्याण होय जो आप मेरा हित चाहते हो तो मेरी आज्ञा से अश्वत्थामा को सेनापति के अधिकारपर अभिषेक कराओ ४१ मुख्यकर क्षत्रियधर्म पर कर्म्म करनेवाले ब्राह्मण को राजा की आज्ञा से लड़ना चाहिये यह धर्म्मज्ञ लोगोंका कहाहुआ और जानाहुआ हैं ४२ इसके पीछे शारद्वत कृपाचार्य्य ने राजा के वचन को सुनकर उसकी आज्ञासे अश्वत्थामा को सेनापति के अधि-

कारपर अभिषेक कराया ४३ हे महाराज वह अभिषेक कियाहुआ अश्वत्थामा उस श्रेष्ठ राजा से मिलकर सब दिशाओं को सिंहनाद से शब्दायमान करता चला ४४ इसके अनन्तर रुधिर से लिप्त दुर्य्योधनने भी उस सब जीवोंकी भय-कारिणी रात्रिको प्राप्तकिया ४५ और वह तीनों महारथी भी रणभूमिसे हटकर शोकसे व्याकुलचित्त चिन्तायुक्त होकर ध्यानमें डूबगये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांगदापर्वणिअश्वत्थामासेनापत्याभिषेकेषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

इति गदापर्व्व समाप्तम् ॥

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा
जनवरी सन् १८९८ ई० ॥

महाभारत काशीनरेश के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व १
२ सभापर्व्व २
३ बनपर्व्व ३
४ विराटपर्व्व ४
५ उद्योगपर्व्व ५
६ भीष्मपर्व्व ६
७ द्रोणपर्व्व ७
८ कर्णपर्व्व ८
९ शल्य ६ गदा व सौप्तिक १० ऐषिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व्व १२
१० शान्तिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मौसलपर्व्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिवंशपर्व्व १६ ॥

महाभारत सबलसिंहचौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयोंमें है कि सम्पूर्ण महाभारतकी कथा दोहे चौपाई आदि छन्दोंमें है यह पुस्तक ऐसी सरलहै कि कमपढ़ेहुये मनुष्यों कोभी भलीभांति समझमें आती है इसका आनन्द देखनेही से मालूम होगा ॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) बन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म, (७) द्रोण, (८) कर्ण, (९) शल्य, (१०) गदा, (११) स्त्री, (१२) स्वर्गारोहण, (१३) शान्तिपर्व, (१४) अश्वमेध, (१५) सौप्तिक, (१६) ऐषिक ॥

ये पर्व्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व्व मिलेंगे छापेजावेंगे जिनमहाशयों को मिलसक्ते हैं कृपाकरके भेजदेवें तो छापेजावें ॥

महाभारत वार्त्तिक भाषानुवाद ॥

जिसका तर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषामें होगया है और आदिपर्व्व से लेके हरिवंश पर्यन्त सम्पूर्ण उन्नीसों पर्व्व छपगये हैं ॥

भगवद्गीता नवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगमपुराण स्मृति सां-ख्यादि सारभूत परमरहस्य गीताशास्त्र का सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य विन-योदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादिगुण सम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परम अधिकारी जानके हृदयजनित मोह नाशार्थ सबप्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार नहीं पासके तब मन्दबुद्धि जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सा-मर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्राय को जानसके हैं और यह प्रत्यक्षही है कि जबतक किसीपुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिले इस कारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्त पादाब्ज रसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्म्म धुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्व विद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुंशी नवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने बहुतसा धनव्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि पंडित उमादत्तजी से इस मनोरञ्जन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंक-राचार्य्य निर्म्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलक रचाय न-वलभाष्यआख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्के हैं ॥

जब छपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओं की सम्मतिसे यह विचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थके भाष्यमें अधिकतर उत्तमता उससमय पर होगी कि इस शंकराचार्य्यकृत भाष्य भाषाकेसाथ और इसग्रन्थके टीकाकारोंकी टीकाभी जितनीमिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्यजी के शंकरभाष्य का तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थितहै ॥

महाभारत भाषा

सौप्तिकपर्व्व, स्त्रीपर्व्व

जिसमें

अश्वत्थामा व कृपाचार्य व कृतबर्मा करके राजा युधिष्ठिरकी सुससैन्य व धृष्टद्युम्न व द्रौपदीके पांचों पुत्रोंका नाश और धृतराष्ट्र व गांधारीको सहित अपनी एकशत बधुओं के युद्धभूमि में प्राप्तहोकर पुत्रों व सेनापतियों की दशा देखकर बिलाप इत्यादि कथायें बर्णितहैं ॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशी नवल किशोरजी (सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमण्डी निवासि चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरणजी से संस्कृत महाभारतका यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

दूसरी बार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

जनवरी सन् १८९८ ई० ॥

महाभारतों की फ़ेहरिस्त ॥

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेक के ललित छन्दों में अठारहपर्व्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदका सारहै वरन वहुधालोग इस बिचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेद बताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोई कथा व इतिहास और वेद कथित धर्माचार की कोई बात इससे छूट नहीं गई मानो यह पुस्तक वेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ६० वर्षके बीते कि कलकत्ते में यह पुस्तक छपीथी उस समय यह पोथी ऐसी अलभ्य होगई थी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राजी थे पर नहीं मिलतीथी पहले सन् १८७३ ई० में इस छापेखाने में छपीथी और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिबी १२) थे जैसा कारखानेका दस्तूरहै ॥

अब दूसरीबार डबलपैका बड़े हरफ़ों में छापी गई जिस को अवलोकन करनेवालों ने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरी के वास्ते इससे भी क़ीमतमें किफ़ायत होसक्ती है ॥

इस महाभारतके भाग नीचे लिखे अनुसार अलग २ भी मिलते हैं ॥

पहले भाग में (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) वनपर्व्व ॥

दूसरे भाग में (४) विराटपर्व्व (५) उद्योगपर्व्व (६) भीष्मपर्व्व (७) द्रोणपर्व्व ॥

तीसरे भागमें (८) कर्णपर्व्व (९) शल्यपर्व्व (१०) सौप्तिकपर्व्व (११) ऐषिक व विशोकपर्व्व (१२) स्त्रीपर्व्व (१३) शान्तिपर्व्व राजधर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म ॥

चौथेभाग में (१४) शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेधपर्व्व (१५) आश्रमवासिकपर्व्व (१६) मौसलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व्व ॥

अथ महाभारत भाषा स्त्रीपर्व्व का सूचीपत्र प्रारम्भः ॥

इति स्त्रीपर्व्व भाषा का सूचीपत्र समाप्तम् ॥

अथ महाभारत भाषा सौप्तिकपर्व्व का सूचीपत्र प्रारम्भः ॥

इतिमहाभारत सौप्तिक पर्व्व भाषाका सूचीपत्र समाप्तम् ॥

महाभारतभाषा सौप्तिकपर्व्व ॥

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिम्पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणम्पापाटवीपावकं स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ याभातिवीणामिववादयन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानःप्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतंयेन तंवन्दे वादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं वन्देगुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंसौप्तिकरम्य पर्व्व भाषानुवादंविदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ सौप्तिकपर्व्व प्रारम्भः ॥

श्रीनारायण नरोंमें उत्तम नरको और सरस्वती अर्थात् जीव ईश्वरको प्रकट करनेवाली देवीको नमस्कार करके जयनाम महाभारत इतिहासको वर्णन करताहूं सञ्जय बोले इसके पीछे वह वीर एकसाथही दक्षिण ओरकोचले और सूर्य्यास्त के समय डेरोंके पासआये १ तब वह शीघ्रही रथोंको छोड़कर भयभीत हुये और घनदेशको पाकर गुप्त निवासी हुये २ अपनी सेनाके निवासस्थानसे कुछ थोड़ेही अन्तरपर नियत हुये तेजशस्त्रोंसे टूटेअंग चारोंओरसे घायल उन बीरोंने ३।४ लम्बी और उष्णश्वासा लेकर पांडवोंकी चिन्ताकरी फिर बिजयाभिलाषी पाण्डवोंके घोर शब्दको सुनकर ५ पीछा करनेके भयसे भयभीत होकर पूर्वकी ओरको चलदिये वहसब एकमुहूर्त्त चलकर तृषार्त्त और थकीसवारी वाले सह न सके ६ वह बड़े धनुषधारी क्रोध और अशान्तताके आधीन और राजा के मारेजाने से दुःखी चित्त होकर एक मुहूर्त्ततक नियत हुये ७ धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय भीमसेनने यह कर्म्म श्रद्धाके अयोग्य किया जो उसदशहजार हाथीके समान मेरे पुत्रको मारा ८ हे सञ्जय वह मेरापुत्र जो कि सब जीवोंसे

अवध्य बज्रके समान दृढ़ शरीरवालाथा युद्धमें पाण्डवों के हाथसे मारागया ६ हे गोलकनके पुत्र सञ्जय मनुष्यों से प्रारब्ध उल्लंघन करनेके योग्य नहीं है जो मेरा पुत्र पाण्डवों के सम्मुख होकर मारागया १० हे सञ्जय निश्चय करके मेरा हृदय पत्थर है जो सौपुत्रों को मृतक सुनकर भी बिदीर्ण नहीं होता ११ मृतक पुत्रवाला वृद्धों का मिथुन किसप्रकार से रहैगा मैं पाण्डवों के देश में निवास करनेको विचार नहीं करताहूं १२ हे सञ्जय मैं राजाका पिता आप राजा होकर पांडवोंका आज्ञावर्त्ती होकर सेवकके समान कैसे कर्मकरूंगा १३ हेसञ्जय पृथ्वी पर राज्यशासन करके और सब राजाओंके मस्तकपर नियतहोकर कैसे उसकी आज्ञाका पालनकरूंगा जिसने कि मेरे पुत्रोंका एक पूरा सैकड़ा मारडाला १४ हे सञ्जय बचन को न करनेवाले उस मेरे पुत्रने महात्मा बिदुरजी के बचनको सत्यकिया १५ हे सञ्जय कठिन नाश करनेवालेका मैं कैसे आज्ञावर्त्तीहूंगा और किसप्रकारसे भीमसेनके वचन सुननेको समर्थहूंगा १६ हे सञ्जय अधर्मसे मेरे पुत्र दुर्य्योधनके मरनेपर कृतवर्मा कृपाचार्य और अश्वत्थामाने क्या किया १७ सञ्जय बोले हे राजा आपके बीर थोड़ीदूर जाकर नियतहुये और नानाप्रकारके बृक्ष लताओं से संयुक्त घोरबनको देखा १८ उन्होंने जल पीनेवाले उत्तम घोड़ों समेत एक मुहूर्त्त बिश्रामकरके सूर्यास्तके समय एक ऐसे बनको पाया १६ जो कि नानाप्रकारके मृगसमूहोंसे सेवित भांतिभांतिके पक्षीगणोंसे व्याप्त और बहुत प्रकारके बृक्ष लतादिकोंसे भराहुआ बहुत भांतिके सर्पोंसे सेवित २० नाना प्रकार के जलोंसेयुक्त बहुत भेदके पुष्पोंसे शोभित सैकड़ों कमलनियों से पूर्ण और नीले कमलोंसे संयुक्तथा २१ इसकेपीछे चारोंओरको देखते उनवीरोंने उस घोर बनमें प्रवेशकरके हजारों शाखाओं से युक्त बटके वृक्षको देखा २२ हे राजा तब उन नरोत्तम महारथियों ने बटबृक्षको पाकर उस उत्तम वृक्ष के नीचे जाके अपने२ रथोंसे उतरकर घोड़ोंको छोड़ा और न्यायके अनुसार स्नानादिक करके वहसब अपनी २ संध्यावंदन में प्रवृत्तहुये २३ । २४ इसकेपीछे पर्वतों में उत्तम अस्ताचल में सूर्य्य के पहुंचने पर सबजगत् की धात्री रात्रि बर्त्तमानहुई पूर्ण ग्रह नक्षत्र और ताराओं से अलंकृत चारोंओर से दर्शनीय आकाश स्वर्ण बिन्दुओंसे जटित वस्त्रके समान शोभायमानहुआ २५ । २६ जो रात्रिमें घूमनेवाले जीवहैं वहसब नींद के स्वाधीन वर्त्तमानहुये फिर रात्रि में घूमनेवाले जीवों के

शब्द भयानकहुये मांसभक्षी राक्षस अत्यन्त प्रसन्न हुये और घोररात्रि वर्त्तमान हुई २७ । २८ रात्रिके उसघोर मुखमें दुःखशोकसे संयुक्त कृतबर्मा कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा बराबर समीप बैठे २९ उस वटके सम्मुख कौरव और पाण्डवों के होनेवाले नाशको शोचते ३० नींदसे पूर्णशरीर और परिश्रमसे अत्यन्त संयुक्त नानाप्रकारके बाणों से घायल पृथ्वीपर बैठगये ३१ इसके पीछे दुःखके अयोग्य और सुखकेयोग्य पृथ्वीपर बैठेहुये महारथी कृतबर्मा और कृपाचार्य नींदके वशीभूतहुये ३२ हे महाराज थकावट और शोकसेयुक्त पूर्वसमयमें बहुमूल्य शयनोंपर सोनेवाले वहदोनों अनाथों के समान पृथ्वीपर सोगये ३३ हे भरतबंशी क्रोध और अशान्ती में वर्त्तमान और सर्पोंकेसमान श्वासलेते अश्वत्थामाजी ने निद्राको नहीं पाया ३४ शोकसे ज्वलितरूप उस बीरने निद्राको नहीं पाया तब उस महाबाहुने उस घोरदर्शन बनकोदेखा ३५ कि नानाप्रकार के जीवों से सेवित बनके कोणको देखते महाबाहुने वटके वृक्षको काकों से संयुक्त देखा ३६ हे कौरव उस वृक्षपर हजारों काकोंने रात्रिमें निवासकिया और पृथक् २ निवासी होकर सुख से निद्रायुक्तहुये ३७ चारोंओर से उन विश्रब्ध काकों के सोजानेपर उन अश्वत्थामाजी ने अकस्मात् आनेवाले घोरदर्शन उलूकको देखा ३८ जो कि बड़ाशब्द बड़ाशरीर पीतनेत्र पिङ्गलवर्ण बहुत लम्बे नख और ऊँची नाक रखनेवाला गरुड़के समान तीव्रगामी था ३९ हे भरतबंशी उस गुप्तआनेवाले के समान पक्षी ने मृदुशब्द करके वटकी शाखाको चाहा ४० काकोंके कालरूप उसपक्षीने वटवृक्षकी शाखापर गिरकर मिलनेवाले बहुत से काकोंको मारा ४१ चरणरूपी शस्त्रधारी ने कितनोंही के पक्षसमेत शिरोंको काटा और कितनोंही चरणोंको काटा ४२ उस बलवान्ने अपने सम्मुख दीखनेवाले अनेक काकों को एक क्षणमात्र में काटा हे राजा उनके शरीरों के अंग और शरीरों से बटके वृक्ष का मण्डल सबओरसे ढकगया इसके पीछे वह उलूक उनकाकोंको मारकर प्रसन्नहुआ ४३ । ४४ अर्थात् वह शत्रुओंका मारनेवाला इच्छाके समान शत्रुओं को मारकर प्रसन्नहुआ रात्रिमें उलूकके कियेहुये उस छलयुक्त कर्मको देखकर ४५ उस छलमें संकल्पकरनेवाले अकेले अश्वत्थामाजीने विचारकिया कि इस पक्षी ने युद्ध में मुझको उपदेश कियाहै ४६ मेरे मतसे शत्रुओंका नाशकारी समय वर्त्तमानहुआ अब बिजय से शोभापानेवाले पराक्रमी छन्नोत्साह लक्ष्यके प्राप्त

करनेवाले और प्रहारकरनेवाले पाण्डव मेरे हाथ से मारने के योग्य नहीं हैं और मैंने राजाके सम्मुख उन सबके मारनेकी प्रतिज्ञाकरीहै ४७।४८ पतंग और अग्निके समान अपने नाशकरनेवाली वृत्ती में प्रवृत्तहोकर मुझ न्याय से लड़ने वालेका निश्चय प्राणत्यागहोगा ४६ और छलकरके बड़ी सिद्धीसमेत शत्रुओं का बड़ानाशहोगा इसहेतुसे जो संशयात्मक अर्थसे निस्संशयात्मक अर्थहोना योग्यहै ५० जो विद्यावान् मनुष्यहैं वह इसको बहुत मानते हैं ऐसे स्थानपर जो वचनचाहै गर्हित और लोकनिन्दितभी होयँ ५१ वह क्षत्रियधर्म में प्रवृत्तहोनेवाले मनुष्यको अवश्यकरना योग्यहै अशुद्ध अन्तःकरणवाले पाण्डवोंने ऐसे छलसे भरेहुये कर्मकिये जोकि गर्हित और पदपदपर निन्दित हैं इसविषय में पूर्वसमय में न्यायके देखनेवाले धर्मका विचारकरनेवाले मुख्यताके ज्ञातालोगोंके कहेहुये मुख्य प्रयोजन रखनेवाले श्लोक सुनेजाते हैं शत्रुओं के थकजाने पृथक् होने और भोजन करने ५२।५३।५४ चलेजाने और प्रवेशहोनेपर शत्रुकी सेनाको मारना चाहिये जो सेना आधीरात्रिकी निद्राकेसमय निद्रासे पीड़ित और नाश युक्त प्रधान ५५ पृथक् २ शूरोंवाली और दो भाग होनेवाली होय उसपर प्रहार करना चाहिये प्रतापवान् अश्वत्थामाने इसप्रकार पांचालों समेत रात्रिके समय सोतेहुये पाण्डवों के मारने का निश्चयकिया उसने निर्दयी बुद्धिमें नियतहोकर वारम्वार निश्चयकरके ५६।५७ अपने मामा और भोजबंशी कृतवर्म्मा इनदोनों सोनेवालों को जगाया तब उनजगनेवाले महात्मा महाबली लज्जायुक्त कृपाचार्य्य और कृतवर्म्माने एकमुहूर्त्तभर ध्यानकरके आंशुओंसे व्याकुल नेत्रहोकर यह वचनकहा ५८।५९ कि वह बड़ा बलवान् एकबीर राजा दुर्योधन मारागया जिसके हेतुसे हमारी शत्रुता पाण्डवों के साथहुई ६० युद्धमें बहुत नीचोंसमेत ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी बड़े पवित्र पराक्रमवाला अकेला दुर्य्योधन भीमसेनके हाथ मारागया ६१ महाराजाधिराजका शिर जो पैरों से मर्द्दनकिया यह नीच भीमसेनने बड़ा निर्दय कर्म्मकिया ६२ पांचाल देशी गर्जते हैं क्रीड़ा करते में हँसते हैं सैकड़ों शङ्खों को बजाते हैं और प्रसन्नचित्त दुन्दुभियों को भी बजाते हैं ६३ शङ्खोंके शब्दोंसेयुक्त वायुसे चलायमान बाजों के घोरशब्द दिशाओंको पूर्णकरते हैं ६४ हींसते घोड़े और चिंहाड़ते हाथियोंके बड़ेशब्द और शूरवीरोंके भी यह सिंहनाद सुनेजाते हैं ६५ पूर्वदिशामें नियत होकर अत्यन्त

प्रसन्नचित्त जानेवालों के रथ नेमियोंके शब्द जो कि रोमांचके खड़े करनेवाले हैं वहभी सुनेजाते हैं ६६ पांडव लोगोंने धृतराष्ट्रके पुत्रोंका जो यह नाशकिया है इसबड़ेभारी नाशमें हम तीनशेषहैं ६७ कितनेही सौहाथीके समान पराक्रमी और कितनेही सब शस्त्र विद्याओं में कुशलथे वह पाण्डवों के हाथसे मारेगये मैं समयकी बिपरीतता को मानताहूं ६८ निश्चय करके इसप्रकारके इतनेही कर्म मूलसमेत विचार करनेके योग्यहैं जैसे कि कठिन कर्मके करनेपर भी ऐसीदशा है ६९ आपकी जो बुद्धि है वह मोहसे दूर नहीं कीजाती है इसबड़े प्रयोजन के वर्त्तमान होनेपर जो हमारा हितकारी और भलाहै उसको कहो ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिद्रौणिमंत्रेप्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय ॥

कृपाचार्य्य बोले हे समर्थ जो तुमनेकहा वह तुम्हारा सबबचन सुना हे महाबाहु अब मेरे कुछ बचनको भी सुन १ कि प्रारब्ध और उद्योग इन दोनोंके कर्मों में सब बँधेहुये हैं अर्थात् प्रारब्धमें सबओरसे बँधेहुयेहैं और उपायमें कमबँधेहुये हैं इस हेतुसे प्रारब्ध मुख्यहै और उद्योग अमुख्यहै इनदोबातों से कुछ अधिक वर्त्तमान नहीं है २ हे श्रेष्ठ अकेले दैव अर्थात् प्रारब्धसेही संसारके कार्य्य पूरेनहीं होतेहैं और न केवल उद्योगही से सिद्धहोते हैं इसदशामें दोनों के मिलनेसेही कार्य्यकी पूर्णता होतीहै ३ सबछोटे बड़े प्रयोजन इन्हीं दोनों बातोंसे बँधेहुये हैं और सब कार्य्यजारी होकर पूर्णहोते दिखाई पड़ते हैं ४ अब उनदोनोंमें प्रारब्ध की मुख्यता वर्णन करतेहैं कि पर्व्वतपर वर्षा करनेवाला पर्ज्जन्य किस फलको सिद्ध नहीं करता है अर्थात् विना उद्योग और उपाय के पर्व्वतपर अपने आप सब वस्तुओं की उत्पत्तिहोतीहै उसीप्रकार जोतेहुये खेतमें भी किसफलको प्राप्त नहीं करताहै अर्थात् उद्योग प्रारब्धके आधीनहै ५ प्रारब्ध को श्रेष्ठ माननेवाले उद्योग और उद्योगसे रहित प्रारब्ध भी निष्फल होताहै इनदोनोंको सर्वत्र निश्चयकरते हैं इसमें प्रथम बड़ा निश्चयहै ६ जैसे कि अच्छेप्रकार दैवकेवर्षने और खेतके जोतनेपर बीज बड़े गुणवाला होताहै उसीप्रकार मनुष्यों का भी अभीष्ट सिद्धकरनाहै अर्थात् दोनोंही से काम पूराहोताहै ७ इनदोनोंमें दैव बलवान् है कि वह आपही बिना उपायके फलदेनेको प्रवृत्तहोताहै इसीप्रकार सावधान और

ज्ञानी मनुष्य अच्छा निश्चयकरके उपायमें प्रवृत्तहोते हैं ८ हे नरोत्तम मनुष्योंके सबकर्म उन दोनोंसेही जारी और पूरेहोते देखनेमें आतेहैं ९ जो उपाय कियाहै वह भी दैवसे ही सिद्ध होताहै इसीप्रकार इन कर्मवालोंका कर्म्म सफल होताहै १० सावधान चतुर मनुष्योंका अच्छेप्रकार से कियाहुआ भी उद्योग जो दैवसे रहितहै वह लोकमें निष्फल दिखाई देता है ११ मनुष्यों में जो लोग आलसी और असाहसी होतेहैं वह उद्योगको बुराकहते हैं उसको बुद्धिमान्लोग अच्छा नहीं मानतेहैं १२ बहुधा कियाहुआ कर्म्म इस पृथ्वीपर निष्फल दिखाई देताहै फिर दुःखहोताहै और कर्मको न करके बड़े फलको देखताहै यह दोनोंबातें बहुधा देखनेमें आती हैं १३ कर्मको न करके दैवयोगसे जो कुछ पाताहै और जो कर्म करके भी फलको नहीं पाताहै वह दोनों दुर्लभहैं १४ सावधान और निरालस्य मनुष्य जीवता रहनेको समर्थ होताहै और आलस्य युक्त मनुष्य सुख से वृद्धि नहीं पाताहै इस जीवलोक में कर्म करनेमें सावधान लोग बहुधा वृद्धिके चाहने वाले दिखाई देतेहैं १५ जो कर्ममें सावधान मनुष्य प्रारब्ध कर्मसे कर्म्मफलको नहीं भोगताहै उसकी कुछ निन्दा नहीं होती है जो प्राप्तहोने के योग्य अभीष्ट को नहीं पाताहै १६ और जो अकर्मी कर्म को न करके लोक में फलको पाताहै वह निन्दित होताहै और बहुधा शत्रु होताहै १७ जो मनुष्य इसप्रकारसे इसको निरादर करके इसके बिपरीत कर्म करताहै वह अपने अनर्थोंको उत्पन्न करताहै यह बुद्धिमानों की नीति है १८ फिर जब उद्योग अथवा दैवसे रहितहोय तब इन दोनों हेतुओंसे उपाय निष्फलहोताहै १९ इसलोकमें उपायसे रहित कियाहुआ कर्म्म सिद्ध नहीं होताहै जो मनुष्य देवताओं को नमस्कारकरके अच्छीरीतिसे प्रयोजनों को चाहताहै २० वह आलस्यसे रहित और सावधानीसे संयुक्तहै कर्म की निष्फलतासे नाशको नहीं पाताहै फिर अच्छेकर्मकी इच्छा यहहै जो वृद्धों का सेवनकरता है २१ जो अपने कल्याणको पूछताहै और उनके हितकारी बचनों को करताहै सदैव उठ २ कर वृद्धोंके अङ्गीकृत पुरुष पूछने के योग्यहैं २२ वह पुरुष अभीष्ट सिद्धकरनेमें बड़े तेजहैं और मूलरखनेवाली सिद्धी कहेजातेहैं जो मनुष्य वृद्धोंके वचनों को सुनकर उपायमें प्रवृत्तहोताहै २३ वह थोड़ेही समयमें उपायके फलको अच्छीरीतिसे पाताहै जो मनुष्य रागक्रोध भय और लोभसे अभीष्टों को चाहताहै २४ वह अजितेन्द्रिय और अपमान करनेवाला शी-

मही लक्ष्मीसे रहितहोकर नाशहोताहै सो इसलोभी और अदूरदर्शी दुर्योधनने अज्ञानतासे यह बिना बिचाराहुआ असमर्थ कर्म प्रारम्भ किया और निषेधकरनेवाले शुभचिन्तकों को अनादर करके नीचोंकी सलाहसे २५ । २६ बड़े गुणवान् पाण्डवोंसे शत्रुताकरी बड़ा दुःस्वभाव मनुष्य प्रथमही धैर्य्यकरनेके योग्य नहीं है २७ और अभीष्टके पूरे न होनेपर दुःखी होताहै कि मैंने अपने मित्रोंका बचन नहीं किया हमलोग उसपापी पुरुषके पीछे चलते हैं २८ इसहेतुसे हमको भी यह भयकारी अनीति प्राप्तहुई अबतक इसदुःखसे तपायेहुये २६ मुझचिन्ता करनेवालेकी बुद्धि अपने कुछ कल्याणको नहीं जानती है और अचेत मनुष्य से सुहृज्जन पूछनेके योग्यहैं ३० उसमें उसकी बुद्धि और नम्रताहै और उसीमें कल्याणको देखताहै इसस्थानपर पूछेहुये वह ज्ञानीलोग इसके कार्य्योंके मूलों को बुद्धिसे निश्चयकरके ३१ जैसे कहें वैसा करना चाहिये और वह उसीप्रकार से होगा हम सबलोग जाकर धृतराष्ट्र गान्धारी और बड़ेज्ञानी बिदुरजीसे मिल करके पूछें वह हमारे पूछने पर जो कहें वह निस्सन्देह हमारा कल्याण है ३३ वही हमको फिर करना चाहिये यह मेरा दृढ़मत है कार्यों के प्रारम्भ किये बिना कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होताहै ३४ फिर उपाय करनेपर भी जिनका कार्यपूरा नहीं होताहै वह निस्सन्देह दैवके मारेहुये हैं ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिकृपसंवादेद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

सञ्जय बोले हे महाराज तब अश्वत्थामाजी कृपाचार्य के उस बचन को जो कि अत्यन्त शुभ और धर्म अर्थसे संयुक्तथा सुनकर दुःख शोकसे संयुक्त १ ज्वलित अग्निरूप के समान शोकसे प्रज्वलित होकर चित्तको निर्द्दय करके उन दोनोंसे बोले २ कि पुरुष पुरुषमें जो २ बुद्धि होती है वही श्रेष्ठहै वह सब पृथक् पृथक् अपनी २ बुद्धिसे प्रसन्न रहते हैं ३ और सब लोकके मनुष्य अपने २ को बड़ा बुद्धिमान् मानते हैं सबकी बुद्धि बहुत अङ्गीकृत है और सब अपनी २ प्रशंसा करते हैं ४ सबकी निजबुद्धि अपनी उत्तमताके बर्णनमें नियतहै दूसरेकी बुद्धिकी निन्दा करते हैं और अपनी बुद्धिकी वारम्वार प्रशंसा करते हैं ५ सभा में अन्य २ कारणों के वर्त्तमान होनेसे जिनलोगों की बुद्धि एकसी है वह पर-

स्पर प्रसन्नहोते हैं और बारम्बार अपनेको बहुत मानते हैं ६ उसी उसी मनुष्यकी वह वह बुद्धि जबतक समयके योगसे विपरीतता को पाकर परस्पर विनाशको पाते हैं ७ मुख्यकर मनुष्यों के चित्तकी बिचित्रता से चित्त की व्याकुलता को पाकर वह वह बुद्धि उत्पन्न होती है ८ हे प्रभु इसीप्रकार बड़ा सावधान वैद्य बुद्धिके अनुसार रोगको जानकर औषधी देनेके द्वारा रोग की निबृत्ती के लिये चिकित्सा करताहै ९ इसीप्रकार मनुष्यभी अपने काम पूरे करने के लिये बुद्धि को करते हैं और अपनी बुद्धिसेयुक्त मनुष्य उसकी निन्दा करते हैं १० मनुष्य तरुणाईमें एक अन्य बुद्धिसे और सम्पूर्ण अवस्थाके मध्यमें अन्य बुद्धिसे मोहित होताहै वह बृद्धावस्थामेंभी अन्यही बुद्धिको स्वीकार करता है ११ हे कृतवर्मा मनुष्य बड़े घोर दुःखको अथवा उसीप्रकारके ऐश्वर्यकोभी पाकर बुद्धिको बिपरीत करता है १२ एकही मनुष्य में वह बुद्धिसमय पर उत्पन्न होती है और समय न होनेपर उसको नहीं अच्छी लगती है और बुद्धिके अनुसार निश्चय करके जिस विचारको अच्छीरीति से देखता है उसीप्रकार का उत्साह करता है वह बुद्धि उसके उपायकी करनेवाली है हे भोजवंशी कृतवर्मा प्रत्येक मनुष्य यह निश्चय करनेवाला है कि मेरा विचार अच्छा है और प्रसन्नचित्त होकर मारने आदिक में कर्म करना प्रारम्भ करताहै १३ । १४ । १५ सब मनुष्य अपनी बुद्धि और चतुरताकोही जानकर नानाप्रकारके कर्म करते हैं और यही जानतेहैं कि यह मेरा हितकारी कर्म है १६ अब मेरे दुःखसे उत्पन्न होनेवाला जो यह विचार पैदाहुआहै उस अपने शोक दूर करनेवाले विचार को मैं तुम दोनों से कहताहूं १७ ब्रह्माजी ने सृष्टिको उत्पन्न करके और उनमें कर्मको नियत करके हरएक वर्णमें विशेषण रखनेवाला एक २ गुणधारण किया १८ ब्राह्मणमें श्रेष्ठ वेद क्षत्रियमें श्रेष्ठ पराक्रम वैश्यमें श्रेष्ठ सावधानी कर्म और शूद्रमें श्रेष्ठ सब वर्णों का आज्ञाकारी होना कहाहै १९ अजितेन्द्रिय ब्राह्मण निकृष्ट पराक्रमसेरहित क्षत्रिय निकृष्टकार्य्य में असावधान वैश्य निकृष्ट और सब वर्णों की आज्ञाका न करने वाला शूद्र निकृष्ट होकर निन्दाकिया जाताहै २० सो मैं ब्राह्मणों के बड़े पूजित उत्तमकुलमें उत्पन्नहुआहूं और अभाग्यतासे क्षत्रियधर्मका कर्मकर्त्ता हुआहूं २१ जो मैं क्षत्रियधर्म को जानकर और ब्राह्मणोंके शमदमादि गुणों में नियतहोकर बड़े कर्मको करूं वह मेरा कर्म साधुओं से अङ्गीकृत नहीं मैं युद्धमें दिव्य धनुष

और अस्त्रों को धारण करता पिताको मृतक देखकर सभामें क्या कहूंगा २२।२३ अब मैं अपनी इच्छा के अनुसार उस क्षत्रिय धर्म्म की उपासना करके राजा दुर्य्योधन और महात्मा पिता के भी मार्ग्ग को पाऊंगा २४ अब पाञ्चाल देशी बिजयसे शोभित बड़े बिश्वस्त सवारी और कवचों से जुदे होकर प्रसन्नतायुक्त सोते हैं २५ वह थकेहुये परिश्रम से पीड़ावान् अपनी विजयको मानकर शयन करेंगे अपने डेरों में सुखसे नियत और सोनेवाले उन पाञ्चाल देशियों के डेरों के उस नाशको करूंगा जोकि कठिनतासे करनेके योग्यहै अब उन अचेत मृतकरूप पाञ्चालदेशियोंको डेरे में पराजयकरके २६।२७ और पराक्रम करके ऐसे मारूंगा जैसे दानवोंको इन्द्र मारताहै अब उनधृष्टद्युम्न आदिक सब पाञ्चालों को एक साथही ऐसे मारूंगा २८ जैसे कि ज्वलित अग्नि सूखे बनको हे श्रेष्ठ मैं युद्धमें पांचालों को मारकर शान्तीको पाऊंगा २९ अब मैं युद्धमें पांचालों को मारता पांचालों के बीचमें ऐसाहूंगा जैसे कि पशुओंको मारते पशुओं के मध्य में क्रोधयुक्त पिनाक धनुषधारी आप रुद्रजीहोते हैं ३० अब अत्यन्त प्रसन्न सब पांचालोंको मारकाटकर उसीप्रकारसे युद्धमें पांडवोंको भी पीड़ावान् करूंगा ३१ अब मैं पृथ्वीको सब पांचालोंके शरीरों से पूर्णकरके प्रत्येकको मारकर पिताके ऋणसे अऋणहूंगा ३२ अब मैं पांचालोंको दुर्योधन कर्ण भीष्म और जयद्रथ के कठिन मार्गमें पहुंचाऊंगा ३३ अब मैं रात्रिके समय थोड़ीही देरमें पांचालों के राजाधृष्टद्युम्नके शिरको ऐसेमथूंगा जैसे कि पशुकेशिरको मर्द्दन करते हैं ३४ हे कृपाचार्य्यजी अब मैं पांचाल देशियों के और पाण्डवों के सोतेहुये पुत्रोंको रात्रिकेसमय युद्धभूमिमें तेजखड्गसे मथूंगा ३५ हे बड़े बुद्धिमान् अब मैं रात्रि के युद्धमें उस पांचालकी सेनाको मारकर कृतकृत्य होकर सुखीहूंगा ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

कृपाचार्य्य बोले कि प्रारब्धसे बदलालेने में तेरी अबिनाशी बुद्धि उत्पन्नहुई है आप इन्द्रभी तेरे रोकने को समर्थ नहीं है १ हमदोनों एकसाथही प्रातःकाल के समय तेरे पीछे चलेंगे अब रात्रि में कवच और ध्वजासे पृथक् होकर बिश्राम करो २ मैं और यादव कृतवर्म्मा अलंकृत रथों पर सवार होकर तुझ शत्रुओं के

सम्मुख जानेवाले के पीछे चलेंगे ३ हे रथियों में श्रेष्ठ प्रातःकाल के समय तुम हम दोनोंकेसाथ सम्मुखता में पराक्रम करके शत्रु पाञ्चालों को उनके साथियों समेत मारोगे ४ तुम पराक्रम करके मारने को समर्थ हो इसरात्रिमें विश्रामकरो हे तात तुझको जागतेहुये बहुत बिलम्बहुई तव तक इसरात्रि में शयन करो ५ विश्रामयुक्त शयन से सावधान चित्त तुम युद्ध में शत्रुओं को पाकर मारोगे हे वड़ाई देनेवाले इसमें संशय नहीं है ६ देवताओं के मध्यमें इन्द्रभी तुझ रथियों में श्रेष्ठ उत्तम शस्त्रधारी के बिजय करने को उत्साह नहीं करता है ७ कृतबर्म्मा से रक्षित और कृपाचार्य्य के साथ जानेवाले युद्धमें क्रोधयुक्त अश्वत्थामा से इन्द्र भी युद्धनहीं करसक्ता ८ हम रात्रिमें विश्रामयुक्त शयन करनेवाले तापसे रहित प्रातःकाल शत्रुओं के लोगोंको मारेंगे ६ तेरे और मेरे दिव्य अस्त्रहैं और बड़ा धनुषधारी यादव कृतबर्म्मा भी युद्धों में निस्सन्देह सावधान है १० हे तात हम तीनों एकसाथ मिलेहुये सब शत्रुओं को हठसे युद्ध में मारकर उत्तम आनन्द को पावेंगे ११ तुम सावधान होकर बिश्रामकरो और इसरात्रि में सुखपूर्वक शयनकरो मैं और कृतबर्म्मा धनुषधारी शत्रुओं के तपानेवाले कवचधारी दोनों एकसाथ रथपर सवार होकर तुझ शीघ्र चलनेवाले नरोत्तम रथीके पीछे चलेंगे १२।१३ इसकेपीछे तुम उन्होंके डेरोंमें जाकर युद्धमें नामको सुनाकर युद्धकरनेवाले शत्रुओं का बड़ाभारी नाशकरोगे १४ प्रातःकालके समय उनका नाश करके ऐसे बिहारकरो जैसे कि महा असुरों को मारकर इन्द्र विहार करता है १५ तुम युद्धमें पाञ्चालोंकी सेनाके बिजय करने को ऐसेसमर्थ हो जैसे कि सब दानवों का मारनेवाला क्रोधयुक्त इन्द्र दैत्योंकी सेनाको मारकर बिहार करताहै १६ वज्रधारी समर्थ साक्षात् इन्द्रभी तुझ मेरेसाथी कृतबर्म्मा से रक्षित को युद्धमें नहीं सहसक्ताहै १७ हे तात मैं और कृतबर्म्मा युद्धमें पाण्डवों को बिजय किये बिना कभी लौटकर नहीं आवेंगे १८ हम सब युद्धमें क्रोधयुक्त पाञ्चालों समेत पांडवों को मारकर लौटेंगे अथवा मरकर स्वर्गको जायँगे १९ हेनिष्पाप हम प्रातःकाल युद्धमें सब उपायों से तेरे सहायकहैं हे महाबाहु मैं यह तुझसे सत्य २ ही कहता हूं २० हे राजा मामाजी के ऐसे हितकारी बचनोंको सुनकर क्रोधसे रक्तनेत्र अश्वत्थामा ने मामाजी को उत्तरदिया २१ कि रोगी क्रोधयुक्त धनादिक के शोच करनेवाले और कामी इन लोगोंको निद्रा कहांसे होसक्ती है २२ अब यह मेरा

क्रोध चौथाई उत्पन्न हुआहै वह चौथाई क्रोध दिनके अर्थ शयन का नाशकरताहै २३ इस लोमक में क्या दुःखहै कि पिता के मरण को स्मरणकरता और जलताहुआ मेरा हृदय अब दिन रात्रि शान्तिको नहीं पाताहै २४ मुख्यकरके जैसे प्रकारसे मेरा पिता पापियों के हाथसे मारागया वहसब आपके नेत्रगोचर हैं वह मेरे मर्म्मों को काटताहै २५ लोक में मुझसा मनुष्य एक मुहूर्त्त भी कैसे जीसक्ता है जो मैं पाञ्चालों का बचन सुनताहूं कि द्रोणाचार्य्य मारेगये २६ मैं धृष्टद्युम्नको न मारकर जीवते रहनेको उत्साह नहीं कर सक्ताहूं वह मेरे पिताके मारने से काटने के योग्यहै और जो पांचालदेशी इकट्ठे हैं वह सबभी बध्यहैं २७ इसके बिशेष जो मैंने टूटी जंघावाले राजाका जो बिलापसुना वह किस निर्दयके भी चित्तको नहीं भस्म करेगा २८ फिर टूटी जंघावाले राजाके उसप्रकारके बचनों को सुनकर कौनसे निर्दय मनुष्य के अश्रुपात नहीं होंगे २९ मेरे जीवतेहुये जो यह मेरामित्र पक्ष विजयकिया यह मेरे शोकको ऐसे बढ़ाताहै जैसे जलकावेग समुद्रको बढ़ाताहै ३० अब मेराचित्त एकाग्रहै निद्रा और सुख कहां है हे श्रेष्ठ मैं बासुदेवजी और अर्जुन से रक्षित उनलोगों को ३१ महाइन्द्रसे भी सहने के योग्य नहीं जानताहूं और इस उठेहुये क्रोधकेभी रोकनेको समर्थ नहीं हूं ३२ मैं इसलोक में ऐसा किसीकोभी नहीं देखताहूं जो मुझको मेरे क्रोध से रहित करसके इसीप्रकार साधुओं की अंगीकृत इस मेरी बुद्धिको भी कोई नहीं लौटासक्ता ३३ मेरे मित्रोंकी पराजय और पाण्डवों की बिजय जो दूतोंने बर्णनकरी वह मेरे हृदयको भस्मकररही है ३४ अब मैं रात्रि के युद्ध में शत्रुओंका नाशकरके फिर ताप से रहित होकर बिश्राम करके शयन करूंगा ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिमन्त्रणायांचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

कृपाचार्य्य बोले कि दुर्बुद्धी और अजितेन्द्रिय मनुष्य सुननेका अभिलाषीभी सम्पूर्ण धर्म अर्थके जाननेको समर्थ नहीं है यह मेरामतहै १ इसीप्रकार शास्त्रों के स्मरण रखनेवाली बुद्धिका स्वामी पुरुष जबतक नीति को नहीं सीखताहै तबतक वहभी धर्म अर्थके निश्चयको नहीं जानताहै २ अत्यन्त अज्ञान शूरबीर मनुष्य बहुत कालतक भी पण्डित के पास बर्त्तमान सेवाकरके धर्मोंको ऐसेनहीं

जानताहै जैसे कि व्यञ्जनके स्वादको चमच नहीं जानताहै ३ ज्ञानी पुरुष एक मुहूर्त्त भी उसपंडितके पास बैठकर शीघ्रही ऐसे धर्मोंको जानताहै जैसे कि दाल आदिके स्वादको जिह्वा जानलेती है ४ बुद्धिमान् जितेन्द्रिय और सेवाकरनेवाला पुरुष सब शास्त्रोंको जानताहै और ग्राह्य बस्तुओंसे बिरोध नहीं करताहै ५ जो दुर्बुद्धी और पापी पुरुष है वह सच्चेमार्ग्ग में पहुँचाने के योग्य नहीं है वह उपदेश कियेहुये कल्याणको त्यागकरके बहुतसे पापों को करताहै ६ फिर शुभचिन्तक लोग सनाथ पुरुषको पापसे निषेध करते हैं और धनकास्वामी उसपाप से लौटताहै परन्तु धनरहित पुरुष नहीं लौटताहै ७ जैसे कि बिषयोंमें प्रवृत्तचित्त पुरुष नानाप्रकारके वचनोंसे आधीन किया जाताहै उसीप्रकार शुभचिन्तक मित्रसे समझाने के योग्यहै और जो योग्य नहीं है वह पीड़ापाताहै ८ इसी प्रकार ज्ञानीलोग पापकर्म्म करनेवाले बुद्धिमान् मित्रको सामर्थ्य के अनुसार बारम्बार निषेध करते हैं ९ वह कल्याण में चित्त करके और मनसे बुद्धिको आधीनता में करके उस बचनको करताहै जिसके कारणसे पीछे दुःखी नहीं होताहै १० इस लोकमें सोनेवाले मनुष्यों का मारना और इसीप्रकार अशस्त्र रथ और घोड़ों से रहित मनुष्योंका मारना धर्मसे प्रशंसा नहींकिया जाताहै ११ जो कहे कि मैं तेरा हूं जो शरणागत होय जो खुलेहुये केश होय और जो मृतक सवारी वालाहै १२ हे समर्थ इन सबका मारना भी निषेध है कवच से रहित मृतकके समान अचेत बिश्वास युक्त सब पाञ्चाल लोग सोतेहैं १३ जो कुटिल पुरुष उसदशावाले उन पाञ्चाल देशियोंसे शत्रुताकरेगा वह अथाह बिना नौकावाले नरकरूपी समुद्रमें डूबेगा १४ तुम लोकके सब अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ विख्यातहो इसलोक में कभी तुझसे छोटासा भी पाप नहीं हुआ १५ फिर सूर्य्यके समान तेजस्वी तुम प्रातःकाल के समय सूर्योदय होने और सब जीवोंके प्रकट होनेपर युद्धमें शत्रुओं के लोगोंको बिजय करोगे १६ मेरे मतसे तुझमें ऐसा निकृष्ट और निषिद्ध कर्म्म ऐसा असम्भवहै जैसे कि श्वेतरङ्गवाला पक्ष रक्तबर्ण होना असम्भवहै १७ अश्वत्थामा बोले हे मामाजी जैसा आप कहते हैं वह निस्सन्देह वैसाही है परन्तु प्रथम उन पाण्डवोंनेही इस धर्मरूपी पुलको तोड़ाहै १८ शस्त्र त्यागनेवाला मेरापिता राजाओंके समक्षमें आपलोगोंके भी देखतेहुये धृष्टद्युम्नके हाथसे गिरायागया १९ रथियोंमें श्रेष्ठ कर्ण रथ चक्रके पृथ्वी में घुसजानेपर बड़े दुःखमें डूबाहुआ उसअ-

र्जुनके हाथसे मारागया २० इसीप्रकार शस्त्र त्यागनेवाले धनुष आदिकसे रहित शन्तनुके पुत्र भीष्मजी भी शिखंडीको आगेकरके अर्जुनके हाथसे मारेगये २१ इसीप्रकार युद्धमें शरीर त्यागने के निमित्त बैठाहुआ भूरिश्रवा राजाओं के पुकारतेहुये सात्यकीके हाथसे मारागया २२ दुर्योधन गदासमेत भीमसेनके सम्मुख होकर राजाओं के देखते अधर्म्म से मारागया २३ वहां अकेला नरोत्तम बहुत रथियोंसे घिरकर अधर्म युक्त भीमसेनके हाथसे गिरायागया २४ मैंने दूतोंके मुखसे टूटी जंघावाले राजाका जो बिलाप सुना वह मेरे मर्मस्थलों को काटताहै २५ उस प्रकारसे पांचालदेशी लोग अधर्मी और पापी हैं जिनका कि धर्मका पुल टूट गयाहै आप इसप्रकारसे उन बे मर्यादवालोंकी निन्दा नहीं करतेहो २६ मैं रात्रिके समय निशा युद्ध में अपने पिताके मारनेवाले पांचालों को मारकर जन्मपाकर चाहै कीट पतङ्गभी होजाऊं २७ और मैं इसीहेतुसे शीघ्रता करताहूं कि जो यह मेरे कर्मकरने की इच्छाहै उसमुझ शीघ्रता करनेवालेको कहां निद्रा और सुखहै २८ वह पुरुष लोकमें न पैदा हुआहै न होगा जो कि उन पांचाल देशियोंके मारनेमें यह मति देकर मुझको लौटावे २९ सञ्जय बोले हे महाराज प्रतापवान् अश्वत्थामाजी इसप्रकार कहकर और एकान्त में घोड़ोंको जोड़कर शत्रुओं के सम्मुखगये ३० बड़े साहसी कृतबर्मा और कृपाचार्यजी दोनों उससे कहनेलगे कि किसनिमित्त रथको जोड़ाहै और क्या कर्म्मकरना चाहते हो ३१ हे नरोत्तम तेरे साथ हम दोनों चलेंगे एकसा सुखदुःखवाले हमदोनोंपर तुमको सन्देहकरना उचित नहीं है ३२ पिताके मरणको स्मरणकरते अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाजी ने अपने मनका वह सत्य सत्य बिचार उनसे वर्णन किया जो उसके चित्तमें करनेकी इच्छाथी ३३ तेजबाणोंसे लाखों शूरबीरोंको मारकर शस्त्रोंका त्यागनेवाला मेरा पिता युद्धमें धृष्टद्युम्न के हाथसे मारागया ३४ निश्चय करके अब मैं इसीप्रकार इसपापी धर्मके त्यागनेवाले राजा पांचालके पुत्रधृष्टद्युम्नको पापकर्म्म से मारूंगा ३५ मेरे हाथसे पशुके समान माराहुआ धृष्टद्युम्न किसीप्रकारसे भी शस्त्रोंसे बिजय कियेहुये लोकों को नहीं पावेगा यह मेरामत है ३६ कवचधारी खड्ग और धनुषके उठानेवाले शत्रुबिजयी उत्तम रथरखनेवाले तुम दोनों सवार होकर मेरी प्रत्याशाकरो अर्थात् मार्गदेखो ३७ हेराजा वह अश्वत्थामा यह कहकर रथपर सवारहोकर शत्रुओं के सम्मुखगये कृपाचार्य्य और

यादव कृतवर्मा उसके पीछेचले ३८ शत्रुओं के सम्मुख जानेवाले वह तीनोंऐसे शोभायमानहुये जैसे कि यज्ञमें आवाहनकी हुई वृद्धियुक्त अग्नि होती है ३९ हेसमर्थ फिर वह उनके उनडेरों में गये जिसमें उनके मनुष्य अच्छी रीतिसे सो रहेथे और महारथी अश्वत्थामा द्वार स्थानको पाकर नियतहुये ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय इसकेपीछे उनदोनों कृतवर्मा और कृपाचार्य ने द्वार स्थानपर अश्वत्थामाको नियत देखकर क्या किया उसको मुझसे वर्णन करो १ सञ्जय बोले कि वह महारथी अश्वत्थामा कृतवर्मा और कृपाचार्य्य को पूछकर क्रोध से पूर्णशरीर डेरे के द्वारपरगया २ उसने वहां जाकर एक जीवको देखा जो कि बड़े शरीर वाला चन्द्रमा और सूर्य के समान प्रकाशमान द्वारपर नियत रोमहर्षण करनेवाला ३ व्याघ्र चर्मधारी बड़े रुधिरको गेरनेवाले कृष्ण मृगचर्म्म का ओढ़नेवाला नागोंका यज्ञोपवीत रखनेवाला ४ बहुतलम्बी स्थूल और नानाप्रकारके शस्त्रों के धारण करनेवाले भुजाओं से बड़े सर्पका बाजूबन्द बांधनेवाला ज्वाल समूहों से व्याप्त मुख ५ दंष्ट्राओं से भयानक महा भयकारी फैले हुये हजारों विचित्र मुखोंसे शोभायमानथा ६ उसका शरीर और पोशाक वर्णन के योग्य नहीं जिसको कि देखकर सब दशामें पर्वतभी फटजायँ ७ उसके मुख नाक कान और हजारों नेत्रोंसे बड़ी २ ज्वाला निकलतीथीं ८ उन ज्वालाओं के प्रकाश से शङ्ख चक्र गदाधारी हजारों श्रीकृष्ण प्रकट थे ९ उस बड़े अपूर्व सब सृष्टिके भयकारीको देखकर पीड़ासे रहित अश्वत्थामाने उसको दिव्य अस्त्रोंकी वर्षासे ढकदिया १० उस बड़े तेजरूपने अश्वत्थामाके छोड़ेहुये बाणोंको निगला जैसे कि बड़वामुखनाम अग्नि समुद्रके जलसमूहों को निगलताहै ११ उसीप्रकार उस तेजरूपने अश्वत्थामाके चलायेहुये बाणोंको निगला फिर अश्वत्थामा ने उन अपने बाणसमूहों को निष्फल देखकर १२ ज्वलित अग्निके समान प्रकाशित शक्तिको छोड़ा वह प्रकाशमान रथ शक्ती उसको घायल करके ऐसे फटगई १३ जैसे कि प्रलय के समय आकाश से गिरीहुई बड़ी उल्का सूर्य्यको घायल करके फटजाती है इसके पीछे सुवर्णकी मूठ आकाशवर्ण दिव्य

खड्गको १४ ऐसे शीघ्रतापूर्वक मियान से निकाला जैसे कि बिलसे प्रकाशित सर्पको निकालते हैं इसके पीछे बुद्धिमानने उत्तम खड्गको उस तेजरूपके ऊपर चलाया १५ वह उस तेजरूपको पाकर उसके शरीरमें ऐसे चलागया जैसे कि नौला बिबरमें घुसजाताहै इसके पीछे उस क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने इन्द्रध्वजाके समान १६ उसज्वलितरूप गदाको उसके ऊपर चलाया उस तेजरूपने उसको भी निगला इसके पीछे सब शस्त्रों के नाशवान् होने पर जहां तहां देखनेवाले अश्वत्थामाने १७ आकाशको श्रीकृष्णसे पूर्णदेखा शस्त्रोंसे रहित अश्वत्थामा उस बड़े चमत्कार को देखकर १८ अत्यन्त दुःखी और कृपाचार्य्य के बचन को स्मरण करते बोले कि जो पुरुष अप्रिय और परिणाम में शुभदायक मित्रों के बचनोंको नहीं सुनताहै वह आपत्तिको पाकर ऐसे शोचता है १९ जैसे कि मैं दोनोंको उल्लंघनकर अर्थात् उनके बिरुद्ध कर्म्म करके जो अज्ञानी शास्त्रज्ञों को उल्लंघन करके मारना चाहताहै २० वह धर्म्मसे च्युत होनेवाला है इसहेतुसे कुमार्गमें माराजाता है गौ ब्राह्मण राजा स्त्री मित्र माता गुरू २१ निर्बल बिक्षिप्त अन्धे सोनेवाले भयभीत उठेहुये मदमें उन्मत्त रोगादिकों से अचेत और भूतादिकके आवेशसे मतवाले मनुष्यपर शस्त्र नहीं चलावे २२ इसप्रकार पूर्वमें बड़े बड़े लोगोंके उपदेश होतेथे सो मैंने शास्त्रके बतायेहुये सनातन मार्ग्गको उल्लंघन करके २३ कुमार्ग से कर्मका प्रारम्भ करके घोर आपत्तिको पाया बुद्धिमान् लोग उस आपत्तिको घोरकहते हैं २४ जो बड़े कर्म्मको प्रारम्भकरके भयसे मुख को फेरताहै यहां वह कर्म्म सामर्थ्य और बलसे करने के योग्य नहीं २५ मनुष्य का कर्म्म दैवसे बड़ा नहीं कहाजाताहै कर्म करनेवालेका जो मनुष्य कर्म दैवसे सिद्ध नहीं होताहै २६ वह धर्म्ममार्ग्ग से च्युत होकर आपत्ति को प्राप्त होता है ज्ञानी पुरुष प्रतिज्ञानको अबिज्ञान कहते हैं २७ जो इसलोकमें किसीकार्य्य को प्रारम्भ करके फिर भयसे छोड़ देताहै सो अन्यायसे यह भय मेरे समक्षमें नियत हुआ २८ द्रोणाचार्यका पुत्र युद्धमें किसी दशामेंभी मुख फेरनेवाला नहीं हुआ और यह बड़ा तेजरूप उत्पन्न दैवदण्डके समान सन्नद्ध है २९ मैं सबप्रकार से बिचारता हुआ भी इसको नहीं जानता हूं निश्चयकरके जो मेरी यह पापबुद्धि अधर्म में प्रवृत्तहै ३० उसका यह महाभयकारी फल मरणकेलिये प्रकटहै वह मेरा युद्ध में मुखका फेरना दैवका रचाहुआ है ३१ यहां किसी दशामें भी कोई बात

उपाय करनेके योग्य नहीं सो मैं अब समर्थ और शरणके योग्य महादेवजी की शरणागत होताहूं ३२ वही मेरे इस घोर दैव दण्डका नाश करैगा जो कि कपर्दी, देवताओंकेभी देवता, उमापति, उपाधि से रहित ३३ कपालों की माला रखनेवाले रुद्र, भगनेत्र के मारनेवाले हर, उस देवताने तप और पराक्रमसे देवताओं को उल्लंघन किया ३४ इसहेतुसे मैं उस गिरीश और शूलधारीकी शरणागत होताहूं ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

सञ्जय बोले हे राजा वह अश्वत्थामा इसप्रकार अच्छेप्रकार विचार करके रथ के बैठनेके स्थानसे उतरकर नम्रता पूर्व्वक देवेशके सम्मुख नियत हुआ १ अश्वत्थामा बोले कि मैं अत्यन्त शुद्धचित्त से अज्ञानियों के कठिन कर्म्मी भेंटसे शिवजीको पूजन करताहूं जोकि उग्र, स्थाणु, शिव, रुद्र, शर्व्व, ईशान, ईश्वर गिरीश, वरद, देवभवभावन्, ईश्वर २ शितिकण्ठ, अज, शुक्र, दक्ष क्रतुहर, हर विश्वरूप, बिरूपाक्ष, बहुरूप, उमापति ३ श्मशानवासी, दृप्त, महागणपति, विभु खट्वाङ्गधारी, रुद्र, जटिल, ब्रह्मचारी ४ स्तुत स्तुत्य स्तूयमान, अमोघ, कृत्तिवासस विलोहित, नीलकण्ठ, असह्य, दुर्निवारण ५ इन्द्र, ब्रह्मसृजब्रह्म, ब्रह्मचारी, व्रतवन्त, तपोनिष्ठ, अनन्त, तपतांगति अर्थात् तपस्वियों की गति ६ बहुरूप, गणाध्यक्ष, त्रिनेत्र, परिषदप्रिय, धनाध्यक्ष, क्षितिमुख, गौरीहृदय बल्लभ ७।८ कुमारपितर, पिंग, नन्दीवाहन, तनुवासस, अत्युग्र, उमाभूषणतत्पर ९ परसेपरे जिससे कि उत्तम श्रेष्ठ नहीं है उत्तमबाण अस्त्रोंके स्वामी दिगन्त देशरक्षिण १० हिरण्यकवच, सृष्टिरक्षक, देव, चन्द्रमौलि, विभूषण ऐसे देवताके उत्तम समाधि से शरणागत होता हूं ११ अब जो इसघोर कठिन आपत्ति उत्तीर्णहोजाऊं उस दशामें उन शिवजी का मैं सर्व्वभूत बलि से पूजन करूंगा १२ उस शुभकर्म्मी महात्मा के निश्चयको योगसे जानकर आगे से स्वर्णमयी वेदी प्रकटहुई १३ हे राजा तब उस वेदी में अग्नि देवता प्रकट हुये उसने दिशा विशाओं को और आकाशको अपनी ज्वालाओंसे पूर्णकिया उस स्थानपर प्रकाशित मुख और नेत्र रखनेवाले बहुतसे चरण शिर और भुजावाले रत्नजटित बाजूबंदधारी ऊंचा

हाथ करनेवाले १४।१५ द्वीप और पर्वतकेस्वरूप बड़ेगुण प्रकटहुये जोकि कुत्ता बाराह और ऊंटकी सूरत घोड़े बैल और शृगाल के समान मुख रखनेवाले १६ रीछ, बिलार, व्याघ्र, हाथी, काग, प्लव और सोतेके समान मुख रखनेवाले १७ बड़े अजगर हंस दार्वाघाट और चाषके समान मुख रखनेवाले श्वेतप्रभाधारी १८ इसीप्रकार कूर्म, नक्र, शिशुमार, बड़ा मगर तिमिनाम मत्स्यके समान मुख रखनेवाले १९ बानर, क्रौंच, कपोत, हाथी, कबूतर और मद्गुके समान मुख रखनेवाले २० इसीप्रकार हाथमें कान रखनेवाले हजारनेत्रधारी दीर्घोदर मांसरहित शरीर काग और बाज पक्षीकेसमान मुख रखनेवाले २१ हे भरतबंशी इसीप्रकार शिररहित रीछमुख प्रकाशित चक्षु जिह्वा और ज्वलितरूप कानवाले २२ ज्वालाकेश प्रकाशित देहरोम, चतुर्भुज, बहुतसे मेष और छागके समान मुख रखनेवाले २३ शंखवर्ण शंखमुखी इसी प्रकार शंखके समान कान रखनेवाले शंख मालाधारी शंखध्वनिके समान शब्द रखनेवाले २४ जटाधारी पांचशिखा रखनेवाले मुण्ड कृशोदर चारदंष्ट्रा और चार जिह्वा रखनेवाले शङ्कोंके समान कान और किरीटधारी २५ हे राजेन्द्र उसी प्रकार मेखलाधारी घूंघरवाले बाल, पगड़ीवाले, मुकुटधारी, सुन्दर पोशाकसे अलंकृत २६ पद्म, उत्पलके मालाधारी इसीप्रकार कुमुद मालाधारी माहात्म्यसेसंयुक्त सैकड़ों गुण २७ शतघ्नी, बज्र, मुसल, भुशुंडी, पाश और दंडहाथमें रखनेवाले २८ पृष्ठपर कवच बांधनेवाले बिचित्र बाण समूह रखनेवाले ध्वजा पताका घंटा और फरसा रखनेवाले २९ महापाशोंसे उद्यतकरलकुट स्थूण और खड्गधारी ऊंचे सर्पोंसे युक्त किरीट रखनेवाले ३० इसीप्रकार नीलवर्ण पिंगलवर्ण मुंडमुखी अत्यंत प्रसन्न सुवर्णके समान प्रकाशित पार्षदोंने ३१ भेरी शङ्ख, मृदङ्ग, झर्झर, आनक और गोमुखों को बजाया इसीप्रकार बहुतसे गाते नाचते ३२।३३ फांदते उछलते महारथी शीघ्रगामी मुण्ड और बायुसे चलायमान केशधारी दौड़ते ३४ और मतवाले बड़े हाथियोंके समान बारम्बार गर्जते बड़े भयानक घोररूप शूल और पट्टिश हाथमें रखनेवाले ३५ उसीप्रकार बहुत वर्ण के बस्त्र अपूर्वमाला और चन्दनसे अलंकृत रत्न जटित बाजूबन्द रखनेवाले ऊंचाहाथ रखनेवाले ३६ ऊंधाकरके शत्रुओं के मारनेवाले असह्य पराक्रमवाले रुधिर मज्जाओं के पान करनेवाले मांस अँतड़ियोंके खानेवाले ३७ कर्णिकार पुष्पके समान शिखाधारी अत्यन्त प्रसन्न पिठरोदर अर्थात् थालीके समान मुख

रखनेवाले अति ह्रस्व अति दीर्घ प्रलम्ब भयानक ३८ विकट काले और लम्बे ओष्ठधारी बड़े शिश्नेन्द्रिय और वृषणरखनेवाले बहुतसे बहुमूल्य मुकुट रखनेवाले मुंड जटिल ३९ उन पार्षदों ने पृथ्वीपर सूर्य चन्द्रमा ग्रह और नक्षत्रों समेत आकाशको वर्त्तमान किया जो कि चारोंखानके जीवसमूहों के मारनेको उत्साहकरें ४० और जो तीनों लोकोंके ईश्वरों के ईश्वर निर्भय, सदैव शिवजीकी भ्रुकुटी को सहनेवाले और सदैव स्वेच्छाचारी कर्म करनेवाले ४१ अविनाशी आनन्द में अत्यन्त प्रसन्न, बचनके स्वामी ईर्षा से रहित अष्टगुण वाले ऐश्वर्य्य को पाकर आश्चर्य्ययुक्त नहीं होते हैं ४२ भगवान् शिवजी जिन्होंके कर्म्मों से सदैव आश्चर्य्य करते हैं और जिन्होंने मन बचन कर्म्मसे प्रवृत्तहोकर सदैव आराधन किया ४३ वह शिवजी भक्तोंको उनके मनबचन और कर्मों के द्वारा उनकी ऐसे रक्षा करते हैं जैसे माता अपने पुत्रोंकी करती है बहुतसे पार्षद सदैव ब्राह्मणों के शत्रुओं के रुधिर मज्जा आदिके पान करनेवाले थे ४४ और जो शास्त्र अथवा ज्ञान, ब्रह्मचर्य्य, तप और चित्तकी शांती के द्वारा सदैव चारप्रकारके अमृतका पान करते हैं उनका ब्यौरा अन्नरूप, रसरूप, अमृतरूप, चन्द्रमण्डल रूप ४५ और जिन्होंने शिवजीकी आराधना करके उनकी सायुज्यताको पाया अर्थात् शिवरूपको पाया भगवान् महेश्वर भूत वर्त्तमान और भविष्य के स्वामी शिव जी जिन आत्मारूप महाभूतोंके समूहोंको और पार्वतीजी समेत यज्ञोंको भोगते हैं वह पार्षद अनेक प्रकारके बाजे हिंस सिंहनाद घोरशब्द और गर्ज से ४६। ४७ सब सृष्टिको भयभीत करते बड़े प्रकाशको उत्पन्नकरते महादेवजीकी स्तुति करते बड़े तेजस्वी उस अश्वत्थामाके सम्मुखगये ४८ महात्मा अश्वत्थामाकी महिमाके बढ़ानेके अभिलाषी और उसके तेजको जानना चाहते रात्रियुद्ध देखने के उत्कण्ठित ४९ ऐसे भयानक और उग्र प्रभावाले शूल पट्टिश शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले घोररूप भूतगण चारोंओरसे आपहुँचे ५० जोकि अपने दर्शन से तीनों लोकोंके भयको उत्पन्नकरें उनको देखकर महावली अश्वत्थामाजी ने भी पीड़ा नहीं की ५१ इसके पीछे हाथ में धनुष युद्धके हस्तत्राणधारी अश्वत्थामाने आप अपनी आत्मासे आत्माको भेंट किया ५२ हे भरतवंशी वहां उस कर्म में धनुषोंको समिध तेजवाणों को पवित्रा और आत्मा समेत शरीरके दान को हव्य नियत किया ५३ इसके पीछे बड़े क्रोधयुक्त प्रतापवान् अश्वत्थामाने

सोमदेवता से सम्बन्ध रखनेवाले मन्त्रके द्वारा शरीररूप भेंटको अर्पण किया ५४ हाथ जोड़ेहुये अश्वत्थामा उस रुद्र कर्मवाले अजेय महात्मा रुद्रजी को उनके रुद्रकर्मों से स्तुति करके यह बचन बोले ५५ हे भगवन् अब मैं अंगिराबंश में उत्पन्न होनेवाले इस शरीरको आत्मारूपी अग्निमें हवन करताहूं मुझ बलिरूप को आप अंगीकार करिये ५६ हे विश्वात्मन् महादेवजी मैं इस आपत्तिमें आप की भक्ति और परम समाधि से आपके आगे अर्पण करताहूं ५७ सबजीव आप में हैं और निश्चय करके सब जीवों में आपही हैं और आप में प्रधान गुणों की ऐक्यताभी नियतहै ५८ हे सब जीवोंके रक्षास्थान समर्थ देवता मुझ नियत हव्य रूपको स्वीकारकरो जो शत्रु मुझसे अजेय हैं ५९ अश्वत्थामाजी यह कहकर और शरीर प्रीति को त्यागकरके उस वेदीपर जिसपर अग्नि प्रकाशितथी चढ़ कर अग्निमें प्रवेश करगये ६० साक्षात् भगवान् महादेवजी हँसतेहुये उस ऊँचे हाथ चेष्टारहित हव्य रूपको नियत देखकर बोले ६१ मैं जिसप्रकार सुगमकर्मा श्रीकृष्णजी की सत्यता पवित्रता सरलता त्याग तप नियम क्षान्ति भक्ति धैर्य्य बुद्धि और बचन से आराधन कियागया और उस श्रीकृष्ण से अधिकतम मेरा कोई प्रिय नहीं है ६२ । ६३ हे तात तुझको जानने के अभिलाषी श्रीकृष्णजी का मान करनेवाले मैंने अकस्मात् पाञ्चालदेशियों की रक्षाकरी और बहुतसी माया प्रकटकीं ६४ पाञ्चालदेशियों के रक्षाकरनेवाले मैंने उन श्रीकृष्णजी का मानकिया परन्तु अब यह पाञ्चालदेशी काल से पराजय हुये हैं इससे अब इन-का जीवन नहीं है ६५ भगवान्ने उस महात्मा से ऐसा कहकर अपने शरीरको उसमें प्रवेश किया और उसको बहुत निर्म्मल और उत्तम खड्ग दिया ६६ फिर भगवान्के प्रवेशित शरीरसे अश्वत्थामाजी तेजसे ज्वलित अग्निरूप हुये और देवताके दियेहुये तेजसे युद्धमें वेगवान्हुये ६७ साक्षात् ईश्वरकेसमान शत्रु के डेरे में जानेवाले उन अश्वत्थामाजी के पीछे दृष्टिसे गुप्तजीव और राक्षस चारों ओर से चले ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः ७ ।

आठवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले डेरे में महारथी अश्वत्थामा के जानेपर भयसे पीड़ावान् कृपा-

चार्य्य और कृतवर्मा तो लौटकर नहीं चलेआये १ कहीं नीच रक्षकों से तो नहीं रोकेगये और क्या उनलोगों ने उनको नहीं देखा दोनों महारथी रात्रि के युद्ध को असह्य जानकर तो नहीं लौटे २ डेरेको मथकर और युद्धमें सोमक पांडवों को मारकर दुर्य्योधन की उत्तम पदवी को प्राप्तकिया ३ क्या वह दोनोंवीर पाञ्चाल देशियों के हाथ से मृतक होकर पृथ्वीपर शयन करनेवाले तो नहीं हुये अथवा कोई उनदोनोंने कर्म भी किया हे सञ्जय वह सब मुझसे कहो ४ सञ्जय बोले कि डेरे में उस महात्मा अश्वत्थामा के जानेपर कृपाचार्य्य और कृतवर्म्मा डेरेके द्वारपर नियतरहे ५ हे राजा फिर अश्वत्थामाजी उन दोनों महारथियोंको उपाय करनेवाला देखकर बड़े प्रसन्न होकर यह बचन बोले ६ उपाय करनेवाले आप सब क्षत्रियों के नाश करने को समर्थ हैं मुख्यकर शेष बचे और सोतेहुये शूरबीरों के मारनेको फिर क्यों नहीं समर्थ होगे ७ मैं डेरे में प्रवेश करूंगा और कालकेसमान घूमूंगा इस द्वारपर आनेवाला कोईमनुष्य भी जैसेप्रकार जीवता न जानेपावे ८ वैसाही आपको करना योग्यहै यह मेरा दृढ़ विचारहै अश्वत्थामा जी शरीरके भयको त्यागकर अन्यद्वारमें घुसकर पाण्डवोंके बड़े डेरे में पहुँचे ९ उसके स्थानोंके जाननेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त तेजसे ज्वलितरूप उन महाबाहु अश्वत्थामाजी ने प्रवेशकरके रात्रि में निद्रा में अचेत सोनेवाले सब मनुष्यों के ओर पास भ्रमण किया १० । ११ और सुगमता से धृष्टद्युम्नके डेरेको पाया वह लौट सन्मुख होकर युद्ध में चारोंओर दौड़नेवाले युद्ध में महाकठिन कर्म्मों को करके बहुत श्रमित होकर सोगये थे हे भरतबंशी इसके पीछे अश्वत्थामाजी ने उस धृष्टद्युम्न के उस स्थान में प्रवेशकरके १२ । १३ शयनपर सोतेहुये धृष्टद्युम्न को समीपसे देखा हे राजा स्वच्छ अत्यन्त अलसी से तैयार बहुमूल्य बिस्तरोंसे युक्त बड़ी उत्तम मालाओं से अलंकृत धूप चन्दन चूरआदि से सुगन्धित बड़े शयनपर सोनेवाले विश्वासी और निर्भय उस महात्मा धृष्टद्युम्न को १४ । १५ चरणघात से जगाया युद्धमें दुर्म्मद धृष्टद्युम्न ने चरणके घातसे जगकर १६ बड़े बुद्धिमान्ने महारथी अश्वत्थामा को पहचाना बड़ेपराक्रमी अश्वत्थामाने उस शयनसे उछलनेवाले धृष्टद्युम्न को १७ हाथों से बालों के द्वारा पकड़कर पृथ्वी पर रगड़ा हे भरतबंशी तब बल से उस धृष्टद्युम्नका रगड़ाहुआ वह धृष्टद्युम्न १८ भय और निद्रासे चेष्टाकरने को समर्थ नहीं हुआ हे राजा पैरों से उसको कण्ठ

और छातीपर दबाकर १६ पुकारते और चेष्टाकरते को पशुकीभांति मारा फिर नखों से पीड़ावान् करते उस धृष्टद्युम्नने धीरे २ अश्वत्थामासे कहा २० हे आचार्य्य के पुत्र मुझको शस्त्रसेमारो बिलम्बमतकरो हे द्विपादों में श्रेष्ठ मैं आपके कारण से पवित्र लोकों को पाऊं २१ शत्रुओं का तपानेवाला बलवान् से कठिन दबायाहुआ राजा पाञ्चाल का पुत्र इसप्रकार के बचन को कहकर मौनहो गया २२ इसके पीछे अश्वत्थामा उसके उस धीरे से कहे हुये बचन को सुन कर बोले हे कुलकलंकी गुरू के मारनेवाले के लोकनहीं हैं २३ इसहेतु से तुम शस्त्रसे मरने के योग्य नहीं हो हे दुर्बुद्धी तुझनिर्द्दयी और गुरुभक्तिसे रहित के हाथसे मेरा पिता मारागया २४ इसकारण से मुझ निर्द्दय के हाथसे निर्द्दयी के समान मारने के योग्य हो जैसे कि सिंह मतवाले हाथी की ओरको गर्जता है उसीप्रकार उस बीर से इसप्रकार कहतेहुये २५ क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने कठिन एंड़ियोंसे मर्मस्थलोंपर घायलकिया उस मरनेवाले बीरके शब्दों से महलमें २६ वह स्त्रियां उस बुद्धिसे बाहर पराक्रमवाले और डरानेवाले अश्वत्थामा को देखकर २७ भूतको निश्चय करनेवाली होकर भयसे नहीं बोलीं वह तेजस्वी उस उपायसे उस बीरको यमलोकमें पहुँचाकर २८ और सुन्दर दर्शन रथको पाकर नियतहुआ हे राजा वह समर्थ और बलवान् अश्वत्थामा उसके डेरेसे निकल कर दिशाओं को शब्दायमान करते २९ शत्रुओं के मारने के अभिलाषी रथ की सवारीके द्वारा डेरेको गये इसके पीछे उस महारथी अश्वत्थामाके हटजाने पर ३० सब स्त्रियां अपने रक्षकों समेत पुकारीं हे भरतबंशी राजा को मराहुआ देखकर अत्यन्तदुःखी ३१ सब क्षत्रिय जोकि धृष्टद्युम्नके नौकरथे पुकारे फिर उन्हीं के शब्दों से सम्मुखही उत्तम २ क्षत्रिय तैयारहुये ३२ और बोले कि यह क्या बात है हे राजा वह भयभीत स्त्रियां अश्वत्थामा को देखकर ३३ दुःखी कंठ से बोलीं कि शीघ्रजावो यह राक्षसहोय अथवा मनुष्य होय हम इसको नहीं जानती हैं ३४ वह राजा पांचाल को मारकर रथपर नियतहै उसके पीछे उन उत्तम शूरोंने अकस्मात् चारोंओरसे घेरलिया ३५ उसने उन सब चढ़ाई करनेवालों को रुद्र अस्त्र से मारा फिर उसने सब साथियों समेत धृष्टद्युम्न को मारकर ३६ समीपही शयनपर सोनेवाले उत्तमौजसको देखा उसको भी पराक्रमसे कण्ठ और छाती को दबाकर ३७ उस पुकारनेवाले शत्रुबिजयी को उसी प्रकारसे मारा और यु-

धामन्यु उसको राक्षसके हाथसे मृतक मानकर आया ३८ और वेगसे गदा को उठाकर अश्वत्थामा को हृदयपर घायलकिया गदाके आघातसे घायल होकर भी अश्वत्थामा युद्धमें कम्पायमान नहीं हुआ ३९ और उसके सम्मुख जाकर उसको भी पकड़कर पृथ्वी पर गिराया उसी प्रकार इस चेष्टा करनेवाले को भी पशु के समान मारा ४० वह वीर उसको उसप्रकार से मारकर जहां तहां सोनेवाले दूसरे महारथियोंकी ओरगया ४१ क्रोधयुक्तने समीपही पांचाल देशी वीरों को दबाकर फड़कते और कांपतेहुओं को ऐसे मारा जैसे कि यज्ञमें मारनेवाला पशुओंको मारताहै ४२ इसके पीछे मागक्रमसे मार्गों को घूमते खड्ग युद्धमें कुशल अश्वत्थामाने खड्गको लेकर पृथक् २ अन्य लोगों को मारा ४३ इसप्रकार गुल्मनाम सेनाके भागमें सोनेवाले अशस्त्र और थकेहुये उन सब गुल्ममें वर्त्तमान लोगोंको एक क्षणभरमें मारा ४४ रुधिर से लिप्त सब शरीर काल सृष्टि में अन्तकके समान अश्वत्थामा ने शूरबीर घोड़े और हाथियों को मारा ४५ वह अश्वत्थामा तीनप्रकारसे रुधिरमें लिप्तहुये उन चेष्टा करनेवालों से खड्ग चलानेवालों से और खड्ग के कम्पायमान होनेसे ४६ उस रुधिर से रक्तवर्ण प्रकाशित खड्गधारी युद्ध करनेवाले बड़े भयके उत्पन्न करनेवाले अश्वत्थामाका रूप राक्षसादिक के समान दिखाईपड़ा ४७ हे कौरव जो जाग उठे वह भी शब्द से अचेतहुये और एक दूसरे को देखकर पीड़ावान् हुये ४८ उस शत्रुबिजयी के उस रूपको देखकर उसको राक्षस मानते उन क्षत्रियों ने अपने २ नेत्रों को बन्दकर लिया ४९ इसके पीछे डेरे में कालके समान घूमतेहुये उस घोररूपने शेष बचेहुये द्रौपदी के पुत्र और सोमकोंको देखा ५० हे राजा उस शब्दसे भयभीत धनुष हाथ में लिये द्रौपदी के पुत्रों ने धृष्टद्युम्नको मराहुआ सुनकर ५१ निर्भय के समान बाणोंके समूहोंसे अश्वत्थामाको ढक दिया इसकेपीछे उस शब्दसे प्रभद्रकनाम क्षत्रिय जागउठे ५२ शिखण्डीने शिलीमुख बाणों से अश्वत्थामाको पीड़ावान् किया वह अश्वत्थामा बाणोंकी बर्षा करनेवाले उनबीरों को देखकर उन महारथियोंको मारनेका अभिलाषी बड़ा बलवान् शब्दको गर्जा फिर पिताके मरणको स्मरणकरता अत्यन्त क्रोधयुक्त ५३।५४ रथसे उतरकर शीघ्रही सम्मुखगया और युद्धमें हज़ार चन्द्रमाओं के चित्रोंसे चित्रित निर्मल ढालको लेकर ५५ सुवर्ण से निर्मित दिव्यखड्गको पकड़कर द्रौपदीके पुत्रोंके सम्मुख जाकर बलवान्ने सबको

खड्गसे घायलकिया ५६ हे राजा इसकेपीछे उस नरोत्तमने बड़ेयुद्धमें प्रतिबिन्ध्य को कुक्षि स्थानपर घायल किया वह मरकर पृथ्वी पर गिरपड़ा ५७ प्रतापवान् सुतसोम प्राससे अश्वत्थामाको छेदकर खड्गको उठाके अश्वत्थामा के सम्मुख गया ५८ नरोत्तम अश्वत्थामाने सुतसोम की भुजा को खड्ग समेत काटकर कुक्षिपर घायल किया वह भी टूटा हृदय होकर पृथ्वी पर गिरपड़ा ५९ फिर नकुलके पुत्र पराक्रमी शतानीकने रथ चक्रको दोनों भुजाओं से घुमाकर वेगसे उसको छातीपर घायलकिया ६० फिर उस ब्राह्मणने चक्र छोड़नेवाले शतानीक को घायल किया वह व्याकुल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा इसके पीछे उसके शिर को काटा ६१ फिर श्रुतकर्मा परिघको लेकर और दौड़कर अश्वत्थामाके सम्मुख गया और ढालसे युक्तवाम कुक्षिपर कठिन घायलकिया ६२ फिर उस अश्वत्थामाने उत्तम खड्गसे उस श्रुतकर्म्मा को मुखपर घायल किया वह रूपान्तर और अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ६३ फिर उस शब्दसे महारथी श्रुतकीर्त्तिने अश्वत्थामा को पाकर बाणोंकी बर्षा से ढकदिया ६४ उस अश्वत्थामा ने उसकी बाणवृष्टीको ढालपर रोककर कुण्डलधारी प्रकाशित शिरको शरीर से जुदाकिया ६५ उसके पीछे उस पराक्रमीने सब ओरसे नानाप्रकारके शस्त्रोंके द्वारा बीर शिखण्डीको सब प्रभद्रकों समेत घायलकिया ६६ उस शिखण्डीने दूसरे शिलीमुखसे दोनों भ्रुकुटियों के मध्यमें घायलकिया फिर क्रोधसेपूर्ण उस बड़े बलवान् अश्वत्थामाने ६७ शिखण्डी को पाकर खड्गसे दोखण्ड करदिया फिर क्रोधसे पूर्ण शत्रुओंका तपानेवाला उस बड़े वेगवान् शिखण्डी को मारकर प्रभद्रकोंके सब समूहोंके सम्मुखगया और राजा बिराटकी जो सेना शेष थी उसपर भी चढ़ाई करनेवाला हुआ ६८। ६९ बड़े बलवान् ने देख देखकर द्रुपदके पुत्र पौत्र और मित्रों का भी घोर नाशकिया ७० खड्ग मार्ग में कुशल अश्वत्थामा ने अन्य लोगों के भी सम्मुख जाजाकर उनको खड्ग से काटा ७१ उन लोगों ने रक्तनेत्र रक्तमाला चन्दनसे अलंकृत लाल पोशाकधारी पाशहाथमें लड़के आदिक रखनेवाली अकेलीकाली ७२ गातीहुई नियत कालरात्रिको देखा हेराजा मनुष्य घोड़े और हाथियोंको पाशोंसे बांधकर जानेके अभिलाषी घोररूप ७३ बालों से पृथक् पाशों में बँधेहुये बहुतप्रकारके मृतकों के लेजानेवाले और इसी प्रकार अन्यरात्रियों में ७४ स्वप्नावस्था में सदैव बेसलाह सोतेहुये महारथियोंको

लेजानेवाली उस कालीको और उस मारनेवाले अश्वत्थामाको उत्तम शूरवीरों ने सदैव देखा ७५ जबसे कि कौरवीय और पाण्डवीय सेनाका युद्ध जारीहुआ तब से लेकर उस कन्याको और अश्वत्थामा को स्वप्न में देखा ७६ युद्ध में सब जीवधारियों को डराते और भयानक शब्दोंको गर्जते अश्वत्थामाने प्रथम दैव से हतेहुये उन लोगोंको पीछेसे गिराया ७७ दैवसे पीड़ित उन बीरोंने उस पूर्व समयके देखेहुये स्वप्नको स्मरणकरके माना कि यह वहीबातहै ७८ इसके पीछे पाण्डवोंके डेरे में वह सैकड़ों और हजारों धनुषधारी उस शब्दसे जागउठे ७९ कालसे प्रवृत्त मृत्युके समान उस अश्वत्थामाने किसीके पैरोंको काटा किसी के जंघन को और कितने ही को कुक्षिपर छेदा ८० हे प्रभु कठिन मर्द्दन कियेहुये शब्द करनेवाले मतवाले हाथी और हाथी घोड़ों से मथेहुये अन्य मनुष्यों से वह पृथ्वी आच्छादित होगई ८१ जो लोग कि इसप्रकारसे पुकारते थे कि यह क्याहै कौन है कैसाशब्द होरहाहै उन सब लोगों को प्रहार करनेवालों में श्रेष्ठ अश्वत्थामाने पाण्डवोंके नातेदार और सृञ्जीलोग जो कि शस्त्र और कवचोंसे रहित थे उनको भी यमलोकमें भेजा ८२। ८३ इसके पीछे उस शस्त्रसे भयभीत उछलते और भयसे पीड़ावान् निद्रासे अंधे अचेतहोकर वहलोग जहां तहां गुप्त होगये ८४ और ऊरुस्तम्भ नाम रोगमें फँसे मूर्च्छा से निर्ब्बल भयभीत कठोर शब्द करते हम पीड़ावान् हुये ८५ इसकेपीछे धनुष हाथमें लिये अश्वत्थामाने भयकारी रथपर सवार होकर बाणों से अन्य मनुष्योंकोभी यमलोकमें पहुंचाया ८६ फिर दूर से उछलते नरोत्तम आतेहुये दूसरे शूरोंको भी कालरात्रि के आधीनकिया ८७ उसीप्रकार रथकी नोकसे मथताहुआ वह दौड़ताथा इसकेपीछे बहुत प्रकारकी बाणवृष्टियों से शत्रुओं के मनुष्योंपर बर्षा करनेलगा ८८ फिर बड़ी बिचित्र सूर्य्य चन्द्रमा रखनेवाली ढाल और उस आकाशबर्ण खड्गकेद्वारा भ्रमण करनेलगा ८९ हे राजेन्द्र उसयुद्ध में दुर्मद अश्वत्थामाने उन्होंके डेरे को भी ऐसे छिन्नभिन्न किया जैसे कि हाथी बड़े ह्रदको करदेताहै ९० हे राजा उस शब्द से अचेत शूरबीर उठे और निद्रा और भयसे पीड़ावान् होकर इधर उधर को दौड़े ९१ इसीप्रकार असभ्य बचन कहतेहुये अन्यलोग बड़े शब्दसे पुकारे और शस्त्र और बस्त्रोंको नहींपाया ९२ बहुत से खुलेहुये बालवाले मनुष्यों ने परस्पर नहीं पहचाना तब वहां उछलतेहुये कितनेही मनुष्य थककर गिरपड़े

और कितनेही भ्रमण करनेलगे ६३ कितनेही लोगोंने विष्ठाकोछोड़ा कितनोंही ने मूत्रको करदिया हे राजेन्द्र हाथी घोड़े और रथोंको तोड़कर ६४ चारोंओर को दौड़े और कोई महाव्याकुलता उत्पन्न करनेवालेहुये वहां कितनेही भयभीत आदमी पृथ्वीपर सोगये ६५ उसीप्रकार उन पड़ेहुओं को हाथी और घोड़ों ने मर्द्दनकिया हे भरतर्षभ पुरुषोत्तम इसप्रकार उस नाशके वर्त्तमान होनेपर राक्षस ६६ लोग प्रसन्न होकर बड़े शब्दसे गर्जे हे राजा प्रसन्नचित्त जीवों के समूहों से किया वह शब्द सर्वत्र व्याप्त होगया ६७ उसबड़े शब्दने सबदिशा और आकाशको पूर्णकिया उन्होंके पीड़ित शब्दोंको सुनकर भयभीत और बन्धनों से जुदे हाथी घोड़े ६८ डेरे में मनुष्यों को खूदते मर्द्दन करते चारोंओर को दौड़े वहां उन चारोंओर दौड़नेवालों के चरणों से उठीहुई धूलने ६६ रात्रिकेसमय उन्होंके डेरों में दूने अन्धकारको उत्पन्नकिया उस अन्धकार के उत्पन्न होनेपर मनुष्य सबओरसे अज्ञानहुये १०० पिताओंने पुत्रोंको नहींजाना भाइयोंने भाइयोंको नहींजाना हाथियोंने हाथियोंको सवारों से रहित घोड़ोंने घोड़ोंको दबाकर १०१ घायल और टूटे अंगकिया उसीप्रकार मर्द्दन करते परस्पर मारतेहुये वहसब घायल गिरपड़े १०२ इसीप्रकार अन्योंको भी गिराकर मर्द्दनकिया अचेत निद्रासे युक्त अन्धकारसे घिरे १०३ और कालसे प्रेरित लोगोंने वहां उनको मारा इसीप्रकार द्वारपाल द्वारोंको और गुल्मलेनेवाले लोग गुल्मोंको त्याग करके १०४ भयभीत और अचेत होकर सामर्थ्य के अनुसार भागे और परस्पर नाशहोगये इसीप्रकार एक ने दूसरेको नहीं पहँचाना १०५ अपने बान्धवों को छोड़कर दिशाओं को भागते उनलोगों के मध्यमें से दैवसे व्यथित चित्त मनुष्य पुकारे हे पिता हे पुत्र १०६ इसकेपीछे लोगोंने गोत्र और नामोंसे परस्पर पुकारा और कितनेही हाहाकार करके पृथ्वीपर गिरपड़े १०७ इस अश्वत्थामा ने युद्धमें उनको जानकर रोका और बहुत से क्षत्रिय वारंवार घायल और अचेत १०८ और भयसे पीड़ावान् होकर डेरे से बाहरगये उन भयभीत जीवन के इच्छावान् डेरेसे निकलनेवालों को १०६ कृतवर्मा और कृपाचार्य्य ने द्वारस्थान परमारा जिनके यन्त्र और कवच गिरपड़े वह खुलेहुये बाल हाथ जोड़े ११० पृथ्वीपर कम्पायमान और भयभीत थे उनमें से किसी को भी नहीं छोड़ा डेरे से बाहर निकलनेवाला कोईभी मनुष्य उन दोनों के हाथसे बचकर नहींगया १११

हे महाराज अश्वत्थामा प्रिय करने के अभिलाषी उन कृपाचार्य्य और दुर्बुद्धी कृतवर्म्मा ने ११२ डेरों के तीनोंओर अग्निलगादी फिर डेरों के प्रज्वलित और प्रकाशित होने पर पिता को प्रसन्न करनेवाला अश्वत्थामा हस्तलाघवी के समान खड्ग को लेकर घूमनेलगा कितनेही आनेवाले और दौड़नेवाले वीरों को ११३। ११४ खड्ग के द्वारा प्राणों से रहित किया और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ पराक्रमी अश्वत्थामा ने कितनेही शूरवीरों को खड्ग के द्वारा मध्य से काटकर ११५ क्रोध युक्त ने तिलकाण्ड के समान गिराया हे भरतर्षभ अत्यन्त घायल गर्जते गिरते मनुष्य घोड़े और हाथियों से ११६ पृथ्वी आच्छादित हुई हज़ारों मनुष्यों के मरने और गिरने पर ११७ बहुत रुण्ड उठे और उठकर गिरपड़े शस्त्र और बाजूबन्द रखनेवाली भुजाओंसमेत शिरकोकाटा ११८ और हाथीकी सूंड़के समान जंघाओं को और हाथ पैरों को काटा हे भरतवंशी टूटी पीठ कुक्षि और शिर वाले अन्य लोगों को गिराया ११९ उस महात्मा अश्वत्थामाने कितनेही मनुष्योंको मुखफेरनेवाला किया किसीको कानके स्थानपर और किसीको कटि स्थानपर काटा १२० किसी को कन्धे के स्थान पर घायल करके शिरको शरीर में प्रवेशकिया इसप्रकार उसके घूमते और बहुत आदमियोंको मारतेहुये १२१ अन्धकार से वह रात्रि घोर रूप महाभयानक दर्शन देखने में आई कुछ कण्ठगत प्राणवाले कुछ मृतक हज़ारों १२२ मनुष्य हाथी और घोड़ोंसे पृथ्वी भयानकरूप देखने में आई यक्ष राक्षसों से संयुक्त रथ घोड़े और हाथियों से भयानक रूप पृथ्वीके होनेपर १२३ क्रोधयुक्त अश्वत्थामाके हाथसे घायलहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े कोई भाइयोंको कोई पिताओं को और पुत्रोंको पुकारताथा १२४ और कितनेही बोले कि युद्धमें क्रोधयुक्त धृतराष्ट्रके पुत्रोंने भी वह कर्म कियाथा जो कि निर्दयी राक्षसोंने हम सोनेवालों के साथ कियाहै १२५ पांडवों के वर्त्तमान न होने से यह हमारा नाशकिया वह अर्जुन असुर गन्धर्व यक्ष और राक्षसों से १२६ भी विजय करनेके योग्य नहीं है जिसके कि रक्षक श्रीकृष्णजी हैं वह अर्जुन वेद ब्राह्मणों का रक्षक जितेन्द्रिय और सब जीवधारियों पर कृपा करनेवाला है १२७ वह पाण्डव अर्जुन सोनेवाले मतवाले अशस्त्र हाथ जोड़नेवाले खुले केश और भागनेवाले मनुष्योंको नहीं मारताहै १२८ निर्दयी राक्षसोंने हमारा यह नाशकिया इसप्रकार विलाप करतेहुये बहुतसे मनुष्य पृथ्वीपर सोगये १२९

इसके पीछे एक मुहूर्त्तमेंही पुकारते और गर्जतेहुये अन्य मनुष्यों का वहबहुत बड़ा शब्द बन्दहोगया १३० हे राजा रुधिरसे पृथ्वीके अच्छेप्रकार तर होनेपर वह घोर और कठिन धूल एकक्षणमेंही दूरहोगई १३१ उसक्रोधयुक्तने चेष्टाकरनेवाले व्याकुल और उत्साहसे रहित हज़ारों मनुष्योंको ऐसे गिराया जैसे कि पशुओं को रुद्रजी गिराते हैं १३२ उस अश्वत्थामाने पृथ्वीपर गिरेहुये मनुष्योंको परस्पर मिलकर भागनेवालों को और कितनेही गुप्त युद्धकरनेवालों को अत्यन्त मार-डाला १३३ तब अग्निसे जलनेवाले और उस अश्वत्थामाके हाथसे घायल उन शूरबीरों ने परस्पर यमलोक में पहुँचाया १३४ हे राजा अश्वत्थामाने उसरात्रिके अर्द्धभागमें पाण्डवों की बड़ी सेनाको यमलोक में पहुँचाया १३५ वह रात्रि रा-क्षसों की प्रसन्नता बढ़ानेवाली मनुष्य घोड़े और हाथियों का भय उत्पन्नकरने वाली होकर महाकठिन नाशकारी हुई १३६ वहांपर पृथक् २ प्रकार के पिशाच राक्षस मनुष्योंके मांसको खाते और रुधिर को पीतेहुये दिखाई पड़े १३७ जो कि कराल पिङ्गल वर्ण पर्वताकार दांत रखनेवाले धूल से लिप्त जटाधारी लम्बे शङ्ख पांच पैर और बड़ाउदर रखनेवाले पीछेकी ओर उँगलियां रखनेवाले रूखे कुरूप भयानक शब्दवाले घण्टाजाल से युक्त नीलकण्ठ भय उत्पन्न करनेवाले १३८ । १३९ पुत्र स्त्रियोंको साथ रखनेवाले निर्द्दयी दुर्द्दर्शन और दयासे रहित थे वह राक्षसों के रूपभी अनेक प्रकारके देखने में आये १४० कोई रुधिर समूह को पान करके प्रसन्नचित्त होकर नृत्य करनेलगे और कहते थे कि यह उत्तमहै यह पवित्र है यह स्वादुष्ट है १४१ भेजा मज्जा अस्थि और रुधिरको अच्छीरीति से भक्षण करनेवाले रुधिर से अच्छे प्रकार तृप्तहुये मांस से जीवनेवाले वह रा-क्षस अन्य लोगों के मांस खानेसे तृप्तहुये १४२ इसीप्रकार नानाप्रकारके मुख रखनेवाले कोई रुद्ररूप मांसभक्षी बड़ा उदर रखनेवाले राक्षस मज्जा को पान करके चारोंओर को दौड़े १४३ वहांपर निर्दय कर्मी भयानकरूप बड़े राक्षसों की संख्या हज़ारों किरोड़ों और अर्बुदों थीं १४४ हे राजा उस बड़े नाश प्रसन्न चित्त अत्यन्त तृप्त राक्षसों की यह संख्याथी और बहुतसे भूतगण भी इकट्ठेहुये उसने प्रातःकालके समय उस डेरेसे निकलनाचाहा मनुष्यों के रुधिरों से लिप्त अश्वत्थामा का खड्ग १४५ । १४६ हाथसे चिपटाहुआ एक रूप होगया हे प्रभु वह अश्वत्थामा दुःखसे मिलनेवाले मार्गमें जाकर मनुष्योंके नाशमें ऐसा शो-

भायमान हुआ १४७ जैसे कि प्रलयकाल में सब जीवों को भस्मकरके अग्नि शोभायमान होताहै हे प्रभु वह अश्वत्थामा प्रतिज्ञा के अनुसार उस कर्म्म को करके १४८ पिताके दुष्प्राप्य मार्गको प्राप्तकरता तापसे रहित हुआ वह नरोत्तम जैसे कि रात्रिमें सोनेवाले लोगों के समान डेरेमें पहुँचा १४९ उसीप्रकार मार कर डेरेके निश्शब्द होनेपर डेरेसे बाहर निकला उस डेरेसे निकल उन दोनों से मिलकर १५० प्रसन्न और प्रसन्न करते उस पराक्रमीने उस सब कर्मको वर्णन किया हे समर्थ तब उन विजय करनेवालों ने उस प्रिय बचन को उससे बर्णन किया १५१ कि हमने डेरेसे निकलनेवाले हजारोंपाञ्चाल और सृञ्जियोंको मारा वह प्रसन्नता समेत बड़े उच्चस्वरसे पुकारे और हाथकी तालियोंको बजाया १५२ सोते और अचेत सोमकों के नाशमें वहरात्रि इसप्रकारकी कठिन और भयकारी हुई १५३ निस्सन्देह समयकी लौट पौट दुःखसे उल्लंघनकरनेके योग्यहै जहां कि उस प्रकारके बीर हमारे मनुष्योंका नाश करके मारेगये १५४ धृतराष्ट्र बोले कि मेरे पुत्रकी बिजयमें प्रवृत्तचित्त महारथी अश्वत्थामाने प्रथमही इसप्रकारके क-ठिन कर्मको कैसे नहीं किया १५५ उस नीच दुर्य्योधनके मरनेपर उस महात्मा अश्वत्थामाने किसहेतुसे उस कर्मको किया वह सब मुझसे कहने को योग्यहो १५६ संजय बोले हे कुरुनन्दन निस्सन्देह उस अश्वत्थामाने उन पाण्डवों के भयसे इस कर्म्म को नहीं किया पाण्डव केशवजी और सात्यकी के बर्त्तमान न होनेपर १५७ अश्वत्थामाने इस कर्म्म का साधन किया उन्हों के समक्षमें कोई मनुष्य तो क्या इन्द्रभी नहीं मारसक्काथा १५८ हे राजा रात्रि के समय मनुष्यों के सोने पर ऐसा वृत्तान्त हुआ फिर पाण्डवों के लोगों का कठिन नाश करके १५९ वह महारथी परस्पर मिलकर बोले कि दिष्ट्या दिष्ट्या अर्थात् मुबारक मु-बारकहोय इसके पीछे प्रसन्न कियाहुआ अश्वत्थामासे उन दोनों से स्नेह पूर्वक मिला १६० और प्रसन्नतासे इस उत्तम और बड़े बचनको बोला कि सब पाञ्चाल और द्रौपदी के पांचो पुत्र मारेगये १६१ शेष बचे हुये सब सोमक और मत्स्य देशी भी मेरे हाथसे मारेगये अब हम कृत्यकृत्य हैं वहांहीं चलें बिलम्ब मतकरो १६२ जो हमारा राजा जीवताहै हम उससे चलकर बर्णन करें १६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

संजय बोले कि वह तीनों सब पाञ्चाल और पांचो द्रौपदी के पुत्रों को मार कर एकसाथही वहांगये जहांपर कि घायल दुर्य्योधन था १ और जाकर कुछ शेष प्राणवाले राजाकोदेखा इसकेपीछे रथोंसे उतरकर आपके पुत्रको मध्यवर्त्ती किया २ हे राजेन्द्र उन्होंने उस टूटी जङ्घा और प्राणों से पीड़ावान् अचेत और मुखसे रुधिर डालनेवाले राजाको पृथ्वीपर देखा ३ भयानक दर्शनवाले बहुतसे हिंस्रजीवोंसे युक्त और समीपसे भक्षणकरने के अभिलाषी शृगालादिक के समूहों से घिरेहुये ४ खाने के अभिलाषी भेड़िया आदिकको दुःख से रोकनेवाले पृथ्वीपर चेष्टा करनेवाले कठिन पीड़ावान् ५ रुधिर से लिप्त उस प्रकार पृथ्वीपर सोनेवाले राजादुर्योधनको देखकर मरनेसे शेषबचे शोकसे पीड़ावान् तीनोंबीरों ने चारोंसे उसको व्याप्तकिया ६ अर्थात् अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतबर्मा, रुधिरसे लिप्त श्वासलेनेवाले तीनों महारथियों से ७ संयुक्त वह राजा ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि तीनों अग्नियोंसे वेदी शोभायमान होती है इसके पीछे वह तीनों उसदशाके अयोग्य पृथ्वीपर पड़ेहुये राजाको देखकर ८ असह्य दुःखसमेत रोदन करनेलगे फिर युद्धभूमि में सोनेवाले उस राजा के मुखसे रुधिर को अपने हाथों से सफाकरके करुणापूर्व्वक बिलाप किया ६ कृपाचार्य्य बोले कि दैव का बड़ाभार नहीं है जो यह ग्यारह अक्षौहिणी सेनाका स्वामी राजा दुर्योधन रुधिर से लिप्त घायल हुआ पृथ्वीपर सोताहै १० इस सुवर्ण के समान प्रकाशमान सुवर्ण जटित राजाकी गदाको पृथ्वीपर सम्मुख पड़ीहुई देखो ११ यहगदा प्रत्येक युद्धमें इस शूरको त्याग नहीं करती अर्थात् स्वर्ग्ग जानेवाले यशमान को नहीं त्यागकरती १२ सुवर्ण से अलंकृत बीरकेसाथ सोनेवाली इस गदाको ऐसे देखो जैसे कि महलमें सोनेवाली प्रीतिमान् भार्य्याको देखते हैं १३ जो यह शत्रुका तपानेवाला मूर्द्धाभिषिक्तों के आगे प्रधानहुआ वह घायलहोकर पृथ्वीकी धूलिको स्पर्श करताहै समय की बिपरीतता को देखो १४ जिसके हाथसे युद्धभूमि में मारेहुये शत्रु पृथ्वीपर सोनेवाले हुये वह मृतकशत्रुवाला यह कौरवराज शत्रुओं के हाथसे माराहुआ सोताहै १५ हजारों राजाओं के समूह जिसके भय से झुकते थे वह मांसभक्षी जीवों से घिराहुआ बीर पृथ्वीपर सोता

है १६ प्रथम ब्राह्मणों ने धनकेनिमित्त जिस ईश्वररूपकी वर्त्तमानहोकर प्रशंसा करी अब उसको मांसभक्षी मांसखानेकेलिये वर्त्तमानताकरके प्रशंसाकरते हैं १७ सञ्जयबोले कि हे भरतर्षभ उसकेपीछे अश्वत्थामाने उस कौरवों में श्रेष्ठ सोतेहुये दुर्य्योधन को देखकर दयासे करुणा विलाप किया १८ हे राजाओं में श्रेष्ठ तुमको सब धनुषधारियोंमें प्रथम बलदेवजीका शिष्य और युद्धमें कुवेरकेसमान वर्णन कियाहै १९ हे पापोंसे रहित भीमसेनने कैसे तेरे छिद्रको देखा हे राजा उस पापात्माने तुझ बलवान् और सदैव कर्मकरनेवाले को मारा २० हे महाराज निश्चय करके इस लोकमें काल बड़ापराक्रमी है कि हम तुझको युद्ध में भीमसेनके हाथ से मराहुआ देखते हैं २१ क्रोधयुक्त अज्ञानी पापी भीमसेनने किसप्रकारसे तुझ सब धर्मों के ज्ञाताको छलसेमारा निश्चय काल दुःखसे उल्लङ्घनके योग्य है २२ धर्मयुद्ध में बुलाकर फिर युद्धमें अधर्मके साथ भीमसेनकीगदा और पराक्रम से तेरी दोनों जङ्घाटूटीं २३ जिसने युद्धभूमि में अधर्म्म से घायल शिर पांव से मर्द्दनयुक्त को देखकर ध्यान नहीं किया उस क्रोधयुक्त श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर को धिक्कारहै २४ निश्चयकरके शूरवीरलोग युद्धों में जबतक पृथ्वी वर्त्तमानहै तब तक भीमसेन की निन्दाकरेंगे क्योंकि तुम छलसे मारेगये हो २५ हे राजा निश्चयकरके यदुनन्दन पराक्रमी बलदेवजी ने सदैव तुमसे कहा कि गदायुद्धकी विद्यामें दुर्य्योधनके समान कोई नहीं है २६ हे प्रभु भरतबंशी राजादुर्य्योधन वह बलदेवजी सभाओं में तुम्हारी प्रशंसा करते हैं कि वह कौरव गदायुद्ध में मेरा शिष्यहै २७ महर्षियों ने युद्धभूमि में सम्मुख मरनेवाले क्षत्रीकी जिसगति को उत्तम कहा तुम उसीगतिको प्राप्तहो २८ हे पुरुषोत्तम दुर्य्योधन मैं तुझको नहीं शोचताहूं तेरे पिताको और गान्धारी को शोचता हूं जिनके कि सब पुत्र मारे गये २९ हे बीर जो कि तुझ मरनेवाले नाथसे वह अनाथ किये गये इस पृथ्वी को शोचते वह भिक्षुकरूप होकर इस पृथ्वीपर विचरेंगे ३० यादव श्रीकृष्णजी को और दुर्बुद्धी अर्जुन को भी धिक्कारहोय आपको धर्म्मज्ञ जानते जिन दोनों ने तुझ घायल होनेको ध्यान नहीं किया ३१ हे राजा वह लज्जारहित और सब पाण्डवभी कहेंगे कि हमारे हाथसे दुर्य्योधन किसप्रकारसे मारागया ३२ हे पुरुषोत्तम दुर्य्योधन तुम धन्यवादके योग्यहो जो तुम बहुधा धर्म से शत्रुओं के सम्मुख होकर युद्धभूमि में मारेगये ३३ जिसके ज्ञाति बान्धव और पुत्र मारेगये वह

गान्धारी और ज्ञानचक्षु रखनेवाला अजेय धृतराष्ट्र दोनों किस गतिको पावेंगे ३४ कृतवर्मा को मुझको और महारथी कृपाचार्य्यको धिक्कार होय जो हम तुझ राजा को आगेकरके स्वर्गको नहीं गये ३५ जो हम तुझ सब अभीष्टके देने-वाले रक्षक और संसारके प्रियकर्त्ता के पीछे नहीं जाते हैं हम नीच मनुष्योंको धिक्कार है ३६ हे नरोत्तम नौकरों समेत कृपाचार्य्य के मेरे और मेरे पिता के रत्नजटित स्थान आपही के पराक्रमसे हुये हैं ३७ मित्र और बान्धवों समेत हम लोगोंने आपकी कृपासे बहुत दक्षिणावाले अतिउत्तम बहुत यज्ञ प्राप्तकिये ३८ हम पापी कहांसे ऐसे मार्गपर कर्म्मकर्त्ता होंगे जिस मार्गसे कि तुम सब जीवों को आगेकरके गये ३९ हे राजा जो हम तीनों तुझ परमगति पानेवालेके पीछे नहीं जाते हैं उस हेतुसे हम भस्म होते हैं ४० स्वर्ग्ग और अभीष्टोंसे रहित हम लोग उन राजाओंको और तेरे शुभकर्म्म को स्मरण करते जिसहेतु से आपके पीछे नहीं जाते हैं वह हमारा कौन कर्म्महोगा ४१ हे कौरवों में श्रेष्ठ राजा दुर्यो-धन निश्चय करके हम सब महादुःखी होकर इस पृथ्वीपर विचरेंगे तुझसे पृथक् होकर हमलोगों को कहां से शान्ती और सुख प्राप्त होसक्ता है ४२ हे महाराज तुम जाकर और महारथियों से मिलकर मेरे वचनसे वृद्धता और उत्तमताके वि-चार से पूजन करना ४३ हे राजा सब धनुषधारियों के ध्वजारूप आचार्य्य जी को पूजकर अब मेरे हाथ से मरे हुये धृष्टद्युम्न को वर्णन करना ४४ और बड़े महारथी राजा बाह्लीक, जयद्रथ, सोमदत्त और भूरिश्रवा से मिलना ४५ उसी प्रकार स्वर्ग्ग में प्रथम जानेवाले अन्य २ उत्तम राजाओं को मेरे बचनसे मिल कर कुशल मङ्गल को पूछना ४६ संजय बोले कि अश्वत्थामा जी उस अचेत और टूटी जंघावाले राजाको इसप्रकार कहकर और सम्मुख देखकर फिर बचन को बोले ४७ हे दुर्य्योधन तुम जीवते हो कानोंके सुखदायी बचनोंको सुनो कि पाण्डवोंके सात और दुर्योधनके हम तीन शेषबचे हैं ४८ वह पांचोंभाई केशव जी और सात्यकी हैं उसीप्रकार मैं कृतबर्मा और तीसरे शारद्वत कृपाचार्य्य जी शेषहैं ४९ हे भरतवंशी द्रौपदीके सब पुत्र धृष्टद्युम्नके पुत्र सब पांचाल और शेष बचेहुये सब मत्स्यदेशी मारेगये ५० बदलेके कर्म्म को देखो और पाण्डव असन्तान हैं रात्रिके युद्धमें मैंने उन्होंका डेरा सब मनुष्योंसमेत नाश करदिया ५१ हे राजा मैंने रात्रि में डेरे में प्रवेश करके यह पापकर्त्ता धृष्टद्युम्न पशु के समान

मारा ५२ दुर्योधन उस चित्तके प्रियबचनको सुनकर और सचेत होकर यह वचन बोला ५३ कि मेरा वह कर्म न भीष्मजी ने न कर्णने और न आप के पिताने किया जो अब कृपाचार्य्य और कृतबर्मासमेत तुमने किया ५४ वह नीच सेनापति शिखण्डी समेत मारागया उसहेतु से अब मैं आपको इन्द्रके समान मानताहूं ५५ कल्याणको पाओ तुम्हारा भलाहोय अब स्वर्ग में हमारा तुम्हारा फिर मिलापहोगा वह बड़ा साहसी कौरवराज इसप्रकार कहकर मौनहुआ ५६ और मित्रों के दुःखको उत्पन्न करते उसबीर ने अपने प्राणोंका त्यागकर पवित्र स्वर्ग को गया और शरीर पृथ्वीपररहा ५७ हे राजा इसप्रकार आपके पुत्र दुर्य्योधनने मरणको पाया वह शूर युद्धमें प्रथमजाकर फिर शत्रुओं के हाथसे मारागया ५८ उसीप्रकार उनसे मिलेहुये वहलोग फिर मिलकर राजाको बारम्बार देखते अपने अपने रथोंपर सवारहुये ५९ इसप्रकार अश्वत्थामाके करुणारूप बचनोंको सुन कर शोकसे पीड़ित वह तीनों प्रातःकालके समय नगरकी ओर शीघ्रतासे चले ६० हे राजा आपके कुमन्त्रहोनेपर इसप्रकार कौरव और पांडवोंका यहघोर और भयकारी मारनेवाला नाश बर्त्तमानहुआ ६१ हे निष्पाप शोकसे पीड़ित आपके पुत्रके स्वर्ग जानेपर अब ब्यासऋषिका दियाहुआ वह दिब्य दर्शन और दिब्य नेत्र विनाशमान हुये ६२ बैशम्पायन बोले कि तब वह राजाधृतराष्ट्र पुत्रके मरणको सुनकर लम्बी और उष्ण श्वासाओंको लेकर महाचिंतायुक्त हुआ ६३॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिदुर्योधनप्राणत्यागेनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले कि उस रात्रिके ब्यतीत होनेपर धृष्टद्युम्नके सारथीने युद्धमें होनेवाले नाशको धर्मराजके सम्मुख बर्णन किया १ सारथी बोला हे राजा रात्रि के समय अपने डेरे में सोनेवाले बिश्वास युक्त अचेत सोतेहुये द्रौपदी के पुत्र द्रुपद के पुत्रों समेत मारेगये २ निर्दयी कृतवर्म्मा गौतम कृपाचार्य्य और पापी अश्वत्थामाके हाथसे रात्रिके समय आपका डेरा नाशहुआ ३ प्रास शक्ति और फरसोंसे हजारों मनुष्य घोड़े और हाथियों को मारनेवाले इन तीनों से आपकी सेना मारीगई ४ हे भरतबंशी फरसोंसे कटतेहुये बड़ेबनकी समान आपकी सेनाके बड़ेशब्द सुनेगये ५ हे बड़ेज्ञानी केवल मैंभी अकेला उस सेनामेंसे बचा

हूं हे धर्म्मात्मा मैं उस दुष्ट कृतबर्म्मा से किसीप्रकार करके बचगया ६ कुन्ती का पुत्र अजेय युधिष्ठिर उस दुःखशोक के बचनको सुनकर पुत्रशोक से युक्तहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा सात्यकी भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव ने उस गिरते हुये राजाको पकड़लिया ७।८ फिर सचेत होकर शत्रुओंका बिजय करनेवाला युधिष्ठिर शोकसे ब्याकुल दुःखसे पीड़ावान्के समान बिलापकरनेलगा ६ अर्थों की गति दुःखसे जानने के योग्यहै जो दिब्यचक्षु रखनेवाले हैं उनको भी अन्य लोग पराजित होकर बिजय करते हैं बिजय करनेवाले हमलोग बिजय किये गये १० भाई समान अवस्थावाले पिता पुत्र मित्रवर्ग बान्धव मन्त्री और पोतों समेत सबको मारकर भी हम दूसरों से बिजय कियेगये ११ निश्चयकरके अनर्थ अर्थरूप है उसीप्रकार अनर्थ अर्थको दिखलानेवाला है यह बिजय पराजयरूप है इसहेतुसे बिजयही पराजयहै १२ जो दुर्बुद्धी बिजयकरके पीछे आपत्तिमें बँधे हुये के समान दुःखी होता है वह किसप्रकार बिजय को माने उसहेतु से शत्रुके हाथसे अत्यन्त पराजितहै १३ मित्रोंके नाशसे बिजयका पाप जिनके निमित्त होय पराजितहुये चतुर सावधान मनुष्यों करके बिजयसे शोभायमान आदमी बिजय कियेगये १४ युद्धमें कर्णिनालीक नाम बाण के समान डाढ़ रखनेवाले खड्गकी समान जिह्वा धनुषके समान चौड़ामुख रुद्ररूप प्रत्यञ्चा और तलके समान शब्दवाले १५ क्रोधयुक्त युद्धों में मुख न फेरनेवाले नरोत्तम कर्णके हाथसे जो बचे वह सब शूरबीर अचेततासे मारेगये १६ रथरूप ह्रद बाण वृष्टिरूप तरङ्ग वाले वृत्तों से पूर्ण घोड़े और सवारियों से युक्त शक्ति वा दुधारे खड्गरूप मछली ध्वजारूप सर्प और नक्र धनुषरूप भँवर बड़े बाणरूपी फण रखनेवाले १७ युद्ध रूप चन्द्रोदय तीब्रता रूप किनारेवाले ज्यातल और नेमियों के शब्दवाले द्रोणाचार्यरूपी समुद्रको जिन राजकुमारों ने नानाप्रकारके शस्त्ररूपी नौकाओं के द्वारातरा वह प्रमादसे मारेगये १८ इस जीवलोक में मनुष्यों के मरणका कारण प्रमत्ततासे अधिक कोई नहीं है प्रमत्त अर्थात् अचेत मनुष्यको धनादिक अर्थ चारों ओर से त्याग करते हैं और निर्धनतारूप अनर्थ प्रवेश होते हैं १९ उत्तम ध्वजा की नोकसूरत उँचाई रखनेवाली बाणरूप ज्वालावाली क्रोधरूप बायुकी तीब्रता रखनेवाली बड़े धनुषकी ज्यातल और नेमी के शब्दसेयुक्त कवच और नानाप्रकारके शस्त्ररूप हवन रखनेवाली बड़ी सेनारूप दावानलसे संयुक्त खड़े

हुये शस्त्ररूप कठिन तीव्रतावाली भीष्मरूप अग्निकी भस्म ताको जिन राजकुमारोंने बड़े युद्ध में सहा वह सब अचेततासे मारेगये २० । २१ प्रमत्त मनुष्यको विद्या तप धन और उत्तमकीर्त्ति नहीं प्राप्त होसक्की है सावधानी से सब शत्रुओं को मारकर सुखसे वृद्धि पानेवाले महाइन्द्रको देखो २२ इन्द्रके समान राजाओं के पुत्र पौत्रादिकों को अत्यन्त अचेततासे ऐसे मराहुआ देखो जैसे कि धनकी वृद्धिवाला व्यापारी समुद्रको तरकर छोटी नदी में डूबजाय २३ क्रोधयुक्त पुरुषों ने जो सोते वीरोंको मारा वह निस्सन्देह स्वर्ग को गये मैं द्रौपदी को शोचताहूं अब वह पतिव्रता निर्भयहोकर किसप्रकारसे शोचरूपी समुद्रमें डूबगई २४ भाई बेटे और वृद्ध पिता राजा पांचाल को मृतक सुनकर निश्चय करके व्यामोहित होकर पृथ्वीपर गिरेगी शोकसे कृशांग यष्टीशरीर वह द्रौपदी शुष्क होरही है २५ सुखोंके योग्य वह द्रौपदी पुत्र और भाइयों के मरनेसे व्याकुल अग्निसे जलती हुई के समान उस शोकजन्य दुःखसमुद्र से पार न होकर कैसी दशावाली होगी २६ इसप्रकार विलापकरता वह कौरवराज युधिष्ठिर नकुल से बोला जाओ उस मन्दभागिनी राजपुत्री को उसके मातृपक्षियों समेत यहांलाओ २७ नकुल धर्म्मरूप राजाके बचनको धर्म्म से अङ्गीकार करके रथकी सवारी से देवी द्रौपदी के उस स्थान को गया जहांपर राजा पांचाल की भी स्त्रियां थीं २८ नकुलको भेजकर शोकसे पीड़ावान् रोदन करते युधिष्ठिर उन सुहृदों समेत पुत्रोंकी युद्ध भूमिको गया जो कि भूतगणों से युक्तथा २९ उसने उस कल्याणरूप और उग्र रूप युद्धभूमि में प्रवेशकरके पुत्र सुहृद और मित्रों को पृथ्वीपर सोते रुधिर से लिप्त अंग टूटे शरीर और टूटे शिर देखा ३० वह धर्म्मधारियों में और कौरवों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर उनको देखकर अत्यन्त पीड़ावान् सूरत उच्चस्वर से पुकारा और साथियों समेत अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले हे राजा जनमेजय वह युधिष्ठिर युद्धमें मरेहुये उन पुत्र पौत्र और मित्रों को देखकर बड़े दुःखसे पूर्णचित्त हुआ १ इसके पीछे बेटे पोते भाई और अपने मनुष्योंका स्मरण करतेहुये उसमहात्माको बड़ाशोक उत्पन्नहुआ २

तब अत्यन्त व्याकुल सुहृदोंने उस अश्रुओं से पूर्ण कम्पायमान और अचेत राजाको विश्वास कराया ३ उसके पीछे समर्थ नकुल बड़ी पीड़ावान् द्रौपदीसमेत सूर्य्यके समान प्रकाशमान रथकी सवारीसे एकक्षणमें सम्मुख आया ४ तब उपप्लवी स्थानपर वर्त्तमान वह द्रौपदी सब पुत्रों के अप्रियनाशको सुनकर बड़ी पीड़ावान्हुई ५ हवासे चलायमान केलेके समान कंपायमान वह द्रौपदी राजा को पाकर शोकसे शोकमें पीड़ित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी ६ उस प्रफुल्लित पद्म पलाश के समान नेत्रवाली द्रौपदीका मुख अकस्मात् शोक से ऐसे पीड़ावान् हुआ जैसे कि अँधेरे से ढकाहुआ सूर्य्य होताहै ७ इसके पीछे क्रोधयुक्त सत्य पराक्रमी भीमसेनने दौड़कर उस गिरीहुई द्रौपदीको पकड़लिया ८ भीमसेन से विश्वसित उस रानी तेजस्विनी द्रौपदीने भाइयोंसमेत युधिष्ठिरसे यहबचन कहा ९ हे राजा तुम निश्चयकरके क्षत्रीधर्म से अपने पुत्रों को यमराजके लिये देकर प्रारब्धसे इस सम्पूर्ण पृथ्वीको भोगोगे १० हे राजा तुम प्रारब्धसे कुशलहो और सब पृथ्वी को पाकर मतवाले हाथीके समान चलनेवाले अभिमन्यु को स्मरण नहीं करोगे ११ तुम क्षत्रीधर्म्मसे गिरायेहुये शूरपुत्रों को सुनकर प्रारब्धसे मुझ समेत तुम उनको उपप्लवी स्थानपर स्मरण नहीं करोगे १२ हे राजा पापकर्म्मी अश्वत्थामाके हाथसे सोनेवालों के मारने से शोक मुझको ऐसे तपाताहै जैसे कि स्थानको अग्नि संतप्त करताहै १३ अब जो युद्धमें तेरे हाथसे उस पापकर्मी अश्वत्थामा का उसके साथियों समेत जीवनहरण नहीं किया जाताहै तो इसी स्थानपर शरीर त्यागने के निमित्त आसन बिछाकर बैठूंगी हे पाण्डव जो अश्वत्थामा इस दुष्टकर्म्म के फलको नहीं पाताहै तो निश्चय इसी मेरीबातको जानो १४। १५ इसके पीछे वह द्रुपदकी पुत्री यशवन्ती कृष्णा धर्म्मराज युधिष्ठिर से ऐसा कहकर आसनपर बैठगई १६ उस धर्म्मात्मा राजर्षि पाण्डव ने उस सुन्दर दर्शन प्यारी पटरानी द्रौपदी को शरीर त्यागने के निमित्त आसनपर बैठाहुआ देखकर यह उत्तर दिया १७ कि धर्म्मोंकी जाननेवाली शुभ द्रौपदी वह तेरेपुत्र और भाई धर्म्मरूप मरणको प्राप्तहुये उनका शोचकरना तुमको योग्य नहीं है १८ हे कल्याणी वह अश्वत्थामा यहां से दुर्गम्य दूर बनको गया हे शोभायमान तुम युद्ध में उसके मरने को कैसे जानोगी १९ द्रौपदी बोली कि मैंने शरीर के साथ उत्पन्न होनेवाला मणि अश्वत्थामाके शिरपर सुनाहै युद्ध में उस पापीको

मारकर लायेहुये उस मणिको देखूंगी २० हे राजा उसको आपके शिरपर धारण करके जीऊंगी यह मेरामतहै वह सुन्दर दर्शन द्रौपदी राजासे इसप्रकार कहकर २१ फिर भीमसेनके पास आकर उत्तम वचनको बोली हे समर्थ तुम क्षत्रीधर्म्म को स्मरण करतेहुये मेरी रक्षाकरनेके योग्यहो २२ उस पापकर्म्मी को ऐसे मारो जैसे कि इन्द्र ने शम्वर को मारा था यहां कोई दूसरा पुरुष आपके पराक्रम के समान नहीं है २३ सब लोकों में सुनागयाहै कि जिसप्रकार वारणावत नगरके मध्यमें महाआपत्तिमें तुम पाण्डवोंके रक्षकहुये २४ उसीप्रकार हिडम्ब राक्षसके देखने में तुम गतिहुये इसीप्रकार विराटनगरमें कीचक के भयसे पीड़ावान् मुझ कोभी तुमने दुःखसे ऐसे छुटाया २५ जैसे कि पुलोमकी पुत्री इन्द्राणी को दुःख से छुटायाथा हे पाण्डव जैसे कि पूर्वसमयमें तुमने इनकर्मोंको कियाहै २६ उसी प्रकार उस मारनेवाले अपने शत्रु अश्वत्थामाको मारकर सुखीहो उसके विलाप कियेहुये वहुत प्रकारके दुःखको सुनकर २७ बड़े बलवान् पाण्डव भीमसेन ने नहीं सहा और स्वर्णमयी बड़े उत्तम रथपर सवारहुआ २८ बाण प्रत्यंचासमेत सुन्दर जड़ाऊ धनुषको लेकर नकुलको सारथीकरके अश्वत्थामाके मारने में प्रवृत्त होनेवालेने २९ बाणसमेत धनुषको टंकारकर शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया हे पुरुषोत्तम वह सधेहुये वायुके समान वेगवान् ३० शीघ्रगामी हरिजात के घोड़े तीव्रतासे जल्द चलदिये वह अजेय महापराक्रमी भीमसेन अपने डेरे से रथके चिह्नको लेकर तीव्रता से अश्वत्थामाके रथकी ओर शीघ्रचला ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि उस अजेय भीमसेन के प्रस्थान करनेपर यादवों में श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर से बोले १ हे पांडव पुत्रके शोकसे पूर्ण यह तेरा भाई युद्धमें अश्वत्थामा के मारनेका अभिलाषी अकेलाही दौड़ताहै २ हे भरतर्षभ यह भीमसेन सबभाइयों से अधिक तुमको प्याराहै अबतुम उस आपत्ति में फँसेहुयेकी क्यों नहीं रक्षाकरतेहो ३ मेरी बड़ी गुप्तबातको सुनो और सुनकर फिर कर्म्म को करो जब शत्रुओं के पुरके विजय करनेवाले द्रोणाचार्य्य ने जो उस ब्रह्मशर नाम अस्त्रका पुत्रको उपदेश किया जो पृथ्वीको भी भस्मकरसक्ता

है ४।५ सब धनुषधारियों के ध्वजा रूप महात्मा महाभाग प्रसन्नचित्त आचार्य्यजी ने वह अस्त्र अर्ज्जुनको बतलाया क्रोधयुक्त अकेले पुत्रने भी इस अस्त्र को चाहा ६ जो कि उससे अत्यन्त प्रसन्नचित्त नहीं थे इसहेतु से उन्हों ने उस दुर्बुद्धी पुत्रकी चपलता जानकर सिखला तो दिया ७ परन्तु सर्व्वधर्म्मज्ञ आचार्य्यजी ने उस पुत्रको शिक्षापूर्व्वक आज्ञादी कि हे पुत्र युद्ध में बड़ीआपत्ति में फँसनेपर भी तुझको भी ८ यह अस्त्र छोड़ने के योग्यनहींहै और बिशेषकर मनुष्योंके ऊपर तो कभी न छोड़ना यह कहकर फिर पुत्रसे यह बचनकहा ९ कि तुम कभी सत्पुरुषोंके मार्ग में नियत नहींहोगे हे पुरुषोत्तम युधिष्ठिर तब दुष्ट अन्तःकरणवाला पिताके अप्रिय बचनको जानकर १० सब कल्याणों से निराश होकर शोकसे पृथ्वीपर घूमा ११ द्वारका में आकर यादवों से परमपूजित होकर बसा वह एकसमय द्वारकाके सम्मुख समुद्रकेपास निवास करताहुआ अकेलाही हँसकर मुझ से बोला १२ कि हे श्रीकृष्णजी बड़े तपको करते भरतबंशियों के आचार्य्य सत्यपराक्रमी मेरे पिताने जो उस ब्रह्मशरनाम अस्त्रको जो कि देवता और गन्धर्वों से पूजित है अगस्त्यजीसे पाया १३। १४ हे श्रीकृष्णजी अब वह वैसेही मेरे भी पासहै जैसे कि पिताके पास है हे यादवों में श्रेष्ठ तुम उस दिव्य अस्त्रको मुझसे लेकर १५ मुझको भी वह चक्रअस्त्रदो जो कि युद्धमें शत्रुओं का मारनेवाला है हे भरतर्षभ राजा युधिष्ठिर वह हाथजोड़कर बड़े उपायपूर्व्वक मुझसे अस्त्र मांगनेवाला हुआ तब मुझ प्रसन्नचित्त ने उससे कहा कि देवता दानव, गन्धर्व्व, मनुष्य, पक्षी, सर्प १६। १७ यहसब मिलकर भी मेरे पराक्रम के सोलहवें भाग के समान नहीं हैं यह धनुष है यह शक्ति है यह चक्र है यह गदा है १८ इनमें से जिस अस्त्र को तुम मुझ से चाहते हो उसको मैं तुमको देताहूं जिसको तुम उठासक्के हो और युद्ध में चलाभी सक्केहो १९ आप जिस अस्त्रको मुझे देना चाहतेहो उसके दियेही इनमें से जो चाहो सो लो तब मुझ से ईर्षा करनेवाले उस महाभाग ने सुन्दर नाभि और हजार आरा रखनेवाले बज्रनाम लोहमयी चक्र को मुझसे मांगा तब मैंने भी उसीसमय कहदिया कि चक्रको लो २०। २१ तब उसने उठकर अकस्मात् बायें हाथ से चक्रको पकड़ लिया परन्तु उसको स्थानपर से हटाने को समर्त्थ नहीं हुआ २२ फिर दक्षिण हाथसे भी उसको पकड़ना प्रारम्भ किया इसके पीछे अनेक उपायोंसेभी उसको

उठा न सका २३ फिर बड़ा दुःखीचित्त अश्वत्थामा जब कि सब पराक्रम करने से भी उसके उठाने और हटानेको भी समर्थ नहीं हुआ २४ और वह उपायोंको करके थककर अलग होगया तब मैंने उस अभिलाष से चित्त उठानेवाले विमन २५ और व्याकुल अश्वत्थामासे यह बचन कहा कि जिस गांडीव धनुष श्वेत घोड़े और हनुमान्जीकी ध्वजा रखनेवाले अर्ज्जुनने देवता और मनुष्यों के मध्यमें बड़े प्रमाणको पाया और जिसने पूर्वसमयमें साक्षात् प्रधान देवताओं के ईश्वर शितिकण्ठ उमापति २६ । २७ शंकरजी का द्वन्द्वनाम युद्ध में प्रसन्न किया उससेअधिक इसपृथ्वीपर मेरा दूसरा कोई प्रिय नहीं है २८ स्त्री और पुत्रादिकभी उसको देनेके अयोग्य नहीं हैं हे ब्राह्मण उस सुगमकर्मी मेरे मित्र अर्जुन ने भी २९ प्रथम मुझसे यह बचन नहीं कहा जो तुमने मुझसे कहाहै मैंने हिमालय की कुक्षिमें नियत होकर बारहवर्ष बड़े घोर ब्रह्मचर्य्य को करके तपके द्वारा जिसको प्राप्तकिया और जो सदैव व्रतकरनेवाली रुक्मिणी में उत्पन्नहुआ ३०।३१ तेजस्वी सनत्कुमार प्रद्युम्ननाम मेरापुत्र है उसनेभी इस बड़े दिव्य और युद्धमें अनुपम चक्रकी इच्छा नहींकी ३२ हे अज्ञान जिसको तैंने मांगाहै उसको कभी हमारे बड़े बलदेवजी ने भी नहीं मांगाथा जो तैंने मांगाहै वह गद और साम्बने भी नहीं मांगा और अन्य वृष्णी अन्धकवंशी द्वारकाबासी महारथियोंनेभी ३३ पूर्व में इसको कभी नहीं मांगा तुम भरतवंशियों के आचार्य्य के पुत्रहो और सब यादवों से प्रशंसनीयहो ३४ हे रथियों में श्रेष्ठ तात तुम चक्रसे किसके साथ युद्ध करोगे मेरे इसबचनको सुनकर अश्वत्थामाने मुझको यह उत्तरदिया ३५ कि हे श्रीकृष्ण मैं आपका पूजनकरके आपही के साथ लडूंगा मैंने देवता और दानवोंसे पूजित आपके चक्रकी याचनाकरी है ३६ और हेसमर्थ मैं आपसे सत्य २ कहताहूं कि मैं अजेयहूं हे केशवजी आपसे दुष्प्राप्य मनोरथको न पाकर चला जाऊंगा ३७।३८ हे गोविन्दजी आप मुझको कल्याण के साथ नमस्कार करो तुम उत्तम और अनुपम चक्रवाले ने यह भयानक रूपोंका भी भयानक चक्र धारण कियाहै ३९ पृथ्वीपर दूसरा इसको नहीं पासक्ताहै अश्वत्थामा इसप्रकार मुझसे कहकर और समयपर मुझसे घोड़े धन ४० और अनेकप्रकार के रत्नोंको लेकर हस्तिनापुर को चलागया वह क्रोधयुक्त दुर्बुद्धी चालाक और निर्दयी है और ब्रह्मशर अस्त्रको जानताहै भीमसेन उससे रक्षाकेयोग्यहै ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणियुधिष्ठिरकृष्णसंवादेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि युद्धकर्त्ताओं में श्रेष्ठ और सब यादवों के प्रसन्न करने वाले श्रीकृष्ण जी इसप्रकार कहकर उस उत्तम रथपर सवारहुये जो कि उत्तम अस्त्र शस्त्रों से युक्त स्वर्णमयी मालाधारी काम्बोजदेशी घोड़ों से जुड़ाहुआथा और जिसके उत्तमधुर उदयहुये सूर्य्य के स्वरूपथे १।२ शैब्यनाम घोड़ेने दक्षिण चक्र को उठाया और सुग्रीव नाम घोड़ा बाईओर हुआ और उस रथके पार्श्व-वाहक मेघपुष्प वलाहक नाम घोड़ेहुये ३ विश्वकर्म्मा के बनाई हुई रत्न और धातुसे अलंकृत दिव्य और उन्नत यष्टी रथकी ध्वजापर मायाके समान दिखाई पड़ी ४ प्रकाश मण्डलरूप किरण रखनेवाले गरुड़जी उस ध्वजामें नियतहुये उस सत्यवक्ता की ध्वजा गरुड़रूप दिखाईपड़ी ५ उसके पीछे सब धनुषधारियों की ध्वजा केशव जी सत्यकर्मी अर्जुन और कौरवराज युधिष्ठिर रथ पर सवार हुये ६ समीप वर्त्तमान दोनों महात्माओं ने रथपर सवार शार्ङ्ग धनुषधारी श्री-कृष्णजी को ऐसे शोभायमान किया जैसे कि दोनों अश्विनीकुमारों ने इन्द्र को शोभित कियाथा ७ श्रीकृष्णजी ने उन दोनोंको उस पूजित रथपर बैठाकर शीघ्रगामीपने से संयुक्त उत्तम घोड़ों को चाबुक से ताड़ित किया ८ पाण्डव और यादवोत्तम श्रीकृष्णजी से सवारी युक्त उत्तम रथको वह घोड़े लेकर अक-स्मात् उड़े ९ श्रीकृष्णजी को लेचलनेवाले शीघ्रगामी घोड़ों के ऐसे बड़े शब्दहुये जैसे कि उड़तेहुये पक्षियों के शब्द होते हैं १० हे भरतर्षभ उन वेग-वान् नरोत्तमोंने बड़े धनुषधारी भीमसेन की ओर चलकर क्षणभरमेंही उसको पाया ११ वह महारथी मिलकरभी उस क्रोधसे प्रकाशित और शत्रुसे युद्धकरने को सन्नद्ध भीमसेनके रोकनेको समर्थ नहीं हुये १२ वह भीमसेन उन दृढ़ धनु-षधारी श्रीमान् भाइयों और श्रीकृष्णजी के देखतेहुये अत्यन्त शीघ्रगामी घोड़ों के द्वारा श्रीगंगाजी के तटपर गये १३ जहांपर कि महात्माओं के पुत्रोंके मारने वाले अश्वत्थामा सुनेगये थे उस भीमसेनने जलके समीप महात्मा यशवान् १४ व्यासजीको ऋषियों समेत बैठाहुआ देखा और उस निर्दयकर्मी घृतसे मर्द्दित शरीर बड़े चीरधारी १५ धूलसे लिप्त शरीर अश्वत्थामाको भी समीप बैठाहुआ देखा वह कुन्तीकापुत्र महाबाहु भीमसेन धनुषबाणको लेकर उसके सम्मुखदौ-

ड़ा १६ और तिष्ठ २ बचन कहा वह अश्वत्थामा धनुषधारी भीमसेनको देखकर १७ और पीछे श्रीकृष्णजी को रथपर नियत दोनों भाइयोंको देखकर चित्त से पीड़ितहुये और मृत्युको वर्त्तमान जाना १८ उस महासाहसीने उस दिव्य महा उत्तम अस्त्रको स्मरण किया और बायेंहाथसे एक सींकको पकड़ा १९ और उस आपत्ति को प्राप्त होकर दिव्य अस्त्रको पढ़ा और दिव्य शस्त्रधारण करनेवाले उन शूरों को न सहकर उन अश्वत्थामाजी ने २० क्रोधसे भयकारी बचन को कहा कि यह अस्त्र मैं पाण्डवोंके नाशके निमित्त छोड़ताहूं हे राजेन्द्र प्रतापवान् अश्वत्थामा ने यह कहकर २१ सब लोक के बड़े मोह के निमित्त उस अस्त्रको छोड़ा इसकेपीछे उस सींकमें काल और यमराजके समान तीनोंलोकों की भस्म करनेवाली अग्नि उत्पन्नहुई २२॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिऐषिकेब्रह्मशिरोस्त्रत्यागेत्रयोदशोऽध्यायः १३॥

चौदहवां अध्याय॥

बैशम्पायन बोले कि महाबाहु श्रीकृष्णजी ने प्रथमही से उस अश्वत्थामाके उस मनके बिचारको जानकर अर्जुन से कहा १ कि हे पाण्डव अर्जुन जो द्रोणाचार्य्य का उपदेश किया हुआ वह दिव्य अस्त्र वर्त्तमानहै उसका यह समय वर्त्तमान हुआहै २ हे भरतबंशी तुम भी इस युद्धभूमि में अपनी और अपने भाइयोंकी रक्षाके लिये अस्त्रके रोकनेवाले उस अस्त्रकोछोड़ो ३ इसकेपीछे शत्रुओं के बीरों का मारनेवाला और केशवजी से इसप्रकार कहाहुआ पाण्डव अर्ज्जुन धनुषबाण को लेकर शीघ्रही रथसे उतरा ४ वह शत्रुओं का तपानेवाला प्रथम गुरुपुत्र के लिये फिर अपने और सब भाइयों के अर्थ भलाहोय यह कहकर ५ देवता और सब गुरुओंके अर्थ नमस्कार करके शिवजीको ध्यान करतेहुये अर्जुनने उस अस्त्रको छोड़ा और कहा कि अस्त्र से अस्त्र शान्तहोय ६ इसकेपीछे अकस्मात् गांडीव धनुषधारीसे छोड़ाहुआ और प्रलयकालकी अग्निके समान वह प्रकाशित अस्त्र ज्वलितरूप हुआ ७ और उसीप्रकार बड़े तेजस्वी अश्वत्थामा का भी वह अस्त्र ज्वलित रूपहुआ जो कि तेजमण्डल से युक्त बड़ी ज्वाला रखनेवाला था ८ परस्पर बायुके संघट्टनों के बड़े शब्दहुये हज़ारों उल्कापातहुये और सब जीवों को बड़ाभय उत्पन्नहुआ ९ शब्दायमान आकाश ज्वाला मा-

लाओं से बहुत व्याप्तहुआ पर्वत वन और वृक्षों समेत पृथ्वी कम्पायमानहुई १०
इसप्रकार वह दोनों प्रकाश लोकोंको तपातेहुये नियतहुये तब वहां उन दोनों
महर्षियों ने एकसाथ दर्शन दिया ११ सब जीवों के आत्मारूप नारदजी और
भरतबंशियों के पितामह व्यासजी यह दोनों महात्मा बीर अश्वत्थामा और अ-
र्जुनके शान्त करनेको उपस्थित हुये १२ सब धर्मों के ज्ञाता और सब जीवों के
हितकारी बड़े तेजस्वी वह दोनों मुनि बड़े प्रकाशित उन दोनों अस्त्रोंके मध्यमें
नियतहुये १३ उससमय वह अजेय यशवान् और अग्नि के समान प्रकाशित
दोनों उत्तमऋषि वहां जाकर नियतहुये १४ वह जीवमात्रोंसे अजेय देवता और
दानवों के अंगीकृत दोनों ऋषिलोकों की वृद्धिकी इच्छासे अस्त्रोंका तेजशान्त
करतेहुये मध्यमें नियतहुये १५ और बोले कि नानाप्रकार अस्त्रोंके ज्ञाता सब म-
हारथी जो पूर्वसमयमेंभी उत्पन्नहुये उन्होंने भी इसअस्त्रको कभी किसी मनुष्यपर
नहीं छोड़ा हेवीरलोगो तुमने इसबड़े विनाशकारी साहसको क्यों किया १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिऐषिकेऽर्जुनास्त्रत्यागेचतुर्द्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले हे नरोत्तम शीघ्रता करनेवाले अर्ज्जुनने अग्निके समान
प्रकाशित उन ऋषियों को देखकर दिव्यबाण को संहार करलिया अर्थात् लौटा
लिया १ हे भरतर्षभ तब वह अर्जुन हाथजोड़कर उनऋषियों से बोला कि मैंने
यह समझकर अस्त्रको प्रकटकिया है कि यह अस्त्र इसअस्त्र से शांतहोय २ इस
उत्तम अस्त्रके लौट आनेपर निश्चयकरके पापकर्मी अश्वत्थामा इसतेज अस्त्रसे
हम सबको भस्मकरेगा ३ यहांपर सदैव हमारा और लोकोंका जोहितहै उसको
देवतारूप आपलोग उसीप्रकार से अङ्गीकार करने के योग्यहो ४ अर्जुनने इस
प्रकारसे फिर अस्त्रको लौटाया युद्ध में देवताओं से भी उसका फिर लौटाना क-
ठिनहै ५ पांडव अर्जुनके सिवाय युद्धमें साक्षात् इन्द्रभी उस छोड़ेहुये परमअस्त्र
के लौटानेको समर्थ नहीं है ६ ब्रह्मचारीका ब्रत रखनेवाले पुरुषके सिवाय ब्रह्म
तेजसे उत्पन्न छोड़ाहुआ अस्त्र अजितेन्द्रिय से कभी लौटानेके योग्य नहीं है ७
ब्रह्मचर्य न करनेवाला जो पुरुष अस्त्रको छोड़कर फिर लौटाता है वह अस्त्र सा-
थियों समेत उस छोड़नेवाले के मस्तकको काटताहै ८ ब्रह्मचारी ब्रत करनेवाला

और बड़े दुःखसे पीड़ावान् अर्जुन ने भी उस दुष्टआचारको पाकर उस अस्त्रको नहीं छोड़ा ९ पाण्डव अर्जुन सच्चाव्रत करनेवाला शूर ब्रह्मचारी और गुरुभक्त था इसहेतुसे उसने उस अस्त्रको फिर लौटालिया १० इसके पीछे अश्वत्थामा भी अपने आगे नियतहुये दोनों ऋषियोंको देखकर अपने बलसे उसघोर अस्त्रके फिर लौटानेको समर्थ नहींहुआ ११ युद्धमें उसपरमअस्त्रके लौटाने में असमर्थ बड़े दुःखीचित्त अश्वत्थामाने व्यासजीसे कहा १२ कि हेमुनि बड़ी आपत्तिसे पीड़ावान् और प्राणोंकी रक्षाका अभिलाषीहोकर मैंने भीमसेनके भयसे उसअस्त्र को छोड़ा १३ हे भगवन् दुर्योधन के मारनेके अभिलाषी और दुराचारी इस भीमसेनने युद्धमें अधर्मकिया १४ हेब्राह्मण इसहेतुसे मुझ अज्ञानी ने इसअस्त्रको छोड़ाहै अब फिर उसके लौटानेको उत्साह नहीं करताहूं १५ हेमुनि मैंने पांडवों के नाशके अर्थ ब्रह्मतेजको धारणकरके इसकठिनता से सहनेके योग्य अस्त्रको छोड़ा १६ यह अस्त्र पाण्डवों के नाशके लिये बहुतहै अब यह अस्त्र सब पांडवों को जीवनसे रहित करेगा १७ हेब्राह्मण क्रोधसे पूर्णचित्त और युद्धमें पाण्डवों के मारने के अभिलाषी मुझ अस्त्र छोड़नेवाले ने यह पाप किया १८ व्यासजी बोले हेतात बुद्धिमान् पाण्डव अर्जुनने युद्धमें जो ब्रह्मशरनाम अस्त्र छोड़ा वह क्रोधसे छोड़ा तेरे नाशकेलिये नहीं छोड़ा १९ युद्धमें तेरे अस्त्रको अपने अस्त्र से शान्त करनेके अभिलाषी अर्जुनने यहअस्त्र छोड़करभी फिर लौटालिया २० यह महाबाहु अर्जुन तेरे पिताके उपदेशसे ब्रह्मअस्त्रको भी पाकर क्षत्रियधर्म से कम्पायमान नहीं हुआ २१ इसप्रकार धैर्यवान् साधु सब अस्त्रों के ज्ञाता सत्पुरुष इस अर्जुनका मारना भाईबंधुओं समेत किसलिये तुमकरना चाहते हो २२ जिस देशमें ब्रह्मशर अस्त्र परमअस्त्रके द्वारा दूर कियाजाताहै उस देशमें बारहवर्षतक इन्द्र जलको नहीं बरसाताहै अर्थात् बारहवर्ष का दुर्भिक्ष पड़ता है २३ महाबाहु समर्थ पाण्डव संसारके जीवमात्रों की वृद्धिकी अभिलाषासे इसी निमित्त उस अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूरनहीं करता २४ पाण्डव देश और तुम भी सदैव रक्षा के योग्यहो हे महाबाहु इसहेतुसे तुम इस दिव्यअस्त्रको लौटाओ २५ तेराक्रोध दूरहोय और पाण्डवोंकी कुशल होय यह राजऋषि पाण्डव अधर्मसे बिजयकरना नहीं चाहताहै २६ अबतुम उस मणिको देदो जो तेरे शिरपर नियतहै पाण्डव उसको लेकर तुझको प्राणदान देंगे २७ अश्वत्थामा बोले कि पाण्डवों ने

जो रत्न और कौरवोंने जो अन्यधन इसलोक में प्राप्तकिया उन्हों से यह मेरामणि पृथक् है २८ जिसको बांधकर किसी दशा में भी शस्त्र रोग और क्षुधासम्बन्धी कोई भयनहीं होताहै इस बांधनेवाले को देवता दानव और सर्पोंसेभी भय नहीं है २६ न राक्षसों के समूहों का और न चोरों का भयहै इसप्रकार से यह उत्तम मणि है और किसी दशामें भी मुझ से त्याग करने के योग्य नहीं है ३० और जो भगवान् ने मुझको आज्ञा करी है वह शीघ्रही मुझको कर्त्तव्यहै यह मणि है यह मैं हूं परन्तु यह सींक ३१ पाण्डवों के गर्भोंपर गिरेगी क्योंकि यह उत्तमअस्त्र सफलहै हे भगवन् इस प्रकट होनेवाले अस्त्रको मैं फिर नहीं लौटा सक्ता हूं ३२ मैं इसहेतु से इस अस्त्र को पाण्डवों के गर्भों पर छोड़ता हूं हे महामुनि आपके बचनोंको अवश्य करूंगा ३३ व्यासजी बोले हे निष्पाप इसीप्रकारकरो तुमको दूसरी बुद्धि न करना चाहिये इस अस्त्रको पाण्डवों के गर्भोंपर छोड़कर युद्धसे निवृत्तहो ३४ बैशम्पायन बोले इसकेपीछे अश्वत्थामाजी ने ब्यासजी के बचन को सुनकर युद्धमें सन्नद्ध परम अस्त्रको गर्भोंपर छोड़ा ३५॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिऐषिकेब्रह्मशिरोस्त्रस्यपांडवेयगर्भप्रवेशनेपंचदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय॥

बैशम्पायन बोले तब श्रीकृष्णजी पापकर्म्म करनेवाले अश्वत्थामा के छोड़े हुये उस अस्त्रको जानकर प्रसन्नहोकर अश्वत्थामासे यह बचनबोले १ कि पूर्व समयमें नियमवान् ब्राह्मणने बिराटकीपुत्री अर्जुनकी पुत्रबधू उत्तरा को जो कि उपप्लव्य स्थानपर बर्त्तमानथी उस्से यह कहा २ कि कौरवों के नाशवान् होनेपर तेरापुत्र होगा इस गर्भस्थ बालकका इसीहेतुसे परीक्षितनाम होगा ३ उस साधु का यहबचन सत्यहोगा परीक्षितपुत्र फिर उन्हों के बंशका चलानेवाला होगा ४ तब अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने यादवों में अत्यन्तश्रेष्ठ इसप्रकार कहनेवाले गोबिंदजीको यह उत्तरदिया ५ हे कमललोचन केशवजी यह इसप्रकार नहीं है जैसे कि तुमने पक्षपाती होकर यह बचन कहाहै मेराबचन मिथ्या नहीं है ६ हे श्रीकृष्णजी मेरा चलाया हुआ वह अस्त्र उस उत्तराके गर्भपर गिरेगा जिस को कि तुम रक्षा किया चाहतेहो ७ श्रीभगवान् बोले कि उस परमअस्त्रका गिरना सफलहोगा और मराहुआ गर्भ जीकर बड़ी अवस्थाको पावेगा सब ऋषिलोग

तुझको नीचपुरुष पापी और बारम्बार पापकर्मवाला और बालकके जीवन का नाशकरनेवाला जानेंगे ८।९ उस कारणसे तुम इस पापकर्म के फलको पाकर तीनहज़ार दिव्य वर्षतक इस पृथ्वीपर घूमोगे १० तुम एकाकी कहीं कुछ न पाते और कभी किसी के साथ परस्पर बार्त्तालाप न करते निर्जन देशों में घूमोगे ११ हे नीच तेरानिवास मनुष्यों में नहीं होगा पीब और रुधिरकी गन्धिसेयुक्त दुर्गम्य महाबनों में निवास करेगा १२ पापात्मा और सब बीमारियों से संयुक्त होकर घूमेगा शूरपरीक्षित अवस्था और वेदब्रतको पाकर १३ कृपाचार्य्य से सब अस्त्रों को पावेगा फिर परमअस्त्रोंको पाकर क्षत्रियब्रतमेंनियत १४ धर्मात्मा साठबर्षतक सृष्टिकी रक्षा करेगा इसकेपीछे वह महाबाहु कौरवराज होगा १५ हे दुर्बुद्धी तेरे देखते परीक्षितनाम राजा होगा मैं उस शस्त्रकी अग्नि से भस्महुये को अपने तेजसे जिलाऊंगा हे नीच मेरे सत्य और तपके बलको देखो १६ व्यासजी बोले जो तुमने हमको अनादर करके यह भयकारी कर्म्म किया और तुझ सत्पुरुष ब्राह्मण का ऐसा चलनहुआ इनदोनों कारणों से श्रीकृष्णजीने जो श्रेष्ठबचन कहाहै निस्सन्देह वहीदशा तेरी होनेवाली है तुम क्षत्रियधर्म में नियतहो १७।१८ अश्वत्थामा बोले हे ब्राह्मण मैं इसलोकके मनुष्यों में आपकेसाथ नियत हूंगा यह भगवान् पुरुषोत्तम सत्यबक्ता हैं १९ बैशम्पायन बोले कि फिर उदासमन हो-कर अश्वत्थामा महात्मा पाण्डवों को मणि देकर उन सबके देखते हुये बनको गये २० और जिनकेशत्रु मारेगये वह पाण्डव गोविंदजी और व्यासजी महा-मुनि नारदजी को आगे करके २१ और अश्वत्थामा के शरीरके साथ उत्पन्न होनेवाली मणिको शीघ्रही उस मनस्विनी और शरीर त्यागनेके निमित्त नि-यम करनेवाली द्रौपदी की ओर दौड़े २२ बैशम्पायन बोले कि इसके अनन्तर वह पुरुषोत्तम पाण्डव श्रीकृष्णजीसमेत बायुकेसमान शीघ्रगामी उत्तमघोड़ोंके द्वारा फिर डेरेको गये २३ आप पीड़ावान् और शीघ्रता करनेवाले महारथियों ने रथों से उतरकर प्रसन्न मनवाली द्रौपदी को पीड़ावान् देखा २४ वह पाण्डव केशवजी समेत उस अप्रसन्न और दुःखशोकसेयुक्त द्रौपदी के पासजाकर उस को घेरकर बैठगये २५ इसके पीछे राजाकी आज्ञानुसार महाबली भीमसेन ने उस दिव्य मणिको दिया और मणिदेकर यहबचनकहा २६ हे कल्याणिनी यह तेरा मणिहै और वह तेरेपुत्रों का मारनेवाला बिजय कियागया शोकको छोड़

कर उठो और क्षत्रियधर्मको स्मरणकर २७ हे श्यामलोचन सन्धिके अर्थ वासुदेवजी के यात्रा करनेपर तुमने जो यहबचन उन श्रीकृष्णजी से कहे थे कि हे गोविन्दजी राजाको सन्धिका अभिलाषी होनेपर मेरे पति पुत्र भाई और तुम चारोंमें से कोई नहीं हौ २८।२९ तुमने क्षत्रियधर्म्म के योग्य बीरताके बचन पुरुषोत्तमसे कहेथे उनके स्मरण करनेको योग्यहो ३० राज्यका शत्रु पापी दुर्योधन मारागया मैंने उस कटेहुये दुश्शासनका रुधिर पिया ३१ शत्रुताकी अऋणता को पाया हम बार्त्तालाप करने के अभिलाषी पुरुषों की निन्दाके योग्य नहीं हैं अश्वत्थामा पराजित होकर ब्राह्मणवर्ण की वृद्धतासे छोड़ागया ३२ हे देवी उस का जो पतितता प्राप्तहुआ शरीर शेषहै उसको मणिसे जुदाकिया और उसके सब शस्त्रभी पृथ्वीपर गिरपड़े ३३ द्रौपदी बोली हे निर्दोष मैंने अऋणता को पाया गुरूका पुत्र मेरा गुरूहै हे भरतबंशी राजा युधिष्ठिर इस मणि को शिरपर बांधो तब राजा युधिष्ठिरने यह समझकर कि गुरुपुत्रकी धारण कीहुई यह बस्तु है और द्रौपदीका बचनहै ऐसाजानकर उस मणिको लेकर शिरपर धारणकिया ३४।३५ इसके पीछे दिव्यमणिको धारण करताहुआ प्रभु राजा युधिष्ठिर चन्द्रमा सेयुक्त पर्व्वतके समान शोभायमानहुआ ३६ फिर पुत्रोंके शोकसे पीड़ित मनस्विनी द्रौपदी उठखड़ीहुई और महाराज धर्मराजनेभी श्रीकृष्णजीसे पूछा ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिषोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले कि जो रात्रि के युद्धमें उन तीनों रथियों के हाथसे सब सेना के लोगों के मरने पर शोच करतेहुये राजा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजी से यहबचन कहा १ कि हे श्रीकृष्णजी इस पापी नीच और निष्फल कर्म्मवाले अश्वत्थामा के हाथ से मेरे सब महारथी पुत्र कैसे मारेगये २ उसीप्रकार अस्त्रज्ञ महापराक्रमी लाखों से युद्ध करनेवाले द्रुपदके पुत्र अश्वत्थामाके हाथ से गिराये गये ३ बड़े धनुषधारी द्रोणाचार्य्य ने जिसके युद्धमें मुख नहीं किया उस रथियों में श्रेष्ठ धृष्टद्युम्नको उसने कैसे मारा ४ हे नरोत्तम उसने इसप्रकारका कौनसा योग्य कर्म किया जो अकेले गुरुपुत्रने हमारे सब पुत्रादिकोंको युद्धमें मारा ५ श्रीभगवान् बोले कि निश्चय करके अश्वत्थामा उस अविनाशी शिवजी के शरणमें गया

जोकि बड़े देवताओंके ईश्वरोंकाभी ईश्वरहै उस हेतुसे अकेलेने बहुतोंको मारा ६ महादेवजी प्रसन्न होकर देवभागको भी देसक्ते हैं और उसपराक्रमको भी वह गिरीश देसक्ताहै जिसके द्वारा इन्द्रको भी नाशकरे ७ हे भरतर्षभ मैं महादेवजी को मूलसमेत जानताहूं और उनके जो नानाप्रकार के प्राचीन कर्म्म हैं उनको भी श्रेष्ठ रीतिसे जानताहूं ८ वेदमें लिखाहै कि योगी शोकसे रहित होताहै इस निमित्त युधिष्ठिर आदि के शोक के निवृत्त करनेको कहते हैं हे भरतवंशी यह शिव सब जीवमात्रोंका आदि मध्य और अन्तहै और सब संसार इसीके प्रताप से चेष्टा करता है ९ इसप्रकार सृष्टिकी उत्पत्ति करने के अभिलाषी समर्थ त्रिगुणात्मक ईश्वरने सबके आदि तमोगुणरूप रुद्रजी को देखकर कहा कि जीवों की उत्पत्ति में बिलम्ब न करो १० तब बड़े तपस्वी जीवों के दोष जाननेवाले शिव जी ने अङ्गीकार करके जल में डूबकर बहुतकाल तक तप किया इसके पीछे ईश्वरने बहुतकाल पर्य्यंत उनकी प्रतीक्षाकरके सब जीवों के स्वामी रजोगुणीरूप प्रजापतिको मनसे उत्पन्न किया ११।१२ वह जलमें डूबेहुये शिवजी को देखकर अपने पिता से बोला कि जो मुझसे प्रथम उत्पन्न होनेवाला दूसरा नहींहै इसहेतुसे मैं सृष्टिको उत्पन्न करताहूं १३ ब्रह्माजीने कहा तेरेसिवाय दूसरा पुरुष प्रथमसृष्टि नहीं है यह शिवजी जल में डूबेहुये हैं विश्वास करनेवाली सृष्टि को उत्पन्न करो १४ उसने दक्षादि सात प्रजापतियों को उत्पन्न किया और सब जीवोंको भी उत्पन्न किया जिनके द्वारा इस चारप्रकारकी खानवाले जीवसमूहों को उत्पन्न किया १५ हे राजा तब वह सब सृष्टि उत्पन्न होतेही क्षुधासे महाआर्त्त होकर प्रजापतिके भक्षण करनेकी इच्छासे दौड़े १६ वह प्रजापति अपनी रक्षाके निमित्त पितामह के पासगया और कहा कि हे भगवन् उनलोगों से मेरी रक्षा के लिये उनकी जीविका बिचारकरो १७ इसके पीछे पितामहने उनकी जीविका के लिये अन्न औषधी और स्थावर जीव दिये और बलवान् लोगोंके अर्थ चेष्टा करनेवाले और निर्बल जीवदिये १८ वह उत्पन्न होनेवाली सृष्टि जिनके अर्थ अन्न बिचार कियागयाथा अपने स्थानों को गई हे राजा इसके पीछे अपने उत्पत्तिस्थान माता और, पिता आदिक में प्रीति करनेवाले वह प्रजापति लोग वृद्धियुक्तहुये फिर जीवसमूहों के वृद्धिपाने और लोकगुरुके भी प्रसन्न होने पर वह महापुरुष जलसेउठे और उन सृष्टियोंको देखा १९।२० बहुतरूपवाली सृष्टि

के लोग उत्पन्नहोकर अपने तेजसे वृद्धियुक्तथे तब भगवान् रुद्रजी क्रोधयुक्तहुये और अपने लिंगकोभी काटकर पृथ्वीपर इसनिमित्त गिराया कि यह लिंग आस्तिक्य बुद्धिवाले पुरुषोंको सब सिद्धियोंका देनेवाला होगा २१ वह जैसे टूटा उसीप्रकार पृथ्वीपर नियतहुआ वचनोंसे शान्त करते अविनाशी ब्रह्माजी त्रिगुणात्मक ईश्वरकरके उनसे बोले २२ हे रुद्रजी बहुतकाल पर्य्यन्त आपने जल में निवासकरके क्याकिया और किस निमित्त इस लिंगको उखाड़कर पृथ्वी में नियत कियाहै २३ वह लोकगुरू महाक्रोधित होकर गुरू से बोले कि यह सब सृष्टि उत्पन्न होगई है अब मैं इसलिंगसे क्याकरूंगा २४ हे पितामह मेरे तपसे प्रजाके निमित्त अन्न प्राप्तहुआ और औषधी सदैव अपने रूपान्तरको करतीरहैंगी जिससे कि सृष्टि सदैव होती रहै २५ वह विमन और क्रोधयुक्त बड़े तपस्वी रुद्रजी इसप्रकारसे कहकर मुंजवत पहाड़के समीप तपकरनेको गये २६॥

इतिश्रीमहाभारतेसौप्तिकपर्व्वणिसप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय॥

श्रीभगवान् बोले कि सतयुगके अन्त होनेपर विधिके पूजनकरने के अभिलाषी देवताओंने वेदके प्रमाणसे यज्ञको बिचार किया १ फिर उन्होंने सब साधनोंको धनेशों को भागके योग्य देवताओं को और यज्ञकी द्रव्योंको कल्पना किया २ हे राजा मूलसमेत रुद्रजी को न जाननेवाले उन देवताओं ने देवता रुद्रजीके भागको बिचार नहींकिया ३ अब इस बातको कहते हैं कि बिना ईश्वर के आराधनकिये यज्ञ बिनाशमानहै यज्ञमें देवताओंसे भागका बिचार न करने पर साधन अर्थात् यज्ञके नाशकर्त्ताको चाहनेवाले उन रुद्रजीने प्रथम धनुषको उत्पन्नकिया ४ लोकयज्ञ, (अर्थात् सब लोक मुझको साधुजानो इस फलवाला) क्रियायज्ञ, (अर्थात् गर्भाधान संस्कार आदिक रूप) गृहयज्ञ, (अर्थात् स्त्रीके साथ होमनेवाली अग्निहोत्रादिक) पञ्चभूत नरयज्ञ, (अर्थात् बिषयों से उत्पन्न होनेवाला सुख) इन चारप्रकारके यज्ञों में यहसत् जगत् नियत है ५ रुद्रजीने लोकयज्ञ और नरयज्ञों से धनुषको तैयार किया उनका उत्पन्न कियाहुआ धनुष मार्गमें पांच हाथहुआ और वही पांचहाथ पांच बिषय हैं तात्पर्य्य यह है कि जो ज्ञानीलोक और शरीरके अभिमानका त्याग करनेवाला है उसको उस

धनुष से भय नहीं है ६ हे भरतवंशी उसधनुष की प्रत्यंचा वषट्कार प्रत्येक वासनारूपहुआ यज्ञों के चारोंअंग उसकी दृढ़तारूपहुये ७ उसके पीछे क्रोधयुक्त महादेवजी उसधनुषको लेकर वहांगये जहांपर कि देवतालोग यज्ञ कररहेथे ८ उस धनुष उठानेवाले अविनाशी ब्रह्मचारी को देखकर पृथ्वी देवी पीड़ित हुई और पर्व्वत कम्पायमान हुये ६ वायु नहीं चली और वृद्धियुक्त अग्नि ज्वलित नहीं हुई और स्वर्ग में व्याकुल नक्षत्रमण्डल भ्रमण करनेलगे १० सूर्य्य और शोभायमान चन्द्रमण्डल भी प्रकाशमान नहीं हुये सब आकाश अन्धकार से व्याप्त हुआ ११ इसके पीछे व्याकुल देवताओं ने विषयों को नहीं जाना तब वह यज्ञ गुप्तहुआ और देवता भयभीत हुये १२ इसके पीछे उन्होंने यज्ञको रुद्रबाणसे हृदय पर घायल किया इसके पीछे वह यज्ञ मृगरूप होकर अग्निसमेत भागगया १३ (तात्पर्य्य) (रुद्रनाम अहङ्कारकाहै जिस यज्ञमें यज्ञमानको यह विचारहोय कि मैं यज्ञकरनेवाला और ज्ञाताहूं वह यज्ञ ब्रह्मज्ञानरूप फलसे रहित है) हे युधिष्ठिर फिर वह उसीरूप से स्वर्ग को पाकर आकाशमें शोभायमान हुआ फिर कालात्मा रुद्रजी से पीछा किया हुआ वह यज्ञ फलके भोगके पीछे स्वर्ग से पतितहुआ १४ इसके पीछे यज्ञके भागने पर देवताओं का ज्ञान प्रकट नहीं हुआ और देवताओंके अचेत होनेपर कुछ नहीं जानागया १५ त्र्यम्बक अर्थात् श्रवण मनन निदिध्यासनसे प्राप्तहोनेवाले क्रोधरूप परमेश्वरने सविता अर्त्थात् यज्ञ करनेवाले के शरीर की भुजाओं को और भगके नेत्रों को पूषाके दाँतोंको पूर्व्वोक्त धनुषकी कोटिसे गिराया १६ इसके पीछे देवता और यज्ञों के सब अङ्गभागे और कितनेही वहां घूमतेहुये निर्जीवके समान हुये १७ उन रुद्रजीने उस सब यज्ञको अङ्गोंसमेत भगाकरके हँसकर धनुषकी कोटिको निष्कर्म करके देवताओंको रोका अर्थात् लोक और शरीरकी प्रीतिसे पृथक् किया १८ इसके पीछे देवताओं की कहीहुई बाणी ने उनके धनुष की प्रत्यञ्चाको जुदा किया हे राजा फिर प्रत्यञ्चासे जुदा वह धनुष अकस्मात् कुछ चलायमानहुआ १६ इसके पीछे यज्ञसमेत सब देवता उस देवताओं में श्रेष्ठ और धनुषसे रहित ईश्वरकी शरणमें गये अर्थात् चित्तशुद्धी के निमित्त आत्माके आधीनहुये और प्रभुने कृपाकरी २० इसके पीछे भगवान् क्रोध त्रिगुणरूपको समुद्र अज्ञानचित्त में नियत करके प्रसन्नहुये हे समर्थ वह क्रोध अकस्मात् अग्नि होकर जलको

पान करताहै २१ हे पाण्डव फिर भग देवताके मन्त्रोंको और सविताकी भुजाओंको पूषनके दांतोंको और यज्ञोंको दिया अर्थात् सात्त्विकयज्ञ जारीहुआ २२ उसके पीछे यह सब जगत् फिर स्थिरचित्त हुआ और देवताओंने सब हव्योंको उसका भाग नियत किया अर्थात् सब कर्म्म ईश्वरार्पण किये गये २३ हे प्रभु युधिष्ठिर उसके क्रोधयुक्त होनेपर सब संसार व्याकुल हुआ और प्रसन्न होनेपर फिर स्थिर हुआ वह पराक्रमी शिवजी उसके ऊपर प्रसन्नहुये २४ उस कारणसे आपके वह सब महारथी पुत्र और धृष्टद्युम्नके पीछे चलनेवाले बहुतसे अन्य २ शूरबीर मारेगये २५ वह चित्तमें नहींधारण करनाचाहिये उसको अश्वत्थामाने नहीं किया अर्थात् सब ईश्वरके आधीनहै शोक न करनाचाहिये महादेवजीकी प्रसन्नतासे निस्सन्देह शीघ्रतापूर्व्वक करनेके योग्य कर्म्मोंको करो २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांसौप्तिकेपर्व्वणिऐषीकेयुधिष्ठिरार्जुन संवादेऽष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

शुभम्भूयात् ॥

इति सौप्तिकपर्व्व समाप्तम् ॥
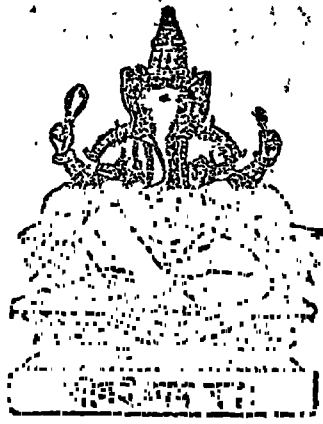
महाभारतभाषा स्त्री पर्व्व ॥

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥ नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिम्पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनंसान्द्रप्रमोदा स्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणम्पापाटवीपावकं स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ याभातिवीणामिववादयन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानःप्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतंयेन तंवन्दे वादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमप्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं वन्देगुरुं श्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्रपुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंसुन्दरनारि पर्व्व भाषानुवादंविदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ स्त्रीपर्व प्रारम्भः ॥

श्रीनारायण और नरोत्तम नर को और सरस्वती देवी को नमस्कार करके फिर जयनाम इतिहास को बर्णन करताहूं १ जनमेजय बोले कि हे मुनि दुर्योधन के मरने और सब सेना के नाश होजानेपर महाराज धृतराष्ट्र ने सुनकर क्या किया २ उसीप्रकार धर्म्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने और उन कृपाचार्य्यादिक तीनों ने क्या किया ३ आपके कहने से अश्वत्थामाका कर्म सुना परस्पर शाप देनेसे पीछेका जो वृत्तान्त संजयने कहाहै उसको आप मुझसे बर्णन कीजिये ४ बैशम्पायन बोले कि सौ पुत्रों के मरने पर टूटी शाखाओं के वृक्ष समान दुःखी और पुत्रशोक से पीड़ावान् ५ ध्यान मौनता युक्त चिन्तामें डूबेहुये पृथ्वी के स्वामी महाराज धृतराष्ट्र के पास जाकर संजयने यह बचन कहा ६ हे महाराज क्या शोचते हो शोकमें सहायता नहीं होसक्ती है हे राजा अठारह अक्षौहिणी सेना मारीगई ७ अब यह पृथ्वी सेना के लोगों से और राजाओं से रहित होकर मित्रों से बिहीनहै क्योंकि नानादेशके राजाओं ने बहुत दिशाओं से आकर ८ सबने आपके पुत्र के साथ नाशको पाया अब आप अपने पुत्र

पौत्र ज्ञाति सुहृद् और सब कौरवों के क्रिया कर्मको कराइये ९ वैशम्पायन बोले कि पुत्र पौत्रादिकों के मरनेसे पीड़ावान् बड़ा अजेय धृतराष्ट्र उस शोककारी वचनको सुनकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि वायुसे ताड़ित वृक्ष गिरपड़ता है १० धृतराष्ट्र बोले कि जिसके पुत्र मंत्री और सब सुहृज्जन मारेगये ऐसा मैं होकर सम्पूर्ण पृथ्वीपर विचरूंगा ११ अब कटे पक्षवाले पक्षी के समान मुझ वृद्ध दशासे दुर्बल बांधवों से रहित के जीवनसे क्या प्रयोजनहै १२ हे महाभाग राज्य सुहृज्जन और नेत्रों से रहित मैं ऐसा शोभित नहींहूंगा जैसे कि बिना किरण वाला सूर्य्य अशोभित होताहै १३ परशुरामजी देवऋषि नारदजी और व्यास जी इन शुभचिन्तकों के कहेहुये वचनों को नहीं किया १४ सभाके मध्यमें जो कृष्णजी ने मेरे कल्याणका करनेवाला यह बचन कहाथा कि हे राजा शत्रुता को त्यागो और अपने पुत्रको बन्धनमें करो १५ उनके वचनों को भी न करके मैं दुर्बुद्धी अब कठिन दुःख को पाता हूं और धर्म्म से संयुक्त भीष्मजी के भी बचन को मुझ अभागे ने नहीं सुना राजाओं में दुर्य्योधन का नाश दुश्शासनका मरण कर्ण का विपरीत मरण और द्रोणाचार्य्य रूप सूर्य्य के ग्रहण को सुनकर मेरा हृदय फटता है हे संजय पूर्व्व समय के कियेहुये अपने कुछ पापों को नहीं जानता हूं १६ । १७ । १८ जिसके कि फलको अब मैं दुर्भागी भोग रहाहूं निश्चय करके मैंने पूर्व्व जन्मों में बड़े२ पाप किये हैं १९ जिसके कारण से ईश्वर ने मुझको दुःख उत्पन्न करनेवाले कर्म्मों में प्रवृत्त किया मेरी अवस्था का अन्तिम भाग पुत्र पौत्रादिकों का नाश २० और सुहृद् बंधुओं का मरना दैवयोगसे है दूसरी रीतिसे नहीं है इसलोकमें मुझसे अधिक दुःखी दूसरा कौन पुरुष है २१ हे तेजव्रत वह सब पाण्डव लोग मुझको उस ब्रह्मलोकके मिलने और बड़े मार्गमें नियतहुये को देखेंगे २२ वैशम्पायन बोले सञ्जयने उस विलाप करनेवाले और अनेक प्रकारसे शोकके विस्तार करनेवाले राजाधृतराष्ट्रके शोक का दूर करनेवाला बचन कहा कि २३ हे राजा शोकको दूरकरो तुमने बहुत से धर्म्मके निश्चय सुने हैं हे राजाओं में श्रेष्ठ तुमने वृद्धों से भी अनेक प्रकार के शास्त्र सुने हैं २४ कि पूर्वसमयमें पुत्रके शोकसे राजासञ्जय के पीड़ावान् होनेपर मुनियोंने जो कहा और जिसप्रकार तरुणताके अहंकारमें आपके पुत्र दुर्योधन के नियत होनेपर ऋषियोंने जो कहा उसको भी सुना २५ जो तुमने वार्त्तालाप

करनेवाले अपने शुभचिन्तकों के वचनों को नहीं अंगीकार किया रोगी और हतबुद्धी होकर तुमने कोई अपना प्रयोजन नहीं किया २६ आपने केवल एक धार रखनेवाली तलवार के समान अपनीही बुद्धिसे सब कर्मकिये और बहुधा दुराचारी लोगों को सलाहकार करने के निमित्त समीप बैठाया २७ दुश्शासन दुर्बुद्धी कर्ण बड़ा दुष्टात्मा शकुनी दुर्मति चित्रसेन और शल्य जिसके मन्त्री हैं २८ जिस शल्यने सब जगत्को भालरूप किया हे महाबाहु महाराज भरतवंशी धृतराष्ट्र आपके उस पुत्र ने कौरवों के वृद्ध भीष्मपितामह, गान्धारी, विदुर, २९ द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, श्रीकृष्णजी, बुद्धिमान् नारदजी ३० और बड़े तेजस्वी व्यासजी आदि अन्य २ ऋषियोंका भी वचन नहीं किया ३१ जो कि निर्बुद्धी अहंकारी सदैव युद्धको कहता निर्दयी अजेयपराक्रमी और सदैव अशान्तता से असंतुष्टथा ३२ तुम सदैव शास्त्रज्ञ और शास्त्र के स्मरण रखनेवाले बुद्धि के स्वामी और सत्यवक्ताहो ऐसे आप सरीखे बुद्धिमान् सन्तलोग मोहको नहींपाते हैं ३३ सदैव युद्ध को कहनेवाले ने कोई उत्तम और शुभकर्म्म नहींकिया सब क्षत्रियों का नाशकिया और शत्रुओंका यशबढ़ाया ३४ तुम भी सबके मध्यस्थ हुये परन्तु कोई उचितबात नहींकही हे अजेय तुमने स्नेह और प्रीतिकी तुला को समान नहीं रक्खा प्रारम्भमेंही मनुष्य को उचितकर्म्म करना इस निमित्त योग्यहै जिससे कि भूतकाल का प्रयोजन पश्चात्तापसे युक्त न होय ३५। ३६ हे राजा तुमने पुत्रकी प्रीतिसे पुत्रका हित और प्रिय करना चाहाथा फिर पीछे से इस दुःखको पाया तुम शोचने के योग्य नहींहो ३७ जो पुरुष केवल शहद को देखकर अपने गिरने को नहीं देखताहै वह शहदके लोभसे गिराहुआ ऐसे शोचताहै जैसे कि आप शोचते हैं ३८ शोचताहुआ पुरुष न मनोरथको पाता है न फलको पाताहै न कल्याणको पाताहै और न ब्रह्मको पाताहै ३९ जो पुरुष अपने आप अग्नि को उत्पन्न करके वस्त्रसे ढकता और जलता हुआ चित्त के दुःखको धारण करताहै वह पण्डित नहीं है ४० पुत्रकेसाथ तुम्हारे वचनरूप वायु से प्रेरित लोभरूपी घृतसेसींचा हुआ यह पाण्डवरूप अग्नि प्रज्वलित हुआहै ४१ उस अत्यन्त वृद्धियुक्त अग्निमें आपके पुत्र शलभनाम पक्षियों के समान गिरे तुम बाणों की अग्निसे भस्महोकर उन पुत्रों के शोच करनेको योग्य नहीं हो ४२ हे प्रभु जो तुम अश्रुपातों से लिप्त मुखको धारण करतेहो यह शास्त्र के

विपरीतहै पण्डितलोग इसकी प्रशंसा नहीं करते हैं ४३ निश्चयकरके यह आँशू अग्नि के स्फुलिङ्गों के समान मनुष्योंको भस्म करते हैं यहां तुम बुद्धिसे शोक को त्याग करके अपने चित्तको स्वाधीन करो ४४ बैशम्पायन बोले कि उस महात्मा संजय से इसप्रकार बिश्वास दियागया इसके पीछे बुद्धिसे युक्त बिदुरजी यह बचन बोले ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले अमृतरूपी बचनों से पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र को प्रसन्न करते बिदुरजी ने जो कहा उसको सुनो १ बिदुरजी बोले हे राजा उठो क्यों सोते हो बुद्धिसे मनको आधीन करो सब जड़ चैतन्य जीवोंका यही निश्चयहै २ कि सब सृष्टिसमूह अन्त में नाश होनेवाले हैं सब उदयहोनेवाले ऐश्वर्य्य अन्तमें पतनहोनेवाले हैं मिलनेवाले अन्त में जुदेहोनेवाले हैं और जीवनभी अन्तमें मरणरखनेवालाहै ३ हे भरतबंशी जब यमराज शूरबीर और भयभीतोंको आकर्षण करताहै तो हे क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ फिर वह क्षत्रिय क्यानहीं युद्ध करते हैं ४ युद्ध को न करता मरताहै और लड़ताहुआ जीवता रहताहै हे महाराज कालको पाकर कोई उसको उल्लंघन नहीं करता ५ हे भरतबंशी सबजीव प्रारम्भमेंही अभावरूप हैं मध्य में भावरूप हैं और मरनेपर अभावरूप हैं ऐसे स्थानपर कौन बिलापहै ६ शोचताहुआ मृतक के पीछे नहीं जाताहै शोचताहुआ मनुष्य नहीं मरताहै इसप्रकार लोक में किस निमित्त शोचकरतेहो ७ हे कौरवों में श्रेष्ठ यह काल नानाप्रकार के सब जीवोंको आकर्षण करताहै कालका कोई प्याराहै न शत्रुहै ८ हे भरतर्षभ जैसे कि बायु सबतृणकी नोकोंको उलटपलट करताहै उसी प्रकार सबजीव काल के आधीन होते हैं ९ एकसाथ आनेवाले और वहां जानेवाले सबजीवों के मध्य में जिसके आगे कालजाताहै उसमें कौन बिलाप करताहै १० हे राजा युद्धमें मृतकहुये इनवीरों के शोचकरनेको भी योग्य नहींहो इसमें शास्त्रका प्रमाणहै कि उन्होंने परमगति को पाया ११ सब वेदपढ़नेवाले और सब अच्छेप्रकार से व्रतकरनेवाले यहसब सम्मुखहोकर बिनाशवान् हुये इस में किसबातका बिलाप करनाहै १२ दृष्टिमें न आनेवाले ब्रह्मसे उत्पन्नहुये और

फिर उसी दृष्टिमें न आनेवालेको पाया यह न आपके हैं न आप उनके हैं उ-
समें कैसा विलापहै १३ मृतकभी स्वर्गको पाताहै और मरकरभी जिसको पाता
है हमलोगों को वहदोनों बहुत गुणवाले हैं युद्ध में निष्फलता नहीं है १४ इन्द्र
देवता उनके मनोरथों के प्राप्तकरनेवाले लोकोंको विचार करेंगे हे पुरुषोत्तम यह
सब शूरवीर लोग इन्द्र के अतिथि होते हैं १५ मनुष्य दक्षिणावाले यज्ञ तप और
विद्यासे उसप्रकार स्वर्गको नहीं पाते हैं जैसे कि युद्ध में मृतक उन शूरवीर ते-
जस्वियोंने पायाहै जिन्होंने शरीररूपी अग्नियों में बाणरूप आहुतियोंको होमा
और परस्पर होमेहुये बाणोंकोसहा १६। १७ हे राजा इसप्रकार से स्वर्ग के उ-
त्तम मार्गको तुमसे कहताहूं इसलोकमें क्षत्रियका कुछ कर्म युद्धसे अधिक नहीं
वर्त्तमानहै १८ युद्ध में शोभायमान उन महात्मा शूर क्षत्रियोंने बड़े अभीष्ट फ-
लको पाया सबही शोच के अयोग्यहैं १९ हे पुरुषोत्तम तुम ज्ञान से अपने को
विश्वासदेकर शोचमतकरो शोकसे विजय कियेहुये तुम करनेके योग्य कर्म के
छोड़नेको योग्य नहींहो २० हज़ारों माता पिता और सैकड़ों पुत्र स्त्री संसार में
प्राप्तकिये वह किसके और हम किसके २१ प्रतिदिन शोकके हज़ारों स्थान और
आनन्द के सैकड़ों स्थान अज्ञानमें प्रवेश करते हैं २२ हे कौरवोत्तम कालका
कोई प्याराहै न शत्रुहै वह काल किसी स्थानपर भी मध्यस्थ नहीं है काल सब
को खैंचताहै २३ काल जीवमात्रों को पकाताहै कालही सृष्टिको मारताहै का-
लही सोनेवालों के मध्य में जागताहै और कालही दुःखसे उल्लंघन के योग्यहै
२४ तरुणाईरूप वृद्धता धनसमूह और नीरोगतापूर्वक निवास यहसब विनाश-
वान् हैं पण्डित इनमें प्रवृत्त नहीं होता है २५ अकेले तुम सब दुनिया भर के
दुःख के शोचने को योग्य नहीं हो जो अभाव से मिलता है उसका वह फिर
लौटकर नहीं आताहै २६ जो पराक्रम से नाशको पावे उसको शोचताहुआ
मनुष्य उसकी चिकित्सा को नहीं करताहै दुःखका यह इलाजहै जो उसको न
विचार करे २७ चिन्ताकियाहुआ दूरनहीं होताहै और फिर फिर अधिक बढ़ता
है अप्रिय के मिलने और प्रियके वियोग से २८ वह आदमी बड़े२ चित्तके दुःख
से संयुक्त होते हैं जोकि निर्बुद्धी हैं यह न अर्थ है न धर्म है न सुखहै जो तुम शोच
करतेहो २९ वह करनेके योग्य प्रयोजनसे जुदाहोताहै और धर्म अर्थ काम इन
तीनों वर्गों से च्युत होताहै मनुष्य अन्य२ मुख्य धनादिक दशाको पाकर ३०

इन में असंतुष्ट लोग मोहको पाते हैं परिडत सन्तोष को पाते हैं चित्त के दुःख को ज्ञानसे और शरीरके दुःखको औषधोंसे दूरकरना चाहिये ३१ यही ज्ञान की सामर्थ्य है और किसीप्रकार की कोई सामर्थ्य नहीं है पूर्वजन्म में किया हुआ कर्म सोतेहुये मनुष्य के साथ सोताहै और बैठनेवाले के पास नियत बैठा होता है ३२ और दौड़तेहुये के पीछे दौड़ताहै जिस जिस दशामें जिस २ शुभाशुभ कर्मको करताहै ३३ उसी उसी दशामें उस २ फलको पाताहै जो जीव जिस २ शरीर से जिस जिस कर्म्मको करताहै ३४ उसी २ शरीरसे उस उस कर्म्मके फल को भोगताहै आत्मामें आत्माही उसका बन्धुहै और आत्माही आत्माका शत्रु है ३५ आत्माही आत्माके शुभाशुभ कर्मोंका साक्षीहै शुभकर्मसे सुखको और अशुभकर्म्म से दुःखको ३६ सर्वत्र पाताहै किसी स्थानमें भी बिनाकिये हुये को नहीं भोगताहै आपकी समान बुद्धिमान् मनुष्य उनकर्मोंमें प्रवृत्त नहीं होते हैं जोकि ज्ञानके बिपरीत बहुत पापरखनेवाले और मोक्षके नाशकरनेवाले हैं३७।

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिजलप्रदानिकेधृतराष्ट्रविशोकेद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे बड़े ज्ञानी तुम्हारे इन उत्तम बचनों से मेराशोक निवृत्तहुआ परन्तु हे निष्पाप मैं मूलसमेत इनबचनों को फिर सुना चाहताहूं १ पंडितलोग अप्रियके योग और प्यारोंके बियोगसे उत्पन्न होनेवाले चित्तके दुःखोंसे कैसे छूटते हैं २ बिदुरजी बोले कि जिस जिस उपायसे दुःख अथवा सुखसे भी निवृत्त होताहै बुद्धिमान् मनुष्य उसी उपायसे इस चित्तको स्वाधीन करके शान्ती को पावे ३ हेनरोत्तम यह सब जो ध्यानमें आताहै बिनाशवान्है यह संसार केलेके समानहै इसका सार पदार्थ बर्त्तमान नहीं है ४ जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और निर्द्धनी कालसे मरणको पाकर तापसे रहित सोते हैं ५ उस स्थानपर दूसरे मनुष्य निर्मांस अथवा बहुत अस्थिरखनेवाले अंगनाड़ी और बन्धनोंसे अधिक किसबस्तुको देखते हैं ६ जो उससमय कुल और रूप बिशेषणको नहीं पावें वह छल करनेवाले मनुष्य किसहेतुसे परस्पर इच्छा करते हैं ७ परिडतोंने शरीरधारियों के देहोंको गृहों के समान कहाहै वह कालसे मिलते हैं अर्थात् नाशको पाते हैं केवल एक जीवात्माही अबिनाशी है ८ जिसप्रकार मनुष्य पुराने कपड़े

को त्यागकरके नवीन कपड़ेको अङ्गीकार करता है इसी प्रकार शरीरधारियों के शरीर हैं ९ हेधृतराष्ट्र सब मनुष्य अपने कियेहुये कर्मसे मिलने के योग्य दुःख अथवा सुखको पाते हैं १० हे भरतबंशी सब सुख और दुःख अपने कर्म्मसे प्राप्त होते हैं उसहेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्रभी उसभारको उठाताहै ११ और जैसे मट्टीकापात्र रूपको पाकर टूटताहै कोई बनता कोई बनाहुआ १२ अवेपर रक्खाहुआ वा अवेसे गिरकर टूटनेवाला आर्द्र व शुष्क वा पकताहुआ १३ अवेसे उताराहुआ उठायाहुआ वा काममें लायाहुआ भी टूटजाता है इसी प्रकार शरीरधारियों के शरीरहैं १४ गर्भ में नियत जन्मलेनेवाला वा थोड़ी अवस्थावाली अर्द्धमास एकमास १५ एकबर्ष वा दोबर्षकी अवस्था रखनेवाला तरुण मध्यस्थ और वृद्धभी नाशको पाताहै १६ सबजीव अपने पिछले जन्मोंके कर्मोंसे उत्पन्न होते हैं और नाशको पाते हैं इसरीति के स्वाभाविक धर्मरखनेवाले लोकमें किस हेतुसे दुःखी होतेहो १७ हेराजा जैसे कि कोई जीव क्रीड़ाके निमित्त जलमें घूमताहुआ डूबता और उछलताहै १८ उसीप्रकार महर्षीलोग अपने बड़े ज्ञानके द्वारा उसप्रकारके दुर्गम संसारसे पारहुये जो कि डूबना उछलना इन दो गुणोंका रखनेवाला है १९ जो जीवोंकी उत्पत्ति के जाननेवाले संसारके अन्तके खोजनेवाले सब ज्ञानी नियतहैं वह परमगतिको पाते हैं २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणितृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे वक्ताओं में श्रेष्ठ किस रीतिसे यह संसाररूपी बन जानने के योग्यहै मैं इसको सुना चाहता हूं आप मुझसे बर्णन कीजिये १ विदुरजी बोले कि जन्मसेलेकर जीवधारियों की सब क्रिया दिखाई देती हैं इसलोक में प्रथम कलल अर्थात् एकरात्रि निवास करनेवाले गर्भ में जीवात्मा निवास करता है परन्तु कुछ अन्तर है अर्थात् प्रतिदिन गर्भकी वृद्धि से उसकी सामर्थ्य अधिक बढ़ती है २ इसकेपीछे पांचवांमास व्यतीत होनेपर उस चैतन्यका प्रादुर्भाव बिचारकिया अर्थात् एकरात्रि निवासमें चैतन्यकी सत्तामात्र होती है परन्तु पांचवें महीने में उसका पूर्ण प्रादुर्भाव होजाताहै ३ मांस रुधिरसेलिप्त अपबित्र स्थान में निवासकरताहै फिर वह अपानरूप बायुकी तीव्रतासे ऊंचे पैर नीचे शिरवाला ४

योनिके द्वारको पाकर बड़े कष्टों को पाताहै योनिकी पीड़ा और पिछलेकर्मों से युक्त ५ उस द्वारसे छूटकर संसार के दूसरे उपद्रवों को देखता है और ग्रह उसके पास ऐसे आते हैं जैसे कि मांसकेपास कुत्ते आते हैं ६ हे शत्रुसंतापी इसकेपीछे उसीसमय रोग भी उसकेपास आते हैं इसीसे जीवताहुआ अपनेकर्मों से पीड़ावान् होताहै ७ हे राजा इन्द्रियोंके पाशबंधनों में बँधेहुये सङ्ग और स्वाद से संयुक्त उस जीवधारी के पास नानाप्रकार के व्यसन अर्थात् आपत्तियां बर्त्तमान होती हैं ८ फिर उन सबसे पीड़ित होकर वह जीव तृप्तिको नहीं पाताहै इसी से शुभाशुभ कर्मों को करता है और उनका त्यागनेवाला नहीं होता है इसीप्रकार जो पुरुष ईश्वरके ध्यानमें प्रवृत्तहैं वह अपने को तबतक चारोंओरसे रक्षा करते हैं जबतक यह जीव मिलनेवाले यमलोक को नहीं जानताहै ९। १० यमदूतों से आकर्षित कालसे मृत्युको पाताहै उस मौनका जो पाप पुण्यहै वह दूसरे के द्वारा मुखमें कियाहुआ होताहै ११ फिर भी बिषयों में आसक्त होकर अपने को पतनहुआ नहीं ध्यान करताहै अर्थात् अपनी परिणाम कुशलताको नहीं पाता है आश्चर्य्य है कि यह संसार नीच लोभके आधीनतामें बर्त्तमान १२ क्रोध मोह और धनकेमदसे अचेतहोकर आत्माको नहीं जानताहै दुष्ट कुलवालोंकी निंदा करता अपने कुलकी प्रशंसा करता हुआ रमता है दरिद्रियों की निन्दा करता धनके गर्वसे अहंकारी है दूसरों को मूर्ख कहताहै और अपनेको अच्छीरीति से नहीं देखता है १३। १४ दूसरोंको शिक्षा करताहै परन्तु अपने को शिक्षाकरना नहीं चाहताहै जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और निर्द्धनी १५ कुलीन अकुलीन अहंकारी और निरहंकारी भी सब पितृवन अर्थात् यमलोक में बर्त्तमान बिगत ज्वर होकर सोते हैं १६ और वहांपर दूसरे मनुष्य उन्होंके निर्मांस बहुत से अस्थिवाले अंग और नाड़ीबन्धनों से अधिक कुछ नहीं देखते हैं और जो कुल और रूपकी मुख्यताको नहीं पाते हैं १७ जब वह सब भी शरीरत्याग कियेहुये पृथ्वीपर सोते हैं तब दुर्बुद्धी मनुष्य इसलोक में किस हेतु से परस्पर छल किया चाहते हैं १८ यहबात देखी और सुनी है जो इस श्रुतिको सुनकर इस बिनाशवान् जीवलोक में धर्मकापालन करताहुआ १९ जन्मसे लेकर मरणतक कर्म्म करता है वह परमगति को पाता है जो कि इसप्रकार सब को जानकर ब्रह्म की उपासना करताहै २०॥ इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि जो यह दुष्प्राप्य धर्म बुद्धिकेद्वारा अच्छेप्रकारसे प्राप्त होता है इसहेतुसे अब बुद्धिमार्ग को ब्योरेसमेत मुझसे कहो १ विदुरजी बोले कि इस स्थानपर ब्रह्माजी के अर्थ नमस्कार करके वह विषय मैं तुमसे कहताहूं जैसे कि महर्षिलोग इस संसाररूपी घन वनको तरते हैं २ निश्चयकरके इस बड़े संसार में कोई द्विज मांसभक्षी जीवों से पूर्ण उस दुर्गम्य वन में पहुँचा जो कि बड़े शब्द वाले भयानकरूप मांसभक्षी महाभयकारी सिंह व्याघ्र हाथी और रीछोंके समूहों से ३ । ४ चारोंओर को व्याप्त मृत्युका भी भयकारी था उसको देखकर इसका हृदय महाव्याकुल हुआ ५ कम्प और रोमांचों से शरीर व्याप्त हुआ वह उस वनमें अच्छेप्रकार घूमता हुआ इधर उधर को दौड़ा ६ और सब दिशाओं को देखता था कि मेरा रक्षास्थान कहां होगा इसप्रकार वह भयसे पीड़ावान् सिंहादिकके छिद्रों को देखता भागा ७ वह न तो दूर जाता था न उनसे बचता था इसके पीछे उसने चारों ओरको पाश अर्थात् विषयादिककी वासनासे युक्त घोर वनको देखा ८ वह पाश बड़ी घोररूप स्त्री की भुजाओं से पकड़ा हुआथा और वह बन पांच शिर रखनेवाले पर्वतों के समान ऊंचे सर्पोंसे ९ और आकाशको स्पर्श करनेवाले बड़े वृक्षोंसे चारों ओरको संयुक्तथा उस बनके मध्यमें एक कूप अन्धकार से पूर्ण १० तृणसे ढकी हुई दृढ़ वल्लियों से संयुक्त था वह द्विजनाम जीव उस गुप्त कूपमें गिरपड़ा ११ और लताओंके फैलावसे पूर्ण उस कूपमें छिप गया अर्थात् अभिमानी हुआ कि यह मेरा स्थानहै जैसे कि वृक्ष वंशमें उत्पन्न होनेवाला बड़ा फल शाखामें लगाहुआ होताहै १२ उसी प्रकार वह द्विज ऊंचे पैर नीचे शिरवाला होकर उसमें लटका फिर उसी प्रकारसे उसका दूसरा उपद्रव भी उत्पन्नहुआ १३ कि कूपके मध्यमें बड़े बलवान् सर्पको देखा और मुख बंधन कूपके किनारे पर ऐसे बड़े हाथी को देखा १४ जो कि छः मुखवाला और बारह चरण से चलनेवाला श्वेत श्यामवर्ण क्रमपूर्वक चलनेवाला सैकड़ों वृक्ष और वल्लियों से ढकाहुआथा (यहांपर गजको वर्षकी समाप्ति छःमुखको छःऋतु और श्वेत कृष्णवर्णों को दोनों पक्ष बारह चरण को बारहमहीने वल्लीको जीवन और वृक्षको आयुर्दाजानो १५) इसकेपीछे बड़ी शाखाओंपर लटकनेवाले अर्थात्

बाल्यतरुण और वृद्धावस्था में लटकतेहुये द्विज को जानो नानाप्रकारका रूप रखनेवाले श्वेतवर्ण घोर और बड़े भय के उत्पन्न करनेवाले १६ और प्रथमही घरबनाकर सन्तानके द्वारा वृद्धि पानेवाले भौंरे शहदको इकट्ठा करके निवास करतेहैं हे भरतर्षभ वह भौंरे १७ वारम्वार जीवधारियों के स्वादिष्टरसों की इच्छा करतेहैं जिन्होंसे बालक आकर्षण किये जाते हैं उन रसों की बड़ीधारा सदैव गिरती हैं १८ तब लटकताहुआ वह जीव सदैव धाराओं को पानकरताहै संकट में भी इस पानकरनेवाले की इच्छापूर्ण नहीं हुई १६ वह अतृप्तहोकर सदैव बारम्बार उसको चाहता है हे राजा जीवन में उसकी अप्रीति नहीं उत्पन्नहुई २० उसीमें मनुष्य के जीवन की आशा नियत है श्वेत कृष्ण रंगवाले चूहे अथवा रात्रि दिन उस वृक्षरूपी आयुर्दाको काटतेहैं २१ दुर्गम्य बनकेपास बहुतसे सर्प अर्थात् रोग और बड़ी उग्र स्त्री अर्थात् बृद्धावस्था और कूपकेनीचे सर्प अर्थात् मृत्यु और कूपके मुखपर हाथी अर्थात् पूर्णवर्ष २२ और वृक्षके गिरने से भय है और चूहोंसे पांचवां भयहै और शहदके लोभसे छठेभयको कहाहै २३ इसप्रकार संसार सागरमें पड़ाहुआ यह जीव वर्त्तमान होता है और जीवनकी आशा में वैराग्य को नहीं पाताहै २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठा अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले कि बड़ा आश्चर्य है कि निश्चय बड़ादुःखहै और उसकी स्थिति भी दुःख रूपहै हे वक्ताओंमें श्रेष्ठ उसमें उसकी प्रीति और तृप्ति किसप्रकारसे है१ वहदेश कहां है जिसमें यह जीव धर्मसंकट में निवास करताहै और वह मनुष्य उस बड़े भयसे कैसे छूटैगा २ यह सब मुझसे कहो यह बहुत अच्छाहै तब हम काममें लावेंगे निश्चय उसके छुटानेके लिये मेरेऊपर बड़ीकृपा उत्पन्नहुई है ३ विदुरजी बोले हे राजा मोक्ष चाहनेवाले पुरुषों ने यह दृष्टांत वर्णन कियाहै जिस से कि मनुष्य परलोकमें सुन्दर गतिको पाता है ४ जो वह महावन कहाजाताहै वही महा संसार है और जो यह दुर्गम्यवन है वही संसारवन है ५ जो सर्प तुम से कहे वहीरोग हैं वहां बड़े शरीरवाली जो स्त्री निवास करती है ६ उसको ज्ञानियों ने वर्णरूपकी नाश करनेवाली वृद्धावस्था कहाहै हे राजा वहां जो कूपहै

वह शरीरधारियोंका शरीरहै ७ और जो बड़ासर्प उस कूपकेभीतर निवास करता है वही काल है यह सब भूतोंका नाश करनेवाला और जीवात्माओं का हरने वालाहै ८ और कूपके मध्यमें जो वल्ली उत्पन्नहुई वह मनुष्य उसके बिस्तार में लटकताहै वही शरीरधारियों के जीवनकी आशाहै ९ और कूपके मुखपर जोछः मुखवाला हाथी बृक्षकी शाखाओं के चारोंओर चेष्टा करताहै वही पूर्ण वर्षहै १० उसके छः मुख ऋतु और वारह चरण महीने कहे हैं उसी प्रकार जो चूहे और सर्प बृक्ष को काटते हैं ११ उनको बिचारवान् पुरुषों ने दिन रात्रि कहाहै उसमें जो वह भौंरे हैं वह नाना इच्छा कही हैं १२ और जो वह शहद की बहुतसी धारा गिरती हैं उनको काम रसजानो जिसमें मनुष्य डूबते हैं १३ जिन्होंने इस प्रकार संसार चक्र की गतिको जाना है निश्चय करके वह मनुष्य संसार चक्र के पाश को काटते हैं १४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हे महात्मातत्त्वदर्शी आश्चर्य्य है कि आपने मोक्ष देनेवाली कथा कही उसको आप फिर मुख्यता समेत कहो मैं सुनना चाहताहूं १ बिदुर जी बोले सुनो मैं फिर उस मार्ग के क्रमको कहताहूं जिसको सुनकर ज्ञानीलोग संसारसे छूटतेहैं २ हे राजा जैसे कि बड़े मार्ग्ग में नियत मनुष्य जहां तहां थक कर निवास करताहै ३ हे भरतबंशी इसीप्रकार अज्ञानी मनुष्य संसारमें सृष्टिरूप गर्भ में बारम्बार निवासको करताहै और ज्ञानीलोग शीघ्र जाते हैं ४ इस हेतुसे शास्त्रज्ञ लोगोंने इसको मार्ग्ग कहाहै और जिन ज्ञानियोंने जिस संसारको घन बन कहाहै ५ हे पुरुषोत्तम वह इन स्थावर और जङ्गमजीवोंका चलायमान चक्र है पण्डित उसकी इच्छा नहीं करता है ६ शरीरधारियों के शरीर और चित्तसे सम्बन्ध रखनेवाले जो रोगहैं उनको ज्ञानी लोग गुप्त और प्रकट रूप सर्प कहते हैं ७ हे भरतवंशी निर्बुद्धी मनुष्य उन्होंसे दुःखपानेवाले और घायल होकर भी अपने कर्म्मरूपी सर्प्पोंसे व्याकुलताको नहीं पाते हैं हे राजा जब मनुष्य उन रोगों से भी छूटताहै तब उस पुरुषको रूपकी बिनाश करनेवाली जराअवस्था दबालेती है ८।९ जोकि शब्द, रूप, रस, स्पर्श और नानाप्रकारकी गन्धियों से

भी निराधार बड़ी कीचमें चारोंओर से डूबाहुआहै पूर्ण वर्ष छःऋतु बारह महीने दोनों पक्ष दिनरात और उनकी सन्धियां यह सब क्रमपूर्व्वक उसके रूप और अवस्थाको चीण करते हैं १० । ११ यह कालकी निधिहै दुर्बुद्धी लोग उनको नहीं जानते हैं सब जीवोंको उनके कर्म्म से ईश्वरका लिखाहुआ कहा है १२ शरीरधारियों का देहरथहै चिन्ता सारथी है इन्द्रिय घोड़े हैं और कर्म्मबुद्धी उस रथकी बागडोरहै १३ जो पुरुष उन दौड़नेवाले घोड़ोंके पीछे दौड़ताहै वह इस संसारचक्रमें चक्रके समान घूमताहै १४ जो जितेन्द्रिय उनको बुद्धिसे आधीन करता है वह चक्रके समान घूमनेवाले इस संसार चक्रमें लौटकर नहीं आताहै १५ वह संसार में भी घूमते हैं परन्तु घूमतेहुये मोहको नहीं पाते हैं और पूर्व्व प्रकारसे घूमताहुआ पुरुष मोहसे राज्यपुत्र और सुहृज्जनों के विनाशको पाता है १६ हे राजा जिस दुःखको तुमने पायाहै वही दुःख संसार के घूमनेवालों के लिये भी उत्पन्न होताहै १७ इस हेतुसे ज्ञानीको उचितहै कि इस संसार से छूटने का उपायकरे इसमें कभी भूल और देर न करनी चाहिये नहीं तो सैकड़ों शाखा वाला वृक्ष वृद्धिको पाताहै १८ हे राजा जो पुरुष जितेन्द्रिय क्रोध लोभसेरहित सन्तोषी और सत्यवक्ताहै वह शान्तीको पाताहै १९ हे भरतबंशी यह भी कहाहै कि पश्चात्ताप करनेसे दुःख होताहै ज्ञानी बड़े दुखोंकी औषधी ज्ञानकोही समझे २० इसलोक में जितेन्द्रिय मनुष्य बड़ी दुष्प्राप्य ज्ञानरूपी महाऔषधीको पाकर दुःखरूपी बड़े रोगको उससे काटे २१ घोर दुःखसे वैसे न तो पराक्रम छुड़ाताहै न धन मित्र और सुहृद्गण छुड़ाते हैं जैसे कि जितेन्द्रियात्मा छुड़ाताहै २२ हे भरत-बंशी इसकारण से सबजीवों की प्रीति में नियत होकर सुन्दर प्रकृतिको पाकर जितेन्द्रियपन त्याग और सावधानी को प्राप्तकरे यह तीनों ब्रह्मके घोड़े हैं २३ हे राजा जो पुरुष मृत्युके भयको त्यागकरके शीतल किरणों से युक्त चित्तरूपी रथपर नियतहै वह ब्रह्मलोकको पाताहै २४ और जो पुरुष सब जीवों को निर्भ-यता देताहै वह सर्व्वव्यापी परमेश्वर के उस उत्तम स्थान को जाता है जो कि मायाकी उपाधियों से रहितहै २५ मनुष्य जो निर्भयता देने से फलपाताहै वह हजारोंयज्ञ और सदैव व्रतोंके भी करनेसे नहीं पासक्ताहै २६ जीवोंमें आत्मा से अधिक कोई प्यारा नहीं है हे भरतबंशी सब जीवों का अप्रियमरण नामहै इस हेतुसे ज्ञानीको सब जीवोंपर दयाकरना चाहिये नानाप्रकारके मोहसे युक्त अ-

ज्ञानके जालसे ढकेहुये २७। २८ अल्पदृष्टी निर्बुद्धी मनुष्य जहांतहां घूमते हैं हे राजा सूक्ष्मदृष्टीवाले ज्ञानी सनातन ब्रह्मको पाते हैं २९॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि राजाधृतराष्ट्र विदुरजीके इसवचनको सुनकर पुत्रशोक से दुःखी और मूर्च्छावान् होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा १ सब बान्धव व्यासजी विदुर जी सञ्जय अन्य सुहृद् द्वारपाल और जो २ उसके अङ्गीकृत थे उन सबने उस प्रकार पृथ्वीपर पड़ेहुये अचेत उसधृतराष्ट्र को देखकर सुखदायी शीतल जलसे छिड़का और पंखोंसे हवाकरी २। ३ और उपायोंसे चैतन्य करतेहुये उनलोगोंने हाथोंसे शरीरको स्पर्श किया इसकेपीछे उसदशावाले धृतराष्ट्रको बहुत देरतक विश्वास कराया ४ फिर बहुत देरकेपीछे सचेतताको पानेवाला वह पुत्रशोकसे युक्त राजाधृतराष्ट्र बहुत देरतक विलाप करनेवाला हुआ निश्चयकरके मनुष्योंमें जन्मको और नरलोकों में परिग्रहको धिक्कारहै जिससे कि दुःखकामूल बारम्बार उत्पन्न होताहै ५। ६ हे समर्थ पुत्र धन ज्ञानवाले और नातेदारों का भी नाश होताहै और विष अग्नि के समान बहुत बड़ा दुःखप्राप्त होताहै ७ जिससे सब अंग भस्महोकर बुद्धिका भी नाशहोताहै और जिससे भयभीत मनुष्य मरणको बहुत मानताहै ८ सो यह दुःख प्रारब्धके विपरीततासे मैंने पायाहै प्राणत्यागके सिवाय उसके अन्तको अन्य किसी प्रकारसे नहीं पाताहूं ९ मैं उसी प्रकारकरूं-गा हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ व्यासजी देखो उसधृतराष्ट्रने वड़े ब्रह्मज्ञानी महात्मा पिता से यह कहकर अचेतताको पाके बड़े शोकको पाया अर्थात् वह राजा धृतराष्ट्र ध्यानकरताहुआ मौनहोगया १०। ११ प्रभु व्यासजी उसके उसबचनको सुनकर पुत्रशोकसे दुःखी अपने पुत्रसे यह बचन बोले १२ हेमहाबाहु धृतराष्ट्र जो मैंकहूं उसको सुनो तुम शास्त्रज्ञ और शास्त्रोंके स्मरण रखनेवाले बुद्धिके स्वामी और धर्म्म अर्थ में भी कुशलहो १३ हे शत्रुओं के तपानेवाले तुमसे कोई बात अ-ज्ञात नहीं है हेबड़े ज्ञानी तुम जीवधारियों की अनित्यताको जानते हो हेभरत-वंशी इस विनाशवान् जीवलोकमें बिनाशवान् निवास स्थानके होनेपर जीवन और मृत्युमें किसनिमित्त शोचतेहो १४। १५ हेराजेन्द्र इसशत्रुता की प्रत्यक्षता

आपके दृष्टिगोचरहै कालयोगसे आपके पुत्रको कारण बनाकर सबमारेगये १६ हेराजा कौरवोंको अवश्य भावी नाश होनेपर उनपरमगति पानेवाले बीरों को किसहेतुसे शोचतेहो १७ हेमहाबाहु राजाधृतराष्ट्र मैंने और बुद्धिमान् बिदुरनेभी सबप्रकार से सन्धिमें उपाय किया १८ बहुत कालतक उद्योग करनेवाले किसी जीवसे भी दैवका रचाहुआ मार्ग मेरे मतसे बन्दकरने के योग्यनहीं है १९ मैंने अपने नेत्रों के समक्षमें देवताओं का जो कार्य सुना मैं उसको उसीप्रकारसे कहताहूं जिससे कि तेरी स्थिर बुद्धिहोय २० थकावट से रहित मैं एकसमय बड़ी शीघ्रतासे इन्द्रकी सभामेंगया और सब इकट्ठेहुये देवताओंको देखा २१ हेराजा वहांपर मैंने नारदादिक सब देवऋषियों को और पृथ्वीको भी देखा २२ यह सब मिलकर अपने कार्यके निमित्त इन्द्रादिक देवताओं के सम्मुख वर्त्तमानहुये तब पृथ्वी ने समीपजाकर उन इकट्ठे देवताओंसे कहा २३ कि हेमहाभाग देवतालोगो आप लोगोंने ब्रह्मलोक में जिस मेरे कार्य्य करनेकी प्रतिज्ञाकी है उसको शीघ्र करो २४ लोकपूजित बिष्णुजी देवसभामें उसके उस बचनको सुनकर हँसतेहुये उस पृथ्वी से यह बचन बोले २५ धृतराष्ट्रके सौ बेटों में बड़ा बेटादुर्योधन नामसे प्रसिद्धहै वह तेरा कार्य्य करेगा २६ उस राजाको पाकर अभीष्ट प्राप्तकरेगी उसके पीछे कुरुक्षेत्रमें इकट्ठेहोनेवाले और दृढ़शस्त्रोंसे प्रहार करनेवाले राजालोग परस्पर मारेंगे हे देवी इसकेपीछे युद्धमें तेरे भारकानाशहोगा २७।२८ हे शोभावान् शीघ्र अपनेस्थान को जावो और सृष्टिको धारणकरो हे राजाओं में श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र संसारके नाशके कारणसे वह तेरापुत्र २९ कलियुग अंश गान्धारी में उत्पन्न हुआथा जोकि अशान्त चपल क्रोधका अभ्यासी और दुःखसे पराजय होनेवालाथा ३० दैवयोगसे उसकेभाई भी उसीप्रकारके उत्पन्न हुये और मामा शकुनी और बड़ामित्र कर्ण ३१ और बहुतसे राजालोग संसार के नाशके निमित्त उत्पन्न हुये जैसा राजा उत्पन्न होता है उसीप्रकार के उसके आदमी भी उत्पन्न होते हैं ३२ जो स्वामी धर्म्मका अभ्यासी होताहै उस दशामें अधर्म भी धर्मता को पाता है स्वामियों के गुण दोषों से निस्सन्देह उसीप्रकार के नौकर चाकर होंगे ३३ हे राजा तेरेपुत्र दुष्ट राजाको पाकर इस संसारसे गये महाबाहु नारदजी इस प्रयोजन को मुख्यता समेत जानते हैं ३४। ३५ हे भरतवंशी तेरे पुत्र महात्मा पाण्डव हैं वह थोड़ा भी अपराध नहीं करते जिन्होंके हाथ से यह

सब संसार मारागया ३६ तेरा भलाहोय प्रथमही राजसूययज्ञ में नारदजीने युधिष्ठिरकी सभामें ब्रर्णन कियाथा ३७ कि हे कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिर कुछ काल पीछे कौरव और पाण्डव परस्पर सम्मुख होकर नाशको पावेंगे जो तेरे करनेके योग्य है उसको कर ३८ तब पांडवों ने नारदजीके बचन को सुनकर शोच किया यह देवताओंकी गुप्त और सनातन बातें मैंने तुझसे कहीं ३९ अब तू अपने प्राणों पर दया और पाण्डवोंपर प्रीतिकर जिससे कि दैवके कर्मको जानकर तेरा शोक दूर होय ४० हे महाबाहु यहबात मैंने प्रथमही सुनीथी जो कि धर्मराजके उत्तम राजसूययज्ञ में कही गई थी ४१ मुझसे गुप्त बातके कहनेपर धर्म्मराज के पुत्रने कौरवोंके युद्ध न होनेमें उपाय किये परन्तु दैव बड़ा प्रबलहै ४२ हे राजा काल की रचीहुई जो सनातन बिधि है वह इस लोक में किसी जीवधारी से उल्लंघन करनेके योग्य नहीं है ४३ हे भरतबंशी धर्म्मात्मा आप प्राणियों की गति और अगतियों को भी जानकर इनमें अचेत होतेहो धर्म्मात्मा और बुद्धिमान् ४४ राजा युधिष्ठिर तुमको शोक से दुःखी और बारबार अचेत होनेवाला जानकर अपने प्राणोंको भी त्याग करसक्ताहै ४५ वह धैर्यवान् सदैव पशु पक्षियोंपर भी दयाका करनेवालाहै हे राजेन्द्र वह तुझपर कैसे कृपा नहीं करेगा ४६ हे भरतबंशी मेरी आज्ञासे दैवके उल्लंघन न होनेसे और पाण्डवोंकी दयासे प्राणोंको धारण करो अर्थात् जीवतेरहो ४७ इसप्रकार लोकमें तुझ बर्त्तमान रहनेवालेकी कीर्त्ति होगी और हे तात बड़ा धर्म और बहुत कालतक तपाहुआ तप प्राप्त होगा ४८ हे महाराज ज्वलितरूप अग्नि के समान उत्पन्न होनेवाले पुत्र शोक को ज्ञान रूपी जलसे शान्त करनेके योग्यहो ४९ वैशम्पायन बोले कि धृतराष्ट्र उन बड़े तेजस्वी ब्यासजी के इस बचन को सुनकर एक मुहूर्त्त अच्छेप्रकार ध्यानकरके ५० यह बोला कि हे पिता मैं बड़े शोक जालसे कठिन ढकाहुआ बारम्बार अचेत होता सचेतता में नहीं आताहूं ५१ दैवकी आज्ञासे उत्पन्न होनेवाले आप के इस बचनको सुनकर मैं प्राणोंको धारण करूंगा अर्थात् जीवता रहूंगा और शोच करनेमें प्रवृत्त नहीं हूंगा ५२ हे राजेन्द्र सत्यवती के पुत्र ब्यासजी धृतराष्ट्र के इस बचन को सुनकर उसीस्थानमें अन्तर्द्धान होगये ५३ ।

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

जनमेजय बोले हे ब्रह्मऋषि भगवान् व्यासजी के जानेपर राजा धृतराष्ट्रने क्या किया वह मुझसे कहनेको योग्यहो १ उसीप्रकार धर्मपुत्र बड़े साहसी राजा युधिष्ठिर और कृपाचार्य्यादिक तीनोंने क्याकिया २ अश्वत्थामाका कर्म्म सुना और परस्पर दियाहुआ शाप सुना अब आप उस पूर्व्व वृत्तान्तको कहिये जिस को सञ्जयने कहाहै ३ वैशम्पायन बोले कि दुर्य्योधनके और सब सेनाके मरनेपर अचेत सञ्जय धृतराष्ट्रकेपास आये ४ हे राजा सब राजा नाना देशोंसे आकर आपके पुत्रों समेत पितृलोकोंको गये ५ हे भरतबंशी सदैव प्रवृत्त अन्तमें शत्रुता करनेके अभिलाषी आपके पुत्रके कारणसे सब संसार मारागया ६ हे राजा पुत्र पौत्र और पिता आदिक जो रणभूमिमें मरे हैं उनसबके कर्मोंको क्रमपूर्वक करावो ७ वैशम्पायन बोले कि राजाधृतराष्ट्र सञ्जयके उसघोर बचनको सुनकर निर्जीवके समान निश्चेष्ट होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा ८ सब धर्म्मोंके ज्ञाता बिदुरजी उस पृथ्वीपर सोनेवाले राजाके पास आकर इस बचनको बोले ९ हे भरतर्षभ लोकेश्वर राजाधृतराष्ट्र उठो शोच मतकरो सब जीवधारियों की यही परमगति है १० हे भरतबंशी जीव प्रारम्भ में अभावरूप है मध्य में भावरूप है उस में क्या बिलाप करना चाहिये ११ शोचताहुआ मृत्युको नहीं पाताहै न शोचताहुआ मनुष्य मरताहै ऐसे स्वभाववाले लोक में किसलिये शोच करते हो १२ युद्ध न करता मरता है और युद्ध करता नहीं मरता है हे महाराज कोई जीव काल को पाकर उल्लङ्घनकर वर्त्तमान नहीं रहता १३ यह काल नानाप्रकारके सब जीवों को खैंचताहै हे कौरवश्रेष्ठ कालेका कोई मित्र है न शत्रुहै १४ जिस प्रकार बायु सब ओर तृणोंकी नोकोंको तिर्रे बिर्रे करताहै उसीप्रकार जीव भी कालके आधीन होते हैं १५ एक साथ चलनेवाले और वहां जानेवाले सब जीवों के मध्य में जिसको काल प्राप्त होताहै वहां कौन बिलापहै १६ हे राजा तुम जिन मृतकों को शोचते हो वह महात्मा शोचके योग्य नहीं हैं वह सब स्वर्ग्ग को गये १७ दक्षिणावाले यज्ञ तप और ब्रह्मज्ञानके द्वारा उस प्रकार स्वर्गको नहीं पाते हैं जैसे कि शरीर की प्रीति त्यागनेवाले शूरबीर पाते हैं १८ सब वेद के जाननेवाले अच्छे प्रकार ब्रत करनेवाले और सब सम्मुख लड़नेवाले शूर मारे गये इसमें

कौन बिलापहै उन उत्तम पुरुषों ने शूरों की शरीररूपी अग्नियों में बाणों को होमा और होमे हुये बाणोंको सहा १६। २० हे राजा इस प्रकारके स्वर्ग के उत्तम मार्गको तुझसे कहताहूं इस लोकमें युद्धसे बिशेष क्षत्रियका कुछ कर्म बर्त्तमान नहींहै २१ उन महात्मा शूर और युद्धको शोभा देनेवाले क्षत्रियों ने परमगति को पाया वह सब शोचके योग्य नहीं हैं २२ हे पुरुषोत्तम बुद्धि से चित्त को बिश्वास देकर शोच मतकरो अब शोक में डूबेहुये तुम करने के योग्य जलदानादिक क्रियाके त्यागने के योग्य नहीं हो २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिजनमेजयविदुरवाक्यंनामनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले कि पुरुषोत्तम धृतराष्ट्र बिदुरजी के उस बचन को सुनकर सवारी तैयार करो यह कहकर फिर बचनको बोला १ बधू कुन्तीआदि अन्य सब स्त्रियोंको लेकर गान्धारी समेत सब भरतबंशियों की स्त्रियों को शीघ्र लावो २ वह धर्मात्मा शोकसे हतचित्त बुद्धिमान् धृतराष्ट्र बड़े धर्म्मवान् बिदुरजी से इस प्रकार कहकर सवारीपर सवार हुये ३ पतिके बचन से चलायमान शोकसे पीड़ित गान्धारी कुन्ती और अन्य सब स्त्रियों समेत वहां गये जहांपर राजा धृतराष्ट्र थे ४ अत्यन्त शोकयुक्त वह स्त्रियां राजाको पाकर परस्पर वार्त्तालाप करके चलीं और बड़े उच्चस्वर से पुकारीं ५ उन स्त्रियोंसे अधिक पीड़ावान् उन बिदुर जी ने आंशुओं से पूर्ण उन स्त्रियों को अच्छी रीति से बिश्वास कराया और पालकियों में बैठाकर बाहरचले ६ इसकेपीछे कौरवों के सब स्थानों में बड़ाशब्द उत्पन्न हुआ और सब नगर लड़कों से वृद्धोंतक शोक से पीड़ावान् हुआ पूर्ब समयमें जो स्त्रियां देवसमूहों से भी नहीं देखीगई थीं वह सब बिधवा स्त्री अन्य अन्य मनुष्यों से भी देखीगईं ७ । ८ शिरके बालों को फैलाकर और सुन्दर भूषणों को उतारकर एक बस्त्र रखनेवाली स्त्रियां अनाथके समान बाहर निकलीं वह स्त्रियां श्वेत पर्ब्बतों के समान गृहों से ऐसे निकलीं जैसे कि पहाड़ोंकी गुफाओंसे ऐसी हिरणी निकलें जिनके कि यूथप हिरण मारेगये हों ९।१० हे राजा तब उन स्त्रियोंके बड़े २ समूह शोकसे पीड़ावान् ऐसे चले जैसे कि घोड़ियोंके बच्चे मैदान में निकलते हैं ११ भुजाओं को पकड़कर पिता भाई और पुत्रों को

भी पुकारती हुई प्रलयकालीन संसार के नाशकी दिखलानेवाली हुई १२ बिलाप करते रोते जहां तहां दौड़ते शोकसे हतज्ञान उन स्त्रियोंने करने के योग्य कर्मको नहीं जाना १३ पूर्व्वसमय में स्त्रियोंने सखियों की भी लज्जाको पाया वह एक वस्त्र रखनेवाली बिना परदेवाली स्त्रियां सासों के आगे २ चलीं १४ हे राजा जिन्होंने बहुत थोड़े शोकों में परस्पर बिश्वास कराया तब उन शोक से ब्याकुल स्त्रियों ने परस्परदेखा १५ उन रोनेवाली हजारों स्त्रियों से घिराहुआ महा दुःखी धृतराष्ट्र नगरसे चलकर शीघ्रही मैदानमेंगया १६ शिल्पी ब्यापारी बैश्य और सब कर्म्मोंसे निर्व्वाह करनेवाले वह सब राजाकोआगे करके नगरसे बाहरनिकले १७ कौरवोंके नाशमें उन पीड़ावान् और पुकारनेवालों के बड़ेशब्द सब भवनोंको पीड़ावान् करते प्रकटहुये १८ जैसे कि प्रलयकाल बर्त्तमान होने पर भस्महोनेवाले जीवोंका नाशहोताहै उसीप्रकार इस नाशका भी होना जीवों ने माना १९ अर्थात् हे महाराज इस कौरवों के नाश होनेपर अत्यन्त ब्याकुल चित्त बड़े प्रीतिमान् वह पुरबासी कठिनतासे पुकारे २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिधृतराष्ट्रनिर्गमनेदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले कि फिर एककोश जाकर उन कृपाचार्य्य अश्वत्थामा और कृतबर्मा महारथियोंको देखा १ वह शोकके अश्रुओंसे पूर्णकण्ठ से रोदन करते ज्ञानरूप नेत्र रखनेवाले अपने स्वामी राजाको देखतेही बहुत श्वासलेकर यह बचन बोले २ हे महाराज राजाधृतराष्ट्र आपका पुत्र बड़े कठिन कर्म्मको करके साथियों समेत इन्द्रलोकको गया ३ हे भरतर्षभ दुर्योधन की सेनामेंसे हम तीन रथीबचे हैं शेष सब आपकी सेना नाशहोगई ४ इसकेपीछे शारद्वत, कृपाचार्य्य राजासे यह कहकर पुत्र शोकसे पीड़ावान् गान्धारीसे यह बचन बोले कि निर्भय युद्ध करनेवाले शत्रुओं के बहुत समूहों को मारनेवाले बीरलोगों के कर्मों को करके उन तेरे पुत्रों ने मरणको पाया ५ । ६ निश्चय करके वह शस्त्रोंसे बिजय किये हुये निर्मल लोकोंको पाकर और प्रकाशमान शरीरमें नियत होकर देवताओंके समान बिहार करते हैं ७ उन शूरोंमें से कोई शूरबीर मुखफेरनेवाला नहीं हुआ किन्तु शस्त्रोंसे मरणको पाया और हाथ जोड़कर किसीने भी नाश

को नहींपाया ८ प्राचीन वृद्धोंने इसप्रकार युद्धमें शस्त्रोंसे क्षत्रियके मरणको परमगति कहा है उस हेतु से वह शोचकरने के योग्य नहीं हैं ९ हे राजा उन्होंके शत्रु पाण्डव भी वृद्धियुक्त नहीं हैं अश्वत्थामा आदिक हमलोगों ने जो किया उसको सुनो १० अधर्म के साथ भीमसेन के हाथसे तेरे पुत्रको मराहुआ सुनकर हमलोगों ने सोतेहुये लोगों से युक्त डेरे को पाकर पाण्डवीय शूरवीरोंका नाश किया ११ सब पांचाल जिनका अग्रवर्त्ती धृष्टद्युम्नथा उन सबको मारा राजाद्रुपदके और द्रौपदी के सब पुत्रोंको भी मारा १२ इसरीति से हम युद्धमें तेरेपुत्रके शत्रुसमूहों का नाश करके भागे हैं इस हेतु से हम तीनों यहां नियत होने को समर्थ नहीं हैं १३ वह शूरवीर पाण्डव महाधनुषधारी क्रोधके आधीन शत्रुताका बदला लेने के अभिलाषी हमारी खोजमें शीघ्रतासे आते हैं १४ हे यशस्विनी वह पुरुषोत्तम शूर अपने पुत्रोंको मराहुआ सुनकर मतवाले और खोज करने के अभिलाषी शीघ्रआते हैं १५ हे राजा तुम आज्ञादो और बड़े धैर्य्य में नियत हो प्रारब्ध के अन्तपर होनेवाली मृत्युको और शुद्ध क्षत्रिय धर्मको भी विचारो १६ हे भरतवंशी कृपाचार्य कृतवर्मा और अश्वत्थामा इन तीनों ने इसप्रकार राजा से कहकर और प्रदक्षिणा करके १७ बुद्धिमान् राजाधृतराष्ट्र को देखते अपनेघोड़ों को गंगाजी की ओर चलायमान किया १८ हे राजा तब वह महारथी दूर जाकर परस्पर बिदाहोकर व्याकुलचित्त तीनों तीनों ओरको चलदिये १९ उनमें से शारद्वत कृपाचार्य्य हस्तिनापुर को कृतबर्मा अपने देशको और अश्वत्थामा व्यासजी के आश्रमको गये २० इसरीतिसे वह वीर उन महात्मा पांडवोंका अपराध करके भयसे पीड़ावान् परस्पर देखते हुये चल दिये २१ अर्थात् वह शत्रुबिजयी महात्मा वीर सूर्योदयसे पूर्वही इच्छानुसार चलदिये २२ हेराजा कृतबर्मा और कृपाचार्य से अश्वत्थामाके जुदेहोनेपर उनमहारथी पाण्डवों ने द्रोणाचार्य के पुत्रको पाकर और पराक्रम करके युद्धमें बिजय किया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वण्येकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि सब सेनाओं के मरनेपर धर्म्मराज युधिष्ठिरने हस्तिनापुर से निकलेहुये अपने वृद्धपिताको सुना १ हे महाराज तब पुत्रशोकसे पीड़ावान्

वह युधिष्ठिर भाइयों समेत उस पुत्रशोक से पूर्ण बड़ी चिन्तावाले धृतराष्ट्र की ओरचला २ महात्माबीर श्रीकृष्णजी सात्यकी और युयुत्सु इनतीनों समेतचला ३ और बड़े दुःखसे पीड़ित शोकमें डूबीहुई द्रौपदी पांचालोंकी उनस्त्रियों समेत जो वहां आतीथीं उसके पीछे चली ४ हे भरतर्षभ उसने गंगाजी के समीप कुररी पक्षी के समान पीड़ितहोकर पुकारती हुई स्त्रियों के समूहों को देखा ५ उन पुकारनेवाली ऊपरको हाथ महापीड़ित इनप्रिय अप्रिय बचनों समेत रोनेवाली हज़ारों स्त्रियों से वह राजाधृतराष्ट्र घिराहुआ था कि अब राजा युधिष्ठिरकी वह दया और धर्मज्ञता कहां है जो पिता भाई मित्र और गुरुओं के पुत्रोंको भी मारा ६।७ हे महाबाहु द्रोणाचार्य्य भीष्मपितामह और जयद्रथको भी मरवाकर तेरा चित्त कैसाहुआ ८ हे भरतबंशी पिता भाई और द्रौपदीके पुत्र और अजेय अभिमन्युको न देखनेवाले तुझको राज्यसे कौनप्रयोजन है ९ हेमहाबाहु धर्मराज युधिष्ठिरने कुररी पत्तीके समान पुकारनेवाली उन स्त्रियोंको उल्लंघन करके ताऊजीको दण्डवत्करी १० इसकेपीछे शत्रुओं के बिजयकरनेवालेने ताऊजी को नमस्कारकरके अपने नामकोकहा और उनसब पांडवोंनेभी अपना२ नाम बर्णन किया ११ पिता और पुत्रोंके मरनेसे पीड़ावान् और अप्रसन्न शोकदुःखी धृतराष्ट्र अपने पुत्रोंके नाश करनेवाले उसयुधिष्ठिरसे स्नेह पूर्वक मिला १२ हे भरतबंशी धर्मराजसे मिलकर और विश्वासदेकर फिर जलानेवाले अग्निके समान दुष्टात्मा ने भीमसेनको चाहा १३ शोकरूप वायुसे चलायमान उसके क्रोधकी वह अग्नि भीमसेनरूपी वनको जलाने की अभिलाषिणी दिखाईपड़ी १४ हे राजा हरिने भीमसेन के विषय में उसके अशुभ संकल्पको जानकर प्रथमही सुगमकर्मी श्रीकृष्णजी ने वह मूर्त्ति मँगालीथी १५ जो लोहेकी मूर्त्ति पूर्व समयमें राजा दुर्योधनने बनवाईथी और चित्तसे भीमसेनको चिंतनकरके योगभूमिमें जिसका आवाहन कियाथा बड़ेबुद्धिमान् श्रीकृष्णजीने प्रथमही उसकीचेष्टासे प्रकटहोने वाले वृत्तान्त को जानकर और भीमसेन को हाथोंसे रोककर लोहेका भीमसेन धृतराष्ट्रके हाथमें देदिया १६।१७ वहां बड़ेज्ञानी श्रीकृष्णजीने यह कर्मक्रिया उस लोहेके भीमसेनको हाथोंसेपकड़कर १८ उसको भीमसेन मानकर बलवान् राजा ने तोड़डाला साठहज़ार हाथीके बलसमान उसबलवान् राजाने लोहेके भीमसेनको तोड़कर १९ घायल छातीने मुखसे रुधिरको गिराया इसकेपीछे इसीप्रकार

रुधिरसे भराहुआ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा २० जैसे कि प्रफुल्लितनोक शाखावाला पारिजातनाम वृक्ष गिरताहै तब बुद्धिमान् सञ्जयने उसको पकड़लिया २१ और शांतपूर्वक विश्वास कराताहुआ उससे बोला कि इसप्रकार मतकरो फिर वह बड़ा साहसी क्रोधसे पृथक् और रहितहोकर २२ शोकसे युक्त राजा हाय भीमसेन यह शब्द कहके पुकारा उसको भीमसेन के मारनेसे पीड़ावान् और क्रोध से रहित जानकर २३ पुरुषोत्तम वासुदेवजी इसवचनको बोले हे समर्थ धृतराष्ट्र शोचमत करो यह भीमसेन तुम्हारे हाथसे नहीं मारागया तुमने यह लोहेकी मूर्त्तिगिराई है २४ हे भरतर्षभ तुमको क्रोधके वशीभूत देखकर मृत्युकी डाढ़ में गयाहुआ भीमसेन मैंने खैंचा २५ हेराजाओं में श्रेष्ठ कोई तेरे समान बलवान् नहीं है हेमहाबाहु कौन मनुष्य तेरी भुजाओंके पकड़नेको सहसक्ताहै २६ जैसे कि मृत्युको प्राप्त होकर कोई जीवता नहीं छूटताहै इसीप्रकार तेरी भुजाओंके मध्यको पाकर कोई जीवता नहीं रहसक्ताहै २७ हेकौरव जिस हेतुसे आपके पुत्रने भीमसेनकी जो यह लोहेकी मूर्त्ति बनवाई वही मूर्त्ति मैंने तेरे पास वर्त्तमान करी २८ हे राजेन्द्र पुत्रशोकसे दुःखी तेरा चित्तधर्म से पृथक् हुआथा उस हेतुसे तुम भीमसेन को मारना चाहते थे २९ हे राजा यह आपको योग्य नहीं है जो तुम भीमसेन को मारा चाहतेहो क्योंकि आपके पुत्र आयुर्दापूर्ण होजानेके कारण से किसी दशामें भी जीवते नहीं रहसक्के थे ३० इस हेतुसे सन्धिको अंगीकार करनेवाले हम लोगों ने सन्धि के विषय में जो कर्म्म किया उस सबको ध्यान करो शोक में चित्त मतकरो ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिआयसपुरुषभंगोनामद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि इसके अनन्तर नौकरलोग स्नान करानेके निमित्त इसके पास आकर वर्त्तमान हुये मधुसूदनजी इस स्नानसे निवृत्त होनेवाले राजा से बोले कि हेराजा तुमने वेद और नानाप्रकारके शास्त्र पढ़े पुराणों समेत शुद्ध राजधर्मों को सुना १।२ इस प्रकार पंडित और बड़े ज्ञानी बलाबलमें समर्थ होकर तुम अपने अपराधसे ऐसे क्रोधको किस निमित्त करतेहो हे भरतबंशी तभी मैंने भीष्मने द्रोणाचार्य्य ने और संजयने भी तुमसे कहाथा परन्तु हेराजा तुमने उस

बचनको नहीं किया ३।४ हेकौरव उससमय पांडवोंको बल और वीरतामें अधिक जानते और बारंबार निषेध कियेहुये भी तुमने हमारे वचनको नहीं किया ५ जो नियत बुद्धि राजा आप दोषों समेत देशकालके बिभाग को बिचारता है वह परम कल्याणको पाताहै ६ हित अनहित में समझाया हुआ जो पुरुष कल्याण बचनको अंगीकार नहीं करताहै वह अनीति में नियत आपत्तिको पाकर शोचताहै ७ हे राजा इस हेतुसे बिपरीत चलनेवाले अपने को देखो वृद्धोंके बचनों से बिपरीत चित्तवाले तुम दुर्योधनकी आधीनता में नियतहुये ८ और अपनेही अपराधसे आपत्ति में फँसे सो तुम भीमसेनको क्यों मारना चाहतेहो इस हेतुसे तुम अपने क्रोधको दूरकरो और अपने दुष्ट कर्मों को स्मरण करो ९ जिस नीच ने ईर्षा से उस द्रौपदीको सभा में बुलाया वह शत्रुताको बदला लेने के अभिलाषी भीमसेनके हाथ से मारागया १० अपनी और अपने दुरात्मा पुत्रकी अमर्यादगी को देखो जो तुमने निरपराधी पांडवों को त्याग किया अर्थात् राज्यका भाग नहीं दिया ११ बैशम्पायन बोले हे जनमेजय श्रीकृष्णजी के इसप्रकारके सत्य २ बचनों को सुनकर उस राजा धृतराष्ट्रने देवकीनन्दन से कहा १२ कि हे महाबाहु माधवजी जो आप कहते हैं वह सब यथार्थ है परन्तु बड़ी बलवान् पुत्र की प्रीति ने मुझको धैर्य्य से पृथक् कर दिया १३ हे श्रीकृष्णजी प्रारब्धकी बात है कि तुमसे रक्षित बलवान् सत्य पराक्रमी भीमसेनने मेरी भुजाके मध्यको नहीं पाया १४ हे माधवजी अब सावधान क्रोध से रहित बिगतज्वर मैं मझले बीर पाण्डवको देखा चाहताहूं महाराजाओं के और पुत्रों के मरनेपर मेरे सुख और प्रीति पाण्डवों में नियत होते हैं १५।१६ इसके पीछे बहुत रोतेहुये उस राजाने उन सुन्दर अंगवाले भीमसेन अर्जुन और पुरुषों में बड़े बीर नकुल और सहदेव को भी अंगों से स्पर्श किया और उन्होंको बिश्वास देकर कल्याणके बचन कहे अर्थात् आशीर्वाद दिये १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिजलप्रदानिकेधृतराष्ट्रकोपविमोचनेपाण्डवपरिष्वंगोनामत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले कि इसके पीछे धृतराष्ट्रसे आज्ञा लेकर वह कौरव पांडव भाई केशवजी समेत गान्धारी के पासगये १ इसके पीछे पुत्रों के शोकसे पीड़ा-

वान् निर्दोष गान्धारी ने उस मृतक शत्रुवाले युधिष्ठिर को पास आया हुआ जानकर शाप देना चाहा २ व्यासऋषि प्रथमही पाण्डवों के विषयमें उसके पाप रूप चित्तके विचारको जानकर सावधानहुये ३ और चित्तके समान शीघ्रगामी होकर वह महर्षी श्रीगंगाजीके पवित्र और सुगन्धित जलमें स्नान आचमनकर के उस स्थानपर आ पहुंचे और दिव्य नेत्रयुक्त अपने चित्त से देखते उस ऋषि ने वहां सब जीवों के चित्तके वृत्तान्तको जाना ४।५ शापके समयको निरादर करके कालकी शान्तिको वर्णन करते वह महातपस्वी कल्पवादी ऋषि पुत्रवधू से बोले ६ कि हे गान्धारी पाण्डव के ऊपर क्रोध न करना चाहिये अपने शाप वचनको रोककर इस मेरे वचनको सुनो ७ अठारह दिनतक विजय के अभिलाषी पुत्रने कहाहै कि हे माता शत्रुओं के साथ मुझ युद्ध करनेवाले को शुभ आशीर्वाद दो ८ हे गान्धारी उस विजयाभिलाषी से समय २ पर प्रार्थनाकरी हुई तुमने कहाहै कि जिधर धर्म है उधरही विजय है ९ हे गान्धारी मैं पूर्वसमय में तुझ दुर्य्योधन के शुभ आशीर्वाद से प्रसन्न करनेवाले के कहेहुये वचन को मिथ्या स्मरण नहीं करताहूं तुम उस प्रकारकी समाधि धारण करनेवालीहो १० इसी से राजाओं के कठिन युद्ध में पारको पाकर पाण्डवों ने युद्धमें निस्सन्देह विजयको पाया निश्चय करके उधरही धर्म अधिकहै ११ पूर्वसमयमें ऐसी क्षमावान् होकर अब किसहेतुसे तू क्षमा नहीं करती है हे धर्मकी जाननेवाली अधर्म को त्यागो जिधर धर्म्म है उधरही विजयहै १२ हे मनस्विनी सत्यवक्ता गान्धारी अपने धर्मको और कहेहुये वचनको स्मरण करके क्रोधकोरोको और इस दशा वाली मतहो १३ गान्धारीने कहा हे भगवन् मैं गुणमें दोषनहीं लगातीहूं और उनका नाशवान् होना नहीं चाहतीहूं १४ परन्तु पुत्रशोकसे मेराचित्त अत्यन्त व्याकुल होताहै जिसप्रकार पाण्डव कुन्ती से रक्षा के योग्यहैं उसीप्रकार मुझसे भी हैं १५ और जैसे मुझसे रक्षाके योग्यहैं उसीप्रकार धृतराष्ट्र से भी हैं दुर्योधन शकुनी १६ कर्ण और दुश्शासन के अपराधसे यह कौरवों का नाशहुआ इस में अर्जुन भीमसेन १७ नकुल सहदेव और युधिष्ठिरका भी कुछअपराध नहींहै यह परस्पर युद्ध करनेवाले अहंकारी कौरव १८ एकसाथ अन्य २ लोगोंके हाथ से मारेगये वह मेरा अप्रिय नहीं है परन्तु बासुदेवजी के देखते हुये भीमसेन ने कैसा कर्मकिया १९ कि बड़े साहसी ने गदायुद्धमें दुर्योधनको बुलाकरके और

शिक्षामें अधिक जानकर युद्धमें अनेक रीतिसे घूमनेवाले को २० नाभिकेनीचे घायल किया इस बातको सुनकर मैंने क्रोधको बढ़ाया वह शूरवीर युद्धमें प्राणों के अर्थ किसी दशामें भी धर्मको नहीं त्यागता है जो कि धर्मज्ञ महात्मालोगों से उपदेश कियागयाहै २१। २२॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिजलप्रदानिकेगान्धारीसांत्वनायांचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

पंद्रहवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि तब भीमसेन उसके उस बचनको सुनकर भयभीत के समान नम्रताके साथ गांधारी से यह वचनबोला १ हे माता धर्महोय वा अधर्म्म होय अपने शरीर की रक्षाके अभिलाषी मैंने भय से वहां ऐसाकिया आप उस मेरे अपराधको क्षमाकरने के योग्यहो २ वह बड़ा बलवान् आपका पुत्र धर्म्म युद्धकेद्वारा किसी के साथ लड़ने के योग्य नहींथा इसहेतुसे मैंने बिपरीत कर्म्म किया ३ पूर्वसमय में उस दुर्योधनने अधर्म के द्वारा युधिष्ठिर को बिजय किया और हम सदैव ठगेगये इसकारण से मैंने बिपरीत कर्मकिया ४ सेनाके मध्य में अकेला शेष बचाहुआ यह पराक्रमी कदाचित् गदा युद्धसे मुझको मारकर राज्यको न लेले इसहेतु से मैंने यह कर्मकिया ५ आपको सब बिदितहै कि आप के पुत्रने एकवस्त्रा रजज्वला राजपुत्री द्रौपदीसे जो बचन कहाथा इससे दुर्योधन को बिनामारे हुये सागरों समेत निष्कण्टक पृथ्वी हमसे भोगने के योग्य नहीं थी इन बातोंको विचारकर मैंने यह कर्म्मकिया ६। ७ उसीप्रकार आपके पुत्र ने हमारे अप्रियको भी किया जो सभाके मध्यमें द्रौपदीको बामजंघा दिखलाई ८ तबहीं वह आपका दुराचारी पुत्र हमारे हाथसे मारडालने के योग्यथा परन्तु उस समय हमलोग धर्मराजकी आज्ञासे नियममें नियतहुये ९ हे रानी आपके पुत्र ने वह बड़ी शत्रुता प्रकट की और सदैव वनमें दुःखी किये इस हेतुसे मैंने यह किया १० युद्धमें दुर्योधन को मारकर अब उसशत्रुताके अन्तको पाया युधिष्ठिर ने राज्यको पाया और क्रोधसे रहितहुये ११ गान्धारी बोली हेतात जो मेरे पुत्रके बिषयमें कहताहै यह केवल उसकोही नहीं मारा किन्तु इसकोभी किया जो यह सब मुझसे कहताहै १२ हे भरतबंशी भीमसेन वृषसेनके हाथसे नकुल के घोड़े मरनेपर युद्धमें तुमने दुश्शासनके शरीर से उत्पन्न होनेवाले रुधिरको पिया १३

वह तुमने सत्पुरुषों से निन्दित निर्द्दय कर्म किया वह अयोग्यथा १४ भीमसेन बोला कि जब दूसरेका भी रुधिर न पीनाचाहिये फिर अपना कैसे पानकरसक्ता है जैसा अपना आत्मा है वैसाही भाई है कोई मुख्यता नहीं है १५ हे माता रुधिर ओठोंसे नीचे नहीं गया यमराज उसको जानते हैं केवल रुधिरसे भरे मेरे दोनों हाथथे हे माता शोच मतकर १६ युद्धमें वृषसेनके हाथसे मृतक घोड़ेवाले नकुल को देखकर मैंने प्रसन्नचित्त भाइयों का भय उत्पन्न किया १७ द्यूत के कारण द्रौपदी के शिरके बाल पकड़ेजाने पर मैंने क्रोधसे जो कहा वह मेरे हृदय में वर्त्तमान है १८ हे रानी मैं उस प्रतिज्ञा को पूरा न करके बराबर बर्षोंतक क्षत्रिय धर्म्म से च्युत होजाता इस हेतुसे मैंने उसकर्मको किया १९ हे गान्धारी पूर्व्व समय में हमारे निरपराधी होनेपर पुत्रों को शासन न करके अब मुझ को दोषों से शंकाकरने के योग्य नहीं हो २० जो अब हमारे ऊपर दोषों की शंका करती हो २१ गान्धारी बोली कि इस वृद्धके सौ पुत्रोंके मारनेवाले तुझ अजेय ने किस हेतुसे एक को भी बाकी नहीं छोड़ा जिसने कि थोड़ा अपराध किया था २२ हे पुत्र जो कि राज्यसेहीन और वृद्ध हम दोनोंकी सन्तानरूप कहलाता इस अन्धे की एक लाठी भी तैंने कैसे नहीं छोड़ी २३ हे पुत्र पुत्रों में किसी के भी बाक़ी रहनेपर तुझ पुत्रोंके नाशकर्त्ता में मेरा यह दुःख नहीं होता जो तुम धर्मको करते २४ वैशम्पायन बोले क्रोधयुक्त और पुत्र पौत्रोंके मरनेसे पीडावान् गान्धारी ने इसप्रकार कहकर युधिष्ठिरके बिषयमें पूछा कि धर्मराज कहां है २५ कम्पायमान हाथ जोड़कर युधिष्ठिर उसके पास गये और वहां इस मधुर बचन को बोले २६ हे देवी मैं युधिष्ठिर तेरे पुत्रोंका मारनेवाला और संसारके नाशका मूल निर्द्दयी होकर शापके योग्य हूं मुझ को शापदे २७ उस प्रकार के सुहृज्जनों को मारकर मुझ अज्ञानी सुहृदोंसे शत्रुता करनेवाले को जीवन और राज्य से कौन प्रयोजनहै तब कठिन श्वासा लेनेवाली गान्धारी उस इसप्रकार बोलनेवाले भयभीत समीप पहुंचनेवाले से कुछ नहीं बोली २८ । २९ उस धर्मज्ञ दूरदर्शी देवीने उस झुके शरीर चरणों में गिरने के अभिलाषी राजायुधिष्ठिर की ३० हाथकी उँगलियों की नोक को पट्टान्तर अर्थात् बुरके के भीतर से देखा उससे दर्शनकेयोग्य नखवाला वह राजायुधिष्ठिर कुनखी होगया ३१ अर्जुन उसको देखकर बासुदेवजी के पीछे चलागया हे भरतबंशी इसप्रकार इधर

उधर से चेष्टा करनेवाले उन पांडवों को ३२ क्रोधसेरहित गान्धारी ने माताके समान बिश्वास कराया उसहेतुसे आज्ञा पायेहुये वह बड़े बक्षस्स्थलवाले पांडव एक साथही उस बीरों को उत्पन्न करनेवाली कुन्तीमाता के पास गये पुत्रों के बिषयमें चित्तसे खेदयुक्त उस देवीने बहुत कालके पीछे अपने पुत्रोंको देखकर ३३। ३४ बस्त्र से मुखको ढककर अश्रुपात किये इसकेपीछे कुन्ती ने पुत्रोंसमेत अश्रुपातों को करके ३५ उनको शस्त्रसमूहों से बहुतप्रकार करके घायल देखा उन पुत्रों को पृथक् २ स्पर्शकरते दुःखसे पीड़ावान् उस कुन्तीने ३६ मृतक पुत्र वाली द्रौपदीको शोचा और पृथ्वीपर पड़ी रोवतीहुई द्रौपदीकोदेखा ३७ द्रौपदी बोली हे आर्य्ये अर्थात् सासू तेरे सब अभिमन्यु समेत पौत्र कहांगये अब वह बहुतकालसे तुझ तपस्विनीको देखकर तेरेपास नहीं आते हैं ३८ मुझ पुत्रोंसे रहितको राज्यसे कौनसा प्रयोजन है द्रौपदी के इस बचन को सुनकर बड़े नेत्र वाली कुन्ती ने उसको बिश्वास कराया ३९ अर्थात् उस शोक पीड़ित रोदन करनेवाली द्रौपदी को उठाकर उसको और सब पुत्रों को साथलेकर ४० बड़ी पीड़ावान् कुन्ती गान्धारी के पास गई वैशम्पायन बोले कि तब गान्धारी उस बहू समेत आनेवाली कुन्ती से बोली ४१ हे बेटी इसप्रकार न करना चाहिये तू मुझ दुःखीकोभी देख मैं मानतीहूं कि यह संसारका नाशसमयकी बिपरीततासे प्रकटहुआ है ४२ और रोमांच खड़ा करनेवाली अवश्य होनहार स्वभावसे ब-र्त्तमानहुई यह बिदुरजीका वह बड़ा बचन सम्मुख आया ४३ जिसको कि उस बड़े बुद्धिमान्ने श्रीकृष्णकी शिक्षाके निष्फल होनेपर कहाथा इस अपरिहार्यार्त्थ में अर्त्थात् निरुपाय और ब्यतीत होनेवाली बातमें शोच मत कर ४४ युद्धमें म-रनेवाले वह वीर शोचके योग्य नहीं हैं जैसी मैंहूं वैसीही तूहै हमदोनोंको कौन बिश्वास करावेगा मेरेही अपराध से इस उत्तम कुलका नाशहुआ ४५॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिपंचदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि इसप्रकार कहकर वहांपर बैठीहुई गांधारी ने दिव्यनेत्रों से कौरवों के सब बड़ेभारी नाशको देखा १ उस पतिव्रता महाभाग एकसा ब्रत करनेवाली बड़ेतपसे संयुक्तसदैव सत्यबक्ता २ पवित्रकर्मी ब्यास महर्षीके बरदा-

नके द्वारा दिव्य ज्ञानबलसे संयुक्त ने बहुत प्रकारका बिलापकिया ३ उस बुद्धि-मतीने दूरसेही समीपके समान नरवीरों की उस रणभूमि को जो कि शरीर के अपूर्व रोमहर्षण करनेवाली थी देखा ४ अर्थात् अस्थिकेश मज्जासे युक्त रुधिर समूहसे पूर्ण हज़ारों शरीरोंसे चारोंओरको आच्छादित ५ हाथी घोड़े रथ और सवारोंके रुधिर समूहसे युक्तशरीरोंसे पृथक् शिरोंके समूहोंसे पूर्ण ६ हाथी घोड़े मनुष्य और स्त्रियोंके शब्दोंसे व्याप्त शृगाल, बक, काकोल, कंक और कागोंसे सेवित ७ मनुष्य के खानेवाले राक्षसोंकी प्रसन्न करनेवाली कुररनाम पक्षियोंसे सेवित शृगालों के अशुभ शब्दों से शब्दायमान और गिद्धों से सेवित थी ८ इसके पीछे व्यासजी से आज्ञा पायाहुआ राजा धृतराष्ट्र और वह सब पाण्डव जिनका अग्रवर्त्ती युधिष्ठिरथा ९ वासुदेवजी को और जिसके बन्धु मारेगये उस राजा को आगेकर सब कौरवीय स्त्रियों को साथलेकर युद्धभूमिमें गये १० वहां बिधवा स्त्रियोंने कुरुक्षेत्रको पाकर उनमृतक भाई पुत्रपिता और सुहृदोंको देखा ११ जो कि कच्चे मांस खानेवाले शृगाल, काग, भूत, पिशाच, राक्षस और नाना-प्रकारके निशाचरोंसे खायेहुये थे १२ रुद्रजी के क्रीड़ास्थानके समान निवास स्थानको देखकर पुकारतीहुई स्त्रियां बहुमूल्य सवारियों से उतरीं १३ भरतवंशियों की स्त्रियां दुःखसे पीड़ावान् पूर्व्व में कभी न देखेहुये उसनाशको देखकर कोई शरीरों पर गिरीं और कोई पृथ्वीपर गिरनेवालीहुईं १४ पांचाल और कौरवोंकी उन अनाथ और थकीहुई स्त्रियों को कुछ चेतनहीं रहा यह बड़ा दुःखहुआ १५ वह धर्मज्ञ गान्धारी दुःखितचित्त स्त्रियोंसे चारोंओरको शब्दायमान बड़ी भया-नकरूप युद्धभूमिको देखकर १६ फिर पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी को समक्षमें करके इस बचनको बोलीं १७ हे कमललोचन माधवजी इन बिधवा शिरके बालों को फैलानेवाली कुररी के समान पुकारनेवाली मेरी पुत्रबधुओं को देखो १८ यह स्त्रियां पृथक् २ पुत्र भाई पिता और सुहृदोंको मिलती पतियोंके गुणोंको याद करती पृथक् २ दौड़नेवाली हैं १९ हे महाराज यह रणभूमि बीरोंके उत्पन्न करने वाली और मृतकपुत्रवाली स्त्रियों से संयुक्तहै कहीं उनबीरों की स्त्रियोंसे संयुक्त है जिनके कि बीर भर्त्ता मारेगये २० कहीं ज्वलित अग्नि के समान पुरुषोत्तम कर्ण, भीष्म अभिमन्यु, द्रोणाचार्य, द्रुपद और शल्य से शोभायमान है २१ महात्माओं के स्वर्णमयी कवच निष्कमणि बाजूबन्द केयूर और मालाओं से

अलंकृत २२ बीरों की भुजाओं से छोड़ी हुई शक्ति परिघ और नानाप्रकार के तीक्ष्ण खड्ग बाणों समेत धनुषों से सुशोभित है २३ प्रसन्नचित्त कहीं साथ निवास करनेवाले कहींक्रीड़ा करनेवाले कहीं सोनेवाले और कहीं मांसभक्षी राक्षसोंसे संयुक्तहै २४ हे समर्थबीर श्रीकृष्णजी इसप्रकार की रणभूमि को देखो मैं इसको देखकर शोकसे भस्महुई जाती हूं २५ हे मधुसूदनजी मैंने पाञ्चाल और कौरवों के नाशमें पांचो तत्त्वोंकेभी नाशको ध्यानकियाहै २६ रुधिरसे भरे गरुड़ और गिद्ध उनको खैंचते हैं और हजारों गिद्ध चरणोंसे पकड़कर उनको भक्षण करते हैं २७ कौन मनुष्य जयद्रथ, कर्ण, द्रोणाचार्य्य, भीष्म और अभिमन्युके नाशकी चिन्ता करनेकेयोग्यहै २८ बिना घायलकेसमान मृतक अचेत निर्जीव गिद्ध कङ्क वट श्येन बाज श्वान और शृगालोंके भक्ष्यरूप २९ इन पुरुषोत्तमों को शान्त अग्निकेसमान देखो जोकि क्रोध के स्वाधीन होकर दुर्य्योधन की आज्ञामें नियतथे ३० जो सब पूर्वसमय में कोमल शयनों पर सोते थे अब वह मृतकहोकर इसबिस्तृत भूमिपर सोते हैं ३१ और जो सदैव प्रशंसा करनेवाले बंदीजनोंसे समय २ पर प्रसन्न कियेजातेथे वह शृगालों के अशुभ और भयकारी नानाप्रकारके शब्दोंको सुनते हैं ३२ जो यशवान् बीर पूर्वसमय में चन्दन अगरसे लिप्ताङ्ग शयनोंपर सोतेथे वह बीर अब पृथ्वीकी धूलपर सोते हैं ३३ बारम्बार शब्द करनेवाले भयानकरूप यह गिद्ध, काक, शृगाल मुखके भूषणों को लेकर फेंकते हैं ३४ यह सब अहङ्कारी मृतकभी जीवते हुये युद्ध करनेवालों के समान तीक्ष्णधार पीतबर्ण बाण खड्ग और निर्मल गदाओं को धारण करते हैं ३५ सुन्दररूप और बर्णवाले बहुत बीर कच्चेमांस भक्षियों से खैंचेजाते हैं बैलके रूप हरित मालाधारी सोते हैं ३६ फिर परिघके समान भुजाधारी अन्य शूर गदाको प्यारी स्त्रीकेसमान अपनेसाथ लियेहुये सोते हैं ३७ हे श्रीकृष्णजी बहुत से मांसभक्षी स्वच्छ शस्त्र और कवचोंके धारण करनेवाले बीरोंको जीवताहुआ जानकर नहीं खाते हैं ३८ बहुतेरे महात्माओंकी स्वर्णमयी अपूर्व माला मांसभक्षियोंसे खैंचीहुई चारोंओर को फैली हैं ३९ यह भयानकरूप हजारों शृगाल इन यशवान् मृतक बीरोंके कण्ठमें पड़ेहुये हारोंको खैंचते हैं ४० जिनको शिक्षायुक्त बन्दीजनों ने सब पिछली रात्रियों में प्रशंसा और बड़ी सेवाओं से प्रसन्न कियाथा ४१ हे श्रीकृष्णजी बड़े दुःखका स्थानहै कि यह दुःखसे पीड़ावान् और

दुःख शोकसे अत्यन्त दुःखी उत्तम स्त्रियां उनका बिलाप करती हैं ४२ हे केशव जी उत्तम स्त्रियों के सुंदरमुख लाल कमलके सूखे वनों के समान दृष्टि पड़ते हैं ४३ रोदनको भूलकर ध्यानमें प्रवृत्त महादुःखी यह कौरवीय स्त्रियां अपने परि-वारों समेत उस मार्ग्गसे अपने पति पुत्रादिके समीप जाती हैं ४४ कौरवों की स्त्रियोंके यह सूर्य्यवर्ण और सुवर्ण के समान प्रकाशमान मुख क्रोध और रुदन करने से शोभासे रहित हैं ४५ हे केशवजी दुर्य्योधन की उन उत्तम स्त्रियों के समूहोंको जोकि श्यामा गौरी और उत्तम वर्णसेयुक्त एक वस्त्र रखनेवाली हैं उन को देखो (शीतऋतु में उष्ण और ग्रीष्मऋतु में शीतल और सुखदायी होय और तपायेहुये सुवर्णके समान वर्णवाली होय उसस्त्रीको श्यामा कहते हैं और आठ बर्षवालीको गौरी कहते हैं) ४६ स्त्रियां उन्होंके विलाप और दुःखको सुन कर एक दूसरेके रोदन करनेको नहीं जानती हैं ४७ यह बीरोंकी स्त्रियां लम्बी श्वासाओं से पुकारती और बिलाप करके दुःखसे चलायमान जीवनको त्याग करती हैं ४८ बहुतसी स्त्रियां शरीरों को देखकर पुकारती और बिलाप करती हैं और बहुतसी कोमलहाथ रखनेवाली स्त्रियां हाथोंसे शिरोंको पीटती हैं ४९ पड़े हुये शिर हाथ और इकट्ठे होकर परस्पर मिलेहुये अङ्गों से पृथ्वी आच्छादित दिखाई पड़ती है ५० पास जानेवाली स्त्रियां इन निर्दोष शिर शरीर और शरी-रोंसे जुदेहुये शिरोंको देखकर ब्याकुल और अचेत होती हैं ५१ शिरको शरीर पर रखकर देखनेवाली अचेत और दुःखी स्त्रियां वहां दूसरे शिरको देखती हैं यह समझकर कि यह इसका नहीं है ५२ विशिखनाम बाणों से मथेहुये भुज जंघा चरण और अन्य २ अङ्गोंको शरीरपर लगानेवाली दुःखसे ब्याकुल यह स्त्रियां वारम्बार बिमोहको पाती हैं ५३ शिरोंको काटकर पशु पक्षियोंसे खायेहुये अन्य बीरोंको देखकर भरतबंशियों की स्त्रियां अपने२ पतियोंको नहीं जानती हैं ५४ हे मधुसूदनजी बहुतसी स्त्रियां शत्रुओं के हाथ से मरेहुये भाई पिता पुत्र और पतियों को देखकर हाथों से शिरों को पीटती हैं ५५ यह पृथ्वी खड्ग रखनेवाली और कुण्डलधारी शिरोंसे दुर्गम्यरूप मांस रुधिरकी कीच रखनेवाली ५६ भरत-बंशियोंमें श्रेष्ठ निर्जीव बीरोंसे दुर्गम्यके समानहुई पूर्वसमयमें जो दुःखोंके योग्य कभी नहींहुई वह निर्दोष स्त्रियां दुःखोंको पाती हैं ५७ यह पृथ्वी भाई पति और पुत्रोंसे आच्छादितहै हे जनार्द्दनजी धृतराष्ट्रकी पौत्रबधुओं के उनबहुतसे स-

मूहोंको जो कि किशोरी सुन्दर केश रखनेवाली और झुंडोंके रूपहैं देखो हे केशवजी इससे अधिक कौनसा दुःख मुझको दिखाई देताहै ५८।५९ जोयह स्त्रियां नानाप्रकार के रूपों को करती हैं निश्चय करके बिदित होता है कि मैंने पूर्व्व जन्ममें पाप कियाथा ६० हे माधवजी जो मैं पुत्र भाई और पिताओंको मृतक देखती हूं इस प्रकार पीड़ावान् बिलाप करनेवाली और पुत्रशोकसे महादुःखी गान्धारी ने श्रीकृष्णजीको यह कहकर अपने मृतकपुत्रको देखा ६१॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिषोडशोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि शोकसे पीड़ावान् गान्धारी दुर्य्योधनको मराहुआ देखकर अकस्मात् ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ी जैसे कि वनमें टूटाहुआ केलेका वृक्ष होताहै १ फिर उसने सचेतताको पाकर पुकारकर और बिलाप करके उस पृथ्वी पर पड़ेहुये रुधिरसे लिप्त दुर्य्योधनको देखकर २ हृदय से लगाया और दुःखका बिलाप किया शोकसे पीड़ावान् महाव्याकुल चित्त हायपुत्र हायपुत्र इसरीति से बिलाप करनेलगी ३ गुप्त जत्रुस्थान रखनेवाली निष्कोंकेहारसे अलंकृत अपनी छातीको नेत्रोंके जलसे सींचती महादुःखी उस गान्धारीने ४ सम्मुख बर्त्तमान श्रीकृष्णजीसे यह बचन कहा कि हे समर्थ इस युद्धके और जातवालोंके नाशके बर्त्तमान होनेपर ५ इस हाथ जोड़नेवाले महाराज दुर्य्योधनने मुझसे यह कहा कि हे माता जातवालोंके युद्धमें मेरी बिजयको कहो ६ हे पुरुषोत्तम उसके ऐसा कहनेपर मैं अपने सब दुःखके आगमनको जानतीहुई बोली कि जिधर धर्म्म है उधरही बिजय है ७ हे प्रभु पुत्र जैसे कि तू युद्धको करताहुआ मोहित नहीं होताहै इससे निश्चय करके देवताके समान शस्त्रोंसे बिजय किये हुये लोकोंको पावेगा ८ हे प्रभु मैंने पूर्व्व समयमें इसप्रकार कहाथा मैं इसको नहीं शोचती हूं ९ हे माधवजी इस अशान्त और असह्य युद्ध दुर्मद और शूरबीरों में श्रेष्ठ मेरे पुत्रको बीरों के शयनपर सोता देखो १० जो यह शत्रुसंतापी महाराजाओंके भी अग्रवर्त्ती होकर चलताथा अब वह इस पृथ्वीकी रजमें सोता है समयकी विपरीतताको देखो ११ निश्चय करके बीर दुर्योधनने दुष्प्राप्यगतिको पाया इसप्रकार सम्मुख बीरोंसे सेवित शयनपर सोताहै १२ पूर्व्व समयमें राजा

लोग चारोंओर बर्त्तमान होकर जिसको प्रसन्न करते थे अब उस पृथ्वीपर मरेहुये पड़ेकी गिद्ध बर्त्तमानता करते हैं अर्थात् हाजिरी देते हैं पूर्व्व समय में सुन्दर व्यजनों से उत्तम स्त्रियां जिसकी बायु करतीथीं अब उसकी बायु पक्षीलोग अपने पक्षों से करते हैं १३ । १४ युद्धमें भीमसेनके हाथसे गिरायाहुआ यह सत्य पराक्रमी बलवान् महाबाहु ऐसे सोताहै जैसे कि सिंहके हाथसे माराहुआ हाथी सोताहै १५ हे श्रीकृष्णजी गदाको मारकर भीमसेनसे मृतक रुधिरसे लिप्त सोनेवाले दुर्य्योधनको देखो १६ हे केशवजी जिस महाबाहुने पूर्व्व समय में ग्यारह अक्षौहिणी सेनाको युद्धभूमिमें इकट्ठा किया उसने युद्धमें अनीतिसे नाशको पाया १७ भीमसेनके हाथसे गिरायाहुआ बड़ा बलवान् यह दुर्योधन सोताहै १८ यह अभागा अज्ञान निर्बुद्धी विदुरजी समेत पिताकोभी अपमान करके वृद्धोंकी अवज्ञासे मृत्युके आधीनहुआ १९ तेरह वर्षतक शत्रुओं से रहित पृथ्वी इसके आज्ञावर्त्ती रही वह मेरा पुत्र राजादुर्योधन मराहुआ पृथ्वीपर सोताहै २० हे श्रीकृष्णजी मैंने सबपृथ्वीके लोगोंको दुर्योधनके आज्ञावर्त्ती हाथी घोड़े और गौओं से पूर्ण देखा हे माधवजी वह बहुत कालतक नहीं है २१ हे महाबाहु अब मैं उस पृथ्वीको दूसरेकी आज्ञावर्त्ती हाथी घोड़े और बैलोंसे रहित देखतीहूं हेमाधवजी मैं क्या जीवतीहुईहूं २२ पुत्रके मरनेसेभी अधिक इस मेरे दुःखको देखो जो यह स्त्रियां युद्धभूमिमें चारोंओरसे मृतकशूरोंके पास नियतहैं २३ हे श्रीकृष्णजी इस खुलेहुये केश सुन्दर श्रोणिवाली और दुर्य्योधनके शुभअंकमें वर्त्तमान सुवर्ण की वेदी के रूप लक्ष्मणकी माताको देखो २४ निश्चयकरके पूर्व्वसमयमें राजा के जीवते हुये यह उत्तम चित्तवाली स्त्री सुन्दर भुजवाले दुर्य्योधन की भुजाओं के आश्रित होकर रमती थी २५ युद्ध में पौत्र समेत मरेहुये अपने पुत्रको मुझ देखनेवाली का यह हृदय कैसे खण्ड २ नहीं होताहै २६ वह निर्द्दोष सुन्दरी रुधिरसे लिप्त पुत्रको सूंघती है और दुर्य्योधनको हाथसे साफ करती है २७ यह साहसी स्त्री क्या पति और पुत्रको शोचती है वह उस प्रकार पुत्रको भी देखकर नियत दिखाई देती है २८ हे माधव बड़े नेत्रवाली स्त्री अपने शिरको पंचांगुलीवाले अपने हाथसे घायल करके बीर दुर्य्योधन की छातीपर गिरती है २९ यह तपस्विनी पति और पुत्रके मुखको साफ करके कमल के अन्तर्गत भागके समान प्रकाशित और कमलबर्ण दिखाई देती है ३० जो शास्त्र और श्रुतियां सत्यहैं

तो निश्चय करके इस राजाने अपने भुजबलों से प्राप्त लोकों को पाया ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी युद्धमें परिश्रमसे रहित मेरे सौ पुत्रों को भीमसेन की गदा से कठिन घायल हुये देखो १ अब यह मेरा बड़ा दुःखहै जो खुले केश मृतक पुत्रवाली मेरी पुत्रवधू बाला युद्धभूमि में मेरे चारों ओर दौड़ती हैं २ भूषणों से अलंकृत चरणों से महलों में फिरनेवाली स्त्रियां अपनी आपत्ति में फँसकर इस रुधिर से आर्द्र पृथ्वीको स्पर्श करती हैं यह कठिनतासे उनके ऊपर बैठेहुये गिद्ध शृगाल और काकोंको उड़ाती हैं और दुःखसे पीड़ावान् मतवालों के समान घूमती हैं ३।४ यह दूसरी निर्दोष शरीर मुष्टिप्रमाण सूक्ष्म कटि रखनेवाली अत्यन्त दुःखी स्त्रियां अत्यन्त भयकारी युद्धभूमि को देखकर गिरती हैं ५ हे महाबाहु इस राजपुत्री लक्ष्मण की माताको देखकर मेरा चित्त शान्ती को नहीं पाताहै ६ यह अन्य स्त्रियां मरे हुये पृथ्वीपर पड़े अपने भाई पिता और पुत्रोंको देखकर और बहुत बड़ी २ भुजाओंको पकड़कर चारों ओरको गिरती हैं ७ हे अजेय जिनके बान्धव मारेगये उन तरुण षोड़श बर्षवाली स्त्रियों के शब्दों को इस कठिन बिनाश में सुना ८ हे महाबाहु थकावट और अचेततासे पीड़ावान् स्त्रियां रथकी नीड़ और मृतक हाथी घोड़े के शरीरों के आश्रित होकर नियत हैं ९ हे कृष्णजी शरीर से जुदे सुन्दर कुण्डल और वेणी रखनेवाले अपने बांधवके शिरको पकड़कर नियत होनेवाली अन्य स्त्रियों को देखो १० हे निष्पाप इन निर्द्दोष स्त्रियोंसे और मुझ निर्बुद्धी से पिछले जन्ममें किया हुआ पाप छोटा नहीं है मेरी बुद्धिसे बहुत बड़ा है ११ जो यह हमारा पाप धर्मराज ने दूर किया हे यादव श्रीकृष्णजी शुभाशुभ कर्म्मों का नाश नहीं है अर्थात् उस का फल अवश्य होताहै १२ हे श्रीकृष्णजी इन नवीन अवस्था दर्शनीय स्तन और मुखवाली कुलवन्ती लज्जावान् काले पलक नेत्र और बाल रखनेवाली स्त्रियों को देखो १३ हे माधवजी हंसके समान गद्गद बोलनेवाली दुःख शोकसे अचेत सारसीके समान पुकारनेवाली पृथ्वीपर पड़ीहुई स्त्रियोंको देखो १४ कमललोचन स्त्रियोंके मुख जोकि फूले कमलके समान और निर्द्दोषहैं उनको दुःख

रूप सूर्य संतप्त कररहाहै १५ अब अन्यलोग मतवाले हाथी के समान अहङ्कारी मेरे पुत्रोंकी रानियों को देखतेहैं १६ हे गोविन्दजी सौ चन्द्रमा रखनेवाली सूर्य के समान प्रकाशमान ढाल और सूर्यही के समान प्रकाशित ध्वजा रैवत प्रकार के कवच सुवर्ण के निष्क १७ पृथ्वीपर पड़े होमीहुई अग्निके समान प्रकाशित मेरे पुत्रोंके उनमुकुटों को देखो १८ शत्रुओंके मारनेवाले शूर भीमसेनके हाथ से युद्धमें गिरायाहुआ रुधिर से लिप्त सर्वाङ्ग यह दुश्शासन सोताहै १९ हे माधवजी द्यूतके दुःखको स्मरण करके द्रौपदी की प्रेरणापूर्वक भीमसेनकी गदासे मृतक हुये मेरे पुत्रको देखो २० हे जनार्दनजी कर्णका और भाई दुर्योधनके प्रिय करनेका अभिलाषी इस दुश्शासनने सभाके मध्यमें द्यूतमें पराजित द्रौपदी से यह वचन कहे २१ कि हे द्रौपदी तू सहदेव नकुल और अर्जुन समेत दासीहुई शीघ्र हमारे घरों में प्रवेश करो २२ हे श्रीकृष्णजी उस समय मैंने राजा दुर्योधन कहा कि हे पुत्र मृत्युकी फांसी में बँधेहुये शकुनिके निषेधकरो २३ इस अन्त दुर्बुद्धी युद्धको प्रिय जाननेवाले मामाको समझाओ हे पुत्र इसद्यूत को ...ीघ्रत्याग करके पाण्डवों के साथ शान्तहो २४ जैसे कि उल्काओं से हाथियों को पीड़ावान् करते हैं इसीप्रकार वचनरूप तीक्ष्ण नाराचोंसे क्रोधयुक्त भीमसे[न] को पीड़ावान् करता तू सचेत नहीं होताहै अर्थात् हे दुर्बुद्धी तू भीमसेनके अमर्षको नहीं जानताहै २५ इसप्रकार उन वचनरूपी भालों से घायलकरते उ[स] क्रोधयुक्त ने एकान्त में उनपाण्डवोंपर इसप्रकार विषको छोड़ा जैसे कि सर्प ग[ौ] [औ]र बृषभपर छोड़ते हैं २६ जैसे कि बड़ाहाथी सिंहसे माराजाताहै उसी प्रक[ार भी]मसेनके हाथसे मृतक यह दुश्शासन भुजाओं को फैलाकर सोताहै २७ [अत्य]न्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने बड़ा भयकारी कर्म्मकिया जो क्रोधयुक्तने युद्धमें [दुश्]शासन के रुधिरको पानकिया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी यह ज्ञानियोंका अङ्गीकृत भीमसेनके हाथसे कड़ों खण्डकियाहुआ मेरापुत्र विकर्ण मृतक पृथ्वी पर सोताहै १ हे म[ाधवजी] वह विकर्ण मरेहुये हाथियों के मध्यमें ऐसे सोताहै जैसे कि नीले बादलोंसे

हुआ शरदऋतुका चन्द्रमा होताहै २ धनुष् पकड़नेसे बड़े चिह्न रखनेवाला खड्ग से युक्त इसका हाथ खानेके अभिलाषी गिद्धोंसे कुछ काटाजाताहै ३ हेमाधवजी उसकी तपस्विनी बाला भार्या मांसके अभिलाषी गिद्ध और कागोंको हटाती है परन्तु हटाने को समर्त्थ नहीं होती है ४ हेपुरुषोत्तम माधवजी तरुण देवतारूप शूरवीर सुखपूर्व्वक निवास करनेवाला विकर्ण पृथ्वीकी धूलपर सोताहै ५ युद्धमें करणी, नालीक और नाराचनाम बाणों से टूटे मर्मस्थलोंवाले भरतर्षभ इस वि-कर्णको अबभी शोभानहीं छोड़ती है ६ युद्धमें शत्रुओंके समूहोंका मारनेवाला सम्मुख रहनेवाला यह दुर्मुख उस युद्धभूमि में वीरप्रतिज्ञा पूरीकरने के अभिलाषी भीमसेन के हाथसे मृतक होकरसोताहै ७ हे श्रीकृष्णजी उसका यह मुख श्वा-पदजीवों से आधा खायाहुआ ऐसे अधिक प्रकाशित है जैसे कि सप्तमीका च-न्द्रमा होताहै ८ हेकृष्णजी युद्धमें मेरे शूरपुत्र के ऐसे मुखको देखो वह मेरापुत्र किसरीति से शत्रुओं के हाथसे मारागया और युद्धकी धूलको निगलताहै ९ हे स्वामी युद्धके मुखपर जिसकी सम्मुखता करनेवाला कोई नहीं वह देवलोक का विजयकरनेवाला दुर्मुख किसप्रकार शत्रुओंके हाथसे मारागया १० हे मधुसूदन जी इस धृतराष्ट्रके पुत्र धनुषधारी पृथ्वीपर सोनेवाले चित्तसेनकी मृतक मूर्त्तिको देखो ११ शोकसे पीड़ित रोनेवाली स्त्रियां मांसभक्षियों के समूहों समेत उसज-ड़ाऊ माला और भूषण रखनेवाले चित्रसेनके पास नियतहैं १२ हे श्रीकृष्णजी स्त्रियोंके रुदनके शब्द और मांसाहारियोंकी गर्जना अपूर्वरूप और विचित्र मा-लूम होती है १३ हे माधवजी यह तरुण सदैव उत्तम स्त्रियों से सेवित देवतारूप विविंशति धूलमें पड़ासोताहै १४ हे श्रीकृष्णजी देखो कि गिद्धनाम पक्षी इस बाणों से टूटेकवच वीर विविंशति को बड़ी रणभूमि में घेरकर बैठे हैं १५ वहशूर युद्धमें पाण्डवों की सेना में प्रवेश करके सत्पुरुषों के योग्य वीरशय्या पर सोता है १६ हे श्रीकृष्णजी विविंशतिके मुखको देखो जो कि मन्द मुसकान समेत सु-न्दर नाक और चन्द्रमाके समान बहुत उज्ज्वल है १७ बहुधा उत्तम स्त्रियों ने चारोंओर उसकी ऐसी वर्त्तमानता करी है जैसे कि हजारों देवकन्या क्रीड़ाक-रनेवाले गन्धर्व की वर्त्तमानता करती हैं १८ शत्रुओंकी सेनाके मारनेवाले युद्ध को शोभा देनेवाले और शत्रुओं का नाश करनेवाले दुःख से सहने के योग्य शूरको कौन सहसक्ताहै १९ दुस्सहका यह शरीर बाणोंसेयुक्त ऐसा शोभायमान

है जैसे कि अपने ऊपर वर्त्तमान कर्णिकारके पुष्पोंसे व्याप्त पर्व्वत होताहै २० यह मृतकभी दुःखसे सहनेके योग्य स्वर्णमाला और प्रकाशित कवचसमेत ऐसे प्रकाशमानहै जैसे कि अग्निसे श्वेतपर्व्वत प्रकाशित होताहै २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिगान्धारीवाक्येएकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे यादव केशवजी जिस अहंकारी और सिंहके समान अभिमन्यु को बल पराक्रम में पिता अर्जुन और तुमसे भी ड्योढ़ाकहाहै १ जिस अकेलेने मेरे पुत्रकी सेनाको जोकि कठिनतासे चीरनेके योग्यथी चीरा वह दूसरोंका कालरूप होकर आपही कालके आधीनहुआ २ हे श्रीकृष्णजी मैं देखती हूं कि उस अर्ज्जुन के पुत्र बड़े तेजस्वी मरेहुये अभिमन्यु का तेज नाश को नहीं पाताहै ३ यह विराटकी पुत्री और अर्जुनकी पुत्रबधू निर्दोष और पीड़ावान् इस बालक और बीरपति को देखकर शोचकरती है ४ हे श्रीकृष्ण यह विराटकी पुत्री भार्य्या समीपसे उसपतिको मिलकर हाथोंसे साफकरती है ५ यह चित्तवाली मनोहररूप तेजस्विनी उस अभिमन्युके मुखको जो प्रफुल्लित कमल के रूप और गोलगर्दनवालाहै सूंघकर उससे मिलती है जोकि पूर्वसमयमें माध्वीक नाम मद्यके मदसे अचेत भी लज्जायुक्तथी ६ । ७ हे श्रीकृष्णजी उसके सुवर्णजटित रुधिरसे लिप्त कवचको उघारकर शरीर को देखती है ८ हे मधुसूदनजी यहबाला उसको देखकर तुमसे कहती है कि हे कमललोचन यह आपके समान नेत्ररखनेवाला गिरायागया ९ हे पापोंसे रहित यहबल पराक्रम और तेज और बड़े रूप में आपके समान पृथ्वी पर गिराया हुआ सोताहै १० अब तुम्ह अत्यन्त कोमल शरीर और रांकनाम मृगचर्मपर सोनेवालेका शरीर पृथ्वीपर दुःखतो नहीं पाताहै ११ तुम हाथीकी सूंड़केसमान प्रकाशमान प्रत्यंचाके खैंचने से कठिन चर्मवाले सुवर्ण के बाजूबन्दों से अलंकृत बड़ी भुजाओं को फैलाकर सोतेहो १२ निश्चय करके बहुत प्रकार के परिश्रम करके थकावट से विश्रामयुक्त होकर सोगयेहो जो इसप्रकार से विलाप करनेवाली मुझको उत्तर नहीं देतेहो १३ तुम्हारे विषय में मैं अपने अपराधको नहीं स्मरण करतीहूं मुझको उत्तर क्यों नहीं देतेहो निश्चय करके तुम पूर्वसमय में मुझको देखकर बोलते थे अब भी मेरा

कोई अपराध नहीं है मुझसे क्योंनहीं वार्त्तालाप करतेहो हे श्रेष्ठ तुम मेरी सास सुभद्रा और देवताओं के समान १४। १५ इन पिताओंसमेत दुःखसे पीड़ावान् मुझको छोड़कर कहां जाओगे फिर उसके रुधिर से लिप्त मृतक शिरको हाथसे उठाकर १६ और बगल में मुखको रखकर ऐसे पोंछती है जैसे कि जीवतेको पोंछतेहैं तुम वासुदेवजी के भानजे और अर्जुन के पुत्र १७ युद्धमें वर्त्तमानको इन महारथियोंने कैसेमारा उन निर्दयकर्मी कृपाचार्य, कर्ण, जयद्रथ १८ द्रोणाचार्य्य और अश्वत्थामा को धिक्कारहै जिनके कि हाथसे मैं बिधवा करीगई उससमय उन उत्तम रथियोंका चित्त कैसा होगया १९ कि तुझ अकेले बालकको घेरकर मेरे दुःखदेनेकोमारा हे बीर नाथवान्होते तुमने पाण्डवों और पांचालोंके देखते अनाथ के समान कैसे मरणकोपाया २० तेरापिता पुरुषोत्तम बीर पाण्डव युद्ध में बहुतों के हाथसे तुझको मराहुआ देखकर कैसे जीवताहै २१ हे कमललोचन तेरे बिना सब राज्य की प्राप्ति और शत्रुकी पराजय पाण्डवों की प्रसन्नता को उत्पन्न नहीं करेगी २२ तेरेधर्म और जितेन्द्रियपन और शस्त्रोंसे विजय कियेहुये लोकोंको २३ शीघ्र पीछेसे मैंभी प्राप्तकरूंगी वहांपर मेरी प्रतीक्षाकरो फिर समय के वर्त्तमान न होनेपर प्रत्येकको मरना कठिन होताहै २४ जो दुर्भागिनी मैं युद्ध में तुझको मृतक देखकर जीवतीहूं हे नरोत्तम अब इच्छा के अनुसार पितृलोक में मिलनेवालों को मन्दमुसकान के साथ मधुरवचन से २५ ऐसे अपनीओर लगाओगे जैसे कि मुझको और स्वर्ग में अप्सराओं के चित्तों को २६ उत्तम रूप और मन्द मुसकानसमेत मधुर बाणी से मथन करोगे पुण्य से प्राप्त होने वाले लोकोंको पाकर अप्सराओं से मिले हुये २७ हे स्वामी तुम स्वर्ग में बिहार करते मेरे कर्मों को स्मरणकरना इसलोक में आपका मेरेसाथ इतनेही कालके लिये सम्बन्ध नियतकियाथा २८ हे बीर छःमहीने साथ रहे सातवें महीने में मृत्यु को पाया राजा बिराटके कुलकी स्त्रियां ऐसे कहनेवाली महादुःखी निष्फल संकल्पवाली २९ इस उत्तराको हटाती हैं आपभी महापीड़ित वह स्त्रियां इस अत्यन्त पीड़ित उत्तराको हटाकर मरेहुये बिराटको ३० देखकर पुकारती हैं बिलाप करती हैं द्रोणाचार्य्य के अस्त्र और बाणों से टूटअङ्ग रुधिरसेलिप्त सोनेवाले ३१ बिराटको यह गिद्ध शृगाल और काग काटते हैं श्यामचक्षु पीड़ावान् स्त्रियां पक्षियोंसे घायल होते बिराटको देखकर ३२ पक्षियोंके हटानेको समर्थ नहीं होती

हैं सूर्य्य के तापसे तपनेवाली इन स्त्रियोंके मुखोंकातेज जो कि ३३ परिश्रम और थकावट से अप्रकाशित है दूर होगया उत्तर, अभिमन्यु, काम्बोज, सुदक्षिण ३४ और सुन्दर दर्शन लक्ष्मण इन सब मृतक बालकोंको देखो हे माधवजी इन सब को युद्धभूमि में सोताहुआ देखो ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिविंशतितमोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली यह बड़ाधनुषधारी महारथी कर्ण सोताहै यह अर्जुन के तेज से युद्धमें ज्वलित अग्निकेसमान शान्त होगया १ बहुतसे रथियोंको मारकर पृथ्वीपर पड़ा सोताहै और रुधिरसेलिप्त शरीर सूर्य के पुत्र कर्णको देखो २ यह अशान्तचित्त महाक्रोधी बड़ा धनुषधारी पराक्रमीशूर युद्ध में अर्जुन के हाथसे माराहुआ सोताहै ३ मेरे महारथीपुत्र पाण्डवोंके भयसे जिसको अग्रवर्त्ती करके अच्छे प्रकार ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि हाथी अपने प्रधान हाथी को अग्रवर्त्ती करके उत्तम युद्ध करते हैं ४ वह युद्ध में अर्जुन के हाथसे ऐसे गिरायागया जैसे कि सिंह से शार्दूल और मतवाले हाथी से मतवालाहाथी गिराया जाताहै ५ हे पुरुषोत्तम यह बिखरेहुयेबाल रोदनकरती इकट्ठी स्त्रियां इस युद्ध में मरेहुये शूरके चारोंओर नियत हैं ६ सदैव जिससे व्याकुल भयभीत और चिंता करके धर्म्मराज युधिष्ठिरने तेरह वर्षतक निद्रा को नहीं पाया ७ युद्ध में इन्द्रके समान अन्यशत्रुओंसे अजेय प्रलयकालकी अग्निकेसमान तेजस्वी हिमाचल के समान युद्ध से न हटनेवाला ८ वह वीर दुर्य्योधन का रक्षाश्रय होकर ऐसे माराहुआ पृथ्वीपर सोताहै हे माधव जैसे कि वायुसे टूटाहुआवृक्ष होताहै ९ तुम कर्णकी स्त्री वृषसेनकीमाता पृथ्वीपर गिरी रोदन करतीहुई और शोककीबार्त्ता करनेवाली को देखो १० निश्चयकरके गुरूकाशाप तुझको प्राप्तहुआ जो पृथ्वीने इस तेरे रथचक्रको दबालिया इसकेपीछे युद्धको शोभा देनेवाले अर्जुनके बाण से तेराशिर काटागया ११ हाय२ धिक्कार यह रोदनकरती अत्यन्त पीड़ावान् शूरसेनकी माता इस सुवर्ण के बाजूबन्दसे अलंकृत बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्णको देखकर अचेत पड़ीहै १२ यह महात्मा श्वापदों के भक्षण करने से अभी थोड़ा शेष रहाहै वह देखनेमें हमारी प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला ऐसे नहीं है जैसे कि कृ-

ष्णपक्षकी चौदशमें चंद्रमा प्रसन्नतासे रहित होताहै १३ यह पृथ्वीपर पड़ीहुई महादुःखी और उठकर कर्णके मुखको सूंघती पुत्रके मरणशोकसे दुःखी रोती है १४

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली कि गिद्ध और शृगाल भीमसेन के गिराये हुये राजाअवन्तीको जोकि शूरवीर और बहुत बान्धव रखनेवालाहै भाइयों से रहितके समान खाते हैं १ हे श्रीकृष्णजी उस कर्णको भी जोकि शत्रुओं के समूहोंका मर्द्दन करनेवालाहै खैंचते हैं हे मधुसूदनजी शूरोंका नाशकरके बीरशय्यापर सोनेवाले रुधिरसे भरेहुये उसको देखो शृगाल कंक और काकआदिक अनेक मांसभक्षी उसको २।३ कैसे २ मार्गोंसे खैंचते हैं समयकी विपरीतताको देखो युद्ध करनेवाले शूरवीर शय्यापर सोनेवाले ४ राजा अवन्तीके पास रोनेवाली स्त्रियां नियत हैं हे श्रीकृष्णजी इस बड़े धनुषधारी और भल्लसे मृतकप्रतीपवंशी बाह्लीकको ५ शार्दूलके समान सोवताहुआ देखो इस मरेहुये का भी मुखका वर्ण ऐसा शोभा देताहै ६ जैसे कि पूर्णमासी का पूर्ण चन्द्रमा होताहै पुत्रशोकसे दुःखी और प्रतिज्ञाको पूरा करनेवाले ७ इन्द्रके पुत्र अर्ज्जुन से युद्धमें जयद्रथ गिराया गया प्रतिज्ञाको सत्य करनेके अभिलाषी अर्ज्जुनने ग्यारह अक्षौहिणी सेनाको हटाकर महात्मासे रक्षित ८ इस जयद्रथको मारा हे जनार्द्दनजी देखो इस सिन्धुसौवीर देशके स्वामी अहंकारी साहसी ९ जयद्रथको शृगाल और गिद्ध खाते हैं हे अविनाशी वह डरातेहुये पक्षी इन आज्ञाकारी स्त्रियों से रक्षित जयद्रथको १० पासही से नीचे और घने स्थानपर खैंचते हैं यह काम्बोज और यवनदेशी स्त्रियां इस रक्षित महाबाहु ११ सिन्धुसौवीर देशके स्वामी जयद्रथ के चारोंओर नियतहैं हे जनार्द्दनजी जब यह जयद्रथ केकय देशियों समेत द्रौपदीको पकड़कर भागा १२ तभी पाण्डवों के हाथसे मारने के योग्यथा उस समय दुश्शलाके माननेवाले पाण्डवोंके हाथसे जयद्रथ बचाथा १३ हे श्रीकृष्ण अब उन पाण्डवों ने उस बहनोई को कैसे नहींमाना वह मेरी पुत्री बालक दुःखी विलाप करती १४ और पाण्डवोंको पुकारती आप अपने शरीरको घायल करती है हे श्रीकृष्णजी इससे अधिक मेरा और कौनसा दुःख होगा १५ जो बालक पुत्री बिधवा और

पुत्रवधू मृतक पतिवाली हैं हाय २ धिक्कार शोकभयसे जुदेके समान दुश्शलाको देखो १६ उस पतिके शिरको न पाकर इधर उधर दौड़नेवाली है जिसने कि पुत्र को चाहनेवाले सब पाण्डवों को रोका १७ वह बड़ी सेनाओं को मारकर आप कालके वशीभूतहुआ चन्द्रमुखी स्त्रियां उस हाथीके समान मतवाले बड़ेदुःखसे विजय होनेवाले वीरको घेरकरके रोदन करती हैं १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्वणिद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे तात युद्धमें धर्म्मज्ञ धर्म्मराजसे माराहुआ साक्षात् नकुल का मामा यह शल्य सोताहै १ हे पुरुषोत्तम जोकि सदैव सर्व्वत्र तेरेसाथ ईर्षा करताथा वह बड़ा बलवान् पराक्रमी मद्रकाराजा सोताहै २ युद्धमें कर्णके रथको पकड़नेवाले जिस शल्यने पाण्डवोंकी विजय के निमित्त कर्णके तेजको क्षीण किया ३ दुःखका स्थान है और धिक्कार है कि शल्यके मुखको काकों से काटा हुआ देखो जोकि पूर्ण चन्द्रमाके समान सुन्दर दर्शन कमलपलाश के समान नेत्रधारी और स्वच्छथा ४ जिस सुवर्ण वर्णवालेकी जिह्वा तपायेहुये सुवर्ण के समान प्रकाशमान और मुखसे निकलीहुई पक्षियोंसे भक्षण कीजाती है ५ राजा मद्रके कुलकी रोदन करनेवाली स्त्रियां इस युधिष्ठिर के हाथ से मरेहुये युद्धके शोभादेनेवाले शल्यके चारोंओर नियतहैं ६ यह अत्यन्त सूक्ष्मवस्त्रोंकी पोशाक वाली पुकारनेवाली क्षत्रियाणी नरोत्तम राजामद्रको पाकर पुकार रहीहैं ७ स्त्रियां पृथ्वीपर गिरेहुये शल्यको चारोंओरसे घेरकर ऐसे समीप नियतहैं कि जैसे बारम्बार बच्चा उत्पन्न करनेवाली हथिनियां कीचमें डूबेहुये हाथीको घेरलेती हैं ८ हे वृष्णिनन्दन इसरक्षा देनेवाले शूरशल्यको बाणोंसे विदीर्ण शरीर और वीरों की शय्यापर सोनेवाला देखो ९ यह पहाड़ी श्रीमान् प्रतापवान् भगदत्त हाथीका अंकुश हाथमें रखनेवाला और पृथ्वीपर पड़ाहुआ सोताहै १० जिस शृगाला-दिकके खायेहुये की यह स्वर्णमयी मालाकेशोंको शोभादेतीहुई शिरपर विराजमान है ११ निश्चय करके इसकेसाथ पाण्डवोंका युद्ध वह हुआ जो कि बड़ा भयकारी अत्यन्त कठिन रोमांचोंका खड़ा करनेवाला था और इन्द्र और वृत्रासुरके युद्धके समान था १२ यह महाबाहु पाण्डव अर्ज्जुन से युद्धकरके और

संशयको उत्पन्न करके कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरसे गिरायागया १३ लोकमें जिसकी शूरता और बलपराक्रमके समान कोई नहीं है युद्धमें भयकारी कर्म्म करनेवाले यह भीष्मजी आसन्नमृत्यु होकर सोते हैं १४ हे श्रीकृष्णजी इस सूर्य्य के समान तेजस्वी सोनेवाले भीष्मजी को ऐसे देखो जैसे कि प्रलयकाल में कालसे प्रेरित आकाश से गिराहुआ सूर्य्य होताहै १५ हे केशवजी यह पराक्रमी नररूप सूर्य्य युद्ध में शस्त्रोंके तापसे शत्रुओंको सन्तप्तकरके ऐसा अस्तंगत होताहै जैसे कि अस्ताचलपर वर्त्तमान सूर्य्य होता है १६ इस वीर्य्यको च्युत न करनेवाले अजेय शरशय्यापर वर्त्तमान शूरवीरों से सेवित वीरशय्यापर सोनेवाले भीष्म को देखो १७ करणी नालीक और नाराचनाम बाणोंसे उत्तम शय्याको बिछवाकर उसपर चढ़ेहुये ऐसे सोते हैं जैसे कि भगवान् स्वामिकार्त्तिकजी शरवणकोपाकर सोते हैं १८ यह गंगाजी के पुत्र रुई से रहित तीनबाणों से बने अर्जुन के दिये हुये तकिये को शिरके नीचे धरकर १९ पिताके आज्ञानुसारी ब्रह्मचारी महातपस्वी युद्ध में अनुपम भीष्मजी सोते हैं २० हे तात सब बातों के जाननेवाले नररूप होकर इस धर्मात्माने ब्रह्मज्ञान के बलसे देवताओं के समान प्राणों को धारण कियाहै २१ युद्धमें कोई कर्म्मकर्त्ता पण्डित और पराक्रमी नहीं है जब कि यह शन्तनुके पुत्र भीष्मजी सरीखे भी बाणों से घायल सोते हैं २२ पाण्डवों से पूछे हुये इस शूरकर्म्मवान् सत्यवक्ताने आप अपनी मृत्युको युद्धमें बतलादिया २३ जिसने विनाशवान् कौरववंश फिर सजीव किया उस बड़े बुद्धिमान् ने कौरवों समेत नाशको पाया २४ हेमाधवजी इस देवताकेसमान नरोत्तम देवव्रत भीष्म के स्वर्ग्गवासी होने पर कौरवलोग धर्म्मों के विषय किससे पूछेंगे २५ जो कि अर्जुनका विनेता और सात्यकी का गुरूहै उसकौरवों के उत्तमगुरू द्रोणाचार्य्य को पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखो २६ हे माधवजी जैसे कि देवताओं के ईश्वर इन्द्र और बड़े पराक्रमी भार्गव परशुरामजी चारोंप्रकारके अस्त्रोंके ज्ञाताथे उसीप्रकार द्रोणाचार्य्य भी जानतेथे २७ जिसके प्रभावसे पाण्डव अर्जुनने कठिन कर्मको किया वह मृतक होकर सोताहै उसको भी अस्त्रोंने रक्षित नहीं किया २८ कौरवोंने जिसको अग्रवर्त्ती करके पाण्डवों को बुलाया वह पृथ्वीपर मराहुआ ऐसे सोताहै जैसे कि निर्ज्वलित अग्नि होती है २९ हे माधवजी मृतक द्रोणाचार्य्य की धनुष्की मुष्टि और युद्धके हस्तत्राण विना जुदेहुये रणभूमि में ऐसे दिखाई

पड़ते हैं जैसे कि जीवतेहुयेके होते हैं ३० हे केशवजी चारों वेद और सब अस्त्र जिस शूरसे ऐसे पृथक् नहींहुये जैसे कि आदिमें प्रजापतिजीसे जुदेनहीं हुये थे ३१ उनके उन दोनों चरणोंको शृगाल खैंचते हैं जोकि दंडवत्के योग्य और बन्दीजनोंसे स्तूयमान अतिशुभ होकर सैकड़ों शिष्योंसे पूजितथे ३२ हे मधुसूदनजी यह दुःखसे घातितबुद्धि कृपी इस धृष्टद्युम्नके हाथ से मृतक द्रोणाचार्य्य के पास महादुःखी नियतहै ३३ उसरोदनकरनेवाली पीड़ावान् खुलेकेश नीचा शिरकिये शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अपने पति द्रोणाचार्यके समीप नियतकोदेखो ३४ हे केशवजी यहजटिला ब्रह्मचारिणी रणभूमिमें धृष्टद्युम्नके बाणोंसे टूटेकवचवाले द्रोणाचार्य्य के पास नियतहै ३५ यह अत्यंतकोमल शरीर यशवन्ती दुःखी कृपी युद्धमें मृतकपतिके क्रिया कर्म्म में दुःखसे उपाय करती है ३६ सामग ब्राह्मण बिधिपूर्व्वक अग्नियों को धारण करके सब ओरसे चिताको अग्निसे प्रज्वलित करके द्रोणाचार्य्यको उसमें रखकर सामवेदके तीनमंत्रोंको गाते हैं ३७ हे माधवजी यह जटिल ब्रह्मचारी धनुष् शक्ति और रथोंकी नीड़ोंसे चिताको बनाते हैं ३८ नानाप्रकारके दूसरे बाणोंसे चिताको बनाकर बड़े तेजस्वी द्रोणाचार्य्य को अच्छेप्रकारसे धरकर जलातेहुये मन्त्रोंको गातेहुये रुदनको करते हैं ३९ दूसरे शिष्य अग्निमें अग्निको धारण करके और द्रोणाचार्यको अग्निमें हवनकरके अन्तमें नियत होकर तीन साममन्त्रोंको गाते हैं ४० द्रोणाचार्य्यके शिष्य वह ब्राह्मण चिताको दक्षिण करके और कृपीको आग करक श्रीगंगाजी के सम्मुख जाते हैं ४१॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणित्रयोविंशोऽध्यायः २३॥

चौबीसवां अध्याय॥

गान्धारी बोली हे माधवजी सम्मुखही सात्यकी के हाथ से गिरायेहुये और बहुतसे पक्षियों से घिरेहुये सोमदत्त के पुत्रकोदेखो १ हे जनार्द्दनजी पुत्रशोक से दुःखी सोमदत्त मानो बड़े धनुषधारी सात्यकी की निन्दाकरता हुआ देखता है २ यह भूरिश्रवाकी माता निर्दोष दुःख से पूर्ण अपनेपति सोमदत्त को मानो विश्वास कराती है ३ कि हे महाराज प्रारब्ध से इस भरतवंशियों के भयानक नाशको और कौरवोंके घोर प्रलयकाल के समान रोदन करनेको तुम नहीं दे-

खतेहो ४ और प्रारब्ध से इस हजारों दक्षिणा देनेवाले बहुत यज्ञोंसे पूजन करनेवाले यूप ध्वजाधारी मृतक पुत्रको नहीं देखते हो ५ हे महाराज प्रारब्ध से रणभूमि में इन पुत्रबधुओं के घोर विलापको ऐसे नहीं देखतेहो जैसे कि समुद्रपर सारसियों के शब्द होते हैं ६ तेरी पुत्रबधू मृतक पतिवाली एकवस्त्रार्द्ध से गुप्त शरीर और शिरके खुलेबाले केशवाली चारोंओरको दौड़ती हैं ७ तुम प्रारब्ध से शृगालआदिक से खाईहुई टूटी भुजा और अर्जुन से गिरायेहुये नरोत्तम पुत्र को नहीं देखतेहो ८ अब यहां युद्धमें मृतक भूरिश्रवा और शल्यको और नानाप्रकार के पुत्रबधुओं को नहीं देखतेहो ९ प्रारब्ध से यूपभुजाधारी महात्मा भूरिश्रवाके उससुवर्ण के छत्रको रथके बैठने के स्थानपर गिराहुआ नहीं देखते हो १० भूरिश्रवाकी यह श्यामचक्षु स्त्रियां सात्यकीके हाथसे मरेहुये पतिको घेरकर शोचती हैं ११ हे केशवजी दुःखकी बातहै कि पतिकेशोक से पीड़ावान् यह स्त्रियां दुःखका विलापकरके सम्मुख पृथ्वीपर गिरती हैं १२ हे अर्जुन तुमने बीभत्सुनामहो यह निन्दितकर्म कैसे किया जो यज्ञकरनेवाले अचेत शूरकी भुजाको काटा १३ सात्यकीने भी उससे अधिक पापकर्मकिया कि शरीर त्यागने के निमित्त नियम करनेवाले तीक्ष्णबुद्धिका शिरकाटा १४ हे धर्म के अभ्यासी दोके हाथ से मारेहुये तुम अकेले सोतेहो अर्जुन गोष्ठी और सभाओं में क्या कहैगा १५ और वह सात्यकी भी इस अपवित्र अपकीर्त्ति करनेवाले कर्म को करके क्याकहैगा हे माधवजी यह भूरिश्रवाकी स्त्रियां पुकारती हैं १६ भूरिश्रवा की यह स्त्री जिसकी कमर हाथकी मुट्ठीके समानहै पतिकी भुजाको बगल में लेकर दुःखका बिलाप करती है १७ कि यह वह हाथहै जोकि शूरोंका मारनेवाला मित्रोंको निर्भयता देनेवाला हजारों गोदानकरनेवाला और क्षत्रियोंका नाश करनेवालाहै १८ यह वह हाथहै जोकि सरसनोत्कर्षी अर्थात् स्त्रियोंके वस्त्रोंका उघाड़नेवाला पीनस्तनों का मर्द्दनकरनेवाला नाभि छाती और जंघाओं का स्पर्शकरनेवाला और नीबी अर्थात् आंगीनाम स्तनरक्षक वस्त्रका हटानेवाला है १९ बासुदेवजी के सम्मुख सुगमकर्मी अर्जुनने युद्ध में दूसरे के साथ लड़ने वाले तुझ अचेतका हाथ काटडाला २० हे जनार्द्दनजी सत्पुरुषों के मध्यमें और कथाओं में अर्जुन के इस बड़े कर्मको क्याकहोगे अथवा आप अर्जुनही क्या कहैगा २१ यह उत्तम स्त्री इसप्रकार निन्दाकरके मौनहै यह सपत्नी स्त्रियां इस

को ऐसे शोचती हैं जैसे कि अपनी पुत्रबधूको शोचती होती हैं २२ यह बलवान् और सत्यपराक्रमी शकुनी गान्धारदेशका राजा नाते में मामा अपने भानजे सहदेव के हाथ से मारागया २३ जोकि पूर्व्वसमय में सुवर्ण दण्डीवाले पंखोंसे वायुकियाजाताथा वह अब सोताहुआ पक्षियों के परोंसे वायु कियाजाताहै २४ जोकि अपने सैकड़ों और हजारों रूपोंको करलेताथा उस मायावी की माया पाण्डवों के तेजसे नष्टहोगई २५ जिस छलीने सभामें मायासे जीतते युधिष्ठिर को और बड़े राज्यको विजयकिया अन्तमें वह पराजित हुआ २६ हे श्रीकृष्ण जी पक्षीगण चारोंओरसे उस शकुनीकी वर्त्तमानता करते हैं जोकि मेरे पुत्रोंके लिये कुल्हाड़ा और संसार के नाशके अर्थ शिक्षापानेवाला हुआ २७ इसने मेरे पुत्र और अपने समूहसमेत अपने मरनेके लिये पाण्डवों के साथ बड़ी शत्रुता करी २८ हे प्रभु जैसे कि मेरे पुत्रोंके लोकशस्त्रों से विजयहुये उसीप्रकार इस दुर्बुद्धीकेभी लोकशस्त्रोंसे विजयहोगये २९ हे मधुसूदनजी यह कुटिलबुद्धी वहां भी मेरे सत्य बुद्धिवाले पुत्रोंको कहीं भाइयों समेत विरोधी न करे ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी इस मृतक और पृथ्वीकी धूलपर सोनेवाले काम्बोज के राजा को देखो जोकि अजेय उत्तम स्कन्धयुक्त होकर काम्बोज देशी उत्तम पुरुषों के योग्यहै १ वह भार्य्या जिसकी रुधिर भरी चन्दनसे लिप्त भुजा को देखकर महादुःखी होकर दुःखका यह विलाप करती है २ कि यह वह शुभ उँगलियां और हथेली रखनेवाले परिघनाम शस्त्र के समान भुजाहैं पूर्व्वसमय में जिनके मध्य को पाकर मुझको कभी प्रीति ने नहीं त्याग किया ३ हे राजा मृतक बन्धुवाले अनाथ कम्पायमान मधुर शब्दवाले मैं तुमसे जुदीहोकर किस दशाको पाऊंगी ४ धूपमें म्लान नानाप्रकारकी मालाओं का रूपान्तर होजाता है परिश्रमसे पीड़ावान् स्त्रियों के शरीरको शोभा त्याग नहीं करती है ५ हे मधुसूदनजी इस सोनेवाले शूरवीर राजा कलिङ्ग को चारोंओर से देखो जिसकी बड़ी भुजा प्रकाशित बाजूबन्दों के जोड़े से अलंकृतहै ६ हे जनार्दनजी स्त्रियां सब ओरसे इस जयत्सेन राजा मगधको घेरकर [illegible]

कुल हैं ७ हे मधुसूदनजी इन बड़े नेत्रवाली और सुन्दर स्वरवाली स्त्रियों के शब्द जोकि चित्तरोचक और श्रवणोंको प्यारे हैं मेरे मनको व्यथित करते हैं ८ गिरेहुये वस्त्र और भूषणवाली शोक से पीड़ित रोदन करनेवाली मगधदेशी स्त्रियां जोकि सुन्दर वस्त्रवाले शयनों से युक्तथीं पृथ्वीपर सोती हैं ९ यह स्त्रियां कौशलदेशों के राजा बृहद्बलनाम अपने पतिको घेरकर पृथक् २ रोती हैं १० यह बारम्बार अचेत और दुःखसे पूर्ण स्त्रियां अभिमन्यु के भुजबलसे मारे और उसके अंगों में लगेहुये बाणोंको निकालती हैं ११ हे माधवजी इन सब निर्द्दोष स्त्रियों के मुख धूप और परिश्रमसे ऐसे दिखाई पड़ते हैं जैसे कि कुम्हलायेहुये कमल होते हैं १२ धृष्टद्युम्नके सब पुत्र बालक सुवर्णकी माला और सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले शूरवीर द्रोणाचार्य्य के हाथ से मरेहुये सोते हैं १३ जिसका रथ अग्निकुण्ड है धनुष् अग्निहै और बाण शक्ति गदा यह इंधनहैं उस द्रोणाचार्य को पाकर ऐसे भस्महोगये जैसे शलभनाम पक्षी अग्निको पाकर भस्महोजाते हैं १४ उसीप्रकार सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले कैकयदेशी पाचों शूर भाई सम्मुखतामें द्रोणाचार्य्य के हाथसे मरेहुये सोते हैं १५ तप्त सुवर्ण के समान कवचताल वृक्ष के समान ध्वजाधारी रथों के समूह अपने तेज से पृथ्वी को ऐसे प्रकाशित करते हैं जैसे कि ज्वलित अग्नि प्रकाश करती है १६ हे माधवजी युद्ध में द्रोणाचार्य्य के हाथ से गिरायेहुये द्रुपद को ऐसे देखो जैसे कि बनमें बड़े सिंहसे मारेहुये बड़े हाथीको देखते हैं १७ राजा द्रुपदका श्वेत निर्मल छत्र ऐसे प्रकाशमानहै जैसे कि शरदऋतुमें चन्द्रमा होताहै १८ यह दुःखी भार्या और पुत्रवधू पांचालके वृद्ध राजा द्रुपदको दाहदेकर दाहिनी ओरसे जाती हैं १९ अचेत स्त्रियां द्रोणाचार्य्य के हाथसे मारेहुये इस महात्मा शूर चंदेरके राजा धृष्टद्युम्नको उठाती हैं २० हे मधुसूदनजी यह बड़ा धनुषधारी युद्धमें द्रोणाचार्य के अस्त्र को दूर करके माराहुआ ऐसे सोता है जैसे कि नदी से उखाड़ाहुआ वृक्ष होताहै २१ यह महारथी शूर चंदेरी का राजा धृष्टकेतु युद्ध में हजारों शत्रुओं को मारकर मरा हुआ सोता है २२ हे हृषीकेशजी स्त्रियां उन पक्षियों से घायलहोती सेना और बान्धवों समेत मरेहुये राजा चंदेरी के पास नियत हैं २३ हे श्रीकृष्णजी राजा चंदेरी की यह उत्तम स्त्रियां इस सत्य पराक्रमी बीर मैदान में सोनेवाले अपने पौत्र को बगलमें लेकर रोती हैं २४ हे श्रीकृष्णजी इसके पुत्र सुंदर मुख

और कुण्डलधारी को युद्ध में द्रोणाचार्य्य के बहुत प्रकार के बाणों से घायल देखो २५ निश्चय करके इसने अबतक भी रणभूमि में नियत शत्रुओं के साथ युद्ध करनेवाले बीर पिताको त्याग नहीं किया २६ हे माधव इसप्रकार मेरे पुत्र का भी पुत्र शत्रुओं के बीरों का मारनेवाला लक्ष्मण अपने पिता दुर्य्योधन के पीछे गया २७ हे श्रीकृष्णजी इन अवन्ति देशके राजा बिन्द अनुबिन्दको ऐसे देखो जैसे कि हिमऋतु के अन्तपर बायुसे गिरायेहुये दो पुष्पित शालवृक्षोंको देखते हैं यह दोनों सुवर्णके बाजूबन्द और कवचसे अलंकृत बाण खड्ग धनुष् धारण करनेवाले बैलकेसमान नेत्ररखनेवाले निर्मल मालाधारी सोते हैं २८।२९ हे श्रीकृष्णजी सब पाण्डव आपके साथ मारने के अयोग्यहैं जो कि द्रोणाचार्य भीष्म, कर्ण और कृपाचार्यसे भी बचेहुये हैं दुर्योधन, अश्वत्थामा, सिन्धु काराजा जयद्रथ, बिकर्ण, सोमदत्त और शूर कृतबर्मासे भी बचे ३०।३१ जो नरोत्तम शस्त्रों की तीक्ष्णतासे देवताओंको भी मारसक्तेथे वह सब इस युद्धमें मारेगये इसबिपरीत समयको देखो ३२ हे माधवजी निश्चयकरके दैवका कोई बड़ाभार नहीं है जो यह शूर क्षत्रिय क्षत्रियों के हाथसे मारेगये ३३ हे श्रीकृष्णजी मेरे वेगवान् पुत्र तभी मारेगये जब कि तुम अपने अभीष्ट प्राप्ती से रहित उपप्लवी स्थानको लौटकरगये ३४ उसी समय मुझको भीष्मपितामह और ज्ञानी बिदुरजी ने समझायाथा कि अपने पुत्रों पर प्रीति मतकरो ३५ उन दोनों की वह दूरदर्शकता मिथ्याहोनेके योग्यनहीं थी इसीसे हे जनार्द्दनजी मेरेपुत्र थोड़ेही दिनोंमें नाश होगये ३६ वैशम्पायन बोले हे भरतवंशी वह गान्धारी यह सब कहकर शोकसे मूर्च्छावान् दुःखसे घायल बुद्धि धैर्य्यको त्यागकर पृथ्वी पर गिरपड़ी ३७ फिर क्रोधसे पूर्ण शरीर पुत्रशोकमें डूबी असावधान इन्द्रिय गान्धारीने श्रीकृष्णजी को दोषलगाया ३८ गान्धारी बोली हे श्रीकृष्ण पाण्डवों के और धृष्टद्युम्नके पुत्रादिक सब परस्पर भस्महुये हे जनार्दन तुम किसहेतु से इन बिनाशहोनेवालों को त्यागकिया ३९ समर्थ और बहुतसे नौकर चाकर रखनेवाले बड़े बलमें नियत दोनोंओर के विषयोंमें समर्थ शास्त्ररूप बचन रखनेवाले ने किस कारणसे उपद्रवको दूरनहींकिया ४० हेमहाबाहु मधुसूदनजी जिसकारणसे तुझइच्छावान् ने जान बूझकर कौरवों का नाश होनेदिया इसहेतुसे तुमभी उसके फलको पावोगे ४१ पतिकी सेवा करनेवाली मैंने जो कुछ तपप्राप्तकिया उसदुष्प्राप्य तपके

द्वारा तुझ चक्र गदाधारी को शापदेतीहूं ४२ हे गोविन्दजी जो कि तुमने परस्पर जातवालों को मारनेवाले कौरव और पाण्डवों को नहींरोका इसहेतुसे तुम भी अपनी जातवालों को मारोगे ४३ हे मधुसूदनजी तुमभी छत्तीसवांबर्ष बर्त्तमान होनेपर मंत्री पुत्रज्ञातिवाले बनमें फिरनेवाले ४४ अज्ञातरूप लोकोंमेंगुप्त अनाथ केसमान निन्दित उपायसे मरणको पावोगे ४५ इसीप्रकार तेरी स्त्रियांभी जिनके पुत्रबान्धव और ज्ञातिवाले मारेगये ऐसे चारोंओरको दौड़ेंगी जैसे कि यह भरतवंशियों की स्त्रियां दौड़तीहैं ४६ बैशम्पायन बोले कि बड़े साहसी बासुदेवजी इसघोर वचनको सुनकर मन्दमुसकान करतेहुये उस देवी गांधारी से बोले हेक्षत्रियाणी मैं जानताहूं कि तू मेरे कर्म के समान कर्मकोभी अपने तपके नाशके लिये करती है यादवलोग दैवसेही नाशको पावेंगे इसमें सन्देह नहीं है हेशुभ स्त्री मेरे सिवाय कोई दूसरा पुरुष यादवोंकी सेनाको मारनेवाला नहीं है वह सब अन्य मनुष्य देवता और दानवों से भी अवध्यहैं ४७।४८।४९ इस हेतुसे यादव परस्पर बिनाश को पावेंगे श्रीकृष्णजी के इसप्रकार कहने पर पाण्डवलोग भयभीत चित्त अत्यन्त व्याकुल और जीवनमें निराशा युक्तहुये ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

श्रीभगवान् बोले हे गान्धारी उठोउठो शोकमें चित्तको मतकरो तेरे अपराध से कौरवोंने नाशको पाया १ जो उस दुर्बुद्धी अत्यन्त अहङ्कारी ईर्षा करनेवाले दुर्योधनको अग्रवर्त्ती करके अपने दुष्ट कर्म्मको अच्छामानती है २ जो कि कठोरवचन शत्रुताको प्रिय जाननेवाला मनुष्य और वृद्धोंकी आज्ञा के बिपरीत विरुद्धकर्म्म करनेवाला था यहां तू अपने कियेहुये दोषको कैसे मुझमें लगाना चाहती है ३ जो मृतक अथवा बिनाशयुक्त व्यतीत समय को शोचती है और दुःख से दुःखको पाती है अर्थात् आदि अन्तके दोनों दुःखोंको पाती है ४ ब्राह्मणी ने तपके निमित्त उत्पन्न होनेवाले गर्भको धारणकिया गौने भार लेचलने वालेको घोड़ीने दौड़ानेवाले को शूद्राने दास को बैश्या ने पशुपाल को और राजपुत्री क्षत्रियाने युद्धके अभिलाषी गर्भको धारण किया ५ बैशम्पायन बोले कि शोकसे व्याकुल नेत्र गान्धारी बासुदेवजी के उस अप्रिय और दुवारा कहे

हुये बचनको सुनकर मौनहोगई ६ फिर राजऋषि धृतराष्ट्रने अज्ञानसे उत्पन्न होनेवाले मोहको रोककर धर्मज्ञ राजा युधिष्ठिरसे पूछा ७ कि हे पाण्डव तुम जीवतीहुई सेनाकी संख्याके जाननेवाले हो और जो मृतक शूरबीरों की संख्याको जानते हो तो मुझसे कहौ ८ युधिष्ठिर बोले हे राजा इस युद्ध में एकअरब छियासठकिरोड़ बीसहजार शूरबीर मारेगये ६ (इस समयके लोग आश्चर्य न करें और दो बातों की ओर ध्यानकरें प्रथम यह कि इस महाभारतके युद्धमें सब संसार भरेके राजा सेनासमेत इकट्ठे हुयेथे वह सब सेनासमेत मारेगये दूसरे आज कलकी अपेक्षा उन दिनों में मनुष्यों में संख्याभी अधिकथी इसीप्रकार पृथ्वीका परिमाण भी अधिकथा) हे राजेन्द्र दृष्टि न आनेवाले बीरों की संख्या चौबीस हजार एकसौ पैंसठहै धृतराष्ट्रबोले हे पुरुषोत्तम महाबाहु युधिष्ठिर उन्होंने किस गतिको पाया वह मुझ से कहौ मेरे विचार से तुम सब बातों के जाननेवाले हो १०।११ युधिष्ठिर बोले जिन प्रसन्न चित्तों ने बड़े युद्धमें अपने शरीर को नाश किया वह सत्य पराक्रमी इन्द्रलोकके समान लोकों कोगये १२ हे भरतवंशी जो अप्रसन्न चित्तसे युद्धमें लड़तेहुये मारेगये वह गन्धर्बलोकको गये १३ और जो रणभूमि में नियत याचना करते पराङ्मुख होकर शस्त्रोंसे मारेगये वह गुह्यकों के लोकों को गये १४ जो पात्यमान अशस्त्र लज्जा से युक्त और बड़े साहसी युद्धमें शत्रुओंके सम्मुख शत्रुओं के हाथसे गिरते क्षत्रिय धर्म्मको उत्तम माननेवाले तेजशस्त्रों से मारेगये वह निस्सन्देह ब्रह्मलोकको गये १५।१६ हे राजा जो मनुष्य यहां रणभूमि के मध्यमें जिस किसी प्रकारसे मारेगये वह उत्तर कौरवदेशको गये १७ धृतराष्ट्रबोले हे पुत्र तुम सिद्धों के समान किस ज्ञानबलसे इस प्रकार देखते हो हे महाबाहु वह मुझसे कहौ जो मेरे सुननेके योग्यहै १८ युधिष्ठिर बोले कि पूर्वसमय में आपकी आज्ञानुसार बनमें घूमनेवाले मैंने तीर्थयात्रा के योगसे इस अनुग्रहको प्राप्त किया १९ देवऋषि लोमशऋषि देखे उनसे इस मनुस्मृतिको पाया और निश्चयकरके पूर्व्वसमय में ज्ञानयोगसे दिव्य नेत्रों को पाया २० धृतराष्ट्र बोले हे भरतवंशी क्या तुम नाथ और सनाथ लोगों के शरीरों को विधि के अनुसार दाह करोगे २१ जिन्हों का संस्कार करने के योग्य नहीं है और यहां जिनकी अग्नि नियत नहीं है हे तात कर्मों की अधिकतासे हम किसका क्रियाकर्मकरें जिन्होंको सुपर्ण अर्थात् गरुड़ और गिद्ध इधर उधर

से खैंचते हैं हे युधिष्ठिर क्रियाकर्म्म से उन्हों के लोकहोंगे २२। २३ बैशम्पायन बोले हे महाराज इस बचनको सुनकर कुन्ती के पुत्र युधिष्ठिरने दुर्य्योधनका पुरोहित सुधर्म्मा, धौम्यऋषि, सूत संजय, बड़े बुद्धिमान् बिदुरजी, कौरव युयुत्सु इन्द्रसेनादिक भृत्य और सब सूत २४।२५ इन सबलोगोंको आज्ञाकरी कि आप सबलोग इन्हों के सब प्रेतकार्य्यों को करो जिससे कि कोई शरीर अनाथके समान नाशको न पावे २६ धर्मराजकी आज्ञा से बिदुर, सूतसंजय, सुधर्म्मा और धौम्य पुरोहित समेत इन्द्रसेन और जयने २७ चन्दन, अगुरु, काष्ठ और कालीयक, घृत, तेल, सुगन्धियां बहुमूल्य क्षौमवस्त्र २८ लकड़ियों के ढेर और वहां पर टूटेहुये रथ और नानाप्रकारके शस्त्रोंको इकट्ठा करके २९ सावधानों ने बड़े उपायों से चिताओंको बनाकर मुख्य २ राजाओंको शास्त्र विहित कर्मों के द्वारा दाह किया ३० राजा दुर्य्योधन उसके सौ भाई शल्य राजाशल भूरिश्रवा ३१ राजाजयद्रथ, अभिमन्यु, दुश्शासनके पुत्र, राजा धृष्टकेतु ३२ बृहन्त, सोमदत्त सैकड़ों सृंजयदेशी, राजा क्षेमधन्वा, विराट, द्रुपद, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, पराक्रमी युधामन्यु, उत्तमौजस ३३।३४ कौशल्य, द्रौपदीके पुत्र, सौबलका पुत्र शकुनी, अचल, वृषक, राजा भगदत्त ३५ क्रोधयुक्त सूर्य्य का पुत्र कर्ण, पुत्रोंसमेत बड़े धनुषधारी केकयदेशी, महारथी त्रिगर्त्तदेशी ३६ राक्षसाधिप घटोत्कच, बक, राक्षसोंका राजा अलम्बुष राजा जलसिन्धु इनको और अन्य हजारों राजाओंको घृत की धाराओं से होमीहुई प्रकाशमान अग्नियों से अच्छे प्रकार दाह किया ३७। ३८ कितनेही महात्माओं के पितृयज्ञ बर्त्तमानहुये और सामवेदके मन्त्रों से गान किया उन्होंने दूसरों के साथ शोच किया रात्रि में सामवेद की ऋचा और स्त्रियों के रोदनों के शब्दों से सब जीवों का मोह आदिक बर्त्तमान हुआ ३९। ४० वह निर्धूम अत्यन्त प्रकाशित अग्नियां आकाश में दृष्टिपड़ीं और ग्रह छोटे बादलों से ढकगये ४१ वहांपर नानाप्रकार के देशों से आनेवाले जो अनाथ भी थे उन सबको इकट्ठा करके ४२ सीधे बृद्धियुक्त तेल से संयुक्त लकड़ियों की चिताओं से बिदुरजी ने राजाकी आज्ञानुसार उन सबको दाह किया कौरवराज युधिष्ठिर उन्हों की क्रियाओं को कराके धृतराष्ट्र को आगे करके श्री गङ्गाजी के सम्मुख गये ४३। ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिकुरूणामौर्ध्वदैहिकेषड्विंशोऽध्यायः २६॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि उन्होंने कल्याणरूप पवित्र जलों से पूर्ण श्रीगङ्गाजी को और बड़ी रूपवान् स्वच्छजल रखनेवाली ह्रदिनीको पाकर १ उत्तरीयवस्त्र और पगड़ी आदि को उतारकर पिता भाई पौत्र स्वजनपुत्र और नानाओं के जलदानों को किया अत्यन्त दुःखी रोनेवाली सब कौरवीय स्त्रियोंने अपने २ पतियोंको जलदान किया ३ धर्मज्ञ लोगोंने सुहृदों की भी जल क्रियाओं को किया बीरोंकी पत्नियों से बीरों का जलदान करनेपर ४ गङ्गाजी सूपतीर्था अ-र्थात् सुन्दर घाटवाली हुई और फिर शीघ्रगामी होगई वह गङ्गाजीकातट महा समुद्रकेरूप प्रसन्नता और उत्सवसे रहित ५ बीरोंकी स्त्रियों से संयुक्त होकर महा शोभायमान हुआ हे महाराज इसकेपीछे शोकसे पीड़ित धीरे २ रोदन करती कुन्ती ६ अकस्मात् अपने पुत्रों से यह बचन बोली कि जो वह बड़ा धनुषधारी महारथी ७ बीरों के चिह्नों से चिह्नित युद्धमें अर्जुनके हाथसे विजय हुआ हे पा-ण्डव तुम जिसको सूतका और राधाकापुत्र मानते हो ८ और जो समर्थ सूर्य्य के समान सेनाके मध्यमें बिराजमान हुआ प्रथम जिसने तुम सब समेत तुम्हारे साथियों से युद्ध किया ९ और जो दुर्य्योधन की सब सेनाको खैंचता शोभाय-मान हुआ जिसके बलके समान सम्पूर्ण पृथ्वीपर कोई राजा नहीं है १० और जिस शूरने सदैव इस पृथ्वीपर शुभ कीर्त्ति को प्राणोंसे भी अधिक चाहा उस सत्यप्रतिज्ञ युद्ध में पराङ्मुख न होनेवाले ११ सुगमकर्मी अपने भाई कर्ण का जलदान करो वह तुम्हारा बड़ाभाई सूर्य्यदेवता से मुझ में उत्पन्न हुआ था वह शूर कुण्डल कवचधारी और सूर्य्य के समान तेजस्वी था सब पाण्डव माताके उस अप्रिय बचनको सुनकर १२ । १३ कर्णको शोचतेहुये फिर पीड़ावान् हुये इसकेपीछे सर्प के समान श्वासलेता वह कुन्तीका पुत्र पुरुषोत्तम बीर युधिष्ठिर अपनी मातासे बोला कि जो बाणरूप तरङ्ग ध्वजारूप भवँर बड़ी भुजारूप बड़े ग्राह रखनेवाली १४ । १५ ज्याशब्द से शब्दायमान बड़े ह्रदरूप उत्तम रथका रखनेवालाथा और अर्जुनके सिवाय दूसरा मनुष्य जिसकी बाणवृष्टी को पाकर सम्मुख नियत नहीं हुआ वह देवकुमार पूर्बसमय कैसे आपकापुत्र हुआ जिस के भुजों के प्रताप से हम सब ओरसे तपाये गये १६ । १७ जैसे कि अग्निको

कपड़ों से ढके उसीप्रकार तुमनें इसको किस निमित्त गुप्त किया जिसकी कठिन भुजाओंका बल धृतराष्ट्र के पुत्रों से ऐसे उपासना कियागया १८ जैसे कि हम लोगों से अर्ज्जुन के भुजबल की उपासना करीगई सब राजाओं के मध्य में कुन्तीके पुत्र कर्णके सिवाय दूसरारथी और महाबलवान् उत्तमरथी भी रथोंकी सेनाको नहीं रोकसक्ता था और सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ हमारा बड़ा भाई था १९ । २० आपने प्रथमही उस श्रेष्ठ पराक्रमीको कैसे उत्पन्न किया दुःखकी बात है कि आपके भेद गुप्त करनेसे हम मारेगये २१ हम बान्धवोंसमेत कर्ण के मरने से पीड़ावान् हुये अभिमन्यु द्रौपदी के पुत्र २२ पांचालोंके नाश और कौरवोंके गिरनेसेभी हम पीड़ावान्हुये परन्तु उनसबसेभी सौगुने इसदुःखने अब मुझको दबायाहै २३ मैं कर्णकोही शोचताहुआ मानों अग्नि में नियतहोकर जलता हूं स्वर्गमें प्राप्तहोकर भी मेराकुछ प्रयोजन सिद्ध नहींथा २४ जो यह घोरयुद्ध कौरवोंका नाशकरनेवाला न होता हे राजा इसप्रकार धर्मराज युधिष्ठिरने बहुत विलाप करके २५ धीरे २ बहुतरोदन किया इसके पीछे उसप्रभुने उसका जल दान किया उससमय सब स्त्री पुरुष अकस्मात् पुकारे २६ वहां उस जलदान क्रियामें गंगाजी समीप जलरखनेवाली नियतहुई इसके पीछे उस बुद्धिमान् कौरवपति युधिष्ठिर ने भाई के प्रेमसे कर्णकी सब स्त्रियों को परिवारसमेत बुला लिया उसधर्मात्मा बुद्धिमान् धर्मराज युधिष्ठिरने उन्हों के साथ निस्सन्देह विधिपूर्वक प्रेतक्रियाको किया इसमाताके गुप्तपापसे मुझसे बड़ाभाई जातवाला गिरायागया २७ । २८ । २९ इसहेतुसे स्त्रियोंके चित्तमें जो गुप्तकरने के योग्य बातहै वह गुप्तनहीं होगी वह महा व्याकुलचित्त ऐसा कहकर गंगाजीको उतरा और सब भाइयोंसमेत गंगाजी के तटको प्राप्त किया ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्त्रीपर्व्वणिकर्णगूढ़जन्मकथनन्नामसप्तविंशतितमोऽध्यायः २७ ॥

शुभम्भूयात् ॥

इति स्त्री पर्व्व समाप्तम् ॥

महाभारत काशीनरेश के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व १
२ सभापर्व्व २
३ बनपर्व्व ३
४ बिराटपर्व्व ४
५ उद्योगपर्व्व ५
६ भीष्मपर्व्व ६
७ द्रोणपर्व्व ७
८ कर्णपर्व्व ८
९ शल्य ९ गदा व सौप्तिक १० ऐषिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व्व १२
१० शान्तिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमबासिक १५ मौसलपर्व्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिवंशपर्व्व १९ ॥

महाभारत सबलसिंहचौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारतकी कथा दोहे चौपाई आदि छन्दोंमें है यह पुस्तक ऐसी सरलहै कि कमपढ़ेहुये मनुष्यों के भी भलीभांति समझमें आती है इसका आनन्द देखनेही से मालूम होगा ॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) बन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म, (७) द्रोण, (८) कर्ण, (९) शल्य, (१०) गदा, (११) स्त्री, (१२) स्वर्गारोहण, (१३) शान्तिपर्व, (१४) अश्वमेध, (१५) सौप्तिक, (१६) ऐषिक ॥

ये पर्व्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व्व मिलेंगे छापेजावेंगे जिन महाशयों को मिलसके हैं कृपाकरके भेजदेवें तो छापेजावें ॥

महाभारत वार्त्तिक भाषानुवाद ॥

जिसका तर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषामें होगया है और आदिपर्व्व से लेके हरिवंश पर्यन्त सम्पूर्ण उन्नीसों पर्व्व छपगये हैं ॥

भगवद्गीता नवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगमपुराण स्मृति सां-
ख्यादि सारभूत परमरहस्य गीताशास्त्र का सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य विनं-
ौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादि गुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परम
अधिकारी जानके हृदयजनित मोह नाशार्थ सबप्रकार अपार संसार निस्तारक
भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदान्त व
योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार नहीं
पासके तब मन्दबुद्धि जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सा-
मर्थ्यहै वह कब इसके अन्तराभिप्राय को जानसक्के हैं और यह प्रत्यक्षही है कि
जबतक किसीपुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें
न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिलै इस कारण सम्पूर्ण भारतनिवासी
भगवद्भक्त पादाब्ज रसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्म्म
धुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्व विद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुंशी
नवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने बहुतसा धनव्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि
पंडित उमादत्तजी से इस मनोरञ्जन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंक-
राचार्य्य निर्म्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलक रचाय न-
वलभाष्यआख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको
भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्के हैं ॥

जब छपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओं की सम्मतिसे
यह विचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थके भाष्यमें अधिकतर उत्तमता
इससमय पर होगी कि इस शंकराचार्य्यकृत भाष्य भाषाकेसाथ और इसग्रन्थके
टीकाकारोंकी टीकाभी जितनीमिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों के
अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारण से श्रीस्वामी शंकराचार्यजी के शंकरभाष्य
का तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल
श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थितहै ॥

महाभारत भाषा ॥

अनुशासन पर्व्व

जिसमें

सम्पूर्णधर्म व सम्पूर्ण दान व सम्पूर्ण व्रतोंका फल व सम्पूर्ण माहात्म्य व ग्राह्याग्राह्य वस्तु विचार व तपस्वी व धर्म्मात्माओं के लक्षण इत्यादि अनेक कथा विस्तार से वर्णन कीगई हैं ॥

जिसको

भार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरी धुरीण मुंशीनवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमण्डी निवासि चौरासियागौड़ वंशावतंस पण्डित कालीचरणजी से संस्कृत महाभारतका यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोकका भाषानुवाद कराया ॥

दूसरीवार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपा ॥

अक्टूबर सन् १८९८ ई० ॥

महाभारतोंकीफ़ेहरिस्त ॥

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत १२)पु०

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेकप्रकार के ललित छन्दों में अठारहपर्व्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदका सारहै वरन बहुधालोग इस विचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेद बताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोई कथा व इतिहास और वेद कथित धर्माचार की कोई बात इससे छूट नहीं गई मानों यह पुस्तक वेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ७० वर्षके बीते कि कलकत्ते में यह पुस्तक छपीथी उस समय यह पोथी ऐसी अलभ्य होगई थी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राज़ी थे पर नहीं मिलतीथी पहले सन् १८७३ ई० में इस छापेखाने में छपीथी और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिबी १२) थे जैसा कारखानेका दस्तूरहै॥

अब दूसरीबार डबलपैका बड़े हरफ़ों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालों ने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरी के वास्ते इससे भी क़ीमतमें किफ़ायत होसक्ती है ॥

इस महाभारत के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व	१	१) पु०	५ उद्योगपर्व्व	५	॥) पु०
२ सभापर्व्व	२	।-) पु०	६ भीष्मपर्व्व	६	॥=) पु०
३ वनपर्व्व	३	१|=) पु०	७ द्रोणपर्व्व	७	॥=) पु०
४ विराटपर्व्व	४	।) पु०	८ कर्णपर्व्व	८	॥) पु०

९ शल्य व गदा ९ सौसिक १० ऐषिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व्व १२ ।=) पु०

१० शान्तिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म २) पु०

११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मुशलपर्व्व१६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८ ।) पु०

१२ हरिवंशपर्व्व १९ १=) पु०

अनुशासनपर्व भाषा का सूचीपत्र।

इति अनुशासनपर्व्व भाषा का सूचीपत्र समाप्त हुआ ॥

अथ महाभारत भाषा

दानधर्मगर्भित अनुशासनपर्व्व ॥

श्लोक ॥ नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीकनयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् । गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराण्मस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहे केशवम् १ यामातिवीणामिववादयन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे । साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानःप्रतिभांव्यनक्तु २ पाण्डवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् । व्यधायिभारतंयेनतं वन्देबादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूपणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन । तंशारदालब्धवरप्रसादम् वन्दे गुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ चौरासियाभिधधरामरवंशजन्मा श्रीमान्मनीषिमणिगोकुलचन्द्रसूनुः । अस्यन्तरम्यमनुशासनपर्वणोद्य भाषानुवादमनुरागकरंकरोति ५ ॥

महाभारत भाषा अनुशासनपर्व्व प्रारम्भः ॥

युधिष्ठिरने प्रश्नकिया कि हे पितामह आपने अनेकप्रकारके निर्विकल्प शोक संताप के हरनेवाले सूक्ष्म शर्मोंका वर्णन किया इसप्रकारके इसज्ञानको सुनकर मेरे हृदय में शान्ती नहीं होती १ यद्यपि इस विषय में आपने बहुत प्रकारकी शान्तियां कहीं परन्तु इन अनेक प्रकारकी शान्तियोंसे भी मेरे कियेहुये कर्मों में शान्ती नहीं होसक्ती २ हे अत्यन्त घायल और बाणों से भिदेहुये पितामह मैं आपके शरीरको देखकर और अपने पापोंको ध्यान करताहुआ महाक्लेशित होताहूं ३ हे पुरुषोत्तम मैं रुधिरसे भरेहुये पर्वतकी समान श्रवते आपके शरीर को देखकर ऐसा खेदित होताहूं जैसे कि बर्षाकाल में कमल होताहै ४ हे हमारे पितामह जोकि आप युद्धभूमि में मेरेही कारणसे शत्रुओंके बिरोधी शिखण्डी आदिके हाथ से ऐसी दशाको प्राप्तहुयेहो इससे अधिक कौनसा कष्टहोगा ५

और इसी प्रकारसे अन्य राजालोगोंने भी अपने पुत्र वा बान्धवों समेत मेरेही निमित्त मरणको पायाहै इससे अधिक क्या दुःखहोगा ६ हे राजा हम सब और धृतराष्ट्रके पुत्र काल और क्रोधके बशीभूत होकर इस महानिन्दित कर्मके करने से कौनसी गतिको पावेंगे ७ हे महाराज इसदशामें प्राप्तहुये आपको जो दुर्यो-धन नहीं देखताहै इससे मैं मानता हूं कि उसका बड़ा कल्याण है ८ और मैं आपका और सुहृद्‌जनोंका नाश करनेवाला आपको पृथ्वीपर अत्यन्त खेदित पड़ाहुआ देखकर महाक्लेशको प्राप्तहोताहूं ९ वह दुरात्मा कुलका कलंकी दुर्य्यो-धन अपने छोटेभाई और बान्धवोंसमेत इस क्षत्री धर्म्मरूप युद्धमें क्या मारागयाहै १० कि जो ऐसी दशामें पृथ्वीपर पड़ेहुये आपको वह दुष्टात्मा नहीं देखता है इस हेतुसे मैं उसका मरना कल्याणरूप मानताहूं और अपने जीवनको धि-क्कार समझताहूं ११ हे वीर इस युद्धमें शत्रुओंकी ओरसे मैं नाशको प्राप्त किया गया हे धर्मधारी जो भाइयोंसमेत मैं पूर्वही समर्थहोता १२ तो आपको इसरीति से पीड़ामान शायकोंसे महाक्लेशित नहींदेखता निश्चयकरके हमलोगोंको ईश्वर ने पापकर्म्म करनेवाला उत्पन्न कियाहै १३ हे राजेंद्र जो आपकी कृपा हमपर है तो अब जैसे कि परलोक में हमलोग राग द्वेषसेरहित होजायँ वही शिक्षा हम को करिये १४ भीष्मजी बोले कि हे युधिष्ठिर यह सम्पूर्ण काल कर्म्म प्रारब्ध ईश्वरके स्वाधीनहैं तुम इन शुभाशुभकर्मों का कारण अपने को समझतेहो यह बात बड़ी सूक्ष्म और इन्द्रियोंसे जानने में नहीं आसक्ती १५ इसस्थानपर मैं एक प्राचीन इतिहास तुमसे कहताहूं जिसमें कि मृत्यु गौतमीका काल लुब्धकका और पन्नगसर्प से परस्पर प्रश्नोत्तरहै १६ हे कुन्तीनन्दन एक गौतमीनाम वृद्धब्राह्मणी बड़ी विवेकयुक्त होतीभई उसका एक सुकुमार पुत्रथा उसको दैवयोगसे एक बड़े विषधरसर्पने काटा और काटतेही मरगया यहदशा देखकर एक अर्जुनक नाम लुब्धक अर्थात् बहेलिया महाक्रोधितहोकर उस सर्पको फांसीमें बांधकर गौतमी के पास लेआया १७ । १८ और कहनेलगा कि हे गौतमी यह सर्पों में महानीच पन्नगनाम सर्प है जिसने कि तेरे पुत्रको मारा इसको जैसे तू कहे वैसेही हममारें १९ महाप्रज्वलित अग्निमें डालें वा इसके खण्ड कियेजायँ यह बालकका मारने वाला महापापी बहुत विलम्बतक जीता छोड़नेके योग्य नहीं है इसको शीघ्र-ही जैसी आज्ञादो उसी प्रकारसे मारें २० गौतमीने कहा कि हे अर्ज्जुनक तुम

निर्बुद्धीहो इस सर्प को छोड़दो यह सर्प तुमको मारना न चाहिये यह पूर्वकर्म के भोगसे भवितव्यतारूप होकर प्राप्त होताहै हज़ारों मनुष्य दुःखरूपी समुद्र में पड़ेहुये उछलते और डूबतेहुये कोई डूब जाते हैं कोई तैर जाते हैं और पूर्वकर्म केही योगसे हज़ारों सुखी और दुःखी रहते हैं बहुतसे इस लोकमें धर्मरूपी नौकाके द्वारा दुःखरूपी समुद्र से तरजाते हैं और पापसे ऐसे डूबजाते हैं जैसे कि जलमें बोझके कारण लोहेका टुकड़ा डूबजाताहै २१। २२ इसके मारने से मेरा पुत्र सजीव नहीं होगा और इसके जीवने से तेरी भी कुछ हानि न होगी इस सजीवको निर्जीव करनेसे कौन मृत्युके अनन्त लोकको जायगा २३ लुब्धक बोला कि गुण अगुण पाप धर्मकी जाननेवाली देवी मैं निश्चय करके जानता हूं कि पापही के भारसे सब जीवमात्र पीड़ा पाते हैं यद्यपि श्रेष्ठलोग सबकी पीड़ाको देखकर आप पीड़ित होते हैं परन्तु उपदेश सुखी लोगों के निमित्त कहे जाते हैं दुःखी लोगोंको नहीं किये जाते इसीकारण मैं इस नीच सर्पको मारूंगा २४ इच्छावान् जितेन्द्रिय मनुष्य ऐसे कामको कालका कर्म्म वर्णन करते हैं और अर्थज्ञ लोग शीघ्रही शोचको त्यागकरते हैं बहुतसे मनुष्य अपनी अज्ञानतासे सुखके नाश होजानेको शोचते हैं इसी कारण तुमभी इस सर्प के मरजाने से शोकको त्यागकरो २५ गौतमी बोली कि हम सरीखे जीवों को ऐसे प्रकारकी पीड़ा नहीं होती क्योंकि सज्जनलोग सदैव धर्मात्माहोते हैं और यह बालकभी सदैव मृतकहै अर्थात् मरणधर्मा है इसी हेतुसे मैं इस सर्पके मारने में समर्थ नहीं हूं २६ ब्राह्मणों में क्रोध नहीं है फिर क्रोधसे दूसरेको पीड़ा कैसे दे सक्ते हैं—हे साधो इस सर्पको तू अपनी मृदुतासे क्षमाकरके छोड़दे २७ लुब्धक बोला कि इसके मारने से परलोकका हितकारी अविनाशी लाभहै इसी कारण लाभके लोभसे मनुष्य सब पराक्रमियों से उत्तम होताहै इस नीच सर्पके नाश योग्य होनेसे जो उसके मरनेसे चित्तका मनोरथ प्राप्तहो वह लाभ अक्षय और कल्याण का करनेवाला है परन्तु वह तुमको नहीं प्राप्तहोसक्ता है २८ गौतमी बोली कि शत्रु को पकड़कर उसके जीव नाश करने से क्या अर्थ सिद्धहोगा और शत्रुको दृढ़बंधनमें करनेसे कौनसा चित्तका मनोरथ सिद्धहोगा हे सौम्य मैं कौन कारणसे अपने शत्रु सर्पपर क्षमा न करूं अथवा किस हेतुसे इसको बन्धसे मोक्ष करनेके द्वारा अपना कल्याण न करूं २९ लुब्धक बोला हे गौतमी इस

अकेले सर्पसे बहुतसे जीवधारी रक्षाकरनेके योग्यहैं और अकेला बहुत जीवोंसे अधिक रक्षाके योग्य नहीं है धर्मज्ञ पुरुष अपराधी को मारते हैं इससे तू भी इस महापापी सर्पको मार ३० गौतमी बोली हे लुब्धक इस सर्पके मरजानेसे मेरापुत्र नहीं जीसक्ता और इसके मरनेसे मैं कोई दूसराभी पुण्य होना नहीं देखतीहूं इस हेतुसे इससर्पको जीताहुआही छोड़दे ३१ लुब्धक बोला कि देवराज इन्द्रने वृत्रासुरको मारकर प्रतिष्ठापाई और देवदेव महेश्वरजीने दक्षके यज्ञको विध्वन्सकरके अपना भाग पाया इससे तुमभी देवताओंकी रीति के अनुसार चलकर शीघ्रही इस दुष्टको मारो और किसीप्रकारका सन्देह मतकरो ३२ भीष्मजी बोले कि लुब्धकके अनेक प्रकारसे समझाने परभी वह महाभागवती गौतमी पापमें संयुक्त नहीं हुई ३३ दुःखसे कुछ श्वासालेनेवाले फांसी से पीड़ामान सर्पने धैर्यता में रक्षितहोकर बड़ीमन्दवाणीसे कहा कि हे लुब्धक अर्जुनक अब यहां मेरा कौनसा अपराधहै जो मृत्युने मुझ अस्वतन्त्र और दूसरेके आधीनको चलायमानकिया ३४।३५ इस बालकको मैंने उसीके कहनेसे काटाहै अपनेक्रोध और इच्छासे नहीं काटाहै हे लुब्धक जो इसमें पापहै तो उसी मृत्युका पापहै ३६ लुब्धकने कहा कि जो तुझअस्वतन्त्रने इस पापको कियाहैइससे तुमभी तो इस पापके मूलहो इससे अवश्य अपराधीहो ३७ हे सर्प जैसे कि मृत्तिकाकेपात्र बनानेमें दण्ड और चक्र दोनों कारण मानेजाते हैं इसीप्रकार तुमभी कारणहो ३८ हे पन्नग तुम सबरीतिसे अपराधी होनेके हेतुसे मुझसे बध होनेके योग्यहो ३९ सर्पबोला जैसे कि दण्ड चक्रादिक अपने स्वाधीन नहीं हैं उसीप्रकार मैंभी स्वतन्त्र नहींहूं इसहेतुसे तेरा कल्पना कियाहुआ अपराध मुझमें नहींहै ४० अथवा जो तू यह कहताहोय कि वह सब चक्र दण्डादिक परस्पर में मिलेहुये कर्ममें प्रवृत्तहैं और परस्पर के कहने सुननेमें कर्त्ता और कर्मका सन्देह उत्पन्नहोताहै ४१ ऐसी दशामेंभी मेरा दोषनहीं है और न मैं अपराधी होकर मारनेके योग्यहूं जो तुम अपराधहीको मानतेहो तो वह अपराध सब प्रेरणा करनेवालों में होगा केवल मुझी अकेले में कैसे होसक्ताहै ४२ लुब्धक बोला कि जब कारण नहीं है तो तुम भी कर्त्ता नहीं हो तुम बालकके मारने वा नाशमें हेतुरूपहो इसीसे मैं तुझको बधके योग्य समझताहूं ४३ हे सर्प यहां तू अपने मतसे बुरे कर्म्म के करनेपरभी पापकाभागी नहीं होताहै इसकारणसे भी अपराधी दण्डके योग्य न समझाजाय तो शास्त्रके

अप्रमाण करनेका हेतुहुआ इसीसे हे सर्प तू वधके योग्यहै और यह सब बनाई हुई तेरी बातें व्यर्थहैं अरे दुष्ट काम तो तैंने कियाहै प्रेरकने नहींकिया इससे तूही बधके योग्यहै सर्प बोला कि हमने आयुधके समान कर्मकियाहै इसमें आयुध का कुछदोष नहींहोता किन्तु आयुध चलानेवालेकाही दोषहोताहै कर्त्ताकेहोने न होने परभी जैसे कि कुल्हाड़ी वा परस्परमें बांसोंकी रगड़से बनकी नाशरूपा क्रिया होजाती है वैसेही कर्मके न होनेपर क्रिया नहीं होसक्ती है इसीहेतुसे इन मेरे हेतुओं में वह कारण बिशेषकरके मुझको कहनेके योग्यहै ४४।४६ हे लुब्धक जोमैं मुख्यतासेभी कर्तृत्वभावको प्राप्त कियाजाऊं तौभी कर्त्ता दूसराहोगा और जीवके नाशमें अपराधी अन्य होगा ४७ लुब्धक बोला हे दुर्बुद्धी नीचसर्प बालकका मारनेवाला और हिंसा का करनेवाला तू मेरे हाथसे बधकरने के योग्य है तेरे बहुत बकनेसे क्या होताहै सर्पबोला हे लुब्धक जैसे कि ऋत्विज ब्राह्मण यज्ञमें हव्यवस्तुओं को होमतेहुये भी फलको नहीं पाते हैं इसीप्रकार मैंभी यहां फलके मिलने में विचार करने के योग्यहूं ४८ भीष्मजी बोले इसप्रकार से उस मृत्युके प्रेरित सर्प्पके वार्त्तालाप करनेपर ॥ दो० ॥ इतने में आई तहां मृत्युमहा दुखदानि । व्याधासों भाषत भई कर्मकाल कृतठानि ॥ मृत्युदेवता भी आपहुँचे और आतेही सर्प्प से कहनेलगे कि हे सर्प्प काल पुरुषकी प्रेरणा से मैंने तुमको प्रेरणाकरी इससे मैं और तू दोनों इस प्राणी बालकके मारने में कारण नहीं है ४९।५० हे सर्प्प जैसे कि वायु बादलोंको जहां तहां खैंचलेताहै उसीप्रकार हमभी बादलही के समान कालके स्वाधीन हैं ५१ इस स्थानपर सात्विक राजस तामस नाम भाव जीवों में बर्त्तमान होते हैं वहसब कालकेही समान कर्म्मकर्त्ता होते हैं ५२ पृथ्वी वा स्वर्गादिकों में जो जड़ चैतन्य जीवहैं वह सब कालात्मकहैं और यह जगत् भी कालात्मकहै ५३ इसलोक में जो प्रवृत्ति निवृत्तियां और उनकी रूपान्तर दशाहैं वह सब कालात्मकही कहीजाती हैं ५४ हे सर्प्प सूर्य्य, चन्द्रमा, बायु, जल, विष्णु, इन्द्र, अग्नि, आकाश, पृथ्वी, मित्र, परिजन्य, आठोंबसु ५५ दैत्य, नदी, सागर, ऐश्वर्य, नाश यह सब बारम्बार कालसेही उत्पन्न और नाश कियेजाते हैं ५६ इससे हे सर्प्प तुम ऐसा जानबूझकर मुझको दोषी और अपराधी कैसे मानतेहो इसप्रकारसे जो मुझको अपराधी मानोगे तो तुम भी अपराधीहो ५७ सर्प बोला हे मृत्यु मैं तुमको अपराधी और निरपराधी नहीं कहता

हूं केवल इतनाही कहताहूं कि मैं मृत्युका प्रेरितहूं ५८ जो कालमें दोषहै अथवा उसमें भी दोषका लगाना उचित नहीं समझा जाताहै तो इसस्थान में मुझमें दोषका देखना भी योग्य नहीं है क्योंकि हम तो इस विषय में अधिकारीभी नहींहैं ५९ मुझको जैसे बने वैसे आप निर्दोष कीजिये और मृत्युको भी दोष नहीं होना चाहिये इसमें भी मेरा बड़ा प्रयोजनहै ६० भीष्मजी बोले ॥ दो० ॥ तदनु व्याधसों कहतभो बन्धन पीड़ितसर्प्प । सुने मृत्युके वचन मम काटौ बंधन अर्प्प ॥ अर्थात् इन बातोंके पीछे सर्प्पने आर्ज्जुनकसे कहा कि तुमने मृत्युका वचन सुना अब तुम मुझ निरपराधी को फांसी से कष्ट देने को योग्य नहीं हो ६१ लुब्धक बोला हे सर्प्प मैंने मृत्युका और तेरा दोनोंका वचनसुना इतनीही बातोंसे तुझमें निरपराधता नहीं होसक्ती ६२ इस बालकके नाशमें मृत्यु और तुम कारणहो प्रथम तुझीको कारण समझताथा अब दोनोंको कारण समझता हूं क्योंकि कारण भी बिना कारण के नहीं होसक्ता ६३ सत्पुरुषों को दुःखदेने वाले निर्दयी दुरात्मा मृत्युको तो धिक्कारहै और तुझ पापी और पापके कारण को मारूंगा ६४ मृत्यु ने कहा कि हम दोनों अस्वतन्त्र कालकी स्वाधीनता में वर्त्तमान उसके आज्ञाकारी हैं हम दोनोंको दोषभागी करना तुमको उचितनहीं है यह तुम अच्छेप्रकारसे जानतेहो और देखतेहो ६५ लुब्धकबोला हे मृत्यु और सर्प जो तुम दोनों कालके स्वाधीनहो तो मुझे यह बात समझाओ कि मुझमें प्रसन्नता और क्रोध कैसे उत्पन्न होते हैं ६६ मृत्युने कहा कि हे लुब्धक जितनी चेष्टा होती हैं वह सब कालकी प्रेरणासेही होती हैं इसीसे मैंने प्रथम सबकालही से होनेवाला वर्णन किया है ६७ इस हेतुसे हम दोनों कालके स्वाधीन होकर उसके आज्ञावर्त्ती हैं इससे तू हम दोनोंको किसीरीतिसे भी दोषसे संयुक्त करने के योग्य नहीं है ६८ भीष्मजी बोले कि इसके अनन्तर कालने उनके समीप जाकर धर्म अर्थके संशयमें प्रवृत्त उन मृत्यु सर्प और लुब्धक से कहा कि ६९ हे लुब्धक हम समेत मृत्यु और सर्प जीवधारी के मारने में पापी नहीं हैं और हम प्रेरणा करनेवाले भी नहीं हैं ७० हे लुब्धक इसने जो पूर्व कर्मकियाहै वही हमको प्रेरणा करनेवालाहै इसके विशेष इसके नाशका दूसरा कारण कोई नहीं है यहजीव अपनेही कर्म्मसे मरणको पाताहै ७१ इसने अपनेही कियेहुये कर्म्म से मरणको पायाहै इसका कर्म्मही इसके नाशका कारणहै और हम सब कर्म्म

के स्वाधीन हैं ७२ यह संसार कर्म्म रूप पुत्र रखनेवाला है और इसका फल पुण्य पापका प्रकट करनेवालाहै इसलोक में जैसे २ कर्म्म प्रेरणा करते हैं उसी प्रकारसे हम सब परस्परमें कर्म्म करनेवाले होते हैं ७३ जैसे कि कारीगर मृत्तिका के पिण्डसे जो २ चाहताहै वही बनालेताहै इसीप्रकार मनुष्य अपने किये हुये कर्म्मको पाताहै ७४ जैसे कि धूप और छाया सदैव बराबर बँधीहुई हैं उसी प्रकार कर्त्ता और क्रिया अपने कर्म्मों से बँधेहुये हैं ७५ इसीप्रकार मैं मृत्यु सर्प तुम और यह वृद्धा ब्राह्मणीभी कारणरूप नहीं है यहां अपने नाशकाहेतु यही बालकहै ७६ हे राजा इस रीतिसे उसके कहने पर गौतमी ब्राह्मणीने लोकोंको ही कर्म्म रूप कारण रखनेवाला मानकर लुब्धकसे यह वचनकहा ७७ कि इस में न काल कारणहै न सर्प न मृत्यु इस बालकनेही अपने कर्मोंसे कालकेद्वारा मृत्युको पायाहै ७८ और मैंने भी कोई बुराकर्म कियाथा जिससे कि यह मेरा पुत्र मारागया अबकाल और मृत्यु अपने अपने स्थानको जायँ और हे लुब्धक तुम इस सर्पको छोड़दो ७९ भीष्मजीबोले इसके पीछे मृत्यु काल और सर्प अपने अपने स्थानोंको चलेगये आर्जुनक शोकसे निवृत्तहुआ और गौतमीभी शोकसे रहितहुई ८० हे राजायुधिष्ठिर तुम इस वृत्तान्त को सुनकर शान्ती को प्राप्तहोजाओ शोक समुद्रमें मतडूबो सबलोग अपने२ कर्मोंसेही प्राप्त कियेहुये लोकोंको पाते हैं ८१ यह कर्म न तैंने किया न दुर्योधनने किया इस सबको काल काही कियाहुआ जानों सब राजालोग अपने अपनेही कर्मोंसे कालबशहुये हैं ८२ वैशंपायनजी बोले कि बड़ातेजस्वी और धर्मज्ञ राजायुधिष्ठिर इस बचनको सुनकर शोकसे रहितहुआ और इसआगे लिखीहुई बातको पूछने लगा ८३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनपर्वणिदानधर्मगौतमीलुब्धकव्यालमृत्युकालसंबादेप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

युधिष्ठिरने कहा हे महाज्ञानी सर्व्व शास्त्रज्ञ बुद्धिमान् पितामह मैंने आपके मुखसे यह बड़ा आख्यान सुना १ इसके विशेषमें और भी धर्म्म अर्थ से संयुक्त कोई उपाख्यान आपसे सुना चाहताहूं आप कहनेको योग्य हैं २ किस कुटुम्बी ने धर्म में आश्रितहोकर मृत्युको विजय किया इसको भी मूलसमेत वर्णन कीजिये ३ भीष्मजी बोले कि इस स्थान में एक प्राचीन इतिहास तुमसे कहताहूं

जिसमें कि एक कुटुम्बी ने धर्म्म में आश्रय लेकर मृत्युको विजय कियाहै ४ हे राजा प्रजापति मनुजीका पुत्र इक्ष्वाकुहुआ उस सूर्य के समान तेजस्वी इक्ष्वाकु के सौ पुत्रहुये ५ उनमें से दशवांपुत्र दशाश्वनाम से प्रसिद्ध था वह धर्मात्मा सत्यवक्ता पराक्रमी होकर माहिष्मतीपुरी का राजाहुआ ६ दशाश्वकापुत्र बड़ा धार्म्मिक राजाहुआ यह राजा सदैव सत्य तप और दान में प्रीतिमान् था वह क्षितीश इस पृथ्वीपर मदिराश्वनाम से प्रसिद्धहुआ इसको वेद और धनुर्वेद इन दोनों में प्रीतिथी और मदिराश्वका पुत्र द्युतिमान नामसे प्रसिद्धहुआ यह भी बड़ा तेजस्वी बुद्धिमान् और पराक्रमी था ७ द्युतिमानका पुत्र बड़ा धार्मिक सब लोकों में प्रसिद्ध सुवीरनाम राजाहुआ ८।१० और सुवीरकापुत्र द्वितीय इन्द्रके समान महाधर्मिष्ठ सब प्रकारके संग्रामों में दुर्जय और धनाधीश ११ सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ सुदुर्जयनामहुआ १२ और दुर्जयकापुत्र इन्द्रके समान बली और अश्विनीकुमार के सदृश तेजस्वी राजर्षियों में श्रेष्ठ दुर्योधन नाम बड़ा राजा हुआ इस इन्द्रके समान बली युद्धमें मुख न मोड़नेवाले राजाके १३ देशमें इन्द्र देवता सदैव अच्छीवृष्टि करते थे इसी से रत्न धन पशु और नानाप्रकार की खेतियां १४ और विचित्र नगरों से संयुक्त उसका देश हुआ उसके देश में कोई कृपण और दरिद्री भी न था और न उस देशमें रोगी और दुर्बल मनुष्यथा यह राजा सुन्दर दक्षिणावाला मृदुभाषी दूसरे के गुणों में दोष न लगानेवाला जितेन्द्रिय १५।१६ धर्मात्मा दयावान् पराक्रमी अपनी प्रशंसा न करनेवाला यज्ञकर्त्ता स्वस्थचित्त शास्त्रज्ञ बुद्धिमान् वेद ब्राह्मण का भक्त सत्यप्रतिज्ञ किसी का अपमान न करनेवाला महादानी और वेदवेदांग में पूर्णथा १७ हे भरतवंशी पुरुषोत्तम महापवित्र शीतलजलवाली कल्याणरूपा देवनदी नर्म्मदा ने अपने हृदय से उस को चाहा १८ तब उस देवनदी में कमललोचन कन्या उत्पन्नहुई वह सुदर्शननाम कन्या महारूपवती थी १९ हे युधिष्ठिर पूर्व्वसमयकी स्त्रियों में वैसी रूपवाली कोई स्त्री न थी जैसी कि स्वरूपवान् वह राजा दुर्योधनकी पुत्री थी २० उस राजकन्या सुदर्शनाको साक्षात् अग्नि देवताने चाहा और ब्राह्मण का रूप बनकर उस राजासे उस कन्या को मांगा २१ राजाने उस ब्राह्मण को दरिद्री समझा और यह भी मनमें बिचारा कि यह हमारा सवर्ण नहीं है इन हेतुओं से उस ब्राह्मणको वह कन्या देना अङ्गीकार नहीं किया २२ तब अग्नि

देवता अप्रसन्न होकर उसके विस्तृतयज्ञ में से गुप्तहोगये इसहेतुसे राजाने बहुत दुःखी होकर यज्ञके ब्राह्मणों से यह बचन कहा २३ कि हे उत्तम ब्राह्मणलोगो मेरा वा तुम्हारा कोई दुष्कर्म है २४ जिससे कि अग्निदेवता ऐसे गुप्तहोगये हैं जैसे कि नीच मनुष्यों में उपकार नष्ट होजाता है-हमारा पाप थोड़ा नहीं है जिससे कि अग्निदेवता अदृश्य हुये हैं मेरा वा आपलोगोंका कोई महादुष्कर्म्म है इसको तुम अच्छीरीति से विचारकरो २५॥ दो०॥ भूमिपालको बचनसुनि अग्निहि ध्यायो बिप्र। तब पावक वहँ प्रकट भे उग्ररूप महिक्षिप्र॥ हे भरतर्षभ तबतो वह सबब्राह्मण राजा के वचनको सुनकर बड़ी सावधानी से बाणीको जीतकर अग्निकी शरण में गये २६ तब तो शरदऋतु सूर्य्य के समान महातेजस्वी अग्निदेवता ने अपने रूपको प्रकाशमानकरके उनको दर्शनदिया २७ और उन महात्मा ब्राह्मणों से यह बचन कहा कि मैं राजा दुर्य्योधन की पुत्रीको अपने निमित्त मांगता हूं २८ फिर उन आश्चर्य्यित ब्राह्मणों ने प्रातःकालके समय उठकर उस वृत्तांतको राजाके सम्मुख बर्णन किया २९ इसके पीछे उस बुद्धिमान् राजा ने ब्रह्मबादी ब्राह्मणों के उस बचनको सुनकर महाप्रसन्नहोकर कहा कि तथास्तु ३० अर्थात् ऐसाही होगा यह कहकर राजा ने भगवान् अग्नि से यह शुल्क मांगा कि हे अग्नि देवता आप सदैव यहांही निवास कीजिये ३१ तब भगवान् अग्नि ने उस राजा से कहा कि ऐसाही होगा तब से लेकर अबतक माहिष्मती पुरी में अग्नि देवता बर्त्तमान रहते हैं ३२ उस समय दिग्विजय करनेवाले सहदेव ने अग्नि देवताका दर्शन कियाथा इसके अनन्तर राजा दुर्य्योधनने उस बस्त्रधारण करनेवाली कन्याको अच्छेप्रकार भूषणोंसे अलंकृत करके महात्मा अग्नि देवताके अर्थ दान किया ३३ और अग्निने भी वेदोक्त बुद्धीके अनुसार उस राजकन्या सुदर्शना को ऐसे ग्रहण किया जिसप्रकार यज्ञ में बसोर्द्धारा ग्रहण कीजाती है ३४ फिर अग्निदेवता उसके रूप, शील, कुल और शरीरकी शोभा से प्रसन्नहुये और उसको गर्भवती करनेको प्रवृत्त चित्तहुये ३५ उसमें अग्निका पुत्र सुदर्शननाम उत्पन्न हुआ वह सुदर्शन भी रूपसे पूर्ण चन्द्रमाकेही समान शोभायमान था ३६ उस ने बाल्यावस्थामेंही सब सनातन वेद प्राप्त किये उसी समय में राजानृग का पितामह ओघवान नाम राजा होता हुआ ३७ उसके ओघवती नाम कन्या और ओघरथवाला ओघवान नाम एक पुत्रहुआ ओघ-

वानने आप उस ओघवती कन्या को ३८ जो कि देवीरूपथी बड़े आदर दान सत्कार पूर्व्वक उस महाज्ञानी सुदर्शन को विवाह करदी तब वह सुदर्शन उस कन्या के साथ गृहस्थाश्रम में प्रवृत्तहुआ ३९ हे राजा वह सुदर्शन उस ओघवती समेत कुरुक्षेत्रमें रहनेलगा हे युधिष्ठिर फिर उस बुद्धिमान् तेजस्वी ने यह प्रतिज्ञाकरी कि मैं गृहस्थाश्रममें ही नियत रहकर मृत्युको विजयकरूंगा तदनन्तर उस अग्निपुत्र ने ओघवतीसे यह बचन कहा ४० । ४१ कि तू किसी दशा में भी अतिथिको बिमुख न जाने दीजियो सदैव जैसे बने वैसे अतिथिको प्रसन्नही करियो ४२ यहां तक कि अपने शरीरके देनेसेभी जो प्रसन्नहोवे तौभी तू किसी बातका बिचार न कीजियो यह व्रत सदैव मेरे हृदय में वर्त्तमान रहताहै ४३ हे सुन्दरी जो तू मेरे बचनको सत्यमानती है तो गृहस्थलोगों को अतिथि पूजन से विशेष कोई उत्तम धर्म्म नहीं है ४४ और बहुत सावधानी से मेरे इस बचनको सदैव हृदयमें धारण करलो हे निष्पाप कल्याणी चाहे मैं घरमें रहूं वा बाहर जाऊं परन्तु तू कभी अतिथि का अपमान करने को योग्यनहीं है इस मेरे बचनको बड़ी प्रीतिसे प्रमाणकरना ४५ ॥ सो० ॥ अनुशासन धरिशीश ओघवती पतिसों कही । देत सुआज्ञा ईश सो व्रत पालव अवशि मैं ॥ अर्थात् तब ओघवतीने मस्तकके समीप हाथों को जोड़के कहा कि हे प्राणपति मुझको आपके बचनसे किसी दशामें भी प्रतिकूल करना योग्य नहीं अर्थात् आपकी आज्ञासे सब करसक्तीहूं ४६ हे राजा सदैव छिद्रोंके अन्वेषण करनेवाले और घरमें सुदर्शनको बिजय करनेकी इच्छा करनेवाले मृत्यु देवता उस सुदर्शनकी अविद्यमानतामें उसके घरमें आये ४७ अर्थात् जब अग्निका पुत्र सुदर्शन ईंधनलेने के निमित्त बाहरगयाथा तब उस श्रीमान् अतिथि रूप ब्राह्मण ने घरमें आकर ओघवतीसे कहा ४८ हे सुन्दरी अब मैं तुझसे वह आतिथ्य लिया चाहताहूं जो गृहस्थाश्रम का मुख्य धर्म तुझ को प्रमाण है ४९ हे राजा उस बेदपाठी करके ऐसे याचनाकीहुई यशवन्ती ओघवती राजपुत्रीने वेदोक्त बिधिके अनुसार उस ब्राह्मणको बड़े आदर से घरमें बुलाकर पाद्य अर्घ्य आसन देकर उस ब्राह्मणसे कहा कि आप क्या चाहते हैं और किस वस्तुसे आपका प्रयोजनहै उसको मैं आपके अर्थदूं ५० । ५१ फिर उस ब्राह्मणने उस राजपुत्री सुदर्शनासे कहा कि हे कल्याणी मेरा प्रयोजन तुझीसे है जो गृहस्थाश्रमका मुख्य और अङ्गीकृत धर्म

तुझको प्रमाणीकहै तो तू निश्शंक होकर उस कर्मकोकर ५२ हे रानी तू अपने शरीर दानसे मेरा प्रयोजनसिद्ध करनेको योग्यहो ५३ व कहा कि हे राजकन्या मैं तेरे शरीर दानके सिवाय दूसरा दान किसीप्रकारकाभी नहीं चाहताहूं ५४ तब तो उस लज्जायुक्त राजपुत्रीने आदिसेही पतिके वचनों को स्मरण करके उस उत्तम ब्राह्मण से कहा कि जो आपकी इच्छाहो सोई कीजिये ५५ तब तो वह ब्रह्मऋषि हँसकर बैठगये और वह स्त्री भी उस गृहस्थाश्रमके चाहनेवाले अपने पति के वचनोंको स्मरण करके बैठगई ५६ इसके पीछे वह अग्निका पुत्र भी बनसे ईंधन को लेकर उस आश्रमके समीपआया जो कि रुद्र भावयुक्त मृत्युसे बन्धुलोगोंके समान सदैव संयुक्तथा ५७ तब उस अग्निपुत्रने आश्रममें आकर बारम्बार उस ओघवती को पुकारा कि कहांगई है ५८ तब उस ब्राह्मणके हाथों से स्पर्शवती उस पतिव्रता सतीने उस अपने पतिको उत्तर नहीं दिया ५९ कि मैं उच्छिष्टहूं इस बातको माननेवाली और पति से लज्जावान् वह साध्वी मौन होगई और कुछभी उत्तर नहीं दिया ६० फिर सुदर्शनने कहा कि वह साध्वी कहां है कहांगई है इससे अधिक मेरी उत्तमवस्तु कौनसी है ६१ वह पतिव्रता सत्य-शीला सदैव सत्यमें प्रवृत्त अब वह पूर्वके समान मन्दमुसकान करतीहुई कैसे सम्मुख नहीं आती है ६२ फिर पर्णशाला में बैठेहुये ब्राह्मणने उस सुदर्शन को उत्तरदिया कि हे अग्निकेपुत्र तुम मुझ आयेहुये ब्राह्मण को अतिथिजानो ६३ हे साधो मैं इस तेरी भार्य्याकी ओरसे इन अनेक प्रकारके अतिथि सत्कारों के द्वारा लुभाया गयाहूं परन्तु हे ब्राह्मण मैंने और सब सत्कारों को छोड़कर इसी को मांगाथा ६४ सो यह शुभमुखी इस बुद्धी से मुझको प्राप्त है अब जो आप इसके अपराधको योग्य समझो उसका दण्ड दीजिये ६५ फिर लोहमयी दण्ड हाथमें लिये मृत्युदेवता यह विचार करतेहुये चले कि अब मैं इस भ्रष्ट प्रतिज्ञा वाले को अवश्य मारूंगा ६६ फिर मन वचन कर्म वाणी आदि इन्द्रियों से ईर्षा और क्रोधके त्यागनेवाले मन्द मुसकान करतेहुये सुदर्शनने कहा कि हे ब्राह्म-णोत्तम तेरा संगआदिक कर्म अच्छेप्रकारसे होय इसमें मेरीभी बड़ी प्रसन्नताहै जो आयेहुये अतिथिका सत्कार पूजनरूप धर्म्म गृहस्थीसे होय यही गृहस्थका उत्तम धर्म है ६७ जिस गृहस्थका अतिथि पूजित होकर जाताहै उससे अधिक ज्ञानियों का कहाहुआ दूसराधर्म नहीं है ६८ जो मेरे प्राण स्त्री आदि सबधन

हैं वह अतिथियोंकेही देनेके योग्यहैं यही मेरा दृढ़व्रतहै ६६ मैं सत्य २ आत्मा की शपथ पूर्व्वक कहताहूं कि इस वचनमें मुझको किसी प्रकारका भी सन्देह नहींहै ७० पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, पांचवां अग्नि बुद्धि, आत्मा, मन, काल, दशोंदिशा, गुण, इन्द्री ७१ यह सब शरीरमें नियत होकर सदैव पुण्य पाप कर्म और धर्म्म को भी देखते हैं हे धर्म्मधारियों में श्रेष्ठ ७२ जैसे कि मैंने इस समय मिथ्या वचनको नहीं कहा सत्यही सत्य कहा है इसीप्रकार देवतालोग भी मुझको उस सत्यता से चाहै कृपाकरो चाहै नाशकरो हे भरतर्षभ इसके अनन्तर सब दिशाओंमें बारम्बार यहशब्द प्रकटहुआ कि यह सबप्रकारसे सत्यहैं मिथ्या नहीं है ७३ । ७४ इसकेपीछे वह ब्राह्मण उस पर्णशालासे बाहर निकला और अपने तेजसे स्वर्ग और पृथ्वी को व्याप्तकरके वायुके समान खड़ाहोगया ७५ और उदात्तादि स्वरों से तीनों लोकों को शब्दायमान करके ब्राह्मण ने प्रथम तो उस धर्म्मज्ञ को नाम से पुकारकर सम्मुखहोकर यह वचन कहा ७६ कि मैं धर्म हूं तेरा कल्याणहो और निष्पाप मैं तेरी परीक्षा के निमित्त आया हूं तेरी सत्यताको जानकर तुझमें मेरी प्रीति अतिशयकरके है ७७ इस मृत्युको तुमने विजयकरलिया जो सदैव तेरे छिद्रों के देखने के लिये तेरे पीछे २ चलता था तुमने अपने धैर्य्य के द्वारा इसको अपने स्वाधीन करलिया ७८ हे पुरुषोत्तम तीनों लोकों में इस तेरी पतिव्रता साध्वी स्त्रीकी ओर देखने को भी किसी की सामर्थ्य नहीं है ७९ यह स्त्री तेरे गुणोंसे और अपने पातिव्रत धर्म्मके गुणों से ऐसी रक्षित और अधृष्य है कि यह जो मुखसे कहदेगी वह कभी मिथ्या नहीं होगा ८० यह ब्रह्मवादिनी अपने तपसे युक्तहोकर संसारके पवित्र करनेके लिये उत्तम नदी होगी ८१ इस लोक में तुम इसी देहसे सब लोकों को देखोगे और यह स्त्री आधे शरीरसे ओघवती नाम नदी होजायगी और आधे शरीरसे तेरे पास नियतरहैगी ८२ क्योंकि यह महाभागा है और योगसिद्धी इसके आधीनतामें नियतहै ८३ और तुम इस स्त्रीसमेत तपसे प्राप्तहोनेवाले इन प्राचीन और सनातन लोकों को जाओगे जहां जाकर फिर आवागमन नहीं होताहै और इसीदेहसे लोकोंको प्राप्तकरोगे ८४ मृत्युको तुमनेजीता और ऐश्वर्य भी तुम्हारा उत्तमहै हे स्वेच्छाचारी शीघ्रगामी तुमने अपने पराक्रम से पांचों तत्त्वों को भी उल्लंघन किया ८५ तुमने इस गृहस्थ धर्मसे काम क्रोधको विजयकिया हे राजा

इस राजपुत्री ने तेरी सेवाके द्वारा स्नेह राग तन्द्रा मोह और शत्रुताको विजय किया ८६ भीष्मजी बोले कि भगवान् इन्द्रभी हज़ारश्वेत घोड़ोंसेयुक्त उत्तम रथ को लेकर उसके पास आये ८७ इसने मृत्यु अपना आत्मा सबलोक पंचतत्त्व, बुद्धि, काल, मन, आकाश और काम, क्रोधादिक विजयकिये ८८ हे नरोत्तम इसी हेतुसे अतिथिके सिवाय गृहस्थाश्रम का दूसरादेवता नहीं है इसीको चित्त से विचारकरो ८९ पूजितहुआ अतिथि जो चित्तसे आशीर्बाद देताहै उसको सौ यज्ञोंसेभी अधिक फलवाला ज्ञानीलोगोंने कहाहै ९० जोपुरुष शीलवान् और पात्र अतिथिको पाकर उसका सत्कार पूजन नहीं करताहै वह अतिथि उसको अपना पापदेकर उसके पुण्यको लेजाताहै ९१ हे पुत्र मैंने यह उत्तम इतिहास तुमसे कहा जिसके करनेसे पूर्व समयमें गृहस्थीने मृत्युको विजयकिया ९२ यह उत्तम इतिहास धन वा यशका देनेवाला और आयुर्दा का पूर्ण करनेवाला है और ऐश्वर्य्य चाहनेवालों को यह आख्यान सबपापोंका दूरकरनेवाला मानना योग्यहै ९३ हे भरतर्षभ जो ज्ञानीपुरुष इस सुदर्शनके चरित्रको बर्णनकरेगा वह पवित्र लोकों को प्राप्तकरेगा ९४ ॥ दो० ॥ उपाख्यान उत्तममहा पावन धन्य यशस्य। पुण्यपुत्र धनधान्य प्रद मङ्गल मंजु रहस्य ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेदानधर्मेसुदर्शनोपाख्यानेद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे महाराज राजा भीष्मजी जो तीनों बर्णोंको ब्राह्मण वर्णका प्राप्तहोना कठिनतासे होताहै तो ऐसी दशामें महात्मा क्षत्री बिश्वामित्रने ब्राह्मण बर्णको कैसे पाया हे धर्म्मात्मा नरोत्तम पितामह इसको मुख्यता पूर्व्वक आप मुझको सुनाइये १। २ और उसी अतुल पराक्रमी ने अपने तपके द्वारा महात्मा बशिष्ठजी के सौ पुत्रोंको मारा ३ और महाक्रोध युक्त होकर तपस्या के द्वारा अपने शरीरसे अत्यन्तघोर पराक्रमी राक्षसोंकोभी उत्पन्नकिया ४ फिर उस ब्राह्मणों से स्तूयमान ज्ञानी बिश्वामित्रने इसी नरलोक में हजारों ब्रह्मर्षियों से व्याप्त कुशिककुल नियतकिया ५ और महातपस्वी ऋचीकके पुत्र शुनःशेपको जो कि पशुभाव में करदियागयाथा उसको महायज्ञसे छुटाया ६ और राजा हरिश्चन्द्र यज्ञमें अपने तेजसे देवताओंको प्रसन्न करके बड़े बुद्धिमान् बिश्वामित्र

के पुत्ररूप होगये ७ इसके पीछे विश्वामित्रने अपने पचासपुत्रोंको यह समझ कर कि यह अपने बड़ेभाई देवरातको नमस्कार नहीं करते हैं शापदिया तव उनके सवपुत्रोंने चाण्डाल वर्णको पाया ८ इक्ष्वाकुबंशी राजा त्रिशंकु जो वशिष्ठ जी के शापसे भाइयोंसे निकाला हुआथा उसको विश्वामित्रने प्रीतिसमेत औंधाकरके स्वर्गको भेजा वह दक्षिण दिशामें बर्त्तमान है ९ विश्वामित्र की कौशिकी नाम बड़ी नदी देवर्षि ब्रह्मर्षियों से सेवित महाआनन्दकारी धर्म्म की वृद्धिका कारणरूप है १० जिसके शापसे तपका विघ्न करनेवाली पांचचूड़ाओं से शोभित बड़ी स्वरूपवान् रम्भानाम अप्सरा पर्बताकार बनगई ११ इसीप्रकार पूर्वकाल में श्रीमान् बशिष्ठजी ने विश्वामित्र के भयसे अपने शरीरको बांधकर जल में डुबोया और कुछकाल पीछे बन्धन टूटजाने से फिर उठबैठे १२ तवसे लेकर वह धर्मकी बढ़ानेवाली नदी महात्मा वशिष्ठजी के उस कर्म्मसे विपाशा नाम करके लोकमें बिख्यातहुई १३ देवसेनाके अग्रगामी इन्द्रदेवता उसराजर्षि से स्तूयमान होकर बहुत प्रसन्नहुये और इसको वशिष्ठजी के शापसे छुटादिया अर्थात् वशिष्ठजी ने यह शाप दियाथा कि तू चाण्डालका यजमान होकर चाण्डालही होगा उसको सत्य करनेकेलिये विश्वामित्रने चांडालके घरसे कुत्तेकी जंघाको चुराकर पकाना प्रारम्भ किया उसको इन्द्रदेवता ने बाजकारूप बनाकर हरलिया तव विश्वामित्र वशिष्ठजीके शापसे छूटे जैसे कि उत्तरदिशामें उत्तानपादके पुत्र ध्रुवजी सदैव स्थिररूपहोकर बर्त्तमान रहते हैं उसी प्रकार बिश्वामित्रभी ब्रह्मर्षियों के मध्यवर्त्तीहोकर प्रकाशमानहैं १४। १५ हे युधिष्ठिर उसक्षत्री बिश्वामित्रने इसीप्रकारके अनेककर्मकिये हैं इसहेतुसे यह मेराभी शोककौतूहलरूप है १६ हे भरतर्षभ यह क्या बातहै कि विश्वामित्रने बिनादूसरे शरीर धारणकिये इसी शरीरसे ब्राह्मणवर्ण पाया इसको मूलसमेत कहिये और ब्राह्मणी में शूद्रसे उत्पन्न होनेवाले मतङ्गका भी जो कुछ वृत्तान्तहै उसको भी कहिये कि जिसने बड़ी बड़ी तपस्याओंसे भी ब्राह्मणवर्ण नहींपाया इसीप्रकारका यहभी है इसको मूलसमेत बताइये १७। १८ हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ यहबात सत्यहै कि चांडाल योनिमें जन्म लेनेवाले मतंगने ब्राह्मणबर्ण को नहींपाया फिर विश्वामित्र ने ब्राह्मणवर्ण कैसे पालिया १९॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिविश्वामित्रोपाख्यानेतृतीयोऽध्यायः ३॥

चौथा अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि हे तात युधिष्ठिर जैसे कि पूर्वसमयमें विश्वामित्रने ब्राह्मण वर्णको और ब्राह्मणवर्ण से ब्रह्मर्षि भावको पाया उसको मैं मूलसमेत कहताहूं तू दृढ़मति होकर सुन १ पूर्वकाल में भरतबंश में एक अजमीढ़नाम राजाहुआ वह महायज्ञकर्त्ता और धर्मधारियों में उत्तम था २ उसका बड़ा पुत्र जह्नुनाम राजाहुआ जिस महात्मा की साक्षात् श्रीगंगाजी पुत्रीहुई ३ उसका पुत्र बड़ा यशस्वी सिन्धुद्वीपनामहुआ और सिन्धुद्वीपका पुत्र महाबली बलाकाश्वहुआ ४ उसका पुत्र दूसरा धर्म्मरूप बल्लभहुआ बल्लभका पुत्र इन्द्रके समान द्युतिमान कुशिक हुआ ५ कुशिकका पुत्र राजागाधि हुआ वह अपुत्र होकर सन्तानके अर्थ बनमें बास करनेलगा ६ वहां बनमें बसतेहुये उसके एक कन्या उत्पन्नहुई जिसका नाम सत्यवतीथा और रूप गुणमें उसके समान पृथ्वी में कोई न था ७ उस कन्याको च्यवनपुत्र श्रीमान् भार्गव तपोमूर्त्ति ऋचीकऋषिने मांगा ८ तब शत्रुसंहारी राजागाधिने उस ऋचीकऋषि को निर्द्धन समझकर अपनी कन्या को नहीं दिया ९ और जब ऋषि निराश होकरचले तब उस बुद्धिमान् राजानें यह वचन कहा कि जो आप मुझको शुल्कदें तो मैं कन्या आपकोदूं १० ऋचीक बोले कि हे राजेन्द्र मैं क्या शुल्क तुमकोदूं आप निःसन्देह संकल्प विकल्पको त्यागकर अपनी पुत्रीका शुल्क मुझसे कहो ११ गाधिने कहा हे भार्गवजी चन्द्रमा की किरणों के समान प्रकाशित बायु के समान शीघ्रगामी एक हजार श्यामकर्ण घोड़े दीजिये १२ भीष्मजी बोले कि इस बातको सुनके च्यवन पुत्र महाप्रतापी ऋचीकऋषिने जलोंके स्वामी आदित्यके पुत्र बरुणदेवतासे कहा १३ हे देवताओंमें श्रेष्ठ बरुण मैं तुमसे एकहजार श्यामकर्ण ऐसे घोड़े भिक्षामांगता हूं जो चन्द्रमाके समान प्रकाशमान व बायुके सदृश शीघ्रगामी होयँ १४ फिर आदित्यके पुत्र बरुणदेवताने उन उत्तम भार्गव ऋचीकसे कहा कि तथास्तु अर्थात् ऐसाहीहो जहाँ आपकी इच्छाहो वहांहीं ऐसे घोड़े जलसे उठेंगे १५ और ऋचीक के ध्यान करतेही चन्द्रमाकी समान प्रकाशित बड़े तेजस्वी हजार घोड़े गंगाजलसे बाहरनिकले १६ अबतकभी वह स्थान जहांसे घोड़े निकले कन्नौज के पास श्रीगंगाजी के उत्तम तटपर अश्वतीर्थ नामसे प्रसिद्धहै १७ इसके पीछे

महातपस्वी प्रसन्नचित्त ऋचीकऋषिने शुल्कके निमित्त हजार उत्तम घोड़े राजा गाधिको दिये १८ उन घोड़ोंको देखकर वह राजागाधि बड़ा आश्चर्य्यित हुआ और शापके भयसे उस कन्याको आभूषणोंसे अलंकृतकरके भार्गव ऋचीकजी के अर्थ बड़ी श्रद्धा और प्रीतिसे दानकिया १९ और ब्रह्मर्षियोंमें श्रेष्ठ ऋचीकने बुद्धिके अनुसार उसका पाणिग्रहणकिया और कन्याभी ऐसे महातेजस्वी पति को प्राप्तहोकर बड़ी प्रसन्नहुई २० हे राजा वह ब्रह्मऋषि उसकी सेवा आदि से बहुत प्रसन्नहुये और कहा कि हे सुन्दरी तू वरमांग २१ तब उस कन्याने उस सब वृत्तान्तको अपनी मातासेकहा तब उसकी माताने नीचेको मुखकरके कहा २२ कि हे पुत्री तेरा पति जो प्रसन्न है तो मुझेभी सन्तान देसक्ते हैं क्योंकि वह महा तपस्वी और समर्थ हैं २३ फिर उस सत्यवतीने शीघ्रही जाकर माताकी इच्छा को ऋषिसे कहा २४ तब ऋचीकने उससे कहा कि हे कल्याणिनि वह तेरी माता मेरी कृपासे शीघ्रही गुणवान् पुत्रको उत्पन्न करेगी और तेरी इच्छा विपरीत न हो २५ हे स्तुतिके योग्य सुन्दरी तेरापुत्र महापुरुष श्रीमान् हमारे वंशका चलानेवाला उत्पन्न होगा यह तू मेरा कहना सत्यही जान २६ सो हे प्रिये तेरी माता ऋतुस्नान से शुद्ध होकर पीपलके वृक्षको और तू गूलर के वृक्षको मिलो और देहसे स्पर्श करो इसके पीछे पूर्वोक्त अपने २ पुत्रोंको पाओगी २७ हे शुचिस्मिते यह दो चरु मैं मन्त्रसे पवित्र करके तुमको देताहूं इनको तुम दोनों भोजनकरो तब तुम दोनों अपने २ चरु भोजन करनेसे पूर्वोक्त पुत्रोंको पाओगी २८ फिर अत्यन्त प्रसन्न चित्त सत्यवती ने जो ऋषिने कहाथा उसको माता से प्रकटकर दिया २९ तब माताने सत्यवती पुत्री से कहा कि हे पुत्री तू अपने पतिसे भी अधिक मेरे बचनको कर ३० तेरे पतिने जो मन्त्रों से अभिमन्त्रित चरु तुझको दिया है उसको तू मुझे देदे और मेरे चरुको तू लेले और वृक्षोंको भी हम तुम परस्पर में बदललें जो तू मेरे बचनको माने ३१ । ३२ सब संसार अपनी सन्तानोंको पवित्र और उत्तम चाहते हैं और प्रकट होता है कि भगवान् ऋषिने भी चरुओं में यही कर्म्म किया होगा ३३ इसकारण हे सुन्दरी तेरे चरु और वृक्षमें मेरी प्रीति है तुम इसको बिचारो कि तुम्हारा भाई कैसे श्रेष्ठ होगा ३४ फिर उस सत्यवती और सत्यवतीकी माताने ऐसा परस्पर अदल बदल कर्म्म किया हे युधिष्ठिर इसके अनन्तर उन दोनों ने गर्भोंको धारण किया ३५ भार्गवों में श्रेष्ठ

महर्षि ऋचीकने अपनी स्त्री को गर्भवती देखकर महादुःखी चित्त होकर उससे कहा ३६ मुझको विदित होताहै कि तेरा चरु बदला गया हे शुभ स्त्री तुमने वृक्षों में भी अवश्य विपर्य्यय किया होगा ३७ क्योंकि मैंने तेरे चरुमें सम्पूर्ण ब्रह्मतेज प्रविष्ट कियाथा और उसके चरुमें सम्पूर्ण क्षत्रीबल प्रविष्ट कियाथा ३८ तू वेदपाठी और तीनोंलोकमें प्रसिद्ध गुणवाले पुत्रको उत्पन्नकरेगी और वह तुम्हारी माता उत्तम क्षत्रीको पैदाकरेगी और यह सब विपरीत होगया ३९ हे उत्तमांगी जो कि तुमने और तुम्हारी माताने चरु और वृक्षोंका बदला कियाहै इसहेतु से वह तेरी माता तो श्रेष्ठ ब्राह्मण को उत्पन्न करेगी ४० और तुम भयकारी कर्म्म करनेवाले क्षत्रीको उत्पन्न करोगी हे भामिनी तुमने माताकी प्रीतिसे यह अच्छा कर्म्म नहीं किया ४१ हे राजा वह सत्यवती पतिके इसवचनको सुनकर महाखेद युक्तहो व्याकुलतासे प्रथम तो सुन्दरलता और शिखरके समान पृथ्वीपर गिरपड़ी ४२ फिर कुछ चैतन्यहोकर बड़ी नम्रतासे दण्डवत् करके ऋचीकऋषिसे कहने लगी ४३ कि हे ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ ब्रह्मर्षि आप मुझ दीन अपनीभार्या पर प्रसन्न हूजिये और ऐसी कृपाकरिये कि मेरापुत्र क्षत्री नहीं होय चाहै मेरापौत्र भयकारीकर्मोंका करनेवाला होजाय परन्तु यह मेरापुत्र क्षत्री न होय यह मुझे बरदान दीजिये ४४।४५ तब प्रसन्नहोकर उन महातपस्वी महर्षिने कहा कि ऐसाही हो इसकेपीछे उसने जमदग्निनाम पुत्रको उत्पन्न किया ४६ और राजागाधि की यशवन्ती भार्य्याने ब्रह्मऋषि की कृपासे ब्रह्मवादी विश्वामित्र को उत्पन्न किया ४७ फिर वह महातपस्वी विश्वामित्र क्षत्री ब्राह्मणवर्ण को पाकर ब्रह्म वंशका नियत करनेवाला हुआ ४८ और उसके पुत्र महातपस्वी ब्रह्मज्ञ ब्रह्मवंश को बढ़ानेवाले और गोत्रकर्त्ता हुये ४९ उनके नाम यह हैं कि मधुछन्द, भगवान्देवरात, उक्षीण, शकुन्त, वभ्रु, कालपथ, याज्ञवल्क्य, नाम प्रसिद्धऋषि, महाव्रतस्थूण, उलूक, यमतद्रु, सैंधवायनऋषि, वेल्गुजंघ, बड़े ऋषि भगवान् गालव, वज्रऋषि, प्रसिद्ध सालंकायन, लीलाढ्य, नारद, प्रसिद्ध कूर्चामुख, वाडलि, मुसल, वक्षोग्रीव, आंघ्रिक, नैकदृक्, शिलायूप, शितशुचि, चक्रकामा, तंतव्य, वातघ्न, आश्वलायन, श्यामायन, गार्ग्यजावालि, सुश्रुत, कारीषि, संश्रुत्य, परपौरवतंतव, महर्षि कपिल, ताड़कायन, उपगहन, आसुरायनऋषि, मार्द्दमर्षि, हिरण्याक्ष, जंघारि, वाभ्रवायणि, भूति, विभूति, सूत, सुरकृत, अराति, नाचिकेत,

चाम्पेय, अंजयन, नवतंतु, वक्रनख, सयन, यति, अम्भोरु चारुमत्स्य, शिरीषी, गार्दर्भिः ऊर्जय, निरुद्यपेक्षी, महर्षिनारदी इतने विश्वामित्रजीकेपुत्र मुनि ब्रह्मवादीहुये इसीप्रकार विश्वामित्र क्षत्रीभी महातपस्वीथे ५०।६० ऋचीक भार्गवने जो उस चरु में परब्रह्मका तेज धारणकिया था यही उनके ब्राह्मणवर्ण होने का मुख्य कारणथा ६१ हे भरतर्षभ युधिष्ठिर यह सब वृत्तान्त मैंने तुझसे मूलसमेत कहा इन विश्वामित्रजी का जन्म चन्द्रमा सूर्य और अग्नि के समान तेजस्वी वर्णन किया इसके सिवाय जो २ तुझको सन्देह होय उनको पूछ मैं तेरे सब सन्देहों को निवृत्त करूंगा ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेविश्वामित्रोपाख्यानेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरबोले हे धर्मज्ञ पितामह हिन्सा रहित कर्म्म और भक्तजनों के गुणों को मैं सुनना चाहताहूं आप कृपाकरके वर्णन कीजिये भीष्मजीबोले कि इस स्थानपर मैं वह प्राचीन इतिहास वर्णनकरताहूं जिसमें इन्द्रका और शुकपक्षीका सम्वादहै १।२ काशीराजके देशमें एक लुब्धक अपने ग्रामसे निकल विषभरे बाणको हाथमें लिये मृगोंके ढूंढ़नेको निकला ३ और उस महावनमें समीपही मृगोंको देखकर उसने बाणको धनुषपर चढ़ाया ४ और एकवृक्षके नीचे बैठेहुये मृगपर वहबाण चलाया वहबाण ऐसा विषयुक्त और तीक्ष्णथा कि उसने मृग को छेदकर उस समीपवर्त्ती एक जङ्गली वृक्षको भी छेदा ५ बड़े तीक्ष्ण विषसे भरे बाण उग्रवेगसे वहवृक्ष विदीर्ण होगया और उसके विषकी अग्निसे उसके फल पत्तेआदि गिरे और वह खड़ाही सूखगया ६ उस वृक्षकी वह दशादेखकर उस वृक्षके खोहरमें चिरकालसे निवास करनेवाले एक तोतेने उस वृक्षकी प्रीति से निवासस्थानको त्याग नहींकिया यह तोता उपकारका जाननेवालाथा इसी हेतुसे वह महात्मा अत्यन्त निर्बल निराहार चित्तसे महाखेदित होकर उसीवृक्ष के साथ शरीरसे सूखगया ७।८ उस बड़े बुद्धिमान् कृतज्ञ दुःख सुखमें समान बुद्धि वाले तोतेको देखकर इन्द्रको बड़ाआश्चर्य्यहुआ ९ इसकारण इन्द्रने चिन्ताकरी कि यह पक्षी उस करुणा और दयामें प्रवृत्तहै जो पक्षी व पशुजन्माओंमें होना असम्भवहै १० या सब जीवोंकी जातों में करुणा दयाआदि दिखाई देते हैं ११

इसके निश्चय करनेके हेतु इन्द्रने ब्राह्मणका रूपबनाकर उस तोतेसे पूंछा १२ हे पक्षियोंमें श्रेष्ठ तोते मैं तुमसे पूंछताहूं कि इस फलपत्र रहित रससे विगत सूखे बृक्षमें रहने से तुमको क्यालाभहै अब इस बृक्षको छोड़कर पुष्पित फलित सपल्लव तरुपर निवासकरो तुमको बहुत दिनतक जीना है और इस बृक्षका शरीर मृतकहोगया इन्द्रके इसबचनको सुनतेही तोतेने जानलिया कि यहइन्द्रहै और हृदयसे नम्रता पूर्वक नमस्कारकरके साधुओंके समान वचनबोला कि हे शक्र तुम त्रिलोकी के पतिहो तुमको सब जीवोंका पालन उपकार और स्नेहकरना योग्यहै हे सुरपति आप धर्म्मशिक्षक और धर्म्मपालक विख्यातहैं कहिये मुझको इस बृक्षका त्यागना योग्यहै व अयोग्य इसी बृक्षपर जन्मे और इसीके फल फूल खाकर इतने बड़ेहुये और इसीकी आड़में अनेक शत्रुओं से बचे अब इसके ऊपर आपत्ति पड़गई है इससे यह फल दलसे हीनहोगया इसके त्यागने से हम पातकीहोंगे इससे इसीके कोठरमें बैठकर मरजाना हमको भी उचितहै रक्षकपर आपत्तिकाल आनेसे उसके आश्रितों को उसका त्यागना महाअधर्म्म है इन्द्रने तोतेकी स्वच्छ और शुद्ध भक्तिको देखकर प्रसन्नहोकर कहा कि हे शुक जो तेरे मनकी इच्छा है वह वर मांग शुकने कहा कि हे इन्द्र जो आप मुझपर प्रसन्न हैं तो यह बृक्ष पूर्वके समान पुष्पित फलित और सपल्लवित होजाय तब इन्द्रने उसको अमृत सींचकर पूर्व्वकेही समान फल पुष्प और पल्लवों से युक्त किया फिर तोतेकी दृढ़भक्ती होनेसे वह बृक्ष मनोहर फल पत्तों से युक्तहोकर अत्यंत शोभायमान हुआ १३।३० और उस तोतेने उस अपने कर्म और करुणाके करने से इन्द्रके लोकको पाया ३१ हे नरेन्द्र इसीप्रकारसे भक्तिमान् पुरुषकी रक्षा करने से मनुष्य सम्पूर्ण अभीष्टों को ऐसे सिद्धकरता है जैसे कि तोतेकी रक्षा करने से इस बृक्षने मनोरथोंको पाया ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशुकवासवसम्वादेपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे महाज्ञानी सब शास्त्रज्ञों में श्रेष्ठ उद्योग और प्रारब्धमें कौन उत्तम गिनाजाताहै १ भीष्मजी बोले हे युधिष्ठिर इस स्थानपर भी एक प्राचीन इतिहास को कहताहूं जिसमें वशिष्ठजी का और ब्रह्माजीका सम्वादहै २ पूर्व

कालमें भगवान् वशिष्ठजी ने ब्रह्माजी से पूंछा कि दैव अर्थात् पूर्वजन्मका कर्म और मानुष वर्त्तमान जन्ममें कर्मकरता अर्थात् उद्योगकरना इन दोनों में कौन सा श्रेष्ठ कहाजाता है ३ इसके पीछे कमलोद्भव देवदेव ब्रह्माजी ने इस विषय और हेतुसे भरेहुये मधुर वचन को कहा ४ कि विना बीज के कुछ उत्पन्न नहीं होताहै और फलभी बीजही से पैदाहोताहै बीजसे बीज प्रकटहोताहै और बीज हीसे फलहुआ ५ खेती करनेवाला खेतमें जैसे बीजको बोताहै वैसेही फल को पाता है इसीप्रकार पुण्य पापके बीजरूप होने पर भी ६ जैसे कि विना बीजके जोताहुआ खेत निष्फल होताहै इसीप्रकार विना उद्योगके दैव अर्थात् प्रारब्ध भी फलको नहीं देताहै ७ उद्योग तो क्षेत्रहै और प्रारब्ध बीजहै इसहेतुसे क्षेत्र और बीजके अच्छीरीति से योगहोने से धान्यकी उत्पत्ति होती है ८ कर्त्तामनुष्य आप अपने कर्मों के कियेहुये फलको पाताहै लोकमें अच्छे बुरे फल देखने में आते हैं ९ अच्छे कर्म्मकाफल सुख और बुरे कर्म्मकाफल दुःख पाताहै कर्म्मही सब स्थानोंपर फलको देताहै विना कियाहुआ कभी नहीं भोगता है १० कर्म्म करनेवाला सर्वत्र प्रारब्ध योगसेही प्रतिष्ठा को पाताहै और अकर्म्मकर्त्ता और अधिकार से भ्रष्ट मनुष्य घावपर नोन बुरकता है ११ तपस्या से सुन्दर स्वरूप सौभाग्य और अनेक रत्नोंको प्राप्तकरताहै कर्म से सब पदार्थों को पाताहै परन्तु अशुद्ध अन्तःकरण पुरुषों के प्रारब्ध से नहीं पाता इसीप्रकार स्वर्ग, भोग वा व्रत श्रद्धाआदि निष्ठा और बुद्धिकी कुशलता इन सब बातोंको इसलोकमें करे हुये उद्योग से पाताहै १२।१३ और प्रकाशमान नक्षत्रआदि और देवता, नाग, यक्ष, चन्द्रमा, सूर्य्य, वायु इन सबने उपाय और उद्योगोंकेहीद्वारा नररूपको उल्लं- घनकरके देवतारूपकोपाया १४ इसीप्रकार कर्मों के न करनेवाले पुरुषों से धना- दिक अर्थ समूह वा मित्र कुलसंयुक्त ऐश्वर्य और लक्ष्मीभी भोगनी कठिनहै १५ वेदपाठीब्राह्मण बाहर भीतरकी शुद्धतासे लक्ष्मीको पाताहै क्षत्री पराक्रमसे वैश्य उपायों से और शूद्र सेवासे लक्ष्मीको पाताहै १६ दानके न करनेवाले, नपुंसक, कुछभी कर्म्म न करनेवाले संन्यासी शूरतासेरहित और विना तपस्यावान् मनु- ष्यको धनादिक अर्थ सेवन नहीं करते हैं १७ जिससे तीनोंलोक देवता दैत्य और मनुष्यादिक उत्पन्नहुये वह भगवान् विष्णुजीभी समुद्र में तपस्याको करते हैं १८ जब कि अपना कर्मफल नहीं होताहै तब सब बातें निष्फल होती हैं उस

को देखकर सबलोग उदासीन होते हैं १९ जो पुरुष अपने पुरुषार्थ को न करके प्रारब्धके अनुसार कर्म्मको करता है वह ऐसे निष्फल परिश्रम करताहै जैसे कि नपुंसक पुरुष को पाकर स्त्री परिश्रम करती है २० इस नरलोक में शुभाशुभ कर्मोंके करनेमें ऐसे भय नहीं है जैसे कि देवलोक में किसी पापसे भय उत्पन्न होताहै २१ मनुष्य का कियाहुआ उद्योगरूप कर्म्म प्रारब्धके अनुसार वर्त्तमान होताहै और कर्म्मकिये बिना दैवरूप प्रारब्ध किसी को कुछ नहीं देसक्ताहै २२ जैसे कि देवताओं में भी इन्द्रलोक आदि स्थान नाशमान दृष्टिआते हैं फिर शुभकर्मके किये बिना अपने देवताओं के समूह के नियत करनेका आकांक्षी कैसे अपने देवताओं के समूहको नियतकरसक्ताहै २३ इसलोक में देवतालोग किसीके शुभकर्म को नहीं चाहते हैं किन्तु अपने परास्त होनेके सन्देहसे धर्म्म के विघ्नकरनेवाले व्यासंगोंको उत्पन्न करते हैं २४ ऋषि और देवताओं की सदैव शत्रुताहोती है अर्थात् देवतालोग ऋषियोंके तपमें विघ्नकिया करतेहैं और च्य-वनजी सरीखे ऋषिलोग देवताओंकी अप्रतिष्ठा करते हैं यद्यपि इसरीतिसे कर्म प्रधानहै तोभी किसी के बचनसे दैवका न होनाभी सिद्धहै उसकी उत्पत्ति इस प्रकारसे है कि जैसे प्रारब्ध वर्त्तमानहोताहै इसीरीतिसे देवलोकमें भी बहुत से भोगादिक गुण प्राप्तहोते हैं २५।२६ आत्माही आत्माकाबन्धुहै आत्माही आत्मा का शत्रुहै आत्माही अपने पाप पुण्यका साक्षी है २७ कर्मके करनेपर पुण्यके साथ कुछ पापभी प्राप्तहोताहै इसी हेतुसे पुण्यसे पापका और पापसे पुण्यका नाश होनेपर शुभाशुभकर्मों का फल ठीक २ नहींहोता किन्तु परस्पर में उनका ऋण धनहोजाताहै अर्थात् वसूल बाकी होजाती है २८ देवताओं के सब पवित्रलोक शुभकर्मों से मिलते हैं देवताओं की शरणमें पुण्यहै और पुण्यसे सबप्राप्तहोताहै और पुण्यशील पुरुषको प्राप्तहोकर दैव क्याकरैगा अर्थात् पुण्यकी आधिक्य-तासे दैवनाश होजाताहै २९ उसके यह फलहैं—पूर्व्व समयमें स्वर्गसे भ्रष्टहोकर राजा ययाति पृथ्वीपर गिरायागया फिर पवित्र कर्म करनेवाले दौहित्रोंने स्वर्ग में पहुँचाया ३० पूर्वकालमें राजर्षि ऐलनामसे प्रसिद्ध राजा पुरूरवाने ब्राह्मणों से अभीष्ट सिद्ध करके स्वर्गकोपाया ३१ अश्वमेधादि यज्ञोंसे संस्कार पानेवाला कौशलपुरका सौदासनाम राजा महर्षी के शापसे राक्षसके समान मनुष्यों का भक्षण करनेवाला हुआ ३२ मुनिके पुत्र धनुषधारी परशुराम और अश्वत्थामा

दोनों महात्मा इसलोकमें अपने कियेहुये कर्मसे बहुत कालतक स्वर्गको नहीं जायँगे ३३ सैकड़ों यज्ञों के करनेके हेतु इन्द्रकी समान राजा बसु ने एकवारके मिथ्या कहनेसे रसातलकेभी तलको पाया ३४ विरोचनका पुत्र राजा वलि देवताओंके धर्म बन्धनमें बंधाहुआ बिष्णुजीके विचारसे पातालबासी कियागया ३५ तेजस्वियोंके दोषके निमित्त पापभी नहीं होसक्ताहै इसको वर्णन करते हैं-राजा जनमेजय ब्राह्मणों की स्त्रियोंको मारकर इन्द्रकी शरणमें होके स्वर्ग को गया वह दैवसे क्यों न रोकागया ३६ बैशम्पायन ब्रह्मर्षि अज्ञानसे ब्राह्मण को मारकर बालबध के अपराधमें स्पर्श नहीं कियागया वह दैवसे क्यों नहीं रोका गया ३७ किसीका पुण्यभी किसीकी रक्षा नहीं करसक्ताहै इसको कहते हैं—पूर्व्व समय में राजर्षि राजानृगने बड़े यज्ञमें ब्राह्मणको मिथ्या गोदान देनेसे गिरगिटकी योनिकोपाया ३८ वह महावृद्ध धुंधुमार राजर्षि यज्ञोंमें देवताओंके दियेहुये वरप्रदानों को त्यागकरके गिरिब्रज में सोनेवालाहुआ अर्थात् यज्ञफल को नहीं लिया ३९ बड़े पराक्रमी धृतराष्ट्र के पुत्रोंने पाण्डवों का राज्य छीन लिया फिर अपने भुजबल से पाण्डवों ने लौटालिया परन्तु दैवसे नहींलौटा ४० तप और नियमसे संयुक्त मुनिलोग जो शापदेते हैं वह दैव बलसे नहीं देते हैं किन्तु अपने कर्मकेही पराक्रमसे देते हैं ४१ संसार में बड़े दुष्प्राप्य ऐश्वर्य्यादिक पापीके पास पहुँचकर फिर उसको त्यागकरते हैं और लोभ मोहसे भरेहुये मनुष्य को दैव रक्षा नहीं करताहै ४२ अब दो श्लोकों में कर्म्म के आधीन दैवको वर्णन करते हैं जैसे कि अत्यन्त सूक्ष्म अग्निभी वायुसे संपर्कहोकर बहुतबड़ा होताहै इसीप्रकार कर्म्म से संयुक्तहोकर दैव भी अच्छी वृद्धिको पाताहै ४३ जैसे कि तैलकी समाप्ती होनेसे दीपक का नाश होजाताहै इसीप्रकार कर्म्म की समाप्ती होनेसे दैव नष्ट होजाताहै ४४ इस लोकमें कर्म्म न करनेवाला पुरुष बहुत से धन भोग और स्त्रियादिकों को पाकरभी भोगने को समर्थ नहीं होता और सदैव कर्ममें प्रवृत्त महात्मा पुरुष इसलोकमें देवताओं से रक्षित और पातालमें नियत धनदौलतको भी पाताहै ४५ जो पुरुष बड़ाखर्च करनेवाला साधुहै उसको देवतालोग उसीके कर्मद्वारा अच्छेप्रकार से सेवन करते हैं इस नरलोकसे देवलोक श्रेष्ठहोताहै क्योंकि धन आदिकी अत्यन्त वृद्धिसे पूर्ण मनुष्योंके घर देवताओंको श्मशान भूमिके समान दृष्टआते हैं ४६ इस जीवलोकमें कर्म न

करनेवाला पुरुष फलको नहीं पाता है और केवल प्रारब्धवाले निकृष्ट मार्ग में नियत मनुष्यको बुरेमार्ग से अच्छेमार्ग में नहीं लेजाते हैं दैवमें सामर्थ्य नहीं है दैव किये हुये उत्तमकर्म के अनुसार ऐसे कर्म्मकर्त्ता होताहै जैसे कि शिष्य गुरुकी इच्छाके अनुसार कर्म्मको करताहै और जिस २ काम में उपाय अच्छी रीतिसे होताहै वह दैवको उसी २ स्थानपर प्रकट करता है अर्थात् जब उपाय करने से कोई प्रयोजन सिद्धहोताहै तब संसारीलोग कहते हैं कि यह प्रारब्धसे प्राप्तहुआहै ४७ हे श्रेष्ठ मुनियो मैंने यह उपायका फल सदैव मूलसमेत देखकर तुमसे कहा—पूर्वजन्मका कर्म जो दैवहै वह दोप्रकारकाहै एक संचित दूसराभोग के निमित्त प्रकट होनेवाला प्रारब्ध इन दोप्रकारके दैवके प्रकटहोनेसे वा उसके अनुसार कर्मकरने से इसलोक का फलमिलताहै शास्त्र और शास्त्रके अनुसार कर्मकरनेसे स्वर्गमार्गको पाताहै तात्पर्य्य यहहै कि भोग दैवके आधीनहैं और भोगके पदार्थोंका समूह कर्मोंके स्वाधीनहै ४८। ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेदैवपुरुषकारनिर्देशेपष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरबोले हे भरतर्षभ तुम सब शुभकर्मोंके फलको मुझसे कहो १ भीष्मजी बोले कि हे युधिष्ठिर ऋषियोंकी जो गुप्तबातहै उसको मैं कहताहूं तुम चित्तलगाकर सुनो २ कि शरीर त्यागने के पीछे जिस पुरुषसे कि बहुतकालका अभीष्टफल प्राप्तकियाजाताहै उसको और मनुष्य जिस२ शरीरसे जिस२ कर्मको करताहै उसको सुनो ३ जिस २ शरीरसे जिस २ कर्मफलको पाताहै वह यहबात है कि जो जिस २ तरुण युवा और वृद्धावस्थामें जैसे २ शुभ और अशुभकर्मों को करताहै वह पुरुष उसी २ दशामें जन्मजन्मके मध्यमें भोगताहै ४ इसलोक में पांचों कर्मेन्द्रियोंसे कियाहुआ कर्म नष्टनहीं होताहै वह छःमन समेत इन्द्री और आत्मा उसके साक्षीभूत हैं ५ अभ्यागत अतिथि को नेत्रदेना चित्तदेना सत्यवचनदेना समीप बैठाना पीछेचलना यह पांचप्रकारका दक्षिणावाला यज्ञ कहाताहै ६ जो मनुष्य पश्चात्ताप और चित्तसे खेद न करके केवलअन्न व भोजन आदिकी बस्तु पूर्व कभी न देखेहुये मार्ग में वर्त्तमान थकेमांदे पथिक को देताहै उसके पुण्य के फलकी संख्या अगणितहै मैदान जङ्गल आदि के सोने

वालोंको घर और शय्यासोनेको दे चीर वल्कल धारण करनेवाले पुरुषको वस्त्र और आभूषणों का दानकरे ७ । ८ योगमें चित्तलगानेवाले तपोधन लोगों को घोड़े रथ आदि सवारियोंका दानकरे वह पंचाग्नि तपनेवाले के समान राजाओंके ऐश्वर्यको पाताहै ९ रसोंके दानसे सौभाग्यताको पाताहै और भोगपदार्थ भोजन आदिके दानसे पशु और पुत्रोंको पाताहै १० जो अधोमुखहोकर लटके वा जलमें निवासकरे और जो ब्रह्मचारी आदि सदैव अकेला शयनकरनेवाला है वह यथेप्सित सिद्धीको पाताहै ११ जो पुरुष पाद्य,आसन,दीपक, अन्न और स्थान सोने बैठनेके निमित्त अतिथिके सत्कारके अर्थ देताहै वह यज्ञ पंच दक्षिणावालाहै १२ जो पुरुष युद्धभूमिरूप वीर आसन और बाणशय्यारूप वीरशय्या और स्वर्गलोक रूप वीरलोक में नियतहै निश्चयकरके उसके लोक अविनाशी औ अभीष्ट पदार्थोंसे परिपूर्ण हैं १३ हे राजा दानसे धनको मौनतासे आज्ञाकरने के अधिकारको—कृच्छ्र आदि तपस्यासे उपभोगोंको और ब्रह्मचर्यसे पूर्ण आयुर्दा को पाताहै १४ और अहिंसाके फलसे रूप ऐश्वर्य नीरोगता आदिको भोगताहै फलमूल भोजन करनेवालेको राज्य और पत्तीखानेवालेको स्वर्गप्राप्तहोताहै १५ हे राजा शरीरके त्यागनेके अर्थ जलभोजन त्यागकरनेवालेको सर्वत्र सुखमिलता है शाक भोजनके नियममें गौवोंका रखनेवाला और तृणका भोजनकरनेवाला स्वर्गगामी होताहै १६ जो स्त्रीको त्यागकर तीनों संध्याओं में स्नानकरके वायु भक्षी होताहै वह सत्यसंकल्पता को पाताहै फिर सत्यतासे स्वर्गको पाताहै और यज्ञ दीक्षासे उत्तम कुलको पाताहै १७ जोनित्य अग्निहोत्र करनेवाला संस्कारी ब्राह्मण जलका आहार करनेवालाहै और गायत्री आदि मन्त्रको जपताहै वह राजसाधन को करताहै और अनसन व्रत अर्थात् अन्न जलका त्याग स्वर्गको देताहै १८ हे राजा बारह वर्षकी दीक्षामें केवल दुग्धपान करने के व्रतको और अभिषेक तीर्थको बारह वर्षतककरके वीर स्थानसे अर्थात् स्वर्ग से ऊपर धर्मलोक में जाताहै १९ निश्चयकरके सब वेदों को पढ़कर भी शीघ्रदुःखों से छूटताहै और मानसी धर्मका करनेवाला स्वर्गलोक को भोगताहै २० जो दुर्बुद्धियों से कठिनतासे त्याग करनेके योग्यहै ऐसे लोभके त्यागनेवालेको सुखहोताहै २१ जिस प्रकार बछड़ा हजारों गौवों के मध्यमें अपनीही माताको पहिचान लेताहै इसी प्रकार पूर्वजन्मका कियाहुआ कर्म्म कर्त्ताके पीछे २ जाताहै २२ जैसे कि बिना

कहेहुये फूलफल अपने समय को उल्लंघन नहीं करतेहैं इसीप्रकार पूर्वका किया हुआ कर्मभी अपने समयपर फलीभूत होताहै २३ बृद्ध मनुष्यके बाल श्वेतहो जातेहैं और दांत आंख कान भी निर्बलहोजातेहैं परन्तु लोभही बृद्धनहीं होता है २४ जिसकर्म्मसे पिताको प्रसन्नकरताहै उसी कर्म्मसे ब्रह्माजीभी प्रसन्नहोतेहैं और जिसकर्म्म से माताको प्रसन्नकरताहै उससे पृथ्वी प्रसन्नहोती है और जिस कर्मसे उपाध्याय प्रसन्नहोताहै उससेही ब्रह्म पूजितहोकर प्रसन्नहोताहै जिसपुरुष के यह तीनों पूजितहैं उसके सबधर्म प्रशंसनीयहैं और जिसके यहतीनों अपूजितहैं उसकी सब यज्ञादिक क्रिया निष्फलहैं २५। २६ वैशम्पायन बोले कि तब वह पाण्डव भीष्मजी के इस बचन को सुनकर आश्चर्य्यित होकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त और प्रीतिमान्हुये २७ निरर्थक उच्चारण कियेहुये मंत्रमें और बिना दक्षिणाके सोमयज्ञमें और बिना मन्त्रके हवन करनेमें जो पापहोताहै वह सब मिथ्याबादी मनुष्य को प्राप्तहोताहै २८ हे समर्थ यह शुभ और अशुभ फलकी प्राप्ति जो मैंने कही यह सब ऋषियों से कहीहुई है इसके विशेष अब क्या सुनना चाहते हो २९॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेकर्मकलिकोपाख्यानेसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

युधिष्ठिर बोले हे भरतर्षभ भीष्मजी कौनपुरुष पूजनके योग्यहै कौननमस्कार के योग्यहैं और आप किसको नमस्कार करतेहैं और जिनके लिये कि आप इच्छाकरतेहो इनसबको आप मुझे समझाके बताइये १ इससम्पूर्ण नरलोक और परलोक में जो हितकारी है उसको और बड़ी आपत्ति में वर्त्तमान होने पर भी जिसमें आप मनको लगातेहैं उसकोभी बर्णन कीजिये २ भीष्मजी बोले कि मैं उन ब्राह्मणों के लिये इच्छाकरताहूं जिनका परमधन परब्रह्महै और स्वर्गसाधन तप और वेदपाठहै और वह स्वर्ग जिनके ब्रह्मज्ञानके आधीनहै जैसे कि वेद में लिखाहै कि जो उसआत्माको अनुभव करताहै वह सब लोक और मनोरथों को प्राप्तकरताहै ३ जिनकेबालक और बृद्ध बापदादों के भारको उठातेहैं और पीड़ित नहींहोतेहैं उनके निमित्तभी मैं इच्छाकरताहूं ४ उनविद्याओं में प्रवृत्त जितेंद्रिय शास्त्र गुरुपूजनादि गुणसम्पन्न मृदुभाषी पताका बांधकर सत्पुरुषों में हितकारी

कथा और वचनोंको अपनी मधुरवाणी से कहते हैं अथवा जो लोग अच्छेप्र-
कार से प्रशंसित और कीर्त्तिमान् होकर इसलोकमें से जाते हैं उनके निमित्त
इच्छा करताहूं ५ । ६ । ७ और जो कथा पुराणादि के सुननेवाले सदैव सभामें
स्वीकृत और विज्ञानगुणसम्पन्न हैं उनके लिये भी इच्छाकरताहूं ८ हे युधिष्ठिर
सावधान पुरुष अच्छीरीति से बनाईहुई पवित्र और गुणकारी भोजनकी वस्तु-
ओं को ब्राह्मणोंकी तृप्तिके लिये भोजन करवाताहै ९ चाहे युद्धभूमिमें लड़ना
सम्भव है परन्तु गुणमें दोषलगाये विना किसीको कुछदेना असम्भवहै हेराजा
जो सदैव ब्राह्मणोंको दान करते हैं मैं उनके लिये इच्छाकरताहूं १० लोकमें ह-
ज़ारों शूरवीर प्रसिद्धहैं उनकी गणना होनेपर दानमें शूर पुरुष अधिक प्रशंसा
पाताहै ११ हे राजा जो मैं नीच ब्राह्मण भी होऊं तोभी धन्यहूं फिर कुलमें उत्पन्न
धर्म में गति रखनेवाला तप और विद्यामें प्रवृत्तहोऊं तो क्याही कहनाहै १२ हे
पाण्डुनन्दन भरतर्षभ इसलोक में तुझसे अधिक मेरा प्यारा कोई नहीं है परन्तु
ब्राह्मणलोग मुझको तुझसे भी अधिक प्यारेहैं १३ जैसे वेदपाठी ब्राह्मण मुझ
को तुझसे अधिक प्यारे हैं इस सत्यतासे मैं उनलोकों को प्राप्तकरूंगा जहां मेरे
पिता शन्तनु वर्त्तमानहैं १४ मुझको ब्राह्मणोंसे अधिक प्यारे पिताभी न थे मेरे
पितामह और अन्य सुहृद्जनभी मुझको ब्राह्मणों से अधिक प्यारे न थे १५ उन
शुभकर्मी ब्राह्मणोंमें थोड़ा वा बहुत कुछभी फल मैं नहीं चाहता अर्थात् उनके
पूजनमें फल नहीं चाहताहूं १६ हे परन्तप मैंने मन वाणी और बचनसे भी कभी
कभी ब्राह्मणों के अर्थ जो कर्मकिया उसी के प्रतापसे मैं ऐसी दशामें भी पीड़ा
को नहीं पाताहूं १७ जो मुझको ब्राह्मणोंका भक्त कहताहै उसके बचनसे मैं तृप्त
होताहूं यही कर्म सब पवित्रकर्म्मों से श्रेष्ठहै १८ हे तात मैं ब्राह्मणों की सेवा क-
रनेवाले मनुष्यों के निर्मल और पवित्र लोकोंको देखताहूं उनलोकों में मुझको
बहुत समयतक रहनेके लिये जानाहै १९ हे युधिष्ठिर जैसे कि लोकमें स्त्रियोंका
परमधर्म स्वामी की सेवा और रक्षाहै उनस्त्रियोंका वही देवता वही गतिहै इसके
सिवाय दूसरी गति नहीं है इसीप्रकार क्षत्रियको धर्मकेनिमित्त ब्राह्मण सर्वभावसे
माननीयहैं सौवर्षके क्षत्रियको दश वर्षका भी ब्राह्मण पिताके समान समझना
योग्यहै ब्राह्मणों में भी गुरुरूप ब्राह्मण श्रेष्ठहै २० । २१ स्त्री पति के मरजाने पर
देवरको अपना पति करती है और पृथ्वी ब्राह्मणके न होनेपर क्षत्रियको अपना

स्वामी करती है २२ इसीप्रकारसे वह पुत्रके समान ब्राह्मणभी रक्षाके योग्य गुरु के सदृश उपासना योग्य और अग्निकी समान सेवा करनेके योग्यहै २३ उन सत्यवक्ता सत्पुरुष सत्यप्रिय सब जीवोंके उपकारमें प्रवृत्त सर्प्प के समान क्रोधरूप ब्राह्मणों को सदैव सेवनकरे २४ हे युधिष्ठिर मैं उनके तेज और तपसे सदैव भयभीत रहताहूं यह दोनों तप और तेज त्याग करने के योग्य नहीं हैं अर्थात् उनसे पृथक् रहना उचितहै २५ हे राजा ब्राह्मण क्षत्रिय में नियत उन तेज तपों का फल शीघ्रही वर्त्तमान होजाताहै परन्तु जो तेजस्वी ब्राह्मणहैं वह क्रोधरूपहोकर मारते हैं २६ क्रोधरहित ब्राह्मणको पाकर जो तेज और तप दोनों में अधिक होंय तब भी क्रोध न करनेवाले ब्राह्मणसे वह पराजितहोताहै ब्राह्मण वा क्षत्रिय के तेज वा तप से चाहै कोई बाकी बचभीजाय परन्तु ब्राह्मणके क्रोधसे किसी प्रकारका भी शेष नहीं रहसक्ता अर्थात् सब नाशहोजाताहै २७ जैसे कि दण्डपाणि पशुओंका रक्षक सदैव गौवोंकी रक्षाकरताहै उसीप्रकार क्षत्रिय वेद और ब्राह्मणों की चारोंओर से रक्षाकरे २८ नियमधर्म्मी ब्राह्मणों की ऐसे रक्षा करनी चाहिये जैसे पिता पुत्रों की रक्षाकरते हैं राजाको यह देखना चाहिये कि इनके कोई जीविकाहै या नहीं जो जीविका न होतो जीविका देनाअवश्यहै २९ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्वणिदानधर्म्मे अष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे महातेजस्वी पितामह जो दुष्टात्मालोग ब्राह्मणों के आगे प्रतिज्ञाकरके अपनी अज्ञानता से नहीं देते हैं उनका किस योनि में जन्महोता है १ इसको समझाकर कहिये २ भीष्मजी बोले कि जो मनुष्य थोड़ी या बहुतसी प्रतिज्ञाकरके फिर नहीं देते उनकी सब आशा ऐसे नष्ट होजाती हैं जैसे कि नपुंसकका संतानफल नष्ट होताहै ३ हे राजा जीव जिस रात्रि को उत्पन्न होताहै और जिस रात्रि को नाश होजाताहै इन दोनों रात्रियों के मध्यमें उसके जो २ उत्तमकर्म होम दान और तपादिकहैं सब नष्ट होजाते हैं ४।५ फिर धर्मशास्त्र के ज्ञातालोगों ने यह वचन कहाहै इसको सुनकर उत्तमयुक्तिवाले विचारसे विचारो ६ और धर्म्मशास्त्रकेही ज्ञाताओं ने यह भी कहाहै कि वह जीव हजारों श्यामकर्ण घोड़ों के दानकेद्वारा उस पापसे छूटजाताहै, हे भरतर्षभ इस स्थानपर एक

प्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें शृगाल और बंदरका सम्वादहै ७।८ हे परंतप वह शृगाल और बन्दर पूर्व मनुष्यजन्ममें मित्र थे और इन योनियों में भी उत्पन्न होकर मित्र हुये ९ इसके पीछे पूर्व्वजन्म के स्मरण करनेवाले बन्दरने श्मशानभूमि में मृतकके खानेवाले शृगालको देखकर यह वचन कहा १० कि तुमने पूर्वजन्ममें कौनसा भयकारी पापकर्म्म कियाहै जिससे कि तुम श्मशानभूमि में महादुर्गन्धित निन्दित मृतकोंको खातेहो ११ यह बात सुनकर शृगालने उत्तरदिया कि मैंने ब्राह्मणसे प्रतिज्ञाकरके फिर नहीं दिया १२ इसहेतुसे हे बन्दर मैं पापरूप योनी में उत्पन्न हुआहूं और क्षुधातुर होकर ऐसे प्रकार का भोजन करताहूं १३ भीष्मजी बोले कि हे नरोत्तम इतना अपना वृत्तान्तकहकर शृगाल ने बन्दर से भी पूछा कि तुमने कौनसा पापकर्म कियाहै जिससे बन्दरकी योनि पाई १४ बन्दर बोला हे शृगाल मैं सदैव ब्राह्मणों के फलका आहार करनेवाला था इसी हेतुसे ज्ञानीको कभी ब्राह्मणका धन न हरना चाहिये और उससे विवाद भी न करना चाहिये और जो उससे प्रतिज्ञाकरे वह अब देना योग्यहै १५ भीष्म जी बोले कि हे राजा प्राचीन पवित्र कथा कहनेवाले धर्म्मज्ञ अध्यापक ब्राह्मणने यह इतिहास मुझसे कहाथा १६ हे युधिष्ठिर फिर मैंने पूर्व्व समय में ब्राह्मण के विषय में कथा कहनेवाले व्यासजी और श्रीकृष्णजी के भी मुख से सुनाहै १७ ब्राह्मणका धन न हरनाचाहिये सदैव उनपर क्षमाकरना चाहिये वह ब्राह्मण बालकहो वा कंगालहो वा विद्यादेने में कृपण भी हो तौ भी उसका अपमान करना योग्य नहीं १८ ब्राह्मणलोग इसीप्रकार से सदैव मुझको उपदेश करते हैं कि प्रतिज्ञा करके ब्राह्मण को देनाही योग्य है उसकी आशा को कभी छेदन न करना चाहिये १९ हे राजा प्रथम आशाके छेदन करने से ब्राह्मणको ऐसा वर्णन कियाहै जैसे अत्यन्त वृद्धियुक्त देदीप्य अग्नि होती है २० हे राजा पूर्व्व उत्पन्न होनेवाली आशासे युक्त अत्यन्त क्रोध भरा ब्राह्मण जिसको देखे उसको ऐसे भस्मकर देताहै जैसे कि सूखेहुये बनको अग्नि भस्मीभूत करती है २१ और जब ब्राह्मण प्रसन्नहोकर बचनों से आशीर्वाद देताहै तब वही ब्राह्मण उसके देशमें चिकित्सक के समान होजाता है अर्थात् सब प्रकार के रोगरूपी उपद्रवोंका शान्त करनेवाला होताहै २२ इसीप्रकार पुत्र पौत्र पशु बान्धव मन्त्री पुर और देशको भी शान्ती के द्वारा निर्विघ्नता से पोषणकरे २३ इस संसार में

ब्राह्मण का यह उत्तम तेज ऐसा दिखाई देता है जैसे कि पृथ्वी के ऊपर सहस्र किरणवाले सूर्य्यका तेज होताहै २४ हे भरतर्षभ युधिष्ठिर इसी हेतुसे इस संसार में जो अच्छे नियम को करनाचाहै तो अवश्य प्रतिज्ञा करके देनाचाहिये २५ निश्चयकरके ब्राह्मण को दानदेने से अनूपम स्वर्गकी प्राप्ति होती है मुख्यकरके यह दानही बड़ा उत्तम कर्म्म है २६ यहां के दियेहुये दानसे देवता और पितर अपना जीवन करते हैं इस निमित्त ज्ञानीलोगों को ब्राह्मण के अर्थ दानदेना अतिउत्तम और योग्यहै २७ हे राजा ब्राह्मण महातीर्थरूप कहाजाताहै ब्राह्मण को कभी विना पूजन किये न जाने देना चाहिये २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशृगालवानरसंवादेनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय

युधिष्ठिर बोले हे राजर्षि जो पुरुष मित्रताकी प्रीति से नीचजातिको उपदेश करताहै उसको दोष होताहै वा नहीं १ निश्चयकरके धर्म्मकी बड़ी सूक्ष्मगति है जिसमें मनुष्य मोह को पाते हैं इसको हे पितामह आप मूलसमेत मुझे समझाइये २ भीष्मजी बोले हे राजा जैसा कि पूर्व्व समय में मैंने ऋषियों के मुख से सुनाहै उसकोही मैं क्रमसहित तुझसे कहताहूं ३ किसी नीचजाति को उपदेश न करनाचाहिये क्योंकि उपदेश करनेवाले उपाध्यायको बड़ा दोष लिखा है इसका ब्योरेवार वृत्तान्त मैं कहताहूं तुम चित्तसे सुनो कि हिमालय के ब्रह्मस्थान आश्रममें हीनजाति के उपदेश करनेसे यह दशाहुई कि वहां एकस्थान धर्म्मकी वृद्धिका हेतु नानाप्रकारके वृक्षोंसे संकुलितथा ४।६ वह अनेक गुल्मलता और पशु पक्षियों से सेवित सिद्ध चारणों से व्याप्त प्रफुल्लित बनसमेत बहुत से ब्रह्मचारी तपस्वी वानप्रस्थादिकों से पूर्ण सूर्य्य और अग्नि के समान तेजवान् नियमी व्रती ब्राह्मणों से शोभित और दीक्षित मितभोजी शुद्ध अन्तःकरणवाले तपस्वियों से शोभायमान तप वेदपाठ आदिके शब्दों से शब्दायमान बालखिल्यनाम ऋषि और अनेक संन्यासियों से भूषितथा ७।१० उस स्थानमें कोई दयावान् शूद्र बड़े उत्साहको करकेआया और सबको प्रणामकरके आशीर्वादयुक्त हुआ ११ वह शूद्र उन महादीक्षित देवताओंके समान तेजस्वी मुनियों के समूहों को देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ १२ फिर उसके चित्तमें

आया कि मैं भी तपकरूं और मुनियोंके चरणोंको पकड़कर बड़ी दीनतासे यह कहनेलगा कि हे उत्तम ब्राह्मणलोगो मैं आपकी कृपासे धर्म्मकी प्राप्ती करना चाहताहूं इससे आप मुझे उपदेश करके संन्यासी बनाने को योग्यहैं १३ । १४ परन्तु हे तपस्विया मैं नीचवर्ण शूद्रजातिहूं मैं सेवाकरना चाहताहूं आपलोग मुझको अपना शरणागत जानकर कृपाकरें १५ कुलपति ने कहा कि शूद्रको संन्यास धर्ममें प्रवृत्तहोकर बर्त्तावकरना उचित नहीं है जो तू यहां ठहरना चाहता है तो सेवामें चित्तको प्रवृत्त करके निवासकर १६ सेवासेही तू निस्सन्देह उत्तम लोकों को पावेगा १७ भीष्मजीबोले कि मुनिके इन वचनोंको सुनकर उसशूद्र ने बिचारपूर्व्वक चिन्ताकरी कि इसस्थान में मुझको कैसा कर्म्म करना योग्यहै क्योंकि धर्म में मेरी बड़ी श्रद्धाहै १८ इसरीति से प्रसिद्धहोकर अपना प्रयोजन सिद्धकरूंगा ऐसा विचारकर उस आश्रमके स्थानसे दूर एकपर्णकुटी बनाई १९ और उसमें पूजाकरनेकी एक बेदी और शयन आदिके निमित्त पृथ्वीको और देवताओंके स्थानादिक का विचारकरके आप यमनियम में नियतहोकर मुनि होबैठा २० फिर वह तीनों सन्ध्याओं में स्नान नियम और देवताओंके स्थानों में बलि होम आदिको करके देवताओंके भी पूजनको करनेलगा २१ चित्तवृत्ति का निरोध और नियमों में प्रवृत्त जितेंद्रिय और फलाहारी होकर उसने अपने समीपवर्ती औषधी और फलोंसे अपने पास आनेवाले अतिथियों का बुद्धिके अनुसार पूजनकिया और इसीरीतिसे उसको बहुत समय व्यतीत होगया २२। २३ फिर उसके मिलाप करनेको कोई मुनि उसके आश्रममें आये तब उसने उन का कुशल मङ्गल पूछकर बहुत शिष्टाचारपूर्वक उसमहात्मा मुनिको पूजनकरके अच्छी रीतिसे तृप्तकिया २४ फिरवह तपोमूर्त्ति तेज व्रत धर्मात्मा ऋषि बहुतसी श्रेष्ठ२ कथाओंको कहकर अपने आश्रमको चलेगये २५ हे राजा इसीप्रकार से वह महात्मा ऋषि उस शूद्रके देखनेको बहुतवार उसके आश्रमगये २६ फिर उस शूद्रने उस तपस्वी मुनिसे कहा कि मैं पितृकार्य्यको करूंगा उसमें आप मुझपर अनुग्रह करियेगा २७ तब उस ब्राह्मणने उससे कहा कि बहुतअच्छा फिर उस शूद्र ने पवित्रहोकर उस ऋषिके निमित्त पाद्यको देकर २८ फिर बनकी औषधी और कुशाओंसे ऋषिको आसनदिया २९ इसके अनन्तर ऋषि ने दक्षिणदिशा में बिछायेहुये उस आसन को जिसका मुख पश्चिमकी ओर था न्यायके विपरीत

देखकर उस शूद्रसे कहा २० कि इस कुशासनको पूर्वाभिमुख करदो और तुम पवित्रहोकर उत्तराभिमुख होजाओ यह सुनकर शूद्रने वही किया जो ऋषिने कहा २१ अर्थात् उस बुद्धिमान्ने कुशा और अर्घ आदिको उनके उपदेश के अनुसार ठीक २ नियतकिया फिर उसतपस्वीने उससे सब हव्यकव्यकी बिधि बर्णन करी २२ तब शूद्रपुत्र कार्य्य के मध्यमें ऋषियों के धर्ममार्ग में नियतहुआ फिर पितृकार्यके समाप्तहोने पर वह ऋषिभी बिदाहोकर चलेगये २३ और बहुतकाल तक तपस्या करतेहुये उस शूद्र तपस्वीने वनमेंही मृत्युपाई निश्चयकरके उस उत्तम कर्मके फलसे शूद्रने किसी महाराजके वंशमें जन्मपाया २४।२५ इसीप्रकार उस बड़ेतेजस्वी ऋषिनेभी कालधर्म्मको पाया अर्थात् देहको त्यागकिया २६ हे भरतर्षभ वह वेदपाठी ब्राह्मण अपने कर्म्मयोग से पुरोहितके घरमें उत्पन्न हुआ इसरीतिसे वह दोनों शूद्र और मुनि उत्पन्नहुये २७ और क्रम२ से बड़ेहोकर सब विद्याओं में कुशलहुये वह ऋषि तो अथर्व आदि चारोंवेदों में पूर्णहोकर कल्प प्रयोग और ज्योतिष में पारंगतहुआ २८ और सांख्यशास्त्र में भी उसकी अत्यन्त प्रीति वृद्धिको प्राप्तहुई पिताके मरने पर शौचादि क्रिया करनेवाले उस राजपुत्रको ३९ मन्त्री आदि लोगोंने अभिषेक करके राज्यपर बैठाया और उस अभिषेक कियेहुये राजाने उस ऋषि ब्राह्मणको अपनी पुरोहिताई में अभिषेक किया ४० इसरीतिसे यह राजा उस ब्राह्मणको अपनी पुरोहिताई में नियतकरके सुखपूर्व्वक रहनेलगा और प्रजापालन करके धर्म्मपूर्व्वक आज्ञा करनेलगा ४१ वह राजा सदैव पुण्याहवाचन और धर्म्मकार्य्यों में पुरोहित को देखकर बारंबार मुस्करा मुस्कराकर हँसा करताथा ४२ इसरीतिसे उस राजाने बारम्बार उस पुरोहितसे हास्यकिया और यह पुरोहित जी बारम्बार हँसतेहुये ४३ राजाको देखकर महाक्रोधयुक्त हुये और एकान्त स्थान में राजा से जाकर मिले ४४ और चित्तके विनोदकी बढ़ानेवाली कथाओं को सुनाकर राजाको प्रसन्नकिया इसके पीछे पुरोहितजीने राजासे कहा ४५ कि हे तेजस्वी मैं आपसे एक वर मांगता हूं ४६ राजाने कहा हे ब्राह्मण आप एक वर क्या मांगते हैं मैं आपको सौ वरदान देसक्ताहूं आपके निमित्त प्रीति और मानसे कोई वस्तु मेरे अदेय नहीं है अर्थात् सब कुछ देसक्ताहूं ४७ पुरोहित ने कहा कि मैं एकही वर चाहताहूं जो आप मुझसे प्रसन्नहैं तो प्रतिज्ञा करिये कि मैं सत्य २ कहूंगा मिथ्या न बोलूंगा

४८ भीष्मजी बोले हे युधिष्ठिर राजा ने उसको उत्तरदिया कि बहुत अच्छा जो मैं जानताहूं उसको सत्यही कहूंगा और जो जानताही नहींहूं उसको नहीं कहसक्ता ४९ पुरोहितने कहा कि तुम सदैव पुण्याहवाचन धर्म्मकार्य और होम शान्तियों में मुझको देखकर क्यों हँसते हो ५० तेरे हँसने से मेरा चित्त बड़ा लज्जायुक्त होताहै हे राजा आपने शपथ खाई है इससे सत्य २ कहनेको उचित हो ५१ यह अच्छीतरहसे विदितहोताहै कि इसमें कोई न कोई हेतुहै तेरा हँसना बे कारण नहीं है मैं इस अपूर्व्व बातके सुननेकी इच्छा करताहूं आप ब्योरेवार मुझसे वर्णन कीजिये ५२ राजाने कहा हे वेदपाठी इस रीति से आपके पूछने पर जो न कहनेकी भी बातहोय वह भी कहनी चाहिये तुम चित्तलगाकर सुनो ५३ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण आपकी पूर्व्वजन्ममें जो दशाथी उसको सुनो हे ब्रह्मन् मुझ को अपने पिछले जन्मका सब स्मरण है उसको आप सावधानी से सुनो ५४ हे श्रेष्ठ ब्राह्मण मैं पिछले जन्ममें बड़ा तपस्वी शूद्रथा उस समय तुम उग्र तपस्वी ऋषि थे ५५ हे निष्पाप ब्राह्मण आप प्रसन्नमूर्त्ति होकर पूर्व्वजन्म में मेरे ऊपर अनुग्रह की बुद्धिरखनेवाले थे आपने पितृकार्य्य में मुझको यह उपदेश किया ५६ कि कुशासन और कुशाको हव्य कव्यमें ऐसे काममें लाओ इसीकर्मके दोष से आप पुरोहितीकर्म्म में उत्पन्नहुये और मैं राजा उत्पन्नहुआ ५७ हे विप्रेन्द्र मैं इसी कारण से आपसे हास्यविनोद करता था आप समय की विपरीत को देखिये कि तुमने मुझको उपदेश करने से यह फलपाया ५८ हे ब्रह्मन् मैं इसी कारण से तुमसे हँसाहूं आप निश्चयजानिये कि मैं आपकी निन्दाकरके नहीं हँसाहूं क्योंकि आप मेरे गुरूहो ५९ इस समय की लौट पौट से मुझको खेदहै इसी से चित्त खेदपाताहै मैं आपके पूर्व्वजन्मको स्मरण करताहूं इसी हेतुसे आप से हँसताहूं ६० देखिये उस कर्म्म से आप का उग्रतप नष्ट होगया इससे आप पुरोहिताईको त्यागकरके फिर ऐश्वर्य्य के निमित्त उपायकरो ६१ हे ब्राह्मणवर्य्य वेदपाठी इसके करने से तुम फिर किसी दूसरी नीचयोनिको नहीं पाओगे आपधनको लेकर पवित्रआत्मा हूजिये ६२ भीष्मजी बोले कि इसके पीछे राजासे बिदाहोकर उस वेदपाठी ब्राह्मणने ब्राह्मणों के अर्थ बहुतसा धन गांव भूमि और अनेक प्रकारके दानदिये ६३ फिर वह ब्राह्मणोंके करने के योग्य कृच्छ्र व्रतादिकों को करके उत्तम २ तीर्थों में नानाप्रकार के दानों को ६४ और गौओं को

ब्राह्मणों के अर्थ देकर आत्मज्ञानी पवित्रात्मा होगया और अपने उसी आश्रम में जाकर बड़ी तपस्या करनेलगा ६५ इसके पीछे उस ब्राह्मणने बड़ी सिद्धीको पाया और उस आश्रम में उन आश्रमबासियों का कृपापात्र हुआ ६६ हे साधु राजा युधिष्ठिर इसप्रकार से उस ऋषिने बड़े दुःख को पाया इसी हेतुसे ब्राह्मण लोगोंको शूद्रका उपदेश करना महानिषेध है ६७ हे राजा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यह तीनों वर्ण द्विजन्मा हैं इन तीनों के उपदेश करने से ब्राह्मण को दोष नहीं होताहै ६८ इसीकारण सत्पुरुषोंको किसी के आगे कुछ न कहनाचाहिये क्योंकि धर्मकी गति बड़ी सूक्ष्महै अशुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषोंको दुःख से जानने के योग्यहै ६९ हे राजा इसी हेतुसे पूजित मुनिलोग उपदेश करनेको मौनता कर जाते हैं और नीचको उपदेश करने के भयसे कुछ नहीं कहते हैं ७० धार्मिक गुणी सत्य और सरलतायुक्त पुरुष इसलोकमें नीचों के उपदेश से बड़े पापयुक्त होते हैं ७१ किसीसमय भी किसीको उपदेश न करना चाहिये ब्राह्मण उपदेश करने से उसी शिष्यके पापका भागी होताहै ७२ इसी हेतुसे इच्छावान् धर्म्मज्ञ ज्ञानीपुरुषको बिचारपूर्वक कर्मकरना उचित है धनके लोभसे कियाहुआ उपदेश नाशकारक होकर मारडालता है ७३ इसलोकमें निश्चय करने के योग्य बातको अच्छीरीति से निश्चय करके गुरुसे पूंछकर उपदेश करना योग्यहै और यह भी जानना चाहिये कि जिसको उपदेश करना है वह योग्य है वा नहीं जो योग्य होगा तो उसके धर्म्म को पावैगा और अयोग्य में पापकाभागी होगा ७४ मैंने यह तुमसे कहा कि उपदेश करने से महाकल्मषी होताहै इसीकारण इस लोक में उपदेश न करे ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेशूद्रमुनिसंवादेनामदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे भरतर्षभ पितामह किसप्रकारके पुरुष और स्त्रीके पास विद्या और लक्ष्मी निवासकरती है इसको मुझे समझाकर कहिये १ भीष्मजी बोले इसस्थानपर जैसा वृत्तान्त मैंने सुनाहै और श्रीरुक्मिणीने श्रीकृष्णजीके सम्मुख जैसे पूछाहै उसको मैं कहताहूं २ आश्चर्यकारी अद्भुत दर्शनकी अभिलाषा से प्रद्युम्न की माता रुक्मिणीजीने नारायण श्रीकृष्णजीकी गोदीमें बर्त्तमान ज्व-

लितरूप कमलवर्णा लक्ष्मीजीको देखकर उन लक्ष्मीसे पूंछा कि तुम हाथी घोड़े आदि के रूपसे कौनसे जीवधारियों को सेवन करती हौ और धैर्य्यता सुन्दरता और शूरता आदि रूपसे किन पुरुषों के पास नियतहोतीहौ और कैसे२ लोगों को सेवन नहीं करतीहौ हे त्रिलोकेश्वर की प्यारी हे महर्षि नारायण के सदृश लक्ष्मी तुम उन जीवोंको मुख्यता पूर्वक कहौ ३। ४ इसप्रकार से गरुड़ध्वजके सम्मुख देवी रुक्मिणी के बचनों को सुनकर प्रसन्नचित्त चन्द्रमुखी लक्ष्मीजी ने मनोहर कोमलबचनों से कहा ५ हे सुन्दरि ऐश्वर्य्यवान् मैं उस पुरुष के पास सदैव निवास करतीहूं जो उत्तम वचन कहनेवाला बुद्धिमान् कर्ममें प्रवृत्त क्रोध रहित ईश्वरभक्त कृतज्ञ जितेन्द्रिय और सदैव उत्तम बुद्धियुक्त रहताहो ६ और ऐसे पुरुषके पास कभी नहीं निवास करतीहूं जो कर्मोंका न करनेवाला ईश्वर और परलोक का न माननेवाला अकृतज्ञ गुरुपूजनादि व्रतों से रहित कठोर बचन कहनेवाला चोर और गुरुलोगोंकी निन्दा करनेवालाहो ७ और जो बल शूरता और बुद्धि से न्यूनहोकर जहांतहां धनवान् लोगोंपर क्रोधकरके दुःखको पातेहैं अथवा बाह्याभ्यन्तर से शत्रुहैं ऐसे प्रकारके मनुष्यों के पास मैं स्थिर नहींरहती हूं ८ और जो अपनी आत्मासे कुछ इच्छा नहींकरताहै और स्वभावसे घायल अन्तरात्माहै उस थोड़ेसे लाभमें संतोषी मनुष्यों के पास अच्छीरीतिसे निवास नहीं करतीहूं ९ और ऐसे लोगोंके पास रहतीहूं जो कि धर्म्मके अभ्यासी और ज्ञातावृद्धोंकी सेवामें प्रवृत्त चित्त जितेन्द्रिय शुद्धअन्तःकरण क्षमावान् और सःमर्थ हों और ऐसी स्त्रियों के पास निवास करतीहूं १० जो क्षमावान् जितेन्द्रिय सत्यस्वभाव सरलतायुक्त देवता और ब्राह्मणोंकी पूजा करनेवाली हैं और ऐसी स्त्रियोंको त्याग करतीहूं जो कि पात्रोंको इकट्ठा न रखनेवाली विना विचारकिये कर्मकरनेवाली सदैव पतिसे विरुद्ध वार्तालाप करनेवाली ११ दूसरेके घरमें प्रीति करनेवाली निर्लज्ज निर्दय अपवित्र क्रोधरूप धैर्य्यतारहित कलह प्रिय हो १२ और नींदकी मारीहुई सदैव सोनेवालीहों और ऐसी स्त्रियोंके पास रहाकरतीहूं जो सदैव सत्य बोलनेवाली सुन्दर स्वरूप गुणसे भरीहुई सौभाग्यवती पतिव्रता कल्याणवती होकर भूषणादिसे अलंकृतहों १३ और सवारियों में कन्याओं में भूषणों में यज्ञोंमें और बर्षा करनेवाले बादलोंमें फूलेहुये कमल कमलिनियों में १४ और शरदऋतुमें दीखनेवाले नक्षत्र मार्गमें हाथी में गोशालामें आसनमें

फूले उत्पल कमलवाले सरोवरों में निवास करतीहूं १५ और ऐसी नदियों पर निवास करतीहूं जो कि हंसोंके शब्दसे वा क्रौंचपक्षियोंके शब्दसेव्याप्त किनारे पर फैले हुये १६ शोभायमान वृक्षों से मनोहर तपस्वी सिद्ध और ब्राह्मणों से सेवित जलसे पूर्ण सिंह और हाथियोंसे व्याकुल उत्तम जलवाली हों मतवाला हाथी सुन्दर ऊंट राजा सिंहासन और सत्पुरुषों में सदैव निवास करती हूं १७ जिस स्थानमें मनुष्य अग्निमें हवन करते हैं व गौ ब्राह्मण और देवताओं को पूजते हैं और समयपर फलों के द्वारा वलिदानोंको करते हैं उस घरमें मैं सदैव आनन्दसे निवास करती हूं १८ सदैव वेदपाठ करनेवाले ब्राह्मणों में वा धर्म्म में प्रसक्त क्षत्रियों में कृषिकर्म्म परायण वैश्यों में और सदैव सेवा करनेवाले शूद्रों में भी निवास करती हूं १९ और अपने निज शरीर और सब भावों से युक्त होकर मैं श्रीनारायणजी के पास निवास करती हूं उस नारायणमें वेद ब्राह्मणकी रक्षा करना सबको प्यारा जानना आदि अनेक धर्म्म वर्त्तमान हैं २० हे देवि मैं नारायण के सिवाय किसी दूसरे स्थान में अपने निज शरीर युक्त होकर निवास नहीं करती हूं और मुझ को इसरीति से कहना भी यहां योग्य नहीं है कि मैं अपने भावों समेत इस पुरुषके पास रहती हूं क्योंकि वह पुरुष धर्म्म यश अर्थ और कामसे वृद्धि पाताहै २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्म्मेश्रीरुक्मिणीसंवादेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे राजा स्त्री और पुरुष के संयोग में किसको विषय का सुख अधिक होताहै इस सन्देहको भी दूरकरिये १ भीष्मजी बोले कि इस स्थानपर मैं उस प्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें इन्द्रसे और भंगाश्वनसे शत्रुता उत्पन्न हुईथी २ पूर्व्व समय में भंगाश्वननाम एक राजऋषि बड़ा धर्म्मात्मा हुआ उस असन्तान ने सन्तानके अर्थ एक यज्ञकी रचना करी ३ तब उस महाबली राजऋषिने अग्निष्ठितनाम यज्ञ जिसमें केवल अग्निकाही पूजन होताहै और इन्द्र के विरुद्ध होताहै जारीकिया वह यज्ञ मनुष्योंके प्रायश्चित्तमें सन्तानकी उत्पत्ति के निमित्त कियाजाताहै ४ बुद्धि में सावधान महाभाग देवताओं के ईश्वर इन्द्र ने अपने विरुद्ध यज्ञको जानकर उस राजऋषि के किसी छिद्र को चाहा ५ हे

राजा परन्तु इन्द्रने उसके किसी छिद्रको न पाया कुछ समय के पीछे वह राजा शिकारको गया ६ इन्द्रने समयपाकर उसको भुलादिया तव वह घोड़ेपर चढ़ा हुआ अकेलाही इन्द्र से मोहित होकर इधर उधर घूमनेलगा ७ और क्षुधा पिपासा से महापीड़ित होकर वह राजा दिशाओं को भूल गया और इधर उधर घूमताहुआ परिश्रम और तृषासे महाव्याकुल होगया ८ तव दैवयोगसे सुन्दर निर्म्मल शीतलजलसे भराहुआ एक सरोवर उसने देखा वहांजाकर उसने घोड़े को जल पिलाया ९ फिर इस राजाने पानीसे तृप्तकरके घोड़ेको वृक्ष से बांधकर आप स्नान किया और स्नान करतेही वह स्त्रीरूप होगया १० फिर वह उत्तम राजा अपने को स्त्रीरूप जानकर महालज्जित और चिंतायुक्त होकर सर्वात्मा से व्याकुलेन्द्रिय चित्तहुआ ११ और विचारनेलगा कि मैं किस प्रकारसे घोड़े पर सवारहोकर अपने पुरको जाऊंगा और इस अग्निष्टुतयज्ञ से मेरे और सौ पुत्रहुये १२ मैं उन पुत्रोंसे व अपनी स्त्रियोंसे अथवा पुरवासी देशवासी लोगों से क्याकहूंगा १३ धर्मदर्शी ऋषियों ने कोमलता सूक्ष्मांगता और व्याकुलता आदि धर्म्म स्त्रियों के कहे हैं १४ और परिश्रम करने में शरीरकी दृढ़ता और बल यह पुरुषके वर्णन किये हैं परन्तु यह नहीं जानताहूं कि किसकारण से मैं पुरुषत्व से हीनहोकर स्त्रीरूपमें प्राप्तहोगया १५ अब इस स्त्रीरूप से घोड़े पर सवार होनेको कैसे साहसकरूं यह कहताहुआ वह स्त्रीरूप राजा बड़ेउपाय पूर्वक घोड़ेपर सवारहोकर १६ अपने पुरको आया पुत्र स्त्री दास पुरवासी देशवासी आदिलोगोंने १७ इस बातको जानकर बड़ाआश्चर्य्य किया कि यह कैसे स्त्री रूपहोगया इसके अनन्तर उस महावक्ता स्त्रीरूप राजाने कहा कि १८ अपनी सेनाओं को साथलेकर बड़ी दृढ़ता से शिकार को गयाथा वहां दैवयोग और ईश्वरकी प्रेरणासे मैं अकेला घूमताहुआ एकभयानकवनमें जापहुंचा १९ उस भयानक वनमें तृषासे पीड़ित व्याकुल चित्तहोकर मैंने एक सुन्दर सरोवर को देखा जिसपर अनेकपक्षी कलोलें कररहेथे मैं पूर्वजन्मके दैवयोगसे उस सरोवरमें स्नानकरतेही स्त्रीरूपहोगया स्त्रियोंके और मंत्रियोंके सम्मुख नाम और गोत्रको कहकर २० । २१ उस स्त्रीरूप राजाने अपनेपुत्रोंसे कहा कि हे पुत्रो तुम परस्परमें प्रीतिपूर्वक स्नेहके साथ राज्यको भोगो मैं अब वनको जाऊंगा २२ इसप्रकारसे अपने सौपुत्रोंको समझाकर वह वनको चलागया वहां किसी आश्रममें जाकर

एक तामसी ब्राह्मणको पाया उस तामसी ब्राह्मणसे उसके सौ बेटेहुये फिर उस ने उन सबको साथलेकर अपने पहले बेटों से कहा २३। २४ कि मेरे पुरुषरूप होने में तुम बेटेहुये औ स्त्रीरूप होनेमें यह सौबेटेहुये हे पुत्रो तुम भाईपने की प्रीति से उत्तम राज्यको एकही स्थानपर भोगो २५ इसके पीछे उन भाइयों ने मिलकर राज्य को भोगा भाईपने की प्रीति से उत्तम राज्यको भोगनेवाले उन राजकुमारों को देखकर २६ क्रोधसे भरे देवराज इन्द्रने चिन्ताकरी कि मैंने इस राजऋषिके साथ नेकीकरी है बदी नहींकरी २७ इसके अनन्तर इन्द्रने ब्राह्मण रूपसे नगर में जाकर उन राजकुमारों की परस्पर में शत्रुता करादी २८ और कहा कि भाइयों में चाहे एक पिताके भी पुत्रहों परस्पर भाईपनेकी प्रीति नहीं होती है देखो कश्यपजीके पुत्र देवता और राक्षसहुये उन दोनों प्रकारके पुत्रों ने राज्यकेकारण वादकिया तुम भंगास्वनके पुत्रहो और यह सब दूसरे तपस्वी के पुत्रहैं जैसे कि कश्यपजीके पुत्र देवता और असुरहैं २९। ३० तुम्हारे पिता का राज्य तामसके पुत्र भोगते हैं फिर इन्द्रसे विरुद्धकियेहुये उन राजकुमारों ने परस्परमें युद्धकरके एकने दूसरेको मारा ३१ तामस भी इसबातको सुनकर अत्यन्त क्रोधयुक्तहुये इसके पीछे इन्द्रने ब्राह्मणरूप से सम्मुख जाकर उस स्त्रीरूप राजासे पूछा कि हे श्रेष्ठमुखी तुम किस दुःखसे दुखीहोकर रोतीहो तब उस स्त्रीने ब्राह्मणको देखकर करुणापूर्वक वचनकहे ३२। ३३ हे ब्रह्मन् मेरे दोसौपुत्र काल से परस्परमें मारेजाते हैं हे द्विजवर्य वेदपाठी मैं पूर्व में राजाथा तब मेरे सौबेटे ३४ उत्पन्नहुये वह मेरेही समान रूपवान्थे मैं एकसमय शिकारको गया और बड़घने बनमें भूलकर घूमनेलगा ३५ फिर मैं एक सरोवरमें स्नान करनेसे स्त्री रूपहोगया फिर अपने पुत्रोंको राज्यपर नियतकरके बनकोआया ३६ यहां इस महात्मा तापससे मुझ स्त्रीमें सौपुत्रहुये मैंने उनको भी नगरमें पहुंचादिया ३७ फिर कालपाकर उन सब में परस्पर शत्रुता उत्पन्नहुई अब दैव से महाव्याकुल होकर मैं शोचतीहूं ३८ इन्द्रने उसको दुखीदेखकर कठोर वचनकहा कि कल्याणिनि तुमने पूर्वसमयमें में मेरा असह्य दुःख उत्पन्नकियाथा ३९ इन्द्रके विरुद्ध अग्निष्ठित यज्ञकरनेवाले तुमने मुझको आवाहन न करके यज्ञकिया हे निर्बुद्धी मैं इन्द्रहूं मैंने अपनी शत्रुताका बदलालिया ४० वह राजऋषि इन्द्रको देखकर शिरके बल दोनों चरणोंपर गिरपड़ा और कहा कि देवेन्द्र आप प्रसन्न हूजिये

वह यज्ञ मैंने सन्तानकी इच्छा से कियाथा हे देवेश आप उस मेरे अपराधको क्षमा करिये फिर उसको नमस्कार से प्रसन्नहोकर इन्द्र ने बर दिया कि हे राजा तू स्त्रीरूपके वा पुरुषरूप के कौनसे पुत्रोंको सजीवहोना चाहताहै उसको मुझ से कह तवतो हाथजोड़कर उस तापसीने इन्द्रसे कहा कि हे इन्द्र मुझ स्त्रीरूपके जो पुत्रहैं वह सजीव होजायँ ४१। ४४ यह सुनकर इन्द्र ने आश्चर्यित होकर फिर उस स्त्रीसे पूछा कि तुझ पुरुषरूप से जो पुत्र उत्पन्नहुये वह तेरेपुत्र किस प्रकारसे शत्रुताके योग्यहैं ४५ स्त्रीरूपके जो बेटे हैं उनमें अधिकप्रीति किसहेतु से है मैं इस कारणको सुनाचाहताहूं तुम मुझसे कहो ४६ स्त्रीबोली कि स्त्री की प्रीति पुरुषकी प्रीतिसे अधिक होती है हे इन्द्र इस हेतुसे वह पुत्रजीवें जो मुझ स्त्रीरूप से उत्पन्नहुये हैं ४७ भीष्मजी बोले कि इसके पीछे इसके कहनेसे प्रसन्न चित्त इन्द्रने यह वचनकहा कि हे सत्य बोलनेवाली तेरे सब पुत्र सजीव होजायँ ४८ हे सुन्दर व्रतवाले राजेन्द्र इसके विशेष जो तू चाहताहै वह और मांग स्त्री रूप चाहता है या पुरुषरूप चाहता है जैसे कहै वैसाही तुझको करदूं ४९ स्त्री बोली हे इन्द्र मैं स्त्रीरूपको मांगतीहूं पुरुषरूप को नहीं चाहती इसप्रकार से कहे हुये देवेन्द्रने उस स्त्रीको उत्तरदिया ५० हे समर्थ तुम पुरुषरूपको त्यागकरके क्यों स्त्रीरूपको चाहतेहो इन्द्रके इस वचनको सुनकर उस स्त्रीरूप राजाने उत्तरदिया ५१ कि स्त्री पुरुषके संयोगमें स्त्रीको अधिक प्रीति होती है इसहेतुसे हे इन्द्र मैं स्त्रीरूपकोही चाहताहूं ५२ हे देवोत्तम मैं स्त्रीरूपमें अधिक क्रीड़ाकरूंगा यहसत्य है कि मैं स्त्रीरूपसे प्रसन्नहूं हे देवराज आप कृपाकरके जाइये ५३ तथास्तु कहकर उससे पूछकर इन्द्रदेवता स्वर्गको गये हे महाराज युधिष्ठिर इसरीतिसे स्त्री की प्रीति अधिक कहीजाती है ५४॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेद्वादशोऽध्यायः १२॥

तेरहवां अध्याय॥

युधिष्ठिर बोले कि लोकयात्राका हित चाहनेवाले मनुष्य को क्या करना उचित है कैसे स्वभाव युक्तहोकर किस लोकयात्राको करे १ भीष्मजी बोले कि देहसे तीनप्रकार के कर्मको वाणीसे चारप्रकार के कर्मको चित्तसे तीनप्रकार के कर्म को अर्थात् इन दशों कर्ममार्गोंको त्यागकरे २ हिंसा, चोरी, दूसरेकी स्त्री

से संग यह तीनपाप देहसे होते हैं इनको सब ओरसे त्यागकरे ३ असत्, अनर्गल और निरर्थक बोलना, कठोर बचन कहना, राजाकी सभा आदि में दूसरे के छिद्र को प्रकाश करना, दूसरेको दुःख देनेवाली निष्प्रयोजन बकवाद करना यह चारपाप वाणीसे अर्थात् बचनसे होते हैं हे राजा इन चारोंको कभी न कहे और न ऐसे बचन कहने को चित्तमें बिचारे ४ दूसरे के धन आदि में बुराई न करना, सब जीवों से प्रीतिकरना, यह सब वेदोक्त कर्मोंके फलहैं इन तीनोंप्रकार के कर्मोंको मनसे आचरणकरे ५ इसीकारण मनुष्य मन बचन देहसे इनपापों को नहींकरे क्योंकि अच्छे बुरे कर्मोंकाकर्त्ता अपने २ कर्म फलको भोगताहै ६॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेलोकयात्राकथनेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे श्रीगांगेयजी शुभकर्म करनेवाले मनुष्य को जैसे जपकरना चाहिये इसको चाहताहुआ मैं आपसे पूछताहूं कि आपने उसपितामह के भी पिता ईश्वर अन्तर्यामी आनन्दके उत्पत्ति स्थान जगत्पतिके नाम सुने हे प्रभु उननामों को १ और उस बिशालरूप विश्वात्मा देवासुरों के गुरू देवता आनन्दके करनेवाले और अज्ञान व प्रधाननाम अव्याकृतके उत्पत्ति और लय के स्थानरूप ईश्वर के ऐश्वर्य्य को बर्णन कीजिये २ भीष्मजी बोले कि मैं उन महाज्ञानी महादेवजी के गुण वर्णनकरने को समर्थ नहींहूं वह देवेश्वर सर्व्वत्र व्यापकहै और सब स्थानमें दृष्टि नहीं आताहै ३ और विराट्रूप ब्रह्मा सूत्रात्मा विष्णु और देवेश्वर का उत्पन्न करनेवाला प्रभु है उसकी ब्रह्मा से आदि लेकर पिशाच पर्य्यन्त सब देवता उपासना करते हैं अर्थात् अपनी २ उपाधियों को त्याग करके उसको प्राप्त होते हैं ४ पंच तन्मात्रा से लेकर अव्यक्त पर्य्यंत सब प्रकृतियों से परे होनेसे भोक्ता जीव पुरुषसे भी श्रेष्ठतरहै ५ जिसको बुद्धि आदि के असङ्गरूप योग के जाननेवाले तत्त्वदर्शी ऋषिलोग सम्पूर्ण चिन्ताओं को त्यागकरके प्राप्त करते हैं और जिसने रूपान्तर दशा से रहित परब्रह्म रस्सी सर्प की समान दृष्टिगोचर होकर भी वाणीसे परे उसमाया पुरुषरूप माया सबल अव्याकृत नामको जीवोंके कर्मोंके द्वारा एकसी दशासे हटाकर अपनी सत्ता स्फूर्त्ती से महत्तत्त्वको उत्पन्न किया उससे देवताओंके देवता चतुर्म्मुख ब्रह्मा उत्पन्नहुये

ऐसे देवदेवेश्वरजी के गुणों को गर्भ जन्म जरामरण संयुक्त मरण धर्मवाला कौन जीवात्मा वर्णन करसक्ताहै अर्थात् कोई समर्थ नहीं है ६।८ हे युधिष्ठिर शंख चक्र गदा पद्मधारी नारायणजी के सिवाय मुझसरीखा कौनसा पुरुष उस सब के उत्पत्तिस्थान परमेश्वरके गुणों के जानने को समर्थ है ९ यह विद्वान् गुण में श्रेष्ठ महादुर्ज्जय दिव्य चक्षुधारी तेजस्वी विष्णुजी भी उसको योगरूप नेत्रों से देखसक्ते हैं १० महात्मा श्रीकृष्णजी ने रुद्रजीकी भक्ती से अर्थात् आकाशादि अष्टमूर्त्तियों के ध्यानसे जगत्को व्याप्त किया तब बदरिकाश्रममें उस देवताको प्रसन्न करके सब लोकों में भोग पदार्थों से अधिक अपनी प्रियतमत्वता उन दिव्यदृष्टीवाले महेश्वरजी से प्राप्तकी ११ इन माधवजी ने चराचर जगत् के गुरु वरदायी देवता शिवजी को प्रसन्न करके पूरे हजारवर्षतक तपस्याकरी आशय यहहै कि शिवजी के विना प्रसन्न किये तपस्या करना बड़ा कठिनहै १२ हरएक युगमें श्रीकृष्णजी ने महेश्वरजी को प्रसन्न किया और परमाभक्ती से परमात्मा की प्रीति प्राप्तकरी १३ उस जगत् के उत्पत्तिस्थान परमात्मा शिवजीका जैसा ऐश्वर्य्य है उस साक्षात् ऐश्वर्य्यको उस अविनाशी हरि ने पुत्रके निमित्त देखा १४ उस ऐश्वर्य्य से बढ़कर मैं किसी ऐश्वर्य्य को नहीं देखता हूं हे राजा यह महाबाहु श्रीकृष्णजी उन देवताओं के देवता महेश्वरजी के नामों को मुख्यता पूर्व्वक अर्थ संयुक्त पूर्णतासे वर्णन करने को समर्थ हैं यही श्रीकृष्णजी भगवद्गुण और माहेश्वरी सच्चा ऐश्वर्य्य वर्णन करनेको समर्थ हैं १५।१६ वैशम्पायन बोले कि तब बड़ेयशस्वी भीष्मपितामहने वासुदेवजीको इसरीतिसे वर्णनकरके शिवजी के माहात्म्य से संयुक्त यह वचन कहा १७ हे सुरासुरों के गुरु देवता विष्णुजी आपही उसके कहनेको योग्य हो जिसको युधिष्ठिरने विश्वरूप शिवजी के विषयमें मुझसे पूछाहै इसका असली सिद्धांत यहहै कि शिव और विष्णु की एकता होने से विष्णुजी शिवजी के गुणों को और शिवजी विष्णुजी के गुणोंको वर्णन करसक्ते हैं १८ ब्रह्माकेपुत्र तण्डीऋषि ने इन देवदेव शिवजी के हजारनाम ब्रह्मलोक में वर्णन किये उनको पूर्वसमय में ब्रह्माजी ने प्रकट किया १९ यह तपोधन महाव्रती जितेन्द्रिय व्यास आदि ऋषिलोग आपके कहेहुये नामोंको सुनें २० हे समर्थ आप उस ध्रुव आनन्दस्वरूप कर्त्तारूप विज्ञानमूर्त्ति अग्निहोत्र कर्मफल देने के द्वारा सम्पूर्ण संसारके स्वामी अग्निरूप मुंडी कप-

र्दिन शिवजी के ऐश्वर्य्य को बर्णनकरो २१ बासुदेवजी बोले कि ईश्वरके कर्मों की गति मुख्यतापूर्वक हिरण्यगर्भ को आदिले सब देवता और इन्द्रादि महर्षी और सूक्ष्मदर्शी अदिती के पुत्र आदित्यों ने जिसके हृदयाकाशरूप भवनको नहीं जाना वह सत्पुरुषों का गतिरूप ईश्वर केवल मनुष्यसे जानना कैसे संभव होसक्ताहै २२। २३ इससे मैं उस असुरारि व्रत यज्ञों के फलदायी भगवान्के कुछ २ गुणोंको आपलोगों के सम्मुख ठीक २ कहताहूं २४ वैशम्पायन बोले कि ब्रह्मविद्या में प्रसिद्ध भगवान् श्रीकृष्णजी ने इसरीति से सबको विदित किया तदनन्तर आचमनादि से शरीरको पवित्र करके उन महात्माके गुणोंको वर्णन किया २५ बासुदेवजी बोले हे ब्रह्मर्षिलोगो हे तात युधिष्ठिर और हे गांगेय तुम इस सगुणब्रह्म कपर्द्दिन के नामोंको सुनो २६ मैंने पूर्व्वसमयमें जो शिवजी के निमित्त बड़े दुःखसे करनेयोग्य तपको प्राप्तकिया और पूर्वसमाधि योगके द्वारा बुद्धिके अनुसार भगवान्का दर्शन किया २७ और व्यतीत समयमें बुद्धिमान् प्रद्युम्न के हाथ से शम्बर दैत्य के मरने को बारहवर्ष व्यतीत होनेपर हे युधिष्ठिर रुक्मिणीके पुत्र प्रद्युम्न और चारुदेष्ण आदि पुत्रोंको देखकर पुत्रकी आकांक्षा करनेवाली जाम्बवतीने मुझको बुलाकर यह वचन कहा कि २८। २९ हे अविनाशी मुझको भी ऐसा पुत्रदो जो शूरवीर पराक्रमी सुंदर स्वरूपवान् शुद्धचित्त आपके समानहो इसके देनेमें बिलम्ब न करो ३० क्योंकि तीनोंलोकमें आपको कोई अप्राप्त वस्तु नहीं है हे यादव जो तुमचाहो तो दूसरे लोकोंको उत्पन्न करसक्ते हो ३१ बारहवर्ष पर्य्यन्त व्रतों से देहको शुष्क करके आपने शिवजी को पूजनादि से आराधन करके रुक्मिणी में पुत्र उत्पन्नकिये (शंकासमाधान) श्रीकृष्ण भगवान्ने गीतामें कहाहै कि मुझमें चित्तकोलगाओ मुझीमें एकता करो तो क्या उनकाभी कोई दूसरा ईश्वरहै इसका यह उत्तरहै कि मैं शब्दकरके परमात्मा का अर्थ बोधित होताहै और एकत्व अपनेही शरीरसे होती है कुछ गुणों से नहीं होती है इस हेतु से श्रीकृष्णजी ने गीतामें मैं शब्दकरके अपने शुद्धरूप को कहा है और मायाकृतरूप से अपनी एकत्व के विषय में शास्त्र को उपदेशकिया शिव और विष्णु में भिन्नता नहीं है दोनों एकही शरीरहैं इस से उन श्रीकृष्णजी ने अपनेही रूप शिवजी का आराधन किया दूसरेका नहीं किया और यह आराधना केवल संसारके उपदेशके निमित्तहै ३२ रुक्मिणी के

पुत्रोंकेनाम चारुदेष्ण,सुचारु, चारुवेश, यशोधर, चारुश्रवा, चारुयशा, प्रद्युम्न, शम्भु ३३ जैसे कि यह श्रेष्ठ पराक्रमी सुन्दरपुत्र आपने रुक्मिणी में उत्पन्नकिये उसीप्रकार हे मधुसूदनजी मुझे भी पुत्रदो ३४ इसरीतिसे देवी जाम्बवतीके कहनेपर मैंने उस सुन्दरी से कहा कि हे रानी तू मुझे आज्ञादे मैं तेरेभी कहनेको पूराकरूंगा ३५ फिर उसने मुझसे कहा कि आप कल्याणपूर्वक विजयके अर्थ जाओ ब्रह्मा शिव काश्यप नदी और मन के सङ्ग चलनेवाले देवता ३६ क्षेत्र औषधी देवताओंको हव्य पहुंचानेवाले यज्ञ छन्द ऋषियोंके समूह पृथ्वी समुद्र दक्षिणा स्तोभ नक्षत्र पितर ग्रह देवपत्नी देवकन्या देवमाता ३७ मन्वन्तर गौ चन्द्रमा सूर्य विष्णु ३८ सावित्री ब्रह्मविद्या ऋतु वर्ष क्षण लव मुहूर्त निमेष युग का विपर्यय ३९ यह सब सर्वत्र वर्त्तमान तुम्हारे आनन्दकी रक्षाकरें हे निष्पाप यादवजी तुम निर्विघ्न मार्गमें जाओ और सावधानरहो ४० इसरीतिसे स्वस्त्ययन कियाहुआ मैं ऋक्षराज की पुत्रीको विदाकरके नरोत्तम अपने पिता माता और राजा उग्रसेन के समीप जाकर विद्याधर इन्द्र की पुत्री का कहाहुआ सब वृत्तान्त उनसे कहकर महादुःखसे उनसे विदाहोके भाई गद और बड़े पराक्रमी बलदेवजी से मिला तब अत्यन्त प्रीतियुक्त होकर वह दोनों बोले कि आप के तपके तपकी वृद्धि निर्विघ्नतासे होय ४१ मैंने गुरुलोगों की आज्ञापाकर गरुड़ जीको स्मरण किया वह गरुड़ आकर मुझको हिमालयपर्व्वत पर लेगया मैंने उस पर्व्वत को प्राप्तकरके गरुड़जी को विदा किया ४२ । ४३ उस उत्तम पर्व्वत पर मैंने अपूर्व्व वृत्तान्त को देखा कि एक उत्तमक्षेत्र में एक बड़े महात्माऋषि दिखाई दिये ४४ वह क्षेत्र वैयाघ्रपाद गोत्री महात्मा उपमन्यु ऋषिका निवासस्थान दिव्य देवता गंधर्वों से पूजित ब्राह्मणों की लक्ष्मी से संयुक्त ४५ धव ककुभ कदम्ब नारिकेल कुरवक केतक जम्बु पाटल वट वरुण कवत्स नाम बिल्व सरल कपित्थ पिप्पल साल ताल बदरी कुन्द पुन्नाग अशोक आम्र अतिमुक्तक मधुक कोविदार चम्पक कठर बढ़रइत्यादि अनेक प्रकारके वनकेफल पुष्पवाले वृक्षोंसे संयुक्त पुष्प गुल्म लताओं से आकीर्ण केलेके खम्भों से शोभित अनेक पक्षियों के भोजनके योग्य फलवान् वृक्षों से अलंकृत और यथायोग्य स्थानों में स्थापित भस्म से ढकीहुई अग्नियोंसे अत्यन्त मनोहर ४६।४६ रुरु वानर शार्दूल सिंहद्वीपीनाम पशुओंसेव्याप्त मयूर कुरंगों से संयुक्त बिलार और सर्पोंसेयुक्त ५०

मृगजाति के भुगड भैंसे रीछों से सेवित सदैव मदोन्मत्त रहनेवाले हाथियों से शोभित अत्यन्त प्रसन्न असंख्य पक्षियों से सेवित अच्छे फूले हुये मेघवर्ण चित्र विचित्र वृक्षों के वनों से आनन्दरूप अनेक प्रकारकी पुष्परेणुसे युक्त गजों के मदसे सुगन्धित दिव्य अंगनाओं के गान से संयुक्त वायु जिसमें अनुकूल बहती थी ५१ हे वीर वहां जलधाराओं के और पक्षियों के शब्द हाथियों की चिग्घाड़ और किन्नरों के उत्तम गान सामगनाम ब्राह्मणोंकी सुन्दर वाणियों से संयुक्त थे ५२ ऋषियों के सिवाय अन्यलोगों के मनसे भी अचिन्त्य सरों के सुन्दर पुष्पयुक्त वृक्षों से और बड़ी २ अग्निशालाओं से महाशोभायमान था ५३ धर्मकी वृद्धिकरनेवाली पवित्र जलभरी श्रीगङ्गाजी से सदैव सेवित और अग्नि के समान महातेजस्वी तपस्वियों से चमत्कृत वायु जलभक्षी सदैव जपमें प्रवृत्त शास्त्र रीति से चित्तकी शुद्धी करनेवाले ध्याननिष्ठ योगी धूम्रपान करने वाले सूर्य्यकी किरणों के भक्षी दुग्धाहारी ब्रह्मर्षियों से सब ओरको सेवित ५४ । ५५ गोके समान व्यापार और हाथ के बिनाही भोजन करनेवाले पत्थर पर कूटकर खानेवाले दांतरूप ऊखल रखनेवाले सूर्यकी किरणों से ही उदर भरनेवाले जल के फेन पान करनेवाले इसीप्रकार मृगचारी ५६ पीपलके फलभोगी जलशायी चीर और मृगचर्म्मरूप वस्त्र और वल्कलधारी ऋषिलोग वहां वर्त्तमान थे ५७ महाकठिन ऐसे २ नियमों के कर्त्ता और पुण्यधन मुनियों को देखताहुआ मैं वहां पहुंचा हे भरतर्षभ पवित्रकर्मी शिवजी आदि महात्मा देवताओं से अच्छी रीति से पूजित वह आश्रममंडल सदैव ऐसा शोभायमान था जैसे कि आकाश में चन्द्रमण्डल ५८ । ५६ वहां प्रकाशमान तेजस्वी महात्माओं के प्रभाव से नौले सर्पों के साथ मृग व्याघ्रों के साथ क्रीड़ा कररहे थे ६० और जीवों के मन के प्रसन्न करनेवाले वेदवेदाङ्ग के पारगामी ब्राह्मण ६१ और नानाप्रकार के नियमों में प्रसिद्ध बड़े महात्मा ऋषियों से सेवित उस आश्रममें जाकर मैंने जटा चीरधारी तेज और तपसे अग्निके समान शिष्यों समेत शांतरूप युवाब्राह्मणर्षभ उपमन्यु ऋषिको देखा ६२ । ६३ फिर मैंने शिरसे उनको दण्डवत् की तब वह मुझसे बोले कि हे कमललोचन श्रीकृष्णजी आप आनन्द से आये अब हमारे तप सफल हैं जो पूजनके योग्य आपही हमको पूजते हो और जगत्के दर्शन करने के योग्य होकर भी आप हमारे दर्शनकी इच्छा करते हो ६४ । ६५

फिर मैंने हाथ जोड़कर मृग पक्षी और अग्निधर्मी शिष्योंके समूहों की क्षेमकुशल उनसे पूंछी ६६ इसके अनन्तर भगवान् ऋषिने बड़े मनोहर मधुर वचनसे मुझसे कहा कि हे श्रीकृष्णजी तुम निस्सन्देह अपनेसमान पुत्रको पाओगे ६७ तुम बड़े तपमें नियतहोकर ईश्वर शिवजी को प्रसन्न करो हे विष्णुजी यहां वह देवदेव शिवजी अपनी शक्ती समेत क्रीड़ा करते हैं ६८ पूर्व्वसमय में यहां पर हमने देवता और ऋषियों के समूहों समेत देवताओं में श्रेष्ठ शिवजी को तप ब्रह्मचर्य सत्य दम इत्यादि बातों से प्रसन्नकरके शुभ कामनाओंको प्राप्त कियाहै ६९ हे दुष्टों के पीड़ित करनेवाले श्रीकृष्णजी जिनको आप चाहते हो वह तपों के समूह अचिन्त्य भगवान् शिवजी शुभाशुभ से संयुक्त भावोंको उत्पन्न करते और अपने में लयकरते श्री देवी के साथ यहां निवास करते हैं ७० । ७१ मेरु पर्व्वतका कँपानेवाला जो हिरण्यकशिपु दानवहै उसने भी देवताओंका ऐश्वर्य शिवजी से एक अरबवर्ष पर्यन्त पाया ७२ और उसके मन्दारनाम प्रसिद्ध उत्तम पुत्रने महादेवजी के वरप्रदानसे एकअरबवर्ष पर्य्यन्त इन्द्र से युद्ध किया ७३ हे केशवजी पूर्वसमयमें बिष्णुभगवान् का वह घोर चक्र और इन्द्रका वज्र मन्दार के अंगोंपर निष्फल होगये ७४ और जो चक्र कि पूर्वसमयमें भगवान् शिवजी ने अग्निके समान देदीप्यमान तुमको दिया वह चक्रभी शिवजीने तेजसे पूर्ण महाअजेय उत्पन्नकरके जलके मध्यवर्त्ती महाअभिमानी दैत्यको मारकर तुमको दियाथा ७५ । ७६ शिवजी के सिवाय उसके देखने को दूसरा कोई समर्थ न था उसका सुन्दर दर्शन था इसीसे शिवजी ने सुदर्शननाम कहा और लोकमेंभी वह सुदर्शननाम चक्रकरके विख्यातहुआ हे केशवजी वह मन्दारनाम दैत्यके अंगों पर वरप्रदानके कारण निष्फलहुआ ७७ उसके शरीरपर सैकड़ों शस्त्र वज्र और चक्र कोईभी असरनहीं करसक्ताथा ७८ । ७९ देवतालोग उस महापराक्रमी ग्रह से अत्यन्त पीड़ितहुये अर्थात् उस बलवान् ग्रहकरके सब देवता अर्धमानहोकर युद्ध में पिसनेलगे ८० और शिवजी ने प्रसन्नहोकर विद्युतप्रभाव को भी तीनों लोकोंका ऐश्वर्यदिया इसीसे वह एकलाखवर्षतक सब लोकोंका स्वामीरहा ८१ शिवजीने कहाथा कि सदैव तू मेराही अनुचरहूजियो इसीसे उसको दशसहस्र पुत्रभी दिये और राज्य के निमित्त कुशद्वीप दिया ८२ । ८३ फिर ।।।।। ।।
एक महाअसुर उत्पन्नहुआ जिसने कि सौवर्षसे भी अधिकतक अपने मांसको

काट २ कर अग्निमें होमकिया तब प्रसन्नहोकर शिवजीने कहा कि तू क्या चाहताहै ८४ तब शतमुखने कहा कि मुझमें ऐसा अद्भुत योग होजाय जिससे कि चन्द्रमा सूर्य और पृथ्वी आदिके उत्पन्न करनेकी सामर्थ्यहो और ब्रह्मविद्या से उत्पन्न मुझमें अविनाशी बलदो तब शिवजी ने कहा ऐसाही हो पूर्व्वकाल में योगबल से सूत्रात्मा में प्रविष्टहोकर अर्थात् तीनसौ वर्षतक सूत्रात्मा का ध्यान करतेहुये स्वायंभूमनुका यज्ञ पुत्रके निमित्तहुआ तब उसको संकल्पके अनुसार हजार पुत्रदिये ८५। ८६ हे श्रीकृष्णजी आप भी उस देवताओं से स्तुतिमान् योगेश्वरको निस्सन्देह जानतेहो एक याज्ञवल्क्यनाम महाधार्मिक और प्रसिद्ध ऋषिहुये ८७ उन्होंने भी महादेवजी की आराधना करने से बड़े यशकोपाया और पराशरजीके पुत्र योगात्मा वेदव्यास नाम मुनिहुये ८८ उन्होंने भी शङ्कर जीको आराधन करके बड़ा यशपाया एक समय बालखिल्य ऋषियोंका इन्द्रने अपमानकिया ८९ तब उन क्रोधरूप ऋषियोंके तपसे भगवान् रुद्रजी प्रसन्नहुये और उनसे कहा ९० कि तुम अपने तपसे अमृत लानेवाले गरुड़जीको उत्पन्न करोगे पूर्व्वकालमें महादेवजी के क्रोधसे जल गुप्तहोगये फिर देवताओंने सात कपालोंसे शिवकी पूजाकरके दूसरे जलोंको उत्पन्नकिया फिर शिवजीके प्रसन्न होजानेसे पृथ्वीपर जल उत्पन्नहुआ ९१। ९२ अत्रिऋषिकी ब्रह्मबादिनी भार्या भी इस बचनको कहकर मुनिको त्यागकर शिवजीकी शरणमें गई कि मैं इस मुनिके आधीन नहींहूं वहां वह महादेवजी के प्रसन्न करने के लिये तीनसौवर्ष तक निराहाररही ९३ और अत्रिऋषिके भयसे मूसलोंपर शयन करनेलगी तब शिवजीने हँसकर उससे कहा कि तेरे पुत्र पतिके योगबिना भी चरुभक्षण करनेसे अवश्यहोगा ९४। ९५ और तेरेही नामसे वंशमें बड़ी उत्तम कीर्त्ति को पावेगा ९६ हे मधुसूदनजी इसीप्रकार भगवान् विकर्ण ने भक्तोंके सुखदायी महादेवजीको प्रसन्नकरके सिद्धिको पाया ९७ हे केशवजी तीक्ष्ण बुद्धि साकल्य ने ९०० बर्षतक मानसी यज्ञसे शिवजी की आराधनाकरी तब प्रसन्नहोकर भगवान्ने उससे कहा हे पुत्र तू बड़ा ग्रन्थकारहोगा तीनोंलोकोंमें तेरी अक्षयकीर्त्ति होगी ९८। ९९ और तेरावंश और कुल महर्षियोंसे शोभितहोकर अविनाशी होगा और हे श्रेष्ठ ब्राह्मण तेरापुत्र सूत्रकार अर्थात् सूत्रोंका बनानेवाला होगा १०० सतयुगमें सावर्णिनाम एक महर्षीहुये उन्हों ने भी यहां छःहजार वर्षतक

तपस्याकरी १०१ तब साक्षात् भगवान् रुद्रजी ने उससे कहा कि हे निष्पाप मैं तुझपर प्रसन्नहूं इससे तुम लोकमें अजर अमरहोकर प्रसिद्ध ग्रन्थकर्त्ताहोगे १०२ हे जनार्द्दनजी पूर्वसमय में इन्द्रने वाराणसीपुरी में दिगम्बर भस्मधारी शिवजी का आराधनकिया १०३ उसने भी इन्हींकी कृपासे देवताओं के राज्यको पाया इसीप्रकार पूर्वकालमें नारदजीने भी बड़ीभक्तिसे शिवका आराधन किया १०४ देवगुरू के भी गुरू शिवजी ने प्रसन्नहोकर कहा कि तेरे समान तेज तप और कीर्त्तिमें कोई न होगा १०५ गीतवाद्य संयुक्त तू सदैव मेरे पीछे २ चलेगा औरहे प्रभुमाधवजी मैंनेभी पूर्वकालमें जैसे इन देवदेव महादेवको प्रसन्नकिया उसकोभी ब्योरेसमेत सुनो और मैंने पूर्व्वसमय में जो इनसेपाया उसकोभी तुमसे कहता हूं हे तात पूर्व सतयुगमें व्याघ्रपादनाम ऋषि महातपस्वी वेदवेदांगके पारगामी हुये उनका मैं पुत्रहुआ और मेरा छोटाभाई धौम्यनामथा १०६। ११० कुछकाल पीछे मैं अपनेभाई धौम्यकेसाथ क्रीड़ा करताहुआ शुद्धअन्तःकरणवाले मुनियों के आश्रमको गया १११ वहां मैंने एक दुहतीहुई गौको देखा और उसके दुग्ध का स्वाद अमृतके समान पाया ११२ इसके पीछे बाल्यावस्थाके कारण से मैंने अपनी मातासे कहा कि हे माता तुम खीरके भोजन मुझे खिलाओ ११३ तब मेरीमाता दूधके न होनेसे दुःखी हुई इसके पीछे हे माधवजी पिट्ठी को जल में घोरकर ११४ उसको दूधकी सूरतकरके यह कहतीहुई हम दोनों भाइयोंके पिलानेकोलाई कि हे पुत्रो यह दूध है इसको पियो हमने किसीसमय गौका दूध पियाथा इससे श्रेष्ठ न लगा फिर मैं किसी बिरादरीके बड़े कुलीनके यज्ञमें अपने पिताके संगगया वहां देवताओंके प्रसन्न करनेवाली वह देवी दिव्य गौ दूध देतीथी ११५।११६ मैं उसके अमृतके समान रसरूपी दूधको पीकर दूधके गुणोंको और उसकी उत्पत्तिको समझकर सब बातों से विदितहुआ ११७ तबसे मैं उस पिट्ठीके पानी से प्रसन्न नहीं हुआ और अपने लड़कपन करके माता से कहा ११८ कि हे माता यह खीर नहीं है जो तुमने मुझकोदी है तब तो दुःख शोक युक्त माताने पुत्रभावकी प्रीतिसे हमको गोदीमें उठाकर मुख चुम्बनकरके कहा कि हे पुत्र शुद्ध अन्तःकरणवाले बनवासी सदैव कन्दमूल फलको भोजन करनेवाले मुनियोंके पास दूध भात वा खीर कहां है बालखिल्य ऋषियों से सेवित दिव्य नदीपर नियत बनवासी पर्व्वतनिवासी मुनियों के पास दूध कहांसे आ-

सक्काहै ११६।१२० वायु जल भक्षण करनेवाले बन आश्रम निवासी बाल बच्चेदारों के आहार से रहित बनके फलों के भोजन करनेवाले ऋषियों के पास दूध कैसे प्राप्त होसक्का है १२१ हे पुत्र सुरभी गौकी सन्तानके विना वनमें दूध नहीं मिलता नदी गुफा पर्वत और अनेकप्रकारके तीर्थोंमें भी १२२ शवके संग जप करनेवाले हमलोगों के परमगति शिवजी हैं हे पुत्र उस बरदाता अचल अविनाशी विरूपाक्ष महादेवजी के प्रसन्नकिये बिना खीर या दूध भातके सुख और बस्त्रादिक यहां कहां से आसक्के हैं इससे हे पुत्र तुम उन शिवकी शरणमें जाओ १२३।१२४ उसके प्रसन्न करनेसे तुम अपने सब मनोरथों को पाओगे हे शत्रुसंहारी श्रीकृष्णजी तब मैंने माताके बचनोंको सुनकर १२५ हाथजोड़कर नम्रतापूर्वक मातासे कहा कि हे माता यह महादेवजी कौनहैं कैसे प्रसन्नहोते हैं १२६ और कहां निवास करते हैं कैसे दर्शनके योग्यहैं और उनकी तृप्ती कैसेहोती है और रूप उनका कैसाहै १२७ वह कैसे प्रसन्नहोकर मुझको दर्शनदेंगे हे श्रीकृष्णजी तब पुत्रको प्यार करनेवाली हमारीमाता १२८ नेत्रों में जल भरके मेरे अंग और मस्तकको सूंघकर महादुःखी होकरबोली १२९ हे तात महादेवजी दुराराध्य दुर्विज्ञेय दुराधार दुरंतक दुराबाध दुर्ग्राह्य दुर्दश्य और शास्त्रोंसे भी उनका जानना कठिनहै १३० निराकार रूपको कहकर साकाररूप को कहते हैं—ज्ञानी लोग उसके अनेकरूप अद्भुत स्थान और अनेकप्रकारकी कृपादृष्टियोंको वर्णन करते हैं १३१ उस ईश्वरका मूलसमेत सब चरित्र कौनसा मनुष्य जानसक्का है निश्चय करके जैसा कि पूर्व समय में उस देवताओंके देवताने जिन २ रूपोंको धारण किया और जैसी २ क्रीड़ाकरी और करते हैं व जैसे प्रसन्नहोते हैं १३२ वह जीवमात्रोंके हृदयमें बर्त्तमान विश्वरूप महेश्वरहैं मैंने मुनियोंके कहनेसे उन शिवजीका दिव्य शुभचरित्र और भक्तोंपर दयाकरनेके निमित्त दर्शनको देना जैसा सुनाहै और ब्राह्मणोंपर दयाकेलिये जिनजिन रूपोंको धारणकिया और जिनको देवताओंने वर्णन किया १३३।१३४ हे पुत्र उनको ब्योरे समेत तुझ से कहतीहूं तू चित्त लगाकर सुन १३५ माताने कहा कि वह सब उत्पत्ति स्थान ईश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, सूर्य्य और अश्विनीकुमारों के रूपों को १३६ और देवता, मनुष्य, स्त्री, प्रेत, पिशाच, किरात, शवर और जलस्थलके जीवों १३७ का रूप धारण करताहै बनमें शवरादि रूपोंको जलमें कछुआ व मछली, शङ्ख,

प्रवाल, अंकुर, भूषण १३८ यक्ष, राक्षस, सर्प, दैत्य, दानव और बिलमें रहनेवालों का रूप धारण करताहै १३९ और भक्तों की रक्षाके निमित्त व्याघ्र, सिंह, मृग, तार्क्ष, रीछ, उलूक, कुत्ता, शृगाल और पक्षियों के भी रूपों को धारण करता है १४० हंस, काक, मयूर, कृकलासक, सारस, गिद्ध, चकवी, चकवा और बलाकों के रूपों को भी धारण करताहै १४१ और सब पर्वतोंको भी धारण करता है वही महादेव गौ, हाथी, घोड़ा, ऊंट, गधा, छाग, शार्दूल आदि अनेक मृगोंके रूपों को धारण करनेवाले दिव्य पक्षियोंके भी रूपोंको धारणकरते हैं १४२।१४३ दंड, छत्र, कमण्डलुका रखनेवाला और ब्राह्मणों का पोषण करनेवाला षड़ानन वहु मुख तीननेत्र अनेक शिरोंका रखनेवाला अनेक कटि, चरण, मुख, हाथ, पसली आदि अशेष गुणोंसमेत १४४।१४५ ऋषि, गन्धर्व, सिद्ध, चारणका रूप धारण करनेवाला भस्मसे पांडुवर्णअङ्ग अर्द्धचन्द्रमाको मस्तकपर विभूषण करनेवाला बहुत शब्दोंसे शब्दायमान बहुतसी स्तुतियों से संस्कार कियाहुआ सबजीवों का नाश करनेवाला सर्वरूप सर्बलोक पूज्य सर्वात्मा सर्व्वव्यापी सर्वत्र गामी सर्वव्याद्य सब शरीरी लोगोंका हृदयस्थ जानने के योग्यहै १४६।१४८ जो पुरुष जिस अभीष्टको चाहताहै वा जिस हेतुसे पूजनादि करताहै वह देवेश्वर इन सब को जानताहै उसीकी शरणागत होनाचाहिये १४९ वह चक्र, शूल, गदा, मुसल, खड्ग, पट्टिशको धारण करनेवाला प्रसन्नभी होताहै क्रोधभी करताहै और हुं-कारभी देताहै १५० पृथ्वी का धारण करनेवाला शेषनाग रूपकी मेखला और नागकुंडलीका कुंडल और सर्पोंकाही यज्ञोपवीत नागचर्म्म का विछौना शय्या आदि रखनेवाला १५१ गुणों से युक्त हँसता गाताहुआ मनोहर बाजोंसमेत तां-डवनाम उत्तम नृत्यको करता है १५२ तिरछीचालसे जँभाई लेता रोता रुलाता उन्मत्तरूप होकर अच्छीरीतिसे संभाषण करताहै १५३ नेत्रोंसे मनुष्योंको भय-भीत करता अत्यंत भयानक हँसता जागता सोताहुआ सुखपूर्वक जँभाईलेता है १५४ जपकरताहै जप कियाजाताहै तपकरताहै तपकियाजाताहै देताहै लेता है योगकरताहै ध्यानभी कियाजाताहै १५५ वेदी यज्ञ कुम्भ गोशाला और अ-ग्निके मध्यवर्त्ती बालक वृद्ध और तरुणरूप दृष्टिआताहै वा नहीं आताहै १५६ ऋषियोंकीकन्या और स्त्रियोंके साथ क्रीड़ा करताहै बड़े केश लिंगयुक्त दिगम्बर विकृतलोचन गौर श्याम कृष्ण पांडुर धूम्र लोहित विकृताक्ष विशालाक्ष दिग्वास

सबको वस्त्र देनेवाला है १५७।१५८ इस माया से रहित आदिरूप मायाकरके अनेक प्रकारके कार्यरूप संसारकी सूरत अजन्मा हिरण्यगर्भ के अन्तको और उस आदि अन्त न रखनेवालेकी मुख्यताको कौन जानसक्ताहै १५६ वहमहेश्वर अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय योगात्मा शुद्धतम पदार्थरूप योगी ध्याननाम योगमें प्रवृत्त सूक्ष्म चित्तवृत्ती से प्राप्तकरने के योग्यहै क्योंकि आत्माहै आशय यहहै कि आत्मा ब्रह्म है इस महावाक्यका अर्थ इस श्लोक में दर्शायागयाहै १६० हजारों वा असंख्य नेत्र मुखधारी विराट्रूप और आनन्द भोगनेवाला आत्मारूपी एकमुख दोमुख तीनमुख आदि रखनेवालाहै १६१ हे पुत्र इसका भक्त और ध्यान करनेवाला सदैव उसी में निष्ठा रखनेवाला उसी को परमपद स्थान जाननेवाला होकर उस महादेवजीका सेवनकर उसीसे अपने अभीष्ट मनोरथों को पावेगा १६२ हे शत्रुनाशक श्रीकृष्णजी माता के इस वचनको सुनकर तभी से महादेवजी में मेरी निश्चल भक्ती उत्पन्नहुई १६३ फिर एकहजार वर्षतक बामअंगुष्ठ की नोकसे तप में नियतहोकर मैंने उस आनन्ददायी देवताको प्रसन्नकिया १६४ पहले सैकड़ेमें फलोंकाही आहार किया दूसरे सैकड़े में सूखेपत्ते भोजनकिये तीसरे सैकड़े में जलको पानकिया १६५ और फिर सातसौ वर्षतक वायु भक्षणकिया इस रीतिसे मैंने दिव्य एकहजार वर्षतक आराधनकिया १६६ इसके अनन्तर सर्वेश्वर प्रसन्न मूर्ति शिवजी ने मुझको निज भक्तजानकर मेरी परीक्षाकरी १६७ कि हजारनेत्र वज्रको धारणकिये अपनाइंद्र का रूपबनाके देवताओंसे व्याप्त १६८ अपने तेजसे महातेजवान् किरीट हार केयूर से अलंकृत बड़े सुंदर श्वेतरूप लालनेत्र स्तब्धस्कन्ध महोत्कट घोरशूंड़से आवेष्टित चारदाढ़ोंसे शोभित महागजराजपर सवारहोकर वहषडैश्वर्यके स्वामीआन पहुंचे १६६।१७० उस समय शिवजी घोररूप पाण्डुवर्ण दिव्य अप्सरा और गन्धर्वोंके शब्दोंसे सेवितथे १७१ तब उस देवराजरूपने मुझसे कहा कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ मैं तुझपर प्रसन्न हूं अपने अभीष्ट बरको मांग १७२ हे श्रीकृष्णजी इन्द्र के वचनको सुनकर मैं प्रसन्न नहीं हुआ और उत्तर दिया कि १७३ हे इन्द्र मैं शिवजी के सिवाय आपसे या दूसरे किसी देवतासे कोई वरनहीं चाहताहूं यही मेरा सत्य संकल्प है १७४ और हे इन्द्र यह अच्छी रीतिसे निश्चय किया हुआ मेरा वचन सत्य सत्यही है इस हेतुसे कि मुझको महेश्वरजीकी कथाके सिवाय

किसीकी कथा नहीं सुहाती है १७५ चाहै पशुपतिनाथ के बचनसे मैं कीट वृ-क्षादिक भी होजाऊं परन्तु शिवजी महाराजके सिवाय दूसरेके प्रसन्नतासे दिये हुये तीनों लोकोंके राज्य और ऐश्वर्य्य भी मुझको स्वीकार नहीं हैं चाहै महे-श्वरजीकी प्रसन्नतासे मैं तिर्य्यग्योनि और चाण्डालयोनिमें भी जन्म पाजाऊं १७६ । १७७ परन्तु अपने ईश्वर महादेव की भक्तीके सिवाय इन्द्रभवन में भी वास नहीं चाहता उस वायु जल भक्षण करनेवाले सत्पुरुषके दुःखका नाश नहीं होसक्ताहै १७८ जिसकी भक्ति सर्वेश्वर शिवजीमें नहींहै १७९ और जिन पुरु-षोंका शिवजीके चरणके सिवाय किसी दूसरे धर्ममें चित्त नहीं लगताहै उनको शिवचरणका त्याग कैसे होसक्ता है १८० कलियुगको पाकर शिवके चरणों में प्रीतिकरनेवाली बुद्धि के द्वारा ऐश्वर्य्यवान् होना चाहिये हरभक्ति रूप रसायन को पीकर संसार का भय नहीं होताहै १८१ प्रसन्नता न प्राप्त करनेवाले पुरुषकी भक्ती शंकरजीमें क्षणमात्रको भी नहीं होसक्ती है १८२ हे इन्द्र मैं शंकरजी की आज्ञासे चाहै कीट पतंगादिक भी होजाऊं परन्तु तुम्हारे दियेहुये तीनों लोक के वैभवको भी नहीं चाहताहूं १८३ चाहै उनकी आज्ञासे कुत्ता क्यों न होजाऊं परन्तु बिना शिवजीकी आज्ञाके देवताओंकेभी राज्यको नहीं चाहता १८४ मैं स्वर्ग में स्वर्ग का राज्य ब्रह्मलोक में ब्रह्मभाव आदि किसी मनोरथ को नहीं मांगताहूं मैं केवल शिवजी के दास भावको चाहताहूं १८५ जबतक चन्द्रमाके समान श्वेत किरीटधारी पशुपतिनाथ प्रसन्न नहीं होते हैं तबतक जरा जन्म मृत्युके हजारों आघातोंसे उत्पन्न होनेवाले शरीर में वर्त्तमान अनेक दुःखों को सहताहूं १८६ इस संसारमें उस सूर्य्य चन्द्रमा और अग्निके समान प्रकाशमान तीनोंलोकोंके सार असार आद्य अद्वितीय अजर अमररूप शिवजीके प्राप्तहुये बिना कोई पुरुष शान्तीको नहीं पासक्ताहै १८७ जो मेरे दोषोंसे पुनर्जन्महोय तो सब जन्मोंमें मेरी शिवजीमें अचला भक्तीहोय १८८ इन्द्र बोले कि उस सब के स्वामी संसार नाशकर्त्ताके होनेमें क्या तुझे निश्चयहै जो तू उसके सिवाय दूसरेसे वरको नहीं चाहताहै इस हेतुसे तू अज्ञानहै अर्थात् दुःखदूर होनेकेलिये जैसे गुणकी आवश्यकता होती है वैसेही संसारके नाशकर्त्तासे वरका चाहना भी निर्बुद्धिताहै १८९ उपमन्युऋषि बोले कि ब्रह्मबादियोंने जिसको सत् असत् व्यक्त अव्यक्त कहा है उसी नित्य एक और अनेकरूपधारी से मैं वर मांगना

चाहताहूं १९० जो आदि मध्य अन्त न रखनेवाला ज्ञान ऐश्वर्य्य युक्त ध्यानसे अगम्य परमात्मा है उसी से बरको चाहता हूं १९१ जिस अबिनाशी से सकल ऐश्वर्य्य होते हैं और जिस अबीजसे बीज उत्पन्नहोते हैं उसीसे बरमांगताहूं १९२ वह अन्धकार से परे ज्योतिरूप है और गुरुपूजन करनेवालों का परम तप है जिसको जानकर शोचसे निवृत्तहोते हैं उसी से हम बरमांगते हैं १९३ हे इन्द्र मैं उस देवताको पूजताहूं जो कि पंचतत्त्व और सब जीवमात्रों की उत्पत्ति के प्रयोजन का ज्ञाताहोकर संसार का स्वामी आदिभूत सर्वव्यापी सब मनोरथोंका दाता महादेव है १९४ मैं उससे बरमांगताहूं जो कि युक्तियों से सिद्ध न होने वाला सांख्ययोगके आशयों को साक्षात्कार करानेवाला सबसे परे है और तत्त्वज्ञानी पुरुष जिसकी उपासना करते हैं १९५ हे इन्द्र जिस देवताको तुझ इन्द्र का अन्तरात्मा देवताओं का ईश्वर सब जीवों का गुरू कहते हैं हम उसी से बरमांगते हैं १९६ जिसने प्रथम आकाश को अपनी सत्तासे व्याप्तकर ब्रह्मांड को उत्पन्न करके सबके स्वामी ब्रह्माजी को सृजा उसी से हम वरको चाहते हैं १९७ पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश बुद्धि मन इन सबका जो स्वामी है उससे दूसरा कौन है उसको आप बताइये (इस स्थानपर पंचतत्त्वशब्द से पंच तन्मात्रा अहंकार और अव्यक्तका प्रयोजन है) १९८ हे इन्द्र बुद्धि अहंकार तन्मात्रा इन्द्रियां इन सबका उत्पत्तिस्थान शिवजी के सिवाय श्रेष्ठतर कौन है इसको आप बताइये १९९ इस लोक में ब्रह्माजी को चौदह भुवनों का उत्पन्न करनेवाला कहते हैं वह ब्रह्माजी भी उसी अखिलेश्वर को आराधन करके महान् ऐश्वर्य्य को भोगते हैं २०० केवल एक एक गुणवाले ब्रह्मा आदि हैं और इनके भी स्वामी तुरीय मूर्त्ति महेश्वरजी में जो उत्तम ऐश्वर्य्य वर्त्तमानहैं वहभी महादेवही से हैं तो कहिये इनसे परे कौन दूसरा ईश्वरहै अर्थात् कोई नहीं है २०१ शत्रुओं का नाशकर्त्ता देवेश्वर के सिवाय दीनों को ऐश्वर्य्यदान करने को दूसरा कौन समर्थ है न कोऽपीत्यर्थः क्योंकि वह देवेश्वर दैत्य दानवों के भी ऊपर अपनी कृपाकरताहै २०२ दिशा काल सूर्य्यका तेज ग्रह वायु जल नक्षत्र इन सबोंको भी महादेवजीसेही जानकर आप बताइये कि उनसे परे कौन है २०३ फिर यज्ञ और त्रिपुरकी उत्पत्ति और नाश में बड़े बड़े दैत्य दानवों को परास्त करके शत्रुओं का मर्द्दन करनेवाला दूसरा कौनहै २०४ हे इन्द्र यहां

बहुत से हेतुवादरूप सूक्तों करके अर्थात् युक्तियों से क्या प्रयोजन है हे हजार नेत्रधारी २०५ सिद्ध गंधर्व्व देवता और ऋषियों से पूजित देखकर तुझको भी मैं उसी महादेवजीका कृपापात्र जानताहूं २०६ हे इन्द्र इन लोकोंमें उस सर्व्व-व्यापी ईश्वरका यह जड़ चैतन्यात्मक स्वर्ग शरीर और इन्द्रियनाम भोग पदार्थ उस जीवात्मा के अर्थ ईश्वरसे उत्पन्न होताहै २०७ हे भगवान् इन्द्र तत्त्वदर्शी ज्ञानी भूलोक से महर्लोक तक लोकालोक के मध्यवर्त्ती द्वीपादि उत्तम स्थान और मेरुपर्व्वतके दिव्यस्थान और सूर्य चन्द्रमा आदि सम्पूर्ण ब्रह्माण्डमें उसी देवता को ज्योतिस्स्वरूप कहते हैं हे देवेन्द्र जो पुरुष शिवजी के समान किसी दूसरे रूपको देखते हैं २०८ । २०९ तो असुरों से पीड़ित होकर देवता उसीकी शरणमें क्यों नहीं जाते हैं यक्ष राक्षस सर्प और देवताओं के परस्पर नाशकारी युद्ध में ऐश्वर्य्य नहीं है इस निमित्त शिवजी स्वर्गवासियों को ऐश्वर्य्य के देने वाले हैं अन्धक शुक्र दुन्दुभी महिषासुर २१० । २११ कुबेर बलि और निवात कवच आदि राक्षसोंके बरदान और नाशमें महेश्वरजी के सिवाय दूसरा कौन समर्थ है इसको बताइये २१२ देवता और असुरों का जो अग्नि देवता गुरुहै पूर्व्वसमयमें किसका वीर्य उसके मुखमें होमागया अथवा किस देवताका वह वीर्य्यथा जो सुवर्णका पर्व्वत कियागया २१३ लोकमें कौन दूसरा कहाजाताहै और कौन ऊर्ध्व में रहता है अर्थात् वीर्य्य को नीचे नहीं उतरने देता किसके अर्द्धांग में स्त्री नियतहै किसने कामदेवको भस्म किया और किसके परमधाम की देवता स्तुति करते हैं किसकी क्रीड़ा के निमित्त श्मशानभूमि है नृत्य में किसकी प्रशंसा कीजाती है और मृत्युसमयपर किसका नाम लियाजाताहै २१४ उसका ऐश्वर्य्य किसके समानहै भूतों के संग कौन क्रीड़ा करताहै किसके गुण ऐश्वर्य्य से दर्पित समान बल रखनेवाले हैं किसका धाम अचल और तीनों लोक से पूजित प्रसिद्ध है कौन दूसरा वर्षा करताहै तपता है और ज्योतिरूप है २१५ किससे औषधियों की पूर्ण उत्पत्ति है कौन पृथ्वी को धारण करताहुआ तीनोंलोकों में जड़ चैतन्य समेत इच्छापूर्व्वक बिहार करता है २१६ जो ज्ञान सिद्धी और क्रिया योग के द्वारा ऋषि गंधर्व्व और सिद्धयोगियों से सेवित है मैं उसी हरको कारण कहताहूं २१७ मैं देवता असुरों के कर्म्म यज्ञ और क्रिया योगसे सेवित और सदैव कर्म्मफल से पृथक् उन शिवजी को कारण कहताहूं

अर्थात् संसार का उत्पन्नकर्त्ता कहता हूं २१८ वह माहेश्वर पद सूक्ष्मसे सूक्ष्म अनूप होने से स्पर्श करने के अयोग्य गुण गोचर निर्गुण गुणका स्वामी और श्रेष्ठतर है २१९ उत्पत्ति स्थितिका और स्थूल सूक्ष्म संसार का कारण त्रिकाल रूप सबका स्वामी और कारणहै २२० हे इन्द्र जीवरूप अक्षर शरीररूपक्षर ईश्वर रूप अव्यक्त विद्या अविद्या कर्म्म अकर्म्म धर्म्म अधर्म्म जिससे प्रकट होते हैं मैं उसको सबकी उत्पत्ति का कारण कहताहूं २२१ इस लोकमें उत्पत्ति नाशके कारण देवदेव रुद्रजी से संसारी सृष्टिको लिंग भग से चिह्नित देखो २२२ प्रथमही उस संसारके स्वामी शिवजी को मेरी माताने सबकी उत्पत्तिका कारण वर्णन किया हे इन्द्र उस ईश्वरसे श्रेष्ठ कोई नहीं है जो तू चाहताहो तो उसी की शरणमें जावो २२३ प्रत्यक्षमें लिंग संयोग और ब्रह्मादि देवताओं के बीर्य्य से विकार सहित यह तीनों लोक निर्गुण और गुणके उत्पन्न होनेवाले तुम जानतेहो ब्रह्मा इन्द्र अग्नि और विष्णुजी समेत सबदेवता दैत्य असुर जो कि बुद्धि में बरदान नियत करनेवाले हैं वह सब उस ईश्वर से श्रेष्ठ दूसरे किसीको नहीं कहते हैं २२४ सावधानचित्त मनोरथ सिद्ध करने में उस सब जगत् के प्रकाशक जानने के योग्य प्रसिद्ध अवतारों में श्रेष्ठ शिवजी को शीघ्र मोक्षके लिये इच्छा करताहूं २२५ उन दूसरी युक्तियों से क्या प्रयोजन है वह ईश्वर उत्पत्ति के कारण रूप देवताओंकी भी उत्पत्तिका हेतुहै हमने सिवाय शिवजी के लिंगके किसी देवताका लिंग पूजताहुआ नहीं सुनाहै २२६ महेश्वरजीको छोड़कर किस दूसरे का लिंग सब देवतालोग पूजते हैं वा आगे पूजतेथे जो आपने सुनाहोय तो आपकहिये २२७ ब्रह्मा विष्णु और देवताओं समेत तुम भी जिसके लिंगका सदैव पूजनकरतेहो इसकारणसे वही सबसे श्रेष्ठतरहै २२८ सब सृष्टिभर जिस हेतुसे शंख चक्र गदा पद्मसे चिह्नित नहीं है और लिंग भगसे चिह्नितहै इसकारणसे प्रजा माहेश्वरी है २२९ देवी के कारण रूपभावसे उत्पन्न होनेवाली सब स्त्रियां भगसे चिह्नितहैं और सब पुरुषभी प्रत्यक्षमें हरके लिंगसे चिह्नितहैं जो पुरुष ईश्वर और देवीसे दूसरेको उत्पत्तिका कारण कहताहै और जो उनकी उपासना के चिह्न से चिह्नित नहीं है वह दुर्बुद्धी पुरुष जड़ चैतन्य समेत तीनोंलोकमें निन्दित और निकालाहुआ ज्ञातिमात्र से बाहर करने के योग्य है २३० सब पुल्लिंगों को शिवरूप और स्त्रीलिंगों को उमाका रूपजानो

इन्हीं दोनों शरीरों से यह सब चराचर जगत् व्याप्तहै २३१ हे बलिके मारनेवाले इन्द्र मैं उससेही वर और मरण दोनों चाहताहूं हे इन्द्र आप पधारिये या इच्छा होय तो ठहरिये २३२ महेश्वरजी चाहैं मुझे वरदें या शापदें परन्तु सब प्रकार की इच्छाओं का फलदेनेवाले शिवजी के सिवाय किसी दूसरे देवता को नहीं चाहताहूं २३३ इसप्रकार देवराजसे कहकर फिर दुःखसे व्याकुलहो चिन्ताकरने लगा कि यह क्याबातहै जो देवता शिवजी मुझपर प्रसन्न नहीं होते २३४ तदनन्तर मैंने क्षणमात्रमेंही हंस कुन्द और चन्द्रमा कमलके मृणाल और चांदी के वर्ण २३५ शोभायमान ऐरावत हाथी को साक्षात् वृषरूपधारी क्षीरसागर के समान शुभ्रवर्ण कृष्ण पुच्छ बड़ेशरीरवाला मधु पिंगल नेत्रधारी २३६ तप्तकांचनके समान प्रकाशमान वज्रसार तीक्ष्ण मृदु रक्तनोकवाले सींगों से पृथ्वी को खनन करनेवाला २३७ सुवर्ण वेष्टित डोरीसे सब ओरको अलंकृत सुन्दर मुख नाक कान खुर और कमरसे शोभित २३८ सुन्दर कनपटी बड़े स्कन्ध युक्त अद्भुत दर्शन कंधोंतक ढकीहुई उसकी झूल प्रकाशमान होरहीथी २३९ वह बरफ के पर्वतके शिखरकी समान रूप अथवा श्वेतबादल के शिखरकी समान जिस पर चढ़े हुए उमादेवी समेत देवदेव भगवान् शिवजी २४० ऐसे शोभायमान हुए जैसे कि पूर्णमासी के दिन चन्द्रमा पूर्णरूप से प्रकाशमान होताहै—उनके तेजसे उत्पन्नहोनेवाले अग्निदेव बादल और बिजली समेत २४१ हजार सूर्यके समान सबको व्याप्तकरके नियतहुए फिर वह बड़े तेजस्वी ईश्वर ऐसे दिखाई दिये जैसे प्रलय में सब जीवों का भस्म करनेवाला संवर्त्तकनाम अग्निहोता है उससमय सब संसार उसके तेजसे व्याप्तहोकर चारोंओरसे दुर्दृश्यहोगया २४२। २४३ फिर चित्तसे व्याकुलहोकर मैंने चिंताकरी कि यह क्याबातहै फिर वहतेज एकमुहूर्त्त तक दशोंदिशाओं में फैलाहुआ नियतरहा २४४ तदनन्तर महादेवजीकी माया से सब दिशाओं में अत्यन्त शांत होगया इसके पीछे मैंने उन महादेवजी कोही नियत देखा जो कि नंदीगण पर सवार सौम्यरूप निर्धूम अग्नि के समान सुन्दर सर्वांगयुक्त पार्वती समेत नीलकण्ठ अव्यक्तरूप तेजोमय अष्टादशभुजाधारी सब तेजों से शोभित विराजमान महेश्वर श्वेत वस्त्र माला चन्दन युक्त श्वेत ध्वजा और यज्ञोपवीतधारी दुराधर्ष २४५। २४७ गायक नर्त्तक बाजा बजानेवाले और अपनेसमान बलरखनेवाले श्रेष्ठ पार्षदों से वे-

ष्टित २४८ शरदऋतु के उदय होनेवाले चन्द्रमाके समान बालचन्द्रमारूप पांडु वर्णवालाथा वह मुकुट तीनोंनेत्रोंके कारण उदय होनेवाले तीन सूर्य्यके समान प्रकाशमानथा २४६ और सुवर्ण के समान वर्ण कमलोंसे युक्त रत्नोंसे अलंकृत उन शिवजीकी पुष्पमाला उनके शुक्लवर्ण शरीर में महाशोभायमान थी २५० हे गोविंदजी मैंने सब तेजोंसे भरेहुये अस्त्रोंसे युक्त मूर्त्तिमान् शिवजीको देखा उस महात्माका धनुष इन्द्रधनुषके समान पिनाक नामसे प्रसिद्ध बहुत बड़ा सर्पाकारथा २५१। २५२ वह सप्तशिर बड़ाशरीर बिषैली तीच्ण दाढ़युक्त प्रत्यंचा से बँधाहुआ बड़ी ग्रीवासेयुक्त पुरुषरूप था २५३ उनका सूर्य्य और कालाग्निके समान तेजस्वी घोररूप पाशुपत नाम बाणही असादृश्य वर्णन से बाहर सब जीवोंका भयकारी स्फुलिंगोंसेयुक्त महाशरीर तीव्र अग्निका उत्पन्न करनेवाला एक चरण हजार शिर उदर करालदंष्ट्र हजार भुज कान आंख जिह्वा रखनेवाला अग्निका उगलनेवाला महाअस्त्र था २५४। २५६ हे महाबाहु जो कि सबशस्त्रों का नाशकर्त्ता ब्रह्मास्त्र नारायणास्त्र इन्द्रास्त्र आग्नेयास्त्र और वरुणास्त्र भी श्रेष्ठ है २५७ हे गोविंदजी पूर्व समयमें महादेवजीने लीला पूर्वक जिस अकेले बाणसे उस त्रिपुरको दग्धकरके चणमात्रमेंही भस्म करडाला २५८ महेश्वरजी के हाथ से छोड़ाहुआ अस्त्र आधेही निमेष में सब जड़ चैतन्य स्थावर जंगम जीवों संमेत त्रिलोकी को निस्सन्देह भस्म करदेता है २५९ इस लोक में ब्रह्मा विष्णु आदि देवताओं में जिसके समान दूसरा कोई नहीं है हे तात वहां मैंने इस उत्तम और अद्भुत अस्त्रको देखा २६० कोई दूसरा अस्त्र उससे अधिक नहीं है वही लोकोंमें शिवजीका त्रिशूल प्रसिद्धहै २६१ शिवजीका छोड़ाहुआ वह त्रिशूल स्वर्ग और संपूर्ण पृथ्वीको फाड़कर सब समुद्रोंको भी भस्म करताहुआ सब संसारको भी नाश करसक्ताहै हे गोविंदजी पूर्व्व समय में इस लोकके बीच लवण राक्षसके हाथमें नियत इस त्रिशूलसे युवनाश्वका पुत्र महातेजस्वी चक्रवर्त्ती तीनोंलोक का विजयी महाबली इन्द्रके समान पराक्रमी राजामान्धाता अपनी सेनासमेत मारागया २६२। २६३ बड़ा भयकारी तीच्ण नोकों से रोमहर्षण करनेवाला वह त्रिशूल भृकुटीको तीन शिखारखनेवाली करके घुड़कता हुआ नियतथा २६४ हे श्रीकृष्णजी उस निर्धूम प्रकाशमान अग्नि और काल सूर्य्य के समान उदयवाले कालरूप सर्प हाथ में रखनेवाले वाणी से परे यमके

समान पाशरखनेवाले २६५ रुद्रजी के सम्मुख उस अस्त्रको देखा हे गोविन्दजी जो तीक्ष्णधार क्षत्रियोंका नाशकरनेवाला फरसा पूर्व्वसमयमें प्रसन्नहोकर परशुरामजी को शिवजी ने दियाथा और जिसके द्वारा युद्धमें परशुरामजी ने कार्त्तवीर्य को मारा २६६।२६७ फिर जमदग्निजीकेपुत्र परशुरामजी ने उसी फरसेके द्वारा यह पृथ्वी इकीसबार निक्षत्रकरदी २६८ प्रकाशित धारवाला बड़ा भयानक वह फरसा जिसके कण्ठ में सर्पलगाथा और हजारों प्रकाशमान अग्नियों के समान तेजस्वीथा वह शिवजीके सम्मुख नियतहुआ २६९ ऐसे ऐसे अस्त्र उस बुद्धिमान्के असंख्यथे हे निष्पाप मैंने यह उत्तम उत्तम अस्त्र वर्णनकिये २७० हंसपर सवार सब लोकों के पितामह ब्रह्माजी इच्छानुचारी शीघ्रगामी दिव्य विमानमें सवारहोकर शिवजीके दाहिनी ओर नियतहुए २७१ इसीप्रकार शंख चक्र गदा पद्म धारणकरनेवाले नारायणजी भी गरुड़पर सवारहोकर शिवजीके बाईं ओरको नियतहुए २७२ और अग्नि के समान स्कंदजी शक्ति और घंटा लिये मोरपर सवारहोकर देवी पार्वतीके सम्मुख नियतहुए २७३ दूसरे महादेव जीके समान शूलको लिये नंदीगणको देवताके आगे नियतदेखा २७४ इसी प्रकार स्वायंभूआदि मनु और भृगुआदिक मुनि इन्द्रादिक देवता यह सब भी चारोंओरसे आये २७५ इसी रीति से अनेक प्रकारकी माताभी नियत हुईं तब उन देवताओं ने महात्मा शिवजी को दण्डवत्पूर्व्वक चारोंओरसे घेरकर २७६ नानाप्रकारके स्तोत्रों से महादेवजी की स्तुतिकरी तब ब्रह्माजी ने भी सामवेद की रथंतरनाम ऋचाको पढ़कर शिवजीकी स्तुतिकरी और नारायणजी ने ज्येष्ठ साममन्त्रसे शिवजीकी स्तुतिकी २७७ फिर इन्द्रने उस परब्रह्म की स्तुति करके उत्तम शतरुद्री का पाठ किया तदनन्तर ब्रह्मा विष्णु और इन्द्र यह तीनों महात्मा अग्नि के समान शोभायमान हुये २७८ उनके मध्यमें बर्त्तमान भगवान् शिवजी ऐसे शोभायुक्त हुये जैसे कि शरदऋतु में बादलों से रहित मण्डल में नियत सूर्य्य प्रकाशित होताहै २७९ हे केशवजी मैंने आकाशमें हजारों सूर्य्य और चन्द्रमाओंको देखा फिर मैंने भी उस जगदीश स्वामीकी स्तुति करी उपमन्युजी बोले कि २८० ॥

स्तोत्र ॥

उपमन्युरुवाच ॥ नमोदेवाधिदेवाय महादेवायतेनमः । शक्ररूपायशक्राय

शङ्कवेषधरायच २८१ नमस्तेवज्रहस्ताय पिङ्गलायारुणायच । पिनाकपाणये नित्यं शङ्खशूलधरायच २८२ नमस्तेकृष्णवासाय कृष्णकुञ्चितमूर्द्धजे । कृष्णाजिनोत्तरीयाय कृष्णस्त्वभिरतायच २८३ शुक्लवर्णायशुक्लाय शुक्लाम्बरधरायच । शुक्लभस्मावलिप्ताय शुक्लकर्मरतायच २८४ नमोस्तुरक्तवर्णाय रक्ताम्बरधरायच । रक्तध्वजपताकाय रक्तस्रगनुलेपिने २८५ नमोस्तुपीतवर्णाय पीताम्बरधरायच । नमोस्तूच्छ्रितछत्राय किरीटवरधारिणे २८६ अर्द्धहारार्द्धकेयूर अर्द्धकुण्डलकर्णिने । नमःपवनवेगाय नमोदेवायवैनमः २८७ सुरेन्द्रायमुनीन्द्राय महेन्द्राय नमोस्तुते । नमःपद्मार्द्धमालाय उत्पलैर्मिश्रितायच २८८ अर्द्धचन्दनलिप्ताय अर्द्धस्रगनुलेपिने। नमआदित्यवक्त्राय आदित्यनयनायच २८६ नमआदित्यवर्णाय आदित्यप्रतिमायच। नमःसोमायसौम्याय सौम्यवक्त्रधरायच २६० सौम्यरूपायमुख्याय सौम्यदंष्ट्राविभूषिणे । नमःश्यामायगौराय अर्द्धपीतार्द्धपाण्डवे २६१ नारीनरशरीराय स्त्रीपुंसायनमोस्तुते । नमोवृषभवाहाय गजेन्द्रगमनायच २६२ दुर्गमायनमस्तुभ्य मागम्यागमनायच । नमोस्तुगणगीताय गणवृन्दरतायच २६३ गणानुयातमार्गाय गणनित्यव्रतायच। नमःश्वेताभ्रवर्णाय संध्यारागप्रभायच २६४ अनुदिष्टाभिधानाय स्वरूपायनमोस्तुते । नमोरक्ताग्रवासाय रक्तसूत्रधरायच २६५ रक्तमालाविचित्राय रक्ताम्बरधरायच । मणिभूषितमूर्द्धाय नमश्चन्द्रार्द्धभूषिणे । विचित्रमणिमूर्द्धाय कुसुमाष्टधरायच २६६ नमोग्निमुखनेत्राय सहस्रशशिलोचने। अग्निरूपायकान्ताय नमोस्तुगहनायच २६७ खचरायनमस्तुभ्यं गोचराभिरतायच । भूचरायभुवनाय अनन्तायशिवायच २६८ नमोदिग्वाससेनित्यमधिवाससुवाससे । नमोजगन्निवासाय प्रतिपत्तिसुखायच २६६ नित्यमुद्बद्धमुकुटे महाकेयूरधारिणे। सर्पकुन्तोपहाराय विचित्राभरणायच ३०० नमस्त्रिनेत्रनेत्राय सहस्रशतलोचने । स्त्रीपुंसायनपुंसाय नमःसांख्याययोगिने ३०१ शंयोरभिस्रवंताय अथर्वायनमोनमः । नमःसर्वार्त्तिनाशाय नमःशोकहरायच ३०२ नमोमेघनिनादाय बहुमायाधरायच । बीजक्षेत्राभिपालाय स्रष्टाराय नमोनमः ३०३ नमःसुरासुरेशाय विश्वेशायनमोनमः । नमःपवनवेगाय नमःपवनरूपिणे ३०४ नमःकाञ्चनमालाय गिरिमालायवैनमः । नमःसुरारिमालाय चण्डवेगायवैनमः ३०५ ब्रह्मशिरोपहर्त्ताय महिषघ्नायवैनमः । नमस्त्रिरूपधाराय सर्वरूपधरायच ३०६ नमस्त्रिपुरहर्त्ताय यज्ञविध्वंसनायच । नमःकामाङ्गनाशाय

कालदण्डधरायच ३०७ नमःस्कंदविशाखाय ब्रह्मदण्डायवैनमः। नमोभवाय शर्वाय विश्वरूपायवैनमः ३०८ ईशानायभवघ्नाय नमोस्त्वन्धकघातिने। नमो विश्वायमायाय चिन्त्याचिन्त्यायवैनमः ३०९ त्वन्नोगतिश्चश्रेष्ठंच त्वमेवहृदयं तथा। त्वंब्रह्मासर्वदेवानां रुद्राणांनीललोहितः। आत्मात्वसर्वभूतानां सांख्येपुरुष उच्यते ३१० ऋषभस्त्वंपवित्राणां योगिनांनिष्फलःशिवः। गृहस्थस्त्वमाश्रमिणामीश्वराणांमहेश्वरः ३११ कुबेरःसर्वयक्षाणां क्रतूनां विष्णुरुच्यते। पर्वतानां भवान्मेरुर्नक्षत्राणांचचन्द्रमाः ३१२ वशिष्ठस्त्वमृषीणांचग्रहाणांसूर्य्यउच्यते। आरण्यानांपशूनांच सिंहस्त्वंपरमेश्वरः ३१३ ग्राम्याणांगोवृषश्चासिभवाँल्लोकप्रपूजितः। आदित्यानांभवान्विष्णुर्वसूनांचैवपावकः ३१४ पक्षिणांवैनतेयस्त्वमनन्तोभुजगेषुच। सामवेदश्चवेदानांयजुषांशतरुद्रियम् ३१५ सनत्कुमारो योगीनां सांख्यानांकपिलोह्यसि। शक्रोऽसिमरुतांदेवपितॄणांहव्यवाडसि ३१६ ब्रह्मलोकश्चलोकानां शैलानांहिमवान्गिरिः। वर्णानांब्राह्मणश्चासिविप्राणांदीक्षितोद्विजः ३१७ आदिस्त्वमसिलोकानां संहर्त्ताकालएवच। यच्चान्यदपि लोकेवै सर्वतेजोऽधिकंस्मृतम् ३१८ तत्सर्वंभगवानेव इतिमेनिश्चितामतिः। नमस्तेभगवान्देव नमस्तेभक्तवत्सल ३१९ योगेश्वरनमस्तेऽस्तुनमस्तेविश्वसंभव। प्रसीदममभक्तस्य दीनस्यकृपणस्यच ३२० अनैश्वर्य्येणयुक्तस्य गतिर्भवसनातन। यच्चापराधंकृतवानज्ञात्वापरमेश्वर ३२१ मद्भक्तइतिदेवेश तत्सर्वंक्षन्तुमर्हसि। मोहितश्चास्मिदेवेश त्वयारूपविपर्ययात् ३२२ नार्घ्यंतेनमयादत्तं पाद्यं चापिमहेश्वर। एवंस्तुत्वाहमीशानं पाद्यमर्घ्यंचभक्तितः ३२३ कृतांजलिपुटोभूत्वा सर्वंतस्मैन्यवेदयम्। ततःशीतांबुसंयुक्ता दिव्यगन्धसमन्विता ३२४ पुष्पवृष्टिःशुभातात पपातममभूर्द्धनि। दुन्दुभिश्चतदादिव्यस्ताडितोदेवकिङ्करैः। ववौचमारुतःपुण्यः शुचिगन्धःसुखावहः ३२५ ततःप्रीतोमहादेवः सपत्नीकोवृषध्वजः। अब्रवीत्त्रिदशांस्तत्रहर्षयन्निवमांतदा ३२६ पश्यध्वंत्रिदशाःसर्वे उपमन्योर्महात्मनः। मयिभक्तिंपरांनित्यमेकभावादवस्थिताम् ३२७ एवमुक्तास्तदाकृष्ण सुरास्ते शूलपाणिना। ऊचुःप्राञ्जलयःसर्वे नमस्कृत्वावृषध्वजम् ३२८ भगवन्देवदेवेश लोकनाथजगत्पते। लभतांसर्वकामेभ्यः फलंत्वत्तोद्विजोत्तमः ३२९ एवमुक्तस्तःशर्वः सुरैर्ब्रह्मादिभिस्तथा। आहमांभगवानीशः प्रहसन्निवशंकरः ३३० ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वत्सोपमन्योतुष्टोऽस्मिपश्यमांमुनिपुंगव। दृढभक्तोऽसिविप्रर्षेमया

जिज्ञासितोह्यसि ३३१ अनयाचैवभक्त्याते अत्यर्थंप्रीतिमानहम्। तस्मात्सर्व्वान्ददाम्यद्य कामांस्तवयथेप्सितान् ३३२ एवमुक्तस्यचैवाथ महादेवेनधीमता। हर्षादश्रूण्यवर्त्तन्तरोमहर्षस्त्वजायत ३३३ अब्रुवंश्चतदादेवं हर्षगद्गदयागिरा। जानुभ्यामवनींगत्वा प्रणम्यचपुनःपुनः ३३४ अद्यजातोह्यहंदेव सफलंजन्मचाद्यमे। सुरासुरगुरुर्देवोयत्तिष्ठतिममाग्रतः ३३५ यन्नपश्यन्तिचैवाहोदेवाह्यमितविक्रमम्। तमहंदृष्टवान्देवं कोन्योधन्यतरोमया ३३६ एवंध्यायन्तिविद्वांसः परंतत्वंसनातनम्। तद्विशेषमितिख्यातं यदजञ्ज्ञानमक्षरम् ३३७ सएषभगवान्देवः सर्वसत्वादिरव्ययः। सर्वतत्वविधानज्ञः प्रधानपुरुषःपरः ३३८ योसृजद्दक्षिणादंगाद्ब्रह्माणंलोकसंभवम्। वामपार्श्वात्तथाविष्णुं लोकरक्षार्थमीश्वरः ३३९ युगान्तेचैवसंप्राप्ते रुद्रमीशोऽसृजत्प्रभुः। सरुद्रःसंहरन्कृत्स्नं जगत्स्थावरजङ्गमम् ३४० कालोभूत्वामहातेजस्संवर्त्तकइवानलः। युगान्तेसर्वभूतानिग्रसन्निवव्यवस्थितः ३४१ एषदेवोमहादेवो जगत्सृष्ट्वाचराचरम्। कल्पान्तेचैवसर्वेषां स्मृतिमाक्षिप्यतिष्ठति ३४२ सर्वगःसर्वभूतात्मा सर्वभूतभवोद्भवः। आस्तेसर्वगतोनित्य मदृश्यःसर्वदैवतैः ३४३ यदिदेयंवरंमह्यं यदितुष्टोसिमेप्रभो। भक्तिर्भवतुमेनित्यंत्वयिदेवेश्वरेश्वर ३४४ अतीतानागतंचैव वर्त्तमानंचयद्विभो। जानीयामितिमेबुद्धिः प्रसादात्सुरसत्तम ३४५ क्षीरोदनञ्चभुञ्जीयामक्षय्यंसहबान्धवैः। आश्रमेचसदास्माकं सान्निध्यंपरमस्तुते ३४६ एवमुक्तःसमांप्राह भगवाँल्लोकपूजितः। महेश्वरोमहातेजाश्चराचरगुरुःशिवः ३४७ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ अजरश्चामरश्चैव भवत्वंदुःखवर्जितः। यशस्वीतेजसायुक्तो दिव्यज्ञानसमन्वितः ३४८ ऋषीणामभिगम्यश्च मत्प्रसादाद्भविष्यसि। शीलवान्गुणसम्पन्नः सर्वज्ञःप्रियदर्शनः ३४९ अक्षयंयौवनन्तेऽस्तु तेजश्चैवानलोपमम्। क्षीरोदःसागरश्चैवयत्रयत्रेच्छसिप्रियम् ३५० तत्रतेभविताकामं सान्निध्यंपयसोनिधेः। क्षीरोदनञ्चसुंदत्त्वममृतेनसमन्वितम् ३५१ बन्धुभिःसहितःकल्पं ततोमामुपयास्यसि। अक्षयाबान्धवाश्चैव कुलंगोत्रञ्चतेसदा ३५२ भविष्यतिद्विजश्रेष्ठ मयिभक्तिश्चशाश्वती। सान्निध्यंचाश्रमेनित्यङ्करिष्यामिद्विजोत्तम ३५३ तिष्ठवत्सयथाकामंनोत्कण्ठांचकरिष्यसि। स्मृतस्त्वयापुनर्विप्रकरिष्यामिचदर्शनम् ३५४ एवमुक्त्वासभगवान्सूर्य्यकोटिसमप्रभः। ईशानःसवरान्दत्त्वातत्रैवान्तरधीयत ३५५ एवंदृष्टोमयाकृष्णदेवदेवःसमाधिना। तदवाप्तञ्चमेसर्वं यदुक्तंतेनधीमता ३५६ प्रत्यक्षञ्चैवतेकृष्ण पश्यसिद्धान्व्यवस्थि

तान्। ऋषीन्विद्याधरान्यक्षान् गंधर्वाप्सरसस्तथा ३५७ पश्यवृक्षलतागुल्मान् सर्वपुष्पफलप्रदान्। सर्वर्त्तुकुसुमैर्युक्तान्सुखपत्रान्सुगंधिनः ३५८ सर्व्वमेतन्महाबाहोदिव्यभावसमन्वितम्। प्रसादाद्देवदेवस्यईश्वरस्यमहात्मनः ३५९॥ वासुदेव उवाच॥ एतच्छ्रुत्वावचस्तस्य प्रत्यक्षमिवदर्शनम्। विस्मयंपरमङ्गत्वा अब्रुवंतं महामुनिम् ३६० धन्यस्त्वमसिविप्रेन्द्र कस्त्वदन्योऽस्तिपुण्यकृत्। यस्यदेवाधिदेवस्ते सान्निध्यंकुरुतेश्रमे॥ अपितावन्ममाप्येवं दद्यात्सभगवाञ्छिवः। दर्शनंमुनिशार्दूल प्रसादंचापिशंकरः ३६१॥ उपमन्युरुवाच॥ द्रक्ष्यसेपुंडरीकाक्ष महादेवं नसंशयः। अचिरेणैवकालेन यथादृष्टोमयानघ ३६२ चक्षुषाचैवदिव्येन पश्याम्यमितविक्रमम्। षष्ठेमासिमहादेवं द्रक्ष्यसेपुरुषोत्तम ३६३ षोडशाष्टौवरांश्चापि प्राप्स्यसित्वंमहेश्वरात्। सपत्नीकाद्यदुश्रेष्ठ सत्यमेतद्ब्रवीमिते ३६४ अतीतानागतंचैव वर्त्तमानंचनित्यशः। विदितंमेमहाबाहो प्रसादात्तस्यधीमतः ३६५ एतान्सहस्रशःस्वान्यान्समनुध्यातवान्हरः। कस्मात्प्रसादंभगवान्नकुर्य्यात्तवमाधव। त्वादृशोनहिदेवानां श्लाघनीयसमागमः ३६६ ब्रह्मण्येनानृशंसेन श्रद्दधानेनचाच्युत। जप्यन्तुतेप्रदास्यामि येनद्रक्ष्यसिशंकरम् ३६७॥ विष्णुरुवाच॥ अब्रुवंतमहंब्रह्मंस्त्वत्प्रसादान्महामुने। द्रक्ष्येदितिजसंघानांमर्द्दनंत्रिदशेश्वरम् ३६८ एवंकथयतस्तस्य महादेवाश्रितांकथाम्। दिनान्यष्टौततोजग्मुर्मुहूर्त्तमिवभारत ३६९ दिनेऽष्टमेतुविप्रेन्द्र दीक्षितोऽहंयथाविधि। दण्डीमुण्डीकुशीचीरी घृताक्तोमेखलीकृतः ३७० मासमेकंफलाहारो द्वितीयंसलिलाशनः। तृतीयंचचतुर्थंच पंचमंचजलाशनः ३७१ एकपादेनतिष्ठंश्च ऊर्ध्वबाहुरतंद्रितः। तेजःसूर्य्यसहस्रस्य अपश्यंदिविभारत ३७२ तस्यमध्यगतंचापि तेजसःपाण्डुनन्दन। इन्द्रायुधपिनद्धांगं विद्युन्मालागवाक्षकम् ३७३ नीलशैलचयप्रख्यं बलाकाभूषितंघनम् ३७४ तत्रस्थितश्चभगवान् देव्यासहमहाद्युतिः। तपसातेजसाकान्त्या दीप्तयासहभार्यया ३७५ रराजभगवांस्तत्र देव्यासहमहेश्वरः। सोमेनसहितःसूर्य्यो यथामेघस्थितस्तथा ३७६ संहृष्टरोमाकौन्तेय विस्मयोत्फुल्ललोचनः। अपश्यन्देवसंघानां गतिमार्तिहरंहरम् ३७७ किरीटिनंगदिनंशूलपाणिंव्याघ्राजिनंजटिलंदण्डपाणिम्। पिनाकिनंवज्रिणंतीक्ष्णदंष्ट्रंशुभांगदंव्यालयज्ञोपवीतम् ३७८ दिव्यांमालामुरसानेकवर्णांसमुद्वहंतंगुल्फदेशावलंबाम्। चन्द्रंयथापरिविष्टंससंध्यंवर्षात्ययेतद्वदपश्यमेनम् ३७९ प्रमथानांगणैश्चैव समंतात्परिवारितम्। शरदीवसुदुःप्रे

दयं परिविष्टंदिवाकरम् ३८० एकादशशतान्येवं रुद्राणांवृषवाहनम् । अस्तुवंस्तेय
तात्मानं कर्म्मभिःशुभकर्मिणम् ३८१ आदित्यावसवःसाध्या विश्वेदेवास्तथाश्वि
नौ । विश्वाभिःस्तुतिभिर्देवं विश्वदेवंसमस्तुवन् ३८२ शतक्रतुश्चभगवान् विष्णु
श्चादितिनंदनौ । ब्रह्मारथंतरंसाम ईरयन्तिभवान्तिके ३८३ योगीश्वराःसुबहवो
योगदंपितरंगुरुम् । ब्रह्मर्षयश्चससुतास्तथादेवर्षयश्चवै ३८४ पृथिवीचान्तरिक्षञ्च
नक्षत्राणिग्रहास्तथा । मासार्द्धमासाऋतवो रात्रिःसंवत्सरःक्षणाः ३८५ मुहूर्त्ताश्च
निमेषाश्च तथैवयुगपर्य्ययाः । दिव्याराजन्नमस्यन्ति विद्यास्सत्वविदस्तथा ३८६
सनत्कुमारोदेवाश्च इतिहासास्तथैवच । मरीचिरंगिराअत्रिः पुलस्त्यःपुलहःक्रतुः
३८७ मनवःसप्तसोमश्च अथर्वासबृहस्पतिः । भृगुर्दक्षःकाश्यपश्च वशिष्ठःकाश्य
एवच ३८८ छन्दांसिदीक्षायज्ञाश्च दक्षिणापावकोहविः । यज्ञोपांगानिद्रव्याणि मू
र्त्तिमन्तियुधिष्ठिर ३८९ प्रजानांपालकाःसर्वे सरितःपन्नगानगाः । देवानांमातरः
सर्वा देवपत्न्यःसकन्यकाः ३९० सहस्राणिमुनीनांच अयुतान्यर्बुदानिच । नमस्य
न्तिप्रभुंशान्तं पर्वताःसागरादिशः । गन्धर्वाप्सरसश्चैव गीतवादित्रकोविदाः ३९१
दिव्यतालेषुगायन्तः स्तुवन्तिभवमद्भुतम् । विद्याधरादानवाश्च गुह्यकाराक्षसा
स्तथा ३९२ नमस्यन्तिमहाराज वाङ्मनःकर्म्मभिर्विभुम् । पुरस्ताद्धिष्ठितःशर्वो
ममासीत्त्रिदशेश्वरः ३९३ पुरस्ताद्धिष्ठितंदृष्ट्वा ममेशानंचभारत । सप्रजापति
शक्रान्तं जगन्मामभ्युदैक्षत ३९४ ईक्षितुंचमहादेवं नमेशक्तिरभूत्तदा । ततोमा
मब्रवीद्देवः पश्यकृष्णवदस्तवम् ३९५ त्वयाह्याराधितश्चाहं शतशोथसहस्रशः ।
त्वत्समोनास्तिमेकश्चित् त्रिषुलोकेषुवैप्रियः ३९६ शिरसावन्दितेदेवे देवीप्रीताह्यु
मातदा । ततोऽहमब्रुवन्स्थाणुंस्तुतंब्रह्मादिभिःसुरैः ३९७ ॥ विष्णुरुवाच ॥ नमो
स्तुतेशाश्वतसर्वयोनेब्रह्मादयस्त्वामृषयोवदन्ति । तपश्चसत्वंचरजस्तमश्चत्वामेव
सत्यंचवदन्तिसन्तः ३९८ त्वंवैब्रह्माचरुद्रश्चवरुणोग्निर्मनुर्भवः । धातात्वष्टाविधा
ताच त्वंप्रभुःसर्वतोमुखः ३९९ त्वत्तोजातानिभूतानि स्थावराणिचराणिच । त्व
यासृष्टमिदंकृत्स्नं त्रैलोक्यंसचराचरम् ४०० यानीन्द्रियाणीहमनश्चकृत्स्नंयेवाय
वःसप्ततथैवचाग्नयः । येदेवसंस्थास्तवदेवताश्चतस्मात्परंत्वामृषयोवदन्ति ४०१ वे
दाश्चयज्ञाःसोमश्च दक्षिणापावकोहविः । यज्ञोपगंचयत्किंचिद्भगवांस्तदसंशयम्
४०२ इष्टंदत्तमधीतंच व्रतानिनियमाश्चये । ह्रीःकीर्त्तिःश्रीर्द्युतिस्तुष्टिःसिद्धिश्चैवत
दर्पणी ४०३ कामःक्रोधोभयंलोभो मदःस्तंभोथमत्सरः । आधयोव्याधयश्चैव

भगवंस्तनयास्तव ४०४ कृतिर्विकारः प्रणयः प्रधानंबीजमव्ययम् । मनसःपरमा योनिः प्रभावश्चापिशाश्वतः४०५ अव्यक्तःपावनोऽचिन्त्यः सहस्रांशुर्हिरण्मयः । आदिर्गणानांसर्वेषां भवान्वैजीविताश्रयः ४०६ महानात्मामतिर्ब्रह्माविश्वःशंभुःस्वयंभुवः। बुद्धिःप्रज्ञोपलब्धिश्चसंवित्ख्यातिर्धृतिःस्मृतिः ४०७ पर्यायवाचकैःशब्दैर्महानात्माविभाव्यते। त्वांबुद्ध्याब्राह्मणोविद्वान् प्रमोहंविनियच्छति ४०८ हृदयंसर्व्वभूतानांक्षेत्रज्ञस्त्वमृषिस्तुतः। सर्वतःपाणिपादस्त्वंसर्वतोऽक्षिशिरोमुखः ४०९ सर्वतःश्रुतिमांल्लोके सर्वमावृत्यतिष्ठसि । फलंत्वमसितिग्मांशोर्निमेषादिषुकर्मसु ४१० त्वंवैप्रभार्च्चिःपुरुषः सर्वस्यहृदिसंश्रितः । अणिमामहिमाप्राप्तिरीशानोज्योतिरव्ययः ४११ त्वयिबुद्धिर्मतिर्लोकाः प्रसन्नाःसंश्रिताश्चये । ध्यानिनोनित्ययोगाश्च सत्यसत्वाजितेन्द्रियाः ४१२ यस्त्वांध्रुवंवेदयतेगुहाशयं प्रभुंपुराणंपुरुषंचविग्रहं । हिरण्मयंबुद्धिमतींपरांगतिंसबुद्धिमान्बुद्धिमतीत्यतिष्ठति ४१३ विदित्वासप्तसूक्ष्माणि षडंगंत्वांचमूर्त्तितः । प्रधानविधियोगस्थस्त्वामेवविशतेबुधः ४१४ एवमुक्तेमयापार्थ भवेचार्त्तिविनाशने। चराचरंजगत्सर्वं सिंहनादंतदाकरोत् ४१५ तंविप्रसंघाश्चसुरासुराश्च नागाःपिशाचाःपितरोवयांसि । रक्षोगणाभूतगणाश्चसर्वे महर्षयश्चैवतदाप्रणेमुः ४१६ ममसूर्द्धिचदिव्यानां कुसुमानांसुगंधिनाम्। राशयोनिपतंतिस्म वायुश्चसुसुखोववौ ४१७ निरीक्ष्यभगवान्देवीं ह्युमांमांचजगद्धितः। शतक्रतुंचाभिवीक्ष्य स्वयंमामाहशंकरः ४१८ विद्मःकृष्णपरांभक्तिं मस्मासुतवशत्रुहन्। क्रियतामात्मनःश्रेयः प्रीतिर्हित्वयिमेपरा ४१९ वृणीष्वाष्टौवरान्कृष्ण दातास्मितवसत्तम । ब्रूहियादवशार्दूल यानिच्छसिसुदुर्लभान् ४२० ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेमेघवाहनोपाख्यानेचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी बोले कि इसके पीछे मैंने बड़ी सावधानीसे तेजपुंजमें बिराजमान शिवजी को मस्तकसे प्रणाम करके बड़ी प्रसन्नता पूर्वक यह बचनकहा १ कि हे शिवजी धर्ममें दृढ़ता आपकी सन्निकटता युद्धमें स्थिरहोकर शत्रुओंको मारना उत्तम कीर्त्ति बल व योग समेत ऐश्वर्य्य और दशहजार पुत्रोंकी मैं आपसे याचना करताहूं २ मेरे इसबचनके कहतेही शिवजी बोले कि ऐसाही होय फिर सबका पोषण करनेवाली बंधनसे निवृत्त करनेवाली जगत् की माताने मुझसे

कहा ३ अर्थात् तपोंकापुंज शुद्धरूप उमादेवी ने कहा कि हे निष्पाप भगवान् शिव सांबनाम पुत्र तुमकोदिया ४ मैंभी तुमको आठअभीष्ट बरदेतीहूं उनकोलो हे पांडुनन्दन तब तो मैंने दंडवत्करके उनसे कहा कि ब्राह्मणोंको क्रोध न करने वाले पिताके आज्ञाकारी कुलके लोगोंसे प्रीतिपूर्वक माताको प्रसन्न करनेवाले शांतचित्त बड़े बुद्धिमान् चतुर सौपुत्र आपसे मांगताहूं ५।६ उमाने कहा ऐसाहीं होगा फिर कहा कि हे दिव्य प्रभाववाले मैं मिथ्या नहीं बोलतीहूं तुमभी कभीं मिथ्या न बोलना सोलहहज़ार स्त्री और उनस्त्रियोंमें प्रीतिहोना धनधान्यआदि अक्षयहोना ७ मैं ब्राह्मणों की ओरसे उत्तमप्रीति और शरीरकी मनोहरता तुम को देतीहूं और तेरे घरमें सदैव सातहजार अतिथि भोजनकरेंगे ८ बासुदेवजी बोले हे भरतर्षभ युधिष्ठिर इस रीतिसे वह देवता और उमादेवी मुझको बरदान देकर गणोंसमेत उसीक्षण अन्तर्द्धान होगये ९ हे राजाओंमें श्रेष्ठ प्रथम तो मैंने इस अद्भुत वृत्तान्तको बड़े तेजस्वी उपमन्यु ब्राह्मणके सम्मुख वर्णन किया तब उस उत्तम ब्रती ब्राह्मण ने देवताओं के देवता महेश्वरजी को नमस्कार करके कहा कि १० महादेवजी की समान देवता नहीं और उन्हींके समान कोईगति नहीं और दानी भी इनके समान कोई नहीं और युद्धकरने में भी शङ्करजीके समान कोई नहीं है ११ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्वणिमेघवाहनोपाख्यानेपंचदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय ॥

उपमन्यु बोले हे तात सतयुगमें एक तंडीनाम ऋषि बिख्यातहुये उसने स-माधि और भक्तिके द्वारा दशहज़ार वर्षतक शिवजीकी आराधनाकरी १ उसके फलके उदयको सुनो उसने महादेवजीको प्रत्यक्ष दर्शनकरके स्तोत्रों से स्तुति करी २ अर्थात् उस तंडीऋषिने अपने तप और योगके द्वारा उस सदैव अखंड रूप परमात्माको ध्यान करके बड़े आश्चर्य्य को प्राप्तहोकर कहा ३ कि सांख्य मतवाले और योगीजन जिस परमप्रधान पुरुष अधिष्ठाता ईश्वरको सदैव प-ढ़ते हैं और ध्यान करते हैं ४ और ज्ञानियों ने जिसको उत्पत्ति नाश का हेतु रूप बर्णनकिया और देवता असुर व मुनियों में भी उससे श्रेष्ठ कोई नहीं है ५ उस अजन्मा आदि अन्त रहित निष्पाप ईश्वर की मैं शरण लेताहूं ६ ऐसा

कहतेहुये उस ऋषि ने उस रूपान्तर रहित तपोमूर्त्ति अनुपम अचिन्त्य सब के आदि कूटस्थ पुरुषको देखा ७ वह पुरुष कलारहित कलाधारी निर्गुण सगुणरूप योगियोंका परमानंद अविनाशी मोक्षनाम ८ मन इंद्र अग्नि मरुत् विश्वेदेवा और ब्रह्माजीका भी उत्पत्तिस्थान स्पर्श रहित अचल शुद्धज्ञान से स्पर्शकरने के योग्य मन के धर्म्मरूप कर्त्ता आदि के स्वाधीन होनेवाला ९ दुर्ज्ञेय अप्रमेय अशुद्ध पुरुषोंको दुःप्राप्य संसारका उत्पत्ति स्थान अज्ञानसे परे है १० जो देवता अपने को जीवरूप करके और उस जीव को मनरूप करके ज्योतिरूप होके इस जीव में नियतहुआ ऐसा जानकर उस दर्शनाभिलाषी ऋषिने बहुत असंख्य वर्षतक उग्र तपको करके उसका दर्शन किया और दर्शनकरके बड़ी स्तुतिकरी ११ तंडीऋषि स्तुतिकरते हैं ॥ तंडिरुवाच ॥ पवित्राणांपवित्रस्त्वं गतिर्गतिमतांवर। अत्युग्रतेजसांतेजस्तपसांपरमंतपः ॥ विश्वावसुर्हिरण्याक्ष पुरुहूतनमस्कृत १२ भूरिकल्याणदविभो परंसत्यंनमोस्तुते । जातीमरणभीरूणां यतीनां यततांविभो । निर्वाणदसहस्रांशो नमस्तेस्तुसुखाश्रय १३ ब्रह्माशतक्रतुर्विष्णुर्विश्वेदेवामहर्षयः । नविदुस्त्वांतुतत्त्वेन कुतोवेत्स्यामहेवयम् । त्वत्तःप्रवर्त्ततेसर्वं त्वयिसर्वंप्रतिष्ठितम् १४ कालाख्यःपुरुषाख्यश्च ब्रह्माख्यश्चत्वमेवहि । तनवस्तेस्मृतास्तिस्रः पुराणज्ञैःसुरर्षिभिः १५ अधिपौरुषमध्यात्म मधिभूताधिदैवतम् । अधिलोकाधिविज्ञान मधियज्ञस्त्वमेवहि १६ त्वांविदित्वात्मदेहस्थं दुर्विदंदैवतैरपि । विद्वांसोयांतिनिर्मुक्ताः परम्भावमनामयम् १७ अनिच्छतस्तवविभो जन्ममृत्युरनेकशः । द्वारन्तुसर्वमोक्षाणा माक्षेप्तात्वंददासिच १८ त्वंवैस्वर्गश्चमोक्षश्च कामः क्रोधस्त्वमेवच । सत्त्वंरजस्तमश्चैव अधश्चोर्ध्वंत्वमेवहि १९ ब्रह्माभवश्चविष्णुश्च स्कन्देन्दूसवितायमः । वरुणेन्दुमनुर्धाता विधातात्वंधनेश्वरः २० भूर्वायुःसलिलोग्निश्च खंवाग्बुद्धिःस्थितिर्मतिः । कर्मसत्यानृतेचोभे त्वमेवास्तिचनास्तिच २१ इन्द्रियाणीन्द्रियार्थाश्चप्रकृतिभ्यःपरंध्रुवम् । विश्वाविश्वपरोभावश्चिन्त्याचिन्त्यस्त्वमेवहि २२ यच्चैतत्परमंब्रह्म यच्चैतत्परमंपदम् । यागतिःसांख्ययोगानां सभवान्नात्रसंशयः २३ नूनमद्यकृतार्थाःस्मनूनंप्राप्ताःसतांगतिम् । यांगतिंप्रार्थयन्तीहज्ञाननिर्मलबुद्धयः २४ अहोमूढाःस्मसुचिरमिमंकालमचेतसा । यन्नविद्मःपरंदेवंशाश्वतंयंविदुर्बुधाः २५ सेयमासादितासाक्षात् त्वद्भक्तिर्जन्मभिर्मया । भक्तानुग्रहकृद्देवो यंज्ञात्वामृतमश्नुते २६ देवासुरमुनीनान्तु यच्चगुह्यंसनातनम् । गुहायांनिहितंब्रह्म

दुर्विज्ञेयंसुरैरपि २७ सएषभगवान्देवः सर्वकृत्सर्वतोमुखः। सर्वात्मासर्वदर्शीचस र्वगःसर्ववेदिता २८ देहकृद्देहभृद्देही देहभुग्देहिनांगतिः। प्राणकृत्प्राणभृत्प्राणी प्राणदःप्राणिनांगतिः २९ अध्यात्मगतिरिष्टानां ध्यायिनामात्मवेदिनाम्। अपु नर्भवकामानां यागतिःसोऽपमीश्वरः ३० अयंचसर्वभूतानां शुभाशुभगतिप्रदः। अयंचजन्ममरणे विदध्यात्सर्वजंतुषु॥ अयंसंसिद्धिकामानां यागतिःसोऽयमीश्व रः ३१ भूराद्यान्सर्वभुवनान्युत्पाद्यसदिवौकसः। दधातिदेवस्तनुभिरष्टाभिर्योबिभ र्तिच ३२ अतःप्रवर्त्ततेसर्वमस्मिन्सर्वंप्रतिष्ठितम्। अस्मिंश्चप्रलयंयाति अयमेकः सनातनः ३३ अयंसत्यकामानां सत्यलोकःपरंसताम्। अपवर्गश्चमुक्तानां कैव ल्यंचात्मवेदिनाम् ३४ अयंब्रह्मादिभिःसिद्धैर्गुहायांगोपितःप्रभुः। देवासुरमनुष्या णामप्रकाशोभवेदिति ३५ तंत्वांदेवासुरनरास्तत्त्वेननविदुर्भवम्। मोहिताःखल्वने नैव हृदिस्थेनाप्रकाशिना ३६ येचैनंप्रतिपद्यन्ते भक्तियोगेनभाविताः। तेषामेवा त्मनात्मानं दर्शयत्येषहृच्छयः ३७ यंज्ञात्वानपुनर्जन्म मरणंचापिविद्यते। यंवि दित्वापरंवेद्यं वेदितव्यंनविद्यते ३८ यंलब्ध्वापरमंलाभं नाधिकंमन्यतेबुधः। यां सूक्ष्मांपरमांप्राप्तिं गच्छन्नव्ययमक्षयम् ३९ यंसांख्यागुणतत्त्वज्ञाः सांख्यशास्त्रवि शारदाः सूक्ष्मज्ञानतराःसूक्ष्मं ज्ञात्वामुच्यन्तिबंधनैः ४० यंचवेदविदोवेद्यं वेदान्ते चप्रतिष्ठितम्। प्राणायामपरानित्यं यंविशन्तिजपंतिच ४१ ओंकाररथमारुह्य ते विशन्तिमहेश्वरम्। अयंसदेवयानानामादित्योद्वारमुच्यते ४२ अयंचपितृया नानां चन्द्रमाद्वारमुच्यते। एषकाष्ठादिशश्चैव संवत्सरयुगादिच४३ दिव्यादिव्याः परोलाभो अयनेदक्षिणोत्तरे। एनंप्रजापतिःपूर्व्वमाराध्यबहुभिःस्तवैः ४४ प्रजार्थं वरयामास नीललोहितसंज्ञितम्। ऋग्भिर्यमनुशासन्ति तत्त्वेकर्मणिबह्वृचः ४५ यजुर्भिर्यत्त्रिधावेद्यं जुह्वत्यध्वर्य्यवोध्वरे। सामभिर्यंचगायंति सामगाःशुद्धबुद्धयः ४६ ऋतंसत्यंपरंब्रह्म स्तुवंत्याथर्वणाद्विजाः। यज्ञस्यपरमायोनिः पतिश्चायंपरः स्मृतः ४७ रात्र्यहःश्रोत्रनयनः पक्षमासशिरोभुजः। ऋतुवीर्यस्तपोधैर्य्यो ह्यब्द गुह्योरुपादवान् ४८ मृत्युर्यमोहुताशश्च कालःसंहारवेगवान्। कालस्यपरमायो निः कालश्चायंसनातनः ४९ चन्द्रादित्यौसनक्षत्रौ ग्रहाश्चसहवायुना। ध्रुवःसप्तर्ष यश्चैव भुवनाःसप्तएवच ५० प्रधानंमहदव्यक्तं विशेषान्तंसवैकृतम्। ब्रह्मादिस्तम्ब पर्यन्तं भूतादिसदसच्चयत् ५१ अष्टौप्रकृतयश्चैव प्रकृतिभ्यश्चयःपरः। अस्यदेवस्य यद्भागं कृत्स्नंसंपरिवर्त्तते ५२ एतत्परममानन्दं यत्तच्छाश्वतमेवच। एषागति

विरक्तानामेषभावःपरःसताम् ५३ एतत्पदमनुद्विग्नमेतदब्रह्मसनातनम्। शास्त्रवेदांगविदुषामेतत्ध्यानंपरम्पदम् ५४ इयंसापरमाकाष्ठा इयंसापरमाकला। इयंसापरमासिद्धिरियंसापरमागतिः ५५ इयंसापरमाशान्तिरियंसानिर्वृतिःपरा। यंप्राप्य कृतकृत्याःस्म इत्यमन्यन्तयोगिनः ५६ इयंतुष्टिरियंसिद्धिरियंश्रुतिरियंस्मृतिः। अध्यात्मगतिरिष्टानां विदुषांप्राप्तिरव्यया ५७ यजतांकामयानानां मखैर्विपुलदक्षिणैः॥ यागतिर्यज्ञशीलानां सागतिस्त्वंनसंशयः ५८ सम्यक्योगजपैःशान्तिर्नियमैर्देहतापनैः। तप्यतांयागतिर्देव परमासागतिर्भवान् ५९ कर्मन्यासकृतानांच विरक्तानांततस्ततः। यागतिर्ब्रह्मसदनेसागतिस्त्वंसनातन ६० अपुनर्भवकामानां वैराग्येवर्त्ततांचया। प्रकृतीनांलयानांच सागतिस्त्वंसनातन ६१ ज्ञानविज्ञानयुक्तानां निरुपाख्यानिरञ्जना। कैवल्यायागतिर्देव परमासागतिर्भवान् ६२ वेदशास्त्रपुराणोक्ताःपंचैतागतयःस्मृताः। त्वत्प्रसादाद्धिलभ्यन्तेनलभ्यन्तेन्यथाविभो ६३ इतितंडिस्तपोराशिस्तुष्टावेशानमात्मना। जगौचपरमंब्रह्म यत्पुरालोककृज्जगौ ६४ उपमन्युरुवाच। एवंस्तुतोमहादेवस्तंडिनाब्रह्मवादिना। उवाचभगवान्देव उमयासहितःप्रभुः ६५ ब्रह्माशतक्रतुर्विष्णुर्विश्वेदेवामहर्षयः। नविदुस्त्वामितिततस्तुष्टःप्रोवाचतंशिवः ६६ श्रीभगवानुवाच। अक्षयश्चाव्ययश्चैव भविता दुःखवर्जितः ६७ यशस्वीतेजसायुक्तो दिव्यज्ञानसमन्वितः। ऋषीणामभिगम्यश्च सूत्रकर्त्तासुतस्तव ६८ मत्प्रसादाद्द्विजश्रेष्ठ भविष्यतिनसंशयः। कंवाकामं ददाम्यद्य ब्रूहियद्वत्सकांक्षसे ६९ प्रांजलिःसउवाचेदं त्वयिभक्तिर्दृढास्तुमे ७० उपमन्युरुवाच। एतान्दत्त्वावरान्देवो वंद्यमानःसुरर्षिभिः। स्तूयमानश्चविबुधैस्तत्रैवान्तरधीयत ७१ अन्तर्हितेभगवति सानुगेयादवेश्वर। ऋषिराश्रममागम्य ममैतत्प्रोक्तवानिह ७२ यानिचप्रथितान्यादौ तंडिराख्यातवान्मम। नामानिमानवश्रेष्ठ तानित्वंशृणुसिद्धये ७३ दशनामसहस्राणि देवेष्वाहपितामहः। सर्वस्य शास्त्रेषुतथा दशनामशतानिच ७४ गुह्यानीमानिनामानि तंडिर्भगवतोच्युत देवप्रसादाद्देवेशपुराप्राहमहात्मने ७५॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेमेघवाहनोपाख्यानेषोडशोऽध्यायः १६॥

सत्रहका अध्याय॥

वासुदेवजी बोले कि हे तात युधिष्ठिर इसके अनन्तर उससावधान ब्रह्मर्षि ने

हाथ जोड़कर शिवजी के सहस्रनाम मेरे सम्मुख वर्णन किये १ उपमन्यु ऋषि बोले ब्रह्माजी के और ऋषियों के कहेहुये वेदवेदान्तोक्त नामोंसे स्तुति के योग्य और सबलोकों में बिख्यात परमेश्वर की स्तुति करता हूं २ महर्षियों से बिचार कियेहुये सत्य शुद्ध और सब मनोरथोंकेप्राप्त करनेवाले वेदमें मन लगानेवाले तंडीऋषि की भक्तिसे वेदमें से निकाले हुये और तत्त्वदर्शी मुनियों से प्रशंसा कियेहुये साधुओं के कहेहुये नामों से उस अत्यन्त श्रेष्ठ सबके आदि स्वर्ग के दाता सर्वजीवहितकारी शुद्ध चैतन्यरूप ३ । ४ ब्रह्मलोक से आये सर्व्वव्यापी सत्यनामों से वेदमें कहेहुये सनातन ब्रह्मरूप देवता की स्तुति को करताहूं ५ हे यदुनन्दन तुम सावधान चित्तसे श्रवणकरो क्योंकि इस संसारके उत्पत्तिस्थान परमेश्वरके तुम परमभक्तहो इससे तुमको सुनाताहूं ६ उन शिवजीकी बिभूतियों का पूरा २ वर्णन बड़े २ सावधान लोगोंसे भी हजारों बर्षतक भी कहना असंभवहै उसका आदि मध्य अन्त देवताओं से भी नहीं जानागया है ७ । ८ हे माधवजी उसके सम्पूर्ण गुणों के वर्णन करनेको कोईभी पुरुष समर्थ नहीं है परंतु अपनी सामर्थ्य और उस महाविज्ञानरूप देवता की कृपासे उन महादेवजी के चरित्रों को वर्णन करताहूं उसकी कृपा और आज्ञाके विना कोई कहने को समर्थ नहीं है उस संसार के उत्पत्तिस्थान वरदायी श्रेष्ठ ज्ञानी विश्वरूपके नामोंको कुछ भाग बर्णन करताहूं ६।१२ हे श्रीकृष्णजी इन ब्रह्माजी से कहेहुये दशहजार नामों का मनसे मथनकरके ऐसासार निकाला है जैसे कि दहीकासार घृतपर्व्वतका सार सुवर्ण और फूलोंकासार शहदहोता है १३ । १४ अथवा जैसे कि घृतकासार मण्डहोताहै वैसाही यह भी सार निकालाहै यह सबपापोंका दूर करनेवाला चारों वेदोंसेयुक्त बड़े उपायसे भी सिद्ध करना योग्यहै और बड़े सावधान बुद्धिवाले पुरुष से यह धारण करने के योग्य है यह मंगलकादाता बृद्धिकर्त्ता पौष्टिक राक्षसों का नाशकर्त्ता महापवित्र करनेवालाहै इसको श्रद्धावान् आस्तिक और भक्तों के निमित्त देना योग्य है १५ । १६ और अश्रद्धावान् नास्तिक और अजितेन्द्रियको कभी न देनाचाहिये १७ हे श्रीकृष्णजी जो पुरुष इस कारणरूप आत्मा अविनाशी ईश्वरकी निन्दा करता है वह अपने पूर्व्वज और पुत्रों समेत नरकगामी होता है १८ यही जप ध्यान योग और ध्येयहै इस से अधिक दूसरा नहीं है यही जपके योग्य ज्ञान उत्तम रहस्य पापोंका नाश क-

रनेवाला मंगलरूप यज्ञादि का फल देनेवाला कल्याणरूप सर्वोत्तम अन्त स-मयपर भी जिसको जानकर परमगतिकोपाताहै १६। २० पूर्व्वसमयमें सबलोकों के पितामह ब्रह्माजीने इसको निर्माण करके सब दिव्य स्तोत्रों के ऊपर राज्य पदवी दीहै तबसे लेकर परमात्मा ईश्वरका यह स्तोत्र देवताओं से पूजित हो-कर स्तवराज नामसे प्रसिद्धहुआ २१। २२ यह स्तवराज पूर्वसमय में ब्रह्मलोक से स्वर्ग में आया २३ और स्वर्गलोक से तण्डीऋषिके द्वारा इस संसारमें पृथ्वी पर लायागया यह मंगलोंका भी मंगल करनेवाला सर्वपापमोचनहै २४ हे म-हाबाहु सब स्तोत्रों में उत्तम इस स्तोत्रराजको वर्णन करताहूं यह वेदोंकाभी वेद सर्वोत्तम मन बुद्धि वाणीसे परे जो पुरुषहै उससे भी परे महापुरुषहै यह महापुरुष नेत्रादि सब तेजोंकाभी तेज तपोंका तप शान्तोंकाभी शान्त मोक्षरूप है और वृत्तीरूप ज्ञानोंकाभी साक्षीरूप ज्ञानहै २५। २६ और जो जितेन्द्रियों में भी महा जितेन्द्रिय ज्ञानियोंका ज्ञान अनुभवरूप आत्माहै देवताओंकाभी देवता ऋषियों काभी ऋषि है क्योंकि यही वेदका निर्माणकर्त्ता है २७ यही यज्ञोंकाभी यज्ञ क-ल्याणोंकाभी कल्याण रुद्रोंकाभी रुद्र ऐश्वर्य्योंकाभी ऐश्वर्य योगियों और ब्रह्मा आदिकाभी योगी अर्थात् ध्यानकेयोग्यहै और अव्यक्तादि कारणोंकाभी कारण शुद्ध ब्रह्महै जिससे जीव उत्पन्नहोकर उसीमें लयहोते हैं २८। २९ उस सब जी-वमात्रों के आत्मा बड़े तेजस्वी नाशकर्त्ता हरके एक हजार आठ नामोंको मैं कहताहूं हे पुरुषोत्तम जिसकेसुननेसे तुम सब अभीष्ट पदार्थोंको प्राप्तकरोगे३०॥

अथ शिवसहस्रनामलिख्यते ॥

श्रीगणेशायनमः ॐ॥ स्थिरःस्थाणुःप्रभुर्भीमः प्रवरोवरदोवरः । सर्वात्मासर्व विख्यातः सर्वःसर्वकरोभवः १ जटीचर्मीशिखण्डीच सर्वाङ्गःसर्वभावनः । हरश्चह-रिणाक्षश्च सर्वभूतहरःप्रभुः २ प्रवृत्तिश्चनिवृत्तिश्च नियतःशाश्वतोध्रुवः । श्मशान वासीभगवान् खचरोगोचरोऽर्दनः ३ अभिवाद्योमहाकर्मा तपस्वीभूतभावनः । उ-न्मत्तवेषप्रच्छन्नः सर्व्वलोकप्रजापतिः ४ महारूपोमहाकायो वृषरूपोमहायशाः । महात्मासर्व्वभूतात्मा विश्वरूपोमहाहनुः ५ लोकपालोऽन्तर्हितात्मा प्रसादोहय गर्दभिः । पवित्रंचमहांश्चैव नियमोनियमाश्रितः ६ सर्व्वकर्म्मास्वयम्भूतआदि रादिकरोनिधिः । सहस्राक्षोविशालाक्षः सोमोनक्षत्रसाधकः ७ चन्द्रःसूर्य्यःशनिः केतुर्ग्रहोग्रहपतिर्वरः । अत्रिरत्र्यानमःकर्त्ता मृगबाणार्पणोऽनघः ८ महातपाघोर

तथा अदीनोदीनसाधकः। संवत्सरकरोमंत्रः प्रमाणंपरमंतपः ९ योगीयोज्योमहा
बीजो महारेतामहाबलः। सुवर्णरेताःसर्वज्ञः सुबीजोबीजवाहनः १० दशबाहुस्त्व
निमिषो नीलकण्ठउमापतिः। विश्वरूपःस्वयंश्रेष्ठो बलवीरोबलीगणः ११ गणक
र्त्तागणपतिर्दिग्वासाःकामएवच। मंत्रवित्परमोमंत्रःसर्वभावकरोहरः १२ कमंडलु
धरोधन्वी बाणहस्तःकपालवान्। अशनीशतघ्नीखड्गी पट्टिशीचायुधीमहान् १३
स्रुवहस्तःसुरूपश्च तेजस्तेजस्करोनिधिः। उष्णीषीचसुवक्त्रश्च उदग्रोविनतस्तथा
१४ दीर्घश्चहरिकेशश्च सुतीर्थःकृष्णएवच। शृगालरूपःसिद्धार्थो मुण्डःसर्वशुभं
करः १५ अजश्चबहुरूपश्च गन्धधारीकपर्द्यपि। ऊर्ध्वरेताऊर्ध्वलिंगऊर्ध्वशायीन
भस्थलः १६ त्रिजटश्चीरवासाश्च रुद्रःसेनापतिर्विभुः। अहश्चरोनक्तचरस्तिग्ममन्युःसुवर्चसः १७ गजहादैत्यहाकालो लोकधातागुणाकरः। सिंहशार्दूलरूपश्च
आर्द्रचर्माम्बरावृतः १८ कालयोगीमहानादः सर्वकामश्चतुष्पथः। निशाचरःप्रेत
चारी भूतचारीमहेश्वरः १९ बहुभूतोबहुधरः स्वर्भानुरमितोगतिः। नित्यप्रियो
नित्यनर्त्तो नर्त्तकःसर्व्वलालसः २० घोरोमहातपाःपाशो नित्योगिरिरुहोनभः।
सहस्रहस्तोविजयो व्यवसायोह्यतन्द्रितः २१ अधर्षणोधर्षणात्मा यज्ञहाकामनाशकः। दक्षयागापहारीच सुसहोमध्यमस्तथा २२ तेजोपहारीबलहा मुदितोर्थो
जितोवरः। गम्भीरघोषोगम्भीरो गम्भीरबलवाहनः २३ न्यग्रोधरूपोन्यग्रोधो वृक्ष
कर्णस्थितिर्विभुः। सुतीक्ष्णदशनश्चैव महाकायोमहाननः २४ विष्वक्सेनोहरिर्यज्ञः
संयुग्यापीडवाहनः। तीक्ष्णतापश्चहर्य्यश्वः सहायःकर्मकालवित् २५ विष्णुप्रसाद
तोयज्ञः समुद्रोवडवामुखः। हुताशनसहायश्च प्रशान्तात्माहुताशनः २६ उग्रतेजा
महातेजा जन्योविजयकालवित्। ज्योतिषामयनंसिद्धिः सर्वविग्रहएवच २७
शिखीमुण्डीजटीज्वाली मूर्त्तिजोमूर्द्धगोबली। वेणवीपणवीताली खलीकालकटं
कटः २८ नक्षत्रविग्रहमतिर्गुणबुद्धिर्लयोगमः। प्रजापतिर्विश्वबाहुर्विभागःसर्व
गोमुखः २९ विमोचनःसुसरणो हिरण्यकवचोद्भवः। मेन्द्रजोबलचारीच मही
चारीस्तुतस्तथा ३० सर्वतूर्यनिनादीच सर्वतोद्यपरिग्रहः। व्यालरूपोगुहावासी
गुहोमालीतरंगवित् ३१ त्रिदशस्त्रिकालधृक्कर्म सर्वबन्धविमोचनः। बन्धनस्त्वसु
रेन्द्राणां युधिशत्रुविनाशनः ३२ सांख्यप्रसादोदुर्वासाः सर्व्वसाधुनिषेवितः। प्र
स्कन्दनोविभागज्ञो अतुल्योयज्ञभागवित् ३३ सर्व्ववासःसर्व्वचारी दुर्वासावास
वोमरः। हैमोहेमकरोयज्ञः सर्वधारीधरोत्तमः ३४ लोहिताक्षोमहाक्षश्च विजयाक्षो

विशारदः। संग्रहोनिग्रहःकर्त्ता सर्पचीरनिवासनः ३५ मुख्योमुख्यश्चदेहश्च काह
लिःसर्व्वकामदः। सर्व्वकालप्रसादश्च सुबलोबलरूपधृक् ३६ सर्व्वकामवरश्चैव
सर्व्वदःसर्व्वतोमुखः। आकाशनिर्व्विरूपश्च निपातीह्यवशःखगः ३७ रौद्ररूपोंशु
रादित्यो बहुरश्मिःसुवर्चसी। वसुवेगोमहावेगो मनोवेगोनिशाचरः ३८ सर्व्ववा
सीश्रियावासी उपदेशकरोकरः। मुनिरात्मनिरालोकः संभग्नश्चसहस्रदः ३९
पक्षीचपक्षरूपश्च अतिदीप्तोविशांपतिः। उन्मादोमदनःकामो ह्यश्वत्थोर्थकरोय
शः ४० वामदेवश्चवामश्च प्राग्दक्षिणश्चवामनः। सिद्धयोगीमहर्षिश्च सिद्धार्थःसि
द्धसाधकः ४१ भिक्षुश्चभिक्षुरूपश्च विपणोमृदुरव्ययः। महासेनोविशाखश्च षष्टिभा
गोगवांपतिः ४२ वज्रहस्तश्चविष्कंभी चमूस्तंभनएवच। वृत्तावृत्तकरस्तालो
मधुर्मधुकलोचनः ४३ वाचस्पत्योवाजसनो नित्यमाश्रमपूजितः। ब्रह्मचारीलोक
चारी सर्व्वचारीविचारवित् ४४ ईशानईश्वरःकालो निशाचारीपिनाकधृक्।
निमित्तस्थोनिमित्तंच नन्दिर्नन्दकरोहरिः ४५ नन्दीश्वरश्चनन्दीच नन्दनोनन्दि
वर्द्धनः। भगहारीनिहंताच कालोब्रह्मापितामहः ४६ चतुर्मुखोमहालिंगश्चारुलिं
गस्तथैवच। लिंगाध्यक्षःसुराध्यक्षो योगाध्यक्षोयुगावहः ४७ बीजाध्यक्षोबीजक
र्त्ता अध्यात्मानुगतोबलः। इतिहासःसकल्पश्च गौतमोथनिशाकरः ४८ दंभोह्यदं
भोवैदंभो वश्योवशकरःकलिः। लोककर्त्तापशुपतिर्महाकर्त्ताह्यनौषधः ४९ अ
क्षरंपरमंब्रह्म बलवच्छक्रएवच। नीतिह्यनीतिःशुद्धात्माशुद्धोमान्योगतागतः ५०
बहुप्रसादःसुस्वप्नो दर्पणोऽथत्वमित्रजित्। वेदकारोमन्त्रकारो विद्वान्समरमर्द्दनः
५१ महामेघनिवासीच महाघोरोवशीकरः। अग्निज्वालोमहाज्वालो अतिधूम्रो
हुतोहविः ५२ वृषणःशंकरोनित्यं वर्चस्वीधूम्रकेतनः। नीलस्तथांगलुब्धश्च शो
भनोनिरवग्रहः ५३ स्वस्तिदःस्वस्तिभावश्च भागीभागकरोलघुः। उत्संगश्चमहां
गश्च महागर्भपरायणः ५४ कृष्णवर्णःसुवर्णश्च इन्द्रियंसर्व्वदेहिनाम्। महापादो
महाहस्तो महाकायोमहायशाः ५५ महामूर्धामहामात्रो महानेत्रोनिशालयः।
महान्तकोमहाकर्णो महोष्ठश्चमहाहनुः ५६ महानासोमहाकंबुर्महाग्रीवःश्मशान
भाक्। महावक्षामहोरस्को ह्यन्तरात्मामृगालयः ५७ लंबनोलंबितोष्ठश्च महामाया
पयोनिधिः। महादंतोमहादंष्ट्रो महाजिह्वोमहामुखः ५८ महानखोमहारोमा महा
केशोमहाजटः। प्रसन्नश्चप्रसादश्च प्रत्ययोगिरिसाधनः ५९ स्नेहनोस्नेहनश्चैव
अजितश्चमहामुनिः। वृक्षाकारोवृक्षकेतुरनलोवायुवाहनः ६० गंडलीमेरुधामाच

देवाधिपतिरेवच। अथर्वशीर्षःसामास्य ऋक्सहस्रामितेक्षणः ६१ यजुपादभुजो गुह्यः प्रकाशोजङ्गमस्तथा। अमोघार्थःप्रसादश्च अभिगम्यःसुदर्शनः ६२ उपकारःप्रियःसर्व्वः कनकःकांचनःछविः। नाभिर्नन्दिकरोभावः पुष्करस्थपतिस्थिरः ६३ द्वादशंस्त्रासनश्चाद्यो यज्ञोयज्ञसमाहितः। नक्तंकलिश्चकालश्च मकरःकालपूजितः ६४ सगणोगणकारश्च भूतवाहनसारथिः। भस्मशयोभस्मगोप्ता भस्मभूतस्तरुर्गणः ६५ लोकपालस्तथालोको महात्मासर्व्वपूजितः। शुक्लस्त्रिशुक्लः संपन्नः शुचिर्भूतनिषेवितः ६६ आश्रमस्थःक्रियावस्थो विश्वकर्म्ममतिर्वरः। विशालशाखस्ताम्रोष्ठो ह्यम्बुजालःसुनिश्चलः ६७ कपिलःकपिशःशुक्लआयुश्चैव परोपरः। गन्धर्वोह्यदितिस्तार्क्ष्यः सुविज्ञेयःसुशारदः ६८ परश्वधायुधोदेव अनुकारीसुबांधवः। तुंबवीणोमहाक्रोधऊर्ध्वरेताजलेशयः ६९ उग्रोवंशकरोवंशो वंशनाशोह्यनिन्दितः। सर्वांगरूपोमायावी सुहृदोह्यनिलोनलः ७० बन्धनोबन्धकर्त्ताच सुबंधनविमोचनः। सयज्ञारिःसकामारिर्महादंष्ट्रोमहायुधः ७१ बहुधःनिन्दितशर्वः शङ्करःशङ्करोधनः। अमरेशोमहादेवो विश्वदेवःसुरारिहा ७२ अहिर्बुध्न्योनिलाभश्च चेकितानोहविस्तथा। अजैकपाश्चकापाली त्रिशंकुरजितःशिवः ७३ धन्वन्तरिर्धूम्रकेतुः स्कन्दोवैश्रवणस्तथा। धाताशक्रश्चविष्णुश्च मित्रस्त्वष्टाध्रुवोधरः ७४ प्रभावःसर्व्वगोवायुरर्यमासवितारविः उषंगुश्चविधाताच मांधाताभूतभावनः ७५ विभुर्वर्णविभावीच सर्व्वकामगुणावहः। पद्मनाभोमहागर्भश्चन्द्रवक्रोनिलोनलः ७६ बलवांश्चोपशान्तश्च पुराणःपुण्यचंचुरी। कुरुकर्त्ता कुरुवासी कुरुभूतोगुणौषधः ७७ सर्व्वाशयोदर्भचारी सर्वेषांप्राणिनांपतिः। देवदेवःसुखासक्तः सदसत्सर्व्वरत्नवित् ७८ कैलासगिरिवासीच हिमवद्गिरिसंश्रयः। कूलहारीकूलकर्त्ता बहुविद्योबहुप्रदः ७९ वणिजोवर्धकीवृक्षो वकुलश्चन्दनच्छदः। सारग्रीवोमहाजत्रुरलोलश्चमहौषधः ८० सिद्धार्थकारीसिद्धार्थः छन्दोव्याकरणोत्तरः। सिंहनादःसिंहदंष्ट्रः सिंहगःसिंहवाहनः ८१ प्रभावात्माजगत्कालस्थानो लोकहितस्तरुः। सारंगोनवचक्रांगः केतुमालीसभावनः ८२ भूतालयोभूतपतिरहोरात्रमनिन्दितः ८३ वाहितासर्वभूतानां निलयश्चविभुर्भवः। अमोघःसंयतोह्यश्वो भोजनप्राणधारणः ८४ धृतिमान्मतिमान्दक्षः सत्कृतश्चयुगाधिपः। गोपालिर्गोपतिर्ग्रामोगोचर्मवसनोहरिः ८५ हिरण्यबाहुश्चतथागुहापालःप्रवेशिनाम्। प्रकृष्टारिर्महाहर्षो जितकामोजितेन्द्रियः ८६ गान्धारश्चसुवासश्च तपःसक्तोरति

न्नैरः। महागीतोमहान्नृत्यो ह्यप्सरोगणसेवितः ८७ महाकेतुर्महाधातुर्नैकसानुचर श्चलः। आवेदनीयआदेशः सर्वगन्धसुखावहः ८८ तोरणस्तारणोवातः परिधी पतिखेचरः। संयोगोवर्द्धनोवृद्धो अभिवृद्धोगुणाधिकः ८९ नित्यआत्मसहाय श्च देवासुरपतिःपतिः। युक्तश्चयुक्तबाहुश्चदेवोदिविसुपर्वणः ९० आषाढश्चसुषाढ श्चध्रुवोथहरिणोहरः। वपुरावर्त्तमानेभ्यो वसुश्रेष्ठोमहापथः ९१ शिरोहारीविमर्षश्च सर्वलक्षणलक्षितः। अक्षश्चरथयोगीच सर्वयोगीमहाबलः ९२ समाम्नायोऽसमा म्नायस्तीर्थदेवोमहारथः। निर्जीवोजीवनोमन्त्रः शुभाक्षोबहुकर्कशः ९३ रत्नप्र भूतोरत्नांगो महार्णवनिपानवित्। मूलंविशालोह्यमृतो व्यक्ताव्यक्तस्तपोनिधिः ९४ आरोहणोधिरोहश्च शिलधारोमहायशाः। सेनाकल्पोमहाकल्पो योगोयुग करोहरिः ९५ युगरूपोमहारूपो महानागहनोवधः। न्यायनिर्वपणःपादः पंडि तोह्यचलोयमः ९६ बहुमालोमहामालः शशीहरसुलोचनः। विस्तारोलवणःकूप स्त्रियुगःसफलोदयः ९७ त्रिनेत्रश्चविषण्णांगो मणिविद्धोजटाधरः। बिन्दुर्विसर्गः सुमुखः शरःसर्वायुधःसहः ९८ निवेदनःसुखजातः सुगंधारोमहाधनुः। गंधपाली चभगवानुत्थानःसर्वकर्मणाम् ९९ मंथानोबहुलोवायुः सकलःसर्वलोचनः। तल स्तालःकरस्थालीऊर्ध्वसंहननोमहान् १०० छत्रंसुछत्रोविख्यातो लोकःसर्वाश्रयः क्रमः। मुंडोविरूपोविकृतो दंडीकुंडीविकुर्वणः १०१ हर्यक्षःककुभोवज्री शतजिह्वः सहस्रपात्। सहस्रमूर्द्धादेवेन्द्रः सर्वदेवमयोगुरुः १०२ सहस्रबाहुःसर्वाङ्गः शरण्यः सर्वलोककृत्। पवित्रंत्रिककुन्मंत्रः कनिष्ठःकृष्णपिंगलः १०३ ब्रह्मदण्डविनिर्माता शतघ्नीपाशशक्तिमान्। पद्मगर्भोमहागर्भो ब्रह्मगर्भोजलोद्भवः १०४ गभस्तिर्ब्रह्म कृद्ब्रह्मी ब्रह्मविद्ब्राह्मणोगतिः। अनन्तरूपोनैकात्मा तिग्मतेजाःस्वयंभुवः१०५ ऊर्ध्वगात्मापशुपतिर्वातरंहामनोजवः। चन्दनीपद्मनालाग्नः सुरभ्युत्तरणोनर १०६ कर्णिकारमहास्रग्वी नीलमौलिःपिनाकधृक्। उमापतिरुमाकांतो जाह्नवी धृगुमाधवः १०७ वरोवराहोवरदोवरेण्यःसुमहास्वनः। महाप्रसादोदमनः शत्रुहा श्वेतपिंगलः १०८ पीतात्मापरमात्माच प्रयतात्माप्रधानधृक्। सर्वपार्श्वसुखस्त्र्य क्षो धर्मसाधारणोवरः १०९ चराचरात्मासूक्ष्मात्मा अमृतोगोवृषेश्वरः। साध्यर्षिर्व सुरादित्योविवस्वान्सवितामृतः ११० व्यासःसर्गःसुसंक्षेपोविस्तरःपर्ययोनरः। ऋ तुसंवत्सरोमासः पक्षःसंख्यासमापनः १११ कलाकाष्ठालवामात्रा मुहूर्त्ताहःक्षपाः क्षणः। विश्वक्षेत्रंप्रजाबीजंलिंगमाद्यस्तुनिर्गमः ११२ सदसद्व्यक्तमव्यक्तं पिता

मातापितामहः । स्वर्गद्वारंप्रजाद्वारंमोक्षद्वारंत्रिविष्टपम् ११३ निर्वाणंह्लादनश्चैव ब्रह्मलोकःपरागतिः । देवासुरविनिर्माता देवासुरपरायणः ११४ देवासुरगुरुर्देवो देवासुरनमस्कृतः । देवासुरमहामात्रो देवासुरगणाश्रयः ११५ देवासुरगणाध्यक्षोदेवासुरगणाग्रणीः । देवातिदेवोदेवर्षिर्देवासुरवरप्रदः ११६ देवासुरेश्वरोविश्वो देवासुरमहेश्वरः । सर्वदेवमयोचिंत्यो देवतात्मात्मसंभवः ११७ उद्भिस्त्रिविक्रमो वैद्यो विरजोनीरजोऽमरः । ईड्योहस्तीश्वरोव्याघ्रो देवसिंहोनरर्षभः ११८ विबुधो ग्रवरःसूक्ष्मः सर्वदेवस्तपोमयः । सुयुक्तःशोभनोवज्री प्रासानांप्रभवोव्ययः ११९ गुहःकान्तोनिजःसर्गः पवित्रंसर्वपावनः । शृंगीशृंगप्रियोबभ्रू राजराजोनिरामयः १२० अभिरामःसुरगणो विरामःसर्वसाधनः । ललाटाक्षोविश्वदेवो हरिणोब्रह्मवर्चसः १२१ स्थावराणांपतिश्चैवनियमेन्द्रियवर्द्धनः । सिद्धार्थःसिद्धभूतार्थोचिन्त्यः सत्यव्रतःशुचिः १२२ व्रताधिपःपरंब्रह्म भक्तानांपरमागतिः । विमुक्तोमुक्ततेजाश्च श्रीमाञ्श्रीवर्द्धनोजगत् १२३ यथाप्रधानंभगवानितिभक्त्यास्तुतोमया । तंनब्रह्मादयोदेवा विदुस्तत्त्वेननर्षयः १२४ स्तोतव्यमर्च्यंवंद्यंच कःस्तोष्यतिजगत्पतिम् । भक्त्यास्त्वेवंपुरस्कृत्य मयायज्ञपतिर्विभुः १२५ ततोऽभ्यनुज्ञांसंप्राप्य स्तुतोमतिमतांवरः । शिवमेभिःस्तुवन्देवं नामभिःपुष्टिवर्द्धनैः १२६ नित्ययुक्तः शुचिर्भक्तः प्राप्नोत्यात्मानमात्मना १२७ एतद्धिपरमंब्रह्म परंब्रह्माधिगच्छति । ऋषयश्चैवदेवाश्च स्तुवंत्येतेनतत्परम् १२८ स्तूयमानोमहादेवस्तुष्यतेनियतात्मभिः । भक्तानुकंपीभगवानात्मसंस्थाकरोविभुः १२९ तथैवचमनुष्येषु येमनुष्याः प्रधानतः । आस्तिकाःश्रद्दधानाश्च बहुभिर्जन्मभिःस्तवैः १३० भक्त्याह्यनन्यमीशानं परंदेवंसनातनम् । कर्मणामनसावाचा भावेनामिततेजसः १३१ शयाना जाग्रमाणाश्च व्रजन्नुपविशंस्तथा । उन्मिषन्निमिषंश्चैव चिन्तयन्तःपुनःपुनः १३२ शृण्वन्तःश्रावयंतश्च कथयंतश्चतेऽभवन् । स्तुवन्तःस्तूयमानाश्च तुष्यन्तिचरमंतिच १३३ जन्मकोटिसहस्रेषु नानासंसारयोनिषु । जंतोर्विगतपापस्य भवेभक्तिः प्रजायते १३४ उत्पन्नाचभवेभक्तिरनन्यासर्वभावतः । भाविनःकारिणेचास्य सर्वयुक्तस्यसर्व्वथा १३५ एतद्देवेषुदुष्प्रापं मनुष्येषुनलभ्यते । निर्विघ्नानिश्चलारुद्रे भक्तिरव्यभिचारिणी १३६ तस्यैवचप्रसादेन भक्तिरुत्पद्यतेनृणाम् । येनयांतिपरां सिद्धिं तद्भागवतचेतसः १३७ येसर्व्वभावानुगताः प्रपद्यन्तेमहेश्वरम् । प्रपन्नवत्सलोदेवः संसारात्तान्समुद्धरेत् १३८ एवमन्येविकुर्वन्ति देवाःसंसारमोचनम् ।

मनुष्याणामृतेदेवं नान्याशक्तिस्तपोबलम् १३९ इतितेनेन्द्रकल्पेन भगवान्सद सत्पतिः । कृत्तिवासाःस्तुतःकृष्णस्तंडिनाशुभबुद्धिना १४० स्तवमेतंभगवतो ब्रह्मास्वयमधारयत् । गीयतेचप्रबुध्येत ब्रह्माशंकरसन्निधौ १४१ इदंपुण्यंपवित्रंच सर्व्वदापापनाशनम् । योगदंमोक्षदंचैव स्वर्गदंतोषदंतथा १४२ एवमेतत्पठन्तेय एकभक्त्यातुशंकरम् । यागतिःसांख्ययोगानां व्रजन्त्येतांगतिन्तदा १४३ स्तव मेवंप्रयत्नेन सदारुद्रस्यसन्निधौ । अब्दमेकंचरेद्भक्तः प्राप्नुयादीप्सितंफलम् १४४ एतद्रहस्यंपरमं ब्रह्मणोहृदिसंस्थितम् । ब्रह्माप्रोवाचशक्राय शक्रःप्रोवाचमृत्यवे १४५ मृत्युःप्रोवाचरुद्रेभ्यो रुद्रेभ्यस्तंडिमागमत् । महतातपसाप्राप्तस्तंडिनाब्रह्म सद्मनि १४६ तंडिःप्रोवाचशुक्राय गौतमायचभार्गवः । वैवस्वतायमनवे गौतमः प्राहमाधवः १४७ नारायणायसाध्याय समाधिष्ठायधीमते । यमायप्राहभगवान् साध्योनारायणोच्युतः १४८ नाचिकेतायभगवानाहवैवस्वतोयमः । मार्कण्डेयाय वार्ष्णेय नाचिकेतोऽभ्यभाषत १४९ मार्कण्डेयान्मयाप्राप्तो नियमेनजनार्द्दन । तवाप्यहममित्रघ्नस्तवंदद्यांहिविश्रुतम् १५० स्वर्ग्यमारोग्यमायुष्यं धन्यंवेदेनसंमि तम् । नास्यविघ्नंविकुर्वन्ति दानवायक्षराक्षसाः १५१ पिशाचायातुधानावा गुह्य काभुजगाअपि । यःपठेतशुचिःपार्थ ब्रह्मचारीजितेन्द्रियः । अभग्नयोगोवर्षन्तु सोऽश्वमेधफलंभवेत् १५२ इतिश्रीशिवसहस्रनामसंपूर्णम् १८२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिशिवसहस्रनामवर्णनःसप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले कि इसके अनन्तर महायोगी व्यासमुनिने कहा कि हे पुत्र तेरा कल्याणहो तू स्तोत्रका पाठकर तेरे ऊपर महादेवजी प्रसन्न होंगे १ हे महा-राज पुत्र युधिष्ठिर पूर्व्वकाल में मेरुपर्व्वत पर अपने पुत्रके निमित्त उत्तम तप-स्यायुक्त होकर मैंनेभी इसी स्तोत्रका पाठ कियाथा २ हे पाण्डुनन्दन इसी के प्रतापसे मैंने वांछित फलकोपाया इसीप्रकार तुमभी शिवजी से सब मनोरथों को पावोगे ३ तदनन्तर सांख्यशास्त्रके बनानेवाले देवताओंके मान्य कपिलऋषिने कहा कि मैंने अनेक जन्मोंतक उस सबके उत्पत्तिस्थान परमेश्वरका बड़ी भक्ति-पूर्व्वक पूजनादि किया ४ तब प्रसन्न होकर भगवान् ने मुझको भवान्तक ज्ञान दिया इसकेपीछे इन्द्रके प्यारे मित्र आलम्बगोत्री महादयावान् चारुशीर्षने कहा ५

हे राजा पाण्डुके पुत्र मैंनेभी गोकर्ण तीर्थ में दशहजार वर्षतक शिवजीकी तपस्याकरके ऐसे सौ पुत्र पाये जो योनिसे उत्पन्न जितेन्द्रिय धर्म्मज्ञ महातेजस्वी जरारहित दुःखसे बिहीन और एकलाख वर्षकी अवस्थावालेथे ६। ७ फिर भगवान् बाल्मीकिऋषिने युधिष्ठिरसे कहा कि हे भरतबंशी मैं बिवादकेकारण अग्निहोत्री मुनियोंकरके इसप्रकार शापितहुआथा कि तुम ब्रह्महत्याकरनेवालेहोगे८ इस बचनके होतेही क्षणभरमें उस अधर्मसेयुक्त शरीरहोगया तब उसनिर्मल शुद्धरूप शिवजीकी शरणमेंगया ६ जब उनकीकृपासे निष्पापहोगया तब महाप्रलयकर्त्ता सुखकर्त्ता त्रिपुरारि शिवजी ने मुझसे कहा कि तेरी उत्तमकीर्त्ति विख्यात होगी १० फिर धर्म्मधारियों में श्रेष्ठ ऋषियोंके मध्यवर्त्ती सूर्यकेसमान प्रकाशमान परशुरामजी ने युधिष्ठिरसे यह वचन कहा ११ हे राजा युधिष्ठिर वेदपाठी बड़े २ भाइयों के मारेजाने से बड़े दुःखमें प्राप्तहोकर मैंने बड़ी पवित्रता से शिवजीकी शरणली १२ और नामोंसेही उनकी स्तुति करी तब उसी से शिवजी ने प्रसन्न होकर मुझको फरसा और दिव्य अस्त्र दिये १३ और कहा कि तुझको किसी प्रकारका पाप न होगा और सबसे अजेय होगा जरामरणसे रहित बिचरैगा१४ जो २ मुझसे कहा वह सब मैंने उस महाभागी जटाधारी की कृपासे पाया १५ तब विश्वामित्रजी बोले कि मैं क्षत्रियथा मैंनेभी ब्राह्मण होने के निमित्त शिवजीकाही आराधन किया १६ तब उनकी कृपा से मैंने महादुष्प्राप्य ब्राह्मणबर्ण पाया फिर असित देवलऋषि ने कहा कि हे राजा युधिष्ठिर इन्द्रके शापसे मेरा धर्म नष्ट होगयाथा तब इन्हीं प्रभु परमेश्वर महेश्वरजी ने मेरे उत्तम धर्म्म और कीर्त्तिको दिया १७। १८ बृहस्पतिजीके समान तेजस्वी इन्द्रके परममित्र गृत्समदनाम ऋषिने उस अजमीढ़बंशी से कहा १९ कि चाक्षुषमनुके पुत्र भगवान् वशिष्ठने इन्द्रके सहस्र बर्षके यज्ञ प्रारम्भ होनेपर और मेरे मुखसे सामवेदके पाठ करनेपर यह वचन कहा कि हे ब्राह्मणोत्तम रथन्तरनाम ऋचा अच्छीरीति से नहीं पढ़ीजाती है २०। २१ तुम बिपरीत पढ़ने के पाप से निष्पाप होकर फिर बुद्धि से बिचारकरो हे मन्दबुद्धी तुमने अशुद्ध पढ़ने से यज्ञके विरुद्ध अपराध किया २२ क्रोधयुक्त ऋषिने ऐसे कल्याणयुक्त बचनों को कहकर फिर कहा कि तुम बुद्धिसेरहित महादुःखी सदैव भयकारी वनमें रहनेवाले दुःखों में पूरित क्रूर मृगहोगे और ग्यारह सहस्र आठसौ वर्षतक उस देशमें निवासकरोगे जो वायु

जलसे रहित अन्य मृगों से शून्य यज्ञके अनुपकारी वृक्षोंसेयुक्त रुरु सिंहादिकों से व्याप्तहोगा २३। २४। २५ हे राजा इस वचन के समाप्त होतेही मैं मृगरूप होगया तदनन्तर योगीश महेश्वरजी ने मुझ शरणागत से कहा २६ कि तू अजर अमर होकर दुःखों से रहितहोगा और तेरा सुख सदैव एकसा बनारहैगा और इन्द्रका यज्ञ और गृत्समद तुम दोनोंकी वृद्धिहोय २७ यह षडैश्वर्य्यका स्वामी नानारूपों से प्रकट होनेवाला ईश्वर इस रीति से अपनी दयाको करताहै और वही सदैव सुख दुःखों में पोषण करताहुआ सबका रक्षकहै २८ हे युद्धकर्त्ताओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर यह परमेश्वर मन वाणी और कर्म से अचिन्त्यहै और विद्याकरके मेरे समान पण्डित नहीं है २९ फिर बुद्धिमानों में श्रेष्ठ वासुदेवजी बोले कि मैंने तपस्या करके सुवर्णाक्ष महादेवजी को प्रसन्नकिया ३० और प्रसन्नहोकर शिवजी ने मुझसे कहा कि हे श्रीकृष्ण तुम मेरी कृपासे संसारी वस्तुओंसेभी अधिक सबको प्यारेहोगे ३१ युद्ध में अजेय होकर दीप्ताग्नि के समान होगे इसीप्रकार से परमात्मा महादेवजी ने मुझे हजारों बार वरदानदिये ३२ मैंने पूर्व्वसमयमें मणिमन्थ पर्व्वतपर करोड़ों वर्षतक इन महादेवजी का पूजन कियाथा ३३ तब प्रसन्नहोकर शिवजीने मुझसे कहाथा कि तेरा कल्याणहो मैं प्रसन्नहूं जो चाहो सो वरमांगो ३४ उससमय मैंने दण्डवत् करके यह वचन कहा कि जो आप मेरीभक्ति से प्रसन्नहैं ३५ तो हे ईश्वर मेरीभक्ति आपके रूपमें सदैव अचल नियतहो फिर भगवान् तथास्तु अर्थात् ऐसाहीहो यह कहकर वहीं अन्तर्द्धान होगये ३६ जैगीषव्यजी बोले कि हे युधिष्ठिर पूर्वसमयमें वाराणसीपुरी में भगवान् तेजस्वी शिवजीने थोड़ेही उपायोंसे अष्टगुणित ऐश्वर्य मुझकोदिया ३७ गर्गजीबोले हेपांडव सरस्वती नदी के तटपर शिवजी ने मेरे मानसी पूजन से प्रसन्न होकर मुझको चतुष्षष्टि अंगयुक्त ज्ञान और एकहजारपुत्र ऐसे दिये जो मेरेहीसमान ब्रह्मवादी थे और मुझ सन्तानयुक्तकी आयुर्दाभी दशलाख वर्षकीकरदी३८।३९ पराशरजी बोले हे राजा पूर्व्वसमय में मैंने शिवजीको प्रसन्नकरके मनमें यह विचारकिया कि शिवजीकी कृपासे महातेजस्वी योगी यशस्वी ४० वेदरूप लक्ष्मीका निवासस्थान दयावान् ब्रह्मज्ञानी वेदव्यासनाम एक इच्छाके अनुरूपपुत्र मेरे होय ४१ तब उस उत्तम देवताने मेरे हृदयमें वर्त्तमान इच्छाको जानकर मुझसे कहा कि मुझमें जो तेरीभक्तिहै उसके फलसे कृष्णनाम पुत्रहोगा ४२ सावर्णि मनुकी सृष्टि

की उत्पत्तिमें सप्तर्षिहोकर वही वेदोंका प्रारंभकरनेवाला और कौरववंशका उत्पन्न करनेवालाहोगा ४३ वह तेरापुत्र महामुनि इन्द्रकाप्यारा जगत्‌का शुभचिंतकहोकर इतिहासोंका निर्माणकरनेवालाहोगा ४४ हे पराशर तुम्हारापुत्र अजर अमरहोगा ऐसा कहकर वह शिवजी वहीं अन्तर्द्धान होगये हे युधिष्ठिर वही महायोगी पराक्रमी अविनाशी न्यूनाधिकतासे रहितहै ४५ मांडव्यऋषि बोले हे राजा चौरकर्म से रहितभी मैं चौरज्ञानसे शूलीपर चढ़ायागया वहां शूलीपरसेही मैंने शिवजीको ध्यानकिया तब वहीं शिवजीने कहा कि ४६ हे वेदपाठी तू शूली से बचैगा और एक अर्बुद वर्षतक जीतारहैगा और शूली से कोई प्रकार का तुमको दुःख न होगा ४७ और तुम दैहिक मानासिक रोगों से भी रहितहोगे इसकारण से कि तेरा शरीर धर्म्म के चौथेचरण सत्यनामसे उत्पन्नहुआ है ४८ इसी हेतुसे तुम अनुपमभी होगे और सब तीर्थों का स्नान निर्विघ्नतापूर्वक करके सुखपूर्वक अपने जीवनको भोगोगे ४९ और हे वेदपाठी तेरे उत्तम स्वर्ग को भी अक्षय करताहूं इन सब वरदानोंको देकर वह षडैश्वर्य्यमान् ईश्वर वहीं गणोंसमेत गुप्त होगये ५०।५१ गालवऋषि बोले कि विश्वामित्रजी की आज्ञापाकर मैं पिताके दर्शनको आया वहां पिताका मरण होगया था इससे अपने स्वामी के नष्टहोजाने से मेरी माताने महारुदन करके मुझसे कहा ५२ हे निष्पाप पुत्र तेरापिता तुझ गुरुके आज्ञाकारी वेदों से अलंकृत जितेन्द्रिय तरुण पुत्रको नहीं देखसका ५३ माताके इस बचनको सुनकर पिताके दर्शनसे निराशहोके मैंने बड़ी सावधान बुद्धी से महादेवजी का दर्शन किया तब उन्होंने मुझ से कहा ५४ हे पुत्र तेरे माता पिता और तुम मृत्युसे रहितहोगे तुम शीघ्रही घरमें प्रवेशकरो अपने पिताके दर्शनको पावोगे ५५ हे तात युधिष्ठिर भगवान् शिवजीकी आज्ञापाकर मैंने घरमें जाकर यज्ञ कियेहुये अग्निकुंडसे निकलेहुये स्नान किये बनसे लकड़ियां लियेहुये महापवित्र शरीरधारी अपने पिताको देखा और पिताने मुझको देखतेही लकड़ी कुशा आदिको रखकर बड़े अश्रुपाती नेत्रोंसे देखा ५६।५७ और बहुत स्नेहपूर्वक मुझको हृदयसे लगा मस्तक चूंबकर यह बचन कहा कि हे पुत्र मैंने प्रारब्धसे तुम विद्यावान् अपने पुत्रको देखाहै ५८ वैशम्पायन बोले कि पांडव युधिष्ठिर मुनियों से वर्णन कियेहुये इन अत्यन्त अद्भुत कर्मोंको सुनकर बड़ा आश्चर्य्यित हुआ ५९ इसके पीछे ज्ञानियोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजी उस धर्म-

निधि युधिष्ठिरसे यहवचन ऐसे कहनेलगे जैसे कि विष्णुजीने इन्द्रसे कहाथा ६० बासुदेवजी बोले कि सूर्यकेसमान महातेजस्वी उपमन्यु ऋषिने मुझसे कहा कि जो पापात्मा पुरुष अपने अशुभ कर्म में फँसे हैं ६१ वह तामसी और राजसी प्रकृतिवाले मनुष्य शिवजीको नहीं प्राप्त होसक्तेहैं और शुद्ध अन्तःकरणवाले द्विजलोग उस ईश्वरको अच्छी रीतिसे प्राप्तहोते हैं ६२ सब दशामें कर्मकर्त्ता जो पुरुष ईश्वरका भक्तहै वह शुद्ध अन्तःकरण वनवासी मुनियोंकेसमान है ६३ जब शिवजी प्रसन्नहोते हैं तब विष्णुभाव शिवभाव ब्रह्मपद और देवतासमेत तीनों लोकोंके राज्यको भी देते हैं ६४ हेतात जो मनुष्य चित्तसे भी शिवजीको ध्यान करते हैं वह सब पापोंसे निवृत्त होकर देवताओंके साथ निवास करते हैं ६५ घर और घरकी सब ममताको त्यागकर जो शिवजी महाराजका आराधन करताहै वह पापमें कभी नहीं फँसताहै ६६ सब लक्षणोंसे हीन और पातकों से भराहुआ भी जो पुरुष शिवजी को ध्यान करताहै वह सब पापोंको दूरकरताहै ६७ हे केशवजी जिन कीटपक्षी और पशुओं ने भी शिवजी की शरणली है उनको भी कभी कहीं भय नहीं रहता इसप्रकार जो मनुष्य इस पृथ्वीपर महादेवजी के भक्तहैं ६८ वह संसारके आधीन नहीं होते यह मेरा दृढ़ सिद्धान्तहै इसकेपीछे फिर श्रीकृष्णजी ने धर्मपुत्र युधिष्ठिरसे यह वचन कहा ६९ कि सूर्य चन्द्रमा,वायु,अग्नि, स्वर्ग, पृथ्वी,जल,अष्टबसु, विश्वेदेवा ७० ब्रह्मा इन्द्र,मरुत,सत्यब्रह्म,वेद, यज्ञ, दक्षिणा,वेदपाठी,सोमयज्ञ,यज्ञकर्त्ता हव्य, देवताओंका भाग,रक्षा, दीक्षा और इनके विशेष जितने संयमहैं ७१ स्वाहा,वौषट्, ब्राह्मण,कामधेनु,उत्तमधर्म, कालचक्र, बल,यश जितेन्द्रिय,बुद्धिमानोंकी मर्यादा, शुभाशुभकर्म, सातोंमुनि ७२ ब्रह्मा कारधीव्रत, मन और चक्षुओं से स्पर्शकर्मशुद्धी देवगण ऊष्मपा सोमपा, लेखा, सुयाम, तुषित, ब्रह्मकाय ७३ आभासुर,गन्धप, धूमप मनबाणी के जीतनेवाले शुद्ध योगसे अनेक शरीर धारण करनेवाले देवता स्पर्शासना,दर्शपा,आज्यपा ७४ और चिंतवन करतेही जिनको अभीष्ट वस्तु प्राप्त होती हैं वह उत्तम देवता और जो अन्य देवताहैं गरुड़, गन्धर्व, पिशाच, दानव, यक्ष, चारण पन्नग ७५ स्थूल, सूक्ष्म, मृदु, बृहत्, सुख, दुःख, सदैव दुःख, सांख्ययोग, और उनपर कर्म कर्त्ताओंका मेलनस्थान इत्यादि जो मैंने वर्णन किये उन सबको तुम शिवजी केही उत्पन्न कियेहुये जानो ७६ आकाश आदि तत्त्वोंके उत्पन्न करनेवाले सब

उपासकों के इष्ट और इस संसारकेरक्षक सब देवतालोग इसआनन्दस्वरूप चौथे से उत्पन्न हुये हैं जिन्हों ने इस पृथ्वीपर आकर उस देवताकी सृष्टिको चारोंओर से रक्षितकिया ७७ जिस ईश्वर सूत्रात्मा या बिराट्को ध्यानसे निश्चय करते हैं वह सूक्ष्मतम हैं इसी हेतुसे मोक्ष के अर्थ मनबाणी के बिषय से रहित तत्त्वके आश्रय होकर मैं प्राप्त होताहूं वह ईश्वररूप होकर सदैव स्तूयमान प्रभु अबिनाशी हमारे मन चाहते वरों को दो ७८ जो पुरुष सावधानचित्त जितेन्द्रिय योगबलवाला पवित्र होकर इस स्तोत्रको एक मासतक पाठ करेगा वह अश्वमेधयज्ञके फलको पावेगा ७९ हे राजा ब्राह्मण सब वेदोंको पढ़े और राजा सब पृथ्वीको बिजयकरे बैश्यलाभ और कुशलताकोपावे और शूद्रशरीर त्यागने के पीछे सुख और गतिको पावे ८० कीर्त्तिमान् लोगोंने सब पापों के मोचन करने वाले नरक से बचानेवाले महापवित्र इस राजस्तोत्र के आश्रय होकर रुद्रजी में अपनेको लयकियाहै ८१ हे भरतर्षभ मनुष्यके शरीरमें जितने रोमकूप होते हैं वह मनुष्य उतनेही हजारबर्षतक स्वर्ग में बास करताहै ८२ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेमेघवाहनोपाख्याने अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे पितामह जानने के योग्य ब्रह्मको जानकर उसके ज्ञान साधनरूप धर्म्मको मैं जानना चाहताहूं और हे भरतर्षभ जो यह कहाजाताहै कि अग्निहोत्रादिक धर्म्म स्त्री पुरुषके साथही होने में होताहै मैं पूंछता हूं कि वह धर्म्म साथ रहने वाली स्त्रियों के बिवाहकेही समय होताहै या बिवाहसे पूर्व्व होताहै १ किसी मुख्यधर्म्म में स्त्री का साथ होना चाहिये वा सर्वत्र इसशंकाको करके कहते हैं यह जो आर्षधर्म या प्राजापत्य या इन्द्रियोंके जीतने के वास्ते स्त्री पुरुषों का धर्म महर्षियों ने पूर्व समयमें वर्णन कियाहै २ इसमें बड़ा सन्देह और विरुद्धहै क्योंकि इसलोकमें जो सहधर्म्मताहै तो मरनेकेपीछे परलोकमें कहां है अर्थात् कहीं नहीं है यह मेरा सिद्धान्त है ३ हे पितामह देहत्याग करनेवालों को जो सहधर्म्मता के द्वारा स्वर्ग होताहै जब कि स्त्री पुरुष दोनों में से प्रथम एक मरता है तब एकता कहां रहती है अर्थात् भिन्नता होजाती है ४ जब कि बहुतसे मनुष्य नानाप्रकारके फलयुक्त धर्म्मोंको करते अनेक प्रकारके कर्म्मों में

प्रवृत्त और वहुत रीतिकी नरक देनेवाली निष्ठाका निश्चय रखनेवाले हैं ५ और पुरुषके साथमें स्त्री केवल सन्तानकेही निमित्तहै तो इस दूसरे पक्षको भी दूषित करते हैं जब धर्मका वर्णन करनेवाला निश्चय करताहै कि स्त्रियां मिथ्याहैं अर्थात विना पतिके भी कुंडक गोलक आदिपुत्रों की उत्पत्ति देखने में आती है हे तात भीष्मजी जब स्त्रियां मिथ्याहुई तब सहधर्मता कहां से होसक्ती है ६ स्त्रियांमिथ्याहैं यह वेदोंमेंभी वर्णनकियाहै इसहेतु से यह स्त्रीव्यवहार और यज्ञादिक धर्मक्रिया विधि गौणधर्म कहाजाताहै ७ हे सदैव विचार करनेवाले मुझको यह धर्म कठिनतासे समझने के योग्य विदित होताहै हे पितामह यहसब जैसे सन्देहसेरहित और वेदके अनुसार जैसाहै और जिस रीति से जारीहुआहै उसको आप मुझ से ब्यौरेसमेत वर्णन कीजिये ८ । ६ भीष्मजी बोले हे भरतवंशी इस स्थानपर मैं एक प्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें दिशाओंका और अष्टावक्रऋषिका सम्वादहै १० पूर्व्व समयमें विवाहकी इच्छाकरके महातपस्वी अष्टावक्रने महात्मा वदान्यऋषि की कन्याको मांगा ११ वह सुप्रभा नाम कन्या सुन्दरतामें अद्वितीय गुण प्रभाव शील और चरित्रों से शोभायमान थी १२ इसीसे उस सुन्दर नेत्रवाली ने देखतेही उस ऋषिको ऐसा मोहित करलिया जैसे कि वसन्तऋतुमें पुष्पों से युक्त अद्भुत वनकी पंक्तियां चित्तको लुभाती हैं १३ तब ऋषिने अष्टावक्रसे कहा कि मेरी पुत्री तुम्हारे देनेके योग्यहै इसहेतुसे प्रथम यहबात आपकरें कि उत्तरदिशाको जायँ इसके पीछे आपको कुछ दिखाई देगा १४ अष्टावक्रने कहा वहां मैं जाकर क्याबात देखूंगा इसको आप मुझसे कहिये मैं वैसाही करूंगा जैसा कि आप मुझसे कहेंगे १५ वदान्यने कहा कि हिमालय पर्व्वत और कुबेरजी के स्थानको भी उल्लंघन करके सिद्ध चारणों से सेवित प्रसन्नचित्त नानाप्रकार के सुखरखनेवाले पार्षद और दिव्य केसर चन्दनसे चर्चित शरीर नृत्यकर्त्ता नानाप्रकारके पिशाचों से संयुक्त रुद्रके भवनको देखकर आगे जावो १६ १७ वहां हाथकी तालीके साथ तालनाम बाजे और समयके अनुसार स्वर ताल समेत उत्तम नृत्यकरनेवाले पार्षदों से रुद्रजी सेवितहैं १८ वह स्थान पर्व्वतभर में अत्यन्त उत्तम और चित्तरोचकहै वहां वह पार्षद और देवता सदैव वर्त्तमान रहते हैं वहांही देवी पार्वतीजी ने शंकरजी की प्राप्तिके निमित्त महाकठिन तपस्याको किया इसी कारणसे वह स्थान देवता और उमा देवीको अत्यन्त प्रिय

है १९। २० वहां पर्व्वतके पूर्व और देवताके उत्तरकी ओर कालरात्रि पृथ्वी और स्वर्गलोक सम्बन्धी जो वस्तु हैं २१ वह सब अपना२ शरीर धारण कियेहुये देवताकी उपासना करती हैं उस भवनको उल्लंघन करके तुमको जाना योग्यहै २२ उसके आगे नीलवनके मुख्य स्थानको देखियेगा वह स्थान मेघके स्वरूप चित्तरोचक और क्रीड़ाके योग्यहै वहां आप एक स्त्रीको देखेंगे २३ वह स्त्री बड़ी वृद्धा तपस्विनी महाभागा और दीक्षासे अनुष्ठान करनेवाली है उसको तुम बड़े यत्नपूर्व्वक देखो और पूजनकरके जब लौटआवोगे तब इस कन्यासे विवाह करोगे जो इस प्रणको पूराकरो तो वहां जावो २४। २५ अष्टावक्र बोले कि मैं ऐसाही करूंगा हे साधु मैं अवश्य वहां जाऊंगा परन्तु आप अपने वचनमें सच्चे बनेरहिये २६ भीष्मजी बोले कि इसके अनन्तर वह अष्टावक्रजी उस पूर्व्वोक्त गुण विशिष्ट पर्व्वतपर गये २७ वहां पहुंचकर वह धर्मिष्ठऋषि धर्म से शोभित होकर बाहुदानाम नदीपर गये २८ उस नदी के निर्मल जलमें स्नान तर्पणादिक कर्मोंको करके निर्मल कुशशय्यापर सुखपूर्व्वक विराजमानहुये २९ फिर रात्रि व्यतीत होनेपर प्रातःकालके समय स्नानकरके उस ऋषिने अग्निको प्रकटकिया और बड़ी श्रद्धापूर्व्वक पूजन स्तुतिके द्वारा उसकी स्तुति करके ३० रुद्र और रुद्राणी को हृदयमें ध्यानकरके विश्राम लेकर वहां से उठकर कैलासकी ओरको चले ३१ वहां उसने महात्मा कुबेरजी केसुन्दर स्वर्णमयी द्वारको और मन्दाकिनी नाम कमलनीको देखा ३२ इसके पीछे कमलनीकी रक्षा करनेवाले वह सब राक्षस जिनमें मुख्य नभूरिथा सबके सब इन भगवान् ऋषिके अभ्युत्थान को उठे ३३ तब इसने उन भयानक रूपवाले राक्षसों को आशीर्वाददिया और कहा कि शीघ्रही मेरे समाचार कुबेरजी से कहो ३४ तब उन राक्षसों ने ऋषि से कहा कि यह राजाकुबेरजी आपही आपके पास आते हैं कुबेरजी आपको जानते हैंऔर यहां आप के आने का प्रयोजन भी कुबेरजी जानते हैं हे ऋषि तुम इस महाभाग तेज से प्रकाशमान देवता को देखो ३५। ३६ फिर कुबेरजी इस निर्दोष अष्टावक्रऋषि के पास आकर रीति के अनुसार इनकी कुशलक्षेम पूछकर बोले कि आप आनन्दसे आये मुझसे क्या चाहतेहो हे ब्राह्मण जो आप मुझसे कहोगे सो सब मैं करूंगा ३७। ३८ हे ब्राह्मण तुम इच्छाके अनुसार मेरे स्थानमें प्रवेशकरो आप अपने मनोरथ समेत प्रतिष्ठा पूर्व्वक यहां से जावोगे ३९ फिर

कुबेरजी उस उत्तम ब्राह्मण को साथ लेकर अपने स्थानमें गये वहां जाके अ-
पना आसनपाद्य और अर्घ्यदान उसको दिया ४० फिर कुबेरजीके आज्ञावर्ती
यक्ष गन्धर्व किन्नर जिनमें मुख्य मणिभद्रथा सब आकर उनदोनों के समीप बैठ-
गये ४१ इसके पीछे उन बैठे हुओंके मध्यमें कुबेरजीने यह वचन कहा कि अ-
प्सराओं के समूह जो आपकी इच्छापावें तो नृत्यकरें ४२ क्योंकि हमको आप
का बड़ा शिष्टाचार और सेवाकरना उचितहै मुनिने बड़ी कोमलतासे कहा कि
अच्छा नृत्यहोय ४३ फिर उर्व्वरा, मिश्रकेशी, रंभा, उर्व्वशी, अलम्बुषा, घृताची,
मित्रा, चित्राङ्गदा, रुचि ४४ मनोहरा, सुकेशी, सुमुखी, हासिनी, प्रभा, विद्युता
प्रशमी, दांता, विद्योता, रति यह सब और इनके बिशेष अन्य उत्तम २ अप्सरा
नृत्य करनेलगीं ४५ और गन्धर्व्वों ने नानाप्रकारके बाजोंको बजाया ४६ फिर
उस गांधर्व्व विद्याके जारीहोने पर वह ऋषि बैठगये और ऐसे महातेजस्वी यह
अष्टावक्र ऋषि वहां एक दिव्यवर्ष पर्य्यंत नृत्य देखतेरहे ४७ फिर राजाकुबेरजी
ने भगवान् ऋषिसे कहा कि हे ब्राह्मण यहां तुमको तमाशा देखतेहुये एक दि-
व्य वर्ष से भी अधिक व्यतीतहोगया ४८ हे ब्राह्मण यह गान्धर्वी विद्या बड़ी चि-
त्तरोचकहै हे वेदपाठी आपकहें तो आपकी इच्छानुसार होय या जैसा आपकहें
वहहोय तुम अतिथिहो इससे हमको पूजनके योग्यहो यह आपका घरहै आप
अपनी इच्छाके समान जो चाहो सो आज्ञाकरो हम आपकी आज्ञाको करेंगे
४९।५० इसके अनन्तर बहुत प्रसन्नहोकर ऋषिने कुबेरजीको उत्तरदिया कि हे
धनकेस्वामी आपने मेरा न्यायके अनुसार पूजन सत्कार कियाहै अब मैं जाऊं-
गा आशय यहहै कि जो पुरुष जीवोंकी उत्पत्ति प्रलय जन्म मोक्ष विद्या अविद्या
को जानताहै उसको भगवान् कहना योग्यहै दिव्य भोगोंसे अजेय सर्वज्ञ होकर
भी वदान्यऋषिकी कन्याकेलिये दिशाके अन्ततकगया इससे यह पिशाचकाम
बड़ा प्रबलहै ५१ हे धनकेस्वामी मैं बहुत प्रसन्नहूं और आप सब बातोंके योग्यहैं
आपकी कृपा और महात्मा महर्षिकी आज्ञासे अब आगेजाऊंगा तुम्हारेधनकी
वृद्धिहोय इसकेपीछे वह ऋषि उत्तरकी ओरको चले ५२।५३ और कैलास म-
न्दर और हिमालय पर्व्वतोंमें होतेहुये बड़े२ पर्व्वतोंको उल्लंघनकरके किरातरूप
धारी शिवजी के उत्तम स्थानकी बड़ी सावधानी से शिर केद्वारा दण्डवत् करके
परिक्रमा करी और वहांसे पृथ्वी से उड़कर आकाशमार्ग से चलनेवाले होकर

शरीरसे पवित्रहुये ५४।५५ अब यहां से आगे सूक्ष्म पृथ्वी पर्वतादि का बर्णनहै प्रीतिमें भरेहुये वह ऋषि तीनों पर्वतों की परिक्रमा करके सम धरातल पृथ्वीपर उत्तरकी ओरको चले ५६ फिर क्रीड़ायोग्य सब ऋतुओंके फल पुष्पोंसमेत प-क्षियोंसे युक्त दूसरे बनके स्थानको देखा ५७ वहां अच्छे२ स्थानोंको देखतेहुये ऋषिने दिव्य आश्रम पर स्थानको देखा ५८ वह स्थान नानाप्रकारके रत्नों से जटित स्वर्णमयी पर्वतों से व्याप्त मणियों के निर्मित तड़ागोंसे शोभित था इसी प्रकार अन्य बहुत से उत्तम२ स्थानों को देखतेहुये उस पवित्र अन्तःकरणवाले मुनिका चित्त अत्यन्त प्रसन्नहुआ ५९। ६० वहां उस ऋषिने स्वर्णमयी अपूर्व स्थानको देखा जो नानाप्रकारके दिव्यरत्नों से खचित कुबेरजी के भी स्थानोंसे उत्तमथा ६१ जहां अनेक मणियों के बड़े २ पर्वत सुंदर रत्नमयी बिमानोंसे शो-भितथे ६२ और मन्दारके पुष्पोंसे सुगन्धित मन्दाकिनी नदीको देखा जिसपर अपने तेजोंसे प्रकाशमान अनेक मुनिलोग हीरोंसेजटित पृथ्वीपर बिराजमानथे ६३ उस स्थानकाद्वार बिचित्र मणियोंका मुक्ता जालसे आच्छादितथा ६४ उस स्थानकोभी ऋषियोंसेव्याप्तदेखा वह स्थानभी चित्तका चुरानेवाला और क्रीड़ा के योग्य था ६५ फिर ऋषिने चिन्ताकरी कि मैं कहां निवासकरूं यह बिचारकर द्वारकीओर गये वहांजाकर ठहरकर यह कहनेलगे कि जो यहांका स्वामी है वह मुझ आयेहुये अतिथिको जाने ६६।६७ इसकेपीछे चारोंओर से महाविभववाली अत्यन्त स्वरूपवान् सात कन्या उसस्थानसे निकलीं वह ऐसी चित्तकी चुराने वाली कन्याथीं कि जिस २ को मुनिने देखा उसीने इनका चित्त बशीभूत कर लिया यहांतक कि अपने मोहित चित्तके रोकनेको मुनि समर्थ नहीं हुये ६८।६९ इसके पीछे उस बुद्धिमान् ब्राह्मणमें धैर्य्यता उत्पन्नहुई और उन स्त्रियोंने इनसे कहा हे भगवन् आप स्थानमें चलिये ७० फिर उसस्थान के देखने के अभिलाषी ऋषि उसमें गये ७१ वहां जाकर एकबड़ी वृद्धास्त्री को देखा वह अनेक उत्तम भूषण और वस्त्रों से अलंकृत एक शय्यापर बिराजमानथी ७२ उसने ऋषिसे कहा कि कल्याणहो ऋषिने उसको दण्डवत् करी तब उसने उठकर कहा हे ब्रा-ह्मण ठहरिये बैठिये ७३ अष्टावक्र बोले कि हे स्त्रियो तुम अपने २ स्थानों को जाओ केवल यही अकेली इसस्थान में नियत रहै जोकि बड़ी ज्ञानवान् और चित्तको जीतनेवाली है ७४ फिर वह सब कन्या ऋषिको परिक्रमाकरके उसस्थान

से बाहर निकलीं और वही अकेली वृद्धा नियतरही ७५ तब प्रकाशित शय्या पर बैठे हुये ऋषिने उस स्त्री से कहा हे कल्याणिनि तुझको भी शयन करना चाहिये रात्रि बहुत व्यतीत होगई ७६ फिर वह स्त्री उनके कहनेसे दूसरी उत्तम रत्नजटित शय्यापर जा सोई ७७ इसके पीछे वह शरीर से कांपतीहुई स्त्री शीत काहेतु करके महर्षिकी शय्यापर चढ़ी ७८ तब ऋषिने उस आईहुई स्त्री से कहा कि आनन्द पूर्व्वक आई हे नरोत्तम तब तो वह स्त्री बड़ी प्रीतिसे अपनी दोनों भुजाओं से ऋषिसे मिली ७९ तब उसने ऋषिको रूपान्तर दशासे रहित काष्ठ पाषाण के समान देखकर महादुःखी होकर ऋषिसे कहा ८० कि हे ब्राह्मण स्त्रियोंका स्वभावपुरुषकी इच्छासे अन्यहै और पुरुषको पाकर स्त्रियोंका धैर्य स्त्रियों के स्वाधीन नहीं है मैं कामसे मोहित होकर तुमको चाहती हूं आपभी मुझको चाहो ८१ और प्रसन्न होकर मेरेसाथ संगकरो हे ब्राह्मण मुझको अंगसे लिपटालो मैं तेरे कारण कामसे अत्यन्त पीड़ितहूं ८२ हे धर्म्मात्मा यह तेरे तपका फल पूजा जाताहै क्योंकि मैंने देखतेही तुम्हारी इच्छाकरी है मेरी इच्छाको पूर्ण करो ८३ यह मेरा सम्पूर्ण धन यश और जो २ पदार्थ देखलेहो उसके और मेरे शरीर के तुम निस्संदेह स्वामी होजावोगे ८४ आपके सब मनोरथों को मैं पूरा करूंगी और सब अभीष्ट फलके देनेवाले क्रीड़ा के बनमें तुम मेरे साथ बिहार करो ८५ हे ब्रह्मन् मैं आपकी आज्ञाकारी रहूंगी और जो तुम मुझसे प्रीतिकरोगे तो हम पृथ्वी और स्वर्गकी सब प्रयोजनकी बस्तुओं को भोगेंगे ८६ स्त्री को जैसा कि पुरुषका संग प्याराहै इससे बढ़कर त्रिलोकी में भी कोई सुख नहीं वर्त्तमानहै इससे हमसे प्रीति करना आपको उचित है ८७ कामदेव से व्याकुल स्त्रियां अपनी इच्छाके समान काम करती हैं और वह कामपीड़ित होकर पुरुष के पास जानेकेलिये मार्गमें अग्निके समान जलतीहुई पृथ्वी से भी नहीं डरती हैं अर्थात् उस पृथ्वी से भी नहीं जलती हैं ८८ अष्टावक्र बोले हे कल्याणिनि मैं किसी दशामें भी अन्यकी स्त्री से संग नहीं करसक्ता परपुरुषकी स्त्री से संग करना धर्म्मशास्त्र में महादोष कहाहै अत्यन्त दूषित कियाहै ८९ हे भाग्यवान् मैं बिवाहका इच्छावान् हूं मैं सत्य २ शपथ करताहूं कि मैं बिषयों में तो प्रवृत्त नहीं हूं परन्तु धर्म्मसे सन्तानकी इच्छाकरताहूं क्योंकि सन्तान केवल धर्म्मकेही निमित्तहै निस्सन्देह पुत्रोंकेहीद्वारा मैं उत्तम लोकोंको जाया चाहताहूं हेकल्या-

णिनि तुम धर्मकोजानकर इस कर्मसे बचो ९०।९१ स्त्री बोली हे ब्रह्मन् स्त्रियोंको अग्नि वायु वरुण आदि सब देवता ऐसे प्यारे नहीं हैं जैसा कि कामदेव प्याराहै क्योंकि स्त्रियोंको पुरुषके संगकाही जन्मसे अभ्यासहोताहै हजारों लाखों स्त्रियों में कोई पतिव्रता होती है ९२ । ९३ यह स्त्रियां न पापको जानती हैं न कुलको न माता पिता भाई बेटे देवर और पतिको जानती हैं ९४ पुरुष संगकी चाहने वाली स्त्रियां अपने कुलका ऐसा नाशकरती हैं जैसे कि उत्तम नदियां किनारों को विध्वंस करती हैं ९५ भीष्मजी बोले कि इसके अनन्तर स्त्री के दोषोंको ध्यान करते एकाग्रचित्त ऋषिने उस स्त्रीसे कहा मौनहोकर चुपहोजाओ प्रीतिसे इच्छा होतीहै अर्थात् मैं प्रीति से रहितहूं अब तुम कहो कि मैं क्या करने के योग्य हूं ९६ तब उस स्त्रीने उत्तरदिया हे भगवन् देशकालके अनुसार तुम प्रीतिके सुख को देखोगे हे महाभाग जबतक तुम्हारा मनोरथ सिद्ध होय तबतक यहां आप ठहरिये आपकी इच्छा पूर्णहोगी तब उस ब्रह्मर्षि ने उसको उत्तर दिया कि मैं निस्सन्देह जबतक आपका उत्साह है तबतक यहां निवास करूंगा ९७ । ९८ फिर ऋषिने उस स्त्रीको वृद्धावस्था की दशा से महादुःखी देखकर बड़े चिन्ता-युक्त होकर खेद को पाया ९९ और उस स्त्री के जिस जिस अंगको देखा उन उन अंगों का प्रीति से रहित होकर आलिंगन नहीं किया १०० और विचार किया कि यह इस घरकी देवताहै या किसीके शापसे रूपान्तरदशा में प्राप्त है मायामें वशीभूत लोग इसके भेदके जाननेको समर्थ नहीं हैं १०१ महाव्याकुल-चित्त चिन्तासे दुःखित उसके भेदके जाननेके इच्छावान् ऋषिका वह दोषदिवस समाप्त हुआ १०२ फिर उसस्त्रीने कहा हे भगवन् सायंकाल के लाल बादलों से रक्तवर्ण सूर्य्य के रूपको देखो और आपके निमित्त कौन वस्तु लावें १०३ तब ऋषिने उस स्त्रीसे कहा कि स्नान के निमित्त जल यहां लाओ मैं स्नानकरके वाणी को जीत जितेन्द्रिय होकर संध्योपासन करूंगा १०४ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मे अष्टावक्रदिक्संवादेएकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवांअध्याय ॥

भीष्मजी बोले फिर उस स्त्रीने कहा बहुत अच्छा ऐसाही होगा और वहां से उठकर दिव्य तेल को सम्मुख रखकर स्नान के वस्त्रों को लेआई १ फिर उस

महात्मा मुनि की आज्ञावर्त्ती उस स्त्रीने उनके सब अंगोंको तेलसे मर्द्दन किया २ और बड़ी कोमल बाणी से कहेहुये ऋषि स्नानशालामें गये वहां से अपूर्व नवीन उत्तम आसन के पास गये ३ जब ऋषि उस उत्तम आसन पर बैठ गये तब उस सुखदायी हाथीवाली स्त्रीने बड़ी कोमलतासे ऋषिको स्नान करवाया ४ और बुद्धि के अनुसार उन की दिव्य सेवा करी ५ तब उस महाव्रतवाले ऋषि ने उस महासुखदायी उष्णजल के स्नान से और स्त्री के सुखदायी हाथसे व्यतीत रात्रि को नहीं जाना फिर अत्यन्त आश्चर्यित मुनिने वहांसे उठकर पूर्व्व दिशा से आकाश में उदयहुये सूर्य्यको देखा विचार किया कि यह क्या बातहै यथार्थमें अज्ञानसा बिदित होताहै ६ । ७ फिर सूर्य्य की उपासना करके उस से कहा अब क्या करूं तब उस स्त्री ने अमृत के स्वादुयुक्त अनेक भोजन की वस्तुलाकर ऋषिके आगे धरीं ८ उसने उन भोजनकी बस्तुओं के स्वादु से तृप्ति नहीं मानी इसके पीछेवह शेष दिनभी समाप्त हुआ और संध्या वर्त्तमान हुई९ तब उस स्त्रीने ऋषिसे कहा कि आप सोजाइये फिर वह स्त्री और मुनि अपनी अपनी दिव्यशय्याओंपर पृथक्२ सोगये और उसी पूर्वरीति से वहस्त्रीअर्द्धरात्रि केसमय उनकी शय्यापर आई१०।११ अष्टाबक्रने कहा हेकल्याणिनि मेरा चित्त दूसरेकी स्त्रीपर आसक्त नहीं होताहै तुम उठो तुम्हारा भलाहो तुम आपभी इस निन्दित कर्म्मको त्यागो भीष्मजी बोले कि इस रीतिसे उस वेदपाठी से लौटाई हुई उस स्त्री ने ऋषिसे कहा कि मैं आप स्वतन्त्रहूं अन्य मनुष्यको मोहित करने का मुझको अपराध नहीं है और दूसरेकी स्त्री से संग करने में आपको भी अपराध नहीं है १२ अष्टावक्र बोले कि स्त्रियों को स्वतन्त्रता नहीं है स्त्रियां सदैव दूसरे के स्वाधीन हैं ब्रह्माजी का यह बचनहै कि (नस्त्रीस्वातन्त्र्यमर्हति) अर्त्थात् स्त्री स्वतन्त्रता के योग्य नहीं है १३ स्त्री ने कहा हे वेदपाठी जो तुम मेरी भक्तीको भी देखकर मुझको प्रसन्न नहीं करते अर्थात् मेरे इतने स्नेह करनेपर भी जो आप मैथुनको त्याग करतेहो तो आप अधर्म्मके भागी होगे १४ अष्टाबक्र जीबोले कि काम क्रोध आदि दोष उसीपुरुषको स्वाधीनकरते हैं जो कि अपनी इच्छाके अनुसार उस कर्मको करताहै हे कल्याणिनि मैं सदैव अपने धैर्यमें नियतहूं तुम अपने शयनस्थानकोजाओ १५ स्त्री बोली हे निष्पाप वेदपाठी मैं शिर से तुमको प्रणाम करती हूं आप कृपा करनेके योग्यहैं मुझ भूमिमें गिरीहुई पर

आप कृपाकरें १६ हे ब्राह्मण जो तुम अन्यकी स्त्रियोंमें दोषको देखतेहो सो मैं अपनी शपथखातीहूं आप मेरे हाथको पकड़िये १७ आपको किसीप्रकार से दोष नहीं होगा मैं यह सत्य२कहतीहूं आप मुझको स्वतन्त्रहीजानो और मेरे बिषयमें जो आपको पाणिग्रहणादि कर्मसंस्कार करनाहो उसको आपकरिये १८ मैं आप में चित्तकी लगानेवालीहूं और सत्य २ स्वतन्त्रहूं इससे आपमुझे ग्रहणकीजिये अष्टावक्र बोले हे कल्याणिनि तुम किस रीतिसे स्वतन्त्रहो इसका कारण बर्णन करो तीनोंलोक में ऐसी कोई स्त्री नहीं है जो स्वतन्त्र होनेके योग्यहो १९ बाल्यावस्था में पिता रक्षा करताहै तरुणतामें पति रक्षक होता है और वृद्धावस्था में पुत्र रक्षाकरताहै इन कारणोंसे स्त्री कभी स्वतन्त्र नहीं होसक्ती २० स्त्रीने कहा हे वेदपाठी बाल्यावस्थासे मेरा ब्रह्मचर्य्य है मैं निस्सन्देह अभी कन्याहीहूं आप मेरी श्रद्धाको नष्ट न करिये शीघ्रही मुझको अपनी स्त्री बनाइये २१ अष्टावक्र बोले कि जैसे कामसे मैं ब्याकुलहूं उसी प्रकार तूभी है अर्थात् जो दशा तेरी है वही दशा मेरी है क्या यह उसीऋषिकीओरसे तो परीक्षा नहीं होती है कि साधु है वा असाधुहै सत्यहै बिघ्न क्यों न होय अर्थात् अवश्य होना चाहिये २२ यह बड़ा आश्चर्य्य है कि यह वृद्धा स्त्री दिब्यभूषणोंसे अलंकृत कन्यारूप होकर मेरे सम्मुख आनकर नियत हुईहै २३ परन्तु इसका रूप अत्यन्त सुन्दरहै वहकिस प्रकारसे वृद्धावस्था से अब कन्याके रूप में होगई है इस स्थानपर इसका त्याग उचितहै वा अंगीकार करना योग्यहै २४ जब कि मुझमें धैर्य्यता प्राप्तहै तो इस को कभी अंगीकार नहीं करूंगा मैं धर्मका उल्लंघन करना नहीं चाहताहूं किन्तु सत्यतासे स्त्री प्राप्त कियाचाहताहूं २५ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मे अष्टावक्रदिक्संवादेविंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि अष्टावक्र ने पूछा कि किसप्रकार से स्वरूपान्तर करना योग्यहै और मुझको भी मिथ्या कहना उचित नहीं है प्रतिष्ठापूर्बक ब्राह्मण से बर्णन करो १ । २ स्त्री बोली हे श्रेष्ठ ब्राह्मण पृथ्वी और स्वर्ग में स्त्री पुरुषकी यह इच्छा परस्परहै अर्थात् मोक्षके सिवाय दूसरा इच्छासे रहित कोई स्थान नहींहै तुम सत्यपराक्रमीहोकर इसको सुनो ३ हेनिष्पाप मैंने तेरे चित्तकी दृढ़ता देखने

के लिये यह परीक्षा करी है हे सत्यपराक्रमी अमर्य्यादता न होनेसे तैंने लोगोंको बिजयकिया ४ तुम मुझको उत्तरदिशारूप भवानी देवीजानो तुमने स्त्रियोंकी चेष्टा देखी अब काम भोग वृद्धा स्त्रियोंकोभी कष्ट देताहै अब तेरा पितामह और इन्द्र प्रसन्न है और इन्द्रके आज्ञावर्त्ती देवताभी प्रसन्नहैं सो हे ब्रह्मन् आप जिस कामके लिये यहां आयेहो ५।६ और उस कन्याके पिताने तुमको उपदेश करनेके निमित्त भेजाहै हे ब्राह्मणोत्तम वह सब मैंने कहा ७ हे वेदपाठी तुम आनन्द से घरको जावोगे और मार्ग्ग के परिश्रम से रहित होकर उस कन्या को पावोगे और वह कन्या पुत्रवती होगी तुम ने जो स्त्री पुरुष के परस्पर स्नेह के विषयमें प्रश्नकिया था इसीसे मैंने उत्तम वर्णनकिया वह स्त्री पुरुषकी परस्परकी प्रीति लोकों में उल्लंघन नहीं होसक्ती अर्थात् सब उसके बन्धनमें हैं और होसक्ते हैं ८।९ तुम शुभकर्म करतेहुये जावो और इसके सिवाय जो और कुछ सुनने की इच्छाहोय सोभीकहौ हे ब्रह्मऋषि अष्टावक्र मैं उसका सत्य २ उत्तरदूंगी १० हे श्रेष्ठ तेरेही निमित्त उस ऋषि ने मुझ को प्रसन्न किया है उसीकी प्रतिष्ठा के निमित्त मैंने आपसे वार्त्तालापकरी ११ भीष्मजी बोले कि उसके उस वचनको सुनकर वह वेदपाठी ऋषि हाथ जोड़े खड़ेहोकर उस दिशारूप देवी से आज्ञा लेकर अपने स्थानको आये १२ और स्थानमें आकर विश्राम किया हे युधिष्ठिर इसके अनन्तर वह ऋषि अपने सुजन इष्ट मित्रों से पूंछकर न्याय के अनुसार उस ऋषिके पासगये १३ उस ऋषिने इनसे कहा कि आपने क्या चमत्कार देखा उसको मेरेआगे वर्णनकरो तब अष्टावक्र बोले कि मैं आपसे आज्ञापाकर प्रथम गन्धमादन पर्वतको गया उसकी उत्तर दिशामें मैंने बड़ा देवता देखा १४।१५ मुझको उसने आज्ञाकरी और आपका भी प्रसंग उसके मुखसे मैंने सुना इसके पीछे हे प्रभु अपने घरको आया १६ तब उस ब्राह्मणने कहा कि आप उत्तम सुपात्र हैं मेरी पुत्री को योग नक्षत्र मुहूर्त्त बिचारकर आप ग्रहण कीजिये १७ भीष्मजी बोले कि तब बड़े धर्म्मज्ञ अष्टाबक्रजी उसके बचनको अंगीकार करके शुभ योग नक्षत्रादिमें उसकी कन्याको ग्रहणकरके अत्यन्त प्रसन्नहुये १८ और उत्तम कन्याको अपनी भार्याकरके तपसे निवृत्तहो अपने आश्रममें सुखपूर्वक निवास करनेलगे १९ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मे अष्टावक्रदिक्संवादेएकविंशतितमोऽध्यायः २१॥

बाईसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ सनातन वेदपाठियों ने किसको पात्र वर्णन कियाहै अर्थात् ब्रह्मज्ञानीको वा ब्रह्मचारीको वा संन्यासी को अथवा दण्डादि चिह्नोंसे रहित केवल ब्राह्मणको पात्र वर्णन कियाहै १ भीष्मजी बोले हे महाराज जोकि अपने कालक्षेपकेलिये अपने योग्य जीविका में प्रवृत्त है अर्थात् अपने धर्मका सेवन करनेवालाहै वह चाहौ ब्रह्मचारी संन्यासी अथवा गृहस्थी होय वही दानदेने के योग्य वर्णन कियाहै क्योंकि यह तीनों तपस्वी हैं अब दो श्लोकों में श्रद्धाको दाताका गुण वर्णन करते हैं हे पितामह जो अपवित्र मनुष्य श्रद्धापूर्व्वक हव्य या कव्य अथवा ब्राह्मणको दान देताहै उस दानीको अपवित्रता से कौन २ दोष उत्पन्न होते हैं २ भीष्मजी बोले हे तात जो मनुष्य शान्तचित्त नहींहै ३ वह भी श्रद्धा से पवित्र होनेवाला निस्संदेह सर्वत्र पवित्र होसक्ता है हे बड़े तेजस्वी तुम इसमें क्या मानतेहो ४ युधिष्ठिर बोले कि दैवकर्मों में मनुष्यको ब्राह्मणकी परीक्षा न करनी चाहिये परन्तु ज्ञानी लोगोंने पितरोंके कव्य अर्थात् श्राद्ध में भोजन कराने के लिये ब्राह्मणकी परीक्षा करनी योग्य कही है अर्थात् जो श्रद्धासेही पवित्रता होजाती तो कव्यदानमें भी ब्राह्मण की परीक्षा न होती ५ भीष्मजी बोले कि ब्राह्मण हव्यको नहीं साधन करताहै वह दैवसेही सिद्धहोताहै देवताओं की कृपासेही ब्राह्मण यजमानों से देवताओंको पुजवाते हैं ६ हे भरतर्षभ पूर्व्व समय में बुद्धिमान् मार्कण्डेयजीने पिता पितामह आदिके पूजन में सदैव ब्रह्मवादियोंकोही ब्राह्मण वर्णन कियाहै ७ युधिष्ठिर बोले कि जो पुरुष अपूर्व, वेदवान्, नातेदार होय वा तपस्वी होकर यज्ञका अभ्यासी होय वह किस कारण से पात्र होताहै ८ भीष्मजी बोले कुलीन, यज्ञाभ्यासी, वेदवान्, दयावान्, लज्जावान्, सत्यवक्ता, सत्यप्रतिज्ञ मनुष्य पात्र होताहै और जिनको प्रथम वर्णन कियाहै वह भी इन गुणोंसे युक्त होकर पात्र होते हैं ९ हे युधिष्ठिर इसस्थान में एक प्रसंग कहता हूं जो पृथ्वी, काश्यपऋषि, अग्निदेवता और मार्कण्डेयऋषि इनचारों तपस्वियों का अंगीकृतहै १० पृथ्वी बोली कि जैसे समुद्रमें डालाहुआ मृत्तिकाका पिण्ड शीघ्र नष्ट होजाताहै उसी प्रकार सब पापभी उस पुरुष में अन्तर्गत होकर नष्ट होजाते हैं जो कि पठन पा-

ठन और यज्ञ कराना इन तीनों जीविकाओं को करताहै अर्थात् अपने स्वधर्म-निष्ठ होनेसे उन तीनों कर्म्मोंकी योग्यता रखताहै इसीसे कुलीनता के गुणको बर्णन किया ११ काश्यपजी बोले हे राजा छओं अंगों समेत सब वेद, सांख्य शास्त्र, पुराण, कुलमें जन्मलेना, यह सब उस ब्राह्मणके गतिरूप नहीं होते हैं जो ब्राह्मण कि शीलसे रहित होताहै १२ अग्नि देवता बोले कि जो पुरुष यज्ञादिक सत्य कर्म्मोंको नहीं करताहै अर्थात् दया और कर्म्मोंके अभ्यास से रहित है वह नष्टताको पाताहै और उसके सब लोकभी नाश होजाते हैं १३ मार्कंडेय जी बोले कि हजारों अश्वमेधको और सत्यवक्तापनेको जो तुलापर तौलाजाय तो सत्यवक्तापने के आधेभागकी भी बराबर हजारों अश्वमेध नहीं होसक्ते हैं १४ भीष्मजी बोले कि यह चारों महातेजस्वी ऐसा २ कहकर शीघ्रही चलेगये १५ युधिष्ठिरने प्रश्नकिया कि हे पितामह लोकमें जो वह ब्रह्मचारी ब्राह्मण हव्यादि को भोजन करते हैं उन ब्रह्मचारियों के लिये जो दान किया वह दान किस प्रकार शुभकर्म्म होगा अर्थात् दान लेने में ब्रह्मचारी का ब्रत नष्ट होजाने से हमारा श्राद्धादि कर्म्म दोष को पाता है या नहीं १६ भीष्मजी बोले हे राजेन्द्र जिनको गुरू ने ब्रह्मचर्य्य के लिये बारहबर्ष की आज्ञा दीन्ही है वह वेदपारग ब्राह्मण जो भोजन करते हैं उन्हींका ब्रत लोप होताहै अन्य ब्रह्मचारी और दान देनेवालों का नहीं होता है १७ युधिष्ठिर बोले कि ज्ञानीलोग धर्मको बहुत फल उत्पन्न करनेवाला और अनेक द्वार रखनेवाला बर्णन करते हैं इस स्थान में कौन से गुण नियम समेत पात्र होने के कारण हैं उन को आप मुझसे बर्णन कीजिये १८ इसका उत्तर भीष्मजी तीन श्लोकों में देते हैं हे राजेन्द्र हिंसा से रहित सत्यता क्रोधहीनता दया चित्त की शान्तता सरलता यह निश्चय किये हुये धर्म के चिह्न हैं १९ हे प्रभु जो पुरुष धर्मकी प्रशंसा करते हैं और उस धर्म को नहीं करते हैं वह इस पृथ्वीपर विचरतेहुये धर्म्मसंकरता में संयुक्त होते हैं २० जो मनुष्य उनको सुवर्ण रत्न गौ और अश्वादिकको देताहै वह नरकमें नियत होकर दशबर्षतक बिष्ठाको भोजन करताहै २१ जो गौ भैंस आदिकके मांसखाने वाले पुल्कस और चर्मकारादिक हैं और जो ब्राह्मणादि लोग अन्यके किये न किये पापकर्मों को प्रकट करते हैं उनके भी साथ वह बिष्ठा को खाताहै २२ हे राजेन्द्र इसलोकमें जो अज्ञानी पुरुष वैश्वदेव सम्बन्धी और अतिथियोंके देने के

योग्य भोजनकी वस्तुको ब्रह्मचारी और संन्यासीको नहीं देतेहैं वह अशुभलोकों को भोगतेहैं २३ हे पितामह कौन ब्रह्मचर्य्य उत्तमहै कौन धर्म्म लक्षण श्रेष्ठहै और कौन शौच श्रेष्ठतर है उन सबको मुझे समझाइये २४ भीष्मजी ने कहा हे तात ब्रह्मचर्य्यसे मदिरा और मांसका त्यागना उत्तमहै और विषयोंसे इन्द्रियोंका रोकना श्रेष्ठतर है वह शौच धर्मका लक्षणहै जो मर्य्यादामें बर्त्तमान है २५ युधिष्ठिर ने कहा हे पितामह किस समय धर्मको करे और किस समय अर्थको करे और किस समय सुखी होना चाहिये इसको मुझसे कहो २६ भीष्मजी ने उत्तर दिया कि दिवस के तीन भाग होते हैं उन में प्रथम भाग में अर्थका सेवन करे दूसरे में धर्म को फिर काम को सेवन करे परन्तु उस के अधिकतर संगको नहीं सेवन करे २७ सब जीवों से सत्य कहना मृदु स्वभाव प्रिय भाषणकर्ता होकर ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा करे और गुरुलोगोंका अच्छी रीति से पूजन करे २८ और राज्य अधिकारमें जो मिथ्याकर्म है और राजाओं से जो आभ्यन्तरीय शत्रुता है और जोगुरूका अप्रिय काम करता है वह ब्रह्महत्या के समानहै २९ राजाओंके ऊपर शस्त्र न चलावे गौ को न मारे जो मनुष्य इन दोनों पाप कर्मों को करताहै वह भ्रूणहत्या के समान है ३० अग्निका त्याग कभी न करे वेदों का त्याग नहीं करे ब्राह्मण को दक्षिणाआदि न दे वह ब्रह्महत्या के समान है ३१ युधिष्ठिर ने प्रश्न किया कि किस प्रकारके वेदपाठी साधू हैं और किनका देना अत्यन्त सफल है और किस प्रकार के मनुष्यका अन्न भोगने के योग्य है हे पितामह इसको मुझसे समझाकर कहिये ३२ भीष्मजी बोले जो क्रोधसे रहित धर्म्म में प्रवृत्त सदैव सत्यवक्ता शान्तचित्तता में विख्यात हैं उस प्रकार के वेदपाठी ब्राह्मण साधू हैं उनका देना बड़ा पुण्यहै ३३ जो अहंकार से रहित क्षमाशील दृढ़अर्थी और पक्के जितेन्द्रिय हैं और सब जीवों के शुभचिन्तक और मित्रहैं ऐसे ब्राह्मणोंका दियाहुआ बड़ा फलदायी होताहै ३४ जोलोभसे रहित पवित्रात्मा पंडित लज्जावान् अपने कर्ममें सावधान होकर प्रवृत्तहैं उनका दियाहुआ भी महाफलदायी है ३५ जो श्रेष्ठ ब्राह्मण अंगों समेत चारों वेदों को पढ़ताहै और मांस मद्यरहित मर्यादा पालन करताहुआ शौच पूर्वक वेदपढ़ना पढ़ाना यज्ञ करना कराना दान देने आदिमें प्रवृत्त है महात्मा ऋषिलोगों ने उस को दान आदिका पात्र वर्णन कियाहै ३६ जो ब्राह्मण इस प्रकार से गुण-

वान् हैं उन को देना महाफलदायक होता है गुणवान् ब्राह्मणको दान करने वाला पुरुष सहस्रगुणे फल को पाता है ३७ इस लोक में ज्ञानशास्त्र गुरुपूजन आदिव्रत और शील से युक्त अकेलाभी ब्राह्मण पुरुषोत्तम और श्रेष्ठ होकर सम्पूर्ण कुलको तारता है ३८ जो गौ घोड़े धन और भोजन की वस्तु और इसी प्रकार अन्य सब वस्तु ऐसे प्रकारके ब्राह्मणको दान करताहै वह शरीर त्यागने के पीछे शोचसे रहित होताहै ३६ इस लोकमें उत्तम एकही ब्राह्मण सम्पूर्ण कुलभरे को तारताहै तो पूर्व्व कहेहुये गुणों से संयुक्त ब्राह्मण क्यों नहीं तारेगा हे पुत्र इस हेतुसे पात्रको निश्चय करना योग्यहै साधुओं के अंगीकृत गुणवान् ब्राह्मण को जानकर बड़े आदर भावसे अभ्युत्थान पूर्वक अपने स्थानमें लाकर विधिपूर्वक पूजनकरे ४०। ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेबहुप्राश्निकेद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे पितामह श्राद्ध देवकर्म और पितृकर्म के समय जो २मुख्य बातें देवर्षियों ने बिचार करी हैं उन को आप से सुनना चाहताहूं १ भीष्म जी बोले कि शौच करनेवाला अपने दृढ़ाचार से युक्त बड़े उपायों का करनेवाला मनुष्य दिनके पूर्वभाग में देवकर्म्मको करे और दिनके तीसरे भागमें पितृकर्म्म को करे २ और मध्याह्न के समय सबको यथायोग्य बड़ी प्रतिष्ठासे अन्न भोजन और दानदे और जो कुसमय में दान होताहै वह राक्षसों का भाग होता है ३ जिस वस्तुको उल्लंघन किया वा जिह्वाग्रसे स्वाद लिया वा कलह करके सिद्ध किया और जिसको रजस्वला स्त्री ने देखलिया उसको भी राक्षसोंकाही भाग जानो ४ हे भरतर्षभ जो भोजन बहुत कहने सुनने से तैयार हुआ वा ब्रह्मचर्य आदि व्रतसेही पुरुषने भोजन किया व कुत्तेका स्पर्श कियाहुआहो उसको भी राक्षसों का भाग जानो और जिसको किसी दुरात्मा पुरुषने भोजन कियाहै वह भी राक्षसों का भाग जानो ५ बाल वा किसीप्रकार के कीड़े जिसमें गिरपड़े हों वा छींक से दूषित होगयाहो कुत्तों का देखा हुआ जिसपर रुदन कियागयाहो तुच्छ कियागयाहो उसको भी राक्षसों का भाग जानो ६ हे राजा जो अन्न कि बिना आज्ञा का वा शूद्रका भोजन किया हुआ अथवा शस्त्रधारी वा दुरात्मा

मनुष्य से भोजन कियाहुआ होय वह राक्षसों का भागजानो ७ देवकर्म्म और पितृकर्ममें जो दूसरेका उच्छिष्ट भोजन कियाहुआ अथवा देवता अतिथि पितृ और बालक आदि को त्यागकर आपही भोजन कियाहो उसको भी सदैव राक्षसों का भाग जानो ८ और मन्त्र क्रिया आदि से रहित जो श्राद्धका भोजन तीनों वर्णवालों के हाथसे परोसाजाता है उसको राक्षसोंका भाग जानो ९ घृत की आहुति किये विना जो कुछ परोसा जाता है और जो दुराचारी पुरुषों से भोजन कियागया वहभी राक्षसोंका भागहै १० हे भरतर्षभ जो भाग राक्षसों को प्राप्त होते हैं वह वर्णन किये गये इसके पीछे दानपात्र ब्राह्मणों की परीक्षा को सुनो ११ जितने ब्राह्मण महापातकी होने के कारण बिरादरी से त्यागेहुये निर्बुद्धी और उन्मत्तहैं वह ब्राह्मण देवकर्म या पितृकर्ममें निमन्त्रणके योग्य नहीं है १२ जो मनुष्य श्वेतक्षती अर्थात् सफेद कोढ़वाला नपुंसक यक्ष्मरोगी अपस्मारी अर्थात् मृगी रोगवाला और अन्धाहोय वहभी निमन्त्रण के योग्य नहीं है १३ चिकित्सक देवलक अर्थात् वैद्य और पुजारी मिथ्या नियमी अर्थात् पाखण्डी और जो सोमके बेचनेवाले हैं वह निमन्त्रण के योग्य नहीं है १४ और गानेवाले नाचनेवाले प्लवक अर्थात् जासूस वादक अर्थात् बाजा बजानेवाले कथक अर्थात् असभ्य बोलनेवाले और योधकी अर्थात् कुश्ती लड़नेवाले ब्राह्मणभी निमन्त्रण के योग्य नहीं हैं १५ और शूद्रों को यज्ञ करानेवाले पढ़ानेवाले अथवा उनके दासहैं वहभी निमन्त्रण के योग्य नहीं हैं १६ जो ब्राह्मण मासिक लेकर पढ़ाताहै वा मासिक देकर पढ़ताहै वह दोनोंभी श्राद्धके भोजनके योग्य नहीं हैं इसहेतुसे कि वह दोनों वेदके बेचने और मोललेनेवाले हैं १७ हे राजा जो सब विद्या का जाननेवाला ब्राह्मण प्रथम प्रतिष्ठावान् कियागया और फिर शूद्रकी स्त्रीका स्वामी होजाय वह निमंत्रणके योग्य नहीं है १८ जो ब्राह्मण श्रौतस्मार्त्तकर्मोंसे रहितहैं और जो मजूरी लेकर मुर्दोंको लेजाते हैं और पतितहैं वहभी निमंत्रणके अयोग्यहैं १९ जिनको प्रथम अच्छीरीतिसे नहीं जानाहै और ग्रामीण अर्थात् देहाती हैं और जो प्रथम बेटीका पुत्र था फिर जिसके नानाने अपनी प्रतिज्ञाके अनुसार उसको अपना पुत्र बनाया वह ब्राह्मणभी श्राद्ध में निमंत्रणके योग्य नहीं है २० जो ब्राह्मण ब्याजपर करजादेताहै और ड्योढ़े से सिवाय खेती करनेवालोंको अनाज देताहै और पशुजीवोंके बेचनेकी जीविका

करताहै वह भी निमंत्रणके योग्य नहीं है २१ और हे राजा जितने ब्राह्मण स्त्री के बशीभूत हैं और बेश्याके पतिहैं और सन्ध्या वन्दन को नहीं करते हैं वह श्राद्ध में भोजन के योग्य नहीं हैं २२ हे भरतर्षभ यह श्राद्ध और दैवकर्म्म के अयोग्य ब्राह्मण वर्णनकिये अब निषेधित ब्राह्मणोंको भी निमंत्रण देनेकी आज्ञासुनो २३ जो खेती करनेवाले ब्राह्मण व्रत करनेवाले सावित्री के ज्ञाता क्रियावान् और गुणवान् होयँ वहभी निमंत्रणके योग्यहैं २४ हे तात कुलीन ब्राह्मण यद्यपि युद्धभूमि में क्षत्रियधर्मका भी रखनेवाला होय वह निमन्त्रणके योग्य है परन्तु बैश्यवृत्ति रखनेवाले ब्राह्मणको श्राद्धमें निमन्त्रण नहीं करे २५ हे राजा जो वेदपाठी और अग्निहोत्री है वह निमन्त्रण के योग्यहै २६ जो ब्राह्मण तीनोंकालमें गायत्रीका जप करताहै वा भिक्षावृत्तीवाला है और क्रियावान्है वह निमन्त्रणके योग्यहै २७ जो ब्राह्मण दिनके पूर्व भागमें धनकी प्राप्तिसे धनवान् होताहै और शीघ्रही उसके व्ययहोजानेसे दरिद्री होजाताहै और प्रातःकालही के समय धनके न मिलनेसे दरिद्री होकर मध्याह्नके समय धनकी प्राप्तीसे धनी होजाताहै और हिंसासे रहित होकर थोड़ा दोषी होताहै अर्थात् निर्द्धनहोने से दानी नहीं है वह भी निमन्त्रणके योग्यहै २८ हे राजा युधिष्ठिर जो ब्राह्मण पाखण्डी और पापी नहीं है और तर्कणा रहित अपने मेलके अनुसार घरके निश्चय होनेपर भिक्षावृत्ती करनेवालाहै वह निमन्त्रणके योग्यहै २९ व्रत न करनेवाला अर्थात् ब्रह्मचर्य्यसे रहित धूर्त्तस्त्ययन अर्थात् अपने धर्म्म कर्म्मका त्यागनेवाला जीवोंका बेचनेवाला बैश्य वृत्तीमें नियत जो ब्राह्मणहै और इसके पीछे उसने यज्ञमें सोमको पिया वह भी निमन्त्रणके योग्य है ३० जो ब्राह्मण प्रथम भयकारी कर्मोंसे धनको इकट्ठाकरके पीछेसे सबदेवता आदिका आतिथ्यकरनेवाला होजाय वह निमन्त्रणके योग्यहै ३१ जो धन कि वेदके बेचनेसे प्राप्तहोय अथवा स्त्रीका इकट्ठा किया हुआहो अथवा मीठी २ बातों से वा मिथ्या शपथ खानेसे वा नपुंसकसे प्राप्त हुआहोय वह धन पितृ और ब्राह्मणोंके देनेके योग्य नहीं है ३२ जो ब्राह्मण श्राद्धकी समाप्ती में अस्तुस्वधा आदि बचनों को नहीं कहताहै उसको गौकी मिथ्या शपथखाने का पाप होताहै ३३ हे युधिष्ठिर जब दही घृत अमावास्या मृगादिका मांस और ब्राह्मणभी मिलजाय तभी श्राद्धका समयहै ३४ श्राद्धके समाप्त होनेपर ब्राह्मणके मुखसे स्वधा बचन कहना पितरों

का महाआनन्ददायक है अर्थात् दाताको कहना चाहिये कि स्वधोच्यताम् और ब्राह्मणों को अस्तुस्वधा यह बचन कहना चाहिये और क्षत्रियके श्राद्धमें पितरःप्रीयन्ताम् यह वचनकहै अर्थात् पितृतृप्त और प्रसन्नहोयँ ३५ और वैश्य के श्राद्धसमाप्त होनेपर अक्षय्य वचन कहना योग्य है अर्थात् श्राद्ध निर्विघ्नहो और शूद्रके श्राद्ध समाप्त होनेपर स्वस्ति वचनकहै अर्थात् कल्याणहो ३६ और ब्राह्मणका प्रणव सहित पुण्याहवाचन कहा जाता है और यही पुण्याहबाचन प्रणवसे रहित क्षत्रियका किया जाताहै अर्थात् यजमान ब्राह्मणोंसे कहवावे कि यह दिन पुण्य उत्पन्न करनेवालाहो ऐसा यजमानके कहनेपर ब्राह्मणलोग प्रणव समेत संस्कृतमें कहैं कि यह दिन पुण्यकारकहो ३७ वैश्यके पुण्याहबाचन में प्रणवके स्थानापन्न देवता प्रीयतामस्तु इस बचनको कहै अर्थात् देवता प्रसन्नहों और यज्ञादि पुण्यकारीहो कर्मोंके क्रमसे बुद्धिके अनुसार क्रियाको कहताहूं उसकोभी सुनो ३८ हे भरतवंशी युधिष्ठिर ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन तीनों वर्णोंकी जातकर्मादिक क्रिया वेदोक्तमंत्रोंके अनुसार होती हैं ३९ ब्राह्मणकी मेखला मूंजकीहोती है और क्षत्रियकी मेखला मूर्वानाम बेलकीहोताहै और वैश्य की बिल्वजनाम तृण विशेषकी होती है यही वेदोक्त धर्म्म है ४० दाताके और दान लेनेवालेके धर्मकोकहताहूं इसको चित्तसे श्रवणकरो किसीवस्तुके निमित्त मिथ्या बोलनेवाले ब्राह्मणको जितना अधर्म्म होताहै उससे चौगुना क्षत्रियको और अठगुना वैश्यको होताहै ४१ जो ब्राह्मण प्रथम न्योता देनेवाले के घरमें जेंवताहै वह उत्तमहै और जो दूसरे न्योते देनेवाले के घरखाताहै वह मध्यम है ब्राह्मणका प्रथम न्योताहुआ ब्राह्मण दूसरे स्थानमें भोजन न करे जो कि दूसरे स्थानपर भोजन करने से मध्यम होताहै ऐसी दशामें बिना यज्ञकिये जो पशुहिंसाका अधर्म्म होताहै वह उसको प्राप्तहोताहै ४२ इसीप्रकार क्षत्रिय वैश्यका न्योताहुआ ब्राह्मण जोदूसरेस्थानमें भोजनकरे तो मध्यम गिनेजानेके सिवाय निरर्थक पशुहिंसाके आधे पापका भागीहोताहै ४३ हे राजा ब्रह्मचर्यकी समाप्ती होनेपर गृहस्थाश्रम में प्रवृत्तहोने के निमित्त जिस ब्राह्मणने स्नान न कियाहो और वह ब्राह्मण देवता और पितरोंके कार्यमें ब्राह्मणोंमें बैठकर अन्नको भोजन करे तो उसका पाप गौकी मिथ्या शपथखाने के समान है ४४ और जो जन्म मरणके अशौच का रखनेवाला ब्राह्मण जानबूझकर या लोभसे ब्राह्मणों में बैठ

कर भोजनकरे उसको भी गौकी मिथ्या शपथ खाने के अधर्म्म के समान पाप होताहै ४५ और जो ब्राह्मण तीर्थयात्राके बहाने से अपनी जीविका के लिये या कर्मके लिये दूसरेसे धन लेताहै या भिक्षामांगताहै उसका भी पाप गौकी मिथ्या शपथ खानेके समानहै ४६ हे युधिष्ठिर वेदका व्रत और अनुष्ठान जो ब्राह्मण नहींकरते उनको मन्त्रोक्त बुद्धिके अनुसार जो श्राद्धमें तीनोंवर्ण भोजन कराते हैं उसका पापभी मिथ्या गौके शपथ करनेके तुल्यहै ४७ युधिष्ठिरने प्रश्न किया हे पितामहजी पितृसम्बन्धी भोजन दियाजाताहै वह कैसे२ ब्राह्मणों के देने से महा फलदायक होताहै इसको कृपाकरके कहिये ४८ भीष्मजी बोले कि जिन ब्राह्मणोंकी स्त्री भोजनके पात्र और थाली में उच्छिष्ट परिशेषकी ऐसी प्रतीक्षा अर्थात् इच्छा करती हैं जैसे कि खेती के करनेवाले सुन्दर वृष्टिको चाहते हैं अर्थात् जिनके घरमें उस अन्नके सिवाय दूसरी कोई भोजनकी वस्तु नहींहै हे युधिष्ठिर तू ऐसे ब्राह्मणोंको भोजन करवा ४९ जो ब्राह्मण वेदोक्तकर्म के अनुष्ठान में प्रवृत्त क्षीणशरीर थोड़ी जीविका रखनेवाले इच्छा से भरेहुये सम्मुख आते हैं उनका भी देना बड़ा फलदायक है ५० और जिन ब्राह्मणों का वेदोक्त कर्म्मका अनुष्ठानही घर वा इसलोक में दोष दूर करनेकी सामर्थ्य और परलोक जानेका सहाराहै और केवल बड़ी आवश्यकताहीमें इच्छाको करते हैं उनका दियाहुआ बड़ा फलदायी होताहै ५१ और जो ब्राह्मण चोरोंके और शत्रुओं के भयसे पीड़ावान् इच्छायुक्त होकर भोजन करना चाहते हैं उनके देनेमें बड़ाफल होताहै ५२ क्षुधा से पीड़ित ब्रह्मचारी दरिद्रताके कारण पाखण्ड और छलसे रहित ब्राह्मणों के सम्मुख जाके मुझको दो ऐसा कहकर हाथही में भोजनको मांगते हैं ऐसे दरिद्रियोंका दियाहुआ महाफल देनेवाला होताहै ५३ देशकी किसी आपत्तिमें जिन ब्राह्मणोंकी स्त्री और धन लुटगया और वह धनके निमित्त सम्मुख आवें उनका देना बड़े फलका देनेवाला है ५४ जो ब्राह्मण कि व्रत करनेवाले नियमी और शास्त्रसे अंगीकृत हैं और उसव्रतके उद्यापन करनेकी इच्छाकरते हैं उनके निमित्त देनाभी बड़ा फलकारी होताहै ५५ जिन धर्मोंमें पाखण्डी लोगों की मर्य्यादा है उनसे अत्यन्त दूर रहनेवाले निर्बल और निर्द्धनहैं उनका दिया हुआ भी महाफलदायी है ५६ जिनका सब धन जातारहा और निर्दोष होकर दातालोगों से केवल अपने पेट भरने को चाहते हैं और स्वादुके निमित्त नहीं

मांगते उनकाभी दियाहुआ बड़ा फलदायी होताहै ५७ जो तपनिष्ठ वा तपस्वी हैं और उनमें जो भिक्षाचारी और इच्छायुक्त ५८ होकर जो चाहते हैं उनका देना बहुत से फलोंका देनेवाला है हे भरतवंशी दान की जो बड़े फल की देने वाली विधिहै उसको तुमने सुना अब जिन कर्म्मोंसे स्वर्ग और नरकोंको जाते हैं उनको भी सुनो ५६ हे युधिष्ठिर गुरू के निमित्त और भयके दूर करने के लिये जो मिथ्या बोलताहै इनदोनों कर्म्मों के सिवाय जो मिथ्या भाषणकरतेहैं वह निस्सन्देह नरकगामी हैं ६० जो मनुष्य दूसरेकी स्त्रीको हरनेवाले वा दूसरेकी स्त्री से संग करनेवाले अथवा दूसरी स्त्री को उसके यार अर्थात् जारसे मिलाने वाले दूतहैं वह नरकगामी हैं ६१ जो पुरुष दूसरेके धनको हरनेवाले वा दूसरेके धनको नाश करनेवाले अथवा दूसरे के दोषोंको प्रकट करनेवाले हैं वह नरक-गामी हैं ६२ जो मनुष्य प्याऊ, सभा, धर्म्मशाला आदि गृहों के तोड़नेवाले हैं वह नरकगामी हैं ६३ जो पुरुष अनाथ स्त्री वा भयभीत लड़की और तपस्विनी वृद्धा स्त्रीको ठगते हैं वह नरकगामी हैं जो आदमी दूसरे की आजीविका, गृह, स्त्री और मित्रको उससे पृथक् करते हैं वा आशाको छेदन करते हैं वह नरक-गामी हैं ६४ । ६५ जो पुरुष राज्यके सेवकोंकी निन्दा करनेवाले श्रेष्ठ मर्य्यादा-ओंके तोड़नेवाले दूसरे की आजीविका से अपना पोषण करनेवाले और दूसरे के मित्रोंके उपकारको भुलादेनेवाले हैं वह नरकगामी हैं ६६ जो पुरुष पाखण्डी सत्पुरुषों के निन्दक और धर्म्म चिह्नोंको दोष लगाके उनके ऊपरसे चढ़कर गि-रनेवाले हैं वह नरकगामी हैं ६७ जिनके व्यवहार मनुष्यों से बिरुद्धहैं वा नफा और वृद्धियों में भी विरुद्धहैं वह नरकगामी हैं ६८ जो आदमी द्यूतव्यवहारको करते और जीवों के मारने में प्रवृत्त वा असभ्य हैं वह नरकगामी हैं ६९ दास अथवा इच्छावान् जिनका मासिक नियत हुआ और जिन्हों ने सेवा करने में परिश्रम किया और जिसके साथमें यह प्रतिज्ञाहुई कि तुझको यह देंगे उनको जो पुरुष छलोंके द्वारा अपने स्वामी से जुदा करते हैं वह नरकगामी हैं ७० जो पुरुष स्त्री, अग्नि, पोषण के योग्य दास इत्यादि और अतिथि को त्याग करके आपही अकेले भोजन करते हैं और जिन लोगोंने देवपितरों का पूजन त्याग किया वह नरकगामी हैं ७१ वेदोंके बेचनेवाले वा वेदोंको दोष लगानेवाले और वेदोंकेही लिखनेवाले हैं वह नरकगामी हैं वेदके अशुद्ध लिखनेसे वेदके लिखने

वाले लेखकको नरकगामी कहाहै ७२ जो मनुष्य चारों आश्रम के धर्म्म और वेदकी श्रुतियों से पृथक् हैं और निन्दित कर्म्मोंसे अपना निर्वाह करते हैं वह नरकगामी हैं ७३ हे राजा जो मनुष्य चमर कंबल विष और दूध आदिके वेचने वाले हैं वह नरकगामी हैं ७४ हे युधिष्ठिर जो मनुष्य गौ ब्राह्मण और कन्याओं के कार्य्य में बिघ्नकर्त्ता होते हैं वह नरकगामी हैं ७५ और जो शस्त्र बनाने वाले बेचनेवाले और धनुषबाण के वनानेवाले हैं वह नरकगामी हैं ७६ हे भरतर्षभ जो मनुष्य शिलाओं से वा शंकुनाम कीलों से अथवा गर्त्तों से मार्गको रोकते हैं वह नरकगामी हैं ७७ और जो पुरुष उपाध्याय वा दास आर्त्त भक्तों को और रूपान्तर दशासे रहित स्त्रियोंको त्याग करते हैं वह नरकगामी हैं ७८ जो मनुष्य पशुओंको उनकी इन्द्रीमर्द्दनादि कर्म्मों से नपुंसक करते हैं वा नाथते हैं और पशुओंके बन्धन करनेवाले हैं वह नरकगामी हैं ७९ जो राजा षष्ठांश भागको लेकर चोररूप संसारके मनुष्योंकी रक्षा न करके समर्थ होकरभी दानको नहीं करते वह नरकगामी हैं ८० जो मनोरथ सिद्धकरनेवाले पुरुष ऐसे लोगोंका त्याग करते हैं जो क्षमावान्, शान्ती, दांत, प्राज्ञ और जो लोग कि बहुत समय तक साथमें रहे उनको जो त्यागते हैं वह नरकगामी हैं ८१ जो मनुष्य बालक वृद्ध और दासोंको न देकर आपही अकेले प्रथम भोजन करते हैं वह नरकगामी हैं ८२ पूर्व्व समयमें उपदेश होनेवाले यह सव नरकगामी बर्णन कियेगये अव जो लोग कि स्वर्ग्ग के जानेवाले हैं उनको कहताहूं ८३ हे राजा सव कार्य्यों में जो दैवकोही मुख्य जानते हैं उनको ब्राह्मणोंकी आज्ञाका न माननाही नाश करनेवालाहै अर्थात् जो मनुष्य ब्राह्मणों की आज्ञापर चलते हैं वह स्वर्गगामी हैं ८४ जो मनुष्य दान तप और सत्यता पूर्व्वक धर्म्मकार्य्य करते हैं वह स्वर्ग गामी हैं ८५ जो पुरुष गुरुसेवाके द्वारा तपकरके विद्याको प्राप्त करते हैं वह स्वर्गगामी हैं ८६ जिनकी कृपासे भय पाप संकट दरिद्रता और रोगोंके भयसे निवृत्त होते हैं वह मनुष्य स्वर्गगामी हैं ८७ जो पुरुष क्षमावान् पंडित और धर्मकार्यों में सहायक होकर मंगलाचार से युक्तहैं वह स्वर्गगामी हैं ८८ जो मनुष्य मधुमांस अन्यकीस्त्री और मदिरा आदिके मदसेरहित हैं वह स्वर्गगामी हैं ८९ जोमनुष्य आश्रमीलोगोंके कुलों, देशों व नगरोंके पोषण करनेवाले हैं वहस्वर्गगामी हैं ९० जो वस्त्र भूषण और खाने पीनेकी वस्तुओंके दान करनेवालेहैं और वा-

लबच्चे वालों को देनेवाले हैं वह स्वर्गगामी हैं ९१ जो मनुष्य सब हिंसाओं से रहित सबसे क्षमावान् और सबकी रक्षाके स्थानहैं वह स्वर्गगामीहैं ९२ जितेन्द्रिय मनुष्य माता पिताकी सेवाकरते हैं और भाइयों के साथ प्रीति रखते हैं वह स्वर्गवासी हैं ९३ हे राजा जोपुरुष धनी पराक्रमी और तरुण होकर जितेन्द्रिय और पंडित हैं वह स्वर्गबासी हैं ९४ जो पुरुष अपराधों के होनेपर भी प्रीतिमान् मृदुस्वभाव और मृदुस्वभावी मनुष्यों के प्यारेहोकर दूसरों के सुखदायी हैं वह स्वर्गबासी हैं ९५ जोपुरुष हजारों ब्राह्मणों के आगे परोसनेवाले हजारोंही दक्षिणा देनेवाले और हजारोंकीही रक्षा करनेवाले हैं वह स्वर्गगामी हैं ९६ जो मनुष्य सुवर्णवस्त्र गौ घोड़े रथ आदिके दान करनेवाले हैं वह स्वर्गगामीहैं ९७ हे युधिष्ठिर जो पुरुष बिवाह संबंधी भूषणादि बस्तुओं को और दास दासी वस्त्रादिकों के दानकरने वालेहैं वहस्वर्गगामी हैं ९८ जोपुरुष बिहारस्थान क्रीड़ा के बन कुयें बाग सभा प्याऊ और नगर के कोटआदि के बनाने वाले हैं वह स्वर्गगामी हैं ९९ जो पुरुष स्थान खेत ग्राम और जो २ मांगनेवाला मांगता है उन सबको देते हैं वह स्वर्गगामी हैं १०० जोपुरुष रसबीज और धान्यों को आप उत्पन्न करके दान करनेवाले हैं वह स्वर्गगामी हैं १०१ उत्तम २ कुल में उत्पन्न बहुत से शतवर्ष की अवस्थावाले पुत्र उत्पन्न करनेवाले दयावान् क्रोध के जीतनेवाले पुरुष स्वर्गगामी होते हैं १०२ हे भरतर्षभ यह देव पितृकर्म और प्रारब्ध से प्राप्त होनेवाले धनकादान धर्म्म और परलोक सम्बन्धी धर्म्म यही उत्तम कर्म का फलहै जिसको कि पूर्व्वसमय में ऋषियों ने कियाहै १०३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेभीष्मयुधिष्ठिरसंवादेधर्मस्वर्गनरकवर्णनेत्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवांअध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे भरतर्षभ भीष्मपितामह यहबात आपमुख्यता समेत मुझको समझाइये कि अहिंसावान् होने से भी ब्रह्महत्या कैसे प्राप्त होती है १ भीष्मजी बोले कि हे राजेन्द्र मैंने पूर्व्वकालमें व्यासजीसे जो पूछाथा वह मैं तुमसे कहताहूं तुम चित्त लगाकर सुनो २ मैंने व्यासजी से कहा कि हे मुनि आप वशिष्ठजी के पोतेहो मुझे आप यह समझाइये कि हिंसा रहित होकर कौनसे कर्म्म

से ब्रह्महत्या प्राप्त होती है ३ मेरे पूछनेपर पराशरजी के पुत्र व्यासजी ने सन्देह से रहित बचनको कहा ४ जो पुरुष गुणरूप और आजीविकावाले ब्राह्मण को भिक्षाके निमित्त बुलाकर कहै कि भोजन नहीं है उसको ब्रह्मघाती जानो ५ इस लोकमें जो दुर्बुद्धी मनुष्य उस ब्राह्मण की जीविका को हरता है जोकि छओं अङ्गों समेत वेदपाठी वेद वेदांगके अर्थों का ज्ञाता और समर्थ होकर उदासीन है उसको ब्रह्मघाती जानो ६ हे राजा जो पुरुष प्याससे खेदित गौओं के जल पीने में बिघ्नको डालता है उसको ब्रह्मघाती जानो ७ जो पुरुष लोकमें अच्छी रीति से जारी श्रुति को और मुनियों के बनाये शास्त्र को ठीक २ न जानकर दोषोंको लगाताहै उसको ब्रह्मघाती जानो ८ जो पुरुष अपने शरीर से उत्पन्न रूपवान् बड़ी कन्याको योग्य बरके निमित्त नहीं देताहै उसको ब्रह्मघाती जानो ९ जो अधर्म में प्रवृत्त अज्ञानी पुरुष बिना कारणके ब्राह्मण में मर्म भेदी शोक को करदे वह ब्रह्मघाती होताहै १० जो मनुष्य अन्धे लँगड़े विक्षिप्त मनुष्यों के धनको हरताहै वह भी ब्रह्मघाती जानो ११ जो पुरुष मोहसे आश्रम वन ग्राम अथवा पुरमें अग्निको लगावै वह भी ब्रह्मघाती है १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेब्रह्मघ्नकथनेचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरने कहा हे भरतर्षभ महाज्ञानी भीष्मजी तीर्थोंका दर्शन स्नान और उनकी कथाओं का सुनना कल्याणकारी है इसी हेतुसे उसको मूल समेत सुनना चाहताहूं १ हे महाबुद्धिमान् पवित्रात्मा भीष्मजी जो पवित्र २ तीर्थ हैं उनको मूल समेत बर्णन कीजिये मैं निश्चय करके सुनूंगा २ भीष्मजी बोले कि हे बड़े तेजस्वी अङ्गिराऋषि का वर्णन कियाहुआ तीर्थों का संग्रह है तुम उसके सुनने के योग्यहो तेरा कल्याणहो तू उत्तम धर्मोंको प्राप्तकरेगा ३ तेजब्रतवाले गौतमऋषि ने तपोवन में बर्त्तमान अङ्गिराऋषि के पास जाकर पूछा ४ कि हे भगवन् मुझको तीर्थोंके बिषय में बहुतसा सन्देह है उसको पूर्णता समेत सुना चाहताहूं आप कहने के योग्यहैं ५ हे बड़े ज्ञानी मुनीश्वरजी उन बड़े २ तीर्थों में स्नान करने से दूसरे जन्ममें क्या फल होता है उसको यथार्थतासे कहिये ६ अङ्गिराऋषि बोले कि निराहार निर्मल पुरुष तरंगोंकी मालायुक्त बितस्ता और

चन्द्रभागा नदियों में सातदिन स्नान करके मुनियों की गतिको पाताहै ७ जो नदियां कि काश्मीर मण्डलमें महानद के बीचमें गिरती हैं उन नदियों में और सिन्धुनद में बलवान् मनुष्य स्नानको करके स्वर्ग को पाताहै ८ पुष्कर प्रभास नैमिष, सागरोदक, देविका, इन्द्रमार्ग और स्वर्णबिन्दुनाम तीर्थों में स्नानकरके ९ शरीर को त्याग बिमानमें बैठ अप्सराओं से स्तुतिमान होकर जगायाजाता है सावधान पुरुष हिरण्यबिन्दु तीर्थ में स्नानकरके १० पवित्र और स्तुतिमानहो कुशेशय में स्नानकरके देवताके भावको पाकर निष्पाप होजाताहै और गन्धमादन पर्वतके समीप इन्द्रतोया तीर्थ को पाकर ११ करतोया और अंकुरंगतीर्थ पर तीनरात्रि निवास करनेवाला सावधान पवित्र मनुष्य स्नानकरके अश्वमेध, यज्ञके फलको पाताहै १२ गङ्गाद्वार, कुशावर्त्त, बिल्वक, नीलपर्बत और कनकल तीर्थमें स्नानकरके निष्पाप होकर स्वर्गको जाताहै १३ और हिंसासे रहित क्रोधका जीतनेवाला सत्यसंकल्प ब्रह्मचारी पुरुष अपांह्रद तीर्थमें स्नानकरके अश्वमेधयज्ञके फलको प्राप्तहोताहै १४ जिस उत्तर दिशा में महेश्वरजी के स्वर्ग मृर्त्य पाताल इनतीनों स्थानोंमें भागीरथी गंगाजी गिरती हैं १५ वहां जो मनुष्य निराहारहोकर एक महीनेतक उसमें स्नानकरताहै वह देवताओंके दर्शन करता है सप्तगंगा त्रिगंगा और इन्द्रमार्ग में जो पितरोंका तर्पण करता है वह अमृत का भोजनपाताहै परन्तु फिर जन्मको लेताहै जो अग्निहोत्र करनेवाला पवित्र पुरुष महाआश्रम तीर्थमें स्नान करके १६ । १७ एक महीनेतक निराहाररहै वह एकही महीनेमें सिद्धीको पाताहै लोभसे रहित भृगुतुंग महाह्रदको स्पर्श करके जो तीन रात्रि निराहार रहताहै वह ब्रह्महत्या से छूटजाताहै १८ जो उपायकरके बलाका तीर्थमें कन्याकूप को स्पर्श करताहै वह देवताओं में भी कीर्त्तिको पाकर विराजमान होताहै १९ । २० जो पुरुष देवता तीर्थ वा सुन्दरिका ह्रद और अश्विनी तीर्थ में स्नान करताहै वह शरीर त्यागने के पीछे तपस्वी रूपको पाता है २१ और एक पक्षतक निराहार रहनेवाला निर्मल मनुष्य महागंगा और कृत्तिकांगारक में स्नान करके स्वर्ग को पाता है २२ वैमानिक और किंकणीक आश्रममें निवास पूर्व्वक स्नान करके अप्सराओं समेत कामचारी होकर स्वर्ग में शोभाको पाता है २३ कालिकाश्रम को प्राप्त होकर क्रोधरहित ब्रह्मचारी विपाशा तीर्थ में स्नान आचमन तर्पण करनेवाला मनुष्य तीनरात्रि निवास कर

के संसारके बन्धनसे छूटताहै २४ जो निर्मल मनुष्य कृत्तिकाओं के आश्रम में स्नानकर पितृतर्पण पूर्व्वक महादेवजी को प्रसन्न करता है वह स्वर्गको पाताहै २५ जो पवित्र मनुष्य महापुर तीर्थ में तीनरात्रि निवास पूर्व्वक स्नान करता है वह स्थावर जंगम जीवों के और मनुष्यों के अनेक भयों से निवृत्त होता है २६ देवदारु बन में स्नान तर्प्पण कर सातरात्रि निवास करनेवाला मनुष्य निष्पापहोकर देवलोक को जाताहै २७ जो पुरुष शरस्तम्ब कुशस्तम्ब द्रोण और शर्मपद झिरने में स्नानकरताहै वह अप्सरागणों से सेवित होताहै २८ चित्रकूट जनस्थान और मन्दाकिनी के जल रूपी तीर्थों में स्नान करके निराहार रहने वाला मनुष्य राजलक्ष्मी से सेवनकिया जाताहै २९ जो श्यामाके आश्रम को जाकर निवास पूर्व्वक अभिषेक करता है वहां इसरीति से एक पर्यन्त निराहार रहनेवाला पुरुष अन्तर्द्धान फल अर्थात् गन्धर्वोंके भोगोंको पाताहै ३० कौशिकी तीर्थको प्राप्तहोकर निर्लोभ बायुका भक्षण करनेवाला मनुष्य इक्कीस दिनमें स्वर्गको जाताहै ३१ जो मनुष्य मतंग की बापी और अनालंब वा अन्धकनाम सनातनतीर्थ में स्नान करताहै वह एकरात्रि में शुद्धहोताहै ३२ जो जितेन्द्रिय पुरुष नैमिष और स्वर्ग तीर्थ में स्नान करताहुआ एक मास पितृ तर्पणको करताहै वह शुद्धहोकर यज्ञके फलको पाताहै ३३ जो पुरुष गंगाह्रद और उत्पला वनतीर्थ में स्नानकरके एक मासतक पितृतर्पण करता है वह अश्वमेध यज्ञके फलको पाताहै ३४ जो पुरुष कालिंजरपर्वत और गंगा यमुनाके तीर्थ में स्नान पूर्व्वक एक मासतक पितरों का तर्प्पण करता है वह अश्वमेध यज्ञके फलको पाताहै ३५ जो पुरुष षष्ठिह्रद में स्नान करता है उसको अन्नदानसेभी अधिक फल मिलताहै हे भरतर्षभ माघ महीनेमें तीन करोड़ दशहजार तीर्थ ३६ प्रयागजी में इकट्ठे होते हैं उत्तमव्रती सावधान मनुष्य माघमहीने में प्रयागजी में स्नानकरके निर्मलतासे स्वर्गको पाताहै ३७ जो पवित्र मनुष्य मरुद्गण और पितरोंके आश्रममें स्नानकरके वैवस्वत तीर्थमें स्नान करता है वह पवित्रता में तीर्थरूप होताहै इसीप्रकार ब्रह्मतरुपर जाकर भागीरथीमें स्नानतर्पण करताहुआ ३८ । ३९ एक महीनेतक हजारव्रत करके सोमलोकको पाता है ४० उत्पादक और अष्टावक्र तीर्थ में स्नानकरके तर्पण करताहुआ बारहदिन निराहार रहने वाला पुरुष नरमेध यज्ञके फलको पाताहै ४१ गयातीर्थ में प्रेतशिलापर पहिली

ब्रह्महत्या को दूरकरके निर्विन्दनाम प्रेत पर्व्वतपर दूसरी ब्रह्महत्या को त्यागकर क्रौंचपद्यपर तीसरी ब्रह्महत्या का नाशकरके शुद्धहोताहै ४२ कलविंक तीर्थ में स्नानकरके बहुतसे जलकी प्राप्तिहोती है जो मनुष्य अग्निपुरमें स्नान करताहै वह अग्निकन्याके पुरमें निवासकरताहै ४३ जो पुरुष करवीर पुरमें स्नानकरके बिशालतीर्थमें तर्पणादिक करताहुआ देवह्रद में स्नानकरताहै वह ब्रह्मरूप शोभाको प्राप्तहोताहै ४४ हिंसारहित जितेन्द्रियपुरुष पुनरावर्त्तनन्दा और महानंदा को सेवनकरके इन्द्रके नन्दनबनमें अप्सराओंसे सेवित कियाजाताहै ४५ जो सावधान पुरुष कार्त्तिककी पूर्णमासी को उर्बशीतीर्थ में जाकर बुद्धिके अनुसार लौहित्य तीर्थमें स्नानकरताहै वह पुण्डरीक यज्ञके फलको पाताहै ४६ और रामह्रदमें स्नानकर बिपाशातीर्थमें तर्पणकरता बारहदिनतक निराहार रहनेवाला पुरुषपापसे मुक्त होताहै ४७ जो मनुष्य पवित्रचित्तहो महाह्रद में स्नानकरता हुआ एकमहीने निराहार रहताहै वह जमदग्निजीकी गतिको पाताहै ४८ सत्य संकल्प हिंसारहित मनुष्य विंध्याचल में शरीरको संतप्तकर गुरुकी आज्ञानुसार तपमें प्रवृत्तहोकर एकमहीने में सिद्धहोताहै ४९ नर्म्मदा और सूर्पारक तीर्थ में स्नान करताहुआ एक पक्षभर निराहाररहनेवाला राजपुत्रहोताहै ५० जितेन्द्रिय शांतचित्त मनुष्य सावधानी से तीनमहीनेमें और जंबूमार्ग तीर्थमें एकही रात्रि के मध्यमें सिद्धीको पाताहै ५१ कोकामुखतीर्थ में स्नानकरताहुआ अंगुलिकाश्रम में शाकाहारी और चीर बस्त्रधारी होकर दश कुमारी को पाताहै ५२ जो मनुष्य कन्याह्रद तीर्थमें निवासकरताहै वह यमलोकको त्यागकर देवलोक को जाताहै ५३ हे महाबाहो प्रभासक्षेत्र में अमावास्याके दिन समाधि धारण करनेवाला मनुष्य एकही रात्रिमें सिद्धीको पाकर अविनाशी होजाताहै ५४ उज्जानक आर्ष्टिषेण और पिंगाके आश्रम में स्नानकरके सब पापोंसे छूटजाताहै ५५ कुल्यातीर्थ में स्नानकर अघमर्षण मन्त्रको जपकरके तीनरात्रि निवास करनेवाला मनुष्य अश्वमेध यज्ञके फलको पाताहै ५६ पिंडारक तीर्थ में स्नानकरके एक रात्रि निवास करनेवाला पवित्र मनुष्य प्रातःकालही अग्निहोत्र के फल को पाता है ५७ इसी प्रकार पवित्र मनुष्य धर्म्मारण्य से शोभित ब्रह्म सरोवर पर जाकर स्नान करनेसे पुण्डरीक यज्ञके फलको पाताहै ५८ मैनाकपर्व्वत पर स्नान संध्योपासनादि पूर्व्वक एक महीनेतक कामदेवको जीतकर सब यज्ञोंके

फलको पाताहै ५९ भ्रूणहत्या करनेवाला पुरुष कालोदक नन्दिकुंड और उत्तर मानसनाम तीर्थपर जाकर स्नान करनेसे उस हत्यासे छूटताहै ६० जो पुरुष नन्दीश्वरकी मूर्त्तिका दर्शन करके सब पापोंसे दूर होताहै वह स्वर्गमार्ग में स्नान करके ब्रह्मलोक को जाताहै ६१ हिमालयपर्व्वत शिवजीका श्वशुर सब रत्नोंकी खान सिद्ध चारणों से सेवित विख्यात है ६२ वेदान्तका ज्ञाता जो ब्राह्मण जीवनको नाशमान जानकर बुद्धिके अनुसार अनशन व्रत करताहुआ उस पर्वत पर देवता और मुनियोंको नमस्कार करके अपने शरीरको त्यागताहै वह शुद्ध सनातन ब्रह्मलोक को जाताहै ६३ । ६४ जो मनुष्य इच्छा क्रोध लोभको जीत कर तीर्थ में निवास करता है उस तीर्थयात्रा से उसको अप्राप्त बस्तु कोई नहीं होती है ६५ जो तीर्थ कि न मिलनेके योग्य दुर्गम और बिषम मार्गवाले हैं वह सब तीर्थ दर्शन की इच्छासे चित्तसेही प्राप्त करने के योग्य हैं ६६ जैसे कि यह तीर्थोंका सेवन यज्ञोंके फलका दाता पापोंका नाशकर्त्ता स्वर्ग्गमें पहुंचानेवाला अपूर्व्व है इसीप्रकार यह तीर्थ स्नान भी वेदोंकी गुप्तबातों का और पवित्रताका प्राप्त करनेवालाहै ६७ द्विजन्माओं में जो साधू होकर अपना भला चाहताहै उसको यह तीर्थमाहात्म्य देना योग्यहै और शिष्य समीपी और मित्रों को सुनावै ६८ यह तीर्थोंका माहात्म्य बड़ेतपस्वी अंगिराऋषिने गौतमऋषिकोदिया और काश्यपऋषि समेत गौतमऋषिने बर्णन किया ६९ हे पवित्रात्मा क्षत्रियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर यह तीर्थ माहात्म्य महर्षियों से पाठ करने के योग्यहै जो पवित्र मनुष्य धर्म्म में प्रवृत्त चित्त होकर इसको जपताहै वह स्वर्ग्गको पाताहै ७० जो मनुष्य अङ्गिराऋषि के अङ्गीकृत इस गुप्ततीर्थ माहात्म्य को सुनेगा वह उत्तम कुलमें उत्पन्न होगा और पिछले जन्मोंका भी स्मरण करनेवाला होगा ७१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेअंगिरसस्तीर्थयात्रायांपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले कि भाइयों और अन्य महात्माओं के साथ बैठे हुये राजा युधिष्ठिरने उन भीष्मजीसे प्रश्नकिया जो कि बुद्धिमें बृहस्पतिजी के समान क्षमा में ब्रह्माके समान पराक्रममें इन्द्रके तुल्य तेजमें सूर्यके समान ऐसे महापराक्रमी युद्धमें अर्जुनके हाथसे घायल गांगेयजी थे १ । २ बीरशय्या पर सोयेहुये अन्त

समय में मोक्षपदके अभिलाषी भरतवंशियों में श्रेष्ठ भीष्मजी के दर्शनकी इच्छा से महर्षीलोग आये ३ उनके नाम ये हैं अत्रि, बशिष्ठ, भृगु, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, अंगिरा, गौतम, अगस्त्य, बड़े जितेन्द्रियसुमति ४ बिश्वामित्र, स्थूलगिरा, संवर्त्त, प्रमत्ति, दम, बृहस्पति, शुक्र, ब्यास, च्यवन, काश्यप, ध्रुव ५ दुर्बासा, जमदग्नि, मार्कण्डेय, गालव, भरद्वाज, रैभ्य, यवक्रीत, त्रित ६ स्थूलाक्ष, शवलाक्ष, कण्व, मेधातिथि, कृश, नारद, पर्व्वत, सुधन्वा, एकत, द्वित ७ नितंभू, भुवन, धौम्य, शतानन्द, कृतव्रण, परशुराम, कच इत्यादि सब महर्षीलोग महात्मा भीष्मजीके दर्शनकोआये और युधिष्ठिरने अपने भाइयोंसमेत उन सब आयेहुये महात्मा महर्षियों को बुद्धिके अनुसार यथायोग्य क्रमसे पूजन किया तदनन्तर उन पूजित और सुखपूर्व्वक बैठे हुये महर्षियों ने ८। १० भीष्मजी से सम्बन्ध रखनेवाली अमृतरूप चित्तकी आकर्षण करनेवाली अनेककथा कहीं तब उन पवित्रात्मा महर्षियों की कहीहुई कथाको सुनकर ११ भीष्मजी ने बड़ी प्रसन्नता से युक्त अपनेको स्वर्ग में निवासी जाना इसके पीछे वह सब महर्षी भीष्मजी और पाण्डवोंको पूछकर १२ सबके देखतेही देखते गुप्तहोगये तब उन अन्तर्द्धान होनेवाले ऋषियोंको पांडवलोगोंने बारम्बार नमस्कारकरके स्तुतिकरी १३ फिर महाप्रसन्नचित्त होकर उन सब कौरवोंमें श्रेष्ठ महासाधु भीष्मजी के १४ पास ऐसे नियतहुये जैसे कि मन्त्रकेज्ञाता मनुष्य उदय होनेवाले सूर्यके सम्मुख वर्त्तमान होते हैं उनऋषियों के प्रभावके प्रतापसे सब दिशाओंको प्रकाशमान देखकर१५ सब पाण्डवों ने बड़ा आश्चर्य किया और उन भीष्मजी के साथ उन ऋषियों के बड़े माहात्म्यको बिचारकर उनसे सम्बन्ध रखनेवाले इतिहास बर्णनकिये १६ वैशम्पायन बोले कि धर्मपुत्र पाण्डव युधिष्ठिरने कथाके समाप्त होनेपर भीष्मजी के चरणोंको शिरसे दण्डवत् करके धर्मसम्बन्धी प्रश्नकिया १७ हे पितामह कौन से देश नगर आश्रम पर्वत और नदियां महापुण्यकारी जानने के योग्य हैं १८ भीष्मजी बोले हे युधिष्ठिर इस स्थानपर एक प्राचीन इतिहासको कहता हूं जिस में शिलोञ्छवृत्ती रखनेवाले ब्राह्मण और सिद्धका प्रश्नोत्तर रूप सम्वाद है १९ कोई उत्तम ब्राह्मण पर्व्वतों से अलंकृत पृथ्वीको बारम्बार परिक्रमा करके किसी शिलोंछवृत्तीवाले श्रेष्ठ कुटुम्बी के घरपर आया २० और वहां बहुत सत्कारपूर्वक पूजित होकर रात्रिको निवास किया २१ और प्रातःकाल के सन्ध्यावंदनादिक

कर्मों को उस शिलवृत्ती ब्राह्मणने किया फिर उस कर्म्म से निवृत्त होकर उस सिद्ध अतिथि के सम्मुख गया २२ तब सुखपूर्व्वक दोनों मिले फिर उन दोनों महात्माओं ने वेदोक्त वह शुभ कथा बर्णन करीं जो कि वेदके अङ्गों से विहित थीं २३ फिर उस बुद्धिमान् शिलोंछवृत्तीवाले ब्राह्मणने कथा के अन्तपर बड़ी युक्तिपूर्व्वक उस सिद्ध को आमन्त्रण करके यही प्रश्न किया जोकि तुमने मुझ से कियाहै २४ शिलवृत्तीने कहा कौनसा देश नगर पर्व्वत नदी महापुण्यकारी होकर जानने के योग्य हैं उनको आप बर्णन कीजिये २५ सिद्धने उत्तर दिया कि नदियों में उत्तम भागीरथी गंगा जिन देशों के मध्यमें होकर जाती है वह देश उत्तम हैं और उस देशके नगर पर्व्वत और आश्रम भी महाफल के देने वाले हैं २६ जो मनुष्य गंगाजी का सेवन करता है वह जिस गतिको पाताहै वह गति तप, ब्रह्मचर्य, यज्ञ और त्यागसे भी नहीं प्राप्त होसक्ती है २७ जिन शरीरधारियों के अङ्ग श्रीगंगाजी के जलों से स्पर्श होकर गंगाजी में नियत हैं वह स्वर्ग से फिर पृथ्वीको नहीं गिरते २८ जिन शरीरधारियों के सम्पूर्ण काम गंगाजलसे होते हैं हे ब्राह्मण वह मनुष्य पृथ्वीको त्याग करके स्वर्ग में नियत होते हैं २९ जो मनुष्य पूर्वअवस्था में पापकर्म करके गंगाजीका सेवन करते हैं वह भी उत्तमगति को पाते हैं ३० गंगाजी के पवित्र जलों से स्नान करनेवाले शान्तचित्त मनुष्यों को जो पुण्यफल की वृद्धि होती है वह सैकड़ों यज्ञों से भी नहीं होती है ३१ जबतक मनुष्यके हाड़ गंगाजी के जलों में नियत वर्त्तमान रहते हैं वह उतनेही हजारबर्षतक स्वर्गलोक में प्रतिष्ठा पूर्व्वक निवास करता है ३२ जैसे कि सूर्य्य उदयाचल पर्व्वतपर घोरअंधकारको दूरकरके प्रकाशमान होताहै उसीप्रकार गंगाजी से अभिषिक्त मनुष्यभी पापों को दूरकरके प्रकाशमान होताहै ३३ जैसे कि चन्द्रबिन रात्रि और पुष्पों से रहित वृक्ष अशोभित होते हैं उसीप्रकार गंगाजलों से रहित देश और दिशा भी अशोभित और अप्रकाशित होती हैं ३४ जैसे कि धर्मज्ञान रहित सब वर्णाश्रम और सोमकेबिना यज्ञ कल्याणकारक नहीं होते उसी प्रकार यह जगत् भी श्रीगंगाजी के बिना होताहै ३५ जैसे सूर्य्य से रहित आकाश और पर्व्वतों से रहित पृथ्वी और बायु से रहित अन्तरिक्ष निस्सन्देह उसीप्रकार श्रीगंगाजी से रहित देश और दिशा हैं ३६ तीनोंलोकों के जो जीवमात्र हैं वह सब श्रीगंगाजी के उत्तम जलों से

तृप्तता को पाते हैं ३७ जो मनुष्य सूर्य्य से संतप्त कियेहुये गंगाजल को पान करताहै वह गौको भोजन करवाकर उसके गोबरके कणों के भोजन करनेवाले व्रतसे अधिकहै ३८ जो शरीर पवित्रकरनेवाला मनुष्य हजार चान्द्रायण व्रतों को करे उनसे भी अधिक गंगाजल पान करने से शुद्धी होती है ३९ जो मनुष्य गंगाजी में एक महीने तक खड़ारहै वह उससे भी अधिक फलवाला होता है जो एकहजार युगोंतक एक चरणसे खड़ारहै ४० जो मनुष्य इच्छानुसार गंगा पर नियत रहै वह एकहजार युगतक औंधे शिर से लटकनेवाले से भी अधिक फलभागी होता है ४१ हे ब्राह्मणोत्तम जैसे अग्नि में गिरीहुई रुई क्षणमात्र में भस्म होजाती है उसीप्रकार गंगाजी में स्नानकरनेवाले के सब पाप दूर होजाते हैं ४२ इस लोक में दुःखसे पीड़ित चित्त और उपायों के निश्चय करनेवाले जीवोंकी गति गंगाजी से अधिक नहीं है ४३ जैसे कि गरुड़ के देखने से सर्प्प निर्विष होजाते हैं उसीप्रकार गंगाजी के दर्शनसे सब पापों से रहित होताहै ४४ जो कोई मनुष्य प्रतिष्ठावान् हैं अथवा अधर्म्मवान् हैं उन सब का रक्षास्थान और आनन्दपूर्व्वक पापोंकी दूर करनेवाली श्रीगंगाजी हैं ४५ बड़े भारी पापों से घिरे हुये नरकमें गिरनेवाले नीच मनुष्यों को गंगाजी के सेवन से गंगाही पार उतारनेवाली है ४६ जो मनुष्य गंगाजीको सदैव जाते हैं वह निश्चयकरके देवता समेत इन्द्र और मुनियों से भाग पानेवाले हैं ४७ हे ब्राह्मण जो नीच मनुष्य नम्रता और आचारसे रहित अकल्याण रूपहैं वह गंगाजी पर निवास करने से महाकल्याण रूप होजाते हैं ४८ जैसे देवताओं का अमृत पितरों का स्वधा और नागों का सुधा होताहै उसीप्रकार मनुष्यों का गंगाजल होताहै ४९ जैसे क्षुधासे पीड़ावान् बालक अपनी माता के पास नियत होतेहैं उसीप्रकार इसलोक में अपना कल्याण चाहनेवाले शरीरधारी गंगाजीकी उपासना करते हैं ५० जिसप्रकार सबलोकोंमें ब्रह्मलोक उत्तम कहाजाताहै उसीप्रकार इसलोक में नदियोंमें श्रेष्ठ गंगाजी सब स्नान करनेवालों के लिये श्रेष्ठ कहीजाती हैं ५१ जैसे कि भोजनकी इच्छाकरनेवाले देवताओं की कामधेनु और पृथ्वी हैं उसी प्रकार सब शरणागतजीवों की कामधेनु श्रीगंगाजी हैं ५२ जैसे सत्रादिक यज्ञों के द्वारा देवता चन्द्रमा वा सूर्य्यमें वर्त्तमान अमृत से जीवते रहते हैं उसीप्रकार मनुष्य भी गंगाजल से जीवते हैं ५३ गंगाजी के किनारोंसे उठीहुई रजसे भरा

हुआ यह लोक अपने को ऐसा प्रकाशमान मानताहै जैसा कि स्वर्ग में बास करनेवालों को समझताहै ५४ जो मनुष्य गंगाजी के किनारे की मृत्तिका को अपने मस्तकपर धारण करताहै वह अपने अपराधरूपी अन्धकारों के दूरकरने को सूर्य्यके निर्मलरूपको धारण करताहै ५५ जब गंगाजीके किनारेकी शीतल वायु मनुष्य को स्पर्श करती है वह शीघ्रही उसके पापको दूरकरती है ५६ द्यूत और मद्यपान आदि दुर्व्यसनों के दुःखों से पीड़ावान् अथवा आसन्न मृत्यु मनुष्य के उनदुःखोंको गंगाजी के दर्शनकी प्रीति दूरकरदेती है ५७ इन गंगाजी ने अपने तीर निवासी हंस कोक और अन्य अनेकप्रकारके पक्षियोंके शब्दोंसे गन्धर्वों को और किनारों से पर्व्वतों को प्रसन्न कियाहै ५८ हंस आदि अनेक प्रकारके नानापक्षियों से संयुक्त गौवोंसे व्याप्त गंगाजी को देखकर स्वर्ग भी लज्जायुक्त होताहै ५९ सब पदार्थों के भोगी स्वर्गमें निवासकरनेवाले जीवों की ऐसीप्रीति नहींहोती है जैसी कि श्रीगंगाजी के किनारेपर बसनेवालोंकी होती है ६० इसलोकमें कर्म्म मन वाणी से उत्पन्न पापोंमें फँसेहुये मनुष्य निस्सन्देह गंगाजी के दर्शन करनेसे पवित्र होजातेहैं ६१ जो मनुष्य श्रीगंगाजीके स्नान दर्शन और स्पर्शोंको करते हैं वह सातपूर्व्वके और सातपरेके पुरुषोंको तारकर उनसे भी परपितरों को तारतेहैं ६२ जो पुरुष अपनी प्रीतिसे गंगाके माहात्म्य को सुनता जलकोपीता और स्पर्शको करता देखता स्नानकरताहै उसके दोनों कुलोंको श्रीगंगाजी तारदेती हैं ६३ दर्शनसे स्पर्श करनेसे तथा गंगा गंगा इस शब्दके कीर्त्तनसे हजारों महापातकी लोगोंको श्रीगंगाजी तारती हैं ६४ जो मनुष्य अपने जन्म जीवनको और शास्त्रको सफल करनाचाहै वह श्रीगंगाजी के किनारेपर जाकर देवता और पितरों का तर्पणकरे ६५ पुत्र धन और कर्मोंसे भी जिसफलको मनुष्य नहीं पासक्ता सो श्रीगंगाजी के प्राप्तहोनेसे पाताहै ६६ जो मनुष्य समर्थ होकर पवित्र जलवाली गंगाजी का दर्शन नहीं करते हैं वह इसलोक में मृतक लंगड़े और जन्मके अन्धोंकी समान हैं ६७ जो गंगाजी देवताओं समेत इन्द्र और त्रिकालज्ञ महर्षियोंसे सेवितहैं उनका सेवन कौन नहीं करैगा ६८ जो गंगाजी चारों आश्रमियों की और विद्वान्लोगों की रक्षा स्थान हैं उन गंगाजी का आश्रय कौन नहीं करेगा ६९ श्रेष्ठ मनुष्यों का अंगीकृत सावधान देह त्यागनेका इच्छावान् पुरुष मन बचन और श्रद्धासे श्रीगंगाजी

को स्मरणकरताहै वह उत्तमगति को पाताहै ७० जो मनुष्य इसलोकमें देह के त्यागनेतक गंगाजी के समीप निवास करताहै वह व्याघ्रादि पशु और पिशाचादिसे निर्भयहोकर ब्रह्महत्यादिक पापों से निवृत्तहोके किसी राजासे भी भय को नहीं पाता है ७१ इस महापवित्र आकाश से गिरनेवाली श्रीगंगाजी को अपने उत्तम शिरपर धारणकिया और उसीको सब देवता स्वर्ग में भी सेवन करते हैं ७२ गंगाजी के तीन निर्मलमार्गों से तीनोंलोक अलंकृत हैं जो पुरुष उसके जलका सेवन करताहै वह आनन्दपूर्वक निवास करताहै ७३ जिसप्रकार स्वर्गमें देवताओं की ज्योति सूर्य्य है पित्रोंकी चंद्रमाहै और मनुष्योंकी ज्योति राजेन्द्रहै उसीप्रकार नदियोंकी ज्योति श्रीगंगाजी हैं ७४ माता पिता पुत्र स्त्री और धनसे रहित मनुष्यका दुःख ऐसा नहीं होता जैसा कि गंगाजी से बिमुख रहनेका दुःखहै ७५ ब्रह्मलोकके बिषय और यज्ञसे प्राप्तहोनेवाले स्वर्गके बिषयोंसे वा पुत्र और धनकी प्राप्ती से ऐसीप्रसन्नता नहीं होती है जैसी कि प्रसन्नता श्री गंगाजी के दर्शनसे होती है ७६ जैसे कि पूर्ण चन्द्रमाके देखने से मनुष्यों की दृष्टिको आनन्द होता है उसीप्रकार स्वर्ग्ग पृथ्वी और पाताल में बर्त्तमान श्री गंगाजीके दर्शन से जीवधारियों की दृष्टिको आनन्द होताहै ७७ गंगाजी में श्रद्धापूर्व्वक चित्त लगानेवाला नेष्ठावान् पुरुष जो उसीको सर्वोत्तम स्थान समझताहै और भक्तिसे गंगाजीके समीप बर्त्तमान है वह उसके स्वरूपको पाता है ७८ सत्पुरुषोंका बचनहै कि पृथ्वी आकाश और स्वर्गमें नियत नानाप्रकार के सब जीवधारियोंको गंगास्नान करना योग्यहै ७९ धर्म्मका वृद्धिस्थान होने से उन गंगाजीकी शुभकीर्त्ति लोकों में प्रसिद्धहै जिन्होंने राजासगरके भस्मीभूत पुत्रोंको इसलोकसे स्वर्ग्ग में पहुंचाया ८० बायुसे प्रेरित अच्छे उठायेहुये अत्यन्त मनोहर और शीघ्रगामी श्रीगंगाजी की तरंगोंसे पवित्र और प्रकाशमान मनुष्य सूर्य्यरूप होते हैं ८१ दूध और घृत जो यज्ञोंके हव्यहैं उनके धारण करनेवाले जो बड़ेभारी यज्ञहैं वह स्वर्ग्गादिकके फलके देनेवाले हैं उनको भी शीघ्रगामी गंगाजी का स्नान महा कठिनता से होताहै उस गंगाजीपर जाकर जो लोग शरीरको त्यागकरते हैं वह पण्डितलोग देवताओं की समानता को प्राप्तहोते हैं ८२ इन्द्रसमेत देवतामुनि और मनुष्यों से सेवित यह श्रेष्ठ यश से भरीहुई गंगाजी जिसके द्वारा देवताओंकारूप और सौभाग्य प्राप्तहोताहै और

अन्धे विक्षिप्त और निर्द्धनलोगों को सब इच्छाओं से पूर्णकरती है ८३ भोज्य वस्तुओंकी और पशुओं की दाता ब्रह्मसे मिलानेवाली महापवित्र तीनोंमार्गों में बर्त्तमान तीनोंलोकोंकी रक्षक श्रीगंगाजीकी जिन्होंने शरणलीनी वह अवश्य स्वर्गको गये ८४ जो मनुष्य गंगातटपर निवासकर गंगाजी का दर्शन करताहै उस मनुष्यको देवता सुखदेते हैं और गंगाजी के दर्शन और स्पर्श से प्रतिष्ठापानेवाले दूसरे देवता उस मनुष्यको उत्तमगति दिखाते हैं ८५ मोक्षदेने में समर्थ कृष्णकी माता देवकीरूप पृथ्वी और सरस्वतीरूप बहती सबसेपरे कल्याणरूप वृद्धिसेयुक्त षडैश्वर्य्यकी स्वामिनी आनन्दरूप प्रकाशक सब जीवों की प्रतिष्ठारूप श्रीगंगाजीको जो पुरुष प्राप्तहैं वह स्वर्ग को प्राप्तहैं ८६ पूर्व्व समयमें जिसकी कीर्त्ति आकाश स्वर्ग पृथ्वीदिशा और विदिशा में वर्त्तमान है उस नदियों में श्रेष्ठ श्रीगंगाजीके जलोंको सेवनकरके सब मनुष्य आनन्दोंको भोगते हैं ८७ यह गंगाजी हैं इस भावसे दूसरोंके दर्शन करनेवालों की प्रतिष्ठा नियमके साथकरे तो गंगाही के समान होती है कार्त्तिकेय सेनापति और सुवर्णकी उत्पत्ति स्थान धर्म्म अर्थ कामकी देनेवाली जलबाहिनी पापों की दूर करनेवाली गंगाजी जिनका कि जल सम्पूर्ण स्थावर जंगम जीवमात्रोंको प्याराहै वह प्रातःकाल के समय आकाश से पृथ्वी में उतरी हैं तात्पर्य्य यह है कि प्रातःकालके समय गंगाका स्नान करना अत्यन्त श्रेष्ठ है ८८ हे राजा वह गंगाजी प्रकाशमान मेरुनाम पर्ब्बत या हिमालय की पुत्री और महादेवजी की भार्य्या स्वर्ग और पृथ्वीका भूषणरूप पृथ्वीपर शुभअंश और बशिष्ठ इन तीनों लोकोंको पुण्यकी देनेवाली है ८९ धर्मद्रवा तेजरूप धारा रखनेवाली घृतकी समान तेजस्वी बड़ी २ तरंगों और ब्राह्मणों से शोभायमान स्वर्गकी पोषण करने वाली स्वर्गमेंही नियत वह गंगाजी मेरुपर्ब्बत से उतरी और जिसको शिवजी ने धारण किया ९० वह गंगाजी परम कारुण निर्मल सूक्ष्म शय्या शीघ्रगामी प्रभावाली उत्तम कीर्त्तिकी देनेवाली संसार का पोषण करनेवाली सिद्धों की प्यारी असंख्य मायाओं से भरी अथवा सिद्धों को प्रिय माननेवाली स्नानकरने वाले पुरुषोंको स्वर्गका मार्ग है ९१ क्षमा रक्षा और पोषण करने में पृथ्वी के समान और तेजमें अग्नि और सूर्य्य के समान सदैव ब्राह्मणोंपर अनुग्रह करने से कार्त्तिकेय और ब्राह्मणों की अत्यन्त प्यारी है ९२ इसलोक में जो मनुष्य

आत्मा और चित्तसे इस ऋषियों स्तुतिमान बिष्णुपदीनाम गंगाकी शरण में गये वह ब्रह्मलोकको गये ९३ इन सब स्थावर जंगम जीवोंको नाशमान देख-कर उन गंगाजी के उत्पत्तिस्थान ब्रह्म के और मन समेत बुद्धि को स्वाधीन रखनेवाले मनुष्यों से वह गंगाजी इसप्रकारसे सदैव उपासना के योग्यहै जैसे कि सर्वगुण सम्पन्न माता सब आत्मासे अपने पुत्रोंको प्यार करती है ९४ सि-द्धी का चाहनेवाला ज्ञानी मनुष्य उन गंगाजीकी शरण ले जोकि अमृतरूप दूध देनेवाली सर्व पदार्थोंकी देनेवाली सम्पूर्ण संसारके भोजनकी बस्तु आदि की कारण पर्व्वतोंकी माता उत्तम मनुष्यों का रक्षास्थान अमृतरूप होकर ब्रह्मा जी के भी चित्तकी हरनेवाली हैं ९५ कठिन तपस्याके द्वारा ईश्वरों समेत देव-ताओं को प्रसन्न करके राजा भगीरथ जिनको पृथ्वी पर लाये उन गंगाजी के तटपर पहुँचकर इसलोक और परलोक में मनुष्यों को सदैव निर्भयता होती है ९६ मैंने सबप्रकारसे बिधिपूर्व्वक बिचार के गंगाजी के गुणों का एकभाग तेरे आगे वर्णन किया क्योंकि उनके सब गुणों के कहने को मेरी सामर्थ्य नहीं है ९७ चाहै मेरुपर्व्वतके पाषाणों की और समुद्र के जलकी संख्या होजाय परंतु इन गंगाजीके गुणों की संख्या करना संभव नहीं होसक्ता ९८ इसी हेतुसे मेरे कहे हुये गंगाजी के सब गुणोंको बड़ी श्रद्धासे जानकर और सदैव श्रद्धामान होकर मन बाणी बचन और भक्ति से संयुक्त होजावो ९९ तुम इन तीनोंलोकों को अपनी शुभकीर्त्ति से परिपूर्ण करके दुष्प्राप्य महासिद्धीको पाके थोड़ेदिनों के पीछे उनलोकों के भीतर अपनी इच्छाके अनुसार बिहारकरोगे जोकि गंगा सेवनसे प्राप्त और संकल्प सिद्धहैं १०० महानुभाव श्रीगंगाजी अपने धर्म्म सं-युक्त गुणों से मेरी और तेरी बुद्धिको सदैव निर्मलकरें क्योंकि श्रद्धामान मनु-ष्यों की प्यारी गंगाजी संसारमें अपने भक्तोंको सुखों से परिपूर्ण करती हैं १०१ भीष्मजी बोले कि वह बड़ा बुद्धिमान् तेजस्वी सिद्ध श्रीगंगाजी के सच्चे गुणों को शिलवृत्ती ब्राह्मणसे इस प्रकार बर्णन करके आकाशको चलेगये १०२ तब सिद्ध के बचनों से अच्छेप्रकार से बिदित होकर शिलवृत्ती ब्राह्मण ने बुद्धि के अनुसार श्री गंगाजी को सेवन करके महा कठिनता से प्राप्त होनेवाली उत्तम सिद्धी को पाया १०३ हे कुन्तीनन्दन उसीप्रकार उत्तम भक्ति संयुक्त होकर तुम भी श्रीगंगाजी को जावो वहां तुम उत्तम सिद्धी को पावोगे १०४ बैशम्पायन

बोले कि भाइयोंसमेत युधिष्ठिरने भीष्मजी के कहेहुये गंगाजी के माहात्म्यरूपी इतिहासको सुनकर बड़ी प्रसन्नताको पाया १०५ जो मनुष्य गंगाजीकी प्रशंसा से युक्त इस पवित्र कथाको सुनेगा या पढ़ेगा वह सब पापोंसे मुक्तहोगा १०६॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेगंगामाहात्म्यकथनेषड्विंशतितमोऽध्यायः २६॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

युधिष्ठिरने प्रश्नकिया कि ज्ञान शास्त्र गुरु पूजनादि आचार शील नानाप्रकारके उत्तमगुण और वड़ी अवस्थासे आप संयुक्तहो १ बुद्धि ज्ञान और तपके कारणसे भी आप बड़े वृद्धहो इसीहेतुसे हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ मैं आपसे धर्मको पूछताहूं २ हे राजाओं में महाराज भीष्मजी तीनोंलोकों में आपके सिवाय कोई दूसरा क्षत्रिय वा वैश्य अथवा शूद्र प्रश्न करनेके योग्य नहीं है ३ बड़े तप या कर्म अथवा शास्त्रके द्वारा जैसे मनुष्य ब्राह्मणके भावको पाताहै उसको आप मुझसे कहिये ४ भीष्मजी बोले हे तात युधिष्ठिर क्षत्रिय आदि तीनोंवर्णों से ब्राह्मण वर्णहोना महाकठिन और दुष्प्राप्यहै क्योंकि सब जीवमात्रों में यह ब्राह्मणका पद सबसे उत्तमहै ५ हेतात बहुत योनियों में वारम्बार घूमता और जन्म लेताहुआ किसी जन्ममें आकर ब्राह्मणवर्ण उत्पन्न होताहै ६ हे युधिष्ठिर इसस्थान में एक प्राचीन इतिहास तुमसे कहताहूं जिसमें मतंग और गर्दभीका प्रश्नोत्तर है ७ हे तात किसी ब्राह्मणका पुत्र तुल्य वर्णथा वह सर्वगुण सम्पन्न होकर मतंग नामसे प्रसिद्ध हुआ ८ हे कुन्तीनन्दन वह यज्ञकर्त्ता परंतप मतंगनाम बालक ईंटैंलाने के निमित्त पिताकी आज्ञालेकर बड़े शीघ्रगामी गर्दभरूप खिचड़ोंको जोतकर रथकी सवारी में चला ९ हे राजा उस मतंगने माताके समीप वर्त्तमान अशिक्षित रथ खैंचनेवाले खिचड़ को चाबुकों से बारम्बार नाकपर घायल किया १० वहां पुत्रको चाहनेवाली गर्दभी ने बेटेकी नाकपर कठिनघाव को देखकर कहा हे पुत्र शोच मतकर चांडाल रथपर सवारहै ११ क्योंकि ब्राह्मण से किसी दूसरे को भय नहीं होताहै ब्राह्मण सबका मित्र कहाजाताहै और सब जीवोंका शिक्षक और गुरूभी होताहै जो यह ब्राह्मण होता तो काहेको प्रहार करता १२ यह पापात्मा बालकपर भी दया नहीं करता है यह अपनी योनि के प्रभावसे बुद्धि को कुमार्ग में डालताहै १३ मतंगने उस गर्दभी के उस कठोर और निन्दायुक्त

वचनको सुनतेही शीघ्रहीं रथसे उतरकर उससे कहा १४ हे कल्याणिनि गर्दभी मेरीमाता दोष से युक्त कैसे हैं और मुझको तैंने चांडाल कैसे कहा इसका सब हेतु तू मुझसे कह १५ हे बड़ी ज्ञानवान् तू मुझको कैसे चांडाल जानती है ऐसी बातों से ब्राह्मणका वर्ण नष्टहोताहै इस निमित्त तू इसको मूलसमेत वर्णनकर १६ गर्दभी बोली कि तुम शूद्रनाई से सेवित नाक ब्राह्मणी में चांडाल उत्पन्न हुयेहो इस कारण से तेरा ब्राह्मणवर्ण नाशहुआ है १७ इसबात के सुनतेही वह मतंग घरको लौटआया तब पितानें उस लौटेहुये को देखकर यह वचन कहा १८ कि तुझको मैंने यज्ञके बड़े कार्य्य के निमित्त भेजाथा तू लौटकर कैसे चलाआया क्या तू अपनी भलाई नहीं जानता और नाशहोना चाहताहै १९ मतंगने कहा जो मनुष्य चांडाल जातिकाहै वा उससे भी अधम नीचहै उसकी कैसे कुशल होसक्ती है और हे पिता उसकी कुशल कैसे होसक्ती है जिसकी कि यह माताहै २० हे पिता यह उत्तम गर्दभी मुझको ब्राह्मणी में शूद्रकरके उत्पन्नहुआ बताती है इसकारण मैं बड़ी तपस्या को करूंगा २१ फिर वह निश्चय करनेवाला मतंग पिता से ऐसे वचन को कहकर बनको चलागया वहां बड़े बन में जाकर इसने बड़ी तपस्याकरी २२ फिर श्रेष्ठ रीति से बड़ी तपस्या के कारण ब्राह्मणवर्ण को चाहनेवाले मतंग ने तपके बलसे देवताओं को संतप्तकिया २३ इसप्रकार तपमें भरेहुये मतंगसे इन्द्रने आकर कहा कि हे मतंग तुम नरलोकके भोगोंको छोड़कर किस निमित्त तपस्या को करते हो २४ तुम जो चाहौ सो बरदान मांगो मैं तुम को देताहूं इसको शीघ्रमांगो विलम्ब मतकरो २५ मतंग ने कहा कि मैंने ब्राह्मणवर्ण होनेकी इच्छासे इस तपका आरम्भ कियाहै मुझको वही बरदान दो मैं यही चाहता हूं २६ भीष्मजी बोले कि इन्द्रने यह बचन सुनकर कहा कि हे मतंग यह दुष्प्राप्य ब्राह्मणवर्ण तू मांगता है २७ हे दुर्बुद्धी यह ब्राह्मणवर्ण अशुद्ध अन्तःकरणवाले मनुष्यों को नहीं प्राप्त होसक्ता इसकी इच्छाकरने से तुम नष्टहोजावोगे इसको मांगना त्यागदो इसमें विलम्ब न करो २८ उस सब जीवधारियों में श्रेष्ठतम ब्राह्मणबर्ण को यह तप नहीं प्राप्तकरसक्ता और तू इसब्राह्मण वर्णको चाहताहुआ थोड़ेही दिनमें नाशको पावेगा २९ जो ब्राह्मणबर्ण देवता असुर और मनुष्योंके मध्यमें पवित्र और उत्तम कहाजाताहै वह चांडालयोनी में उत्पन्न होनेवाले मनुष्यको किसी दशामें भी प्राप्त नहींहोसक्ता ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेइन्द्रमतंगसंवादेसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले इसप्रकार के बचनों को सुनकर तीक्ष्ण बुद्धि सावधान व्रत तपस्वी अविनाशी मतंग सौबर्ष पर्यंत एक चरणसे खड़ारहा १ इसके पीछे वड़े यशस्वी इन्द्रने फिर उसके पासजाकर कहा कि हे तात ब्राह्मण वर्ण बड़ादुष्प्राप्यहै तू उसको मांगनेसे नहीं पावेगा २ हे मतंग उसउत्तम स्थानकी इच्छाकरने से तू नष्टताको पावेगा हे पुत्र बिनाबिचार किये कर्मका करना योग्यनहीं है यह तेरा धर्ममार्ग नहींहै ३ हे दुर्बुद्धी तुमको ब्राह्मणवर्ण मिलना असम्भवहै अप्राप्त बस्तुके चाहने से तू थोड़ेही कालमें नष्टता पावेगा ४ हे मतंग मैंने वारम्बार तुम को निषेधकिया परंतु तुम तपस्याके बलसे उस उच्चपदको चाहतेहो तू सबप्रकार से नष्टताको प्राप्तहोगा ५ पशु पक्षीकी योनिमें बर्त्तमान जीव जो कदाचित् मनुष्यताको पाताहै तो निस्सन्देह पुल्कस वा चांडालकीही योनिमें उत्पन्नहोताहै ६ हे मतंग इसलोक में जो कोई पुल्कस अथवा किसी पापयोनिवाला दृष्टपड़ताहै वह बहुत कालतक उसी योनि में भ्रमण करताहै ७ फिर एकहजार वर्ष के पीछे शूद्रजन्मकोभी पाताहै तदनन्तर वह शूद्रयोनिमेंभी बहुत दिनतक भ्रमताहै ८ उससे त्रिगुणित समय में बीसजन्मों को पाताहै उन्हीं बीसों योनिरूपों में बहुत समयतक घूमताहै ९ उससे छःगुणित समयतक क्षत्रियवर्ण उत्पन्नहोताहै फिर उससे छःगुणित समयमें नाममात्र का ब्राह्मणहोताहै १० फिर वह ब्राह्मण बन्धु अर्थात् नाममात्रका ब्राह्मणहोकर बहुत कालतक उसी योनि में भ्रमणकरताहै फिर द्विशत संख्यक समयमें शस्त्रधारण करनेवाली जीविकाको पाताहै ११ फिर वह शस्त्रोंसे जीविका करनेवाला बहुत कालतक उसी में भ्रमणकरताहै इसके पीछे त्रिशत संख्यक समयमें गायत्री जप करनेवालों में जन्मको पाताहै १२ उसजन्मको पाकर बहुत समयतक उसी में भ्रमण करताहै फिर चारशत संख्यक समय में वेदपाठी ब्राह्मणका जन्मलेताहै तब बहुतकाल पर्य्यन्त वेदपाठियोंके जन्मों में घूमताहै १३ हे पुत्र उस निकृष्ट ब्राह्मणमें हर्षशोक इच्छा ईर्षा अहङ्कार और बड़ी वाचालता आदि दोष प्रवेशकरते हैं १४ जब वह अपने इन शत्रुओं को विजय करता तब सद्गती को पाताहै और जो कदाचित् वह शत्रुही उसको विजयकरलेतेहैं तब वह ऐसे गिरायाजाताहै जैसे कि वृक्षके ऊपरसे ताल

गिरायाजाताहै १५ हे मतंग जो मैंने तुमसे वर्णन किया उसको चित्तमें रखकर दूसरे अभीष्टको मांगो ब्राह्मणवर्ण अत्यन्त दुष्प्राप्य है १६॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेइन्द्रमतंगसंवादेअष्टाविंशोऽध्यायः २८॥

उन्तीसवां अध्याय॥

भीष्मजी बोले कि इन्द्रके इन वचनोंको सुनकर वह तीक्ष्णबुद्धि व्रतमें सावधान मतंग एकहजार वर्षतक फिर एक चरणसेही ध्यानमें नियतहुआ १ और एकहजार वर्षके पीछे इन्द्र उसकेपास उसके देखनेको आये और आनकर फिर वही वचन उससे कहा २ मतंगने कहा कि मैं ब्रह्मचारी होकर एकचरणसे एकहजार वर्षतक खड़ारहा अब क्यों नहीं ब्राह्मणवर्ण होसक्ताहूं ३ इन्द्रने कहा कि चाण्डालयोनी में उत्पन्न होनेवाले किसी दशामें भी ब्राह्मणवर्णको नहीं पासक्ते ४ इससे तुम दूसरे बरको मांगो तेरा परिश्रम किया हुआ वृथा न जाय ऐसे वचनों को सुनकर अत्यन्त शोचग्रस्तहोकर वह मतंग ५ गयाजी में जाकर सौ वर्षतक एक अँगूठेसे खड़ारहा इस बड़े कठिन महा असह्य योगके धारण करने से महादुर्बल हड्डियोंकी माला होकर वह धर्मात्मा पृथ्वीपर गिरपड़ा तब यह भी हमने सुना कि बरोंकेदेनेवाले सब जीवमात्रों के उपकारी इन्द्र देवताने जाकर उस गिरतेहुये मतंगको पकड़लिया ६।७ इन्द्र बोले हे मतंग इसलोक में तेरा ब्राह्मणहोना असंभव और विपरीत देखनेमें आताहै ब्राह्मणवर्ण अत्यन्त कठिनतासे प्राप्तहोनेवालाहै और कामादिचोरों से घिराहुआहै ८ ब्राह्मणके पूजनसे सुखहोताहै और न पूजनेसे दुःखहोताहै ९ ब्राह्मणही सब जीवमात्रोंके मनोरथों का पूर्ण करनेवाला और रक्षा करनेवालाहै पितृ और देवता ब्राह्मणके द्वारा तृप्त होते हैं १० हे मतंग सब जीवोंमें ब्राह्मण उत्तम कहा जाताहै ब्राह्मण जोजो चाहताहै वही २ करसक्ताहै ११ हे तात इसीलोकमें बहुतसी योनियोंमें भ्रमताहुआ वारम्बार जन्मलेताहुआ किसी जन्ममें ब्राह्मणवर्ण पाताहै वह ब्राह्मणवर्ण जीवों को मिलना कठिनतासे होताहै उसको तुम मलिन अन्तःकरणवाले नहीं पासक्ते इससे ब्राह्मण वर्णको छोड़कर दूसरा जोजो बर चाहो सो मैं तुमकोदूं १२।१३ मतंगने कहा मुझ दुःखसे पीड़ामानको क्यों दुःख देतेहो और मृतकको क्या मारते हो मैं आपको शोचताहूं कि आप ब्राह्मणकी दया आदि रक्षाको प्राप्तकरके फिर

उनको नहीं पातेहो १४ हे इन्द्र जो ब्राह्मणवर्ण तीनोंवर्णों को दुष्प्राप्य है इसी कारण वह सदैव कठिनतासे प्राप्तहोने के योग्यहै क्योंकि मनुष्य उसको पाकर शान्त चित्तता आदि गुणों से उसकी रक्षा नहीं करते १५ जैसे कि कठिनतासे प्राप्तहोने योग्य धनकोपाकर मनुष्य उसकी प्रतिष्ठाको नहीं जानते हैं उसीप्रकार जो मनुष्य ब्राह्मणवर्ण की रक्षाकरना नहीं जानता है वह महा पापियों से भी नीचहै १६ निश्चयकरके ब्राह्मणवर्ण वड़े कष्टों से प्राप्तहोनेवालाहै और जो कोई इसको प्राप्त भी करले तो इसकी रक्षाकरनी महाकठिनहै मनुष्य उस दुष्प्राप्यको पाकर भी उसके अनुसार कर्म नहीं करते हैं १७ हे इन्द्र ईश्वर के वास्ते ब्रह्म में क्रीड़ा करनेवाला सुख दुःख आदियोगों से और स्त्री आदि परिग्रहों से पृथक् शान्तचित्त और अहिंसा धर्म्म में नियत होकर मैं कैसे ब्राह्मणवर्ण के योग्य नहींहूं १८ हे इन्द्र यह पूर्वजन्मोंका कर्मरूपी दैव कैसाहै जो धर्म्मका ज्ञाता भी होकर मैंने अपनी माताके दोषसे इस दशाको पाया १९ इससे निश्चय होताहै कि प्रारब्ध उपाय करनेसे उल्लंघन के योग्य नहीं होसक्ता है हे प्रभु जिसके निमित्त मैं उपाय करनेवाला होकर भी उसको नहीं पासक्ताहूं २० जो मैं आपकी कृपाके योग्य समझाजाऊं और मेरा कुछ कर्म भी शुभहै तो ऐसीदशामें आप मुझको धर्म्मरूप बरप्रदान देनेके योग्यहैं २१ वैशम्पायन बोले कि इस बातको सुनकर इन्द्रने उनसे कहा कि मांगो तब तो वह मतंग इन्द्रकी आज्ञापाकर यह बचन बोला २२ कि आकाशमें बर्त्तमान होकर अपनी इच्छा के अनुसार रूप धरनेवाला होकर स्वेच्छाचारी बिहार करनेवाला होजाऊं और ब्राह्मण क्षत्रियों के अविरुद्ध पूजाको प्राप्तकरूं २३ और हे इन्द्र मेरीकीर्त्ति जैसे अबिनाशी होजाय वही आप करनेको योग्यहैं हे बड़ेदेवता मैं आपको शिरसे दण्डवत् करताहुआ प्रसन्न करताहूं २४ इन्द्र बोले कि हे पुत्र तू छन्दोदेव इसनामसे प्रसिद्ध स्त्रियों का पूज्य अर्थात् पूजने के योग्य होगा और तीनोंलोक में तेरी असंख्य कीर्त्ति विख्यातहोगी २५ इस रीतिसे इन्द्रदेवता उसको बरदानदेकर अन्तर्द्धान होगये फिर मतंगने भी समयपर प्राणोंको त्यागकरके उत्तमपदको पाया २६ हे भरतर्षभ इस रीतिसे यह ब्राह्मणवर्ण वड़ाउन्नत और श्रेष्ठ उत्तमस्थानहै वह इस लोकमें महाइन्द्रके वचनके अनुसार वड़ी कठिनतासे प्राप्त होनेवालाहै २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेइन्द्रमतंगसंवादेएकोनत्रिंशोऽध्यायः २९ ॥

तीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे महावक्ता भीष्मजी यह बड़ा उत्तम आख्यान आपसे मैंने सुना १ हे महासाधु जो आप ब्राह्मणवर्ण को कठिनतासे प्राप्त होनेयोग्य कहते हो तो पूर्वसमय में विश्वामित्र क्षत्रियने कैसे ब्राह्मणवर्ण पाया इसको सुनाचाहताहूं २ हे प्रभु भीष्मजी मैंने सुनाहै कि राजा वीतहव्यनेभी ब्राह्मणवर्णको पाया प्रथम उसीका वर्णन सुनना चाहताहूं ३ उस उत्तमराजाने किसकर्म या बरदान अथवा तपस्याके द्वारा ब्राह्मणवर्ण को पाया वह मुझसे आप कहने को योग्य हैं ४ भीष्मजी बोले हे राजा जैसे कि बड़े यशस्वी राजर्षि राजा वीतहव्यने इस लोकमें अतिमान्य बड़ी कठिनतासे प्राप्त होनेवाले ब्राह्मणवर्ण को पाया उसको मैं तुमसे वर्णनकरताहूं ५ हे तात धर्म्मसे प्रजालोगों के आज्ञादेनेवाले महात्मा मनुजीकापुत्र बड़ा धर्मात्मा शर्य्याति नामसे प्रसिद्धहुआ ६ उसके वंशमें राजा वत्सके दोपुत्र हैहय और तालजंघनाम महाविजयीथे ७ हे राजेन्द्र हैहयकी दश स्त्रियों में सौपुत्र उत्पन्नहुये वह सब बड़े शूरवीर युद्ध में मुख न मोड़नेवाले थे ८ बराबर रूप प्रभाववाले पराक्रमी युद्ध में शोभा पानेवाले वेद धनुर्वेद और सब शास्त्रों में परिश्रम करनेवाले थे ९ और काशीदेशियों में दिवोदास का पितामह हर्य्यश्वनाम से प्रसिद्ध विजयी राजाओं में बड़ा उत्तम राजा हुआ १० हे पुरुपोत्तम वह राजा गंगा यमुना के मध्य में वीतहव्यके पुत्रों के सम्मुखहोकर युद्ध में मारागया ११ वह हर्य्यश्ववंशी महारथी उसराजा को मारकर निर्भयता पूर्व्वक वत्सवंशियों की सुन्दरपुरी को चलेगये १२ हर्य्यश्वकापुत्र सुदेव जोकि देवताके समान तेजस्वी और साक्षात् दूसरे इन्द्रके समानथा उसने राज्याभिषेक किया फिर काशीदेशके प्रसन्न करनेवाले उस धर्मात्माने प्रजाका पालन किया और युद्ध में सम्मुखहोकर उन वीतहव्यकेही पुत्रोंके हाथसे मारागया १३। १४ वह उसको मारकर अपनी राजधानीको चलेगये फिर सुदासके पुत्र दिवोदास ने काशी के राज्यपर अभिषेक किया १५ बड़े तेजस्वी दिवोदास ने उन बुद्धिमानोंके पराक्रमको जानकर इन्द्रकी आज्ञासे वाराणसी पुरीको बसाया १६ वह पुरी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रों से भरीहुई बहुत द्रव्यका संचय रखनेवाली वृद्धियुक्त व्यापार और अनेक व्यापारों के गोदाम आदि रखनेवाली १७ गंगा

जीके उत्तरीय तटपर और गोमती के दक्षिण तटपर ऐसी बसीहुई थी जैसे कि इन्द्रकी पुरीकी बस्ती १८ हे भरतर्षभ हैहयवंशियोंने फिर वहां आकर उस राजा के ऊपर चढ़ाईकरी १६ फिर उस बड़े तेजस्वी और पराक्रमी दिवोदासने अपने नगरसे निकलकर उनसे युद्धकिया वह युद्ध देवासुरोंके युद्धके समान भयकारीथा २० हे महाराज उस राजाके सब घोड़े आदि मरगये थे इस कारण उसने बहुतसे युद्धों में दुःखको पाया २१ इसके पीछे वह राजा जिसके शूरवीरमरे और धनका कोशभी खालीहोगयाथा अपनी पुरीको त्यागकर भागनेकी इच्छा करनेलगा २२ हे शत्रुहन्ता वहांसे जाकर उस राजाने भरद्वाजजी के उत्तमस्थान में पहुंच साष्टाङ्ग दण्डवत् करके उनकी शरणली बृहस्पतिजीके बड़े पुत्र शीलवान् पुरोहित भरद्वाजजी ने उस राजा दिवोदास से कहा २३ । २४ कि हे राजा यहां तेरे आनेका क्या प्रयोजनहै मुझसे सब वर्णनकरो मैं तेरा अभीष्ट अवश्य करूंगा २५ राजाने कहा हे भगवन् युद्धमें वीतहव्य के पुत्रों ने मेरे वंशभरका नाश करदिया मैं चारोंओर से आपत्तियों में फँसाहुआ निर्बलहोकर आपकी शरण में आयाहूं २६ हे भगवन् आप शिष्यताकी प्रीति से मेरी रक्षाकरने को योग्यहो यह मेरावंश उन पापात्माओं से नष्ट कियागया २७ तब महातेजस्वी प्रतापवान् भरद्वाजने उससे कहा कि हे सुदेव के पुत्र दिवोदास तुमको भय न होगा २८ हे राजा मैं तेरे पुत्रके निमित्त यज्ञको करूंगा जिसके कारण से तुम वीतहव्यके पुत्रों समेत हजारों शत्रुओंको मारोगे २६ इसके पीछे उस ऋषिने उसके पुत्रोत्पत्तिका संकल्प करके यज्ञ किया तब इसकापुत्र प्रतर्द्दननाम उत्पन्न हुआ वह उत्पन्नहोतेही तेरहवर्षकी अवस्थाका होगया तब उसने शीघ्रही वेद को और धनुर्वेद को पढ़लिया ३० । ३१ बुद्धिमान् भरद्वाजजी के योगबल से भराहुआ वह बालक तेजस्वी और प्रतापवान् होगया क्योंकि वह भरद्वाजजी सबलोकों के वर्त्तमान तेजों को लेकर उस प्रतर्द्दन के शरीरमें प्रवेशकरगये ३२ इस हेतुसे वह कवच धनुष धारण करनेवाला देवर्षियों से स्तूयमान बन्दीजनों से प्रशंसित प्रकाशमान सूर्य्य के समान शोभित होताभया ३३ वह खड्गधारी रथपर सवारहोकर देदीप्य अग्नि के समान प्रकाशमान अपने शोभित धनुषको टंकारताहुआ चला ३४ सुदेव का पुत्र उसको देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और वीतहव्य के पुत्रों को उसने अपने चित्त से मराहुआही माना ३५

इसके पीछे वह राजा उस प्रतर्द्दन को अपने युवराज पदपर नियतकरके अपने को कर्मोंसे निवृत्तमानकर प्रसन्नहुआ ३६ हे शत्रुहन्ता इसके पीछे उस राजाने वीतहव्यके पुत्रों के मारने की इच्छासे उनके पास अपने पुत्र प्रतर्द्दनको भेजा ३७ वह शत्रुओं के पुरोंका विजय करनेवाला महापराक्रमी राजा शीघ्रही रथ की सवारी में गंगापार होकर वीतहव्यके पुत्रोंकी पुरी को गया ३८ उसके रथ का बड़ाशब्द सुनकर वीतहव्य के पुत्र भी रथोंपर चढ़कर बाहर निकले उनके रथ नगरके स्वरूप और शत्रुओं के रथोंके पीड़ा देनेवालेथे ३९ उन अपूर्व पराक्रमी कवच शस्त्रधारी नरोत्तमों ने पुरसे निकलकर प्रतर्द्दनको बाणोंकी वर्षा से घायल करदिया ४० और रथोंके द्वारा नानाप्रकारके अस्त्र शस्त्रों की ऐसी वर्षा करी जैसे कि बादल हिमालय पर्वतपर वर्षाकरताहै ४१ बड़े तेजस्वी राजा प्रतर्द्दनने उन सबके अस्त्रोंको अपने अस्त्रों से रोककर अपने बज्र और अग्नि के समान बाणोंसे घायलकिया ४२ हे राजा फिर प्रतर्द्दनके भल्लनाम बाणोंसे उन क्षत्रियोंके शिरकटकर रुधिरमें लिप्त पृथ्वीपर ऐसे गिरे जैसे वृक्षसे टूटकर किंशुकफूल गिरते हैं यदि उन सब पुत्रों के मरने से राजा वीतहव्य अपने नगर को त्यागकर भृगुमुनिके आश्रमकी ओरभागा ४३। ४४ वहांजाकर उस वीतहव्य ने भृगुजीकी शरणली तब भृगुजीने उस राजाको निर्भयकिया ४५ उसकेपीछे ही राजाप्रतर्द्दन बड़ी शीघ्रतासे वहांआया वहांआकर उस दिवोदास के पुत्रने भी सुन्दर आश्रमको पाकर यह वचनकहा ४६ कि हे महात्मा भृगुजीके शिष्य इस आश्रम में कौनहै मैंभी भृगुमुनिका दर्शन करना चाहताहूं आप मेरा आगमन मुनिजी से कहदो ४७ तब भृगुजी उस प्रतर्द्दनको जानकर आश्रम से बाहरनिकले और बुद्धिके अनुसार उस राजासे शिष्टाचार पूर्व्वक पूजन करके कहा ४८ कि हे राजेन्द्र कहो क्या कार्य्य है तब राजाने अपने आनेका यह वृत्तान्तकहा ४९ हे ब्रह्मन् यह राजा वीतहव्यहै इसको यहां से विदाकीजिये इस के पुत्रोंके हाथसे मेरा सबवंश नाशहोगया ५० और काशीदेशोंकी राजधानी जो कि रत्नों के समूहों से पूर्णथी उसको भी उन्होंने नाश करदिया इसीसे मैंने इस पराक्रमाभिमानी के सौपुत्र मारे ५१ अब इसके मारनेसे मैं पिताके ऋणसे निवृत्तहूंगा तब धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ करुणानिधान भृगुजी ने उससे कहा ५२ कि यहां कोई क्षत्रिय नहीं है सब ब्राह्मणलोग हैं प्रतर्द्दनने भृगुजी के इस सत्यवचन

को सुनकर बहुत प्रसन्नता पूर्वक बड़ी मृदुतासे दोनोंचरणों को स्पर्शकरके यह वचनकहा हे ब्रह्मन् मैं निस्सन्देह इसप्रकारसे भी कृतकृत्यहूं ५३ । ५४ जो मैंने अपने पराक्रमसे इस राजाको अपनी ज्ञातिसे पृथक् किया हे ब्रह्मन् मुझको आज्ञादो और आनन्द का आशीर्वाद दो ५५ हे भृगुजी मैंने यह राजा दूसरेवर्ण में करदिया इसके पीछे उनसे आज्ञालेकर राजाप्रतर्द्दन अपने देशको चलागया ५६ हे महाराज जैसे कि सर्प विषको उगलकर निर्विकार होताहै उसीप्रकार उस वीतहव्य ने भृगुजी के वचनसेही ब्रह्मर्षि भावको पाया ५७ हे राजा उस वीतहव्यने ब्रह्मवादी भावको पाया फिर उसका पुत्र गृत्समदरूपमें दूसरे इन्द्रकी समानथा ५८ और इन्द्रकी सारूप्यतासे उसको निश्चय इन्द्रही जानकर दैत्योंने पकड़ लियाथा और उस महात्मा की उत्तम श्रुति ऋग्वेद में वर्त्तमानहै ५९ हे ब्रह्मन् जिस श्रुतिमें गृत्समदऋषि ब्राह्मणों से प्रतिष्ठा कियाजाताहै वहब्रह्मचारी श्रीमान् ब्रह्मर्षि गृत्समद नाम से प्रसिद्ध हुआ ६० गृत्समद का पुत्र सुतेजा नाम ब्राह्मणहुआ सुतेजाकापुत्र वर्च्चाहुआ और वर्च्चाकापुत्र विहव्यनाम ब्राह्मणहुआ ६१ विहव्यकापुत्र वितत्य वितत्यका पुत्र सत्य और सत्यकापुत्र संत हुआ ६२ उसका पुत्र श्रवाऋषि और श्रवाऋषिका पुत्र तमहुआ तमका पुत्र प्रकाशनाम हुआ वह ब्राह्मणों में श्रेष्ठ था प्रकाशका पुत्र वागिन्द्रहुआ वह भी विजय करनेवालोंमें श्रेष्ठथा ६३ उसकापुत्र प्रमिति वेदवेदांगका पारगामीहुआ और उसका पुत्र घृताची में रुरुनाम होताहुआ ६४ रुरुकापुत्र प्रमद्धरामें शुनकनाम ब्रह्मर्षीहुआ उसकापुत्र शौनकहुआ पूर्वमें प्रमितिको च्यवनऋषिका पुत्र और प्रमितिका पुत्र रुरुको कहाहै यहां उसकी ऐक्यताहै कारण यहहै कि वही नाम इस कुल में भी रक्खेगये क्योंकि वीतहव्यका कुल भृगुवंशियोंमेंही संयुक्तहै ६५ हे राजेन्द्र इसरीतिसे क्षत्रियों में श्रेष्ठ राजा वीतहव्य ने भृगुजी की कृपासे ब्राह्मणके भावको अर्थात् ब्राह्मणवर्ण को पाया ६६ हे महाराज इसरीति से मैंने गार्त्समद वंशका व्यौरे समेत तुमसे वर्णन किया इसके सिवाय दूसरी कौनसी बात पूछतेहो ६७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेवीतहव्योपाख्यानेत्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय॥

युधिष्ठिर बोले हे भरतर्षभ इस त्रिलोकी में निश्चयकरके कौनकौन से मनुष्य पूजन के योग्य हैं उनको बिस्तारपूर्व्वक बर्णन कीजिये क्योंकि मैं आपके ब-र्णनों से तृप्त नहीं होताहूं १ भीष्मजी बोले कि इस स्थानपर इस प्राचीन इति-हास को कहता हूं जिस में नारद जी और बासुदेवजी का प्रश्नोत्तर है २ उत्तम ब्राह्मणोंका पूजन करनेवाले नारदजीको हाथ जोड़ेहुये देखकर श्रीकृष्णजी ने प्रश्न किया कि हे नारदजी आप किसको नमस्कार करते हैं ३ हे धर्म्म जानने वालों में श्रेष्ठ भगवान् हे ब्राह्मणों के पूजन करनेवाले आप किसको नमस्कार करते हैं जो यह हमारे सुनने के योग्य होय तो बर्णन कीजिये ४ नारदजी बोले हे शत्रुहन्ता गोबिन्दजी मैं जिसको पूजताहूं उसके सुननेको इसलोकमें आप के सिवाय दूसरा कौन पुरुष योग्यहै आप सुनिये ५ हे प्रभु वरुण, बायु, सूर्य्य पर्जन्य, जातवेदस, स्थाणु, स्कंद, लक्ष्मी, बिष्णु, ब्राह्मण ६ वाचस्पति, चन्द्रमा जल, पृथ्वी, और सरस्वतीको जो पुरुष नित्य नमस्कार करते हैं उन पुरुषों को मैं नमस्कार करताहूं ७ हे यादवोत्तम जो तपरूप धन रखनेवाले वेदज्ञ सदैव वेद के अनुसार कर्म करनेवाले और बड़े पूजन के योग्य हैं मैं उनको सदैव पूजन करताहूं ८ हे प्रभु जो अपनी प्रशंसा न करनेवाले सन्तोषी शान्तचित्त मनुष्य बिना भोजन किये देवकार्य्यों को करते हैं मैं उनको नमस्कार करता हूं ९ जो शान्तचित्त शिक्षित जितेन्द्रिय मनुष्य अच्छी रीति से यज्ञोंको करते हैं अथवा सत्यतापूर्व्वक धर्म्मको पूजन करते हैं अथवा पृथ्वी गौ आदिका दान ब्राह्मण को करते हैं हे श्रीकृष्णजी मैं उनको ध्यानसे नमस्कार करता हूं १० बनमें मूल फलों के खानेवाले संचयन न करनेवाले संध्याआदि कर्मों में प्रवृत्त होकर जो पुरुष तप करते हैं हे यादव जी मैं उनको नमस्कार करता हूं ११ जो आदर्मी दास आदि के पोषणमें समर्थ सदैव अतिथियोंका सत्कार करनेवाले देवताओं से शेष बचेहुये अन्नको भोजन करते हैं १२ वा निर्भय होकर सुष्टुभाषी ब्रह्मचारी वेदको प्राप्त होकर सदैव यज्ञ करने कराने और वेद पढ़ने पढ़ाने में प्रवृत्त हैं मैं उनको नमस्कार करता हूं १३ जो पुरुष सदैव सब जीवधारियों में प्रसन्नचित्त दोपहरतक वेदपाठ वा जपमें प्रवृत्त हैं मैं उनको नमस्कार करताहूं १४ जो हर

व्रतवाले गुरुसेवापरायण दूसरे के गुणमें दोष न लगानेवाले गुरुकी प्रसन्नता के अर्थ ब्रह्मयज्ञ या मन्त्र जपआदि उत्तम कर्म्मों में उपाय करनेवाले हैं १५ अथवा जो ब्राह्मण सत्यसंकल्प सुन्दर व्रतवाले मुनिरूप यज्ञों के द्वारा देवता और पितरोंको हव्य कव्य पहुंचानेवाले हैं हे यादव मैं उनको नमस्कार करता हूं १६ जो पुरुष भिक्षावृत्ती में प्रवृत्त दुर्बल शरीर सुख से रहित निर्द्धन होकर गुरुकुलमें शरणरूप हैं १७ अथवा वेदको प्राप्तहोकर ममता और सुख दुःखादि से रहित निरपेक्ष और निर्भय होकर ब्रह्मवादी हैं १८ और हिंसासेरहित सत्यव्रती शांतरूप शुभकार्यों में परिश्रमी हैं हे श्रीगोविन्दजी मैं उनको नमस्कार करता हूं १९ जो गृहस्थी देवता अतिथि की पूजा में प्रवृत्त सदैव कपोतवृत्ती हैं २० अथवा जिन पुरुषों के चतुर्वर्गदायक कर्मों में मन लगेहुये हैं और उत्तम मध्यम निकृष्ट पदोंसे नहीं गिरते हैं वा अच्छेपुरुषों के आचारमें प्रवृत्त हैं मैं उनको सदैव नमस्कार करताहूं २१ हे केशवजी जो शास्त्रज्ञ पुरुष धर्म अर्थ कामका अभ्यास रखनेवाले निर्लोभी और उत्तम कर्म करनेवाले हैं उनको नमस्कार करताहूं २२ जो पुरुष केवल जलपान करनेवाले वायुभक्षी और सदैव सुधाको भक्षण करते हैं अर्थात् बलि बैश्वदेव कर्म करके शेष अन्नका भोजन करनेवाले नानाप्रकार के व्रतों से संयुक्त हैं हे माधव मैं उनको नमस्कार करता हूं २३ जिन्हों ने विवाह नहीं किया और जो स्त्री वा अग्निहोत्र से संयुक्त हैं और वेदों के रक्षास्थान हैं और सब जीवों के आत्मारूपहैं मैं सदैव उनको नमस्कार करता हूं २४ हे श्री-कृष्णजी मैं इन सब संसारके पिता बड़े कुलीन आपत्ति और उपद्रवों के नाश करनेवाले सबके वृद्ध लोकके प्रकाश करनेवाले ऋषियों को नमस्कार करताहूं २५ हे निष्पाप यादव जी इसीकारण से आपभी सदैव ब्राह्मणों को पूजो वह पूजनके योग्य ब्राह्मण पूजित होकर तुमको सुखदायी होंगे २६ इसलोक और परलोक में सुखके देनेवाले यह ऋषि सदैव घूमते हैं वह पूजित होकर आपको आनन्द देंगे २७ जो पुरुष गौ और ब्राह्मणों में सदैव सबका पूजन करनेवाले हैं और सदैव सत्यतामें अनुरक्त हैं वह बड़ी २ आपत्तियों से पार उतरते हैं २८ जो मनुष्य सदैव शान्तचित्त हैं और दूसरेके गुणोंमें दोष नहीं लगाते हैं और सदैव ब्रह्मयज्ञ वा मन्त्रों का जप करते हैं वह कठिनताओं से पार होते हैं २९ जो पुरुष केवल वेदमें निष्ठा रखनेवाले जप यज्ञके कर्त्ता श्रद्धावान् और जिते-

न्द्रिय हैं वह सब देवताओं के नमस्कार करनेवाले हैं अर्थात् सब यज्ञ और जपादि में वर्त्तमान हैं वही कठिनताओं से निवृत्त होते हैं इसीप्रकार जो सावधान व्रत मनुष्य उत्तम ब्राह्मणों को नमस्कार करके दान करने में प्रसक्त होते हैं वह कठिनताओं से निवृत्त होते हैं ३० । ३१ जो आदमी बाल्यावस्था से ब्रह्मचारी तपस्वी और तप से पवित्र अन्तःकरण हैं वह कठिनता से पार उतरसक्ते हैं ३२ जो पुरुष देवता अतिथि और पोषणके योग्य दासआदि वा पितरों के पूजनादि में संलग्नहैं और जो उत्तम मनुष्यों के अन्न को अथवा उत्तम भोजन की वस्तुओंको भोजन करते हैं वह विपत्तियों से पार होते हैं ३३ जो नम्र मनुष्य बुद्धि के अनुसार अग्निस्थापन करके धारण करते हैं और सोमकी आहुतिको प्राप्त हैं वह कठिनताओं से पार होते हैं ३४ हे यादव जो मनुष्य सदैव माता पिता और गुरुओं के साथ आपके समान अच्छा वरताव करते हैं वह दुःखों से तरते हैं ऐसे २ बचन कहकर वह नारदजी मौनहोगये ३५ हे कुन्तीनन्दन इसी कारण से तुमभी सदैव देवता पितृ अतिथि और ब्राह्मणोंको अच्छीरीति से पूजते हुये यथेच्छगतिको पावोगे ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेकृष्णनारदसंवादेएकत्रिंशत्तमोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरने प्रश्न किया कि हे महाप्राज्ञ सर्बशास्त्रविशारद पितामह मैं आपसे धर्मको सुनना चाहताहूं १ हे भरतर्षभ जो पुरुष शरणागत होनेवाले चारोंप्रकार के जीवोंकी रक्षा करते हैं उसका मुख्यफल क्या होताहै २ भीष्मजी बोले हे बड़े बुद्धिमान् शुभकीर्त्तिवाले धर्म्मपुत्र तुम इस प्राचीन समय के इतिहास को सुनो जिसमें शरणागत की रक्षाके महाफलका वर्णन है ३ बाजसे गिरायाहुआ बड़ा स्वरूपवान् कपोतपक्षी उस महाभाग राजा वृषदर्भ की शरण में आया ४ उस पवित्रात्मा राजाने भयभीत होकर अंकमें आनेवाले उस कपोतको देखकर उसको विश्वासदेकर कहा कि हे पक्षी तू विश्वासयुक्त होजा अब तुझको किसी प्रकारका भय नहीं है ५ हे कपोत तुमको किस जीवसे बड़ा भय है अथवा तुमने कहीं कोई कर्म कियाहै जिसके कारण तू चित्तसे व्याकुल भ्रान्तीसे युक्त होकर यहां आयाहै ६ नवीन नीलकमल के समान कोमल शरीर सुंदरवर्ण देखने में

शोभित दाड़िम और अशोक के फूलकी समान नेत्रवाले अब तू निर्भय है किसीका भय न कर ७ तुझ मेरी शरण में आनेवाले को कोई जीव चित्तसे भी पकड़ने को समर्थ नहीं होसक्ता ८ हे कपोत अब मैं तेरे निमित्त काशी के राज्य को और जीवन को भी त्याग करसक्ताहूं तू निर्भय होकर अब विश्वासयुक्त हो तुझको किसी से भी भय नहीं होसक्ता ९ बाजने कहा हे राजा यह कपोत मेरा भोजन नियत हुआ है मैंने बड़े परिश्रम और उपायों से इसको पाया है इसकी रक्षा करने को आप योग्य नहीं हैं १० इसका मांस रुधिर मेजा चरबी मेरा पौष्टिक भोजनहै यह मेरी तृप्तीका करनेवालाहै इस मेरे भोजनका तू रक्षक मतहो ११ हे राजा मुझको रुधिरकी पिपासा महापीड़ित कररही है और कठिन क्षुधा से मैं अत्यन्त व्याकुल हुआ जाता हूं इसको आप छोड़ दीजिये मुझमें भूखके रोकने की सामर्थ्य नहीं है १२ यह कपोत मेरे पक्ष और नखों से घायल अच्छी रीति से पीछा किया हुआ जिसका थोड़ासा श्वास बाकी है इस की आप रक्षा करने के योग्य नहीं हो १३ हे राजेन्द्र यह सत्यहै कि तुम अपने देशके वीच में मनुष्यों की रक्षाकरनेके स्वामी हो परंतु क्षुधासे पीड़ावान् पक्षी के स्वामी आप नहीं हैं १४ यद्यपि आप अपने शत्रु दासकर्म्म बालबच्चे व्यवहार और इन्द्रियों के विषयके पराक्रम और शासन में कर्म्मको करतेहो वह तो योग्यहै परन्तु आकाशचारी जीवोंपर आपको बल और शासन करना योग्य नहीं १५ आज्ञा भंग करनेवाले शत्रुओंपर अच्छी रीतिसे पराक्रम करना तेरे राज्यका शासन है जो आप धर्म्म के इच्छावान् हो तो इस दशामें आप मेरी ओर को भी देखने के योग्यहो अर्थात् मुझ अशत्रुको मेरी जीविका के रोकने वाले तुझ धर्म्मेच्छावाले को भी अधर्म्महोगा १६ भीष्मजी बोले कि उस राजर्षिने बाजके इन बचनों को सुनकर बड़ा आश्चर्य किया फिर उसकी और उस के बचनों की प्रशंसा करके उस कपोत के चाहनेवाले राजाने उत्तर दिया १७ कि अब तेरे और तेरी क्षुधाके दूर करने के निमित्त बैल बराह भैंसा जो तू चाहै सो ले १८ परन्तु अब शरणागतको मैं कैसे त्यागकरसक्ताहूं क्योंकि शरणागत पर रक्षा करनाही हमाराब्रतहै यह पक्षी मेरे अंगोंको नहीं छोड़ताहै हे पक्षी तुम भी इसको देखो १९ बाज बोला कि मैं बैल बराह मृग और अन्य पक्षियोंको भी नहीं खाताहूं क्योंकि जो मेरे खानेके अयोग्यहैं उनसे मुझे क्या प्रयोजनहै २०

आप देवताओंने जो मेरा भोजन पूर्व से नियत कियाहै वही भोजन मुझको उचितहै अर्थात् बाजपक्षी केवल कपोतोंकोही खाते हैं यह प्राचीनमर्याद चली आई है २१ हे निष्पाप राजा उशीनर जो तेरी इसी कपोत में प्रीति है तो तुम इसके समान तराजू में तोलकर अपना मांस मुझको दो २२ राजाने कहा कि आपकी मुझपर बड़ी कृपाहुई जो ऐसा बचन कहा बहुत अच्छा ऐसाही करूंगा यह कहकर उस श्रेष्ठ राजाने २३ अपने मांसको काट २ कर तराजूमें तोला इसके अनन्तर रत्नोंसे अलंकृत उसके महलकी रानियां २४ इस वृत्तान्तको सुनकर अत्यन्त दुःखी और हाय२ करतीहुई महलसे बाहर निकलीं तब उन स्त्री वा मंत्री और दास आदिके रुदन शब्दसे २५ ऐसा बहुतबड़ा शब्दहुआ जैसे कि बड़ाघोर बादल शब्द करताहै उससमय अभ्रसे रहित आकाश चारोंओर को मेघों से रुकगया २६ उस राजाके सत्यकर्म से पृथ्वी कंपायमानहुई जो मांस भुजाके समीपसे और जंघाके समीपका था २७ उसमांसको राजा अच्छी रीति से काट २ कर धीरे २ तराजूको भरताथा तबभी वह मांस कबूतरके समान नहीं होताथा २८ जब अपने मांसको काटते काटते उस राजाके शरीरमें अस्थिमात्र रहगये और रुधिर चूनेलगा तब वह राजा आप उस तराजूपर चढ़ा २९ इसके पीछे इन्द्रसमेत तीनोंलोक उस महाराज के सम्मुखआकर उपस्थित हुये और आकाश में वर्त्तमान देवताओं ने भेरी और दुन्दुभी बजाई ३० और राजा भी अमृतसे सींचागया तदनन्तर उसपर दिव्य सुखदायी पुष्पोंकी वर्षाहुई ३१ सब ओरको देवगन्धर्व्वों के समूहों समेत अप्सराओं ने नृत्य और गानको ऐसा देखाया जैसे कि प्रभु ब्रह्माजी नृत्य और गानों से प्रसन्न कियेजाते हैं ३२ इसके पीछे सुवर्ण के महलों से और मणियोंसे खचित कंचनके द्वारसमेत वैडूर्य्यमणि के खंभवाले बिमान में वह राजा सवारहुआ ३३ क्योंकि वह राजर्षि उस शुभ कर्म से सनातन स्वर्गको गया हे युधिष्ठिर तुमभी शरणागतों के ऊपर सबप्रकारसे पोषणादि कर्म्मों को करो ३४ भक्तोंका मित्रों का और शरणागतों का रक्षक सब जीवोंपर दया करनेवाला मनुष्य परलोक में सुखसे वृद्धिको पाता है ३५ जो शुभकर्मी राजा उत्तम पुरुषोंकी रीतिपर कर्म्मको करता है इस लोक में अपने निश्छल कर्मों से उसको कोई पदार्थ या वस्तु अप्राप्त नहींहै अर्थात् सब प्राप्तहोसक्ताहै ३६ वह काशीदेशों का स्वामी सच्चा पराक्रमी पण्डित शुद्ध अ-

न्तःकरण राजर्षि तीनोंलोकों में अपने कर्मसे प्रसिद्धहुआ ३७ हे भरतर्षभ जो दूसराराजाभी इसीरीतिसे शरणागतोंकी रक्षाकरेगा वहभी उसी गतिको पावेगा ३८ राजर्षि वृषदर्भके इस वृत्तान्तको जो लोकमें विख्यातकरेगा वहपवित्रात्मा होगा और जो सदैव सुनेगा वह भी पवित्र होगा ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेश्येनकपोतोपाख्यानेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तैंतीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे पितामह राजा के सबकर्मों में कौनसा कर्म्म श्रेष्ठ है राजा कौनसे कर्मोंको करके दोनों लोकोंको अच्छीरीति से भोगताहै १ भीष्मजी बोले हे भरतवंशी राज्याभिषेक करनेवाले राजाका यही बड़ा कर्म कहाताहै कि जो राजा सुखकी इच्छाकरे वह ब्राह्मणों को यथेच्छ पूजनकरे २ और जब करे तब वेदपाठी ब्राह्मणकाही सदैव पूजन करे ३ और इसीरीति से विश्वासयुक्त उत्तम जीविका और नमस्कार से पुरबासी देशवासी और अनेक शास्त्रों के ज्ञाता ब्राह्मणोंका भी पूजन बिधिपूर्व्वक करे ४ सदैव राजाके इस बड़ेभारी कर्मको जाने कि जैसे अपने शरीरको वा पुत्रोंको पोषण करताहै उसीप्रकार इन पुरबासी आदिको भी पोषणकरे ५ और जो इन ब्राह्मणों में बड़े प्रतिष्ठित हैं उनको उनकी योग्यताके समान बड़ा पूजनकरे उन लोगों के शान्तरूप होनेपर वह सबदेश आनन्दसे प्रकाशमान होताहै ६ वह सब इसरीति से पूजन नमस्कार और प्रतिष्ठाके योग्यहैं जैसे कि पितरलोग और उन्हीं लोगों में लोकोंका प्रबन्ध भी ऐसाहै जैसे कि पर्जन्यनाम बर्षा के मेघों से जीवोंका प्रबन्ध इन्द्रके द्वारा होताहै ७ वह सच्चे पराक्रमी और उग्ररूप ब्राह्मण अनुष्ठानके उपायों से वा संकल्पमात्र से भी भस्म करसक्तेहैं और क्रोधरूप होकर अत्यन्त नाशकरसक्ते हैं ८ मैं उन्हों के नाशकर्त्ता को नहीं देखसक्ताहूं और उन्हों के लिये सबदिशा बे रोक टोक हैं वह जब क्रोधयुक्त होते हैं तब इसरीति से देखते हैं जैसे कि बनों में प्रज्वलित अग्नि होती है ९ जो मनुष्य बिना विचार किये कर्मको करनेवाले हैं वह इन ब्राह्मणों से भयभीत होते हैं क्योंकि उनमें अनेक गुणहैं और जैसे कि तृणआदि से ढकाहुआ कूपहोताहै उसी प्रकार उनमें भी कोई जड़भरतादिक सरीके गुप्तहोते हैं और कोई २ स्वर्ग के समान अत्यन्त पवित्र वशिष्ठादिक सरीके होते हैं १०

इनमें कोई तो हठसे कर्म्मकरनेवाले दुर्वासादिक हैं और कोई कपास के सदृश मृदु गौतमादिक हैं कोई बड़े शठ अगस्त्यादिक हैं इसी प्रकार अन्य बहुत से तपस्वी हैं ११ कोई उद्दालक आदि खेती और गौकी रक्षाको करते हैं और कोई दत्तात्रेयी आदि भिक्षाकरनेवाले हैं कोई चोर बाह्लीक और बिश्वामित्र आदिक हैं कोई कलहप्रिय नारदादिक हैं इसीप्रकार कोई भरतादिक नट और नर्तक हैं १२ हे भरतर्षभ कोई कोई ब्राह्मण राजा और बैश्य आदिकों के पास समुद्र के शोषण आदि के सहनेवाले नानाप्रकारके रूप रखनेवाले ब्राह्मण हैं १३ संसार की रक्षाके निमित्त नानाप्रकारके कर्मों में चित्तसे प्रवृत्त अनेक कर्मों से निर्बाह करनेवाले उन सत्पुरुषों के धर्म ज्ञानको सदैव वर्णन करनेवाले हैं १४ हे राजा यह महाभाग ब्राह्मण इन पितृदेवता मनुष्य सर्प और राक्षसोंसेभी प्राचीनहैं १५ यह ब्राह्मण इन देवता पितर गन्धर्व राक्षस असुर और निशाचरों से भी बिजय करने के असम्भव हैं १६ यही ब्राह्मण देवताको अदेवता और अदेवताको देवता करसक्के हैं जिसको चाहैं उसको राजाकरें जिसको न चाहें उसका पराभव हो १७ हे राजा जो निर्बुद्धीलोग ब्राह्मणों की निन्दा करताहै वह निस्सन्देह नाशहोजाताहै यह तुमसे मैं सत्यही सत्य कहताहूं १८ निन्दा प्रशंसामें कुशल और कीर्त्ति अकीर्त्ति में परायण वह ब्राह्मण अपने बिरोधियों के ऊपर सदैव क्रोध करते हैं १९ ब्राह्मण जिसकी प्रशंसा करते हैं वह मनुष्य अत्यन्त वृद्धिको पाताहै और जो पुरुष ब्राह्मणों करके निन्दित कियाजाताहै वह क्षणमात्रमेंही निर्लज्जता और नाशको पाताहै २० शक यवन कांबोज आदि जो २ क्षत्रिय जाति हैं उन सब जातों ने ब्राह्मणों के दर्शन न करने से वृषलताको पाया अर्थात् शूद्रवर्ण को पाया २१ द्राविड़, कालिंग, पुलिन्द, उशीनर, कोलि सर्प, और महिषक नाम क्षत्रियजातों ने २२ ब्राह्मणों का दर्शन न होने से शूद्रवर्ण को पाया हे बिजय करनेवालों में श्रेष्ठ उन ब्राह्मणों से हारना अच्छाहै बिजय पाना नहीं अच्छाहै २३ जो मनुष्य ब्राह्मणके सिवाय इससब संसारकोमारे और एक ब्राह्मणको भी मारे वह समान नहीं है क्योंकि ब्रह्महत्या महापापहै यह महर्षियों का कथन है २४ ब्राह्मणों की निन्दा किसी दशामें भी न सुनना चाहिये जहां कोई निन्दाकरे वहां से उठजाय अथवा नीचे शिरसे मौनहोकर बैठारहै २५ ऐसा मनुष्य इस पृथ्वी पर न उत्पन्न है न आगे होगा जो ब्राह्मणों के साथ द्वेषकरने

अथवा ब्राह्मणों के बिपरीत कर्मों के करने से आनन्दपूर्व्वक जीवन करने की बुद्धिकरे २६ हे राजा जैसे मुट्ठी से वायुका पकड़ना हाथ से चन्द्रमाका स्पर्श करना और पृथ्वी का उठालेना कठिन है इसी प्रकार इस पृथ्वीपर ब्राह्मणों का बिजय करना भी अत्यन्त कठिनहै २७ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेब्राह्मणप्रशंसावर्णनेत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि ब्राह्मणका सदैव अच्छीरीति से पूजन करे क्योंकि यह लोग चन्द्रमाको राजा रखनेवाले और सुख दुःखोंके स्वामी हैं १ इनब्राह्मणोंको राजालोग भोग आभूषण और अन्य अन्य अभीष्ट वस्तुओं से नमस्कारपूर्व्वक सदैव पूजनकरें ये ब्राह्मण पिताकी समान रक्षा और पोषण के योग्यहैं २ जैसे कि जीवोंकी सुखपूर्व्वक शान्ती इन्द्रसे होती है उसीप्रकार देशकी शान्ती ब्राह्मणोंके उस पूजनसे होती है जो कि ब्रह्मतेजसे प्रकटहोनेवाली है क्योंकि देश में ब्राह्मणलोग पवित्र अग्निरूप शुद्ध आचरणवाले पवित्रमंत्रों के ज्ञाताहैं ३ हे राजा जब कि धर्मज्ञ तेज ब्रतधारी कुलीन ब्राह्मण को घरमें निवासकरवावे तो शत्रुओं के बिजयकरनेवाले महारथी राजाकी क्या आवश्यकताहै क्योंकि उससे बढ़कर नहीं है जो भोजन की बस्तु आदि ब्राह्मण के निमित्त दानकरी जाती है उसको देवताभी अङ्गीकारकरते हैं ४।५ और सब जीवोंके पितरभी मन से स्वीकार करते हैं इन ब्राह्मणोंसे उत्तम कोई नहीं है सूर्य, चन्द्रमा, वायु, जल, पृथ्वी, आकाश और दिशा ६ यह सब ब्राह्मण के शरीर में प्रवेश करके सदैव भोजनकी बस्तुओंको खातेहैं जिसके अन्नको ब्राह्मण नहीं भोजन करते हैं उस के पितर भी भोजन नहीं करते हैं ७ जो ब्राह्मणका शत्रुहै उस पापी मनुष्य के अन्नको देवताभी भोजन नहीं करते हैं और पितर देवता ब्राह्मणों के तृप्तहोनेसे सदैव तृप्त होते हैं ८ इसीप्रकार देवता भी संतुष्ट होते हैं तो यहभी निस्सन्देहहै कि जिनकी वह भोजनकी बस्तुहै वह दाताभी प्रसन्न होते हैं ९ वह दातालोग नाश नहीं होते हैं किन्तु परमगतिरूप मोक्षको पाते हैं मनुष्य जिन २ भोजन की बस्तुओंसे ब्राह्मणको तृप्तकरताहै १० उसी २ भोजनकी बस्तुसे देवता पितर भी प्रसन्न और संतुष्ट होते हैं ब्राह्मणसेही वह यज्ञादिक उत्पन्न होते हैं जिनसे

कि सब सृष्टि उत्पन्न होती है (इसका यह प्रयोजन है कि श्रुति में लिखाहै कि अग्निमें होमीहुई आहुति सूर्य के पास जाती है तब सूर्य्यसे वर्षा होती है वर्षा से अन्न और अन्नसे प्रजा उत्पन्न होती है) ११ जिससे संसार की उत्पत्ति होती है और मरनेके पीछे जिसमें सबलय होते हैं वह और स्वर्ग नरककामार्ग यह सब ब्राह्मणही है अर्थात् ब्राह्मणकीही प्रसन्नतासे और क्रोधसे यह सब प्राप्त होता है इसको यथार्थही जानो १२ हे भरतर्षभ जो द्विपादों में श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मणहै वह भूत भविष्य को और अपने धर्म्मको जानताहै १३ जो मनुष्य इस ब्राह्मण की आज्ञानुसार कर्मोंको करते हैं उनका कभी पराभव नहीं होताहै न वहनाश को पाते हैं न अप्रतिष्ठा को पाते हैं १४ जो मन के जीतनेवाले बड़े बुद्धिमान् मनुष्य ब्राह्मणके मुखसे निकलेहुये बचनको स्वीकार करते हैं वह नाशको नहीं पाते हैं १५ पराक्रम और प्रतापसे तपानेवाले क्षत्रियों के बल और तेज ब्राह्मणोंमेंही शान्तीको पाते हैं १६ भृगुवंशियों ने तालजंघ नाम क्षत्रियोंको बिजय किया अंगिराबंशियों ने नीपनाम क्षत्रियों को और भरद्वाज ने बैतहव्य और नैलबंशी क्षत्रियोंको विजयकिया १७ जिनकी ध्वजा कृष्ण मृगका चर्म है उन ब्राह्मणोंने अपूर्व्व शस्त्रधारी क्षत्रियोंको बिजयकिया इसीकारण पृथ्वीको ब्राह्मणों के अर्थ दानकरके परलोकसम्बन्धी कर्मोंका प्रारम्भकरे वह कर्म दोनों लोकोंमें प्रकाशको उत्पन्न करताहै १८ जो भूत भविष्य स्थूल सूक्ष्मआदि जो कुछ लोक में ब्रह्मपर्य्यन्त कहा जाताहै अथवा सुना और पढ़ाजाताहै वह सब ब्राह्मणों में ऐसे गुप्तहैं जैसे कि लकड़ियों में अग्नि होतीहै १९ हे भरतर्षभ इस स्थानपर इस प्राचीन इतिहास को भी कहता हूं जिसमें कि पृथ्वी और बासुदेवजी का प्रश्नोत्तरहै २० बासुदेवजी बोले कि हे शुभस्त्री तू सब जीवोंकी माताहै तुझसे मैं एक सन्देहको पूछताहूं कि कुटुम्बी मनुष्य किस कर्म से अपने पापको दूरकरता है २१ पृथ्वी बोली ब्राह्मणोंकाही सेवन बड़ा पवित्रकर्म्म है ब्राह्मणों के सेवन करनेवाले मनुष्य का सब रुजनाश होजाता है २२ ब्राह्मणोंकेही पूजन से ऐश्वर्य्य यश कीर्त्ति और आत्मज्ञान उत्पन्न होताहै शत्रुओंका विजयी महारथी राजा खोजने के योग्यहै २३ नारदजीने मुझसे यह कहाहै कि धर्मज्ञ तीव्रबुद्धि पवित्र कुलीन ब्राह्मण को सब ऐश्वर्य्य के निमित्त इच्छाकरे २४ भूत भविष्य वर्त्तमानके जीवधारियों से उत्तम जो देवताहैं उनसे भी बढ़कर जो ब्राह्मणहैं वह

जिसकी प्रशंसा करते हैं वह बड़ी वृद्धिको पाताहै २५ जो मनुष्य ब्राह्मणों से कठोर बचन कहताहै वह थोड़ेही समयमें नष्ट होजाताहै जिसप्रकार से समुद्रमें गिराहुआ मृत्तिका का ढेला गलकर नष्ट होजाता है २६ उसीप्रकार ब्राह्मण से करीहुई सच्ची शत्रुता उसके नाशकी करनेवाली होतीहै देखो चन्द्रमामें कलंक उत्पन्न किया और समुद्रको खारी किया २७ इसीप्रकार महाइन्द्रके सहस्र भगहुईं थीं परन्तु इन्हीं ब्राह्मणोंके प्रभावसे फिर इन्द्र सहस्राक्षहोकर हजारयज्ञोंका करने वालाहुआ २८ हे माधव जी उनके प्रभाव को देखो कि इनकी कृपासे कैसे २ कामहुये और क्रोध होने से कैसी २ हानिहुईं हे मधुसूदनजी जो पवित्र बुद्धिमान् मनुष्य अपनी शुभकीर्त्ति ऐश्वर्य्य और लोकों को चाहै वह ब्राह्मणों के उपदेश में नियत हो २९ हे कौरव फिर मधुसूदनजी ने पृथ्वी के इस वचन को सुनकर उसकी प्रशंसाकरी और बड़ा धन्यबाद किया ३० हे राजायुधिष्ठिर तुम भी इस उत्तम इतिहास को सुनकर सावधानता से सदैव ब्राह्मणों को पूजो इसी से तुम्हारा कल्याण होगा ३१॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेपृथ्वीवासुदेवसंवादेचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४॥

पैंतीसवां अध्याय॥

भीष्मजी बोले कि यह महाभाग सब जीवोंका अतिथि सबसे प्रथम भोजन करने के योग्य ब्राह्मण जन्मसेही सबसे बड़ा और नमस्कार करने के योग्य होता है १ हे तात जिन ब्राह्मणों से धर्म्मादिक सब अर्थ प्राप्त होते हैं और जो सबके शुभचिन्तक और देवताओं के मुखरूप हैं वह ब्राह्मण पूजित होकर अपने मंगली बचनों से कल्याणकारी आशीर्वाद देते हैं २ हे तात हमारे शत्रुओं से अपूजित क्रोधमें भरेहुये वह ब्राह्मण भयकारी बचनों से हमारे सब शत्रुओं को बुरा आशीर्वाद दो या नाशकरो ३ प्राचीन वृत्तान्तके जाननेवाले मनुष्य पूर्व्व समय की कहीहुई गाथाओं को कहते हैं जिसप्रकारसे कि ईश्वरने ब्राह्मणों को उत्पन्न करके नियम कियाहै ४ इसलोक में जब कि बुद्धिके अनुसार रक्षित ब्राह्मण सबकी रक्षा करताहै तो फिर दूसरा कोई कर्म न करना चाहिये इन ब्राह्मणों से तुम्हारा कल्याण होना बहुत श्रेष्ठहै ५ ब्राह्मणकी रक्षाआदि अपना कर्मकरो तुम्हारी लक्ष्मी ब्राह्मीहोगी और तुम सब जीवों के प्रमाणरूप होकर उनके स्वा-

धीन करने को समर्थ होगे ६ बुद्धिमान् पुरुष को ब्राह्मण से सेवाआदि शूद्रोंका कर्म न कराना चाहिये जो मनुष्य उनसे शूद्रकर्म्म कराता है उसका धर्म्म नष्ट होजाता है ७ क्योंकि वह ब्राह्मण लक्ष्मी बुद्धि और तेजका सन्तप्त करनेवाला ऐश्वर्य्य वेदपाठ और जपमें बड़ी प्रतिष्ठा और वृद्धता को प्राप्त करता है ८ वह ब्राह्मण आहवनी नाम अग्निमें नियत देवताओं के समूहों को आहुती देकर वृद्धता में युक्तहोकर बालकों से भी प्रथम भोक्ता है वह ब्राह्मण विद्यारूप ब्राह्मलक्ष्मी के द्वारा पात्र विचार किये गये हैं ६ अशत्रुता से प्राप्तहुई श्रद्धासे युक्त शान्तचित्त जपमें प्रवृत्त तुम सम्पूर्ण मनोरथों को प्राप्त करोगे १० नरलोक और देवलोकों में जो कुछहै वह सब तप ज्ञान और नियमसे प्राप्त होने के योग्यहै ११ हे निष्पाप इसरीति से यह वेद में कही हुई ब्राह्मणसम्बन्धी गीता तेरी वृद्धिकी इच्छासे मैंने तुझसेकही यहगीता उस सब प्राचीन वृत्तान्तके ज्ञातासे कहीहुई है १२ मैं उन ब्राह्मणोंका पराक्रम ऐसा बहुत बड़ा मानताहूं जैसा कि तेजस्वी राजा का होताहै क्योंकि वह ब्राह्मण बड़ी कठिनतासे स्वाधीन होनेवाले तीव्र प्रकृति शीघ्रता करनेवाले और तत्काल कर्म्म करनेवाले हैं १३ इनमें कोई सिंह के समान पराक्रमी हैं कोई व्याघ्रके समान बलवान् हैं और कोई २ ब्राह्मण बराह मृग और जलके समान पराक्रमी हैं १४ कोई सर्पके स्पर्श के समान कोई मगरके स्पर्शके समानहैं कोई शापसे मारनेवाले कोई दृष्टिसेही नाशकरनेवाले हैं १५ कोई विषैले सर्पके समान कोई मृदुस्वभावहैं हे युधिष्ठिर इसलोक में ब्राह्मणोंके वृत्तांत नानाप्रकारके हैं १६ मेकल द्राविड़ लाट पौंड्र कोन्वशिर शौंडिक दरद दर्व चौर शबर बर्बर किरात यवन १७ आदिक क्षत्रिय जातोंने ब्राह्मण के क्रोधके न सहने से शूद्रवर्णों को पाया १८ असुरलोग ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा न करनेसे जलमें निवासीहुये और देवतालोग ब्राह्मणों की कृपा से स्वर्गबासी हैं १६ जैसे आकाशका स्पर्श हिमालय पर्वतका चलायमानहोना असम्भव और गंगाजी पुलों से रोकनेके अयोग्यहैं उसीप्रकार इस पृथ्वीपर ब्राह्मण भी कठिनतासे बिजय होनेवाले हैं २० ब्राह्मणों के बिरोधियोंसे पृथ्वीके जीवों का स्वाधीन करना असम्भव है यह महात्मा ब्राह्मण देवताओं के भी देवता हैं २१ हे युधिष्ठिर जो तुम इस सागररूप मेखला रखनेवाली पृथ्वी को भोगना चाहतेहो तो इन ब्राह्मणों को दान सेवा आदि से सदैव पूजनकरो २२ हे निष्पाप राजा

युधिष्ठिर दानलेनेसे ब्राह्मणोंका तेज शांतहोताहै जो ब्राह्मणदानलेनेकी इच्छा नहीं करते हैं उनसेही तुमको अपने कुलभरेकी रक्षाकराना चाहिये २२ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेब्राह्मणप्रशंसायांपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले हे युधिष्ठिर इस स्थानपर इस प्राचीन इतिहास को कहताहूं जिसमें इन्द्रदेवता और शम्बर दैत्यका प्रश्नोत्तरहै १ इन्द्रने अपने स्वरूपको छ-पाकर धूम्रकृष्णतायुक्त रक्तवर्णहोकर रथमें बैठकर शम्बरसे प्रश्नकिया २ हेशम्बर तुम किस कर्म्म से अपने भाई बिरादरी और नातेदारों से उन्नत नियत होतेहो और किस कारण से तुमको वह लोग उत्तम मानते हैं इसको मूलसमेत वर्णन करो ३ शम्बरने उत्तरदिया कि मैं ब्राह्मणोंके गुणों में कभी दोष नहीं लगाताहूं तब उस दशामें मेरे सम्पूर्ण उपाय ब्राह्मणोंकी सलाह से होते हैं और शास्त्रके विचार करनेवाले ब्राह्मणोंकी बड़े आनन्दपूर्वक प्रतिष्ठा करताहूं ४ उनकी आज्ञा का भंग और अपमान नहीं करताहूं और किसी समय अपराध नहीं करताहूं और उन बुद्धिमानोंका पूजनकरताहूं उनके दोनोंचरण छूताहूं और सब विषयों में पूछपाछ कियाकरताहूं ५ वह विश्वासी और शान्तरूप होकर अच्छे प्रकार से वर्णन करते हैं और सदैव मुझको पूजते हैं और मैं उन सदैव विसमरण हो जानेवालोंमें सावधानहूं और सोनेवालोंके मध्यमें सदैव जागताहूं ६ वह शिक्षा करनेवाले ब्राह्मण मुझ वेद ब्राह्मणों के रक्षक दूसरे के गुणों में द्वेषरहित शास्त्र मार्गमें वर्त्तमानको अमृतरूपी विद्यासे ऐसे सींचते हैं जैसे कि सहदकी मक्खी अपने छत्तेको सहदसे सींचती हैं ७ जब प्रसन्नहोकर वह ब्राह्मण कुछ कहते हैं तब मैं बुद्धिकेद्वारा उसको अङ्गीकार करताहूं मैंने सदैव उस ब्रह्मवचनको अपने अनुसार आत्माकी समाधि विचार कियाहै ८ जो विद्यारूपी अमृत जिह्वाग्र में बड़ामधुर मालूमहोता है उसका चाटनेवाला मैं चित्तकी दृढ़तासे अपने भाई बंधु रिश्तेदारों की शासना में ऐसे नियत होता हूं जैसे कि नक्षत्रों के ऊपर चन्द्रमा शासन करनेवाला होताहै ९ वहपृथ्वीपर अमरहै और उत्तमनेत्रहै जो इसलोक में ब्राह्मणके मुखसे शास्त्रको सुनकर कर्मकर्त्ता होता है १० पूर्व्वसमयमें इस सत्र को जानकर और देवता असुरोंके युद्धको देखकरप्रसन्न चित्त मेरे पिता आश्चर्य-

युक्तहुये ११ महात्मा ब्राह्मणों की महानताको देखकर चन्द्रमासे पूछा कि यह ब्राह्मण किस प्रकार से सिद्ध हुये हैं १२ चन्द्रमाने उत्तर दिया बचन में सामर्थ्य रखनेवाले सब ब्राह्मण सदैव तपसे सिद्धहोते हैं राजालोग भुजाबल रखनेवाले और ब्राह्मणलोग बचनरूपी बज्र रखनेवाले हैं १३ गुरुकुल में दुःखरूप निवास-कर्त्ता ब्राह्मण प्रणव और वेदार्थ को जप और पाठकरें और क्रोधसे रहित सम-दर्शी जीवनमुक्त संन्यासी १४ ज्ञानसेयुक्त स्तुतिमान ब्राह्मण पिताके घरमें सब वेदोंको पढ़े यह ग्रामीण शिक्षाहै आशय यहहै कि पिताके घर में पढ़ना नि-न्दितहै पृथ्वी उन दोनोंको ऐसे निगलजाती है जैसे कि सर्प बिलमें निवासकर-रनेवाले मूषकआदिको एक प्रथमयुद्ध न करनेवाला राजा दूसरा वेदाध्ययनके निमित्त किसी अन्यनगर वा ग्राममें निवास न करनेवाला ब्राह्मण १५।१६ और न्यूनबुद्धी मनुष्यका अहंकार लक्ष्मीका नाश करताहै कन्या गर्भ रहने से ब्रा-ह्मण घरमें निवास करने से दोषयुक्त होजाते हैं १७ मेरे पिताने अपूर्व्वदर्शन चन्द्रमासे इस बातको सुनकर बड़े ब्रतवाले ब्राह्मणको पूजनकिया १८ भीष्मजी बोले कि इन्द्रने दानवेन्द्रके मुखसे निकलेहुये इस बचनको सुनकर ब्राह्मणों का अच्छीरीतिसे पूजन किया इसीसे महाइन्द्रपदवी को पाया १९ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेब्राह्मणप्रशंसायामिन्द्रशंबरसंवादेषट्त्रिंशोऽध्यायः३६

सैंतीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे पितामह जो पूर्व्व में नहीं देखाहै वह ब्राह्मण या बहुत कालतक समीपही निवास करनेवाला अथवा दूसरे आया हुआ ब्राह्मण इन तीनों में से कौनसा पात्र होताहै १ भीष्मजी बोले कितनेही ब्राह्मणों के पात्र होने में याज्ञिक विद्यावान् गुरुदक्षिणा और बालबच्चों के पोषणके लिये किसीसे याचनाकरना इत्यादि और मौन संन्यास होना भी कारण होताहै स्वरूपही से ब्राह्मणत्व नहीं होताहै इसीसे प्रथमश्लोक में कहेहुये पात्र ब्राह्मण जो कुछ या-चनाकरे उनको यही उत्तर देदूंगा कि निषेध कभी न करे २ परन्तु पोषणकरने केयोग्य दास आदिको कष्ट न देताहुआ उस वस्तुको दे क्योंकि पोषण योग्य दास आदिको दुःखका देना स्वामीको निर्बल करताहै यह हमने श्रेष्ठलोगों से सुनाहै ३ जो ब्राह्मण प्रथमनहीं देखा और जो बहुतकाल से समीप रहनेवाला

है यह दोनों और जो दूरसे आयाहोय उन सबको पूजनकरे क्योंकि बुद्धिमान् लोग उन सबको पात्रही मानते हैं ४ जीवोंको दुःख न देने से और धर्मकी हिंसा न करने से उसको दानदेना चाहिये जिसको कि अच्छीरीति से पात्रजाने और जिसको देने से उस दान वस्तुका अभिमानी देवता कष्ट न पावे ५ भीष्मजी बोले कि शास्त्रज्ञ और दूसरेकी निन्दा न करनेवाले ऋत्विज पुरोहित आचार्य शिष्य नातेदार बांधव यह सब पूजन और प्रतिष्ठाके योग्य हैं ६ इसके विपरीत कर्म करनेवाले सबलोग पूजनादिके योग्य नहीं हैं इसी हेतुसे पूरा उपायकरके सदैव मनुष्योंकी परीक्षाकरे ७ हे भरतवंशी क्रोधरहित सत्यवक्ता और हिंसा से वर्जित शान्तचित्त सत्यतामें भरा किसीसे शत्रुता न करनेवाला लज्जा सन्तोष-युक्त भीतरसे क्षमावान् इतनेगुण जिसमें दिखाई देते हैं और यही सबगुण जिस में स्वाभाविकभी होयँ वहपात्र प्रतिष्ठाके योग्यहै ८।९ इसीप्रकार जो बहुतकाल समीप बसताहो अथवा जो अभ्यागत प्रथम देखाहोय वा न देखाहोय वही पात्र है और प्रतिष्ठाके योग्यहै १० वेदोंका प्रमाण न करना शास्त्रोंके विपरीत कर्म्म-कर्त्ता होना और संपूर्ण शुभकार्य्यों में न ठहरना यह बातें पात्रताकी नाशक-रनेवाली हैं जो ब्राह्मण अपनेको पंडित माननेवाला और वेदों की निन्दाक-रनेवालाहोय और शास्त्रका विरोधी होनेसे मोक्षमें काम न देनेवाली आन्वीक्षि-की नाम तर्कविद्यामें प्रवृत्तहोय ११।१२ सत्पुरुषों में हेतु बचनों को कहकर वि-जय करनेवालाहै परन्तु शास्त्रके बिना लिखे हेतु बचनोंको कहताहुआ हेतुबादी नहीं है और सदैव ब्राह्मणोंको दक्षिणा आदिका देनेवाला होकर अधिक वक्तृत्व शक्तिवालाहै १३ शास्त्रके सब बचनोंमें शंका करनेवाला मूर्ख अज्ञान और कटु बचनोंका कहनेवाला है उस प्रकारका मनुष्य स्पर्श करने के भी योग्य न जा-नना उचितहै क्योंकि श्रेष्ठ लोगोंने उसको कुत्तेके समान मनुष्य वर्णन कियाहै १४ जैसे कि कुत्ता भौंकने और काटनेको तैयार होताहै उसीप्रकार ऐसे प्रकार का मनुष्य तर्क करने और सब शास्त्रोंके नाशकरनेको तैयार होताहै १५ अच्छे लोगोंका आचारादि व्यवहार वेद और स्मृतियों के लिखे के अनुसार होताहै और अपनी कुशल चाहनेवाले शान्तचित्त लोग गुणों से रहित भी देखने के योग्यहैं इस प्रकार से कर्म करनेवाला मनुष्य सदैव बर्षोंतक वृद्धिको पाताहै १६ देवताओंका यज्ञादिक ऋण ऋषियोंका वेदपाठादिक ऋण पितरोंका सन्तान

उत्पन्नादिक ऋण ब्राह्मणोंका दान और प्रतिष्ठादिक ऋण अतिथियों का वैश्व-देवके अन्तमें आनेवालों को भोजनादिका देना इन सब ऋणोंको १७ पवित्र कर्म और अच्छेप्रकारसे सीखेहुये उपायोंसे देकर ऋणोंसे निवृत्तहोके यज्ञादिक कर्मोंको करताहुआ धर्म से भ्रष्ट नहीं होताहै १८ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेपात्रपरीक्षायांसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ साधू पितामह मैं आपसे स्त्रियों के स्व-भावोंको सुनाचाहताहूं क्योंकि स्त्रियांही दोषोंकी मूलहैं वह स्त्रियां वायुके स-मान चित्तकी कँपाने वा डुलानेवाली कहीगई हैं १ भीष्मजी बोले कि इस स्थान पर इस प्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें पंचचूड़ा अप्सराका और नारदमुनि का सम्बादहै २ पूर्व्व समयमें सबलोकों में घूमतेहुये देवर्षि नारदजी ने ब्रह्मलोक में नियत निर्दोष पंचचूड़ा नाम अप्सरा को देखा ३ मुनि ने उस भयानकरूप सर्वांग अप्सराको देखकर पूछा कि हे सुमध्यमे मेरे हृदयमें कुछ सन्देहहै उसको तू मुझसे वर्णनकर ४ भीष्मजी बोले कि इसप्रकार नारदजी के पूछनेपर उस अप्सराने नारदजी को उत्तरदिया कि कहने के योग्यहोगा तो कहूंगी आप मु-झको समर्थ जानतेहो ५ नारदजी बोले हे कल्याणिनी मैं किसी दशा में भी तुमसे कहने के अयोग्य बातको न पूछूंगा हे श्रेष्ठमुखी तुमसे मैं स्त्रियोंका स्व-भाव सुना चाहताहूं ६ भीष्मजी बोले कि देवर्षि नारद के वचन को सुनकर उस उत्तम अप्सराने उत्तर दिया कि मैं स्त्री होकर स्त्रियों की निन्दा करने को स-मर्थ नहीं हूं ७ जैसे स्वभाव की स्त्रियां होती हैं वह सब आप जानते हैं हे दे-वर्षि आप ऐसे विषय में मुझसे पूछने को योग्य नहींहो ८ तब देवर्षि ने उससे कहा कि हे सुमध्यमे तुम सत्य२ कहो मिथ्या बोलने में दोषहै सत्यमें कभी दोष नहीं है ९ ऐसे कहीहुई वह प्रसन्नमूर्त्ति अप्सरा कहने को उपस्थित हुई और स्त्रियों के प्राचीन सत्य २ दोषोंका कहना प्रारम्भ किया १० पंचचूड़ा बोली हे नारदजी अत्यन्त कामी रूपवान् पति रखनेवाली स्त्रियां मर्य्यादाओंपर नियत नहीं होती हैं यही स्त्रियों में दोषहैं ११ निश्चय करके स्त्रियों से अधिक कोई पापी नहीं होता स्त्रियां दोषोंकी मूलहैं यह तुमभी जानतेहो १२ स्त्रियां विरुद्धता को

पाकर अच्छी परीक्षा करीहुई अपने योग्य स्वाधीनता में नियत भी पतियों से पूजन के योग्य नहीं हैं १३ हे प्रभु हम स्त्रियोंका यह तेज धर्म्म होताहै जो हम लज्जाको त्यागकर दुराचारी मनुष्योंका सेवन करती हैं १४ जो मनुष्य स्त्रीको चाहताहै वह उसके पास जाताहै थोड़ीसी भी सेवाकरताहै स्त्रियां उसीको चाहती हैं १५ वह बेमर्याद स्त्रियां अन्य मनुष्यों के बुलानेपर केवल अपने नातेदारों के भयसे अपने पतियोंके पास मर्यादामें नियत होती हैं १६ कोई मनुष्य इनको स्पर्श करनेके अयोग्य नहीं है और तरुणावस्था आदिमें इनका कुछ भी भरोसा और निश्चय नहीं है चाहे पुरुष कुरूपहोय या स्वरूपवान् होय कैसा भी होय उसको भोगती हैं १७ स्त्रियोंको किसी दशामें भी भय दया वा धनका हेतु वा जातिका विचार वा कुलका बिचार नहीं होताहै वह स्त्रियां अपने पतियोंके पास नियत नहीं होती हैं १८ कामी स्त्रियां उन स्त्रियोंकी इच्छा करती हैं जोकि तरुण स्वच्छभूषण और पोशाक रखनेवाली व स्वेच्छाचारी हों १९ जो स्त्रिया अत्यन्त प्यारी होकर अंगीकृतहैं और सदैव रक्षा में रहती हैं वहभी कुबड़े अन्धे लूले और अज्ञान अन्य मनुष्यों से सम्भोग करती हैं २० हे देवर्षि जो लंगड़े या अन्य दोषवाले मनुष्य हैं वह उनसे भी मिलती हैं हे महामुनि इसलोक में स्त्रियोंको भोगके लिये कोई पुरुष अयोग्य नहीं है २१ हे ब्रह्मन् जो किसी दशा में उनको पुरुष नहीं मिलते हैं तब वह परस्पर में भी सम्भोग करती हैं अर्थात् बनावटका लिंग धारणकरके भोगकर्म्मको करती हैं पति के दूरहोने पर धैर्य्य में नियत नहीं रहती हैं २२ वह स्त्रियां दूसरे पुरुषों के न मिलने पर नातेदारों के भयसे और पकड़ेजाने में मारेजाने के डरसे आपही रक्षित होती हैं २३ इसलोक में स्त्रियां चंचलस्वभाव और कठिनता से सेवन के योग्य हैं और बड़ी प्रीति के द्वाराभी इस रीति से स्वाधीन रहती हैं जैसे कि ज्ञानी मनुष्यका बचन स्वाधीन होताहै २४ जैसे कि लकड़ियों से अग्नि नदियों से महासमुद्र और सब जीवों के मारने से मृत्यु तृप्ति नहीं होती है इसीप्रकार सुन्दरमुख रखनेवाली स्त्रियां भी पुरुषों से तृप्त नहीं होती हैं २५ हे देवर्षि सब स्त्रियों की यह दूसरी गुप्तबात है कि अपने चित्तरोचक मनुष्यको देखकर स्त्रीकी योनि तर होजाती है २६ स्त्रियां अपने उस पतिको भी नहीं सेवती हैं जो कि अभीष्ट बस्तुओंका और मनोरथों का देनेवाला चित्तका प्रसन्न करनेवाला और रक्षकहो २७ मनमाने बड़े २ भोग

आभूषण और महलों को भी ऐसा बड़ा नहीं मानती हैं जैसा कि स्नेह और भोग विषय को उत्तम और बड़ा आनन्दकारी समझती हैं २८ यमराज वायु मृत्यु पाताल बड़वानल नाम अग्नि खड्गकी धार बिष अग्नि यह सब तो एक ओरको और स्त्रियां दूसरीओरको अर्थात् स्त्रियां मृत्युआदि के समान शीघ्रही मारनेवाली है २६ हे नारदजी जिस ईश्वरसे पंचमहाभूत और सब लोक उत्पन्न हुये और जिससे स्त्री पुरुष उत्पन्न किये गये उसी ने स्त्रियों में दोषों को भी उत्पन्न कियाहै अर्थात् यह उनके स्वाभाविकीय ऐसे गुणहैं जैसे कि अग्नि में स्वाभाविकीय गुण गरमी होती है ३० ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेपंचचूडानारदसंवादे अष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरने प्रश्नकिया कि हे पितामह ईश्वरसे उत्पन्न बड़े मोहों में भरेहुये यह मनुष्य संसार में सदैव स्त्रियोंपर आसक्त होते हैं १ और स्त्रियां पुरुषों के ऊपर अनुरक्त होती हैं यहबात प्रत्यक्ष और लोकको साक्षी रखनेवाली है इस बिषय में बड़ाभारी कठिन सन्देह मेरे हृदयमें बर्त्तमान हुआहै और बहुतसमय से रहता है २ हे कौरवनन्दन मनुष्य किसप्रकार से इनका संग करते हैं और वह स्त्रियां कौनसे मनुष्यों के साथ प्रीति करती हैं और फिर प्रीति को हटालेती हैं ३ हे पुरुषोत्तम वह स्त्रियां इसलोक में पुरुषसे किसप्रकार रक्षा करनीचाहिये उसे आप कृपाकरिके कहिये ४ इसलोकमें क्रीड़ाको करतीहुई यह स्त्रियां मनुष्यको ठगती हैं इन्हों के हाथ में आयाहुआ कोई मनुष्य नहीं छूटता ५ जैसे कि गौ नवीन तृणोंको लेती हैं उसीप्रकार यह स्त्रियाँ नवीन नवीन पुरुषों को अपने आधीन करती हैं शम्बरदैत्यकी जो मायाहै अथवा नमुचि असुरकी जो मायाहै ६ राजा बलि वा कुम्भीनसीकी जो मायाहै उन सब मायाओं को स्त्रियों ने जानाहै यह स्त्रियां हँसतेहुओं को हँसती हैं और रोतेहुओं के पास रोती हैं ७ और समयकी लौट पौटसे प्यारे वचनों से अप्रियको प्राप्त करती हैं शुक्रजी जिस शास्त्रको जानते हैं और बृहस्पतिजी जिस शास्त्रको जानते हैं ८ वह दोनोंभी स्त्रीकी बुद्धि से अधिक नहीं जानते वह स्त्रियां किसप्रकार से पुरुषों की रक्षाके योग्य हैं ९ जिन स्त्रियों ने मिथ्याको सत्यकहा और सत्य को मिथ्या कहा हे वीर पितामह

वह स्त्रियां किसप्रकार मनुष्यों से पूरी रक्षाके योग्य हैं हे शत्रुसंहारी मैं मानता हूं कि बृहस्पति सरीके सत्पुरुषों ने स्त्रियोंकी बुद्धि से निकलेहुये प्रयोजनसे अर्थशास्त्रको बनाया मनुष्यों से अच्छेप्रकारसे पूजित स्त्रियां मनुष्यों के साथ मनको बदल लेती हैं १० । ११ हे राजा उसीप्रकार निर्लज्ज स्त्रियां भी मनको बदल लेती हैं हे महाबाहो यह स्त्रीरूप धर्मात्मा सृष्टि है यह हमने वेदमें सुनाहै अर्थात् वेदसे सम्बन्ध रखनेवाली सावित्रीआदि हैं यह वचन मुख्यकरके उन्हीं के वास्ते है १२ यह स्त्रियां पूजित और अपूजितभी सदैव मनको बदलती हैं कौनसा पुरुष उनकी रक्षा करनेको समर्थ होसक्ताहै यह मुझको बड़ा सन्देहहै १३ हे कौरव बंशकी वृद्धि करनेवाले कौरवों में श्रेष्ठ महाभाग भीष्म जी किसीसमय परभी उनकी रक्षाकरना सम्भवहै अथवा कभी पूर्व्वसमयमें भी किसीने करी यह मूल समेत आप मुझसे कहनेको योग्यहैं १४ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिराजधर्मेविपुलोपाख्याने एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

चालीसवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले हे महाबाहु राजायुधिष्ठिर यह इसी प्रकारसे है इसमें कुछ भी मिथ्या नहीं है जैसा कि तुम स्त्रियों के विषय में कहतेहो १ इस स्थानपर एक प्राचीन इतिहास कहताहूं जिसमें पूर्व्वसमयमें विपुलनाम महर्षी ने स्त्रीकी रक्षा करी है २ हे भरतर्षभ राजायुधिष्ठिर ब्रह्माजीने जैसे और जिस प्रयोजनके निमित्त स्त्रियां उत्पन्नकी हैं हेतात वह सब तुमसे कहताहूं ३ हे पुत्र स्त्रियों से अधिक कोई पापी नहीं है अग्निकी ज्वालामय दैत्यकी माया खड्गकी धार सर्प का बिष यह सब मिलकर स्त्रियों के समान हैं हे महाबाहो हमने भी सुनाहै कि यह धर्मात्मा सृष्टि है ४।५ यह आप देवभावको पाती हैं इसकारण देवताओंको इनसे भय उत्पन्नहुआ हे शत्रुओं के विजय करनेवाले तब वह देवतालोग ब्रह्माजीके पासगये ६ और अपने चित्तकी बातको प्रकटकरके नीचीगर्दन करके मौनहो बैठे प्रभु ब्रह्माजीने उन देवताओंके चित्तकी इच्छाको जानकर, मनुष्यों के छलने के निमित्त कृत्यारूप स्त्रियां उत्पन्नकीं हे कुन्तीनन्दन पूर्व्व सृष्टि की आदि में स्त्रियां शुभकर्म्मी और पतिव्रताथीं ७।८ ब्रह्माकी कृत्यानाम उत्पत्तिसे, दुराचारिणी स्त्रियां उत्पन्नहुईं फिर ब्रह्माजी ने उन स्त्रियों के लिये इच्छानुसार

कार्य्यादिक सुपुर्दकिये ६ वह स्त्रियां स्नेह और भोग के लोभसे सदैव मनुष्यों को दुःख देती हैं फिर उस देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी ने कामदेव के सहायक क्रोधको उत्पन्न किया १० काम क्रोध के आधीनहोकर सब सृष्टि के जीव विषय भोगमें प्रवृत्तहुये स्त्रियों की कोई क्रिया नहीं है यह धर्म्मशास्त्र में लिखा है ११ स्त्रियां इन्द्रियों से और शास्त्रसे रहित मिथ्याका रूपहैं यह इस श्रुतिका अर्थ है (निरिन्द्रियाह्यशास्त्राश्चस्त्रियोनृमिति) ब्रह्माजी ने पलंग आसन भूषणादि वस्तु खाने पीनेकी वस्तु अनार्य्यता कठोरवचनोंसे कलहको उत्पन्नकरना और भोग यह सब ब्रह्माजीने स्त्रियोंको दिये इस हेतुसे पुरुष इनकी किसीदशामें भी रक्षा नहीं करसक्ता १२।१३ हेतात इनकी रक्षा ईश्वरभी नहीं करसक्ता फिर इसलोकमें मनुष्य कैसे करसक्ताहै बातों से मारपीट से और इनके सिवाय अनेक प्रकार के दुःखोंसे भी १४ स्त्रियां रक्षा करने के योग्य नहीं क्योंकि वह शास्त्र में लिखेहुये नियमोंसे सदैव पृथक्हैं हे पुरुषोत्तम मैंने पूर्व्वकालमें यह सुना है १५ जैसे कि विपुलऋषिने अपने गुरुकी स्त्रीको रक्षितकिया एक देवशर्मानाम प्रसिद्धऋषि थे १६ उसकी स्त्री रुचिनाम स्वरूपमें पृथ्वीपर अनूपमथी हेराजेन्द्र देवता गंधर्व दानव उसके रूपपर आसक्तथे १७ मुख्यकर वृत्रासुरका मारनेवाला इन्द्रभी उस से आसक्तथा स्त्रियोंके चरित्रको जाननेवाले देवशर्मानाम महामुनिने १८ सामर्थ और उत्साहके अनुसार उसभार्याको रक्षितकिया वहऋषि इन्द्रको दूसरेकी स्त्रीसे भोग करनेवाला जानतेथे १९ इसीहेतुसे उसने अपने योगबलसे उसभार्या की रक्षाकरी हे तात कभी उस ऋषिने यज्ञकरने में चित्तको लगाया तब उसने बड़ी चिन्ताकरी कि भार्य्याकी पूरीरक्षा करनी चाहिये सो कैसेहोय २० तब उस बड़े तपस्वीने रक्षाका उपाय चित्तसे विचारकर अपने शिष्य विपुल भार्गवको बुलाकर यहवचन कहा कि २१ मैं यज्ञकरनेकी इच्छासे जाऊंगा और देवेश्वर इन्द्र इस रुचिको सदैव से जानताहै इसकारण उसको उस इन्द्रसे अपने योगबल से रक्षाकरो २२ हे भार्गवों में श्रेष्ठ सदैव तुझ सावधान को इन्द्र से खबरदार रहना चाहिये क्योंकि वह नानाप्रकार के स्वरूपों को धरता है २३ भीष्मजी बोले हे राजा इस रीति से समझायेहुये उस तपस्वी जितेन्द्रिय सदैव उग्रतप करनेवाले अग्नि सूर्यके समान कान्ति रखनेवाले २४ धर्मज्ञ सत्यवक्ता विपुलमुनिने उत्तर दिया कि ऐसाही होगा हे महाराज फिर उसने चलतेहुये गुरू से यह पूछा २५

हे मुनि आतेहुये इन्द्रके कौन२ से रूप होते हैं कैसा शरीर और तेज होता है उसको आप मुझसे कहनेको योग्यहैं २६ भीष्मजी ने कहा हे भरतवंशी इसके अनन्तर उस भगवान् ऋषि ने महात्मा विपुल के सम्मुख इन्द्र की माया को मूलसमेत वर्णन किया २७ देवशर्म्मा ने कहा हे ब्रह्मर्षि वह इन्द्र अनेक माया रखनेवालाहै वारम्बार अपने शुद्धरूपों को बदलताहै २८ वह किरीट मुकुट वज्र धनुष और कुण्डल धारणकरनेवाला होकर एक मुहूर्त्त मेंही चाण्डालके समान दर्शनवाला होजाताहै २९ हे पुत्र फिर वह शिखा जटा और चीरपत्रका धारण करनेवाला होता है फिर बड़े शरीरवाला चीरवस्त्रधारी होकर अत्यन्त दुर्बल भी होजाताहै ३० फिर घोर श्याम और कृष्ण वर्णको बदलताहै दुःखरूप स्वरूप-वान् तरुण वृद्ध ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रके रूप होजाताहै ३१ और प्रति-लोम अनुलोम वर्णवाला होकर तोता काक हंस और कोकिलकासा रूप हो-जाताहै ३२ फिर सिंह व्याघ्र और हाथीकी भी सूरत होताहै फिर देवता दैत्य और राजाओंके भी शरीरको धारण करलेताहै ३३ मोटा वायुसे टूटाहुआ शरीर का चर्म पक्षीरूप और रोगी की सूरत फिर बहुत प्रकार के पशुओंकी सूरत बा-लकरूप कभी मच्छर आदिकेभी शरीरको धारण करताहै हे विपुल कोई उसको पकड़ नहीं सक्ता ३४।३५ हे तात सृष्टि के स्वामी से भी यहबातें होनी असम्भव हैं अन्तर्धान होनेवाला इन्द्र ज्ञानदृष्टी से दिखाई देताहै ३६ फिर वह देवताओं का राजा वायुरूप भी होजाताहै इसप्रकार के अनेक २ रूपोंको वह इन्द्र सदैव धारणकिया करताहै ३७ हे विपुल इसीकारण बड़े उपायों से इस सुन्दरी की रक्षा करो हे भार्गवोत्तम अब जिसरीति से वह देवेन्द्र इस स्त्रीको ऐसे दूषित न करे ३८ जैसे कि दुष्टचित्त कुत्ता यज्ञस्थापन में रक्खेहुये हव्यको दूषित करता है हे भरतर्षभ तब यज्ञ करने के अभिलाषी वह महाभाग देवशर्मा मुनि इसप्रकार से कहकर चलेगये ३९ विपुलने गुरूके वचनों को सुनकर बड़ी चिन्ताकरी और बड़ेबली देवराज इन्द्रसे पूरी रक्षाकरी ४० अर्थात् विचार किया कि मुझको गुरु की स्त्रीकी रक्षा करनेके विषय में क्या करना चाहिये यह महामायावी पराक्रमी देवराज बड़ी कठिनतासे विजय होनेवालाहै ४१ आश्रम वा वर्ण शालाको ढ-कने से भी इन्द्र से रक्षाकरना सम्भव नहीं है क्योंकि वह अनेक प्रकार के रूप धारण करताहै ४२ कदाचित इन्द्र वायुरूप होकर गुरुपत्नी को सतावे या दूषित

करे इसहेतुसे मैं इस रुची के शरीर में प्रवेश करके नियत होऊंगा ४३ यह परा
क्रमके द्वारा मुझ से रक्षा करनेके योग्य नहीं है क्योंकि इन्द्र अनेक रूपवाल
सुनाजाताहै ४४ सो मैं योगवलके द्वारा इसको इन्द्रसे बचाऊंगा अर्थात् अपने
सूक्ष्म अंगसे उसके अंगों के मार्गों में होकर शरीरमें प्रवेश करूंगा ४५ जो अ
मेरे गुरू इस अपनी पत्नीको उच्छिष्टरूप देखेंगे तब वह दिव्यज्ञानवाले मह
तपस्वी अपने क्रोधसे अवश्य शापदेंगे ४६ जिस प्रकारसे अन्य स्त्रियोंकी म
नुष्य रक्षा करते हैं उस प्रकारसे इसकी रक्षाकरना असम्भवहै क्योंकि यह देव
राज वड़ा मायावी है वड़े खेदकी वातहै कि मैंने अपने ऊपर भारी उपाधि क
लिया ४७ और गुरूकी आज्ञाका करना भी अत्यन्त अवश्यहै जो मैं इसके
करूं तो उस दशामें कहीं मुझको दोप न लगे ४८ योगवलसे गुरुपत्नी के शरी
में प्रवेश करना ऐसी निर्लेपता से रहितहै जैसे कि कमलके पत्तेपर चलायमान
और नियत अम्बुकण होताहै ४९ परन्तु जो गुण के स्वभाव से मुझ रहितक
ऐसे अपराध नहीं है जैसे कि विदेशी सभामें होकर जंगलके मार्ग में निवास
करें ५० अव मैं उसी प्रकारसे गुरुपत्नी के शरीरमें निवास करूंगा ५१ वह भा
र्गव इसप्रकारसे सवधर्म वेद और वेदांगों को विचारकर गुरूके और अपने बड़े
तपको देखकर ५२ और रक्षाके निमित्त चित्तसे इसनिश्चयको करके जैसे उत्तम
उपायमें प्रवृत्तहुआ हे युधिष्ठिर उसको तुम मुझसे सुनो ५३ और जैसे उस बैठे
हुये महातपस्वी विपुलने उस वैठीहुई निर्द्दोष गुरुपत्नी को प्रयोजन में लुभाया
५४ और उसके दोनों नेत्रोंकी किरणों को अपने नेत्रोंकी किरणों से मिलाकर
ऐसे शरीर में प्रवेशकिया जैसे कि वायु आकाश में प्रवेश करती है ५५ अर्थात
छायाके समान अन्तर्द्धानहो वह मुनि लक्षणों से लक्षणमें मुखसे मुखमें चेष्टासे
चेष्टामें स्थितिसे स्थिति में प्रविष्टहोकर निश्चेष्ट होकर नियतहुआ ५६ इसके अ-
नन्तर रक्षामें प्रवृत्त उसविपुलने गुरुपत्नी के शरीरको निश्चेष्टकरके निवास किया
और उस गुरुपत्नीने उसको नहीं जाना ५७ हेराजा जवतक कि उसमहात्माका गुरू
यज्ञको समाप्तकरके अपने घरको नहीं आया तवतक उसने उसकी रक्षाकरी ५८॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेविपुलोपाख्यानेचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

इकतालीसवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि इसके पीछे देवेन्द्र किसी समय अपना अवकाश जान-कर बहुत दिव्यरूप और उत्तम शरीरको धारणकरके उस आश्रम में आया १ हे राजा वह इन्द्र अनूपम और छलित करनेवाले अत्यन्त दर्शनीय स्वरूपको बनाकर आश्रम में आया २ उसने उस बैठेहुये विपुलके शरीर और नेत्रों को ऐसे निश्चेष्ट देखा जैसे कि कागज़का लिखा चित्र होताहै ३ उस इन्द्रने सुन्दर नेत्र मोटेकान और स्तनवाली कमलपत्रकी समान आयतनेत्र पूर्ण चन्द्रमाके समान मुख रखनेवाली रुचिको भी देखा ४ तब उसको देखकर यह कहने की इच्छासे कि यह कौन पुरुषहै उसके रूपसे आश्चर्ययुक्तहोकर रुचीने उसका अ-भ्युत्थान और आसन आदि देनेके निमित्त अकस्मात् उठनाचाहा हे महाराज जभी उसने उठनाचाहा उसी समय विपुलने उससतीको उठनेसे रोंका तब उस से रोंकीहुई रुचि जराभी उठनेको समर्थ न हुई ५।६ तब देवराजने बड़ी सुन्दर मनोहर प्रिय और मधुरवाणी से उससे कहा हे पवित्र मुसक्यानवाली मैं देव-ताओंका इन्द्रहूं और तेरेही निमित्त आयाहूं तेरी अभिलाषासे प्रकटहुये काम-देवसे मैं पीड़ितहूं और मुझे तू इसी निमित्तसे आयाहुआ जान हे सुन्दर भृ-कुटीवाली पहिलासमय व्यतीत होताहै ७।८ तब उसके शरीरमें वर्त्तमान विपुल मुनिने उस इन्द्रके वचनोंको सुना और उसको देखा ९ हे राजा उस विपुलसे रोंकीहुई वह निर्द्दोषरुची प्रतिष्ठाके निमित्त उठनेको समर्थ नहींहुई और सम्भा-षण करनेको योग्य नहींहुई १० फिर उस बड़े तेजस्वी भार्गवने गुरुपत्नीकी उस शरीरचेष्टा को जिससे कि प्रीति प्रकट होती थी जानकर योगबलके द्वारा उसको पकड़ा ११ उसने योगके बन्धनों से उसकी सब इच्छाओंको बांधा फिर लज्जित होकर इन्द्रने उस योगबलसे मोहित रुचीको रूपान्तरदशा से रहित देखकर फिर भी आवो २ यह शब्दकहा इसके पीछे उसने उसको उत्तर देनाचाहा १२।१३ तब उस विपुलने उस गुरुपत्नी के वचनको भी रोंका परन्तु चन्द्रमाके समान उसके मुखसे यह संस्कृतवाणी बाहर निकली कि हे इन्द्र आपके आनेका कौन कार्य है तब वह दूसरेकी स्वाधीनतामें होनेसे इस वचनको कहकर लज्जायुक्तहुई १४।१५ तब इन्द्रभी अत्यन्त वहां बेमन होगया हे राजा फिर सहस्राक्ष देवराज इन्द्रने

उस बिपरीत दशाको देखकर १६ अपने दिव्यनेत्रों से देखा तब उसने उसस्त्री के शरीरमें नियत उस बिपुलमुनिको देखा १७ जैसे कि दर्पणमें प्रतिबिम्बहोता है उसीप्रकार उस गुरुपत्नी के शरीर में वर्त्तमान मुनिको देखा तब वहइन्द्र उस घोर तपयुक्त मुनिको देखकर १८ अत्यन्त भयभीत होकर कंपायमानहुआ और उसके शाप देदेने के भयसे महाखेदित हुआ हे राजा तब बड़े तेजस्वी बिपुल ने भी अपनी गुरुपत्नीको छोड़कर १९ अपने शरीरमें प्रविष्टहोकर उस भयभीत इन्द्रसे यह बचन कहा हे दुर्बुद्धी इन्द्रियों के स्वाधीन पापात्मा इन्द्र तुझको देवता और मनुष्य बहुत कालतक नहीं पूजेंगे २० हे इन्द्र क्या तुम भूलगये और वह मैत्री बुद्धिमें नियत नहीं है जो गौतमऋषि के शापसे शरीर के हजारभग चिह्नों से छूटाहै २१ मैं तुझ ईश्वरको अज्ञानी अजितेन्द्रिय आदि दोषों से युक्त जानताहूं हे अज्ञानी इस रुचीकी मैं रक्षा करता हूं हे पापी तू अपने लोक को जा २२ हे अल्पबुद्धी अब मैं अपने तेजसे तुझको भस्म नहीं करताहूं हे इन्द्र मैं दयाकरके तुझको भस्मकरना नहीं चाहता हूं २३ अब वह बड़े घोररूप बुद्धिमान् गुरूजी तुझ पापात्माको देखकर क्रोधयुक्त ज्वलित नेत्रों से भस्म करदेंगे २४ इससे हे इन्द्र फिर ऐसा न करियो क्योंकि ब्राह्मण तेरे पूज्यहैं ब्राह्मणके तेजबल से तुम पीड़ित होकर अपने पुत्र और मंत्रियों समेत नाशको मत प्राप्त हो २५ कदाचित् तुम इस अहंकारसे कर्म करते हो कि मैं अमरहूं अर्थात् मृत्यु से बचाहुआहूं देवताहूं जो इस बुद्धिमें नियतहोकर कर्म्म करते हो तो अभिमान करके किसीका अपमान मतकरो क्योंकि तपस्यासे कोई दुःप्राप्य पदार्थ नहीं है २६ भीष्मजी बोले कि उस महात्मा बिपुलके इस बचनको सुनकर इन्द्र लज्जा से महापीड़ित उससे कुछ न कहकर उसीस्थानमें अन्तर्द्धान होगया २७ फिर दोमुहूर्त्त के पीछे महातपस्वी देवशर्म्मा इच्छाके अनुसार यज्ञको करके अपने आश्रममें आये २८ गुरुजी के आनेपर प्रियकर्म्म करनेवाले बिपुलने उस निर्दोष रक्षित गुरुपत्नी को गुरुसे वर्णन किया २९ वह गुरूका प्यारा शान्तात्मा निस्सन्देह बिपुल गुरूको दण्डवत् करके पूर्व्वकेही समान सेवामें प्रवृत्त होगया ३० इसके पीछे गुरुपत्नी समेत आनन्दसे बैठेहुये गुरूके सम्मुख बिपुलने इन्द्र के उस कर्मका वर्णन किया ३१ वह प्रतापवान् मुनिश्रेष्ठ उसको सुनकर बिपुल के गुरुपूजनादि शील स्वभाव तप और नियमसे प्रसन्नहोकर ३२ अपने स्व-

रूपमें भक्ति और धर्म में नियत बुद्धिको देखकर धन्यहै धन्यहै यह वचन कहने लगे ३३ फिर उस धर्मात्मा महामुनि देवशर्मा ने धर्म में पूर्ण अपने शिष्यको पाकर वरदेनेका विचार किया ३४ और उस्से कहा कि वरमांगो तव उस गुरु के प्यारे ने अपने गुरूसे धर्म में नियत होना मांगा और गुरूकी आज्ञासे वह तपस्या करी कि जिससे उत्तम कोई तपस्या नहीं है ३५ और गुरूजी ने भी उसी प्रकार इन्द्रसे निर्भयहोकर अपनी भार्य्यासमेत निर्जन वनमें जाकर बड़ी तपस्या करी ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारते अनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेविपुलोपाख्याने एकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि पराक्रमी विपुलने गुरूके वचनको सुनकर कठिन तपस्या करके अपनी आत्माको तपसे संयुक्त माना हे पृथ्वीपति राजायुधिष्ठिर वह उत्तम कीर्त्तिका प्राप्त करनेवाला निर्भय और प्रसन्नचित्त विपुल इस अपने कर्म्म से अत्यन्त प्रसन्नताको मानताहुआ पृथ्वीपर विचरनेलगा १।२ और इसीप्रकार उस समर्थ बिपुलने उस कर्म्म से और बड़ीतपस्या से दोनों लोकोंको भी विजय कियाहुआ माना ३ हे कौरवनन्दन फिर कुछ काल व्यतीतहोनेपर रुचीकी बहिन के घर बड़े बैभववाला उत्सव हुआ ४ और उसीसमय कोई दिव्य उत्तम स्त्री स्वर्गकी बसनेवाली उत्तमरूप को धारण किये आकाशमार्ग होकर गई ५ उसके शरीरसे दिव्य सुगन्धसे भरे उत्तम फूल उसके आश्रम के समीप आकर पृथ्वीपर गिरे ६ तब उस सुन्दरमुख नेत्रवालीरुचीने उन फूलोंको उठाया और तभी उसको नौता देनेवाला मनुष्य अंगदेशसे आया ७ हे तात उसकी प्रभावती नाम बड़ी बहिन अंगदेशके राजा चित्ररथकी भार्य्याथी ८ इसके अनन्तर वह नौती हुई सुन्दरवर्ण युक्त रुची उन फूलों को शिरके बालों में धारणकरके अङ्गदेशके राजाके घरगई ९ तब सुन्दर नेत्रवाली अङ्गदेशके राजाकी भार्याने उन फूलों को देखकर और फूलों के निमित्त बहिनसे कहा अर्थात् यह कहा कि ऐसे फूल मुझ को भी मँगादे १० तब उससुन्दर मुखवाली रुची ने अपनी बहिनके सब वचनोंको अपने पतिसे आकर कहा औरऋषिने भी उसको स्वीकार किया ११ हे भरतवंशी इसके पीछे महातपस्वी देवशर्माने बिपुलको बुला

कर फूलों के लाने की आज्ञादी १२ हे राजा उसे बड़ेतपस्वी बिपुलने गुरूके बचनमें बिचार न करके कहा कि बहुतअच्छा ऐसा कहकर उसदेशको गया १३ जिस स्थान में वह फूल आकाश से गिरे थे वहां शेषबचेहुये और भी बहुत से कुँभिलायेहुये फूल पड़ेथे १४ हे भरतबंशी इसके पीछे उसने उन मनोहर दिव्य सुगन्धयुक्त पुष्पों को जोकि अपने तपसे प्राप्तहुये थे उठालिया १५ तब गुरूकी आज्ञाका करनेवाला प्रसन्नमन वह बिपुल उनफूलों को पाकर चम्पे के पुष्पोंकी श्रेणी बद्ध चम्पापुरी में गया १६ वहां उसने निर्ज्जनवन में जाकर मनुष्यों की इस दशाको देखा कि हाथमें हाथ पकड़ेहुये चक्रकी समान घूमते थे १७ उनमें एकपुरुष अपनी तीव्रतासे दूसरेके चरणोंको बिवर्त्तन करताहुआ बड़ी शीघ्रता से जाताथा और दूसरा शीघ्र नहीं चलसक्काथा तब उनदोनोंने लड़ाई करी १८ एकने कहा तुम शीघ्र चलतेहो दूसरेने कहा नहीं हे राजा फिर दोनोंने यहबचन कहा कि नहीं नहीं १६ तब उन ईर्षा करनेवालों की शपथहुई फिर अकस्मात् बिपुलकी ओर चेष्टाकरके यह बचनकहा २० कि हम दोनोंमें से जिसने मिथ्या कहाहै उसकी वहगतिहोय जो गति कि परलोकमें उस बिपुल ब्राह्मणकी होगी इसका आशय यह है कि (यह दोनों दिन और रातथे और उन्होंने मिथ्या नहीं कहाथा क्योंकि जब सूर्य्य मिथुनके होते हैं तब दिनका देवता शीघ्र चलने वाले रात्रि अभिमानी देवता से कहता है कि तू शीघ्रगामी है वहभी सत्यहै क्योंकि उसकी चालों से अधिक है और रात्रि कहती है कि मैं अपनी नियत गतिसे चलतीहूं शीघ्रनहीं चलती इसी हेतुसे उनदोनों ने मिथ्या शपथ नहीं खाई) २१ बिपुल इसबचन को सुनकर उदासहुआ और बिचारनेलगा कि मैं इतने और तपसे युक्तहूं और इनदोनों का परिश्रम युक्त कर्म पीड़ासे युक्तहै २२ मैंने इनदोनों का कौन अपराध किया है जिसके कारण इन्होंने इससमय सब जीवोंकी अप्रियगतिका बर्णनकिया २३ हे राजर्षि इसप्रकार से बिचारते नीचा शिर किये दुःखी चित्त बिपुलऋषिने अपने दुष्कर्म्मका ध्यान किया २४ इसके पीछे लोभ और प्रसन्नतायुक्त दूसरे छःपुरुषों को सुबर्ण के पाशोंसे खेलताहुआ देखा २५ और उसी प्रकार से शपथ खाताहुआ उनको भी देखा जैसी कि उन दोनों ने खाई थी इन छःओंने भी बिपुलकी ओर चेष्टा करके बचनकहा (यह छःओं खिलाड़ी छःओंऋतुथीं वहभी सत्यवक्ता हैं उनका सत्यकथन ज्योतिष

विद्यासे विदित होसक्ता है) २६ इसमें से जो मनुष्य लोभयुक्त होकर विपरीत कर्म करने की इच्छाकरे वह उसगतिकोपावे जो कि परलोकमें विपुलकी होगी २७ विपुलने इसबचनको सुनकर जन्मसे लेकर अब तक अपने कियेहुये धर्म संकटको नहींदेखा २८ हे राजा उसने उसप्रकार के शापको सुनकर चलायमान चित्तसे इसप्रकार ध्यान किया जैसे कि अग्नि में वर्त्तमान अग्नि २९ हे तात उसके ध्यान करतेहुये बहुत दिनरात व्यतीतहोगये तब चित्तमें यह बात आई कि मैंने रुचीकी रक्षाके मनोरथसे ३० इन्द्रियको इन्द्रियसे मुखको मुखसे मिलाकर गुरूसे नहीं कहा यही मेरा सत्य २ पापहै ३१ हे कौरव तब महाभाग विपुल ने अपने में इस दुष्कर्मको निश्चय और यथार्थ करके माना ३२ फिर इस महाभाग ने चंपानगरी में जाकर गुरूको फूलदिये और यह निश्चय मानलिया कि वह पाप यथार्थ में वैसाही है ऐसा समझकर उस गुरूके प्यारेने अपने गुरूको बुद्धि के अनुसार पूजा ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारते आनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेविपुलोपाख्यानेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले हे राजा उस बड़े तेजस्वी देवशर्मा ने उस आयेहुये अपने शिष्यको देखकर जो वचन कहा उसको सुनो १ गुरूने कहा हे शिष्य विपुल तुमने उस महावनमें क्या क्या देखा हे विपुल वह तेरा आत्मा और रुची तुझ को जानते हैं २ विपुलने कहा हे प्रभु ब्रह्मऋषि जिनको आप पूछते हैं वह दोनों कौनहैं जो मुझको मुख्यतासे जानते हैं ३ देवशर्म्मा ने कहा कि हे ब्रह्मन् वह दोनों दिन रातहैं वेही चक्रके समान घूमते हैं और वह तेरे दुष्कर्म को जानते हैं ४ हे वेदपाठी और वह छः पुरुष जो प्रसन्न चित्तके समान पाशों से खेलते हैं वह ऋतु हैं वहभी तेरे दुष्कर्म को जानते हैं ५ हे ब्राह्मण पापात्मा मनुष्य एकान्तमें पापकर्मको करके यह विश्वास न करे कि मुझको कोई नहीं जानता है ६ सब ऋतु और दिन रात सदैव एकान्त में पापकर्म करनेवाले मनुष्य को देखते रहते हैं ७ वह कर्म जैसे किया उसरीति से करके जो तैंने मुझसे नहीं कहा इससे उस प्रकारके लोक तुझको मिलैंगे जैसे कि पापियों को मिलते हैं ८ प्रसन्नता के अहंकार युक्त होकर जो तुमने गुरु से अपना कर्म कियाहुआ नहीं

कहा इस निमित्त तुमको देखकर स्मरण दिलानेवाले रात्रि दिन और ऋतुओं ने तुमसे यह वचनकहा जो कि तुमने सुना ६ शुभकर्म करनेवाले दिन रात और सबऋतु सदैव मनुष्यों के शुभाशुभ कर्मों को जानते हैं १० दूसरे की स्त्रीसे मिलनेका जो भयानकरूप कर्म तुमने मुझसे नहीं कहाहै सो हे ब्राह्मण इसबातके जाननेवाले ऋतुआदि ने तुमसे इस रीतिपर कहाहै ११ इसीकारण वह कर्म जिस रीति से किया उसको करके तुझ मुझसे न कहनेवाले के लोक उस प्रकार के होयँ जैसे कि पापी के १२ हे ब्राह्मण तुझ दुष्टकर्मी दुराचारी से स्त्रीकी रक्षाकरना उचित और सम्भव नहीं था परन्तु तुमने दुराचार नहीं कियाथा इसी से मैं तुझ से प्रसन्नहूं १३ हे ब्राह्मणों में बड़े साधू जो कदाचित् मैं तुमको दुराचारी देखता तो अवश्य विना विचारकिये क्रोधसे शापदेता १४ स्त्रियां पुरुषके निमित्त अलंकृत होती हैं वही पुरुषोंका बड़ा प्रयोजनहै इसके सिवाय दूसरी रीति से रक्षा करनेवालेको शापहोगा यह मेरा अभिप्रायथा १५ हे पुत्र उस स्त्रीकी तैंने रक्षा करी और मुझको भी सुपुर्द करदी इससे हे तात मैं तुझपर प्रसन्नहूं तुम प्रसन्नतासे स्वर्गको जावोगे १६ यह कहकर वह प्रसन्नमन देवशर्मा समयपर अपनी स्त्री और शिष्यसमेत स्वर्ग में नियत होकर आनन्द करने लगा १७ हे राजा पूर्व्व समयमें गंगाजी के तटपर महामुनि मार्कण्डेयजी ने कथाके मध्य में इस आख्यानको मुझसे कहाथा १८ इसीहेतुसे मैं तुमसे कहताहूं कि स्त्रियां सदैव रक्षा करने के योग्यहैं उन शुभचलन वा अशुभ चलनवाली स्त्रियों में सदैव दोनों लोक दिखाई देते हैं १९ हे राजा पतिव्रता स्त्रियां महाभाग और लोकोंकी माताहैं और इस पृथ्वीको बन उपबनों समेत चारोंओरसे धारण करती हैं २० हे राजा बदचलन कुलकी नाशक पापका निश्चय करनेवाली बे मर्य्यादा यह सब प्रकारकी स्त्रियां हाथ पैरकी रेखा आदि के चिह्नों से जान लेने के योग्यहैं २१ इस प्रकारसे इन स्त्रियों की रक्षा महात्मा लोगों को करना उचित है क्योंकि स्त्रियां अवश्य रक्षा करने केही योग्यहैं हे राजा इस रीति के सिवाय दूसरी रीति से इन स्त्रियोंकी किसी प्रकारसे भी रक्षा नहीं होसक्ती २२ हे नरोत्तम वह स्त्रियां तीक्ष्ण और अतीक्ष्ण पराक्रमी हैं इनका कोई प्यारा नहीं है जो विषयमें इनको अपने शरीर में लगाताहै वही इनका प्यारा होताहै २३ हे भरतर्षभ यह स्त्रियां प्राण लेनेवाले देवता की सूरतहैं और एक की स्वीकृत

होकरभी दूसरेसे मिलनेकी उत्कण्ठा रखती हैं हे पाण्डुनन्दन यह स्त्रियां एकही पुरुष के साथ क्रीड़ा नहीं करती हैं २४ हे राजा इनके साथ पुरुषको शत्रुता और मित्रता दोनों हीन करना चहिये चाहै दुःखसे इनको भोगे वा ऋतु काल के स्नानकरनेके पीछे इनको भोगकरे २५ हे कौरवनन्दन जो मनुष्य विपरीत कर्म करताहै वह अपना नाशकरताहै सब स्थानों पर और सब दशामें उनसे पृथक्ही रहना उत्तम कहाजाताहै २६ हे राजा उस अकेले एक विपुलने स्त्री की रक्षाकरी है इसके सिवाय तीनों लोकमें भी स्त्रीकी रक्षा करनेवाला कोई नहीं है अर्थात् स्त्रीकी रक्षाकरनेको कोई भी समर्थ नहीं है २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेविपुलोपाख्यानेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरने कहा कि हे पितामह अपने बालबच्चे और गृह अतिथि और देवता पितर आदिका मूलरूप जो धर्म है उसको मुझसे वर्णन कीजिये १ हे राजा सब धर्म्मों में इस धर्म्मको बड़े विचारके योग्य मानाहै कि अपनी कन्या कैसे मनुष्य के देनेके योग्यहै २ भीष्मजी बोले स्वभावसे गुरु पूजनादिक व्रतवाले विद्यावान् माताकी ओरसे पवित्र कर्म को अच्छीरीतिसे जानकर सत्पुरुषोंकी आज्ञा से गुणवान् वरके निमित्त कन्या देना योग्यहै यह धर्म ब्राह्मविवाहरूप ब्राह्मण लोगोंका है (इस स्थानपर ब्राह्मविवाह में दैव और आर्षविवाह भी संयुक्त जानना चाहिये क्योंकि ब्राह्मणके योग्य तीन विवाह हैं प्रथम तो कन्याको अलंकृतकरके हाथमें जललेकर जो कन्याका दान होताहै वह ब्राह्मविवाह कहलाता है और जो यज्ञमें कन्याको अलंकृत करके ऋत्विजको दानकरे वह दैवविवाह है और जो वरसे दो गौ लेकर उसको कन्यादानकरे वह आर्षविवाह कहाताहै) ३ जो मनुष्य इस रीतिसे विवाहके योग्य कन्याको गुणवान् वरको बुलाके धन धान्य वस्त्र आभूषणों समेत श्रद्धापूर्व्वक कन्यादानकरे वह सनातनधर्म उत्तम ब्राह्मण और क्षत्रियोंका है (यह प्राजापत्य विवाहका वर्णनहै) ४ हे युधिष्ठिर जो अपने अनुराग को प्रकट करके कन्याको चाहताहै अथवा कन्या जिसको चाहती है उसको कन्यादेनी चाहिये ५ वेदज्ञ पुरुषों ने उस धर्म्मको गान्धर्व्व विवाह कहाहै बहुतप्रकारके धनसे बांधवोंको लुभाकर और कन्याको मोललेकर

जो बिवाह होताहै ६ हे राजा उसको ज्ञानीलोगों ने असुरोंका धर्म्म कहाहै रोतेहुये मनुष्योंको मार उनके शिरोंको काटकर हठकरके रोतीहुई कन्याको जो घर से लेकर भागता है ७ हे तात वह भी राक्षस बुद्धि कहीजाती है क्योंकि कन्या और बरकी परस्परकी इच्छासे जो संयोग होताहै वही श्रेष्ठहोताहै सोतीहुई वा असावधान अथवा नशों से उन्मत्त कन्याको जो प्राप्त करताहै वह बिवाहों में पापरूप पिशाचनाम बिवाह निकृष्टसे भी निकृष्टतमहै हे युधिष्ठिर पांचोंबिवाहों में तीन बिवाह धर्मरूप और दो अधर्म्मरूप हैं ८।६ अलग २ या मिलेहुये बिवाह करनेचाहियें इसमें सन्देह नहीं है कि ब्राह्मणकी तीन भार्य्या हैं क्षत्रिय की दो भार्य्या १० बैश्य अपनीही जातिकी स्त्रीको भार्य्याकरे उनस्त्रियों में सन्तान उत्तमहोती है उन में ब्राह्मणकी ब्राह्मणी भार्य्या बड़ी है और क्षत्रियकी क्षत्रिया भार्य्या बड़ी है ११ और भोगकरने के लिये शूद्राभी चारों बर्णों की स्त्री है यह अन्यलोगों का कथन है क्योंकि महात्मालोग शूद्रा में उत्पन्न होनेवाले पुत्रको अच्छा नहीं कहते हैं जोकि आगे लिखेहुये वेदके बचनसे वह पतिही अपनी भार्या में उत्पन्नहोता है (वेदका बचनहै कि आत्मावैजायतेपुत्रः) १२ इसी से ब्राह्मण शूद्रास्त्री में सन्तानके उत्पन्नकरने से प्रायाश्चित्ती कहाजाताहै तीसबर्षका मनुष्य दशबर्ष की स्त्री जो अवस्थाके कारण एकही बस्त्र धारण करनेवाली हो उसको प्राप्तकरे १३ और इक्कीसबर्षकी अवस्थावाला मनुष्य सातबर्षकी कन्याको प्राप्तकरे हे भरतर्षभ जिस कन्याका भाई या पिता न होवे १४ उस कन्याको कभी न बिवाहकरे क्योंकि वह पुत्रिका धर्मवाली है ऋतुमती वा मर्यादावाली सती कन्या तीनबर्षतक राहदेखे १५ चौथेबर्ष होजानेपर आप पतिको अन्वेषणकरके प्राप्तकरे हे भरतर्षभ उसकी सन्तान और भोगका बिलास नष्ट नहीं कहाजाताहै इसके बिपरीत करनेवाली वह कन्या प्रजापतिजीकी बुद्धिसे नष्टहै जोकन्या माता पिताके पिंड और गोत्रमें नहीं है उससे बिवाहकरके जो भोगकरताहै उसको मनुजी ने धर्मरूप कहाहै १६।१७ युधिष्ठिर बोले कि एकने शुल्क दियाहोय और दूसरा कहताहै कि देताहूं और कोई बलसे वार्त्तालाप करे कोई धनको दिखलावे १८और कन्याका हस्तग्राही अर्थात् उससे बिवाहकरनेवाला कोई औरहीहो तब वह किसकी भार्य्या है हे पितामह आप मूलसमेत हम लोगों से बर्णन कीजिये १६ भीष्मजी बोले कि मनुष्यके बिवाहसे संबंध रखनेवाला जोकुछ कर्म भार्याके

साबित करनेकेलिये दिखाई देताहै और विचार करनेवाले पुरुषोंसे विचार किया गयाहै कि यह कन्या अमुक पुरुषको देनायोग्यहै उसका छिपाना पातकहै २० भार्य्या का पति ऋत्विज आचार्य्य शिष्य उपाध्याय यह सब लोग बचनों को कहकर फिर स्त्री से नाहीं करें तो प्रायश्चित्तके योग्यहैं इसमें अन्यलोगों ने कहा है कि नहीं २१ बिना चाहनेवाली के साथ हम निश्चय नहीं करते हैं यह मनुजी का बचनहै जो विपरीत कर्म्म से धर्म्म को क्रोधयुक्त होकर करता है वह उत्तम कीर्त्ति और धर्म्म के नाशका हेतुहै २२ हे भरतवंशी जिस कन्याको बांधवलोग धर्म से देते हैं और जिसको शुल्कदेकर लेते हैं वहां एक पक्षका निश्चय होजाने पर बहुत निश्चयवाला दोष किसीको नहीं प्राप्तहोताहै २३ उन दोनोंपक्षों में से पहले पक्षका निश्चय करते हैं और दूसरे को फिर निश्चय करेंगे- अर्थात् (अच्छीरीति से बांधवों की आज्ञा होनेपर मन्त्रों से युक्तहोकर हवनकरे वह मन्त्र इसरीति से सिद्धहोते हैं और बांधवों ने जिस कन्याको नहीं दियाहै उसके विवाह मंत्र किसीदशामें भी सिद्ध नहीं होते हैं २४ जब कि शुल्कका देना और मा बाप को लड़की देनेका बिचार यह दोनों वर्त्तमानहों उस स्थानपर यह कहते हैं कि जो यह कन्याके विवाहका विचार जातिवालों के बिचार से हुआहो तो उत्तम है परन्तु यहांपर भार्य्या और पति के कौल जो मन्त्रयुक्त होकर किये गये हैं उसीको श्रेष्ठतम कहाहै २५ जो पति देवताकी धर्म्मरूप आज्ञासे दी हुई भार्य्या को पाताहै वह देवता और मनुष्यों के उन बचनों को अपने से पृथक् करताहै जो कि मिथ्या से सम्बन्ध रखनेवाले हैं २६ युधिष्ठिरने प्रश्न किया कि जिस कन्याका शुल्क बिचार कियाहुआहै वहां जो कदाचित् धर्म्म कामार्थ से युक्त दूसरा वर उत्तम आजाय तो ऐसे स्थानपर मिथ्या विवाह कहना योग्य है वा नहीं २७ उन दोनों दोषोंके वर्त्तमान होनेपर कन्या का विवाह करनेवाला कौनसे उत्तम कर्म्म को करे और यही धर्म्म हमने सब धर्म्मों में बिचारके योग्य मानाहै २८ आप हम लोगोंसे ठीक २ मूलसमेत सबको वर्णन कीजिये मैं आपके वचनों से तृप्त नहीं होताहूं २९ भीष्मजी बोले कि स्त्रीका शुल्कनाम मूल्यही स्त्रीपन साबित करनेवाला है यह जानकर उस मोल लेनेवाले ने मूल्य नहीं दिया किंतु मोललेने के निमित्त दिया केवल मोललेनेसेही स्त्रीपन साबित नहीं होताहै ३० बांधवलोग उस समय शुल्कको मानते हैं जब कि अन्य २ गुणों से

भी संयुक्त होय जो कन्या का स्वामी कन्या को अलंकृत करके कहै कि इसको धारणकरो इसरीति से भूषण को देवे और जो कन्याका पिता धनआदि से संयुक्त बरको समझाकर कन्याको दान करताहै वह न शुल्क लेनेवालाहै और न वह बेचीहुई है भूषणलेकर उस भूषणसमेत कन्या देने के योग्यहै यही सनातन धर्म्म है ३१।३२ जो मनुष्य प्रथम कहते हैं कि कन्याको दूंगा और जो कहते हैं नहीं दूंगा और जो कहते हैं कि अवश्य दूंगा वह सब नहीं के बराबरहै अर्थात् वह वचन नहीं करनेके समानहै ३३ इसी हेतुसे बिवाह होनेतक परस्परमें याचना करते हैं पूर्वसमयमें मरुद्गण नाम देवताओंने कन्याके बिषयमें बरदियाहै यह हमने सुनाहै अर्थात् (उत्तम बरके प्राप्तहोने में कन्या अन्य किसी बरके न देने में दोष नहीं है जबतक कि बिवाह न होगया हो ३४ अप्रिय बरको कन्या न देना चाहिये यह ऋषियों की आज्ञाहै जिसका मूलरूप कामहै उस सन्तानका मूल ऋषियोंका बचनहै यह मेरामतहै तात्पर्य यहहै कि कन्याको अच्छे दौहित्र होनेके प्रयोजनसे उत्तमही बरको देना उचितहै ३५ कन्याको मोल बेचके सब दोषोंको बड़े ध्यानसे बिचारकरके जानो कि उसप्रकारका शुल्क कभी स्त्रीपनका उत्पन्न करनेवाला नहीं हुआहै ३६ उसीप्रकार पराक्रमभी शुल्कहोताहै उसको मैं कहता हूं तुम सुनो कि मैं सब मगध काशी और कोशलदेश निवासियों को बिजय करके राजा विचित्रवीर्य्य के निमित्त दो कन्याओंको लाया ३७ उनमें एक तो बिवाही गई दूसरी नहीं बिवाही गई क्योंकि पराक्रमरूप शुल्क से प्राप्त करी थी उस स्थानमें मेरे पिताके भाई वाह्लीकने कहा कि यह त्याग करनेकेयोग्यहै इसको मत बिवाहो ऐसी उस कौरवने आज्ञादी ३८ फिर पिताके बचनपर सन्देह करने वाले मैंने अन्य शिष्ट लोगोंसे भी पूछा क्योंकि उस मेरे पिताके धर्म में इच्छा अत्यन्त करके थी ३९ हे राजा इसके अनन्तर आचारकी इच्छा करनेवाले मैंने बारंवार इस बचनको कहा कि मैं आचार को मूल समेत जानना चाहताहूं ४० हे महाराज इस के पीछे मेरे इस वचन के कहनेपर उस धर्म्मध्वज मेरे पितारूप वाह्लीक ने यह बचन कहा ४१ कि तुम्हारे बिचारमें पराक्रमरूपी शुल्कसेही स्त्रीपन नियत होताहै और पाणिग्रहण से नहीं होताहै तो वह कन्या या वर जिस में होमके योग्य द्रव्य बर्त्तमान होय वह लज्जायुक्त होजाय जिससे कि उसका दोष दूर होजाय ४२ जिनके बिचार से कन्या का स्त्रीभाव होना पराक्रमरूपी

शुल्कसे है उनका बचन भी प्रमाण कहा जाताहै इस बातको धर्म्मज्ञ लोगों ने नहीं कहाहै क्योंकि उनके बिचार से स्त्रीभावका नियत होना पाणिग्रहणही से होता है ४३ कन्यादान प्रसिद्ध है इसकारण जो मनुष्य कन्याका मोल अथवा उसके शुल्कको अङ्गीकार करते हैं वह दोनों प्रकारके मनुष्य धर्मज्ञ नहीं हैं और इन शुल्कवादियों का कोई प्रमाण भार्य्यापन प्रकट करनेवाला नहीं है ४४ इन लोगोंको कभी न कन्यादेना चाहिये न इसप्रकार के बिवाह करने चाहियें क्योंकि किसी दशामें भी भार्य्याका मोल लेना और कन्याका बेचना उचित नहीं है ४५ जो पुरुष दासीको मोल लेते हैं और बेचते हैं उन लोगोंको वही पाप होताहै जैसा कि लोभी और पापात्मा लोगोंको होता है ४६ इसी प्रयोजन से मनुष्यों ने सत्यवान् से पूछा कि जब पराक्रमसे प्राप्त कन्याका शुल्क देनेवाला अर्थात् मूल्य देनेवाला मनुष्य मरजाय ४७ और बिवाह करनेवाला अन्यहोय ऐसे बिषयमें हमको धर्मका सन्देहहै हे महाज्ञानी तुम इसको समझावो क्योंकि तुम बुद्धिमानों के अङ्गीकृतहो ४८ आप मुख्य वृत्तान्तके जानने के इच्छावान् हम लोगों के नेत्र हूजिये इन सब के इसप्रकार के बचनों को सुनकर सत्यवान् ने सबसे यह बचनकहा ४९ कि जिसको मनसे प्रसन्नता पूर्व्वक चाहते हो उसी को कन्या देना योग्यहै इसमें बिचार न करना चाहिये शुल्क देनेवालेके जीवते हुये ऐसा करते हैं और उसके मरनेपर तो कुछ सन्देह ही नहीं है ५० वह कन्या देवर के साथ बिवाह करे अथवा परलोक में अपने पतिके मिलने की इच्छा से उस देवर के साथ निवास करके फिर तपस्या भी करे (देवर से बिवाह करना सतयुग का धर्म्म है कलियुग का नहीं है) ५१ किसी के मतमें भाईकी स्त्रीको देवर आदि के भोगने से भी पवित्र मानकर अपने साथ में संयुक्त करते हैं और दूसरे मतवाले इसको यह कहते हैं यह अभ्यास कर्म इच्छा संबंधी है शास्त्र संबंधी नहीं है—जो मनुष्य इस विषयमें बादकरते हैं वह इस वचन पर बिश्वासकरते हैं ५२ तत्पाणिग्रहणात्पूर्व्वमन्तरंयत्रवर्त्तते । सर्वमंगलमंत्रावै मृषावादस्तुपातकः ॥ अर्थात् जब स्त्रीका बर पाणिग्रहणसे पूर्व्व दैवयोग से मरजाय उससमय उसके जिसभाई की मंगली हल्दी स्नान आदिरीतें मंत्रों के अनुसार वर्त्तमान होतीहैं वही उसका अधिकारी है पाणिग्रहणके पीछे कोई अधिकारी नहीं है और उस मन्त्रसिद्ध भाई को मिथ्या कहना पाप है ५३ सातवीं भावँरपरपाणिग्रहण

के मन्त्रोंकी निष्ठारूप प्रमाणहोताहै तब उस हाथ पकड़नेवालेकीभार्य्या होती है जिसको कि जलसमेत संकल्पकरके दानकीजाती है ५४ और इसस्थानपर जो मनुष्य कन्यादान को देने के योग्य कहते हैं उनलोगों ने यह निश्चय मानाहै कि उत्तम ब्राह्मण न्याय के अनुसार भांवर फेरकर उस भार्य्याको ग्रहण करे जो अनुकूलहोकर अपने भाईकी दीहुई अग्नि के सम्मुख वर्त्तमानहो ५५।५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि जिस कन्याका शुल्क देदियागयाहो और उसका कोई पति नहीं है अर्थात् शुल्क देनेवाला परदेश चलागयाहो और अन्य मनुष्य उसके भयसे बिवाह नहीं करताहै उस बिषयमें क्या करना चाहिये हे पितामह इसको मुझे समझाइये १ और जिस कन्याका पिता पुत्रहीन होकर अपनी धनाढ्यता से उस कन्याका पोषण करके उसकी रक्षाकरे और शुल्कको नहीं फेरे तब वह कन्या शुल्क देनेवाले की मोललीहुई है अर्थात् उसका पिता किसी दूसरे के देनेका अधिकार नहीं रखता २ वह कन्या जिस न्यायसे वा रीति से समर्थ होकर उस शुल्क देनेवाले के लिये सन्तान को चाहै और शुल्क देने वाले के सिवाय कोई पुरुष उसके साथ बिवाह न करे ३ इसरीति से जिसका शुल्क दियागया है उसके करने के योग्य कर्मको कहकर अब उस कन्या के योग्य कर्म करनेको कहते हैं जिसका कि शुल्क नहीं दियाहै—पितासे आज्ञा लेकर सावित्री ने अपने अभीष्ट बरको प्राप्त कियाहो उसके उस कर्म को कोई अच्छा कहते हैं और धर्मज्ञ उसकी निन्दा करते हैं ४ इसका कारण यहहै कि अन्य मनुष्यों ने कभी उस कर्म्मको नहीं किया और कोई साधुजन कहते हैं कि धर्मका चिह्न रखनेवाला जो साधुओंका आचारहै वही उत्तमहै ५ इसी बिषयमें महात्मा राजाजनक बिदेहके पौत्र सुक्रतुने यह बचन कहाहै ६ कि जब पिता नीचों के मार्ग में बर्त्तमानहै अर्थात् कन्याके बरको नहीं ढूंढ़ताहै तब यह शास्त्रका बचन कैसे उचित होगा कि (नस्वातंत्र्यंक्वचित्स्त्रियः) अर्थात् स्त्री स्वतंत्रता से रहित है चाहै इसमें प्रश्न और सन्देह कैसाहीहो वा सत्पुरुषों की निन्दाहो ७ यह जो स्त्रियों के धर्म में स्त्रियों की अस्वतंत्रताहै यह आसुरी धर्म्म

है उत्तम नहीं है हम कभी इस धर्म्म को वृद्धों में और साधुओं में नहीं सुनते हैं ८ स्त्री और पतिका संयोग बहुत सूक्ष्महै अर्थात् केवल शास्त्रसेही जाना जाता है और स्त्री पुरुष का भोग साधारण है इसी कारण शास्त्रकी आज्ञा के बिना केवल भोग विलास करनेकोही विवाह न करे यहभी उसी राजाने कहा ६ युधिष्ठिर बोले फिर किस प्रमाण से मनुष्यों का धन लियाजाता है और उस अपुत्री पिता की कन्याही पुत्रकी समान होने को लायक है १० भीष्म जी बोले जैसा कि अपना आत्माहै वैसाही पुत्रहै और कन्या भी पुत्रकीही समान है उस आत्मारूप पुत्री के वर्त्तमान होनेपर अन्य भाई बन्धुआदि कैसे धनको लेसक्ते हैं ११ पिता श्वशुर पति और सूतकातने आदि के परिश्रमसे वा माता का दियाहुआ जो धनहै वह क्वारी कन्याका भागहै उस नानाका पुत्रहोय वा न होय परन्तु असन्तान नानाका धन बेटीका पुत्रही लेगा १२ क्योंकि वह लड़कीका पुत्र नानाके और अपने पिताके पिंडोंको देताहै धर्मशास्त्रकी रीति से पुत्र और दौहित्र में अन्तर नहीं है दोनों बराबर हैं प्रजाके पुत्र यद्यपि औरस नहीं हैं वह दौहित्रके साथ सदैव भाग चाहते हैं परन्तु जो लड़का औरस नहीं है उससे लड़की अधिक है इसका प्रयोजन यहहै कि (जब प्रथम लड़की को पुत्री किया और इसके पीछे पुत्र उत्पन्न हुआ उस दशामें पिताके धनके पांच भाग किये जाँय उनमें से दोभाग तो कन्याले और तीनभाग पुत्रले और जो पुत्र दत्तकआदिमें से हैं उस दशामें उन पांचभागों में से कन्या तीन भागको और पुत्र दोभागों को पाताहै) १३। १४ क्योंकि यह बात दौहित्रके धर्म्म से है और किसी धर्म से नहीं है आगे लिखेहुये वर्णनमें मैं कारण देखताहूं कि मोल की लीहुई स्त्रियों में जो पुत्र उत्पन्न होते हैं वह भागलेने के योग्य नहीं हैं १५ क्योंकि पिताके आसुरी विवाह से उत्पन्न हुये पुत्र दूसरे के गुणमें दोष लगाने वाले अधर्म में प्रवृत्त परधनापहारी छली अधर्मरूप और दुराचारी होते हैं १६ इस आसुरी विवाहके विषयमें भविष्यद्वक्ता धर्म्माधर्म्मज्ञ धर्म्म के सेतु शास्त्रों के आज्ञानुवर्त्ती मनुष्य यमराज की कहीहुई कहावत को कहते हैं १७ जो मनुष्य अपने पुत्र को बेचकर धनको चाहता है अथवा अपने निर्व्वाह करने के लिये शुल्कलेकर कन्याको देताहै १८ वह अज्ञानी कालसूत्रनाम बड़ेभयानक आठवें नरकमें जाकर पसीना मूत्र विष्ठाको खाताहै १९ कोई २ लोगोंने आर्षविवाह में

दो गौको भी शुल्क कहाहै वह भी सत्य कहनाहै हे राजा थोड़ाहो वा बहुत हो वह उतनाही बेचना कहाजाता है २० यद्यपि चाहै जितने मनुष्यों ने इस को कियाहै तो भी यह प्राचीन धर्म नहीं है राक्षस बिवाह करनेवाले अन्य मनुष्यों के आचरण भी लोकमें दिखाई देते हैं २१ जो मनुष्य पराक्रमसे स्वाधीन होने वाली उस कुमारी को भोगते हैं वह पाप करनेवाले मनुष्य अन्धतामिस्र नाम नरकमें पड़ेहुये दुःखों को भोगते हैं २२ कोई भी मनुष्य न बेचना चाहिये तो सन्तान कैसे बेचनी चाहिये जिनका बेचना महाअधर्मका मूलहै उन धनवानों से कोई धर्म नहीं होताहै २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेविवाहधर्मेयमगाथावर्णनेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि प्राचीन वृत्तान्तके जाननेवाले मनुष्य प्राचेतसके बचन को कहते हैं कि लड़की के पिता माताआदि मालिक जिसके न्यायके निमित्त कुछ आभूषणादिक लेते हैं वह बेचना नहीं कहलाता है १ वह कुमारियों का पूजनहै वह संपूर्ण आभूषण कन्याही के देनेके योग्यहै अर्थात् माता पिता उस को कदापि न लें २ बहुत कल्याण चाहनेवाले पिता भाई श्वशुर और देवरों से वह स्त्रियां पूजन और आभूषणादिसे अलंकृत करनेके योग्यहैं ३ निश्चयकरके जो स्त्री इच्छा न करे और पुरुषको अभिलाषी न करे तो अभिलाषी न करने से पुरुषकी सन्तान वृद्धिको नहीं पाती है ४ हे राजा स्त्रियां सदैव पूजनके योग्य होकर प्रीतिपूर्वक पोषण करने के योग्यहैं जिसघरमें स्त्रियां पूजितहोती हैं वहां देवता क्रीड़ा करते हैं ५ और जिसघरमें पूजित नहीं होती हैं वहां सबकाम नि- ष्फल होते हैं जब स्त्रियां शोचकरती हैं तब वहकुल नष्टहुआजानो ६ हे राजा स्त्रियोंसे शापपानेवाले घरोंको कृत्यादेवी नाशकरदेती है और लक्ष्मी से रहित होकर शोभाहीन होजाते हैं और वृद्धिको भी नहींपाते स्वर्गमें जानेके इच्छा- वान् मनुजीने पुरुषोंको कन्यादान किया और कहदिया कि यह स्त्रियां निर्बल और शीघ्र बेपरदह होकर स्वाधीन होनेवाली शुभचिन्तक और सत्यबक्ता हैं ७ । ८ ईर्षावाली पूजा चाहनेवाली अत्यन्त क्रोधभरी अशुभचिन्तक और अ- ज्ञानभी हैं तौभी वह स्त्रियां पूजनके योग्यहैं हे मेरेपुत्रो तुम उनका पूजनकरो ९

धर्मं स्त्रीकोही कारण समझता है इस हेतु से तुम्हारे विषयादिक भोग पाकादि और सेवा नमस्कारादिक उस स्त्रीके आधीनहोयँ १० लोकयात्रा की प्रीति के लिये सन्तानकी उत्पत्ति और उत्पन्नहुये सन्तानका पोषण स्त्रीसेही सम्बन्धित देखो ११ तुम इनको अच्छीरीति से पूजते हुये सब मनोरथों को पावोगे इसीस्त्री धर्मके विषयमें राजा जनककी पुत्रीने श्लोक कहाहै १२ उसका अर्थ यहहै कि स्त्रीके कोई यज्ञ क्रिया श्राद्ध और व्रत नहीं है उनका केवल यहीधर्म है कि अपने पतिकी सेवाकरना इसी धर्म्म से वह स्वर्ग को विजय करती हैं १३ बाल्यावस्थामें उनकी रक्षा पिताकरताहै तरुणावस्थामें उनका पति रक्षकहै और वृद्धावस्थामें पुत्र रक्षाकरते हैं स्त्रीको स्वतन्त्रता किसीदशामें भी नहीं है १४ हे भरतवंशी यह स्त्रियां लक्ष्मीरूप हैं ऐश्वर्य्यकी इच्छा करनेवाले मनुष्यको इनका बड़ाआदर सत्कार करना उचित है रक्षाकीहुई महलों में नियत हुई स्त्री लक्ष्मी रूप होती है १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेविवाहधर्मोनामषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे सर्वशास्त्रोंके विधान जाननेवाले धर्मधारियों में श्रेष्ठ पितामह आप इस पृथ्वीपर बड़े सन्देहों के निवृत्त करनेवाले विख्यातहो १ मेरा यह एक सन्देह है उसको मुझे समझाइये हे राजा इस सन्देहके उत्पन्नहोने से हम किसी दूसरेसे प्रश्न नहींकरसके २ हे महाबाहु धर्ममार्ग में प्रवृत्त होनेवाले मनुष्यको जिस रीतिसे कर्म्मकरना चाहिये आप उस सबके वर्णन करनेके योग्यहै ३ इसप्रकार से राजायुधिष्ठिर ऋत्विज और स्त्रीकी पवित्रताको सुनकर धनकी पवित्रताके अर्थ पिताके धनके बिभागको पूंछते हैं—हे पितामह ब्राह्मणकी चार स्त्रियां नियतकरीं ब्राह्मणी क्षत्रिया बैश्या और भोगकी इच्छासे शूद्राभी अर्थात् शूद्राधर्मसे बिपरीतहै ४ हे कौरवों में बड़ेसाधू उन सब स्त्रियों के पुत्र उत्पन्नहोने पर उनमें पिताके धनकेभागों में कौन किस २ भागका पानेवालाहै ५ हे पितामह उस पिताके धनमें से कितनाभाग किसको लेना उचितहै उनमें जो बिभाग होनाचाहिये उस को कहिये ६ भीष्मजी बोले हे युधिष्ठिर ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्य यह तीनोंवर्ण द्विजकहाते हैं इन्होंके कुलोंमें ब्राह्मणका बिवाह धर्मबिचार किय

गयाहै ७ हे शत्रुसंतापी ब्राह्मणके धर्म्मविरुद्ध लोभसे या इच्छासे जो शूद्रा स्त्री है वह शास्त्रसे नहीं कहीहुई है ब्राह्मण शूद्राको अपनी शय्यापर बैठाने से अधोगति को पाताहै और वेदोक्त कर्म्मसे प्रायश्चित्त के भी योग्यहोता है ८ । ९ उस शूद्रामें पुत्रों के उत्पन्नहोने पर प्रायश्चित्त दूना होनाचाहिये और हे राजा युधिष्ठिर पिताके धनके विभाग को मैं अच्छीरीतिसे वर्णन करूंगा उसकोसुनो १० जो मुख्य वस्तु यथा गौ बैल सवारी आदि उत्तम धनहोय पिता के धनमें से उस उत्तम धनके भागको ब्राह्मणी का पुत्रलेगा ११ हे युधिष्ठिर शेषबचेहुये ब्राह्मणके धनके दशभाग करने चाहियें उनमेंसे चारभाग तो ब्राह्मणीके पुत्रके लेनेके योग्यहैं १२ और क्षत्रियाका जो पुत्रहै वहभी निस्सन्देह ब्राह्मणहै परंतु वह अपनी माताके सम्बन्ध से तीनभाग लेनेका अधिकारी है १३ और हे युधिष्ठिर ब्राह्मणसे जो बैश्यामें जो तीसरेवर्णमें उत्पन्नहुआ पुत्रहै उसको ब्राह्मण के धनके उन भागोंमेंसे दोभाग मिलने चाहियें १४ हे भरतबंशी ब्राह्मणसे शूद्रा में उत्पन्न होनेवाला पुत्र सबदशाओंमें भाग न पानेके योग्यकहाहै तौभी उस शूद्रा के पुत्रके लिये भी थोड़ाधन अर्थात् दशवांभाग देनेके योग्यहै १५ दश भाग होनेवाले धनका यह विभाग क्रमहोताहै और जो पुत्र कि सवर्णा स्त्रियों में उत्पन्नहैं वह सब समान भागपानेके अधिकारी हैं १६ संस्कारकी योग्यता न होने से शूद्रा के पुत्रको ब्राह्मणका पुत्र नहीं मानते हैं ब्राह्मण से तीनोंवर्णों में उत्पन्न होनेवाला पुत्र ब्राह्मण होताहै इसका आशय (चारोंवर्णों की स्त्रियोंमें से ब्राह्मणी और क्षत्रियामें ब्राह्मणवर्ण उत्पन्नहोताहै परन्तु यहबात ऋषियों में थी दूसरे ब्राह्मणोंमें नहींथी और बैश्या और शूद्राकेपुत्र माताके वर्णमें संयुक्त होते हैं १७ यह चारोंवर्ण वर्णन किये इनके सिवाय पांचवांवर्ण नहीं पायाजाता है शूद्राका पुत्र पिता के धनमें से दशवेंभाग को लेसक्ता है १८ वहभी पिता के देनेसे लेसक्ताहै परन्तु जो पिता न दे तो वह लेनहीं सक्ताहै हे भरतबंशी शूद्राके पुत्रके निमित्त अवश्य धनदेना उचितहै १९ क्योंकि दयाकरना भी बड़ाधर्म्म उत्तमहै इसी हेतुसे उसको दियाजाताहै जहां दया अच्छीरीतिसे उत्पन्न होतीहै वहां अच्छेगुणोंके कारण वह धन शुद्धहोजाताहै २० चाहै यह सन्तान युक्तहोय वा न होय तौभी यह शूद्राके पुत्रकेलिये दशवेंभागसे अधिक देवे २१ जब कि ब्राह्मणका धन संचित सौवर्षके भोजनके खर्चसे भी अधिकहोय तो उस धनसे

यज्ञकरे विना यज्ञ के प्रयोजन विना दान आदि अथवा दूसरे कारण से उसके भागका रखना न चाहिये २२ धनके भागमेंसे तीनहज़ारसे अधिक धन स्त्रीको न देनाचाहिये २३ पतिका दियाहुआ वह धन भी उचितरीति से खर्चकरने के योग्य है पति का दियाहुआ स्त्रियों का भाग भोगों के फलका देनेवाला कहा है पतिके दियेहुये धनमें से उसके पुत्र किसीदशामें भी उसके भाग को अपने खर्च में नहीं लासक्ते २४ हे युधिष्ठिर जो स्त्रीका धन उसके पिताका दियाहुआ है उसको ब्राह्मणी की कन्या लेसक्ती है जैसा पुत्रहै वैसेही वह कन्याभी है २५ हे कौरवनन्दन राजायुधिष्ठिर कन्या पुत्रकेही समान विचार कीगई है पिता के धन के विभाग औ धर्म्मके विभाग उपदेश किये हे युधिष्ठिर इसप्रकार से धर्म्म को विचार करके अन्याय से धनको नहीं चाहै २६ युधिष्ठिर बोले कि जो शूद्रा स्त्री में ब्राह्मण से उत्पन्न होनेवाला पुत्र धन देने के अयोग्य कहा तो उसको दशवांभाग भी किस मुख्यता से दियाजाता है २७ ब्राह्मणी में ब्राह्मण से उत्पन्नहुआ पुत्र ब्राह्मण होता है और इसी प्रकार क्षत्रिया वा वैश्या में उत्पन्न होनेवाला पुत्रभी ब्राह्मण होता है २८ हे राजेन्द्र फिर वह किस हेतु से भिन्न २ भागको पाते हैं जब कि आपने तीनों स्त्रियों के पुत्रों को ब्राह्मण कहा है २९ भीष्मजी बोले हे शत्रुसन्तापी लोक में स्त्री एक नाम से दाराभी कहीजाती है अर्थात् धर्म्म अर्थ काम चाहनेवालों से आदर कीजाती है वह गुण शूद्रामें भी है इस नाम के कहने से यह बहुत बड़ी मुख्यता इसमें भी हुई ३० जो ब्राह्मण प्रथम शूद्राको भार्य्या करके फिर ब्राह्मणी को भार्य्याकरे तब भी वह ब्राह्मणीही बड़ी और पूजनके योग्यहै वही भार्य्या सब में वृद्धहै अर्थात् पिताकीही प्रधानतासे ब्राह्मणीको सब लौकिक वैदिक कर्मों में सब आदर करते हैं ३१ पतिको स्नानकराना शिरके बालधोने वा दंतधावन का देना देवता पितरों के देने के योग्य वस्तुओं की तैयारी और जो २ धर्म्म सम्बन्धी घरमें कार्य्य होयँ ३२ उस ब्राह्मणी के वर्त्तमान होनेपर दूसरी स्त्री कभी उसके करने के योग्य नहीं है हे युधिष्ठिर ब्राह्मणके सब कार्य्योंको ब्राह्मणी भार्य्याही करे ३३ खाने पीनेकी वस्तु फूल माला वस्त्र आभूषण यह सब पतिकी वस्तु ब्राह्मणी भार्य्याही के हाथसे देने के योग्यहैं क्योंकि वह उस पतिकी बड़ी स्त्री हैं ३४ हे कौरवनन्दन महाराज जो शास्त्र मनुजी का कहाहुआहै उसमें भी यही प्राचीन सनातन धर्म्म देखागयाहै

३५ हे युधिष्ठिर फिर जो प्रीतिबश होकर धर्म्म के विपरीत कर्म्म करे तो वह उस दशामें वैसाही है जैसाकि पूर्व्वसमय में मातङ्गनाम चाण्डाल ब्राह्मण देखागया है ३६ क्षत्रिया का जो पुत्र होय वह ब्राह्मणी के पुत्रकी समान है हे राजा इस स्थानमें जो दोनों वर्णों की मुख्यताहै ३७ लोक में क्षत्रिया ब्राह्मणी के समान नहीं होती हे राजाओं में श्रेष्ठ, साधू युधिष्ठिर ब्राह्मणीका प्रथम पुत्र बड़ाहोता है उसको पिता के धन से बड़ा भाग देना योग्य है जैसे कि क्षत्रिया कभी ब्राह्मणी के समान नहीं होसक्ती ३८ । ३९ इसीप्रकार बैश्या कभी क्षत्रियाके समान नहीं होसक्ती हे युधिष्ठिर क्षत्रिया में लक्ष्मी राज्य खजाना ४० और चारों समुद्रतक पृथ्वीपर संसार नियत दिखाई देताहै क्षत्रीही अपने धर्म्म से बड़ी लक्ष्मीको प्राप्त करता है ४१ हे युधिष्ठिर दण्डधारी क्षत्री के सिवाय पृथ्वी की रक्षा और किसी से नहीं होसक्ती है महाभाग ब्राह्मणलोग देवताओं के भी देवताहैं हे राजा उन ब्राह्मणों में शास्त्रकी रीति के अनुसार बर्त्ताव करे ४२ यहां क्षत्री ऋषियों के नियत धर्मोंको प्राचीन और अविनाशी जानकर उस गुप्त होनेकी दशामें अपने धर्म्म से रक्षा करताहै ४३ राजाही चोरों से सब वर्णों के धनोंकी और दुराचारियों से स्त्रियोंकी रक्षा करताहै ४४ क्षत्रिया का पुत्र निस्सन्देह बैश्याके पुत्र से बड़ा होताहै हे युधिष्ठिर इसी हेतुसे उसको पिताके धनमें से बड़ा भाग देने के योग्यहै ४५ युधिष्ठिर बोले हे पितामह राजा भीष्मजी तुमने ब्राह्मण का भाग बुद्धिके अनुसार वर्णन किया अब दूसरे वर्णों का नियम जैसे होय उसको भी वर्णन कीजिये ४६ भीष्मजी बोले हे कौरवनन्दन क्षत्री को भी दो भार्य्या बिधान की गई हैं और तीसरी शूद्राभी है परन्तु वह शास्त्र से नहीं कही गई है ४७ हे राजा क्षत्रियोंकी भी यही रीति होती है कि क्षत्रियोंके धनके आठ भाग होने चाहियें ४८ उनमें से क्षत्रियाका पुत्र पिताके धनके आठभागों में से चारभागको ले और पिताके युद्धका जो सामानहै उसको भी ले ४९ बैश्याका पुत्र तीनभाग को और शूद्राका पुत्र एक भाग को पाताहै वह एक भाग भी पिताके देने से लेगा बिना दियेहुये वहभी नहीं लेसक्ता ५० हे कौरवनन्दन बैश्य की एकही भार्य्या होती है दूसरी शूद्राहै परन्तु वह शास्त्रसे नहीं कही गई है ५१ हे भरतर्षभ कुन्तीनन्दन बैश्या और शूद्रानाम दोनों स्त्रियों से संग करनेवाले बैश्य का यह नियम कहाहै ५२ कि बैश्यके धनके पांचभाग किये जायँ अब

उन दोनों स्त्रियोंकी सन्तान और धनके बिभागोंको बर्णन करताहूं ५३ पिताके धनके पांचभागों में से चारभाग तो बैश्याके पुत्रको लेना योग्यहै और शूद्राके पुत्रको पांचवांभाग कहाहै ५४ वहभी पिताके देने से ले बिना दिये नहीं लेसक्ता ५५ शूद्रकी भार्य्या सबर्णा होती है उसकी दूसरीभार्य्या किसी दशामें भी नहीं होसक्ती उसके चाहै सौपुत्र भी होयँ वह सब बराबर भाग पावेंगे ५६ सब बर्णोंकी सबर्णा स्त्रियों में उत्पन्न होनेवाले पुत्रों का भाग समान होताहै इसमें किसी को मुख्यतानहीं है ५७ बड़े पुत्रका वह भाग बराबर समझा जायगा जो कि प्रतिष्ठासे उत्तमभाग गिनाजायगा हे राजा प्राचीन समयमें यह पिताके धनके बिभागकी रीतिब्रह्माजी ने कही है ५८ सबर्णा स्त्रियोंमें उत्पन्न होनेवाले पुत्रोंकी यह अपूर्व मुख्यताहै कि बिवाह के समयकी मुख्यतासे प्रथम दूसरे से अधिक होता है ५६ उन बराबरके पुत्रों में भी बड़ा पुत्र एक उत्तम भागलेगा मध्यम को मध्यमभाग छोटे को छोटाभाग मिलेगा ६० इस प्रकार से सब ज्ञातों में सबर्णा के पुत्रों ने प्रतिष्ठाको पायाहै मरीचिके पुत्र काश्यप महर्षि नेभी इसको बर्णनकियाहै ६१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेबिवाहधर्मेरिकृथबिभागोनामसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरने पूछा हे पितामह अर्थ काम लोभ और स्त्रियोंकी ओरसे बर्णोंका निश्चय न करने और बर्णों के अज्ञानसे भी बर्णसङ्कर उत्पन्न होताहै १ इस रीति से उत्पन्न होनेवाले उन्हीं के बर्णसङ्करमें कौन धर्म और कर्म होते हैं हे पितामह उनको मुझसे बर्णन कीजिये २ भीष्मजी बोले कि प्रथमही ब्रह्माजी ने चारों शुद्धबर्ण और चारोंबर्णों के कर्म युगों के लिये बर्णन किये हैं ३ ब्राह्मणकी चार स्त्रियां हैं उनमें से इन दोनों ब्राह्मणी क्षत्रियामें तो ब्राह्मणही उत्पन्न होताहै शेष बची दोनों स्त्रियों में ब्राह्मणसे नीचे क्रमसे माताकी जाति के रखनेवाले उत्पन्न होते हैं ४ ब्राह्मण का पुत्र स्मशान रूपभी शूद्रसे उत्तम है शूद्राके उस पुत्रको पराशव कहते हैं वह शूद्राका लड़का अपने कुलका सेवा करनेवाला होकर अपने कर्मको कभी न त्यागे ५ सब उपायोंको काममें लाकर अपने कुलके कार्य्यों का करनेवाला होय जो पराशव अवस्था में भी बड़ाहै तो भी वह तीनों बर्णों से छोटाहै वह तीनों बर्णोंकी सेवाका करनेवाला होगा ६ क्षत्री से तीन पुत्र उत्पन्न

होते हैं उनमें से उसकी क्षत्रिया और वैश्या दोनों स्त्रियों में तो क्षत्रियही उत्पन्न होताहै और तीसरी शूद्रा स्त्री में उग्रनाम नीचेवर्ण शूद्र उत्पन्न होते हैं यह स्मृति है ७ वैश्यकी भी दो स्त्री हैं इसकी दोनों स्त्रियों में वैश्य उत्पन्न होताहै शूद्रकी भी एक स्त्री शूद्राही होती है वह शूद्रही को उत्पन्न करती है ८ अपने पिता से न्यूनतम शूद्र अपने ब्राह्मणआदि गुरूकी स्त्री के साथ भोग करनेसे चाण्डाल आदि उन वर्णोंको उत्पन्न करता है जो कि चारों वर्णों से निन्दित हैं ९ और क्षत्रिय ब्राह्मणी स्त्री में उस वाह्यनाम सूतको उत्पन्न करता है जो कि गाड़ीवानी और राजाआदि की प्रशंसा करता है और जो वैश्य ब्राह्मणी से संग करता है उससे वैदेहिकनाम जो कि स्त्रियों के महलोंका रक्षक और संस्कार के अयोग है उत्पन्न होताहै १० जो शूद्र ब्राह्मणीसे संग करते हैं उससे भी बड़ा उग्रचांडाल उत्पन्न होताहै यह सब नीच पुत्र राजाकी आज्ञासे चोरआदि के शिरों के काटनेवाले नगरसे बाहर बसनेवाले कुलके कलंकी हैं हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर यह पुत्र वर्णसङ्कर से उत्पन्नहैं ११ जो कि अमर्यादा से वैश्यकेद्वारा क्षत्रिया में उत्पन्न होता है वह बन्दी मागध नाम वाक्यों से अपनी जीविका करनेवाला होताहै और शूद्रके द्वारा क्षत्रियामें निषादनाम उत्पन्न होताहै १२ दुराचारी शूद्र से वैश्यामें आयोगवनाम पुत्र उत्पन्न होताहै वह तक्षावर्धन की जीविका करने वाला ब्राह्मणों से त्यागके योग्यहै १३ यह भी अपनी सवर्णा स्त्रियों में अपने समान वर्णों को उत्पन्न करते हैं दूसरे पुत्र नीच योनियों में माताकी जाति के उत्पन्न होते हैं जैसे कि चारोंवर्ण की स्त्रियों में से दो २ स्त्रियों में उसका सवर्ण उत्पन्न होताहै उसीप्रकार अन्तर न होने से वाह्यप्रधान उत्पन्न होते हैं १४। १५ वे भी अपनी सवर्णा स्त्रियों में अपने समान वर्णोंको उत्पन्न करती हैं और एक दूसरेकी स्त्रियों में निन्दित पुत्रोंको उत्पन्न करते हैं १६ जैसे कि शूद्र ब्राह्मणी में वाह्यनाम जीव को उत्पन्न करता है उसीप्रकार चारों वर्णों से मिलेभुले उत्तम वाह्यसे नीचा वाह्य उत्पन्न होता है १७ फिर वाह्यसे और बड़े वाह्यसे प्रतिलोम वृद्धिपाते हैं और नीचसे पन्द्रह नीचवर्ण उत्पन्न होते हैं १८ अब उन पंद्रह वाह्यों की टीका करते हैं—जो स्त्री भोगके योग्य नहीं है उसकेसाथ भोग करने से वाह्यों का वर्णसङ्कर उत्पन्न होताहै सैरन्ध्री स्त्री में मागधों के वह पुत्र उत्पन्न होते हैं जो कि राजाआदिको चन्दन भूषणोंसे अलंकृत करनेवाले दासपने से रहित होकर

दासोंकीसीही जीविका रखनेवाले होते हैं १९ इस मागधसे सैरन्ध्री स्त्री में आयोगवबंशी सैरन्ध्रनाम वह पुत्र उत्पन्न होताहै जो कि बहेलिये की जीविका से अपना निर्बाह करताहै और वैदेह जाति के मनुष्यसे उसी सैरन्ध्री स्त्री में मैरेयकनाम मद्य बनानेवाला पुत्र उत्पन्न होताहै २० और निषाद से उसी स्त्री में मुद्गर अर्थात् माहीगीर नाम मल्लाह पुत्र उत्पन्न होताहै जो नौकाकेद्वारा अपनी जीविका करनेवाला दास होताहै और उसी स्त्री में चांडालसे स्वपाक नाम पुत्र होताहै वह श्मशान भूमिका अधिकारी कहा जाताहै यह बहुत प्रसिद्धहै २१ आयोगवआदि जातिवालों से मागधी जातिकी स्त्री में मांस बेंचनेवाला, मांस पकानेवाला शाकादिका पकानेवाला और सौगन्धनाम यह चारों पुत्र उत्पन्न होते हैं २२ और वैदेहसे आयोगव स्त्री में वह पुत्र उत्पन्न होताहै जो पापकर्मी निर्द्दयी और आखेट आदिक छलकर्म्म से अपनी जीविका करताहै और निषादसे आयोगव स्त्री में मद्रनाभ नाम पुत्र होताहै जो गधेकी सवारी पर चढ़ने वाला कुम्हारआदि होताहै २३ चांडाल से भी आयोगव स्त्री में पुल्कस नाम पुत्र होताहै जो गधे घोड़े और हाथी के मांसों का खानेवाला मुरदों के कपड़े पहननेवाला खंडित पात्रमें भोजन करनेवाला होताहै २४ यह तीनों नीचवर्ण आयोगवीनाम स्त्रियों में उत्पन्न होते हैं वैदेहिक से निषादी स्त्री में क्षुद्र अन्ध्र अर्थात् जंगली जीवोंका मारनेवाला और गांवसे बाहर रहनेवाला २५ उत्पन्न होताहै और तीसरा कारावर नाम पुत्रहै जो चमारों को उत्पन्न करताहै चांडाल से निषादी स्त्री में स्वपाक नाम बेटा होताहै जो बांसका ब्यापार करता है २६ निषाद से वैदेही स्त्री में आहिण्डक होताहै और उसी स्त्री में चांडालसे स्वपाक होताहै वह भी चांडालही के समान वृत्ती करनेवाला है २७ चांडालसे निषादी स्त्री में अन्तेवसायिन नाम पुत्र होताहै वह श्मशान में रहनेवाला बाह्यलोगों से भी निकालाहुआहै २८ माता पिताकी अमर्य्यादसे इतने बर्णसङ्कर उत्पन्न होते हैं वह प्रकट होयँ वा गुप्त होयँ परन्तु उनके कर्मों से वे जानने के योग्य हैं २९ शास्त्रमें चारोंवर्णकाही धर्म है इनके सिवाय किसी अन्यका धर्म नहीं है बर्णों के वे धर्म होने से किसीकी संख्या नहीं है ३० अन्यजातिकी स्त्री से भोग करनेवाले यज्ञ और साधुओं के समूहों से बाहर कियेहुये बाह्यों से बाह्य उत्पन्नहोते हैं और उस कर्म से निजज्ञाति और जीविकाको प्राप्त करनेवाले हैं ३१ वह सदैव लोहे

के भूषणोंसे अपने शरीरको अलंकृत करके चौराहे श्मशान पर्व्वत और वृक्षों के नीचे ३२ अपने कर्मसे बर्त्तावकरते सब के जानेहुये होकर निवासकरें और आभूषण आदि अनेकप्रकार की बस्तुओं को तैयारकरके ३३ गौ ब्राह्मणों के निमित्त सहायता करतेहुये निवास करें और करुणा दया सत्य कथन शान्ती और अपने शरीरों से भी दूसरेकी रक्षाकरना यह सबबातें पापीलोगों की शुद्धी का कारण होती हैं यहबात निस्सन्देहहै ३४। ३५ बुद्धिमान् मनुष्य बिचारकर के शिक्षाके अनुसार शास्त्रमें लिखीहुई स्त्रियों में सन्तानको उत्पन्नकरे क्योंकि नीचयोनीमें उत्पन्न होनेवाला पुत्र ऐसे नाशको करता है जैसे कि जलमें पैरने वाले मनुष्य को पत्थर डुबा देताहै ३६ इस लोकमें स्त्रियां अज्ञानहैं और काम क्रोध लोभ में भरेहुये बुद्धिमान् मनुष्यको भी कुमार्ग्ग में लेजाती हैं ३७ इस संसार में स्त्रियों की स्वाभाविक प्रकृतिही मनुष्यों को दूषित करती है पण्डित मनुष्य स्त्रियोंके समीप अधिक एकत्र स्थिति नहीं करते हैं ३८ युधिष्ठिरने पूछा कि जो मनुष्यवर्णों से बाहर वर्णसंकरयोनि में उत्पन्न होकर कमी ने भी सज्ज-नरूपहैं हम उनसे बिदित न होकर उनको कैसे जानें ३९ भीष्मजी बोले कि नानाप्रकारके दुराचारोंसे युक्त मनुष्यों को संकरयोनि से उत्पन्न जानना चाहिये और जिन उत्तमकर्म्मों को उत्तमजन किया करते हैं उन लक्षणों से युक्त मनुष्य को उत्तमयोनिमें उत्पन्नहुआजानो ४० इसलोकमें कमीनापन निर्दयता अक-र्मता अवगुणता यह सब बातें मनुष्य के संकरयोनि में उत्पन्न होने को प्रकट करती हैं ४१ नीचजातिवाला पिता के आचरण वा माताके आचरण अथवा माता पिता दोनोंके आचरणों को काममें लाताहै वह किसीदशामें भी अपने उत्पत्तिस्थानको गुप्त नहीं करसक्ताहै ४२ जैसे व्याघ्रके शरीरके चिह्न मा बापके समानहोते हैं इसीप्रकार मनुष्यभी अपने मूलचिह्नको नहीं त्यागसक्ता ४३ जिस कुलमें वीर्यका वृत्तान्त और उत्पत्ति गुप्तहै उसमें जिस मनुष्यका माता पिताका अन्तररूप योनि सङ्कर होताहै वह मनुष्य उन पिता माता की थोड़ी या बहुत प्रकृतिको अवश्य काममें लाताहै ४४ उसकी प्रकृति के निश्चय करने के समय उस मनुष्यका अच्छा बुरा स्वभावरूप आचरणही उसकी शुभप्रकृतिको प्रकट करदेताहै जो कि अच्छे बुरे आचरणरूप वा आचार रखनेवाला वा बिपरीत मा-र्गमें चलनेवाला उत्तमवर्ण वा निकृष्टवर्ण है ४५ इसलोकमें नानाप्रकारके चाल

चलनवाले अनेक प्रकारके कर्मों में प्रवृत्तहुये मनुष्यों में जन्म और चलन के अनुसार जो स्वाभाविक प्रकृतिहै वह दूर नहीं होती है ४६ इसलोक में उसवर्ण-संकरका शरीर जिसशास्त्रबुद्धी के द्वारा बुरेमार्ग से नहीं हटासक्ते हैं वह बुद्धि उत्तम मध्यम निकृष्ट इन तीनोंप्रकारकी है तो जो बुद्धि उसशरीरके योग्यहै वही नियत रहती है ४७ दुष्टमनुष्य यद्यपि उत्तम भी होय उसको कभी न पूजे धर्मज्ञ सत्पुरुषोंका चलन रखनेवाले शूद्रका भी सत्कार करना योग्यहै ४८ प्रत्येक मनुष्य अपने कर्म्मों से और अच्छे बुरे स्वभाव चरित्र और कुल से अपने को आपही प्रकट करदेताहै इसीप्रकार कुल में अत्यन्त नष्टहोनेवाली रक्षाको अपने कर्मकेद्वारा फिर आप प्रकटकरताहै ४९ इनसङ्करों में और अन्य सबयोनियों में आत्मारूप पुत्र को कभी उत्पन्न न करे किन्तु जहांतक होसके वहांतक बुद्धिमान् मनुष्य इन सबको त्यागकरे ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेविवाहधर्मेसंकरोनामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

उनचासवां अध्याय ॥

प्रथम ऋत्विज की पवित्रता के निमित्त सङ्करयोनि वालों के लक्षण वर्णन किये अब क्षेत्रज पुत्र के संस्कारी होने न होनेके विषयमें पुत्रों का क्रम वर्णन करते हैं युधिष्ठिरने पूछा हे कौरवोत्तम पितामह सबवर्णों के कैसे २ पुत्र कैसी २ स्त्रियोंमें उत्पन्न होते हैं फिर वह कौनहैं और किसके होते हैं १ और हे पितामह पुत्रसम्बन्धी नानाप्रकारके अनेक वर्णन सुनेजाते हैं इस स्थानपर हम अज्ञान और अविदित लोगों का सन्देह आप दूरकरने को योग्यहो २ भीष्मजी बोले कि जो पुत्र औरसहै वह अपना वर्ण जानने के योग्यहै और जो क्षेत्रके स्वामी की आज्ञासे दूसरे के वीर्य्य से उत्पन्न होनेवाला पुत्रहै वह निरुक्तज कहाता है और क्षेत्रके स्वामी की आज्ञा विना दूसरेके वीर्य्य से जो पुत्र उत्पन्न होताहै वह प्रसृतजनाम कहाजाता है प्रसृतजकी स्त्रीमें न्याय के अनुसार मिलनेवाला उसी पतिसे उत्पन्न होनेवाला वा दत्तकपुत्र वा क्रीतपुत्र अर्थात् मोललिया व अध्यूढ़ अर्थात् जिसकी माता गर्भवती होकर विवाही गई उसका पुत्र ३ । ४ और उपध्वंसनाम छःपुत्र वा कानीन अर्थात् विवाह से पूर्वही कन्या में उत्पन्न होनेवाला और इसी प्रकार के अपसद नाम छः पुत्र हैं यह सब वर्णन किये हैं

उनको समझो ५ युधिष्ठिर ने पूछा कि छः उपध्वंसपुत्र कौनसे हैं और छः अपसद पुत्र कौनसे हैं इन सबको मूलसमेत आप वर्णन कीजिये ६ भीष्म जी बोले हे भरतबंशी युधिष्ठिर तीनोंबर्णों की स्त्री में ब्राह्मणके जो तीन पुत्र होते हैं और बर्णकी स्त्री में क्षत्रियके जो दोपुत्र होतेहैं ७ एकबंशका पुत्र विड्वर्ण नाम होताहै वह भी इसमें गिनाजाताहै तब वह छःओं उपध्वंस कहलाते हैं और इसी प्रकार छः अपसदों को भी सुनो ८ ब्राह्मणी क्षत्रिया और बैश्यामें शूद्रसे उत्पन्न तीन पुत्र चांडाल ब्रात्य बैद्य नामसे प्रसिद्ध यह तीनों अपसदहैं ९ और बैश्यके ब्राह्मणी और क्षत्रियामें जो दोपुत्र मागध और बामकनाम देखनेमेंआते हैं और क्षत्रियका एकपुत्र ब्राह्मणी में सूतनाम देखने में आताहै यह तीनोंभी अपसद नामसे कहेजाते हैं हे राजा यह सब पुत्र मिथ्यानहीं होसक्के १०। ११ युधिष्ठिर ने पूछा कि कितनेही मनुष्यों ने क्षेत्रजको पुत्र कहाहै और कितनोंही ने बीर्य से उत्पन्न होनेवालेको कहाहै यह पुत्र किसके बराबरहैं अर्थात् किसकेहैं हे पितामह इसकोभी मुझे समझाइये १२ भीष्मजी बोले कि अपने बीर्य्यसे उत्पन्न पुत्रहोय अथवा दूसरेके बीर्य्यसे अनुमान कियाहुआ क्षेत्रजनाम पुत्रहोय और दूसरे के बीर्य्यसे उत्पन्नहोनेके कारण पुत्रहोनेका दावा दूरहोने पर बिवाहसे पूर्वही कन्या के गर्भवती होने से उत्पन्न होनेवाला अध्यूढ़ नाम पुत्र होताहै १३ युधिष्ठिर ने पूछा कि मैं बीर्य्यसे उत्पन्नहोनेवाले पुत्रको जानताहूं परन्तु क्षेत्रजपुत्र का सिद्ध करनेवाला शास्त्र किसरीति से है मैं अध्यूढ़ नाम पुत्रको भी जानता हूं परन्तु पुत्रत्वका दावा दूरकरके कैसे पुत्र कहलाताहै १४ भीष्मजी बोले कि जो मनुष्य अपने शरीरसे उत्पन्न पुत्रको उत्पन्नकरके संसार आदिकी अपकीर्त्ति से त्याग करताहै उसमें बीर्य्य कारण नहीं है वह क्षेत्रके स्वामीका पुत्रहै १५ हे राजा पुत्र का चाहनेवाला मनुष्य पुत्रके लिये जिस गर्भवती कन्याको बिवाह करताहै उसका पुत्र क्षेत्रज प्रमाण कियाजाताहै वह अन्यत्र क्षेत्रज पुत्रनहीं है १६ हे भरतर्षभ दूसरे के क्षेत्रमें उत्पन्नहोनेवाला पुत्र विदित होजाता है क्योंकि आत्मा गुप्त नहीं होसक्ताहै यह प्रत्यक्ष देखनेसे जानाजाताहै तात्पर्य यहहै कि जो पुरुष अध्यूढ़ पुत्रका चाहनेवाला होय तो उसदशामें वह पुत्र उसकाहै और जो पुत्रकी इच्छा न रखताहोय ऐसी दशामें वह पुत्र अन्यत्रक्षेत्रजहै १७ किसी स्थान में कृतकनाम पुत्रभी संग्रहसे देखनेमें आताहै वहां उसमें बीर्य्य और क्षेत्र दोनों नहीं

दिखाई देते १८ युधिष्ठिरने पूछा कि कृतक पुत्र कैसाहै जो संग्रहसे देखनेमें आताहै और जिसमें बीर्य्य और क्षेत्रभी नहीं दिखाई देता १९ भीष्मजी बोले कि जिस लड़के को माता पिताने त्यागकरदिया हो उसको कोई मनुष्य मार्ग में पाकर अपना पुत्र विचार कर ले और उसके माता पिता नहीं जानेजायँ वही कृतक कहलाताहै २० जिस पुत्रमें अस्वामी का स्वामीपन देखनेमें आताहै और जो बर्ण उसका पोषणकरे तो उस पुत्रकाभी वही बर्ण होताहै २१ युधिष्ठिरने कहा इसका संस्कार कैसे और किसरीतिसे करना उचितहै अथवा यह किसकाहै यह किसप्रकार से जानाजाय और किसकी कन्या उसको देनी उचित है हे पितामह इसको समझाइये २२ भीष्मजी बोले—अपने समान स्वामीके सदृश उसके उस संस्कार को करे क्योंकि माता पितासे त्यागाहुआ वह लड़का उसके बर्ण को पाताहै २३ हे धर्मसे अच्युत युधिष्ठिर उसका स्वामी अपने गोत्री भाइयोंमें उसको अपने गोत्रमें हुआ बर्णन करके उसके संस्कारको करे फिर उसीबर्णकी कन्या उसके देनेको योग्यहै यही प्राचीनलोग कहते हैं तात्पर्य यहहै कि बर्णका निश्चय न होनेपर संस्कारकरनेवालेकाही बर्ण औरगोत्रहोताहै २४ माताका गोत्र निश्चय न होनेपर संस्कार करनेवालेकाही बर्ण और गोत्रहोताहै कानीन, और अध्यूढ़जभी किल्विषीपुत्र जानने के योग्यहैं २५ वह पुत्रभी निश्चयकरके अपने पुत्रोंकी समान संस्कार के योग्यहैं जो क्षेत्रज अपसद और अध्यूढ़ज हैं उनमें भी २६ ब्राह्मण आदि अपने समान संस्कारोंको संयुक्तकरें यह वर्णोंका निश्चय धर्म्मशास्त्रों में देखाहै २७ यह सब तुमसे कहा अब क्या सुननाचाहतेहो २८ ॥

इतिमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेविवाहधर्मेएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

इसरीतिसे यज्ञ, स्त्री, धन, और ऋत्विज इनसबकी पवित्रताकहकर यज्ञकी दक्षिणारूप गौवोंकामाहात्म्यवर्णनकरतेहैं ॥

युधिष्ठिरने प्रश्नकिया कि हे पितामह दर्शनमें और समीप रहनेमें किसप्रकार की प्रीति होती है यह और गौवोंका माहात्म्य मुझसे आप कहनेको योग्यहैं १ भीष्मजी बोले हे बड़े तेजस्वी बहुतअच्छा प्रश्नहै इसमें एक प्राचीन वृत्तान्त तुमसे कहताहूं जिसमें राजानहुष और च्यवनऋषि का सम्बाद है २ हे भरतर्षभ

प्राचीन समयमें बड़े व्रतवाले भार्गव च्यवन महर्षी उदवास व्रतका प्रारम्भकरते हुये वह मुनि अहंकार क्रोध हर्ष और शोकको त्याग करके बारहबर्षतक जलमें वासकरके व्रतको करनेलगे ३। ४ सबजीवों में उत्तम बिश्वास और शुभपने को ऐसे प्राप्तकिया जैसे कि प्रभु चन्द्रमाने सबजलके जीवों में कियाथा ५ वह मुनि पवित्र और निश्चलशरीर होकर सबदेवताओं को नमस्कार करके गंगा यमुना के मध्यवर्त्ती जलमें घुसे ६ और गंगा यमुना के उसवेगको जो अत्यन्त भयानक भयकारी शब्दवाला था और वायु के समान शीघ्रगामी था उसको अपने शिरपर लिया ७ गंगा यमुना और इसमें मिलनेवाले नदी सरोवरों ने ऋषिकी परिक्रमाकरी और किसीप्रकार का इनको कष्ट नहीं दिया ८ हे भरतर्षभ वह बुद्धिमान् महर्षी काष्ठरूपहोकर जलमें शयनकरगये और फिर बैठगये ६ फिरवह सब जल जीवोंके प्यारे दर्शनीयहुये तब जलके जीवोंने प्रसन्नहोकर उनके होठों को सूंघा १० इसीप्रकार उनऋषिको जलमें बैठेहुये बहुतकाल व्यतीतहुआ फिर कभी किसीसमयपर महाजाल रखनेवाले मच्छी पकड़नेवाले ११ उस देशमें आये हे बड़ेतेजस्वी युधिष्ठिर उसस्थानमें से मछली निकालने का निश्चय करने वाले शूर पराक्रमी बहुत निषाद जो कि जलसे मुख न मोड़नेवाले जालकर्ममें कुशल थे वह उस देशमें आये और फैलगये तब उनलोगोंने मछलियोंसे व्याप्त उस जलको जानकर अपने सब जालोंको लगादिया १२। १३। १४ इसकेपीछे उन मत्स्याभिलाषी मल्लाहोंने बड़े २ उपायोंसे गंगा यमुना के जलको उन सब जालोंसे अच्छेप्रकारसे छाना १५ और उनका एकजाल बहुतदूर तक नवीन प्रकारका बनाहुआ बहुत लम्बा चौड़ाथा उसको उस जलमें डाला १६ तबइसके पीछे उन सबने जलमें उतरकर उस बहुत बड़ेलम्बे चौड़े दृढ़ और नियतजाल को उस जलमेंसे खैंचा १७ हे स्वरूपवान् प्रसन्नमूर्त्ति तब परस्परमें एक मतकिये हुये उन मल्लाहोंने वहांपर मछली आदि बहुतसे जलजीवों को बांधा १८ और उसीप्रकार दैवयोगसे उन मछलियों से घिरेहुये भृगुनन्दन च्यवनजीकोभी अपने जालकेद्वारा खैंचा १६ वह च्यवनजी नदी के सिवारसे लिप्त शरीरसे पिंगल वर्ण डाढ़ी मूछ जटाधारी अंगोंमें लगीहुई छूटी शिखाओं से ऐसे दिखाई देतेथे जैसे कि अपूर्व चिह्नोंसे चित्रितहोताहै तब वह सब दास अर्थात् धीवर उसवेद वेदांगमें पूर्ण ऋषिको जालमें आयेहुये देखकर हाथजोड़२ शिरके बल पृथ्वीपर

गिरे २० । २१ और वह मछलियां बड़े दुःख भय और जालके खिंचने वा स्थल के स्पर्शसे निर्जीव होगईं २२ तब वह मुनि उन मछलियों का नाश देखकर बारम्बार श्वास लेतेहुये दया और करुणामें डूबगये २३ निषाद बोले हे महामुनि हमने जो अज्ञानता से पापकिया उसको आप क्षमाकरें आपकी जो आज्ञाहोय वही हमकरें २४ इसरीति से कहेहुये उस मछलियों में नियत च्यवनमुनि ने यह बचन कहा कि अब जो मैं चाहताहूं उसको तुम बड़ी सावधानी से सुनो २५ मैं मछलियों के साथही प्राणोंकी रक्षा वा त्यागको करूंगा मैं समीप रहनेके कारण से इन जलजीवोंके त्यागनको नहीं सहसक्ताहूं २६ यहबात च्यवनजी से सुनकर अत्यन्त भयभीत और कम्पितगात उन धीवरोंने स्वरूपोंको बदलकर उसवृत्तांत को राजा नहुष से जाकर निवेदन किया २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेच्यवनोपाख्यानेपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि इसके पीछे राजा नहुष उस दशामें युक्त च्यवनऋषिको सुनकर बड़ी शीघ्रतासे अपनी स्त्री और पुरोहितको साथलेकर उनके पासगया १ न्यायके अनुसार बाह्याभ्यन्तर की पवित्रतापूर्व्वक हाथजोड़ बड़ीसावधानी से राजा महात्मा च्यवनजी के सम्मुख खड़ाहुआ २ हे राजा राजा नहुषके पुरोहित नेभी उस सत्यब्रत देवताकी समान महात्मा ऋषिको पूजन किया ३ फिर नहुष ने कहा हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ आपकी क्या अभीष्टहै जिसको मैं करूं उसको आप आज्ञा कीजिये हे भगवन् मैं आपकी सब आज्ञाओं को करूंगा चाहे दुःखसेभी करने के योग्य होय तौभी सामर्थ्य के अनुसार अवश्य करूंगा ४ च्यवनजीबोले कि मछलियों से अपनी जीविका करनेवाले यह धीवर बड़े परिश्रमसेयुक्तहैं मेरे मूल्यकोभी इन्हीं मछलियों के मूल्यके साथ इनको देदो ५ नहुषने कहा हे पुरोहितजी हजार रुपये भगवान् ऋषि के मूल्यके निमित्त निषादोंको देदो—जैसा कि भृगुनन्दनजीने कहाहै ६ च्यवनजी बोले हे राजा मैं हजार रुपये के योग्य नहीं हूं तुम क्या मानते हो मेरा मूल्य उचित होय सो दीजिये अपनी बुद्धिसे निश्चयकरो ७ नहुषने कहा हे वेदपाठी एकलाख रुपये दूं या आप जो मानते हैं वह दूं ८ च्यवनजी बोले हे राजेन्द्र मैं लाखरुपयेकेसमान नहीं हूं उचित मूल्य

दीजिये आप अपने मंत्रियोंसमेत विचार कीजिये ६ नहुषने कहा हे पुरोहितजी एक करोड़रुपया निषादोंको दो और जो यहभी मूल्य न होय तो इससे अधिक दो १० च्यवनजी बोले हे बड़े तेजस्वी राजा नहुष मैं करोड़रुपये वा करोड़से अधिकके भी योग्य नहीं हूं मेरे योग्य मूल्यदो तुम अपने ब्राह्मणों के साथ विचार करो ११ नहुषने कहा हे ब्राह्मण आधा या सब राज्य निषादों को दूं मैं तो यह मूल्य मानताहूं इसके सिवाय आप क्या मूल्य मानते हैं १२ च्यवनजी बोले हे राजा मैं आधे अथवा सम्पूर्ण राज्यके मूल्य योग्य नहीं हूं ऋषियोंके साथ विचार करके उचित मूल्यदो १३ भीष्मजी कहते हैं कि तब तो दुःखसे पीड़ावान् नहुषने महर्षी के वचनको सुनकर मन्त्री और पुरोहितके साथ विचार किया १४ वहां कोई दूसरा वनचारी मूलफलका भोजन करनेवाला गविजातमुनि उस नहुषके सम्मुख बैठाथा १५ उस उत्तम ब्राह्मणने उस राजाको समझाकर यह कहा कि मैं जैसे ऋषि प्रसन्नहोंगे उसीप्रकार बहुत शीघ्र प्रसन्न करताहूं १६ मैं स्वतंत्र दशा में भी मिथ्या नहीं बोलता इससे कभी विपरीत नहीं बोलूंगा मैं आप से जो कहूं उसको निस्सन्देह करना १७ नहुषने कहा इन भगवान् भार्गव महर्षी के योग्य मूल्यको कहो और मेरे देश कुलसमेत मेरीभी रक्षाकरो १८ यह भगवान् ऋषि केवल अपने क्रोधही से तीनोंलोकों का नाश करसक्ते हैं फिर मुझ तपहीन भुजावल रखनेवाले का नाशकरना इनको क्या कठिन है १९ हे महर्षी मन्त्री ऋत्विजोंसमेत असंख्य गम्भीर जलमें मुझ डूबेहुयेकी नौका बनो और इनके मूल्यका निश्चयकरो २० भीष्मजी बोले कि नहुषके वचनको सुनकर सब मंत्रियोंसमेत राजाको प्रसन्नकरते प्रतापवान् गविजात ऋषिने यह कहा हे महाराज तीनोंवर्णों में श्रेष्ठब्राह्मण और गौभी अमूल्यहैं इससे गौको ऋषिका मूल्य विचार कीजिये २१।२२ हे युधिष्ठिर इसके पीछे राजा नहुष उस महर्षी के वचनको सुनकर मंत्री और पुरोहितसमेत बहुत प्रसन्नहुये २३ फिर उस स्तुति के योग्य भृगुनन्दन च्यवनजीके पास जाकर वचनोंसे प्रीतिपूर्व्वक राजाने यह कहा २४ हे ब्रह्मर्षि भार्गवजी उठियेर आपको गौके बदले में लियाहै हे धर्मधारियों में श्रेष्ठ मैं उस गौ को आपकामूल्य मानताहूं २५ च्यवनजी बोले हे निष्पाप धर्म्म से च्युत न होनेवाले राजेन्द्र मुझको तैंने अच्छीरीति से पूर्णमूल्यदेकर मोललिया अब मैं उठताहूं मैं इसलोकमें गौकेसमान किसीधनको नहीं देखताहूं २६ हे वीर

राजानहुष गौवोंकी कथाओं का कहना सुनना दानकरना दर्शनकरना बड़ीप्रशं-
साकाहै क्योंकि वह सबपापोंका दूरकरनेवाला और कल्याणरूपहै २७ गौ सदैव
लक्ष्मीकी मूलहैं गौ निष्पापहैं वहीगौ सदैव मनुष्योंका अन्न और देवताओं का
उत्तमहव्यहैं २८ स्वाहाकार वषट्कारभी सदैव गौमें नियतहैं गौ यज्ञोंकी लक्ष्मी-
और यज्ञोंकी प्राप्ती करानेवालीहोकर यज्ञोंकामुखहैं २९ यह गौ विनाशरहित हो-
कर दिव्यअमृतको धारणकरती हैं और सबको देती हैं यह गौ सबलोकोंसे प्रतिष्ठा
के योग्य अमृतका स्थानहैं ३० गौ पृथ्वीपर तेजवान् शरीरसे अग्निकी समानहैं
गौवेंही बड़ातेज और सबजीवोंको सुख देनेवाली हैं ३१ जिसस्थानपर बैठाहुआ
गौवोंका कुल आनन्दपूर्व्वक श्वासावों को लेताहै वहदेश शोभापाता है और
गौवोंके रक्षकोंका पाप दूरकरताहै ३२ गौ स्वर्गकी नसेनी हैं गौ स्वर्गमेंभी पूजित
हैं गौ देवी अभीष्टपदार्थकी देनेवालीहैं इनसे उत्तम कोई नहीं है ३३ हेभरतर्षभ
यह मैंने गौवों का माहात्म्य वर्णनकिया उनकी प्रशंसाका यह एक स्वल्पवर्णन
है सम्पूर्ण कहना तो असम्भवहै ३४ निषाद बोले हे समर्थ मुनि हमारेसाथ सं-
भाषण करना दर्शनहोना क्या सत्पुरुषोंके साथमें सातपद चलना दूषितहोताहै
हमपर भी आप कृपाकरिये ३५ हे धर्मात्मा जिसप्रकार से अग्निदेवता सब ह-
व्यों को भोजन करता है इसी प्रकार तुम भी प्रतापवान् पुरुषरूप अग्निहो ३६
हे भगवन् हम सब आपको नम्रतापूर्व्वक प्रसन्न करते हैं हमारे अनुग्रह के नि-
मित्त इस गौको अंगीकार कीजिये ३७ च्यवनजी बोले कि दुःखी मुनि और
विषैले सर्पके जो नेत्रहैं वह मनुष्यको मूलसमेत ऐसे भस्म करते हैं जैसे अग्नि
की ज्वाला अग्निसे सूखेहुये बनको भस्म करती है ३८ हे मल्लाह धीवरो मैं तु-
म्हारी गौको लेताहूं तुम सब पापसे छूटकर इन मछलियों समेत शीघ्र स्वर्गको
जावो ३९ भीष्मजी बोले कि इसके पीछे उस पवित्रात्मा महर्षी के प्रभावसे वह
सब निषाद उसी वचन से मछलियों समेत स्वर्गकोगये ४० इसके अनन्तर हे
भरतर्षभ वह राजा नहुष स्वर्गपर चढ़नेवाले उन मछलियों को और धीवरोंको
देखकर आश्चर्य्यित हुआ ४१ फिर गविजऋषि और भार्गव च्यवनजीने योग्य
वरदानों का राजाको अभिलाषी किया ४२ तब उस बड़े पराक्रमी संपूर्ण पृथ्वी
के प्रसन्नचित्त राजानहुषने कहा बहुतअच्छा ४३ यहवचन कहकर इन्द्र के स-
मान राजाने धर्म्म में स्थितहोना चाहा और वैसाही हुआ इस वचन से प्रसन्न

होकर राजा ने दोनों ऋषियों का पूजनकिया ४४ फिर दीक्षाको समाप्त करने वाले च्यवनजी अपने आश्रमकोगये और महातेजस्वी गविजऋषिभी अपने आश्रमस्थानको गये ४५ हे राजा वह सब मछलियां और निषाद स्वर्गको गये और राजानहुष भी बरदानको पाकर अपने पुर में आया ४६ हे तात युधिष्ठिर दर्शन और सहबासी होनेमें जैसी प्रीति होती है और जिसको तुमने मुझसेपूछा वह सब मैंने तुझसे कही ४७ और इसीप्रकार गौवों का माहात्म्य और धर्मका पूर्ण निश्चयभी बर्णनकिया अब तेरेहृदयमें क्या पूछने की अभिलाषाहै ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेच्यवनोपाख्यानेएकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर ने प्रश्नकिया हे बड़ेज्ञानी मेरासंदेह बड़ा समुद्र के समानहै हे महाबाहु आप इसको सुनकर मेरे सन्देहको दूरकरिये १ हे प्रभु धर्म्मध्वज पितामह जमदग्निजीके पुत्र परशुरामजीकी कथाके श्रवणकरनेको मुझको बड़ी अभिलाषाहै इसको आप बर्णन कीजिये २ यहसत्यपराक्रमी परशुरामजी कैसे उत्पन्न हुये और यह ब्रह्मर्षि बंशहोकर क्षत्रियधर्मके धारण करनेवाले कैसेहुये ३ हेराजा इनके उसजन्मको पूर्णतासे कहो और कौशिकनाम क्षत्रियबंश कैसे ब्राह्मणबंश होगया ४ हे नरोत्तम बड़ा आश्चर्य्य है कि ऐसे बड़ेमहात्मा विश्वामित्र और परशुरामजी का बड़ाप्रभावथा ५ किसप्रकारसे यहदोष उनके पुत्रोंको उल्लंघनकरके उनके पौत्रों में प्रकटहुआ आपइसको ब्योरे समेत कहनेके योग्यहैं भीष्मजीबोले हे भरतवंशी इसस्थानपर मैं एक प्राचीन इतिहास को कहताहूं जिसमें च्यवनऋषिका और राजाकुशिकका प्रश्नोत्तरहै ६।७ पूर्वसमयमें बड़े बुद्धिमान् मुनियों में श्रेष्ठ तपोधन भार्गवच्यवनजीने आगे होनेवाले भविष्यकालमें अपने वंशमें प्रकटहोनेवाले इसदोषको देखकर ८ उसके गुणदोष बलाबलको चित्तसे निश्चय करके कुशिकवंशियों के सबकुलभरे को भस्मकरनेकी इच्छासे राजा कुशिकके पास आकर यह वचन कहा ९ हे निष्पाप तेरे समीप रहनेको हमारी इच्छा उत्पन्न हुई है १० राजाकुशिकने कहा हे भगवन् इसलोकमें यह सब धर्म पण्डितों से धारण कियाजाताहै और सदैव कन्यादान के समय बुद्धिमान् लोग इसको कहा करते हैं ११ तपरूपी धनसेयुक्त त्यागकिया हुआ करनेके योग्य जो धर्म्म

का उपाय है उसको तबतक करूंगा जबतक कि आप आज्ञा न देंगे १२ भीष्म जी बोले इसके अनंतर राजा कुशिक महामुनि च्यवनजी के आसनको लेकर अपनी स्त्रीसमेत वहां आया जहां महामुनि विराजमानथे १३ राजाने झारीले-कर चरणधोये और उनकी सब सेवाकोकिया १४ इसकेपीछे उस सावधान व्रत में महाकुशल महात्मा राजा ने बुद्धि के अनुसार च्यवनजी के अर्थ मधुपर्क दानदिया १५ इसरीतिसे उस वेदपाठीको पूजकर यह वचन कहा हे भगवन् हम सनाथहुये जो आप आज्ञाकरें उसकोकरें १६ हेतेजव्रत जो राज्य धन गौ अथवा यज्ञमें देने के योग्य शय्याकी आवश्यकताहै आप आज्ञाकीजिये सो मैं दूं १७ यह घरहै यह राज्यहै यह आपका धर्म्मासन है आप राजाहोकर देशपर आज्ञा करें मैं आपके होने से सनाथ हूं १८ इस वचन के कहने से बड़े प्रसन्नतायुक्त भार्गव च्यवनजी ने राजा कुशिक को उत्तरदिया १९ कि हे राजा मैं राज्य को नहीं चाहता धन स्त्री गौ आसन और यज्ञको भी नहीं चाहताहूं मेरी इस बात को सुनो २० जो तुम दोनोंको अङ्गीकारहोय तो मैं कुछ नियम प्रारम्भ करूंगा तुम निश्शंक और सावधान होकर दोनोंसे अपनी सेवाचाहताहूं २१ इसप्रकार के ऋषिके वचन सुनकर वह दोनों स्त्री पुरुष प्रसन्नहुये और ऋषिको उत्तरदिया कि बहुतअच्छा ऐसाही होगा २२ तब तो प्रसन्नहोकर राजाकुशिकने उन च्य-वनजी को एक अद्भुत स्थानमें रक्खा तदनन्तर देखने के योग्य अपना मुख्य रहनेका स्थान ऋषिको दिखाया २३ और कहा हे तपोधन भगवान् आपका यह पलंगहै यहां इच्छा के अनुसार निवास करिये हम आपके प्रसन्नकरने का उपायकरेंगे २४ इसरीति से उनको वार्त्तालाप करतेहुये सूर्य्यास्तहुआ फिरऋषि ने कहा कि खाने पीने की वस्तुओंको लाओ २५ तब नम्रीभूत राजाकुशिकने उनसे पूछा कि किसप्रकारकी भोजनकी वस्तु आपको प्रियहैं जैसी आप आ-ज्ञाकरें वैसेही निवेदनकरूं २६ हेभरतवंशी इसकेपीछे उनच्यवनजीने बड़ीप्रीति से राजाको उत्तरदिया कि जो भोजन वर्त्तमानहोय वही लेआवो २७ उसराजा ने उनके वचनकी प्रशंसाकरके कहा बहुतअच्छा और जो भोजन तैयारथा वह लाकर उनको दिया २८ हे समर्थ उसके अनन्तर उसधर्म्मज्ञ भगवान् ऋषि ने भोजनकरके दोनों स्त्रीपुरुषोंसे कहा कि मैं सोयाचाहताहूं मुझको निद्रासतारही है २९ इसकेपीछे वह ऋषियों में बड़ेसाधु भगवान् च्यवनजी शयन स्थानको

पाकर उसमें चलेगये और स्त्रीसमेत राजा वहां नियतहुआ ३० तबभार्गव च्य-
वनजीने कहा कि अच्छेप्रकारसे जब मैं सोजाऊं तब तुम मुझको जगानानहीं
और तुमको संपूर्ण रात्रिभर जागनाचाहिये और मेरे दोनोंचरण दाबने योग्य
हैं ३१ निश्शंकहोकर उस धर्मज्ञ राजाकुशिकने कहा कि इसीप्रकार होगा फिर
उन दोनों स्त्रीपुरुषोंने प्रातःकाल होनेपर भी उनको नहींजगाया ३२ हेमहाराज
तब वह दोनों स्त्रीपुरुष महर्षिकी आज्ञाके अनुसार सावधानहोकर उनकी सेवा
में तत्परहुये ३३ फिर वह भगवान् ऋषि राजाको आज्ञादेकर एकही करवट से
इक्कीसदिनतक सोये ३४ हे कौरवनन्दन च्यवनजीकी सेवा आदिमें प्रवृत्त नि-
राहार प्रसन्नचित्त राजाने भी स्त्रीसमेत उसी ऋषिकेपास इक्कीस दिनतक बर्त्त-
मानताकरी ३५ तपोधन महातपस्वी भार्गव च्यवनजी आपही उठे और कुछ
न कहकर घरसे निकलगये ३६ क्षुधायुक्त परिश्रमसे निर्बल शरीर वह दोनोंभी
उन ऋषिके पीछे चले और उन उत्तम मुनिने उनदोनों स्त्री पुरुषकी ओर दृष्टि
भी नहींकी ३७ हे राजेन्द्र वह च्यवनजी उन दोनोंके देखते देखतेही गुप्तहोगये
इसके पीछे राजा पृथ्वीपर गिरपड़ा ३८ तब उस बड़े तेजस्वी ने स्त्री देवी समेत
एकमुहूर्त्त आश्रय लेकर फिर उनके खोजने में बड़ा उपायकिया ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेच्यवनकुशिकसंवादेद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे पितामह तब उस ऋषिके गुप्तहोनेपर राजाने और उस
की साध्वी भार्य्या ने क्या किया उसको आप कृपाकरके वर्णन कीजिये १ भी-
ष्मजी बोले कि ऋषिको न देखकर थका व अचेत और लज्जायुक्त होकर वह
राजा लौटकर स्त्री समेत घरको आया २ उस महादुःखीने अपनी पुरी में आकर
कुछ नहीं कहा और च्यवनजीके उसचरित्रको जाना और चिन्ता करनेलगा ३
फिर राजाने अपने चित्तकी शुद्धितासे अपने महलमें प्रवेश करके भृगुनन्दनजी
को उसी पलंगपर सोताहुआ देखा उस ऋषिको देखकर बड़े आश्चर्यको बिचार
कर दोनों आश्चर्य्ययुक्तहुये ४ और दोनों उस ऋषिके देखनेसे विश्वासयुक्तहुये
और अपने नियतस्थान पर बैठकर फिर उनके चरणोंको दाबा ५ फिर वह परा-
क्रमी महामुनि दूसरी करवटसे सोनेलगे और उतनेही समय अर्थात् इक्कीस २१

दिनमें जागे ६ हे राजा भयसे शंकायुक्त उनदोनोंने कुछ रूपान्तर दशा नहींकी और जागनेवाले उस मुनिने उन दोनोंसे कहा कि मेरे तेलका उवटन लगाओ ७ । ८ मैं स्नान करूंगा वह क्षुधायुक्त और परिश्रमसे निर्बल शरीर दोनों बहुत अच्छा कहकर बड़ेमोलके शतपाक तेलको लेकर सम्मुख नियतहुये इसकेपीछे दोनों वाग्जितोंने सुखपूर्व्वक बैठेहुये ऋषिके चरणों को दावा ९ बड़े तेजस्वी भार्गव च्यवनजी ने यह नहीं कहा कि बस जब भार्गवजीने उन दोनोंको रूपान्तरदशासे रहित देखा १० तब एकाएकी उठकर स्नान के स्थानमें प्रवेश किया वहां पर राजाओं के योग्य स्नानकी चौकी बिछीथी ११ तब वह मुनि उन सब चौकी आदिको तुच्छकरके फिरभी राजाके देखते देखते उसी स्थानपर गुप्त होगये १२ हे भरतर्षभ उनदोनों स्त्रीपुरुषने निन्दा नहीं करी फिर उस समर्थ स्नान कियेहुये सिंहासनपर वर्त्तमान भगवान् ऋषिने १३ स्त्रीसमेत राजाकुशिक को दर्शन दिया हे कौरवनन्दन स्त्रीसमेत अत्यन्त प्रसन्नमुख रूपान्तरदशारहित झुकेहुये नम्रीभूत राजा कुशिक ने मुनिजी से प्रार्थना करी कि भोजन की वस्तु तैयारहै तब मुनिने उस राजासे कहा कि लाओ १४ । १५ तब भार्य्यासमेत उसे राजाने उसभोजनकी वस्तुओंको लाकर उपस्थितकिया १६ उसमें नानाप्रकारके बनायेहुये मांस बहुतप्रकारके मसालों से युक्त शाक बहुप्रकारकी चटनी पापड़ बहुत प्रकारके मीठे रसीले पाचक पदार्थ और शिखरन आदि पानकी वस्तु वा अतिअद्भुत पूप लड्डू चूरमें १७ अनेकभांतिकेरस और मुनियोंके भोजन जंगली फल मेवाआदि और राजाओं के भोजनके योग्य अनेक अपूर्व्व२ वस्तु १८ बेर, हिंगोट, काश्मर्य्य, भल्लातक नाम फल और गृहस्थी वा बनवासियों के जो भोजनहैं १९ राजाने शापकेभयसे इनसब बस्तुओंको लाकर उपस्थितकिया और उन च्यवनजीके आगे रक्खा इसकेपीछे उस भृगुनन्दन च्यवन मुनिने उन सब पदार्थोंको लेकर उनसब भोजन सामग्रियोंसमेत पलंग आसनको अच्छे बस्त्रों से ढककर २० । २१ सबको भस्मकरदिया फिर बड़े बुद्धिमान् उन स्त्री पुरुषों ने क्रोध नहीं किया २२ तब उन दोनोंके देखतेहुये फिर गुप्तहोगये और वह राजर्षि उसी प्रकार उस रात्रिको वहांपर वर्त्तमान रहा २३ उस श्रीमान् राजा ने प्रारब्ध से स्त्री समेत जरा क्रोध नहीं किया सदैव राजमहलमें नानाप्रकार की भोजन की वस्तु तैयार रहतीथीं २४ उस उत्तम पलँगों पर परिषेचन पात्र नानाप्रकार

की पोशाकें अच्छीरीति से वर्त्तमानथीं २५ तबतो च्यवनजी उसके दोष देखने को समर्थ न हुये और उस राजा कुशिकसे यह वचन कहा २६ कि भार्य्या समेत तुम शीघ्रही रथकी सवारी में जहां मैं कहूं वहां लेचलो तब निश्शंक राजा ने उस तपोधन ऋषि से कहा ऐसाही होगा २७ पूछा कि हे भगवन् क्रीड़ारथ तैयार होय वा युद्धका रथ तैयारकरें उस प्रसन्नचित्त राजाके उस वचनको सुन कर प्रसन्नहुये २८ च्यवनमुनि ने उस देश और शत्रुओं के विजयी राजाको यह उत्तरदिया कि शीघ्र उस रथको तैयारकरो जो तेरे युद्धकरने काहै २९ और वह धनुष पताका वा सुवर्ण यष्टीकी शक्ती रखनेवाला क्षुद्रघंटिकाओं से शब्दायमान चंचल तोरणों समेत ३० जाम्बूनद नाम सुवर्ण से चित्रित उत्तम सौ बाणों समेत होय इसके पीछे वह राजा ऋषि से बहुतअच्छा शब्द कहकर उस बड़े रथको तैयार करके ३१ भार्य्या को बायें धुरमें और अपने को दाहिने धुरमें जोतकर उस रथमें वह चाबक रक्खा जिसका नाम त्रिदण्डथा और उसकी नोक लोहेकी सूई के समानथी ३२ राजाने उस सबको उसी प्रकार से देकर यह बचन कहा हे भगवन् भृगुनन्दनजी रथ कहां जाय ३३ हे ब्रह्मर्षि जहां आपकहैं वहांही रथ आपका जायगा यह बचन सुनकर भगवान् ऋषि ने उस राजाको उत्तरदिया ३४ यहां से बड़े धीरे २ ऐसे पैरों पैरों चलना चाहिये जिससे कि मुझ को कष्ट न होनेपावे तुम इसी रीति से मेरी इच्छाके अनुसार चलो मैं बड़ी प्रसन्नतापूर्व्वक धारण करनेकेयोग्यहूं और सब मनुष्य इसी कौतूहलको देखैं ३५ कोई पथिकजन मार्ग से न हटायाजाय मैं उनको धन दूंगा और ब्राह्मणों को वह उनकी अभीष्ट वस्तुदूंगा जो वह मार्ग में मांगेंगे ३६ मैं सबधन और रत्न सब मांगनेवालोंकोदूंगा हे राजा इसको सम्पूर्णतासे कर अनुचित न करना ३७ राजाने उनके वचनको सुनकर अपने नौकरों से कहा कि जो जो आज्ञा मुनि करें वह २ सब तुम निस्सन्देह मुनिकोदो ३८ इसके अनन्तर बहुत प्रकारके रत्न स्त्रियां घोड़ेआदि भेड़ बकरी बनेहुये आभूषण और बिनाबना सुवर्ण और पर्व्वतकेसमान हाथी और राज्यके सम्पूर्ण प्रधानलोग उस ऋषि के पीछे चले ३९ तब नगरमें हाहाकार शब्द मचगया सबप्रजा महापीड़ित हुई फिर वह दोनों उस तीक्ष्ण नोकवाले चाबक से घायलहुये ४० पीठ और कमरपर घायलहोकर भी रूपान्तर दशा से रहित वह दोनों उस ऋषिको लेचले कम्पायमान पचास

दिवसके भूखे दुर्बल शरीर ४१ उन दोनों वीर स्त्री पुरुषने उस उत्तमरथको किसी प्रकार से चलाया वहुत घायल और घावों से रुधिर डालनेवाले वह दोनों प्रफुल्लित किंशुक वृक्षके समान दृष्टपड़तेथे हे महाराज पुरवासी लोग उन दोनोंको देखकर शोकसे अत्यन्त व्याकुल शापके भयसे भयभीत होकर कुछ नहीं कह सक्ते थे फिर परस्परमें एक एकसे कहताथा कि तपके प्रभावको देखो ४२।४४ हम सब क्रोध भरेहुये भी इस उत्तम मुनिकी ओर को देखने में भी असमर्थ हैं, इन पवित्रात्मा महर्षिका अद्भुत पराक्रमहै ४५ और भार्यासमेत राजाके भी इस धैर्य को देखो कि इन दोनों थकेहुओं ने भी दुःखसे इस रथको चलाया ४६ भृगुनन्दनजी ने इन दोनोंकी विपरीत दशाको नहीं देखा भीष्मजी बोले कि इसके अनन्तर उन भार्गवजी ने उन दोनोंको रूपान्तर दशासेरहित देखकर ४७ धनके स्वामी कुवेरजी के समान धनको दानकिया उस समयपर भी प्रसन्नचित्त राजा ने आज्ञा के अनुसारही किया ४८ इस पीछे मुनियों में श्रेष्ठ बड़े साधु भगवान् च्यवनजी इनपर प्रसन्नहुये और उस उत्तम रथसे उतरकर अपने हाथसे दोनों स्त्री पुरुषको छुड़ादिया ४९ भार्गवजी ने इन दोनोंको वुद्धिके अनुसार रथसे छुटाकर अत्यन्त निर्मल स्वच्छ गम्भीरता और प्रीति में डूबीहुई वाणी से यह वचन कहा ५० कि तुम दोनोंको उत्तम वरदूंगा जो तुम्हारा अभीष्ट होय सो कहो हे भरतर्षभ राजा युधिष्ठिर उस उत्तम मुनिने प्रीति के साथ अमृत के समान दोनों हाथों से उनके घावोंको मलके दोनों स्त्री पुरुषोंको स्पर्श किया इसके पीछे राजा ने यह वचन कहा हे भगवन् यहां हम दोनोंको थोड़ाभी दुःख नहीं है ५१।५२ यह कहकर दोनोंने भार्गवजी से कहा कि हम दोनों आपके प्रभावसे आनन्द युक्तहैं तवतो अत्यन्त प्रसन्न भगवान् च्यवनजी ने उन दोनों से कहा ५३ कि जो मैंने पूर्व में कहाहै वह मिथ्या नहीं है वहीहोगा यह गंगाका तट बड़ाशुभहै और इसके समीपवर्त्ती देश क्रीड़ाके योग्यहैं ५४ हे राजा व्रतकरनेवाला मैं कुछ समयतक यहां निवास करूंगा हे पुत्र तुम अपने पुरकोजावो और आनन्दकरके फिर आना ५५ हे राजा स्त्रीसमेत तुम प्रातःकालके समयपर मुझको यहां नियत देखोगे तुमको क्रोध न करना चाहिये तेराकल्याण वर्त्तमान हुआ ५६ जो तेरा अभीष्ट तेरेहृदय में वर्त्तमान है वह सब होगा यह वचन सुनकर राजाकुशिकने अत्यन्त प्रसन्नात्मासे संयुक्त ५७ उस उत्तम मुनि से यह सार्थक वचनकहा हे

महाभाग मेराक्रोध नहीं है हे भगवन् हम दोनों आपकेद्वारा पवित्रहुये ५८ हम दोनों तरुणअवस्थामें नियत तेजस्वी और पराक्रमी होगये चाबुकसे जो आपने मेरे और मेरी भार्य्याके शरीरपर घावकिये ५९ उन अंगोंको मैं अंगोंमें नहीं देखताहूं मैं भार्य्या समेत बड़ा सुखी हूं इस देवी को शरीर से अप्सरा के समान देखताहूं ६० यह स्त्री बड़ीशोभासे युक्तहै पूर्व्वमें इसको ऐसा नहीं देखाथा जैसा कि अब आपकी कृपासे इसको देखता हूं ६१ हे सत्यपराक्रमी यह बात आपमें कोई आश्चर्य्यकी नहीं है ऐसे बचनों को सुनकर च्यवनजी ने राजाकुशिक को उत्तरदिया ६२ हे राजा तुम भार्य्यासमेत यहां आना ऐसे कहाहुआ अच्छीरीति से आज्ञस वह राजर्षि कुशिक उस ब्रह्मर्षिको दण्डवत् करके ६३ दिव्यशरीरयुक्त देवराजके समान वहां से चला इसके पीछे सब प्रधान मंत्रीलोग पुरोहितोंसमेत उसकेसमीप उपस्थितहुये ६४ सेनाके सेनापति आदि सर्दारलोग और हाथों में भेंटें लियेहुये सब प्रजाके लोगभी वर्त्तमानहुये उनके मध्यमें राजा प्रकाशमान अग्निके समान शोभायमान हुआ ६५ प्रसन्नमन बन्दीजनोंसे स्तूयमान वह राजा कुशिक अपने पुरमें आया इस के पीछे वह महातेजस्वी नगर में आकर प्रातःकालकेसमय सम्पूर्ण सन्ध्याबन्दनादि कर्म्मोंकोकरके स्त्रीसमेत भोजनादि से निवृत्तहो रात्रिको निवास किया ६६ तब उस उत्तमऋषिकी दीहुई शोभासे युक्त सुन्दर शरीरवाले परस्पर पीड़ासे रहित देवताओंकी शय्याकेसमान पलँग पर वर्त्तमान होकर वह दोनों अपनी नवीन तरुणताको देखकर प्रसन्नहुये ६७ इसके पीछे भृगुबंशकी शुभकीर्त्ति के बढ़ानेवाले तपोधन ऋषिने अपनी बुद्धि से एक ऐसे बनको उत्पन्न किया जोकि धनोंसे पूर्ण चित्तरोचक अनेकप्रकारके रत्नोंसे अलंकृत था जैसा कि इन्द्रके पुरमें भी न था ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेच्यवनकुशिकसंवादेत्रिपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५३ ॥

चौवनवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले इसके पीछे ब्राह्ममुहूर्त्त में जागनेवाला प्रातःकालके संध्योपासनादिक कर्मों से निवृत्तहोकर वह महासाहसी राजाकुशिक भार्य्याको साथलेकर उस बनकीओर चला १ वहां उस राजाने सुवर्णजटित ऐसे महलको देखा जिस में हजारों रत्नों के खम्भथे और गन्धर्वों के नगरके समानथा तब राजाकुशिकने

बड़ी बड़ी दिव्य बस्तुओं को देखा २ सुवर्ण के शिखरवाले पर्व्वत कमलयुक्त सरोवर नानाप्रकारके चित्रशाला वन्दनवारों से शोभित और सुवर्णकी खानों से शोभित हरित मणिमय भूमि ३ प्रफुल्लित सहकार, केतक, उद्दालक, धव, अशोक, सहकुन्द, अतिमुक्तक ४ चम्पक, तिलक, उत्तम पनस, वंजुल और जहां तहां फूलेहुये कर्णिकारों के वृक्षोंको देखा ५ क्रीड़ाके योग्य पद्म उत्पल नाम कमल और सब ऋतुओं के पुष्प धारणकरनेवाले बिमानरूप पर्व्वतों के समान अनेक महात्माओंकोभी देखा ६ हे भरतवंशी कहीं शीतलजल कहीं उष्णजलसे शोभित उत्तम चित्रविचित्र अत्यन्त पवित्रआसन ७ और वहां शयनके स्थान सुवर्ण रत्नोंके बनेहुये वहुमूल्य बिछौनोंसेयुक्त शय्या और स्थान स्थानपर रक्खे हुये भक्ष्य भोज्य के पदात्थों समेत देखे ८ उनमें सुन्दरबाणी बोलनेवाले तोते मयना, भृङ्ग, राजक, कोकिल, शतपत्र, कोयष्टिक, कुक्कुभ, मोर, कुकुट, जीवजीवक, चकोर, बानर, हंस, सारस, चक्रवाक ९। १० इन सब अत्यन्त प्रसन्न चित्तरोचक पक्षियोंको चारोंओरको देखा हे राजा कहीं अप्सराओं के और गन्धर्वों के समूहोंको देखा ११ और कितनेही जीवों को अपनी स्त्रियों से मिलते हुये देखा जिनको एकवार राजाने देखा उनको फिर दूसरीवार न देखा १२ अत्यन्त मधुरस्वरों के गान वेदपाठहोनेकी ध्वनि और अत्यन्त मधुरबाणीसे बोलतेहुये हंसोंको भी वहां राजाने देखा और उनकी वाणीको सुना १३। १४ तब राजाने उस बड़ी अद्भुतताको देखकर चित्तसे बिचारकिया कि यहस्वप्नहै अथवा मनका भ्रमात्मक विचार है अथवा सत्यहै १५ आश्चर्य्य है कि मैं शरीर समेत परमगति को प्राप्तहूं अथवा उत्तर कुरुनाम पवित्र देशमें वा अमरावतीपुरी में मैं प्राप्तहोगयाहूं १६ मैं यह क्या बड़ाअद्भुत और आश्चर्य्यका स्थान देखरहाहूं यह विचार और शोचकरतेहुये राजाने उस रत्नों के खम्भोंसे युक्त सुवर्ण के विमानमें वृद्धोंके योग्य दिव्य पलंगपर सोतेहुये मुनियों में श्रेष्ठ भृगुनन्दनजी को देखा १७। १८ तब तो भार्य्यासमेत राजा बड़ीप्रसन्नतासे उस ऋषिके पासगया इसके पीछे च्यवनऋषि पलंगसमेत गुप्तहोगये १९ इसकेपीछे बनके किसी दूसरेस्थान पर कुशाके आसनपर विराजमान जपमें प्रवृत्त उसमहाव्रत मुनिको फिरदेखा २० इसप्रकार ऋषिने अपने योगवलसे राजाको मोहितकिया २१ फिर एकक्षणमेंही वहबन अप्सरा गन्धर्वों के समूह और सबवृक्षादिक गुप्तहोगये हे राजा फिर वही

गङ्गाकातट शब्दसे रहितहोगया २२ और पूर्वके समान बहुतकुशा और सर्पों की बामीरखनेवाला हुआ इसकेपीछे वह राजा अपनी स्त्रीसमेत २३ उसअपूर्व बड़े चमत्कार को देखकर उस कर्म्मसे आश्चर्य्ययुक्त हुआ फिर प्रसन्नहोकर कुशिकने अपनी स्त्रीसे कहा २४ हे कल्याणिनि देखो इन उत्तमऋषि भार्गवजी की कृपासे जैसे यह अपूर्व कठिनतासे प्राप्तहोनेवाले अद्भुत चमत्कारोंको देखा इससे विदितहुआ कि तपबल से अधिक कोई बल नहीं होताहै २५ जो चित्त की इच्छासे अप्राप्तहै वह तपसे मिलना संभवहै तीनोंलोक के राज्यसे भी तपबल अधिकहै २६ अच्छीरीति से करेहुये तपके बलसे मोक्षका होना भी संभवहै इन महात्मा ब्रह्मर्षि च्यवनजी का प्रभाव अपूर्व्व है २७ तपकेही बलकेद्वारा इच्छानुसार अन्यलोकों को भी उत्पन्न करसक्ताहै यह ब्राह्मण पवित्रबाणी बुद्धि और कर्मोंकेही द्वारा सबसे उत्तम होते हैं २८ यहां च्यवनजी के सिवाय दूसरा कौन ऐसा आश्चर्य्य का कर्म्मकरके शान्त होसक्ताहै लोकमें मनुष्यों को ब्राह्मणवर्ण मिलना बड़ाकठिनहै और राज्यका मिलना सहजहै २९ हमदोनों ब्राह्मणकेही प्रभावसे घोड़े आदि के समान रथ में जोड़ेगये इसप्रकार से विचार करनेवाला वहराजा च्यवनजीको विदितहुआ ३० तब ऋषिने राजाको अच्छीरीतिसे देख कर कहा कि शीघ्रआओ ऋषिके इसवचनको सुनतेही वहराजा स्त्रीसमेत महामुनिके समीपगया ३१ राजाने शिरसे दण्डवत्करी तब ऋषिने राजाको आशीर्वाददेकर विश्वासयुक्तकर आनन्दयुक्त होकर यह बचनकहा कि आओ बैठो ३२ हे भरतवंशी राजायुधिष्ठिर इसकेपीछे अपने स्वभावमें नियत शुद्धबचनोंसे तृप्त करतेहुये च्यवनजी ने उस राजा से कहा ३३ हे राजा यहां तुमने पंचज्ञानेन्द्रिय पंचकर्मेन्द्रिय और मनको अच्छीरीति से स्वाधीनकिया इसी हेतुसे तुम दुःखसे छूटेहुयेहो ३४ हे वचन कहनेवालों में श्रेष्ठ पुत्र मेरा तुमने अच्छीरीतिसे पूजन कियाहै इससे तुझमें किंचित्मात्र भी पाप नहींरहा ३५ हे राजा मैं जहांसे आया हूं वहांजाऊंगा अब तुम मुझको बिदाकरो हे राजेन्द्र मैं तुझपर प्रसन्नहूं जोचाहो सो बरमांगो ३६ कुशिकने कहा हे श्रेष्ठ भार्गवजी मैंने भगवान् के पास अग्नि के मध्यमें वर्त्तमान वस्तुके समेत अपनी बर्त्तमानताकरी और भस्म नहींहुआ हूं यही बहुतहै ३७ हे निष्पाप भृगुनन्दनजी मैंने यही बड़ाभारी उत्तम वरपाया है जो आपने हमसे प्रसन्नहोकर मेरेकुलकी रक्षाकरी हे वेदपाठी यह मुझपर ब-

ड़ा अनुग्रहहै और यही जीवनका धर्म्म और प्रयोजन है यही राज्य और मेरे तपकाफलहै ३८।३९ हे भृगुनन्दनजी जो आप मुझपर प्रसन्न हो मुझे किसी बातका सन्देहहै उसको आप प्रकट करनेको योग्यहैं ४० ॥

इतिश्रीमहाभारते आनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेच्यवनकुशिकसंवादेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

च्यवनजी बोले हे नरोत्तम तुम मुझसे बरको लो और तेरे हृदयमें जो संशयहै उसको कहो मैं सबको सिद्ध करूंगा १ कुशिकने कहा हे भगवान् भार्गव जी जो आप प्रसन्नहो तो मुझसे कहिये कि किसहेतुसे आपने मेरे घरमें निवास किया इसको कृपाकरके आप कहिये मैं मनसे सुनाचाहताहूं २ हे श्रेष्ठमुनि एकही करवटसे २१ इक्कीस दिनतक सोना और कुछ न कहकर बाहर जाना ३ अकस्मात् गुप्तहोजाना फिर दर्शन देना फिर २१ इक्कीस दिनतक दूसरी करवटसे सोना ४ तैलसे मर्द्दित शरीर होकर जाना मेरे घरमें नानाप्रकार के भोजनोंको मँगाकर अग्निसे भस्म करना ५ फिर आपने अकस्मात् शीघ्र रथकी सवारी द्वारा जो गमन किया धनों का दान बनका दिखलाना ६ हे महामुनि बहुतसे सुवर्ण के महल रत्न और मूंगेके पायेके पलँगोंका दर्शन दिखाकर गुप्तहोजाना आदिक कर्म्म किये इन सबके कारणको सुना चाहताहूं हे भार्गवजी मैं इसको शोचता हुआ अत्यन्त मोहितहोताहूं ७।८ इस स्थानपर मैं इन सबबातों के पूरे निश्चयको नहीं पाताहूं हे तपोधन यह सत्य वृत्तान्त जिसहेतुसे कियाहै उसको मूलसमेत बर्णन कीजिये ९।१० च्यवनजी बोले कि हे राजा पूर्वसमयमें देवताओं की सभामें ब्रह्माजी ने जो कहाहै उसको जो मैंने सुना उसको तुम मुझसे सुनो ११ हे राजेन्द्र ब्राह्मण और क्षत्रियोंकी शत्रुतासे शवरादिकोंका संकटहोगा और तेरा पौत्र तेज और पराक्रम से संयुक्त होगा १२ इसी हेतुसे तेरे नाशकरने की इच्छासे तेरे कुलके नाशकरने के लिये तेरे पास आयाथा १३ और पुरमें आकर तुमसे कहाथा कि मैं कुछ नियमको प्रारम्भ करूंगा तुम मेरी सेवाकरो १४ मैंने तेरे घरमें किसी बुरे कर्मको नहीं पाया इसीकारण से हे राजऋषि तू जीताहै नहीं तो अन्य दशामें नाशको पाता १५ हे राजा मैं इस बुद्धिमें नियत होकर २१ इक्कीस दिन सोयाहूं कि कदाचित् कोई मुझको बीचमें जगावे १६

जब भार्य्या समेत तुमने मुझ सोतेको नहीं जगाया इसीसे मैं उसी समयसे तेरे ऊपर प्रसन्नहुआ १७ हे समर्थ राजा कुशिक फिर मैं उठकर निकला जो तुम मार्गमें मुझको कहते कि कहां जातेहो तो मैं तुमको शापदेता १८ गिरिगुप्तहुआ फिर योगमें नियतहोकर २१ इक्कीस दिननक तेरे घरमें सोया १९ हे राजा तुम अपनी गृहस्थपने की दशासे दुःखी होकर कदाचित् मेरी निन्दाकरते मैंने इस बुद्धिमें नियतहोकर तुम दोनोंको गृहस्थिती में पीड़ामान किया २० इसपर तुम को भार्य्या समेत बहुतथोड़ा भी क्रोधनहीं हुआ मैं इसहेतुसे तुमपर प्रसन्नहुआ २१ मैंने भोजनको मँगाकर जो भस्मकरदिया उसमें मेरा यह बिचारथा कि तुम मित्रता में क्रोधयुक्त होजावो २२ इसके अनन्तर मैंने रथमें सवार होकर तुम से कहा कि भार्यासमेत मुझको लेचलो तुमने उस मेरी आज्ञाकोभी वैसाही किया २३ हे राजा तुमने शंकारहित होकर वह सब काम किये इसीकारणसे मैं प्रसन्न हूं कि धनका दानकरदेने पर भी क्रोधने तुमको नहीं जीता २४ हे राजा इसके पीछे भार्या समेत तेरे प्रसन्न और नम्रता होनेपर मैंने यहवन उत्पन्नकिया और तेरी प्रसन्नताके निमित्त यह स्वर्ग दिखाया २५ हे राजा कुशिक जो इस बनमें तुमने दिव्य पदार्थों को देखा २६ वह तुमने इसी देहसे स्वर्ग के एक मुख्य स्थानको एक मुहूर्त्ततक देखा २७ यह मैंने तप और धर्म्म का फल दिखलाने के निमित्त सबकिया और दिखाया इस स्थानपर जो तेरी इच्छाहुई वह भी मुझको विदितहुई २८ हे सब पृथ्वी के राजा कुशिक तुम सब पृथ्वी के और देवताओं के राज्यको भी पाकर प्रतिष्ठा करके ब्राह्मणवर्ण और तपको चाहतेहो २९ यह ऐसाही है जैसा तुम कहतेहो हे तात ब्राह्मणवर्ण कठिनता से प्राप्त होसक्ताहै फिर ब्राह्मण होकर ऋषिहोना कठिनहै और ऋषिहोनेपर तपस्वी होना कठिनहै ३० यह तेरी चित्तकी इच्छा प्राप्तहोगी कुशिक से कौशिक ब्राह्मणवर्ण होगा तेरा तीसरा पुरुष ब्राह्मणवर्ण को पावेगा हे राजा तेरा वंश भार्गव ऋषियों के तेजसे ब्राह्मणहोगा और तेरा पौत्र वेदपाठी तपस्वी और अग्नि के समान तेजस्वी होगा ३१ । ३२ वह मनुष्य देवताओं से लेकर तीनोंलोकों के भयको उत्पन्न करेगा ३३ हे राजऋषि जो तेरे चित्तमें है उस बरको ले मैं तीर्थयात्राको जाऊंगा क्योंकि उस तीर्थयात्राका पहला समय जाताहै ३४ कुशिकने कहा हे निष्पाप महामुनि जो तुम प्रसन्नहो तौ यही मेरा भी बरहै कि जो आपने कहा

है वहीहोय और मेरा पौत्रहोय ३५ हे महर्षी जो मुझे वरदियाहै कि तेरे कुल-वाला ब्राह्मणहोगा उसको फिरकर ब्यौरे समेत सुनना चाहताहूं ३६ हे भृगुनन्दन मेराकुल कैसे ब्राह्मणवर्णको पावेगा कौन मेरा बन्धु और अंगीकृतहोगा ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेच्यवनकुशिकसंवादेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५॥

छप्पनवां अध्याय॥

च्यवनजी बोले हे राजा कुशिक यहबात मुझको अवश्य इस निमित्त कहनी चाहिये कि मैं तेरे नाशकेही निमित्त आयाथा १ हे राजा क्षत्रियलोग भृगुबंशी ब्राह्मणों के यजमानहैं यहबात सदैवसे चलीआती है वह दैवके नियत कियेहुये कारणसे विरुद्धता प्राप्तहोंगे २ दैव दण्डसे पीड़ामान वह क्षत्रिय गर्भ पतन आदिको भी करतेहुये सब भृगुबंशियों को मारेंगे इसके पीछे हमारे कुल में गोत्रका बढ़ानेवाला अग्नि सूर्य्य के समान तेजस्वी और महापराक्रमी ऊर्व नाम पुत्र उत्पन्न होगा ३। ४ वह संसार की प्रत्येक वस्तु के लिये क्रोधाग्निको उत्पन्न करेगा और पर्व्वत बनसमेत पृथ्वीको भस्मीभूत करेगा ५ वह मुनियों में बड़ा साधू कुछ कालके पीछे उस क्रोधाग्निको समुद्रमें वड़वानल नाम अग्नि के मुखमें छोड़कर शान्तकरेगा ६ हे निष्पाप महाराज सम्पूर्ण धनुर्वेद साक्षात् उसके पुत्र भृगुनन्दन ऋचीक नाम ऋषि के पास नियतहोगा ७ दैवके नियत कियेहुये कारणसे क्षत्रियों के नाशके निमित्त वर्तमान होगा फिर वह उस धनुर्वेदको प्राप्त करके अपने बेटे महाभाग तपसे पवित्रात्मा जमदग्नि नाम ऋषि में नियत करेगा फिर वह श्रेष्ठ भार्गव उत्तम वेदको भी धारण करेगा ८। ९ हे भरतर्षभ धर्मात्मा वह जमदग्नि आपकी प्रतिष्ठा के निमित्त तुम्हारे कुलमें से कन्याको पावेगा १० वह महातपस्वी तेरी पौत्री कन्याकोपाकर क्षत्रियधर्मधारी ब्राह्मण पुत्रको उत्पन्न करेगा ११ हे बड़े तेजस्वी वह ऋषि तेरे कुलमें ऐसे पुत्र को देगा जोकि क्षत्रियरूपहोकर ब्राह्मणों के कर्म करनेवाला तेजमें बृहस्पतिजी के समान राजा गाधिका पुत्र बड़ा धर्मात्मा तपोमूर्त्ति विश्वामित्र नाम होगा वहां इनके विपर्य्ययमें कारणरूप दो स्त्रियां होंगी १२। १३ ब्रह्माजी की आज्ञा से यह अन्यथा नहीं होगा च्यवनजी के इस बचनको सुनकर राजा कुशिक बहुत प्रसन्नहुआ १४। १५ हे भरतर्षभों में बड़े साधू फिर उस धर्मात्मा राजाने

कहा कि ऐसाहीहो इसके पीछे महातेजस्वी च्यवनजी ने दूसरी बार भी राजासे बरमांगने की आज्ञाकरी १६ तब राजाने कहा बहुतअच्छा हे महामुनि मैं आप से अपने अभीष्टको मांगताहूं कि १७ मेराकुल ब्राह्मणहोकर मनसे धर्म में प्रवृत्त होय १८ तब यह बचनसुनकर च्यवनजी ने कहा ऐसाही होगा यह कहकर और राजासे पूछकर तीर्थयात्रा को चलेगये १९ हे राजा भृगुबंशी और कुशिक बंशियों की नातेदारीका यह सम्पूर्ण कारण तुमसे कहा २० और ऋषिने जैसा कहाथा वैसाहीहुआ परशुराममुनि और बिश्वामित्रका भी जन्महुआ २१॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेकुशिकच्यवनसंबादेषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६॥

सत्तावनवां अध्याय॥

युधिष्ठिर बोले अब मैं श्रीमान् राजाओं के समूहों से रहित इसपृथ्वी को देख कर बारम्बार चिन्ता करताहुआ मोहको प्राप्त होताहूं १ हे भरतबंशी पितामह मैं सैकड़ों राज्योंको पाकर पृथ्वीको बिजयकरके किरोड़ों मनुष्यों को मारकर दुःख को पाताहूं २ उन स्त्रियोंकी कौनदशाहोगी जो कि पति पुत्र मामा और भाई लोगोंसे रहितहैं ३ हम कौरव बिरादरीवाले मित्रोंकोभी मारकर निस्सन्देह शिर नीचा कियेहुये नरकमें पड़ेंगे ४ मैं उग्रतप करके अपने मरणको किया चाहता हूं और आपसे उपदेश लिया चाहता हूं ५ बैशम्पायन बोले कि बड़े साहसी भीष्मजी ने युधिष्ठिर के इसबचन को सुनकर और उसको बुद्धिमें पूर्ण देखकर यह कहा ६ हे राजा मैं गुप्त अद्भुत और अत्यन्त श्रेष्ठ बचन तुमसे कहताहूं कि शरीर त्यागने के पीछे जिस मनुष्य को जोगति प्राप्त होती है उसको मुझ से सुनो ७ हे समर्थ तपसे स्वर्गकी प्राप्ती होती है तपसेही शुभकीर्त्ति होती है तप सेही दीर्घायु और भोगोंकी प्राप्ती होती है ८ हे भरतर्षभ तपसेही परोक्ष ज्ञान अपरोक्ष विज्ञान नीरोगता सुन्दररूप धन और सौभाग्यता प्राप्त होती है ९ तपसे मौनताको पाताहै मौनतासे बुद्धिको स्वाधीन करताहै दानसेसुख और ब्रह्मचर्य से जीवनको पाताहै १० हिंसा न करने का फल रूपकी शोभाहै और दीक्षाका फल कुलमें जन्मलेनाहै फलमूल खानेवालों को राज्य सूखेपत्ते [illegible] स्वर्ग प्राप्तहोता है ११ दूधका आहार करनेवाला मनुष्य स्वर्ग[illegible] से बड़ा धनवान् होता है गुरू की सेवासे विद्याको पात[illegible]

सन्तानहोती है १२ व्रतमें शाक आहार करने से गोधन रखनेवाला होताहै तृण खानेवालों का फल स्वर्ग है तीनोंकालमें स्नानकरके स्त्रियोंको और वायु को पानकरके यज्ञके फलको पाताहै १३ सदैव स्नान करनेवाला द्विज दोनों संध्याओं में जपकरने से निरालस्य होकर बुद्धिमान् होता है पर्व्वत गुहा और रेतके सेवन करनेवाले को राज्यमिलताहै और प्राणायाम करनेवाले को स्वर्गमिलता है १४ पृथ्वीपर शयन करनेवाले को स्थान और शय्याआदि प्राप्तहोते हैं चीर और बल्कल धारण करनेसे पोशाक और भूषण मिलते हैं १५ पलंग आसन और सवारी भी प्राप्तहोती हैं तपोधन योगी के अग्नि में प्रवेश करने से ब्रह्मलोक में सदैव के लिये प्रतिष्ठा पाताहै १६ इस लोकमें रसीलीवस्तुओं के त्यागने से अच्छे ऐश्वर्यको पाताहै लोभसम्बंधी वस्तुके त्यागने से सन्तानकी आयुर्दा बढ़तीहै १७ जो जलमें निवास करे वह राजाहोता है हे नरोत्तम सत्यवक्ता मनुष्य देवताओं के साथ बिहार करताहै १८ दानसे शुभकीर्त्ति होती है इसीप्रकार हिंसा न करने से नीरोगता होती है ब्राह्मणकी सेवासे बड़ेद्विजभावको और राज्यकोभी पाता है १९ जलके दानसे सदैव शुभकीर्त्ति होती है और भोजन की वस्तुके दानसे अभीष्ट वस्तुओं का भोगमिलताहै २० सब जीवोंसे प्रियभाषण करने से विश्वास धैर्य्यताका देनेवाला सब शोकोंसेरहित होताहै और देवताकी सेवासे राज्य और दिव्य स्वरूपको पाताहै २१ दीप दर्शन के दानसे मनुष्य दिव्य नेत्रवाला होता है और सबके ऊपर प्रसन्न दृष्टीसे प्रशंसनीय शास्त्रोंकी स्मरण रखनेवाली बुद्धि को पाताहै २२ चंदनआदि सुगन्धकी वस्तु और फूलमालाके दानसे बड़ी शुभ कीर्त्ति विख्यात होती है शिरपर बाल और डाढ़ी मूछ रखनेवालों की उत्तम सन्तान होती है २३ हे राजा व्रत दीक्षा यज्ञ स्नान अथवा मन्त्रको बारहवर्ष तक करने से वीरस्थान अर्थात् योगीके स्थानसे बढ़कर नियत होताहै २४ हे राजा ब्राह्मविवाहसे कन्याका दान देनेसे दासी दास आभूषण छत्र और मकानात को पाताहै २५ हे भरतवंशी यज्ञ और व्रतोंकेद्वारा स्वर्ग को जाताहै फल फूल का दान करनेवाला मनुष्य कल्याण रूप ज्ञानको पाताहै २६ सुवर्ण के शृंगों से शोभित हजार गौकेदान से मनुष्य बड़े पुण्यको पाकर देवलोक को पाताहै देवताओंके समूहों ने स्वर्ग में ऐसा कहाहै २७ जो मनुष्य वत्स कांस्य दोहनी पात्र और सुवर्ण के शृङ्ग रखनेवाली कपिला गौको दानकरता है वह गौ उन

उनगुणों में उसकी अभीष्ट देनेवाली होकर उस दातामनुष्यको प्राप्तहोतीहै २८ गौके जितने रोमहोते हैं उतनेही दिनोंतक वह मनुष्य गौदानसे स्वर्गको पाकर पुत्र पौत्र और सब कुलभरेको सातवीं पुस्ततक परलोकमें आवागवनसे छुटाकर आपभी छूटता है २९ सुन्दर स्वर्णमयीशृङ्ग कांसेका दुहिनेकापात्र और सुनहरी झूल रखनेवाली तिलकी धेनुको दक्षिणा संयुक्त ब्राह्मणके अर्थ देताहै उसको बसुओं के लोक सुगमतासे मिलते हैं ३० गौवोंका दान परलोक में उस मनुष्य को जोकि अपनेकर्मों से रुकाहुआहो और कठिन अन्धकारयुक्त नरकमें गिरने वालाहै ऐसे मोक्षदेताहै जैसे कि बायुसे युक्त जहाज महासमुद्रसे उद्धार करदेता है ३१ जो मनुष्य ब्राह्मयबिवाह में कन्यादान करताहै और वेदपाठी ब्राह्मण के निमित्त होमदान करता है अथवा जो बुद्धिके अनुसार अन्नदान करता है वह इन्द्रकेलोकको पाताहै ३२ जो मनुष्य सब गुणों से युक्त सब सामग्रीसमेत सुंदर स्थानको ऐसे ब्राह्मणको दानकरता है जो वेदपाठ जपवाला शुभ चालचलन आदिक गुणों से प्रशंसनीय होय उसके भी लोक उत्तर कुरुदेशियों में होते हैं ३३ ऐसे गौवों के दानसे भी मनुष्य बसुओं के लोकों को पाता है हिरण्यनाम सुबर्णका दान स्वर्गका दाता और कनकनाम सुबर्णकादान उससे भी अधिक कहाहै ३४ छत्रके दानसे उत्तम घरको पाताहै और जूते के जोड़ेके दानसे सवारी को पाताहै बस्त्रों के दानसे सुन्दररूप फलपाता है चन्दनादिक सुगन्धित बस्तुके दानसे सुगन्धयुक्त शरीर होताहै ३५ जो मनुष्य पुष्पवाले वा फलवाले वृक्षका ब्राह्मण को दानकरताहै वह बिनाउपाय प्राप्तहोनेवाले धनसे पूर्णहोकर वृद्धियुक्त असंख्यरत्नों से भरेहुये स्थानको पाताहै ३६ भोजनके योग्य खानेकी बस्तु वा पीनेकीबस्तु अथवा रसोंकादान करनेवाला मनुष्य इच्छाकेसमान सब खट्टे मीठे सुस्वादुरसों को पाताहै और स्थान वा बस्त्रोंका बुद्धिके अनुसार दान करनेवाला उनकोभी निस्सन्देह प्राप्तकरताहै ३७ हे राजा जो मनुष्य माला धूप गन्ध चन्दनादिकालेप पुष्प और स्नानकी सामग्री ब्राह्मणको दानकरे वह इस लोकमें नीरोगता पूर्व्वक रूपवान् होताहै ३८ जो मनुष्य पुष्पों से पूर्ण पलँग आदि से संयुक्त स्थानको स्थानकी सब सामग्रीसमेत ब्राह्मण को देताहै वह पवित्र मनोहर रत्नों से भरेहुये उत्तमस्थानको पाताहै ३९ जो मनुष्य सुगन्धलगाये हुये अनेकरंगों से रँगेबिछौने तकियेआदि सब बस्त्रों से अलंकृत पलँगको ब्राह्मण

के अर्थ दानकरताहै वह बिनाउपाय प्राप्तहोनेवाली अतिस्वरूपवान् चित्तरोचक भार्य्याको प्राप्तकरताहै ४० वीर शय्यापर अर्थात् योगशय्यापर सोनेवाला पुरुष ब्रह्माजी के समान होता है जिससे अधिक दूसरी वस्तु नहीं है यह महर्षियों ने कहाहै ४१ वैशम्पायन बोले कि भीष्मजी के इस वचन को सुनकर प्रसन्नचित्त युधिष्ठिरने वीरमार्गकी इच्छासे आश्रममें निवास को नहीं अंगीकार किया ४२ हे पुरुषोत्तम इसके पीछे समर्थ युधिष्ठिर ने पांडवों से कहा कि पितामहका जो वचनहै वह तुमको भी स्वीकृतहोय ४३ इसके अनन्तर सब पाण्डव और यशस्विनी द्रौपदी ने युधिष्ठिरके उस वचनको अंगीकार किया ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारते आनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे भरतर्षभ पितामह बागबगीचे और तड़ागआदि के दानका जो फलहै उसको मैं आपसे सुनना चाहताहूं १ भीष्मजी बोले कि देखने में अति सुन्दर दृढ़ और विचित्र धातुओं से अलंकृत सब जीवों से युक्त पृथ्वी इसलोक में उत्तम गिनीजाती है २ मैं उस पृथ्वी के मुख्यक्षेत्र और तड़ागों की बनावट और सबप्रकारके तड़ागोंका क्रमपूर्व्वक वर्णन करताहूं ३ बनायेहुये तड़ागों के जो गुणहैं उनको भी वर्णन करूंगा तड़ाग देखनेवाला मनुष्य तीनोंलोकों में सर्वत्र प्रतिष्ठाके योग्य मान्य होताहै ४ अथवा तड़ागोंका नियतकरना मित्रोंके स्थानमें मित्रताका बढ़ानेवाला श्रेष्ठ कीर्त्तिका उत्पन्न करनेवाला सबों का मित्र होनेका उत्तमकारणहै ५ प्रतिष्ठित लोगोंने देशमें बनायेहुये एक बड़े रक्षा के स्थानरूप तड़ागक्षेत्र को धर्म अर्थ कामकाफल वर्णनकियाहै ६ तड़ागको चारों प्रकार की सृष्टिका अभीष्ट देनेवाला जानो सब तड़ाग उत्तम लक्ष्मी को देते हैं ७ देव मनुष्य गन्धर्व पितर उरग राक्षस और स्थावरजीव भी तड़ागादिका आश्रयलेते हैं ८ इसी हेतुसे जो गुण कि तड़ाग में कहे हैं उनको तुमसे कहताहूं और उससे जो फलकी प्राप्तिकाहोना ऋषियों ने वर्णन किया है वह भी तुमसे कहताहूं ९ वर्षाऋतुमें जिसके तड़ागमें जल नियत होताहै उसकाफल ऋषियों ने अग्निहोत्र के समान कहा है १० और शरदऋतु में जिसके तड़ाग में जल नियत रहताहै वह परलोक में हजार गोदान के उत्तम फलको पाताहै ११ हेम-

न्तऋतुमें अर्थात् अगहन पूषमें जिसके तड़ागमें जल नियत रहताहै वह बहुत से सुवर्णदान और यज्ञके फलको पाताहै और शिशिरऋतुमें अर्थात् माघ फाल्गुणमें जिसके तड़ागमें जलहोताहै उसका फल ऋषियोंने अग्निष्ठोम यज्ञ के समान कहाहै १२। १३ जिसका अच्छेप्रकारसे बनाहुआ तड़ाग बसन्तऋतु में अर्थात चैत बैशाखमें जीवों के उत्तम आश्रयका स्थानहै वह अतिरात्र यज्ञ के श्रेष्ठ फलको पाताहै १४ ग्रीष्मऋतु अर्थात् ज्येष्ठ आषाढ़में जिसके तड़ागमेंजल नियत होताहै उसका फल मुनियों ने वाजपेय यज्ञ के समान कहा है १५ जिस मनुष्यके खुदायेहुये तड़ागमें गौ साधू मनुष्य सदैव जलको पीते हैं वहअपने सब कुलको उद्धार करताहै १६ जिसके तड़ागमें प्यासीगौ अन्य पशु पक्षी और मनुष्य जलको पीते हैं वह अश्वमेध यज्ञ के फलको पाताहै १७ जिसके बनाये हुये तड़ाग में जो जलपान करते हैं स्नानकरते हैं अथवा विश्राम लेते हैं वह सब परलोक में असंख्य फलपाने का अधिकारी गिनाजाता है १८ हे तात परलोकमें जलकी प्राप्ती कठिनता से होती है जलके दानसे प्राचीन प्रीति उत्पन्न होती है १९ तिलदान जलदान और दीपदान जागरण और सजातियोंके साथ आनन्दकरो यहवस्तु परलोकमें बड़ी कठिनतासे प्राप्तहोती हैं २० हे नरोत्तम यह जलदान सब दानों से बड़ाभारी दान है इसहेतु से अवश्य जल को देना योग्यहै २१ इसरीति से तड़ागका उत्तम माहात्म्य वर्णनकिया अब वृक्षों के लगानेका फल वर्णनकरते हैं २२ स्थावर जीवोंकी यह छः जातें कही हैं आंबआदि वृक्ष और अनार आदि गुल्म और अंगूर आदि लता और खरबूज़ा आदिबल्ली और बांस आदि त्वक्सार और घास आदितृण यहछःजाते हैं २३। २४ वृक्षों की इन छःजातों के लगाने से इतने गुणहैं यहां शुभकीर्त्ति और परलोक में उत्तम फलमिलताहै २५ इसलोक में शुभकीर्त्ति पाकर पितरों के साथ प्रतिष्ठा को पाताहै औरदेवलोकमें जानेपर भी उसके नामका नाशनहीं होताहै हे भरतवंशी वृक्ष लगानेवाला मनुष्य पिता के भूत और भविष्य दोनोंवंशों को तारदेताहै इसहेतुसे वृक्षोंको भी अवश्य लगावे २६ यहवृक्ष उसके नरकके तारनेवाले उस के पुत्रपौत्रादि रूपहोते हैं इसमें सन्देह नहीं है कि परलोकमें जानेवाला मनुष्य स्वर्ग को और अविनाशी लोकोंको पाताहै २७ यह पृथ्वीपर उपजनेवाले वृक्ष अपने पुष्पोंसे देवताओंको फलोंसे पितरोंको छायासे अतिथि लोगों को पूजा

क्रियाकरते हैं २८ और इन्हीं वृक्षों का किन्नर सर्प राक्षस देवता गन्धर्व्व मनुष्य और ऋषियों के गण भी आश्रय लेते हैं २९ इसलोक में फल फूल धारण करनेवाले वृक्ष मनुष्यों को तृप्तकरते हैं और वृक्षके दानदेनेवाले को परलोक में पुत्रकी समान उद्धारकरते हैं ३० इसी हेतु से कल्याण का चाहनेवाला मनुष्य सदैव उन वृक्षों को तड़ाग या अन्य जलाशय के स्थानपर चित्तसे लगावे यह वृक्ष मनुष्योंको पुत्रोंकी समान पोषण करने के योग्यहैं यह धर्मसे पुत्ररूप कहे-जातेहैं ३१ जो तड़ाग वा खात बनानेवालाहै और जो यज्ञ करनेवाला ब्राह्मण है और जो कोई सत्यवक्ता मनुष्य है यह सब स्वर्गमें प्रतिष्ठा पातेहैं ३२ इसहेतु से तड़ाग वा खात बनवावे बागबगीचे लगावे अथवा नानाप्रकार के यज्ञोंसे पू-जनकरे और सदैव सत्यबोले ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेआरामतड़ागवर्णनेअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उनसठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरने कहा हे कौरवों में श्रेष्ठ जो यह दान वेदी के बाहर किये जाते हैं उनसे उत्तम कौनसादान आपने मानाहै १ हे समर्थ उसमें मेरी बड़ी अभिलाषाहै कि यह दियाहुआ दान दाताको मिलताहै या किसको इसको मुझे समझाइये २ भीष्मजी बोले कि जो मनुष्य सब जीवोंको निर्भयता देताहै और आपत्तिकाल में सहायता और भरण पोषण करे अथवा जो मनुष्य तृषित और याचक को उसकी अभीष्ट वस्तु को देताहै ३ वा जो मनुष्य दानकरके उसको सत्य माने वह दान सब दानों से उत्तम कहाजाता है हे भरतर्षभ जो दान दियागयाहै वह दाताको मिलताहै ४ सुवर्णदान गोदान पृथ्वीदान यह उत्तम और पवित्र दान हैं यहदान पापीको भी उद्धार करदेतेहैं ५ हे पुरुषोत्तम तुम सदैव इनदानोंको साधु और ब्राह्मणोंको दो यह निश्चयहै कि सबदान मनुष्यको पापोंसे दूर करतेहैं इसमें किसीप्रकारका सन्देह नहीं है ६ लोकमें जो प्रियतमहै और घरमें जो वस्तु उसको अत्यन्त प्यारी है अविनाशीपने की इच्छा रखनेवाला दानकर्त्ता उन २ वस्तुओंको गुणवान् और अत्यन्त पवित्र मनुष्यों को देवे ७ प्रियवस्तुओं का दान करनेवाला मनुष्य अपने मन वांछित अभीष्टों को पाताहै और इस लोक परलोक दोनों में जीवमात्रका प्यारा होताहै ८ हे युधिष्ठिर जो निर्दय मनुष्य

अहङ्कार से ऐसे याचना करनेवाले को जो अकिंचन होकर संसारी वस्तुओं में प्रीति नहीं रखताहै उस मनुष्य को अपनी बुद्धिके अनुसार पूजन नहीं करता है वह बड़ाही निर्दयहै ६ जो मनुष्य खेदमें पीड़ित शरणहोनेकी इच्छासे पास आनेवाले शत्रुकी भी सहायता करताहै वही पुरुषों में साधू गिनाजाताहै १० जो मनुष्य दुर्बल निर्द्धन और जीविका से दुःखी मनुष्यके कष्ट और बिपत्तिको दूरकरताहै उसके समान कोई मनुष्य नहींहोताहै ११ हे कुन्तीनन्दन जो मनुष्य यज्ञ क्रिया आदि के व्रतधारण करनेवाले साधू अपने पुत्र स्त्रियों समेत पीड़ा-मान भी होकर किसीसे नहीं मांगते हैं उनको अनेक उपायकरके निमन्त्रण देकर भोजन पूर्वक यथा सन्मान करे १२ जो मनुष्य देवता और मनुष्यों से कुछनहीं चाहते और सदैव संतुष्टहोकर जो मिलताहै उसीसे निर्बाह करनेवाले हैं १३ हे भरतवंशी उनको दानकरो वह बिषैले सर्प्प की समान ब्राह्मणहैं उनसे अपनी सदैव रक्षाकरो और इसीप्रकार श्रेष्ठतर ऋत्विज ब्राह्मणों को १४ उन स्थानादि के दानके निमित्त सदैव निमन्त्रण दो जो मृत्तिका वा चूने आदि से बनेहुये दासदासी और घरके संपूर्ण पदार्थ से संयुक्तहोकर अभीष्ट सुखों के रखनेवाले होयँ १५ हे युधिष्ठिर जो वह धर्मात्मा पवित्रकर्म्मी ब्राह्मण इसबात को माने कि यह निमन्त्रण अंगीकार करना योग्य है तो उस श्रद्धासे पवित्र निमन्त्रण को अंगीकार करें १६ जो कि गुरूसे विद्याको प्राप्तकरके समावर्त्तन स्नानकरनेवाले अथवा ज्ञानसे पवित्र गायत्री आदि जपके करनेसे पवित्र और निराश्रयहोकर निर्वाह करनेवाले गुप्तजप और तप करनेवाले तीव्रव्रत ब्राह्मणहैं १७ हे युद्ध-कर्त्ताओंके स्वामी उनपवित्र शांतचित्त अपनीही स्त्रीसे संतुष्टब्राह्मणोंके साथमें जो उपकार करेगा वह लोकमें तीसरा कल्याणहै १८ प्रातःकाल सायंकालके स-मय ब्राह्मणसे अच्छेप्रकार कियाहुआ अग्निहोत्र जैसे फलका देनेवालाहोताहै वैसेही ब्राह्मणों के निमित्त दियाहुआ दान जितेन्द्रियोंके फलका देनेवाला हो-ताहै १६ हे तात तुम्हदान करनेवालेका यह फैलाहुआ यज्ञ जो श्रद्धासे पवित्र दक्षिणा संयुक्तहै वह सब यज्ञों से उत्तमहै वही बर्त्तमानहो २० हे युधिष्ठिर दानके लिये जल हाथमें रखनेवाला मनुष्य पूजन करता हुआ उस प्रकारके ब्राह्मणों में निवासकरे तो उनके पास रहने से अऋणताको प्राप्तकरताहै २१ जो ब्राह्मण क्रोधनहीं करते हैं और तृणमात्रपर भी लोभ नहीं करते हैं और जो प्रियभाषी

हैं वही हमारे परम पूज्यहैं २२ हम वृद्धहैं हमारी कोई प्रतिष्ठा नहीं करता इस वातको यह ब्राह्मण नहीं मानते हैं और जो ब्राह्मण लोभसे कर्मको नहीं करते हैं वह पुत्रके समान पोषण करने के योग्यहैं क्योंकि वह दोनों कर्म उसीप्रकार के हैं २३ वह ऋत्विज पुरोहित आचार्य्य उस वेदके धारण करनेवाले हैं जोकि कृपासे पूर्ण हैं क्षत्रियसे प्राप्त कियाहुआ बल पराक्रम ब्राह्मणमें शान्तीको पाता है २४ हे युधिष्ठिर मेरेपास धनहै मैं पराक्रमीहूं राजाहूं यह मानकर ब्राह्मणको वस्त्र भोजनादिक से तृप्त न करूं यह नहीं करना चाहिये अर्थात् उसको अवश्य भोजन वस्त्रादि से तृप्तकरो २५ हे निष्पाप शोभा और सेनाके निमित्त जो तेरा धनहै अपने धर्मपर आरूढ़होकर तुमको उस धनसे ब्राह्मणों का पूजन करना उचितहै २६ इसीप्रकार सत्यमार्ग में चलनेवाले ब्राह्मण भी नमस्कार करने के योग्यहैं वह सुख और उत्साहपूर्व्वक पुत्रों के समान तेरे पास निवास करें २७ हे कौरवों में बड़े साधू तेरे बिना दूसरा कौन पुरुष उन ब्राह्मणों की जीविका नियत करनेको योग्यहै जोकि अक्षय आशीर्वाद देनेवाले शुभचिन्तक और थोड़ेही से तृप्तहोनेवाले हैं २८ लोकमें जैसे कि स्त्रियोंका सनातन धर्म पति से सम्बन्ध रखताहै और सदैव उनको इसके सिवाय दूसरी गति नहीं है वैसेही ब्राह्मणलोग भी हमारे गति हैं हे तात जो ब्राह्मण क्षत्रियमें नियत भयकारी कर्म को देखतेहुये पूजनको नहीं पातेहुये हम सरीखे क्षत्रियोंको त्यागकरदें २९।३० तव उस ब्राह्मणकी शरण के विना उन वेद यज्ञ और लोकों से रहित अकर्मी क्षत्रियों को जीवन से क्या प्रयोजनहै अर्थात् उनकाजीवन निरर्थकहै ३१ इस स्थानपर जैसा कि प्राचीन धर्म है वह मैं तुझसे कहताहूं हे राजा प्राचीन समय में क्षत्रियोंने ब्राह्मणों की सेवाकी ३२ वैश्यने क्षत्रियों की और शूद्रने वैश्यकी सेवाकरी यह श्रुतिहै अग्निके समान तेजस्वी ब्राह्मण शूद्रकरके दूरसेही प्रतिष्ठा करने के योग्यहैं ३३ और वैश्य वा क्षत्रीको उसके चरणधोने और सेवाकरनी उचितहै हे राजा मृदुस्वभाव सत्यवक्ता और सत्यधर्म्म के पालन करनेवाले ३४ विषधर सर्पकी समान क्रोधमूर्त्ति ब्राह्मणों की सेवाकरो वह ब्राह्मण देवता और मनुष्यों से भी उत्तम और श्रेष्ठहैं ३५ पराक्रम और प्रतापसे तपानेवाले क्षत्रियों के तेज और तप ब्राह्मणोंमें शान्तहोते हैं ३६ हे राजायुधिष्ठिर जैसे ब्राह्मण मुझको प्यारे हैं वैसा मेरापिता भी मुझको प्यारा नहींहै और तुम न मेरे पितामह

न मेराआत्मा न जीवन प्याराहै हे भरतर्षभ सम्पूर्ण पृथ्वीभरे में मुझ को तुझसे अधिक कोई प्यारा नहीं है सो तुझसेही मेरे प्रियतम ब्राह्मण हैं ३७ । ३८ हे पांडुनन्दन मैं जैसे यह सत्य २ वचन कहताहूं उस सत्यतासे मैं उनलोकों को जाऊं जिनलोकों में मेरा पिताशान्तनुहै ३९ सत्यपुरुषों के उन पवित्रलोकों को जिन में ब्रह्माजी पूजित हैं अथवा जहां ब्रह्मलोक उत्तम है उसको देखूं हे तात बहुतदिनों के लिये मुझको वहां जानाहै ४० हे भरतर्षभ राजायुधिष्ठिर सो मैं इन लोकों को देखकर इस हेतुसे दुःखी नहींहूं कि मैंने ब्राह्मणों की सेवा और परिचर्य्या करी है ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेएकोनषष्टितमोऽध्यायः ५९ ॥

साठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि जो याचक वा अयाचक दो ब्राह्मण वेदशाखा मीमांसा से विदित विद्या और जन्मसे समानहों इनदोनों में से किसको दानदेना उत्तम है याचकके निमित्त वा अयाचकके निमित्त १ भीष्मजी बोले हे राजा याचककी अपेक्षा अयाचकको दानदेना उत्तम कहाजाताहै चित्तको स्वाधीन न करनेवाले याचक ब्राह्मण से धैर्य्यमान अयाचक ब्राह्मण अधिकतम पूजनीयहै २ क्षत्री प्रजापालन रक्षणरूप धर्मका धारण करनेवाला और ब्राह्मण अयाचकतारूपधर्म का धारण करनेवाला है धैर्य्यमान बुद्धिमान् शन्तोषी ब्राह्मण देवताओं को तृप्त करता है ३ हे भरतवंशी याचक ब्राह्मण के स्वरूप में याचना करनाही प्रतिष्ठा आदि का नाश करनेवाला कहा जाताहै जब वह याचना करतेहैं तब चोर के समान जीवधारियों को चित्तसे व्याकुल करते हैं ४ याचना करनेवालाही मरता है दान करनेवाला कभी नहीं मरता है हे युधिष्ठिर दानकर्त्ता अपनी इस आत्मा को सदैव के लिये जीवनमुक्त करता है ५ याचक के निमित्त जो दिया जाताहै उसका कारणयहहै कि दयाकरना उत्तम धर्म है परन्तु याचना न करनेवाले दुःखी ब्राह्मणोंको सब उपायों से निमंत्रण देके दानदेना योग्य है ६ जो इसप्रकार के वह उत्तम ब्राह्मण देशों में आकर निवासकरें तब तुम बड़े उपायों से उन ब्राह्मणों को गीलीमृत्तिकासे ढकेहुये गुप्त अग्निके समान जानो ७ हे कौरव्य तपसे प्रकाशमान और पूजन न पानेवाले वह ब्राह्मण पृथ्वीको भी भस्म करडालतेहैं

क्योंकि ऐसे ब्राह्मण सदैव पूजन के योग्यहैं ८ हे शत्रु संतापी वह ज्ञान विज्ञान तप और योगसे संयुक्त पूजन के योग्यहैं उन ब्राह्मणों के निमित्त पूजन करना अवश्य है ९ उन याचना न करनेवाले ब्राह्मणों के सम्मुख जाता और अनेक प्रकार के दानोंको देताहुआ मनुष्य सुखी होता है प्रातःकाल सायंकाल अच्छे प्रकार से कियेहुये अग्निहोत्रमें जो फल होता है १० वहीफल विद्या वेद और व्रतधारण करनेवाले ब्राह्मण के अर्थ दानदेने में होता है विद्या वेद और व्रतमें पूर्ण और किसीके आश्रय न रहकर अपना निर्वाह करनेवाले गुप्तजप और तप के करनेवाले तीव्र व्रत ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ब्राह्मणों का उन मकानात के दान देने के लिये निमंत्रणकरो जो कि मृत्तिका और पाषाणादिसे बना चित्तरोचक दास दासी और घरके सबसामानों से वा अन्य प्रयोजनकी सब बस्तुओं से संयुक्त होयँ हे कौरव युधिष्ठिर वह सूक्ष्मधर्मों के ज्ञाता ब्राह्मण इस बातको समझलें कि यह निमन्त्रण अङ्गीकार करना योग्य है तब श्रद्धायुक्त निमन्त्रण को अङ्गीकार भी करतेहुये वह ब्राह्मण भोजन करके दक्षिणायुक्त घरों में भी वर्त्तमान होतेहैं ११। १२। १३। १४ जिनलोगोंकी स्त्रियां अतिथि के भोजनकी ऐसी प्रतीक्षा करती हैं जैसे कि खेती करनेवाले परिजन्य मेघकी करतेहैं हे तात प्रातःस्नान करने के समय भोजन पदार्थों के भोजन करनेवाले सावधान ब्रह्मचारी ब्राह्मण १५ त्रेता अग्निको तृप्त करते हैं हे तात गौ सुबर्ण और बस्त्रदान करनेवाले तुझ दाताका स्नान मध्याह्न के समय होय जिससे कि तुझपर इन्द्र प्रसन्नहो और हे युधिष्ठिर तेरा तीसरा स्नान उस बैश्वदेव कर्म्म से संयुक्त होय १६। १७ जिस को देवता पितर और ब्राह्मणों के निमित्त देतेहो हिन्सा न करना और जीवों के लिये बि-भागकी रीति से भागदेना १८ शान्तचित्त धैर्य्य का न त्यागना यह सब तेरे यज्ञ के निमित्त अवभृथ स्नानरूप होते हैं यह तेरा फैलाहुआ यज्ञ जो कि श्रद्धा से पवित्र दक्षिणाका रखनेवाला है १९ और सब यज्ञों से श्रेष्ठ है हे तात वह सदैव वर्त्तमानहो २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेषष्टितमोऽध्यायः६० ॥

इकसठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर ने प्रश्नकिया कि इसलोक में दान और यज्ञ इन दोनों में से कौन

परलोक में अधिक फल देनेवालाहै स्वर्ग में उत्तमफल किसका समझाजाता है और किसकालमें कौनसे ब्राह्मणों के निमित्त किसरीतिसे देनाउचितहै १ हे भरतबंशी मैं इसको मुख्यता समेत जानना चाहता हूं इसहेतु से हे महाज्ञानी मुझ इच्छावान्से दानधर्मों को बर्णनकरिये २ वेदीके बीचमें जो दानकिया वा श्रद्धा और दयासे दानकिया उनमें कौनसा कल्याण करनेवालाहै हे पितामह उस को मुझसे कहिये ३ भीष्मजी बोले कि हे तात क्षत्रिय का जो युद्धादिक भयकारी कर्म सदैव बर्त्तमानहै उस क्षत्रिय धर्म्मका पवित्र करनेवाला यह वैतानिक श्रौतकर्म और दानधर्मही है ४ वह साधू ब्राह्मण पापीराजाओं के दानको नहीं लेते हैं इसनिमित्त राजाको उचितहै कि पूरी दक्षिणावाले यज्ञसे पूजनकरे ५ जो कदाचित् वहलेनेको मन करें तो राजा बड़ीश्रद्धामें नियतहोकर प्रतिदिन दानकरे यह उत्तमकर्म्म पवित्रता का करनेवाला है ६ इसी हेतुसे सावधान व्रत राजा इन वेदज्ञ दयावान् साधू स्वभावसे शान्त तपनिष्ठ उत्तम ब्राह्मणोंको यज्ञ में बुलाकर अनेक द्रव्योंसे तृप्तकरे ७ जो वह ब्राह्मण तेरेदान को नहींलेंगे तो तेरापुण्य भी नहींहोगा तब तुम उत्तम स्वादुयुक्त भोजनकी बस्तु रखनेवाले दक्षिणायुक्त यज्ञोंको साधू ब्राह्मणोंके अर्थ साधनकरो ८ दान कर्मकेद्वारा अपने को यज्ञकरनेवाला मानो अर्थात् यज्ञ भी दानकर्म में बर्त्तमानहै यज्ञकरनेवालोंका पूजनकरोगे तो तुम्हारा भी उस यज्ञ में कुछ भागहोगा ९ बड़े कुटुम्बी सन्तान वाले ब्राह्मणोंको पोषणकरो इसकर्म से वैसाही प्रजाका स्वामीहोता है जैसे कि सन्तानवाला मनुष्यहोताहै १० यह सब सन्तलोग साधूजन धर्मोंकी बड़ीवृद्धि करते हैं और जो बड़े उपकार करनेवाले मनुष्य हैं वह सब धनोंसेही पोषणकरने के योग्यहैं ११ हे युधिष्ठिर तुम ऐश्वर्य्यमान होकर ब्राह्मणों को गो जल भोजन की वस्तु छत्र बस्त्र जूतेके जोड़े धन इन सब बस्तुओं का दानकरो १२ हे भरतबंशी यज्ञ करनेवालोंके निमित्त घृत आदिरस भोजनकी बस्तु घोड़ोंसमेत सवारियां मकानात पलंगआदि सुखदायी पदार्थोंका दानकरो हे भरतबंशी यह गोदान आदि फलके देनेवाले पदार्थ थोड़ेही उपायसे होनेके योग्यहैं १३ निर्दोष और जीविका न होनेसे दुःखी ब्राह्मणोंको जानकर उनको प्रत्यक्ष अथवा गुप्तजीविकाके द्वारा पोषणकरे क्षत्रियलोगों को वह कल्याण राजसूय और अश्वमेध यज्ञोंसे प्राप्तहोने के समान होताहै इसरीति से तुम पापों से छूटकर स्वर्ग

को पावोगे १४ । १५ फिर जो तुम धनागारको धनसे पूर्णकरके प्रजाका पालन करोगे तो उसकर्म से धनोंको और ब्रह्मभावको पावोगे १६ हे भरतवंशी अपनी और दूसरोंकी जीविकाको रक्षाकरो अपने सेवकलोग और प्रजालोगों को भी पुत्रके समान पोषणकरो १७ हे युधिष्ठिर तेरी अप्राप्तबस्तु का मिलना और प्राप्त बस्तुकी रक्षा सदैव ब्राह्मणों के स्वाधीन नियतहो और तेराजीवन उन ब्राह्मणों के निमित्त हुआहै इसीसे उनका सदैव पोषणकरो कभी पोषणसे रहित मतहो जो बड़ाभारी धनका संचय है यह ब्राह्मणका अनर्थ है क्योंकि सदैव धनमेंही प्रवृत्तरहना अत्यन्त अहंकार औरअचेतताको प्राप्तकरताहै १८।१६ निश्चयकरके ब्राह्मणोंके अचेतहोजाने से धर्मका नाशहोताहै और धर्मके नाशहोनेसे जीवों का नाशहोताहै इसमें ज़रासन्देह नहीं है २० जो राजा धनसंचय करनेवाले मनुष्यों को धनदेकर यह आज्ञादेताहै कि यज्ञ के निमित्त अमुकदेश से धनको लावो वह देशभरे को सत्यानाश करताहै उस आज्ञासे उत्पन्नहुये भय से दिये हुये यश धन को लेकर उस कोपसम्बन्धी धनसे २१ जो यज्ञकरे उसके यज्ञ की साधूलोग निन्दाकरते हैं पीड़ासेरहित अच्छे समृद्धिमान जो प्रजाके लोग प्रसन्नतासे देते हैं ऐसे उपायपूर्वक सन्चित धनसे यज्ञकरना योग्यहै जब प्रजाका अनुकूल राजा बुद्धिकेअनुसार चारोंओर से धनको इकट्ठाकरे २२ । २३ तब वह बहुत दक्षिणावाले महायज्ञोंसे पूजनकरे वृद्ध बालक अन्धे और दुःखीलोगोंका धन रक्षाकरने के योग्यहै २४ किसीकी जड़को न उखाड़े और रुदन करनेवाले का धन नहींलेना चाहिये दुःखी और कंगालका लियाहुआ धन देशको और राजलक्ष्मीको नाशकरता है २५ ऐसे सत्पुरुष गृहस्थलोगों के भय और दरिद्र को उत्तमभोगोंके देनेसे दूरकरे जिनके कि बालक सुस्वादु भोजनोंकी बाटदेखतेहों २६ और जो उन भोजनों को बुद्धिके अनुसार भोजन नहींकरें तो इससे अधिक कोईपाप नहीं होताहै जो तेरे देशमें उसप्रकार का ज्ञानी ब्राह्मण क्षुधा से पीड़ाको पावे तब तुम उस महापापके करनेसे भ्रूणहत्याको पावोगे २७ जिस के देशमें ब्राह्मण वा दूसरा कोई मनुष्य भी पीड़ापाताहै उस राजाके जीवनको धिक्कारहै इसपर राजा शिवीका कथनहै २८ कि जिस राजाके देश में सनातन ब्राह्मण क्षुधासे पीड़ाको पाताहै वहदेश राजासमेत वृद्धिको नहींपाताहै किन्तु हानिको पाता है २९ जिसके देशसे रोती पुकारतीहुई वह स्त्रियां चोरोंकी आ-

धिक्यतासे चोरी करीजाती हैं जिनके पति और पुत्रपुकाररहे हैं ऐसाराजा मरा हुआहै जीवता हुआ नहीं है ३० वह प्रजाकेलोग अनेक उपायकरके उसराजा के कुलका नाशकरते हैं जो कि निर्द्दय चोर उपाधियोंसे रक्षा न करनेवाला होताहै और वह राजा प्रजाका स्वामीभी नहीं है ३१ जो यह बचन कहकर कि मैं तुम्हारी रक्षाकरूंगा फिर रक्षाको नहीं करताहै ऐसा राजा सब लोगोंको परस्परमें मिलकर मारडालने के योग्यहै जैसे कि रोगी और बावला कुत्ता मारने के योग्य होताहै ३२ हे भरतवंशी राजासे अरक्षित प्रजा जो कुछ पापकरती हैं उनके पाप के चतुर्थांशको राजा पाताहै ३३ फिर यहभी कहाहै कि उनके पूरेही पापको राजा पाताहै और आधेको भी पाताहै मनुजी की आज्ञाको सुनकर हमाराभी यही निश्चय मतहै कि वह राजा प्रजाके चौथाई पापको पाताहै ३४ और हे भरतबंशी जो राजासे अच्छी भांतिसे रक्षितहोकर प्रजा शुभकर्मकरती है उसके पुण्यकेभी चौथेभागको राजा पाताहै ३५ हे युधिष्ठिर सबप्रजा तुझ जीवतेहुयेके पास अपना जीवन ऐसे करे जैसे कि जीवलोग बर्षा करनेवाले बादलोंकी सहायतासे और पक्षी बड़े २ वृक्षोंके आश्रयसे अपना निर्वाहकरते हैं ३६ हे शत्रुसंतापी जैसे कि राक्षस कुबेरजी के पास और देवता इन्द्रकेपास अपना निर्वाहकरते हैं उसीप्रकार सजातीलोग और मित्रबर्ग तेरे समीप आश्रितहोकर अपना जीवनकरें ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेएकषष्ठितमोऽध्यायः ६१ ॥

बासठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि (इदंदेयमिदंदेयमिति) अर्थात् यहदेना योग्यहै यहदेना योग्यहै यह जो श्रुति है उसके आदरके लिये राजालोग बहुतदान करनेवाले हैं उनमें से अत्यन्त श्रेष्ठ कौनसा दानहै १ भीष्मजी बोले सबदानों से अधिकतर पृथ्वीका दान कहाजाताहै क्योंकि वह पृथ्वी अचल अविनाशी फल देनेवाली और उत्तम अभीष्ट फलोंकी देनेवाली है २ इसीप्रकार रत्न बस्त्र पशु और चावल जो आदि अन्नकी दाताहै भूमिदान करनेवाला सबजीवों के मध्यमें बहुत वर्ष तक वृद्धि पाताहै ३ इसलोक में जबतक पृथ्वीकी आयुर्दा है तबतक भूमिदान करनेवाला वृद्धिकोपाताहै हे युधिष्ठिर इसलोकमें भूमिदानसे बड़ा कोई भी दान नहीं है ४ हमने सुनाहै कि जिन मनुष्योंने पृथ्वीका थोड़ाभागभी दानकियाहै

उन सबने पूरी भूमिदान का फलपाया वह मनुष्य भूमिको भोगते हैं ५ मनुष्य इसलोक परलोक में अपने कर्मोंसेही अपना निर्वाह करते हैं यह पृथ्वी ऐश्वर्य्यरूप महादेवी है वह दानदेनेवालेको अपना प्याराकरती है ६ हे राजाओंमें बड़े साधु जो राजा इस अविनाशी फलवाली पृथ्वीको दक्षिणामें देताहै वह मनुष्य शरीरको पाकर पृथ्वीका स्वामी होताहै जैसादान होताहै वैसाही भोगहोताहै७ यह धर्मोंमें निश्चयहै युद्धमें शरीरको त्यागे अथवा इस पृथ्वीका दानकरे ८ इस को क्षत्रियों का बड़ाभारी धन कहते हैं दान करीहुई पृथ्वी दाताको पवित्र करती है यह हमने सुनाहै ९ वही पृथ्वी पापकर्मी ब्रह्महत्या करनेवाला मिथ्यावादी पापी राजाको भी पापोंसे उद्धारकरती है वही पापोंसे बचाती है १० साधू लोग पापी राजाओं की पृथ्वी जो माता के समान पवित्र है उसको दान में लेते हैं दूसरे दानको नहींचाहते हैं ११ प्रकटहै कि देवी पृथ्वीका दानकरना अथवा दान लेना बहुत श्रेष्ठ और सबका प्रियहै और यह सनातन धर्महै इसी हेतुसे इसका प्रथमनाम प्रियदत्ताहै १२ जो राजा इसपृथ्वीको वेद शास्त्रज्ञ ब्राह्मणको दानकरें वही इस पृथ्वी पर सबका प्रिय वा यज्ञादिक कर्म्म है यहां से परलोक में जाकर राज्यको पाताहै १३ फिर इसजन्मको पाकर निस्सन्देह राजाकेसमान होताहै इस कारण राजा पृथ्वीको प्राप्तकरके वेदपाठी शास्त्रज्ञ ब्राह्मणके निमित्त दानकरें१४ और जोपृथ्वीका स्वामीनहीं है उसको पृथ्वीपर किसीदशामेंभी अपना अधिकार न करना चाहिये और जो दानपात्र नहीं है उसको लेनीभी न चाहिये और जिसको दाननहीं दिया वह उसमें निवास न करें १५ जो कोई मनुष्य पृथ्वीको चाहें वह निस्सन्देह इसरीति से कामकरें जो मनुष्य साधूकी पृथ्वीको लेताहै वह पृथ्वी को नहीं पाताहै १६ साधूके लिये पृथ्वीको देकर उत्तम पृथ्वीको पाताहै वह धर्मात्मा इसलोक परलोक दोनोंलोकों में बड़ी शुभकीर्त्तिको पाताहै १७ हे राजा वेदपाठी ब्राह्मण सदैव जिस साधूकी पृथ्वीको कहते हैं उसकेशत्रु उसकी पृथ्वी की प्रशंसा नहीं करते हैं १८ आजीविकासे दुःखी मनुष्य जो कुछ पाप करता है वह गोचर्म्ममात्र पृथ्वी के दानसेही पवित्र होताहै जिस पृथ्वी में एक बैल समेत सौ गऊ आनन्द करती हैं १९ उसको गोचर्म्ममात्र कहते हैं जो राजा करने और न करने के योग्य कर्म्मों के करनेवाले और भयके उत्पन्न करनेवाले कर्म्मको करते हैं उनके लिये भूमिदान अनूप और पवित्र कहना योग्यहै २०

जो मनुष्य अश्वमेधयज्ञसे पूजनकरे अथवा साधूको पृथ्वीका दानकरे इनदोनों कर्मोंको प्राचीन धर्म्मज्ञलोग समान कहते हैं २१ नानाप्रकार के शुभकर्म्मों को करके और भूमिकाभी दानकरे तो पण्डितलोग उस दानके निश्चयपानेको कहते हैं २२ वड़ाज्ञानी पुरुष पृथ्वीका दान करताहुआ सोना चांदी वस्तु रत्नों समेत वहुतसाधन देताहै २३ तप यज्ञ शास्त्र प्रसन्नचित्त निर्लोभ सत्यवोलना गुरू और देवताओंकी पूजा इत्यादिका करना यह सब गुण भूमिदान करनेवालोंमें नियत होते हैं २४ स्वामीकी शुभचिन्तकता में प्रवृत्त शरीरसे मोह न करनेवाले युद्धमें घायल ब्रह्मलोक में नियत सिद्धलोग भूमिदान करनेवालों को उल्लंघन नहीं करते हैं अर्थात् भूमिदान करनेवाला उनसे अधिकहै २५ जैसे कि माता अपने दूधसे सदैव अपने वच्चेको पोषण करती है इसीप्रकार पृथ्वी सब रसों से भूमिदाता पर अनुग्रह करती है २६ मृत्युकिंकरनाम दण्ड अँधेरा वड़ाभयकारी अग्नि और महाअसह्य फांसी यह सव भूमिदान करनेवाले के समीपभी नहीं आसक्ते २७ जो शान्तवुद्धी मनुष्य पृथ्वीको दानकरताहै वह पितृलोक में नियतहोकर पितरोंको और देवलोकवासी देवताओं को अच्छीरीति से तृप्तकरताहै २८ जो ब्राह्मण दुर्व्वलता और कृशाङ्गता से मृतककी समान आजीविका के विषय में शोकग्रस्त और पीड़ामानहैं उन ब्राह्मणोंके निमित्त जो मनुष्य उनके जीवनके निर्वाह के समान पृथ्वीको दानकर सत्री होताहै (जहां वहुतसे होताहोय और वहुत जीव वुलायेजायँ और वहुतों को दियाजाताहै उसको सत्र कहते हैं और जिसका वह सत्रहै उसको सत्रीकहते हैं)२९ हे महाभाग जैसे प्रसन्नतासे गौ दूधको डालतीहुई वछड़ेकीओरको दौड़ती है उसी दशावाली भूमिदान करने वालेकी पृथ्वी भी होती है ३० जोतीहुई वीज वोईहुई फालसे समकरीहुई पृथ्वीको और वड़े सुन्दर विस्तार दैर्घ्ययुक्त स्थानको जो दानकरताहै वह दान उसी प्रकारकी अभीष्ट वस्तुओंका देनेवाला होताहै ३१ जो ब्राह्मण यज्ञकरना करानाआदि जीविका रखनेवाला अग्निहोत्री और पवित्र व्रतवालाहै उस ब्राह्मणको पृथ्वीदान करके धर्म्म लोपहोने के कारण मनुष्य परमगति को नहीं पाताहै ३२ जैसे कि चन्द्रमाकी कलाओंकी प्रतिदिन वृद्धि होती है उसीप्रकार पृथ्वीका कियाहुआ दान हरएक ऋतुके अन्नउपजनेमें वृद्धिको पाताहै ३३ प्राचीन वृत्तान्तके ज्ञाता लोग पृथ्वीकी कहीहुई इसकथाको कहते हैं जिस कथाको सुनकर परशुरामजी

ने इस पृथ्वीको कश्यपजी के अर्थ दानकिया ३४ अर्थात् पृथ्वी ने कहाहै कि मुझको दानकरो मुझको प्राप्तकरो मुझको दानकरके फिर तुम मुझीको पावोगे वह दानकियाहुआ यहां वहां दोनोंलोकों में फिर उत्पन्नहोताहै ३५ जो ब्राह्मण वेदके समान इस कथाको जानताहै वह कियेहुये श्राद्ध में ब्रह्मभाव को पाताहै मारणआदि प्रयोगकर्म्मों से उत्पन्न कृत्याहै अथवा स्त्री प्रसंगादिकका जिनको मिथ्यादोष लगायागयाहै उनके मृत्यु चिह्नका दूरकरनेवाला बड़ा प्रायश्चित्तरूप यह भूमिदानहै जैसे पृथ्वीको दानकरके आगे और पीछेके अपनेदश२ पुरुषाओं को पवित्रकरताहै ३६।३७ वैसेही जो मनुष्य इस वेदबचनको जानताहै वहभी पवित्रकरताहै यह वैश्वानरी पृथ्वी सबजीवमात्रोंकी उत्पत्ति स्थानमानी है ३८ राजा को राज्याभिषेक कराके यही शास्त्र सुनाना उचितहै जिससे कि इसको सुनकर पृथ्वीको दानकरे और साधूसे पृथ्वी कभी नले ३९ यही निश्चय और निस्सन्देह ब्राह्मण और क्षत्रियका मुख्य और पूरा प्रयोजनहै धर्म में कुशल राजाभी प्रजा के ऐश्वर्य्यका प्रथम चिह्नहै ४० फिर जिन प्रजालोगोंका राजाधर्मका न जाननेवाला और न परलोक का माननेवाला होताहै वह प्रजा न सुख पूर्बक सोती है औरन आनन्दसे जागती है न सुखको पाती है ४१ उस राजाके निकृष्ट कर्मों से मनुष्य असह्य दुःख के कारण से ब्याकुल होते हैं और उसके उस देशमें अभीष्टोंकी प्राप्ती की आधिक्यता प्रवेश नहीं करती है ४२ फिर जिन्हों का राजा बुद्धिमान् और धर्मकी प्रकृति रखनेवाला होताहै वह प्रजालोग सुखपूर्बक जगतेहैं और अत्यन्त सुखसे सोते हैं ४३ उस राजाके उत्तम शुभकर्मों से सुखीहुये मनुष्य अभीष्टोंकी प्राप्ती और बस्तुओं की रक्षा जलकीबर्षा यह सब अपने कर्मों से बड़ी वृद्धिको पाते हैं ४४ जो पृथ्वीको दान करताहै वह कुलीनहै पुरुषहै सब का प्रिय बन्धुहै और पुण्यका करनेवाला होकर वही शूरकहाताहै ४५ जो मनुष्य धन समेत पृथ्वीको वेद शास्त्रज्ञ ब्राह्मण के अर्थ दान करते हैं वह इस पृथ्वी पर अपने तेजसे सूर्य्य के समान प्रकाशमान होते हैं ४६ जैसे कि पृथ्वीपर बोये हुये बीज उपजते हैं उसीप्रकार भूमिदानसे प्राप्तहुये अभीष्ट अच्छेप्रकारसे प्रकट होते हैं ४७ सूर्य्य चन्द्रमा अग्नि बरुण ब्रह्मा बिष्णु और भगवान् शिवजी भूमिदान करनेवाले मनुष्यपर प्रसन्न होते हैं ४८ सब मनुष्य पृथ्वीपरही उत्पन्नहोते हैं और पृथ्वीपरही मरते हैं और यह जो अंडज स्वेदज जरायुज उद्भिज चारप्र-

कारके जीव होते हैं वह पृथ्वीके गुणरूपहैं ४६ हे राजा यह पृथ्वी जगत्की माता और पितारूप है इसके समान दूसरे जल अग्नि वायु आकाश यह चारों तत्त्व नहीं हैं ५० हे युधिष्ठिर इसस्थान पर एक प्राचीन इतिहास को कहताहूं जिसमें वृहस्पति और इन्द्रका प्रश्नोत्तर रूप संबादहै ५१ इन्द्र ने दक्षिणायुक्त शत महायज्ञोंसे पूजन करके बक्ताओं में श्रेष्ठ वृहस्पतिजी से पूछा ५२ कि हे भगवन् किस दानसे स्वर्गमें पहुंचनेवाला मनुष्य सुखसे वृद्धिको पाताहै जो अविनाशी और बहुत बड़ादानहै हे महाबक्ताओं में श्रेष्ठ उसको कहो ५३ भीष्मजीबोले किइसके पीछे जब इन्द्रने ऐसे बचनकहे उनको सुनकर वृहस्पतिजीने इन्द्रको उत्तरदिया ५४ कि हे वृत्रासुरके मारनेवाले बड़े बुद्धिमान् देवराज सुबर्णदान गोदान और भूमिदान इनदानोंसे बड़ा कोई दाननहीं है ५५ जैसा कि ऋषियोंने कहाहै उसी को मैं भी उत्तम मानताहूं ५६ हे देवताओं में श्रेष्ठ जो युद्धाभिलाषी युद्धमें मरे हुये शूरवीर स्वर्गको गये वह सब भूमिदान करनेवाले मनुष्य को उल्लंघन नहीं करसक्तेहैं ५७ स्वामीके शुभ चिन्तकतामें प्रवृत्त शरीर से प्रीतिको त्यागनेवाले युद्धमें मरनेवाले ब्रह्मलोकमें बर्त्तमान योग पुरुषभी भूमिदान करनेवाले मनुष्य को उल्लंघन नहीं करसक्ते हैं ५८ जो पुरुष इसलोकमें भूमिदान करताहै वह अपने पांच पुरुष पहले और छःपुरुष उत्तरोत्तर होनेवाले इनग्यारह पुरुषोंको तारताहै ५६ हे इन्द्र जो मनुष्य रत्नोंसमेत पृथ्वीको दानकरताहै वह सब पापोंसे छूट कर स्वर्गलोक में प्रतिष्ठा को पाताहै ६० हे राजा सब प्रयोजन के गुणों समेत वृद्धिमान पृथ्वीकादान करनेवाला राजा राजाधिराज होताहै इस कारण से यह दान उत्तम तरहै ६१ हे इन्द्र जब मनुष्य सबप्रयोजनकी बस्तुओं से युक्त काश्यपी नाम पृथ्वी को दान करता है तब सब जीवधारी मानते हैं कि यह हमको दान करताहै ६२ सब अभीष्ट बस्तुओं की देनेवाली सब अभीष्ट बस्तुओं से युक्त पृथ्वी को जो दान करते हैं हे इन्द्र वह मनुष्य स्वर्गको जाते हैं ६३ हे देवेन्द्र इसलोक में भूमिदान करनेवाले मनुष्यको वह नदियां तृप्तकरती हैं जो कि जल घृत दूध दही और सहतकी बहनेवाली हैं ६४ भूमिदानकेद्वारा राजा सब पापोंसे छूटता है इस भूमिदान से अधिक कोई दान नहीं है ६५ जो राजाशस्त्र बलसे बिजय करीहुई चारों समुद्रपर्य्यन्त पृथ्वीको दानकरताहै वह इस लोकमें तब तक रहता है जब तक कि यह पृथ्वी नियत रहती है ६६ हे इन्द्र जो राजा इसपवित्र और

धन रसकी धारण करनेवाली पृथ्वीको दान करताहै उसके भूमिदान के गुणों से प्राप्तहुये लोक नाशको नहीं पाते हैं ६७ हे इन्द्र इसलोकमें बड़े ऐश्वर्य्य और सुखके चाहनेवाले राजाको सदैव बुद्धिकेअनुसार पात्रकेलिये भूमिकादान करना योग्य है ६८ मनुष्य पापको भी करके ब्राह्मण को भूमिदान देकर उस पाप को ऐसे छोड़ देताहै जैसे कि पुरानी कांचली को सर्प त्याग करदेताहै ६९ हे इन्द्र जो मनुष्य भूमिदान करताहै ७० वह समुद्र नदी पर्बत वन और बाग बगीचों आदिको भी दानकरताहै भूमिदान करनेवाला तड़ाग कूपके समीपी पौशाला पशुओं की प्याऊ नदी सरोवर अशेष रस और घृतादि को दान करता है ७१ भूमिदान करनेवाला पराक्रमी पुरुष बीज फूल फलोंसेयुक्त वृक्ष बन पहाड़ी पृथ्वी और पहाड़ोंको भी दान करताहै ७२ पूर्ण दक्षिणावाले अग्निष्ठोम आदि यज्ञों से पूजन करके वैसे फलको नहीं पाताहै जैसा कि भूमिदान करनेसे फल पाता है ७३ भूमिदान करनेवाला दश आगे पीछे के पुरुषों को तारताहै और दान करनेवाले को निषेध करनेवाला आगे पीछे के दशपुरुषों को नरकमें डालताहै और जो पूर्व्वदान कीहुई पृथ्वीको जप्त करता है वह घोरनरक में पड़ता है ७४ और जो प्रतिज्ञा करके फिर नहीं देताहै और जो देकर फिर लेलेताहै वह बरुण के पाशसे बन्धकर नरकमें जाकर बड़े दुःखों को पाताहै ७५ जो मनुष्य अग्नि स्थापन करनेवाले सदैव यज्ञ करनेवाले थोड़ी जीविका रखनेवाले अतिथि प्रिय उत्तम ब्राह्मण की सेवा करते हैं वह यमराजकेपास कभी नहीं जाते ७६ हे इन्द्र राजाको सदैव ब्राह्मणों के ऋणसे उऋणहोना चाहिये और क्षत्रियआदि अन्य बर्णों में जो दुर्बल और पराक्रमहीनहैं उनका भी पोषणकरे ७७ हे देवराज दूसरे की दानकीहुई पृथ्वी को जप्त नहीं करे हे देवताओं में श्रेष्ठ थोड़ी जीविका रखनेवाले ब्राह्मण की पृथ्वी को कभी न लेवे ७८ उनदुखी पीड़ित ब्राह्मणों का क्षेत्र जप्तकरने से उनके जो अश्रुपात गिरतेहैं उनसे उस जप्तकरनेवाले के तीन पुस्त नरकमें पड़ते हैं ७९ हे सहस्राक्ष इन्द्र जो मनुष्य देशसे निकालेहुये राजा को फिर राजसिंहासनपर बैठाताहै उसका निवासभी स्वर्ग में होताहै और पृथ्वी पर प्रतिष्ठा पाकर स्वर्गमें भी प्रतिष्ठाको पाताहै ८० जो पुरुष इक्षुदण्डकी खेती की भूमि जो गेहूं आदिकी खेती गौ और अश्वकी सवारी अथवा अपने भुजबलके प्रतापसे उत्पन्न करीहुई ८१ और सुवर्णादिकी आकरोंसेयुक्त रत्नों के आ-

भूषणों समेत पृथ्वीको दानकरताहै वह अविनाशी लोकोंको प्राप्त करताहै उस का वह भूमिही यज्ञहै ८२ जो मनुष्य भूमिदान करताहै वह सब पापोंसे औ रजोगुण से पृथक् होकर श्रेष्ठ जनोंका प्यारा होके लोकोंमें सत्पुरुषों से प्रतिष्ठा पाता है ८३ हे इन्द्र जैसे कि जलमें गिरीहुई तेलकी बूंद फैलजाती है उसीप्रकार किया हुआ भूमिका दान प्रत्येक खेतियों पर वृद्धिको पाताहै ८४ और युद्धमें शूरबीरता से शोभा पानेवाले जो राजालोग युद्धके मुखपर सम्मुख होकर मरते हैं वह ब्रह्मलोकको जाते हैं ८५ हे देवेन्द्र स्वर्ग में नृत्य गान में पूर्ण दिव्यमालाओं से अलंकृत स्त्रियां भूमिदान करनेवाले के पास वर्त्तमान होती हैं ८६ जो राजा इस लोकमें अच्छीरीति से बुद्धि के अनुसार पृथ्वीको ब्राह्मण के अर्थ दानकरताहै वह स्वर्ग में देवता गन्धर्वों से सेवित होकर सुखपूर्व्वक बिहार करताहै ८७ हे देवेन्द्र दिव्यमालाओं से भूषित सौ अप्सरा भूमिदान करनेवाले के पास वर्त्तमान रहती हैं ८८ पुष्प शङ्ख उत्तम आसन छत्र श्रेष्ठ घोड़े पालकी आदि यह सब भूमिदान करनेवाले मनुष्य के समीप नियतहोते हैं ८९ भूमिके दानकरने से पुष्पों के समूह सुवर्ण वह शासन जिसको सब लोग सदैव करें जयशब्द पूर्व्वक सबप्रकार के धन प्राप्त होतेहैं ९० हे इन्द्र भूमिदान का फल स्वर्ग पवित्र बस्तु सुवर्ण पुष्प औषधी कुश कांचन शाड्वल आदि होते हैं ९१ भूमिदानकरनेवाला अमृतकी पृथ्वी को पाताहै भूमि के समान कोई दान नहीं है माता के समान कोईगुरू नहीं है सत्यता के समान कोई धर्म्मनहीं है दान के समान धनागार अर्थात् खजाना नहीं है ९२ तव तो इन्द्रने बृहस्पतिजीसे ऐसे २ वचनों को सुनकर धन रत्नोंसेपूर्ण इसपृथ्वीको बृहस्पतिजी केअर्थ दानकिया ९३ जो मनुष्य भूमिदान के इस माहात्म्य को श्राद्धमें सुनावे उसका वह श्राद्ध राक्षस और असुरों का भागनहीं होता है ९४ और पितरों को दियाहुआ निस्सन्देह अक्षय होताहै इसीहेतुसे ज्ञानीमनुष्य श्राद्धमें भोजन करनेवाले ब्राह्मणोंको यह माहात्म्य सुनावें ९५ हे निष्पाप भरतर्षभ सब दानों में श्रेष्ठ यह दान मैंने तुझ से कहा अब क्या सुनना चाहताहै ९६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिइन्द्रबृहस्पतिसंवादेद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे भरतवंशियों में बड़े साधु इसलोक में दानोत्सुक राजा बड़े गुणवान् ब्राह्मणके अर्त्थ कौन २ से दानोंको करे १ हे महाबाहो बहब्राह्मण कौन दान से शीघ्रप्रसन्न होते हैं और प्रसन्नहोकर क्या उपदेश करते हैं इस पुण्यसे उत्पन्न होनेवाले बड़ेउत्तम फलको आप मुझसे वर्णनकीजिये २ और हे राजा पितामह दियाहुआ दान इसलोक और परलोकमें किसफलका देनेवालाहै इस को भी ब्यौरे समेत सुननेकी मेरी इच्छाहै आप कृपाकरके कहिये ३ भीष्मजी बोले कि पूर्वसमयमें देवताके समान दर्शनवाले नारदजी से भी यही प्रयोजन मैंने पूछाथा तब उन्होंने जो बचनकहा उसको मैं तुमको सुनाताहूं ४ नारदजी बोले कि देवता और ऋषियोंके समूह तो अन्नकीही प्रशंसा करते हैं और लोकयात्रा अर्थात् संसारी प्रबन्ध और संज्ञा अर्थात् चैतन्यता अन्नमें नियतहैं ५ अन्नके समान दान न हुआहै और न होगा इसी हेतु से मनुष्य अधिकता से अन्नकाही दानकरना चाहते हैं ६ इसलोक में अन्नही बलपुरुषार्थ का देनेवाला है और प्राण भी अन्न में नियतहैं हे प्रभु अन्नसेही सबविश्व धारण कियाजाता है ७ इसलोकमें बालबच्चेवाले कुटुम्बी संन्यासी और तपस्वी अन्नसेही जीवते हैं अन्नसेही प्राणभी उत्पन्न होते हैं यह प्रत्यक्षहै इसमें किसीप्रकारका सन्देह नहीं है ८ अपना ऐश्वर्य चाहनेवाले को पीड़ामान बालबच्चेवालों और महात्मा भिक्षुकब्राह्मणके निमित्त अन्नदेना उचितहै ९ जो पुरुष याचना करनेवाले पंडित ब्राह्मण को अन्नकादान करता है वह परलोक संबंधी उत्तम खजाने को संचय करताहै १० ऐश्वर्य्य चाहनेवाला कुटुम्बी मनुष्य अपनेघरमें आनेवाले सम्मुख वर्त्तमान पूजनके योग्य वृद्धको और मार्ग में वर्त्तमान थकेहुये ब्राह्मणको पूजन करे ११ हे राजा उठेहुये क्रोधको त्यागकरके प्रसन्नचित्त ईर्षा से रहितहोकर अन्नदान करनेवाला मनुष्य उस सुखको पाताहै जो कि इसलोक परलोक दोनों लोकों में है १२ सम्मुख आनेवाले याचकको निरादर न करे और कठोरबचन तो कभी न कहै चाण्डाल, कुत्तेका भी दियाहुआ नाश नहीं होताहै १३ जो मनुष्य उसपुरुषको जोकि मार्ग में बर्त्तमान महापीड़ित जिसको पूर्व्व कभी न देखाहो दुर्गंधादि से रहित शुद्ध अन्नको देताहै वह बड़े पुण्यकाभागी होताहै १४ हे

राजा जो मनुष्य भोजनादि को बस्तुके द्वारा पितृदेवता ऋषि ब्राह्मण और अतिथियों को तृप्तकरता है उसको पुण्यका बड़ाभारी फल होताहै १५ जो महा पातक करनेवाला भी पुरुष याचक को मुख्यकर ब्राह्मण के अर्थ अन्नको देताहै वह पापकर्म से मोहको नहीं पाताहै १६ ब्राह्मणोंको अन्नदान देना बड़ा अविनाशी है शूद्रको देना बड़ा फलदायीहै शूद्रके देने से ब्राह्मणको अन्नदेना अधिक फलदायकहै १७ किसी अभ्यागत से गोत्र चरण वेदपाठ और देशको न पूछे भिक्षा मांगनेवाले ब्राह्मणको और याचना करनेवाले संन्यासी के अर्थ इस लोक में मनुष्यों को अन्नदेना उचितहै १८ अन्नदान करनेवाले राजा के सब मनोरथों को देनेवाले अन्नके वृक्ष निस्सन्देह इसलोक और परलोक में उत्पन्न होते हैं १९ पितरलोग आशा कियाकरते हैं कि हमारापुत्र पौत्रादि कोईभी अन्नदान करेगा इसकी ऐसीबाट देखा करते हैं जैसे कि किसानलोग उत्तम बर्षा करनेवाले बादलकी बाट देखते हैं २० ब्राह्मणही बड़ा प्रत्यक्ष तेजहै जब कि वह आप मांगताहै फलके चाहनेवाले उसकी इच्छाके फलको देकर पुण्यको प्राप्त करें २१ ब्राह्मण सब जीवोंका अतिथि होकर सबसे उत्तम भोजन करनेवालाहै भिक्षा करनेवाले ब्राह्मण जिसके घरमें सदैव आते हैं २२ और सत्कारयुक्त होकर उसके घरसे जाते हैं वह घर अत्यन्त वृद्धिको पाताहै हे भरतबंशी वह दाता शरीर त्यागने के पीछे बड़ेप्रारब्धी घराने में जन्मको पाताहै इसलोकमें अन्नदान करनेवाला पुरुष अत्यन्त उत्तमस्थानको पाताहै और जो ब्राह्मणको सदैव मिष्ठ भोजनोंको देताहै वह बड़े सत्कारपूर्वक स्वर्ग में बासकरताहै २३।२४ अन्न मनुष्यों के प्राणहैं सब अन्नमयहै अन्नदान करनेवाला पशुओंका स्वामी सन्तानयुक्त धनी और संसारी सुखों से पूर्ण रहताहै २५ और बड़ाबली और उदारचित्त होताहै हे राजा लोकमें अन्नदान करनेवाला पुरुष प्राणोंका देनेवालाहै और वह सर्वदान देनेवालाभी कहाजाताहै २६ अतिथि ब्राह्मणकेनिमित्त बुद्धिकेअनुसार अन्नको देकर अन्नदान करनेवाला महासुखों को पाता है और देवताओं से भी पूजित होताहै २७ हे युधिष्ठिर ब्राह्मण बड़ा महद्भूत और क्षेत्ररूपहै उस ब्राह्मण में जो बीज उपजता है वह बड़े पवित्रफल का देनेवाला है २८ अन्नकादान नेत्रों के सम्मुखही दाता और भोक्ताकी प्रीतिका उत्पन्न करनेवाला होता है और अन्य सबप्रकारके दान दृष्टि से गुप्तफल के देनेवाले हैं २९ हे भरतवंशी अन्नसेही स-

न्तानको उत्पन्नकरते हैं और अन्नसेही स्त्रियों से भोगादिक होते हैं अन्नसेही धर्म अर्थ होते हैं अन्नहीसे रोगोंका नाशहोताहै ३० पूर्व्वकल्पमें ब्रह्माजीने अन्नको अमृतरूप कहाहै पृथ्वी स्वर्ग आकाश अन्नरूप है और सब संसार भी अन्नमें नियतहै ३१ अन्नके नाशहोजानेपर शरीर में पंचतत्त्व और पंचप्राण पृथक् २ होजाते हैं इसलोकमें अन्न न होनेसे पराक्रमीका पराक्रमभी नष्टहोजाताहै ३२ हे नरोत्तम इसलोकमें अन्नके बिना व्रत विवाहादिक और यज्ञभी बंद होजाते हैं और वेदभी गुप्त होजाते हैं ३३ तीनोंलोकोंमें जो कुछ स्थावर जंगम हैं वह सब अन्नही से नियतहैं इसहेतु से बुद्धिमानों को धर्म्म के अर्थ अन्नकादान करना अवश्य उचितहै ३४ हे राजा अन्नदान करनेवाले मनुष्यका बल तेज यश और शुभकीर्त्ति सदैव तीनोंलोकों में वृद्धिको पाते हैं ३५ अब अन्नके पूर्व्व प्रसंगको कहते हैं हे भरतवंशी प्राणोंकारक्षक वायु बादलों में जाताहै बादल वायुसे प्रेरित होते हैं और बादलों में वर्त्तमान जलको इन्द्रदेवता बरसाते हैं ३६ सूर्य्य अपनी किरणों से पृथ्वी के रसोंको आकर्षण करते हैं और वायु सूर्य्य से उन रसों को धारण करताहै और इन्द्रदेवता उसको बरसाताहै ३७ हे भरतवंशी जब वह जल बादलों से पृथ्वीपर गिरताहै तब धनों से परिपूर्ण पृथ्वी देवी आर्द्र होती है ३८ उसीसे खेतियां उपजती हैं जिससे सब संसार अपना जीवन करताहै फिर उस से मांस मज्जा अस्थि पैदाहोके उन्हींसे वीर्य्य उत्पन्न होताहै ३९ हे राजा उस वीर्य्य से प्राणी उत्पन्नहोते हैं उसी वीर्य्य को सूर्य्य और चन्द्रमा उत्पन्न करते हैं और आपभी रजरूप होजाते हैं ४० । ४१ हे भरतर्षभ जो मनुष्य घरपर आनेवाले याचक के लिये अन्नको देताहै वह जीवमात्र के तेजरूप और प्राणों को देताहै ४२ भीष्मजी बोले हे राजा इसरीति से नारदजी के वचनोंको सुनकर मैंने भी सदैव अन्नदान किया इसी हेतुसे दूसरे के गुणोंमें दोष न लगानेवाले और वस्तु देकर पश्चात्ताप न करनेवाले तुमभी अन्नको दानकरो ४३ हे प्रभु राजा युधिष्ठिर तुम बुद्धिकेअनुसार वेदपाठी पण्डित ब्राह्मणके निमित्त अन्नका दान करके स्वर्गलोकको पाओगे ४४ हे राजा अब तुम अन्नदाताओं के जो लोकहैं उनको सुनो कि उन अन्न देनेवाले महात्माओं के रम्यस्थान स्वर्ग लोक में प्रकाशमानहैं ४५ जिनकारूप नक्षत्रोंपर नियतहै और वह नानाप्रकारके स्तंभों से युक्त चन्द्रमण्डल के समान उज्ज्वल क्षुद्रघंटिकाओं के जालोंसे शोभित ४६

तरुण सूर्य्यकेसमान प्रकाशमान ग्रह और नक्षत्रहैं उनमें सैकड़ों तो सूक्ष्मरूप पृथ्वीपर वर्त्तमान जलके भीतर चेष्टा करनेवाले ४७ बैडूर्य्यमणि और सूर्य्य के सदृश सुवर्ण और चांदीके देदीप्यमान हैं और उनस्थानों में नियत वृक्षभी सब कामनाओं के देनेवाले हैं ४८ बावड़ी बीथी सभा कूप दीर्घिका और जुतीहुई हजारों सवारियां भक्ष्य भोज्यकी वस्तुओं के पर्व्वत वस्त्र भूषणोंसे भरे वर्त्तमानहैं और दूधकी बहनेवाली नदियां और अन्नके पहाड़भी वहाँ वर्त्तमानहैं ४९। ५० श्वेत बादल के समान महल जिनमें सुवर्ण के समान उज्ज्वल पलंग पड़ेहुये हैं उन स्थानों को अन्न के देनेवाले प्राप्त करते हैं इस हेतु से हे युधिष्ठिर तुम भी अन्नदान करनेवाले होजाओ ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेदानधर्मार्थकथनेत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३ ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि मैंने अन्नदानकी बुद्धिवाला आपका बचनसुना अब आप नक्षत्र योगकेदान कल्पको मुझेसमझाइये १ भीष्मजी बोले कि इस स्थान पर एकप्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें श्रीकृष्णजीकी मातादेवकी और नारद महर्षिका प्रश्नोत्तर रूप संवादहै २ देवकीजी ने द्वारकामें आनेवाले देवता और धर्म्म के समान दर्शनवाले नारदजी से यही प्रश्नरूप बचनकहा ३ इसकेपीछे देवर्षि नारदजीने उसप्रश्न करनेवाली देवकी के सम्मुख जो २ वर्णनकिया उसको तुम मुझसे सुनो ४ नारदजी बोले हे महाभाग कृत्तिकानक्षत्रमें घृतसंयुक्त खीरके भोजनों से साधू ब्राह्मणों को अच्छेप्रकार तृप्तकरने से मनुष्य उत्तम लोकोंको पाताहै ५ रोहिणीनक्षत्र में पकायेहुये मृगोंकेमांस और घृतसंयुक्त अन्न से ब्राह्मणों को जो तृप्तकरताहै वह उत्तमोत्तम लोकोंको पाताहै अऋण होने के लिये दूध भोजनकीवस्तु और पीनेकीवस्तु ब्राह्मणको देना योग्यहै ६ जो मनुष्य मृगशिरानक्षत्र में दूधदेनेवाली सवत्सा गौको दानकरताहै वह इसलोकसे सर्वोत्तम स्वर्गलोकको जाताहै ७ निर्जल व्रतकरनेवाला मनुष्य आर्द्रानक्षत्रमें तिलसंयुक्त खिचड़ीका दानकरने से दुर्गमस्थान और खड्गकीधारके समान पर्व्वतों से पार होजाता है ८ हे शोभापानेवाले युधिष्ठिर मनुष्य पुनर्वसुनक्षत्र में पूप और अन्य भोजनकी वस्तुओं के दान करने से बड़ा तेजस्वी और रूपवान् होकर

वहुत अन्नरखनेवाले कुलमें उत्पन्न होताहै ९ पुष्यनक्षत्रमें बनेहुये वा विनावने सुवर्णको दानकरके अप्रकाशित लोकों में चन्द्रमाके समान प्रकाशमान होताहै १० जो मनुष्य श्लेषानक्षत्रमें चांदी और वैलको दानकरता है वह सब भयोंसे रहित जन्मको पाताहै ११ जो मनुष्य मघानक्षत्रमें तिलसे पूर्ण मृत्तिकाके पात्र को दानकरताहै वह इसलोकमें पुत्र और पशुओं से संयुक्त होकर परलोकमें आनन्दकरता है १२ निर्जल व्रतकरनेवाला मनुष्य पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्र में फाणि संयुक्त अर्थात् गोरससेसंयुक्त भक्षणकी वस्तुओं को ब्राह्मणों के अर्थ दानकरता है वह सबका अङ्गीकृतहोताहै १३ उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रमें घृत दूधसमेत षष्टिकोदन नाम वस्तुको बुद्धिकेअनुसार देनेवाला पुरुष स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठाको पाता है १४ उत्तराफाल्गुनीनक्षत्र में मनुष्य जो जो दानदेते हैं वह निश्चय करके बहुत वड़े और अनन्त फलवाले होते हैं १५ निर्जल व्रतकरनेवाला मनुष्य हस्तनक्षत्र में चारहाथियों समेत रथको दानकरने से पवित्र अभीष्ट वस्तुओं से युक्त उत्तम लोकोंको पाताहै १६ हे भरतवंशी चित्रानक्षत्र में वृषभ और सुगन्धियों को जो दानकरते हैं वह अप्सराओंके लोकमें विचरते हैं और नन्दनवनमें भी क्रीड़ाकरते हैं १७ स्वातीनक्षत्र में जो अपने अत्यन्त प्रियधनको दानकरताहै वह पुरुष इसलोकमें वड़ी शुभकीर्त्तिको और परलोकमें शुभलोकोंको पाताहै १८ विशाखा नक्षत्रमें जो पुरुष दूधदेनेवाली गौ और प्रासङ्ग शकटधान्य और वस्त्रोंसे अलंकृत वैलको दानकरताहै १९ वह देवता और पितरों को तृप्तकरताहै और परलोक में अनन्त सुखको भोगता हुआ कठिनता को नहीं पाताहै सिखाने के समय जो वछड़ों के कंधोंपर काष्ठहोताहै उसको प्रासङ्ग कहते हैं २० वह पूर्वोक्त वर्णनके अनुसार वेदपाठी ब्राह्मणको दानकरने से अभीष्ट जीविका को पाताहै और नरकआदि के दुःखोंको भी निश्चयकरके नहीं पाताहै २१ अच्छे प्रकारसे व्रत करनेवाला मनुष्य अनुराधानक्षत्रमें वस्त्र और उत्तम भोजनकी वस्तुओंको दानकरके सौयुगतक स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठाकोपाताहै २२ जो मनुष्य ज्येष्ठानक्षत्रमें मूलसमेत कालशाकको और प्रियधनको वेदपाठी ब्राह्मणों के अर्थ दानकरता है वह अभीष्टगति को पाताहै २३ जो सावधान मनुष्य मूलनक्षत्र में मूलफलों को ब्राह्मणोंके अर्थ दानकरताहै वह पितरोंको तृप्तकरताहै और अभीष्ट गतिको भी पाताहै २४ जो व्रत करनेवाला मनुष्य पूर्व्वाषाढ़नक्षत्र में कुलीन शान्त-

वृत्ती आदिगुणों से युक्त वेदमें पूर्ण ब्राह्मणको दुग्धपात्र अर्थात् दोहनी देताहै २५ वह शरीरत्यागने के पीछे वहुतसे गोधन रखनेवाले कुल में जन्मलेता है सतुआ जलकाभरा पात्र घृत और मिश्रीको उत्तराषाढ़नक्षत्रमें जो पुरुष दान करताहै वह सब अभीष्टोंको प्राप्तकरताहै जो पुरुष धर्म्म में प्रवृत्तहोकर अभिजितनक्षत्र में मधु घृत संयुक्त दूध अच्छेज्ञानी ब्राह्मणोंको दानकरते हैं वे स्वर्गलोक में प्रतिष्ठाको पाते हैं २६।२७ जो पुरुष श्रवणनक्षत्रमें दुशाले और कंवलआदि अथवा रुई से भरेहुये वस्त्रोंको दानकरते हैं वह श्वेतरङ्गके विमानों की सवारी में चढ़कर बहुत वड़े द्वारवाले स्वर्गलोकों को जाते हैं २८ जो सावधान मनुष्य धनिष्ठानक्षत्रमें वैलोंसमेत गाड़ी बहुतसे वस्त्र और धनोंको दानकरताहै वह दूसरे जन्म में शीघ्रही राज्यको पाताहै २९ जो मनुष्य शतभिषानक्षत्र के योग में अगर चन्दनआदि सुगन्ध वस्तुओंको देताहै वह परलोकमें अप्सराओंकेसमूहों को और सनातन गन्धर्वों को प्राप्तहोता है ३० जो पुरुष पूर्वाभाद्रपदनक्षत्र के योगमें राजमांसनाम अन्नको दानकरताहै वह परलोक में सब भोजनकी वस्तु और मेवाआदि पदार्थों के सेवनसे सुखीरहताहै ३१ जो पुरुष उत्तराभाद्रपदनक्षत्रमें और भ्रनाम पशुके मांसका दानकरताहै वह पितरों को तृप्तकरताहै और परलोकमें बड़ेसुखोंको भोगताहै ३२ जो मनुष्य रेवतीनक्षत्रमें कांसेकी दोहिनी पात्रसमेत गौको दानकरताहै वह गौ शरीरत्याग करनेके पीछे अभीष्ट मनोरथों को साथलेकर दाता के समीप नियत होती है ३३ जो राजा अश्विनीनक्षत्र में घोड़ोंसमेत रथको दानकरताहै वह तेजस्वी होकर उस कुलमें जन्मलेता है जो कि हाथी घोड़े और रथों से परिपूर्ण होय ३४ जो पुरुष भरणीनक्षत्र में ज्ञानी ब्राह्मण को दक्षिणा समेत तिलकी गौका दानकरताहै वह परलोक में बहुतसी गौओंको और शुभकीर्त्ति को पाताहै ३५ भीष्मजी बोले कि नारदजी ने देवकी के सम्मुख यह नक्षत्रों के योगमें दानकरना वर्णन किया और देवकी ने उसी दानको पुत्र वधुओं से वर्णनकिया ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेनक्षत्रयोगदानवर्णनेचतुःषष्टितमोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि जो पुरुष सुवर्णका दानकरते हैं वह सबप्रकारके चित्तके

अभीष्टों को देते हैं यह ब्रह्माके पुत्र अत्रिऋषि ने कहाहै १ वह सुवर्णका दान महापवित्र आयुका करनेवाला और पितरों के स्वर्गका अविनाशी करनेवाला है यह महाराज हरिश्चन्द्रका कथनहै २ दानों में जलदान श्रेष्ठहै यह मनुजी ने कहाहै इसी हेतुसे कूप वापी और तड़ागोंको बनवावे ३ जलसे पूर्ण सदैवजारी रहनेवाला कूप मनुष्यके आधेपापको दूरकरताहै ४ जिसके खुदायेहुये तड़ागमें गौ ब्राह्मण और साधूलोग सदैव जलको पीते हैं वह सबवंशको उद्धार करता है ५ ग्रीष्मऋतुमें अर्थात् ज्येष्ठ आषाढ़में जिसका जल अप्रतिबन्ध नियत होताहै वह कभी आपत्ति के दुर्गम कठिन स्थानोंको नहीं पाताहै ६ घृतदान करने से भगवान् वृहस्पति पूषा भग अश्विनीकुमार और अग्नि इन सब देवताओं की प्रसन्नता होती है ७ यह घृत उत्तम औषधी है यह यज्ञों में उत्तमहै यह रसों में श्रेष्ठहै यह फलों में उत्तमहै ८ पवित्र ज्ञानवान् मनुष्य शुभकीर्त्ति के सदैव चाहनेवाले शरीरसे नीरोग होकर ब्राह्मणों के अर्थ घृतदान करें ९ जो मनुष्य आश्विन अर्थात् क्वारमहीने में वेदपाठी पण्डित ब्राह्मणों को घृतका दानदेताहै उससे प्रसन्न होनेवाले अश्विनीकुमार देवता उसको स्वरूपता देते हैं १० जो मनुष्य घृतसंयुक्त खीरको ब्राह्मणों के अर्थ देताहै उसके घरको राक्षसलोग कभी विजय नहीं करते हैं ११ जो मनुष्य करकान्य अर्थात् मृत्तिकाकी सुराही जल पूरित दान करताहै वह तृषासे कभी नहीं मरताहै और घरके सब पदार्थों से भरा पूरा रहकर दुःखको नहीं पाताहै १२ जो पुरुष बड़ी सावधानी और श्रद्धासे युक्त होकर सदैव उत्तम ब्राह्मणों को जलका दान करताहै वह उनके स्नानादि के छठे भागको पाताहै १३ हे राजेन्द्र जो मनुष्य यज्ञके साधन अथवा तापने के अर्थ लकड़ियां उन ब्राह्मणोंको जोकि शान्तचित्त होकर गुरुपूजनआदि गुणों से युक्तहैं सदैव दान करताहै १४ उसके अभीष्ट सदैव प्राप्तहोते हैं और नाना प्रकारके उसके कर्म पूर्णताको पाते हैं और वह शत्रुओं से पृथक् शरीर से प्रकाशमान होताहै १५ और भगवान् अग्निदेवता भी उसपर सदैव प्रसन्न होते हैं और गौ आदि पशु उसको त्याग नहीं करते हैं और युद्ध में भी विजयको पाताहै १६ जो मनुष्य छत्र दान करताहै वह लक्ष्मी और विषयोंको पाताहै नेत्ररोगों से रहित होकर भोजन आदि के सुखोंको भोगताहै १७ जो मनुष्य ग्रीष्मऋतुमें वा वर्षा में छत्रदान करताहै उसके चित्त में कभी शोक उत्पन्न नहीं

होताहै १८ हे राजा महाभाग शांडिल्यऋषि ने ऐसा कहाहै कि सब दानों में शकटका दान बड़ाहै उसको जो मनुष्य करताहै वह शीघ्रही कठिन आपत्तियों से छूटजाताहै १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेपंचषष्टितमोऽध्यायः ६५ ॥

छियासठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले जो मनुष्य उस ब्राह्मण के अर्थ जिसके पैर सूर्य्य के ताप से संतप्त धूली से तपतेहोयँ उपानह अर्थात् जूते का जोड़ा देताहै हे पितामह उसके फलको आप मुझसे कहिये १ भीष्मजी बोले कि जो सावधान मनुष्य ब्राह्मण को जूतेका जोड़ा देताहै वह सब प्रकारके कांटों से बचताहै और आपत्तियों से भी बचा रहताहै २ हे युधिष्ठिर वह मनुष्य शत्रुओं के ऊपर नियत होताहै और खच्चरों से युक्त चांदी सुवर्ण से अलंकृत रथ भी उसके समीप नियत होताहै और बैलोंसमेत शकट दानका जो फलहै वह भी उसको मिलताहै ३ । ४ युधिष्ठिरने पूछा कि हे कौरव तिलदान भूमिदान गोदान और अन्नदानमें जो फल कहा है उसको भी आप वर्णन कीजिये ५ भीष्मजी बोले हे कौरवों में बड़े साधु तिल दानका जो फलहै उसको मैं कहताहूं उसको सुनकर न्यायके अनुसार तू कर ६ ब्रह्माजी ने पितरोंका उत्तम भोजन जो तिलहैं उनको उत्पन्न कियाहै इसी हेतुसे तिलदान से पितृपक्ष आनन्दकरताहै ७ जो मनुष्य माघमहीने में ब्राह्मणों को तिलोंका दान करताहै वह सब जीवों से भरापूरा होकर नरकको नहीं देखताहै ८ जो पुरुष तिलों से पितरोंको पूजताहै वह सब यज्ञों से पूजन करताहै श्राद्धमें बिना संकल्पकिये तिलदान न देना चाहिये ६ यह तिल कश्यपमहर्षी के अंगों से उत्पन्नहुये हैं हे समर्थ इसी हेतुसे दानों में तिलों ने दिव्यभावको पायाहै १० वह तिल शरीर में आनन्दपूर्व्वक स्वरूपताको देते हैं और पापों के नाशकरने वाले हैं इसी हेतुसे सबदानों से तिलोंका दान उत्तमहै ११ शास्त्रको स्मरण रखने वाले बुद्धिके स्वामी आपस्तम्भ शङ्ख, लिखित और गौतममहर्षी भी तिलदान करनेकेहीद्वारा स्वर्गको गये १२ सब वेदपाठी ब्राह्मण भूमिदानमें व्रती शास्त्रके नियमों के अनुसार अपनी पत्नियों में भोगकरनेवाले हैं क्योंकि वह तिल घृत के होममें रत ब्राह्मण प्रवृत्ति मार्गों में अच्छीरीति से नियतहैं १३ सब दानों में

तिलकादान बहुत बड़ाहै इसलोक में सब दानोंके मध्यमें तिलकादान अक्षय है १४ पूर्व्वसमय में शत्रुओं के तपानेवाले कुशिकऋषि ने हव्य पदार्थ के न मिलने से तिलोंसेही तीनों अग्नियों में होमकरके उत्तमगति को पायाथा १५ हे कौरवोत्तम इसप्रकार से यह उत्तम तिलदान वर्णन किया इसलोक में जिस बुद्धिकी रीति से तिलोंके विधानका उपदेश कियाजाता है वह बुद्धि मैंने तेरे आगे वर्णनकी १६ हे महाराज इसके पीछे यज्ञकरने के अभिलाषी देवताओं के इस मिलाप को स्वयम्भू ब्रह्माजी के भी साथ जानो १७ हे राजा पृथ्वी के किसी भागमें यज्ञकरने के अभिलाषी देवताओं ने ब्रह्माजी से मिलकर शुभ देशको इस विचारसे मांगा कि हम यज्ञ करेंगे १८ देवताओं ने कहा हे भगवन् आप सब पृथ्वी और स्वर्गोंकेभी स्वामी हैं हम सब देवता आपकी आज्ञासे यज्ञ करेंगे क्योंकि जिसको पृथ्वीकी आज्ञा नहीं दीजाती है वह यज्ञके फलको नहीं भोगताहै आप सब स्थावर जङ्गम जगत्के स्वामी हैं इसहेतुसे आप अच्छेप्रकारसे आज्ञादेने के योग्यहैं ब्रह्माजी बोले हे श्रेष्ठ देवताओ मैं तुम्हारे निमित्त पृथ्वीका एकभाग देताहूं हे काश्यपजी के पुत्रो तुम उसी पृथ्वी के भागवाले देशमें यज्ञ करो १९ देवता बोले हे भगवन् हमारा मनोरथ सिद्धहुआ हम पूर्ण दक्षिणावाले यज्ञों से वहां पूजनकरेंगे जहां कि मुनिलोग हिमालय के समीप जिसदेश को चारोंओर से उपासना करते हैं २० इसके अनन्तर अगस्त्य, कण्व, भृगु, अत्रि, वृषाकपि, असित, देवल यह सब ऋषि देवताओंके यज्ञमें आये २१ इसके पीछे उन श्रेष्ठ देवताओं ने उस अविनाशी परमात्मा यज्ञपुरुषका पूजन किया और नियतसमयके पीछे यज्ञको समाप्त किया २२ फिर यज्ञ करनेवाले उन देवताओं ने पर्व्वतों में श्रेष्ठ हिमालयके समीप कुरुक्षेत्र व गंगाद्वार में भूमिदान को उस यज्ञका छठाभाग विचार किया २३ जो पुरुष पृथ्वीका एक प्रादेशमात्र भागभी दान करता है वह आपत्तियों से पीड़ामान नहीं होताहै और कठिनताओं को नहीं पाताहै २४ शीत उष्ण और वायुके सहनेवाले अच्छेप्रकारसे बनेहुये अलंकृत स्थान और पृथ्वीको दान करनेवाले पुरुष स्वर्गलोक में नियत होकर पुण्यक्षीण होजानेपर भी नहीं गिरते हैं २५ हे राजा वह ज्ञानीमनुष्य भी स्थान पृथ्वीआदि के दानसे प्रसन्नतापूर्व्वक इन्द्रकेसाथ निवास करताहै और स्वर्गमें प्रतिष्ठाको भी पाताहै २६ वेद पढ़ानेवाले के कुलमें उत्पन्न शान्तचित्त वेदपाठी

ब्राह्मण जिसके घरमें आनन्दके साथ तृप्तहोकर निवास करताहै वह पुरुष ब्रह्मलोकको भोगताहै २७ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ साधू इसरीति से शीतबर्षा आदि का सहनेवाला दृढ़स्थान जोकि गौओं के निमित्त बिचार कियाजाय ऐसेस्थान का बनवानेवाला अपने सात कुलोंतकको तारताहै २८ जो मनुष्य क्षेत्रकी भूमि को दान करताहै वह इसलोकमें शुभलक्ष्मी पाताहै और जो रत्न भूमिको दान करताहै वह इसलोकमें अपनेकुल और बंशभरेको वृद्धिकरताहै २६ जो पृथ्वी ऊषर या जलीहुई अथवा श्मशान से संयुक्त वा पापीलोगों से सेवित हो उस भूमिकादान किसी दशामेंभी न करे ३० जो मनुष्य किसीकी पृथ्वी के भागमें पितरोंका श्राद्धकरे अथवा उसी पृथ्वीको पितरोंके निमित्त दानकरे वह भूमिदान और श्राद्धकर्म दोनों निष्फल होते हैं ३१ इसीकारण बुद्धिमान् मनुष्य थोड़ीसी पृथ्वीकोभी मोललेकर दानकरे उस पृथ्वी में पितरोंके अर्थ कियाहुआ पिंडदान सफल और अविनाशी होताहै ३२ बन पर्वत नदी तीर्थ इनका कोई स्वामी नहीं होताहै वहां किसीकाभी अधिकार वा स्वत्व नहीं है ३३ हे राजा यह भूमिदानका फल मैंने वर्णन किया इसके पीछे अब गौके दानको बर्णन करताहूं ३४ जिस हेतुसे कि गौ सब तपस्वियों से भी अधिक हैं इसी निमित्त से उनके साथ नियतहोकर देवता महेश्वरजी ने तपस्याकरी है ३५ यह गौ अमृतसे भरीहुई ब्रह्मलोक में निवास करती हैं जिस परम मोक्षगतिरूप लोकको बड़े २ सिद्ध और महर्षी लोग मनसे चाहते हैं ३६ हे भरतवंशी वह गौ दूध घृत दही गोमयचर्म अस्थि केश और शृंगोंसे सालोक्यरूप मोक्ष करनेवाली हैं ३७ इनको शीतोष्णता नहींहोती यह सदैव कर्म्मोंकी करनेवाली हैं और बर्षाऋतुमें भी इनको खेदनहीं होता ३८ यह गौ परलोकमें ब्राह्मणों के साथ जाती हैं इस हेतुसे उन्नततम स्थान हैं इसी निमित्त ज्ञानीलोग गौ और ब्राह्मणों को महाउत्तम कहते हैं ३६ वह गौ राजा रन्तिदेवके यज्ञमें यज्ञपशुभी कल्पना करीगई हैं हे राजा इसीकारण से गौकेचर्म से चर्मरावती नदी जारीहुई है ४० वह गौयें पशुभावसे छूटकर दानके निमित्त विचारकी गई हैं जो पुरुष इनगौओंको उत्तम ब्राह्मणों को दानकरताहै ४१ वह आपत्तियों में फँसाहुआ भी महाकठिन आपत्तियों से छूटजाता है हजार गौ दानकरनेवाला शरीर त्यागनेके पीछे नरकको नहींजाताहै ४२ हे राजा वह गौ का देनेवाला सर्वत्र बिजयकोही पाताहै देवराज इन्द्रने यह कहाहै कि गौका दूध

अमृतहै ४३ इसीकारण जो पुरुष गौको देताहै वह अमृतका दानकरताहै वेदज्ञ ब्राह्मणों ने उस गौको अग्नियों का अविनाशी हव्य वर्णन किया है ४४ इसी हेतुसे जो मनुष्य गौको देताहै वह होमके योग्य हव्यका दानकरता है निश्चय करके यह गौ मूर्त्तिमान् स्वर्ग है जो पुरुष गौओं के पति बैल को गुणवान् ब्राह्मणको दानकरताहै वह स्वर्गमें प्रतिष्ठा पाताहै ४५ हे भरतर्षभ यह गौ निश्चय करके प्राणियों के प्राणरूपभी कही जाती है इसी हेतुसे जो गौको दान करता है वह प्राणोंका भी दानकरनेवाला है ४६ गौ जीवधारियों की रक्षा स्थानहैं वेदज्ञ लोगोंने ऐसा कहाहै इसीकारण जो मनुष्य गौको दानकरताहै वह रक्षाकेस्थान काभी दानकरनेवालाहै ४७ हे भरतवंशियोंमें श्रेष्ठ यह गौ दुष्ट हिंसाकेलिये कभी न देनीचाहिये जो पुरुष कृषिकर्मी वा गौके बेचनेवाले वा अन्यपशुओंके बेचने वाले अथवा परलोक और ईश्वरके न माननेवाले वा गौसे अपनी जीविका करनेवाले हैं उनको गौदान न करना चाहिये ४८ जो मनुष्य इसप्रकारके पापियों को गौका दानकरताहै वह अविनाशी नरकको पाताहै यह महर्षियों का कथन है ४९ जो गौ दुर्बल बछड़ेसे हीन बंध्या अङ्गहीन और थकीहुई हो उसको ब्राह्मणके अर्थ कभी दान न करे ५० दशहज़ार गौओंका दानकरनेवाला आदमी इन्द्रकेसाथ आनन्द करताहै और लाखों अविनाशी लोकोंको पाताहै ५१ हे भरतवंशी यह गोदान तिलदान और भूमिदान वर्णन किया अब अन्नकेदानका जो फलहै उसको सुनों ५२ हे कुन्तीपुत्र अन्नदानको बड़ादान कहते हैं राजा रन्तिदेव अन्नकेदानसेही स्वर्गकोगया ५३ हे पृथ्वीकेस्वामी राजा युधिष्ठिर जो मनुष्य स्नानकियेहुये क्षुधासे पीड़ित मनुष्यों को अन्नदान करताहै वह ब्रह्मलोकको जाताहै ५४ हे भरतवंशी प्रभु युधिष्ठिर सुवर्ण वस्त्र और अन्यप्रकार के दानोंसे भी वैसा कल्याण नहींहोताहै ५५ जैसा कि अन्नदान करने से मनुष्य को फलहोताहै निश्चयकरके अन्नही मुख्य द्रव्यहै अन्नही उत्तम धन अन्नही से प्राणतेज बल और पराक्रम होताहै ५६ जो समान चित्तरहनेवाला मनुष्य सदा अन्नको दानकरताहै वह कठिनताओं को नहीं पाताहै यह पराशरजीका वचन है ५७ न्यायके अनुसार देवताओं को पूजनकरके अन्नको उनकी भेटकरे और हे राजा मनुष्य जिस भोजनके खानेवाले होते हैं उसी भोजनको उनके देवता भी भोजनकरते हैं ५८ जो पुरुष कार्त्तिकमहीने के शुक्लपक्षमें अन्नदान करताहै

वह बड़ी आपत्तियों से निवृत्तहोता है और मरने के पीछे अत्यन्त पुण्यके फल सुखोंको भोगताहै ५६ । ६० जो सावधान मनुष्य बिना भोजनकिये अतिथिको अन्नदेताहै हे भरतर्षभ वह अन्नदाता ब्रह्मज्ञानियों के लोकोंको पाताहै ६१ अन्न-दान करनेवाला मनुष्य कठिन आपत्तिमें पड़ाहुआ भी उद्धार होजाता है इस लोकमें पापसे निवृत्तहोकर पापकर्मोंको दूरकरताहै ६२ यह अन्नदान तिलदान भूमिदान और गोदानका फल मैंने वर्णनकिया ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेपटषष्ठितमोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे भरतबंशी पितामह आपने जो दान पूर्व कहे वहसुने परन्तु इसलोकमें सबसे उत्तम अन्नदानहै १ हे पितामह इसलोकमें यह जलदान किस रीतिसे बड़े फलका देनेवालाहै इसको मूलसमेत पूरा २ सुनना चाहताहूं २ भीष्मजी बोले हे भरतर्षभ सत्यपराक्रमी युधिष्ठिर यह बहुत उत्तम तैंने पूछा इस को मैं कहताहूं तुम चित्तलगाकर सुनो ३ हे निष्पाप जलदानको आदि लेकर सब दानोंको वर्णनकरताहूं और जल वा अन्नदानको देकर मनुष्य जिस २ फल को पाताहै उसको भी वर्णनकरूंगा ४ अन्नदान से बड़ा कोई दान नहीं है यह मेराचित्त कहताहै क्योंकि अन्नसेही सब प्राणी जीवते हैं ५ इसी हेतुसे इसलोक में और सब लोकों में अन्न उत्तम कहाजाता है अन्नसेही प्राणियों का बल तेज सदैव बढ़ताहै ६ इसी हेतुसे ब्रह्माजीने अन्नदान को श्रेष्ठकहा है हे बड़े बुद्धिमान कुन्तीके पुत्र तुमने यह सावित्री का भी शुभबचन सुना ७ वह अन्नदेव यज्ञ में जिससे और जिस रीतिसे प्रकटहुआ इसलोक में मनुष्य जो अन्नदान देताहै वह प्राणदान देताहै ८ इसलोकमें प्राणदान से अधिक कोईदान नहीं है हे महाबाहु यह तुमने लोमसऋषिका भी बचनसुना ९ हे राजा पूर्वसमय में राजाशिवी ने कपोतके प्राणोंकी रक्षासे जो फल प्राप्तकिया उसीगतिको ब्राह्मणके अर्थ अन्न-दानदेने से पाताहै १० इसीकारणसे प्राणदाता मनुष्य उत्तमगति को पाते हैं यह हमने सुनाहै हे कौरवों में बड़े साधु अन्न भी जलसे उत्पन्नहोताहै जलसे उत्पन्न होनेवाले अन्न के बिना कुछभी नियत नहीं रहता है ११ नक्षत्रगणोंका स्वामी चन्द्रमा भी जलही से उत्पन्न है हे महाराज इसीप्रकार अमृत स्वधा और स्वधा

नाम अमृत १२ अन्न औषधि वीरुध यह सब जलसे उत्पन्नहैं जिनसे कि जीव-धारियों के प्राण प्रकटहोते हैं १३ देवताओंका अन्नअमृतहै नागोंका अन्न स्वधा है और इसीप्रकार पितरोंका भी अन्न स्वधाहै और पशुओंका अन्न वीरुध वर्णन करते हैं १४ ज्ञानीपुरुषोंने अन्नकोही मनुष्योंका प्राणरूप कहाहै हे नरोत्तम वह सबप्रकारके अन्नादिक पदार्थ जलसेही उत्पन्नहोते हैं १५ इसहेतुसे जलदान से अधिक उत्तम दान नहीं है मनुष्यको उचितहै कि सदैव जलकादान करता रहै जो मनुष्य ऐश्वर्य्य को चाहै वह जलदानकरे क्योंकि जलका दानकरना इस लोकमें धन और शुभकीर्त्ति का देनेवालाहोकर आयुका पूर्ण करनेवाला वर्णन कियाजाता है १६ हे कुन्तीके पुत्र जलदान करनेवाला मनुष्य शत्रुओं के ऊपर भी नियत होताहै १७ और सब चित्तके अभीष्टों को पाताहै और सदैव शुभकीर्त्तिको पाकर सब पापों से निवृत्तहोकर मरनेके पीछे अत्यन्त सुखोंको भोगताहै १८ हे बड़े तेजस्वी नरोत्तम युधिष्ठिर जलदान करनेवाला मनुष्य स्वर्गको जाकर अविनाशी लोकोंको पाताहै यह मनुजी का कहाहुआहै १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ ॥

अरसठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे पितामह तिल दीपक अन्न और वस्त्रोंका दान कैसाहै इसको फिर भी आप मुझसे कहिये १ भीष्मजी बोले हे युधिष्ठिर इस स्थानपर उस प्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें एक ब्राह्मण और यमराजका सम्वाद है २ गङ्गा यमुना के मध्यके अन्तर्वेद नाम देशमें यामुन पर्व्वत के नीचे एक ब्राह्मणोंका बड़ा ग्रामथा ३ हे राजा वह ग्राम क्रीड़ाके योग्य पर्णशील नामसे प्रसिद्धथा उसमें बहुतसे बुद्धिमान ब्राह्मण निवास करते थे ४ एक दिन यमराज ने किसी ऐसे पुरुष से जोकि काले वस्त्र रक्त चक्षु खड़ेहुये बाल काकजंघा के समान आंख नाक रखनेवालाथा यह वचनकहा ५ कि तुम इस ब्राह्मणों के ग्राम में जाकर उस ब्राह्मणको लेआओ जिसका कि अगस्त्यगोत्र और शर्मण नाम है ६ वह शान्तचित्ततामें प्रवृत्त महाज्ञानी वेदपढ़ानेवाला विख्यातहै इसके सिवाय उसके धोखे से तुम दूसरे गोत्रवाले को उसके समीपसे न लाना, क्योंकि वह दूसराभी उसीप्रकारका गुणवान् वेदपाठ संस्कार गुरु पूजनादि गुणविशिष्ट

और सन्तानमें भी उस बुद्धिमानके समानहै ७।८ मेरीआज्ञाके अनुसार उसीको लाओ उसका पूजनकरना योग्यहै उस दूतने जाकर उस यमराज की आज्ञाके विपरीत किया ९ अर्थात् जिसको कि यमराजने निषेध कियाथा उसीको शरीर से पृथक् करके लेआया तब पराक्रमी यमराजने उठकर अभ्युत्थान करके १० उस दूतसे कहा कि इनको लेजाओ और उस दूसरे महात्माको लाओ धर्मराज के इसबचन के कहने पर ११ वेदपाठी अनिच्छायुक्त उस ब्राह्मणने धर्म्मराजसे कहा कि हे धर्म्म से च्युत न होनेवाले जो मेरे जीवनका समय कुछ बाकीहोय तबतक यहांही निवासकरूं १२ यमराजने कहा मैं आयुर्दा के समाप्तहुये बिना किसीदशामें भी यहां ठहरनेको समर्थ नहीं हूं मैं केवल धर्मकरनेवाले के धर्मको जानताहूं १३ हे बड़ेतेजस्वी ब्राह्मण तुम अभी अपने घरको जाओ और हे धर्म से न डिगनेवाले अब जो तुम अभीष्टमांगो वह मैं तुमको दूं १४ ब्राह्मणने कहा हे बड़ेसाधु इस संसारमें जिसकर्म्म के करने से बड़ापुण्यहोय उसको मेरे आगे वर्णन कीजिये क्योंकि आप सब त्रिलोकी के प्रमाणरूपहो १५ यमराजने कहा हे ब्रह्मर्षि दानकी उत्तमबुद्धिको तुम मूलसमेत सुनो इसलोकमें तिलदान बड़ा उत्तम पवित्र और अविनाशी है १६ हे श्रेष्ठब्राह्मण तिलोंकादान अच्छेप्रकारसे सामर्थ्य के अनुसार करना चाहिये वह तिल सदैव दानकरने से सब अभीष्ट मनोरथोंको प्राप्तकराते हैं १७ श्राद्धमें तिलोंकी प्रशंसा करते हैं कि निश्चयकरके तिलदान सर्वोत्तमहै शास्त्र में देखेहुये कर्म्म के साथ उन तिलोंको ब्राह्मणों को दानकरो १८ बैशाखशुदी पूर्णमासी के दिन तिलोंकादान ब्राह्मणों को देना योग्यहै तिल भोजनकरने के और मर्द्दनकरने के भी योग्य है १९ जो मनुष्य सर्वात्माभावसे सदैव घरही में अपनीवृद्धि चाहनेवाले हैं उनको उचितहै कि वह निस्सन्देह सदैव जलकादान और पान कियाकरें २० तड़ाग भिरने हुये आदि जलाशयों को जो इसलोकमें खुदवाते हैं यह कर्म इसलोक में महाकठिन और दुष्प्राप्यहै २१ तुमको सदैव जलदान करना उचितहै यह दान महापवित्र और अनूपहै हे ब्राह्मणों में बड़ेसाधु तुमको जलदानके निमित्त सदैव पौशाला बनवाना योग्यहै भोजनकी बस्तुके भोजनकरने पर अवश्य जलदेना योग्यहै २२ भीष्मजी बोले कि इसबचनके कहनेके पीछे वह ब्राह्मण यमदूतों के द्वारा अपने उसी के घरपर पहुँचायागया वहांआकर उसने यमराज की सब शिक्षाओं को

किया २३ तब वह यमदूत उसको घरपर पहुँचाकर शर्मण ब्राह्मणको भी लेकर गया और उसको भी यमराजके सम्मुख वर्त्तमान् किया २४ प्रतापवान् धर्मराज ने उस धर्मज्ञ ब्राह्मणको अभ्युत्थान देकर और उसके कर्मोंको जानकर नियत स्थानके जानेको बिदाकिया २५ और उसको भी वैसेही सब शिक्षाकरी शरीर त्यागने के पीछे फिर जन्मलेकर उसने भी वही सब बातेंकरी जो २ यमराजने कहीथीं २६ इसीप्रकार यमराज पितरों के अभीष्टोंकी इच्छासे दीपकों के दानकी प्रशंसाकरते हैं इसी हेतुसे सदैव दीपदान करनेवाला मनुष्य पितरों को उद्धार करताहै २७ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ साधु समर्थ युधिष्ठिर तुमकोभी सदैव दीप-दान करनाचाहिये दीपदान करने से देवता और पितर नेत्रोंकी दृष्टीको देते हैं २८ हे राजा रत्नदान का बड़ापुण्य कहाहै उन दानसे प्राप्तहुये रत्नोंको ब्राह्मण बेचकर यज्ञकरताहै वह दान निर्भयताका देनेवालाहै २९ जो ब्राह्मण दानलेकर ब्राह्मणों को दानकरता है वह दान देनेवाले और लेनेवाले दोनों मनुष्यों का अविनाशी होताहै ३० जो पुरुष मर्य्यादा में नियतहोकर उस प्रकारके ब्राह्मण को दानदेताहै उन दोनोंकाधर्म अविनाशी है इसको बड़ेधर्मज्ञ मनुजी ने कहा है ३१ केवल अपनी स्त्री से सदैव प्रीतिकरनेवाला मनुष्य वस्त्रों के दानसे सुवर्ण वर्णरूप और पोशाकवाला होताहै यह सुनाजाताहै ३२ हे पुरुषोत्तम वेदके प्र-माण देखने से गौ सुवर्ण और तिल आदि अनेकदान वर्णनकिये ३३ हे कौरव विवाहोंको करके पुत्रोंको उत्पन्नकरे पुत्रोंका लाभ सबलाभोंसे अधिकहोताहै ३४॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेअष्टषष्टितमोऽध्यायः ६८॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे कौरवों में श्रेष्ठ बड़े ज्ञानी आप फिर भी दानोंकी उत्तम बुद्धि और मुख्यकर भूमिदानको वर्णन कीजिये १ पृथ्वी के दान करनेवाले क्षत्रिय लोग यज्ञकरनेवाले ब्राह्मणको भूमिदानकरें और वह ब्राह्मण भी बुद्धिके अनु-सार दानको ले इसके सिवाय दूसरा दान करनेवाला नहीं है २ फलके चाहने वाले सब वर्ण जिस दानको करसक्ते हैं अथवा जो वेदमें कहाहै वह आप मु-झसे कहनेको योग्यहैं ३ भीष्मजी बोले कि गौ पृथ्वी सरस्वती अर्थात् गायत्री मंत्रादि यह तीनों प्रकारके दान बड़े दिव्य एकसे नाम सदैव फलके देनेवाले

और सब अभीष्ट फलों के देनेवाले हैं ४ जो पुरुष धर्मरूप वेदोक्त सरस्वती गायत्रीको अपने शिष्यको उपदेश करताहै वह पृथ्वीदान और गौ दानके समान फलको भोगताहै ५ अव इसी प्रकार गौओंकी प्रशंसा करते हैं कि गौ दानसे बढ़कर कोई दान नहीं है हे युधिष्ठिर वह मनोरथों की सिद्धकरनेवाली गौ शीघ्रही फलकी देनेवाली हैं ६ गौ सव जीवोंकी माताहोकर सव सुखोंकी देनेवाली हैं अपनी वृद्धि चाहनेवाले पुरुषोंको वह गौयें सदैव परिक्रमा करनी चाहिये ७ गौ कभी पैरों से ताड़न के योग्य नहीं हैं यह देवी गौ आनन्द मंगलकी घरहैं इनके मध्यमें से होकर न निकलना चाहिये और सदैव पूजन के योग्य हैं ८ यज्ञों के प्रयोजन और खेतीआदि के निमित्त जोतने आदि में बर्त्तमान बैलों को यद्यपि चावक आदि से चलायमान करना देवताओं ने नियत कियाहै तथापि यज्ञके निमित्त प्रेरणाकरना महा कल्याणकारी है और दूसरी रीतें खेती आदि के निमित्त उस वैदिक कर्म से पीछे जारीहुई हैं इस हेतु से वह दूसरी रीतें निन्दितहैं ९ ज्ञानी पुरुष भागने और पीछा करने में उन गौओंको भयभीत न करें वह प्यासीहोकर जलको न पीनेवाली गौ सब भाई बन्धुओंसमेत पुरुषको नाशकरदेती हैं १० जिनके गोबरसे पितरों के भवन और देवताओं के स्थान सदैव पवित्रहोते हैं उससे अधिक पवित्र कौन होसक्ताहै जो पुरुष एक वर्षपर्य्यन्त वेतनलियेबिना सदैव प्रतिदिन एक गट्ठाघास किसी दूसरेकी गौको देताहै वह व्रत उसके सव अभीष्ट मनोरथोंका देनेवालाहै ११ । १२ वह घासका देनेवाला पुत्र पौत्र धन कीर्त्ति और शोभाको भी पाताहै और निष्पाप होकर दुस्स्वप्नको नहीं देखताहै १३ युधिष्ठिर बोले कौन लक्षण रखनेवाली गौदानकरने के योग्य है और कैसी गोदानके अयोग्य गिनीजाती है और कैसे प्रकारके ब्राह्मणको देनी चाहिये और किसको न देनी चाहिये १४ भीष्मजी बोले कि जो ब्राह्मण बदचलन पापी लोभी मिथ्याबादी और हव्यकव्यादिक दानों से रहितहै उसको किसी दशामें भी गौ न देनी चाहिये १५ दान करनेवाला मनुष्य उस ब्राह्मण के अर्थ जोकि भिक्षुक वेदपाठी अग्निहोत्री और बहुतसे पुत्र पौत्रादिकों से युक्त है उसको दश गोदान करके ऐसे लोकोंको पाताहै जो सबसे श्रेष्ठहैं १६ दानलेनेवाला जो धर्म करताहै उसके धर्मका जो फलहै उस सब फलका वह दान करनेवाला भागीहोताहै उसी के निमित्त दानों में प्रवृत्ती है १७ जो उसको उ-

त्पन्न करताहै और भयों से रक्षा करताहै और जो उसकी जीविका नियत करता है यह तीनों उसके पितारूप हैं १८ गुरूकी सेवा पापको दूरकरती है अहंकार बड़ी उत्तम शुभकीर्त्तिको नाश करताहै तीनपुत्र अपुत्रतापनेको दूरकरते हैं दश गौ ऐश्वर्य्य के रोकनेवाले दोषोंका नाश करती हैं १९ जो वेदान्तमें निष्ठा रखने वाला बड़ाज्ञानी बहुश्रुत प्रज्ञानान तृप्त जितेन्द्रिय शिष्ट दान्त यती और सबभूतों में प्रियबादी २० साधुवृत्ती और जो गृहस्थाश्रमके भयों से भी कभी असत् कर्मों को नहीं करता और मृदुस्वभाव होकर अतिथियों का प्यारा है अथवा जो पुत्र स्त्री २१ आदि में एकसा स्वभाव रखनेवाला है उसके निमित्त उचित जीविका नियतकरे जो गुण कि शुभपात्रको गोदान देनेसे होते हैं उतनेही दोष ब्राह्मण के धनजप्त करनेमें हैं इसहेतुसे सब दशाओं में ब्राह्मणका धनत्याग के योग्यहै और इन्होंकी स्त्रियां भी दूरही से त्यागके योग्यहैं २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले हे कौरव इसस्थानपर सत्पुरुषों का कहाहुआ वह इतिहास कहताहूं जिसमें राजानृग ने ब्राह्मण के धनजप्तकरने से महाखेदको पाया १ हे राजा पूर्वसमयमें जब सब यादवलोग द्वारकामें जाबसे थे तब वहां बहुतसे यादव आदि सबलोगों की तृणवीरुधियों से ढकाहुआ बड़े शरीरवाला गिरगटनाम जीव दृष्टपड़ा तब यह सुनते हैं कि २ वहां बड़े २ उपाय करनेवाले और उसकूप से जल चाहनेवाले हजारों मनुष्योंने बड़े परिश्रमयुक्त होकर उस घासआदि से ढकेहुये जलमें ३ बैठेहुये बड़े शरीरधारी गिरगटको देखकर उसके निकालनेको अनेक यत्नकिये ४ रस्सी और चमड़े की पेटियों से उस पर्ब्बताकार जीव को बांधकर उसके उठाने को सब मनुष्य मिलकर भी समर्थ नहींहुये तब सब मिल कर श्रीकृष्णजीके पासगये ५ और श्रीकृष्णजी के सम्मुख वर्णनकिया कि एक गिरगटनाम बड़े शरीरवाला जीव कुयेंको रोकेहुये पड़ाहै उसको कोई उठानहीं सक्ता ६ तब वासुदेवजी के उठानेसे उठआया और कूपसे बाहरआकर उस गिर-गटरूप राजानृगने उसयोनिसे मुक्तहोकर अपने कर्मका वर्णनकिया और उसी समय हजारों यज्ञ करनेवाले अपने प्राचीन शरीरको प्रकटकिया ७ फिर माधव

जीने इसरीति से कहनेवाले उस राजानृगसे कहा कि तुमने बड़े २ उत्तमकर्म्म किये और कोई पापनहीं कियाथा हे महाराज फिर कैसे इस दुर्गतिको प्राप्तहुये इसको आपवर्णनकीजिये ऐसादुःख आपको कैसेहुआ ८ हे राजा तुमने पूर्वकालमें लाखों किरोड़ों गोदान ब्राह्मणों को बराबरकिये यह सब सुनाजाता है वह तुम्हारा पुण्यका फल कहांगया जो इसयोनि को पाया ९ तब राजानृग ने श्रीकृष्णजीसे कहा कि एकमेरी दानकरीहुई किसी अग्निहोत्री ब्राह्मणकी गौ कहीं अन्यत्र पहुंचकर दैवयोगसे मेरे गोधनमें आकर संयुक्तहोगई १० तब मेरेपशुरक्षकने उस गौको हजारों गौओं में अपनी गिनली और परलोक के अभिलाषी मुझ निर्बुद्धीने अपनी अज्ञान तासे वह गौ एक ब्राह्मणको दानकरदी ११ और उस तलाश करनेवाले पूर्व्व अग्निहोत्री ब्राह्मण ने उस गौको दूसरे ब्राह्मण के घरमें बँधाहुआ देख और बास्तवमें वह उसी की गौथी उस ब्राह्मणने कहा यह मेरीगौ है १२ तब वह परस्पर बिवाद करतेहुये महाक्रोधयुक्त दोनों ब्राह्मण मेरे सम्मुखआये १३ उन्हों ने मुझसे कहाहै कि आपही दाताहो और आपही उसको जप्तकरतेहो मैंने उस दानलेनेवाले ब्राह्मणसे उस एकगौ के बदले हजारगौ देने को कहा परन्तु उसने मुझसे यह कहा १४ कि जो देशकाल के अनुसार प्राप्तहुई दूधदेनेवाली शान्तरूप अग्रभागसेयुक्त स्वादु संयुक्त क्षीरकी दाता जिसकी प्रशंसा सदैव मेरेघर में होती है १५ वहगौ मेरे उस पुत्र को जो कि अति दुर्बल और अपनी माता के स्तनको त्याग करनेवालाहै पोषण करती है वहगौ मैं देने को समर्थ नहीं हूं ऐसाबचन कहकर वह ब्राह्मण चलागया १६ इसकेपीछे मैंने उसके बदलेके लिये दूसरे ब्राह्मण से प्रार्थनाकरी कि उसके बदले आप एक लाखगौ लीजिये १७ हे मधुसूदनजी तब ब्राह्मण ने कहा कि मैं अपनी जीविका के खोजमें प्रसक्तहूं राजाओं का दाननहीं लेताहूं वही गौ मुझको दीजिये १८ सुवर्ण घोड़े चांदी और रत्नोंको भी जो आपदेंगे वह भी नहींलूंगा यह कहकर वह उत्तम ब्राह्मण भी चलागया १९ उस समय काल धर्म्मसे प्रेरित होकर मैं पितृलोक में प्राप्तहोकर धर्मराजके पासगया २० यमराजने मेरा आदर सत्कार करके यह वचनकहा हे राजा तेरे पवित्र कर्म्मोंकी संख्याका अन्तनहीं होसक्ता है २१ परन्तु तुमने अज्ञानसे कुछ पापभी कियाहै उसको पूर्व्व में भोगोगे वा पीछे से भोगोगे जैसी तुम्हारी इच्छाहोय वैसा कियाजाय २२ तुम ने जो कहा

कि मैं संसार का रक्षकहूं वह तेराप्रण और संकल्प मिथ्याहै दूसरे तुमने ब्राह्मण का धन लिया यह तुम्हारी दो प्रकार की अमर्य्यादा हैं २३ तब मैंने कहा कि हे प्रभु मैं प्रथम अपने पाप फलको भोगूंगा फिर पुण्यफलको भोगूंगा इसरीति से धर्मराजसे कहतेही मैं गिरगट होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा २४ पृथ्वीपर गिरेहुये मैंने यमराजके कहेहुये उच्चस्वरयुक्त बचनको सुना कि हे राजा दुष्टोंकेसंहार करने वाले वासुदेवजी तेरे उद्धार करनेवाले होंगे २५ पूरे हजार बर्ष के अन्तमें पाप कर्म्म के नाश होनेपर तू अपने पुण्यकर्म से विजय कियेहुये अर्थात् प्राप्तकिये हुये लोकोंको पावेगा २६ मैंने इस कुयें में गिरकर अपने को नीचीगर्दन हुआ देखा और तिर्य्यग्योनिमें प्राप्त होकर भी मुझको पूर्वका सब स्मरण बनारहा २७ अब आपने मेरा उद्धारकिया और तपस्या से सिवाय कुछनहीं है हे श्रीकृष्णजी अब मुझको आप स्वर्गमें जानेकी आज्ञादो २८ तब श्रीकृष्णजीकी आज्ञापाकर शत्रुओं का विजय करनेवाला वह राजा उन दुष्टसंहारी बासुदेवजीको नमस्कारकर दिबिमार्ग में नियतहोकर स्वर्ग्गकोगया २९ हे भरतबंशियों में बड़ेसाधू कौरवनन्दन युधिष्ठिर उसराजानृगके स्वर्ग में जानेपर बासुदेवजीने यह श्लोक कहा (श्लोक) ब्राह्मणस्वंनहर्त्तव्यं पुरुषेणबिजानता॥ ब्राह्मणस्वंहृतंहन्ति नृगं ब्राह्मणगौरिव ३० इसका आशय यहहै कि ज्ञानीपुरुषको ब्राह्मणका धन कदापि हरना न चाहिये ब्राह्मण का जब्तकियाहुआ धन ऐसे मारताहै जैसे कि राजा नृगको ब्राह्मणकी गौने माराहै ३१ हे राजा सत्पुरुषों के साथ सत्पुरुषों का मिलापहोना निष्फल नहीं होता देखो कि सत्पुरुषों के मिलापही से राजानृग नरक से छूटा ३२ और उससाधुओं के मिलाप होने में भी उपकार करना महाफलदायी है और शत्रुता करना निष्फलहै हे युधिष्ठिर इसीरीतिसे गौओंके अप्रिय कर्म्मों को सदैव त्यागकरे ३३॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेनृगोपाख्यानेसप्ततितमोऽध्यायः ७०॥

इकहत्तरवां अध्याय॥

युधिष्ठिर बोले हे निष्पाप महाबाहु आप गोदानों के फलकी प्राप्तिको मुझ से ब्यौरे समेत कहिये क्योंकि आपके अमृतरूपी बचनोंसे मेरी तृप्तिनहीं होती है १ भीष्मजी बोले कि इस स्थानपर एकप्राचीन इतिहास को कहताहूं जिसमें

उद्दालक और नाचिकेत ऋषिका परस्पर संवादहै २ बुद्धिमान् उद्दालक ऋषि ने अपनेपुत्र नाचिकेतकेपास जाकर कहा कि तुम मेरी सेवाकरो ३ यह कहकर महर्षिने उस नियमके समाप्त होनेपर पुत्रसेकहा मैं स्नान आचमनादि में प्रवृत्त जपमें निष्ठहोकर ४ इन्धन कुशाफूल कलश बहुतसे शाकफलआदिके भोजन भूलआयाहूं उनको तुम नदीकेकिनारे से लेकर यहांआवो ५ उनकी आज्ञापातेही उसमुनिने वहांजाकर नदीकेचढ़ावसे डूबेहुये उससब सामानको न पाकर वहां से लौटकर पितासे आनकर यहकहा कि मैंने बहुतसाढूंढ़ा परन्तु मुझे वह सामान कहींनहीं दीखा ६ यह सुनतेही गृहस्थीपनेकी तृष्णामें भरेहुये उस महा तपस्वी उद्दालक मुनिने उसपुत्रको शापदिया कि यमराजको देखो, पिताके इसवज्ररूपी बचनसे घायल होकर हाथजोड़ेहुये वह नाचिकेत शीघ्रही निर्जीव होकर पृथ्वी पर गिरा ७।८ तब तो पृथ्वीपर पड़ेहुये नाचिकेतको देखकर मुनिबड़ेदुःखमें अचेतहुये और कुछ चैतन्यहोकर कहनेलगे कि मैंने क्याकिया यह कहकर वहभी पृथ्वीपर गिरपड़े ९ वहां उसदुःखमें डूबेहुये अपने पुत्रका शोचकरनेवाले उसऋषिका वह शेषदिवस और भयकारी रात्रिव्यतीतहुई १० हे कौरव पिताके अश्रुपात से वह नाचिकेत कुशाकी शय्यापर ऐसे चेष्टाकरनेलगा जैसे कि बर्षा से सींचीहुई खेती सजीव होजाती है ११ उसने मृतकहोकर शयनसे जगेहुयेकी समान फिर आनेवाले दिव्य गन्धयुक्त शरीरवाले अपने पुत्रसेपूंछा १२ हे बेटा तुमने अपने कर्म्म से शुभलोकभी बिजय किये तुम प्रारब्धसे फिर प्राप्तहुये हो तेराशरीर मानुषी नहीं है अर्त्थात् दिव्यशरीरहै १३ इस पिताके बचनको सुनकर सब वृत्तान्त अपने नेत्रों से देखनेवाले महात्मा नाचिकेतने पिताके समीपवर्त्ती महर्षियों के मध्यमें अपने पिताकेसम्मुख उस वृत्तान्तको वर्णनकिया १४ कि हे पिता मैं आपकी आज्ञाके अनुसार आज्ञाको प्रतिपालन करताहुआ शीघ्रही यमराजकी सभामें पहुँचा वह सभा बहुत लम्बी चौड़ी हजारोंयोजनकी महाप्रकाशमान सुवर्ण के समान चमकतीथी उससभामें बैठेहुये धर्म्मराजको देखा १५ मुझको सम्मुख आतेहुये देखतेही उसने आज्ञाकरी कि इनको आसन बिछावो फिर उसने आपके कारणसे मेरापाद्य अर्घ्यआदि से पूजन किया १६ इसके पीछे सभासदों ने पूजन करके मुझको चारोंओर बैठकर मध्य में किया फिर मैंने मध्यवर्त्ती होकर बड़े धीरेपने से उनसे कहा कि हे धर्म्मराज मैं आपके देशमें आयाहूं मैं जिस

लोकके योग्यहूं उसीलोक में मुझे भेजनेका विचार कीजिये १७ तब यमराजने कहा हे प्रियदर्शन तुम मृतक नहीं हो देदीप्य अग्निके समान तेजस्वी तपस्वी उस आपके पिताने तुमको यहीकहाहै कि तुम यमराजको देखो उनकीबातको मैं मिथ्या नहीं करसक्ता १८ हे तात तुमने मुझको देखा अब तुम शीघ्रहीजाओ तुम्हारा पिता शोचकररहाहै तुम हमारे प्रिय अतिथिहो जो आप मनसे मांगें वह मैं दूं जो आपके अभीष्टहों आप उनको मांगिये १९ उसके इसप्रकार कहने पर मैंने उनको उत्तरदिया कि मैं आपके देश में वर्त्तमान हूं जहां से फिर लौटना महाकठिनहै जो मैं वरकेयोग्य समझाजाऊं तो पुण्यसे उत्पन्न धनसेपूर्ण आपके लोकोंको देखना चाहताहूं २० हे द्विजेन्द्र तब उस देवताने घोड़ों से युक्त अच्छी प्रकाशमान सवारी में मुझको सवारकरके अपने और पवित्र कर्मी पुरुषों के सब लोकोंको अच्छेप्रकारसे दिखलाया २१ मैंने वहां महात्माओंके उन स्थानों को देखा जो कि तैजस अर्थात् स्वतःप्रकाशरूप नानाप्रकारकी अद्भुतरचनाओं के बने अनेकरंगों के रत्नों से जटित २२ चन्द्रमण्डलके समान श्वेतवर्ण क्षुद्रघंटिकाओं से रचित जालों से संयुक्तथे उनमें हजारोंमहल सूक्ष्मपृथ्वीपर शोभायमान बड़ेभारी जलके मध्यमें चेष्टाकरनेवाले थे २३ और सूर्य्य के समान प्रकाशित वैडूर्य्यमणि सुवर्ण चांदी और नवीन सूर्य्य के समान प्रकाशमान वर्णरखनेवाले ग्रह और नक्षत्रथे २४ भक्ष्यभोज्यादि पदार्थों के पर्व्वत वस्त्र पर्य्यङ्कयुक्त शयन स्थान और भवनों पर नियत सब अभीष्टफल देनेवाले वृक्षोंको देखा २५ नदी मार्ग सभा बावड़ी दीर्घिका और शब्दायमान घोड़ोंसमेत हजारों सवारियों को देखा २६ दूधकी नदियां पर्व्वत घृत निर्मलजल और यमराज के बिहार स्थान वाले अनेकदेश जिनको कि पूर्व्व कभी न देखाथा उनको भी देखा २७ उन सबको देखकर मैंने उन पुराण पुरुष धर्मराजसे यह वचनकहा यह सदैव बहने वाली दूध और घृतकी नदियां भोजनके योग्य किसके प्रारब्ध में नियतकीगई हैं २८ यमराजने कहा कि जो साधूमनुष्य गोरसों का दान करनेवाले हैं उन पुरुषों के निमित्त यह सब नदियां भोगने योग्यहैं और अतिप्राचीन शोक से रहित जीवों से व्याप्त जो अन्यलोकहैं वह उनपुरुषों के निमित्तहैं जो कि गोदान करने में प्रीतिकरते हैं २९ इन गौओंका केवल दानकी महिमाही कहना प्रशंसा के योग्य नहीं है किन्तु दानपात्र ब्राह्मण काल गौकी मुख्यता और शास्त्रबुद्धि

को जानकर दानकरनाभी उचितहै हे ब्राह्मण गौओं के गुणोंकी न्यूनाधिकता सूर्य्य और अग्निके समान है इसी से इसकाजानना कठिनहै ३० जो ब्राह्मण वेदपाठ वा गायत्रीका जपकरनेवाला बड़ातपस्वी वेदकेअनुसार अग्निस्थापन करनेवालाहो वह इन गौओंके लेनेकापात्र है जो गौ कसाई के मारने से छुटाकर प्राप्तकीहोयँ अथवा पोषण के निमित्त गरीबकेघरसे आईहों उनका पोषणकरना अत्यन्त श्रेष्ठहै इन पोपणादि उपायों से गौओं के प्रकारोंका जानना प्रशंसनीय है ३१ तीन रात्रितक जलकाही आहारकर पृथ्वीपर शयन करके तृप्तहुई गौओं को गोशालासमेत ब्राह्मणों के अर्थ देनी योग्यहै वह गौवें प्रसन्नमन सुन्दर सन्तानयुक्त होकर अच्छे प्रकारसे सेवा करीगईहों उनको दान करके तीन दिनतक गोरसों को भोजनकरना चाहिये ३२ कांसेका दोहनपात्र कल्याणरूप बछड़ा और सुन्दर व्रत रखनेवाली विना भागनेवाली गौको दान करने से जितने उसके शरीरमें वाल अर्थात् रोमहोते हैं उतनेही वर्षपर्य्यन्त वह स्वर्गको भोगताहै ३३ इसीप्रकार सुशिक्षित भारवाहक वली तरुण और अपने सजाति समूहों में निवास करनेको अभ्यासी पराक्रमी वड़े बैलको उत्तम ब्राह्मणके अर्थ दान करने वाला गोदान करनेवाले के समान लोकोंको भोगताहै ३४ जो गौओंपर कृपा करनेवाला गौओं के आश्रय स्थानका ज्ञाता उनके साथ उपकार और जीविका का दुःख पानेवालाहै उस प्रकारके ब्राह्मणको सुपात्र कहते हैं वृद्ध और रोगीको दान करने में दुर्भिक्षमें यज्ञ और खेती और होमके निमित्त दानकरने में और पुत्र के जन्ममें दान करने में ३५ गुरुके अर्थ और वालकों के पोषणके अर्थ गोदान करने में देश और काल श्रेष्ठ समझना चाहिये वह गौ घरमें उत्पन्नहुई वा मूल्य से लीहुई शान्ती और ज्ञान गुणसे प्राप्त अपने प्राणोंको संकटमें डालकर मोलली या विजयकरीहुई अथवा विवाहके समय श्वसुरआदिने दीहो ३६ नाचिकेतने कहा कि मैंने यमराज के वचनोंको सुनकर फिर वचनकहा कि गौके न होनेपर गोदान करनेवालों के लोकोंको कैसे पाताहै ३७ यह सुनकर बुद्धिमान् यमराजने गोदानकी परमगतिको वर्णनकिया और गोदानके अनुकल्पको भी कहा कि गौके विना भी गोदान करनेवाले होते हैं (अनुकल्प गौण कल्पको कहते हैं जैसे कि मधुके न होनेपर गुड़ही कल्पना कियाजाताहै) ३८ जो व्रत में सावधान मनुष्य गौओं के न मिलनेपर घृतकी गौका दानकरता है उसकी

यह घृतकी नादियां पर्वतसे मिलीहुईसी बहती हैं ३९ जो व्रतमें सावधान पुरुष घृतके न मिलोंनेपर तिलकी गौका दानकरताहै वह उस गौके द्वारा दुर्गम स्थान से पारहोकर दूधकी नदीपर आनन्द करताहै ४० जो व्रतपरायण मनुष्य तिलों के न मिलनेपर जलकी गौको दानकरताहै वह इच्छाके अनुसार शीतल जल की बहनेवाली नदीको भोगताहै ४१ हे धर्म से च्युत न होनेवाले वहां इसरीति से धर्म्मराजने उन २ स्थानों को दिखलाया और मैंने उनका दर्शन करके बड़ी प्रसन्नताको पाया ४२ मैं अब आपके इस अभीष्टको कहताहूं कि यह थोड़े धन से होनेवाला गोदानरूप बड़ा यज्ञहै हे तात मैंने भी इसीको प्राप्त कियाहै वेद बुद्धी से जारी होनेवाला मुझसे उत्पन्न वह यज्ञ प्राप्तहोगा ४३ यह आपके शाप के अनुग्रहकेलिये प्राप्तहुआहै जहां मैंने यमराज देखे हे धर्मात्मा वहां मैंने दानों के फलोंकोही बहुत देखा इससे हे तात मैं निस्सन्देह होकर दानोंको करूंगा ४४ हे महर्षी तब तो अत्यन्त प्रसन्न यमराजने वारम्बार मुझसे यहीकहा कि जो पुरुष सदैव दानमें सावधानहोय वह मुख्यकर गोदानही करे ४५ यह बड़ा पवित्र कर्म है कि धर्मोंकी कभी निन्दा वा अपमान न करके देश और कालमें पात्रके नि-मित्त दान दियाकरे यही योग्यहै इसहेतुसे हे राजा तुमको सदैव गोदानकरना उचितहै इसमें तुमको कभी सन्देह न हो ४६ शान्तबुद्धी दानमार्ग में प्रवृत्तहुये पुरुषों ने पूर्व्वसमयमें इन गौओंको दान कियाहै उग्रतपों में सन्देह न करनेवाले उन मनुष्यों ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार दानों को दियाहै ४७ पवित्रात्मा श्रद्धामान पुण्यकरनेवाला मनुष्य ईर्षासेरहित होकर अपनी सामर्थ्य के अनु-सार समयपर गोदानकरके परलोकको गये वह मनुष्य पुण्यरूप स्वर्ग में प्रका-शमानहैं ४८ जो गौके साथमें न्यायसे प्राप्त होनेवाला पदार्थ तीनोंवर्ण के लोग कर्मेष्ठी पात्र ब्राह्मणको दे तो उसके सिवाय गौका आहारआदि देनाभी अवश्य योग्यहै और दश दिनतक गोरस अथवा गोवर व गोमूत्रसे अपना निर्बाहकरना चाहिये ४९ बैलों के नादसे देवताओं का व्रतरखनेवाला ब्रह्मचारी सूर्य्यमण्डल को भेदकरजाताहै और गौ वा बैलके जोड़े के दानसे वेदोंकी प्राप्तिहोती है और बैलोंसेयुक्त रथ आदि के दानसे तीर्थोंकी प्राप्तिहोती है कपिला गौके दानकरने से पापों से छूटताहै ५० न्यायसे प्राप्त होनेवाली एककपिला गौको भी अच्छी रीतिसे दानकरनेसे पापोंसे निवृत्तहोताहै गौओं के रसरूप दूधसे उत्तम संसारमें

कोई पदार्थ नहीं है इसी से गौओं के दानको उत्तमोत्तम कहतेहैं ५१ दूध देने-वाली गौ लोकोंको उद्धार करती हैं और गोलोकमें अन्नको उत्पन्नकरती हैं जो मनुष्य उनको जानकर गौओं के अभीष्टको प्राप्तनहीं करता अर्थात् शरीरकी खुजली आदिको नहीं मिटाताहै वह पापात्मा पुरुष नरकको जाताहै ५२ जिन मनुष्यों ने बछड़ेसमेत हजारसाधू गौ या सौ दश पांच अथवा एकही गौकादान साधू ब्राह्मणके अर्थ कियाहै वह गौ परलोक में उसकी पवित्र तीर्थवाली नदी होती है ५३ इस पृथ्वीपर गोरस देनेवाली पुष्ट शरीरयुक्त और संसारकी पूरी २ रक्षासे वह गौ सूर्य्यकी किरणों के समान हैं मैं देताहूं जो कि यह एक शब्द है और उपभोग नम्रताआदि गुण भी इसमें हैं इसी हेतु से गोदान करनेवाला सूर्य्यके समान प्रकाशमान होताहै ५४ जो शिष्य कि अपने गुरूको गौकादान देता है वह अवश्य स्वर्ग्ग को जाताहै जो शास्त्र बुद्धि के ज्ञाताहैं उनको यह बड़ा उत्तम धर्म्म है और जो अन्यज्ञान बुद्धी हैं वह गुरुपूजन नाम प्रथमबुद्धि में प्रवृत्तहोजाते हैं अर्थात् गुरुपूजनसेही उनका फल मिलताहै ५५ तीनोंवर्णों का यह न्यायसे प्राप्तहुआ दानहै पूरे बिचारपूर्बक पात्रको देखकर उसको उसपर पूरा अधिकार देनायोग्यहै यही न होय कि गौ केवल पुरुषको सुपुर्दही कीजाय तुम्ह पुण्य के अभ्यासी की शासना में देवता मनुष्य और हमभी आनन्द करते हैं ५६ हे ब्रह्मऋषि इसप्रकार उनसे कहाहुआ मैं उस धर्म्मात्मा सूर्य्यपुत्र धर्म्मराजको शिरसे नमस्कार कर और उनकी आज्ञा लेकर आप भगवान् के चरणों में आया ५७॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेयमवाक्यंनामएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१॥

बहत्तरवां अध्याय॥

युधिष्ठिर बोले हे प्रभु आपने नाचिकेतऋषिकी कथामें गोदानका वर्णनकिया और उसी प्रसंगमें गौओंका माहात्म्यभी कहा १ हे बड़े बुद्धिमान् पितामह म-हात्मा राजानृगने अज्ञानतासे होनेवाले एक अपराधसे बड़ेकष्टकोपाया २ जैसे कि द्वारकामें प्रवेश करने के समय यह कूपसे निकालागया और श्रीकृष्णजी उसकी मोक्षके हेतुहुये वह सब मैंने सुना ३ परन्तु हे प्रभु गौओंके लोकके विषय में मुझको सन्देह है उसको आपकहिये और उस स्थानको भी कहिये जहांपर

गोदानके करनेवाले निवासकरते हैं ४ भीष्मजी बोले इस स्थानपर एक प्राचीन इतिहासको कहते हैं जिसमें इन्द्रने इसी बातको ब्रह्माजी से पूंछाहै ५ इन्द्रने प्रश्न किया कि स्वर्गलोक बासियों की लक्ष्मी को अपने तेजसे तुच्छकरके गोलोक के जानेवालों को देखताहूं यह मुझे सन्देहहै ६ हे निष्पाप भगवन् वह गौओंके लोक कैसे हैं जहां गौकेदान करनेवाले बसते हैं उनको मैं जानना चाहताहूं ७ वहलोक किसप्रकार के और कैसे २ फलों के देनेवाले हैं उसकी परमकाष्ठा क्या है और कौनगुणहै और ज्वरसेरहित मनुष्य वहां किसरीतिसे जाते हैं ८ दाता कितने समय तक दानकेफलको भोगताहै बहुत प्रकारका और थोड़े प्रकार का दान किसप्रकार से होताहै ९ बहुत गौओंका वा थोड़ी गौओं का दान कैसाहै गोदानकिये बिना गोदानका फल कैसे मिलसक्ताहै यह सब आप मुझे समझा-इये १० हे प्रभु बहुतदान करनेवाला मनुष्य किसरीतिसे थोड़ेदान करनेवाले के समान होताहै हे स्वामी इसलोक में थोड़ादान करनेवाला मनुष्य किसरीति से बहुतदान करनेवाला होताहै ११ गोदानमें कैसी दक्षिणा श्रेष्ठहोती है हे भगवन् इसको यथार्थतासे आपकहिये १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेगोप्रदानिकेद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि जो गोदानके बिषयमें तुमने मुझसे प्रश्नकिया हे इन्द्र इस प्रश्नका पूछनेवाला तेरे सिवाय इसलोकमें कोई पुरुष नहीं है १ हेइन्द्र नानाप्र-कारके लोकहैं उनको मैं देखताहूं तुम नहीं देखसक्तेहो उन लोकोंको पतिब्रता स्त्री भी देखती हैं २ और सुन्दर ब्रतवाले ऋषिभी अपने शुभकर्मोंके द्वारा देखते हैं उन लोकोंमें शुभबुद्धीवाले ब्राह्मण शरीर समेत जाते हैं ३ इसलोकमें सुन्दर ब्रतवाले मनुष्य भी समाधि के समय अथवा मरणकाल के समय शुद्ध अन्तः-करणके द्वारा उन स्वप्नरूप लोकोंको देखते हैं ४ हे सहस्राक्ष वहलोक जैसे प्रकार के गुण धारण करनेवाले हैं उनको मैं कहताहूं वहां न कालजाताहै न जरावस्था होती है और न अग्नि ५ किसीप्रकार का भी वहां अशुभ नहीं है वहां रोग प-रिश्रम आदि भी नहीं हैं हे इन्द्र उसलोकमें गौवें जो मनसे चाहती हैं ६ वह सब मेरेआगे प्राप्तकरती हैं इच्छापूर्व्वक अपनी चाहनासे कर्म्मकर्त्ता होकर अभीष्ट

पदार्थों को भोगती हैं ७ बापी, सरोवर, नदी, नानाप्रकार के बन, स्थान, पर्व्वत और जितने सब पदार्थ हैं ८ और सब जीवोंके लिये मनोहर धनआदि यही सब वहां दिखाई देते हैं इतने बड़ेलोक से उत्तम दूसरा लोक कोई वहां नहीं है ९ हे इन्द्र जो उत्तम मनुष्य कठिनदुःखों के सहनेवाले क्षमावान् सबके मित्र गुरू की सेवा करनेवाले अहंकार से रहितहैं वह पुरुष उसलोक में जाते हैं १० जो पुरुष किसीप्रकार के मांसको नहीं खाते हैं सदैव पवित्र धर्मसंयुक्त होकर माता पिता के पूजन करनेवाले सत्यवक्ता ब्राह्मणोंकी सेवा करनेवाले हैं और दोषोंसे रहितहैं ११ अथवा गौ ब्राह्मणों पर क्रोध न करनेवाले धर्म्म में प्रवृत्त गुरूकी सेवाकरने वाले हैं अपने जीवन पर्य्यन्त सत्याचार और दानमें प्रीति करनेवाले हैं अपराधी परभी क्षमा करनेवाले हैं १२ वा मृदुस्वभाव शान्तचित्त देवता की उपासना करनेवाले सबको अतिथिरूप माननेवाले दयादानमें संलग्नहैं हे इन्द्र इसप्रकार के गुणरखनेवाले मनुष्य उस सनातन गोलोक को जाते हैं १३ जो दूसरेकी स्त्री से भोगकरनेवाला है वा गुरूका मारनेवाला है अथवा मिथ्यावादी है वहलोग इसलोकको नहीं देखसक्ते हैं और जो सदैव ब्राह्मणोंकेसाथ बिवाद और शत्रुता करनेवाला दुष्टात्माहै वहभी नहीं देखसक्ताहै १४ जो मित्रोंसे शत्रुता करनेवाला छली, अकृतज्ञ, धनीहोकरभी कंगाली प्रकटकरनेवाला कुटिल धर्म्मका बिरोधी है और जो ब्राह्मणका मारनेवालाहै ऐसेपुरुष मनसे भी उसलोकको नहींदेखसक्ते १५ हे देवताओं के ईश्वर जोकि पवित्रकर्म्मी पुरुषों का निवासस्थान है उसमें दुराचारी नहीं जासक्ते किन्तु देखभी नहींसक्ते हे इन्द्र यह सब वृत्तान्त मुख्यता समेत तुमसे वर्णनकिया और जो मनुष्य गोदानमें प्रीति करनेवाले हैं उनके फलों को सुनो १६ जो मनुष्य बाप दादेकी जायदादसे प्राप्तहुये रुपयोंके बदले गौओंको मोललेकर उन धन से मोललीहुई धर्मसे प्राप्त गौओंको दानकरताहै वह अबिनाशी लोकोंको पाताहै १७ हे इन्द्र जो आदमी द्यूतसे धनको जीतकर गौओंको मोललेके दानकरताहै वहभी हजारों दिव्य बर्षतक फलको भोगताहै १८ जिसको कि दायभागसे न्यायके अनुसार गौमिली हैं उनको दानकरे उन दाताओंकी गौ भी अचल होती हैं १९ हे शचीपति जो ब्राह्मण गौओंको दान लेकर शुद्धचित्तसे दानकरताहै उसकेलोकभी अचल और अबिनाशी होते हैं२० जो शान्तचित्त गुरू और ब्राह्मणकी क्षमाकरनेवाला और उनके अपराधों का

सहनेवाला मनुष्य आजन्म सत्यबोले उसकीगति भी गौओं के समानहै २१ हे इन्द्र जब ब्राह्मण घृणाके भी योग्यहोय तौभी कभी निन्दा के योग्य नहीं है जो मनुष्य गौओंकी जीविका रखनेवाला घासआदिसे उनका पोषण करनेवालाहै वह वैसीभी गौओं के साथ शत्रुता न करे २२ हे इन्द्र जो मनुष्य सत्य और धर्म में प्रवृत्तहै उसके फलको सुनो कि उसकी एकगौ हजार गौकेसमान होती है २३ इन्हीं गुणों से क्षत्रियका भी फलसुनो कि निश्चयकरके उसकी गौभी ब्राह्मणकी गौ केसमान होती हैं २४ जो वैश्यमेंभी यही गुणहोयँ तो उसकी एक गौभी पचास गौके समान होती है और जो शूद्र नम्रताआदि गुणों से भराहै उसका फल भी चौगुना वर्णनकियाहै २५ जो योग्य पुरुष सत्यतामें प्रवृत्त प्रवीण गुरूकी सेवा करनेवाला क्षमावान् देवताकी उपासना करनेवाला शान्तरूप पवित्र ज्ञानी धर्म का अभ्यासी होकर अहंकारसे रहित इसरीति से कर्मको करताहै २६ वह इसरीति से दूधवाली गौको ब्राह्मणके अर्थ दान करके बड़े फलको पाताहै सदैव मध्याह्न के समय एकवार भोजन करनेवाला सत्यमें नियत गुरूकी सेवा करनेवाला मनुष्य वारम्वार दानकरे २७ गौओं के मध्यमें वेदका पढ़नेवाला गौओंकीही भक्ति रखनेवाला जो मनुष्य सदैव दान करके गौओंको स्तुतिपूर्व्वक तृप्तकरता है और जो जन्मसे लेकर मरणपर्य्यन्त गौओंको नमस्कार करताहै हे इन्द्र उसके भी फलको मुझसे सुनो २८ पूजन करके राजसूय यज्ञमें जो फल होताहै अथवा अधिक सुवर्ण से पूजनकरके जो फलहोताहै वह सब साधू ऋषि और सिद्धलोगों ने समान और उत्तम कहाहै २९ गौका व्रत रखनेवाला सत्यवक्ता शान्तरूप निर्लोभ मनुष्य भोजनके समय अपने सिद्ध भोजनमें से सदैव थोड़ा भोजन गौके निमित्त निकालकर भोजनकरे तो एक वर्ष में एक हजार गोदानके फलको पाता है ३० गौकाव्रत रखनेवाला और घासआदि से उनका पोषण करनेवाला जो मनुष्य एक भाग आपखाय और दूसरा भाग गौओंको सदैव खिलावै वह दश वर्ष में असंख्य गोदानके फलको पाताहै ३१ हे इन्द्र जो पुरुष अपने एक समय के भोजनको इकट्ठा करके उसके मूल्यसे गौओंको मोललेकर दान करताहै उस गौके शरीर में जितने बालहोते हैं ३२ वह उतनेही गोदानोंका सनातन फल पाताहै यह तो ब्राह्मणके गोदानका फलहै अब क्षत्रियका सुनो ३३ पांचवर्ष के भोजनके मूल्यसे गौओंका दान करने से क्षत्रियका भी फल ब्राह्मणके फलके

समान होताहै वैश्यका फल उसका आधा और शूद्रका फल वैश्यका आधाहोता है ३४ जो अपने शरीरको बेचकरके उसके मूल्य से गौओंको मोललेकर दान करताहै वह इसब्रह्माण्डमें जबतक गौओंको देखे तबतक फलको भोगताहै ३५ हे महाभाग गौओं के प्रत्येक रोममें अनेक अविनाशी लोक वर्णनकिये हैं जो राजा युद्धों में गौओंको जीतकर दानकरताहै उसको अपने शरीर बेचनेकेसमान अविनाशी फलका भोगनेवाला जानों ३६ जो व्रतमें सावधान मनुष्य गौओंके न होनेपर तिलकी गौको दानकरताहै वह गौकेद्वारा दुर्गमस्थानों से पार होकर दूधकी नदीपर आनन्दोंको भोगताहै ३७ उन्होंकादान केवल प्रशंसाकेही योग्य नहीं है किन्तु दानकेसमय दानपात्र ब्राह्मण और गौकेगुणों से उसके प्रकार वा दानकी विधिभी विचारनी उचितहै समयकी परीक्षा ब्राह्मण और गौओंके गुणों की परीक्षा और उनमें न्यूनाधिकता जो अग्नि और सूर्य्यकेसमानहै इनसब बातों का जानना बड़ा कठिनहै ३८ जो वेदपाठी पवित्र जन्मा शान्तरूप वेदके अनुसार अग्नि होत्रादि करनेवाला पापोंसे भयभीत दान शिरोमणि गौओं में क्षमा युक्त मृदुस्वभाव रक्षाके स्थान जीविकाकी ओरसे दुखितहै उसप्रकार के ब्राह्मण को पात्र वर्णन किया है ३९ जो ब्राह्मण जीविका की ओरसे महादुःखी होकर पीड़ित है उसके निमित्त खेतीके लिये वा हौमकेलिये गुरूके लिये और बालकों के पोषण के लिये पुत्रके जन्मके समय उत्तम देश और कालमें गौओं को दान करे ४० हे इन्द्र जो घरकी उत्पन्न हुई गौ अथवा ज्ञानसे वा प्राणों से वा पराक्रम से प्राप्त विवाह के समय स्वसुरालसे मिली हो अथवा मरने से बचाई हुई हो और जो पोषण के द्वारा प्राप्तहोनेवाली हैं इन उपायोंसे गौओंके प्रकार प्रशंसा के योग्य हैं ४१ पराक्रमी प्रसन्न मूर्त्ति तरुणतायुक्त सुगन्धित ऐसी सब गौवें प्रशंसा के योग्य हैं जैसे कि नदियों में श्रेष्ठ श्रीगंगाजी हैं उसी प्रकार गौओं में कपिला गौ उत्तम है ४२ हे राजा तीनरात्रितक जलका आहार कर पृथ्वीपर निवासकरके गौदानकरे भोजनसे तृप्त अच्छी सेवाकरीहुई गौ अच्छी हृष्टपुष्ट दूधपीनेवाले बछड़ेसमेत उन ब्राह्मणोंको दानकरनी उचितहै जो अच्छे प्रकारसे तृप्त कियेगये होयँ और गोदान करके तीनदिनतक गोरसों से अपना जीवनकरना उचितहै जो सुन्दरव्रतवाला मनुष्य कल्याणरूप सवत्सा दूध देने में साधू भागने न वाली गौको दानकरता है वह गौ के शरीरके रोम संख्या के

समान वर्षौंपर्य्यंत परलोक में निवासकरते हैं ४३।४४ इसी प्रकार भारवाहकताके योग्य तरुण पराक्रमी शिक्षितहल उठानेवाले अत्यन्त बलिष्ठबैलको जो ब्राह्मण के अर्थ दानकरताहै वह दशगोदान करनेवाले के लोकोंको प्राप्तहोताहै ४५ हे इन्द्र जो मनुष्य महाबन में चारोंओर से गौ और ब्राह्मणों की रक्षाकरताहै वह क्षणमात्र मेंही सब पापों से छूटताहै अब उसके पुण्यफल को सुनों ४६ हे इन्द्र उसकाफल अश्वमेधयज्ञके समानहोकर सदैव नियतरहताहै और मरने के समय जिन २ लोकों में उसकेजानेकी वृत्तिहोती है उन २ अनेकप्रकारके दिव्यलोकों में जाताहै और अनेकअक्षय उत्तमभोगों को भोगताहै ४७ । ४८ गोलोक में गौओंका आज्ञाकारी होकर वह दाता सर्व्वत्र प्रतिष्ठाको पाताहै जो मनुष्य इस न्यायसे बनों में गौ के पीछेचलता है ४९ घास गोबर और पत्तोंका खानेवाला अनिच्छापूर्वक सावधान और पवित्रहै हेइन्द्र वह प्रसन्नचित्त मेरेलोकमें निवास करने के योग्यहै यद्यपि वह इच्छा नहीं करे अथवा जिसलोक में इच्छाकरताहै उसमें भी देवताओं समेत निवासकरताहै ५० ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

इन्द्रने कहा कि जो मनुष्य जान बूझकर गौको चुरावे अथवा धनकीइच्छा के कारण से बेचे उसकीगति कैसे और कहां होसक्ती है इसको मुझे समझाइये १ ब्रह्माजी बोले कि जो मनुष्य भक्षण के निमित्त अथवा बेचने के लिये गौ की चोरीकरते हैं व ब्राह्मणके अर्थ दानदेने के हेतु से चुराते हैं उनकेफलोंको कहताहूं तुम मन लगाकर सुनों २ गुरू और शास्त्रसे निरंकुशहोकर जो मनुष्य मांस बेचने के लिये गौको मारताहै व भक्षणकरताहै और जो मांसके आकांक्षी गौ मारनेवाले को अनुमति देते हैं यह तीनों अर्थात् मारनेवाले खानेवाले और अनुमति देने वाले यह सब उतने कालतक नर्कमें पड़ते हैं जितने कि उन गौओं के शरीरमें रोमहोते हैं ३।४ हे समर्थ जिसप्रकारके जो दोष ब्राह्मण और यज्ञके नाशकरने वाले मनुष्य में होते हैं उतनेही दोष गौओं के बेचने और चोरीकरने में कहे हैं ५ जो मनुष्य गौको चुराकर ब्राह्मणके निमित्त दानकरताहै उसके दानका जितना फलहै उतनेही वर्षतक नर्कको भोगताहै ६ हे महातेजस्वी गोदानमें सुवर्ण

की दक्षिणा कही है क्योंकि सब दक्षिणाओं से उत्तम सुवर्णकी दक्षिणा होती है इसमें ज़राभी सन्देह नहीं है कि गोदानसे सात पूर्व्व के और सात पिछले पुरुषों का उद्धारहोताहै और सुवर्णयुक्त दक्षिणासे वहीगोदान दूनेफलवाला होजाता है ७। ८ हे इन्द्र सुवर्णकादान महाउत्तमहै सबसे श्रेष्ठ सुवर्णकी दक्षिणा होती है सुवर्ण पवित्र करनेवालाहै इसीसे सब पवित्र वस्तुओं से वह उत्तम गिनाजाता है ९ हे बड़े तेजस्वीइन्द्र जातरूपनाम सुवर्ण को सब सुवर्णों से श्रेष्ठ और पवित्र कहाहै यह मैंने दक्षिणाका आशय वर्णन किया १० भीष्मजी बोले हे भरतर्षभ ब्रह्माजी ने इन्द्रको यह उपदेश किया और इन्द्रने राजादशरथजीसे कहा और पिता दशरथजी ने रामचन्द्रजी से कहा ११ रामचन्द्रजी ने भी अपनेप्यारे भाई यशस्वी लक्ष्मणजी से कहा और वनबास करनेवाले लक्ष्मणजी ने ऋषियों से वर्णन किया १२ यह दान धर्म्म परम्परा पूर्व्वक प्राचीन चलाआयाहै फिर तीव्र व्रत रखनेवाले ऋषि और धर्म के अभ्यासी राजालोगों ने कठिनतासे अभ्यास करने के योग्य इस दान धर्म्मको अभ्यास कियाहै १३ हे प्रभु युधिष्ठिर फिर इस धर्मको उपाध्यायने मुझसे कहा जो ब्राह्मण सदैव ब्राह्मणोंकी सभामें इस दान धर्मको वर्णन करताहै १४ और यज्ञों में गोदानों में किन्तु दोनोंकी वर्त्तमानता में वर्णनकरे निश्चयकरके सदैव उसकेलोक देवताओं समेत अविनाशी होते हैं १५ उस भगवान् परमेश्वर ब्रह्माजी ने इसको अपने मुखसे वर्णनकिया है १६॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेगोलोकप्रश्नेचतुस्सप्ततितमोऽध्यायः ७४॥

पचहत्तरवां अध्याय॥

युधिष्ठिर बोले हे समर्थ पितामह विश्रंभितदशामें धर्म्मों के वर्णन करनेवाले आप मेरेकहेहुये सन्देहोंको निवृत्त कीजिये १ हे बड़े तेजस्वी व्रतोंकाफल कैसा और कौनसा होता है अथवा प्रबन्ध और रीतिसमेत वेदपाठकरने का क्याफल है २ इसलोकमें दानका और वेदोंके धारणकरनेका क्याफलहै अथवा वेदपढ़ा-नेका कौनफल है इन सबके जाननेकी मेरी इच्छा है ३ हे पितामह इसलोक के मध्यमें दान न लेनेवाले ब्राह्मणको क्याफल मिलता है जो पुरुष शास्त्र अथवा ज्ञानको देताहै उसका क्याफल देखागयाहै ४ और अपने कर्म में प्रवृत्त शूरबीरों का क्याफल है वा शौच अर्थात् बाह्याभ्यन्तर की पवित्रता ब्रह्मचर्यता पिता

माताकी सेवा आचार्य गुरुकी सेवा दूसरेके दुःखसे दुःखीहोना और उसके दुःख के दूरकरने का उपायकरना इन सबका क्या २ फलहै ५। ६ हे धर्म्मज्ञ पितामह यह सब जैसाहै उसको मैं मूलसमेत सुनना चाहताहूं इसमें मेरी बड़ी रुचि है ७ भीष्मजी बोले कि जो व्रत जिसरीति से उपदेशहुआहै और अच्छेप्रकार से प्रारम्भकरके समाप्त कियागयाहै वह उसीप्रकार करके प्राप्तहोताहै उस व्रतकरनेवाले को सनातनलोकों की प्राप्तिहोती है ८ हे राजा इसलोकमें नियमों का फल प्रत्यक्ष देखनेमें आताहै तुमने भी नियमोंका और यज्ञों का फल प्राप्तकिया है ९ वेदपाठकाफल भी इसलोक और परलोकमें दृष्टपड़ताहै अर्थात् इसलोक और परलोक दोनोंमें आनन्दोंको भोगताहै १० हे राजा तुम शान्तचित्तहोने के फल को ब्योरेवार सुनो अपनी इन्द्रियों को जीतनेवाले मनुष्य सब स्थानों में सुख पूर्वक आनन्दसे नियत होते हैं ११ वह जितेन्द्रिय तप बलकेद्वारा स्वर्गमें आनन्द करते हैं यथेच्छा सर्वत्र गमन करनेवाले होकर सब शत्रुओंके मारनेवाले होते हैं १२ वह जितेन्द्रिय लोग जो चाहते हैं उसीको निस्सन्देह प्राप्तहोते हैं हे युधिष्ठिर जितेन्द्रिय मनुष्य सर्वत्र अपने अभीष्टोंको पाते हैं १३ नानाप्रकारके दान और यज्ञोंसे जो फलप्राप्तहोते हैं वह जितेन्द्रिय शान्तपुरुषको इच्छाही से प्राप्तहोजाते हैं दानसे जितेन्द्रिय पुरुष उत्तमहैं दाता ब्राह्मणके अर्थ कुछदेताहै १४ तो क्रोध करता है परन्तु जितेन्द्रिय शान्तचित्त पुरुष नहीं करता है इसी से दानीपुरुष से शान्तचित्त जितेन्द्रिय मनुष्य उत्तम है जो मनुष्य क्रोधरहित होकर दानकरता है वह सनातन लोकोंको प्राप्तकरताहै १५ जोकि क्रोध दानको नाशकरताहै इसी हेतुसे जितेन्द्रिय शान्तवृत्ती मनुष्य दानसे श्रेष्ठतमहै हे महाराज स्वर्गमें हजारों स्थान दृष्टि से अलक्षहैं १६ वह सब ऋषियोंके लोक कहलाते हैं उनलोकों को देवतालोगही प्राप्तकरते हैं अथवा शान्तवृत्ती जितेन्द्रिय महर्षीलोग उनको पाते हैं १७ क्योंकि वह महर्षी उन उत्तमस्थानों के अभिलाषी होते हैं इसकारण शान्त जितेन्द्रिय दानसे श्रेष्ठतरहै वेदकापढ़ानेवाला भी बड़ी कठिनतासे उस अविनाशी फलको पाता है १८ हे राजा बुद्धिके अनुसार अग्नि में हवनकरके ब्रह्मलोकमें जाताहै जो मनुष्य वेदोंको पढ़कर न्याय जाननेवालों को पढ़ाताहै १९ और गुरुके कर्मोंकी प्रशंसाकरनेवाला है वह भी स्वर्ग में प्रतिष्ठापाताहै जो क्षत्री वेदपाठ अथवा जप यज्ञ दान आदि कर्म्मों में प्रवृत्तहै और युद्ध में सबका

रक्षकहै वहभी स्वर्ग में प्रतिष्ठाकोपाताहै २० अपने स्वधर्म और कर्मों में प्रवृत्त वैश्य भी दानके द्वारा ऐश्वर्य्यको पाताहै और अपने कर्म्म में प्रीतिकरनेवाले शूद्रादि सब वर्ण सेवाआदिकेद्वारा स्वर्गकोजाते हैं २१ शूरबीर अनेकप्रकारके कहे और उन करनेकेयोग्य कर्म्मों में शूरोंके प्रयोजनोंको और जो२ शूरबीरों के फलकहे हैं उन सबको सुनिये २२ कोई तो यज्ञकरने में शूरहैं कोई इन्द्रियों के जीतने में शूर हैं कोई सत्यतामें शूरहैं कोई युद्धकरने में शूरहैं और कोई दानमें शूरकहाते हैं २३ बहुतसे मनुष्य सांख्यविद्यामें शूरहैं कोई योगमें शूरहैं और कोई गृहआदिके पूर्ण त्यागी वनके बासकरने में शूरहैं २४ इसीप्रकार बहुत से सत्यवक्तापने में शूरहैं और कोई वाह्याभ्यन्तरकी इन्द्रिय जीतने के कर्मों में प्रवृत्तहैं २५ बहुतसे वेदपाठ वेद पढ़ानेकी प्रीति २६ गुरूकी सेवाकरना पिताकी सेवाकरना माताकी सेवा करना इन सबबातों में शूरहैं इसीप्रकार बहुतेरे भिक्षामांगने में शूरहैं २७ और वनमें वा अपने गृहमें अतिथि के भोजनकराने में बहुतसे शूरबीरहैं यह सब अपने २ कर्मों के फलसे बिजयकियेहुये उत्तम लोकोंको पाते हैं २८ सब वेदों के धारणकरनेवाले वा सबतीर्थों के स्नानकरनेवाले इन दोनों प्रकारके लोगोंकेही समान सदैव सत्यतामें कर्म करनेवाला होताहै २९ जो हजार अश्वमेधके फल को और सत्यताको तराजूमें रक्खा तो उन अश्वमेधों से सत्यताही अधिकहुई ३० सत्यतासेही सूर्य्य प्रकाशमान हैं अग्नि भी सत्यताही से प्रकाशित होकर देदीप्य होती है सत्यतासेही सब वायु चलते हैं सब सत्यतामें नियतहैं ३१ देवता पितर और ब्राह्मण भी सत्यसेही तृप्तहोते हैं यह सत्यही उत्तम धर्म कहाजाता है इसीहेतुसे सत्यको कभी न छोड़े ३२ मुनिलोग सत्य में नियत होकर सत्य पराक्रमी और सच्चे प्रकारके हैं इसी से सत्यता अश्वमेधों से भी अधिक होती है ३३ हे भरतर्षभ सत्यवक्ता पुरुष स्वर्गलोकमें आनन्द करते हैं यह सब जितेन्द्रिय होने के और सत्यताके फलका मिलना मैंने वर्णनकिया ३४ जो चित्तसमेत इन्द्रियों के जीतनेवाले हैं वह निस्सन्देह स्वर्ग में प्रतिष्ठा पाते हैं हे राजा अब तुम ब्रह्मचर्य्य के फलको सुनो ३५ जो मनुष्य इसलोकमें जन्मसे लेकर मृत्युपर्यन्त ब्रह्मचर्य्य में रहताहै उसको कोई पदार्थ भी अप्राप्त नहीं है इसको तुम निश्चय जानो ३६ हज़ारों लाखों ऋषिलोग जोकि सदैव सत्यतामें प्रवृत्त जितेन्द्रिय और ऊर्ध्वरेता हैं वह ब्रह्मलोक में निवासकरते हैं ३७ हे राजा सेवन कियाहुआ ब्र-

ह्मचर्य्य सबपापोंको भस्मकरताहै मुख्यकरके ब्राह्मणसे सेवन कियाहुआ ब्रह्मचर्य्य अवश्य पापोंको भस्मकरताहै क्योंकि ब्राह्मण अग्निरूप कहाजाताहै ३८ यहबात ब्राह्मण और तपस्वियों में प्रत्यक्षहै जैसे कि ब्रह्मचारी से बिजय किया हुआ इन्द्र भयभीत होताहै ३९ उसीप्रकार इसलोक में ऋषियों के ब्रह्मचर्य्यका फल देखने में आताहै माता पिताके पूजनमें जो धर्म है उसको भी मैं कहताहूं तू सावधान होकर सुन ४० जो मनुष्य माता पिता भाई गुरू और आचार्य्यकी सेवाकरताहै और उनमें कभी दोषनहीं लगाताहै ४१ उसका यह फलहै कि वह सेवा करनेवाला पुरुष स्वर्गलोकमें प्रशंसनीय उत्तम स्थानको पाताहै और गुरू की सेवाके कारणसे ज्ञानीलोग कभी नरकको नहीं देखते ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेगोलोकप्रश्नोनामपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरने प्रश्नकिया कि हे राजा पितामह गोदानकी उत्तम बुद्धिको मुख्यता समेत सुनना चाहताहूं जिसके द्वारा अभिलाषी लोग सनातन लोकों को प्राप्त करें १ भीष्मजी बोले हे राजा गोदानसे श्रेष्ठतर कोई बस्तु नहीं है न्यायसे प्राप्तहुई गोका दान बिधिपूर्व्वक होने से वह गौ बहुतही शीघ्र कुलभरेको तारती है २ सत्पुरुषोंका जो धनादिक अर्थ अच्छीरीति से प्राप्त कियाजाताहै वह इस सृष्टि के निमित्त कल्पना कियाजाताहै इसी हेतुसे उस पूर्व्वसमयसे भी पूर्व्व जारीहुये गोदानकेलिये उनकी उत्पत्तिआदिको और जैसे कि ३ पूर्व्वसमयमें समीप आने वाली गौके विषयमें सन्देहसेयुक्त राजा मांधाताने प्रश्नकिया और उसका उत्तर जैसे बृहस्पतिजी ने दिया वह सब मैं तुमसे कहताहूं तुम चित्तसे सुनो ४ कि ब्रतमें सावधान मनुष्य ब्राह्मणको सत्कार करके यह बचनकहै कि कलके दिन गोदान होगा आपआइये अथवा अपने मरनेका समय जानकर दानके निमित्त लोहित वर्ण गौ खोजकर दानकरे ५ उस लोहितवर्ण गौको रोहिणी कहते हैं उसको इससंबोधनसेबोले कि हे समंगे हे बहुले और गौओंके मध्यमें जाकर इसश्रुतिकोपढ़े ६ (गौर्मेमाताबृषभः पितामेदिवंशर्म्मजगतीमेप्रतिष्ठाप्रपद्येवंशवरीमुख्यगोषुपुनर्वाणीमुत्सृजेद्गोप्रदाने) इत्यादि श्रुतियोंको पढ़े इनका अर्थ यहहै कि गौ मेरी माता है बैल मेरापिताहै हे गौ तूइसलोक और परलोकका सुख और प्रतिष्ठा हमको दे

इसरीतिसे रात्रिकेसमय गौशालामें गौओंकेमध्यमें निवासकरके फिर प्रातःकाल गोदानकेसमय गोदानके बचनको कहै वह मनुष्य उसी एकरात्रिमें गौओंकेसाथ समान प्रकृति समान व्रत और पृथ्वी शयनकरनेवाला होकर ७ एकरूप होनेसे शीघ्रही पापोंसे छूटताहै ८ जिसका उत्तम बछड़ा छोड़ागया हो उसगौको सूर्यो-दयमें सूर्य्यका दर्शनकरके दानकरना योग्यहै ऐसा करनेसे मंत्रों में वर्णन किये हुये आशीर्बाद तुमको प्राप्तहोंगे ६ वह सब आशीर्बाद उत्साह व ज्ञानसेयुक्त यज्ञ में अमृतके क्षेत्ररूप इस संसारकी प्रतिष्ठा और ऐश्वर्यके उत्पादक और सनातन प्रबाहरूप प्राजापत्य नामसे प्रसिद्ध हैं १० हे सूर्य्य संबंधिनी गौ मेरे पापोंको दूर कर हे चन्द्र संबंधिनी गौ स्वर्ग्ग जानेके निमित्त कारणरूप होकर माताकेसमान मेरे आत्मा की रक्षाकरो इसरीतिसे मुझको कहेहुये वा न कहेहुये आशीर्बाद प्राप्तहों ११ हे गौ जो कि तुम रोगके दूरकरने में पंचगब्यादिक कर्मोंसे सरस्वती आदि नदियोंकेसमान कल्याण करने में प्रवृत्तहो और सबपुण्योंकी धारणकरने वालीहो इसहेतुसे तुम सबकी प्यारी उपाधियोंसे रहित गति मुझको दिखाओ १२ जो तुमहो वह मैं हूं अब मैं तुमसे एकता करनेवाला होकर तुमको दानकरके अ-पनी आत्माका दानकरनेवालाहूं मनसे प्रकट मनकेहीरूप सौम्य और उदग्ररूप होकर तुम मुझदाताको अभीष्ट भोगोंसे युक्तकरके प्रकाशमानकरो १३ इसरीति से गोदान करनेवाला प्रथम देखेहुये आधे श्लोकको बुद्धिके अनुसार उस गौके आगे होकर प्रथम पढ़े और बुद्धिका जाननेवाला दानलेनेवाला ब्राह्मण दान को लेताहुआ गोदानकेसमय बाकीका आधा श्लोकपढ़े १४ जो मनुष्य गौकी निष्क्रेणी दक्षिणामें वस्त्र अथवा पृथ्वीका दानकरनेवालाहै उसको भी गोदान करनेवाला कहना उचितहै और ब्राह्मणको इसरीतिसे कहै कि यह ऊर्ध्वमुख रख-ने वाली वैष्णवी गौ मैं दानकरताहूं आप ग्रहण कीजिये इसरीतिसे कहकर वह दाता अपने बिचारादि के अनुसार दशगौके नामोंको उच्चारणकरे तब वह हजार गोदानके फलको पाताहै १५। १६ इसप्रकारसे क्रमपूर्व्वक इन गौ आदिके गुणों को जाने परन्तु प्रत्यक्ष गोदान करनेवाला गौके आठवें चरणपर उनसब गौओं के दानको प्राप्तकरता है १७ गोदान करनेवाला शीलवान् पुरुष वा गौकेमूल्य का देनेवाला यह दोनों निर्भयहोते हैं और सुवर्णका देनेवाला कभी दुःखीनहीं होता जो स्नानकरके प्रातःकालके नित्यकर्म्मों के करनेवाले हैं और जो महा-

भारत के जाननेवाले हैं वह विष्णुभगवान् के भक्त चन्द्रमाके समान दर्शनवाले प्रसिद्धहैं १८ गौको कामाषष्ठीके दिन दानकरके रात्रितक व्रतकरनेवाला होकर एक रात्रिमें तो उन गौओंके साथ निवासकरे और गोरस गोमय वा गोमूत्रसे अपना निर्वाह करना चाहिये १९ बैलका दानकरने में देवताका व्रत रखनेवाला अर्थात् ब्रह्मचारी सूर्यमण्डलको चीरकर जानेवाला होताहै और इस बैलकेदान से वेदोंकी प्राप्ती होती है इसीप्रकार गौओंकी बुद्धिको पाकर पूजन करनेवाला मनुष्य उत्तमलोकोंको पाताहै जो बुद्धिसे अज्ञातहै वह नहींपाता २० जो मनुष्य इच्छाके अनुसार दूध देनेवाली एकगौको दानकरताहै वह उसी एकदानमें नियतहोकर सबदानों के फलोंको और सबप्रकार के अभीष्टों को प्राप्तहोताहै हव्य कव्य देनेवाली तीनगौभी सुन्दर फलोंकी देनेवाली हैं और जो उनसे अधिक श्रेष्ठ गौओंका दानहोय तो वह और भी कल्याणकारी है २१ जो मनुष्य शिष्यता रहित व्रतोंसेहीन श्रद्धासे विगत और कुटिलबुद्धि है उसको यह गोदान का विषय नहीं सुनाना चाहिये यह धर्म्म सबलोकों में गुप्तरूप है इसको जहां तहां कहना अयोग्यहै २२ इसलोकमें श्रद्धामान मनुष्यहैं और मनुष्यों में नीच और राक्षस अथवा राक्षस बुद्धिके भी लोगहोते हैं उनको दियाहुआ यह गोदान शास्त्र अप्रियकारी होताहै जो थोड़ा पुण्य रखनेवाले नास्तिकता में नियत २३ निकृष्टकर्मी भी जो २ राजालोग बृहस्पतिजी के इसवचन को सुनकर बहुत से गोदानोंको करके स्वर्गलोकों में गये उनको मैं वर्णन करताहूं तुम मनसे सुनो २४ उशीनर, विश्वगव्य, नृग, भगीरथ, विश्रुत, योवनाश्व, मांधाता, मुचुकुन्द, राजाभूरिद्युम्न, नैषध, सोमक २५ पुरूरवा, चक्रवर्त्ती भरत जिसके वंशमें सब भरतवंशी हैं इसीप्रकार दशरथके पुत्र वीर रामचन्द्रजी और इनके विशेष जो २ शुभ कीर्त्तिवाले प्रसिद्ध हैं २६ ऐसेही बड़ेकर्मवाला शास्त्र बुद्धीकाज्ञाता राजादिलीप यह सब गोदानों केही द्वारा स्वर्ग में पहुँचे राजामांधाता यज्ञ दान तप और राजधर्म पूर्व्वक गोदान में विख्यात था २७ हे राजायुधिष्ठिर इसी हेतुसे तुम भी मेरे कहे हुये इस बृहस्पतिजी के वचन को चित्त में धारणकरो तुम कौरवों के राज्यको पाकर बड़े प्रसन्नचित्तसे पवित्र गौओंकादान ब्राह्मणों के अर्थ करो २८ वैशम्पायन बोले कि भीष्मजी से आज्ञालेकर धर्मराज युधिष्ठिरने गोदानमें बुद्धि करके जैसा पितामहने कहा वैसाही किया उस राजाने उस धर्म्मको उसीप्रकार

धारण किया जैसे कि बृहस्पतिजी ने राजामांधाता को उपदेश कियाथा २६ हे राजा तब वह राजा गोदानों के करने में सदैव गोबरसमेत जब कणों को खाता बैलकेसमान पृथ्वीतल में सोता शिखाधारी और मनको स्वाधीन करनेवाला होकर राजाओं में श्रेष्ठहुआ ३० वह राजा सदैव उन गौओं के निमित्त मनसे ऐसा सावधान रहा कि उनकी प्रतिष्ठाकरके किसी राजधर्म में वा सवारीआदि में कभी न जोड़ा जहां तहां जब कभी जाताथा तब उत्तम घोड़ोंकी ही सवारी में जाताथा ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेगोदानवर्णनेषट्सप्ततितमोऽध्यायः ७६ ॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि इसके पीछे नम्रता पूर्व्वक बुद्धिमान् राजायुधिष्ठिर ने गोदानके बिस्तार को फिर भीष्मजी से पूछा १ युधिष्ठिर बोले हे भरतबंशी बीर भीष्मजी आप गोदानके गुणोंको फिर अच्छेप्रकार से बर्णन कीजिये आपके इन अमृतरूपी बचनों के सुनने से मैं तृप्त नहीं होताहूं २ बैशम्पायन बोले कि धर्मराजके इसप्रकारके बचनोंको सुनकर राजाभीष्मजी ने गोदानके शुद्धगुणों को अच्छीरीति से वर्णन किया ३ भीष्मजी बोले कि जो गौ बछड़े से प्रीति करने वाली तरुण गुणवाली और वस्त्रों से युक्तहैं ऐसी गौको जो वेदपाठी ब्राह्मणके अर्थ दानकरताहै वह सब पापों से मुक्तहोजाताहै ४ गोदानकरनेवाला उनलोकों में नहीं जाताहै जो अन्धकार से पूर्ण हैं जो गौ जल घासआदि से तृप्त दूध न देनेवाली इन्द्रियों से रहित ५ वृद्धावस्था और रोगों से युक्त निर्ज्जल बापी के समान दुर्बलहै ऐसी गौकादान करके जो मनुष्य ब्राह्मणको कष्टमें डालताहै वह अन्धतामिस्र नरकमें पड़ता है ६ जो गौ दोषसे युक्त क्रोधरूप और रोगोंकरके दुर्बल हैं अथवा बिना मूल्यदिये प्राप्तहुई हैं वह दानके योग्य नहीं हैं जो मनुष्य वेदपाठी ब्राह्मणको निरर्थक कष्टों से युक्त करताहै उसके सबलोक निर्ब्बल और निष्फल होते हैं ७ ऐसी गौओंकी सबलोग प्रशंसा करते हैं जो बलवान्होकर महासौम्य प्रकृति तरुणरूप सुगन्धसे युक्तहैं जैसे कि सब नदियों में श्रीगंगाजी उत्तमहैं उसीप्रकार गौओंमें श्रेष्ठ कपिला गौ होती है ८ युधिष्ठिरने प्रश्नकिया कि बहुतसे गोदान जोकि सामग्री में बराबरहैं उन सब दानों में कपिला गौकादान

सत्पुरुषों ने किसहेतु से उत्तम कहाहै उसको अच्छीरीति से मैं सुननाचाहताहूं हे महाप्रभावयुक्त मैं प्रश्नकरने में समर्थ हूं आप उसके कहने में आलस्य न करें भीष्मजी बोले हे तात जो मैंने वृद्धों के मुखसे प्राचीन वृत्तान्त सुनाहै उसको मैं सम्पूर्णतासे कहूंगा जैसे कि गौओंकी उत्पत्ति हुई है ९।१० पूर्व्वकालमें ब्रह्माजी ने दक्षप्रजापतिको आज्ञादी कि तुम सृष्टिको उत्पन्नकरो तब दक्षने संसारकी प्यारी जीविकाको प्रथम उत्पन्न किया ११ हे समर्थ जैसे कि देवतालोग अमृतका आश्रय लेकर जीवते हैं इसीप्रकार यह सृष्टि और पृथ्वी के सब जीवमात्र जीविका के आश्रयसे जीवते रहते हैं १२ चैतन्य चेष्टावान् जीव जड़ और अचेष्टों से उत्तमहैं और सबमें ब्राह्मण उत्तमहैं उन्हीं ब्राह्मणों में यज्ञ नियतहैं १३ यज्ञों से अमृत प्राप्तहोताहै और वह गौओं में नियतहै उसी से देवता प्रसन्न होते हैं इसीहेतु से प्रथम जीविकाहै उसके पीछे सृष्टि है १४ उत्पन्नहोतेही जीवधारी जीविकाकीही इच्छाकरके पुकारते हैं और वह प्यासे और भूंखे माता पिताके समान जीविका देनेवाले के समीप बर्त्तमान होते हैं १५ तब भगवान् प्रजापतिजी ने उसको इस रीति से विचारकर अपनी सृष्टिकी उत्पत्ति के निमित्त अमृतको पानकिया १६ अच्छी सुगन्धित डकारें लेतेहुये प्रजापतिजी ने उसकी तृप्तताको प्राप्तकिया और डकारयुक्त मुखसे उत्पन्नहुई अपनी पुत्री सुरभी नाम गौको देखा १७ उस सुरभी ने उन अपनी पुत्रियोंको उत्पन्नकियां जोकि लोकोंकी माता सुवर्णसी कपिल वर्ण सृष्टिकी आजीविकाको उत्पन्न करनेवाली हैं १८ उन अमृतवर्ण चारोंओर से चेष्टाकरनेवाली गौओं के अमृतसे ऐसे फेण उत्पन्नहुआ जैसे कि नदियोंकी लहरों से फेण उत्पन्न होताहै १९ बछड़े के मुखसे गिराहुआ वह फेण पृथ्वी के ऊपर विराजमान रुद्रजी के शिरपर आनकर गिरा तब क्रोधसे युक्त गौको संतप्त करतेहुये प्रभु शिवजी ने ललाटके तीसरे नेत्रसे उनको देखा हे राजा इसके अनन्तर रुद्रजी के उस तेजने उन कपिला गौओंको २०।२१ नानाप्रकारके रंगों से युक्त ऐसे करदिया जैसे कि सूर्य्य बादलों के अनेक रंग करदेते हैं और जो गौ उससे पृथक् होकर चन्द्रमाके आश्रितहुई वह अपने मुख्य रूपमेंहीरहीं उनका दूसरा रूप नहीं हुआ फिर प्रजापतिजी ने उन क्रोधयुक्त महादेवजी से कहा कि २२।२३ आप अमृतसे सींचेगयेहो गौओंकी उच्छिष्ट नहीं होती है जैसे कि अमृतको लेकर चन्द्रमा बर्षताहै उसीप्रकार यह गौयें भी अमृतसे उत्पन्न दूधको

देती हैं वायु, अग्नि, सुवर्ण, नदी, समुद्र इनमें कभी दोष नहीं होताहै वैसेही गौओंका अमृतरूप दूध भी दूषित नहीं होताहै पियाहुआ अमृत और बछड़े से पानकरी हुई गौभी दोषको नहीं पाती है २४। २५ वह गौवें अपने घृतसे इन लोकोंको पोषण करेंगी सब सृष्टि के जीव इन गौओं के ऐश्वर्य्य और अमृतरूप शुभकारी दूधको चाहते हैं यह कहकर प्रजापतिजी ने उनकी प्रसन्नता के अर्थ गौओं से युक्त एक बैलदिया २६ हे भरतवंशी उस दानसे रुद्रजीको मनसे प्रसन्नकिया तब प्रसन्नहोकर शिवजी ने उस बैलको अपना वाहन बनाया २७ और अपनी ध्वजामें भी उसी बैलका चित्र धारणकिया इसीहेतुसे वह शिवजी वृषभध्वज कहलाते हैं इसके अनन्तर शिवजीको देवताओं ने पशुपति भी वर्णन किया ऐसे गुणों के निधान ईश्वर गौओं के मध्यमें वृषभध्वज कहेगये २८ इस हेतुसे इनसब रूपान्तर वर्ण से पृथक् बड़ी तेजस्वी कपिला गौओं के दानमें पूर्व कल्प वर्णनकिया (कल्प उस शास्त्रको कहते हैं जिसमें दानादिकका वर्णनहो) २६ वह गौवें सृष्टिकी मान्य और संसारकी जीविका के निमित्त उत्पन्न होकर रुद्रजी से युक्त अमृतचूनेवाली सुशील पुण्यकारी पवित्रात्मा और प्राणोंकी देनेवाली हैं उन गौओंको दान करके सब अभीष्टोंका देने और प्राप्त होनेवाला होताहै पवित्रता और मंगलोंको प्रियमाननेवाला मनुष्य सदैव गौओंकी इस उत्पत्तिको और उत्तम बुद्धिको पढ़ता और सुनताहुआ कलियुग के पापों से मुक्तहोताहै और सदैव शोभासेयुक्त धन पशु पुत्रादि से भी सम्पन्न होताहै ३० ३१ हे राजा दानकरनेवाला मनुष्य सदैव गौओं के दानमें इनसब गुणोंको प्राप्त करे और देवता वा पितरों के दानके योग्य वस्तु तर्पण शान्तिकर्म सवारी वस्त्र और वृद्ध बालकोंको तृप्तकरना यहभी करे ३२ वैशम्पायन बोले कि अजमीढ़ वंशी राजा युधिष्ठिरने भाइयोंसमेत पितामहके वचनोंको सुनकर सुवर्णवर्ण बैल और गौओंको श्रेष्ठता ब्राह्मणों के अर्थ दानकिया ३३ इसीप्रकार स्वर्गादिलोक और उत्तम यश कीर्त्ति के निमित्त यज्ञोंको जारीकरके दक्षिणा में हजारों लाखों गौओं को ब्राह्मणों के अर्थ दानकिया ३४॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेगोदानवर्णनेसप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७॥

अठहत्तरिवां अध्याय॥

भीष्मजी बोले कि इस समयमें वक्ताओं में श्रेष्ठ इक्ष्वाकुवंशी राजासौदासने ऋषियोंमें बड़ेसाधू १ वेदों के भंडार प्राचीन सिद्ध सब लोकोंमें घूमनेवाले अपने पुरोहित बशिष्ठजीको दण्डवत्करके यह प्रश्नकिया २ कि हे निष्पाप भगवन् कौनसी बस्तु तीनोंलोकों में पवित्र कहीजाती है जिसके सदैव कहने वा करने से मनुष्य उत्तम पुण्यफलको पाताहै ३ भीष्मजी बोले कि राजाके इसबचनरूपी प्रश्नको सुनकर उस पवित्रात्मा वेदशास्त्रोंके पूर्णज्ञाता बशिष्ठजीने उपदेश पूर्वक गौओंको नमस्कारकरके उसनम्र और झुकेहुये राजासे यह हितकारी वचन कहा ४ कि गौउत्तम सुगन्धवाली या गूगलकीसी गन्धवाली होतीहै गौहीजीवोंकी रक्षास्थान वा प्रतिष्ठारूपहैं गौ महाकल्याणकाघर हैं ५ गौ सत्यता और प्रसन्नता की मूर्त्ति हैं गौही भूत भविष्य हैं गौ सनातन पुष्टि है गौ लक्ष्मीरूपहैं गौओं का दियाहुआ कभी नाशनहींहोता ६ गौ उत्तमअन्न और देवताओं का उत्तमहव्य इन्हींगौओं में स्वाहाकार बषट्कार भी नियतहैं ७ गौ यज्ञकाफलहैं गौओंमें यज्ञनियतहैं गौ यज्ञकी प्रतिष्ठापानेवाली हैं ८ हे बड़ेतेजस्वी पुरुषोत्तम गौवेंही प्रातःकाल सायंकाल ऋषियोंको उनके हवनादि यज्ञोंके निमित्त घृतादिक पदार्थोंको देती हैं ९ हे प्रभु जोलोग गोदानकरते हैं वहपापसे मुक्तहोजाते हैं और जो कोई उनके कियेहुये कर्म्म महाघोररूप कठिनहैं उनसे भी छूटजाते हैं १० दशगौ रखनेवाला एकगौका दानकरे सौगौ रखनेवाला दशगौओं का दानकरे वह दोनों समानही फलके पानेवाले हैं ११ जो सौगौका रक्षक अग्नि स्थापन करनेवाला नहीं है और जो हजारगौ का स्वामीहोकर यज्ञकरनेवाला नहीं है और धनीहोकर ब्राह्मणका असत्कारी होकर कृपणहै यहतीनों पूजनादि के योग्य नहीं हैं १२ जो मनुष्य बस्त्र और कांसेके दोहनपात्र समेत बस्त्रोंसे आच्छादित सुन्दरवर्णवाली कपिलागौका दानकरतेहैं वह दोनोंलोकों को बिजय करते हैं १३ हे शत्रुसंतापी जो मनुष्य पूर्ण अङ्गवाले तरुणरूप हजारों बैलोंके रक्षक बड़े उत्तमरूप बलवान् बैलको उत्तम वेदपाठी ब्राह्मणके अर्थ दानकरते हैं वह वारम्वार जन्मलेनेवाले होकर ऐश्वर्य्योंको पाते हैं १४। १५ गौओं के गुणों को वर्णनकरके सोवे और उन्हींका ध्यानकरके उठे प्रातःकाल सायंकाल गौओं

का दर्शन करके नमस्कारकरे तो इसकर्म्म से शरीर की पुष्टिता और गौआदि धनकी वृद्धिको पाताहै १६ गौओंकेमूत्र गोबरसे कभी घृणा न करे और गोमांस कभी न खाय वह पुरुष भी शरीरकी पुष्टितापूर्वक गौआदि धनको प्राप्तकरता है १७ मनुष्यको उचितहै कि सदैव गौओं की प्रशंसाकरे कभी अप्रतिष्ठा न करे और अशुभ स्वप्नको देखकर गौओं के गुणानुबाद बर्णनकरे १८ सदैव गोबरसे स्नानकरे और गौओं के सूखेगोबरपर अर्थात् कसींपर बैठे और गोशाला में कभी थूक मूत्र विष्ठाआदि को न डाले गौको कभी न मारे १९ अपनी बाणीका जीतनेवाला मनुष्य प्रदक्षिणा से गीलेचर्म्मपर बैठकर पृथ्वी के ऊपर घृतसंयुक्त भोजनकरे और पश्चिमदिशा को मुखकर देखे तो इस कर्म से सदैव उसके घरमें गौओंकी वृद्धि होती है २० घृतसे अग्निमें होमकरे और घृतसे स्वस्तिवाचन करावे घृतको दानकरे घृतकाही भोजनकरे तो भी गौओं की वृद्धिकोपाता है २१ जो मनुष्य गोमती विद्याकरके गौको तिलों से अभिमन्त्रणकर सर्व्वरत्नसंयुक्त दानकरके अपने कृत और अकृतको नहींशोचे और इन आगेलिखेहुये बचनों को पढ़े २२ गावोमानुपतिष्ठन्तु हेमशृंग्यःपयोमुचः ॥ सुरभ्यःसौरभेय्यश्चसरितः सागरंयथा २३ गावोपश्याम्यहंनित्यं गावःपश्यन्तुमांसदा॥ गावोऽस्माकंवयंतासां यतोगावस्ततोवयम् २४ इसरीति से रात्रि में वा दिनमें सत्यता व दुर्गम अथवा भयों में गौओं के गुणों के बर्णन करने से बड़े२ भयोंसे छूटजाताहै २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेगोप्रदानिके अष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

उनासीवां अध्याय ॥

बशिष्ठजी बोले कि पूर्व्वसमय में उत्पन्न होनेवाली गौओं ने एकलाखबर्ष पर्य्यंत कठिन तपस्याकरी इस बिचारसे कि हमारी प्रतिष्ठाहोय १ इसलोकमें सब दक्षिणाओं में श्रेष्ठहोकर किसीप्रकार के दोषों से लिप्त न होयँ २ और मनुष्य लोग सदैव हमारे गोबर और मूत्रके स्नानसे पवित्रहोयँ और देवता वा मनुष्य अपनी वा अपने गृहोंकी पवित्रताके निमित्त उन गोबर मूत्रोंको अपने काममें लावें ३ हे शत्रुसन्तापी महादानी गौओं ने यहभी चाहा कि जो जड़ चैतन्य स्थावर जंगम जीवमात्र हमारे दानोंको करें वह सब हमारेही लोकों को प्राप्तहों ४ तपस्याके अन्तपर आप समर्थ प्रभु ब्रह्माजी ने जाकर तथास्तु कहकर बरदान

दिया और यहभी कहा कि तुम लोकोंका उद्धारकरो ५ भूतभविष्य की माता वह गौवें अपने मनोरथों को पाकर उठ खड़ीहुईं इसी से वह सब गौवें प्रातःकाल के समय अवश्य नमस्कार करने के योग्यहैं उससे गौओंकी वृद्धि और शरीर में पुष्टता प्राप्तहोती है ६ हे महाराज वह गौ तपस्या के अन्तपर संसार की रक्षा-स्थानहुईं इसी हेतुसे यह महाभाग महापवित्रतम कहीजाती हैं ७ इसीरीति से यह सबजीवों के मस्तकपरभी नियत होगई हैं अपने रंगकेसमान बछड़ा रखने वाली दुग्धवती सुन्दरव्रतयुक्त कपड़े से अलंकृत कपिला गौ के दानकरने से ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठा को पाताहै ८ लोहितवर्ण अपने रंगकेसमान बछड़ा रखने वाली दुग्धवती पूर्वोक्तगुणविशिष्ट गौ के दानकरने से सूर्य्यलोकमें प्रतिष्ठा पाता है ९ समानवत्सा शबला पयस्विनी सुव्रता वस्त्रों से अलंकृत गौकेदान से चन्द्र-लोकमें प्रतिष्ठापाताहै १० इसी उक्त सबगुणविशिष्ट गौके दान से इन्द्रलोक में भी प्रतिष्ठापाताहै ११ समानवत्सा कृष्णा दुग्धवती सर्व्वगुणसम्पन्न गौ के दानकरने से अग्निलोक में प्रतिष्ठापाता है १२ समानवत्सा धूम्रवर्ण उक्तगुणवाला अलं-कारयुक्त गौ के दानसे यमलोक में प्रतिष्ठापाता है १३ जलों के फेणसमान रंग-वाली सवत्सा गौ के दानसे बरुणलोक में प्रतिष्ठापाता है १४ वायुसे उड़ीहुई रेणुकेसमान रंगवाली सवत्सा कांस्यदोहनीयुक्त उक्तगुण बस्त्रादि से युक्त गौ के दानसे वायुलोकमें प्रतिष्ठापाताहै १५ सुवर्ण के रंगवाली पिंगाक्षी कांस्यदोहनी संयुक्त सवत्सावस्त्रसे आच्छादित गौको दानकरे तो कुबेरके लोकमें प्रतिष्ठापावे १६ कांसेकी दोहनीसमेत सवत्सा लाल और धूम्रवर्णवाली बस्त्रों से युक्त गौ के देनेसे पितृलोक में प्रतिष्ठाको पाताहै १७ अतिकण्ठा सवत्सा हृष्टपुष्ट बस्त्रादि से अलंकृत गौ के दानसे निरुपाधिहोकर रहित बिश्वेदेवताओं के उत्तमस्थान को पाताहै १८ समानरंग बछड़ारखनेवाली गौरी दुग्धवती बस्त्रों से अलंकृत गौ के दान करनेसे बसुओं के लोकोंको पाताहै १९ पांडु कमलके रंगवाली सवत्सा बस्त्रों से युक्त कांसेकी दोहनीसमेत गौ के दानसे साध्यलोगों के लोकोंको पाता है २० सब रत्नों से अलंकृत बैराट पीठवाले बैलके दानकरने से मरुद्गणों के लोकों को पाताहै २१ जो मनुष्य तरुण नीलरंगवाले बैलको सब रत्नों से अलंकृतकरके दानकरताहै वह गंधर्व और अप्सराओं के लोकोंको पाताहै २२ सब रत्नों से अ-लंकृत ऐसे बैलको जिसकी ग्रीवामें कम्बलनाम अंगलटकता हो दान करनेसे

शोकों से रहित दाता प्रजापतियों के लोकोंको पाताहै २३ हे राजा गोदान में प्रीतिकरनेवाला मनुष्य बादलों के समूहों को चीरकर स्वर्ग में पहुँचकर सूर्य्य वर्ण विमानमें शोभित होताहै २४ उस नरोत्तम गोदानमें प्रीतिकरनेवाले मनुष्य को सुन्दर पोशाकयुक्त सुन्दरस्वरूपवाली हजारों देवांगणा रमण कराती हैं २५ और वल्लकी बीणाके बाजे से वा नूपुरों के झणत्कार शब्दों से और हरिणाक्षी सुन्दररूपवाली स्त्रियों के हास्यों से वह मनुष्य शयनसे जगायाजाताहै गौकी देहमें जितने रोम होते हैं उतनेही बर्षोंतक वह स्वर्ग में प्रतिष्ठाको पाताहै और स्वर्ग से गिरकर भी इस नरलोकमें बड़े मनुष्य के घरमें जन्मलेताहै २६ । २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेगोप्रदानिकेएकोनाशीतितमोऽध्यायः ७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

बशिष्ठजीने कहा गोदुग्ध घृतदेनेवाली घृतकी उत्पत्तिस्थान घृतहीसे उत्पन्न घृतकी भ्रमर रखनेवाली नदियांहैं वह सदैव मेरे गृहमें वर्त्तमानहों सदैव मेरे दोनों नेत्रों में घृत नियतहै नाभिआदि सर्व्वांग और चित्तमें भी घृतही व्याप्तहै १ । २ गौसदैव मेरे आगेपीछे और सबओरकोहैं गौओंकेही मध्यमें निवास करताहूं ३ जो मनुष्य इस आगे लिखेहुये गौके बशिष्ठकृत स्तोत्रको प्रातःकाल आचमन करके जपताहै वह अपने दिवस भरके पापोंका अत्यन्त नाश करताहै ४ हजार गौकेदान करनेवाले उन २ स्थानों में जाते हैं जहां सुवर्ण के महल मंदाकिनी गङ्गा और गन्धर्वों समेत अप्सराहैं ५ और वहांभी जाते हैं जहांपर मक्खनरूप कीच दूधरूप जल और दहीरूपी काईसमेत नदियां बहती हैं ६ जो मनुष्य बुद्धि के अनुसार एकलाख गौओंका दानकरताहै वह बड़ी वृद्धिको प्राप्तकरके स्वर्ग लोकमें प्रतिष्ठापाताहै ७ वहपुत्र माताके दोनों पक्षोंके दश २ पीढ़ियों का उद्धार करताहै और पवित्रलोकोंको प्राप्तकरके अपने कुलभरेको भी तारताहै ८ गौके प्रमाण तिल गौकेभी दान करने से उद्धार होताहै और जल गौकादान करने वाला यमलोकमें किसी दुःखको नहीं पाताहै ९ यह गौ पवित्रात्मा सबसे श्रेष्ठ जगत्का उत्पत्तिस्थान देवमाता अचिन्त्य प्रभाववालीहैं उनको स्पर्शकर दक्षिणावर्त्ती करके जाय और समयको बिचारकर पात्रको दानकरे १० सवत्सा रौप्यशृङ्गी कलियाला गौकोबस्त्रोंसे आच्छादित कांस्यदोहनीपात्र और बस्त्रसेसंयुक्त

करके जो दानकरताहै वह मनुष्य निर्भय होकर महादुर्गम यमराजकी सभाको उल्लंघन करताहै ११ सुन्दर और अनेकरूप रखनेवाली विश्वरूप गौमाता मेरे समीप नियतहों इस बचनको सदैव कहाकरे १२ गोदानसे बढ़कर न कोई दानहै न फलहै न इससे उत्तम जीवलोकमें जन्मलेने के योग्यहै १३ वह गौ ऐश्वर्य्यवती होकर चर्मरोम शरीर शृंग पुच्छकेकेश दूध दही और घृतसे यज्ञों को प्राप्त कराती हैं इससे अधिकतर कोई बस्तु नहीं है १४ यह जड़ चैतन्यरूप सबजगत् जिससे व्याप्तहै उसभूत भविष्यकी माता गौको शिरसे दण्डवत् करताहूं १५ हे राजेन्द्र यह मैंने गौओं के गुणोंका एकस्थल बर्णनकिया इस लोकमें गोदान से बढ़कर न तो कोईदानहै और न कोई रक्षाका स्थान होसक्ताहै १६ भीष्मजी बोले कि इसके पीछे जितेन्द्रिय राजा सौदासने ऋषिके कहेहुये इस उत्तम बचनको बहुत श्रेष्ठ बिचारकर बहुतसा गोधन ब्राह्मणोंको दानकिया उस भूमिदान करने वाले राजाने लोकोंको प्राप्तकिया १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेगोप्रदानिके अशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे पितामह लोकमें मोक्षका देनेवाला दानोंमें जो अत्यंत फलका देनेवाला दानहै उसपवित्ररूप को मुझसे कहो भीष्मजी बोले कि गौ बहुतउत्तम धन और पवित्ररूपहैं और मनुष्योंका उद्धारकरनेवाली हैं उसीप्रकार दूध और घृतसे संसारका पोषण करती हैं १।२ हे भरतबंशियों में बड़ेसाधू गौसे अधिक धर्म्मकी वृद्धिका कोई दूसरा कारण नहीं है तीनोंलोकों में गौवेंहीं धर्म की हेतुरूप उद्धार करनेवाली होकर महासाधुरूप हैं ३ निश्चयकरके यह गौ देवताओंसे अधिक प्रतिष्ठितहैं ज्ञानी इनको दानकरके अपने कुलोंका उद्धारकरते हैं और आपभी स्वर्गको जातेहैं ४ सदैव लाखों गौओंकेदान करनेवाले राजा मान्धाता युवनाश्व ययाति नहुष ५ उन उत्तम लोकोंको गये जो कि देवताओंको भी अत्यन्त कठिनतासे प्राप्तहोनेकेयोग्यहैं हे निष्पाप मैं इस स्थानपर उस कथा को भी कहताहूं जोकि पूर्व्वसमयमें श्रेष्ठ लोगोंने कही है ६ संध्याबन्दनादिसे निश्चिन्त्य दृढ़चित्त बुद्धिमान् शुकदेवजीने ऋषियोंमेंश्रेष्ठ ७ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संसारके देखनेवाले अपने पिता ब्यासदेवजीको दण्डवत्करके प्रश्न कियाथा कि

हे पिता सब यज्ञों में कौनसा यज्ञ सबसे श्रेष्ठ आपको दिखाई देताहै ८ अर्थात् कौनसे कर्मको करके उत्तमोत्तम स्थानको प्राप्त करते हैं और हे समर्थ पिताजी देवतालोग किस पवित्रकर्म के करने से स्वर्गको भोगते हैं ९ यज्ञका यज्ञरूपहोना क्याहै और कहां यज्ञ नियतहै देवताओं में उत्तम क्याहै ऊपर के लिखेहुये से उत्तम क्याहै १० और मोक्षदेनेवालों में बड़े मोक्षका देनेवाला क्याहै इन सबको आप मुझसे वर्णनकीजिये हे भरतर्षभ उत्तम धर्मों के ज्ञाता व्यासजी ने इस वचनको सुनकर सब वृत्तान्तको मूलसमेत पुत्रसेकहा ११ व्यासजी बोले कि गौ मनुष्यों की उत्पत्ति स्थान श्रेष्ठ धर्मवृद्धिकी कारण उद्धार करनेवाली और पवित्र धनरूपहैं १२ हम सुनते हैं कि पूर्व्वसमयमें गौवें शृङ्गों से रहितथीं तब उन्हों ने अपने शृङ्गों के निमित्त प्रभुकी उपासनाकरी १३ तब ब्रह्माजी ने खानपान भी त्याग करनेवाली गौओंको देखकर उन गौओं के अर्थ अभीष्ट मनोरथोंको दिया १४ अर्थात् जैसे जिसको अभीष्टथे वैसे सींग उत्पन्नहुये हे पुत्र अनेकप्रकार के वर्ण और सींगरखनेवाली गौवें प्रकाशमानहुईं १५ फिर उन ब्रह्माजी से बरको पाकर वह गौवें देवता और पितरों के भोजनों की देनेवाली उत्तम और शुभ धर्मों के वृद्धिकी हेतुरूप उद्धार करनेवाली श्रेष्ठ ऐश्वर्य्यमान दिव्यमूर्त्ति और लक्षणोंकी रखनेवाली हुईं १६ यह गौ बड़ी दिव्य तेजरूपहैं इसी से गौओंकादान प्रशंसा कियाजाताहै ईर्षा से रहित जो श्रेष्ठ साधु मनुष्य गौओंका दान करते हैं १७ वही निश्चय करके शुभकर्म्मी और दानी होकर दानोंको देते हैं १८ हे निष्पाप वह गौओं के देनेवाले पवित्र लोकोंको प्राप्त करते हैं १९ जिस लोकमें सुन्दर मिष्ठरूप स्वादुओं से भरे फल और फूलों से युक्त वृक्ष उत्पन्न होते हैं उन सुगन्धित फल पुष्पों से युक्त जहांकी सब पृथ्वी मणियों से मढ़ीहुई सुवर्ण की धूलिसे व्याप्तहै सब ऋतुओंमें सुख स्पर्शवाली कीच और धूलसेरहित बड़ी शुभ रूप२० सुन्दररक्तवर्ण के सरोवरोंमें सुवर्णके कमलोंके वन और तरुणसूर्य्य केसमान प्रकाशमान मणिखंडोंसे शोभायमान लोक प्रकाशितहैं २१ बड़ेमूल्यकी मणियों केसमान पत्ते सुवर्णसे चमकते केसरोंसेयुक्त अनेक नीलेकमलोंसे व्याप्त सरोवर वाले २२ हजारों फूलीहुई श्रेणियोंसे शोभित करवीरनाम वृक्षों के वन वा प्रफुल्लित संतानकनाम कल्पवृक्षों के बनोंसे अच्छीरीति से अलंकृतहैं २३ उसलोक में निर्मलमोती और बड़ी २ मणियों से और सुवर्ण से निर्मित अतिप्रकाश से

युक्त पुलिनवाली नदियां हैं २४ जो कि सब रत्नोंके प्रकाश रखनेवाले महाअ-
द्भुत उत्तम अग्निके समान प्रकाशमान अनेकप्रकारके स्वर्णमयी वृक्षोंसे व्याप्त
हैं २५ उस लोकमें सुवर्ण और मणि रत्नों के पर्व्वत रत्नोंसे पूर्ण बड़े स्वरूपमान
ऊंचे २ शिखरोंसे प्रकाश कररहे हैं २६ हे भरतर्षभ उस लोकमें सदैव फल पुष्पों
से युक्त पक्षियों से पूर्ण दिव्यगन्ध रसवाले फूल और फलों से भरेवृक्ष वर्त्तमान
हैं २७ और हे युधिष्ठिर उस लोक में जो पवित्रकर्म्मी लोग क्रीड़ाकरते हैं वह
सब अभीष्ट पदार्थोंसे युक्त और शोक क्रोधसे रहित वर्त्तमानहैं २८ हे भरतवंशी
वह सुन्दर कीर्त्तिवाले पवित्रकर्मी लोग चित्रविचित्र सुन्दर विमानोंमें बैठेहुये आ-
नंदपूर्बक बिहार करते हैं २९ हे राजायुधिष्ठिर उन लोगों के पास शुभअप्सराओं
के समूह क्रीड़ाकरते हैंजो मनुष्य गौका दानकरते हैं वह इन लोकोंको प्राप्तकरते
हैं ३० जिन्हों के ऐश्वर्य्य में बली पराक्रमी पूषा मरुत और राजाबरुण स्वामी हैं
वह मासिक आदिक यज्ञोंके धारण करनेवाले हैं ३१ सुन्दर और अनेक विश्व-
रूपवाली माताहैं हे ब्राह्मण सावधान ब्रत मनुष्य सदैव ईश्वरके नामके समान
प्रजापतिजी के उपदेशको जपकरें ३२ जो मनुष्य गौओंकी सेवाकरताहै और
सब स्थानोंमें उसके पीछे २ चलताहै तो गौवें प्रसन्नहोकर उसके अभीष्टोंको भी
देती हैं ३३ जो मनुष्य सदैव गौओं को सुखदेनेवाला होकर कभी चित्त से भी
शत्रुता न करे और प्रतिदिन उनका पूजनकरे और नमस्कारोंसे उनकी प्रतिष्ठा
करे ३४ वह जितेन्द्रिय प्रसन्नचित्तहोकर सदैव गौओं के फलोंको भोगताहै ती-
नदिनतक गरम २ मूत्रको पिये और तीनदिन गरम २ दूध को पिये ३५ फिर
गौओंके उष्णदूधको पीकर गौओंके गरम कियेहुये घृतको पिये फिर घृतपीने
के पीछे तीनदिन वायुका भक्षण करनेवाला होकर ३६ जिस पवित्र घृतकेद्वारा
देवतालोग उत्तमलोकों को भोगते हैं और पवित्र बस्तुओं में महापवित्र बस्तुहै
उस घृतको शिरसे धारणकरे ३७ घृतसे अग्निमें हवनकरे घृतसेही स्वस्तिबाचन
घृतकाही भोजन और घृतकाही दानकरनेवाला उसीप्रकार की गौओंकी वृद्धि
को करताहै ३८ जो गोबरसे निकलेहुये जव कणोंको एक महीनेतक भोजनमें
बनाकर खाताहै उस पुरुषके ब्रह्महत्या के समान सबपाप दूरहोजाते हैं ३९ देव-
ताओंने दैत्योंसे पराजितहोकर यह आचारकिया इसीसे वह देवभाव को पाकर
श्रेष्ठरीति से शुद्धहोगये ४० गौ उद्धारकरने की हेतु रूप महापवित्र और उत्तम

हैं जिनके दानकरने से मनुष्य स्वर्ग को भोगताहै ४१ पवित्र होकर महापवित्र जलोंसे आचमनकरके गौओंके मध्यमें गोमतीनाम मंत्रजपै तो वह अन्तःकरण से पवित्र और निर्मल होजाता है ४२ विद्या और वेद व्रतों में पूर्ण पवित्रकर्मी ब्राह्मण अग्नि के समीप गौओं के मध्य ब्राह्मणों की सभामें ४३ इस यज्ञ के समान गोमती मन्त्रको अपने शिष्योंको उपदेशकरें जो इसरीति से तीनरात्रि व्रतको करे वह गोमतीदेवी से मिलेहुये उत्तम मनोरथों को प्राप्तकरताहै ४४ पुत्र धनाकांक्षी पुत्र धनको और पतिकी इच्छा करनेवाली स्त्री सुन्दरपति को और जपकरनेवाला मनुष्य सब अभीष्ट पदार्थों को प्राप्तकरता है निश्चयकरके सेवा करीहुई प्रसन्न गौवें मनुष्यको सब कुछदेती हैं ४५ इसरीतिसे यह महाभाग गौवें यज्ञमें सहायता देनेवाली सब यथेप्सित कामनाओं की देनेवाली हैं इनसे अधिक और कोई उत्तम नहीं है ४६ इसरीति से महात्मा पिता व्यासजी से समझायेहुये महातेजस्वी शुकदेवजी ने भी सदैव गौका पूजन किया इसी हेतु से तुम भी उनका पूजनकरो ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेगोप्रदानिकेएकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे पितामह मैंने गौओंका गोबर लक्ष्मीसे भी सेवित सुना है उसमें मुझको कुछ सन्देहहै उसको आपके मुखसे सुनाचाहताहूं १ भीष्मजी बोले कि हे भरतवंशियों में बड़े साधु राजायुधिष्ठिर इसस्थानपर मैं इस प्राचीन इतिहास को भी कहताहूं जिसमें कि गौओं से और लक्ष्मीजी से प्रश्नोत्तर रूप सम्वादहै २ दैवयोगसे किसीसमय लक्ष्मीजी अपना दिव्यरूप बनाकर इसलोक में गौओं के मध्यमें आईं तब गौवें उनके धन और रूपको देखकर बड़ेआश्चर्य युक्तहुईं ३ गौवें बोलीं कि हे देवि तुम कौनहो कहांसे आईहो तुम इस पृथ्वीपर स्वरूप में असादृश्यहो हे महाभागिनि हम तेरेधन और स्वरूपसे आश्चर्य्ययुक्त हैं ४ हम तुमको जानना चाहती हैं कि तुमकौनहो और कहांको जानाचाहती हो हे उत्तमवर्ण महास्वरूप की धारण करनेवाली तुम इस सब वृत्तान्त को मूल समेत हमसेकहो ५ लक्ष्मी बोलीं कि तुम्हारा कल्याणहो मैं लोकों की अभीष्ट रूपहोकर लक्ष्मीनामसे प्रसिद्धहूं मेरेही त्यागेहुये दैत्यलोग हजारों वर्षोंतकना-

शमानहुये ६ और मेरे अङ्गीकार कियेहुये देवतालोग बराबर हजारोंवर्षोंसे आनन्दों को भोगरहे हैं इन्द्र सूर्य चन्द्रमा विष्णु जल अग्नि ७ देवता और ऋषि लोग मेरेही अङ्गीकृतहोकर शुद्धहोते हैं हे गौओ मैं जिनके पास नहीं रहती हूं वह सब नाशको पाते हैं ८ मुझहीसे सेवितहोकर धर्म अर्थ काम भी सुखसंयुक्त होते हैं हे सुखदेनेवाली गौओ मुझको तुम ऐसे प्रभाववाली जानों ६ मैं भी तुम सबके पास निवासकरना चाहती हूं और तुमसे प्रार्थना करती हूं कि तुम सब भी लक्ष्मी से सेवित होजाओ १० गौवें बोलीं कि तुम सदैव स्थिर न रहनेवाली और चपलहो और सबकी साधारण स्त्रीहो इसहेतु से हम सब तुमको नहीं चाहती हैं तेराकल्याण होय जहां तुम जानाचाहती हो वहां चलीजाओ ११ हम सब तेजस्वी शरीरवाली हैं हमको तुमसे क्या प्रयोजन है तुम अपनी इच्छापूर्व्वक जाओ हम तुमसे भी अधिक मनोरथ सिद्धकरनेवाली हैं १२ लक्ष्मीबोलीं कि हे गौओ यह तुम्हारी यहां कैसी योग्यताहै जो तुम मुझको अंगीकार नहीं करती हो किसहेतु से मुझ दुष्प्राप्य पूजित और साधु स्त्री को अंगीकार नहीं करती हो १३ हे सुन्दर व्रतवाली गौओ लोकमें यह सत्य २ वचन घूमताहै कि किसी के पास विनाबुलाये जाने से अवश्य अप्रतिष्ठा होती है १४ मनुष्य देवता दानव गन्धर्व पिशाच उरग राक्षस बड़े २ उग्रतपोंको करके मुझको सेवन करते हैं १५ और तुम्हारा इसलोक में यह प्रभावहै इससे तुम मुझको अंगीकारकरो मैं संसारके किसी जड़ चैतन्य जीव से भी अप्रतिष्ठामानने के अयोग्य नहीं हूं १६ गौवें बोलीं कि हे देवि न हम तुम्हारा अपमान करती हैं और न अप्रतिष्ठा करती हैं तुम एकत्र स्थिर न रहनेवाली होकर चित्तसे भी चलायमानहो इसी हेतुसे हम तुमको त्यागकरती हैं १७ हे निष्पाप बहुत बातों से क्या प्रयोजन है तुम जहां चाहो वहांजाओ हम सब तेजस्वी शरीरवाली हैं हमको अब तुमसे क्या प्रयोजनहै १८ लक्ष्मी बोलीं कि हे उत्तरदेनेवाली गौओ मैं तुम्हारे ऐसे उत्तरदेने से सब संसार में अप्रतिष्ठितहूंगी इससे हमारेऊपर कृपाकरो १६ तुम बड़ी बड़भागिनी और रक्षालेनेवालोंकी आश्रयरूपहो इससे मुझ निर्दोषी और आकांक्षी की सदैवरक्षाकरो २० मैं अपनी प्रतिष्ठाको चाहती हूं और आप सदैव कल्याणरूपाहो मैं अकेलीही तुम्हारे किसी छोटे से छोटेअंग में निवासकरना चाहती हूं २१ हे निष्पाप गौओ तुम्हारे अंगों में कोई अंग नीच नहीं दिखाई देताहै

तुम धर्म्म के वृद्धिकी हेतुरूपहोकर उद्धार करनेवाली और श्रेष्ठ ऐश्वर्यों से भरी हो तुम अपने अंगों में जहां आज्ञाकरो वहां मैं जाकर निवासकरूं २२ हे राजा लक्ष्मी के ऐसे बचन सुनकर शुभरूप दीनोंपर दयाकरनेवाली सब गौओं ने परस्परमें सलाहकरके लक्ष्मीजी को उत्तरदिया २३ कि हे यशस्विनी शुभलक्ष्मी हम लोगों को तेरीप्रतिष्ठा अवश्य करनी चाहिये तुम हमारे गोबर और मूत्र में निवासकरो यही हमारा महापवित्र अंगहै २४ लक्ष्मी ने कहा कि तुमने मेरेऊपर बड़ाअनुग्रह किया जो मुझको अपने गोबर मूत्रमें निवासदिया ऐसाही होगा और तुम्हारा कल्याणहो हे सुखदायी गौओ मैं तुमसे पूजितहुई २५ हे भरतबंशी वह लक्ष्मीजी गौओं से ऐसा नियमकरके देखनेही देखते उसी स्थानपर अन्तर्द्धान होगई २६ हे पुत्र इसरीतिसे गौओं के गोबरका माहात्म्य तुमसे मैंनेकहा अब मुझसे उनके माहात्म्यको श्रवणकरो २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेश्रीगोसंवादोनामद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि हे युधिष्ठिर जो मनुष्य गौओंका दान करते हैं और जो होमसे बचेहुये शेषअन्नको भोजनकरते हैं उनके नित्य यज्ञजारी रहते हैं १ इस लोकमें दही और घृतकेबिना यज्ञ नहीं बर्त्तमान होसक्ताहै इसी हेतुसे वह यज्ञका मूल कहाजाताहै २ सब दानों में गौकादान प्रशंसा कियाजाताहै यह गौ महापवित्रात्मा और उद्धार करनेवाली हैं ३ और देहकी पुष्टि और पराक्रम के निमित्त भी उनका सेवन करे उन्हीं का दूध दही और घृत सब पापोंका दूर करनेवाला होताहै ४ इसलोक और परलोकमें गौओंको उत्तम तेजबर्णन करते हैं हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ गौओं से उत्तम और अधिक पवित्र दूसरीबस्तु नहीं है ५ हे युधिष्ठिर इसस्थानपर इस प्राचीन इतिहासको भी कहताहूं जिसमें कि ब्रह्माजी और इंद्रका प्रश्नोत्तरहै दैत्यों के पराजय होनेपर इंद्र तीनोंलोकोंका स्वामीहुआ ६ और सब सृष्टि के जीव प्रसन्नचित्तहोकर अपने सच्चेधर्मों पर नियतहुये इसके अनन्तर ऋषि गन्धर्व किन्नर उरग राक्षस देवता असुर और पक्षियों में गरुड़आदि और इसीप्रकार सब प्रजापतिलोग ७ । ८ किसीसमय ब्रह्माजी के पासजाकर इकट्ठे हुये हे कुन्तीनन्दन नारद वा पर्व्वत ऋषि और दिव्यगानों के गानेवाले बिश्वा-

बसु और हाहा हूहू नाम गन्धर्व्वों ने उस प्रभु ब्रह्माजी की उपासनाकरी वायुने सुगन्धित पुष्पों की वर्षाकरी ६ । १० और ऋतुओं ने भी अपने २ समय के दिव्य २ सुगन्धयुक्त पुष्पों को बर्त्तमान किया तात्पर्य्य यहहै कि सब जीवों के समूह उस देवसमाजमें ११ जो कि दिव्य शब्दों से शब्दायमान दिव्यस्त्री और चारणों से मोहित था उस देवसमाज में इन्द्रने देवताओं के ईश्वर ब्रह्माजी को नमस्कार और दंडवत् करके यह प्रश्न किया १२ । १३ कि हे भगवन् ब्रह्माजी किस हेतुसे गोलोक सब लोकों से श्रेष्ठतरहै इसको मैं अच्छीरीति से जानना चाहताहूं १४ हे ईश्वर इसलोकमें गौओं ने कौनसातप और ब्रह्मचर्य्य कियाहै कि रजोगुणोंसे रहित गौवें देवताओं के ऊपर सुखपूर्व्वक विराजमान रहती हैं १५ इसके पीछे ब्रह्माजी ने उस बलि के मारनेवाले इन्द्रको उत्तर दिया कि हे इन्द्र गौवें तुमसे सदैव अपमान की गई हैं १६ इसीकारण तुम इनकी माहात्म्य को नहीं जानते हो हे देवताओं में समर्थ इन्द्र जिसहेतुसे कि गौओंका प्रभाव और माहात्म्य बड़ाहै १७ उसको सुनो कि गौवें यज्ञका अंगबर्णन कीगई हैं इसी से वह यज्ञरूपहैं उनके बिना किसीप्रकारसे भी यज्ञ नहीं होसक्ता १८ ये गौवें दूध और घृतसे लोकोंको सहायता देती हैं और इनके पुत्रभी लोकोंको कृषिकर्म्मों में सहायता देते हैं १९ वह बैल लोकमें अनेक प्रकारके दुःखोंको सहकर नानाप्रकार के बीजोंको उत्पन्नकरते हैं उसी से देव पितृ यज्ञों के भोजनके पदार्थ सब उत्पन्न होते हैं २० और यज्ञों के बड़े उपकारी दूध दही घृत भी इन्हीं गौओं से उत्पन्न होते हैं हे देवराज यह गौवें धर्म के वृद्धिकी हेतुरूपहैं और भूख प्याससे पीड़ावान् बैल अनेक प्रकारके बोझोंको उठाते हैं २१ यह गौवें अपने कर्मों से मुनिलोग और प्रजाओंका पोषणकरती हैं और शुभकर्मों से निश्छल ब्यवहारोंकी करनेवाली हैं २२ इसी हेतुसे यह गौवें हमारेऊपर सदैव निवास करती हैं हे इन्द्र यह उनके ऊपर रहनेकाकारण मैंने तुझसे कहा २३ हे शतक्रतु इन्द्र मैंने गौओं का लोक सबसे ऊपर बर्णन किया यह गौवें बरपानेवाली होकर आपभी बरकी देनेवाली हैं २४ यह गौ पवित्रकर्मोंकी करनेवाली शुभलक्षणवती भी हैं हे देवताओं में बड़े साधु जिस प्रयोजन से कि गौवें पृथ्वीपर गईं २५ उस हेतुको भी मुझसे सुनो हे तात पूर्व्व सतयुग में महात्मा इन्द्रसमेत देवताओं के २६ तीनों लोकों में राज्यकरतेहुये पुत्रकी प्राप्ति के निमित्त एकचरण से खड़ेहोकर कठिन

और घोर तपस्या करनेवाली अदिति के गर्भ में विष्णुजी के नियतहोनेपर बड़ी तपस्या करनेवाली उस महादेवी अदिति को देखकर २७। २८ दक्षकी पुत्री प्रसन्नचित्त धर्मपर नियत देवी सुरभीनाम गौ ने बड़ी घोरतपस्याकरी २९ देवता गन्धर्वों से सेवित सुन्दर कैलासके शिखरपर नियतहोकर वह देवी एक चरणसे खड़ीहुई ३० और ग्यारहहजार बर्षपर्य्यंत खड़ीहोकर तप किया तब ऋषि और महाउरगों समेत देवतालोग उसके उग्रतपसे प्रसन्नहुये ३१ और मुझको साथ लेकर उसके पास नियतहुये इसकेपीछे मैंने उस तपस्या में प्रवृत्त देवी से कहा कि ३२ हे निर्द्दोष महाभाग शोभायुक्त देवी तू किस निमित्त ऐसा महाघोरतप करती है मैं इस तेरीतपस्यासे प्रसन्नहूं ३३ हे देवि मैं बरका देनेवालाहूं तूभी अपने अभीष्ट बरकोमांग ३४ हे इन्द्र मेरे इसबचनको सुनकर सुरभी ने कहा कि हे पापों से रहित सब संसार के पितामह भगवान् ब्रह्माजी मैंने बर लेनेके लिये तपस्या नहीं करी है मेरी केवल यही तपस्याहै कि आपमुझपर प्रसन्नहूजिये ३५ ब्रह्माजी बोले हे देवेन्द्र शचीपति इन्द्र उस सुरभी के बचनको सुनकर जो मैंने उससे कहा उसको तुम सुनो ३६ अर्थात् मैंने कहा कि हे शुभमुखी देवी मैं तेरे निष्काम तपसे बड़ाप्रसन्नहूं इसी से तुझको अविनाशीपनेका बरदान देताहूं ३७ तू तीनों लोकों के ऊपर ब्रह्मलोकमें निवासकरेगी मेरीप्रसन्नतासे उसलोक का नाम गो-लोक विख्यातहोगा ३८ हे महाभाग तेरे सब बेटे और बेटी नरलोकों में शुभक-र्मीहोकर निवासकरेंगे ३९ हे शुभदेवी तेरे चित्तसे बिचारेहुये सब दिव्य मानुषी भोग तुझको प्राप्त होंगे ४० हे इन्द्र उस सुरभी के लोक सब अभीष्ट पदार्थों से संयुक्तहैं वहां न वृद्धा अवस्था न मृत्यु और न अग्निहै ४१ और वहां कोई दैवी उपद्रव और अप्रियवस्तु भी नहीं है वहां दिव्य वनोंसहित बड़ेउत्तम भवनहैं ४२ और अच्छे प्रकारके स्वेच्छाचारी उड़नेवाले बिमानहैं हे कमललोचन इंद्र वहां ब्रह्मचर्य तप सत्य और लोकभी प्राप्तकरना सम्भवहै यह सब वृत्तान्त मैंने तुझसे कहा ४३।४५ हे असुरों के मारनेवाले इसी से तुमको गौओंका निरादर कभी न करनाचाहिये ४६ भीष्मजी बोले कि हे युधिष्ठिर इन्द्रने इसको सुनकर गौओंका सदैव पूजनकरके उनकी प्रतिष्ठा को किया ४७ हे बड़े तेजस्वी यह सब गौओं का माहात्म्य अत्यन्तपवित्र उद्धारका करनेवालाहै यह सब तुझसे बर्णन किया ४८ हे पुरुषोत्तम यहगौओंका माहात्म्य सबपापोंसे छुटानेवालाहै जो सावधान

मनुष्य सदैव हव्य कव्य यज्ञ और पितरों के श्राद्धादिमें इस माहात्म्यको ब्राह्मणों के सम्मुख वर्णनकरेगा उसके पितरोंको सब अभीष्टोंका देनेवाला सामान प्राप्त होगा ४६। ५० गौओंमें भक्ति रखनेवाला मनुष्य जो२ चित्तसे चाहताहै उस २ को प्राप्तकरताहै और जो २ स्त्रियांभी गौओंमें भक्ति रखनेवाली हैं वहभी अपने अभीष्टोंको प्राप्त करती हैं ५१ पुत्रका चाहनेवाला पुत्रको पाताहै कन्याका चाहनेवाला उत्तम कन्याको पाताहै धनाकांक्षी धनको धर्म्मका चाहनेवाला धर्म्मको ५२ विद्याकांक्षी विद्याको और सुखाभिलाषी सुखको पाताहै हे भरतर्षभ गौओं की भक्ति से कोई वस्तु दुष्प्राप्य नहीं है ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेगोधर्मतपवर्णनेत्र्यशीतितमोऽध्यायः ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि पितामहने यह गौओं का उत्तमदान और मुख्यकर इस लोकमें धर्मके विचारनेवाले राजाओंका श्रेष्ठ धर्म वर्णनकिया १ यहराज्य सदैव दुःखरूप है और जो अपवित्रात्मा मनुष्य हैं उन पुरुषों से इसका प्रबन्धकरना कठिनतरहै बहुधा राजालोगोंकी अशुभगति होती है २ उस स्थानपर पृथ्वीका दानकरनेमें अवश्य पवित्रहोते हैं हे कुरुनन्दन आपने सम्पूर्णधर्म मुझसे वर्णन किये ३ और गौओंका दानभी तुमने वर्णनकिया इस गोधर्म को पूर्व्वसमय में राजानृग और नाचिकेत ऋषिने प्रकटकिया था ४ वेदोंकी गुप्त २ बातेंभी वर्णन करीं सब कर्म और यज्ञोंमें गौ और सुबर्णकी दक्षिणा कहीगई है ५ इसस्थान में एक बड़ी श्रुतिहै कि सुबर्णकी दक्षिणा देनी योग्यहै हे पितामह मैं उसको ठीक ठीक सुनना चाहताहूं ६ सुबर्ण क्या वस्तुहै और कैसे प्रकारसे कहां और किस समय उत्पन्न हुआहै उसका मूल क्याहै देवता कौनहै और फल क्याहै और किसरीतिसे उत्तम कहाजाताहै ७ ज्ञानी पुरुष किसहेतुसे सुबर्ण के दानकी प्रशंसा करतेहैं और यज्ञादिक कर्मों में किस कारणसे उत्तम दक्षिणा कहाजाता है ८ वह सुबर्ण किसहेतुसे पवित्रहोकर पृथ्वी और गौसे भी श्रेष्ठ गिनाजाताहै और दक्षिणामें सब धनों में उत्तमतरहै हे पितामह उसको मूलसमेत वर्णनकीजिये ९ भीष्मजी बोलेकि हेराजा अनेक हेतुओंसे भरीहुई जो सुबर्णकी उत्पत्ति है उसको तुमबड़ी सावधानी से सुनो जैसा कि मुझको निश्चय हुआहै १० जब

मेरे पिता शन्तनुने शरीरको त्यागदिया मैं उनके श्राद्ध करनेकी इच्छासे गंगा द्वार अर्थात् हरद्वारमें गया ११ हे पुत्र मैंने वहांजाकर पिताके श्राद्धको प्रारम्भ किया तबवहां मेरी माता श्रीगंगाजीने मेरी सहायताकरी १२ फिर मैंने गंगाजी के पास शुद्धऋषियों को बैठाकर जलदानादिक कर्म्म करना प्रारम्भ किया १३ और बड़ी सावधानीसे उस पूर्वकर्मको समाप्त करके श्रेष्ठरीतिसे पिण्डदान देना प्रारम्भ किया १४ इसके अनन्तर सुन्दर बाजूबन्द और दिव्यभूषणों से अलंकृत एकभुजा उस स्थापन को चीरकर बाहरनिकली हे भरतर्षभ राजा युधिष्ठिर १५ मैंने उस उठीहुई भुजाको देखकर बड़ाआश्चर्य किया कि मेरापिता मेरे प्रत्यक्ष में हाथों से पिण्डलेनेवाला है १६ तब शास्त्रके विचार से मेरी यह बुद्धिहुई कि यहविधि वेदों में नहीं कही है १७ कि इस लोकमें मनुष्यको हाथमें पिण्डदेना चाहिये फिर मेरी बुद्धिहुई कि इसलोक में किसी स्थानपर पितृलोग मनुष्य के दियेहुये पिंडको नहीं लेते हैं १८ वेदोंमें ऐसा कहाहै कि पिण्ड कुशा और नीर देना चाहिये फिर मैंने उस अपने पिताके उत्तम हाथकी अवज्ञाकरके १९ शास्त्र के प्रमाणसे पिण्डकी सूक्ष्मविधिको विचारकर उस सब सामग्री समेत पिण्डको कुशाओंकेही ऊपरदिया २० हे भरतर्षभ शास्त्रकी रीति के अनुसार वह पिण्ड मैंने दिया इसकेपीछे वह मेरे पिता की भुजा गुप्तहोगई २१ इसकेपीछे पितरों ने स्वप्न में मुझको दर्शनदिया और प्रसन्नचित्त होकर मुझसे बोले कि हे भरतर्षभ २२ जो तुम धर्मको नहीं भूलतेहो इसीसे हम तेरे इस बिज्ञानसे प्रसन्नहैं हेशास्त्रके प्रमाण करनेवाले राजा २३ तुमने इस धर्म्म से अपना आत्मा, धर्म्म, शास्त्र, ऋषियों समेत वेद, पितृ और साक्षात् पितामह ब्रह्माजी प्रजापति और सबगुरु २४ मर्यादाओंपर नियतकिये और अपने शास्त्रकी मर्य्यादा को त्याग नहीं किया हे भरत श्रेष्ठ अब तुमने यह श्राद्धकर्म्म अच्छी रीति से प्रारम्भकिया २५ परन्तु पृथ्वी और गौओं के दानमें तुम सुबर्ण की दक्षिणादो हे धर्मज्ञ इसरीति से हम और हमारे सब पितामह २६ पवित्रहोंगे क्योंकि वह सुबर्ण महापवित्र और श्रेष्ठ है जो लोग कि सुवर्णका दानकरते हैं वह अपने दश पूर्व्व के और दशपरके पुरुषोंको तारते हैं २७ इसरीतिसे जब मेरेपित्रोंने कहा तब हे राजा मैं आश्चर्य में होकर जागपड़ा २८ और सुवर्ण के दानमें बुद्धिकरी हे भरतर्षभ राजायुधिष्ठिर इसके सिवाय एक प्राचीन इतिहासको भी सुनो २९ जोकि बड़े २ धनोंका दे-

नेवाला आयुको पूर्णकरनेवाला परशुरामजी के समक्ष में हुआहै अर्थात् पूर्व्व समयमें कठिन क्रोधयुक्त परशुरामजी के हाथसे ३० पृथ्वी इक्कीसबार क्षत्रियों से रहित कीगई इसके अनन्तर उन बड़ेबीर परशुरामजी ने सब पृथ्वी को बिजय करके उस यज्ञकी रचनाकरी जोकि ब्राह्मण क्षत्रियोंसे पूजित सबअभीष्ट पदार्थों सेयुक्त अश्वमेधनाम ३१ सब जीवमात्रों का पवित्र करनेवाला होकर तेज और कान्तीका बढ़ानेवालाहै हे महाराजा उसयज्ञकेद्वारा वह परशुरामजी अपने पाप कर्मोंसे छूटे ३२ परन्तु उस यज्ञके करनेसे भी वहसब पापों से नहींछूटे तब उन भार्गवजी ने बड़े यज्ञोंसे पूजनकरके ३३ वेदज्ञ ऋषियोंसे और देवताओं से पूछा कि हे महात्माऋषि और देवतालोगो हिन्सात्मक कर्म में प्रवृत्त मनुष्यों के पापोंका दूरकरनेवाला जो श्रेष्ठदान है उसको तुम सबलोग मुझसे कहो उनके इस बचन को सुनकर वेदज्ञ और धर्मज्ञ महर्षियों ने उनसे कहा ३४ । ३५ कि हे परशुराम जी वेदका प्रमाण देखने से वेदपाठी ब्राह्मणों का सत्कार कियाजाय इसकेपीछे पवित्रताके विषयमें ब्रह्मऋषियों के समुदायसे पूछना योग्यहै ३६ वह ब्रह्मज्ञानी जिस बातको कहैं वहीबात तुम श्रेष्ठरीति से करो इसके पीछे बड़े तेजस्वी भृगुनन्दनजीने इस बिषयको देवऋषि बशिष्ठ अगस्त्य और काश्यपजीसे पूछा कि हे वेदपाठी महात्मा ऋषिलोगो मैं आपसे पूछताहूं कि मेरी पवित्रता कैसे होसक्ती है ३७ । ३८ इसलोकमें किस कर्म योग वा कौनसे पवित्र दानसे मेरीशुद्धी होय हे बड़ेमहात्मा साधु अपार तेजधारी ऋषिलोगो जो आपकी मेरेऊपर बड़ी कृपाहै तो मुझसे कहिये कि कौनसी बातसे मेरी पवित्रता होसक्ती है ऋषिबोले कि हे भृगुनन्दनजी गौ पृथ्वी और धनको इसलोक में दानकरनेवाला मनुष्य पवित्रहोताहै यही हम सुनतेआये हैं ३९ । ४१ हेब्रह्मऋषि इसके बिशेष हम दूसरे उस उत्तम दानको भी तुमसे कहतेहैं जोकि बड़ापवित्र दिब्यरूप अग्निका पुत्र है ४२ वह पूर्वसमय में अपने पराक्रमसे लोकों को भस्मकरके इसलोक में प्रकट होकर सुवर्णनाम से बिख्यात हुआहै तुम भी उसीके दानसे शुद्धी को प्राप्तहोगे ४३ इसकेपीछे तेजव्रतवाले भगवान् वशिष्ठजीने उनसे कहा कि हे परशुरामजी वह अग्निके समान प्रकाशित सुबर्ण जैसे उत्पन्नहुआहै उसको सुनिये कि वह इसलोक में सुवर्णनाम उत्तमपदार्थ कहाजाता है वही आपको शुद्धकरेगा वह जिसरीति से और जिससे उत्पन्न हुआ है उसको भी मुझसे सुनो ४४ । ४५ वह

सुबर्ण बड़ी अग्नि रखनेवालाहै निश्चयकरके इस सुबर्णको अग्नि और चन्द्रमा रूपजानो ४६ बकरा अग्निरूपहै भेड़ बरुणरूपहै घोड़ा सूर्यरूप हाथी मृग नाग और भैंसा यह असुर रूपहैं यह शास्त्रका बचनहै ४७ हे भृगुनन्दन कुक्कुट बराह भी राक्षसरूपहैं और पृथ्वी गौ दूध जल यह चारों ऐश्वर्यरूप हैं यह स्मृतिहै ४८ सब जगतको मथकर तेजपुंज उत्पन्नहुआ हे ब्रह्मर्षीभृगुनन्दनजी इन सबसे भी उत्तम सुबर्ण बड़ा श्रेष्ठरत्न है ४९ इसी हेतु से देवता गन्धर्व राक्षस मनुष्य और पिशाच पवित्रहोकर उस सुबर्णको धारण करते हैं ५० हे श्रेष्ठभार्गव देवतालोग इसी सुवर्ण के मुकुट और बाजूबन्दसेयुक्त नानाप्रकारके स्वर्णमयी भूषणोंसे शोभायमान होते हैं ५१ हे नरोत्तम इसी हेतुसे पृथ्वी की सब पवित्र बस्तुओं से व गौ और रत्नों से भी वह सुबर्ण पवित्र और श्रेष्ठ कहागया है इसको आपजानो ५२ हे समर्थ इसलोक में पृथ्वी गौ और अन्य अनेक प्रकारके धनों से भी ५३ सुबर्णही का दान महाउत्तम और श्रेष्ठ कहाजाताहै हे देवता के समान तेजस्वी यह सुवर्ण अविनाशी और पवित्रहै इस पवित्र और उत्तम सुबर्णको केवल ब्राह्मणोंकेही अर्थ दानकरो ५४ इन सब दक्षिणाओं में सुबर्णही श्रेष्ठ कहाजाताहै जो मनुष्य सुवर्ण को देते हैं वह सदैव ऐश्वर्य्यमान होते हैं ५५ जो सुबर्ण को देते हैं वह मानों सब देवताओंकोही देते हैं क्योंकि अग्नि सब देवताओं का रूपहै और सुवर्ण अग्निरूपहै ५६ इसी हेतुसे सुवर्ण के दान करनेवाले से सब देवता दानकियेहुये होतेहैं हे पुरुषोत्तम इससे बढ़कर कोई वस्तु नहीं है ५७ हे सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठ ब्रह्मऋषि परशुरामजी अब मुझसे आप सुबर्णके माहात्म्यको सुनिये पर हे भृगुनन्दन मैंने पूर्व्वसमयमें पुराणों में न्यायके अनुसार वर्णन करनेवाले प्रजापतिजी के मुखसे सुनाहै ५८।५९ हे भार्गव भृगुनन्दनजी जब हिमालयं नाम उत्तम पर्वतपर शूलधारी महात्मा भगवान् रुद्रजीका बिवाह देवी रुद्राणीके साथहोने और देवीजीकेसाथ महात्मा रुद्रजीका संयोग होनेपर ६०।६१ प्रसन्नहोकर सब देवता रुद्रजी के पास आये हे भार्गवजी तब उनसब देवताओं ने बिराजमान शिवजी और देवी पार्व्वतीजी को देखकर साष्टाङ्गदण्डवत करी और हाथजोड़ नम्रता से यह कहा कि हे निष्पाप शिवजी महाराज आप महा तपस्वी तेजस्वी का संयोग जो इस उग्रतपस्विनी महातेजस्विनी उमादेवी के साथ हुआहै हे देवता आप और तेजस्वी देवी सफल तेजवाली है ६२। ६४

हे समर्थ देव तुम दोनोंकी सन्तान बड़ी पराक्रमी होगी निश्चयकरके वह संतान तीनोंलोकों में कुछ बाकी न छोड़ेगी ६५ हे दीर्घ नेत्रधारी योगेश्वर आप सब संसार की प्रियकारी इच्छाके अनुसार इन झुकेहुये देवताओं को बरदान दीजिये ६६ हे प्रभु हम सब यही चाहते हैं कि सन्तानके निमित्त जो आपका उत्तम तेजहै उसको रोको तीनोंलोक के साररूप आप दोनों लोकोंको तपाओगे ६७ निश्चयकरके आपकी वह सन्तान देवताओंको पराजय करेगी हे प्रभु देवी पृथ्वी आकाश और स्वर्ग ६८ यह तीनों आपके तेजके धारणकरनेको समर्थ नहीं हैं यह हमारा मतहै ६९ हे प्रभु भगवान् आप ऐसी कृपाकरिये जिससे कि तीनों लोक भस्म न होंय हे देवताओं में श्रेष्ठ आपका पुत्र देवीपार्वतीजी के गर्भ में उत्पन्न न होनेपावे आप अपने धैर्य्यसेही इस अग्निरूप तेजको रोकिये ७० हे ब्रह्मऋषि देवताओंकी इस प्रार्थनाको सुनकर भगवान् शिवजीने उनको उत्तर दिया कि ऐसाहीहोय ७१ शिवजीने देवताओंसे यह बचनकहकर अपने बीर्यको ऊपरकीओर चढ़ाया तभीसे शिवजी ऊर्ध्वरेताहुये ७२ तब वहां सन्तानके लोप होनेपर क्रोधयुक्त रुद्राणीजी ने स्त्री स्वभावसे उनदेवताओंसे कठोरबचनकहा ७३ जो कि तुमने मेरेपतिको पुत्रके उत्पन्नकरनेसे बंदकरदिया इसहेतुसे तुम सब देवता सन्तानरहित होगे ७४ अर्थात् हे आकाशचारी देवताओ जैसे कि तुमने मेरी सन्तानका अभावकिया इसी हेतुसे तुमभी सन्तानका सुख न देखोगे ७५ हे भार्गवजी वहां शापदेने के समय सब देवताओं के साथ में अग्निदेवता नहीं आये थे इसके अनन्तर देवी उमाके उस शापसे देवता असन्तानहुये ७६ तब रुद्रजी ने अपने अनूपम तेज को रोका परन्तु उनसे च्युतहोकर थोड़ासा तेज पृथ्वीपर गिरपड़ा ७७ और अग्निमें गया वहांजाकर उस तेजकी बड़ी वृद्धि हुई क्योंकि तेजमें मिलेहुये तेजने अपनी उत्पत्तिस्थान को प्राप्तकिया ७८ उसी समय में एक तारकनाम असुर हुआ उसके मारे इन्द्रादिक सब देवता भयभीत होकर महा ब्याकुलता पूर्व्वक पराजयहुये ७९ द्वादशसूर्य्य अष्टबसु एकादश रुद्र एकोनपंचाशत बायु दोनों अश्विनीकुमार साध्यगण यह सब उस दैत्यके पराक्रमसे अत्यन्त भयभीत हुये ८० देवताओं के भवन बिमान पुर और ऋषियों के आश्रमोंको भी असुरोंने छीनलिया ८१ फिर वह सब देवता और ऋषि लोग महादुखी चित्तहोकर प्रभु देवता ब्रह्माजीकी शरणमेंगये ८२॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेसुबर्णोत्पत्तिनामचतुरशीतितमोऽध्यायः ८४॥

पचासीवां अध्याय ॥

देवताओं ने कहा कि हे प्रभु ब्रह्माजी जिसको आपने बरदियाहै वह तारक नाम असुर देवता और ऋषियोंको दुःखदेताहै उसके मारनेका कोई उपाय विचार कीजिये १ हे पितामह उससे हम सब भयभीत हैं हे देव आप हमारी सब ओरसे रक्षाकरिये हमारा आपकेसिवाय औरकोई दूसरा आश्रय नहीं है २ ब्रह्माजी बोले कि मैं सब जीवों को समानदृष्टी से देखनेवालाहूं परन्तु मुझको अधर्म अच्छा नहीं लगताहै इससे देवता और ऋषियों के समूहोंका दुःखदायी तारक असुर शीघ्र मारनाचाहिये ३ हे बड़ेसाधु देवतालोगो वेद और धर्म के नाश न होने के कारण मैंने पूर्व्वही उपाय कररक्खा है तुम अपने संतापोंको दूरकरो ४ देवता बोले कि वह दैत्य आपही के बरदानके पराक्रमसे महाअहंकारी है उसको देवतालोग नहीं मारसक्ते हैं तो उसका कैसे नाशहोगा ५ हे पितामह उसने आप से बरमांग लियाहै कि मैं देवता असुर और राक्षसों के हाथसे नहीं मरूं ६ हे ब्रह्माजी पूर्व्वसमयमें सन्तानके रोकने के कारणसे देवी उमा पार्वतीजी ने सब देवताओं को शापदियाहै कि तुम सब असन्तान होगे ७ ब्रह्माजी बोले हे श्रेष्ठ देवतालोगो वहां पार्व्वती जी के शापदेने के समय अग्निदेवता नहीं था वही अग्निदेव असुरों के मारनेवाले अपने पुत्रको उत्पन्न करेगा ८ वह अग्निका पुत्र सब देवता, दानव, राक्षस, मनुष्य, गन्धर्व्व, नाग और पक्षियों को उल्लंघन अर्थात् सबसे अधिकहोकर ९ सफल प्रहारवाली शक्ति के द्वारा उसको मारेगा जिससे कि तुम भयभीत होरहेहो और जो अन्य २ असुरहैं उनको भी मारेगा १० सन्तानके अभिलाषी पुत्रकी उत्पत्तिका संकल्प अग्निमेंही सदैवकरते चले आये हैं यहबात सबलोग जानते हैं रुद्रजीका तेज जो कि अग्निमें गिरपड़ाथा वह शिवजी के शरीरसे पृथक् होगया है ११ अग्निदेवता असुरों के मारने के निमित्त उस दूसरे अग्नि के समान रुद्र तेजको गंगामें उत्पन्न करेगा १२ उस अग्निने शाप नहीं पायाथा इसहेतुसे कि वह वहां शापदेने के समय सब देवताओं के साथमें नहीं वर्त्तमानथा हे देवताओ इसी हेतुसे तुम्हारे भयका निवृत्त करनेवाला अग्नि का पुत्र उत्पन्नहोगा १३ अब तुम अग्नि को निश्चयकरो हे निष्पाप देवताओ मैंने इसरीति से तारकअसरके मारनेका उपाय तुमसे वर्णन

किया १४ तेजस्वियोंका शाप तेजोंपर नहीं होताहै निश्चयकरके सबप्रकारके पराक्रम दूसरे पराक्रमको पाकर निर्बल होजाते हैं १५ वह तेज उनकोभी मार सक्ताहै जो कि सबसे अबध्यहोकर बरके देनेवाले तपस्वी भी चाहैं होयँ फिर वह बड़ा देवता पुत्रके उत्पन्नहोनेके संकल्पमें प्रवृत्तचित्त हुआ १६ वह संसारकास्वामी इन्द्रियोंसे परे सर्व्वब्यापी सबका उत्पत्तिस्थान सबजीवों के हृदयमें शयन करनेवाला रुद्रजीसे भी उत्तम है १७ तेजों का समूह अग्निदेवता शीघ्रतासे निश्चयकरना चाहिये वहदेवता तुम्हारे चित्तकी अभिलाषाको पूर्णकरेगा १८ इसके पीछे देवता लोग ब्रह्माजी केइसबचनको सुनकर अच्छीरीतिसे शुद्धसङ्कल्प होकर अग्नि के निश्चय करनेको चले १९ इसकेपीछे उनअग्निके दर्शनके चाहनेवाले देवता और ऋषियोंने अग्निके खोजकरनेमें प्रवृत्तचित्तहोकर तीनोंलोकोंको देखा २०हे भार्गव जी वह महातपस्वी लोकमें विख्यात देवता और ऋषिलोग सबप्रकार के लोकों में घूमे २१ परन्तु दृष्टि से अगोचर जलमें लय होजानेवाले अग्निदेवको नहीं पाया तब वह अग्निके दर्शनाभिलाषी महासिद्ध लोग अत्यन्त अप्रसन्नहुये २२ हे भार्गवजी अग्निके तेजसे संतप्त महादुःखीचित्त रसातलसे उठनेवाले जलचारी जीव मंडूकने उन देवताओं से कहा २३ हे देवताओ वह अग्निदेव पातालमें निवास करते हैं क्योंकि मैं अग्नि से उत्पन्न होनेवाले तापसे तपितहोकर यहां आयाहूं २४ हे देवताओ वह भगवान् अग्नि अपने तेजोंसे जलोंको मिलाकर जलही में गुप्तहैं उन्होंनेही हम सबजीवोंको अत्यन्त तपायाहै २५ हे देवतालोगो जो तुम उसको देखा चाहतेहो तो वहां जाकर उनका दर्शनकरो २६ हे देवताओ जाओ हम अग्निकेभयका उपायकरेंगे इतना कहकर वह मंडूक शीघ्रही जलमें प्रवेश करगया २७ जब अग्निने मंडूकके दूतकर्मकोजाना तब अग्निने उसको शापदिया कि तू रसोंको नहीं जानेगा २८ मंडूकको ऐसा शापदेकर वह अग्नि देवता शीघ्रही किसी दूसरे स्थानमें रहनेको गये परन्तु अपना दर्शन किसीको नहीं दिया २९ हे महाबाहो भार्गवजी इसकेपीछे देवताओंने मंडूकोंके ऊपर जो२ कृपाकरी वह हम तुमसे कहते हैं ३० देवता बोले कि हे मंडूको अग्निके शापसे जिह्वासे खाली रसज्ञानरहित जो तुमहो सो हम लोगोंकी कृपासे बिना जिह्वाके भी सब बातें करोगे ३१ बिबरमें रहनेवाले निराहार अचेत सूखे निर्जीव होनेपर भी तुम्हारी रक्षा यह पृथ्वीकरेगी ३२ तुम अंधेरी रात्रिमें भी बिचरोगे उसमंडूक

को इतने आशीर्वाद देकर फिर देवतालोग अग्निके ढूंढ़नेको घूमे परन्तु अग्नि को कहीं न पाया ३३ तदनन्तर गजराज के समान किसीहाथीने आकर देवताओं से कहा कि ३४ अग्नि पीपलमें नियतहै तब तो महाक्रोधयुक्त होकर अग्नि ने उन हाथियोंको भी यह शापदिया ३५ कि तुम्हारी जिह्वा उलटीहोगी यह कह कर वह अग्निदेवता पीपलके वृक्षसे निकलकर शमी वृक्षमें प्रवेश करगये ३६ इसकेपीछे हे श्रेष्ठ महात्मा भार्गवजी देवताओं ने हाथियों परभी जो २ अनुग्रह किया उसको भी मुझसे सुनो ३७ देवताओं ने कहा कि हे हाथियो तुम उलटी जिह्वासे भी सबप्रकारके आहारोंको करोगे और बड़े उच्चस्वरसे अक्षरों से रहित वाणीको कहोगे ३८ हाथियोंको भी वरदान देकर फिर देवता अग्निके खोजने को चले ३९ हे वेदपाठी परशुरामजी उस शमीमें वर्त्तमान होनेवाली अग्निको फिर तोतेने आकर देवताओं को प्रकटकिया तब देवता उस अग्नि के पासगये और अग्निने तोतोंको भी शापदिया कि बातों के कहने से रहितहोगा ४० और हाथियों के समान तोतेकी भी जिह्वाको उलटी करदिया अग्निको देखकर दयावान् देवताओं ने तोतेसे कहा कि ४१ तुम तोतेके रूपमें अत्यन्त अवाक् नहीं होगे तुम प्रतिकूल जिह्वा होनेपर भी सबकी प्यारी और चित्तरोचक वाणी को बोलोगे ४२ जैसे कि बालक का निरर्थक शब्दभी सबको मधुर और प्यारा मालूम होताहै वैसेही तुम्हारेभी बचन मधुर और प्यारे सबको लगेंगे यह कहकर उस अग्निको शमी के बीच में देखकर उसी वृक्षको अग्निकास्थान और सब कर्म्मों में पवित्र किया ४३ तब से लेकर अबतक अग्नि देवता शमी के वृक्ष में सदैव दिखाई देते हैं ४४ वैसेही मनुष्यों ने भी अग्नि के प्रकट करनेको अनेक उपाय किये और जो जल कि अग्निसे स्पर्श कियेगये ४५ वह जल उसी शयनकरनेवाली अग्निके तेजसे संतप्तहोकर पर्व्वतीय झरनाओं से उष्णताको प्रकटकरते हैं ४६ तबतो अग्निदेवता उन आयेहुये देवतालोगों को देखकर पीड़ावान्हुये और पूछा कि हे देवताओ तुम्हारे यहां आनेका क्या कारण है ४७ तब सब देवता और ऋषियों ने उनसे कहा कि हम तुमको किसी काममें प्रवृत्त करेंगे आप उस कार्य्य के करने के योग्यहो ४८ उस कार्य्य के करने से आपका भी बड़ा गुणहोगा ४९ अग्निने कहा हे देवताओ उस अपने कार्य्यको कहो मैं उसको अवश्य करूंगा मैं तुम्हाराहितकारी कामकरनेको उपस्थितहूं तुम किसी

बातका सन्देह मतकरो ५० देवताओं ने कहा कि ब्रह्माजी के बरदान पाने से तारकनाम असुर बड़ाअहंकारी होकर हमको दुःख देताहै उसके मारनेका आप उपायकरिये ५१ हे महाभाग प्यारे अग्नि तुम इन देवता प्रजापति और ऋषियों के समूहोंको भी चारोंओर से रक्षाकरो ५२ हे प्रभु अग्नि तुम उस अपने बड़े बीर पराक्रमी अतुलतेजस्वी पुत्रको उत्पन्नकरो जो उस असुरको मारकर हमारे भय को दूरकरे ५३ हे प्रभु महादेवी उमाजी से शापित हमलोगों को रक्षाका आश्रय आपके सिवाय दूसरा नहीं है इसहेतुसे आप हमारी रक्षाकरो ५४ देवताओं के इस बचनको सुनकर वह भगवान् अग्निदेवता उन देवताओं के कहने को अंगीकारकरके भागीरथी श्रीगंगाजीके पासगये ५५ और उनसे संयोग किया तब गंगाजी ने उसके गर्भको धारण किया और क्रमसे थोड़ेही दिनों में वह गर्भ ऐसा बड़ा होगया जैसे कि सूखे बनमें लगीहुई अग्नि वृद्धिहोती है ५६ उस देवताके तेजसे ब्याकुलचित्त गंगाजी ने बड़ी सन्तप्तता को पाया और उस गर्भ के धारणकरने को समर्थ न हुईं ५७ जब कि अग्निदेवताने उस तेजभरे गर्भको गंगाजी में नियत कियाथा उसीसमयके पीछे किसी असुरने गंगाजी के समीप आकर भयभीतताका शब्द किया ५८ फिर अकस्मात् उत्पन्नहोनेवाले उस बड़े भयकारी शब्द से वह गंगाजी भयभीतहोकर फैलेहुये नेत्रों से महा ब्याकुलचित्तहुईं ५६ और ऐसी अचेत होगईं कि अपने शरीरसमेत उस गर्भ के सम्हालने को समर्थ न हुईं हे वेदपाठी परशुराम जी तबतो तेजसे पूर्ण कम्पायमान शरीर ६० गर्भके वेगसे अत्यन्त ब्याकुलहोकर गंगाजी ने अग्निसे कहा कि हे भगवन् मैं इस तेरे तेजके धारणकरनेको समर्थ नहीं हूं ६१ मैं इसकेमारे ब्याकुल और अचेतहूं पूर्व के समान मैं सावधानचित्त नहीं हूं हे निष्पाप भगवान् अग्नि मैं बहुत ब्याकुलहूं मेराचित्त नाश हुआजाताहै ६२ हे संतप्त करनेवालों में श्रेष्ठ मैं इस गर्भ के धारणकरने को समर्थ नहीं हूं इसको मैं दुःखसेही त्यागकरूंगी किसी दशामें अपनी इच्छासे नहीं त्यागूंगी ६३ हे बड़े तेजस्वी अग्निदेवता इस तेजसे मेरास्पर्श अच्छीरीति से नहीं है उससे अत्यन्तसूक्ष्मभी मैं आपत्तिके समय धारण करसकी हूं ६४ हे अग्नि इस स्थानपर जो गुणवान् वा निर्गुणहै और वह चाहे धर्महोय वा अधर्म होय मैं उसको अपनेमेंही जानती हूं ६५ इसके अनन्तर अग्निने उन गंगाजीसे कहा कि धारणकरो धारणकरो मेरे तेजसे भराहुआ

यह गर्भ बड़े गुण तेज और फलोंका उदयकरनेवाला है ६६ तुम सम्पूर्ण पृथ्वी के उठाने और धारणकरनेको समर्थहो दूसरे के गर्भ धारणकरने के सिवाय तेरी कुछ हानि नहीं है ६७ तब अग्नि और देवताओं से निषेधकीहुई उस श्रेष्ठ गंगा नदीने उस गर्भको मेरुनाम उत्तम पर्व्वतपर छोड़ा ६८ अर्थात् धारणकरने में समर्थ रुद्रजी के तेजसे व्याकुल गंगाजी उस गर्भको अपनी सामर्थ्य से धारण करनेको समर्थ नहींहुई ६९ तब गंगाजीने उस अग्निकेसमान प्रकाशित उस गर्भको बड़े दुःखसे त्यागकिया हे भार्गवजी तब अग्निने उन गंगाजीको दर्शन देकर ७० कहा कि हे गंगादेवी वह गर्भ कैसे सुखका उत्पन्न करनेवाला है और किसप्रकारके वर्ण और रूपको दिखाई देताहै और कैसे तेजसे भराहुआहै इससब वृत्तान्तको मुझसे कहो ७१ गंगाजी बोलीं कि हे निष्पाप निश्चयकरके यह गर्भ जातरूप सुवर्णके रूपकाहै और तेजमें आपकेसमानहै देखो उसीसुंदरवर्ण निर्मल प्रकाशमान ने उस पर्व्वतको भी प्रकाशित करदियाहै ७२ हे तप्त करनेवालों में श्रेष्ठ उसकी सुगन्धि उनह्रदोंके समान शीतलहै जो कि पद्म और उत्पलोंसेयुक्त कदम्बों के पुष्पोंसे घिरेहुये हों ७३ जैसे कि सूर्य्यकी किरणों से संसार प्रकाशमान होताहै उसीप्रकार उस गर्भके तेजसे पृथ्वीकी जिन२ वस्तुओं ने पर्वतको स्पर्शकिया ७४ वह सब वस्तु सुवर्णरूप होगईं वह बालक पर्वत नदी और झरनाओं के चारोंओर को दौड़कर ७५ सब जड़ चैतन्यों को कँपाताहुआ तीनों लोकों में घूमा हे अग्नि वह आपका पुत्र महा रूपमान सूर्य और वैश्वानरके समान प्रकाशयुक्त कान्ती में दूसरे चन्द्रमा के समानहै ७६ हे भार्गवनन्दन ऐसे कहकर वह गंगादेवी उसी स्थानपर अन्तर्द्धान होगई और वह तेजस्वी अग्नि भी देवताओं के कार्यको करके ७७।७८ अपने अभीष्ट देशको गये इसलोक में इनगुण और कर्मों के कारणसे अग्निका नाम ऋषि और देवतालोगोंने हिरण्यरेता विख्यात किया तभी से पृथ्वी देवी भी बिश्वमती प्रसिद्धहुई ७९ वह अग्नि से उत्पन्न गंगाजीका पुत्र महा तेजस्वी अपूर्व दर्शनवाला बालक दिव्य सुरोंके नन्दनादि बनोंको पाकर बड़ाहुआ ८० और कृत्तिका नक्षत्रने उसप्रातःकालके सूर्यके समान तेजस्वी बालकको देखकर अपने स्तनके दूधको पिलाकर उसका पोषणकिया ८१ इसी हेतुसे उसबड़े तेजस्वीका नाम कार्त्तिकेय विख्यात हुआ और गर्भके डालनेसे स्कन्धभी इनकानाम प्रसिद्धहुआ और गुहा अर्थात्

गुफामें निवासकरनेसे इनका गुह नाम प्रकटहुआ ८२ इसरीतिसे अग्निका पुत्र सुवर्ण उत्पन्नहुआ सुवर्णोंके भेदोंमें से जांबूनद नाम सुवर्ण सब सुवर्णों से श्रेष्ठ होकर देवताओंका भी भूषणहै ८३ तबसे लेकर यह जातरूप सुवर्ण भी सब रत्नोंमें रत्न और भूषणों में श्रेष्ठ कहाजाता है ८४ यह सुवर्ण पवित्रोंका भी पवित्रहोकर मंगलोंका भी मङ्गलरूप है यह सुवर्ण प्रजापति भगवान् अग्निही है ८५ हे बड़े साधु ब्राह्मण कंकनाम सुवर्ण पवित्रों का पवित्र है और जातरूप नाम सुवर्ण अग्नि और जलरूप कहागया है ८६ वशिष्ठजी बोले हे परशुरामजी यह कथा भी जोकि सुवर्ण की उत्पत्तिके विषय में वर्णन की गई है इसमें ब्रह्माजी का ब र्णनहै ८७ और मैंने पूर्व्वसमयमें सुनी है हे प्रभु तात परशुरामजी महादेवजी के वरुणरूप धारणकरनेपर उस ईश्वर शिवजी के वारुणैश्वर्य्य में ८८ नीचे लिखे चमत्कार उत्पन्नहुये अग्निको अग्रगामी रखनेवाले सब मुनि देवता यज्ञांग मूर्त्तिधारी वषट्कार ८९ सामवेद और यजुर्वेद की मूर्त्तिधारी हजारों ऋचा वा पदक्रम से संस्कृत मूर्त्तिधारी ऋग्वेद भी वहां आकर वर्त्तमानहुआ ९० लक्षण सुरास्तोम निरुक्त सुरपंक्ति ॐकार निग्रह परिग्रह यह सब शिवजी के नेत्रमें नियतहुये ९१ उपनिषदों समेत वेद विद्या सावित्री भूतभविष्य और वर्त्तमान को भी शिवजी नें धारणकिया ९२ हे प्रभु तब पिनाक धनुषधारी ने आपही से अपनी आत्मासे आत्मा को आहुतिदी और बहुतसे रूप युक्त यज्ञों को शोभित किया ९३ स्वर्ग अन्तरिक्ष पृथ्वी और पृथ्वी के स्वामियों केभी स्वामी शिवजी हैं और यही शिवजी सब विद्याओं के ईश्वर श्रीमान् अग्निभी हैं ९४ यही सब जीव मात्रों के स्वामी भगवान् शिवजी ब्रह्मा, शिव, रुद्र, वरुण, अग्नि और प्रजापति नामसे भी कहेजाते हैं ९५ हे भृगुनन्दन तब उन पशुपति महात्मा वरुण जीके यज्ञ में मूर्त्तिधारी यज्ञतप क्रत प्रकाशित ब्रत रखनेवाली देवी दीक्षा दिग्पालों समेत सब दिशा ९६ देवाङ्गना देवकन्या और देवताओं की माता यह सबभी इकट्ठी होकर प्रसन्नचित्त वर्त्तमान हुईं उनको देखकर ब्रह्माजी का बीर्य पृथ्वीपर गिरा ९७।९८ तब पूषानाम देवताने अपनेहाथसे उसवीर्य्यसंयुक्त धूलिको उठाकर उसी अग्निमेंडाला ९९ इसके अनन्तर देदीप्य अग्निवाले यज्ञके जारी होनेपर ब्रह्माजी के हवन करनेके समय जीवोंकी उत्पत्तिहुई १०० हे भृगुनन्दनजी उन ब्रह्माजीने उस पृथ्वीपर गिरेहुये वीर्यको श्रुवे में रखकर घृतके समान मन्त्रपूर्वक

अग्निमें हवनकिया १०१ उसवीर्य्य के स्वामीने उस वीर्य्यसे चारोंखानिके जीवों को उत्पन्न किया व उस त्रिगुणात्मक तेजसम्बन्धी रजोगुण भागसे तैजसजीव उत्पन्नहुये १०२ तमोगुणके भागसे तामसीजीव पैदाहुये और दोनोंगुणों में व्यापकरूप धर्म्मका हेतु जो सतोगुणहै वह प्रकाशरूप बुद्धिका स्वरूप है और उस बुद्धिकास्वरूप आकाशादिक सब विश्वहै वह सब प्रकटहुये १०३ इसीप्रकार सब तमोगुणरूप भी प्रकटहुये इन जड़ शरीरों में सतोगुणका प्रकाश उत्तम तेजहै और उसीप्रकार उससे धर्मकी प्रवृत्ती है हे प्रभु इसी हेतुसे उस अग्निमें वीर्य्यके हवनहोनेसे तीन पुरुष उत्पन्नहुये १०४ वह तीनों पुरुष शरीरवाले होकर अपने२ कारणजन्य गुणों से संयुक्त थे साक्षात् ज्वालासे प्रथम तो भृगुऋषि उत्पन्नहुये और अङ्गारों से अङ्गिराऋषि उत्पन्नहुये १०५ अङ्गारों में नियत थोड़ी ज्वालासे अन्यकवि नामऋषि उत्पन्नहुये भृगुजी ज्वालाओं से उत्पन्नहुये हैं इसी हेतुसे भृगुनाम से प्रसिद्धहुये १०६ अग्निके स्फुलिंगोंसे मरीचिऋषिहुये और मरीचि ऋषिकेपुत्र कश्यपजीहुये अंगारों से उत्पन्नहोनेसे अंगिराऋषि नामहुआ और कुशाओं के समूहों से बालखिल्य ऋषि उत्पन्नहुये १०७ और इसी कुशाओं के समूहों से एकऋषि और भी उत्पन्नहुये उस समय देवता आदिकों ने अत्र अत्र शब्द कहा इसीसे उनको अत्रिऋषि कहते हैं १०८ तपशास्त्र और गुणों के चाहनेवाले वैषानसनाम ऋषि उत्पन्नहुये और अश्रुपातों से बड़े स्वरूपमान दोनों अश्विनीकुमार उत्पन्नहुये १०९ बाकी प्रजापति उसकी इन्द्रियों से प्रकटहुये शेष ऋषिलोग उसके रोमोंसे श्वेदसे छन्द और बलसे मन उत्पन्नहुआ ११० इसीकारणसे शास्त्रज्ञ ऋषियों ने वेदका प्रमाण देखने से कहा है कि अग्नि सबदेवता रूपहै वा सबदेवताही अग्निकेरूपहैं १११ काष्ठ और काष्ठमें जो लाक्षाआदि होती हैं वही महीने पक्ष दिन रात्रि और मुहूर्त्तहुये और जो ज्योतिहै उसको वरुणरूप रुद्र संबंधी पित्त और रुधिर वर्णनकिया है उस रुधिरसे कनकनाम सुवर्ण उत्पन्न हुआ वह सुवर्ण मित्रनाम सूर्य्यको देवता रखनेवाला कहागया है और धूम से आठोंवसु उत्पन्नहुये ११२।११३ अग्निके जो सखाहैं वह वड़ेप्रकाशमान ग्यारह रुद्र और बारह सूर्य्यकहेजाते हैं इसीप्रकार जो अंगारेथे वह स्वर्ग में अपने२स्थानों पर नियत ग्रह और तारागणहैं ११४ जो इस सृष्टिका मुख्य स्वामीहै और जिस को रूपान्तर दशासे रहित सदैव रहनेवाला सब अभीष्टों का देनेवाला कहकर

जिसको अत्यन्त गुप्त अवाच्य वर्णनकिया है ११५ इसकपीछे वायु और वरुण रूप महादेवजी ने कहा कि यह मेरा दिव्यसत्रहै मैं गृहका स्वामी हूं ११६ वह प्रथम भृगु कवि अंगिरा तीनों पुरुष मेरे पुरुष हैं और वही मेरे निस्सन्देह यज्ञके फलहैं ११७ फिर अग्निनेकहा कि यह मेरे अंगोंसे उत्पन्न और मुझीको अपना रक्षास्थान जाननेवाले हैं इस हेतुसे यह मेरेही पुत्रहैं वरुणदेवता भ्रान्त चित्त हैं ११८ फिर सबके पितामह ब्रह्माजी बोले कि यह मेरेही पुत्रहैं क्योंकि मेरेही वीर्य के होमकरने से उत्पन्न हुये हैं ११९ मैंही यज्ञ करनेवाला और अपने वीर्य्यका होमनेवाला हूं अग्नि वीर्य्यका हेतु मानागयाहै इसी से जिसका वीर्य्य है उसीका फलहै १२० इसकेपीछे सबदेवताओं ने ब्रह्माजीकेपास आकर हाथ जोड़कर ब्रह्मा जीसेकहा १२१ हे भगवन् सबजड़ चैतन्यजीवों समेत हम सबदेवता लोग आपही के पुत्रहैं इसी हेतुसे अग्निदेवता १२२ और ईश्वर वरुणदेवता अपने अभीष्टमनो- रथोंको प्राप्तकरें जलोंकेस्वामी ईश्वर वरुणजी ने ब्रह्माजीकी सन्तानसे १२३ प्रथम पुत्र सूर्यकेसमान तेजस्वी भृगुजीकोलिया अग्निने अंगिराको अपनापुत्र बना- या १२४ और सिद्धान्तके ज्ञाता ब्रह्माजी ने कविनाम पुत्रको लिया तब प्रश्रवकर्म के करनेवाले वह भृगुजी वारुण अर्थात् वरुणकेपुत्र विख्यातहुये १२५ और श्री- मान् अंगिरा आग्नेय अर्थात् अग्निकेपुत्र प्रसिद्धहुये और बड़े उत्तम कविजी ब्राह्मय अर्थात् ब्रह्माकेपुत्र प्रख्यातहुये लोकमें भार्गव और अंगिरसवंशी लोक की सन्तानकेलक्षण अर्थात् चिह्नहैं १२६ यह तीनों पुत्र प्रजाओंकेस्वामी हैं इन्हीं की सब सन्तानहैं इसीको निश्चयजानो १२७ भृगुजीकेही गुणोंकेसमान उनभृगु जी के च्यवन, वज्रशीर्ष, शुचि, और्व १२८ शुक्र, वरेण्य, विभुसवन यह सात पुत्रहुये वह सब भार्गवलोग वारुण अर्थात् वरुणके पुत्रहैं आपभी उन्हींके वंशमें है १२९ और अंगिराऋषि के वृहस्पति, उतथ्य, वयस्य, शांति, घोर, विरूप, सम्वर्त्त, सुध- न्वा यह आठों पुत्रभी वारुण अर्थात् वरुणकेही पुत्र कहेजाते हैं परन्तु यहआठों उपाधियों से रहित ज्ञाननिष्ठ अग्निके पुत्र हैं १३० । १३१ ब्रह्माजी के पुत्र क- विकेभी आठही पुत्रहैं वह आठों भी अपने स्वाभाविक गुणों से युक्त ब्रह्मज्ञानी और शुभहैं वह भी वारुणही कहलाते हैं १३२ कवि, काव्य, धृष्णु, बुद्धिमान उशना, भृगु, विरज, काशी, धर्मज्ञउग्र १३३ यह आठों कविके पुत्रहैं इन्हींसे सब संसार व्याप्तहै यह प्रजापति हैं इसलोकमें वर्णों के प्रकारों समेत प्रजालोग इन्हीं

से उत्पन्नहुये हैं १३४ हे श्रेष्ठ भार्गवजी इसरीतिसे यह संसार भृगु अंगिरा और कविकी सन्तानोंसे व्याप्तहुआ है १३५ हे वेदपाठी प्रारम्भमें उसप्रभु ईश्वर बरुण ने कवि और भृगुको लिया है इसी हेतुसे वह दोनों बारुण नाम से प्रसिद्धहुये १३६ और जोकि अग्निने अंगिरा को लिया है इसी हेतुसे उसके बंशकी सब सन्तान अंगिरस नामसे जाननी योग्यहैं १३७ प्रथम उन देवताओंने जो ब्रह्मा जीको प्रसन्नकिया था उसमें यही हेतु था कि यह प्रजापतिजी अपनी सन्तानके द्वारा हमारा उद्धार करेंगे और सबवंशोंके वृद्धिकर्त्ता आपके तेजके बढ़ानेवाले वेदज्ञ वेदोक्त कर्मों के जाननेवाले होंगे १३८। १३९। १४० इसीप्रकार देवताओं के पक्षवाले वह मृदुचित्त प्राजापत्य महर्षी तप और उत्तम ब्रह्मचर्य को भी पावें १४१ हे प्रभु हम सब समेत यह ऋषिलोग आपकेही पुत्रहैं हे पितामह आपही देवता और ब्राह्मणों के भी ईश्वर हो १४२ मरीचिको आदिलेकर सबऋषि और सब भार्गव मेरेही पुत्रहैं इससे हे पितामह उसको श्रेष्ठरीति से बिचारकर उनको परस्पर में स्नेहयुक्त और क्षमावान् करो १४३ वह उस शान्ति और क्षमायुक्त रूपसे प्रजाओं को उत्पन्न करेंगे और उत्पत्तिकाल में वा प्रलयकाल में अपने शरीरको भी नियत रक्खेंगे १४४ उनके इन बचनों को सुनकर लोकके पितामह ब्रह्माजी ने कहा कि ऐसाही होय यह सुनकर वह भी अपने नियतस्थानपर गये १४५ इसरीति से संसारकी पूर्व सृष्टि में उस देवताओं में श्रेष्ठ महात्मा बरुणरूप-धारी शिवजीके यज्ञमें यहविश्व उत्पन्नहुआ १४६ अग्निही जीवात्माका स्वामी विश्वपति ब्रह्मा नाश करनेवाला पशुपति शर्व रुद्र प्रजापति हैं और यह सुबर्ण भी यथार्थ में उस अग्निका पुत्रहै १४७ हे परशुरामजी शास्त्रके प्रमाण का जाननेवाला ब्राह्मण अग्निके बर्त्तमान न होनेपर वेदकी श्रुतिके प्रमाणसे अग्नि के स्थानापन्न सुबर्ण को स्थापन करताहै १४८ कुशाके स्तम्भपर भी जो सुबर्ण नियतहोय तो उसपर भी ब्राह्मण अग्निसम्बन्धी आहुति देसक्ताहै वामीके छिद्र में बकरेके दक्षिण कान १४९ से स्पर्शहुई पृथ्वी में तीर्थों के जलमें और ब्राह्मणों के हाथमें हवनहोनेपर भगवान् ऋषिलोग अत्यन्त प्रसन्नहोकर वृद्धिको मानते हैं १५० इसी हेतुसे सबदेवता अग्निको श्रेष्ठतर मानते हैं यहहमने श्रवण किया है ब्रह्माजी का पुत्र अग्नि है और अग्नि का पुत्र सुबर्ण है १५१ इसी कारण जो धर्मदर्शी लोग सुबर्णका दान करते हैं वह सब देवताओंकाही दान करते हैं

यहहमने बड़ोंके मुखसे सुनाहै १५२ हे भार्गवजी प्रकाशमान लोकोंमें जानेवाले उसपुरुषकी परमगतिको भी बर्णनकियाहै कि वह सुवर्णका देनेवाला स्वर्गलोक में जाकर कुबेरकी पदवी पर अभिषेककिया जाताहै १५३ जो मनुष्य सूर्योदयके समय शास्त्रकी बुद्धिसे मन्त्रकेद्वारा सुवर्णको आगे रखकर दानकरताहै वह दुःस्वप्न देखनेके अशुभ फलका नाश करनेवालाहै १५४ जो मनुष्य सूर्य के उदय होतेही दानकरताहै उसका सबपापनष्ट होजाताहै और मध्याह्नके पीछे जो सुवर्ण का दान करताहै उसके आनेवाले पाप नष्ट होजाते हैं १५५ जो व्रतमें सावधान मनुष्य सायंकाल के समय सुवर्णका दानकरताहै वह ब्रह्मा अग्नि बायु और चन्द्रमाकी सालोक्यता को पाताहै अर्थात् उनके लोकों में निवासकरताहै १५६ और इन्द्रलोक में अच्छी प्रतिष्ठाको पाताहै और इसलोकमें शुभकीर्त्तिको प्राप्त करके पापों से निवृत्तहोकर आनन्दकरताहै १५७ इसके विशेष वह अपूर्व मनुष्य अन्यलोकोंमें भी सदैव ऐश्वर्य्यवान् होताहै और अबाध्यगति होकर जहांचाहे वहां घूमनेवाला होताहै १५८ अपने लोकोंसे नहीं गिरताहै और बड़ी शुभकीर्त्तिको पाताहै इस अविनाशी सुबर्ण के दानकरनेसे उत्तमलोकोंको पाताहै १५९ जो व्रतमें नियतहोके प्रातःकालके समय श्रौत वा स्मार्त्त अग्निको प्रकटकरके सूर्योदयके समय सुवर्णका दान करे वह सब अभीष्ट पदार्थोंको प्राप्तकरताहै यह सुवर्ण अग्निरूपहै इसी से इसका दानकरना महासुखदायी है जो कि अपने प्रिय गुणोंसे युक्त स्वर्ग और पृथ्वीपर प्रकाशमानरूप से नियतहोकर उत्पन्न होने के समय उदयवान् सूर्य्य के समान उत्पन्न हुआहै इस ज्ञानको सुबर्ण के दान में प्रवृत्त होनेवाला कहाहै १६० । १६१ हे निष्पाप परशुरामजी मैंने यह सुबर्ण और कार्त्तिकेय की उत्पत्तिबर्णनकी है इसको आप निश्चयही जानो १६२ हे भार्गव बहुत समयमें बड़े होनेवाले कार्त्तिकेयजीको इन्द्रादिक सब देवताओंने सेनानी के अधिकारपर नियत किया १६३ फिर उस सेनापतिने संसारकी वृद्धिकीइच्छा से देवराज इन्द्रकीआज्ञासे अनेकअन्य असुरोंसमेत तारकअसुरको युद्धमेंमारा १६४ हे देवताओं में श्रेष्ठ प्रभु मैंने सुबर्ण दानके गुण तुमसे कहे इसी हेतुसे तुम ब्राह्मणों के अर्थ सुबर्णका दानकरो १६५ भीष्मजी बोले कि वशिष्ठजी के इस प्रकार कहेहुये बचनोंको सुनकर प्रतापवान् परशुरामजी ने बहुतसा सुबर्ण वेदपाठी ब्राह्मणों को दान किया और पापों से निवृत्तहुये १६६ हे राजा युधिष्ठिर

सुवर्णका जन्म और उसके दानका जो२ फलहै वह सब तुमसे कहा १६७ इसी हेतुसे तुमभी ब्राह्मणों के अर्थ बहुतसा सुवर्ण दानकरो हे राजा इस सुवर्ण के दान करने से तुमभी अवश्य अपने पापों से छूटजाओगे १६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेसुवर्णोत्पत्तिर्नामपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छयासीवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि सुवर्णदान के जो २ फल वेदमें लिखे हैं उनको इस स्थान पर पितामहने बहुत संक्षेपतासे वर्णन कियाहै १ सुवर्णकी उत्पत्तिका जो हेतुहै वहभी तुमसे वर्णन किया यह मैंने सुना परन्तु उस तारकासुरको कार्त्तिकेयजी ने कैसे मारा उस सब वृत्तान्तको आप वर्णन कीजिये २ क्योंकि वह तारकासुर तो देवताओं से अवध्यथा वह कैसे मारागया इसको ब्योरेसमेत वर्णन कीजिये ३ हे कौरव्य पितामह मैं इस तारकके मरनेको सम्पूर्णता पूर्व्वक सुनना चाहताहूं इसके सुनने की मुझको बड़ी अभिलाषाहै ४ भीष्मजी बोले कि हे राजेन्द्र उन देवता और ऋषियों ने जिनका कार्य्य गर्भ के गिरजाने से नष्ट होगयाथा कृत्तिकानाम छःनक्षत्रों को उस गर्भ से उत्पन्न होनेवाले पुत्रके पोषण के लिये प्रार्थनापूर्व्वक प्रेरणाकरी ५ कि हे कृत्तिकाओ इस गर्भ के धारण करनेको कोई देवता भी समर्थ नहीं हुआहै तुम इस अग्नि के गर्भ धारण करने को समर्थहो यह सुनकर प्रसन्नचित्त छओंकृत्तिकाओं ने उस बालकके पोषण करने को अंगीकार किया ६ तब अग्निदेवता अपने बड़े तेज और पराक्रमके छोड़ने और उन छओंकृत्तिकाओं के सगर्भ होने से प्रसन्नहुये ७ और उन छओंकृत्तिकाओं ने अग्निके गर्भको पोषण किया अर्थात् उन छओं ने अपने २ गर्भों में अग्नि का सम्पूर्ण तेज धारण करलिया ८ तदनन्तर बड़े होनेवाले महात्मा कुमार के तेजसे पूर्ण शरीरवाली कृत्तिकाओं ने कहीं सुखको नहीं पाया ९ तब तेजसे पूर्ण शरीरवाली उन कृत्तिकाओंने समयपर अपने गर्भको उत्पन्न किया १० इस के पीछे पृथ्वीने छः उत्पत्तिस्थान रखनेवाले और एकरूप प्राप्त करनेवाले उस बालकको कार्त्तिसरनाम स्थानकेपास लेलिया ११ अपूर्व्वस्वरूप दिव्य निवास स्थान रखनेवाला अग्नि के समान प्रकाशमान वह बालक स्वर्गसम्बन्धी नन्दनादि सुरबन को पाकर बड़ाहुआ १२ फिर कृत्तिकाओंने उस सूर्य्य के समान

बड़े तेजस्वी बालक को देखा तब बड़ी प्रीति से स्नेह करके अपने स्तनों का दूध उस को पिलाया १३ इसी से वह बालक सब स्थावर जंगम संसार में कार्त्तिकेय नाम से प्रसिद्ध हुआ और गर्भ के पतन होने से स्कन्दनाम विख्यात हुआ और गुहामें निवास करने से गुहनाम हुआ १४ इसकेपीछे देवता, दिशा, दिगीश्वर, रुद्रदेवता, धाता, विष्णु, यमराज, पूषा, अर्य्यमा, भग, १५ अंश, मित्र, साध्यगण, अष्टवसु, इन्द्र, अश्विनीकुमार, जल, वायु, आकाश, चन्द्रमा, नक्षत्र, ग्रह, सूर्य्य, १६ और अन्यशरीरधारी ऋग् यजु सामवेद जिनकेद्वारा देवताओं को आहुति दीजाती हैं यह सब पृथक् २ होकर उस अपूर्व्वदर्शन कुमाररूप अग्निकेपुत्रके देखने को आये १७ ऋषियों ने स्तुतिकरी गन्धर्वों ने गाया उस षड़ानन द्वादशनेत्रधारी ब्राह्मणों के प्यारे १८ बड़े स्कन्धयुक्त द्वादशभुजायुक्त अग्नि और सूर्य्यकेसमान तेजस्वी सुखनमें सोतेहुये को देखकर ऋषियों समेत देवताओं ने १९ बड़ा आनन्दमाना और सब असुरों समेत तारकको मराहुआ ही जाना इसके पीछे सबदेवताओं ने उसकी अभीष्ट वस्तुओंको प्राप्तकिया २० उस खेलनेवाले बालक को खेलकी अनेक बस्तुदीं और गरुड़जीने उसको अपना पुत्र मोरदिया जो कि बड़ा अपूर्व्व अनेक रङ्गोंकेपक्ष धारण कियेथा २१ राक्षसों ने बराह और भैंसा उसकोदिया वरुणदेवताने अग्निकेसमान बड़ा तेजस्वी कुक्कुटदिया २२ चन्द्रमाने मेषनाम पशुदिया सूर्य्यने सुन्दर तेजदिया गौओं की माता सुरभीने लाखों गौ देवीदीं २३ अग्निने गुणयुक्त बकरादिया पृथ्वी ने अनेक फूल फल दिये सुधन्वाने शकट और बड़े कूबरवाला रथदिया २४ बरुण देवताने अपने लोकमें उत्पन्नहोनेवाले महादिव्य शुभ हाथीदिये देवराजने सिंह व्याघ्र हाथी और अन्य २ पक्षी २५ घोररूप बहुत से हिंसक पशु और नाना प्रकारके छत्रभी दिये फिर उस ईश्वरकेपीछे राक्षस और देवताओं के समूहचले २६ तब तारकने उस वृद्धियुक्त कुमारको देखकर अनेक उपायों से मारना चाहा परन्तु वह किसीप्रकारसे भी उस प्रभुको न मारसका २७ देवताओं ने उस गुहानिवासी कार्त्तिकेयको सेनानी के अधिकारपर अभिषेक करके तारककी शत्रुता और कृतघ्नता का वृत्तान्त उससेकहा २८ फिर उस अत्यन्त बर्द्धमान देवताओं के सेनापति प्रभु गुहने अमोघ शक्तिसे तारकासुरको मारा २९ उसक्रीड़ा करने वाले कुमारके हाथसे उस असुरके मरनेपर देवराज इन्द्र फिर करके देवताओं के

राज्यासन पर नियत कियागया ३० वह देवताओं का ईश्वर रक्षक और शङ्कर जी का अभीष्ट करनेवाला प्रतापवान सेनापति स्कन्ध महाशोभायमान हुआ ३१ इस सुवर्णमूर्त्ति भगवान् कुमार कार्त्तिकेयने सदैव देवताओं की सेनापति की पदवी कोही पाया ३२ इसी हेतुसे अग्निके पुत्र कार्त्तिकेय के साथ उत्पन्न मङ्गली और अविनाशी उत्तम रत्न सुवर्ण मानागया ३३ हे राजायुधिष्ठिर पूर्व्व समयमें वशिष्ठजीने यह सब वृत्तान्त परशुरामजी से कहाहै इसी हेतुसे तुम सुवर्ण के दानके अर्थ अच्छे २ उपाय करो ३४ परशुरामजी सुवर्ण का दानकरके सब पापों से मुक्तहोगये और स्वर्ग में उन्होंने उस उत्तम स्थानको पाया जो कि मनुष्यों को बड़ी कठिनता से प्राप्त होनेके योग्य है ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेसुवर्णदानंनामषडशीतितमोऽध्यायः ८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे धर्मात्मा राजा भीष्मजी जिसप्रकार से आपने चारों वर्णोंके धर्मों का वर्णनकिया उसीप्रकार से श्राद्ध विधिको भी मुझसेकहो १ वैशंपायन बोले कि युधिष्ठिर के इस वचनको सुनकर भीष्मपितामह ने इस सम्पूर्ण श्राद्ध विधिको कहना प्रारम्भकिया २ भीष्मजी बोले कि हे शत्रुसंतापी राजा युधिष्ठिर तुम बड़ी सावधानी से श्राद्धोंकी शुभ बिधियों को सुनो जो कि पितृयज्ञ नाम से धनकीर्त्ति और सन्तानमें पुत्रोंकी देनेवाली हैं ३ वह पितृ सदैव देवता असुर मनुष्य गन्धर्व उरग राक्षस पिशाच और किन्नरोंके भी पूज्यहैं ४ अमावास्या चाहै दिनभर या पूर्व्व अमावास्या के पीछे दिनके दूसरे भागमें प्रतिपदा होय तब प्रथम भागमें देवताओं को और दूसरे भागमें पितरोंको तृप्तकरतेहैं इसी हेतु से मनुष्य को उचितहै कि उनदेव पितरोंको सबरीतिसे पूजनकरे ५ हे महाराज पितरोंका मासकी श्राद्ध अमावास्या के दिन कहाजाताहै इसी हेतु से यह पूर्व्व बिचार कीहुई मुख्य बिधिबिशेष कही जाती है अर्थात् जब कि एकही दिन अमावास्या और प्रतिपदा दोनों होय तब अमावास्यामें देवयज्ञ और प्रतिपदा में पितृयज्ञ होताहै ६ सबदिनों में श्राद्ध करने से पितृ तृप्तहोकर प्रसन्नहोते हैं अब तुझसे मैं तिथि अतिथि के सबगुण और अवगुणोंको कहताहूं ७ हे निष्पाप जिन२ दिनों में श्राद्ध करने से जो२ फल प्राप्तहोताहै उनसबको ठीक२ कहूंगा ८

प्रतिपदामें जो पितरोंको पूजताहै वह अपने गृहमें रूपवान् सन्तान उत्पन्नकर-नेवाली दर्शन के योग्य अनेक पुत्र वा कन्या रखनेवाली स्त्रियों को पाताहै ६ द्वितीयाकेदिन श्राद्धकरने से पुत्री उत्पन्न होती हैं तृतीयाके दिन श्राद्धकरने से घोड़ोंकी प्राप्ति होती है चतुर्थी के दिन श्राद्ध करने से छोटी जातिके बकरीआदि अनेक पशुओंको पाताहै १० हे राजा पंचमी के दिन श्राद्ध करने से बहुतसे पुत्र उत्पन्न होते हैं षष्ठीके दिन श्राद्ध करने से तेजस्वी मनुष्य होते हैं ११ सप्तमी के दिन श्राद्ध करनेवाला मनुष्य बहुतसी खेतियोंका स्वामी होताहै अष्टमीकेदिन श्राद्ध करनेवाला मनुष्य व्यापार में लाभको प्राप्त करताहै १२ नवमी के दिनमें श्राद्ध करनेवाले मनुष्यके गृहमें बहुत घोड़े आदि होते हैं दशमीके दिन श्राद्ध करनेवाले को गौओं की वृद्धिहोती है १३ हे राजा जो मनुष्य एकादशी को श्राद्ध करताहै वह वस्त्रों से पूर्ण होकर कुप्यभागी होताहै अर्थात् उसके गृहमें ब्रह्मतेजधारी पुत्र उत्पन्नहोते हैं १४ द्वादशी में श्राद्धकरने से उसके गृहमें सदैव यथेप्सितसुवर्ण और चांदी दिखाई देते हैं १५ त्रयोदशी के दिन जो श्राद्ध कर-ताहै वह अपने सजातियों में उत्तमहोताहै जो मनुष्य चतुर्दशी में श्राद्ध करताहै वह युद्ध की जीविका पानेवाला होताहै और उसके मनुष्य और पुत्रादि कभी अवश्य तरुणही मरते हैं अमावास्यामें श्राद्ध करने से सब मनोरथों को पाताहै १६ । १७ कृष्णपक्ष में चतुर्दशी को छोड़कर दशमी से लेकर अमावास्या तक जो तिथिहैं वह श्राद्धकर्म में श्रेष्ठ तरहैं और इनके विशेष अन्यतिथि उत्तम नहीं हैं १८ जैसे कि पूर्वपक्षसे दूसरा पक्ष उत्तमहै उसी प्रकार श्राद्धकेनिमित्त पूर्व के आधे दिनसे दूसरा अर्द्धभाग श्रेष्ठ है १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेश्राद्धकल्पेसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७ ॥

अट्ठासीवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे ईश्वर पितरों के अर्थ कौनसी दीहुई वस्तु अविनाशी होती हैं कौनसा हव्य चिरकाल के लिये और कौन अत्यन्त चिरकालके निमित्त पू-र्णता करनेवाला कहाजाता है १ भीष्मजी बोले कि हे श्राद्धके ज्ञाता युधिष्ठिर पण्डितों ने श्राद्धकल्प में हव्यों को जानाहै उन सुन्दर हव्यों को और श्राद्धके फलों को मुझसे समझो २ हे राजा तिल, जव, चावल, मासान्न, जल, मूल, फल

इन बस्तुओं के द्वारा श्राद्धकरनेवालेके पितर एक मासतक तृप्तहोते हैं ३ मनुजी ने तिलके वृद्धियुक्त श्राद्धको अविनाशी कहाहै सब भोजनों में भी तिलही को प्रधान कियाहै ४ मांस मछलियोंसे श्राद्धकरने में पितरों के समूहोंकी दो महीने तककी तृप्ति होती है और भेड़के मांससे तीनमहीने की खरगोशके मांससे चार महीनेकी ५ बकरीके मांसके श्राद्धसे पांचमहीनेतक वराहके मांससेछःमहीनेतक और पक्षीके मांससे सातमहीने तक पितृगण तृप्तरहते हैं ६ हे प्रभु पार्षत मृगके मांससे आठमहीने और रुरुनाम मृगकेमांससे नौमहीनेतक गोयके मांससे दश महीने तक भैंसेके मांससे ग्यारह महीनेतक पितरों की तृप्तिहोती है इसलोक में गोयके मांससे श्राद्धकरनेसे एकवर्षतक तृप्तिकहीजाती है जैसे कि गोयकामांस है उसीप्रकारकी घृतयुक्त तस्मैभी हैं वा ध्रीणसस्य अथवा मुख्य बकोके मांससे पितृ बारह वर्षतक तृप्तहोते हैं ७।८ क्षयाहके दिन दियाहुआ गैंड़का मांस बड़ी मधुरताको देताहै और चूकाकासाग कचनारके फूल आदि और छागनाम पशु भी अत्यन्त फलवाला कहाजाताहै १० हे युधिष्ठिर इस स्थानपर पितरों की कही हुई कहावत कोभी गाते हैं ११ पूर्वसमयमें भगवान् सनत्कुमारजीने मुझसे कहा है कि वह पुत्र हमारे वंशमें भी उत्पन्न होताहै जो दक्षिणायन सूर्य्य मघानक्षत्र तेरसकेदिन घृतसंयुक्त तस्मै हमको देताहै १२ अथवा वह व्रतमें सावधान मनुष्य बकरेके मांस कचनारके फूल आदिसे बनाहुआ हाथीकी छायामें उसी हाथी के कानोंकी वायुसे स्पर्श कियाहुआ पिण्ड मघानक्षत्र में विधिके अनुसार देवे १३ ऐसे बहुतसे पुत्रचाहनेके योग्यहैं जिनमेंसे एकभी पुत्र वहांजाय जहां कि लोक में विख्यात यह अक्षिणीकर्णनाम वटसे युक्तगयाहै १४ वहां पितृके क्षयाह के दिन जल मूल फल मांस अन्न आदि जो २ पदार्थ मिष्ठानसे युक्त दियाजाताहै वह अत्यन्त चिरकालके निमित्त तृप्तिको देताहै १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिश्राद्धकल्पेअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि यमराज ने नक्षत्र योगों में होनेवाले फल से संयुक्त जो श्राद्धराजा शशिबिन्दुसे वर्णन किये हैं उनको पृथक् २ मुझसे सुनो १ जो मनुष्य कृत्तिका नक्षत्रमें सदैव श्राद्धकर अग्नियों को नियत करके पूजन करता

है वह तपस्या से रहित भी पुत्रवान होताहै २ सन्तानका चाहनेवाला रोहिणी नक्षत्रमें तेज प्रतापको चाहनेवाला मृगशिर नक्षत्र में श्राद्धकरे निर्दयकर्मी मनुष्य आर्द्रा नक्षत्रमें श्राद्ध करनेसे मनुष्यताके गुणोंसे युक्तहोता है ३ धन का चाहनेवाला पुरुष पुनर्बसुनक्षत्र में श्राद्धकरे शरीर का बल चाहनेवाला पुष्य नक्षत्रमें श्राद्धकरे जो मनुष्य श्लेषानक्षत्र में श्राद्धकरताहै वह धैर्य्यमान पराक्रमी और क्षमावान पुत्रोंको उत्पन्न करताहै मघानक्षत्र में श्राद्ध करनेसे बिरादरी में श्रेष्ठ होताहै ४।५ पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्र में श्राद्ध करनेवाला मनुष्य ऐश्वर्य्य मानहोताहै उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रमें श्राद्धकरने से सन्तानयुक्तहोताहै हस्तनक्षत्र में श्राद्ध करनेसे अभीष्ट मनोरथोंको पाताहै ६ चित्रानक्षत्रमें श्राद्धकरनेसे रूपवान पुत्रोंको पाताहै स्वाति नक्षत्र में पितरों को पूजकर व्यापारके लाभसे अपनी जीविका करताहै ७ पुत्रकी कामना करनेवाला मनुष्य बिशाखानक्षत्र में श्राद्ध करनेसे बहुतसे पुत्रोंको पाताहै ८ अनुराधानक्षत्र में श्राद्ध करनेसे राज्य का अधिकारी होताहै हे कौरव्य जो मनुष्य धनवान और जितेन्द्रिय है वह ज्येष्ठानक्षत्र में श्राद्ध करनेसे प्रधानता को पाताहै मूलनक्षत्र में श्राद्ध करने से नीरोगता को पाताहै ९ पूर्वाषाढ़नक्षत्र में श्राद्ध करनेसे उत्तम कीर्त्तिको पाताहै उत्तराषाढ़नक्षत्र में श्राद्ध करनेसे शोकसेरहित होकर पृथ्वीपर बिचरताहै १० अभिजितनक्षत्रमें श्राद्ध करनेसे वैद्यक विद्याकी सिद्धीको पाताहै श्रवणनक्षत्र में श्राद्ध करने से मरने के पीछे सद्गति को पाताहै ११ जो मनुष्य धनिष्ठानक्षत्र में सदैव श्राद्ध करताहै वह राज्यको पाताहै शतभिषानक्षत्र में श्राद्ध करनेसे श्रेष्ठ विद्याको पाताहै १२ पूर्व्वाभाद्रपदनक्षत्र में श्राद्ध करनेसे बहुतसी भेड़ बकरियों को पाता है उत्तराभाद्रपद में श्राद्ध करनेसे हजारों गौओंको पाताहै १३ रेवती नक्षत्र में श्राद्ध करनेवाला मनुष्य तांबे पीतल की बनीहुई अनेक वस्तुओं को पाताहै अश्विनीनक्षत्र में श्राद्ध करनेसे घोड़ोंको पाताहै भरणीनक्षत्र में श्राद्ध करनेवाला दीर्घायु होताहै १४ राजा शशिबिन्दुने इस श्राद्ध बिधिको सुनकर उसीप्रकारसे किया इसके फलसे उसने सुगमतासे पृथ्वीको बिजयकरके उसपर राज्यकिया १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेश्राद्धकल्पेएकोननवतितमोऽध्यायः ८९ ॥

नब्बेका अध्याय ॥

युधिष्ठिरने प्रश्न किया कि हे कौरव्य पितामह श्राद्धसामग्री किस प्रकार के ब्राह्मणको देना उचितहै उसको आप मुझसे कहनेको योग्यहैं १ भीष्मजी बोले कि दानधर्म का जाननेवाला क्षत्रिय दैवकर्म में ब्राह्मणोंकी परीक्षा न करे परन्तु पितृकर्म अर्थात् श्राद्धमें ब्राह्मणकी परीक्षाकरनी न्यायके अनुसारहै २ इसलोक में दैव तेजसेही देवताओं का पूजन करते हैं इसी हेतुसे सम्मुखहोकर देवताओं के नामसे सबप्रकारके ब्राह्मणों को देना योग्यहै ३ हे राजा परन्तु ज्ञानीमनुष्य श्राद्धमें ब्राह्मण के बंश गुण प्रकृति अवस्था रूप बिद्या शुभकीर्त्ति इनगुणों की परीक्षाकरे ४ मैं जानताहूं कि उन ब्राह्मणों में पंक्तिके दोष लगानेवाले एकाक्ष आदिक होते हैं वैसेही बहुतसेब्राह्मण पंक्तियों के पवित्रकरनेवाले वेदपाठीआदि भी होते हैं अब जो पंक्तिके अयोग्यहैं उनको कहताहूं तुम चित्तसे सुनो ५ द्यूत खेलनेवाले, छली, गर्भपाती, बालघाती, राजयक्ष्मारोगी, पशुपाल, वेदपाठ और जपसेरहित, गांवकाटहलुआ, ब्याजखानेवाला, गानेवाला, सब घृतादिक बस्तुओंका बेचनेवाला ६ दूसरे के घरमें अग्नि लगानेवाला, बिष देनेवाला, स्त्रियों को उनके मित्रों से मिलानेवाला कुटना, सोमवल्ली का बेचनेवाला, सामुद्रिक, तेलबेचनेवाला, मिथ्यागवाही देनेवाला ७ पितासे विवादकरनेवाला, और जिसकी स्त्रीका दूसरापुरुष मित्रहै, लांछनी, चोर, शिल्पविद्यासे जीविकाकरनेवाला ८ भूषण और बस्त्रों से रूपान्तर करनेवाला, दूसरे के दोषका प्रकट करनेवाला, मित्रसे शत्रुता करनेवाला, दूसरेकी स्त्रीसे सम्भोग करनेवाला, शूद्रोंका उपाध्याय, शस्त्रों से जीविका करनेवाला ९ कुत्तों के द्वारा आखेट करनेवाला, कुत्तेका काटा हुआ, जिसका विवाह बड़ेभाई से पूर्व्वहुआ, जिसके शरीर की त्वचा दूषितहो, कुष्ठीहोय, गुरूकी स्त्री से भोग करनेवाला १० खेतीकरनेवाला, देवल, जो तिथिपत्रको सुनाकर जीविका करताहै हे युधिष्ठिर यह सब ब्राह्मण पंक्ति के अयोग्य हैं इनके भोजन कियेहुये ११ हव्यको राक्षस पाते हैं यह ब्रह्मबादियोंका कथनहै जो श्राद्धके अन्नको खाकर वेदपढ़ताहै, जिसकी स्त्री पिताकेही घर कन्यापने में रजस्वलाहोय, उस पुरुषके बिष्ठामें उसके पितर एक महीने तक निवास करते हैं १२ सोम बेचनेवाले को दियाहुआ भोजन बिष्ठाके समान होताहै श्राद्ध में वैद्य

को दियाहुआ अन्न रुधिरके समानहै १३ मेहनत लेकर जो देवपूजन करनेवाले हैं उनका दियाहुआ नाशरूपहै ब्याजखानेवाले का दियाहुआ निष्फलहै जो व्यापारी ब्राह्मणको दियाजाताहै वहलोक और परलोक दोनों में नहीं रहता १४ जो ब्राह्मण पुनर्विवाह करनेवाली स्त्रीसे उत्पन्नहै उसको दियाहुआ ऐसाहै जैसे कि भस्ममें होमाहुआ होताहै जो पुरुष हव्य और कव्यको धर्माचारके त्यागने वालेको देते हैं उनका दियाहुआ दान परलोकमें नाशको पाताहै १५ जो निर्बुद्धी पुरुष इन ब्राह्मणों को जानबूझकर देते हैं निश्चयकरके परलोक में उसके पितर उसके बिष्ठाको भोजनकरते हैं १६ इन ब्राह्मणोंको पंक्तिके अयोग्य ब्राह्मणों में महानीचजानो जो निर्बुद्धी शूद्रों को उपदेश करते हैं १७ हे राजा पंक्ति के अच्छीरीति पर बैठजानेपर कानामनुष्य साठको नपुंसक सौको और कुष्ठी जितने मनुष्यों को देखताहै और स्पर्श करता है उतनेही वह दूषित करता है १८ जो वेष्टितशिरा अर्थात् दिस्तारबन्द भोजन को करताहै और जो दक्षिण को मुखकरके भोजनकरताहै और जो जूतापहरेहुये भोजनकरताहै इन सब भोजनों को आसुरीभोजन जानो १९ दूसरे के गुणमें दोष लगानेवाला पुरुष जो कुछ देताहै व श्रद्धासे रहित दियाजाता है उस सबको राजाबलिका भागजानो २० और पंक्ति के दोष लगानेवाले ब्राह्मण किसी दशामें भी पंक्तिको न देखनेपावें इसी हेतुसे घिरेहुये स्थान में भोजनकरावे और तिलों को मकान में फैलादेना चाहिये २१ जो श्राद्ध कि तिलों से रहित क्रोधयुक्तका कियाहुआहै उस हव्यको यातुधान और पिशाचलोग नाशकरते हैं २२ पंक्ति के अयोग्य ब्राह्मण जितने पंक्तियोग्य ब्राह्मणों को देखताहै उस अज्ञानी श्राद्ध करनेवाले को वह उतनेही फलसे रहित करताहै २३ हे भरतर्षभ पंक्ति के पवित्र करनेवाले ब्राह्मणभी जानने के योग्यहैं इसी हेतुसे मैं उनको कहताहूं इस श्राद्ध में उनकी परीक्षा करो २४ विद्या वेद व्रतोंमें पूर्ण सदाचारवान् ऐसे सबके पवित्र करनेवाले ब्राह्मण प्रत्येक मनुष्यको जानने के योग्यहैं २५ अर्थात् पंक्तिकेयोग्य ब्राह्मणोंको वर्णनकरताहूं वह पंक्तिपावन ब्राह्मण जानने के योग्य हैं तृणाचिकेत मंत्रके पढ़नेवाले पंचाग्निके स्थापन करनेवाले त्रिसुपर्ण नाम मन्त्रों के ज्ञाता वेदके छओं अंगोंके ज्ञाता २६ वेदके पढ़ानेवाले वेद पढ़ानेवालोंके वंशमें उत्पन्नहोकर आप ब्रह्मज्ञानी या वेदका पढानेवाला साग्रवेद और ज्येष्ठ सामवेद का गानेवाला ज्ञाता

पिताका आज्ञाकारी दशपुस्तसे वेदपाठी २७ जो सदैव ऋतुकालही में अपनी धर्मपत्नियों के पास जानेवाला है और वेदविद्याव्रत में पूर्ण ब्राह्मण पंक्तिको पवित्र करताहै २८ अथर्वशिरका पढ़नेवाला ब्रह्मचारीव्रत में सावधान सत्यवक्ता धर्माभ्यासी स्वकर्म में प्रीतिमान् २९ जिन ब्राह्मणों ने पवित्र तीर्थों के समान और मंत्रों में परिश्रमकिया है और जो मन्त्रयुक्त यज्ञों में अवभृथनाम स्नान के करनेवाले होते हैं ३० जो क्रोध चपलता से रहित क्षमावान् तपका कष्ट उठाने वाले जितेन्द्रिय होकर सब जीवमात्रोंके उपकार में प्रवृत्त हैं उनको श्राद्धोंमें निमंत्रणदे ३१ ऐसे ब्राह्मणों का दियाहुआ अविनाशी होताहै यह ब्राह्मण पंक्तिके पवित्र करनेवाले हैं इनको और अन्य २ पंक्तिपावन महाभागोंको भी जानना अवश्य योग्यहै ३२ मोक्षधर्म्म के जाननेवाले संन्यासी श्रेष्ठ रीति से व्रत करने वाले योगी और जो सावधान उत्तम ब्राह्मणों को इतिहास सुनाते हैं ३३ जो भाष्यके जाननेवाले व्याकरणमें प्रवृत्तहैं और जो पुराण वा धर्मशास्त्रों को भी पढ़ते हैं ३४ और न्यायके अनुसार पढ़कर विधिके अनुसार करनेवाले हैं जो गुरुकुलमें निवासी होकर सत्यवक्ताहैं ३५ सब वेद और वेदार्थोंमें श्रेष्ठ जो हजारों ब्राह्मणहैं यह ब्राह्मण जितनी पंक्तियों को देखते हैं उतनीही पंक्तियों को पवित्र करते हैं ३६ उस पवित्र करनेसे पंक्तिके योग्य और पंक्तिपावन कहे जाते हैं उस प्रकारका एकभी ब्राह्मण साढ़े तीनकोशसे पवित्रकरताहै ३७ जो कि वेद पढ़ाने वालोंके बंशमें उत्पन्न वेदपाठी और धर्मज्ञानीहो यह ब्रह्मज्ञानी लोग कहते हैं जो वह ब्राह्मण ऋत्विज और उपाध्याय नहीं है और ऋत्विजों की आज्ञानुसार बड़े आसनको पावे तबभी वह पंक्तिका दोष दूर करताहै जो वेदका जाननेवाला पंक्ति के सब दोषोंसे पवित्रहोय ३८ और पतित न होय हे राजा वह भी पंक्तिका पावन करनेवालाहै इसीहेतुसे सब उपायोंसे परीक्षाकरके ब्राह्मणोंको निमन्त्रण दे ३९ जो दूसरे बंशके बड़ेज्ञानी और अपने कर्म्म में प्रीति करनेवाले हैं उनको भी निमन्त्रणकरे जिसके श्राद्ध और हव्य दोषोंकेप्रधान रखनेवाले हैं वह पितर और देवताओंको तृप्त नहीं करते हैं और वह श्राद्ध करनेवाला स्वर्गको नहीं जाताहै ४० जो मनुष्य श्राद्धमें मित्रताको करताहै वह देवयानमार्गसे नहीं जाताहै और वह श्राद्धमें मित्रता करनेवाला मनुष्य अपने कर्म्मफलके समाप्त होने पर स्वर्गलोक से गिरताहै ४१ इसी से श्राद्ध करनेवाला मनुष्य मित्रको श्राद्ध

में निमंत्रण देना योग्य न समझे परन्तु मित्रोंके इकट्ठे करनेके प्रयोजनसे मित्रोंको बहुतसा धनदे और जिसको न मित्रजाने न शत्रु जाने उस उदासीन ब्राह्मणको हव्य कव्यमें भोजन करावे ४२ जैसे कि ऊसर पृथ्वी में बोया हुआ बीज नहीं उपजताहै और बोनेवाला बीजके भागको नहीं पावे इसीप्रकार अयोग्य ब्राह्मणोंका भोजन किया हुआ श्राद्धभी इसलोक और परलोकमें निष्फल होताहै ४३ वेद अथवा गायत्रीका न जाननेवाला ब्राह्मण तृणकी अग्नि के समान शान्त होताहै उसको श्राद्धमें कभी भोजन न कराना चाहिये क्योंकि भस्ममें हवन नहीं किया जाताहै ४४ प्रकटहै कि अपनेही नातेदारों को श्राद्ध में भोजन कराना पिशाचदक्षिणा है वह नतो देवताओं को न पितरोंको पहुँचती है किन्तु पुण्यफलरहित होकर इसी लोक में ऐसे घूमती है जैसे कि गोशाला में मृतक बछड़े वाली गौ ब्याकुल होकर घूमती है ४५ जैसे कि शान्त अग्निमें घृतका होमकरना देवता और पितर दोनों को नहीं पहुंचता इसी प्रकार नर्त्तक वा गानेवाले और मिथ्याकर्मी ब्राह्मणको दक्षिणा देताहै वह सब निष्फलहै ४६ मिथ्याबादी को जो दक्षिणा दीजाती है वह लेनेवाले और देने वाले दोनों पुरुषोंकी हानि करती है किसीकोभी फलदायी नहीं होती है अर्थात् यह दक्षिणा मारनेवाली निन्दित और बिनाशवान् है देने और लेनेवालों के पितरोंको देवयान से गिराती है ४७ हे युधिष्ठिर जो पुरुष ऋषियों के नियमपर चलते हैं वह निश्चय रखनेवाले सर्वधर्मज्ञ हैं देवतालोग उन्हींको ब्राह्मण कहते हैं ४८ अर्थात् वेदपाठी जपमें निष्ठा रखनेवाले ज्ञाननिष्ठ तपनिष्ठ और कर्मनिष्ठ ४९ हे भरतर्षभ श्राद्धादिके पदार्थ इन्हींज्ञाननिष्ठ ब्राह्मणों को देना उचितहै इन में भी जो ब्राह्मणों की निन्दासे रहितहै किन्तु उनकी वृद्धिके करनेवाले हैं वह उत्तमहैं ५० परन्तु जो ब्राह्मण कि परस्पर की बार्त्तालापों में अन्यों की निन्दा करते हैं उनको श्राद्धों में भोजन न करावे हे राजा यह वैखानस नाम ऋषियों का बचन सुनागया है कि ब्राह्मणका निन्दक अपनी तीन पीढ़ियों का नाश करताहै ५१।५२ वेदमेंपूर्ण ब्राह्मणकी दूरही से परीक्षाकरे वह चाहै उनका कोई प्यारा होय वा बिरोधी होय परन्तु श्राद्ध में उसको संयुक्तकरे जो मनुष्य दश लाख मिथ्याबादी ब्राह्मणोंको भोजन करावे उन सबकी समान प्रसन्नमूर्त्ति एक मंत्रज्ञ ब्राह्मण होताहै ५३।५४॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेश्राद्धकल्पेनवतितमोऽध्यायः ९०॥

इक्यानबेका अध्याय ॥

युधिष्ठिर ने प्रश्नकिया कि जब केवल अंगिरावंशी और भृगुवंशीही ब्राह्मण संसारमें थे तब किस ब्राह्मण वा मुनिने श्राद्ध किससमयमें करना विचारकिया और किस रूपकाथा १ श्राद्धमें कौनसा कर्म निषेधितहै वा कौनसे मूलफलोंका श्राद्धमें निषेध कहाहै हे पितामह उसको मुझसे कहो २ भीष्मजी बोले हे राजा जिसरीति से जिससमय में जैसे रूपवाला श्राद्धजारीहुआ और जिसने उसका संकल्पकिया उसको मुझसे सुनो ३ हे महाराज युधिष्ठिर स्वायम्भू नाम मनुजी के पुत्र बड़े प्रतापी अत्रि महर्षिहुये उसके बंशमें दत्तात्रेयीजी बिख्यातहुये ४ दत्तात्रेयी का पुत्र तपोधननिमि हुआ निमिका पुत्रभी ब्राह्मणों की लक्ष्मी से युक्त श्रीमान् नाम प्रसिद्धहुआ ५ वह श्रीमान् एकहजार वर्षतक कठिनतपस्या को करके कालधर्मसे मृतकहुआ तब उसके पिता निमिने शास्त्रके लिखेहुये के अनुसार उसकी सबकर्म क्रिया आदिको करके पुत्रके शोकमें डूबकर अत्यन्त दुःखोंकोपाया फिर वह महाबुद्धिमान् चतुर्दशीके दिन बड़े मिष्ठान्नयुक्त भोजनों को तैयारकरके उसीके शोकमें सोगया और इसी शोक को बिचार करताहुआ प्रातःकालके समय जागा ६।७।८ शोकसे ब्याकुल जगनेवाले उस ऋषिकी बड़े कर्मकरनेवाली बुद्धि उसकेशोकको मनसे पृथक्करके प्रकटहुई ९ इसकेपीछे उस सावधान ऋषिने श्राद्धकल्पको और उस श्राद्धसम्बन्धी अन्न व फल फूल पदार्थों को अच्छी रीतिसे बिचार किया १० और जो अन्नघृत और उसकी जो २ चेष्टा हैं उन सबको मनसे ठीक २ निश्चय करके उस तपोधन ११ महाज्ञानी ने अमावास्याके दिन पूजित ब्राह्मणोंको बुलाकर अपनेही हाथ दक्षिणओरको आसनों को बिछाया १२ इसके पीछे आप उनके पास जाकर सातवेदपाठी ब्राह्मणों को आसनोंपर बैठाया फिर लवणसे रहित सामाक अन्नका भोजन दिया इसके पीछे दक्षिणकी ओर नोंक रखनेवाले कुशा अन्नको भोजन करनेवाले ब्राह्मणों के चरणों में कुशाही के बिस्तरों पर रखदिया १३।१४ फिर कुशाओं को दक्षिण की दिशामें अपनेनाम गोत्रको बुद्धिके अनुसार कहतेहुये उससावधान पवित्रात्मा ऋषिने अपने पुत्र श्रीमान्के पिण्डोंको दिया १५ जो कि वेदकी आज्ञा से पुत्र पिताका पिण्डदेताहै और पिता पुत्रका नहीं देताहै इसहेतुसे उसने धर्म

संकटको करके बड़े पश्चात्तापसे दुःखित होकर विचारकिया १६ कि यह मैंने क्या किया यह कर्म्म तो पूर्व्वसमयके मुनियोंके कर्म्मोंसे विपरीतहै कहीं इसअपराध से ब्राह्मणलोग मुझको शापसे भस्म न करदें १७ यह शोचकर उसने अपने वंशके कर्त्ता को ध्यानकिया उसके ध्यान करतेही महातपोधन अत्रि शीघ्रही आये १८ तब उन ब्रह्मरूप अत्रिऋषि ने पुत्रके शोक से पीड़ामान उस निमि को खेद की दशा में देखकर बहुत प्यारे प्रियवचनों से बिश्वासित किया १९ और कहनेलगे कि हे तपोधन निमि तैंने जो यह पितृयज्ञ का संकल्प कियाहै इससे तेरा बड़ालाभ होगा यह धर्म पूर्वसमयमें आप पितामह ब्रह्माजीने किया है और वहीं हमनेभी देखाहै २० ब्रह्माजी से बुद्धिके अनुसार जानाहुआ यह उत्तम धर्म तुमने कियाहै ब्रह्माजी के सिवाय दूसरा कोई श्राद्धबुद्धी नहीं प्रकट करसका २१ इसहेतुसे हे पुत्र मैं वह उत्तम श्राद्धकी बुद्धि तुझसे कहता हूं जो कि ब्रह्माजी ने करी है उसको अच्छीरीति से जानकर तुमकरो २२ हे तपोधन प्रथम मंत्रोंकरके अग्नि कारण बुद्धिको करके सदैव अग्नि चन्द्रमा और बरुण के निमित्त २३ बिश्वेदेवा भी पितरों के साथ आते हैं उनके अर्थ आप ब्रह्माजी ने भाग विचार किये हैं २४ इस स्थानमें पिण्डोंकी धारणकरनेवाली पृथ्वी प्रथम स्तुति के योग्यहै बैष्णवी काश्यपी और ऊहाक्षय अर्थात् दाक्षा इननामों से २५ जलस्थाने में प्रभु बरुणजी भी स्तुतिकरने के योग्यहैं हे निष्पाप इसके पीछे तुम को अग्नि और चन्द्रमा तृप्तकरनेचाहिये २६ जो देवता और पितर ब्रह्माजी से उत्पन्न कियेगये हैं और जो महाभाग उष्णपनाम से प्रसिद्धहैं उनकाभाग भी बिचार कियागयाहै २७ इसलोकमें श्राद्धकेद्वारा वह पूजेहुये पितर नर्क से उद्धार कियेजाते हैं ब्रह्माजीका देखाहुआ पितृबंश सात समूहवालाहै २८ बिश्वेदेवा और अग्निके आगे रखनेवाले देवताओं का वर्णन हमने प्रथमही तुमसे कहाहै उन भागपाने के योग्य महात्माओं के नाम तुमसे कहता हूं २९ बल, पृथ्वी, विपाप्मा, पुण्यकृत्य, पावन, पाष्णिक्षेम, समूह, दिव्यसानु ३० विवस्वान वीर्यवान्, ह्रीमान्, कीर्त्तिमान्, कृतु, जितात्मा, मुनिबीर्य, दीप्तरोमा, भयंकर ३१ अनुकर्मा, प्रतीत, प्रदाता, अंशुमान, शैलाभ, परमक्रोधी, धीरोष्णी, भूपति ३२ स्रज, बज्री, बरी यह सब सनातन बिश्वेदेवाहैं और बिद्युद्वर्चा, सोमबर्चा, सूर्य्य श्री ३३ सोमप, सूर्य्यसावित्र, दत्तात्मा, पुंडरीक, उष्णीनाभ, नभोद, बिश्वायु-

दीप्त ३४ वसूहर, सुरेश, व्योमारि, शंकर, भव, ईश, कर्त्ता, कृति, दक्षभुवन, दिव्यकर्मकृत ३५ गलित, पंचवीर्य, आदित्य, रश्मिवान्, सप्तकृत, सोमवर्च, विश्वकृत, कवि ३६ अनुगोप्ता, सुगोप्ता, नप्ता, ईश्वर यह सब महाभाग कालगति के विषय रूप हमने तुमसे कहे ३७ अब श्राद्धके अयोग्य अन्नादिकों को सुनो कोदों, पुलक, शाकके मसालों में हींग, शाकों में प्याज, लहसन ३८ सहजनेकी फली आदि विष संयुक्त पशुओंकामांस कचनारकी कली सलगम और गृंजनआदि कूष्मांडजात तोंबा कालानिमक ३९ ग्रामीण शूकरकामांस और जिसको प्रोक्षण नहीं कियाजाताहै ऐसे कालाज़ीरा, विद्नाम लवण शीतपाकीनाम शाक इसीप्रकार अंकुरादिक और सिंवाड़ेआदि भी वर्जितहैं ४० सब नोन और जम्बूफल निषेधितहैं श्राद्धमें अन्नके साथही छिका और रुदन करनाभी निषेधहै ४१ पितरों के हव्य कव्यनाम दानों में सुदर्शननाम शाककाभी निषेधहै इनके हव्य दानको पितृ और देवता अंगीकार नहीं करते हैं ४२ पितृदानके वर्त्तमान होनेपर चांडाल और श्वपच पृथक् करदेने के योग्यहैं गेरुयेवस्त्रधारी कुष्ठी पतित ब्रह्महत्या करनेवाला ४३ वर्णसङ्कर और जो २ ब्राह्मण कि पतितके नातेदारहैं यह सब पितृदानके वर्त्तमान होनेपर समीप में न आनेपावें ४४ तपोधन भगवान् अत्रिऋषि अपने वंशके पुत्रको ऐसा कहकर ब्रह्माजीकी सभाकोगये ४५॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेश्राद्धकल्पेयोग्यायोग्य वस्तुवर्णनेएकनवतितमोऽध्यायः ९१॥

बानबेका अध्याय॥

भीष्मजी बोले कि इसप्रकार निमिके कर्म्म कर्त्ता होनेपर सब महर्षी लोग वेदोक्त कर्म्म के द्वारा पितृयज्ञोंको करते हैं १ सदैव धर्म्म में प्रवृत्त सावधान व्रत ऋषियों ने पिण्डदान करके तीर्थों के जलोंसे तर्प्पण भी किया २ हे भरतवंशी चारों वर्णों के दियेहुये पिण्डोंसे तृप्तरूपहोकर वह पितर और देवता उसतर्पण से अन्नको पचाते हैं ३ पितरोंसमेत वह सबदेवता बिनापचेहुये अन्नोंसे महाकष्टित होकर नाशताको पातेहुये अन्नसे महापीड़ित होकर चन्द्रमाकेपासगये ४ वहां जाकर अन्नके न पचने से पीड़ित देवताओंने चन्द्रमासेकहा कि हम लोग पिंडों के अन्नसे महापीड़ितहैं आपहमारे रोगको दूरकरिये ५ चन्द्रमाने उनको उत्तर

दिया कि हे देवताओ जो तुमको रोग दूरकरनेकी और सुखीहोनेकी इच्छाहै तो तुम ब्रह्माजी के पास जाओ वह तुम्हारा कल्याण करेंगे ६ तब चन्द्रमाकी आज्ञा पाकर वह पितरोंसमेत देवता ब्रह्माजी के पासगये वह ब्रह्माजी मेरुके शिखरपर विराजमानथे ७ उनकेपास पहुँचकर पितरलोग बोले कि हे भगवन् हम पिंडों के अन्नों से अत्यन्त पीड़ामान हैं हे देवता हमारेऊपर कृपाकरके हमारा कल्याण करो ८ उनके बचनको सुनकर ब्रह्माजी ने यहबचन कहा कि मेरेसमीप बैठे हुये यह अग्निदेवता तुम्हारा कल्याणकरेंगे ९ अग्निने कहा कि हे तात पिण्डदान के वर्त्तमान होनेपर हम तुम सब मिलकर एकसाथ भोजन करेंगे तुम निस्सन्देह मेरेसाथमें होकर अवश्य श्राद्धके अन्नोंको पचाओगे १० फिर वह पितृअग्नि के इस बचनको सुनकर तपस्यासे पृथक् हुये हे राजा इसी हेतुसे प्रथम अग्निका भाग दियाजाताहै ११ हे नरोत्तम प्रथम अग्निको पूजकर जो पिण्डदान देते हैं उन पिंडोंको ब्रह्मराक्षस नहीं नाशकरते हैं १२ देवता अग्निके स्थापन होनेपर सब राक्षस दूर होजाते हैं प्रथम पिताका पिण्ड फिर पितामहका पिण्ड १३ और तदनन्तर प्रपितामहका पिण्ड देनाचाहिये यह श्राद्धविधि बर्णन करीगई प्रत्येक पिण्डपर बड़ी सावधानी से गायत्री को पढ़े १४ और चन्द्रमाके वा पितृमति के अर्थ रजस्वला और दोनोंकानों से बहरीकनकरी स्त्री को श्राद्धके सम्मुख वा समीप न आनेदे और जो स्त्री दूसरे बंशकी हैं वह भोजनके बनाने को बुलाने के योग्य नहीं हैं १५ जलसे पारहोकर पिता पितामहादिकोंका कीर्त्तनकरे और नदीको पाकर पितरोंका पिण्डदान और तर्पण अवश्यकरे १६ जो अपने बंश में उत्पन्नहैं प्रथम तो जलसे उनका तर्पणकरे फिर मान्य और नातेदारों के अर्थ जलकी अंजली दे चित्रबर्ण बैलों से जुतेहुये छकड़े के द्वारा पारहोनेवाले मनुष्यके हाथसे बैलकी पूंछ पकड़कर पितृलोग जलके तर्पण को चाहते हैं और उस वृत्तान्तके ज्ञाता सावधान पुरुष नौकापरभी चढ़ेहुये सदैव पितरोंको जल-दान करते हैं जो कृष्णपक्षकी अमावास्याके दिन पितरों के पिण्डदानको करै है १७।१८ वह पितरोंकी भक्तिसे नीरोग शरीर पूर्ण आयुर्दा पराक्रम और लक्ष्मी कोभी पाता है हे कौरव्य ब्रह्मा पुलस्ति बशिष्ठ पुलह २० अंगिरा क्रतु कश्यप महर्षी यह सब महायोगेश्वर कहे हैं २१ हे राजा यही पितृहैं इस उत्तम श्राद्धकी विधिसे इस कर्म्मके द्वारा पिण्डदानके कारणसे पितर प्रेतयोनि से उद्धार होते

हैं २२ हे पुरुषोत्तम पूर्व्वसमय में यह शास्त्रके अनुसार उपदेश पाईहुई श्राद्धकी विधि तुमसे वर्णनकरी इसकेपीछे दानका वर्णनकरूंगा २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेश्राद्धकल्पेद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानवेका अध्याय ॥

युधिष्ठिरने प्रश्नकिया कि हे पितामह जो व्रत करनेवाले ब्राह्मण यजमानके अभीष्ट मनोरथोंके निमित्त हव्य अन्नोंको भोजनकरते हैं उनको क्याफल होता है उनकाव्रत नाशहोताहै या नहीं १ भीष्मजी बोले कि हे युधिष्ठिर जो ब्राह्मण वेदोक्त व्रतोंको नहींकरते हैं वही अपनी इच्छासे भोजनकरते हैं परन्तु वेदोक्तव्रत के करनेवाले जो कदाचित् किसीकेश्राद्धादिमें भोजनकरते हैं उनकाव्रत अवश्य नष्टहोताहै २ युधिष्ठिर ने कहा कि मूर्ख लोगोंने जो इस उपवासकोही तपकहाहै सो हे पितामह यही तपहै वा कोई अन्यतपहै ३ भीष्मजी बोले कि जो मनुष्य एकमास वा एकपक्ष के उपवाससे तपस्या मानताहै और आत्मतन्त्र का दुःख देनेवालाहै वह न तपस्वी है न धर्मका जाननेवालाहै ४ दानमें जो प्रवृत्ती है वह भी उत्तमतप कहाजाताहै वह दानी सदैव उपवासका करनेवाला और ब्रह्मचारी होताहै ५ वेदपाठी ब्राह्मण सदैव मुनिहोताहै (मुनि उसको कहते हैं जोकि दृढ़ बुद्धि तरकणा क्रोध आदिसे रहित सदैव सुख दुःखमें एकसी दशावाला होय) और सदैव वेदोंका जपकरे धर्मका चाहनेवाला गृहस्थी मनुष्य अपने धर्म्म में सावधान होकर ६ सदैव मांससे बर्ज्जित स्तोत्रादिकों का पाठकरे और सदैव सत्यवक्ता होकर सावधानी से ७ बिघस अन्नका भोजन करनेवाला होय सदैव अतिथिका प्रियहोकर अमृतभोजी और पवित्रहोय ८ युधिष्ठिरने प्रश्नकिया कि हे राजा कैसीरीति से सदैव व्रती उपवासी और ब्रह्मचारी होनाचाहिये और कैसे बिघसान्न का भोजन करनेवाला होताहै कैसे अतिथियों का प्याराहोवे ९ भीष्मजी बोले जो मनुष्य मध्याह्न वा सायंकाल अथवा प्रातःकाल और सायंकाल के समय भोजनको करताहै और बीचमें भोजननहीं करताहै वह सदैवउपवासी कहाताहै १० केवल ऋतुकाल में अपनी स्त्रीसे भोगकरने वाला मनुष्य ब्रह्मचारी होताहै और सत्यबोलनेवाला सदैव धर्म्माभ्यासी कहाजाताहै ११ यज्ञके बिना जो मांसको नहीं खाताहै वह बिना मांस खानेवाला कहाजाताहै दानक-

रनेवाला पवित्र होताहै दिनमें शयन न करनेसे जागरणके फलको पाताहै १२ हे युधिष्ठिर जो मनुष्य अतिथि और पोषणके योग्य मनुष्योंको खिलाकर पीछे से आप भोजन करताहै उसको केवल अमृतही का भोजन करनेवाला जानों १३ जो मनुष्य ब्राह्मणों के भोजन किये बिना आप भोजन नहीं करताहै उस कर्म्म से वह स्वर्गको बिजयकरताहै १४ जो मनुष्य देवता पितृ और आश्रित लोगोंसे बचेहुये भोजन के पदार्त्थ और पीनेके पदार्त्थों को खातापीता है वह बिघसाशी कहाताहै १५ ब्रह्मलोकमें उनको ऐसे अनेकप्रकारके स्थान मिलतेहैं जो कि गन्धर्ब और अप्सराओं से सेवितहैं १६ जो पुरुष देवता अतिथि और पितरों के साथ भोजन करतेहैं और अपने पुत्र पौत्र कलत्रादिकोंके साथ क्रीड़ा करतेहैं उनकी उत्तमताकी गति अनुपमहै १७ युधिष्ठिर ने प्रश्नकिया कि हे पितामह नानाप्रकारके जो दान ब्राह्मणोंको देते हैं उनदानी और दानलेनेवालों में कौन गुणवान होना चाहिये १८ भीष्मजी ने कहा कि जो ब्राह्मण साधूदाता का दानलेताहै वा असाधूकादान लेताहै उनमें जो दाता कि गुणवानहै उसके दानसे थोड़ा दोष और अगुणवान से दान लेनेपर दोषोंसे पूर्णहोताहै अर्थात् दोषों में डूबजाताहै १९ इसस्थान पर उस एकप्राचीन इतिहासको भी कहताहूं जिसमें कि वृषादर्भ और सप्तऋषियों का सम्बादहै २० कश्यप, अत्रि, बशिष्ठ, भरद्वाज, गौतम, बिश्वामित्र, जमदग्नि, साध्वी, अरुन्धती २१ इन सबकी सेवा करनेवाली एक गंडानाम स्त्रीथी उस गंडाका पति एक शूद्रसखानाम शूद्रथा २२ पूर्व्वसमय में वह सब ऋषि ब्रह्मलोक की इच्छा से समाधि में नियत तपस्याओं को करतेहुये इस पृथ्वीपर घूमे हे कौरवनन्दन इसके पीछे बड़ा दुर्भिक्ष पड़ा जिसमें यह सब संसार गृहस्थीपने में संयुक्त प्राणोंकाभी दुःखदायी होगया २३। २४ निश्चय करके पूर्व्वसमयमें शिविके पुत्र शैब्यने किसी यज्ञमें दक्षिणा के निमित्त ऋत्विजों को अपना पुत्रदिया २५ और उस न्यून अवस्थावाले बालक ने उसीसमयमें मरणकोपाया तब बड़े रोतेपीटतेहुये वह सब ऋत्विजलोग उसके ओर पास नियतहुये २६ हे भरतवंशी उससमय महादुःखी मन ऋत्विज ऋषियों ने यजमानके पुत्रको मराहुआ जानकर एक हांड़ी में अग्निपर पकाया २७ अर्थात् फिर शरीरके रखने की इच्छा करनेवाले उन तपस्वियों ने इस अन्नसे रहित संसार में भोजन के कारण दुःखरूपी आजीविका को पाया २८

मार्ग में चलतेहुये शिविके पुत्र राजावृषदर्भने उन मांस पकानेवाले महादुःखी तपस्वियों को देखा २६ तब वृषदर्भ ने कहा कि हे तपोधन ऋषियो दान का लेना आपत्तियों से छुटाता है अब अपने शरीरकी पुष्टता और पराक्रमके लिये इस पासके धनको आप लीजिये ३० याचना करनेवाले ब्राह्मण मुझको प्यारे हैं इससे मैं तुमको ऐसी हज़ार खिचरें देताहूं जो सब एक२ बलवान बच्चा रखनेवाली हैं और सबके बच्चे शीघ्रगामी और श्वेत रोमवाले हैं ३१ और मैं सबको ऐसे दशहज़ार बैलभी देताहूं जोकि कुलंभरानाम पृथ्वी के जोतनेवाले जुयें उठाने के योग्य और श्वेतरूप हैं और उतनीही संख्यावाली गौवें भी देता हूं जो कि प्रथमही गर्भवती तरुण व एकबच्चा देनेवालीं महाउत्तम सुन्दर ब्रतवालीं हैं ३२ और उर्वराभूमिवाले धान्य रस जन्न और उत्तमरत्नोंके देनेवाले अनेकग्राम और जो धन तुमचाहो सोभी मैं देसक्ताहूं परन्तु तुम इसरीति से इस अभक्ष्य पदार्थ में प्रीति मतकरो अबकहो कि मैं इन सब वस्तुओं से कौन २ सी वस्तु तुम्हारे शरीरके निर्वाह और बल पुरुषार्थ के निमित्तदूं ३३ ऋषि बोले हे राजा राजाओं का दानलेना सहतके समान मिष्ठहै परन्तु बिषके समान गुणवाला है तुम उस को जानबूझकर क्यों हमको लुभातेहो ३४ इसलोक में देवताओं का क्षेत्र ब्राह्मणों के शरीरों में नियतहै क्योंकि यह तपसे निर्मल और प्रसन्नरूप ब्राह्मण देवताओं को प्रसन्नकरके तृप्तकरता है ३५ इसलोक में ब्राह्मणका तप एकहीदिन में उत्पन्नहोता है परन्तु किसी समयपर राजासे मिलाहुआ दान ब्राह्मणों के उस तपको अग्निसे बनके समान भस्मकरदेताहै ३६ हे राजा दानसमेत तेराकल्याणहो यह अपना सबधन इच्छा करनेवालोंको दीजिये यह कहकर वह सबऋषि दूसरे मार्गसे चलेगये ३७ उन महात्माओंको पकायाहुआ मांस अच्छीरीति से नहीं पकाथा इसीसे वह भोजनकी इच्छासे उसको त्यागकर बनको चलेगये ३८ इसकेपीछे राजाकी आज्ञासे उसके मंत्रीलोग बनमें जाकर उन ऋषियोंको स्नेह पूर्वक गूलरदेनेलगे ३६ फिर उन मन्त्रियों के सेवकलोग ऐसे अन्य गूलरों को लाये जिनमें कि सुबर्ण रक्खाहुआथा और उन गूलरोंके देनेको उनकेपासगये ४० उनको भारीजानकर अत्रिऋषि ने कहा कि यह गूलर लेनेकेयोग्य नहीं हैं हमलोग थोड़ेविज्ञान और अल्पबुद्धिवाले नहीं हैं ४१ यहगूलर सुवर्णसे भरेहुये हैं ऐसा हमजानते हैं हम सावधानी से जागते हैं इसलोक में यह लियाहुआ

दान परलोक में अप्रिय करनेवालाहै ४२ इसलोक और परलोक दोनों में सुख चाहनेवाले मनुष्यों को यह दानलेनेके योग्य नहीं है बशिष्ठजी ने कहा कि सौ वा हजार निष्क या बहुतसे निष्कों के मूलवाले धनको लेनेवाला मनुष्य पापियों की गतिको पाता है कश्यपजी ने कहा कि पृथ्वीपर जो जव चावलआदि धान्य सुवर्ण पशु और स्त्री यह सब एक लोभके दूरकरने को समर्थ नहीं हैं इसी हेतुसे ज्ञानीपुरुष सन्तोष को प्राप्तकरें ४३।४४ जैसे कि उत्पन्नहोकर बड़े होनेवाले रुरुनाम मृगकेसींग बड़े होतेजाते हैं उसीप्रकार पुरुषकीभी इच्छाहै इसकी संख्या नहीं है ४५ गौतमजी बोले कि लोक में वह द्रव्य नहीं है जो लोकको तृप्तकरे पुरुष समुद्र के समान है कभी पूर्णनहीं होताहै अर्थात् अपनी इच्छाओं से तृप्तनहीं होताहै ४६ विश्वामित्र बोले कि जब इच्छावान पुरुषका मनोरथ सिद्ध होताहै फिर दूसरी लोभरूपी इच्छा उसको बाणकी समान घायल करती है ४७ यमदग्निजी बोले कि दानलेनेसे जो इन्द्रियोंको रोकताहै वह अचल तपको धारण करताहै इस लोक में लोभी ब्राह्मणका तपरूप धननाश होजाता है ४८ अरुन्धती बोलीं कि इसलोक में धर्म्मके अर्थ जो द्रव्योंका इकट्ठा होनाहै वह उसके पक्षवालों का अंगीकृतहै परन्तु इस लोकमें जो तपको संचय करताहै वह धन के ढेरसे उत्तमहै ४९ गण्डा बोली कि यह बड़े पराक्रमी मेरे स्वामी जिस हेतुसे कि इस भयकारी भयसे निर्बल मनुष्योंके समान डरते हैं इसीकारणसे मैंभी अत्यन्त भयको करतीहूं ५० पशूसुखने कहा कि जिस हेतुसे धर्म से पृथक् होजानेमें परम्पद नहीं है अर्थात् वह परम्पद प्राप्त नहीं होताहै और ब्राह्मणों ने उस धर्म्मको धन जानाहै इसी हेतुसे मैं शिक्षा पानेकेलिये विधिपूर्व्वक ऋषियों की उपासना करूं ५१ ऋषियोंने कहा कि दानसमेत उस राजाका कल्याणहो जिसकी कि यह प्रजाहै और जो राजा इसप्रकारसे छलसंयुक्त फल हमको देताहै ५२ भीष्मजी बोले कि सब व्रतधारी ऋषि ऐसा वचन कहकर और उन सुवर्णसे भरेहुये फलोंको छोड़कर दूसरे स्थान में चलेगये ५३ फिर मन्त्रियों ने राजा से कहा कि हे राजा छलका सन्देह करनेवाले वह ऋषिलोग उन फलोंको छोड़कर फिर दूसरे मार्गोंसे जाते हैं इसको आपजानें मंत्रियोंके इन वचनोंको सुनकर राजा वृषदर्भी ने क्रोधकिया और उन सबका प्रबन्धकरनेको घर गया ५४।५५ फिर बड़ेकठिन नियमों में नियतहोकर उसराजाने घरमें जाकर अपनी आहव-

नीय अग्नि में संस्कार कियेहुये मन्त्रों के द्वारा एक आहुत को हवनके योग्य अग्निमें हवन किया ५६ उस अग्निसे संसार भरेकी भयकारी एक कृत्या उठी राजावृषदर्भी ने उसका नाम यातुधानी रक्खा कालरात्रि के समान वह कृत्या हाथजोड़कर राजावृषदर्भी से बोली कि क्याकरूं ५७ । ५८ वृषदर्भी ने कहा कि जावो तुम उन अरुन्धती समेत सातोंऋषियों के दास दासीसमेत भर्त्ताओं के नामोंको चित्तसे बिचारो ५९ अर्थात् नामके अनुसार उनकी सामर्थ्योंको बिचारकर इन सबको नाशकरो इनका नाशकरके जहां तुम्हारा चित्तचाहे तहां चलीजावो ६० वह स्वरूपमान यातुधानी ऐसाही होय यहबचन कहकर उस बन में गई जहांपर वह महर्षी फिरतेथे ६१ भीष्मजी ने राजायुधिष्ठिरसे कहा कि हे राजा वह अत्रिको आदिले सब महर्षी मूलफलोंको भक्षण करतेहुये उस वनमें बिचरे ६२ फिर उन्हों ने एक ऐसे संन्यासीको कुत्ते के साथ देखा जो कि अत्यन्त समांसल हाथ पांव मुख उदर रखनेवाला हृष्ट पुष्टशरीर चारोंओरको घूमनेवाला था ६३ अरुन्धती ने उस स्थूलकाय शोभायमान शरीरवालेको देखकर ऋषियों से कहा कि आप ऐसेरूपवाले नहीं होगे ६४ बशिष्ठजी ने कहा कि इसलोक में जैसा कि हमारा अग्निहोत्रहै वैसा इसका नहीं है प्रातःकाल सायंकाल जो हवन करने के योग्यहै वह इसके समान नहीं कियागया इसी हेतुसे यह कुत्तेसमेत मोटा ताजाहै ६५ अत्रिने कहा कि जैसे गृहस्थीपने से हमारा पराक्रम न्यून होगया है वैसेही दुःखसे पढ़ीहुई हमारी विद्याभी बिस्मरण होगई है वैसा गृहस्थी आदिका दुःख इसको नहीं है इसी हेतुसे यह कुत्तेसमेत मोटा ताजाहै ६६ बिस्वामित्रने कहा जैसे कि हमारा शास्त्रोक्त सनातन धर्मनाश होगयाहै और इसका हमको जैसा दुःखहै वैसा इसको नहीं है इसी हेतुसे यह धर्ममें ब्याकुलमन और मूर्ख है इसहेतुसेही यह कुत्ते समेत मोटा ताजाहै ६७ जमदग्निने कहा कि जैसे कि हमारे चित्तमें एक बर्षका भोजन और इन्धनादि बड़ी चिन्ताका करनेवाला है वैसा उसको नहीं है इसीसे यह कुत्ते समेत मोटाहै ६८ कश्यपने कहा जैसे कि हमारे चार भाई हैं और दीजिये २ मांगा करते हैं वैसे उसके नहीं हैं इसीसे कुत्ते समेत मोटाताजाहै ६९ भरद्वाज ने कहा जैसे कि भार्य्या के दोषलगने के कारण हमारी ओर त्यागसे हमको दुःख है इसरीति से इस अचेत ब्रह्मबन्धु का नहीं है इसी हेतुसे कुत्तेसमेत मोटाहै ७० गौतमने कहा जैसे कि हमारा त्रिकौशेय

नाम वस्त्र और टांकवनाम मृगचर्म्म हरएक तीन २ बर्षकाहै वैसे इसका नहीं है इसीसे यह कुत्तेसमेत मोटाहै ७१ भीष्मजी बोले हे राजा युधिष्ठिर इनसब बातों के पीछे उसकुत्ते समेत संन्यासी ने उन महार्षियों के पास जाकर न्यायके अनु-सार उनको पाणिसे स्पर्श किया ७२ तब वह सब ऋषि परस्परमें यह कहकर कि हम गृहस्थीपनेके दूर करनेवाले वनके चारोंओरको घूमेंगे चलदिये ७३ एकही निश्चय के कर्म करनेवाले वह सब महर्षी मूल फल फूलोंको लेतेहुये वनोंमें घूमे ७४ इसीप्रकारसे घूमते घूमते उन्होंने सघन वृक्षोंसेयुक्त पवित्र और स्वच्छ ज-लोंसे भरीहुई एकशुभ कमलिनी को देखा ७५ जोकि बाल सूर्यके समान प्रका-शमान कमलोंसे शोभायमान वैडूर्य्य वर्ण कमलके पत्तोंसे शोभित ७६ जलके समीपवर्त्ती नानाप्रकार के पक्षियों से आवृत एकघाट रखनेवाली दुर्गम कीचसे रहित सूपतीर्थ नामसे प्रसिद्धथी तब उस वृषादर्भी से कार्य्य में प्रवृत्तकरी हुई भ-यानक रूप यातुधानी नामसे प्रसिद्ध उस कृत्याने उस कमलिनी की रक्षाकरी ७७ । ७८ और वह सब महर्षीपशूसुख नाम संन्यासीके साथ कमलकी मृणाल लेनेके लिये उस सरोवर के पासगये जो कि चारोंओरको कृत्यासे रक्षितथा ७९ इसके पीछे उन महर्षियोंने सरोवरके किनारेपर भयंकररूप खड़ीहुई कृत्याको देख कर यहबचन कहा ८० कि तू यहां अकेलीही खड़ीहुई कौनहै और किसलिये क्यों खड़ी है और इस सरोवरके किनारेपर क्या करनाचाहती है सो कहो ८१ यातुधानी ने कहा कि मैंतो जोहूं सोहूं तुमको मुझसे किसी दशामें भी प्रश्न न करनाचाहिये हे तपोधन लोगो मैं इस कमलिनीकी रक्षा करनेवालीहूं ८२ ऋषियोंने कहा कि हम सब क्षुधासे पीड़ामान हैं और हमारे पास कोई भोजन की वस्तुनहीं है जो तुम्हारी आज्ञाहोय तो हम सबलोग इस सरोवरमें से कमलोंके मृणालोंकोलें ८३ यातुधानी ने कहा कि तुम अपने २ नामों के अर्थोंको बता बताकर यहांसे जि-तने चाहो उतने मृणाल लो बिलम्ब न करो ८४ भीष्मजी बोले कि इसके पीछे गृहस्थीपने में प्रवृत्त शरीर अत्रिऋषिने उस ऋषियों के मारनेकी अभिलाषिनी यातुधानी नाम कृत्याको जानकर यह वचन कहा ८५ कि हे सुन्दरी जिसमें काम क्रोधादिक शत्रुवर्त्तमान हैं उस पाप से जो रक्षा करता है उसको अरात्रि नाम कहते हैं और जो कि मैं मृत्यु से रक्षाकरता हूं और मृत्यु वा पाप दोनों एकही अर्थवाले हैं इसी हेतुसे मेरानाम अत्रि है और जो कि धर्म्म पापको दूर

करताहै इस हेतुसे धर्मको भी अत्रि कहते हैं इसीसे प्रसिद्धहै कि बर्त्तमानकाल में भूत भविष्य और वर्त्तमान इन तीनों कालोंका बिभाग नहीं करते हैं सब समय बर्त्तमानही मानते हैं और जिस दशा में कि हार्द आकाशनाम संसारका कारण ब्रह्मकी प्राप्तिही सब पापोंको दूर करनेवाली है वह दशा अरात्रिनामसे प्रसिद्धहै और जो कि मैं अरात्रिहूं इस हेतुसे भी मुझको अत्रि कहते हैं ८६ यातुधानीने कहा हे बड़े तेजस्वी तुम ने मेरे सम्मुख यह अपना नाम जिसरीति से अर्थ संयुक्त बर्णन कियाहै यह चित्तसे कठिन समझ पड़ताहै तात्पर्य्य यहहै कि मैं तेरे विजय करनेको समर्थ नहीं हूं तुम जावो और सरोवर में उतरो ८७ बशिष्ठजी बोले कि बायु पृथ्वी अन्तरिक्ष स्वर्ग सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्रादिक संसारके विश्वास स्थान हैं और जो उनका स्वामी है वह बसुमान नामहै अर्थात् आत्माआदि ऐश्वर्य्यों का प्राप्त करनेवाला महायोगी बसुमान है उसीको बशिष्ठ कहते हैं वह बशिष्ठ मैंहूं सब मेरे आधीन हैं और मैं किसी के स्वाधीन नहींहूं इसी हेतुसे बशिष्ठ नामहूं सबके रक्षाश्रय गृहस्थाश्रम में भी निवास करताहूं इसकारण सब जीवोंका रक्षास्थान होने और गृहस्थाश्रम में नियत होने से मुझ को बशिष्ठजानो ८८ यातुधानी ने कहा कि जो तुमने अपने नामका कारण वर्णन किया यह कठिन बर्णन अर्थ और अक्षरों से युक्तहै इसका समझना मेरी सामर्थ्य से बाहरहै इससे तुमभी पद्मिनीमें चलेजावो ८९ कश्यपजी ने कहा कि सब शरीरों में केवल मैंही अकेला कश्यपनाम द्विजहूं कश्यनाम शरीरोंको जो रक्षाभोग और नाश करताहै वह कश्यपहै इसी हेतुसे मैं सब शरीरोंमें प्रवेशकरके अन्तर्य्यामी रूपसे पोषण करताहूं जीवरूपसे तो सुख दुःखादिको भोगताहूं ब्रह्मरूप से उन सबको अपनी आत्मा में लयकरताहूं इसरीति सब अध्यात्म मेराही स्वरूपहै इस हेतुसे दैवभी मेरा स्वरूपहै इसको बर्णन करते हैं कि जलको आकर्षणकरकरके पृथ्वीपर बर्षा करनेवाले सूर्य्यादि सब देवता मेरे पुत्रहैं और पुत्र अपनी आत्माहै मैं प्रकाशमानहूं क्योंकि बड़ीभारी अवस्थाहोने से कांसके फूलकेसमान सब ओरसे श्वेत बाल और तपसे प्रकाशितहूं ऐसा मेरा नामहै ९० यातुधानी ने कहा हे बड़े तेजस्वी जैसे कि तुमने यह नाम मेरे सम्मुख सार्थक बर्णन किया यह चित्तमें कठिनता से आसक्ताहै तुम भी सरोवर में चले जावो ९१ भरद्वाज बोले कि प्रजा बाज अर्थात् पक्षरूपहै उनको जो पुरुष करता

है वह भरद्वाजहै इस श्रुतिके अनुसार अपने नामको भरद्वाजने कहना प्रारम्भ किया कि हे सुन्दरी मैं शिक्षाके अयोग्य अर्थात् राक्षस और शत्रुओंको स्वाधीन करके दयासे पोषण करताहूं और अपुत्र अर्थात् उदासीन दीन अदीन जीवों को भी पालताहूं देवता और ब्राह्मणों को भी पालन करताहूं और भार्य्या पुत्र और भृत्यादिकों कोभी पालताहूं मैं अपनीही मायासे संसार की वृद्धिकेलिये प्रकट हुआहूं कर्म्म करने से नहीं हुआहूं इसी हेतुसे मेरानाम भरद्वाज हुआहै ६२ यातुधानी ने कहा कि यह तेरे नामका हेतु बड़े कठिनअर्थ और अक्षरोंवाला है मेरीसामर्थ्य से इसकाभी समझना कठिनहै इससे तुमभी सरोवर में जावो ६३ गौतमजी बोले हे यातुधानी कृत्या गो पदार्थ स्वर्ग और पृथ्वीको स्वाधीन करताहै उसको गोदम कहते हैं तात्पर्य्य यहहै कि मैं जितेन्द्रियपने से पृथ्वी और स्वर्ग के विजय करने को समर्थहूं और निर्धूम अग्निकेसमानहूं इसीहेतु करके मैं तुझसे अजेयहूं दकारके स्थानमें तकार करदेनेसे गोतमनामहूं जो ऐसा पाठ है कि (गोभिस्तमोममध्वस्तंजात्रमात्रस्यदेहतः) तब यह अर्थ है कि मुझमाता के शरीरसे उत्पन्न तप न करनेवाले सूर्य्यकेसमान अपनी किरणों से अन्धकार दूरहुआ इसीहेतुसे उपद्रवों और अपराधों का दूरकरनेवाला किरणधारी मैं गौतम नामहूं और अग्निरूप होनेसे मैं तुझसे अजेयहूं ऐसा मुझ गौतमको समझो ६४ । ६५ यातुधानी बोली हे बड़े तेजस्वी जैसे कि तुमने इस अपनेनाम को अर्थयुक्त वर्णनकिया इसका समझना असंभवहै इससे तुमभी सरोवरही में जावो विश्वामित्र बोले कि विश्वेदेवा अधिदैव अर्थात् अध्यात्म मेरे मित्रहैं वैसेही इन्द्रियों का भी मित्रहूं इस अर्थ से मेरा विश्वामित्र नाम प्रसिद्धहै हे यातुधानी यही मेरानाम समझो ६६ यातुधानी ने कहा कि तेरे नामका जो यह अर्थ है यह अत्यन्त कठिन है इसका समझना असंभवहै तुमभी सरोवरमें जावो जमदग्निजी बोले जाज हव्यको कहते हैं और यज्ञों में बारम्बार हव्यकेभक्षण करने वाले देवताओं का नाम जाजमदहै और जिसमें देवता पूजेजाते हैं उस अग्नि को यजकहते हैं उन अग्नियोंकी जो प्रकटताहै उसको जीव अर्थात् प्राणकहते हैं जो कि मैं अग्नि से उत्पन्नहुआ हूं इसी से इसलोकमें मुझको यजाहनाम जानो और उसीकारण जमदग्निभी मेरा नामहुआ है अर्थात् जाजमद शब्द से जाकारका लोपहोकर जमद् शेषरहा हे सुन्दरी इसीहेतुसे देवता और अग्नि

का निवासस्थानरूप मुझ जमदग्नि को जानो ९७।९८ यातुधानी बोली कि हे महामुनि तुमने जो यह नाम जैसे वर्णनकिया यह समझना कठिन है इससे तुमभी सरोवरमें जावो ९९ अरुन्धती बोली कि पर्व्वतों की धारण करनेवाली पृथ्वी और वसुनाम देवताओं का धारण करनेवाला स्वर्ग इनदोनोंकी मैं स्वामिनी हूं क्योंकि मैं अपने पति बशिष्ठजी के चित्तको प्रसन्न रखती हूं उन्हींके चित्तके अनुसार सदैव कर्म्मको करतीहूं इसकर्म्म से और पृथ्वी आदिके धारण करने से मुझको अरुन्धती नामसे जानो १०० यातुधानी बोली कि तुमने यह अपनानाम हेतुसंयुक्त बर्णन किया यह बड़े कठिन अर्थ और बिषयसे भराहुआ है इसका समझना बहुत कठिनहै इससे तुमभी सरोवरमें जावो १०१ गंडा बोली कि मेरे मुखके निज स्थानपर गण्डाहै इसको धातुकहते हैं हे अग्नि से उत्पन्न यातुधानी उसऊंची उठीहुई गिल्टी के कारण से मुझको गंडानाम जानो १०२ यातुधानी ने कहा कि तुमने जो अपने नामका हेतु बर्णनकिया यहभी कठिन आशय और अर्थों से व्याप्तहै इससे तुमभी सरोवर को जावो १०३ पशूसुखने कहा कि मैं जीवोंको देखकर रक्षाकरताहूं और सदैव जीवोंका मित्रहूं हे अग्नि से उत्पन्न यातुधानी इसी हेतुसे पशूसुखनाम स्वच्छता रखनेवाला मुझकोजानो १०४ यातुधानी ने कहा कि तुमने जो यह अपने नामका हेतु बर्णनकिया यह बड़े आशय और कठिन अक्षरोंसे युक्त समझमें आना असंभवहै इससे तुमभी सरोवरमें जावो १०५ शुनासुखने कहा कि हे यातुधानी जिसप्रकार से इनलोगों ने अपने नामको वर्णन किया है मैं उसप्रकार से बर्णन करना नहीं चाहता हूं मुझको शुनासुख का सखा समझो अर्थात् शिवानाम धर्म्मका है उसके सखा मुनि लोगहैं उनका सखा शुनासुख हुआ १०६ यातुधानी ने कहा कि हे द्विज तुमने अपने नामका हेतु वर्णन करनेवाला बचन टूटीहुई बाणी से कहा इसी हेतु से अब फिर अपने नामका हेतु बर्णन करो १०७ शुनासुख ने कहा कि एक बार मैं कहचुका जो तुमने नहीं समझा है इसी हेतु से त्रिदण्ड से घायल होकर भस्म होजावो बिलम्ब न करो १०८ तब ब्रह्मदण्ड के समान उस त्रिदण्ड से मस्तक में घायल होकर वह कृत्या पृथ्वी पर गिरपड़ी और अत्यन्त भस्म होकर सूक्ष्म शरीरसे चलीगई १०९ शुनासुख उसबड़ी पराक्रमी यातुधानी को मार पृथ्वी पर त्रिदण्ड को धरके घासों पर बैठगये ११० इसके पीछे वह प्रसन्न

मन सब मुनिलोग इच्छापूर्व्वक कमलों के मृणालों को लेकर सरोवर से बाहर निकले १११ बड़े परिश्रम से मृणालों को इकट्ठा करके कमलिनी के तटपर रख कर उन मुनियों ने जलसे तर्प्पण किया ११२ फिर वह उस जलसे निकल कर वहांआये जहां कि वह सब इकट्ठे मृणाल रक्खे थे वहां उन पुरुषोत्तमों ने उन मृणालों को नहीं देखा ११३ तब ऋषियों ने कहा कि किस निर्द्दयी पापकर्म्मी ने गृहस्थीपने से भरे भोजनके अभिलाषी हमलोगों के मृणाल चुरालिये११४ हे शत्रुओं के बिजय करनेवाले युधिष्ठिर उन सन्देहों से भरेहुये ऋषियों ने परस्परमें पूंछा तब वह बोले कि हम सब शपथखायँ ११५ तब बहुतसे थकेहुये क्षुधा से पीड़ित हमलोगों ने बहुत अच्छा कहकर एकसाथही शपथें करना प्रारम्भ किया ११६ अत्रिने कहा कि जो मनुष्य मृणालोंकी चोरी करताहै वह चरणसे गौका स्पर्शकरे सूर्य्यकी ओर मूत्रकरे अनध्यायों में वेदोंको पढ़े ११७ वशिष्ठ जीने कहा कि वह मनुष्य लोकमें अनध्यायों के दिन वेदका पाठकरे और कुत्ते को क्रीड़ाके अर्थ अथवा आखेट करनेके लिये अपने साथ रक्खे और संन्यासी होकर वेश्यादिकों का संगकरे जोकि मृणालों की चोरीकरे ११८ जो मृणालों की चोरीकरताहै वह अपने शरणागतको मारे और अपनी कन्याका मूललेकर जीविकाकरे और तुच्छ वा पशुघाती से अर्थोंकी याचनाकरे ११९ कश्यपजी ने कहा कि जो मनुष्य मृणालों की चोरी करताहै वह सब स्थानों में सब बातों को कहे धरोहर मारे झूंठी गवाही दे १२० यज्ञ के बिना मांस खानेवाला होय निरर्थक दान करनेवाला होय दिवसमें स्त्रीसे संभोग करे जो मृणालोंकी चोरी करे १२१ भरद्वाजऋषि ने कहा कि जो मनुष्य मृणालों की चोरी करताहै वह स्त्रियोंमें वा गौओंमें निर्द्दयी और धर्मका त्यागनेवालाहो और ब्राह्मणको भी बिजय करे १२२ जो मनुष्य मृणालों की चोरी करताहै वह उपाध्यायको अपमान करके यजुर्वेद की ऋचाओं को पढ़े और सूखे तृणकी अग्निमें होम करे १२३ जमदग्निऋषिने कहा कि वह मनुष्य जलोंमें मूत्र और विष्ठाकोकरे गौको मारे और उससे शत्रुता करे ऋतुकाल बिना स्त्रीसे संभोग करे जोकि मृणालों की चोरी करता है १२४ वह मनुष्य सबका विरोधी और भार्य्या का शरणागत जातिसे बाहर और उनका शत्रुहोय और परस्परमें अतिथिहोय जो मृणालोंकी चोरी करताहै १२५ गौतमने कहा कि जो मृणालों की चोरी करताहै वह वेदों

को पढ़कर त्यागकरे तीनों अग्नियों को न पूजे और सोमवल्ली को बेचे १२६ जिस गांवमें केवल एकही कुँवाहै उसमें रहनेवाला और जो स्त्री अपने पिताके घरही में ऋतुमती हुई उसका पति जो ब्राह्मण है उसकी सालोक्यता को वह मनुष्य पावे जोकि मृणालोंकी चोरी करताहै १२७ विश्वामित्र ने कहा उस मनुष्यकी जीवन दशामेंही दूसरे मनुष्य उसके गुरू माता पिता दास दासी आदिको पोषणकरें और धनादिक जीविकासे रहित होकर बहुतसी सन्तान रखने वाला होय जोकि मृणालोंकी चोरीकरताहै १२८ वह मनुष्य अपवित्र वेदोंका समूह रखनेवाला और धनकी आधिक्यतासे अहङ्कारी कृषिकर्म्मी और ईर्षा करनेवाला होय जोकि मृणालोंकी चोरी करता है १२९ जो मनुष्य कि मृणालों की चोरी करताहै वह वर्षाऋतुमें घूमनेवाला नौकर और राजाका पुरोहित और यज्ञ न करनेवाले का ऋत्विजहोय १३० अरुन्धती ने कहा कि जो स्त्री मृणालों की चोरी करती है वह सदैव सासुकी अप्रतिष्ठा करे और पति से दुश्मन होय और स्वादिष्ट भोजनों को भोजन करे १३१ बिरादरीवालों के घरमें नियत सायङ्कालके समय सक्तुवोंका भोजनकरे भोगके अयोग्य और बन्ध्यायोनिवाली हो जोकि मृणालोंकी चोरी करती है १३२ गण्डाने कहा कि जो मृणालों की चोरी करती है वह मिथ्यावादिनी होय सदैव बान्धवों से विरोधकरे और मूल्य लेकर कन्याका दानकरे १३३ पाकोंको तैयारकरके आपही भोजन करे दासीभावमें वृद्ध होजाय और जारसे उत्पन्न गर्भ आदि के कारणसे मृत्यु पावे जो मृणालों की चोरी करती है १३४ पशूशुक ने कहा कि वह मनुष्य खाली हाथ अपुत्री होकर दूसरे का दास होय और देवताओं का नमस्कार करनेवाला न होय जो मृणालों की चोरी करता है १३५ शूनासुख ने कहा कि जो वेदपाठी होकर मृणालों की चोरी करताहै वह अध्वर्य्यु ब्राह्मण के अर्थ कन्यादे अथवा ब्रह्मचारी और सामवेदके गान करनेवाले ब्राह्मण को कन्यादे और अथर्व वेद को पढ़कर समावर्त्तन स्नानकरे १३६ ऋषि बोले कि तुमने जो यह शपथें खाईं यह ब्राह्मणोंको प्रियहैं हे शूनासुख तुमनेही हम सबके मृणालों की चोरीकी है १३७ शूनासुखने कहा कि तर्पणसे निवृत्तहोकर रक्खेहुये भोजनों के न देखने वाले आपलोगों ने जो यहवचन कहाहै यह सत्यहै मिथ्या नहीं है क्योंकि मैंनेही मृणालों की चोरी करीहै हे निष्पाप ऋषिलोगो यहां मुझसे गुप्तकियेहुये

इन मृणालों को देखो मैंने यह कर्म आपसरीखे भगवान् ऋषियों की परीक्षा के अर्थ कियाहै १३८। १३९ मैं तुम सबलोगोंकी रक्षाके निमित्त आयाहूं और यह अत्यन्त निर्द्दयी यातुधानीनाम कृत्या तुम सबको मारना चाहती थी १४० हे तपोधन ऋषियो राजा वृषादर्भी की भेजीहुई यह कृत्या मैंने मारी और मैं यह बिचारकर आयाहूं कि यह अग्निसे उत्पन्न होनेवाली पापात्मा कृत्याकहीं आप के साथमें दुष्टकर्म न करे १४१ इस हेतुसे मैं आयाहूं हे वेदपाठियो मैं इन्द्रहूं तुम ने अभीष्ट मनोरथोंके देनेवाले सबलोक अपने सन्तोषसे प्राप्तकिये १४२ हे ब्राह्मणो अब तुम यहां से शीघ्रउठो और उनलोकों को प्राप्तकरो १४३ भीष्मजी बोले कि इसकेपीछे वह प्रसन्नचित्त महर्षी इन्द्रकी प्रशंसाकरके और उसके कहने को अंगीकारकरके उस इन्द्रके साथ स्वर्गको गये १४४ इसरीतिसे अनेकप्रकार के भोगों के द्वारा महात्माओं से लुभानेपरभी उन बड़े गृहस्थाश्रम में फँसेहुये महात्माओं ने १४५ लोभ नहीं किया इसीहेतुसे स्वर्ग को पाया इसीकारण से मनुष्यको भी उचितहै कि सब दशाओं में लोभका त्यागकरे १४६ हे राजा यह श्रेष्ठधर्म है इस निमित्त अवश्य लोभको त्यागकरे १४७ जो मनुष्य इस चरित्र को सभाओं में कहताहै वह अभीष्ट मनोरथों को पाताहै और किसी विपत्ति में नहीं पड़ताहै १४८ उसके पितृ ऋषि और सब देवता प्रसन्नहोते हैं और परलोक में शुभकीर्त्तियुक्त होकर धर्म अर्थों को पाताहै १४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेबिसस्तैन्योपाख्यानेत्रिनवतितमोऽध्यायः ९३ ॥

चौरानबेका अध्याय ॥

भीष्मजी ने कहा कि इसी बिषयमें एकअन्य प्राचीन इतिहासको भी कहता हूं जो कि तीर्थयात्रामें शपथ खानेके विषयमें प्रकटहुआ उसकोभी तुम सुनो १ हे भरतबंशियों में बड़े साधू युधिष्ठिर पूर्व्वसमय में इन्द्रने कमलों के निमित्त चोरीकरी तब राजर्षि और धर्मर्षियों ने शपथखाई २ किसीसमय पश्चिमदिशा में प्रभासनाम तीर्थमें ऋषिलोग इकट्ठेहुये उन सब इकट्ठे ऋषियों ने यह सलाह करी कि हम सब लोग इस पवित्र तीर्थवाली पृथ्वीपर घूमें और जब इच्छाहोय तब अपने २ आश्रमोंको जांय ३ उनके यह नामहैं शुक्र, अंगिरा, ज्ञानीकबि, अगस्त्य, नारद, पर्व्वत, भृगु, वशिष्ठ, कश्यप, गौतम, विश्वामित्र, जमदग्नि ४

गालवऋषि, अष्टक, भरद्वाज, अरुन्धती, बालखिल्य, शिवी, दिलीप, नहुष, अंबरीष, राजाययाति, धुन्धमार, पुरु ५ यह सब ब्रह्मर्षि और राजर्षि उस वृत्रासुरके मारनेवाले महाइन्द्रको आगे करके सब तीर्थों में घूमतेहुये माघकी पूर्णमासी को पवित्र तीर्थवाली कौशिकी नदीपर पहुँचकर ६ सब तीर्थों में पापोंसे रहित पवित्रहोकर अत्यन्त पवित्ररूप ब्रह्मसरको गये हे राजा उन अग्निके समान तेजस्वी कमल के पुष्प और मृणालों के भोजन करनेवाले ऋषियों ने देवतीर्थों में स्नानकरके ७ कितनोहीने तो कमलोंकी सूत्रमालाको और बहुतों ने मृणालों को खोदा इसके अनन्तर ह्रदसे अगस्त्य ऋषि के निकालेहुये कमल को उन ऋषियोंसे चुरायाहुआ देख ८ ऋषियों में श्रेष्ठ अगस्त्यजी ने उन सबसे कहा कि मेरे मनोहर कमलको किसने लियाहै मुझको तुमसब लोगोंपर सन्देहहै आपलोग मेरे कमलोंको देदो क्योंकि तुमलोग कमल के चुराने के योग्य नहीं हो ९ मैं सुनता हूं कि समयकी प्रबलतासे धर्म नष्टहोताहै वही बात वर्त्तमानहुई है धर्मकी पीड़ा वर्त्तमानहै यहां जबतक अधर्म बर्त्तमानहै तबतक चिरकालके निमित्त स्वर्गलोकको जायँ १० जबतक ब्राह्मणलोग बड़े २ शब्दोंसे शूद्रोंको वेद सुनाते हैं और जबतक राजा व्यवहारसे धर्मोंको देखताहै उससे पूर्वही मैं परलोकको जाताहूं ११ जबतक सब मनुष्य दूसरे सामान्य और उत्तमपुरुषोंका अपमान नहीं करते हैं और जबतक अज्ञान को प्रधान करनेवाला यह संसार नहीं वर्त्तमान होताहै उससे पूर्व्वही मैं बहुतकालके लिये परलोकको जाताहूं १२ मैं सदैव दूसरे पराक्रमी से दासभाव में कियेहुये अन्य मनुष्योंको देखताहूं इसी हेतुसे मैं चिरकालके निमित्त परलोक को जाऊंगा यहां मैं इस जीवलोक के देखनेकी इच्छा नहीं करताहूं १३ तब तो पीड़ावान् उन ऋषियों ने महर्षीसे कहा कि हम तुम्हारे कमलको नहीं चुरायाहै आपको मिथ्या अपवाद न लगाना चाहिये हे महर्षी हम कठिन शपथों के खाने से शाप देते हैं यहकहकर वह राजर्षि और महर्षीलोग उसका निश्चय करनेवालेहुये फिर वहसब ऋषि राजा और उन के पुत्र पौत्रादिकों समेत पृथक् २ रीतिसे शपथ खानेलगे १४ भृगुजीने कहा कि इस लोकमें वह मनुष्य शपथ खाया हुआ भी फिर शपथ खिलायाजाय और ताड़ितहोकर भी फिर ताड़ना कियाजाय और सवारी के घोड़ेआदिके मांसको खाय जिसने तेरा कमल चुरायाहोय १५।१६ बशिष्ठजी ने कहा कि लोकमें वह

मनुष्य वेदपाठ वा जपको न करे और कुत्ते को क्रीड़ाके निमित्त अथवा आखेट करनेके निमित्त अपने साथमें रक्खे और संन्यासी होकर अपने नगरमें नियत होय जिसनें तेराकमल चुरायाहोय १७ कश्यपजी ने कहा कि वह मनुष्य सब स्थानमें सबप्रकारकी बेचनेके अयोग्य वस्तुओंको लेनादेनाकरे धरोहरको मार खावे मिथ्या साक्षीबने जिसने तेरा कमल चुरायाहोय १८ गौतमजी ने कहा कि वह ब्राह्मण काम क्रोधादिकों से युक्त विपरीतबुद्धी से अहंकारी होकर कालक्षेपणकरे वा खेती करनेवाला और ईर्षाकरनेवाला होजाय जिसनेतेरा कमललिया हो १९ अंगिरा ऋषिने कहा कि वह ब्राह्मण वेदका झूठा रखनेवाला और कुत्तेको क्रीड़ा अथवा मृगयाके निमित्त साथमें रक्खे वा ब्रह्महत्याकरके उसका प्रायश्चित्त न करनेवाला होय जिसने तेरे कमलको चुरायाहोय २० धुन्धमारने कहा कि वह मनुष्य मित्रोंके उपकार का भूलजानेवाला होय शूद्रा स्त्री में सन्तानका उत्पन्न करनेवालाहोय तैयार भोजनको खावे जिसने तेरा कमल चुरायाहोय २१ पुरूने कहा कि वह मनुष्य रोगियोंकी चिकित्सामें प्रवृत्तहोय और भार्य्या के द्वारा पोषणपावे श्वशुर से उसकी जीविका होय जो तेरे कमलका चुरानेवाला हो २२ दिलीपने कहा कि केवल एकही कूप रखनेवाले गांवमें जो वृषलीपति ब्राह्मण रहताहै उसकी सालोक्यताको वह मनुष्यपावे जिसने तेराकमल चुरायाहोय २३ शुक्रजी ने कहा कि वह मनुष्य बिना यज्ञके मांसकोखाय दिनमेंस्त्रीसे भोगकरे राजाका आज्ञावर्त्तीहोय जिसने तेरेकमल चुरायेहोंय २४ जमदग्निजी ने कहा कि वह मनुष्य अनध्यायों में वेदका पाठकरे श्राद्धमें मित्रको भोजन करावे और शूद्रके श्राद्धमेंभी भोजनकरे जिसने तेराकमल चुरायाहै २५ शिवीने कहा कि वह मनुष्य अग्निस्थापन न करनेवाला मृतकहोजाय यज्ञमें विघ्नकरे तपस्वियोंसे बिरोधकरे जिसने तेरा कमल चुरायाहोय २६ ययातिने कहा कि वह मनुष्य व्रतकरनेवाला होकर बिना ऋतुकालके भार्या से संभोगकरे वेदोंकी अवज्ञाकरे जिसने तेरा कमल लियाहोय २७ नहुषने कहा कि वह मनुष्य संन्यासी अतिथिहोकर घरमें नियतहोय और जितेन्द्रिय न होकर स्त्रीसंगकरे और नौकरहोकर विद्याको पढ़ावे जिसने तेरा कमलचोरी कियाहोय २८ अम्बरीष ने कहा कि वह मनुष्य स्त्रियोंपर अपनी बिरादरीपर और गौओंपर निर्दयताकरे और धर्मको त्यागकर ब्राह्मणकोभी मारे जिसने तेरा कमल चुरायाहोय २९ नारदजीनें कहा कि वह गृह

में अज्ञानी बाहर बड़े शास्त्री और स्वररहित पाठको करे पढ़ेहुये योग्यपुरुषों का अपमान करे जिसने तेराकमल चुरायाहोय ३० नाभागने कहा कि वहमनुष्य सदैव मिथ्यावादी होय सत्पुरुषोंका विरोधी होय मूल्यलेकर कन्यादान करे जिसने तेरा कमल लियाहोय ३१ कविऋषि बोले कि वह मनुष्य चरणसे गौको घातकरे सूर्यके सम्मुख मूत्रादिककरे शरणागतको त्यागे जिसने तेराकमल लियाहो ३२ विश्वामित्रजी बोले कि जिस मनुष्यने तेरे कमलको चुरायाहै वह वैश्यसे मोल लियाहुआ कृत्रिम वर्षाकरे राजाका पुरोहितहो और यज्ञ करानेके अयोग्य पुरुष का ऋत्विज्होय ३३ पर्व्वत ऋषिने कहा कि वहगांवमें अधिकारी होय गधेकी सवारीमें चले जीविकाके हेतु कुत्तेको साथमें रक्खे जिसने तेरे कमलको चुरायाहै ३४ भरद्वाज ऋषिने कहा कि मिथ्या कहने में और निर्दयता में जो पाप होताहै वही पाप उसको सदैवहोय जिसने तेरा कमल चुरायाहोय ३५ अष्टक बोले वह राजा व्यभिचारी अज्ञानी पापीहोकर अधर्म से पृथ्वीपर राज्यकरे जिसने तेरा कमल चुरायाहोय ३६ गालवऋषिने कहा कि वह मनुष्य पाप करने वाला और पापियोंसे भी अधिक निन्दित होय और दानको देकर मुखसे कहे जिसने तेरा कमल चुराया होय ३७ अरुन्धती बोलीं कि वह स्त्री सासुसे कठोर वचन कहे पतिसे दुष्टचित्ता होय अकेलीही सम्पूर्ण स्वादिष्ट भोजन को करे जिसने तेरा कमल चुरायाहोय ३८ शूनासुखने कहा वह ब्राह्मण अग्निहोत्र की अवज्ञा करके सुखसे सोवे संन्यासी होकर व्यभिचारी होय जिसने तेरा कमल चुरायाहो ३९ सुरभीने कहा कि जो तेरे कमलको चुराती है उसका कांस्यदोहन पात्र उस रस्सी से बांधाजाय जो कि मनुष्यों के बालोंसे पैरों के बांधने को बनी होय और पैरों में बँधीहोय और अन्य गौ के बछड़े से दुहीजाय ४० भीष्मजी ने राजायुधिष्ठिर से कहा कि कौरवेन्द्र इसकेपीछे उन नानाप्रकारकी शपथखाने से अत्यन्त प्रसन्न हजार नेत्रधारी देवराज इन्द्र ने उन वेदपाठियों में श्रेष्ठ अगस्त्यमुनि को क्रोधयुक्त देखकर ४१ उस क्रोधभरे मुनिको सावधानचित्तसे अपने समक्ष करके ब्रह्मर्षि देवर्षि और राजर्षियों के मध्यमें जो अपने चित्तका भेद उससे कहा वह मैं तुमसे कहताहूं ४२ इन्द्रने कहा कि वह अध्वर्य्य ब्राह्मण को अपनी कन्यादे या सामवेदके गानेवाले ब्रह्मचारी को अपनी कन्यादे और वह ब्राह्मण अथर्वण वेदको पढ़कर समावर्त्तन स्नानकरे जिसने तेरा कमल लिया

हो ४३ वह सब वेदों को पढ़े पुण्यका अभ्यासी और धर्मकी प्रकृति रखनेवाला होय और ब्रह्मलोक को जाय जिसने तेरा कमल लियाहै ४४ अगस्त्यजीबोले हे इन्द्र तुमने हमसे आशीर्वाद रूप शपथखाई है मेरे कमल मुझको दो यही सनातन धर्म्म है ४५ इन्द्रने कहा हे भगवन् अब मैंने लोभसे कमल नहीं लिये धर्मोंके सन्देहोंकी इच्छासे चुराये हैं आप क्रोध करनेके योग्य नहींहो ४६ मैंने इसवेद बचनसे प्रधानधर्म का सेतु उपाधियोंसे रहित प्राचीन सनातन अविनाशी आर्षनाम धर्म्मको सुना ४७ हे ब्राह्मणों में वड़ेसाधू महाज्ञानी आप इसकमलको लीजिये हे निर्दोष भगवान् ऋषि मेरी अमर्य्यादा को क्षमा कीजियेगा ४८ इन्द्रके इस वचनको सुनकर उस क्रोधयुक्त वड़े बुद्धिमान् तपस्वी मुनिने उस कमलको लिया और बहुत प्रसन्नहुये ४९ तदनन्तर वह पर्यटन करनेवाले ऋषि तीर्थोंको गये और पवित्र २ तीर्थों में स्नानकिया ५० जो योगीपुरुष पर्व्व २ में इस उपाख्यान को पाठकरे वह मूर्खपुत्रको नहीं उत्पन्नकरे और कभी उसका अनादर न होय ५१ किसी आपत्ति में नहीं पड़े रोगों से निवृत्तहो वृद्धावस्था से अजित रजोगुणरहित कल्याणयुक्त होकर शरीर त्यागने के पीछे स्वर्गको पावे ५२ हे नरोत्तम जो पुरुष ऋषियोंसे रक्षित शास्त्रको पढ़ताहै वह अविनाशी ब्रह्मलोक को पाताहै ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशपथविधिर्नामचतुर्न्नवतितमोऽध्यायः ९४ ॥

पंचानबेका अध्याय ॥

युधिष्ठिरने प्रश्नकिया कि हे भरतर्षभ जो यह छत्र और जूतेका जोड़ा श्राद्ध कर्म्मों में दियेजाते हैं इनको किसने जारीकिया है १ कैसे उत्पन्नहुये और किस निमित्त दिये जाते हैं केवल श्राद्धकेही कर्मों में नहीं किन्तु स्त्रियों के व्रत उत्सवादिकोंमें भी दियेजाते हैं २ पुण्यका आश्रयलेकर अनेकनिमित्तोंमें दियेजाते हैं हे ब्रह्मज्ञानी मैं इसको मूलसमेत ब्यौरेवार सुनाचाहताहूं ३ भीष्मजीने कहा हे राजा तुम बड़ी सावधानीसे इन छत्र और उपानतोंकी उस कथाको सुनो जैसे कि यह लोकमें प्रकटहोकर जारी हुये और हे राजा इन बस्तुओंने जैसे अबिनाशीपने को और पुण्यको पाया उस सब कथाकोभी मैं पूर्णतासे कहताहूं ४।५ जिसमें जमदग्नि ऋषि और महात्मा सूर्य्यका प्रश्नोत्तर है हे प्रभु पूर्व्वसमय में

निश्चय करके उन भगवान् भार्गवजीने साक्षात् धनुषसे क्रीड़ा करी और चढ़ा२ कर बाणों को छोड़ा हे धर्म्मसे च्युत न होनेवाले तब उन रेणुकाजी ने उस बड़े तेजस्वी जमदग्निजी के छोड़ेहुये बाणोंको वारम्बार ला ला कर ६। ७ उनको दिये और धनुषकी प्रत्यञ्चा और बाणोंके शब्दों से प्रसन्न होहोकर वारम्वार बाणोंको छोड़ा और रेणुका जी उनको वारम्बार लेले आईं इसके पीछे ज्येष्ठांके मूलवर्त्ती रोहिणी नक्षत्रमें आयेहुये सूर्य्यके आकाश में आनेपर ८। ६ उस ब्राह्मणने बाणों को छोड़कर रेणुकाजी से यह बचन कहा कि हे बिशालाक्षी तुम जाकर उन धनुषसे निकलेहुये बाणोंको लाओ १० जिससे कि हे सुभ्रू फिर उन बाणोंको फेंकूं हे राजा वह तेजस्विनी तीरोंके लानेवाले मार्ग में कहीं छायाका आश्रय पाकर ठहरगई ११ इसहेतु से कि उसका शिर और दोनों चरण अत्यंत सन्तप्त होगये थे वहां वह सुन्दरी रेणुका अपने स्वामीके शापसे भयभीत होकर १२ केवल एक मुहूर्त्तमात्रही ठहरी और फिर बाणोंके लानेको तैयारहुई तब वह श्यामनेत्रा यशस्विनी उन बाणोंको लेकर लौटकर आई १३ पतिकेभयसे कांपती चरणों से दुःखोंको सहतीहुई महादुःखी सुन्दर अंगवाली वह रेणुकाजी अपने पतिके पास आई १४ तब क्रोधयुक्त ऋषि ने उस सुमुखी से वारम्वार यह बचन कहे कि हे रेणुका तुम बिलम्बकरके क्यों आई १५ रेणुकाजी ने कहा हे तपोधन मेरा शिर और दोनों पैर सूर्य्य के सन्ताप से गरम होगये थे इससे उस तापके शान्तकरने को वृक्षकी छायामें आश्रयवाली हुईथी १६ ब्रह्मर्षिजी इसहेतुसे मुझ को बिलम्ब होगई हे प्रभु आप इस मेरे सत्य सत्य वृत्तान्त को सुनकर क्रोध न करिये १७ जमदग्निजी ने कहा हे रेणुका अब मैं तेरे सन्तप्त करनेवाले रश्मिवान् प्रतापी सूर्यको अपने तेजके अग्निरूप अस्त्रसे उसके तेजको बड़ीसुगमता से गिराऊंगा १८ भीष्मजी ने राजा युधिष्ठिर से कहा कि रेणुका से यह वचन कहकर जमदग्निजी दिव्य धनुषको चढ़ाय बहुतसे बाणोंको हाथमें लेकर सूर्य के सम्मुख खड़ेहुये और ठीक २ उनके मुखको लक्षबनाया तब तो हे कुन्तीनन्दन सूर्य्य देवता ने उनको अपने मारने के निमित्त तैयार देखकर ब्राह्मण के रूपसे उनके सम्मुख आकर यह बचन कहा कि हे तपोधन आपका सूर्य्यने क्या अपराध कियाहै १६। २० वह दिनका उत्पन्न करनेवाला सूर्य्य स्वर्ग वा आकाशमें नियत होकर अपनी किरणोंके द्वारा जहां तहां से रसोंको आकर्षण करता

है और उस आकर्षण कियेहुये जलको बर्षाऋतु में बरसाता है २१ उसी से वह अन्न उत्पन्न होताहै जोकि मनुष्योंका सुखदायी है जैसे कि वेदोंमें पढ़ाजाताहै कि अन्नही प्राणहैं २२ हे ब्राह्मण फिर वह बादलों में गुप्त किरणों से घिराहुआ सूर्य्य इन सातोंद्वीपों पर जलकी बर्षा करताहै २३ हे प्रभु इसके अनन्तर बर्षासे प्रकट और औषधी व बिरुधियोंके फूल पत्तोंसे उत्पन्न सब अन्न उत्पन्न होते हैं २४ जातकर्म्म आदि सब कर्म्म व्रत यज्ञोपवीत धारण करना गोदान बिवाह और सामान्य यज्ञ सब शास्त्रोंके ज्ञाताओंका संयोग और धन सञ्चय यह सब पदार्थ अन्नसेही उत्पन्न होते हैं हे भार्गवजी जिसको आपभी जानते हैं २५। २६ जितनी बस्तु कि क्रीड़ाके योग्यहैं और जितने प्रारम्भ कर्म्म हैं वह सब अन्नही से प्रकट होते हैं यह सब जो मैं कहताहूं उस सबको आप भी जानते हैं २७ हे वेदपाठी जो यह मैंने कहाहै उस सबको आप अच्छीरीतिसे जानतेहो हे ब्रह्मऋषि आप प्रसन्न हूजिये सूर्य्यके गिरानेसे आपका क्या लाभहोगा २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेछत्रोपानहोत्पत्तिनामपञ्चनवतितमोऽध्यायः ९५ ॥

छ्यानबेका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि इस रीतिसे प्रार्थना करनेपर उनमुनियों में बड़े साधु महा तेजस्वी जमदग्निजीने कौनसा कर्म अपने करनेके योग्य जाना १ भीष्मजी ने उत्तर दिया कि हे कुरुनन्दन उसअग्निके समान तेजस्वी जमदग्नि मुनिने उस प्रार्थना करनेपर भी शान्तीको नहींपाया २ इसकेपीछे उनहाथ जोड़नेवाले सूर्य्य देवताने इस ऋषिको प्रणामकरके फिर मधुर बाणी से यह बचनकहा ३ हे ब्रह्मर्षि सदैव घूमनेवाले सूर्यका लक्ष अर्थात् निशाना चलायमानहै सदैव चलायमान एक द्वीपसे दूसरे द्वीपमें जानेवाले सूर्य्यको तुम कैसे टुकड़े करोगे ४ जमदग्नि जी ने कहा कि मैं ज्ञानरूपी नेत्रों से तुम्हारी स्थिरता और अस्थिरता दोनों को जानताहूं अब अवश्य तेरे मधुर और मृदुबचनोंका उत्तर मुझको देना योग्यहै ५ हे दिनके उत्पन्न करनेवाले सूर्य्य तुम मध्याह्न के समय अर्द्धनिमेष नियत होते हो उसीसमय पर तुम्हारे टुकड़े करूंगा इसमें मुझको कुछ बिचारना नहीं है ६ सूर्य्यने कहा हे धनुषधारियों में श्रेष्ठ ब्रह्मर्षिजी आप निस्सन्देह मेरे टुकड़े करोगे मुझ अप्रियकारीको हे भगवन् आप अपनी शरणमें जानो ७ भीष्मजीने राजा

युधिष्ठिर से कहा कि इस बचनको सुनकर जमदग्निजी ने हँसकर सूर्य्य से कहा कि हे सूर्य्यदेवता तुमको भय न करना चाहिये क्योंकि तुम नम्रता पूर्व्वक मेरे शरणमें आये हो ८ ब्राह्मणों में जो सत्यका कहनाहै और पृथ्वीपर जो नियतताहै चन्द्रमाकी जो सोमताहै बरुणकी जो गंभीरता है ९ अग्निका तेज मेरुकी प्रभा और सूर्यका जो प्रतापहै वह मनुष्य इन सबगुणोंको त्यागे जो शरणागतको मारे १० वह गुरुकी स्त्री से भोग करनेवाला होय वह ब्रह्महत्या करनेवाला होय वह मद्यपानभी करे जो शरणागतको मारे ११ हे तात इस अपराध के प्रतीकारको बिचारो जिसमें कि तेरी किरणों से संयुक्त मार्ग सुखपूर्व्वक गमन करने के योग्यहोय १२ भीष्मजी ने युधिष्ठिर से कहा कि ऐसा कहकर वह श्रेष्ठ भार्गव जी मौनहुये फिर सूर्य ने शीघ्रही उनको छत्र और उपानह अर्थात् जूते लाकर दिये १३ सूर्य्य ने कहा हे महर्षि मेरी किरणों के रोकनेवाले देहकी और शिरकी रक्षाके निमित्त छत्रको लीजिये और चरणों की रक्षा करनेवाले जूतेके जोड़ेको लीजिये और दोनों चरणों में धारण कीजिये १४ अब से लेकर इस लोकमें यह दान अच्छेप्रकार से जारीहोगा और स्त्रियोंके ब्रत उत्सव आदि सबकर्मों में बड़ा अबिनाशी होगा १५ भीष्मजी युधिष्ठिर से कहनेलगे कि हे भरतबंशी यह छत्र और जूतेके जोड़ेकी कथा तुमसे बर्णनकी यह दान सूर्य्य से जारीकिया हुआहै और यह दान तीनों लोकोंमें पवित्र होकर धर्म्मकी वृद्धिका हेतु बिख्यात हुआ १६ इसी हेतुसे उत्तम छत्र और जूतेका जोड़ा वेदपाठी ब्राह्मणों के निमित्त दान करो उनमें बड़ा धर्म्म होनेवाला है इसमें मुझको किसी बातका बिचारना नहीं है १७ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ जो मनुष्य शत शलाका का रखनेवाला श्वेतछत्र ब्राह्मणको दानकरे वह मरने के पीछे सुखसे वृद्धिको पाताहै १८ हे भरतर्षभ वह दानका देनेवाला सदैव देवता ब्राह्मण और अप्सराओं से सेवितहोकर इन्द्रलोक में निवास करताहै १९ हे महाबाहो जो पुरुष जूतेका जोड़ा ऐसे ब्राह्मणको दान करताहै जो कि वेदपाठी होकर समावर्त्तन नाम स्नान करनेवाला संस्कारी तेज ब्रत सूर्य से संतप्तहो २० वहभी देवताओं से पूजित लोकोंको पाताहै और मरणके पीछे बड़ी प्रसन्नता पूर्व्वक गोलोकमें निवास करताहै २१ हे भरतबंशियों में बड़े साधु यह छत्र जूतेके जोड़े के दानका फल सम्पूर्णता के साथ तुझसे कहा २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेछत्रोपानहदानप्रशंसानामषण्णवतितमोऽध्यायः ९६ ॥

सत्तानबेका अध्याय ॥

युधिष्ठिर ने कहा हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ राजा भीष्मजी अब आप कृपाकरके गृहस्थ धर्मको पूर्णता से वर्णनकरो मनुष्य किस२ कर्मको करके वृद्धिको पाता है १ भीष्मजी ने कहा कि हे भरतर्षभ राजा युधिष्ठिर इस स्थानपर मैं एक प्राचीन वृत्तान्त तुमसे कहताहूं जिसमें कि बासुदेवजी और पृथ्वी देवीका प्रश्नोत्तरहै २ हे श्रेष्ठ युधिष्ठिर प्रतापवान् बासुदेवजीने पृथ्वी देवीकी स्तुतिकरके यहीप्रश्नकिया था जोकि तुमने मुझसे कियाहै ३ बासुदेवजी ने कहा कि हे पृथ्वी मुझको वा मेरे समान किसी दूसरे मनुष्य को गृहस्थाश्रम में प्रवृत्तहोकर कौनसी बात अवश्यकरनेके योग्यहै और किस कर्मके करनेसे सबप्रकारके आनन्दसे युक्तहोय ४ पृथ्वी बोली हे माधवजी जिसप्रकार ऋषि देवता पितर और मनुष्य पूजन और आहुति देनेके योग्यहैं उनको मैं कहतीहूं ५ सदैव यज्ञसे देवता आतिथ्यसे मनुष्य पूजितहोकर प्रतिदिन इच्छानुसार योग्य भोजनों की वस्तुओं को भोजन करे या प्रतिदिन पूजनके योग्य देवता आदिको इच्छाके अनुसार पूजनसे प्रसन्नकरे ६ हे मधुसूदनजी इस कर्मसे सब ऋषिलोग प्रसन्नहोतेहैं सदैव भोजनसे पहले अग्निका पूजन करके बलिबैश्वादिक कर्म्मकरे उससे देवता प्रसन्नहोतेहैं प्रतिदिन भोजन के योग्य अन्न और जलसे श्राद्धकरे ७। ८ जल मूल फलादिकोंसे भी मित्रोंको प्रसन्नता दे और बुद्धिके अनुसार सिद्धान्नसे अग्निमें वैश्वदेव कर्मकरे ९ अग्निसोम वैश्वदेव धन्वन्तर और प्रजापतिको पृथक्२ आहुति दे यह होम कहाजाताहै १० इसीप्रकार क्रमपूर्वक बलिकर्मको प्रारम्भकरे दक्षिण दिशामें यमराज के लिये पश्चिमदिशामें बरुणकेलिये ११ उत्तर दिशामें चन्द्रमा के लिये और स्थिरताके योग्यहोमके मध्यमें प्रजापतिके लिये पूर्व्वोत्तर कोणमें धन्वन्तरजीके लिये पूर्वदिशामें इन्द्रकेहेतु १२ और गृहके द्वारपर मनुष्यके लिये बलिकोदे और गृहके मध्यमें मरुद्गण और देवताओंकेलिये बलिको दे १३ इसी प्रकार आकाश में विश्वदेवताओंके लिये और रात्रिमें घूमनेवाले राक्षसोंकेलिये बलिको देवे १४ इसरीति से विधिके अनुसार बलिप्रदान करके भिक्षाके लिये ब्राह्मणको दे ब्राह्मणके न मिलनेपर प्रथम भोजनको उठाकर अग्नि में छोड़दे १५ जब मनुष्य पित्रोंके श्राद्धको करना चाहै तब श्राद्ध कर्मके समाप्त होजानेपर ब-

लिकर्म करे १६ पित्रों को अच्छीरीतिसे तृप्तकरके बुद्धिके अनुसार बलिप्रदान करे फिर बिश्वेदेव को इसके पीछे ब्राह्मण बाचनकरे १७ हे महाराज इसपीछे प्रथम अतिथि को पूजकर बिशेष अन्नसे उनको भोजन करावे उससे मनुष्यों की तृप्ति करताहै और जो एक स्थानपर नियत नहीं रहताहै वह अतिथि कहाताहै आचार्य्य पितामित्र और प्राप्त अतिथि के सम्मुख सदैव यह बर्णन करे कि यह वस्तु मेरे घर में है इसपर वह लोग जो कहैं उसीको करे यही धर्म कहाजाता है १८।२० हे श्रीकृष्णजी तव गृहस्थी मनुष्य शेष अन्नको भोजन करे राजा के ऋत्विज ब्रह्मचर्य के समाप्तहोने पर समावर्त्तननाम स्नान करनेवाले गुरू श्वसुर जोकि एक बर्षके पीछे आयेहों उनको मधुपर्कसे पूजनकरे कुत्ते चाण्डाल और पक्षियों के लिये पृथ्वीपर डालदे २१।२२ यह बैश्वदेव नाम प्रातःकाल और सायंकालमें दियाजाताहै दूसरेके गुणमें दोष न लगानेवाला जो मनुष्य इनगृहस्थ धर्मोंको वर्त्तावकरे वह इसलोक में ऋषियों से बरोंको पाकर शरीर त्यागके पीछे स्वर्ग में प्रतिष्ठा पाताहै २३।२४ भीष्मजी युधिष्ठिरसे कहते हैं कि प्रतापवान् बासुदेवजीनें पृथ्वीके इन बचनोंको सुनकर सदैव उसी प्रकारसे किया तुमभी उसी प्रकार से करो २५ हे राजा तुम इस गृहस्थधर्म को करके इसलोक में शुभ कीर्त्ति को पाकर परलोक में प्रतिष्ठा को पाओगे २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेबलिदानविधिर्नामसप्तनवतितमोऽध्यायः ९७॥

अट्ठानबेका अध्याय॥

युधिष्ठिरने कहा कि हे भरतर्षभ यह दीपदान आदि कैसा दानहै उसका क्या फलहै और कैसे २ किससे जारी हुआहै उसको आप मुझसे कहो १ भीष्मजी बोले हे भरतवंशी इस स्थानपर एक प्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें प्रजापति मनुजी और सुवर्णऋषिका संवादहै २ हे राजा एक सुवर्णनाम महातपस्वी ऋषिथा वह बर्ण में सुबर्ण के बर्ण समानथा इसीसे उसका सुवर्णनाम हुआ ३ वह कुलवान् श्रेष्ठ प्रकृति शुभगुणों से युक्त वेदोंके पाठमें सिद्धान्त का जाननेवालाथा और अपने गुणोंसे बहुतसे अपने बंशवालोंसे अधिकथा ४ उस वेदपाठीने किसी समय मनुजी को देखा और समीप गया और दोनों ने परस्पर कुशल क्षेम पूर्वक मनुकी प्रसन्नता को पूछा ५ फिर वह दोनों सत्यसङ्कल्पी मेरु

नाम सुवर्णके पर्व्वतपर एक सुवर्णकी शिलापर बैठगये ६ वहां बैठकर उनदोनों ने बड़े २ पुराणों को और ऋषि देवता और दैत्योंकी नानाप्रकार की कथाओं को कहा ७ सुवर्णऋषि ने स्वायम्भूमनुजी से यह वचन कहा कि सब जीवोंकी वृद्धिके लिये मेरा प्रश्न कहने के योग्यहोय ८ हे प्रजाओं के ईश्वर पुष्पोंसे जो देवताओं को पूजते हैं यह क्याहै और किसप्रकार से उत्पन्न होकर जारीहुआ इसको फल संयुक्त मुझसे कहिये ९ मनुजीने कहा कि इस स्थान पर एक प्राचीन इतिहास मैं तुमसे कहताहूं जिस में महात्मा शुक्रजी और राजा बलिका प्रश्नोत्तरहै १० एकसमय तीनोंलोकों में राज्य करनेवाले बिरोचन के पुत्र राजा बलिके पास शुक्रजी गये ११ तब उस बलि ने बहुत दक्षिणा सहित उन भार्गव जीको अर्घपाद्यादि से पूजन किया और फिर आसनपर बैठगये १२ वहांपरभी यही कथाहुई जो तुमने पुष्प धूप दीपआदि के दान और फलके विषयमें पूछी है १३ फिर दैत्येन्द्र राजाबलि ने यह उत्तम प्रश्न शुक्रजी से पूछा १४ कि हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञानी पुष्प धूप दीपआदि के दानका क्या फलहै आप उसके कहनेको योग्यहैं १५ शुक्रजी ने उत्तरदिया कि प्रथम तप उत्पन्नहुआ फिर धर्म प्रकटहुआ और इसीसमय में लता चांवलनाम अन्न अनेक औषधी १६ चन्द्रमा का आत्मा अनेकप्रकारसे इसपृथ्वीपर प्रकटहुआ अमृत विष और अन्य तृणादिकभी उत्पन्नहुये १७ अमृत शीघ्र चित्तकी प्रसन्नता को देताहै और तीक्ष्ण विष अपनी गन्धिसे सबके चित्तोंको व्याकुल करताहै १८ अमृतको मंगलरूप और बड़े विषको अमंगलरूप जानों सब औषधी अमृतहैं और विष अग्नि के तेजसे उत्पन्न होनेवालाहै १९ और जो कि मनको प्रसन्नकर शोभाको भी देताहै इसी से श्रेष्ठलोगों ने इन पुष्पोंका नाम सुमन रक्खा २० जो पवित्र मनुष्य देवताओं केअर्थ पुष्पोंको देताहै उसकेऊपर देवता प्रसन्न होते हैं और प्रसन्नहोकर उसकी वृद्धिकरते हैं २१ हे प्रभु दैत्यराज जिस २ देवताका ध्यानकरके मंगलके निमित्त पुष्पों को देताहै वह देवता उसकर्म्म से उसके ऊपर प्रसन्नहोताहै २२ वह फूल पृथक्करके उग्र सौम्य और तेजस्वी जानने के योग्यहैं इसीप्रकार से औषधी भी अनेकरूप और पराक्रमोंकी रखनेवाली हैं २३ यज्ञके योग्य देवताओं के प्रसन्न करनेवाले वृक्षों के फूलों को और यज्ञके और देवताओं के अयोग्य असुरों के योग्य वृक्षों के फूलोंको तुम मुझसे सुनो २४ और इसीप्रकार जो फूल राक्षस उरग

यक्ष पितर और मनुष्यों को मनसे प्रसन्नहैं उनको भी क्रमसे सुनो २५ इसलोक में जो फूल वन खेत गांव और पर्व्वतोंपर उत्पन्न होनेवाले कंटकी अकंटकी गंध रूप और रससेयुक्तहैं उनकोभी सुनो २६ पुष्पोंसे उत्पन्नहुई गन्धि दोप्रकारकी है एक प्रिय और दूसरी अप्रिय प्रिय गंधवाले पुष्पोंको तो देवताओंके योग्य जानो २७ कंटकरहित वृक्षों के जो श्वेतरंगके फूलहैं वह सदैव देवताओं के प्रियहैं २८ जो कमलआदि के पुष्प जलमें उत्पन्न होनेवाले हैं वह नाग यक्ष गंधर्वोंके योग्य होते हैं २९ जो औषधी कटुतायुक्त रक्तफूल रखनेवाली हैं वह अथर्व्ववेदके मंत्रोंमें शत्रुओं के मारण उच्चाटन आदिके निमित्त वर्णनकी गई हैं ३० वह बड़ी पराक्रमी कंटकवाली जीवोंसे कठिनता पूर्व्व स्पर्श करने के योग्य बहुधारक्त और कृष्णरङ्गवाली औषधी शत्रुओं के मारण आदि के लिये देवताओं के अर्पण करे ३१ और हे राजा जो पुष्प कि मन और हृदयको प्रसन्न करनेवाले बहुत मीठे और स्वरूपवान् हैं वह मनुष्यों को प्यारे हैं ३२ जो पुष्प कि समान अथवा देवताओं के स्थानों में उत्पन्न होनेवाले हैं उनको वृद्धियुक्त विवाहों में और शयन स्थानादि में कभी न लेजाय ३३ जो पुष्प कि पर्व्वतीय बनमें उत्पन्न सौम्य निर्मल जलसे स्वच्छ और मन्त्रसे पवित्र हैं उनको स्मृतियों के अनुसार जैसे उचितहो वैसेही देवताओं के ऊपर चढ़ावै ३४ देवता पुष्पों की गंधिसे प्रसन्न होते हैं यक्ष राक्षस उनके देखने से नाग उनके स्पर्शसे और मनुष्य गन्धि दर्शन स्पर्श इनतीनों से प्रसन्न होतेहैं ३५ इसरीतिसे शीघ्र देवता प्रसन्न होतेहैं तब वह प्रसन्नहुये देवता उन मनुष्यों के चित्तरोचक उत्तम इच्छाके मनोरथों को देकर पोषण करते हैं ३६ देवतालोग प्रसन्न होकर सदैव मनोरथोंको देतेहैं और पूजे हुये होकर मानकरते हैं और अप्रतिष्ठित पूजन न पानेवाले देवता उन नीच मनुष्यों को भस्मकरदेते हैं ३७ अब धूपदीप दानकी विधिकेफल और नानाप्रकार के प्रथम गूगल आदि निर्य्यास दूसरी लकड़ी चन्दन और अग्निकेद्वारा उत्पन्न सारिण और तीसरी अष्टगन्धादि कृत्रिम इनप्रकारों से तीनप्रकारकी धूपेंहैं परंतु उनकी गन्धिप्रिय और अप्रियहोती है उनकी भी मूलसमेत मुझसे सुनो३८।३९ सल्लकी निर्य्यास के सिवाय सब गुग्गुलादि निर्य्यास देवताओं के प्रियहैं उन सब में श्रेष्ठ गुग्गुलहै ४० सारिणों में श्रेष्ठ अगरकी धूप यक्ष राक्षस और सर्पोंको प्रिय हैं और जो दैत्योंकी प्रिय सल्लकी नाम निर्य्यास की धूपहै वह दोप्रकारकी है ४१

राल और मल्लिका के पुष्परससेसंयुक्त और देवदारु आदिक गन्धों से मिलीहुई धूपसे मनुष्यों की प्रसन्नताकी जाती है ४२ शीघ्रता से देवता दानव और भूतों की प्रसन्नता करनेवाली धूप बर्णनकी और जो इनके सिवाय अतर आदिहैं वह मनुष्यों की प्रसन्नता करनेवाली अन्यही धूपहैं ४३ फूलोंके दानमें जो गुणहेतु वर्णनकिये वही धूपों के भी दानमें प्रीतिके बढ़ानेवाले गुणहेतु जानने के योग्य हैं ४४ दीपदानके फलकेसमान दूसरा श्रेष्ठ फलनहीं है इससे उसके भी फलयोग को कहताहूं वह दीपक जैसे जिस बुद्धिसे जिसरीतिसे और जिससमय पर कि दानकरने के योग्यहैं उनसबको भी कहूंगा ४५ अर्थात् वह दीपज्योति कांति कीर्त्ति और ऊर्ध्वमार्गगामी भी कहा जाताहै इसी हेतुसे तेजोंका दान मनुष्यों के तेजोंका बढ़ानेवालाहै ४६ दक्षिणायन नरकरूप अन्धतमहै इसी हेतुसे उत्त-रायनरूप दीपदान प्रशंसाकिया जाताहै ४७ जो कि यह ज्योति ऊर्ध्वगामी और अंधकार के भयकी दूरकरनेवाली है इसी हेतुसे इसलोकमें वह गतिकी देनेवाली होती है ४८ जो कि देवतालोग तेजस्वी प्रभावान् और प्रकाशित हैं और तामस राक्षसलोग प्रभासे रहितहैं इसी हेतुसे दीपदान कियाजाताहै ४९ दीपदान करने से मनुष्य स्वच्छ नेत्र और तेजस्वी होता है इसी से दीपदान के दीपकों को न बुझावै और न चोरीकरे ५० दीपक का चुरानेवाला आदमी तमोगुणी श्रेष्ठ तेज से रहित और अन्धाहोताहै और दीप दानका करनेवाला मनुष्य स्वर्ग लोकमें दीपकों की मालाकेसमान प्रकाश करताहै ५१ घृत भरेहुये दीपकों का दान प्र-थम अर्थात् मुख्यकल्पहै और सरसों तिल आदिके तेलसे पूरित दीपदान करना दूसरा अर्थात् मध्यम कल्पहै परन्तु अपनी वृद्धिका चाहनेवाला मनुष्य बसा अस्थि आदिके तेलसे पूरित दीपकोंका दान कभी न करे ५२ और ऐश्वर्य्यका चाहनेवाला पर्व्वत सम्बन्धी दुर्गम स्थान घनबन देवमन्दिर और चौराहे आदि में सदैव दीपकों का दानकरे ५३ वह दीपदान करनेवाला मनुष्य वंशमें प्रतापी और पवित्रात्मा होकर प्रकाशताकोही पाताहै और सदैव ज्योतिषों की सालो-क्यताको पाताहै ५४ देवता, यक्ष, उरग, भूत और राक्षसादिकों के बलिकर्मों में उनकर्म्म फलके उदय करनेवाले गुणोंको भी वर्णन करूंगा ५५ जिनलोगों के घरमें वेदपाठी ब्राह्मण देवता अतिथि बालक प्रथम भोजन करनेवाले नहीं हैं उन निश्शंक निर्भय और अमंगलरूप मनुष्यों को राक्षसही जानो ५६ इसी हेतुसे

आलस्य से रहित शिरसे नम्रीभूत मनुष्य भोजन करनेसे प्रथम हव्यको देवताओं के अर्थ देकर ५७ बाहर रहनेवाले अन्यदेवता अतिथि यक्ष राक्षस और सर्पादिकों के अर्थ बलिप्रदान करे क्योंकि यह बाहर रहनेवाले बलिको ग्रहण करते हुये गृहस्थियों को आशीर्वाद देते हैं ५८ यहां के दियेहुये हव्य कव्यों से देवता और पितर जीवते हैं और प्रसन्न होकर उन हव्य कव्य देनेवालोंको आयु शुभ कीर्त्ति और धन संपत्तियों से तृप्तकरते हैं ५९ देवताओं के बलि दूध दहीरूप पवित्र सुगन्धयुक्त और देखने में प्रियहों उनको पुष्पोंसमेत उनकी भेंटकरे ६० और यक्ष राक्षसों के बलि रुधिर और मांससेयुक्त करने चाहिये मदिरा आसव समेत लाज और उल्लादिकसे भूषित करके देना उचितहै ६१ पद्म उत्पलनाम कमलसे युक्त बलिनागोंको सदैव प्रियहैं और गुड़सेयुक्त बलिको भूतों के अर्थ भेंटकरे ६२ अपने भोजनसे पहले देवता आदिको देनेवाला मनुष्य बल पराक्रमयुक्त होकर सर्व्वत्र प्रथम भोजन पानेवाला होताहै इसी हेतुसे प्रथम पूजित अन्नको देवताओं के अर्थ दे इसके घरके देवतालोग जो इसके घरको प्रकाशमान करते हैं ६३ वह देवतालोग ऐश्वर्य्य के चाहनेवाले से सिद्धान्न का प्रथमभाग चाहाकरते हैं इसी से सब मनुष्यों को अपनेसिद्ध भोजन के प्रथमभागसे वह देवता पूजने के योग्य हैं ६४ इसकथाको भार्गवशुक्रजीने असुरेन्द्रबलिसेकहा और स्वायंभूमनुजीने सुवर्णऋषिसेकहा सुवर्णऋषिने नारदजीसेकहा ६५ हे बड़े तेजस्वी फिर नारदजीने इस सम्पन्नकथाको मुझसेकहा हे पुत्र तुम भी अब यहांजानकर सबकोकरो ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेमनुसंवादोनामाष्टनवतितमोऽध्यायः ९८ ॥

निन्नानबेका अध्याय ॥

युधिष्ठिरने प्रश्नकिया कि हे भरतर्षभ फूल और धूपदान करनेवालों का फल मैंने सुना बलिविधानका जो फलहै उसको फिर आप कहिये १ धूपदान और दीपदान का भी फल कहिये और बलि बनेवाले बलिदान किस निमित्त करते हैं २ भीष्मजी बोले कि इस स्थानपर एक प्राचीन इतिहासको भी कहताहूं जिसमें राजानहुष भृगु और अगस्त्य ऋषिका प्रश्नोत्तरहै ३ हे महाराज बड़ेतपस्वी राजर्षि नहुषने यहां अपने शुभकर्मसे देवताओं के राज्यको पाया ४ और स्वर्ग में भी मनुष्य और देवतासम्बन्धी नानाप्रकार की क्रियाओंको करताहुआ बड़ी

सावधानी से नियतहुआ ५ हे राजा स्वर्गलोक में उस महात्मा की दिव्य सनातन क्रिया मनुष्य और देवतासम्बन्धी जारीहुई ६ अर्थात् अग्निके सबकार्य्य समिध कुशा फूल फल सबप्रकारके बलि लाजा अन्नके साथ धूपदेना दीपकरना ७ यह सब उस महात्मा राजाके घरमें आकर वर्त्तमान हुये उसने स्वर्गमें भी जपयज्ञ और मुनियों के यज्ञोंको किया ८ हे शत्रुविजयी उस देवेश्वरने पूर्वकी समान न्याय और बुद्धिके अनुसार सब देवताओं का भी पूजनकिया ९ फिर अपने को इन्द्रजानकर अहंकार में संयुक्त हुआ और उसकी सबक्रियाभी नाश को प्राप्तहुई १० बरदान के अहंकार से युक्त उस नहुष ने ऋषियों को सवारी में लगाया और क्रिया के त्यागने से उसने निर्बलता को पाया ११ तपोधन ऋषियों को सवारी में जोड़कर चलानेवाले उस अहंकारी नहुषका बहुतसमय व्यतीतहुआ १२ हे भरतबंशी फिर उसने क्रम क्रम से नम्बरवार ऋषियोंको सवारी में जोड़ना प्रारम्भ किया इसमें एक दिन अगस्त्यजी की नौबत आई १३ फिर बड़े तेजस्वी ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ भृगुजी ने आकर आश्रम में बैठेहुये अगस्त्यजी से मिलकर यह बचन कहा १४ हे महामुनि हमलोग इसरीति से इस निर्बुद्धी देवराज नहुषके असत्कार को किसलिये सहैं अगस्त्यजी ने कहा कि हे महामुनि इस नहुष को तुम कैसे शाप देसक्तेहो क्योंकि इसको बरदाताने बर दियाहै वह आपभी जानतेहैं १५।१६ स्वर्गको जानेवाले इसनहुषने देवतासे यह बर मांगाहै कि जो मेरी दृष्टिके गोचरहोय वही मेरे स्वाधीन होजाय १७ इसीसे मैंने और आपने उसको भस्म नहींकिया और न किसी दूसरे ऋषिनेभी उसको भस्मकरके स्वर्गसे गिराया १८ हे प्रभु पूर्वसमयमें महात्मा देवताने इसको अमृत दियाहै इसहेतुसे हमसे नहीं गिराया जाताहै १९ देवता सदैव ऐसेही बरों को देताहै जो कि प्रजाओं के दुःखका मूलहोताहै वह नीच मनुष्य ब्राह्मणोंके साथ अधर्मयुक्त कर्मको करताहै हे महाबक्ता इसस्थान पर जो हमारा कर्म समयके अनुसार होय उसको आपकहिये आप जैसे कहेंगे निस्संदेह मैं वैसाही करूंगा २०।२१ भृगुजी बोले कि मैं ब्रह्माजी की आज्ञासे उस दैवके मारे पराक्रमी नहुषसे शत्रुताका बदलालेने के लिये आपके पास आयाहूं २२ वह अत्यन्तदुर्बुद्धी देवराज तुमको भी रथमें जोड़ेगा अब मैं अपनी सामर्थ्य से उस दुर्बुद्धी को इन्द्रके पदसे जुदा करूंगा २३ अर्थात् मैं तुम्हारे देखतेहुये इस दुराचारी पापात्मा दुर्बुद्धी को

इन्द्रके पदसे गिराकर शतक्रतु इन्द्रदेवता को इन्द्रके पदपर नियत करूंगा २४ यह अल्पबुद्धी नीच देवराज दैवसे घातितमन होने के कारण अपने नाशके लिये तुमको बाणोंसे घायलकरेगा २५ फिर अवज्ञा और असत्कार से अत्यन्त क्रोधित होकर मैं उस अधर्मी ब्राह्मणों के शत्रु पापी नहुषको क्रोधसे यह शाप दूंगा कि तू सर्पहो २६ हे मुनि इसके अनन्तर मैं इस तेजहत नहुषको बड़ी बड़ी धिक्कारियां देकर पृथ्वीपर गिराऊंगा यह नहुष पापकर्म करनेवाला अपने ऐश्वर्य्यके बलसे मोहितहोरहाहै इसको जैसा आपचाहैं वैसाही मैं करूं २७। २८ भृगुजीके इसबचनको सुनकर वह धर्मसे अच्युत मैत्राबरुण अगस्त्यजी अत्यंत प्रसन्न होकर तपसे पृथक्हुये २९॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेअगस्त्यभृगुसंवादेनवनवतितमोऽध्यायः ९९॥

सौका अध्याय॥

युधिष्ठिरने पूछा हे पितामह उस नहुषने इन्द्रकी पदवी कैसेपाई कैसे नाश हुआ और किसरीति से पृथ्वीपर गिरायागया आप इसके कहने के योग्यहैं १ भीष्मजी बोले कि उन दोनों बार्त्ता करनेवाले ऋषियोंका तो यह बिचारहुआ और नहुषका यह वृत्तान्तहै कि उस महात्माकी स्वर्ग और पृथ्वी से सम्बन्ध रखनेवाली सबक्रिया जारीथीं २ इसीप्रकार दीपदान बलिकर्म के सब सामान और पुत्रादिकों की वर्षगांठ आदि के जुदे प्रकारके कर्म हैं ३ वह सबमिलकर उस महात्मा देवराज नहुषके पास बर्त्तमानहुये नरलोक और देवलोक में शुद्धाचारी पुरुष ज्ञानी कहेगये ४ हे राजेन्द्र जब वह सदाचारवान् होते हैं तब गृहस्थीलोग वृद्धिपाते हैं धूपदान दीपदान नमस्कार ५ और सिद्धान्नका प्रथमभाग अतिथि के निमित्त दियाजाताहै और ग्रहमण्डलों के स्थानोंपर जो बलिकर्म कियेजाते हैं उससे देवता प्रसन्नहोते हैं ६ जिसरीति से बलिकर्म में गृहस्थी की तृप्ति उत्पन्न होती है उसीप्रकार देवताओंको सौगुणी प्रसन्नता उत्पन्न होती है ७ इसरीति से साधुलोग नमस्कारों से युक्त अपने गुण प्रकट करनेवाले धूपदान और दीपदानको देते हैं ८ स्नानकरनेवाले पण्डितलोग जलकेद्वारा संध्या तर्पणादिक करते हैं नमस्कारयुक्त ऐसे कर्म से देवता प्रसन्नहोते हैं ९ विधिपूर्व्वक पूजे हुये सब महाभाग पितृ तपोधन ऋषि और गृहके सब देवता प्रसन्नहोते हैं १० ऐसी

बुद्धिमें नियत होकर उस राजानहुषने देवताओं के बड़े इन्द्रपदको पाकर इस अ-
पूर्व्व कर्मको किया ११ फिर एक समय प्रारब्धकी हीनता होनेपर उसने इनसब
कर्मोंको अनादर करके इस ऐसे दुष्टकर्मको किया १२ वह पराक्रमसे अहंकारी
देवेन्द्र नहुष अपने कर्म के त्यागने से तेज और पराक्रमसे हीनहोगया और उसी
धूप दीप और जलकी बुद्धिको जैसा चाहियेथा वैसा नहींकिया १३ इसीहेतुसे
उसकी यज्ञशाला राक्षसोंने नष्टकरडाली इसके पीछे शीघ्रही ऋषियोंमें श्रेष्ठ अ-
गस्त्यऋषिको रथमें जोड़नेकेलिये १४ सरस्वती नदी के तटपरसे बुलवाया फिर
मन्दमुसकान करते बड़े पराक्रमी महातेजस्वी भृगुजी ने अगस्त्यजी से कहा १५
कि आप तबतक अपने नेत्रोंको बन्दकरो जबतक कि मैं तुम्हारी जटाओं में प्र-
वेश न करूं तदनन्तर वह धर्म से च्युत न होनेवाले बड़े तेजस्वी भृगुजी उस
निश्चेष्ट अगस्त्यजी की जटामें १६ राजानहुषको स्वर्ग से गिराने के निमित्त प्र-
वेश करगये फिर वह देवराज नहुष उन अगस्त्यजी को रथमें जोड़ने के लिये
मिला १७ हे राजा इसके पीछे अगस्त्यजी ने देवराजसे यह वचनकहा कि मु-
झको शीघ्र रथमें जोड़ो और कहो कि तुमको किस देशमें लेचलूं १८ हे देवराज
जहां तुम कहोगे वहीं हम तुमको लेचलेंगे अगस्त्यजी के इस वचनको सुनकर
नहुषने उस मुनिको रथमें जोड़ा १९ तबतो उसकी जटाके ऊपर बैठेहुये भृगुजी
बड़े प्रसन्नहुये और उसका दर्शन भृगुजी ने नहीं किया २० क्योंकि वह उस म-
हात्मा नहुषके वरदानका प्रभाव जानतेथे तब नहुष करके रथमें जोड़ेहुये अग-
स्त्यजी भी क्रोधयुक्तहुये २१ हे भरतबंशी राजानहुषने उनको चाबुकसे चेष्टायुक्त
करके चलायमान किया इससे वह धर्मात्मा ऋषि क्रोधयुक्त नहींहुये २२ तब दे-
वराज नहुषने बामचरणसे अगस्त्यजी के शिरमें आघात किया उस शिरके घा-
यल होनेपर जटामें बैठेहुये क्रोधयुक्त भृगुजी ने २३ पापात्मा नहुषको शापदिया
कि जो तैंने क्रोधकरके इस महामुनिको शिरपर चरणसे आघात किया २४ हे
दुर्बुद्धी इसीहेतुसे तुम सर्प होकर शीघ्र पृथ्वीपर जाओ भृगुजी के इस वचन के
कहतेही वह नहुष सर्पबनकर पृथ्वीपर गिरपड़ा २५ अर्थात् हे भरतर्षभ उन न
दीखनेवाले भृगुजी के शापसे शीघ्रही पृथ्वीपरगिरा हे पृथ्वीपति जो कदाचित्
नहुष भृगुजीको देखलेता २६ तो भृगुजी उसको अपने तेजसे नहीं गिरासक्ते
और वह पृथ्वीपर गिराहुआ नहुष भी अपने दान तप और नियमों से २७ सम-

रण करनेके योग्यहुआ अर्थात् उसने भृगुजीको प्रसन्नकिया कि मेरे शापका अन्तहो २८ इसके पीछे करुणासे भरेहुये अगस्त्यजी ने शापके अन्त करनेके लिये भृगुजीको प्रसन्नकिया तब दयायुक्त भृगुजीने कहा कि २६ हे नहुष तेरेवंशका उद्धार करनेवाला जब राजा युधिष्ठिर होगा वह तुमको शापसे मुक्तकरेगा यह कहकर अन्तर्द्धान होगये ३० फिर वड़े तेजस्वी अगस्त्यजी भी इन्द्रके कार्यको करके ब्राह्मणों से पूजित होकर अपने आश्रम में आये ३१ हे राजा तुमने नहुषको भी उसशापसे छुटाया और तेरे देखतेहुये वह ब्रह्मलोकमें गया ३२ और भृगुजी नहुषको पृथ्वीपर गिराकर ब्रह्मलोकको गये और ब्रह्माजी से सबवृत्तांत वर्णनकिया ३३ इसकेपीछे ब्रह्माजी ने इन्द्रको बुलाकर देवताओं से कहा कि हे देवताओ नहुषने मेरे वरदानसे इन्द्रकी पदवीको पाया ३४ अगस्त्यजीके क्रोध होनेसे वह पृथ्वीपर गया हे देवता लोगो राजाके विना किसीस्थानमें संसारका कामजारी नहीं होसक्ताहै ३५ इसी हेतुसे यह इन्द्र फिर अपने राज्यपर अभिषेक कियाजाय हे राजा ब्रह्माजी के इस वचनको सुनकर देवताओं ने अत्यन्त प्रसन्न होके ब्रह्माजीको उत्तरदिया ३६ कि ऐसाही होय हे युधिष्ठिर तब ब्रह्माजी से इन्द्र पदवीपर वह अभिषेक कियाहुआ इन्द्र ३७ पूर्वकेही समान शोभायमान हुआ इस रीतिका यह प्राचीन वृत्तान्त नहुषकी बेमर्य्याद होजानेके विषयमें है ३८ वह नहुष फिर उन्हीं कर्म्मोंके द्वारा सिद्धहुआ इसीकारण गृहस्थी लोगों को सायंकालके समय दीपदान करना उचितहै ३६ दीपदान करनेवाले मनुष्य शरीर त्यागनेके पीछे दिव्य नेत्रोंको पाते हैं और पूर्णचन्द्रमाके समान तेजस्वी होतेहैं ४० नेत्रके जितने निमिष होते हैं उतनेही बर्षतक प्रकाशमान होतेहैं दीपदान करनेवाला प्रतापी और पराक्रमी भी होताहै ४१॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मे अगस्त्यभृगुसंवादोनामशततमोऽध्यायः १०० ॥

एकसौएकका अध्याय ॥

युधिष्ठिरने पूछा कि हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ जो निर्बुद्धी नृशंसी लोभकरके ब्राह्मणके धनोंको लेते हैं वह कहां जाते हैं १ भीष्मजीबोले हे भरतवंशी इसस्थान पर एक प्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें चांडाल और क्षत्रियका प्रश्नोत्तर है २ क्षत्रियने कहा कि चांडाल तू स्वरूपमें वृद्धहोकर बालकोंकेसमान कर्म करता

है कुतिया और गधीके मांसका खानेवालाहै फिर गौओंसे क्यों बचताहै ३ चांडाल के कर्म्म की साधूलोग निन्दा करते हैं फिर किस हेतुसे गौकी रजमें लिप्त शरीरको जलके कुण्डमें स्नान कराताहै ४ चांडाल बोला हे राजा पूर्व्वसमय में ब्राह्मणकी गौओंको किसी राजाने हरणकियाथा उनकी रजने सोमलताको लिप्त कियाथा जिन ब्राह्मणों ने यज्ञके मध्य में उस सोमलता को पियाथा ५ वह सब लोग और दीक्षा दियाहुआ राजा भी उन सब याचकों समेत ब्राह्मणके इसधन को भोगकर नरकमें गये ६ और जिन २ ब्राह्मण आदि अन्य लोगोंनेभी उन गौओंके दूध दही और घृतको खायाथा वह सबभी राजा के साथ नरक में गये ७ अपने स्वामी और बछड़ों के अलग होजाने के दुःखसे शरीरको कम्पाती और देखतीहुई उन गौओंने अपने शुभ आचरण और दूधके प्रभावसे उनके पुत्र पौत्र पशु स्त्री आदि समेत पुरुषोंको शीघ्रही न्यून अवस्थावाला किया ८ हे राजा ब्रह्मचारी और जितेन्द्रिय होकर मैं वहां नियतहुआ मेरी भिक्षा उन गौओंके दूध से संयुक्तहुई ९ हे राजा उसीके खानेके हेतुसे मैं चांडालहुआ ब्राह्मणका धन हरने वाले उस राजाने भी प्रतिष्ठासे रहित गतिको पाया १० इसी हेतुसे किसी समय में भी ब्राह्मणके किसी धनकी चोरी या मारलेना न करे ब्राह्मणके धनरूप दूधसे संयुक्त अन्नको खाकर मेरीदशा को देखो कि मैं चांडाल हुआहूं ११ इसीकारण पंडित लोगोंको सोमलताका बेचना योग्य नहीं है इसलोकमें सोमलताके बेचनेकी ज्ञानी लोग निन्दा करते हैं १२ हेतात जो मनुष्य इस सोमको मोललेते हैं और जो बेचते हैं वह सब यमराजको प्राप्त होकर रौरवनाम नरकको जाते हैं १३ जो वेदपाठी ब्राह्मण गोरस से मिलेहुये सोमको बुद्धिके अनुसार बेचता है वह ब्याजका लेनेवाला होकर बहुतकाल पर्य्यंत नरकमें पड़ा २ नाशको पाताहै १४ और तीनसौ नरकों में पड़कर बिष्ठासे जीविका करताहै कुत्तेका सेवन अहंकार मित्रकी स्त्री से भोग १५ इन तीनोंको समानही जानना चाहिये अहंकारी मनुष्य धर्म्मको त्यागकरनेके पुण्यसे रहित होताहै कुत्तेको पापी नीचपांडुवर्ण और दुर्बलदेखो १६ मैंने अहंकारसे जीवोंकी इसगतिको पाया हेतात मैं पूर्व्व जन्म में उत्तमवंश महाधनी के गृहमें उत्पन्न होकर ज्ञान बिज्ञानमें पूर्णथा हे प्रभु तब वहां इन दोषों के जाननेवाले १७।१८ मुझ क्रोधयुक्तने सदैव पशुओं के मांसको खाया तब मैं उस आहार बिहार से इसदशाको प्राप्त हुआ इस समयकी बिपरीत

दशाको देखो कि क्रोधमें पूर्ण डुपट्टेके कोनेको धारण किये भवँरोंसे पीड़ित १६। २० अत्यन्त क्रोधरूप गोरजसे संयुक्त मुझ दौड़नेवालेको देखो गृहस्थी मनुष्य वेदपाठ और जपादिकोंसे अथवा ज्ञानियोंके कहेहुये २१ पृथक् २ प्रकारके दानों से भी बड़े २ पापों को दूर करते हैं हे राजा इसीप्रकार पापों के करनेवाले आश्रमोंमें नियत सब संगोंसे रहित वेदपाठी मनुष्यको वेदों के छन्द उद्धार करते हैं हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ मैं पापयोनिमें पैदाहोने से निश्चयको नहीं पाता हूं कि कैसे मुक्तहूं २२। २३ मुझको अपने किसी पूर्व कियेहुये पुण्यसे पहले जन्मका स्मरणहै हे राजा जिस शुभकर्म्म से इस चांडाल योनिसे छूटकर मेरे मुक्ति होनेका कोई उपाय आप कृपाकरके बताइये २४। २५ क्षत्रिय बोला हे चांडाल उसबात को मनसे समझो जिससे कि तू मोक्षको पावेगा जो कोई ब्राह्मणके अभीष्ट के निमित्त अपने प्राणोंको त्यागदेताहै वह यथेच्छगतिको पाताहै २६ जो तू ब्राह्मण के प्रयोजन के लिये कच्चे मांसभक्षियों को शरीर देकर युद्धरूपी अग्निमें प्राणोंका हवनकरेगा तो तेरीमोक्षहोगी इसकेसिवाय और किसीप्रकारसे तू मोक्ष के योग्य नहीं है २७ भीष्मजी ने राजा युधिष्ठिर से कहा कि हे शत्रुसंतापी तब ब्राह्मण के धनके विषय में क्षत्रियसे इसरीति पर समझाये हुये उस चाण्डाल ने युद्धमें प्राणों को त्यागकर अभीष्टगति को पाया २८ हे भरतर्षभ बेटा युधिष्ठिर इसी हेतुसे जो तुमभी अपनी सनातन सद्गति को चाहते हो तो तुमको भी सब प्रकार से ब्राह्मणके धनको रक्षाकरना उचितहै २९ ॥

इतिमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेराजन्यचांडालसंवादोनामैकोत्तरशततमोऽध्यायः १०१॥

एकसौदोका अध्याय ॥

युधिष्ठिर ने पूछा कि हे पितामह शुभकर्मियों के कोई मुख्यलोक हैं अथवा वह जहां तहां पृथक् २ हैं उन सबको आप मुझसे वर्णन कीजिये १ भीष्मजी बोले हे राजा कर्मोंसे लोकोंके अनेक प्रकार हैं पवित्रकर्मी मनुष्य पवित्रलोकों को पाते हैं और पापी पापयोनिवाले लोकों को जाते हैं २ हे तात इस स्थान पर एक प्राचीन इतिहास को कहताहूं जिसमें गौतममुनि और इन्द्र का परस्पर सम्वादहै ३ किसी मृदुस्वभाव जितेन्द्रिय शिक्षायुक्त गौतमनाम ब्राह्मणने महावनमें चारोंओर से क्रीड़ा करनेवाले मातासे रहित हाथी के बच्चेको देखा ४ तब

उस दयावान् व्रतकरनेवाले ने उसको देखकर उसका पोषण किया फिर वह बहुत कालमें बड़ा पराक्रमी हुआ ५ इन्द्रने राजाधृतराष्ट्रका रूप बनाकर उस मतवाले मद झाड़नेवाले पर्वत के समान बड़े पराक्रमी हाथीको पकड़लिया ६ तब तेजव्रत महातपस्वी गौतम ने उस पकड़े हुये हाथीको देखकर राजाधृतराष्ट्र से यहवचन कहा ७ कि हे अकृतज्ञ राजाधृतराष्ट्र इस मेरेपुत्र हाथीको मत लेजाओ यह मेरापुत्र बड़ी कठिनता से पोषण कियागया है सत्पुरुषों के साथ सातचरण चलने को मित्रता कहते हैं हेराजा यहां मित्रसे शत्रुता करनेवाला दोष तुमको स्पर्श नहीं करेगा ८ इससे हे धृतराष्ट्र मेरे पुकारते हुये आप इस हाथीके लेजाने के योग्य नहीं हो यह हाथी मेरे आश्रममें ईंधन और जलका लानेवाला अपने गुरूके वंशमें वर्त्तमान गुरुसेवा में प्रीति से प्रवृत्त बहुतेरी श्रेष्ठ शिक्षाओं से युक्त कृतज्ञ होकर मेरा सदैव प्यारा है ९ धृतराष्ट्र ने कहा हे महर्षि मैं आपको हजार गौवें सौदासी पांचसौ निष्क और नानाप्रकार के अन्य २ धनोंको भी दूंगा ब्राह्मण को हाथी से क्या प्रयोजनहै १० । ११ गौतम ने कहा हे महाराज राजाधृतराष्ट्र दासी दास निष्क बहुल प्रकार के रत्न और नानाप्रकार का दूसराधन तुम्हाराही है हमको इनधनों से क्या प्रयोजन है १२ धृतराष्ट्र बोले कि हे वेदपाठी हाथियों से ब्राह्मणों का कोई प्रयोजन नहीं है वह सब हाथी राजाओं के हैं इस से अपने सवारीवाले हाथीके लेजाने में हमको कोई दोष नहीं है हे गौतम तुम इसको त्यागो १३ गौतमने कहा कि हे महात्मा जिस यमलोक में पवित्रकर्म्म करनेवाला मृतक मनुष्य आनन्द करताहै और करनेवाला शोचताहै वहां उस के पासजाकर मैं तुमसे अपने हाथी को लूंगा १४ धृतराष्ट्र बोले कि जो सन्ध्या आदिक कर्मोंके न करनेवाले परलोक और ईश्वरके न माननेवाले श्रद्धासेरहित पापबुद्धी मनुष्य इन्द्रियों के विषयों में प्रवृत्तहैं वहलोग यमराजके दण्डको पाते हैं धृतराष्ट्र ऊंचे से ऊंचेलोक में जायगा यमलोक में नहीं जायगा १५ गौतम ने कहा कि मनुष्यों को दण्डदेनेवाली यमराजकी सभाहै उसमें मिथ्या नहीं कहा जाताहै जहांपर सत्यहै और जिसमें निर्बललोग पराक्रमियोंको भी दण्डकराते हैं मैं वहांपर तुमसे हाथीलूंगा १६ धृतराष्ट्र बोले हे महर्षि धनआदि के मदसे जो मनुष्य बड़ीबहिन और माता पिताको शत्रुके समान मानकर बर्त्ताव करते हैं उस प्रकार के मनुष्यों का वह लोकहै धृतराष्ट्र बड़े उच्चलोकोंको जायगा १७

वहां न जायगा गौतमने कहा राजाओंको वैरकी नदी और महाभाग भोगी मनुष्योंकी अप्सरा गन्धर्वोंसेसेवित मन्दाकिनी नाम नदी है मैं तुमसे वहांपरहाथी को लूंगा १८ धृतराष्ट्रने कहा जो अतिथियोंके पूजनकरनेवाले सुन्दर ब्रतयुक्तहोकर ब्राह्मणों के अर्थ स्थानों को देते हैं और आश्रितलोगोंको भोजनकराके शेषबचे हुये अन्नको भोजनकरते हैं वह आकाशकी गंगा मंदाकिनी को शोभादेते हैं १६ गौतमने कहा कि जो मेरुपर्वतके आगे गंधर्वोंके गीतों से सेवित उत्तम पुष्पों से शोभायमान बन प्रकाशित होरहाहै और जिसमें अतिसुन्दर बहुत बड़े २ जम्बू नामवृक्षहैं मैं वहां तुझसे हाथीको लूंगा २० धृतराष्ट्र बोले जो ब्राह्मण मृदुस्वभाव सत्यबक्ता बहुतसे शास्त्रोंके ज्ञाता सबजीवोंके प्यारे हैं और जो इतिहासों समेत पुराणोंको पढ़ते हैं और ब्राह्मणों के निमित्त मधु आहुतियों से हवनकरते हैं २१ यहलोक उस प्रकारके लोगोंकाहै और धृतराष्ट्र ऊंचेलोकों को जायगा वहां न जायगा जो जानाजाताहै और जानाहुआ स्थानहै उसको कहो मैं शीघ्र जाता हूं २२ गौतमने कहा कि नारदजी और गन्धर्वसमेत अप्सराओं का अति प्रिय किन्नरों के राजासे सेवित अच्छा फूलाहुआ नन्दनवनहै मैंवहां हाथीको तुमसे लूंगा २३ धृतराष्ट्र बोले जो मनुष्य नृत्य और सरोदमें कुशल अयाचक वृत्ति से चारोंओर को सदैव घूमते हैं उसप्रकारके लोगोंका वह लोकहै हे महर्षि धृतराष्ट्र बहुत उच्चलोकको जायगा वहां न जायगा २४ गौतमने कहा हे महाराज जिस स्थानपर क्रीड़ाके योग्य उत्तर कुरुवनामदेश प्रकाशकरते हैं और जहांपर अग्नि जल और पर्वतसे उत्पन्नहोनेवाली सृष्टि देवताओंसमेत आनन्दमें भरीहुई निवास करती है २५ जहां इन्द्रदेवता सबअभीष्टोंको देते हैं और स्त्रियां अपनी इच्छा के अनुसार कर्मकरनेवाली हैं और जिसस्थानमें स्त्री पुरुषोंमें ईर्षा नहीं है वहां मैं तुझसे हाथीको लूंगा २६ धृतराष्ट्र बोले कि सबजीवों में बिना इच्छाके मांस न खानेवाले दण्डसे रहित जो मनुष्य विचरते हैं और किसी जड़ चैतन्यजीवकोभी नहीं मारते हैं और सबजीवमात्रों के आत्मारूपहैं २७ इच्छा ममता और प्रीतिसे रहित हानि लाभ और निन्दा स्तुतिको समानजाननेवाले हैं उस प्रकारके जीवों का वहलोक है हे महर्षि धृतराष्ट्र बड़े उच्चलोक को जायगा वहां न जायगा २८ गौतमनेकहा हे महात्मा इस के विशेष राजा चन्द्रमाके लोकमें पवित्र सुगन्धियोंसे युक्त रजोगुण और शोकसे रहित सनातनलोक प्रकाशकरते हैं वहांपर मैं तुमसे

हाथी लूंगा २९ धृतराष्ट्रने कहा कि सदैव दानकरनेके अभ्यासी जो मनुष्य दान नहीं लेते हैं अथवा दूसरे मनुष्यों से किसीप्रकारके धनआदिको भी नहीं लेते हैं और जिनको कोई बस्तु अदेय नहीं है अर्थात् सब बस्तु याचकों को देते हैं और सबको आतिथ्य करनेवाले होकर प्रसन्नचित्तहैं ३० जो पुण्यके अभ्यासी क्षमावान् होकर किसी दूसरे से बाद नहीं करते हैं और सदैव अग्निहोत्री और गृहस्थी हैं ऐसे मनुष्योंका वह लोकहै धृतराष्ट्र उनमें न जायगा किन्तु महाऊंचे लोकों को जायगा ३१ गौतमने कहा कि इसके भी विशेष महात्मा सूर्य्य देवता के लोकमें अन्यलोक प्रकाशकरते हैं और रजोगुण तमोगुण और शोकसेरहित सनातन कहेजाते हैं वहां मैं तुमसे हाथी लूंगा ३२ धृतराष्ट्र बोले जो मनुष्य वेद-पाठ और यज्ञों के अभ्यासी गुरुभक्तिपरायण महातेजस्वी ब्रती सत्यवक्ता आचार्य्यों के समान बार्त्तालाप करनेवाले गुरूके कार्य्यों में बिना प्रेरणा कियेहुये चित्तसे प्रवृत्तहैं ३३ उस प्रकारके अत्यन्त पवित्र वाक्जित सत्यता में नियत महात्मा वेदज्ञ लोगोंके निमित्त यह लोकहै इससे राजाधृतराष्ट्र उत्तम लोकों को जायगा इसलोकमें नहीं जायगा ३४ गौतमने कहा कि इसके विशेष बड़े महात्मा राजा वरुणजी के लोकमें सनातन लोक प्रकाशमानहैं जोकि पवित्र सुगन्धियोंसेयुक्त रजोगुण और शोकसे पृथक्हैं वहां मैं तुमसे हाथीलूंगा ३५ धृतराष्ट्रने कहा कि जो मनुष्य सदैव चातुर्मासिकनाम यज्ञोंसे पूजनकरते हैं और एकहज़ार इष्टीयज्ञको प्राप्तकरते हैं और जो वेदपाठी श्रद्धावान् तीनवर्षतक मर्यादकेअनुसार अग्निहोत्रों को करते हैं ३६ और जहांपर धर्मका प्रकाशहै वहां महाआकाशके धारणकरनेवाले महात्मा उपदेश पायेहुये मार्गमें नियतहैं ऐसे धर्मात्मागतिके प्राप्तकरनेवाले जीवोंका यह लोकहै उसमें धृतराष्ट्र नहींजायगा किन्तु ऊंचेलोक में जायगा ३७ गौतम ने कहा कि इन्द्रके लोक शोक औररजोगुणसे जुदे महादुर्गम मनुष्योंके प्रियहैं हे राजा मैं उसबड़े तेजस्वी इन्द्रकेभवनमें हाथीको तुमसे लूंगा ३८ धृतराष्ट्र बोले कि जो शूरमनुष्य सौवर्षतक जीवता रहनेवालाहै और वेदपाठी यज्ञकरनेवाला और सावधानहै यहसब इन्द्रकेलोकको जातेहैं परन्तु धृतराष्ट्र वहां न जायगा किन्तु ऊंचेलोकोंको जायगा ३९ गौतमने कहा कि प्रजापति नाम बहुतबड़ेलोक शोकरहित स्वर्गकी पृष्ठपर नियत सबसृष्टिके मनोरथोंके देनेवाले हैं वहां मैं तुमसे हाथीकोलूंगा ४० धृतराष्ट्रबोले कि जो राजाराजसूययज्ञ

में अभिषेक नामस्नान करनेवाले धर्मात्मा और संसारके रक्षकहैं और अश्वमेध के अवभृथस्नान करनेवाले हैं वह उनलोगोंके लोकहैं वहां धृतराष्ट्र नहींजायगा किन्तु उत्तमलोकोंमें जायगा ४१ गौतमनेकहा कि उससेभी श्रेष्ठ जो सनातन लोक प्रकाशकरते हैं और पवित्र सुगन्धित रजोगुण और शोकसे जुदे हैं उस दुष्प्राप्य गोलोकमें तुझसे हाथीलूंगा ४२ धृतराष्ट्र बोले कि जो हजार गौओंका रखनेवाला प्रतिवर्ष सौ गौओंका दानकरनेवाला है और सौ गौरखनेवाला अपनी सामर्थ्य के अनुसार प्रतिवर्ष दशगोदान करनेवालाहै इसीप्रकार दशगौओं में से एकगोदानकरे और वैसेही दानका अभ्यासी पांचगौओंमें से एकका दान करे ४३ जो वेदपाठी ब्राह्मण ब्रह्मचर्य्यादिकों से वृद्धहोजाते हैं और वेदके वचनों की चारोंओर से रक्षाकरते हैं और बड़े साहसीहोकर तीर्थयात्रामें प्रवृत्तहैं वह उस लोकमें आनन्द करते हैं ४४ प्रभासक्षेत्र, मानसतीर्थ, सवपुष्कर, महत्सर, नैमिष नाम पवित्र तीर्थ, बाहुदा, करतोयिनी ४५ गंगा, गयाशिर, विपाशा, स्थूलवालुका, कृष्णा, गंगा, पञ्चनद, महाह्रद ४६ गोमती, कौशिकी, पंपा, सरस्वती, दृषद्वती और यमुनाजी में जो व्रतकरनेवाले महात्मा जाते हैं ४७ वह उसलोक में जाते हैं और दिव्यस्थानों में दिव्यमालाधारी कल्याणरूप और पवित्र गंधि वाले होते हैं वहां धृतराष्ट्र नहीं जायगा किन्तु उससेभी उत्तम लोकोंको जायगा ४८ गौतम ने कहा कि जहां शीतोष्णता का भयनहीं और क्षुधा पिपासा ग्लानि और दुःख सुखनहीं है ४९ प्रिय अप्रिय भी कोई नहीं है इसीप्रकार शत्रु मित्रभी कोई नहीं है जरा मरण पुण्य पापभी नहीं हैं ५० रजोगुणसे जुदे वृद्धियुक्त ज्ञानशक्तिमें नियत हैं ऐसे पवित्र लोकमें तुझसे हाथीलूंगा ५१ धृतराष्ट्रने कहा कि जो सब संगों से पृथक् पवित्रात्मा व्रतमें सावधान वेदज्ञ वेदान्तशास्त्र और योगशास्त्रके कर्मकर्त्ता होकर स्वर्गगती को प्राप्त हैं ५२ वह सात्विकी पुरुष उस ब्रह्मलोक को पाते हैं हे महामुनि जिसको तू और मैं देखभी नहींसक्ता ५३ गौतमनेकहा जहांपर बृहत्रथन्तर नाम वेदकीऋचाओं का गानकिया जाताहै और जहांपर पुण्डरीक नाम कमलों की वेदियां बिस्तृतहैं और हरिनाम घोड़ों के द्वारा सोममार्गपर चलते हैं वहां मैं तुझसे हाथीकोलूंगा ५४ मैं तीनोंलोकोंके उल्लंघन करनेवाले तुझ इन्द्रको जानताहूं मैंने मनके दुःखसे तेरा अपराध बचन करके भी नहींकिया ५५ इन्द्रनेकहा कि मैं इन्द्रहूं हाथीकेविषयमें लोकोंके हित-

कारी विवादमें प्रवृत्तहुआ हूं इसीकारण आप मुझ नम्रीभूतको शिक्षाकरो जो तुम कहोगे सो सबकरूंगा ५६ गौतमने कहा हे देवराज मेरादशबर्षकी अवस्था वा बनमें मेरे आश्रम में रहनेवाला श्वेतरूप हाथी तुमने पकड़लिया है उसको मुझेदेदो ५७ इन्द्रबोले कि हे उत्तम ब्राह्मण यह तेरा पुत्ररूप हाथी तेरी ओरको देखताहुआ आताहै नाकसे तेरे दोनोंचरणों को सूंघताहै आप मुझे आशीर्वाद दो मैं आपको नमस्कार करता हूं ५८ गौतमने कहा हे देवराज मैं यहां सदैव तुझको आशीर्व्वाद देताहूं और सदैव पूजाकरताहूं इससे हे इन्द्र तुम मेरेभी कल्याणको दो तुमसे दियेहुये हाथीको लेताहूं ५६ इन्द्रने कहा कि जिन बुद्धिमान् सत्यबक्ता महात्माओं के हृदयमें वेदगुप्त हैं उनकेमध्यमें तुझ अकेले महात्मा से मैं आशीर्व्वाद दियाहुआ हूं इसीकारण मैं तुझपर प्रसन्नहूं ६० हे ब्राह्मण तुम अपनेपुत्र हाथीसमेत शीघ्रही बहुत कालकेलिये शुभलोकोंको चलो ६१ तदनन्तर वह बज्रधारी इन्द्र उसकेपुत्र हाथीसमेत गौतमको साथमें करके उस स्वर्ग को चढ़े जो कि सत्पुरुषों से भी कठिनता से प्राप्तहोनेके योग्यहै ६२ जो जितेन्द्रिय पुरुष इसको मनलगाकर सदैव पढ़ेगा वा सुनेगा वह ऐसेही ब्रह्मलोकको जायगा जैसे कि हाथी समेत गौतम ब्राह्मण गयाहै ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेहस्तिकूटोनामद्व्यधिकशततोऽध्यायः १०२॥

एकसौतीनका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि बहुत प्रकारका दान शान्ति सत्यता अहिंसा अपनी स्त्री सेही भोग और यवोंके दानका जो फलहै वह सब तुमने कहा १ कृच्छ्रचान्द्रायण आदिमें से तपोबलके सिवाय और कोई महाबलिष्ठ नहीं है अब तपों में जो महा उत्तम तपहै उसको आप कहने को योग्यहैं २ भीष्मजी ने कहा कि हे कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर जितना तप होताहै उतनाही भोगमें प्रवेशहै यह मेरामतहै अनशन ब्रतसे बड़ा कोई तप नहीं है ३ इस स्थानपर इस प्राचीन इतिहासको कहता हूं जिसमें राजा भगीरथ और ब्रह्माजीका प्रश्नोत्तरहै ४ हे भरतबंशी वह भगीरथ स्वर्गलोक और गोलोकको उल्लंघन करके ब्रह्मलोकको गये ५ हे राजा ब्रह्माजी ने उस भगीरथको देखकर यह बचन कहा कि हे भगीरथ तुमने किसप्रकारसे इस दुष्प्राप्यलोकको पाया ६ हे राजा तपके न करनेवाले देवता गंधर्वादिक भी यहां

नहीं आसके तुम यहां कैसे आये हो ७ भगीरथ बोले हे ज्ञानी ब्रह्माजी मैंने स-
दैव ब्राह्मणों के व्रत में नियत होकर प्रतिदिन एक २ लाख निष्क ब्राह्मणों को
दिये उसके फलसे मैं यहां नहीं आया ८ एक रात्रि नाम दशयज्ञ पंचरात्रिनाम
दशयज्ञ ग्यारह दिनमें होनेवाले ग्यारह यज्ञ और ज्योतिष्टोमनाम सौयज्ञ किये
उन सबके भी फल से यहां नहीं आया ९ जो मैं सदैव तपको करताहुआ श्री
गंगाजी के तटपर हजार वर्षतक नियतहुआ और वहां हजार कन्यादान किये
उनके भी फलसे यहां नहीं आया १० मैंने पुष्कर तीर्थ में एकलाख घोड़े दो लाख
गौ और अन्य लाखोंप्रकारके दान ब्राह्मणोंको दिये ११ मैंने स्वर्णमयी चन्द्रमा
धारण करनेवाले जाम्बूनदनाम सुवर्ण के भूषणोंसे अलंकृत साठहजार कन्या-
दान किये उसके भी फलसे यहां नहीं आया १२ हे लोकनाथ मैंने सवर्णवत्सा
और सुवर्ण से भूषित कांस्यदोहनपात्रवाली दुग्धवती दशअर्बुद गौवें यज्ञों में
दान करी हैं उनमें से प्रत्येक ब्राह्मणको दश २ गौवेंदीथीं उनके फलसे भी नहीं
आया १३ निश्चयकरके यज्ञके आदि और अन्तके प्रत्येक समयपर प्रति सैकड़ा
दश २ गौवें ऐसी दीं जोकि प्रथमकी व्याईहुई और दुग्धवती थीं १४ हे ब्राह्मण
वह दुग्धवती गौवें संख्यामें दशप्रयुतथीं उनके साथ दूनाधन भी दानकिया उन
के भी फल से मैं यहां नहीं आया १५ वाल्हिदेशी श्वेतरंग सुवर्ण के मालाओं
से भूषित एकलाख घोड़े दानकिये उसके फलसे भी यहां नहीं आया १६ हे ब्र-
ह्माजी मैंने प्रत्येक यज्ञमें अठारह कोटि स्वर्ण मुद्रादीं उनके फल से भी मैं नहीं
आया १७ फिर मैंने श्यामकर्ण हरितवर्ण सुवर्णकी मालायुक्त सत्रहकोटि घोड़े
दानकिये १८ ईपानाम काष्ठदण्ड हलके समान दांत रखनेवाले स्वर्णमयीमाला
युक्त उच्च शरीरवाले बड़े कमल चिह्नों के धारण करनेवाले सत्रह हजार हाथी
दानकिये १९ हे देवेश मैंने सुवर्ण के दिव्य भूषणों से अलंकृत सुवर्ण के अंग
वाले दशहजार रथ दानकिये २० और अच्छे घोड़ों से शोभित अन्य प्रकार के
भी सातहजार रथ दानकिये दक्षिणाके जो २ अंग वेदों में वर्णन किये २१ मैंने
उनको भी वाजपेयनाम दशयज्ञोंमें दिये मैंने यज्ञ और पराक्रममें इन्द्रके समान
प्रभाव रखनेवाले २२ निष्कों के कंठा रखनेवाले हजार छत्रभी दक्षिणामें दिये हे
पितामह सब राजाओंको विजयकरके धन आदिके द्वारा २३ राजसूयनाम आठ
यज्ञों से पूजनकरके दान किये उसके फल से भी यहां नहीं आया हे जगत्पति

जहांतक श्रीगंगाजी का प्रवाह है वहांतक के ब्राह्मणलोग मेरी दक्षिणाओं से ढकगये मैं उनके फलसे भी यहां नहीं आया २४ मैंने प्रत्येक ब्राह्मणको सौ २ सुवर्ण के मालाओं से अलंकृत दो २ हजार घोड़े २५ और तीन २ सौ उत्तम गांव दिये सामान्य आहारयुक्त बाणी को बश में करके मैंने जितेन्द्रिय होकर २६ बहुत कालतक हिमालय पर्व्वत में उस गंगाजी के तटपर तप किया जिस गंगाजी की महाअसह्य धारा को महादेव जी ने अपने मस्तक और शिरपर धारणकियाथा २७ हे पितामह मैं उस फल से भी यहां नहीं आया २८ शम्या नाम दण्डकाष्ठ पराक्रमीके हाथसे जितनी दूरतक फेंकाजाय उतने प्रमाणवाली पृथ्वीपर जो वेदीहोंय उनपर देवताओं को आहुति देकर सुदक्षनाम दशहजार यज्ञोंसे और दिनमें होनेवाले १३ यज्ञोंसे भी पूजन किया और पुण्डरीक नाम यज्ञको किया हे देवता मैं उनकेभी फलसे यहां नहीं आया २९ मैंने श्वेत बर्ण उत्तम आठहजार बैलभी इन ब्राह्मणों को दानकिये हरएक ब्राह्मणको एक एक सुवर्णका तुरंग देकर निष्कके कण्ठे रखनेवाली स्त्रियांदीं ३० सुबर्ण और रत्नोंके समूह और मणियों के पर्व्वत दानकिये धन धान्यसे पूर्ण हजारों प्रकारके गांव दानकिये ३१ निरालस्यहोकर मैंने बहुतसे महायज्ञों से पूजन करके यह लौन चबादेनेवाली असंख्य गौ ब्राह्मणों को दानकरीं उनकेभी फलसे मैं यहां नहीं आया ३२ हे ब्राह्मण देवता जो ग्यारहदिन में यज्ञहोतेहैं उन यज्ञों से और जो चौबीस दिनमें होतेहैं उन यज्ञ और अश्वमेधों से और आर्कायण नाम सोलह यज्ञोंसे पूजनकिया उनकेभी फलसे यहां नहीं आया ३३ जो जङ्गल कि एक योजन लम्बा और चौड़ाथा और रत्नोंसे अलंकृत सुबर्णके वृक्षोंसे पूर्णथा औरजिस का कण्ठ निष्कों का समूह था मैंने उसको दानकिया उनके फलसे भी मैं नहीं आयाहूं ३४ क्रोधरहित होकर मैंने तीस बर्षतक कठिन कर्मवाले तुरायण नाम व्रतको भी किया और प्रतिदिन नौसै गौवें ब्राह्मणोंको दीं ३५ उसीप्रकार अन्य ब्राह्मणों को उतनेही बैलदिये हे लोकनाथ इसके सिवाय सदैव ब्राह्मणों को दानकिये उसफलसे भी मैं नहीं आया ३६ हे ब्रह्माजी जो मैंने सदैव तीस अग्निहोत्रों को आठसर्बमेध सात नरमेध ३७ और २८०० विश्वजित नाम यज्ञों से पूजन किया हे देवेश्वर उनके भी फलसे मैं यहां नहीं आयाहूं ३८ सरयू, बाहुदा, गंगा, और नैमिषतीर्थ पर दशलाख गौवें दानकरीं उससे भी यहां नहीं

आया जिस अनशन व्रतको इन्द्रने छुपाया ३६ और जिसको भार्गव शुक्रजी ने तपके बलके द्वारा जाना हे प्रधानपुरुष मैंने शुक्रजीके वचनसे उसप्रकाशित व्रतका साधनकिया ४० इस कर्म्मके शुद्धहोने पर हजार ऋषि और जो २ अन्य ब्राह्मण वहांपर इकट्ठेहुये थे वह सब मुझपर प्रसन्नहुये ४१ हे प्रभु उन लोगों ने मुझसे कहा कि तुम ब्रह्मलोक को जाओ उन प्रसन्नचित्त हजार ब्राह्मणों के इस वचनको सुनकर मैं ४२ इसलोक में आयाहूं इसमें आप किसीबातका विचार न करिये ४३ जैसा चाहा वैसाही मनोरथ ईश्वरसे प्राप्तहुआ मैं सत्य २ ही कहताहूं कि अनशन व्रतसे श्रेष्ठ कोई तप नहीं है यह मेरा मतहै हे श्रेष्ठ देवता आप प्रसन्नहूजिये आपको मैं नमस्कार करताहूं ४४ भीष्मजी बोले उन ब्रह्माजी ने इस प्रकारकी वार्त्ता करनेवाले पूजाके योग्य राजाभगीरथको शास्त्रके लिखेहुये कर्म और विधिसे पूजन किया ४५ इसीहेतुसे तुमभी अनशन व्रतोंसे युक्तहोकर ब्राह्मणोंका पूजनकरो वेदपाठी ब्राह्मणों के वचनों से इसलोक और परलोक दोनों में सब पदार्थ प्राप्तहोतेहैं ४६ तुम वस्त्र अन्न गो और अच्छे२ स्थानोंसे भी उत्तम ब्राह्मणों का पूजनकरो क्योंकि उत्तम देवताओं के समूहों से भी ब्राह्मण प्रसन्न करनेके योग्यहैं ४७ इस बड़े गुप्तव्रत को निर्लोभ होकरकरो ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेब्रह्माभगीरथसंवादेत्र्यधिकशततमोऽध्यायः १०३॥

एकसौचारका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे पितामह मनुष्यकी शतवर्षकी आयुर्दावाला कहाहै इसीसे वह सौवर्ष जीने वाला होकर उत्पन्नहोताहै फिर किसकारण बालक अवस्थामेंही मरजातेहैं १ किस कर्मसे मनुष्य पूर्णायुवाला होताहै और किसकर्मसे अल्पायु होजाताहै किसकर्मसे शुभकीर्त्तिको पाताहै और किसकर्म्मसे धनको पाताहै २ तप ब्रह्मचर्य्य जप होम औषधी और मन वाणीके कर्म इनसबमें से कौनसे कर्म को करके उनसब बातोंको पाताहै हे पितामह उसको आप मुझसे कहनेके योग्य हैं ३ भीष्मजी बोले कि इसस्थान पर जो तुम पूछतेहो कि मनुष्य किस हेतुसे अल्पायु वा दीर्घायुहोता है ४ और काहेसे शुभकीर्त्ति और लक्ष्मीको पाकर कल्याणयुक्त होताहै उन सब कारणों को और उपायों को तुमसे कहताहूं ५ आचारसे अवस्थाको पाताहै आचारसेही लक्ष्मीको प्राप्तकरताहै और आच

से इसलोक परलोक दोनोंमें शुभकीर्त्तिको पाताहै ६ ऐसा दुराचारी मनुष्य जिस से कि सब जीवधारी भयभीत रहते हैं वह अप्रतिष्ठावान् होकर बड़ी अवस्थाको नहीं पाते हैं ७ इसी हेतुसे अपने ऐश्वर्य्यका चाहनेवाला इसलोकमें आचारका अभ्यास करे वह मनुष्य का आचार पापयुक्त मनुष्य के शरीरके कुष्ठआदि दुष्ट चिह्नोंको दूरकरताहै ८ धर्म्म आचाररूप लक्षण रखनेवाला है और सन्तभी आचाररूप चिह्न रखनेवाले हैं साधू मनुष्योंका जैसा चलनहै यही आचारका लक्षण है ९ देखा और सुनाभी गयाहै कि साधुलोग उस मनुष्यको जो धर्मचारी और ऐश्वर्य्य उत्पन्न करनेवाले कर्मोंका करनेवाला है उसे अपना प्यारामानते हैं १० जो परलोक और ईश्वरके न माननेवाले संध्याआदिक कर्म्मों के न करनेवाले गुरू शास्त्रसे विरुद्ध धर्म्म से अज्ञात और दुराचारी हैं वह थोड़ी अवस्थापाते हैं ११ दुष्ट प्रकृति बे मर्य्याद सदैव वर्णसङ्कर स्त्रियों से भोगकरनेवाले आदमी इस लोकमें अल्पायु और नरकगामी होते हैं १२ जो मनुष्य सब लक्षणों से रहित भी हैं परन्तु आचारवान् श्रद्धावान् और दूसरे के गुणों में दोष न लगानेवाला है वह सौबर्षतक जीताहै १३ क्रोधकात्यागी सत्यबक्ता जीवोंका न मारनेवाला दूसरे के गुण में दोष न लगानेवाला ईर्षा और कुटिलता से रहित मनुष्य सौबर्ष तक जीवताहै १४ जो मनुष्य मृत्तिकाके ढलेका मर्द्दन करनेवाला तृणोंका छेदन करनेवाला दाँतों से नखों को काटनेवाला सदैव छोटा मुखहोकर दुर्ज्जन वा अस्तब्यस्त प्रकृतिहै वह इसलोकमें बड़ी अवस्थाको नहीं पाताहै १५ ब्राह्ममुहूर्त्त में जागकर धर्म्म अर्थको विचारकरे और उठकर आचमनादि करके हाथ जोड़कर प्रातःकालकी संध्यामें प्रवृत्तहो १६ और इसीरीति से बचनको मानकर सायंकालकी भी संध्योपासनादि क्रियाओंको करे और उदय वा अस्तसमय सूर्य्य को कभी न देखे १७ राहुसे ग्रसेहुये जलमें नियत आकाशस्थ सूर्य्यको नहीं देखे ऐसे बिचारपूर्ब्बक संध्याकरने से ऋषिलोगोंने बड़ीअवस्थाको पायाहै १८ इसीकारण मनुष्य सदैव मौनहोकर प्रातःकाल और सायंकाल की संध्या को उपासना करे जो ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य प्रातःकाल वा सायंकालकी संध्याओंको नहीं करते हैं १९ तो धर्म्मका अभ्यासी राजा उन सब लोगों से शूद्रका कर्म्म करावे सब वर्णोंके मध्यमें किसीदशामें भी अन्यकी स्त्री सम्भोगके योग्य नहीं है २० ऐसा अल्पायु करनेवाला कर्म इसलोक में नहीं है जैसा कि इसलोक में

दूसरेकी स्त्री से भोगादिकरना दुष्टकर्म मनुष्योंका होताहै २१ स्त्रियों के अंग में जितने रोमकूप उत्पन्नहैं वह उनका भोग करनेवाला उतनेही बर्षतक नरक में निवास करताहै २२ केशोंकी स्वच्छता नेत्रों में अंजनादि लगाना दन्तधावन करना देवताओं का पूजन यह सब काम दिनके पूर्व्वभागमें करनाचाहिये अपनी वा पराई मूत्र विष्ठाको कभी न देखे उसके समीप वा उसी के ऊपर खड़ा न होवे प्रातःकाल सायंकाल और मध्याह्नके समय २३ । २४ अपरिचित मनुष्योंके साथ वा वृषली लोगोंके साथ अकेला न जाय ब्राह्मण गौ राजा २५ वृद्धपुरुष भाराक्रान्त गर्भिणीस्त्री और निर्बल मनुष्यको सदैव मार्ग देना उचितहै पीपल आदिके वृक्षको जानकर जहांतक बने वहांतक प्रदक्षिण करे २६ सब चौराहोंको दाहिनाकरे मध्याह्न रात्रि अर्द्धरात्रि २७ और दोनों संध्याओंमें चौराहेपर जाय दूसरोंका पहराहुआ वस्त्र और जूता कभी काममें न लावे २८ सदैव ब्रह्मचारीरहै चरणसे चरणको नहीं लांघे अमावास्या पूर्णमासी और दोनोंपक्षकी चतुर्द्दशी और अष्टमीको सदैव ब्रह्मचर्य्य में रहे २९ । ३० विनायज्ञके और सवारी के योग्य पशुओंके मांसको न खाय द्वेष निन्दा और ईर्षाको त्यागकरे ३१ शरीरसे दुष्ट न होय निर्द्दयतासे बातें न करे नीचकेद्वारा शत्रुओंको विजय न करे जिस बचनसे दूसरा मनुष्य भयभीतहोकर व्याकुल होय उस पापसे युक्त शोककी उत्पन्न करनेवाली बातको नहीं कहे ३२ बाणरूपी बचन मुखसे निकलते हैं जिनसे घायलहोकर मनुष्य रात्रि दिन शोचताहै और वह बचनरूपी बाण दूसरेके मर्मस्थलोंपर गिरते हैं पण्डित मनुष्य उन बचनरूपी बाणोंको दूसरे पर नहीं छोड़े ३३ तीरों से छेदाहुआ और फरसों से काटाहुआ वन चाहै उपजआवे परन्तु बचन रूपी भालोंसे घायल मनुष्यका हृदय फिर नहीं सम्हलताहै ३४ कर्णनालीक अर्थात् बाणों के निकालनेवाले बाणों को शरीरसे निकाल भी लेते हैं परन्तु बचनरूपी भाले नहीं निकलसक्ते हैं क्योंकि वह हृदयमें निवास करनेवाले होजाते हैं ३५ जो मनुष्य किसी अङ्गसे रहित अथवा अधिक अङ्गरखनेवाले बिद्यासे शून्यधन के चमत्कार से बिहीन और सत्यतासे रहित हैं उनका हास्य न करे ३६ ईश्वर और परलोक का न मानना वेदकी निन्दा न करना देवताओं की निन्दा शत्रुता और प्रकृतिकी चपलता को अत्यन्त त्यागकरे ३७ सिवाय पुत्र और शिष्यके दूसरे के ऊपर दण्डको नहीं उठावे परन्तु कभी क्रोधयुक्त होकर उनको न

मारे क्योंकि शिक्षा और शासनाही आज्ञावर्ती को करनी चाहिये ३८ ब्राह्मण को निराश न करे नक्षत्र और पक्षोंकी तिथियोंको न सुनावे इसरीति से मनुष्य की अवस्थाका नाश नहीं होताहै ३९ मूत्र और विष्ठाको करके और मार्गचल के चरणों को धोवे इसी प्रकार वेदपाठ जप और भोजन में चरणों को धोवे ४० देवताओंने ब्राह्मणकी तीनबस्तु पवित्र विचार करी हैं शूद्र और ऋतुस्नाता स्त्री का न देखाहुआ जलोंसे शुद्ध कियाहुआ और जो वचनसे प्रशंसा कियाजाता है ४१ संयाव अर्थात् घृत दुग्ध बूरा और गेहूं के आटे से बनीहुई कृशर अर्थात् तिल चावलसे बनाहुआ मांस शष्कुली अर्थात् पूरी और तस्मै इन सबभोजनों को केवल अपनेही लिये बनाना योग्य नहीं किन्तु देवताओं के उद्देशसे तैयार करे ४२ सदैव अग्नि को पूजनकरे भिक्षुक को भिक्षादे और सदैव मौनहोकर दंतधावन करे ४३ सूर्य्योदय होजाने के समय निद्रा न करे क्योंकि सूर्य्योदयमें सोनेवाला प्रायश्चित्ती होता है प्रातःकाल उठकर प्रथम तो माता पिताको दण्डवत्करे ४४ और गुरू आदिक अन्य वृद्धोंको भी नमस्कारकरे इसरीति के करने से बड़ी अवस्थाको पाताहै त्यागके योग्य दांतनको सदैव त्यागकरे ४५ शास्त्र में लिखीहुई दांतनों को काममें लावे पर्व्वों में दांतन न करे बड़ी सावधानी से उत्तराभिमुखहोकर दांतन करे ४६ दांतन बिना किये देवपूजन न करे देवताका पूजनकिये बिना कभी राजा आदिके पास न जाय ४७ परन्तु गुरूवृद्ध और धर्मात्मा पण्डित के पास जाना निषेध नहीं है जो बड़े बुद्धिमान हैं उनको मैला दर्पण न देखनाचाहिये ४८ बिना जानीहुई और गर्भिणी स्त्री से भोग न करे ४९ उत्तर और पश्चिमकी ओर शिरकरके न सोवे बुद्धिमान मनुष्य सदैव पूर्व्व या दक्षिण की ओर शिरकरके सोवे ५० टूटीहुई पुरानी और जिसका वृत्तान्त नहीं जानाहुआ है ऐसी शय्यापर न सोवे और जिसपर स्त्री सोरहीहो उसपर न सोवे और कभी तिरछाहोकर न सोवे ५१ किसीकाम अथवा निजसे भी नास्तिक मनुष्यके पास न जावे इसीप्रकार मनुष्य चरण से आसन को खैंचकर न बैठे ५२ नङ्गाहोकर कभी स्नान न करे पण्डित मनुष्य स्नानकरके अङ्गोंका मर्द्दन नहीं करे ५३ बिना स्नान किये चन्दन न लगावे स्नानकरके बस्त्र को नहीं फटकारे मनुष्य कभी गीलेबस्त्र को नहीं धारणकरे ५४ माला को नहीं खैंचे और बाहर धारण नहीं करे रजस्वला स्त्री से कभी वार्त्तालाप न करे ५५ खेत अथवा ग्राम

के समीप मूत्र और बिष्ठाको नहीं करे जलके बीच में मूत्र और बिष्ठा कभी न करे ५६ भोजन करने को जाने के समय तीनबार आचमन करे और भोजन करचुकने के पीछेभी तीनबार आचमन करे फिर दोबार मुखको धोवे ५७ सदैव पूर्वाभिमुख मौन होकर अन्न की निन्दा न करताहुआ भोजन करे और कुछ अन्न छोड़दे भोजन के पीछे आचमन करके अग्नि को मनसे स्पर्श करे ५८ पूर्व्वाभिमुख भोजन करने से पूर्णायु को पाता है और दक्षिणाभिमुख होकर भोजन करने से शुभ कीर्त्ति को पाता है और पश्चिमाभिमुख होकर भोजन करने से धनको पाताहै और उत्तराभिमुख होकर भोजन करने से कल्याणोंको पाता है ५६ जलयुक्त हाथसे अग्नि को स्पर्श करके सब इन्द्रियों समेत प्राणों को स्पर्शकरे ६० भुसपर न बैठे बाल भस्म मुंड और अन्य के स्नान किये हुये जलको दूरही से त्याग करे ६१ होमों की शान्ति करे सावित्र नाम मन्त्रों को धारणकरे सदैव बैठकर भोजनकरे चलताहुआ कभी न करे ६२ खड़े होकर मूत्र करना अनुचितहै भस्म और गोशालामें मूत्रकभी न करे गीले पैरोंसे भोजन तो करे परन्तु गीले पैरोंसे कभी न सोवे ६३ गीलेपैरोंसे भोजन करनेवाला हजार बर्षतक जीताहै उच्छिष्ट मुखसे अग्नि गौ ब्राह्मण इन तीनों तेजस्वियोंको कभी स्पर्श न करे ६४ इस रीतिसे आयुका नाशनहीं होताहै और जूठे मुखसे सूर्य्य चन्द्रमा और नक्षत्र इनतीनोंको भी न देखे ६५ वृद्ध मनुष्य के आनेपर तरुण मनुष्य के प्राण ऊपरको चलायमान होते हैं ६६ प्रतिष्ठा पूर्व्वक अभ्युत्थान के लिये उठने और दण्डवत् करने से फिर उनप्राणोंको पाताहै अर्थात् वृद्धलोगों को दण्डवत् करके अपने हाथसे आसनदे ६७ हाथ जोड़कर समीप बैठे और चलने के समय उनके पीछे२ चले टूटेहुये आसनपर नहीं बैठे और टूटीहुई रुईको त्यागकरे ६८ एकवस्त्रसे भोजन न करनाचाहिये अर्थात् धोतीके बिशेष अँगोछा भीहोना चाहिये नंगेशरीरसे स्नान करना योग्यनहीं है और नंगेहोकर सोनाभी योग्य नहीं है जूठे मुखसे भी कभी न सोवे ६९ जूठे मुखसे शिरको कभी स्पर्श न करे क्योंकि शिरमेंही सब इन्द्रियां आश्रयलियेहुये हैं बालोंका पकड़ना और शिरपर प्रहार करना इनसब बातोंको त्यागकरे ७० मिलेहुये दोनों हाथों से अ-पने शिरको नहीं खुजावै और सदैव शिरसे स्नान नहींकरे इसरीतिके कर्मकरने से उसकी आयुर्दा नष्ट नहीं होती है ७१ जिस तेलको शिरपर मलाहो उसको

अपने और किसी अङ्गपर नहीं मर्द्दनकरे तिलयुक्त अन्नका भोजन नहींकरे ऐसे कर्म्मों के करने से उसकी आयु पूरीहोती है ७२ जूठे मुखसे न कभी पढ़े और न किसी दूसरे को पढ़ावे और दुर्गन्धित वायुके आनेपर चित्तसे भी वेदको न विचारे ७३ प्राचीन वृत्तान्तोंके ज्ञातालोग इसस्थानपर यमराजके कहेहुये प्रसंगको कहते हैं ७४ अर्थात् यमराज कहते हैं कि मैं उसमनुष्य की आयुर्द्दाको खंडित करताहूं और उसकी सन्तानको लेताहूं ७५ जो जूठेमुख होकर मार्ग्ग में चलता है और वेदको पढ़ता पढ़ाताहै और जो ब्राह्मण अनाध्यायोंमें भी वेदोंको पढ़ता है उसको वेद बिस्मरण होजाता है और आयुर्द्दा नाश होजाती है इसी हेतुसे योग्य मनुष्य अनाध्यायों में वेदोंको कभी न पढ़ें ७६ जो मनुष्य सूर्य्य अग्नि गौ ब्राह्मण इनचारोंकी ओरको अथवा मार्ग्ग में मूत्रको करते हैं वह भी अल्पायु होते हैं ७७ दिनमें उत्तरको मुखकरके मूत्र बिष्ठाकरे और रात्रिमें दक्षिण की ओर मुखकरके बिष्ठा मूत्रकरे तो आयुर्द्दा नष्टनहीं होती है ७८ वहुत कालतक जीवने के इच्छावान् पुरुष ब्राह्मण क्षत्रिय सर्प्प इनतीन दुर्बल शरीरवालों को अपमान न करे यह तीनोंडाढ़में विष रखनेवाले हैं ७९ डाढ़में बिष रखनेवाला क्रोधयुक्त सर्प्प जहांतक नेत्रों से देखताहै वहांतक भस्म करदेताहै और क्रोधयुक्त क्षत्रिय भी जहांतक अपने पराक्रमसे स्पर्श करताहै वहां तक बिध्वंस करताहै ८० और ब्राह्मण देखने से और शापसे सम्पूर्ण वंशभरेको नाश करदेताहै इसी हेतु से पण्डित मनुष्य इन तीनोंकेपास बड़े विचार पूर्व्वक जायँ ८१ गुरूकेसाथ में कभी हठ न करनाचाहिये हे युधिष्ठिर क्रोधयुक्त गुरू प्रतिष्ठा पूर्व्वक प्रसन्न करने के योग्यहै ८२ यहां मिथ्याबादी गुरूके भी साथमें श्रेष्ठ कर्म्मकरना चाहिये गुरू की निन्दाकरना निस्सन्देह मनुष्य की आयुर्द्दा को भस्मकरती है ८३ स्थान से दूरजाकर मूत्रकरे और दूरही जाकर पैरभी धोवे अपनी वृद्धि चाहनेवाले मनुष्य को उच्छिष्ट अर्थात् जूठन स्थानसे दूरडालना चाहिये ८४ पण्डित मनुष्यों को रक्तमाला धारण करना उचित नहीं है श्वेतमाला धारण करने के योग्यहैं हे प्रभु परन्तु रक्तोत्पलनाम कमल को ८५ और वनमें उत्पन्न होनेवाले लालपुष्प को शिरपर धारण करना उचितहै कचनारका फूल और सुबर्ण का फूल कभी दूषित नहीं होताहै ८६ हे राजा स्नान करनेवाला मनुष्य तरचन्दन लगावे और बुद्धिमान् मनुष्य वस्त्रोंको ओतप्रोत न करे अर्थात् ऊर्ध्वभागके बस्त्रको अधोभाग में

और अधोभागके बस्त्रको ऊर्ध्वभागमें धारणनहींकरे ८७ इसीप्रकार दूसरेका पहरा हुआ बस्त्र आपत्तिकालके सिवाय धारणकरना उचित नहीं है हे नरोत्तम शयन-स्थानका दूसरा बस्त्रहोनाचाहिये ८८ मार्गमें दूसरा बस्त्रहोनाचाहिये देवताओंके पूजनमें जुदा बस्त्रहोय सुपेद सरसों चन्दन बिल्व तगर ८९ केसरसे पृथक् २ शरीर पर लेपकरे बुद्धिमान् मनुष्य स्नानकरके पवित्रतापूर्व्वक अलंकृतहोके ब्रह्मचर्य्य ब्रतको धारणकरे ९० सब पर्वकालों में सदैव ब्रह्मचारी होय हे राजा एकपात्र में दूसरेके साथ भोजन न करे ९१ रजस्वला स्त्रीका बनाया हुआ भोजन कभी न खाय और जिसको गौ आदिने सूंघलिया है उसकोभी बिनाधोये कभी न खाय और दूध आदि याचना करनेवाले को दिये बिना कभी न खाना चाहिये ९२ बुद्धिमान् मनुष्य भ्रष्टमनुष्यके पास बैठकर भोजन न करे श्राद्धआदिक धर्मोंके बिना जो अन्न निषिद्धहैं उनको श्राद्धादिके बिना भोजन नहींकरे परन्तु श्राद्ध में अवश्य खाय ९३ ऐश्वर्य्य का चाहनेवाला पीपल की पिप्पली बड़का फल सनका साग और गूलर इन सबको न खाय ९४ अजके गौके मोरके और सूखे मांसको त्यागकरे और बासी मांसकोभी त्यागकरे ९५ ज्ञानीमनुष्य हाथमें नोन को लेकर न खाय रात्रिके समय दही और सत्तूको न खाय बिनायज्ञके मांसको त्यागकरे ९६ सावधान मनुष्य प्रातःकाल और सायंकाल भोजनकरे उनदोनों समयों के मध्य में न खाय बालसंयुक्त अन्नको भोजन न करे इसीप्रकार शत्रुके श्राद्धमेंभी भोजन न करे ९७ मौनहोकर भोजनकरे केवल एकबस्त्रसे न करे और लेटाहुआ भी कभी भोजन न करे पृथ्वीपर रखकर भोजन न करे खड़ाहुआ और शब्द को करताहुआ भोजन नहीं करे ९८ हे राजा जल समेत अन्न को अतिथियों को देकर पीछेसे आप भोजन करे पंडित मनुष्य दूसरे में मन रखनेवाला भी भोजन न करे ९९ हे राजा एक पंक्तिमें भोजन के योग्य सब अन्न एकसा होय जो मनुष्य अपने पूज्य और आश्रित लोगों को न देकर खाता है वह हलाहलनाम बिषको भोजन करताहै १०० भोजनकीवस्तु खीर सत्तू दही घृत और मधुको छोड़कर इन अन्यभोजन की वस्तुओं का शेष बचाहुआ किसीदूसरेको नहीं दे यह धर्मशास्त्र में लिखाहै जो पुत्र कि पिताके जूठ दूध आदिका भोजन करे उसका दोष नहीं है १०१ हे नरोत्तम भोजन करताहुआ उसको पाचकता और अपाचकता का सन्देह न करे अर्थात् भोजनके पूर्व्वही पाचक अन्न को

तैयारकरे किन्तु तैयार करके सन्देह न करे ऐश्वर्य्य चाहनेवालेको भोजन करने के पीछे दूधपीना योग्यहै १०२ उसीप्रकार आचमनकर एकहाथसे जलको लेकर दक्षिण पांवके अंगूठे को धोवे १०३ प्रयोगमें कुशल सावधान पुरुष अग्निको स्पर्शकर हाथको मस्तकपर धरकरके अपनी बिरादरी वालोंमें प्रतिष्ठाको पाताहै १०४ जलोंसे सब इन्द्रियों को स्पर्श करे और हाथकी हथेलीसे नाभि को स्पर्श करताहुआ खड़ाहोजाय मनुष्यके हस्तके मूलसे दाहिने अंगुष्ठतक में ब्रह्मतीर्थ होताहै और कनिष्ठा उंगलीके पीछे देवतीर्थ होताहै १०५।१०६ हे भरतबंशी अंगूठे और तर्जनी उंगलीका जो मध्यस्थान है उसीसे न्यायके अनुसार सदैव जलको स्पर्शकरके पित्रोंका तर्पण करे १०७ दूसरेकी निन्दासे रहितहोकर कभी किसीसे अप्रिय बचन न कहै ऐश्वर्य्य के चाहनेवाले मनुष्य को क्रोध अहंकार और शोक प्रकट न करना चाहिये १०८ जो मनुष्य अपने वर्णसे च्युतहोगयेहैं उनके साथ कोई कथा कहना न चाहिये उनके दर्शनकोभी त्यागकरे उनके साथ मेल मिलापभी न करे तो वह पुरुषभी बड़ी आयुर्दा को पाताहै दिनमें स्त्रीसंग न करे कन्या और दुष्टाचारणी स्त्री से प्रीति न करे १०९ ऋतु के स्नान किये बिना स्त्री से मनुष्य को संगकरना योग्य नहीं है इनबातों के करने से भी बड़ी अवस्था को पाता है करने के योग्य श्राद्ध आदि के बिचार होजाने पर अपने तीर्थमें आचमनपूर्व्वक तीनबार जल पीकर दोबार मार्जन करके पवित्रहोताहै ११० मनुष्य एक बार इन्द्रियों को स्पर्शकर तीनबार चेष्टा देकर वेदमें देखे हुये कर्मसे देवता और पितरों का पूजनकरे १११ हे कौरव्य भोजन के आदि अन्त में ब्राह्मणके लिये जो हितकारी और पवित्र करनेवाले शौचहैं उनको मैं तुमसे कहताहूं ११२ सब शौचोंमें ब्राह्मतीर्थसे आचमनकरे छींककर वा थूककर आचमनसे पवित्र होताहै ११३ जो बिरादरी के कोई मनुष्य वृद्ध और मित्रहोकर निर्द्रव्य होंय वह सब गृहमें निवास करवाने के योग्यहैं उनका अपने घरमें निवासकरना संसारके धन ऐश्वर्य्य और आयुर्दा का देनेवाला है ११४ गृहमें कपोत तोता मैना और तैल पायकनाम पक्षी धनके सूचक चिह्नहैं यह सब गृहमें ऐश्वर्य्य की वृद्धि के करनेवाले हैं उद्दीपक गिद्ध भौंरा ११५ जब गृहमें निवास करे तब गृहकी शांति करनी चाहिये यह सब अमंगल रूप हैं इसी प्रकार महात्माओंसे कठोर बचन कहना भी अशुभ करनेवाला है ११६ महात्माओं की जो

गुप्तवार्त्ता हैं वह किसीसमय में भी किसी के सम्मुख कहने के योग्य नहीं हैं जो स्त्री कि सम्भोग के योग्य नहीं हैं उनसे कभी संग न करे राजा की रानी सखी वैद्य बालक वृद्धा दासी बन्धुकी स्त्री ब्राह्मण की स्त्री और रक्षाकरने की इच्छा रखनेवालों की जो स्त्रियां हैं वह भोगकरने के योग्य नहीं हैं इन सब बातों का विचार करनेवाला बड़ी अवस्थाको पाताहै ब्राह्मण और कारीगरों के प्रधानों के प्रबन्धसे जो स्थान तैयार कियागयाहो ११७। ११८। ११९ ऐश्वर्य्य का चाहने वाला ज्ञानीमनुष्य उस स्थानमें सदैव निवासकरे सायंकालके समय मनुष्य इन चारबातों को कभी न करे अर्थात् सोना विद्याका पढ़ना भोजनका करना और स्त्री से सम्भोग करना इनबातों के विचारसे भी बड़ी अवस्था को पाताहै रात्रि के समय श्राद्ध कर्म्मादिक न करे भोजनकरके शिरके बालों को नहीं बहावे १२०। १२१ ऐश्वर्य्य के चाहनेवाले मनुष्य को सायंकाल के समय शिरसे स्नानकरना योग्य नहीं है और रात्रिके समय सदैव सत्तूखाना वर्जितहै १२२ रात्रि के समय दूसरे भोजनके पदार्थों का खाना भी वर्जितहै परन्तु भोजन के पीछे जलआदि वस्तुपीना उचितहै दूसरे के घरमें बहुतसा भोजन न करे परन्तु अपने घरमें तृप्ती करे १२३ पक्षियों को न मारे पक्षियों के मांस को मोललेकर खाये परन्तु आप अपने हाथसे न मारे जो पंचशब्द के स्थानापन्न पान शब्दहोय तब यह अर्थ है कि भोजन करने के अन्त में जलादिकोंका पानकरना योग्यहै ज्ञानी मनुष्य को उस कन्यासे विवाह करना योग्यहै जोकि बड़े वंशमें उत्पन्नहोकर शरीर के चिह्नों से उत्तम और तरुणहोय ऐसी स्त्री से विवाहकरके सन्तान को उत्पन्नकर अपने वंशको नियतकरके १२४। १२५ फिर पुत्रोंको अपने कुल धर्मरीति और व्यवहार सिखलाने के लिये ज्ञानी पण्डितोंको सुपुर्द करना योग्यहै हेभरतवंशी जो कन्या उत्पन्नहोय उसको बुद्धिमान् उत्तमवंशवाले वरको देना योग्यहै १२६ हे भरतवंशी पुत्रों को भी अच्छे वंश में विवाहकरना चाहिये और भृत्यादिक लोग भी अच्छेघरवालों से प्राप्तकरने के योग्यहैं शिरसे स्नान करनेवाला मनुष्य देवता और पितरों के पूजनको करे और जो मनुष्य जिस नक्षत्रमें उत्पन्न हुआहो उसमें दोनोंकर्मों को नहींकरे हे भरतवंशी कृत्तिका पूर्व्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद में भी वह कर्म न करने चाहिये १२७ सब दारुण नक्षत्रादि में भी प्रत्यरि नक्षत्रको त्यागकरे और जो २ नक्षत्र ज्योतिषमें निषिद्ध कहेगये हैं उन

को भी त्यागकरे १२८ हे राजेन्द्र अच्छा सावधान मनुष्य पूर्व्वकी ओर वा उत्तर की ओर मुखकरके क्षौरकर्म्म करावे ऐसे कर्म्मोंका करनेवाला बड़ी अवस्था को पाताहै १२९ दूसरोंके वा अपने निन्दित बचनोंको कभी न ग्रहणकरे हे भरतर्षभ वह निन्दित बचन अधर्म्म के निमित्त कहाजाताहै १३० हे नरोत्तम जो स्त्री अथवा कन्या किसी अङ्गसेरहित समान प्रवरवाली न्यून वा अधिक अङ्गयुक्त मातृकुल वा अपने कुलमें उत्पन्नहै उससे विवाह न करे १३१ जो स्त्री वृद्धा वैरागिनी और पतिव्रता होकर नीच वा उत्तमवर्ण की है उससे भी विवाह न करे १३२ जिस स्त्री का कुल ज्ञात नहीं जानाहुआ है और वास्तव में दुराचारिणी पिंगलवर्ण और कुष्ठयुक्तहै वहभी पंडितों से विवाहकरने के अयोग्यहै १३३ जो कन्या मृगी रोगवाले वंशमें उत्पन्नहै उससे भी विवाह न करे १३४ जो शुभलक्षणों से युक्त है उस कन्यासे विवाह करना योग्यहै १३५ हे युधिष्ठिर वड़े वंशमें अथवा अपने समान कुलमें विवाह करना योग्यहै ऐश्वर्य्यका चाहनेवाला पुरुष दूसरेप्रकारकी पतित स्त्रियोंको भी त्यागकरे १३६ अग्नियों को प्रकटकरके उपायकेसाथ उन सब ब्राह्मणोंकी कहीहुई वेदोक्त क्रियाओंको अच्छीरीति से करे १३७ स्त्रियों के साथ ईर्षा न करना चाहिये स्त्रियां सब प्रकारसे रक्षाकरने के योग्यहैं और ईर्षा का करना आयुर्दाको क्षीणकरताहै इसी हेतुसे ईर्षाको अत्यन्त त्यागकरे १३८ दिनमें और सूर्य्योदय के पूर्व्व और पश्चात् सोना भी आयुर्दा का क्षीण करने वालाहै इसीप्रकार जो मनुष्य रात्रि के समय जूठेमुखसे सोते हैं वह शीघ्र अल्पायु होते हैं १३९ दूसरेकी स्त्रीसे सम्भोग करना क्षौर कराकर स्नान न करना भी अल्पायु होनेका कारणहै हे भरतवंशी दूसरेकी स्त्री के पास अनेक उपायों से निवास न करना चाहिये १४० संध्याकाल में न स्नानकरे न भोजनकरे और वेदपाठभी न करे केवल उससमय पवित्र और नियम रखनेवाला होय इसके सिवाय और कुछ नहीं करे १४१ हे राजा फिर स्नानकरके ब्राह्मणों का पूजनकरे और स्नानकर्त्ता होकर देवता और गौओंको भी प्रणामकरे १४२ बिना निमन्त्रण के यज्ञमें न जाय परन्तु तमाशा देखने की इच्छा से जाय हे भरतवंशी आदर सत्कार न होनेपर वहां जाना आयुर्दा के नष्टहोने के हेतु होताहै १४३ अकेला मनुष्यको चारोंओर घूमना और रात्रि के समय चलना चाहिये संध्या के प्रारम्भ से पूर्व्वही घरमें आकर नियतहोना चाहिये १४४ माता पिता और

गुरुओं की आज्ञा को करनाचाहिये चाहैं प्रियहोय वा अप्रिय होय तौ भी उन तीनों वृद्धोंकी आज्ञामें किसीप्रकार का विचार न करना चाहिये १४५ हे राजा वेद में और धनुर्वेद में उपाय करना योग्यहै हाथी घोड़े और रथकी सवारी में बैठनेका अभ्यास करनाचाहिये १४६ हे राजेन्द्र उपायोंका करनेवालाहो क्योंकि उपायपूर्व्वक उद्योग करनेवाला मनुष्य सुखसे वृद्धिपाताहै शत्रुओं से सेवकों से और अपने नाते रिश्तेदारों से अजित १४७ प्रजापालन करनेवाला राजा कहीं पराजयको नहीं पाताहै हे भरतर्षभ नीतिशास्त्र और शब्दशास्त्र तुमको जानना योग्यहै १४८ गन्धर्वशास्त्र और सब बड़े २ पुराण इतिहासआदि जो आख्यान हैं वह सब भी जानने के योग्यहैं १४९ तुमको महात्माओं का चरित्र सदैव सुनना चाहिये अपनी ऋतुवती स्त्री के पास न जाय और न उसको बुलावै १५० जब वह चौथेदिन का स्नान करले तब पण्डित मनुष्यको उचितहै कि रात्रि के समय उसके पास जाय ऋतुस्नानसे समदिनमें पुत्र और विषमदिनमें लड़की गर्भमें नियत होते हैं १५१ पण्डित मनुष्य इसरीति से अपनी स्त्री के पास जाय सजातीय नातेदार और मित्रलोग यह सब पूजन के योग्यहैं १५२ हे राजा सामर्थ्य के अनुसार नानाप्रकार की दक्षिणावाले यज्ञों से ईश्वरका पूजन करना चाहिये इसके पीछे वनका सेवन करना चाहिये १५३ हे युधिष्ठिर पूर्ण आयुर्दा करनेवाले आचारोंका यह संक्षेप मैंने तुमसे कहा शेषवृत्तान्त तुमको तीनोंवेद के जाननेवाले ब्राह्मणों से जानना चाहिये १५४ आचार ऐश्वर्य्यका वृद्धिकरनेवालाहै आचारही शुभकीर्त्ति का बढ़ानेवाला है आचारही से आयुर्दा बढ़ती है आचारही बुरे लक्षणों को दूरकरताहै १५५ सब शास्त्रों में आचारही श्रेष्ठ कहा जाताहै आचारही से धर्म्म भी प्रकट होताहै धर्म्म से आयुकी वृद्धि होती है सब वर्णोंपर दयाकरके ब्रह्माजी ने शुभकीर्त्ति आयुर्दा और स्वर्गका देनेवाला बड़ा कल्याणरूप यह बड़ाशास्त्र वर्णन कियाहै १५६ । १५७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेआयुर्दाउपायवर्णनोनामचतुरधिकशततमोऽध्यायः॥

एकसौपांचका अध्याय॥

युधिष्ठिरने पूछा कि हे भरतर्षभ जिसरीतिसे बड़ाभाई छोटेभाई के साथ बर्त्ताव करे और जैसे छोटेभाई बड़े भाई के साथ वर्त्ताव करें वह सब आपमुझसे वर्णन

कीजिये १ भीष्मजी बोले कि हेतात तुम सबभाइयों में बड़े इससे तुम बड़ेकेस-मान बर्त्तावकरो हे युधिष्ठिर जैसे कि गुरू और शिष्यकीगरीयसीवृत्ति होती है २ वैसी वृत्तिगुरूके अज्ञान होनेपर शिष्यसे होनी असंभव है हे भरतबंशी शिष्य की जो दूरदर्शकताहै वह गुरूकीही है ३ और जो कदाचित् उनगुरूमें कोई अ-मर्य्यादा पाईजाय तो उसको वर्णन करदेना चाहिये जिससे कि गुरू को कोई दोष न लगे अन्धबेलामें अन्धाहोय और बुद्धिमान् अज्ञानभी होताहै ४ हे कुंती-नन्दन धनके देखने से महादुःखी शत्रुता करने के अभिलाषी दुष्टचित्त शत्रुलोग प्रत्यक्षमें मनुष्यों के मित्रोंको शत्रुबना देखते हैं ५ बड़ाभाई बंशकी वृद्धिको कर-के फिर नाशभी करदेताहै और बड़ाभाईही उससब कुलभरेको मारता है जिसमें कि आप उत्पन्नहुआहै फिर जो बड़ाभाई छोटेभाइयों का पोषण न करे वह बड़-प्पनके अधिकार से अलग धनकेभागसे रहित होकर राजा करके भी दण्डदेने के योग्यहै ६। ७ अन्याय करनेवाला मनुष्य निस्संदेह पापलोकोंको ऐसे जाता है जैसे कि बेतकेवृक्षका लगानेवाला फल पुष्पसे रहित होताहै ८ जिसकुलमें पापी पुरुष उत्पन्नहोताहै उसमें सब अनर्थ है अपकीर्त्तिको उत्पन्न करताहै और शुभकीर्त्तिको नाश करदेताहै ९ विपरीत कर्म्ममें नियतहोकर सब सहोदर भाई भी भोगपाने के योग्य नहीं हैं बड़ाभाई अपने छोटेभाई को भाग न देकर सब धनको अपने पुत्रादिकों के विवाह में व्यय न करे १० जो भाई अपने पिता के धनको खर्च न करता अपने परिश्रमसे धनका प्राप्त करनेवाला और परदेश में निवासकरताहै तो उसको अधिकारहै कि जो उसकी इच्छा न होय तो अपना उपार्जित कियाहुआ धनदेनेके योग्य नहीं है जो भाग न पानेवाले भाइयों से सबको मिलीहुई जीविका के कारण उसको सन्देहहै तो पिता किसीदशामें भी पुत्रको अलगभाग न दे ११। १२ जो स्त्री अथवा छोटाभाई दुष्टकर्मी है शुभकर्मी नहीं है तो भी बड़ाभाई उसका अपमान न करे किन्तु जो कल्याण है उसी को करे १३ धर्मज्ञ लोग धर्मकोही कल्याणरूप कहते हैं दश आचार्य्योंको तो उपा-ध्याय और दश उपाध्यायों को पिता १४ और दश पिताओं को माता किन्तु सम्पूर्ण पृथ्वीको भी अपनी महत्वता से तिरस्कार करती है माताकेसमान गुरू नहीं है १५ माताकी बड़ी महत्वता है इसी से मनुष्य उसकी प्रतिष्ठा करते हैं हे भरतबंशी पिताके मरनेपर बड़ाभाई भी पिताकेसमानहै १६ वहीं बड़ाभाई अपने

छोटे भाइयों को जीविका देनेवाला होकर उन्होंका पोषणकरे सब छोटेभाई उस की इच्छानुसार कर्म्मोंको करके उसको सदैव नमस्कार करें १७ जैसे कि पिता के पास अपना निर्बाह करते थे उसी रीति से उस बड़ेभाई के भी पास अपना निर्बाहकरें हे भरतबंशी यह माता पिता शरीरको उत्पन्न करते हैं १८ और गुरूके उपदेशसे जो द्वितीय जन्महै वह रूपान्तरदशा से रहित सत्य और अबिनाशी है हे भरतर्षभ बड़ी बहिन भी माताकेसमान है १९ वह बड़ेभाई की स्त्री भी माता के समान गिनीजाती है जिसका कि बाल्यावस्थामें स्तनपान कियाहोय २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेज्येष्ठकनिष्ठवृत्तिर्नामपंचाधिकशततमोऽध्यायः १०५

एकसौछाका अध्याय ॥

युधिष्ठिर ने पूछा कि हे पितामह चारोंबर्ण किन्तु सब म्लेच्छोंकी भी ऐसीही बुद्धि सब ब्रतादिक करने में है इसका कारण मैं नहीं जानताहूं १ हे पितामह मैंने सुनाहै कि वह नियम ब्राह्मण और क्षत्रियोंसेही करने के योग्य हैं उन्होंके ब्रतों में किसप्रकार के कर्म्म करने के योग्यहैं २ हे राजा सब के नियम और ब्रतों को वर्णन कीजिये और हे तात वह ब्रत करनेवाला मनुष्य किसगतिको पाता है ३ ब्रत पवित्र उत्तम और उन्नत स्थानवाला है हे नरोत्तम इसलोकमें ब्रतकरके किस फलको पाताहै ४ कौनसे कर्म के द्वारा अधर्म से छूटताहै और किसरीति से धर्म्मको पाताहै किसप्रकारसे स्वर्गको पाताहै हे राजा ब्रतकरके उसको कौ-नसी बस्तु दानकरने के योग्य है और जिस धर्म्म से सुखपूर्बक मनोरथों को प्राप्त करे उसको आप कहिये ५।६ धर्म्मके सिद्धान्त जाननेवाले शंतनुकेपुत्र भीष्म जी ने इस बचनको सुनकर धर्मज्ञ धर्मपुत्र राजायुधिष्ठिर से यह बचनकहा ७ हे भरतर्षभ राजायुधिष्ठिर निश्चयकरके इन उत्तम गुणवाले ब्रतोंकी विधिके प्राचीन वृत्तान्तको सुनाहै ८ अर्थात् हे राजा मैंने पूर्व्वसमय में अंगिराऋषि का दर्शन किया और जैसा तुमने मुझसे पूछाहै उसीप्रकार मैंनेभी उस तपोधनसे यही वृ-त्तान्त पूछाथा ९ हे भरतर्षभ मेरे इस प्रश्नको सुनकर उस अग्निके पुत्र भगवान् आङ्गिराऋषिने ब्रतकी पवित्रबिधि का बर्णनकिया १० अङ्गिरा बोले कि हे पुरु-षोत्तम कुरुनन्दन ब्राह्मण और क्षत्रियों में तीनदिन का ब्रत नियत कियागया फिर एकदिन दोदिन और तीनदिनके ब्रतका भी उपदेशकिया ११ बैश्य और

शूद्रोंने मोहसे तीनरात्रि अथवा दोरात्रिका जो व्रतकहा उन दोनों व्रतोंका फल नहींहै १२ दिनमें दोसमय दोबार भोजनकरना नियतहै इसलिये बैश्य और शूद्रों में यहव्रत कहाजाताहै कि वह दोदिनतक तो एकबार भोजनकरें और दोदिन दोनों समयपर धर्मज्ञ देखनेवाले महात्मालोगों ने उनके निमित्त तीनरात्रि का व्रत नहीं नियत कियाहै १३ हे भरतबंशी वाह्याभ्यन्तर से शुद्ध जितेन्द्रिय सावधान मनुष्य पंचमी छठ अथवा पूर्णमासीके दिन एकसमय के भोजनके व्रतके द्वारा १४ दूसरे जन्ममें क्षमावान् रूपवान् और शास्त्रोंका ज्ञाता उत्पन्नहोताहै वह ज्ञानीपुरुष कभी सन्तानहीन और दरिद्री नहीं होता है १५ जो देवताके पूजन का अभ्यासी मनुष्य पंचमी और छठकेदिन ब्राह्मणों को भोजनकरवाता है वह कुलमें वृद्धता और प्रतिष्ठा को पाताहै हे कौरव्य कृष्णपक्षकी अष्टमी और चौदशकोव्रतकरके १६ नीरोगतापूर्व्वक बलवान्होकर उत्पन्नहोता है जो मार्गशिर महीने में तीसोंदिनतक एकसमय भोजनकरे १७ और सामर्थ्य के अनुसार ब्राह्मणों को भोजनकरावे वह रोग और पापों से छूटताहै १८ और सब कल्याणों से पूर्णहोकर सब औषधियों से संयुक्त होताहै व्रतकरने से नीरोग और बलवान् उत्पन्न होता है १९ हे कुन्तीनन्दन जो मनुष्य पौषमासमें एकसमय भोजनकर के व्यतीत करताहै वहवड़ा ऐश्वर्य्यवान् दर्शन के योग्य और कीर्त्तिमान् उत्पन्न होता है २० जो सावधान पुरुष माघमहीने को एकसमय भोजनकरके व्यतीत करे वह वड़ाधनी होकर अपने सजातियों में वृद्धताको पाता है २१ जो मनुष्य फाल्गुनमहीनेको एकसमय भोजनकरके व्यतीतकरे वह स्त्रियों में प्यारी मित्रता को पाताहै और वह इसकी आज्ञावर्त्ती होती है २२ जो मनुष्य चैत्रमहीने को एकसमय के भोजनकरने के व्यतीतकरे वह सुवर्ण मोती और मणियों से युक्त वड़ेकुलमें उत्पन्न होताहै २३। २४ जो जितेन्द्रिय पुरुष वा स्त्री बैशाखमहीने को एकसमय भोजनकरके व्यतीतकरे वह जाति के लोगों में प्रतिष्ठाको पाताहै २५ जो मनुष्य वा स्त्री ज्येष्ठमहीनेको एकसमयके भोजन से व्यतीतकरे वहअत्यन्त उत्तम वड़े ऐश्वर्य्य को पाताहै २६ निरालस्य मनुष्य आषाढ़ महीने में एकसमय भोजनके करने से बहुतधनवान् और पुत्रवान् उत्पन्न होताहै २७ जो सावधान मनुष्य श्रावणमहीने में एकसमय भोजनकरे वह जिस तिस तीर्थोदकके स्नानके फलसेयुक्तहोकर ज्ञातिकी वृद्धि करनेवाला होताहै २८ जो मनुष्य भादोंके महीने

में एकसमय भोजन करनेवाला होताहै वह गौओंसे युक्त अचलवृद्धियुक्त ऐश्वर्य को पाताहै २६ इसीप्रकार जो मनुष्य आश्विनमहीने में एकसमय भोजन करता है वह पवित्र शरीरसेयुक्त बहुतसी सवारी और पुत्रोंसेयुक्त होताहै ३० जो मनुष्य कार्त्तिकमास में एकहीसमय भोजन करे वह बड़ा पुरुषार्थी शुभकीर्त्ति और बहुतसी स्त्रियोंका रखनेवाला होताहै ३१ हे नरोत्तम यहमहीनों के व्रतकहे अब तिथियोंके जो नियम हैं उनकोभी सुनो ३२ हे भरतवंशी जो मनुष्य सब महीनों में एकपक्षके अन्त होनेपर दूसरेपक्षमें प्रतिदिन एकसमय भोजनकरताहै वहबहुत गौ मणि और अनेक स्त्रियोंका रखनेवाला होताहै ३३ (जब एकपक्षमें भोजन न कियाजाय तौ जलकापीना योग्यहै क्योंकि जलपान किये बिना जीवन नहीं होसक्ता) जो मनुष्य प्रतिमहीने में तीनदिनतक एकसमय भोजनकरके बारह वर्षतक यही नियम करताहै वह ऐसे बहुतसे गौओंकास्वामी होताहै जो विभागियों से रहित और निष्कण्टक होते हैं ३४ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर प्रवृत्त धर्मवाले मनुष्य को यह सब नियम बारहवर्षतक करनाचाहिये ३५ जो मनुष्य केवल प्रातःकाल और सायंकालही में भोजन करनेवालाहै और उनदोनों समयों के मध्यमें नहीं खाय ३६ और अग्निमें हवनकरके सदैव अहिंसामें प्रवृत्त है हे राजा वह मनुष्य छःवर्ष में शुद्धहोताहै और निस्सन्देह अग्निष्टोमके फल को पाताहै ३७ वह शुभकर्मी रजोगुण से रहित हजारों स्त्री रखनेवाला मनुष्य नृत्यगीतादि से युक्त अप्सराओं के लोकमें क्रीड़ाकरताहै ३८ और तप्त कंचनमयी प्रकाशमान विमानों पर सवार होताहै और पूरे हजारवर्षतक ब्रह्मलोक में प्रतिष्ठा पाताहै ३९ उस पुण्यके समाप्त होनेपर इसलोकमें आकर प्रतिष्ठाको प्राप्त करताहै जो मनुष्य एक पूर्ववर्षतक प्रतिदिन एकसमय भोजन करनेवाला होता है ४० वह अतिरात्र यज्ञके फलको पाताहै और दशहजारवर्ष तक स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठा पाताहै ४१ फिर उस पुण्यके समाप्त होनेपर इसलोकमें भी आकर प्रतिष्ठा पाताहै जो मनुष्य एकवर्षतक अपने चतुर्थांश भोजन को करताहै ४२ और सदैव अहिंसायुक्त सत्यवक्ता और जितेन्द्रिय है वह वाजपेय यज्ञके फलको भोगताहै और दशहजारवर्षतक स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठापाताहै ४३ हे कुन्तीनन्दन जो मनुष्य एक वर्षतक अपने भोजनके छठेभाग को प्रतिदिन भोजन करताहै ४४ वह अश्वमेधयज्ञके फलको पाताहै और चक्रवाक पक्षियों से जुड़ेहुये महाउत्तम

विमान में चलताहै और चालीस हजारबर्षतक स्वर्ग में आनन्द करताहै ४५ हे राजा जो अपने भोजनके प्रतिदिन अष्टमांश भोजनसे एक पूरेबर्षको व्यतीत करताहै वह मनुष्य गोमेध यज्ञके फलको पाताहै ४६ और हंस सारस से युक्त विमानपर चलताहै और पचास हजार बर्षतक स्वर्ग में आनन्द करता है ४७ हे राजा जो मनुष्य एक पूरेवर्षतक एक पक्षके व्यतीत होनेपर दूसरे पक्षमें भोजन करे भगवान् अङ्गिराऋषि ने उसको षाण्मासिक अनशन व्रत कहाहै ४८ वह साठहजार बर्षतक स्वर्ग में निवास करताहै और हे राजा वह स्वर्ग में सोयाहुआ मनुष्य बल्लकी बीणानाम मधुरशब्दवाले बाजे से जगायाजाताहै ४९ इसलोक में जो मनुष्य एक बर्षतक एक महीने जलपिये और दूसरे महीने में भोजनकरे ५० हे तात वह मनुष्य विश्वजित नाम यज्ञके फलको पाताहै और सिंह व्याघ्र से युक्त बिमान में बैठकर चलताहै ५१ और सत्तर हजार बर्षतक स्वर्ग में आनंद करताहै हे नरोत्तम एक महीने से अधिक व्रत नहीं कहाजाताहै ५२ हे राजा धर्मज्ञलोगों ने अनशन व्रतकी विधिको कहाहै कि जो नीरोग और पीड़ा से रहित मनुष्य अनशन व्रतको करे वह निस्सन्देह प्रतिचरण पर यज्ञके फलको पाताहै ५३ और हंसयुक्त बिमान में बैठकर स्वर्ग को जाताहै और एकलाख बर्षतक स्वर्ग में आनन्द करता ५४ अप्सराओंकी कन्याओं के साथ बिहार करताहै जो रोगी और पीड़ावान् होकर भी अनशन व्रतको करता है वह एकलाख बर्षतक स्वर्ग में बासकरताहै ५५ और सोयाहुआ कांची और नूपुरों के शब्दों से जगाया जाताहै हजार हंसवाले विमानकी सवारी से चलताहै और स्वर्ग में जाकर सैंकड़ों स्त्रियोंसमेत क्रीड़ा करताहै ५६ इसलोकमें निर्बलका बलवान् होना घाव को भरना रोगीकी औषधि क्रोधयुक्त का प्रसन्न होना ५७ धन और प्रतिष्ठा से हीन मनुष्य का प्रसन्नहोना और दुःखोंकी चिकित्सा को भी देखा परन्तु अविनाशी सुखमें बुद्धि रखनेवाले स्वर्गाभिलाषी मनुष्य को यह सब बातें अच्छी नहीं मालूमहोती हैं अर्थात् वह रोगादिकों के दूरकरने को उपाय नहीं करता किन्तु सबको सहाकरताहै ५८ इसी से सकामसंयुक्त स्वर्ण के समान बिमान में सैकड़ों अलंकृत स्त्रियों से भरेहुये स्वर्णमयीविमान में बिहार करता है ५९ वह स्थिरचित्त सफलसंकल्प पापसेरहित सुखी मनुष्य अनशन व्रतको करता हुआ शरीरको त्यागकर उत्तम फलको पाताहै ६० अर्थात् वह मनुष्य उस बाल सूर्य

के समान प्रकाशित सुवर्ण के समान तेजस्वी बैडूर्य्यमणि और मुक्ताओं से युक्त बीणाआदि के बाजों से शब्दायमान ६१ देदीप्यपताकाओं से व्याप्त दिव्य घंटों से और हजार स्त्रियों से संयुक्त बिमान में सुखसे वृद्धिको पाताहै ६२ हे पाण्डव उसके अंगों पर जितने रोमकूप होते हैं वह उतनेही हजार वर्ष तक स्वर्ग में आनन्द करताहै ६३ वेदसे उत्तम शास्त्र नहीं है माता के समान कोई गुरू नहीं है धर्मसे उत्तम कोई लाभ नहीं है अनशन ब्रतसे बढ़कर कोई तप नहीं है ६४ नरलोक और स्वर्गलोक में ब्राह्मणों से बढ़कर कोई पवित्र करनेवाला नहीं है ओर ब्रतोंके समान कोई तपकर्म नहीं है ६५ देवताओं ने विधि के अनुसार ब्रतों को करके स्वर्ग पायाहै ऋषियों ने ब्रतकेही द्वारा बड़ी २ सिद्धियों को पाया ६६ बुद्धिमान् विश्वामित्रजी ने हजारों दिव्यवर्षतक एकही समय भोजनको किया इसीसे ब्राह्मण वर्णको पाया ६७ च्यवन, जमदग्नि, वशिष्ठ, गौतम, भृगु, यह सब गृहस्थीपने में क्षमावान् ऋषि स्वर्ग में गये ६८ पूर्वसमय में अंगिरा ऋषिने यह वृत्तान्त वैश्योंको दरशाया जो मनुष्य दूसरे मनुष्योंको सदैव दरशाताहै वह दुःखको नहीं पाताहै ६९ हे कुन्तीनन्दन अंगिराऋषिने इसविधिको क्रमपूर्वक वर्णनकियाहै जो मनुष्य इसको पढ़ैगा या सुनैगा वह पापसे निवृत्तहोगा ७० और सबसंगों से पृथक्होकर राग द्वेष और मोहादिकों से कभी अचेत नहीं होगा और पक्षी आदि के शब्दोंकोभी जानकर अविनाशी शुभकीर्त्तिको पावेगा ७१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मे अनेकविधिवर्णनषडधिकशततमोऽध्यायः १०६ ॥

एकसौसातका अध्याय ॥

युधिष्ठिर ने कहा कि आपने विधिके अनुसार यज्ञोंका वर्णन किया और नरलोक स्वर्गलोक दोनों में जो इनके गुण हैं वह सब भी यथावत् वर्णन किये १ हे पितामह वह यज्ञ दरिद्रीसे होने असम्भवहैं क्योंकि उनयज्ञों में बहुतसे पदार्थ अनेक २ प्रकारके होतेहैं २ हे पितामह वह यज्ञ केवल राजा और राजकुमारों से ही होनेके योग्यहैं और जो गुणों से रहित निर्बल अकेले और असहाय हैं वह पुरुष उनयज्ञोंको नहीं करसक्के ३ इससे हे पितामह जो विधि अर्थशून्य अवगुणी अकेले असहाय दरिद्री लोगोंसे होसक्की होय ४ और उन्हीं यज्ञों के फलके समान फलवाली होय उनको आप मुझसे कहिये भीष्मजी बोले हे युधिष्ठिर अं-

गिराऋषिके बर्णनकियेहुये जोब्रत यज्ञोंके फलके समानहैं उसको मुझसे समझो ५ अहिंसाधर्म में प्रवृत्तहोकर जो मनुष्य सदैव अग्नि में होम करता और प्रातःकाल सायंकाल इन्हीं दोनों समयोंमें भोजन करताहै और दोनों समयों के मध्य में कभी नहीं खाताहै वह निस्सन्देह छःबर्ष में सिद्धहोताहै वह मनुष्य तप्त सुवर्णके रंगके समान बिमान को पाताहै ६। ७ और पद्म बर्षतक उस प्रजापतिके लोकमें निवास करताहै जो कि देवताओंकी स्त्रियोंका निवासस्थान नृत्यगीतादिकों से शब्दायमान और अग्निके समान प्रकाशमानहै ८ धर्मपत्नीसे प्रीति रखनेवाला जो मनुष्य तीन बर्षतक बराबर एकसमय भोजनकरे वह अग्निष्टोम यज्ञके फल को पाताहै ९ जो मनुष्य बहुत सुबर्ण की दक्षिणावाले इन्द्रके प्यारे यज्ञको करे और सत्यबक्ता दानका अभ्यासी वेद और ब्राह्मणोंका रक्षक दूसरे के गुणमें दोष न लगानेवाला क्षमावान् जितेन्द्रिय और क्रोधका त्यागनेवालाहै वह परमगति को पाताहै १० फिर दोपद्म बर्षतक अप्सराओंसमेत उस बिमानपर निवास करता है जोकि पाण्डुवर्ण बादलके समान प्रकाशमान हंसों के चिह्नों से युक्तहै ११ जो मनुष्य बारह महीनेतक अग्निमें होम करताहुआ दूसरे दिन एकसमय का भोजनकरे १२ सदैव अग्निहोत्र में प्रवृत्त और प्रतिदिन प्रातःकाल जगनेवाला है वह मनुष्य अग्निष्टोम यज्ञकेफलको पाताहै १३ और हंस सारसोंसेयुक्त बिमानको पाकर उत्तम स्त्रियोंसमेत इन्द्रलोक में निवासकरताहै १४ जो मनुष्य सदैव बारह महीनेतक अग्निमें हवन करताहुआ तीसरे दिन एकसमय भोजन करताहै १५ वह सदैव अग्निहोत्र में प्रवृत्त प्रतिदिन प्रातःकाल जगनेवाला होकर अतिरात्र नाम यज्ञके उत्तमफलको पाताहै १६ और मोर हंसोंसेसंयुक्त बिमानको पाताहै और सदैव अप्सराओंसमेत सप्तर्षियों के लोकमें निवास करताहै १७ हे प्रभु वहां वह तीनपद्मबर्षतक नियम पूर्व्वक निवासकरताहै १८ जो पुरुष बारहमहीनेतक सदैव अग्निहोत्र को करताहुआ चौथेदिन एकसमय भोजनकरे १९ वह बाजपेययज्ञके उत्तमफलको पाकर इन्द्रकी कन्याओंकी सवारीसेयुक्त बिमानको पाताहै २० और स्वर्गलोकके इन्द्रलोकमें निवासकरता है और प्रतिक्षण देवराजकी क्रीड़ाओंको देखताहै २१ जो मनुष्य बारह महीने तक सदैव अग्निमें हवनकरताहुआ पांचवें दिन एकसमय भोजनकरताहै २२ वह सन्तोषी सत्यबक्ता वेद ब्राह्मणों का रक्षक हिंसारहित दूसरे के गुणों में दोष न लगानेवाला पापसे पृथक् होकर द्वादशाह

नाम यज्ञकेफलको पाताहै २३ और जांबूनद सुवर्ण से बनेहुये हंसोंसेयुक्त प्रका-शित दिव्य बिमान जिसमें पांडुवर्ण के गृहबने हैं उसमें सवारहोताहै ३४ मनुष्य वहां इक्यावन पद्मवर्षपर्य्यन्त सुखसे निवास करताहै २५ जो मुनि बारह महीने तक प्रतिदिन हवन करताहुआ छठवेंदिन एकसमयपर भोजनकरे २६ और सदैव तीनोंकालपर स्नान करनेवाला ब्रह्मचारी दूसरे के गुणमें दोषनहीं लगानेवाला है वह गोमेध के यज्ञके फलको पाकर २७ अग्निकेसमान प्रकाशमान हंसमोरों से सेवित अत्यन्त उत्तम सुवर्ण के बनेहुये विमानको पाताहै २८ और अप्सरा-ओं के साथ सोयाहुआ होकर वह नूपुर और मेखलानाम भूषणों के शब्दों से जगाया जाताहै २९ और असंख्य पद्म वर्ष अर्थात् रीछके शरीरमें जितने रोम होते हैं उतने सैकड़े वर्षोंतक ब्रह्मलोकमें प्रतिष्ठा पाताहै ३०।३१ जो मनुष्य बारह महीनेतक सदैव अग्निहोत्र करताहुआ सातवेंदिन एकसमय भोजन करता ३२ मौनतापूर्व्वक ब्रह्मचर्य्यको करताहुआ फूल माला चन्दन आदि मांस मद्यको त्यागकरताहै ३३ वह मनुष्य मरुद्गण और इन्द्र के लोकोंको पाताहै और वहां मनोरथोंको प्राप्तकरके देवताओं की कन्याओं से पूजन कियाजाताहै ३४ और बहुत सुवर्ण की दक्षिणावाले यज्ञकेफलको पाकर असंख्य वर्षतक उनलोकोंमें आनन्द करताहै ३५ देवकार्य्य में प्रवृत्त क्षमावान् होकर जो मनुष्य सदैव हवन करताहुआ एक वर्षतक आठवेंदिन भोजन करताहै ३६ वह पुंडरीक यज्ञके उत्तम फलको पाताहै और पद्मवर्ण विमानपर चढ़ताहै ३७ कृष्णा सुवर्ण के समान रूप वाली और द्वितीय श्यामा तरुणता और स्वरूपों से अलंकृत भोगवती स्त्रियों को भी अवश्य पाताहै ३८ जो मनुष्य बारह महीने तक सदैव अग्निमें हवन करताहुआ नवें नवें दिन भोजन करताहै ३९ वह मनुष्य सदैव अश्वमेधके फल को पाताहै ४० और पुंडरीक नाम प्रकाशित बिमानको पाताहै ४१ और प्रका-शित सूर्य्य के समान तेजस्वी दिव्यमालाधारी रुद्रकन्याओं के द्वारा सनातन अन्तरिक्षमें पहुँचाया जाताहै और एक कल्प लाख कोटि अठारहहजार वर्षोंतक उन लोकोंमें निवास करताहै ४२ जो मनुष्य सदैव बारह महीनेतक नित्य हवन करता पूरे वर्षतक दशवें २ दिन भोजन करताहै ४३ वह सब के चित्तरोचक ब्रह्म-कन्याओं के लोक में जाताहै और हजार अश्वमेध के फलको पाकर ४४ नीले और लाल कमलके समान रूपवाली उत्तम कन्याओं के साथ बिहारकरताहै ४५

और उस उत्तम बिमानको पाताहै जो कि मंडलाकार उत्तम अस्तरणों से अलंकृत समुद्रकी लहरों के समान उत्तम सवारी है ४६ सिंहों के शब्दों से शब्दायमान बिचित्रमाला और बज्रों के स्तंभों से अलंकृतहै और जिसमें सुन्दर वेदी बनी है ४७ और हंस सारस पक्षियों के शब्दों से युक्तहै उस बड़े बिमानमें चढ़ताहै जो मनुष्य ग्यारहदिन के पीछे बर्त्तमान होनेपर हव्यको भोजनकरे ४८ और सदैव बारह महीनेतक अग्निमें हवन करता दूसरेकी स्त्री मन वचनसे भी न चाहै और माता पिताके बचनों को मिथ्याबचन न कहै वह उस महाबली बिमानमें बैठकर महादेवजी के पास जाताहै और हजार अश्वमेधके उत्तम फलको पाताहै ४९।५० बिमानों में बैठाहुआ स्वायम्भुव मनुजी को देखे सुवर्ण बर्ण रूपवाली कुमारियां उसको ५१ स्वर्ग के भीतर उस रुद्रों के लोकमें लेजाती हैं जोकि दिव्य और मन का हरनेवालाहै फिर वह पुरुष यज्ञान्त अग्निकेसमान प्रकाशमान असंख्य बर्षों तक रुद्रलोक में निवास करताहै और इसप्रकारके किसी २ मनुष्य के निवासकी संख्या लाखकोटि और हजारकोटि बर्षकी है वह वहां देवता दानवों के स्वामी शिवजीको सदैव प्रणाम करताहै और शिवजी सदैव उसको दर्शनदेते हैं ५२।५३ जो मनुष्य सदैव बारह महीनेतक बारहवेंदिन भोजन करताहै वह सर्व्वमेध यज्ञ के फलको पाता है ५४ उसका बिमान बारहसूर्य्य के लोकमें रचाजाताहै जो कि बहुमूल्य मणिमुक्ता रत्नों से शोभायमान ५५ हंसोंकी मालाओं से बेष्टित नागों की पंक्तियों से युक्त शब्द करनेवाले मोर चक्रबाकादि से शोभित ५६ बड़े अट्टों से संयुक्त ब्रह्मलोक में नियत स्त्री पुरुषोंसे ब्याप्त सदैव आनन्दका स्थानहै यह धर्मज्ञ महाभाग अङ्गिराऋषि ने इसरीति से कहाहै ५७ जो पुरुष सदैव बारहम-हीनेतक तेरहवेंदिन भोजनकरे वह देवरात्र यज्ञके फलको पाताहै और उसरक्त-पद्मोदयनाम बिमानको पाता है जोकि यानरूप सुवर्ण और रत्नों के समूहों से शोभित ५८। ५९ देवकन्याओं से युक्त दिव्यभूषणों से अलंकृत पवित्र सुग-न्धियोंसे युक्त दिव्य और वायुवाले स्थानों से शोभायमान है ६० वहांपर एक दो महापद्म एक यज्ञांतकल्प दशकोटि और पद्मबर्ष तक निवास करता है ६१ गन्धर्व्वों के गान और भेरी पणवनाम वाजों के शब्दों से सदैव प्रसन्नचित्त वह मनुष्य देवकन्याओंसे पूजन कियाजाताहै ६२ जो पुरुष सदैव बारहमहीनेतक चौदहवेंदिन हव्यभोजन करताहै वह महामेधयज्ञ के फलको पाताहै ६३ बर्णन

से बाहर सुन्दररूपवाली भूषणों से अलंकृत देवकन्या बिमानों की सवारियों में उसके पास आती हैं ६४ और जहां तहां कलहंसों से और नूपुर कांची के उच्च शब्दोंसे जगायाजाताहै ६५ और उन देवकन्याओं के निवासस्थानमें गंगाजी की बालूके कणोंकी संख्याके समान बर्षोंतक निवास करताहै ६६ जो जितेन्द्रिय बारहमहीनेतक सदैव हवन करताहुआ एकपक्ष के अन्तपर एक समय भोजन करताहै ६७ वह हजार राजसूय यज्ञके उत्तम फलको पाताहै और उस दिव्यबि-मान पर चढ़ताहै जोकि मोरोंसे सेवित ६८ मणिगणों से जटित जातरूपनाम सुबर्ण से शोभित दिव्यभूषणों से अलंकृत उत्तमस्त्रियों से व्याप्त ६९ एकस्तम्भ चारद्वार और सातमहल रखनेवाला अच्छी मंगली बैजयन्तीनाम पताका और गानों के शब्दों से शोभायमान दिव्यगुणों से युक्तहै ७० अथवा मणि मोती मूंगोंसेशोभित बिजलीके समान प्रकाशमान विमानको प्राप्तकरता है और घोड़े हाथी की सवारी रखनेवाला वह पुरुष हजारयुगोंतक निवास करता है ७१ जो पुरुष सदैव बारह महीनेतक सोलहवें दिन एकसमय भोजनकरे वह सोमयज्ञ के फलको पाताहै ७२ वह सदैव चन्द्रमा की कन्याओं के निवासस्थान में नियत होताहै और सौमिय गंधको शरीरपर लेपन करनेवाला और स्वेच्छाचारी होता है ७३ बिमान में बैठाहुआ वह पुरुष सुन्दर दर्शनवाली चित्तरोचक स्त्रियों से पूजन कियाजाताहै और इच्छाभोगों से भी तृप्त कियाजाताहै ७४ यह मनुष्य एकसौ चौदह पद्मबर्षतक और एक महाकल्पतक स्वर्गफल को साधन करता है ७५ जो मनुष्य बारह महीनेतक सदैव अग्नि में हवन करता सत्रहवेंदिन वर्त्तमान हुये हव्यको भोजन करता है ७६ वह वरुणलोक इन्द्रलोक रुद्रलोक मरुत्लोक शुक्रलोक और ब्रह्मलोक को पाताहै ७७ वहां देवकन्याओं के द्वारा आसनपूर्व्वक सेवन कियाजाताहै भूलोकपूर्व्वक देव ऋषि और बिश्वलोक को भी देखता है वहां इन्द्रकी बारह कन्या जो कि स्वरूपवान् चित्तकी रोचक और अच्छेप्रकारसे अलंकृत होती हैं वह उसको विहारकरवाती हैं ७८।७९ हे प्रभु जब तक सूर्य्य और चन्द्रमा आकाशमें भ्रमण करते हैं तबतक वह सुधामृत रसका भोजन करनेवाला पंडित मनुष्य स्वर्गका भोग करताहै ८० जो मनुष्य बारह महीनेतक सदैव अठारहवें दिन एकसमय भोजन करे वह उस सातवेंलोक को देखताहै ८१ जो कि अच्छे शोभायमान ऐसे रथों से जिनमें देवताओंकी कन्या

सवारहैं और जिनमें आनन्दके शब्दहोरहे हैं वहां वह पुरुष पीछेसे आगेकीओर को सम्मुख कियाजाताहै और देवकन्याओं की सवारियोंसमेतवाले ऐसे दिव्य बिमानपर चढ़ताहै जोकि सिंह ब्याघ्रसे संयुक्त शब्दवाले बादलके समान शब्दायमानहै वह वहांपर हजारकल्पतक कन्याओं के साथ आनन्द करताहै और अमृतकेसमान उत्तम सुधारसको भोजन करताहै ८२।८४ जो पुरुष बारहमहीनेतक सदैव उन्तीसवेंदिन एकसमय भोजन करताहै वह सातलोकोंको देखताहै ८५ और उत्तम स्थानों से शोभित ऐसे बिमानको पाताहै जोकि अप्सराओं के समूहोंसेसेवित सूर्य्य के समान प्रकाशमानहै और जिसमें गंधर्वलोग शरोधका गान करते हैं ८६ वहांपर दिव्य पोशाकों से अलंकृत महाशोभित शोक से रहित वह अत्यन्त असंख्य वर्षोंतक देवताओं की श्रेष्ठ स्त्रियों के साथ आनन्द करताहै ८७ सत्यवक्ता व्रतका करनेवाला जो पुरुष बारह महीनेतक सदैव बीसवें दिन एकसमय भोजन करता है ८८ मांसका त्याग करनेवाला ब्रह्मचारी और सब जीवोंकी वृद्धिमें प्रवृत्तहै वह क्रीड़ाके योग्य बहुत बड़े बारह सूर्य्यों के लोकों को अच्छीरीतिसे भोगताहै ८९ गन्धर्व अप्सरा और दिव्यमाला चन्दनसे प्रसन्न सुवर्णमय दिव्य बिमानों से आगे किया जाताहै ९० जो पुरुष बारह महीनेतक इक्कीसवें दिन एकसमय भोजन करताहै ९१ वह पुरुष सदैव सुखों को भोगता शुक्र इन्द्र अश्विनीकुमार और मरुद्गणनाम देवताओं के लोकोंको प्राप्तकरता है ९२ दुःखोंको न जानता उत्तम बिमानपर बैठा श्रेष्ठस्त्रियों से सेवित वह देवताओं के प्रभुकी समान क्रीड़ा करताहै ९३ जो मनुष्य बारह महीने तक बाईसवें दिन एकसमय भोजन करताहै ९४ अहिंसायुक्त सत्यवक्ता दूसरे के गुणों में दोष न लगानेवाला वह सूर्य्य के समान तेजस्वी पुरुष बसुओं के लोकों को पाताहै ९५ कामचारी सुधाका आहार करनेवाला उत्तम बिमानमें दिव्य भूषणों से अलंकृत वह पुरुष देवकन्याओं के साथ क्रीड़ा करता है ९६ स्वल्पभोक्ता जितेन्द्रिय होकर जो मनुष्य बारह महीनेतक तेईसवें दिन एकसमय भोजनकरे ९७ वह वायु शुक्र और इन्द्रके लोक में जाताहै और अप्सराओं से पूजित स्वेच्छाचारी होकर बिहार करनेवाला होताहै ९८ बहुत गुणवाले उत्तम बिमानमें नियत और दिव्य भूषणों से अलंकृत वह पुरुष देवकन्याओं के साथ क्रीड़ा करताहै ९९ जो पुरुष बारह महीनेतक सदैव हवन करताहुआ चौबीसवें दिन एकसमय

हव्यका भोजन करताहै १०० वह दिव्यमाला बस्त्रों से अलंकृत दिव्य चन्दनादि से लिप्त शरीर प्रसन्नचित्त होकर बारह सूर्य्यों के लोकमें निवास करताहुआ १०१ हंसयुक्त चित्तरोचक सुवर्णके बिमानमें हजारों लाखों देवकन्याओं के साथक्रीड़ा करताहै १०२ जो पुरुष बारह महीनेतक अग्निहोत्र करता सदैव पचीसवें दिन एकसमय भोजन करे वह उस बड़े बिमान में सवार १०३ रत्नों से आच्छादित किया जाताहै जोकि सिंह व्याघ्रसेयुक्त बादलकी गर्जनाके समान शब्दायमान आनन्दके घोषोंसे युक्तहै १०४ देवकन्याओं से शोभित सुवर्णमय स्वच्छ दिव्य चित्तरोचकहै १०५ और अमृत के समान उत्तम सुधारससे जीवनको करता उन हजारों स्त्रियों से संयुक्त लोकमें हजार कल्पतक निवास करताहै १०६ जो मनुष्य सदैव सावधानीसे अल्प भोजनवाला होकर बारह महीनेतक छब्बीसवेंदिन एकसमय भोजन करता १०७ जितेन्द्रिय संसार से वैराग्यवान् वह भाग अग्नि में हवन करताहै वह शरीर त्यागने के पीछे अप्सरागणों से पूजित १०८ सातों मरुद्गणों के लोकों को पाताहै और वसुओं के भी लोकोंको भोगताहै स्फटिक मणियों के बने सब रत्नों से अलंकृत दिव्य बिमानपर १०९ दो हजार दिव्य युगोंतक गन्धर्व और अप्सराओं से पूजितहोकर अपने दिव्य तेजसे अच्छे आनन्दको करताहै ११० जो पुरुष बारह महीनेतक सदैव हवन करताहुआ सत्ताईसवें दिन एकसमय भोजन करताहै १११ वह बड़े फलको पाकर देवलोक में होके निर्लोभतासे आनन्द करताहै ११२ हे राजा यह व्रत देवर्षि और राजर्षि लोगोंका कियाहुआ है उत्तमबिमानपर नियत दिव्यशरीरवाला वहपुरुष वहां निवास करताहुआ ११३ तरुणतासे पूर्ण अत्यन्तचित्तरोचक स्त्रियोंकेसाथ क्रीड़ा करता हुआ तीनहजार कल्पयुगतक सुखसे निवास करता है ११४ जो मनका जीतनेवाला जितेन्द्रिय पुरुष बारह महीने तक अट्ठाईसवें दिन सदैव एक समय भोजन करे ११५ वह देवर्षियों के भोगनेवाले बड़े फलको अच्छी रीति से भोगताहुआ तेजसे निर्मल सूर्य्य के समान प्रकाश करता है ११६ और कमल शरीर अच्छी तेजस्विनी स्थूलकुचा बृहज्जंघावाली दिव्यभूषणों से अलंकृत स्त्रियों के साथ ११७ दशलाख कल्प वर्षपर्य्यन्त उस दिव्यबिमानमें विहार करता है जो कि स्वेच्छाचारी सूर्य्य के समान प्रकाशित और अभीष्ट मनोरथों से पूर्ण है ११८ सत्यव्रतमें नियत जो पुरुष बारह महीने तक उन्तीसवें दिन एक समय

भोजनकरे ११६ उसके वह दिव्य शुभलोक हैं जो देवता और राजर्षियों से पूजितहैं वह मनुष्य उस विमानको अच्छेप्रकार से पाताहै जो कि दिव्य सूर्य चन्द्रमाकेसमान सदैव प्रकाशित १२० जातरूप सुवर्ण का बनाहुआ योग्य रत्नों से जटित अप्सरागणों से व्याप्त गन्धर्वों से शब्दायमान है १२१ वहां पर दिव्य भूषणों से अलंकृत चित्तरोचक तरुणता के मदमें भरीहुई शुभस्त्रियां उसको विहार कराती हैं १२२ हे महाराज वह भोगवान् तेजसेयुक्त वैश्वानर अग्निकेसमान प्रकाशित दिव्य शरीर से देवता के समान शोभायमान पुरुष १२३ अष्टवसु उन्चास मरुद्गण साध्यगण अश्विनीकुमार और ग्यारहरुद्रोंके लोकोंको पाताहै१२४ जो जितेन्द्रिय मनुष्य बारहमहीनेतक महीनेकेअन्तमें एकदिन एकसमय भोजन करे वह ब्रह्मलोक को पाताहै १२५ वहां सुधारसका आहार करनेवाला सब के चित्तका हरनेवाला वह शोभायमान पुरुष अपने तेज और शोभासे सूर्य्यकेसमान सुशोभितहोताहै १२६ दिव्यमाला अस्तरणों का धारण करनेवाला दिव्य चन्दनादि से लिप्त सुखोंमें प्रवृत्त दुःखों से अज्ञात १२७ विमानमें बैठाहुआ वह पुरुष अपने तेज से प्रकाशमान होकर स्त्रियों से प्रतिष्ठा पाता है और इन्द्र देवर्षियों की कन्याओं से पूजाजाताहै १२८ नानाप्रकारकी क्रीड़ा और बहुत रीतों की प्रीति और बहुतप्रकारकी मधुरवाणी और अनेक रङ्गसेसंग करनेवाली स्त्रियों से १२९ उस विमानपर प्रसन्न कियाजाताहै जो कि आकाशरूप जिसके पूर्व्व में सूर्य्य वैडूर्यमणि के समान प्रकाशमान पीछे के चन्द्रमा के समान तेजस्वी और तीनबादलों के समान प्रकाशित १३० दक्षिण में रक्तवर्ण नीचे की ओर नीलामण्डल रखनेवाला बाईं ओरको झुकाहुआ विचित्ररूपहै वह पूजित और स्त्रियों आदि को साथ रखनेवाला पुरुष उस विमानपर नियत होता है १३१ जितने हजार वर्षतक जंबूद्वीप में वर्षा होती है उतनेही वर्षतक यह बुद्धिमान् पुरुष ब्रह्मलोकमें निवास करताहै १३२ हेतात वर्षाऋतुमें बर्षा करनेवाले बादल की जितनी पानीकी बूंदें पृथ्वीपर गिरती हैं वह देवता के समान तेजस्वी पुरुष उतनेही वर्षतक निवास करता है १३३ एक महीने का व्रत रखनेवाला मनुष्य दशवर्षमें उत्तम स्वर्गको पाताहै और महर्षीहोकर शरीर समेतही स्वर्गको जाता है १३४ सदैव जितेन्द्रिय क्रोधरहित क्षुधाको जीतनेवाला सावधान संध्योपासनादि कर्म करनेवाला पवित्र मनुष्य अग्नियों में हवन करताहुआ १३५ बहुत

नियम पूर्व्वक भोजन करनेवाला है और आकाश के समान निर्मलहै और उस का तेज सूर्य्य के समान है १३६ हे राजा उसप्रकार का मनुष्य अपने शरीरस-मेत स्वर्ग्ग में जाकर देवता के समान पवित्र स्वर्गको इच्छाके अनुसार भोगता है १३७ हे भरतर्षभ यह यज्ञोंकी उत्तम विधि जिसका फल व्रतरूपहै उसको मैंने क्रम पूर्व्वक वर्णनकिया १३८ हे राजा जैसे कि दरिद्री मनुष्यों को यज्ञका फल मिलता है उसी प्रकार इस व्रतको करके परमगतिको भी पाताहै १३९ जो कि देवता और ब्राह्मणों के पूजनमें तत्परलोग हैं हे भरतर्षभ यह विधि उन्हीं लोगों के निमित्त कही गई है १४० जो आचारज्ञता सावधान बाह्याभ्यन्तरसे पवित्र द्वेष छलआदिसे पृथक् धर्म्म से चलायमान और कंपित न होनेवाले महात्माओंमें होती है इसमें तुमको किसीप्रकार का सन्देह मतहो १४१।१४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेउपवासविधिर्नामसप्ताधिकशततमोऽध्यायः १०७ ॥

एकसौआठका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे पितामह सब तीर्थोंमें श्रेष्ठ जो तीर्थ है और जिसमें उ-त्तम पवित्रता होसक्ती है वह मुझसे कहनेके योग्यहै १ भीष्मजी बोले कि निश्चय करके सब तीर्थ गुणवान् हैं परन्तु ज्ञानी का जो तीर्थ और शौचहै उसको तुम सावधानीके साथसुनो २ मनरूपी तीर्थमें सत्यता तो धृतिका देनेवाला अगाध और निर्मल जल है उस मानसरूपी तीर्थ में सत्यताको धारणकरके सदैव स्नान करना चाहिये ३ निष्काम होना सत्यकहना मृदुता सबजीवों में अहिंसा दया बाह्याभ्यन्तरसे जितेन्द्रिय होना यहसब गुण शौचतीर्थके समानहैं ४ जो ममता अहंकार सुख दुःख आदि योग और स्त्रीआदि परिग्रहों से पृथक् पवित्र मनुष्य भिक्षाका भोजनकरते हैं वह तीर्थरूपहैं ५ तत्त्वज्ञ और अहंबुद्धिसेरहित पुरुष उत्तम तीर्थ कहाजाताहै और सबबातों का जो विचारहै यही तेरे शौचका लक्षणहै ६ जिन लोगोंके आत्माका सतोगुण रजोगुण तमोगुण पृथक् हुआहै और शौच अशौच में अच्छीरीति से प्रवृत्तहोकर अपने कार्य्य के निश्चय करनेवाले सर्व त्यागमें आरूढ़ सर्वज्ञ समदर्शी पवित्र और शौच अर्थात् चित्तकी पवित्रता पूर्व-क आचारकी पवित्रताके इच्छावान्हैं वह पुरुष तीर्थरूपहैं ७।८ जलसे अंगोंका भिजोनेवाला स्नानकर्त्ता नहीं कहा जाताहै किन्तु जो जितेन्द्रिय होकर स्नान

करनेवाला है वह स्नानकर्त्ता कहाताहै और वही बाह्याभ्यन्तरसे शुचिहै ६ व्य-
तीत कालकी बस्तुओंकी जिनको अपेक्षा नहीं है और प्राप्तहुये मनोरथोंमें जि-
नकी ममतानहीं है और अनिच्छावान् हैं वही उनका शौचहै १० मुख्य करके
शरीरकी पवित्रता विज्ञानहै और कुछ न चाहना यही चित्तकी स्वच्छताहै ११
गुरुपूजनादि गुणों से जो पवित्रता है वही उत्तमता है और चित्तकी पवित्रता
और है इसकेपीछे पवित्रता तीर्थ है जो पवित्रता कि ज्ञानसे होती है वही श्रेष्ठ
गिनीजाती है १२ जो पुरुष चित्तके द्वारा उस मानसतीर्थ में ब्रह्मज्ञानरूप जलसे
स्नानकरताहै वह स्नान तत्त्वदर्शी पुरुषकाहै १३ अच्छीरीतिसे स्नानादि शौच
करनेवाले सदैव सावधानचित्त शुद्धगुणसे युक्त मनुष्य सदैव पवित्र हैं १४ हे भ-
रतबंशी यह शरीर में बर्त्तमान तीर्थ मैंने बर्णनकिये अब पृथ्वी के जो २ पवित्र
तीर्थहैं उनको भी सुनो १५ जैसे कि शरीरके मुख्य २ स्थान पवित्र कहेजाते हैं
उसीप्रकार पृथ्वीके भी मुख्य २ जल और भाग पवित्रहैं १६ जो पुरुष तीर्थ के
कीर्त्तन स्नान और पितृतर्पण से तीर्थोंपर पाप को दूरकरते हैं वह सुखपूर्व्वक
स्वर्गको जातेहैं १७ जैसे कि पुरुष साधुओंकी सेवा परिचर्य्या और पृथ्वी जल
के तेजसे बड़े पुण्योंके भागी हैं उसीप्रकार मन और पृथ्वीके दोनों पवित्र तीर्थों
में जो पुरुष स्नानकरताहै वह शीघ्रही सिद्धीको पाताहै १८।१९ जैसे कर्मसेरहित
बल और बलसेरहित कर्म इस संसारमें मनोरथों को सिद्ध नहीं करताहै और ब-
लसे अच्छीरीति से मिलाहुआ कर्म्म अच्छेप्रकार करके पूराहोताहै उसीप्रकार
पवित्र मनुष्य अपने शरीरकी शुद्धतारूप शौचादि को तीर्थरूप शौचसे मिला
कर सिद्धीको पाताहै यह दोनोंप्रकार का शौच उत्तमहै २०। २१॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशौचानुपृच्छानामाष्टाधिकशततमोऽध्यायः १०८॥

एकसौनवका अध्याय॥

युधिष्ठिर बोले कि सबव्रतों में जो व्रतकल्याणरूप और बहुत बड़े फलवालाहै
और जो लोकमें संशयसे रहितहै उसको आपमुझसे कहने के योग्यहो १ भीष्म
जी बोले कि हे राजा ब्रह्माजीका कहाहुआ वह व्रत जिसकोकरके पुरुष निस्स-
न्देह परलोक को जाताहै वह मुझसे सुनो २ मार्गशिर महीनेकी द्वादशीमें दिन
और रात्रिमें केशवजीको पूजनकरनेसे अश्वमेध यज्ञके फलकोपाकर सबपापोंसे

युक्त होताहै सर्बत्र द्वादशी शब्दसे द्वादशीयुक्त एकादशी जानो ३ इसीप्रकार पौष महीने में नारायणजी का पूजना योग्य है जो पौष में पूजन करता है वह वाजपेय यज्ञके फलको पाकर बड़ी सिद्धीको पाताहै ४ माघ महीनेकी द्वादशी के दिन अहर्निश माधवजी के पूजने से राजसूय यज्ञके फलको पाकर अपने सब कुटुम्ब भरको उद्धार करताहै ५ फाल्गुन महीने में गोविन्दजी के पूजन से अतिरात्र यज्ञके फलको पाकर चन्द्रलोक को जाताहै ६ चैत्र महीनेकी द्वादशी को अहर्निश गोविन्दजी के पूजन करने से पुण्डरीक यज्ञके फलको पाकर देवलोक को जाताहै ७ वैशाख महीनेकी द्वादशी में मधुसूदनजी के पूजन से अग्निष्टोम यज्ञके फलकोपाकर चन्द्रलोकको जाताहै ८ ज्येष्ठ महीनेकी द्वादशी को त्रिविक्रमजी को पूजकर गोमेध यज्ञके फलको पाकर अप्सराओं के साथ आनन्द करताहै ९ आषाढ़ महीनेकी द्वादशी में वामनजीको पूजनकर नरमेध यज्ञके फलको पाकर बड़े पुण्यको प्राप्त करताहै १० श्रावणकी द्वादशी में श्रीधर जी के पूजनसे पंचयज्ञके फलको प्राप्त करके बिमानमें बैठ आनन्द करताहै ११ भाद्र महीने में हृषीकेशजीको पूजनकरके सौत्रामणि यज्ञके फलकोपाकर पवित्र होताहै १२ कार्त्तिक महीनेकी द्वादशीको दामोदरजीको पूजकर स्त्री पुरुष दोनों निस्सन्देह गोमेध यज्ञके फलको पाते हैं १३। १४ इसरीति से जो पुरुष एक पूरे वर्षतक पुण्डरीकाक्षजी को पूजनकरे वह पूर्व्वजन्मके सब वृत्तान्तों के स्मरणता को पाताहै और बहुतसे सुवर्ण और स्वरूपको भी पाताहै १५ और जो प्रतिदिन उसकी सारूप्य मुक्तिको प्राप्त करताहै अर्थात् ध्यानके द्वारा कीटभृंगी के न्याय के अनुसार विष्णुरूपका ध्यानकरताहै और वार्षिक व्रत पूरे होनेपर ब्राह्मणोंको भोजन कराताहै वा घृतका दान करताहै १६ इससे बढ़कर विष्णुजीका कोई व्रत नहीं होताहै आप भगवान् ब्रह्माजी ने इस प्राचीन ब्रतको वर्णन कियाहै १७॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेविष्णोर्द्वादशकंनामनवाधिकशततमोऽध्यायः१०९॥

एकसौदशका अध्याय॥

वैशम्पायन कहते हैं कि बड़ेज्ञानी युधिष्ठिरने उन शरशय्यापर पड़ेहुये कौरवों के पितामह भीष्मजी से यह पूछा १ कि अज्ञानीलोगोंका स्वरूपवान् होना प्रारब्धवान् होना और चित्तका अभीष्ट कैसे होसक्ताहै और किसरीति से धर्म अर्थ

कामसे युक्तहोकर सुखका भागीहोताहै २ भीष्मजी बोले हे राजेन्द्र जब मार्गशिर सुदी प्रतिपदाके दिन मूल नक्षत्रहो तब चान्द्रव्रतको प्रारम्भकरे अर्थात् पुण्याहवाचन आदिके द्वारा चित्तके मनोरथ को प्राप्तिके अर्थ व्रतको अंगीकार कर आत्मा को चन्द्रमा से लयकरके उस चन्द्रमाके अंगों में उनके देवताओं समेत नक्षत्रों को नियतकरके मंत्रों से और जप होमआदिसे उनका आराधन करना चाहिये इसरीतिसे पूर्णमासीतक व्रतकरके और व्रतके समाप्त होनेमें घृतसे हवनको करके आचार्य्य को घृतदे ३ मूल नक्षत्रको तो दोनों चरण कल्पनाकरे रोहिणी नक्षत्र को जंघा में नियतकरे अश्विनी नक्षत्र को सक्थिनी पूर्व्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़को दोनों ऊरू नियतकरे पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रको गुह्यनाम अंगकरे और कृत्तिका नक्षत्रोंको कटिका स्थानजाने ४ पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद को नाभिजाने रेवती नक्षत्रको नेत्रमण्डल धनिष्ठा को पीठ अनुराधा नक्षत्रको उदर ५ बिशाखा नक्षत्रको दोनों भुजा हस्त नक्षत्र को दोनों हाथ पुनर्बसु नक्षत्रको उँगलियां श्लेषाको नख नियतकरे ६ और हे राजेन्द्र ज्येष्ठानक्षत्र को ग्रीवा श्रवणको दोनों कान पुष्य नक्षत्रको मुख स्वाती नक्षत्रको दांत और ओष्ठ कल्पनाकरे ७ शतभिषा नक्षत्रको हास्य मघानक्षत्र को नाक मृगशिर नक्षत्रको नेत्र चित्रानक्षत्र को ललाट कल्पनाकरे ८ भरणी नक्षत्रको शिर आर्द्रा नक्षत्रको केश नियतकरे जब यह व्रत समाप्त होजाय तब वेदज्ञ ब्राह्मणको घृतका दानकरे ९ फिर वह व्रतका करनेवाला अच्छा ऐश्वर्य्यवान् दर्शनीय ज्ञानी और पूरेअंगवाला होकर ऐसे जन्मलेताहै जैसे कि पूर्णमासी में चन्द्रमा होताहै १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेनक्षत्रांगवर्णनोदशाधिकशततमोऽध्यायः ११० ॥

एकसौग्यारहका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे सर्वशास्त्रज्ञ महाज्ञानी पितामह इस पृथ्वी के जीवों की उत्तम संसार विधिको सुनाचाहताहूं १ हे राजेन्द्र इस पृथ्वी पर किसरीतिसे कर्म्म करनेवाले मनुष्य उत्तमस्वर्गको और नरकको पातेहैं २ मृतकहोकर मनुष्य अपने शरीर को काष्ठ मृत्तिकाके समान त्यागकर परलोक को जातेहैं तब कौन उनके साथ जाताहै ३ भीष्मजी बोले कि यह बड़े बुद्धिमान् भगवान् बृहस्पतिजी

आतेहैं तुम इन्हीं महाभागसे यह गुप्त और प्राचीन भेदपूछो ४ क्योंकि यह बात दूसरा कोई नहीं कहसक्ताहै बृहस्पतिजीके समान कोई कहनेवाला किसीस्थान में नहीं है ५ वैशम्पायन बोले कि इसरीतिसे भीष्म और युधिष्ठिरके वार्त्तालाप करतेही करते अत्यन्त पवित्रात्मा भगवान् बृहस्पतिजी स्वर्गसे आपहुँचे ६ इसके पीछे धृतराष्ट्र को आगे कियेहुये राजा युधिष्ठिर और उनसब उत्तम २ सभासदों ने उठकर उनका पूजनकिया ७ फिर धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने भगवान् बृहस्पतिजीके समीप जाकर न्याय और सिद्धान्तके अनुसार इस प्रश्नको पूछा ८ हे सर्वशास्त्रज्ञ अशेष धर्मोंकेज्ञाता भगवान् बृहस्पतिजी जब कि यह जीवात्मा मरताहै और अपने शरीरको काष्ठ मृत्तिकाके समान इसी पृथ्वीपर छोड़कर जाता है ९ उससमय उसके साथ पिता माता भाई पुत्र गुरू इष्ट मित्र ज्ञाति बांधव नातेदार इत्यादिमें से कौन उसके साथ जाताहै १० बृहस्पतिजी बोले हे राजा अकेलाही उत्पन्न होताहै अकेलाही नाशहोताहै अकेलाही आपत्तियों से निवृत्त होता और अकेलाही दुर्गतीको पाताहै ११ माता पिता भाई पुत्र गुरू इष्ट मित्र ज्ञाति कुटुम्ब नातेदार आदि कोईभी उसके साथी नहीं होते १२ मनुष्य मृतक शरीरको काष्ठ मृत्तिकाके समान त्यागकर दो चार घड़ी रोना पीटना करके मुख मोड़ २ कर चलेजाते हैं १३ उन शरीरके त्यागनेवालों के साथ केवल धर्मही पीछे २ जाताहै इसीसे इस सहायक और साथमें रहनेवाले धर्मको मनुष्य सदा सेवनकरे १४ धर्मसेयुक्त प्राणी स्वर्ग में परमगतिको पाताहै और अधर्म से युक्त मनुष्य नरकको पाताहै १५ इसीहेतुसे पंडित मनुष्य अपने धर्म और न्यायके द्वारा पैदाकियेहुये धनसे धर्म्मको प्राप्तकरें क्योंकि परलोक संबंधी अकेला धर्मही इसका साथी होताहै १६ लोभ और मोहसे अपने शास्त्रको अच्छीरीति से न जाननेवाला मनुष्य क्रोध लोभ मोह और भयसे दूसरे पुत्रादि केही निमित्त करनेके अयोग्य कर्मोंको करताहै १७ धर्म अर्थ काम यह तीनों सजीवहैं इनतीनोंको अधर्म से रहित प्राप्तकरना उचितहै १८ युधिष्ठिर बोले मैंने आपका धर्म संयुक्त मनोरथोंका प्राप्तकरनेवाला उत्तम बचन सुना अब मैं शरीरके अंगों के वृत्तान्त जानने की इच्छा करताहूं १९ मनुष्यों का मृतकशरीर अव्यक्तरूप प्राप्तकरनेवाला जो अत्यन्त सूक्ष्महोकर दृष्टि से भी गुप्तहै उसकेसाथ धर्म्म कैसे जाताहै २० बृहस्पतिजी बोले कि पृथ्वी जल तेज वायु और आकाश मन बुद्धि

यमराज आत्मा यह सब साथहोकर सदैव धर्म्मको देखते हैं २१ इसलोकमें यह पृथ्वीआदि दिन रात्रि सब जीवों के साक्षी हैं और उस जीव केसाथ पीछे २ धर्म भी जाताहै २२ हे बड़े बुद्धिमान् अस्थि मांस चर्म्म बीर्य्य रुधिर यह सब मृतक शरीर को त्याग करते हैं २३ इसी हेतुसे धर्म्म से युक्त वह जीव इसलोक और परलोक में सुख से वृद्धिको पाता है २४ इसी कारण धर्म्म से संयुक्त जीव भी उस धर्म्म से फलको पाता है और पंचतत्त्वों में बर्त्तमान देवतालोग इस शुभाशुभ कर्म्मको देखते हैं अब और क्या सुनना चाहता है २५ युधिष्ठिर ने कहा कि जैसे जीव के पीछे २ धर्म्म साथ में जाता है वह सब आपने बर्णन किया अब मैं यह जानना चाहताहूं कि बीर्य्य किसप्रकारसे उत्पन्न होताहै २६ बृहस्पतिजी ने कहा हे राजा शरीरवर्त्ती देवता और पृथ्वी जल अग्नि बायु आकाश मन यह जिस अन्नको भोजन करते हैं २७ उन पांचोंतत्त्व और छठे मनके तृप्त होने से उस अन्नके सारांशसे बीर्य्य उत्पन्न होताहै २८ फिर स्त्री पुरुषके संभोग के कारण उस बीर्य्य से गर्भ उत्पन्न होताहै यह सब तुम से कहा हे पवित्रात्मा अब क्या सुनना चाहता है २९ युधिष्ठिर ने कहा कि जैसे गर्भ उत्पन्न होता है वह आपसे मैंने सुना अब जैसे कि जन्मलेनेवाला पुरुष जिसरीतिसे इसम्लान बीर्य्य से मिलताहै उसको वर्णन कीजिये ३० बृहस्पतिजीने कहा कि साथमें रहने वाला पुरुष उन पांचोंतत्त्वों से मिलायाजाताहै फिर उनतत्त्वों से पृथक् होनेवाला जीव दूसरी गतिको पाताहै ३१ सब तत्त्वोंसेयुक्त होकर जीवही गुणोंको प्राप्तकरताहै तब पंचतत्त्वस्थ देवता उसके शुभाशुभ कर्मोंको देखते हैं अब क्या सुनना चाहताहै ३२ युधिष्ठिर ने कहा हे भगवान् बृहस्पतिजी अस्थि मांस चर्म इत्यादि को त्यागकरके उनतत्त्वों से पृथक् होकर वह जीव किस स्थानपर नियतहोकर सुख दुःखोंको भोगतेहैं ३३ बृहस्पतिजी बोले हे भरतर्षभ अच्छीरीति के कर्म्मसे संयुक्त शीघ्रतासे बीर्य्यरूप सूक्ष्म शरीर प्राप्त करनेवाला जीव स्त्रियोंके पुष्प अर्थात् रुधिरको अच्छीरीतिसे पाकर जन्मलेता है ३४ परन्तु गर्भमें आने से पूर्व्व स्वतंत्र दशामें सूक्ष्मरूप धारण करताहुआ जीव यमराज के पुरुषों से ताड़ित और क्लेशित कियाजाताहै और संसार चक्रमें घूमताहुआ अनेक प्रकारके कष्टों को पाताहै ३५ हे राजा धर्म्म फलका आश्रयी प्राणी इसलोकमें जन्मसे लेकर मरण पर्य्यन्त शुभकर्म्मों के फलको प्राप्त करताहै ३६ जो जन्मसे लेकर सामर्थ्य

के अनुसार धर्म्मकाही सेवन करताहै तो वह पुरुष उस धर्म्म से शुद्धात्माहोकर सदैव सुखका सेवन करताहै ३७ और जो धर्म्म के मध्यमें अधर्म्मका भी सेवन करताहै वह जीव सुखकेपीछे दुःखको भी भोगताहै ३८ अधर्मसेयुक्त होकर यमराजके देशमें जानेवाला वह जीव बड़े २ दुःखोंको पाकर पशु पक्षियोंकी योनियों को पाताहै ३६ मोहसेसंयुक्त वह जीव इस लोकमें जिस २ कर्म के द्वारा जिस २ योनिमें उत्पन्न होताहै उसको मुझसे सुनो ४० शास्त्र इतिहास और वेदमें जो यह यमराजका घोर देश कहाजाताहै उस देशको मरण धर्म्मवाली सृष्टि प्राप्त करती है ४१ हे राजा उस यमलोकमें ऐसे २ स्थान हैं जो पवित्र देवभवनों के समान होकर चलायमान हैं ४२ यमराजके भवनों में जो भवन कि ब्रह्मलोक के समान दिव्यहैं उनमें शुभकर्मी जाते हैं शुभाशुभ कर्मोंमें बंधाहुआ जीव दुःखों को भोगताहै ४३ और जिस २ मन बाणी और कर्म्म से जीव कठिन और भयकारी गतिको पाताहै उसको इसकेपीछे कहूंगा ४४ चारों वेदको पढ़कर मोहसे संयुक्त ब्राह्मण पतित मनुष्य से दानलेकर गधेकी योनिको पाताहै ४५ और वह गधा पन्द्रह वर्षतक जीवताहै फिर गधेकी योनिसे छूटकर बैलकी योनिमें सातबर्ष रहताहै ४६ उस बैलकी योनिसे छूटकर ब्रह्मराक्षसकी योनिपाताहै तदनन्तर फिर ब्राह्मण योनिको पाताहै ४७ हे भरतबंशी पतित मनुष्यको यज्ञकराके कृमियोनि को पाताहै उसमें पन्द्रहवर्षतक जीताहै ४८ फिर कृमियोनिको त्यागकर वह गधे की योनिमें पैदाहोता है और पांचवर्ष गधेकी योनिमें रहकर पांचही बर्ष शूकर शरीर को पाताहै ४६ पांचवर्ष मुर्गा पांचवर्ष शृगाल और एकवर्ष कुत्ताहोताहै इसकेपीछे मनुष्य जन्मपाताहै जो निर्बुद्धी शिष्य अपने उपाध्यायका पापकहै ५० वह जीव इस लोकमें निस्सन्देह तीनजन्मको पाताहै प्रथम कुत्ता फिर कच्चे मांस का खानेवाला पशु फिर गधा इसके पीछे चारों ओरसे दुःखोंको पानेवाला प्रेतहोकर फिर ब्राह्मण होताहै ५१ इस लोकमें जो पापात्मा पापका करनेवाला शिष्य मनकी प्रेरणा से अधर्म्म मनसे भी गुरूकी भार्य्या का संभोग करता है वह बड़े भयानक शरीरों को पाता है ५२ प्रथम तो तीनबर्ष कुत्ताहोता है फिर मरकर कृमियोनि में पैदा होताहै ५३ फिर एकवर्ष कृमियोनि में रहकर वहां से मरकर ब्रह्मयोनि में जन्म लेता है ५४ जो गुरू बेटेके समान अपने शिष्यको निष्कारण केवल अपने चित्तसे मारे वह गुरूभी मांसाहारी पशु उत्पन्नहोताहै५५

हे राजा जो पुत्र माता पिता की अप्रतिष्ठा करता है वह मृतक होकर प्रथम गधा होताहै ५६ गधेके शरीर में दशबर्ष जीता रहता है और एक पूरे बर्षतक कुंभीपाक में रहकर फिर मनुष्ययोनिको पाताहै ५७ जिस पुत्रके माता पिता उस पुत्रकी अवज्ञा आदि से अप्रसन्न हैं वह भी मरकर गधा उत्पन्न होताहै ५८ वह गधा दश महीने जीवता है फिर कुत्ता होकर चौदह महीने जीता है और सात महीने बिलार होकर मनुष्य का जन्म लेता है ५९ माता पिताको दूषण देके वा निन्दा करके सारक होताहै और जो माता पिताको मारता है वह कछुआ होताहै ६० दशबर्षतक कछुआ तीन बर्षतक शल्यक और छः महीनेतक सर्प योनिमें रहकर फिर मनुष्यका जन्म पाताहै ६१ जो मनुष्य अपने स्वामीके अन्नको भोजन करके उसके साथ किसीप्रकारकी शत्रुता करताहै वह मोहसेयुक्त मरकर बन्दरकी योनि पाताहै ६२ दशबर्ष वन्दर पांचवर्ष चूहा और छःमहीनेतक कुत्ता होकर फिर मनुष्यका जन्म पाताहै ६३ किसी की धरोहर मारनेवाला मनुष्य यमलोकमें पहुँचकर हजार जन्म लेकर फिर कृमियोनिमें उत्पन्नहोताहै ६४ हे राजा पन्द्रहबर्ष कृमि शरीरमें रहकर अपने पापों के नाश होनेपर फिर मनुष्य शरीर को पाताहै ६५ दूसरेके गुणमें दोष लगानेवाला मनुष्य भी मरनेके पीछे शार्ङ्गपक्षी होता है बिश्वासघाती मनुष्य मछलीका जन्मलेताहै ६६ आठबर्ष मछली रहकर मृगका जन्मलेताहै चार महीने मृगरहकर छागका जन्मलेताहै६७ एकबर्ष छागयोनिमें रहकर कीटका जन्मलेकर मनुष्य योनिमें आताहै ६८ जव तिल, माष, सरसों, मूंग, चना, कुलत्थ, कलायान्न, गेहूं और अलसी ६९ और इनके सिवाय अन्य धान्योंका चुरानेवाला मोहसे अचेत जो जीवहै वह मूषक और घूसका जन्म पाताहै ७० फिर शूकर का जन्म पाताहै और शूकरके जन्म में रोगसे मरताहै ७१ फिर वह अज्ञानी कुत्ता होताहै और पांचबर्ष कुत्ता रहकर फिर मनुष्य होताहै ७२ दूसरे की स्त्रीसे भोग करनेवाला भेड़िया होताहै इसके पीछे कुत्ता शृगाल गिद्ध व्याल कंक और बगला होताहै ७३ जो पापात्मा मोह युक्त मनुष्य भाईकी स्त्रीसे भोग करताहै वह एक बर्षतक पुंसकोकिल नामपक्षी के जन्मको पाताहै मित्र गुरू और राजाकी स्त्रीको ७४ अपनी इच्छा से भोग करके मरने के पीछे शूकर होताहै पांचबर्ष शूकर रहकर दश बर्षतक कुत्ता तीन महीने पिपीलिका और एक महीने कीट ७५ इन शरीरोंको पाकर फिर भी कृ-

मियोनिमें उत्पन्न होताहै वहां चौदहमहीने जीताहै फिर अधर्म के नाश होजाने पर मनुष्यका जन्म पाताहै ७६ हे प्रभु जो मनुष्य विवाहमें यज्ञमें और दान में मोहसे बिघ्न करनेवाला होताहै वह मरकर कृमि होताहै ७७ वह कृमि पन्द्रहबर्ष तक जीताहै अधर्म नष्ट होनेपर फिर मनुष्य होताहै ७८ जो मनुष्य प्रथम किसी को कन्या देकर फिर दूसरे को देनाचाहै वह भी कृमियोनि में पैदा होताहै ७९ और दशबर्ष कृमियोनिमें रहकर फिर अधर्म नष्ट होनेपर मनुष्य जन्म पाताहै ८० देवकार्य्य पितृकार्य्य को न करके और अतिथिको भी भिक्षा न देकर जो मनुष्य भोजन करताहै वह काकयोनिमें उत्पन्न होताहै ८१ हजार बर्ष काक रहकर फिर मुर्गाहोताहै और एकमहीने सर्पभी होताहै तदनन्तर मनुष्यका जन्मपाताहै८२ जो मनुष्य अपने पिताके समान बड़े भाईको अपमान करताहै वहभी मृत्युको पाकर क्रौंचयोनिमें उत्पन्न होताहै ८३ वह क्रौंच एकबर्ष जीवताहै फिर चीह्लहो-कर एकवर्ष पीछे मनुष्य होताहै ८४ शूद्र मनुष्य ब्राह्मणी स्त्रीसे भोगकरके कृमि-योनिमें जन्म लेताहै फिर शूकरयोनिमें जन्म लेताहै ८५ वह शूकर होतेही रोग से मरजाताहै और मरकर कुत्ता होताहै ८६ फिर पाप कर्मको नाशकरके मनुष्य होताहै उस जन्ममें सन्तान उत्पन्न करके घूसका जन्म लेताहै ८७ जो मनुष्य कृतघ्नी है वह यमलोकमें जाकर यमराजके क्रोधरूप मनुष्यों से नाना वेदनाओं को पाताहै ८८ दंड,मुद्गर,शूल,भयकारी, अग्निमुख,असिपत्र, घोरगरम बालूका बन,कूट,शाल्मलि ८९ हे भरतबंशी यमराजके देशमें बर्त्तमानहोकर अनेकजीवों से दुःखोंको पाकर बड़े २ दंडोंको पाकर फिर माराजाताहै ९० इसके पीछे वहां भ-यकारी मुद्गर आदि से घायल वह कृतघ्नी मनुष्य संसार चक्रको पाकर कृमि-योनिमें उत्पन्नहोताहै ९१ हे भरतबंशी पन्द्रह बर्षतक कृमियोनिमें रहकर फिर गर्भ में आकर बच्चाही मरजाताहै ९२ फिर सैकड़ों गर्भों में पैदाहोहोकर अनेक शरीरों को पाकर तिर्य्यक्योनि में उत्पन्नहोताहै ९३ इसकेपीछे इसलोकमें अनेक वर्षतक दुःखोंको पाकर फिर समुद्रका कछुआहोताहै ९४ दही के चुरानेसे बगला और प्लव मत्स्य होताहै जो दुर्बुद्धी मनुष्य विनापकीहुई मछलियोंको चुराताहै वह मधुदंश नाम पक्षी होताहै ९५ जो मनुष्य फल मूल और अपूपोंको चुराताहै वह पिपी-लिकाका जन्म पाताहै जो मनुष्य निष्पाव को चुराता है वह हलगोलक नाम कीट होताहै ९६ जो मनुष्य खीरको चुराताहै वह तीतरकी योनि पाताहै बड़ी

आदिका चुरानेवाला दुष्ट उलूकपक्षी होताहै ९७जो दुर्बुद्धी मनुष्य लोहेको चुराताहै वह काक उत्पन्न होता है कांसे के चुराने से हारीतनाम पक्षी होता है ९८ चांदी के पात्र के चुराने से कबूतर होता है सुवर्णपात्र के चुराने से कृमियोनि में उत्पन्न होताहै ९९ श्वेत रेशमीवस्त्र के चुराने से गिरगिट की योनिको पाता है कौशिक वस्त्र अर्थात् एक प्रकार के रेशमीवस्त्र के चुराने से भेड़के जन्म को पाताहै १०० अंशुक वस्त्रके चुराने से तोते की योनि पाताहै दुकूलवस्त्र के चुराने से हंसपक्षी होता है १०१ कपास के चुराने से क्रौंचनाम पक्षी होता है हे भरतबंशी जो मनुष्य रेशमी वा ऊनी अथवा सनके बने हुये वस्त्र को चुराता है वह शशानाम पशु होता है हरतालआदि धातुओं के चुराने से मोरपक्षी होताहै १०२ । १०३ लालवस्त्रों के चुराने से जीवजीवक होता है और लोभ से चन्दनआदि सुगन्धित वस्तुओं को चुराकर १०४ छछूँदरका जन्मपाकर पन्द्रह बर्ष जीताहै १०५ तब पाप नष्ट होनेपर मनुष्य का जन्म पाता है दूधके चुराने से बलाकपक्षी होताहै १०६ हे राजा जो लोभीमनुष्य अज्ञान से तेलको चुराता है वह तेलपायी नामपक्षी होताहै १०७ शस्त्रधारी नीचमनुष्य इच्छावान् होकर वा शत्रुहोकर जो निश्शस्त्र मनुष्य को मारताहै वह गधेकी योनिको पाताहै १०८ दशबर्षतक जीताहै और शस्त्रसेही माराजाता है फिर मृगयोनि में उत्पन्नहोकर सदैव भयभीत और ब्याकुल चित्त रहताहै १०९ फिर वह मृगभी बर्षदिनके पीछे शस्त्रसेही माराजाता है फिर मरकर मत्स्यका जन्मलेता है वह भी जालकेद्वारा चौथेमहीने में माराजाताहै ११० फिर वह मांसभक्षी पशु उत्पन्न होताहै दशवर्ष मांसभक्षी और पांचबर्ष चीता द्वीपिजजन्तु होकर पीछे से अधर्म्म के नाशहोने पर मनुष्यका जन्मपाता है १११।११२ स्त्रीको मारकर यमपुरमें जानेवाला दुर्बुद्धी मनुष्य बहुतसे कष्टों को पाकर फिर बीस जन्मतक कृमियोनियों में पैदाहोताहै ११३ वह बीसवर्ष में कृमियोनियों से छूटकर फिर मनुष्यका जन्म पाताहै ११४ जो मनुष्य भोजन को चुराताहै वह मक्खीका जन्म पाताहै और बहुत महीनों तक मक्खियों के समूहों में रहताहै ११५ फिर पापका नाशहोनेपर मनुष्य शरीर पाताहै धानको चुरानेवाला लोमशदेहको पाताहै ११६ जो मनुष्य शष्प संयुक्त भोजनको चुराताहै वह मूषक योनिको पाताहै ११७ और पापीशरीरवाला होकर सदैव मनुष्यों को काटता है जो मनुष्य घृतको चुराताहै वह काकमद्गुनामपक्षी

होताहै ११८ जो दुर्बुद्धीमनुष्य मछलीके मांसको चुराताहै वह काक होताहै नोनके चुराने से चमरजाति का काकहोता है ११९ जो मनुष्य धरोहर रक्खीहुई को लेलेने की इच्छा करताहै वह मरने के पीछे मछली की योनि में उत्पन्न होताहै १२० फिर मनुष्य होताहै परन्तु मनुष्य शरीरपाकर अल्पायु होताहै १२१ हे भरतवंशी सब मनुष्य पापों को करके तिर्य्यक्योनियों में जन्म लेते हैं वह किसी धर्म में भी अपना विश्वास नहीं करते हैं १२२ जो मनुष्य अपने कियेहुये पापों को सदैव व्रतादिकरके दूरकरते हैं तौभी वह दुःखसुखसेसंयुक्तहोकर रोगी होते हैं १२३ लोभ मोहसे अचेत पापाचारी मनुष्य निस्सन्देह बिना गृहवाले म्लेच्छ उत्पन्न होते हैं १२४ जो मनुष्य जन्मसे लेकर मरणपर्य्यन्त पापोंको त्यागकरते हैं वह नीरोगी स्वरूपवान् पराक्रमी और धन पुत्रवान् उत्पन्न होते हैं १२५ स्त्रियां भी इसीप्रकार पापोंको करके उसके फलको पाती हैं वह स्त्रियां फिरभी उन्हींजीवों की भार्य्या होती हैं १२६ हे निष्पाप मैंने दूसरे के धन चुरानेवालों के सब दोष वर्णन किये यह सब मैंने उनका संक्षेप कहाहै १२७ हे भरतबंशी इनके बिशेष अन्यों के वृत्तांत मेरीकथा योगमें फिर सुनोगे हे महाराज मैंने पूर्व्वसमयमें देवऋषियों के मध्यमें ब्रह्माजी के मुखसे यह सब सुनाहै और बुद्धिके अनुसार उन से प्रश्नभी किया १२८। १२९ मैंनेभी उसको पूरा पूरा ठीक ठीक वर्णन किया हे महाराज तुमभी इसको सुनकर सदैव धर्म में मनको लगाओ १३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेसंसारचक्रनामएकादशाधिकशततमोऽध्यायः १११॥

एकसौबारहका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे निष्पाप ब्राह्मण आपने अधर्मकी गतिकोकहा वह मैंने अच्छीरीति से जाना अब मैं धर्मकी गतिको सुना चाहताहूं १ इसलोकमें पाप कर्मको करके फिर कैसे शुभगतिको पातेहैं अर्थात् कौनसे कर्म के करने से शुभ गतिको प्राप्त करते हैं २ बृहस्पतिजी बोले कि मनके विपरीत गतिकेद्वारा अधर्म के वशीभूत होकर मनुष्य पापकर्मोंको करके नरकको प्राप्त होताहै ३ जो मनुष्य भूलसे अधर्म को करके फिर बड़ा पश्चात्ताप करता है और चित्तकी एकाग्रता से फिर वह पापोंको नहींकरे ४ उसका मन जैसीरीतिसे पापकर्मों की निन्दा करता है उसी २ प्रकार से उसका शरीर पापसे मुक्तहोता है ५ हे राजा जो वह मनुष्य

धर्मवादी वेदपाठी ब्राह्मणों के सम्मुख अपने पापकर्म को वर्णन करताहै तब वह अधर्म से उत्पन्न होनेवाली अपकीर्त्तिसे शीघ्र छूटताहै ६ मनुष्य अपने मनकी सावधानी से जिस २ रीतिसे अधर्मको अच्छीरीति से वर्णन करताहै उसी २ प्रकारसे ऐसे छूटताहै ७ जैसे कि सर्प पहले भोगीहुई पुरानीकांचली से छूटता है सावधान मनुष्य वेदपाठी ब्राह्मणको नानाप्रकारके दानदेकर ८ मनकी एकाग्रता से संयुक्त होकर शुभगतिको प्राप्त होताहै हे युधिष्ठिर अब मैं ऐसे बड़ेदानों का वर्णन करताहूं जिसको मनुष्य देकर अयोग्य कर्मोंकोभीकरके धर्मसेसंयुक्त होताहै ९ सबदानों में अन्नदानही श्रेष्ठ कहा है मृदुलस्वभाव धर्म्म के इच्छावान् मनुष्य को प्रथम अन्नदान करना उचितहै १० अन्न मनुष्यों की तृप्तिको करता है और उसी से जीवमात्र उत्पन्नहोते हैं यह सब सृष्टिभी अन्नही में नियतहै इसी हेतुसे अन्नकी प्रशंसा कीजाती है ११ देवऋषि पितृ और मनुष्य यह सब अन्नही की प्रशंसा करते हैं कौशिकऋषि अन्नही के दानसे स्वर्गको भोगते हैं १२ न्यायसे पैदाकियाहुआ उत्तम अन्न ब्राह्मणोंको देना योग्यहै अत्यन्त प्रसन्नात्मा मनुष्यको वेदपाठ और जप अच्छीरीति से करना योग्यहै १३ चित्तकी प्रसन्नता से जिसके दियेहुये अन्नसे हजारोंमनुष्य भोजनकरते हैं वह तिर्य्यक् गतिवालों की गतिको कभी नहीं पाताहै १४ हे नरोत्तम मनुष्यों में सदैव कर्मकर्त्ता मनुष्य दशहजार ब्राह्मणोंको भोजनकराके अधर्म्म से निवृत्त होताहै १५ वेदको मुख्य जाननेवाला ब्राह्मण भिक्षाके अन्नकोलाकर वेदपाठ वा जपमें प्रवृत्तवाले ब्राह्मण के अर्थ देकर इसलोकमें सुखपूर्व्वक वृद्धिको पाताहै १६ जो नियमवान् अच्छा सावधान क्षत्रिय ब्राह्मणोंके धनोंको नाश न करताहुआ न्यायसे उनकी पूरीरक्षा करके बलसे प्राप्तहुये अन्नको उन ब्राह्मणों के अर्थ दानकरताहै जोकि वेदविद्या में प्रवीण और महात्माहैं हे धर्मात्मा पांडव वह उस कर्म्म से अपने बड़े २ पाप कर्मोंको भी नाशकरताहै १७ । १८ जो वैश्य अपने प्राप्तहुये खेती के भागमें से राजाके षष्ठांशको देकर बाकीको ब्राह्मणों के अर्थ देताहै वह पापसे अत्यन्त छूट जाताहै १९ जो शूद्र अपने प्राण संदेहको पाकर कठिन परिश्रमसे पैदा कियेहुये अन्नको ब्राह्मणोंके अर्थ दानकरताहै वह पापों से मुक्त होता है २० जो हिंसा न करनेवाला मनुष्य अपने पराक्रम से अन्नको इकट्ठाकरके वेदपाठी ब्राह्मणों को दानकरताहै वह कठिन आपत्तियों को नहीं देखताहै २१ प्रसन्नतासेयुक्त मनुष्य

न्यायसे उपार्जित कियेहुये अन्नको वेदविद्यामें वृद्ध ब्राह्मणोंको दानकरके पाप से निवृत्त होताहै २२ इसलोकमें अन्नही बलका करनेवालाहै इसीहेतुसे उसको दानकरके पराक्रमी होनाचाहिये और सत्पुरुषों के संन्मार्ग में चलने से सब पापों से निवृत्त होताहै २३ दानकरनेवालों ने जो मार्गबनायाहै उसीमार्ग्ग से ज्ञानी लोग चलते हैं वह दानी प्राणों के देनेवाले हैं उन्हींसे सनातन धर्म जारी हैं २४ न्याय से प्राप्तहोनेवाला अन्न मनुष्य को सदैव ब्राह्मणों के अर्थ देना योग्य है क्योंकि अन्नही परमगति है २५ मनुष्य अन्नकेहीं दानसे भयके स्थान में भय नहीं पाताहै इसी से न्यायसे उपार्जित अन्नदान करना उचितहै २६ गृहस्थी मनुष्य सदैव प्रथम ब्राह्मणोंको अन्नदेकर पीछे अपने भोजनका बिचारकरे और बिना अन्नदान किये दिनको नहीं ब्यतीतकरे २७ हे राजा न्याय जाननेवाला मनुष्य वेद इतिहास और धर्मों के ज्ञाता एकहजार ब्राह्मणों के भोजन कराने से २८ घोरनरक को नहीं जाताहै और नानाशरीरकी योनियोंको नहीं भुगतताहै परलोकमें भी सब मनोरथों समेत सुखको भोगता है २९ निश्चयकरके इसरीति के कर्म्म में प्रवृत्त मनुष्य बिना तपस्या के भी क्रीड़ाको करताहै और स्वरूपयुक्त शुभ कीर्त्तिमान्होकर धनवान् होताहै ३० हे भरतवंशी यह अन्नदानका सब फल मैंने तुमसे कहा यही सब धर्म और दानोंका मूलहै ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेसंसारचक्रेद्वादशाधिकशततमोऽध्यायः ११२ ॥

एकसौतेरहका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि अहिंसा, वैदिककर्म, ध्यान, जितेन्द्रिय होना, तप, गुरुकी सेवा इन सबमें से कौनसागुण मनुष्यका अधिक कल्याण करनेवालाहै १ बृहस्पतिजी ने कहा हे भरतर्षभ यह सब धर्मरूपहैं और सब भिन्न २ रीतिवाले हैं अब तुम इन छओं को टीकासमेत पृथक् २ सुनो २ प्रथम मैं जीवके उत्तम रूपवाले कल्याणको वर्णन करताहूं जो मनुष्य अहिंसा सम्बन्धी धर्मका आचरण करता है ३ वह पुरुष काम क्रोध लोभ इन तीनों दोषोंको दूसरे जीवों में छोड़कर और अपने से उन तीनोंको अच्छेप्रकार विजयकरके सिद्धीको पाताहै ४ जो मनुष्य अपने सुखकी इच्छा से अबध्य जीवको दण्ड आदिसे मारताहै वह परलोक में सुखी नहीं होताहै ५ जो पुरुष दण्ड को त्यागकर क्रोधका जीतनेवाला होकर

सब जीवमात्रों में आत्मभावको मानताहै वह परलोकमें सुखसे वृद्धि पाताहै ६ चिह्नसे रहित परमात्मा के स्थानके चाहनेवाले देवता उस ब्रह्मज्ञानी के मार्ग में मोहको पाते हैं जोकि सब जीवमात्रका आत्मारूप और सब जीवोंको अपनाही आत्मा देखनेवालाहै ऐसा मनुष्य व्यापक होकर मुक्तिको पाताहै ७ मनुष्यको उचितहै कि जो अपना अप्रियहै उसको भी दूसरेके लिये नहीं विचार करे यह धर्म खुलाहुआहै और दूसरा धर्म इच्छासे जारी होताहै ८ मनुष्य प्रिय अप्रिय सुखदुःख दानकरना निषेधकरना इन सब बातों में आत्माकेसमान होनेसे प्रतिष्ठाको पाताहै ९ जैसे कि एक मनुष्य दूसरोंका उपकार करताहै उसीप्रकार वह दूसरे सब मनुष्य भी उसके साथ उपकार करनेवाले होते हैं इस जीवलोकमें उन मनुष्यों में वही समानताहै जैसे कि धर्मका उपदेशहुआहै उसको बड़ीसावधानी से काममें लावे १० वैशम्पायन बोले कि यह कहकर देवताओं के गुरू बृहस्पतिजी उस धर्म्मराज युधिष्ठिरसे यह कहकर हमारे देखतेहुये स्वर्गको चढ़े ११ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेसंसारचक्रसमाप्तंत्रयोदशाधिकशततमोऽध्यायः११३॥

एकसौचौदहका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी बोले कि इसके अनन्तर वक्ताओंमेंश्रेष्ठ महातेजस्वी राजायुधिष्ठिरने बाणशय्यापर वर्त्तमान अपने पितामह भीष्मजीसे फिर पूछा कि १ हे बड़े बुद्धिमान् पितामह ऋषि ब्राह्मण और देवतालोग वेदोंके प्रमाण देखने से उस धर्मकी प्रशंसा करते हैं जोकि अहिंसारूप लक्षण रखनेवालाहै २ हे राजाओं में बड़े साधु मनुष्य मन बाणी और कर्मसे हिंसाकोकरके फिर कैसे दुःखोंसे छूटता है ३ भीष्मजी बोले कि हे शत्रुओं के नाशकरनेवाले युधिष्ठिर ब्रह्मबादी लोग मन बाणी कर्म और भोजन इन चारोंप्रकारोंसे चारप्रकारकी हिंसा बर्णन करतेहैं वह हिंसा एक २ अंगसेही सब नहीं नाशहोसक्ती है अर्थात् जब भक्षण नहींकरे तब बाकीबचीहुई तीनोंप्रकारकी हिंसा नहीं छूटसक्ती और जब संकल्प नहींकरे वा अपने भक्षण करने को निषेधकरे अथवा हिंसा न करे तबभी सब नहीं छूट सक्ती ४ जैसे कि सब पशुजीव तीनपांवसे खड़े नहींहोसक्ते उसीप्रकार की यह हिंसाहै जोकि तीनहेतुसे बर्णन कीजाती है ५ जैसे कि हाथीके पैरके चिह्नमें अन्य सबजीवोंके चरण अन्तर्गत होजाते हैं उसीप्रकार हिंसामें सब धर्म्म गुप्तहैं ६ पूर्व

समयमें सबलोकों में हिंसा धर्महीसे उपदेश कीगई है यह जीव कर्म बाणी और मनसे भी अपराधी होताहै ७ जो मनुष्य प्रथम तो मनकरके फिर बाणी और कर्मसे भी तीनों प्रकारकी हिंसाको त्यागकरके मांसको नहीं खाताहै उसका उद्धार होताहै ८ तीनप्रकारका कारण ब्रह्मवादी पुरुष वर्णनकरते हैं और उसीका वह उपदेश भी करते हैं उन मन बाणी और भोजनमें सब दोष नियतहैं ९ इसी हेतुसे तपयुक्त बुद्धिमान् मनुष्य मांसको नहीं खाते हैं अब मांसखानेके दोषोंको तुम मुझसे सुनो १० जो अचेत असावधान मनुष्य उस मांसको जोकि पुत्र के मांसकी समानहै खाताहै वह पुरुष नीच कहाजाताहै ११ जैसे कि माता पिताके सम्भोगमें पुत्रका जन्म होताहै उसीप्रकार हिंसाकरके अस्वतन्त्र मनुष्य पापयोनियोंमें अनेक जन्मोंको लेताहै १२ शास्त्रोंसे निश्चयहुआहै कि जैसे जिह्वाकी रसग्राहकता स्वादुसे विदितहोती है उसीप्रकार प्रीतिभी स्वादुके लेनेसे उत्पन्नहोती है १३ जैसे कि संस्कार से रहित और युक्त कच्चीपकी नोनकी और अलोनी भोजन पानादि करनेकी वस्तु तैयार होतीहैं १४ उसीप्रकार चित्तभी उनमें बंधन कियाजाताहै अल्पबुद्धी मांसभक्षी मनुष्य भेरी मृदङ्ग और उत्तम वीणाओं के शब्दोंको किसीप्रकारसे भी सेवन नहीं करसक्ते १५ जो निष्कामहोकर फल के चाहनेवाले मनुष्य हैं वह उस रसकी प्रशंसा करते हैं जोकि अच्छे लोगोंसे स्मरण पूर्वक संकल्पसे त्यागनहीं कियागयाहै १६ मांसकी जो प्रशंसाहै वह दोषरूप कर्म फलसे संयुक्तहै बहुतसे साधूलोग जीवनको त्यागकरके अपने मांसों से दूसरों के मांसोंकी वृद्धि करतेहुये ऐसे स्वर्गको गये १७ जैसे कि राजा शिविगये तात्पर्य्य यह है कि दूसरेका मांस खानेसे अधोगतिको पाते हैं १८ हेमहाराज इसप्रकारसे यह अहिंसा जोकि चार हेतुओंसे युक्त और सब धर्मोंसे प्राप्तहै उसको मैंने तुमसे वर्णन किया १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेमांसवर्जनकथनेचतुर्दशाधिकशततमोऽध्यायः ११४॥

एकसौपन्द्रहका अध्याय ॥

युधिष्ठिरने पूछा कि आपने बहुधा कहा कि अहिंसा धर्म उत्तमहै और श्राद्धों में पितरोंको मांसको चाहनेवाले कहे १ आपने पूर्व में श्राद्धकी विधि अनेकप्रकारके मांसोंसे वर्णनकी सो हे पितामह बिना हिंसाकिये कहां से मांस आसक्ता

है इसरीति में यह बात विरुद्धहोती है २ मांसके त्यागरूप धर्म्म में हमको सन्देह होगयाहै अब यह बताइये कि मांस खाने में और न खाने में कौन २ सा गुण है मारकर लानेवाले या दूसरेसे लायेहुये मांसके खानेवाले को कैसा२ दोष होताहै जो मनुष्य दूसरेके लिये मारे अथवा मोल लेकर भोजनकरे उसको क्या२ दोष होताहै हे निष्पाप यह पुरुष आयुर्द्दाको कैसे पाताहै और बल पराक्रम अंगोंकी योग्यता और लक्षण को कैसे प्राप्तकरताहै इसको आप मूलसमेत वर्णन करिये क्योंकि मैं इस सनातनधर्म्मको निश्चयकेसाथ करनाचाहताहूं ३।६ भीष्मजी बोले कि हे कुरुनन्दन राजायुधिष्ठिर मांसके त्यागन में जो धर्म्म है और जैसी उसकी उत्तम विधिहै उसको तुम मूलसमेत मुझसे सुनो ७ सुरूपता अंगोंकी अव्यंगता आयु बुद्धि सत्त्व बल स्मृति और साधुपनेको प्राप्तकरनेके इच्छावान् महात्मालोगों से हिंसाकरना त्यागनेके योग्यहै ८ हे कुरुनन्दन युधिष्ठिर इसविषयमें ऋषियोंके अनेकप्रकारके शास्त्र विनोदहुये उनसबका जो सिद्धान्तहुआ उसको सुनो ९ हे युधिष्ठिर जो व्रतमें सावधान मनुष्य हरमहीनेमें अश्वमेधयज्ञसे पूजनकरे वह और जो मांस मद्यको त्याग करताहै यह दोनों समानहैं १० हे राजा बुद्धिमान् बाल-खिल्यऋषि सप्तऋषि और मरीच्यादिक नामीऋषि मांसके त्यागने की प्रशंसा करते हैं ११ जो मनुष्य मांसको नहीं खाताहै न किसीको मारता न प्रहार करता है वह सब जीवमात्रों का मित्रहै यह स्वायंभू मनुनाम ऋषिने कहाहै १२ मांस को त्यागनेवाला सब जीवोंका मित्र और बिश्वास पात्रहै वह साधुओंसे सदैव अंगीकृतहै १३ धर्मात्मा नारदजीने कहाहै कि जो मनुष्य दूसरेके मांससे अपने मांसको बढ़ाना चाहताहै वह निश्चय पीड़ा पाताहै १४ बृहस्पतिजीने भी ऐसा कहाहै कि मांस और मद्यके त्यागनेसे दानी यज्ञ करनेवाला और तपस्वी होता है १५ जो मनुष्य हजार बर्षतक प्रतिमास अश्वमेध यज्ञको करे वह और जो मांसका नहीं खानेवालाहै उन दोनों को मैं समानही जानताहूं १६ मांस और मद्यके त्यागनेसे सदैव यज्ञोंके द्वारा पूजन करनेवालाहै और सदैव दान करने वाला होकर तपस्वी होता है १७ सम्पूर्ण वेद और उससे बिदित होनेवाले यज्ञ मनुष्यको हिंसामें प्रवृत्त नहीं करते हैं किन्तु त्याज्य वस्तुओं की संख्यामें मांस के भी त्यागको बतलाते हैं जो मनुष्य मांसोंको खाकर पीछेसे त्यागभी कर दे-ताहै १८ और सब जीवमात्रोंको निर्भयताका देनेवालाहै इस उत्तम व्रतके करने

को मांसके स्वादके जाननेकी दशामें उसका त्यागना कठिनहै १९ जो बुद्धिमान् मनुष्य सब जीवमात्रों को निर्भयतारूपी दक्षिणा देताहै वह निस्सन्देह इस लोकमें प्राणोंका दाताहै २० इस रीतिसे ज्ञानीलोग उत्तम धर्मकी प्रशंसा करते हैं जैसे कि अपने प्राणप्यारे हैं उसी प्रकार जीवोंके भी प्रियहैं २१ पवित्रात्मा बुद्धिमान् मनुष्यों को सब जीवों में आत्माके समानभाव होने से यह मानना योग्यहै कि मृत्युसे उनलोगोंको भी भयहै जो कि बड़े बुद्धिमान् और ज्ञानी हैं २२ फिर मांससे जीवन करनेवाले पापियोंके हाथ से शीघ्र मरनेवाले उनजीवों को क्यों न होगा जो कि जीवनके चाहनेवाले नीरोग और पापसे रहितहैं २३ हे महाराज इसी हेतुसे मांसके त्याग धर्म्म को स्वर्ग और सुखका उत्तम स्थान जानो २४ अहिंसा धर्म उत्तमहै अहिंसातप और अहिंसा सत्य उत्तमहै जिससे धर्म जारीहोताहै २५ वह मांसहै वह घास काष्ठ और पत्थर मट्टीसेभी नहीं उत्पन्नहोताहै किन्तु मारनेसेही उत्पन्न होताहै इसी कारण उसके खाने में दोषहै २६ सत्यता और आर्जवको प्रिय माननेवाले और स्वाहा स्वधा अमृत के भोजन करनेवाले हैं और कुटिलता वा मिथ्याभाषण में नियत मांसभक्षियों को राक्षस जानो २७ हे राजा मांसके त्यागनेवाले इननीचेके स्थानोंपर भी अन्यजीवोंसे भयको नहीं पाते हैं भयका उत्पन्न करनेवाला वा दुर्गम्य घन, रात्रि, दिन, संध्या, चबूतरा आदि सभासन्नद्ध शस्त्र और मृग सर्प्प इत्यादि २८। २९ सदैव सब जीवोंका रक्षास्थान सब जीवोंमें विश्वसित सृष्टिमें भय आदिका उत्पन्न न करनेवाला मनुष्य आपभी कहीं भयभीत नहीं होताहै ३० जो मांसभक्षी न होगा तो मारनेवालाभी न होगा इसी हेतुसे मारनेवाला मनुष्य मांस खानेवालेकेही निमित्त किसीको मारताहै ३१ यह अभक्ष्यहै ऐसा संकल्प करनेकेद्वारा हिंसासे निवृत्त होता है इसी हेतु से मृगादिकों की हिंसा मांस खानेवालोंकेही निमित्त कीजाती है ३२ हे महातेजस्वी जो कि यह मांस हिंसकलोगोंकी आयुको भक्षण करताहै इसी हेतुसे ऐश्वर्य्यका चाहनेवाला पुरुष हिंसाको त्यागकरे ३३ जीवों के मारनेवाले भयकारी मनुष्य अपने रक्षकको नहीं पाते हैं जैसे कि सर्प और सिंह जीवों के भयके करनेवाले हैं ऐसेही वहभी हैं ३४ लोभ मोहके कारण वा पापियों के संग से अथवा अपने बलपराक्रम के निमित्त मनुष्योंकी अधर्मों में प्रीति होती है ३५ जो मनुष्य दूसरों के मांस से अपने मांसको बढ़ाना चाहताहै

वह जहां जहां जन्मलेताहै वहां २ भयके साथही निवास करताहै ३६ नियमी महर्षियोंने मांस के न खाने को धन शुभकीर्त्ति अवस्था स्वर्ग और बड़े २ कल्याणों का देनेवाला कहा है ३७ हे कुन्तीनन्दन निश्चय करके पूर्व्व समय में मैंने मांसखाने के दोषोंको मार्कण्डेय ऋषिके मुखसे वर्णन कियेहुये सुने हैं ३८ जो जीवन की इच्छा करनेवाला मनुष्य जीवों को मार उनके मांसको खाताहै चाहै वह दूसरेसे वा अपने हाथसे मारेहोयँ तौभी वह वैसाही है जैसा कि मारने वाला होताहै ३९ मांसका मोल लेनेवाला अपने धनके द्वारा हिंसा करताहै और खानेवाला स्वाद के द्वारा और मारनेवाला पकड़ने के द्वारा हिंसा करताहै यह तीन प्रकारकी हिंसाहै ४० जो मनुष्य मांस नहीं खाताहै और अपने चित्त के दोषसे हिंसाको उचित वर्णन करताहै और मारना योग्यहै ऐसा कहताहै वहभी दोषी होताहै ४१ इसलोकमें जीवों के ऊपर दया करनेवाला जो मनुष्य मांसको नहीं खाताहै वह सदैव सब जीवोंका मित्रहोकर आयुर्द्दायुक्त और नीरोग होता है ४२ मांस के त्यागने में जो धर्म है वह सुवर्णदान गोदान भूमिदान आदि सब दानों से श्रेष्ठहै यह हमने श्रवण कियाहै जिस मांसको प्रदक्षिण नहीं किया अथवा अविधि से यज्ञके बिना तैयार कियाहै ४३ उसको नहीं खाय जो पुरुष उसमांसको खाताहै वह निस्सन्देह नरकको जाताहै ४४ जो मांस कि यज्ञके निमित्त बनायागयाहै और अभिमंत्रित करके जलसे छिड़कागयाहै और ब्राह्मण की तृप्तिकी इच्छासे संस्कार कियागयाहै उसको इसलोकमें थोड़े दोषवाला जानना चाहिये इसके बिपरीत होनेपर दोषयुक्त होताहै ४५ जो नीच मनुष्य मांस खानेवालों के निमित्त जीवोंको मारताहै उस स्थानमें मारनेहीवाला बड़ा दोषभागी है खानेवाला नहीं दोषभागी है ४६ जो मांसके लोभी वेदयज्ञों के न जाननेवाले साधारण लोग देवपूजन और यज्ञों के मिषकरके जीवों को मारते हैं वह अवश्यही नरकगामी हैं ४७ जो मनुष्य मांसखाकर पीछे सेभी त्यागीहोता है उसका भी बहुत बड़ा धर्म्म है इसहेतुसे कि वह पापसे अत्यन्त हाथको खैंच लेताहै ४८ लानेवाला, पशुके मारनेकी आज्ञा देनेवाला मारनेवाला मोल बेच करनेवाला अथवा युक्तिसे पकानेवाला खानेवाला यह सब मांसके भक्षिही हैं ४९ और दूसरा भी वह प्रमाण कहताहूं जोकि ईश्वरका रचाहुआ प्राचीन ऋषियों का कियाहुआ और वेदों में पूरे प्रमाणोंसमेत नियतहै ५० हे राजा उत्तम प्रवृत्ति

लक्षणवाला धर्म सन्तान की इच्छा रखनेवाले पुरुषों ने जिस को दृष्टान्तसहित वर्णन कियाहै और जिस रीतिसे कहागयाहै वह धर्म मोक्ष जाननेवालों का नहीं है ५१ पितरोंके श्राद्धों में वेदोक्त प्रमाणसे जो पवित्र हव्य मंत्रकेद्वारा शुद्ध और प्रोक्षण कियागयाहै ५२ इसके बिपरीत जो मांसहै वह खानेके योग्य नहीं है यह मनुजीका कहाहुआहै हे भरतर्षभ वह स्वर्ग और शुभकीर्त्तिका न देनेवाला भोजन राक्षसके समानहै ५३ हे राजा मनुष्यको उचितहै कि बुद्धिके बिपरीत मांस को न खाय जो मांस कि बुद्धिके बिपरीत और यज्ञके बिनाहै और प्रोक्षण नहीं किया गयाहै उसको नहीं खाय ५४ जो पुरुष अपने को आपत्तियों से अत्यन्त छुटानाचाहै वह इसलोकमें जीवमात्रके सब मांसोंका त्यागकरे ५५ सुना जाता है कि पूर्वसमय में मनुष्योंका पशु पुरोडास आदिकी सूरतकाथा उसी के द्वारा यज्ञकी इच्छा करनेवाले पवित्र पुरुषों ने यज्ञ कियाथा ५६ हे प्रभु चंदेरी के बसु नाम राजाने ऋषियों से पूछाथा कि यह मांस अभक्ष्यहै वा भक्ष्यहै यह कहतेही वह आकाशसे गिरा और इसीबात को दुबारा कहनेसे पातालको गया ५७ पर संसारकी वृद्धि चाहनेवाले महात्मा अगस्त्यऋषिने अपने तपके द्वारा उन सब जंगली मृगोंको जिनके अधिष्ठाता सब देवताहैं प्रोक्षण कियाहै ५८।५९ इस कारणसे देवपितृसंबंधी कर्म नष्ट नहीं होते हैं न्याय के अनुसार मांस से तृप्तहोकर पितृ अत्यन्त प्रसन्नहोते हैं अर्थात् मृगोंको अग्निके समीप खड़ाकरके छोड़ देते हैं इसी हेतुसे यज्ञकरनेमें भी उनका मारना नहीं होताहै ६० हे निष्पाप राजा युधिष्ठिर मेरे कहेहुये इस वचनको सुनो कि मांस खानेके त्यागमें सब सुखहैं ६१ जो मनुष्य पूरे हजार वर्षतक कठिन तपस्याको करे और जो मांसको त्यागे यह दोनों मेरी बुद्धिसे समानहैं ६२ हे राजा मुख्यकरके पूरे कार्त्तिक महीनेभर अथवा शुक्लपक्ष में मद्य और मांसको त्यागदे क्योंकि इस महीने में धर्म्म कियाजाता है ६३ जो मनुष्य वर्षाऋतुके चारोंमहीनों में मांसको त्यागदे वह नीचे लिखेहुये चार कल्याणों को पाताहै शुभकीर्ति आयु पराक्रम प्रसिद्धी ६४ अथवा केवल एकमहीने तक सब मांसों के त्यागने से सब दुःखोंको दूरकरके नीरोगतापूर्वक सुखसे जीवन करताहै ६५ जो पुरुष महीनेभर या पक्षभर भी मांसोंको त्यागदेते हैं उन हिंसा त्यागकरनेवालोंका ब्रह्मलोकमें निवासहोना कहते हैं ६६ हे कुन्तीनन्दन सब जीवोंका कार्त्तिक महीनेभर वा उसके शुक्लपक्ष में मांसकाखाना इन

आगे लिखेहुये परमात्मा परायण बाह्याभ्यन्तरसे शुद्ध राजालोगोंकरके निषेध कियागयाहै ६७ नाभाग, अम्बरीष, महात्मागय, आयु, अनरण्य, दिलीप, रघु, पुरु ६८ कार्त्तवीर्य्य, अनिरुद्ध, नहुष, ययाति, नृग, बिष्वक्सेन, शशिबिन्दु ६६ युवनाश्व, शिवि, औशीनर, मुचुकुन्द, मांधाता, हरिश्चन्द्र, ७० इत्यादि सत्यबोलो मिथ्यामतबोलो सत्यताका धर्म प्राचीनहै राजाहरिश्चंद्र सत्यताके द्वारा चन्द्रमाके समान स्वर्ग में बिचरताहै ७१ हे राजेन्द्र श्येनचित्र, सोमक, वृक, रैवत, रन्तिदेव, बसु सृंजय ७२ इनकेसिवाय कृप, भरत, दुष्यन्त, करूष, राम, अलर्क, नल, बिरूपाश्व, निमि, बुद्धिमान् जनक ७३ शिन, पृथु, बीरसेन, इक्ष्वाकु, शंभु, श्वेत, सगर ७४ अज, धुन्धु, सुबाहु, हर्य्यश्व, क्षुप ७५ पूर्व्वसमय में इन सब समेत अन्य २ राजाओंने कार्त्तिकमहीने में मांसको नहीं खाया इसी से उन सबने स्वर्ग को पाया ७६ हजारोंअप्सरा और गंधर्वों से व्याप्त वह राजालोग ब्रह्मलोक में नियतहुये ७७ इसीप्रकार जो महात्मालोग अहिंसाधर्म के लक्षण रखनेवाले होकर इस उत्तमधर्मका आचरण करते हैं वह स्वर्ग में निवास करते हैं ७८ इसलोक में जो धर्म्म के अभ्यासी मनुष्य जन्मसे लेकर मरणपर्य्यन्त सदैव मद्य और मांस को त्यागकरते हैं वह सब मुनिरूप कहेजाते हैं ७६ जो मनुष्य इस मांस त्याग नाम धर्मका अभ्यास करेगा वा दूसरेको सुनावेगा वह चाहै कैसा भी दुराचारी होय कभी नरकको नहीं जायगा ८० हे राजा जो मनुष्य इस पवित्र और ऋषियों से पूजित अमांसभक्षण विधिको सदैव पढ़कर काममें लाताहै ८१ वह सब पापों से छूटकर सब अभीष्ट मनोरथों की वृद्धि पाताहै और अपने सजातियों में भी निस्सन्देह प्रतिष्ठापाताहै ८२ आपत्तियों में फँसाहुआ आपत्ति से छूटे बँधाहुआ अपने बंधनोंसे छूटे रोगी रोगसे निवृत्तहोय दुःखी दुःखसे छूटे ८३ हे कौरव्य वह मनुष्य तिर्य्यक् योनियों को नहीं पाताहै और स्वरूपवान् धनवान् होकर बड़ी शुभकीर्त्ति को पाताहै ८४ हे राजा प्रवृत्ति और निवृत्ति में मांसके त्यागने के विषय में यह वेदोक्त विधान तुझसे कहा ८५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेमांसभक्षणनिषेधेपंचदशाधिकशततमोऽध्यायः ११५

एकसौसोलहका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले लोकमें यह निर्दयी मांसके लोभी मनुष्य बड़े राक्षसोंके समूहों

के समान नानाप्रकारके भक्ष्य पदार्थों को छोड़कर १ जैसे मांसकोखाते हैं और बहुत प्रकारके अपूप और नानाशाक खांडवनाम चूर्ण और रसयोगवाली भोजनकी वस्तुओं को नहीं चाहते हैं इस स्थानपर मेरी बुद्धि इस बिषयमें मोहको पाती है यद्यपि यह मैंभी जानताहूं कि मांससे अधिक कोई स्वादुयुक्त पदार्थ नहीं है २।३ हे प्रभु इसी हेतुसे मांस न खाने में जो गुणहैं उसको सुनना चाहताहूं और हे पुरुषोत्तम खाने मेंभी जो दोषहैं उनकोभी सुनना चाहताहूं ४ हे धर्मज्ञ आप इस सब वृत्तान्त को मूलसमेत ठीक २ बर्णन कीजिये कि भोजन करने के योग्य और न भोजन करने के योग्य कौन२ वस्तुहैं ५ यहवस्तु यथातथ्य जैसी हैं अथवा मांसादि भक्षण जैसाहै और उनके त्याग में जो२ गुणहैं और मांस खाने वालेकोभी जो२ दोषहोते हैं हे पितामह उन सबको मुझसे वर्णनकीजिये ६ भीष्मजी बोले कि हे महाबाहो यह इसीप्रकारकाहै जैसा कि तुम कहतेहो हे भरतवंशी इसपृथ्वीपर मांससेअधिक स्वादिष्टवस्तु और कोई नहीं है ७ घायल मनुष्य को निर्बल दुःखी मनुष्यको शरीरसे दुःखी और स्त्रीके भोगादिमें प्रवृत्तचित्तवालों को मार्ग चलनेवालोंको और अनेकप्रकारके कष्टित मनुष्योंको हितकारी मांससे अधिक कोई वस्तु नहीं है ८ यह मांस शीघ्रही इन्द्रियोंके बलको बढ़ाताहै और वही उत्तम मांस भोग की सामर्थ्य को वृद्धि करताहै हे शत्रुसंतापी मांससे अधिक कोई भोजनकी वस्तु नहीं है ९ हे कौरवनन्दन अब उस मांसके त्याग करनेमें जो मनुष्योंको गुण होते हैं वह भी मुझसे सुनो १० जो मनुष्य अपने मांस को दूसरे के मांससे बढ़ाना चाहताहै उससे नीच कोई भी नहीं है और निर्दयभी उससे बढ़कर कोई नहीं है ११ इस संसारमें प्राणों से अधिक कोई प्यारा नहीं है इसी हेतुसे मनुष्यको उचितहै कि दूसरेके ऊपर वैसीही दयाकरे जैसी कि अपने शरीर और प्राणोंपर करताहै १२ हे तात इसलोकमें वीर्य्य से मांस की उत्पत्ति है उसके खानेमें बड़ा दोषहै और त्यागनेमें महापुण्य कहाजाताहै १३ इस संसार में वेदोक्त विधिसे मांसके खाने में दोष नहीं होताहै क्योंकि यह श्रुतीभी सुनी जाती है कि (यज्ञार्थे पशवः सृष्टाः) अर्थात् पशु यज्ञकेही अर्थ उत्पन्न कियेगये हैं १४ इसके बिपरीत कर्म करनेवालों का आचरण राक्षस बुद्धिवाला कहा जाताहै और क्षत्रियोंकी बुद्धि जो वेदमें देखीगई है उसको भी मुझसे सुनो १५ कि वह क्षत्रिय पराक्रमसे प्राप्त कियेहुये मांसको खाताहै इसीसे दोषका भागी नहीं

होताहै हे राजा पूर्व्व समय में वह सब जंगली पशु जिनके देवता अधिष्ठाताहैं अगस्त्यऋषि करके प्रोक्षण कियेगये हैं १६ इसीसे शिकारको योग्य कहते हैं अर्थात् जब यजमान पशुको प्रोक्षण करके छोड़दे तब राजाको शिकारसे मारना न्यायके अनुसारहै क्योंकि उसके जीवते रहनेसे उसके देवताकी तृप्तिनहीं होती है प्रत्यक्षहै कि अपने शरीरको मृत्युके भयसे पृथक् करके शिकार करना नहीं है १७ मनुष्य पशुके साथ समानताको पाकर जीवधारीको मारते हैं हे भरतवंशी इसी कारणसे सब राजर्षि मृगयाको जाते हैं १८ वह पाप के भागी नहीं होते हैं और न उसको दोष जानते हैं अब प्रवृत्ति मार्गको कहकर निवृत्ति मार्ग को वर्णन करते हैं हे कौरवनन्दन इसलोक और परलोक में इसके सिवाय कोई कर्म नहींहै १६ जो सब जीवोंपर दयाकरी जाय क्योंकि इस संसारमें दयावान् पुरुषको कहीं भी भयनहीं होताहै २० दयावान् तपस्वियों के सबसे उत्तम यह लोकहैं २१ और धर्मज्ञ लोगोंने जानाहै कि यह धर्म अहिंसा लक्षणवालाहै जो अहिंसात्मक कर्म्म है उसको ज्ञानी मनुष्यकरे देवता पितरोंके यज्ञों में केवल प्रोक्षण किया हुआही हव्य कहा जाताहै २२ जो दयावान् मनुष्य सब जीवोंको अपनेसे निर्भयता देताहै उसको वह सब जीवभी निर्भयता देते हैं ऐसे अच्छे लोगोंसे सुनाहै २३ जो पुरुष वीरोंकी मर्य्यादसे युद्धमें घायलहोकर पृथ्वीरूपी वीरशय्या पर सोताहुआ रथके चक्रसे दबाहुआहै उस वीरकी रक्षा सब जीवसुगम और कठिन मार्गोंमें करते हैं २४ जो मनुष्य भयके स्थानसे दूसरोंको छुटाताहै वह भयके समयसे छूटताहै और उसको सर्प्प मृग पिशाच और राक्षस आदि कोई भी नहीं मारताहै २५ प्राणदानसे उत्तम न कोई दानहै न होगा यह निश्चयहै कि इसलोकमें आत्मासे प्यारा कोई नहीं है २६ हे भरतवंशी मरना सब जीवमात्रों को बुरा मालूम होताहै मरनेके समय बहुत शीघ्र जीव कम्पायमान होते हैं २७ सब जीव सदैव जन्म गर्भ और जरा आदि दुःखों के कारण इससंसारसागर में घूमते हैं और मरनेसे डरते हैं २८ और गर्भ में वर्तमान होने की दशामें मूत्र प्रस्वेद और विष्ठाके उन जलादि रसों से जोकि तीक्षण दुस्सह खारी और कड़ुवे हैं पकते हैं २६ वहां जन्म लेनेवाले भी अस्वतन्त्र मांसके लोभी भीख मांगतेहुये बारबार पीड़ावान् दिखाई देते हैं ३० कुंभीपाकनाम नरकमें पकते हैं और उन सब योनियों में दबा २ कर मारेहुये बारम्बार घुमाये जाते हैं ३१ सब

पृथ्वीभरमें आत्मासे प्यारा कोई नहीं है इसीहेतुसे सब जीवमात्रों पर दया करने वाला मनुष्य ज्ञानी होताहै ३२ हे राजा जो मनुष्य जन्मभरतक किसी मांसको न खाय वह निस्सन्देह स्वर्ग के उत्तमस्थान को प्राप्त करताहै ३३ जीवन की इच्छा रखनेवाला जो मनुष्य जीवोंके मांसोंको खाताहै वह भी निस्सन्देह उन्हीं जानवरों से भक्षण कियाजाता है ३४ जीव कहताहै कि जो वह मुझको भक्षण करताहै इसीसे मैं भी उसको भक्षण करूंगा हे भरतवंशी मांसके इस मांसभाव होनेको सुनो ३५ मारनेवाला सदैव माराजाताहै उसीप्रकार मांस खानेवालाभी सदैव माराजाताहै हे राजा जैसे दोष लगानेवाला दूषित किया जाताहै उसीप्रकारशत्रुता और विरोधको प्राप्तकरताहै ३६ जो मनुष्य जिस२अंगसे जिस२कर्म को करताहै वह उसी उसी शरीरसे उसके फलको पाताहै ३७ अहिंसा परमधर्म्म है अहिंसा परमदमहै अहिंसा परमदानहै अहिंसा परमतप है ३८ अहिंसा परम यज्ञहै अहिंसाही परमफलहै अहिंसाही परममित्र है अहिंसाही परमश्रुत है ३९ सबयज्ञों में जो दानहै सब तीर्थों में जो स्नानहै सब दानोंका जो फलहै यह सब अहिंसा के फलके समान नहीं है ४० हिंसा न करनेवालेकाही अक्षयतपहै हिंसा न करनेवाला सदैव यज्ञकरताहै हिंसा न करनेवाला मनुष्य सब जीवों के माता पिताके समानहै ४१ हे कौरव्य हिंसा न करनेका यह फलहै यह अहिंसाके गुण हज़ारों बर्षतक भी कहनेमें नहीं आसक्ते हैं ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेअहिंसाफलकथनेषोड़शाधिकशततमोऽध्यायः११६॥

एकसौसत्रहका अध्याय॥

युधिष्ठिरने प्रश्नकिया हे पितामह जो इच्छावान् वा अनिच्छावान् मनुष्य बड़े युद्धमें मारेगये उन सबने किस २ गतिको पाया यह सब आप मुझसे कहने के योग्यहैं १ हे बड़ेज्ञानी घोरयुद्धमें प्राणोंका त्यागना बड़ादुःखदायी है तुमभी प्राणों के त्यागनेको बहुत कठिन जानतेहो २ जो लोग धनी वा निर्धनी उत्तम वा अनुत्तम कुलमें वा शरीरसे जन्मलेते हैं उनके सब कारणोंको आप कहिये क्योंकि आप सर्वज्ञहैं ३ भीष्मजी बोले कि हे राजा धनी वा निर्धनी अच्छे वा बुरे संसार में जन्म लेनेवाले जीव ४ जिस निमित्त मनसे उसमें प्रवृतहैं उस कारणको मुझसे सुनो हे युधिष्ठिर यह तुमने पिछला प्रश्न अच्छा पूछाहै ५ पूर्वसमयमें घू-

मतेहुये ब्रह्मरूप वेदपाठी कृष्ण द्वैपायन ब्यासजी ने मार्ग में शीघ्रतासे दौड़ने वाले कीट नाम जीवको देखा ६ तब उस सर्वजीवों की गति और भाषाओं के जाननेवाले ऋषिने कीटको देखकर यह बचन कहा ७ कि हे कीट तू भयानक रूपवालाहै और शीघ्रता करनेवाला दिखाई देताहै किधरको दौड़ताहै और कहांसे तुझको भयउत्पन्न हुआहै उसको कहौ ८ कीटने कहा कि हे बड़े बुद्धिमान् ऋषि इस छकड़ेके बड़े शब्दको सुनकर मुझकोभयहै और वह आनपहुँचाहै यह कठोर शब्द ९ सुनाजाताहै यह मुझको कहीं मार न डाले इसहेतुसे हटताहूं हे प्रभु केवल चाबुकसे ताड़ितहोकर श्वास लेनेवाले बड़े बोझके उठानेवाले बैलों के १० इस शब्दको मैं बहुत समीपही सुनताहूं और उस छकड़े के हांकनेवाले मनुष्यों के भी नानाप्रकारके शब्द सुनाई देते हैं ११ मुझ सरीखे कीट योनिवाले जीवसे इस शब्दको सुनना बहुत कठिनहै इसी हेतुसे मैं बड़ा भयभीतहोकर भागताहूं १२ जीवोंकी मृत्यु बड़ी दुःखरूपहै जीवन बड़ी कठिनतासे प्राप्तहोताहै इस निमित्त भयसे ब्याकुलहोकर भागताहूं जिससे कि सुखपूर्व्वक दुःखसे बचूं १३ भीष्मजी बोले कि कीट के इन बचनों को सुनकर ब्यासजी ने कहा कि हे कीट तुझ को सुख कैसे होसक्ताहै तूतो कीट योनि में बर्त्तमानहै १४ हे कीड़े तू शब्द स्पर्श रस गन्ध और छोटे बड़े अनेक भोगों को नहीं जानता है तेरा मरना कल्याणरूपहै १५ कीटने कहा हे बड़ेज्ञानी यहजीव सबशरीरों में प्रीतिका करनेवाला है मुझको इस शरीर में भी जो आनन्द है उसको बिचारताहूं इसी से मैं जीवनको चाहताहूं १६ मनुष्यों के और जड़जीवों के भोग पृथक् २ हैं इस देह में भी सब बिषय शरीर के अनुसार बर्त्तमान हैं १७ हे प्रभु मैं पूर्वसमयमें बड़ाधनवान् शूद्रबर्ण था मैं ब्राह्मणोंकी सेवासे रहित निर्दयी अपने बालबच्चे स्त्री कुटुम्ब आदिको और शरीरको भी कष्ट देकर धनको इकट्ठा करनेवाला ब्याज खानेवाला १८ कठोरबचन छलबुद्धी सब जीवोंकाशत्रु प्रारब्धहीन दूसरे के धनचुराने में प्रवृत्त १९ स्वादुका चाहनेवाला करुणा दयासेरहित केवल अपनेही निमित्त भोजनका चाहनेवाला था मैंने अपनी कृपणतासे घरमें पोषण के योग्य भृत्यादिक और अतिथियोंको भी छोड़कर अकेलेही भोजन किया २० मुझ धनके लोभीने देवयज्ञ और पितृयज्ञके लिये भी श्रद्धापूर्व्वक तैयार और दानकेयोग्य अन्नको नहीं दिया बहुधा मनुष्य भयके कारणसे मेरे गुप्तस्थान में नियतहोकर

शरणागतहुये २१ उन निर्भयताके चाहनेवाले शरणागत लोगोंको मैंने त्याग दिया और किसीप्रकारकी भी रक्षा उनकी मैंने नहीं की और मनुष्यों को धन, धान्य, प्यारी स्त्री, सवारी, पोशाकआदि अपूर्व शोभाओं को देखकर मैं निरर्थक दोष लगाता था दूसरे के नाशका चाहनेवाला और अन्य के सुखका ईर्षाकरने वालाथा २२।२३ स्वतन्त्र और स्वेच्छाचारीथा और अन्य मनुष्यों के त्रिवर्गका भी नाशकरनेवालाथा और पूर्व्वसमयमें मैंने ऐसे २कर्म किये जोकि निर्दयताके गुणों से भरेहुये थे २४ उन सब कर्मोंका स्मरण करके मैं शोचताहुआ ऐसा महा दुःखी हूं जैसा कि अपने प्यारे पुत्रको छोड़कर कोई दुःख को पाताहै मैं अपने कर्मों के शुभ फलोंको नहीं जानताहूं २५ मैंने केवल एकतो अपने वृद्ध माता पिता को पूजाहै और दैवयोग से अपने घरमें आनेवाले एक ब्राह्मणको भी एक बार पूजन कियाहै २६ हे ब्राह्मण एक अतिथि ब्राह्मणको भी मैंने पूजाहै इसी से मुझको पूर्व्वजन्मका स्मरण बनाहै २७ और उसी एक शुभकर्म्म से आनेवाले समयके भी सुखको देखताहूं हे तपोधन इसी हेतुसे मैं तुमसे अपने कल्याण को सुनना चाहताहूं २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेकीटोपाख्यानेसप्तदशाधिकशततमोऽध्यायः ११७॥

एकसौअठारहका अध्याय ॥

व्यासजीबोले कि हे कीट वह मेराही कर्म्म है जिसके द्वारा तुम अपना पूर्व्व वृत्तान्त नहीं भूलेहो जो कि उस मेरे शुभकर्म्म से तुम कीट योनिमें भी बिस्मरण नहीं होतेहो १ इसीहेतुसे मैं अपने तपोबलके द्वारा अपने दर्शनसेही तुम्हारा उद्धार करताहूं तपबलसे अधिक कोई बलनहीं है २ हे कीट तू अपने कर्म्मों से कीटयोनिमें पड़ाहै जो तू धर्मको मानताहै तो अवश्य धर्म्म को पावेगा ३ जो देवता पक्षी और पशु आदिहैं वह कर्म भूमिके कर्मको भोगते हैं मनुष्यों में धर्म भीहै और अज्ञानोंमें गुणोंसे रहितभी हैं जिनका केवल संसारके विषय भोगही का प्रयोजन मोक्ष का नहीं है ४ वाणी बुद्धि और हाथ पैरों से रहित जीवतेहुये ज्ञानी वा अज्ञानी मनुष्य को कौन त्याग करसक्ता है अर्थात् उसको कोई नहीं त्याग करसक्ता क्योंकि वह सब प्रयोजनोंको त्यागेहुये है ५ हे कीट जिस स्थान पर वेदपाठियों में श्रेष्ठ ब्राह्मण पवित्र कथाओंको कहताहुआ चन्द्रमा और सूर्य

का पूजन करताहै तू वहांपर जन्मलेगा ६ उस वेदपाठी शरीर में नियत होकर तुम गुणवान् प्राणियोंसे भिक्षालोगे वहां मैं तुमको ब्रह्मज्ञानका उपदेश करूंगा और जहां तू चाहैगा वहां तुझको पहुंचादूंगा ७ व्यासजीके वचनोंको सुनकर ऐसाही होय ऐसा कहकर वह कीट मार्ग में नियतहुआ और प्रारब्धाधीन वह चलताहुआ बड़ा शकट भी वहां आपहुँचा ८ और पहिये के नीचे दबकर श-रीरसे खण्डित वह कीटभी प्राणोंको त्यागकर बड़े तेजस्वी व्यासजीकी कृपासे थोड़ेही कालमें क्षत्रियके कुलमें उत्पन्नहुआ ९ स्वाबिध, गोधा, वराह, पशु, पक्षी, श्वपाक, शूद्र, बैश्य और क्षत्रिय आदिक सब योनियों में उस कीटने उन व्यास ऋषि को देखा १० तब इसरीति के सत्यबक्ता ऋषि को देखकर कृतज्ञहो उनके उपकारोंको स्मरणकर दोनों हाथोंको जोड़कर उसक्षत्रियरूपने व्यासजीसे कहा कि यह वह बड़ा स्थानहै ११ जो दशगुणोंके कारणसे चित्तका प्रियहै इसी हेतुसे मैंने कीटका जन्मपाकर फिर राजकुमारताको पायाहै १२ । १३ स्वर्णमयी माला-धारी बड़े २ हाथियोंपर मेरी सवारी होती है और रथों में काम्बोज देशी अर्थात् काबुलके उत्तम घोड़े जुतते हैं १४ और ऊंट खिचरों की भी सवारी में चलताहूं और अपने भाई पुत्र स्त्री और बांधवों समेत मैं अनेक प्रकार की मेवाओं को खाताहूं १५ हे महाभाग सुन्दर गुणवाली वायुवाले स्थानों में वृद्धों के योग्य सुखदाई शय्याओं पर अत्यन्त प्रतिष्ठा पूर्वक सोताहूं १६ और पिछली रातों में सूतमागध और बंदीजन ऐसे मेरी स्तुति करते हैं जैसे कि देवतालोग इन्द्र की करते हैं १७ मैंने कीट शरीरको पाकर जो राजकुमारका जन्मपाया यह सब सत्य-बक्ता आप महात्माकीही कृपासे है १८ हे बड़े ज्ञानी आपको नमस्कारकरके प्रा-र्थना करताहूं कि आप मुझको क्या करनेकी आज्ञा करते हैं जो आप आज्ञादें वही मैं करूं आपके तपोबलसे यह सब ऐश्वर्य्य मैंने पायाहै १९ व्यासजी बोले कि हे राजा अब मैं होनहारके कारण तेरे बचनों से पूजन कियागया कीट शरीर को पाकर अब तेरी स्मरण शक्ति निर्दोष प्रकटहुई २० उस पापका नाश नहीं है जोकि पूर्व्वसमयमें तुझ निर्दयी धनके लोभी और आततायी शूद्रने इकट्ठाकि-याथा २१ तुमने मेरे दर्शन किये यह बहुत श्रेष्ठ बातहुई तुझ तिर्य्यक् योनिवाले ने जो मेरा पूजन किया है इसी से २२ इस राजकुमारके शरीरके पीछे ब्राह्मण शरीरको पावेगा अर्थात् हे राजा सुखको प्राप्तहोकर पूर्ण दक्षिणावाले यज्ञों को

करताहुआ २३ गौ ब्राह्मणों के निमित्त युद्धमें प्राणों को त्यागकरके ब्राह्मणके शरीरको पावेगा फिर ब्रह्मरूप होकर अविनाशी स्वर्ग में सुखोंको पावेगा २४ उस स्वर्ग में जानेकी यह रीति है कि तिर्य्यक्योनि पशु और आकाशचारी पक्षियों के शरीरसे शूद्र जन्मको पाताहै फिर वैश्यहोता है और वैश्य शरीर से क्षत्रिय शरीर होताहै वहां गुरु पूजनादिक से पवित्र क्षत्रिय ब्राह्मणके शरीरको पाताहै और ब्राह्मण भी गुरु पूजनादि कर्मों से पवित्र स्वर्गको पाताहै २५॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिकीटोपाख्यानेनामअष्टादशोपरिशततमोऽध्यायः ११८॥

एकसौउन्नीसका अध्याय॥

भीष्मजी बोले कि हे राजा उसने कीट शरीर को त्यागकर क्षत्रिय धर्म को पाया फिर पूर्व्व वृत्तान्त को जानकर उस पराक्रमी ने बड़ा तपकिया १ तब ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कृष्ण द्वैपायन व्यासजी उस धर्म अर्थ में बड़े बुद्धिमान राजा के तपको देखकर आपहुँचे २ व्यासजी ने कहा हे कीट जीवोंकी रक्षा और पोषण करना क्षत्रिय का देवव्रतनाम व्रत कहाजाताहै उस क्षत्रियों के देवव्रतनाम व्रत को ध्यान करताहुआ तू वेदपाठी ब्राह्मण के शरीरको पावेगा ३ हे शुभाशुभ के ज्ञाता ब्रह्मज्ञानी तुम पापों के भी पवित्र करनेवाले होकर शुभ मनोरथों से श्रेष्ठ रीति के द्वारा सब प्रजालोगों को भाग देतेहुये उत्तम प्रकारसे रक्षाकरो ४ प्रसन्न चित्त स्वकर्म्म निष्ठ और ज्ञानी होकर फिर क्षत्रिय के शरीर को त्यागकर वेदपाठी ब्राह्मण के शरीरको पावेगा ५ भीष्मजी बोले कि हे राजाओं में बड़ेसाधु युधिष्ठिर उस क्षत्रिय ने वनको भी प्राप्तहोकर व्यासजी के बचनों को सुनकर फिर अपनी प्रजा को धर्म्म पूर्व्वक रक्षण और पोषण करके ६ थोड़ेही समय में शरीर को त्यागकरके धर्म्म और प्रजाकी रक्षा के द्वारा ब्राह्मण के शरीर को पाया ७ इसके पीछे बड़े तेजस्वी ब्रह्मर्षि व्यासजी उस ब्राह्मणको देखकर फिरभी आन पहुँचे ८ व्यासजीबोले कि हे ब्रह्मर्षियों में श्रेष्ठ श्रीमान् तुम किसी दशामें भी दुःखीमतहो शुभ कर्म करनेवाला शुभ योनियों में और पाप करनेवाले उन अशुभ योनिमें जन्मलेता है ९ जिनमें कि पाप फलकी प्राप्तिहोती है हे धर्म्मज्ञ कीट इस हेतुसे तू किसी भयकारी मृत्युसे भयभीत मतहो १० तुमको धर्मकेलोप होनेका भयहोय इसी कारण उत्तम धर्मको करो ११ कीटने कहा हे भगवन् मैंने

आपके अनुग्रहसे बड़ा सुखपाया अब यहां उस लक्ष्मीको जिसकी जड़ धर्म है पाकर मेरा पाप नष्टहोगया १२ हे राजाकीटने भगवान् ऋषिके वचन से कठिन-तासे प्राप्तहोने योग्य ब्राह्मण के जन्म को पाकर पृथ्वी को सैकड़ों यज्ञस्तम्भों से चिह्नित करदिया १३ हे कुन्तीनन्दन इसके पीछे उस ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ कीटने ब्रह्माजी की सालोक्यता को पाकर सनातन ब्रह्मपद को प्राप्तकिया १४ तब ब्यासजी के वचन और अपने कर्म फलसे उत्पन्न गतिको पाया और वह श्रेष्ठ क्षत्रिय भी जिस प्रभावसे मारेगये १५ उन्होंने भी पवित्रगति को पाया हे पुत्र इस कारण तू शोच मतकर १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअनुशासनकेपर्वणिदानधर्मेकीटोपाख्यानेनामैकोनविंशत्यधिकशततमोध्यायः११९.

एकसौबीसका अध्याय ॥

युधिष्ठिरने प्रश्न कियाँ कि हे सत्पुरुषों में श्रेष्ठ पितामह विद्या तप और दानों में कौन बड़ा कहाजाता है इसको आप कृपा करके कहिये १ भीष्मजी बोले कि इस स्थानपर इस प्राचीन इतिहास को भी कहताहूं जिसमें कि मैत्रेयजी और ब्यासजीका संबाद है २ हे राजा संसारकी दृष्टिसे गुप्त आनन्द पूर्व्वक विचरते हुये ब्यासजी काशीपुरी में मुनियों के निवासस्थान में जाकर मैत्रेयजी के पास नियतहुये ३ मैत्रेयजीने उन महात्मा ब्यासजी को मुनियोंमें सम्मुख बैठा हुआ जानकर बड़े सत्कार पूर्व्वक उत्तम भोजन को करवाया ४ तब उस गुण युक्तस्वाद बिशिष्ट उत्तमअन्नको भोजनकरके ब्यासजीने बड़ा आश्चर्य्य किया ५ उस समय मैत्रेयजीने उन आश्चर्य्ययुक्त ब्यासजी को देखकर यह कहाकि हे महात्मा आप अपने आश्चर्य करनेका कारण कहिये और आपसरीके धैर्यवान् को ऐसी प्रसन्नता काहे से हुई ६ हे बुद्धिमान् मैं आप को प्रणाम करके इस आप की प्रसन्नता का कारण पूछताहूं ७ हे तात जो जीव रूप पृथक् आत्मा और सुखात्मा है उन दोनों से बिलक्षण मुक्त और अमुक्तरूप तुझ जीवनमुक्त के अन्वयसे तुमको अल्पान्तरवालाही मानताहूं अर्थात् जिस निमित्त कि आप मेरी सौभाग्यता को देखकर आश्चर्य्यित हुये इस हेतुसे मैं आपसे थोड़ेही अन्तरवालाहूं और मित्रबंशी होनेके कारण अन्यलोगोंसे कुछ बिशेषताभी रखताहूं ८ ब्यासजी बोले कि अत्यन्त अंतरवाले होकर उसीके आशयका बर्णन करना

इन दोनों बातोंसे मुझको यह आश्चर्यहुआ कि वेदकावचन मिथ्याहै अर्थात्
वेदमें लिखाहै कि यह स्थान विना हजारयज्ञके नहीं मिलसक्ता और तुमने मुझ
को जलही के पिलाने से उस स्थानको पाया इससे सिद्धान्त हुआ कि मुख्य
करके देशकाल के अनुसार पात्रमें थोड़ादियाहुआ भी दान बहुतवड़ा होताहै
तो वेद किस कारणसे मिथ्या कहताहै ९ अभ्यास करनेके योग्य इनतीन बातों
को पोपण करनेवाला उत्तम व्रतकहा है १० शत्रुतारहित, दान, सत्य, उत्तम
वचन पूर्व्वमें इन वेदोक्त वचनोंको ऋषियोंने नियम से किया ११ पूर्व्व से सुना
हुआ वचन अव हमको अवश्य करना योग्यहै उसप्रकारका थोड़ा दानभी वड़े
फलवाला होता है १२ हे प्रभु तुमने दोप आदिसे रहित शुद्ध हृदयसे तृषायुक्त
के अर्थ जलदिया अर्थात् मुझ तृष्णावानको तुमनेभोजन और जलको देकर
वड़े लोकोंको ऐसे विजय किया जैसेकि यज्ञ करनेवाला १३ वड़े यज्ञों से लोकों
को विजय करताहै इसीहेतुसे तप और दानसे पवित्र होनेवाले हे मैत्रेयजी मैं
तुमसे प्रसन्नहूं १४ आपका बुद्धिवल पुण्यका है आपका दर्शन पुण्यकाहै आप
के शरीरकी गंधि पुण्यकी है मैं मानताहूं कि वहसव कर्मविधान से उत्पन्नहै १५
हे तात दानही उद्धार करनेवाले सबकर्मोंमें शुभ तीर्थस्नान और वेदव्रत समा-
पनसेभी अधिकहै १६ दानही करनेवालोंसे मार्ग उत्पन्न कियागया ज्ञानीमनुष्य
जिसमार्ग से चलते हैं वहीप्राण दाताहै उन्हींमें धर्म नियतहै १७ इसलोकमें जैसे
कि अच्छे पढ़ेहुये वेदहैं और जितेन्द्रिय हैं वा सबके त्यागहैं वैसाही दानहै इससे
उत्तम कोई नहींहै १८ हे वड़ेबुद्धिमान् तात तुम अच्छे सुखको पाओगे बुद्धिमान्
मनुष्य सुखपूर्व्वक वड़ेआनन्दको प्राप्तकरताहै १९ निस्सन्देह यह प्राप्तहोनेकेयोग्य
दान हमारे सम्मुखहै श्रीमान् लोग धन धान्य यज्ञ और सुखको प्राप्तकरते हैं २०
हे वड़े ज्ञानी सुखसे वड़ा दुःख और दुःखसे अन्य वड़ासुख दिखाई देताहै निश्चय
करके यह स्वभावही से उत्पन्न होताहै २१।२२ ज्ञानियोंने इसलोकमें मनुष्यों की
वृत्ती तीनप्रकारकी वर्णनकरी है पुण्य, पाप और पुण्य, पाप दोनोंसे रहित २३
वह ब्रह्मनिष्ठ नतो यज्ञादिकोंको उत्तमकर्म मानते हैं न अपने कर्म से उत्पन्न पुण्य
और पापको मानते हैं २४ यज्ञदान और तपका अभ्यास रखनेवाले मनुष्य प-
वित्र और शुभकर्मी कहलाते हैं और जो लोग कि जीवों से शत्रुता करते हैं वह
पापी दुष्टकर्मी कहाते हैं २५ प्रथम मनुष्य द्रव्योंको प्राप्तकरताहै और दूसरा दुःखों

को पाताहै और गिरताहै इसके सिवाय जो कुछ कर्म है वह पुण्यहै न पापहै २६ क्रीड़ाकरो वृद्धिपाओ आनन्दकरो दानकरो और यज्ञकरो वेदपाठी तपस्वीलोग तुम्हारा असत्कार नहीं करेंगे २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेमैत्रेयभिक्षायांविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२० ॥

एकसौइक्कीसका अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि बड़े श्रीमान् कुलमें उत्पन्न ज्ञानी शास्त्रज्ञ वेदोक्तकर्मोंकी प्रशंसाकरनेवाले मैत्रेयजी ने व्यासजी के इन वचनों को सुनकर उत्तर दिया १ कि हे बड़ेज्ञानी जैसा आपने कहा वह यथार्थही है हे प्रभु आपकी आज्ञाहोय तो मैंभी कुछ कहूं २ व्यासजी बोले हे बड़ेज्ञानी मैत्रेयजी आप जहांका वृत्तान्त जैसे चाहतेहो उसको अच्छीरीति से कहौ मैं उस सबको सुनाचाहताहूं ३ मैत्रेयजी ने कहा कि दोषरहित निर्मल वचन कहना भी दानके समान है आप निस्सन्देह विद्या और तपके द्वारा पवित्रात्महो ४ आपकी पवित्रात्मता से यह मेरा बड़ा लाभहै और मैं अच्छे बुद्धियुक्त तपस्वी मनुष्यके समान बुद्धी से देखताहूं ५ कि आपके दर्शन से हमारा भी चारोंओर से उदयहोय मैं मानताहूं कि जो आपके चित्तकी प्रसन्नताहै वह मेरे शुभकर्म के फलसे है ६ तप शास्त्र उत्पत्तिस्थान माता पिता यह तीनों ब्राह्मणहोने के कारणहैं इसी से तीनों गुणों से अच्छेप्रकार उदय होनेवाला मनुष्य ब्राह्मण होताहै ७ इस ब्राह्मणके तृप्तहोने से देवता और पित्तर भी तृप्तहोजाते हैं इससे अधिक शास्त्रवालोंका कुछ शास्त्रज्ञान नहीं है जो ब्राह्मण न होवे तो यह संसार बिना ब्राह्मणके ८ अत्यन्त प्रकाशरहित होकर ऐसा अन्धकारयुक्त होजाय कि कुछभी न जानाजाय चारोंवर्ण धर्माधर्म्म सत्य मिथ्याका ज्ञान यह सब नष्ट और गुप्त होजायँ ९ जैसे कि मनुष्य अच्छे जुतेहुये खेतमें फलको पाताहै इसीप्रकार दातामनुष्य शास्त्रीब्राह्मणको दानदेकर अच्छी रीति से फलको पाताहै १० जो शास्त्री और गुरु पूजनादि गुणों से युक्त दानका लेनेवाला ब्राह्मण न मिले उस दशामें धनवानका धन निष्फल होताहै ११ अज्ञान ब्राह्मण भोजनको करके अन्नका नाशकरताहै और वह भोजन कियाहुआ अन्न उसको मारताहै अन्नही रक्षा और पोषणकरताहै और अन्नही मारनेवाला है परन्तु जो दाता और दान लेनेवाला दोनों अज्ञानहैं तो वही मारेजाते हैं १२

ज्ञानी ब्राह्मण अन्न को भोजन करताहुआ उसका स्वामी होताहै और स्वामी अर्थात् ईश्वर होने से क्षेत्ररूपहुआ वही उसको उत्पन्न करताहै अर्थात् दाताको बहुत गुण फल देताहै और उस अन्नसे वह दान लेनेवाला प्रजारूप से उत्पन्न होताहै इसीकारण कुटुम्बी बालबच्चेवाला मनुष्य दूसरे के अन्न को भोजन नहीं करे १३ दाताका जो पुण्यहै वही दान लेनेवालेकाहै क्योंकि यह दोनों चक्रके समान संसार की रक्षा करते हैं ऋषिलोगों ने ऐसा जानाहै १४ जहांपर शास्त्री और गुरु पूजनादि गुणोंसे युक्त ब्राह्मणहैं वहांपर इसलोक और परलोकमें भोगने के योग्य दानका पवित्र फल होताहै १५ जो ब्राह्मण पवित्रजन्मा सदैव तप में प्रवृत्त दान और वेदपाठमें प्रशंसनीयहैं १६ वह सदैव पूजन के योग्य हैं जिन सत्पुरुषों से जो मार्ग उत्पन्न कियागयाहै उसपर चलनेवाला मोहको नहीं पाता है वह यज्ञकरनेवाले सनातन ब्राह्मण स्वर्ग में पहुँचनेवाले हैं १७॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेमैत्रेयभिक्षायांएकविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः१२१॥

एकसौबाईसका अध्याय॥

भीष्मजीबोले कि इसप्रकारके मैत्रेयजीके बचनोंको सुनकर भगवान् ब्यास जीने कहा कि हे मैत्रेयजी तुम प्रारब्धसे ऐसा चाहतेहो इससे प्रारब्धहीसे आपकी ऐसी बुद्धिहै१ यह संसार बहुधा उत्तम पुरुषके गुणोंकीभी प्रशंसा करताहै सुन्दर रूप तरुणता और धनका अभिमान २ यह सब भी प्रारब्धही से आपको विजय नहीं करते तुम्हारे ऊपर दैवकी कृपा है अब जो दान सेभी उत्तम है उस को मैं तुमसे कहताहूं इसलोकमें जो आगम शास्त्र और प्रवृत्ति मार्ग है वह सब वेदको आगे करके क्रमपूर्व्वक जारीहुये ३।४ मैं अब दानकी प्रशंसा करता हूं और आपभी तप और वेदकी प्रशंसा करते हैं तपही पवित्र और स्वर्ग का साधनहै ५ यह हमने सुनाहै कि विद्या और तपसेही उत्तम स्थानको पाताहै जो कोई पाप कर्म होय उसको भी तपसे दूरकरे ६ मनुष्य जिस अभीष्टको चित्तमें नियत करके तपस्या करताहै उन सब मनोरथोंको तप और विद्याके द्वारा पाता है यह भी हमने सुनाहै ७ जो कठिनता से प्राप्तहोने योग्यहै और जिसका जीतनाभी दुःखोंसे है और जिनका प्राप्त होना दुःखसे है और जिनका उल्लंघन भी कठिनहै उन सबोंको तपसे पाताहै इससे निश्चय करके तप सबसे बलवान है ८

मद्यपीने वाला दूसरेके निमित्त बिचार कियेहुये दानका लेनेवाला बालवध करनेवाला गुरूकी स्त्रीसे संभोग करनेवाला यह सब मनुष्य तपसेही अपने पापों को दूर करके तरते हैं ६ जो सर्वज्ञहै वहीनेत्र वालाहै और जितेन्द्रिय तपस्वीभी सर्वज्ञ कहाजाताहै इन दोनोंको नमस्कार करना उचितहै १० शास्त्ररूपीधन रखनेवाले सब ब्राह्मण और तपस्वी पूजनके योग्यहैं दानके देनेवाले इसलोकमें लक्ष्मीवान होकर परलोकमें सुखको पाते हैं ११ शुभकर्मीलोग अन्नदानके द्वारा मृत्युलोक ब्रह्मलोक और जितने पराक्रमी लोकहैं उन सबको पाते हैं १२ पूजन और प्रतिष्ठा पानेवाले लोग दूसरोंकी भी पूजन और प्रतिष्ठा करते हैं वह दान देनेवाला १३ जहां २ जाता है वहां २ सब ओर फलका भागी किया जाता हैं कर्त्ता और अकर्त्ताभी जिसका जैसा कर्म्म है उसीको पाताहै चाहै तुम ऊपररहौ वा नीचेरहौ परन्तु तुम सब लोकोंको पाओगे १४ और जिस २ प्रकारकी जो२ खानेपीने की बस्तुको चाहौगे उन सबको तुम पाओगे तुम शास्त्रके स्मरण रखनेवाले बुद्धिके स्वामी उत्तम कुल में उत्पन्न होकर शास्त्रज्ञ और दयायुक्तहो १५ हे मैत्रेयजी तुम कुमार अवस्थावाले और शास्त्रज्ञहो शास्त्रमें प्रवृत्तहो इससे गृहस्थियोंके इस निजधर्म्म को स्मरणकरो १६ जिस कुल में पति अपनी स्त्री पर प्रसन्नहै और स्त्री अपने पति से प्रसन्नहै उस कुलमें सब प्रकारका कल्याण बर्त्तमानहोताहै १७ जैसे कि जलके द्वारा अंगोंकामैल और अग्निके प्रकाश द्वारा अन्धकार दूर होताहै उसीप्रकार मनुष्य भी दान और तपके द्वारा सब पापोंको दूर करताहै १८ हे मैत्रेय तुम कल्याण को पाओ मैंभी अपने स्थान को जाताहूं यह मनमें नियत करनाचाहिये कि इसरीति से कल्याणहोगा १९ फिर मैत्रेयजी ने हाथजोड़ प्रदक्षिणा करके व्यासदेवजी से कहा कि हे भगवान आपभी कल्याणको पाओ २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेमैत्रेयभिक्षायांद्वाविंशत्युपरिशततमोऽध्यायः १२२ ॥

एकसौतेईसका अध्याय ॥

युधिष्ठिरबोले कि हे ज्ञानके और सब उत्तम धर्म्मके ज्ञाता पितामह मैं आपसे उत्तम स्त्रियोंके शुभ आचरणों को सुना चाहताहूं उसको आप कहिये १ भीष्मजीबोले कि केकयदेश के राजा की सोमनानाम स्त्रीने देवलोक में सर्वज्ञ और

सब सिद्धान्तोंकी जाननेवाली चित्तकी जीतनेवाली सांडिली से पूछा २ कि हे कल्याणिनि तुम किस ब्रत और किस आचरणसे सब पापोंको दूरकरके देवलोकको आईहो ३ तुम अपने तेजसे अग्निके समान और प्रकाश में चन्द्रमा की पुत्रीके सदृश तेजस्वी स्वर्गमें बर्त्तमानहो ४ दिव्यबस्त्रों से अलंकृत सुखों से ब्याप्त विमानमें नियत अत्यन्त शुभदर्शन होकर तुमहज़ार चन्द्रमाके समान प्रकाशमानहो ५ तुम थोड़े तप दान और नियमों से इसलोक में नहीं आईहो आप अपने मुख्य वृत्तान्त को मुझसेकहो ६ सोमनाके इन बचनों को सुनकर सुन्दर हास्यवाली साण्डिली ने यह मधुर और गुप्त बचन सोमनासे कहा ७ कि मैंने न तो रँगेहुये बस्त्रोंको धारणकरके न मुण्डित और जटिल होकर इस देवभावको पाया ८ केवल मैंने बड़ी सावधानीसे अपने पतिसे कभी कठोर और अप्रिय बचन नहीं कहे ९ सास और श्वशुरकी आज्ञामें वर्त्तमान होकर मैं सदैव देवता पितर और ब्राह्मणोंके पूजन में प्रवृत्तरही और परोक्षमें किसीकी बुराई करने की मेरी प्रकृति कभी नहींहुई अपने स्थानके बाहरके द्वारपर मैं बिलम्बतक नहीं ठहरतीथी और बहुत समयतक किसी से वार्त्तालाप नहीं करतीथी १० । ११ मैं एकान्तमें वा सबके समक्षमें अकारण हास्य और अप्रियकर्म में कभी प्रवृत्त नहीं होतीथी १२ मेरापति किसीकार्य्य के निमित्त बाहरजाता था और उस कामको निवृत्तकरके जब घरमें आताथा तब मैं उसको आसनपर बैठाकर पूजाकरतीथी १३ मेरापति जिसभक्ष्य भोज्यवाली बस्तुको खानानहीं चाहताथा अथवा अङ्गीकार नहीं करताथा उसको मैंभी त्याग करदेती थी १४ और जो कुछ बालबच्चों के व अन्यगृहस्थ धर्मकेलिये जो कुछ कामबर्त्तमान होताथा उसको प्रातःकाल दूसरों से कराकर और आपभी करके पूराकरतीथी १५ जबकभी मेरापति किसीजीविका के निमित्त विदेशको जाताथा तबमैं बड़ी जितेन्द्रिय अपने कर्ममें प्रवृत्त आचारज्ञ बहुतसी पतिब्रता स्त्रियोंमें बैठतीथी और केवल मंगल सूत्रमात्रधारण करती थी तांबूलादिक को कभी नहीं सेवन करतीथी १६ पतिके बिदेशमें बसनेपर अञ्जन लगाना मांगभरना स्नान और माला फेरना चन्दनलगाना बालोंका संभारना इत्यादिक सब बातोंको त्यागदेतीथी १७ और अपने सोतेहुये पतिको मैंने कभी आवश्यक कार्य्यके भी निमित्त नहीं जगाया इसीसे मेराचित्त प्रसन्न रहताथा १८ और बालबच्चोंकेभी निमित्त कभी पतिको दुखित नहींकरतीथी अर्थात्

परिश्रम नहीं देतीथी सदैव परदेमें रहतीथी और सत्संगमेंही बैठतीथी १६ स्त्रियों में सावधान जो स्त्री इसधर्म मार्गमें चलती हैं वह अरुन्धतीके समान स्वर्गलोक में प्रतिष्ठा पाती हैं २० भीष्मजी बोले इसके अनन्तर वह महाभाग तपस्विनी देवी साण्डिलीसोमना स्त्रीसे इसधर्मरूप तपको कहकर अदृष्टहोगई २१ हे पांडव इसप्रकार जो पुरुष पर्व २ में इस उपाख्यान को पाठकरताहै वह देवलोक को पाकर आनन्द पूर्वक सुखसे निवास करताहै २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेसांडिलीसोमनासंवादेत्रयोविंशत्यधिकशततमोऽध्यायः १२३ ॥

एकसौचौबीसका अध्याय ॥

युधिष्ठिर ने पूछा कि हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ आपने मधुर भाषण और दान इन दोनों में किसको उत्तम मानाहै इनमें जो अधिकहै उसको आपकहिये १ भीष्मजी बोले कि कोई तो मधुर भाषणसे प्रसन्न कियाजाताहै और कोई दानसे हर्षित कियाजाताहै मनुष्य दूसरेके स्वभावको जानकर उनदोनों गुणोंमेंसे जिसको उचित समझै उसको काममें लावे हे भरतर्षभ राजा युधिष्ठिर अब मैं मधुर भाषणके उनगुणों को तुमसे कहताहूं जिनके द्वारा भयानकरूप जीवभी प्रसन्न होजातेहैं २।३ इस स्थानपर एकप्राचीन इतिहासकोभी कहताहूं जिसके द्वारा बन में राक्षससे पकड़ाहुआ कोई ब्राह्मण उससे छूटा ४ निर्जन बनमें वाणी और बुद्धिसे संपन्न किसी ब्राह्मणको क्षुधासे पीड़ित किसीराक्षसने खानेके लिये पकड़ा जब वह ब्राह्मण महाआपत्ति में पड़कर दुखितहुआ ५ तब उस बुद्धिमान वेदपाठी ब्राह्मणने उसभयङ्कर राक्षसको देखकर मोह और पीड़ासे रहितहोकर उससे मधुर भाषण करना प्रारम्भकिया ६ राक्षसने उसके उस बचनकी प्रशंसाकरके ब्राह्मण से यह पूछा कि हे ब्राह्मण तू मेरे प्रश्नको बतादे कि मैं किसकारण से दुर्बल और पाण्डुवर्णहूं ७ तब उससावधान ब्राह्मणने एकमुहूर्त्त विचारांशकरके इनबचनोंसे राक्षसके प्रश्नोंको वर्णन किया कि तुम परायेदेशमें नियतहोकर अपने इष्टमित्रों बिना परदेशियोंके साथ बहुत बिषयोंको भोगतेहो इसी हेतुसे तुम दुर्बलहोकर पांडुवर्णहो ८।९ हे राक्षस निश्चयकरके तेरे मित्रलोग भी साधुओंके आचरणों को अच्छा नहीं मानतेहैं इसीसे दुर्बल और पांडुबर्णहो १० और जोकि तू धन

ऐश्वर्य्य में अधिक मदान्धहै इसीसे उत्तम राक्षस तेरी निन्दा करते हैं इसी हेतुसे पांडुवर्ण और दुर्बलहै ११ तुम गुणवान् ज्ञानीहोकर दूसरेनिर्गुण और अज्ञानियों को प्रतिष्ठायुक्त देखतेहो इससेही दुर्बल और पांडुवर्णहो १२ जीविकाके न होनेसे कष्टितहोकर जो जीविकाके उपायोंकी निंदा करतेहो इसहेतुसे भी तुम दुर्बल और पांडुवर्णहो १३ हे साधु तुमने प्रतिष्ठाके कारण अपने शरीरको कष्टदेकर किसी मनुष्यको रोटी और कपड़ेसे पोषण कियाहै वह तुमको पराजयहुआ मानताहै इस कारण तुम पांडुवर्ण और दुर्बलहो १४ मैं जानताहूं कि तुमऐसे मनुष्योंको शोचते हौ जोकि कुमार्गमें दुःखित और अन्तःकरण में काम क्रोधसे जीतेहुये हैं इसीसे दुर्बल और पांडुवर्णहो १५ निश्चयकरके बुद्धिसे पवित्रात्मा होकर तुम अज्ञानियों के साथमें नियत रहतेहो और दुराचारी लोगों से सहायता चाहतेहो इसी से दुर्बल और पाण्डु वर्णहो १६ प्रत्यक्षमें मित्र और भीतरसे शत्रु कोई मनुष्य कर्म करने वाला बनकर तुमको ठगकर चलागया इसीसे तुम दुर्बल और पांडुवर्णहो १७।१८ निश्चय करके तुम प्रत्यक्ष प्रयोजनके ज्ञाता गुप्त निषेधमें पंडित और सावधानहो जो दूसरे मनुष्य उससे विदितहैं उनसे पूजित नहीं होतेहो इससेभी दुर्बल और पाण्डुवर्णहो १९।२० मैं जानताहूं कि तुझतपमें प्रवृत्तको तेरे बांधवलोग तुझ को तपस्याके निमित्त बनमें नहीं जानेदेते हैं इसीसे तुम दुर्बल और पांडुवर्णहो २१ तुझ स्त्रीके माननेवाले का सहवासी बड़ा धनवान् सुन्दर और तरुण अवस्थासे महाकामी है २२ निश्चय करके धनवानों में समयपर कहा हुआ मधुर वचन शुभदायक होताहै उससे अधिक कोई श्रेष्ठ नहीं है उसका तुम पर असर नहीं होताहै इसीसे तुम दुर्बल और पांडुवर्णहो २३ जो तेरा प्यारा चित्त अज्ञान है और तेरी शिक्षाको सुनकर क्रोधयुक्त होताहै और तू उसके समझाने और प्रसन्न करने को समर्थ नहीं होताहै इस हेतुसे भी दुर्ब्बल और पाण्डुबर्णहो २४ निश्चय करके कोई मनुष्य तुमको किसी प्रियकर्म में प्रवृत्त करके सदैव उसको चाहताहै इसीसे तुम दुर्बल और पाण्डुवर्णहो २५ श्रेष्ठ गुणोंसे युक्त सुहृद जनों का पूजन करनेवाला तुमको जानता है कि यह मेरा आज्ञावर्ती है इसी हेतुसे तुम पाण्डुवर्ण और दुर्बलहो २६ निश्चय करके तुम लज्जासे और अपने प्रयोजनकी सिद्धीसे निराशहोकर अपने मनका गुप्त वृत्तान्त प्रकट नहीं किया चाहतेहो इसीसे दुर्बल और पांडुवर्णहो २७ तुम इससंसारमें नानाप्रकारकी बुद्धियों

में प्रीतिमान् सब लोगों को अपने आप स्वाधीनता में करना चाहतेहो इसी से दुर्बल शरीर और पांडुबर्णहो २८ अज्ञानी और भयभीत होकर तुम थोड़े धनमें भी उस शुभ कीर्तिको प्राप्त किया चाहतेहो जो कि बिद्या पराक्रम और दानसे प्राप्तहोती है इसी से दुर्बल और पाण्डुबर्णहो २९ बहुत दिनों से चाहाहुआ और प्राप्तहुआ कोई तेराफल दूसरे मनुष्यने अपने आधीन करलियाहै इससे भी पांडुबर्ण और दुर्व्बल शरीरहो ३० निश्चय करके अपने कियेहुये निज दोषको न देखते निष्कारण दूषित कियेगयेहो इसी से दुर्बल और पाण्डुबर्णहो ३१ गृहस्थी साधू बनचारी साधू और जीवन्मुक्त पुरुषों का गृह में प्रवृत्तचित्त देखकर शोचते हौ इससे दुर्बल और पाण्डुवर्णहो ३२ तुम पीड़ा से उत्पन्न धन और शुभगुणों से रहित अपने इष्टमित्र भाई बन्धुआदि के बड़े २ दुःखों को दूर नहीं करसक्तेहो इसी से दुर्बल और पाण्डुबर्ण हो ३३ धर्म अर्थ कामसे संयुक्त जो समयपर अभीष्ट सिद्ध करनेवाला तेराबचन है उसको वह सब इष्ट मित्रादिक अच्छा नहीं मानते हैं इसी हेतुसे दुर्बल और पाण्डुबर्ण हो ३४ निश्चयकरके तुम जीवन के चाहनेवाले और बुद्धिमान्होकर भी अज्ञानियों से दियेहुये धनसे अपना निर्बाह करतेहो इससे भी दुर्बल और पाण्डुबर्णहो ३५ निश्चयकरके तुम पापियोंकी वृद्धि को और शुभकर्मियों की हानिको देखकर सदैव निन्दा करते हौ इसी से दुर्बल और पाण्डुबर्ण हो ३६ ठीक २ तुम शिक्षा और शासनके द्वारा उन अपने नाते रिश्तहदारों का जो कि परस्पर में शत्रुहैं भलाकिया चाहते हो इस हेतुसे दुर्बल और पाण्डुबर्णहो ३७ और मैं यह भी जानताहूं कि तुम बिपरीतकर्म करनेवाले वेदपाठियों को और इन्द्रियों के बशीभूत बुद्धिमान् मनुष्यों को शोचते हौ इसीसे दुर्बल और पाण्डुबर्णहो ३८ इसरीति के बचनोंको सुनकर उस उग्रराक्षस ने उस ब्राह्मणका पूजन किया और अपनामित्र बनाकर अभीष्टों को देकर अपने बन्धनसे छोड़दिया इस अध्याय भरेका यह आशयहै कि अनात्मा से सम्बन्ध रखनेवाली चिन्ता दुर्बलताका हेतुरूप पाण्डुबर्ण है और सामर्थ्यवान् न होने से मधुरभाषणही जीवनका उपायहै ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेहारिणकृशकाख्यानंनामशतोपरिचतुर्विंशोध्यायः १२४

एकसौपच्चीसका अध्याय॥

युधिष्ठिरने प्रश्न किया कि हे पितामह मनुष्यका जन्म और कठिनतासे प्राप्त होनेवाले कर्म्मक्षेत्र को पाकर कल्याण के चाहनेवाले दरिद्री मनुष्य को क्या करना योग्यहै १ हे गांगेयजी दानों में जो श्रेष्ठ दानहै और जो दान कि प्रतिष्ठावान् पूजनीय ब्राह्मणके देने के योग्यहै इनदोनों गुप्त बातोंको आप मुझसे कहिये २ वैशम्पायन बोले कि युधिष्ठिरके इस बचनको सुनकर भीष्मजी ने धर्मों की गुप्त वार्त्ताओं को युधिष्ठिरसे वर्णन किया ३ अर्थात् भीष्मजी ने कहा कि हे राजा तुम सावधान होकर उन धर्मकी गुप्त वार्त्ताओंको सुनो जिनको कि पूर्व्व समयमें व्यासजी ने मुझसे कहाहै ४ हे राजा यह देवताओंका गुप्तभेद बड़े तप का फलहै जिसको कि नियममें नियत योगीजनों ने और सुगमकर्मी यमराज ने प्राप्त कियाहै ५ उसी से ज्योतिस्वरूप ब्रह्मदेव पितर प्रमथा लक्ष्मी चित्रगुप्त और आठोदिग्गजभी प्रसन्न होते हैं ६ उसी में बड़ेफलवाला रहस्यों समेत ऋषि धर्म महादान फल और सम्पूर्ण यज्ञोंका फलभी कहाहै ७ हे निष्पाप जो मनुष्य इस को इसरीति से जान करताहै वह चाहै दोषी वा निर्दोषी कैसाही होय वह गुणों से युक्त होताहै ८ दश पशुघातकों की समान एक तेली है और दश तेलियों के समान एक मद्यपहै दश मद्यपों के समान एक वेश्याहै दश वेश्या के समान एक राजाहै ९ जो राजाको उन सबके समान तुलना कियाजाय उस दशामें यह मिलकर उस राजासे आधे हैं और राजा उन सब का आधाहै इसी से राजा सब से अधिक कहाजाताहै इसी हेतुसे दान लेने के इच्छावान् ब्राह्मण को धर्म अर्थ कामका प्रकट करनेवाला पवित्र पुण्योंका चिह्न रखनेवाला शास्त्र जानना योग्यहै १० धर्मका प्रकट करनेवाला बड़े बिहित धर्मों से युक्त देवताओं का नियत कियाहुआ वह शास्त्र सुनना योग्यहै ११ जिसमें कि श्राद्ध विधि के बीच पितरों की गुप्तवार्त्ता कहीजाती हैं और सब देवताओं को विहितकर्म्मोंका वाक्यभी कहाजाताहै १२ उसी में रहस्य और बिहितकर्मों समेत बड़े फलवाले ऋषियों के धर्म्मयज्ञ और दानोंका फल कहाहै १३ जो मनुष्य सदैव शास्त्र को पढ़ते सुनते स्मरणकरते और कहते हैं उन सबको जो फल देताहै वह आप प्रभु नारायणहै १४ अब शास्त्रके अभिप्राय को कहते हैं कि जो गौओंका तीर्थोंका

और यज्ञोंका फलहै इन सब फलोंको वह मनुष्य पाताहै जो अतिथिका पूजन करनेवालाहै १५ जो शास्त्रके सुननेवाले वा श्रद्धावान् और अन्तःकरणसे शुद्धहैं उनमें से श्रद्धावान्साधू लोकोंको बिजयकरनेवालाहै १६ वह श्रद्धावान् मनुष्य पाप से निवृत्तहोकर फिर पापों से युक्त नहीं होताहै इसीसे वह परलोकमें जाकर अपने प्राचीन धर्मको पाताहै १७ किसीसमय देवदूतने गुप्ततामें वर्त्तमानहोकर इन्द्रसेपूछा १८ कि अभीष्ट गुणोंसेयुक्त चिकित्सा करनेवालों में श्रेष्ठ जो अश्विनीकुमारहैं मैं उनकी आज्ञासे देवता ऋषि और पितरों से यह पूछनेको आयाहूं १६ कि श्राद्ध करनेवालेको और श्राद्धमें भोजन करनेवालोंको स्त्रीसे संभोगकरना किस कारणसे निषेध कियाहै और पृथक्२ तीनपिण्ड किसनिमित्त बिचारकिये हैं २० पहला पिण्डा किसको देना उचित है मध्यका पिण्ड कहांजाताहै और अन्तका पिंड किसका कहाहै इनका वृत्तान्त मैं जानना चाहताहूं २१ श्रद्धावान् दूतके इस धर्मसंयुक्त प्रश्नको सुनकर पूर्वदिशा में नियत जो देवता और पितरथे वह सबउस आकाशचारी दूतसे सत्कार और पूजन पूर्व्वक बोले २२ हे आकाशचारियों में श्रेष्ठ तेराआना शुभदायीहोय और तेराभी कल्याणहो तुमनेगुप्त आशयवाला उत्तमप्रश्न अच्छीरीति से पूछाहै २३ जो मनुष्य श्राद्धकरके वा श्राद्ध का भोजनकरके स्त्रीके पासजाय उसके पितर एक महीनेतक उस बीर्य में निवास करते हैं २४ अब पिंडोंका बिभाग क्रमसे सुनो कि प्रथम पिण्ड तो नीचेकी ओर चलायमान होकर जलमें तृप्तकरताहै आशय यह है कि प्रथम पिण्डको जलमें डालदेना उचितहै २५ और दूसरे पिण्डको अकेली स्त्रीही भोजन करती है और तीसरे पिण्डको अग्निमें हवनकरे २६ यह श्राद्ध बिधि बर्णन करी है इसरीतिपर करनेसे धर्मका लोप नहीं होताहै और उसके पितरभी अत्यन्त प्रसन्नचित्तहोकर सदैव सुखको पाते हैं २७ उसकी सन्तान भी बृद्धियुक्त और अविनाशी नियत होती है २८ देवदूतने कहा कि तुमने पिण्डोंकी प्रशंसा क्रमपूर्वक पृथक् २ वर्णन की और तीनों पिण्डों में सब पितरोंका सम्बन्ध भी कहा २६ अबयह बताइये कि वह पहला पिंड जलमें से किसको मिलताहै और कौनसा देवता उससे तृप्तहोताहै और पितरोंको कैसे उद्धारकरताहै और स्त्री आज्ञा दियेहुये मध्य पिण्डको किस प्रयोजनसे भोजन करती है क्योंकि उसके पितर लोग तो कव्यकोही भोजन करते हैं ३०।३१ और जो अन्तका पिण्ड अग्निमें होमाजाताहै उसकी क्या

गतिहोती है किसको अच्छीरीतिसे मिलताहै ३२ तीनोंपिण्डों में जो गतिफल और वृत्ती है अथवा जो उसको पाताहै इनसब बातोंको भी मैं सुनाचाहताहूं ३३ पितर बोले कि हे आकाशचारी यह बहुत बड़ा प्रश्नहै ३४ इसी श्राद्धकी देवता और मुनि प्रशंसा करते हैं उस महात्मा चिरंजीवी नाम उत्तम ऋषि के सिवाय वह भी इसप्रकारके पूरेनिश्चयको नहीं जानते हैं ३५ जोकि बड़ायशस्वी वेदपाठी होकर भगवान्से तीनोंपिण्डोंकी गतिको सुनकर पितरोंकी भक्तिकोकरके उनसे वरकापानेवाला हुआहै हे देवदूत जो तुमने श्राद्धविधि को पूछाहै ३६।३७ सो तुम सावधानहोकर उस ऋषिकी कहीहुई तीनोंपिण्डों की गतिको हमसे सुनो उनतीनों में से जो बड़ा पिण्डजलमें डालाजाताहै वह चन्द्रमाको तृप्तकरताहै ३८ फिर वह चन्द्रमा देवता और पितरों को तृप्तकरताहै उनमें बीचके पिण्डको जो आज्ञापाकर स्त्री भोजन करती है ३९ उससे पितृलोग उस पुत्रकी इच्छा करने वाली को पुत्र देते हैं और तीसरापिंड जो अग्नि में डालाजाता है उसका भी वृत्तांतसुनो ४० उस पिण्ड से पितृलोग अत्यन्त प्रसन्नहोकर अभीष्ट मनोरथोंको देते हैं यह तीनों पिण्डों की गति हमने तुमसे कही ४१ श्राद्धके अन्नका खाने वाला ऋत्विज यजमानके पिताके अधिकारको पाताहै इसी हेतुसे उसदिन स्त्री का संग करना निषेधित कियागयाहै अर्थात् दूसरारूप प्राप्त करनेवाला अपनी स्त्री के पास जानेवाला वह ऋत्विज कुकर्म्म के फलको पाताहै ४२ हे आकाश-चारियों में श्रेष्ठ सदैव पवित्र ब्राह्मण को श्राद्धका अन्न भोजन करना उचित है परन्तु इसके खाने में वही दोष होते हैं उसके विपरीत नहीं होते हैं जो हमने प-हले कहे हैं ४३ इसी हेतु से स्नान कियाहुआ पवित्र शान्त क्षमावान् ब्राह्मण श्राद्धके अन्नको भोजनकरे तो उस श्राद्ध करनेवालेकी सन्तान बहुत वृद्धियुक्त होती है ४४ इसके अनन्तर विद्युत्प्रभानाम ऋषि जिसकारूप आकाश में सूर्य्य की किरणोंके समान प्रकाशमान था उसने धर्म के गुप्त रहस्योंको सुनकर इन्द्रसे यह वचन कहा कि अज्ञानी मनुष्य जो तिर्य्यक् योनिवाले कृमि, पिपीलिका, सर्प, बकरा, मृग, पक्षीआदि जीवोंको मारते हैं ४५।४६ वह बड़े पापकेभागी हैं उन्हों का प्रायश्चित्त क्याहै ४७ यह सुनकर सब देवता तपोधन ऋषि और महाभाग पितरों ने उस मुनिकी प्रशंसाकरी ४८ इन्द्रने कहा कि कुरुक्षेत्र गया गङ्गा प्रभास और पुष्कर उन्होंको चित्तसे स्मरणकरके उनके जलोंमें स्नानकरतेही ४९ वह

पुरुष पापोंसे ऐसे छूटताहै जैसे कि राहुसे चन्द्रमा छूटताहै उस मनुष्यको तीन दिन तक तीर्थके जलमें स्नानकरके निराहाररहनायोग्यहै ५० जो गौओंके पुच्छ को स्पर्श करताहै और नमस्कारभी करताहै वह भी पापोंसे छूटताहै फिर विद्युत्प्रभ ऋषिने इन्द्रसे कहा ५१ कि हे इन्द्र इसके विशेष यह धर्म बड़ा सूक्ष्महै इसको स्मरणकरके सदैव जानतेरहो कि राजसर्षपको शरीरपर मर्द्दनकरके वटकी जटाके पानी में औटाकर स्नानकरे और पकेहुये धानोंको दूधके साथ छःदिन भोजन करे तो सब पापोंसे निवृत्तहोताहै ५२।५३ हे देवताओंके ईश्वर शचीपति जो मैंने बृहस्पतिजी के स्थानपर शिवजी के मुखसे ऋषियों के विचार कियेहुये अन्यः रहस्यों को सुनाहै उसको भी सुनो ५४ कि जो मनुष्य पर्वतके ऊपर एकचरणसे खड़ाहोके हाथोंको जोड़ेहुये ऊपर को भुजाकरके सूर्य देवताको सदैव देखे ५५ वह बड़े तपवाले ब्रतके फलको पाताहै और सूर्यके सम्मुख किरणोंसे सन्तप्तहोकर सब पापोंको भी दूरकरताहै ५६ जो उष्णऋतु वा शीत ऋतुमें इस रीतिसे पापोंको दूरकरताहै उसका पाप दूरहोकर उसमें सदैव रहनेवाला तेज प्रकटहोता है ५७ फिर अपने तेजसे सूर्यके समान तेजस्वी होकर वह पुरुष चन्द्रमाके समान शोभायमान होताहै इसके पीछे देवराज इन्द्रने सब देवताओं के मध्यमें ५८ बृहस्पतिजीसे यह उत्तम और मधुर बचन कहा कि हे भगवन् जो गुप्तधर्म मनुष्यों को सुखका देनेवाला है ५९ और जो मित्र दोषगुप्त भेदवाले हैं उनको पूरा वर्णन कीजिये ६० बृहस्पतिजी ने कहा कि हे शचीपति जो मनुष्य सूर्य्यके सम्मुख मूत्रकरते हैं और जो वायुको दूषित करते हैं और यज्ञकी अग्निके प्रज्वलित होनेपर समिधियों को नहीं होमते हैं ६१ और बालबत्सा गौको दूधके प्राप्तकरने को दोहते हैं उन सबके दोषोंको कहताहूं ६२ हे इन्द्र सूर्य्य वायु अग्नि और सृष्टि की माता गौ इन सबको ब्रह्माजी ने उत्पन्न कियाहै ६३ वह सब देवता इनमर्त्य लोकोंमें सृष्टिके उद्धार करने को समर्थ हैं ६४ तुम सबलोग प्रत्येकधर्मके निश्चय को सुनो हे पुरन्दर दुराचारिणी स्त्रियां सूर्यकी ओर पेशाव करती हैं और जो मनुष्य वायुको दूषित करते हैं उनकी गर्भस्थ सन्तान गिरती हैं अर्थात् गर्भोंका पतनहोताहै ६५।६६ जो मनुष्य यज्ञोंमें हव्यबाह नाम अग्निके प्रकाशित होनेपर समिधियोंको नहीं होमते हैं उनके हव्यको अग्निदेवता नहीं भोजनकरते हैं ६७ इसलोकमें जो मनुष्य बालक व बछड़ोंके भागवाले दूधको भक्षण करते हैं उनके

घरमें बंशकी वृद्धि करनेवाले कोई दूधपीनेवाले बालक नहीं होतेहैं ६८ वह मनुष्य सन्तान कुल और बंशके अभावसे नाश होतेहैं इसरीतिसे यहधर्म कुल में वृद्ध ब्राह्मणोंसे कियाहुआ देखागयाहै ६९ इसीसे ऐश्वर्य्य के चाहनेवाले मनुष्यको करनेके योग्य कर्मको करना योग्यहै और त्यागकरनेके योग्य दुष्टकर्मों का त्यागना योग्यहै इसीको तुम सत्य २ जानो ७० तदनन्तर मरुद्गणों समेत सब महाभाग देवता और ऋषियोंने पितरोंसे पूछा ७१ निर्बुद्धी मनुष्यके कौनसे कर्मसे पितृ प्रसन्नहोते हैं और और्ध्वदैहिक दानकैसे अक्षयहोताहै और कौनसे कर्म्मकरके मनुष्य को अनृणता होती है इन सबबातों को मैं सुनना चाहताहूं मुझको सुननेसे तृप्ति नहीं होती है ७२। ७३ पितृ बोले हे महाभाग देवता ऋषियो तुमने न्यायसे संशयको कहा हे महात्मालोगो संसारके शुभकर्मी लोगोंके जिस कर्मसे हम प्रसन्नहोतेहैं उसको सुनो ७४ नीला वृषभ अर्थात् सांड़ छोड़ने से अमावास्या के दिन तिलयुक्त जलके तर्पणसे बर्षाऋतु में दीपदान करनेसे पितरों से अनृणहोताहै ७५ यहतीनों दान बड़े पवित्र अविनाशी और उत्तम फलोंके देनेवाले हैं अर्थात् हमारी स्वस्थताके करनेवाले होकर अबिनाशी कहातेहैं ७६ जो श्रद्धावान् मनुष्य सन्तान को उत्पन्न करतेहैं वह पुत्रादिक अपने पितामहादिकों को कठिन स्थान और नरकोंसे उद्धार करतेहैं ७७ पितरोंके इस वचनको सुनकर प्रसन्नमूर्त्ति महातेजस्वी तपोधन वृद्धगार्ग्य ऋषिने उनसे यह वचन कहा ७८ हे तपोधन पितरलोगो नीले सांड़के छोड़नेका कौनफलहै और बर्षाऋतुमें दीपदानसे वा तिल जलके तर्पणसे क्या क्या फल होते हैं ७९ जो नीले सांड़की पूंछके जलको ऊपर उछाले तो उस जलसे पितृ लोग साठ हजार बर्षतक तृप्त होते हैं ८० जो नीला सांड़ अपने सींगोंसे तीर्थके किनारेकी कीचड़ मट्टीको उठाकर वर्त्तमान होताहै उस कर्म्मसे पितृलोग निस्सन्देह चन्द्रलोकको जाते हैं ८१ वर्षाऋतुमें दीपदान करनेसे मनुष्य चन्द्रमाके समान शोभायमान होताहै अर्थात् जो दीपकों को देताहै उसका रूप कभी अप्रकाशित नहीं होताहै ८२ जो मनुष्य अमावास्या के दिन गूलरकी लकड़ी के पात्र को लेकर मधुयुक्त तिलजलों को दान करते हैं ८३ और उन मनुष्यों से गुप्तबुद्धी से युक्त ठीक २ श्राद्ध कियाजाताहै उन लोगोंकी सन्तान सदैव प्रसन्न होकर हृष्ट पुष्ट होती है ८४ जो श्रद्धावान् मनुष्य पिण्डदान करताहै उसके फलसे उसके

कुलकी वृद्धि होती है और आप अपने पितरों के ऋणसे अऋण होताहै ८५ इसरीतिसे यह श्राद्धका समय उसके करनेकी रीति बिधि पात्र औ फलका ठीक उपदेश बर्णन किया ८६॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेपितृरहस्यंनामशतोपरिपञ्चविंशतितमोऽध्यायः १२५॥

एकसौछब्बीसका अध्याय॥

भीष्मजी बोले कि आप किसकर्म्मसे प्रसन्न होते हैं और किस रीतिसे आनन्दयुक्त होतेहो इस रीति के इन्द्रसे पूछने पर ईश्वर हरि ने उत्तर दिया १ कि ब्राह्मणों के साथ जो कठोर बचन हैं वही मेरी बड़ीभारी शत्रुताहै और निश्चय करके ब्राह्मणों के पूजित होनेपर मैं सदैव पूजित होताहूं २ वेदपाठियों के अधिपति ब्राह्मण सदैव दण्डवत् के योग्य हैं इसीप्रकार भोजन करके अपने दोनों चरणभी नमस्कार के योग्यहैं मनुष्योंमें मैं उस मनुष्य पर प्रसन्न होताहूं जोकि गोबरसे लीपकर सुदर्शनचक्र पर बलिदान देताहै ३ बामन अवतार ब्राह्मणको और जलसे उठेहुये व राहको और जलसे उठी हुई पृथ्वीको मस्तकपर धारण करताहै देखकर उन दर्शन करनेवालोंका कुछपाप और दुःख बाकी नहीं रहता अर्थात् दोनों का नाश होजाता है जो मनुष्य सदैव पीपलके वृक्ष और गौको पूजन करताहै वह देवता असुर और मनुष्योंसमेत सब संसारका पूजन करता है मैं अपने रूपसे उनकी पूजाको चित्तसे ग्रहण करताहूं ४।६ मेरी यही पूजाहै दूसरी पूजा नहीं है यह सृष्टि मुझीसे नियतहै अल्पबुद्धि मनुष्य निरर्थक दूसरे प्रकारसे पूजन करते हैं ७ मैं उस बिपरीत पूजनको अङ्गीकार नहीं करताहूं उसमें मेरी किसी प्रकारसे भी प्रसन्नता नहीं है ८ इन्द्रने कहा तुम किस निमित्त चक्र चरण बराह बामन ब्राह्मण और उठीहुई पृथ्वीकी प्रशंसा करतेहो ९ आपजीवों को उत्पन्न करतेहो और आपही सब सृष्टिका नाश करतेहो आपही सब देवता मनुष्यादिकों की प्राचीन उत्पत्तिस्थानहो १० भीष्मजी बोले कि यह सुनकर विष्णुजी अत्यन्त प्रसन्नता से हँसकर बोले कि मैंने चक्रसे तो सब दैत्य मारे और चरणों से स्थूल सूक्ष्म दोनों पृथ्वीपर चले ११ बराहरूप में नियत होकर हिरण्याक्ष दैत्य को मारा और बामनरूप में नियत होकर राजा बलिको बिजय किया १२ इस अभिप्रायसे मैं महात्मा मनुष्योंके ऊपर प्रसन्न होताहूं इस रीतिसे

जो पुरुष मेरा पूजन करेंगे उनकी अप्रतिष्ठा और हानि नहीं होगी १३ अथवा समीप आयेहुये ब्रह्मचारी ब्राह्मणको देखकर उसको बड़ी भक्तिसे भोजन करावे उसका भोजन कियाहुआ अमृतरूप होताहै १४ प्रातःकाल की सन्ध्योपासनादिक कर्म्मोंको करके सूर्य के सम्मुख नियत होनेवाला वह मनुष्य सब तीर्थोंका स्नान करनेवाला होताहै और सब पापों से भी छूटताहै १५ हे तपोधन देवता और ऋषिलोगो यह गुप्त रहस्य सम्पूर्णताके साथ मैंने तुम सब संदिग्ध पूछने वालों से वर्णन किया इसके विशेष जो कहो सो और कहूं १६ बलदेवजी बोले कि मनुष्यों के सुखदायी बड़े गुप्तरूप उन धर्मोंकोसुनो जिनके न जाननेसे अज्ञानीलोग निर्द्धनता से पीड़ायुक्त होकर कष्टोंको पाते हैं १७ जो मनुष्य प्रातःकालके समय गौ घृत दही सर्षप और राजसर्षपको स्पर्शकरताहै वहपापोंसे निवृत्त होताहै १८ तपोधन ऋषि सबजीवमात्र और शूद्रादिकों को भी आगे वा पीछे जूंठन देनेको निषेध करते हैं १९ देवता बोले कि गूलरकी लकड़ी के जलसे भरे पूर्णपात्रको लेकर उत्तराभिमुखहोकर व्रतका संकल्पकरे वा अंगीकारकरे २० उसके देवता प्रसन्न होकर चित्तके मनोरथोंको देते हैं अत्यन्त निर्बुद्धी लोग निरर्थक विपरीत कर्म्म करते हैं २१ व्रत और बलमें ताम्रकापात्र श्रेष्ठ कहाजाता है बलि भिक्षा अर्घदान और तिलोदक से पितरों का तर्पण २२ यह सबकर्म्म ताम्रपात्र मेंहीं करना उचितहै इसकेविपरीत करने से निष्फल होताहै यह गुह्य रहस्य मैंने तुमसेंकहा इसी से देवता प्रसन्न होते हैं २३ धर्म ने कहा कि जो वेदपाठी ब्राह्मण राजाका आज्ञाकारी होकर उसके कार्य्य में प्रवृत्तहै २४ और राजाके जगाने के लिये घंटेका बजानेवाला और गौओंका रक्षक अथवा ब्यापार करनेवाला शिल्पविद्याका जाननेवाला नर्त्तक मित्रसेशत्रुता करनेवाला बिद्यासेरहित और वृषलीपतिहै इन ब्राह्मणोंको किसीदशामें भी देवता पितरों के नामका अन्नादिक देना उचितनहीं है २५ जिसके घरसे अतिथि निराशाहोकर लौटजाताहै उसकी पिंडदाता सन्तान नष्टहोजाती है और वह भी पितरोंको तृप्तनहीं करताहै २६ अतिथि का आदर सत्कार करने से उसके पितृदेवता और अग्नियां यह सब निराशाहो कर चले जाते हैं २७ जिसके घरमें अतिथि की पूजानहीं होती है वह मनुष्य आगे लिखेहुये दुष्टकर्मियों के समान पापकाभागी होताहै अर्थात् स्त्री गौ और ब्राह्मण का मारनेवाला अकृतज्ञ गुरुकी स्त्री से संभोग करनेवाला २८ इतनों के

समान पापभागी होताहै अग्नि देवताने कहा कि जो बड़ा निर्बुद्धी मनुष्य पैरों को उठाकर गो ब्राह्मण और प्रकाशित अग्निको स्पर्श करताहै उसके दोषोंको तुम सावधानी से सुनो उस पुरुषकी अपकीर्त्ति स्वर्गको स्पर्श करती है और उस के पितृ भयभीत होते हैं २६।३० देवता लोगभी चित्तसे विरुद्धहोजाते हैं और बड़ा तेजस्वी अग्निभी उसके हव्यको अंगीकार नहीं करताहै ३१ और वह सौ जन्मतक नरकमें पकता है और किसी प्रकारसे भी उसका प्रायश्चित्त नहींमाना जाताहै ३२ इसी से गौ महातपस्वी ब्राह्मण और प्रकाशित अग्निको कभी पैरों से स्पर्श करना उचित नहीं है ३३ जो मनुष्य श्रद्धावान् होकर अपनी वृद्धिको चाहनेवाला है उसको इसपर अमल करना योग्यहै जो मनुष्य इनतीनोंको पैरों से स्पर्शकरे उसके यह दोष मैंने वर्णनकिये ३४ विश्वामित्र ने कहा कि अत्यन्त गुप्त धर्म्मोंसे युक्त रहस्यको सुनो जो मनुष्य दक्षिणाभिमुखहोकर हस्तनक्षत्र के प्रारम्भ में और माघ वा भादों महीनों के कृष्णपक्षमें जब कि मघानक्षत्र होता है ३५ तब उत्तमान्नसे पितरों का श्राद्ध मध्याह्न के कुतुप कालमें देताहै ३६ उसके श्राद्धकेगुण और फलोंका जैसा विस्तारहै उसको सुनो प्रथम तो यह फलहै कि एक दिनके श्राद्ध करने से प्रतिदिन तेरहवर्ष श्राद्ध करने के फलको पाताहै ३७ गौवें बोलीं कि हे समंगेबहुले अकुतोभये क्षेमेसखे और भूयसी तुम सब वृद्धतम हो इससे हमारी वैसीही रक्षाकरो जैसे कि तुम पूर्वसमयमें बछड़ोंसमेत ब्रह्मलोक में और इन्द्रके यज्ञमें रक्षाकरनेवाली हुई थीं ३८ और जो गौ विष्णुलोक में सूर्य मार्गपर नियतहै उस गौकानाम नारदजी समेत सबदेवता शर्व्व सर्वदा कहाकरते हैं ३९ जो पुरुष इसनामरूप मन्त्र से गौओं को नमस्कार करताहै वह पापकर्मों से जुदाहोकर इन्द्रलोकको पाताहै और गोदानों के फलोंसमेत चन्द्रमा के समान तेजको पाताहै ४० जो पुरुष पूर्व्वकालमें गोशालाके मध्यमें देवताओं से सेवित इसनाम रूप मंत्रको इसरीति से पढ़ताहै वह पाप शोक और भयसे निवृत्तहोकर इन्द्रलोकको जाताहै ४१ भीष्मजी बोले इसकेपीछे लोकमें प्रसिद्धमहाभाग वशिष्ठादिक सातों महर्षी लोग उसकमलसे प्रकट होनेवाले ब्रह्माजीकी परिक्रमा कर के हाथ जोड़कर नियतहुये उनमें से ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ वशिष्ठजी ने यह वचन कहा ४२।४३ कि जो प्रश्न कि सबजीवों की वृद्धिका करनेवाला और मुख्यकर के ब्राह्मण क्षत्रिय के लिये हितकारी था वह यह है कि धनहीन कंगाल और सु-

वाली मनुष्य इसलोक में किसरीति से ४४ कौनसे कर्म्मको करके यज्ञकेफलको पाते हैं ब्रह्माजी ने उन्होंके इस बचनको सुनकर यह बचनकहा कि ४५ हे महाभाग ऋषियो बड़ा आश्चर्यकारी आपने यह प्रश्नकिया यह प्रश्न अत्यन्त शुभ सूक्ष्म गुप्त आशयों से भराहुआ नरलोकबासियों का कल्याणरूपहै ४६ हे तपोधन ऋषियो सुनो कि मनुष्य जिस २ कर्म के करने से यज्ञों के फलोंको पाते हैं वह मैं सम्पूर्णता से ठीक २ कहताहूं ४७ जब पौष महीने के शुक्लपक्षमें रोहिणी नक्षत्र प्रारम्भहोय उस नक्षत्रके प्रारम्भसे स्नान पूर्व्वक एकपबित्र वस्त्रको धारण कियेहुये चौपटे मैदान में शयन करके चन्द्रमाकी किरणोंको जो पान करता है वह बड़े यज्ञकेफलको पाताहै ४८ । ४९ हे ब्राह्मणों में बड़े साधु सूक्ष्म सिद्धान्तदर्शी ऋषि लोगो यह मैंने तुमसे बड़ा गुप्त धर्म कहा है ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेदेवरहस्येशतोपरिषट्विंशतितमोऽध्यायः १२६ ॥

एकसौसत्ताईसका अध्याय ॥

विभावसुने कहा कि जो मनुष्य पूर्णमासी के दिन उदय होनेवाले चन्द्रमा के सम्मुख नियत होकर घृतयुत अक्षतसमेत जलकी पूर्णांजली को चन्द्रमा के अर्पण करे उससे अग्निकेसब कार्य्योंसमेत तीनों अग्नियां हव्यसे पूजितहोती हैं १ । २ जो निर्बुद्धी मनुष्य अमावास्या के दिन बनस्पति के एक पत्रको भी तोड़े वह ब्रह्महत्या के पापसे संयुक्त होताहै ३ जो निर्बुद्धी अमावास्या के दिन वृक्षादिकों की लकड़ी की दातून करताहै वह मानों चन्द्रमाको घायल करताहै और उसके पितृ भयभीत होते हैं ४ पर्व्वों में भी देवतालोग उसके हव्यको नहीं अंगीकार करते हैं उसके ऊपर पितृभी क्रोधितहोते हैं और कुटुम्बभरमें उसका और उसकेवंशका नाश होताहै ५ लक्ष्मीजी ने कहा कि जिस मैले कुचैले घर में पात्र भ्रष्टहैं वा पात्र और आसन फूटे और टूटेहैं और स्त्रियां पीटी जातीहैं ६ उन अशुद्ध वस्तुओंवाले घरोंमें से उत्सव और पर्व्वों में देवता और पितरलोग निराश होकर चलेजाते हैं ७ अंगिराऋषि बोले कि जो मनुष्य एकबर्षतक करंजक वृक्ष और सुबर्चलावल्ली जिसके हाथ रूप जड़हैं उनको दीपक देताहै उस के सन्तानकी बड़ी बृद्धि होती है ८ गार्गीनेकहा कि जो मनुष्य दिनको न सोता हुआ सदैव अतिथि का पूजनकरे और यज्ञशाला आदि पवित्रस्थानों में दीप-

कों को जलावे और मांसको न खाय ९ गौ ब्राह्मणको कष्ट न दे पुष्करादि तीर्थों का कीर्त्तनकरे यह गुप्त रहस्य समेत धर्म कल्याणरूप और बड़े फलका देनेवाला है १० सैकड़ों यज्ञों से भी पूजन कियेहुये हव्य चाहै किसीसमय क्षयहोजाते हैं परन्तु श्रद्धावानों के कियेहुये धर्म कभी नाश नहीं होते हैं ११ इस बड़ी गुप्त बात को गुप्त रहस्यों समेतही जानो श्राद्धविधि देवकर्म और पर्वों के मध्यवर्त्ती तैर्थिक कर्म में १२ ऐसी स्त्रियां जो कि रजस्वला कोढ़िन बंध्या अवत्सा होती हैं इनके देखेहुये हव्यको देवतालोग भोजन नहीं करते हैं १३ पितृभी तेरहवर्षतक प्रसन्न नहीं रहते हैं जो ऐसा होजाय तो पवित्र श्वेत बस्त्रों से अलंकृत शरीर होकर ब्राह्मणों से स्वस्तिबाचन करवावे १४ और भारतके पर्व्वोंका कीर्त्तनकरे तो हव्यमें निर्विघ्नता होती है १५ धौम्यमुनि बोले टूटेपात्र टूटीशय्या मुर्गा कुत्ता और जो वृक्ष घरमें उपजताहै वह सब अशुभरूप हैं १६ टूटेपात्रमें कलियुग नियतहोताहै टूटी शय्यासे धनका नाशहोताहै घरमें मुर्गे और कुत्तेके होनेपर देवता हव्यको नहीं भोजन करते हैं १७ वृक्षकी जड़में सर्प बिच्छू आदि जीव अवश्य होताहै इस हेतुसे घरमें वृक्षको नहीं लगावे १८ जमदग्निऋषि बोले कि जो पुरुष अश्वमेध और बाजपेय यज्ञसे पूजन करे वा अधोमुख होकर लटके अथवा वृद्धियुक्त यज्ञकोकरे १९ जो उसका हृदय पवित्र नहीं है तो वह अवश्य नरकको जाता है यज्ञ, सत्यता और हृदयकी शुद्धी यह तीनों समानहैं २० शुद्धमनसे एकप्रस्थ भर सत्तूकेदान करने से ब्रह्मलोक में जाताहै यही दृष्टान्त बहुत है २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेदेवरहस्येशतोपरिसप्तविंशतितमोऽध्यायः १२७ ॥

एकसौअट्ठाईसका अध्याय ॥

वायु देवता बोले कि मैं मनुष्यों के सुखदायी कुछ धर्म्मोंको बर्णन करताहूं और जो दोष गुप्त रहस्यों समेत बर्त्तमानहैं उनको तुम बड़ी सावधानीसे सुनो १ जो मनुष्य वर्षाके चारों महीनों में तिल और जलका नित्य दान करताहै और सामर्थ्य के अनुसार वेदज्ञ ब्राह्मण को भोजन देता है २ उसको अग्निकार्य्य करना योग्यहै और तिल जलसमेत पितरोंका दीपकभी प्रकाश करना उचित है ३ इसलोकमें श्रद्धावान् मनुष्य इसरीति से सौ पशुबन्धु नाम यज्ञके फलको पाताहै ४ इस महाकर्म्म को तुम परमगुह्यतर जानो जिसके सब संस्कारों की

अग्निका ले चलनेवाला शूद्र और हव्यको सुधारनेवाली अज्ञान स्त्रियां हैं और वह इसको धर्मही मानताहै वह पुरुष अधर्मका भागी होताहै और उसकी सब अग्नियां क्रोधित होती हैं इसीसे वह शूद्रयोनिको पाताहै ५।६ उसके देवताओं समेत पितृभी प्रसन्न नहीं होते हैं उसके प्रायश्चित्त को मुझसे सुनो ७ जिसको मनुष्य गौके गोवर मूत्र दूध और घृतके द्वारा अच्छीरीतिसे करके नीरोगता पूर्वक सुखी होताहै जब निराहार समाहितचित्तहोकर मनुष्य तीनदिनतक अग्निहोत्र को करता है उसके एकवर्ष के पीछे देवतालोग हव्यको भोजन करते हैं ८।६ श्राद्धका समय वर्त्तमान होनेपर इसके पितर प्रसन्नहोते हैं यह धर्म्माधर्म्मसहित गुप्त बात वर्णन की १० स्वर्ग के चाहनेवाले मनुष्यों को परलोक में स्वर्गही सुख का देनेवालाहै ११॥

इतिश्रीमहाभारतेश्रानुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेदेवरहस्येशतोपरिअष्टाविंशतितमोऽध्यायः १२८॥

एकसौउन्तीसका अध्याय॥

लोमशजी बोले कि जो मनुष्य अपना विवाह न करके दूसरे की स्त्रियोंपर प्रवृत्तचित्त हैं उनके पितर श्राद्धके समय निराशहोते हैं १ जो मनुष्य दूसरे की स्त्रीसे प्रीति करनेवालाहै और जो बन्ध्या स्त्रीको सेवन करताहै और जो ब्राह्मण का धन रहताहै यह तीनों समान दोषवाले हैं २ यह सब लोग पितरोंके भाषण केभी योग्य नहीं हैं और देवता समेत पितर उनके हव्यको भी नहीं अङ्गीकार करते हैं ३ इसीहेतुसे अपने अभीष्ट मनोरथ चाहनेवालोंको ब्राह्मणका धन कभी न हरना चाहिये और दूसरेकी स्त्री वा बन्ध्या स्त्री इन दोनोंको भी त्यागकरे ४ अब दूसरे गुप्त रहस्य धर्मोंको सुनो कि श्रद्धावान् मनुष्य को गुरुओं के बचन के अनुसार कर्म्मकरना उचितहै ५ जो मनुष्य हरमहीने की द्वादशी और पूर्ण-मासीके दिन घृत और चावल ब्राह्मणोंके अर्थ देताहै उसका पुण्य यहहै ६ कि उस दानसे चन्द्रमा और महासमुद्र वृद्धिको पाता है इन्द्र देवता उसके फलको अश्वमेधयज्ञके चतुर्थांशके समान वर्णन करते हैं ७ इस दानके करनेसे मनुष्य तेजस्वी और पराक्रमी होता है और भगवान् चन्द्रमा प्रसन्न होकर अभीष्ट म-नोरथों को देते हैं ८ अब बड़ा फलवाला गुप्तरहस्यसमेत दूसरा धर्म्म जोकि इस कलियुगको पाकर मनुष्यों को सुखका देनेवाला है उसको श्रवण करो ६ जो

सावधान मनुष्य प्रातःकाल के समय उठकर स्नानपूर्व्वक श्वेत वस्त्रयुक्त होकर तिलपात्र ब्राह्मणके अर्थ देताहै १० और जो मनुष्य मधुसमेत तिल जल पितरों को देताहै और जो दीपक और कृशरान्न को देताहै इन सबके जो २ फलहैं उन को सुनो ११ भगवान् इन्द्रने तिलपात्र देनेका यह फल कहा है कि जो मनुष्य गोदान और अविनाशी भूमिकादान करताहै और जो वहुत दक्षिणावाले अ-ग्निष्टोम यज्ञको करताहै इन सबके समान तिलपात्रदान को देवतालोग कहते हैं १२।१३ पितृलोग श्राद्ध में सदैव तिल जल को अविनाशी मानते हैं और दीप वा कृशरान्न के दानसे मनुष्यके पितामह प्रसन्न होते हैं १४ इसरीतिसे स्वर्ग में ऋषियोंका देखाहुआ और पितृलोक में देवता पितरों से स्तुति कियाहुआ यह धर्म्म तुमसे वर्णनकिया १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेलोमशरहस्येशतोपरिएकोनत्रिंशतितमोऽध्यायः १२९

एकसौतीसका अध्याय ॥

भीष्मजीबोले कि इसके पीछे सावधानरूप सब ऋषि पितृ और देवताओं के समूहों ने तपसे वृद्ध १ तपोबल में वशिष्ठजी के समान उत्तम स्वभाववाली श्रीअरुन्धतीसे यह वचन कहा कि हम तुमसे धर्म्म के गुप्तरहस्य सुना चाहते हैं २ हे कल्याणिनि जो आप गुह्यसे गुह्य धर्म जानतेहीहो उसको वर्णन कीजिये ३ अरुन्धतीने कहा कि मैंने आपलोगोंके स्मरणसेही तपमें वृद्धतापाई आपही की कृपासे मैं सनातन धर्मोंका वर्णन करूंगी ४ गुप्तरहस्योंसमेत उन गुप्तधर्म्मों को पूर्णतासमेत सुनो क्योंकि जो श्रद्धावान् पवित्रात्मा है उसको उपदेश क-रना योग्य है ५ श्रद्धारहित अहंकारी ब्रह्महत्या करनेवाला गुरुकी स्त्रीसे भोग करनेवाला यह चारों वार्त्तालाप के योग्य नहीं हैं इनसे कभी धर्म न कहे ६ जो मनुष्य प्रतिदिन बारहबर्षतक कपिला गौको दानकरे और जो मनुष्य हरमही-नेमें यज्ञसे पूजनकरे ७ और जो ज्येष्ठ पुष्कर पर एकलाख गौओं का दानकरै वह सब उसके धर्म्मफलके समान नहीं होताहै जिसका अतिथि प्रसन्न होताहै ८ और दूसरा धर्म्म जोकि मनुष्योंका सुख देनेवाला है उस बड़े फलवाले धर्म्मको गुप्त रहस्यों समेत श्रद्धावान् मनुष्यसे कहना योग्यहै ९ प्रातःकाल उठकर जो निराहार मनुष्य गौओंके मध्यमें जाकर कुशाओं से गौओंके सींगोंको जलसे

सींचे और उस गौके सींगसे टपकेहुये जलको मस्तकपर १० धारणकरे उसके धर्म्मफलको सुनो कि तीनोंलोकोंके जो२तीर्थ ११ कि सिद्ध चारण और महर्षियों से सेवित सुनेजाते हैं उनके जलमें स्नान और गौके सींगोंके जलका सींचना दोनों समान गिनेजाते हैं १२ यह अत्यन्त प्रसन्नचित्त देवता पितृ और अन्य अन्य उत्तम महात्मा लोगोंका कहाहुआ है उसको सुनकर सब लोगोंने धन्य-वाद करके अरुन्धतीका पूजनकिया १३ ब्रह्माजी बोले कि हे महाभागिनी तुमने गुप्तरहस्योंसमेत धर्म्म को वर्णन किया है पुण्यकी अभ्यासिनी मनोरथोंके सिद्ध करनेवाली प्रशंसनीय अरुन्धती मैं तुझको वरदेताहूं कि तेरी तपस्याकी सदैव वृद्धिहोय १४ यमराज बोले कि जो जो कथा चित्तरोचक और शुद्धहैं वह सब मैंने आपसे सुनीं अब मेरा प्रियकारी जो चित्रगुप्तका वर्णनहै उसकोसुनो १५ वह धर्म्मसंयुक्त गुप्तरहस्य महर्षिलोग और अभीष्ट चाहनेवाले श्रद्धावान् मनुष्यों को सुननेके योग्यहै १६ कियाहुआ पाप और पुण्य नाश नहीं होताहै अर्थात् उसका फल अवश्य मिलताहै पूर्वकालमें जो कुछ कियाजाताहै वह सूर्यकेपास इकट्ठा होताहै १७ प्रेतलोक में मनुष्य के जानेपर उस सब पुण्यको सूर्य्यदेवता देते हैं और वह पुण्य करनेवाला वहां उसको पाता है १८ अब चित्रगुप्तके अं-गीकृत कुछ शुभ धर्म्मोंको कहताहूं कि जल और दीपदान करना सदैव योग्य है जूतेका जोड़ा छत्र और कपिला गौका विधिके अनुसार दान करना योग्य है वह कपिला गौ पुष्करतीर्थ में वेदज्ञ ब्राह्मण को देना चाहिये १९ । २० सब स्थानमें अग्निहोत्र को उपायपूर्व्वक करे यह धर्म्म चित्रगुप्तजी ने कहा है २१ अच्छे २ साधू मनुष्यों को इसका फल पृथक् २ सुनने के योग्यहै आयुर्दा के पूरे होनेपर सब जीवमात्रों को मरना अवश्यहै २२ इस स्थानपर दुर्गम मार्गके पानेवाले गृहस्थीपनेसे पीड़ावान् सन्तप्तजीव पकते हैं वहां भागना नहींहै २३ इसी प्रकार अल्पबुद्धी मनुष्य भयकारी अपराधों में प्रवृत्त होते हैं इस स्थानपर मैं उस धर्म्मको कहताहूं जिसकेद्वारा कठिनताओंसे छूटताहै २४ वह धर्म्म थोड़े ही व्ययसे बड़े फलका देनेवाला और परलोकमें बड़े सुखका उदय करनेवाला है जलदानके बड़े उत्तम गुणहैं और मरनेके पीछे परलोक में अधिकतर सुखों का देनेवाला है स्वर्ग्ग में उन जलदान करनेवालोंकी पुण्योदक नाम नदियां लिखी हुई विख्यात हैं उनका जल अत्यन्त शीतल अमृत के समान अवि-

नाशी होता है २५ । २६ उस नदीके जलको वही मनुष्य पीताहै जो जलदान करताहै अब दीपदानकरनेके जो गुणहैं उनको सुनो २७ निश्चयकरके दीपदान से अन्धकार दूर होताहै क्योंकि सूर्य्य चन्द्रमा उसको प्रकाशदेते हैं २८ निर्मल देवतालोग उसका सबओरसे सत्कार करते हैं और प्रेतलोकमें वर्त्तमानहोकर मनुष्य सूर्य्यकेसमान प्रकाशकरताहै २६ इसीकारण दीपदान और जलका दान अधिक करनाचाहिये जो पुरुष वेदपाठी ब्राह्मणको कपिला गौका दान करते हैं वा पुष्करतीर्थमें कपिला गौका दान करते हैं उसका यह फलहै कि उस एकगौ के दान करने से सौ सवत्सागौओंके दानके समान फल होताहै और जो कुछ ब्रह्महत्याके समान पापहैं उनको यही अकेली कपिला गौ दूरकरती है ३०।३१।३२ इसी हेतुसे कार्त्तिकसुदी पूर्णमासी के दिन ज्येष्ठ पुष्कर तीर्थ में कपिला गौ का दान करना उचित है और जो पुरुष पात्ररूप उत्तम ब्राह्मणको जूतों का जोड़ा देते हैं उनको कोई मार्ग्ग अगम्य नहीं है और न उनको किसी प्रकारका दुःख और शोकहोताहै परलोकमें जानेवाला मनुष्य छत्रदानके द्वारा सुखरूपछाया को पाताहै ३३ । ३४ इसलोक में दियेहुये दानका कभी नाश नहीं है इस रीति के चित्रगुप्तजी के बचनों को सुनकर सूर्य देवताके शरीरमें आनन्दके रोम खड़े होगये फिर बड़े तेजस्वी सूर्य्यदेवताने ३५ सबदेवता और पितरोंसे यह बचन कहा कि आप सब लोगोंने महात्मा चित्रगुप्तजीका गोप्यधर्म सुना ३६ जो श्रद्धावान् मनुष्य महात्मा ब्राह्मणों को यह दान देते हैं वह निर्भय होते हैं ३७ अब पांच दुष्कर्मियों को कहते हैं अर्थात् ब्रह्महत्या करनेवाला गोबध करनेवाला दूसरेकी स्त्रीसे प्रीति रखनेवाला श्रद्धासे रहित स्त्रीके द्वारा अपनी जीविका करनेवाला यह पाप बड़े घोरहैं इनका प्रायश्चित्तभी इसलोक में नहींहै ऐसे दुराचारी आचारसे रहित नीच मनुष्य त्याग करनेके योग्यहैं उनसे कभी वार्त्ताभी न करना चाहिये ३८ । ३६ यह पापकर्म करनेवाले मनुष्य प्रेतलोकमें पहुँचकर नरक में मछलियोंके समान पकते हैं और पीब वा रुधिरको खाते हैं ४० वह पांचोंदुष्टात्मा पापीलोग पितृ देवता स्नातक वेदपाठी और जो अन्य २ तपोधनऋषि हैं उनसे सम्भाषणभी नहीं करते ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेचित्रगुप्तरहस्येशतोपरित्रिंशतितमोऽध्यायः १३० ॥

एकसौइकतीसका अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि इसके पीछे सब महाभाग देवता पितृ और ऋषियों ने प्रमथों से यह वचन कहा कि हे संसारके प्रत्यक्ष वृत्तान्तों के देखनेवाले राक्षस लोगो तुम सब बड़े बड़भागीहो तुम इन अपवित्र जूठे मुखवाले नीच मनुष्यों को कैसे मारतेहो १।२ वह मारनेवाला कौनसा हेतु है जिसके द्वारा मनुष्यों को माराकरतेहो और जब तुम घरमें गुप्त होजातेहो तब तुम्हारे दूरकरनेका कौनसा उपायहै ३ हे राक्षसलोगो यह सब तुम लोगोंका वर्णन सुनना चाहते हैं ४ प्रमथ गणोंने कहा कि जो मनुष्य स्त्रीके भोग करने से अपवित्र हैं अर्थात् भोग करनेके पीछे स्नान नहीं करते हैं और नीचेके ओष्ठको ऊपरके ओष्ठपर रखने से जूठे मुखवाले हैं और जो मोह से मांस को खाते हैं और जो वृक्षकी जड़पर सोवें ५ जिसके शिरपर रखकर मांस भेजाजाय जो शय्यापर पगांतकी ओरको शिर करके सोवे इत्यादि कर्मोंसे वह सब मनुष्य अपवित्र और बहुत विघ्नों के धारण करनेवाले हैं ६ जो मनुष्य जलमें मूत्र और थूक आदि को करते और डालते हैं ऐसे मनुष्य निस्सन्देह मारने और भक्षण करने के योग्य हैं ७ इस प्रकारके अभ्यास और रीति रखनेवाले मनुष्योंको हम विजय करते हैं अब उन उपायों को हमसे सुनो जिनके कारणसे हम उनके सताने को समर्थ नहीं होसक्ते हैं ८ जो मनुष्य गोरोचनको मस्तकपर लगावे बचाको हाथमें धारणकरने वाला घृतयुक्त अक्षतको मस्तकपर धारण करनेवाला ९ और जो मांसको नहीं खाते हैं हम उनके मारने को समर्थ नहीं होते हैं जिसके घरमें सदैव अग्नि प्रकाशित होती है १० तरक्षुनाम मृगकेदांत चर्मपहाड़ी कछुआ घृतका धूमबिलार कृष्ण पिंगलवर्णका बकरा ११ यह सब जीव जिन गृहस्थी लोगोंके घरोंमें नियत रहते हैं वह घर उन राक्षसों से नहीं पराजित होते हैं जो कि कच्चे मांसके खानेवाले और बड़े भयानकहैं १२ और हमारे समानवाले जो राक्षस सुखपूर्वक लोकों में घूमते हैं उनको दूर करनेवाली वह अग्निहै जो गृहस्थियों के घरों में सदैव प्रकाशित रहती है जिन २ बातों में तुम को सन्देह था उन सब बातों को हमनेकहा १३।१४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेप्रमथरहस्येशतोपरिएकत्रिंशोऽध्यायः १३१ ॥

एकसौबत्तीसका अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि इसके पीछे कमलसे उत्पन्न कंवल वर्ण ब्रह्माजी ने शची-पति इन्द्र और देवताओं से यह वचन कहा १ कि यह रसातलमें विचरनेवाला रेणुकनाम दिग्गज बड़ाबली तेजस्वी बड़े पराक्रम और बुद्धिका रखनेवाला है और अन्यदिग्गजभी बड़े २ तेजवलों समेत अतुल पराक्रमी हैं जो बनकानन पर्व्वतों समेत सम्पूर्ण पृथ्वीको धारण करते हैं ३ हे देवताओ तुम अपनी आज्ञा से इस रेणुकको वहां भेजकर उन दिग्गजों से धर्मके सब रहस्योंको पुछवाओ ४ तब उन सावधान देवताओं ने ब्रह्माजी के इस वचनको सुनकर रेणुकको वहांपर भेजा जहां कि वह पृथ्वीको धारण कियेहुये सब दिग्गज वर्त्तमान थे ५ रेणुकने कहा कि हे महावली दिग्गजो मैं देवता और पितरों का भेजाहुआ तुम से उन सबको सुना चाहताहूं जो कि धर्म के गुप्तरहस्यहैं ६ हे महाभाग दिग्गजो जो सि-द्धांत तुम्हारा विचाराहुआहै उसको वर्णनकरो ७ दिग्गज बोले कि कार्त्तिकवदी अष्टमीको जब श्लेषा नक्षत्र होताहै वह महाकल्याण रूपहोताहै जो पुरुष उस नक्षत्रयुक्त कार्त्तिकबदी बहुलनाम अष्टमी को गुड़ भात दानकरताहै ८ अर्थात् क्रोधसे रहित नियम पूर्व्वक आहार करनेवाला मनुष्य श्राद्धमें इस आगे लिखे हुये मन्त्रको जपकरे (मन्त्रः) बलदेवप्रभृतयो येनागाबलवत्तराः ९ अनन्ताह्य क्षयोनित्यं भोगिनाःसुमहाबलाः ॥ तेषांकुलोद्भवायेच महाभूताभुजंगमाः १० तेमेब-लिंप्रयच्छन्तु बलतेजोभिवृद्धये ११ यदानारायणःश्रीमानुज्जहारवसुंधराम् ॥ त-द्बलंतस्यदेवस्य धरानुद्धरतस्तथा ॥ इसरीतिसे इस मन्त्रको पढ़कर उस वामीपर ऐसे वलिको भेटकरे १२ जो कि गजेन्द्रनाम पुष्पोंसेयुक्त नीले बस्त्रपर धराहुआ होय ऐसे बलिको सूर्य के अस्तहोनेके समय सर्पकी वामी में छोड़दे १३ इसरीति से उस बलिदानसे हम सब नाग जो कि भारके कारणसे पीड़ायुक्तहैं उसदुःखको नहीं जानते हैं और प्रसन्नहोते हैं १४ बोझसे पीड़ितभी निर्पेक्षहोकर हम सब यह मानते हैं कि व्रतकरनेवाला ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्य और शूद्रभी एकवर्ष पर्यंत इस रीतिसे बलिदानको करके बड़ेफलको पाताहै वह बलिदान बामीका दियाहुआ हमलोग लेकर बहुत फलवाला मानते हैं १५।१६ तीनों लोकमें जो बड़े पराक्रमी नाग हैं वह उस बलिदान से सौ वर्षतक पूजित होते हैं महाभाग ऋषिदेवता

और पितरोंने दिग्गजोंके उसबचनको सुनकर रेणुकका धन्यबादकिया१७।१८॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेदिग्गजानांरहस्येशतोपरिद्वात्रिंशोऽध्यायः १३२॥

एकसौतैंतीसका अध्याय॥

महेश्वरजी बोले कि तुमने सारांश निकालकर यह साधुओं का धर्म्म वर्णन किया अब तुम सबलोग मुझसे भी इसगुप्त धर्म्मको सुनो १ यह धर्म उनलोगों के उपदेश करने के योग्यहै जो श्रद्धामान और धर्म्म परायणहैं २ जो स्थिरचित्त मनुष्य एकसमय भोजन करके एक महीने तक गौको भोजनदे उसके फलको मुझसे सुनो ३ यह महाभाग गौ पवित्र और उत्तम कहीजाती हैं उन्होंने देवता असुर और मनुष्योंसमेत तीनोंलोकोंको धारणकियाहै ४ उनकी सेवाबड़ी पुण्य-कारी और उत्तम फलोंकी देनेवाली है प्रतिदिन गौको भोजन देनेवाला मनुष्य नित्य २ धर्मसे युक्त होताहै ५ प्रथम सतयुग में इनगौओं को मैंने देखा इसके पीछे ब्रह्माजी ने मुझको आज्ञाकरी ६ इसी हेतुसे गौशालासे प्राप्त होनेवाला नन्दीश्वर मेरे ऊपर अर्थात् मेरी ध्वजामें नियत होताहै और मैं गौओं के साथ रमताहूं इसीकारणसे वह गौवें सदैव पूजन के योग्यहैं ७ वह बड़ा प्रभाव रखने वालीं बरदाता गौवें उपासना करनेसे वरको देती हैं और वह फल देती हैं जोकि सब कर्म्मों में होताहै ८ जो मनुष्य अपने प्रयोजन के निमित्त गौ को भोजन देता है उसको चौथाई फल होताहै ९॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेमहादेवरहस्येशतोपरित्रयस्त्रिंशोऽध्यायः १३३॥

एकसौचौंतीसका अध्याय॥

स्कन्धजी बोले कि जो धर्म मुझको प्रियहै वहभी सावधान होकर तुम सुनो जो मनुष्य नीले सांड़के सींगोंसे मृत्तिका को लेकर १ तीन दिनतक शरीर में लगाकर मंत्रयुक्त होकर स्नान करताहै वह सब पापोंको दूरकरके परलोकमें ऐ-श्वर्यको पाताहै २ और गुप्तरहस्य समेत इस दूसरे गुप्त धर्मको भी जानो कि वह पुरुष जब जब जन्मलेगा तब तब शूरबीरही होगा ३ जो मनुष्य पूर्णमासी के दिन गूलरकी लकड़ीके बनेहुये पात्रको पकवान और मधुसेसंयुक्त करके उदय होनेवाले चन्द्रमा को बलिदान देताहै ४ उस धर्मके प्राचीन फलसे साध्यगण

ग्यारह रुद्र द्वादश सूर्य्य बिश्वेदेवा अश्विनीकुमार ५ मरुद्गण अष्टबसु यह सब उसके बलिप्रदानको अंगीकार करते हैं और उसी बलिसे चन्द्रमा और महासमुद्रभी वृद्धिको पाते हैं ६ यह मैंने महासुखकारी धर्म्मगुप्त रहस्य समेत तुमसे बर्णन किया ७ विष्णुजी बोले कि जो पुरुष महात्मा देवताओं के इस गुप्तरहस्य वाले धर्मको और ऋषियों के गुप्त धर्म्मोंको प्रतिदिन पाठकरे ८ अथवा दूसरे के गुणोंमें दोष न लगानेवाला श्रद्धावान सावधान मनुष्य इसको श्रवणकरे वह सबप्रकार से निर्विघ्न होकर निर्भय रहताहै ९ जो जितेन्द्रिय शान्तचित्त मनुष्य इसका पाठ करते हैं वह इन बर्णन कियेहुये शुभ पवित्र और गुप्त रहस्यों समेत धर्म्मोंके फलों को पाते हैं १० जो मनुष्य इसको पढ़ैगा वा सुनैगा उसका नतो पाप प्रकट होगा और न उस पापसे कभी लिप्तहोगा ११ और इसके अविनाशी हव्य और कव्यको देवता और पितर भोजन करते हैं धर्म्मों में सदैव उपाय करनेवाला जो श्रीमान् सावधान मनुष्य पर्व्वों में वेदपाठी ब्राह्मणको सुनवाताहै वह देवता और पितरों का सदैव अंगीकृत होताहै १२। १३ सिवाय महापातक के पाप कर्मको करकेभी इस गुप्त धर्मको सुनकर सब पापोंसे छूटताहै १४ भीष्म जी बोले हे राजा यह सब देवताओं से प्रतिष्ठा पानेवाला गुप्त धर्म जिसको कि व्यासजी ने मुझे उपदेश कियाथा वह सब मैंने बर्णन किया १५ यह सबसे श्रेष्ठ गुप्तज्ञान और रत्नोंसे पूर्ण पृथ्वी दोनों समानहैं इसी हेतुसे इसीका श्रवण करना योग्यहै धर्म्मज्ञ लोगों को इसका मानना उचितहै १६ यह धर्म्म श्रद्धारहित, नास्तिक, अधर्म्मी, निर्द्दय, हेतु दुष्ट गुरूका शत्रु, ब्रह्मज्ञान रहित इन सबके आगे कहना योग्य नहीं है १७॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेदेवरहस्येशतोपरिचतुस्त्रिंशोऽध्यायः १३४॥

एकसौपैंतीसका अध्याय॥

युधिष्ठिर बोले हे भरतवंशी इसलोकमें ब्राह्मणके घरमें भोजन करनेके योग्य कौन २ हैं क्षत्रीके घरमें भोजन करनेके योग्य कौन २ हैं इसीप्रकार वैश्य और शूद्रके घरमें भोजनके योग्य कौन २ हैं १ भीष्मजी बोले कि इसलोकमें ब्राह्मण के घरमें ब्राह्मणही भोजन करनेके योग्यहैं और जो क्षत्रिय और वैश्यहैं वह भी भोजन करनेके योग्यहैं परन्तु शूद्रका भोजन कराना निषेधहै २ क्षत्रिय के घर

ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य भोजन करनेके योग्यहैं परन्तु सब वस्तुओं के खाने वाले शूद्र भोजन करानेमें त्याज्यहैं ३ जो वैश्य सदैव अग्निके पूजनकरनेवाले होकर पवित्रतासे चातुर्मासके व्रतमें तत्पर हैं वह वैश्यलोग ब्राह्मण और क्षत्रियों के घरमें भोजन करनेके योग्यहैं ४ जो द्विज शूद्रोंके घरों में शूद्रोंके अन्नको भोजन करताहै वह पृथ्वीके मैलको भोजन करताहै और मनुष्यों के भी मलोंको भोजन करताहै ५। ६ जो सन्ध्या बंदनादि उत्तम कर्मको करताहै वह भी शूद्र की सेवा करनेसे नर्कमें दुःखोंको पाताहै तात्पर्य्य यह है कि शूद्रका अन्नही केवल निषेध नहीं है किन्तु उसकी सेवा करनी भी ऐसी है कि सन्ध्या बन्दनादि के भी करनेवाले ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनों नर्कमें पड़ते हैं ७ वेदपाठी ब्राह्मण वेदपाठ जप और मनुष्यों के कल्याण में प्रवृत्तहोते हैं क्षत्रियकी रक्षाके निमित्त और वैश्यको गौ आदिके पोषणके अर्थ कहाहै ८ वैश्य जो कर्म करताहै अथवा जिस कर्मसे अपनी जीविका करताहै वह खेती गौकी रक्षा और व्यापारहैं यही निन्दासे रहित वैश्योंके कर्महैं ९ जो द्विज अपने कर्मको छोड़कर शूद्रके कर्म को करताहै उसको शूद्रही के समान जानना योग्यहै वहकभी भोजन करानेके योग्य नहीं है १० वैद्य, काण्डपृष्ठ अर्थात् वेश्यापति वा शस्त्रोंसे जीविका करने वाला पुराध्यक्ष अर्थात् कोतवाल पुरोहित साम्वत्सर अर्थात् केवल ज्योतिषसेही जीविका करनेवाला अनाध्यायों में वेदका पढ़नेवाला यह सब शूद्रके समान हैं ११ इनशूद्र कर्म करनेवाले शूद्रोंके घर जो निर्लज्ज मनुष्य भोजन करताहै वह अयोग्य भोजनकोकरके कठिन और असह्यभयोंको पाताहै १२ वह कुलका भय करनेवाला नीच पराक्रमी कुत्तेके समान अपना कर्मकरनेवाला होकर धर्म हीनहै तासे वह तिर्यक्योनि में जन्मपाताहै १३ जो वैद्यके अन्नको भोजनकरता है वह अन्नभी विष्ठाके समानहै दुराचारिणी स्त्रीका अन्न मूत्रके समानहै रसोइया मैमार और शिल्पी आदिका अन्न रुधिरके समानहै साधुओं का अंगीकृत जो मनुष्य विद्या वेचनेवालेका अन्नखाताहै वह अन्नभी शूद्रके अन्नके समानहै उस कोभी साधू त्यागकरे १४।१५ धोखा देनेवाले पुरुषका अन्न रुधिरके न्हदके समान कहाजाताहै परोक्ष निन्दा करनेवालेका अन्न ब्रह्महत्याके समानहै १६ जिस अन्न कोतुच्छ और अप्रतिष्ठित करदियाहै उसकोभी कभी भोजन न करनाचाहिये १७ जो ब्राह्मण ऐसे अन्नको खाताहै वह शीघ्रही रोगीहोकर अपने कुलका नाशक-

रताहै जो नगरके रक्षकके अन्नको खाताहै वह श्वपचोंका प्रधान होताहै १८ जो वेदपाठी ब्राह्मण गोबध करनेवाले के घरमें ब्रह्महत्यारे के घरमें मद्यपके घरमें गुरूकी स्त्रीसे भोग करनेवालेके घरमें भोजन करताहै वह राक्षसोंके कुलकी बृद्धि का करनेवाला उत्पन्नहोताहै १९ जो मनुष्य किसीकी धरोहड़ के मरनेवाले कृतघ्नी और हीजड़े के घरमें भोजन करताहै वह मध्यदेशसे बाहर शवरोंके देशमें उत्पन्नहोताहै २० यह मैंने भोजन के योग्य और अयोग्य मनुष्यों का बर्णन बुद्धिके अनुसार किया हे कुन्तीके पुत्र अब और क्यासुनना चाहतेहो २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेभोज्याभोज्यान्नकथनंनामशतो परिपंचत्रिंशोऽध्याय: १३५ ॥

एकसौछत्तीसका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे पितामह तुमने भोजनके योग्यायोग्य का बर्णन किया इस में मुझको कुछ सन्देह है उसको आप मुझसे बर्णन कीजिये १ हव्य कव्य और दानोंमें जो नानाप्रकार हैं उनके बिषय में जो २ ब्राह्मणों के प्रायश्चितहैं उनको भी आप बर्णन कीजिये २ भीष्मजी बोले कि हे राजा अच्छा प्रश्न तैंने पूछाहै अब मैं दान और भोजनों में जो महात्मा ब्राह्मणों के प्रायश्चित्तहैं उनको बर्णन करताहूं जिनके द्वारापापोंसे छूटजाताहै ३ घृत और तिलका दानलेकर गायत्री मंत्रसे अग्निमें आहुति दे तो शुद्धहोय यह घृत और तिलका दान समानही है मांस लवण और मधुका दान लेनेवाला ब्राह्मण सूर्योदयमें सूर्यका उपस्थान करनेसे पवित्रहोताहै ४ । ५ और सुबर्णका दान लेनेवाला ब्राह्मण कृष्ण लोहे को धारण करके गुरु श्रुतिके जपनेसे शुद्धहोताहै ६ धन स्त्री और बस्त्रके दानमें भी यही कर्म करना उचितहै जोकि सुबर्णके दानमें कहाहै ७ अन्न खीर ईखका रस और तेल घृत आदिके दान लेनेमें यह प्रायश्चित्तहै कि तीनों सन्ध्याओं में जलमें गोता लगावे इसीसे शुद्धी होतीहै ८ फल फूल जल और पिष्टी से युक्त भोजनकी बस्तु पावक दही दूध आदिके दान लेनेमें हजार गायत्रीको जपै ९ मृतक कर्म्म में जो जूतेका जोड़ा और छत्रकादान लेनेवाला अच्छा सावधान मनुष्य एकाग्रचित्तहो सौवार गायत्री जपै तो पापसे निवृत्त होताहै १० क्षेत्रदान और गृहके सूतकी दानमें तीनरात्रि ब्रतकरके पापसे छूटता है ११ जो ब्राह्मण

कृष्णपक्ष में श्राद्ध सम्बन्धी पितृके अन्नको भोजन करता है वह एक दिन रात्र ब्रत करने से पापसे निवृत्त होता है १२ अथवा वह ब्राह्मण विना स्नान किये सन्ध्योपासन जप और दूसरे समयका भोजन नहीं करे इस कर्म्म से भी पवित्र होताहै १३ पूर्व निमन्त्रित ब्राह्मण शास्त्रमें लिखेहुये मनुष्यों के घरमें तृप्तहोकर भोजन करे इसीहेतुसे श्राद्ध अपराह्ण कालमें करना कहागयाहै १४ जो ब्राह्मण मृतकके तीसरे दिन अन्नको भोजन करताहै वह तीनों समय स्नानकरके बारह दिनमें पवित्र होताहै १५ मरनेके दिनसे बारह दिन व्यतीत होनेपर अधिकतम पवित्रता प्राप्त करनेवाला मनुष्य ब्राह्मणों के अर्थ अन्नका भोजन कराकर पाप से निवृत्त होताहै १६ मृतकके दशदिनतक भोजन कराने में इन प्रायश्चित्तोंको करावे गायत्री जप रैवतनाम साममन्त्र से इष्टीयज्ञ कूष्माण्ड नाम यज्ञ क्रिया और अघमर्षणनाम मन्त्रका जप जलमें तीनबार करे १७ जो ब्राह्मण मृतकके घरमें ऊपर लिखेहुये तीन दिनके भीतर भोजन करताहै वह सातदिनतक तीनों समय स्नान करके बड़ी पवित्र वा और सिद्धीको पाकर कभी आपत्तिको नहीं पाताहै १८।१९ जो ब्राह्मण एक भोजनमें भी शूद्रोंके साथ बैठकर खाताहै बुद्धिके अनुसार उसका प्रायश्चित्त केवल शरीर की पवित्रता रूपही कहाजाता है अर्थात् उसका पातक दूर नहीं होता है २० जो ब्राह्मण एक भोजन में भी वैश्योंके साथ खाय वह तीन रात्रि नियम करके उस कर्म्म से शुद्ध होताहै २१ जो ब्राह्मण एक भोजनमें भी क्षत्रियोंके साथ भोजनकरे तो सचैलस्नान करने से शुद्ध होताहै २२ ब्राह्मणों की पंक्तिमें भोजन करना शूद्रके तो कुलको वैश्य के पशु बान्धवों को और क्षत्रियोंके धनको नाश करताहै और उनके साथ भोजन करना ब्राह्मण के तेजको नाश करता है २३ इस निमित्त प्रायश्चित्त और हवन से शान्तीको करके गायत्री का जप रैवतनाम साममन्त्र से इष्टीयज्ञ कूष्माण्डनाम यज्ञ क्रिया और अघमर्षण मन्त्रके करनेसे वह पापोंसे छूटताहै २४ जो अपनी बिरादरीकी जूंठनको खाय और एकही पात्रमें साथ २ भोजन करे तो गोरोचन, दूब, हल्दीआदि मंगली बस्तुओंको स्पर्श करे २५॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेप्रायश्चित्तविधिनामशतोपरिषट्त्रिंशोऽध्यायः १३६॥

एकसौसैंतीसका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे भरतर्षभ पितामह आपने कहा कि दानसे स्वर्ग की प्राप्ति होतीहै और तपसे भी स्वर्गको जाता है सो मुझको आप यह समझाइये कि पृथ्वीपर इन दोनोंमें से कौन श्रेष्ठहै इस मेरे सन्देहको आप दूर करनेको योग्य हैं १ उन दोनोंमें से दानकी प्रशंसा करनेको भीष्मजी ने कहा कि धर्म्म में प्रवृत्त तपसे पवित्रात्मा पवित्रकर्म्मी जिन २ राजालोगों ने निश्चय करके लोकों को विजय किया उन २ राजालोगों को शिष्यों से पूजित अत्रिऋषि निर्गुण ब्रह्मका उपदेश करके उन लोकोंको गये जिनसे कि श्रेष्ठ दूसरे लोक नहीं हैं ३ औशीनरका पुत्र राजाशिवि अपने प्यारे पुत्रके प्राणोंको ब्राह्मणोंके अर्थ देकर इस लोकसे स्वर्गलोक को गया ४ और काशीपुरी का प्रतर्द्दन राजाभी अपने पुत्रको ब्राह्मणके निमित्त देकर इसलोक और परलोक दोनोंमें बड़ी शुभकीर्त्ति को भोगताहै ५ संकृतयका पुत्र राजा रन्तिदेव बशिष्ठ के अर्थ विधिपूर्व्वक अर्घ दानकरके सबसे उत्तम लोकोंको गया ६ राजा देवावृध यज्ञके निमित्त शतशलाका रखनेवाला दिव्य सुबर्णका छत्र ब्राह्मणको देकर स्वर्गको गया ७ भगवान् अम्बरीष बड़े तेजस्वी ब्राह्मण के अर्थ अपने सम्पूर्ण देशको देकर स्वर्ग को गया ८ सूर्य्यका पुत्र कर्ण दिव्य कुण्डलों को और जनमेजय सवारी और गौको ब्राह्मणके अर्थ देकर श्रेष्ठतम लोकों को गये ९ राजऋषि वृषादर्भी नाना प्रकार के रत्न और उत्तम उत्तम स्थानों को ब्राह्मणों के अर्थ देकर स्वर्ग को गया १० राजा वैदर्भी तिमीदेश को अपनी कन्याको महात्मा अगस्त्यजी के निमित्त देकर पुत्र स्त्री बान्धव और पशुओंसमेत स्वर्गको गया ११ इसीप्रकार बड़े प्रतापी जमदग्निजी के पुत्र महात्मा परशुरामजी पृथ्वीको वेदपाठी ब्राह्मण के अर्थ देकर उन अविनाशी देशोंको गये जो मनके संकल्पसेभी उत्तमहैं १२ परिजन्य के वर्षा न करनेपर भूदेव बशिष्ठजी ने सब जीवों को जीवदान दिया उसी कर्म्म के द्वारा उन्हों ने अविनाशी गतिको पाया १३ राजा दशरथके पुत्र श्रीरामचन्द्रजी यज्ञोंमें बहुतसे धनोंको व्ययकरके अविनाशी लोकोंको गये और इस लोकमें भी उनकी अचल कीर्त्ति विख्यातहै १४ बड़ा यशस्वी राजर्षि कक्षसेन विधिके अनुसार महात्मा बशिष्ठजीको दान देकर स्वर्गको गया करन्धम

का पौत्र विद्वित का पुत्र राजा मरुत अपनी कन्या को अङ्गिराऋषि को दान देकर शीघ्रही स्वर्गको गया १५।१६ धर्मधारियों में श्रेष्ठ पाञ्चालदेश के राजा ब्रह्मदत्त ने एक शङ्ख धनका दान करके परमगति को पाया १७ राजामित्रसह वशिष्ठजी को अपनी प्यारी भार्य्या मदयन्ती को देकर स्वर्ग को गया १८ मनुजीका पुत्र सुद्युम्न धर्म्म से महात्मा लिखितऋषिको दण्ड देकर सर्वोत्तम देशोंको गया १९ बड़ा यशस्वी सहस्रचित्य राजर्षि अपने प्रियप्राणोंको ब्राह्मण के मनोरथ के लिये त्यागकरके सर्वोत्कृष्ट लोकों को गया २० राजा शतद्युम्न सब अभीष्ट वस्तुओं से पूर्ण स्वर्णमय महलको मौद्गल्य ऋषिको दानदेकर स्वर्गको गया २१ पूर्वसमयमें राजा सुमन्यु भक्ष्य भोज्योंके पर्वतके समान ढेरोंको शाण्डिल्य ऋषिको देकर स्वर्ग में नियत हुआ २२ शाल्वदेश का बड़ा कीर्त्तिमान् प्रतापी राजाद्युतिमान् अपने राज्यको ऋचीकऋषिको दानकरके सर्वोन्नत लोकों को गया २३ राजर्षि मदिराश्व अपनी सुमध्यमा कन्याको हिरण्यहस्त ऋषिको दान करके उन लोकोंको गया जोकि देवताओंके निवासस्थानहैं २४ लोमपाद राजर्षि अपनी शान्तानाम पुत्री को ऋष्यशृङ्ग ऋषि को दानकरके सब बड़े २ मनोरथों का प्राप्त करनेवालाहुआ २५ राजर्षि भगीरथ अपनी हंसी नाम कन्याको कौत्सऋषिको दान करके इस लोकसे अविनाशी लोकको गया २६ राजा भगीरथ दशहजार सवत्सा गौवों को हलऋषिको दान करके बड़े उत्कृष्ट लोकोंको गया २७ हे युधिष्ठिर यह भगीरथ और दूसरे अन्य राजा लोग दान और तपके द्वारा स्वर्गकोगये और बारम्बार फिर लौटकर आये २८ जिन गृहस्थी लोगोंने दान और तपके द्वारा लोकोंको विजयकिया उन सबकी शुभ कीर्त्ति तबतक नियत रहेगी जबतक कि पृथ्वी वर्त्तमान है २९ हे युधिष्ठिर मैंने यह उत्तम पुरुषोंका वर्णन तेरे आगेकिया यह सबलोग दान तप और सन्तान के द्वारा स्वर्ग में नियत हुये हैं ३० हे कौरवोंके स्वामी जिन लोगोंने सदैव दान किया उन सबके धर्मकीवृद्धि करनेवाली बुद्धि दान यज्ञ और क्रियाओंसे युक्त थी ३१ हे राजाओं में श्रेष्ठ अब जो २ तेरे सन्देह और होंगे उनको कल वर्णन करूंगा अब सन्ध्याकाल वर्त्तमान हुआ ३२॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशतोपरिसप्तत्रिंशोऽध्यायः १३७॥

एकसौ अरतीसका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि हे सत्यव्रत और सत्य पराक्रम रखनेवाले पितामह मैंने सुनाहै कि बड़े २ राजा लोग दानधर्म्मकेही द्वारा स्वर्गको गये १ हे धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ मैं इन धर्म्मोंको सुनना चाहताहूं कितनेप्रकार के दान देनेके योग्यहैं और जो देने उचितहैं उनका फल क्याहै २ धर्मरूप देनेके योग्य दान किसरीतिसे और कौन कौनसे ब्राह्मणों को देना योग्यहै और किन किन हेतुओंसे कितने प्रकारकाहै यह सब मैं मूलसमेत सुनना चाहताहूं ३ भीष्मजी बोले कि हे निष्पाप भरतर्षभ अब तुम दानके विषयमें सिद्धान्तों को मुझसे सुनो जैसे २ कि सब वर्णोंमें दानका देना उचित है ४ हे युधिष्ठिर वह दान, धर्म्म, अर्थ, भय, इच्छा और दयासे पांचप्रकार का जानना योग्यहै और जिस हेतुसे पांचप्रकार का होताहै उसकोभी समझो ५ दान देनेवाला इस लोकमें शुभकीर्त्तिको और परलोकमें उस सुखको पाताहै जिससे श्रेष्ठ अन्य सुख नहीं है धर्म्मसे होनेवाला दान दूसरे के गुणों में दोष न लगानेवाले मनुष्योंकी ओरसे ब्राह्मणों के लिये देना योग्यहै ६ यह मुझको देताहै वा देगा इस विचार से जो दान देताहै वह दान अर्थसंयुक्त कहाजाता है इससे याचना करनेवाले जिस वस्तु की याचना करें वही दाताको देना योग्यहै न मैं इसका कोई हूं न यह मेरा कोई है कदाचित् सत्कार न करने से यह कोई पापकरे इसभय से पण्डित मनुष्य अज्ञानी कोभी देवें ७।८ निरालस्य बुद्धिमान् मनुष्य यह विचारकर कि यह मेरा प्याराहै और मैं इसका प्याराहूं अपने मित्र को ऐसा दानदे जिसके देने में दुःख न होय ९ दीनलोग याचनाके योग्यही याचना करतेहैं और थोड़े दानसे प्रसन्नहोते हैं यह समझकर हर दशामें करुणाकरके दीनहीको दानदेना उचितहै १० यह पांचप्रकार का दान पुण्य और शुभकीर्त्ति का बढ़ानेवालाहै इससे अपनी सामर्थ्य के अनुसार देनायोग्यहै यह प्रजापतिजी का कथनहै ११ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशतोपरिअष्टत्रिंशोऽध्यायः १३८ ॥

एकसौउन्तालीसका अध्याय ॥

[illegible]ष्ठिर ने पूछा कि हे सर्वशास्त्रज्ञ बुद्धिमान् पितामह आप हमारे उत्तम भ-

रतबंशमें बहुतसे शास्त्रोंके जाननेसे बुद्धियुक्तहो १ हे शत्रुहन्ता मैं आपसे उस कथाको सुनना चाहताहूं जो कि धर्म्म अर्थ से युक्त होकर सुखके उदय करने वाली सृष्टिको आश्चर्य्यकारी है २ पुरुषोत्तम यह वह समय वर्त्तमान हुआहै जो कि बिरादरी वाले और बांधवोंसे कठिनतासे प्राप्त करने के योग्यहै और आपके सिवाय हमाराहितकारी कोई मनुष्य नहीं है ३ हे निष्पाप राजा भीष्मजी जो भाइयों समेत मैं आपसे पोषण करने के योग्यहूं तो आपसे जो २ प्रश्न मैं करूं उसका उत्तर आप देनेको योग्य हैं ४ सब राजाओं में बड़े साधू यह श्रीमान् नारायणजी बहुत मान और प्रीतिसे संयुक्तहोकर आपको सेवन करते हैं ५ तुम प्रीतिसे मेरे प्रियके निमित्त सब राजालोगों समेत मेरे भाई और इन श्रीनारायण जीके सम्मुख सब वृत्तान्त कहनेको योग्यहो ६ बैशम्पायन बोले कि उसके उस बचन को सुनकर उन गांगेय भीष्मजी ने बड़ी शीघ्रतासे यह बचन कहा ७ कि हे राजा मैं अब तुमसे बड़ी चित्तरोचक कथा बर्णन करताहूं कि पूर्व्वसमयमें इन विष्णुजी का प्रभाव वा शिवजी का प्रभाव अथवा रुद्राणीजी का संशय और शिव पार्वतीजीका जो प्रश्नोत्तरहै इन सबको मैं कहताहूं तुम चित्तसे सुनो ८।९ धर्मात्मा श्रीकृष्णजी ने बारह बर्षका ब्रत कियाथा उस समय नारद और पर्वत ऋषि उन दीक्षित श्रीकृष्णजी के दर्शनके निमित्त आये १० जप करनेवालों में श्रेष्ठ व्यास, धौम्य, देवल, काश्यप, महत्काश्यप ११ और इन्द्रियों के जीतनेवाले दीक्षायुक्त अन्य२ ऋषि जिनके साथमें देवताओं के समान तपोधन सिद्धलोग थे वह सब आये १२ तब प्रसन्नचित्त श्रीकृष्णजीने उनके सत्कार और अतिथि-पूजनको जो अपने कुलकी प्रशंसाके योग्य और देवपूजन के योग्यथा बिचार किया १३ फिर वह सब प्रसन्नमूर्त्ति ऋषिलोग उन आस्तरणों पर बैठगये जोकि हरित उत्तम बर्ण नवीन कुशाओं के बनेहुये थे १४ तब उन सबने राजर्षि देवता और तपोधन ऋषियोंकी धर्मयुक्त मधुर कथाओं को बर्णन किया १५ इसके पीछे ब्रतचर्य्या रूप ईंधन से उत्पन्न नारायण तेज उन अपूर्बकर्मी श्रीकृष्णजी के मुखसे निकलकर अग्निरूप हुआ १६ उस अग्निने वृक्षलता, क्षुप, पशु, पक्षी, हिंसक, पशु, और सर्पोंसमेत उस पर्वतको भस्म करदिया १७ और पर्वतके उस शिखर को भी मथा जोकि नानाप्रकार के मृगों से हाहाकार रूप जीवते जीवोंसे रहित और अकिंचन लोगोंसे दर्शनीय था १८ उस बड़ी अग्नि की ज्वालाने

जब पर्वतको अत्यन्त भस्म करदिया तब उस पर्वतने विष्णुजी के सम्मुख आकर शिष्य के समान दोनों चरणों को आकर स्पर्श किया १९ इसके अनन्तर शत्रुओं के पराजय करनेवाले बिष्णुजी ने उस भस्मरूप पर्व्वत को देखकर अपनी अमृतरूप दृष्टिसे फिर ज्योंकात्यों करदिया २० तब वह पर्व्वत वृक्ष पशु वल्लीलता और हिंसादिक जीवों से यथावस्थित शोभितहुआ सब मुनिलोग इस आश्चर्य्यकारी वृत्तान्तको देखकर कम्पायमान रोमांचों से युक्त नेत्रों में अश्रुपातयुक्तहुये २१ । २२ इसके पीछे उन महावक्ता नारायणजी ने उन ऋषियोंको आश्चर्य्ययुक्त देखकर नम्रतापूर्व्वक प्रीतियुक्त मधुरवचनों से यह पूछा २३ कि हे ऋषिलोगो सदैव संगोंसेरहित ममतासे खाली शास्त्रज्ञहोकर तुम लोगोंको आश्चर्य कैसेहुआ २४ हे निर्द्दोष तपोधन ऋषियो इस मेरे सन्देह को निवृत्त करने के योग्यहो २५ ऋषि बोले कि आपही सृष्टिको उत्पन्नकरके नाश करते हैं आपही शीत उष्ण ऋतुरूप होकर वर्षा को करतेहो २६ पृथ्वी के सब जड़ चैतन्यों के माता पिता रूपभी आपही हो सब लोकों के स्वामी और प्रभुहो २७ हे कल्याणरूप मधुसूदनजी इसप्रकार हमारे संशयोंका उत्पन्न करनेवाला जो आपका तेजरूप प्रकटहुआ अग्नि है उसको आपही कहने के योग्यहो २८ हे नारायणजी इसके पीछे हम सब भी निर्भयहोकर जो कुछ कि हमने देखाहै और सुनाहै उस को वर्णन करेंगे २९ वासुदेवजी बोले कि यह वैष्णव तेज प्रलयाग्नि के समान जो मेरे मुखसे निकला जिससे यह पर्व्वत भस्म होगया ३० क्रोध और इन्द्रियों के जीतनेवाले तपोधन देवताओं के समान आपलोग भी आश्चर्य्ययुक्त होकर पीड़ावान् हुये ३१ वह तपस्वियों का व्रत सेवन करनेसे मुझ व्रत करनेवाले के मुखसे अग्नि प्रकट हुआहै उससे आपलोग पीड़ावान् होने के योग्य नहीं हो ३२ मैं इस पर्व्वत पर व्रतकरके अपने समान पराक्रमी पुत्र को तपस्याके द्वारा प्राप्त करने के लिये आयाथा ३३ जब व्रतकी समाप्ति हुई तब मेरे शरीर में जो आत्माहै वह अग्निहोकर बाहर निकला और लोकों के पितामह वरके देनेवाले शिवजी महाराज के दर्शन को गया ३४ हे बड़े साधू मुनिलोगो उन महात्मा शिवजीने उस मेरे अग्निरूप आत्माको पुत्रभावमें नियतकरके यहवचन कहा कि आधे तेजसे तुम्हारापुत्र होगा ३५ यह वही अग्नि शिष्यके समान मेरेपास आकर मेरी सेवा के निमित्त मेरे चरणों में आकर शान्तहुआ और अब इसने

अपने पूर्व्वरूपको पाया ३६ यह मैंने बिष्णुभगवान्जी के गुप्तरहस्यका संक्षेप वर्णन कियाहै हे तपोधन ऋषिलोगो इससे भय न करनाचाहिये ३७ हे सावधान महात्मालोगो उन्नत दृष्टि के द्वारा आपलोगोंकी विज्ञता सर्वत्रहै तुम सब लोग तपस्वियों के व्रतसे महातेजस्वी और ज्ञान विज्ञान से शोभायमानहो ३८ तुमने स्वर्ग वा पृथ्वीपर जो कुछ आश्चर्य्य देखाहै वा सुनाहै उसको मुझसे कहो ३९ यहां आपसरीखे तपोबननिवासी लोगों के वर्णन कियेहुये उस अमृतरूप बचन के मधुर रसके पीनेकी मेरी इच्छाहै ४० हे देवदर्शन ऋषियो यद्यपि मैं स्वर्ग पृथ्वीआदि के सब दर्शन के योग्य आश्चर्य्योंको जिनको कि तुमने भी नहीं देखा है उन सबको जानता और देखताभी हूं ४१ और वह मेरी पराप्रकृति किसीस्थान में भी नहीं रुकती है और मेरे आत्मामें वर्तमान ऐश्वर्य्यादिक भी मुझको अपूर्व आश्चर्य्यकारी नहीं विदित होते हैं ४२ परन्तु श्रद्धाके योग्य और महज्जनों से श्रवण कियाहुआ आशय विलम्बतक पृथ्वीपर ऐसे नियत होताहै जैसे कि पर्व्वतपर नियत कियाहुआ लेख्य होताहै ४३ सो मैं सज्जनों के मुखसे निकले हुये मनुष्योंकी बुद्धि के प्रकाशक गुप्त आशयोंको सज्जनों की सभामें बर्णन करूंगा ४४ इसके अनन्तर मुनियों के सब समूह श्रीकृष्णजी के पास नियत होकर आश्चर्य्ययुक्त हुये और कमलदलरूप नेत्रों से युक्त उन दुष्टसंहारी बिष्णु जीको देखा ४५ तब किसी ने आशीर्व्वाद दिया और किसी ने उनका पूजन किया और किसी ने ऋग्वेदके मंत्रों से युक्त बचनों के द्वारा इन मधुसूदनजीकी स्तुतिकरी ४६ फिर मुनियों के सब समूहने बड़ेवक्ता वार्त्तालाप करने में सावधान देवर्षि नारदजीको वर्तमान वृत्तान्तके कहनेको प्रेरणाकरी ४७ मुनियों ने कहा हे प्रभु नारदजी तीर्थयात्रा करनेवाले मुनियों ने बुद्धि से बाहर जो वृत्तान्त इस हिमालय पर्व्वतपर देखाहै ४८ उस आश्चर्य्यको इन मुनियोंकी वृद्धिकेलिये श्रीकृष्णजी से आपही कहनेके योग्यहैं ४९ मुनियोंके इस बचनको सुनकर भगवान् देवर्षि नारदजीने प्राचीन वृत्तान्तोंसमेत इस कथाको बर्णनकिया ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशततोपरिएकोनचत्वारिंशोऽध्यायः १३९ ॥

एकसौचालीसका अध्याय ॥

भीष्मजी ने राजायुधिष्ठिरसे कहा कि तब नारायणजी के भक्तभगवान् नारद

जीने शंकरजी और उमादेवी के प्रश्नोत्तरको वर्णन किया १ नारदजी बोले कि देवताओं के ईश्वर धर्मात्मा शिवजी ने उस उत्तम पवित्र सिद्ध चारणों से सेवित २ नानाप्रकार की औषधियों से संयुक्त क्रीड़ाके योग्य बहुत प्रकारके पुष्पों से अलंकृत अप्सराओं के समूहों से व्याप्त और पशु पक्षीआदि जीवों से शब्दायमान हिमालयनामपर्व्वत पर तप किया ३ वहांपर देवदेव शिवजी महाराज उन भूतगणोंसमेत आनन्दयुक्त थे जोकि नानाप्रकारके रूप धारणकरनेवाले दिव्य अपूर्व्वदर्शन ४ सिंह व्याघ्र हाथी शृगाल बघेरा चीता और रीछके समान मुख रखनेवाले सबजातों से युक्त ५ उलूक भेड़िया बाघ और मृगों के समान मुख अनेक वर्णवाले भयानकरूप इत्यादि सब प्रकारके रूपों से संयुक्तथे ६ वह शिवजी किन्नर यक्ष गन्धर्व राक्षस और भूतगणोंसमेत परमानन्द रूपथे उन शिवजी की सभा दिव्यबाजों से शब्दायमान अनेकरंग के पुष्पों से युक्त देदीप्य ज्वालाओं से व्याप्त सुगंधित चंदनसहित और दिव्य धूपों से धूपितथे ७ । ८ मृदंग, पणव, शंख और भेरी के शब्दों से भी शब्दायमान चारोंओरको नृत्य करनेवाले भूतगण और मोर पक्षियों से शोभायमानथे ९ और जिसमें दिव्यअप्सरा नृत्य करनेवाली थीं वह देवऋषियों के समूहों से सेवित देखने में प्रियबाणी से परे दिव्य और अपूर्व्वदर्शन के योग्यथे १० वह पर्व्वत उन शिवजी के तपसे शोभायमान हुआ जोकि वेदपाठ और जपमें नियत वेदपाठियों के वेदघोष से शब्दायमानथा ११ हे माधवजी वह शैल्य भँवरों के उपगीतों से अनूपरूप वाला था हे जनार्द्दनजी इसके पीछे उस बड़ी उत्सवरूप भयकारी सभाको देखकर १२ सब मुनियों के समूह बहुत प्रसन्नहुये महाभागमुनि ऊर्ध्वरेता सिद्ध १३ मरुद्गण, अष्टवसु, साध्यगण, इन्द्रसमेत विश्वेदेवा नाग पिशाच सब लोकपाल अग्नि १४ वायु और सब महाभूत उस स्थान में इकट्ठेहुये वहां सब ऋतुओं ने भी बड़े अपूर्व्व सबप्रकारके फूलों से उस स्थान को शोभित किया १५ और प्रकाशमान औषधियों ने उसवनको प्रकाशितकिया उस पर्व्वतके सुन्दर शिखरोंपर प्रसन्नता युक्त पक्षी अपनी मधुर और प्यारी बोलियोंको बोलतेहुये नाच २ कर शब्दोंको करनेलगे उस दिव्यधातुओं से अलंकृत पर्व्वत के एक भागमें महासाहसी दिव्यरूप शिवजी महाराज एक पलंग पर बिराजमान व्याघ्रचर्म्म सिंहचर्म्म का धारणकरनेवाले १६ । १७ । १८ सर्पका यज्ञोपवीत और लाल बाजूबन्दों

से अलंकृत पिंगलवर्ण डाढ़ी मूछ और जटाधारी भयानकरूप असुरों के भय-
कारी १६ सबजीव और भक्तोंको निर्भयता देनेवाले वृषभध्वजथे उनको देखकर
सब महर्षीलोग शिरकेबल दण्डवत्कर पृथ्वीपर बैठे २० वह महर्षी सब संगों से
रहित क्षमावान् और पापों से मुक्त थे उससमय जीवमात्रों के स्वामी शिवजी
महाराज की वह भयानकरूप सभा अत्यन्त शोभायमान हुई २१ हे मधुसूदन
जी एकक्षणभरमेंही वह महाउग्र अजेय उरगों से व्याप्त २२ उग्ररूप शिव जी
की सभा महाभयानक रूप होकर शोभायमान हुई उस समय भूतों की अनेक
स्त्रियों से व्याप्त शिवजी के ही समान बिस्तर और व्रतों की रखनेवाली सबती-
र्थों के जलों से पूरित सुवर्ण का कलश लिये शुभरूप पार्व्वती जी भी उस
सभा में आईं २३। २४ उन पार्व्वतीजी के ओर पास में सब नदियां स्त्रीरूप
किये हुये वर्त्तमानथीं इसके पीछे पार्व्वतीजी उन सब स्त्रियोंसमेत वहां से उठ
कर महादेवजी के वामांगमें वर्त्तमानहुईं २५ वहां पहुँचकर मन्दमुसकान करती
सुन्दर हास्य करतीहुई श्रीपार्व्वतीजी ने दोनों हाथों से शिवजी के दोनों नेत्र
बन्दकर दिये २६ उन नेत्रों के ढकने से यह संसार प्रकाशरहित अचेष्ट होकर
हवन और वषट्कार से खाली होगया २७ तब सब जीव मनसे भयभीत हुये
अर्थात् शिवजीके नेत्र बन्दहोनेसे सब संसार नेत्रोंकरके अन्धों के समान होगया
२८ इसकेपीछे यहलोक क्षणभरही में प्रकाशमान होगया क्योंकि उन शिवजी
के ललाटसे बड़ी प्रकाशयुक्त ज्वाला निकली २९ उनका तीसरा नेत्र जो कि
प्रलयकाल के सूर्यकेसमान प्रकाशित था उसनेत्रकी अग्नि प्रकाशितहुई उसी
से यह पर्वत भस्महोगया ३० तब तो शिवजी के बड़े नेत्रको अग्नि के समान
खुलाहुआ प्रज्वलित देखकर पर्वतने शिवजी को प्रणाम किया ३१ और शाल
सरलनाम वृक्ष सुन्दर चन्दनके बन दिव्य औषधी आदि वनस्पति और भयभीत
होकर भागनेवाले शिवजीकी शरणमें आनेवाले और अपनी रक्षाका आश्रय
न पानेवाले मृगसमूहों से वह सभा संकुल होकर महाशोभितहुई ३२। ३३ और
चञ्चल बिजलीके समान अग्निकेसदृश प्रकटहुये द्वादशसूर्य के समान दूसरी
प्रलयकालकीतुल्य ज्वालाने आकाशको स्पर्शकिया ३४ उस अग्निसे क्षणभर-
हीमें वह हिमालयपर्वत शिखर और सब धातुओंसमेत भस्महोगया जिसमें सब
निरपराध पशु पक्षी और औषधी जलगईथीं ३५ इसके पीछे हिमाचलपर्वत की

पुत्री देवीपार्वतीजी उस भस्महोजानेवाले पर्वतको देखकर शिवजीकी शरण में आकर हाथ जोड़कर खड़ीहुईं ३६ तब शिवजीने उमादेवी को स्त्रीभावसे मृदुल स्वभाववाली पिताका दुःख न चाहनेवाली देखकर बड़ी प्रीतिपूर्व्वक उस पर्वत को देखा ३७ उनके देखतेही वह पर्व्वत यथावस्थित पूर्व्वकेही समान वृक्ष बल्ली फल पुष्पोंसे और अनेक पक्षियोंसे व्याप्त होकर शोभायमान हुआ ३८ तब तो अपनी पूर्व दशामें प्राप्तहोजानेवाले पर्वतको देखकर प्रसन्नचित्त निर्दोष देवीने सब सृष्टिके स्वामी शिवजी से यह बचनकहा ३९ कि हे सब जीवमात्रोंके ईश्वर महाव्रती शूलधारण करनेवाले भगवान् मुझको बड़ा सन्देह पैदाहुआहै उसको आपही निवृत्त करने को समर्थ हैं ४० प्रथम तो आपके ललाट में तीसरा नेत्र किसनिमित्त प्रकटहुआ और सब बनस्पति और पशु पक्षियों समेत यह पर्व्वत किस निमित्त भस्महुआ ४१ और फिर आपने उसको इसकारण से अपनी पूर्व दशामें नियतकिया और मेरे पिताकोभी फिर सबवृक्षोंसे आच्छादित करदिया ४२ महेश्वरजी बोले हे आनन्दित देवी तुमने अज्ञानता से मेरे दोनों नेत्र ढक दिये इसीसे यह संसार क्षणभरमेंही प्रकाशसे रहितहोगया ४३ हे पार्वती इसरीति से सूर्यके गुप्तहोने और संसारमें अन्धकार के छा जानेपर मुझ संसारके रक्षकने अपना तीसरा नेत्र प्रकटकिया ४४ उस नेत्रका बड़ा उग्रतेजथा जिससे कि यह बड़ाभारी पर्व्वत भस्महोगया हे देवी अब मैंने तेरे अभीष्टके लिये फिर अपनी मुख्यदशा को धारणकिया ४५ उमा बोलीं कि हे भगवन् आपका पूर्व्वदिशाका मुख किसकारण चन्द्रमाके समान अपूर्वदर्शन के योग्यहै और इसीप्रकार उत्त-रीय और पश्चिमीय मुख भी किसहेतुसे शोभासे चित्तरोचक हैं ४६ और दक्षि-णीय मुख किसनिमित्त रुद्ररूपहै और जटा किसहेतुसे कपिल वर्ण है आपका कण्ठ किसहेतुसे मोरपक्ष के समान नीलाहोगयाहै ४७ और हे देवता आपके हाथमें पिनाक धनुष किसकेलिये सदैव नियत रहताहै तुम सदैव जटिल और ब्रह्मचारी काहेसे रहतेहो ४८ हे प्रभु वृषभध्वज आप इनसब मेरे संशयों के दूर करनेको योग्यहो मैं आपके साथमें धर्माचरण करनेवाली आपकी और भक्तहूं ४९ भीष्मजी ने कहा कि पार्वती के यह सब बचन सुनकर भगवान् शिवजी उ-सके बुद्धिकी धैर्यसे प्रसन्नहुये ५० इसके अनन्तर शिवजीने कहा कि हे ऐश्वर्य-वती पार्व्वती जिस २ कारणसे यहसब मेरेरूपहैं उन सब हेतुओंको सुनो ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेउमामहेश्वरसंवादोनामशतोपरिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

एकसौइकतालिसका अध्याय ॥

इसरीतिसे शिवजी और श्रीकृष्णजीकी एकताको कहकर चतुर्मुख ब्रह्माजी से भी जो ऐक्यता है वह भी वर्णन करते हैं श्रीभगवान् बोले कि पूर्व्वसमय में ब्रह्माजी ने सब रत्नों के तिल२ भरके अवयवोंको लेकर तिलोत्तमा नाम शुभरूप वाली उत्तमस्त्री उत्पन्नकरी १ हे शुभ देवी वह स्वरूपमें अनूपम सुन्दरमुखी तिलोत्तमा परिक्रमाओं से मनको मोहनकरतीहुई मेरे पास आई २ जिधर जिधरसे वह प्रसन्न दर्शनवाली तिलोत्तमा मेरे पास आई हे देवी उधरही उधरको मेरा सुन्दर मुख प्रकटहुआ ३ उसके देखनेकी अभिलाषासे मैंने योगसे चारमूर्त्तिवालाहोना अङ्गीकार किया उत्तम योगको दिखलाताहुआ मैं चतुर्मुखहुआ ४ उन मुखोंमेंसे पूर्वके मुखसे तो इन्द्रके देशमें राज्य करताहूं हे आनन्दिते उत्तरीय मुखसे तेरेसाथ रहताहूं ५ और मेरा पश्चिमका मुख प्रियदर्शन चित्तरोचक और जीवमात्रों का सुख उत्पन्न करनेवाला है और जो भयकारी रुद्ररूप दक्षिणीय मुखहै वह संसार का नाशकरनेवाला है ६ और संसारकी वृद्धिकेलिये मैं जटिल और ब्रह्मचारीहूं और देवताओंकी कार्यसिद्धीके निमित्त मेरेहाथमें सदैव पिनाकधनुष रहताहै ७ पूर्वसमयमें लक्ष्मी के चाहनेवाले इन्द्रने मुझपर वज्रको छोड़ा वह वज्र कण्ठसे अपने तेज बलको करके चलागया इसी हेतुसे मेरी श्रीकण्ठताहै अर्थात् मैंने दासोंके अपराधों को क्षमाकिया और उनकी कीर्त्तिकेही निमित्त नीलकंठहुआ हूं इस बर्णनसे मैंने अपनी परम दयालुता प्रकटकी है ८ उमाबोलीं कि हे बड़े साधू देवता अन्य उत्तम २ अनेक शोभायमान सवारियों के वर्त्तमान होनेपर बैलनेही किसकारणसे आपकी सवारीके अधिकारको प्राप्तकिया ९ महेश्वरजी बोले कि ब्रह्माजीने देवताओंकी दूधकी देनेवाली सुरभीनाम गौको उत्पन्नकिया वह उत्पन्नहोकर दूधरूप अमृतको देतीहुई अनेक रूपोंसे प्रकटहुई अर्थात् बचन रूप गौके चारथनहैं स्वाहाकार, हंतकार, स्वधाकार, बषट्कार इन चारोंसे पोषण प्राप्तकरनेवाला गोधर्म गोवृष नामहै उसकाफल रूप परमवैराग्य विवेक आदिक फेनके समानहै जब वह उपायों से प्राप्तहोताहै तब बचनरूप गौका पारमार्थिक फलसिद्ध होताहै १० उस सुरभीके बछड़े के मुखसे छूटाहुआ फेन मेरे शरीर पर गिरा इसकेपीछे मेरे तेजसे संतप्त होनेवाली गौओं ने नानाप्रकार के वर्णों को

पाया ११ फिर प्रयोजन के ज्ञाता लोकके गुरू ब्रह्माजी ने मुझको शान्तकिया और इस बैलको मेरीसवारी और ध्वजाके निमित्तदिया तात्पर्य यहहै कि गौओं का वर्ण जो नानाप्रकारका होताहै यही धर्मका स्वरूपहै और ध्वजा जीवनमुक्त स्वरूप को जतलानेवाली है १२ उमा बोलीं कि स्वर्ग में आपके निवासस्थान बहुत रूपवाले और सबगुणोंसे संयुक्त हैं हे भगवन् आप उन सब उत्तमस्थानों को त्यागकरके श्मशान भूमिमें क्यों निवासकरतेहो १३ वह श्मशान भूमिवाले और हड्डियोंसे युक्त भयानकरूप कपालरूप घटोंसे व्याप्त बहुतसे गिद्ध शृगालों से पूर्ण सैकड़ों अग्निकी चिताओंसे आकीर्ण १४ अपवित्र मांससे व्याप्तरुधिर मज्जारूप कीचड़वाला शृगालों के शब्दोंसे शब्दायमानहै और जिसमें आंत-और हड्डियां फैलरही हैं १५ महेश्वरजी बोले कि मैं पवित्र स्थानोंको ढूंढ़ताहुआ सदैव पृथ्वीपर घूमताहूं इसलोक में श्मशाम भूमिसे अधिक कोई स्थान पवित्र नहीं दिखाई देताहै इसके आशय को लिखते हैं कि प्रथम मैत्रेयजीकी भिक्षामें व्यासके बचनोंसे सिद्धकिया गयाहै कि मोक्षके चाहनेवाले मनुष्योंको काशीजी में गुप्त निवास करना उचितहै पूर्वमें उस काशी में थोड़ी भिक्षादेने मैत्रेयका बड़ा पुण्यहोने से काशीका पवित्रक्षेत्र होना कहागया आदिमें काशी क्षेत्रके मृतक दर्शन के द्वारा शिव दर्शनकी सिद्धी प्रकटहोने से जीवनमुक्तों का शरीर शिव-लिंगरूप होताहै आशय यहहै कि श्मशानके कहने से काशीक्षेत्रका कहना प्र-योजनहै उन्नीसवें श्लोक को ध्यानकरो १६ इसी हेतुसे सब निवासस्थानों में से ऐसी श्मशान भूमिहीमें मेराचित्त रहताहै जोकि बटवृक्ष की शाखाओंसे आच्छा-दित बिनाभोगीहुई मालाओंसे शोभायमान हो १७ हेपवित्र मुसकानवाली देवी यह मेरे भूतोंके समूह उस श्मशान में रहते हैं और मैं अपने भूत समूहोंके बिना रहना अंगीकार नहीं करताहूं १८ हे शुभपार्वती मैंने इस पवित्रस्थानको स्वर्गसे सम्बन्ध रखनेवाला मानाहै यह उत्तम और पवित्रतम अर्थात् काशीपुरीका क्षेत्र ब्रह्मकी प्राप्ति चाहनेवाले पुरुषों से सेवन किया जाता है १९ उमा बोलीं कि हे सर्व गानबिद्याके जाननेवाले धर्ममें उत्तम सब जीवोंके ईश्वर पिनाक धनुषधारी वरदाता शिवजी यह मेरा बड़ा सन्देहहै कि मुनियोंके सब समूहने तपस्याकरी और नाना प्रकार का रूप रखनेवाला वह ऋषियों का समूह तपकी इच्छा से घूमरहाहै २० । २१ हे शत्रु संहारी आप मेरे इस ऋषिसमूह के उपकार के लिये

इस सन्देह को दूर करने के योग्यहैं २२ धर्म्म का क्या लक्षणहै धर्म्मके न जानेवालों से कैसे करना सम्भवहै हे धर्म्मज्ञ प्रभु इसकोभी आप मुझे समझाइये २३ नारदजी बोले कि इसके पीछे मुनियोंके सब समूहने उन बचनोंसे जिनका अर्थ ऋग्वेद के मन्त्र और स्तुतियों से शोभायमान था और महा उत्तम अर्थ वाले स्तवों से उस देवीकी स्तुति करी २४ महेश्वर जी बोले कि अहिंसा सत्य बोलना सब जीवों पर दया जितेन्द्री होना सामर्थ्य के अनुसार दान यह सब धर्म्म उत्तम गृहस्थीके हैं २५ दूसरेकी स्त्रीसे संग न करना स्त्री और पराई धरोहड़की पूरीरक्षा बिनादीहुई बस्तुका न लेना मांस मदिराका त्याग २६ यहपांच प्रकारका धर्म्म जोकि बहुत शाखाओं का रखनेवाला सुखोंका उदय करनेवाला और धर्म्म के पुण्यका उत्पत्तिस्थान है शरीरधारी धर्म्मात्मा लोगों से करने के योग्यहै २७ उमा बोलीं हे भगवन् जो मैंने अपना सन्देह आपसे पूछाहै उसको आप कहिये अपने २ बर्ण में चारोंबर्णों का जो धर्म्म सुखदायी है २८ ब्राह्मण और क्षत्रियमें कैसा २ धर्म्म नियत है और बैश्य वा शूद्रमें कौनसे लक्षणवाला धर्म्म होना चाहिये २९ महेश्वरजी बोले कि हे महाभाग उमा तुमने न्यायपूर्वक सब प्रश्न अच्छे किये इस लोकमें महाभाग ब्राह्मण सदैव भूमिदेवहैं ३० ब्राह्मण का धर्म्म निश्चय करके सदैव उपवास करना है धर्म्म अर्थ से युक्त वही ब्राह्मण ब्रह्मभाव के योग्य समझाजाताहै ३१ हे देवी उसका न्यायके अनुसार ब्रह्मचर्य व्रत और यज्ञोपवीत का धारण करना यही ब्रतहै जिससे कि उसका द्विजनाम होताहै ३२ धर्म्मात्मा शरीरवाले को गुरू और देवता के पूजन के लिये धर्मका उत्पत्तिस्थान वेदनाम ब्रतका अभ्यास करना उचित है ३३ उमा बोलीं हे भगवन् अब आप चारोंवर्णों के धर्म्मों को अपनी विज्ञानता से वर्णन करिये ३४ महेश्वरजी बोले कि गुप्त धर्मका सुनना और वेदब्रतका अभ्यासही धर्म्म हैइसी प्रकार गुरूके यज्ञके कार्य्यों का करना भी बड़ा धर्म्म है वहभी अवश्य करने के योग्यहै ३५ सदैव यज्ञोपवीत धारण करनेवाले ब्रह्मचारीको भिक्षा करना उत्तम धर्म्महै वेद पढ़नेवालेको और जप करनेवालेको ब्रह्मचर्य्य आश्रममें रहना धर्म है ३६ गुरू की आज्ञा पानेवाला द्विज समावर्त्तन नाम स्नान करे फिर अपने योग्य सबर्णा स्त्री को विधि के अनुसार विवाह करके प्राप्त करे ३७ शूद्रके अन्न का त्याग और सत्पुरुषों के मार्ग का सेवन करना धर्म्म है इसी प्रकार सदैव

व्रत करना और ब्रह्मचर्य्यसे रहनाभी धर्म्म है ३८ गृहस्थी मनुष्य अग्निका स्थापन करनेवाला वेदपाठी हवनकर्त्ता पक्का जितेन्द्री देवता आदि के शेष अन्नका खानेवाला नियतसे आहार करनेवाला और सत्यवक्ता होय ३९ अतिथि व्रतधर्म है गृहस्थीलोग इष्टी और पशुबन्धनाम यज्ञोंको विधिके अनुसारकरें ४० यज्ञधर्म उत्तमहै इसीप्रकार शरीरधारीकी हिंसा न करना धर्म है एकसमय भोजन करना धर्म है देवताआदि से शेष बचाहुआ भोजनकरना धर्म्म है ४१ सब बालबच्चों के पीछे भोजन करना गृहस्थी ब्राह्मण और मुख्यकरके वेदपाठीकाधर्म कहाजाता है स्त्री पुरुषका एकसा स्वभाव होना गृही देवता और अन्य देवताओंकी सदैव पुष्पों से बलिक्रिया करना गृहस्थी का धर्म्म है ४२। ४३ सदैव गोबरआदि से शरीरपर मलना धर्म्म है इसीप्रकार सदैव व्रतकरना धर्म्म है अच्छी सफाई और लिपाई से संयुक्त घरमें घृतका धुआं वर्त्तमान होना धर्म्म है यह द्विजलोगों का लोकके धारण करनेवाला धर्म्म है सत्पुरुष ब्राह्मणोंको यह धर्म्म सदैव वर्त्तमान रहताहै ४४। ४५ हे देवी जो तुमने क्षत्री में नियत धर्म्म वर्णनकिया उसको मैं कहता हूं तुम सावधान होकर सुनो ४६ क्षत्रियका धर्म्म प्रारम्भही से प्रजा का पालन करना कहा गया है खेती के छठे भागका लेनेवाला राजा धर्म्म से युक्त होता है ४७ जो राजा धर्म्मसे प्रजाका पालन करता है उसको प्रजा पालनता आदि धर्म्मसे उत्तम लोकोंकी प्राप्ति होती है ४८ और जितेन्द्री, वेदपाठ, अग्निहोत्र करना, दान, जप, यज्ञोपवीत धारण करना, यज्ञ, धर्म्मक्रिया, पालनके योग्य दास आदिकों का पोषण करना और उनकी ओरसे पूरे कामके होनेपर पारितोषिक आदि को देना ४९। ५० और अपराधियों को दण्ड देना वेदमें लिखे हुये यज्ञ और व्यवहारों को अच्छी रीति से करना व्यवहारों में स्थिर बुद्धिता सत्य बोलने में प्रवृत्त चित्तहोना यह सब राजाके धर्म्म हैं ५१ पीड़ामान मनुष्य के हाथों में देनेवाला राजा इसलोक और परलोकमें प्रतिष्ठाकोपाताहै गौब्राह्मण के कार्य्योंमें पराक्रम करनेवाला युद्धमें मरनेवाला राजा ५२ स्वर्ग में उन उन लोकोंको पाता है जोकि अश्वमेध यज्ञसे प्राप्त होते हैं ५३ वैश्यका धर्म्म सदैव गौ आदिका पोषण खेतीकरना अग्निहोत्र करना दान वेदपाठ जप ५४ व्यापार सत्पुरुषोंके मार्ग में वर्त्तमान होना अतिथि पूजन जितेन्द्री होना वेदपाठी ब्राह्मण का आदर सत्कार और उनको देना यह वैश्यका सनातन धर्म्म है ५५

व्यापार मार्ग में वर्त्तमान सत्पुरुषों के मार्ग में आश्रित होकर वैश्य तिल रस और गेहूं आदिका बेचना नहीं करे ५६ सामर्थ्य के अनुसार जैसा उचितहै वैसाही सर्वत्र अतिथि पूजन और त्रिवर्ग का साधन करे और सदैव तीनों वर्णों की सेवा करना यही शूद्रोंका परमधर्म्म है ५७ तेजतपवाला सत्यवक्ता जितेन्द्री समीप आनेवाले अतिथिकी सेवा करनेवाला शूद्र बड़ेतपोंको इकट्ठाकरताहै ५८ सदैव शुभाचरणवाला देवता ब्राह्मण का पूजन करनेवाला बुद्धिमान् शूद्र अभीष्ट धर्म्मके फलोंसे संयुक्तहोताहै ५९ हे शोभामान सुन्दर ऐश्वर्यवान् देवी यह वर्णोंका जुदा २ धर्म्म पृथक् २ करके तेरे आगे वर्णनकिया अब दूसरी कौनसी बात सुनाचाहती है ६० उमा बोलीं हे भगवन् आपने चारोंवर्णों का हितकारी मुख्य धर्म्म वर्णन किया अब सर्वव्यापी धर्म्मको मुझे सुनाइये ६१ महेश्वर जी बोले कि गुणोंके निश्चय जानने के अभिलाषी ब्रह्माजी ने सब लोकोंकी सृष्टि के उद्धार करनेकी इच्छासे लोकके सारभूत ब्राह्मण उत्पन्न किये वह इस पृथ्वी पर भूमिदेव कहाते हैं ६२ उन्हों के धर्म्म कर्म्म का उदय रूप जो फलहै उसको वर्णन करूंगा जो धर्म्म कि ब्राह्मणोंमें है उसीको श्रेष्ठ माना है ६३ सृष्टिकी उत्पत्ति के समय ब्रह्माजी ने यह तीन धर्म्म उत्पन्न किये वह तीनों धर्म्म सृष्टिके निमित्त सदैव प्रकट होते हैं वह यहहैं ६४ प्रथम धर्म्म वेदोक्त है दूसरा स्मृत्योक्त तीसरा श्रेष्ठ लोगों का आचरण किया हुआ होताहै यह तीनों धर्म्म सनातनहैं ६५ ज्ञानी ब्राह्मण त्रिवेदी है दूसरे के निमित्त वेदपाठ अथवा जप करने से अपनी जीविका करनेवाला नहीं है दान वेदपाठ यज्ञ इन तीनों कर्म्मों का करने वाला काम क्रोध और लोभसे पृथक् होनेवालाहै यह ब्राह्मण मैत्र अर्थात् मित्र कुल कहाजाता है ६६ भुवनेश्वर ने इन छः कर्म्मोंको ब्राह्मणों की जीविका के निमित्त वर्णन कियाहै उन सनातन धर्म्मोंको सुनो ६७ यज्ञ करना यज्ञ कराना दान देना दान लेना पढ़ना पढ़ाना इन छः कर्म्मोंका करनेवाला ब्राह्मण धर्म्म का भागी है ६८ सदैव वेद पढ़ना अथवा गायत्री का जप करना धर्म्म है यज्ञ करना सनातन धर्म्म है सामर्थ्य और बिधिके अनुसार दानदेना प्रशंसा किया जाताहै ६९ जितेन्द्री होना और बैराग्य धर्म्म यह दोनों सदैव सत्पुरुषों में प्रचलितहैं अत्यन्त पवित्र गृहस्थियों के धर्म्मका बड़ा समूह होताहै ७० जो पांचों यज्ञों के करने से पवित्रात्मा सत्यवक्ता दूसरे के गुण में दोष न लगानेवाला;

दानी, ब्राह्मण का सत्कार करनेवाला, अत्यन्त स्वच्छ स्थान रखनेवाला ७१ अहंकार रहित सदैव मधुर और सत्यभाषी शुद्ध वार्त्ता करनेवाला अतिथि अभ्यागत से प्रीति करनेवाला देवता आदि से शेष बचे हुये अन्न का भोजन करनेवाला मनुष्य ७२ न्याय के अनुसार पाद्य, अर्घ, आसन, शयन, दीप और स्थानको देताहै वही धार्म्मिक अर्थात् धर्म्मका अभ्यासी है ७३ प्रातःकाल उठकर आचमन पूर्व्वक भोजन के निमित्त निमन्त्रण देकर सत्कार करनेके अनन्तर कुछ चरण पीछे २ चले उसीका सनातन धर्म्म है ७४ सब प्रकारसे सामर्थ्य के अनुसार प्रतिदिन तीनोंवर्णोंका पूजन और सेवन करना शूद्रोंका धर्म वर्णन किया ७५ प्रवृत्ति लक्षणवाला धर्म्म गृहस्थियों में बिचार किया जाताहै वह गृहस्थ धर्म्म भी सब जीवोंको शुभ फलका देनेवालाहै उस शुभधर्मको अब वर्णन करताहूं ७६ अपनी सामर्थ्य के अनुसार सदैव यज्ञ और दान करना योग्य है ऐश्वर्य्य के चाहनेवाले पुरुषको पुष्टि कर्म्म करना उचितहै धर्म्मको उत्तम माननेवाले पुरुषोंको धर्मसे प्राप्तहोनेवाले धनके तीनबिभाग करनेचाहिये ७७।७८ उन तीनोंभागों में से प्रथम भागकरके तो धर्म्म अर्थ करनायोग्यहै दूसरे भागसे काम प्राप्तकरे और तीसरे भागको बहुत बढ़ावे ७६ निवृत्ति लक्षणवाला दूसरा धर्म्म मोक्षकेअर्थ नियत होताहै अब उसकी वृत्तीको वर्णन करताहूं हे उमादेवी उसको तुम मूल समेत मुझसे सुनो ८० सब जीवोंपर दयाकरना एक ग्राममें निवास न रखना आशारूपी बंधन से रहित जो धर्म्म है वह मोक्षके चाहनेवालों का कहा जाताहै ८१ जल, बिछौना, आसन, त्रिदंड, शय्या, अग्नि और स्थानसे पृथक् रहना योग्यहै ८२ हे महाभाग जो पुरुष ब्रह्मज्ञान से प्राप्तहुई गति में मन बुद्धि और चित्तका लगानेवाला और उसमें नियत होकर योग और ज्ञानसेयुक्त ८३ सदैव वृक्षोंके मूलमें अथवा उजड़ेहुये स्थान में निवास करनेवाला नदीके तटों पर सोनेवाला और बिहार करनेवालाहै ८४ सब संग और उपसंगों से रहित वह ब्रह्मज्ञानी अपनीही आत्मा में परमात्माको देखे ८५ स्तंभ के समान निश्चल और निराहार वह योगी मोक्ष शास्त्रके लिखेहुये कर्म्मों के द्वारा संन्यासी होताहै उसका धर्म्म भी सनातनहै ८६ एकही स्थानपर चित्त न लगानेवाला और एक ग्राममें वास भी न करनेवाला एकही पुलिनपर अर्थात् नदी के तटपर सदैव न सोनेवाला होकर मुक्त और जीवनमुक्त रूपहोके भ्रमण करताहै ८७ यह सत्पु-

रुषोंका सन्मार्ग मोक्षके चाहनेवालोंका वेदोक्त धर्म्म है जो इस मार्गमें चलताहै उसका चिह्न भी वर्त्तमान नहीं ८८ संन्यासी चारप्रकारके हैं कुटीचक, बहूदक, हंस, परमहंस, अर्थात् कुटीचक, वह हैं जो त्रिदंडीहोकर घरमेंहीरहै बहूदक, वह है जो त्रिदंडी होकर तीर्थमें घूमता है हंस, वहहै जो दंड धारणकरके आश्रम में सावधान होताहै परमहंस, वह है जो दण्डी होकर तीनोंगुणों से पृथक् होताहै इनमें जो चौथाहै यह सबसे श्रेष्ठहै ८९ इससे कोई न श्रेष्ठहै और न इससे दूसरा कोई अन्तकापदहै यह सुख दुखसे रहित सौम्य अजर अमर और न्यूनता विना है ९० उमाबोलीं कि सुजनोंसे अभ्यास कियाहुआ गृहस्थधर्म्म और जीवलोक का कल्याण करनेवाला मोक्षधर्म आपने वर्णन किया ९१ हे धर्म्मज्ञ अब मैं ऋषियों के उत्तमधर्म्मोंको सुनाचाहती हूं क्योंकि तपोवनवासियों में मेरी सदैव प्रीति होतीहै घृतके धुवें से जो सुगन्धि होती है वह तपोवनको व्याप्तकरती है हे महेश्वरजी उसको देखकर मेराचित्त प्रसन्नहोताहै ९२।९३ हे धर्म्म अर्थ के मूलसमेत जाननेवाले देवताओं के भी देवता महेश्वरजी मुनि धर्म्म के विषय में जो मेरा संशयहै उसको आपकहिये ९४ हे महादेवजी जो २ मैंने आपसे पूछाहै उसको सम्पूर्णताकेसाथ वर्णन कीजिये ९५ श्रीभगवान् शिवजीबोले कि हे शुभदेवी अवश्य सबसे उत्तम उस मुनियों के धर्म्मको कहताहूं जिसके करनेसे संन्यासी लोग तपस्याकेद्वारा सिद्धीको पाते हैं ९६ हे धर्म्मज्ञ महाभाग पार्वती उनधर्मज्ञ सत्पुरुषों में श्रेष्ठ फेनपनाम ऋषियोंका जो धर्म है वह मुझसे सुनो ९७ वह ब्रह्मवंशसे सम्बन्ध रखनेवाले फेनोत्करनाम ऋषि उत्तम अन्नको थोड़ा २ करके संचय करते हैं वही अमृतहै जिसको ब्रह्माजी ने भोजनकिया वह यज्ञमें वृद्धिद्वारा और स्वर्ग में दिव्य भोगरूप से प्रकटहै ९८ हे तपोधन उन पवित्रात्मा फेनप ऋषियों की धर्म्मचर्य्या से उत्पन्नहुआ यह मार्ग है अब बालखिल्य ऋषियों के कियेहुये धर्म्मको सुनो ९९ तपसे पवित्र शाकुनीनाम वृत्तिमें नियतधर्मज्ञ बालखिल्य मुनि सूर्यमण्डलके मध्यमें उंछवृत्ती से जीविका करते हैं १०० वह तपोधन बालखिल्यऋषि मृगचर्म वा वृक्षके वल्कलके चीररखनेवाले दुखसुखादि योगोंसे जुदे सन्मार्गमें वर्त्तमानहैं १०१ वह ऋषि नर अंगुष्ठ के समान शरीर रखनेवाले होकर अपने २ मार्गमें नियत होकर तपकरना चाहते हैं उनके धर्मका भी बड़ा फलहै १०२ वह देवकार्य्य की सिद्धीकेलिये देवताओं से समानता प्राप्तकरते हैं

और तपसे पापों को भस्मकरके सबदिशाओं को प्रकाशित करते हैं १०३ और जो दूसरे पवित्रात्मा दयाधर्म से युक्त चक्रचर नामसन्तहैं और पवित्र चन्द्रलोक में विचरतेहुये १०४ पितृलोकके सम्मुख नियतहैं वह बुद्धिके अनुसार चन्द्रमाकी किरणोंको पानकरते हैं वह प्रतिदिन पात्रको खाली करनेवाले अर्थात् द्वितीय पदार्थ को न रखनेवाले पत्थरपर कूटकर खानेवाले दांतों को ऊखल बनानेवाले हैं १०५ उन सबका अग्निहोत्र पितरों का पूजन और पांचों यज्ञोंका करनाही धर्म कहाजाताहै १०६ जो इन्द्रियों से सावधान सोमप और ऊष्मप नाम ऋषि अपनी स्त्रियों समेत देवताओं के सम्मुख नियतहोकर किरणों को पान करते हैं १०७ हे उमा चक्रचर और देवलोक चारी ब्राह्मणों से यह ऋषि धर्म्म प्राप्तकिया गयाहै अब इसके विशेष जो दूसरा धर्म्म है उसको भी मुझसे सुनो १०८ सब ऋषिधर्मों में जितेन्द्रिय पुरुषों को आत्माका जानना योग्यहै इसके पीछे काम क्रोधका जीतना उचितहै यह मेरा मतहै १०९ अग्निहोत्र करना सनातन धर्म्म रात्रि में नियतहोना सोमयज्ञमें दीहुई पांचवीं यज्ञदक्षिणा ११० सदैव यज्ञकरना देवता पितरों के पूजनमें प्रीति रखना धर्म है उंछवृत्ती के संचित अन्नसे सब प्रकार अतिथिका पूजनकरना उचितहै १११ उपभोगों में अप्रीति, गोरसों का भोजन, जितेन्द्रियहोना गुप्तप्रीति स्थण्डिलमें शयनयोग शाकपत्रादिका खाना ११२ फल मूल वायु जल और शैवलका भोजन यह ऋषियों के नियमहैं उन्हीं नियमों के द्वारा ऋषिलोग अजेत गतीकोभी बिजय करते हैं ११३ जब गृहस्थाश्रमियोंके घरमें निर्धूम अग्निहोय मूसलरखदिया हो सब मनुष्योंने भोजन कर लियाहो पात्रोंकी शुद्धी होगईहो भिक्षुकभिक्षा लेगयेहों तब उनके घरोंमें से भिक्षा करनी उचितहै ११४ जो अतिथि का बुलानेवाला शेषबचेहुये अन्नका भोजन करनेवाला धर्म्म में प्रवृत्त और शान्तहै वह मुनिधर्म्म से संयुक्त होताहै जो जड़ मनुष्यके समान अहंकारी अप्रसन्न और आश्चर्ययुक्त न होवे शत्रु मित्र में एक भाव होय वह धर्मज्ञों में श्रेष्ठहै ११५। ११६॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशतोपरिएकचत्वारिंशोऽध्यायः १४१॥

एकसौबयालिसका अध्याय॥

उमाबोलीं कि सावधान ब्रतवाले चतुरऋषि उन पवित्र रमणीय देशों में

निवास करते हैं जोकि नदियों के निकुंज झिरनेवाले पर्व्वत और फल मूल रखनेवाले पवित्रबन होते हैं २ हे देवताओं के ईश्वर शंकरजी अपने शरीरोंसेही निर्वाह करनेवाले उन वानप्रस्थोंकी भी पवित्र विधिको मैं सुनना चाहती हूं ३ महेश्वरजी ने कहा हे देवी वानप्रस्थों में जो धर्म हैं उनको भी तुम सावधानी से सुनो और उनको सुनकर तुमभी धर्मबुद्धी में प्रवृत्तहोजाओ ४ नियमों से अच्छे सिद्ध कियेहुये वनवासों के प्राप्तकरनेवाले सत्पुरुष वानप्रस्थ लोगोंको जैसा कर्म करना उचितहै उसको सुनो ५ तीनों समयपर मन्त्रों से स्नान देवता पितरोंका पूजन अग्निहोत्रादिक करना इष्टीहवनविधि ६ शामाकआदि मुनियों के धान्यों कालेना फल मूलका भोजन और दीपक प्रकाशकरने को इंगुद और अरण्डके तेल को रखना ७ जो पुरुष योगचर्य्या से सिद्ध काम क्रोधसे रहित वीरशय्या और वीरों के स्थानोंपर नियत ८ योगके धारण करनेवाले सत्पुरुष योगी ऊष्मऋतु में पंचाग्नि तपनेवाले मंडूक योगमें न्याय के अनुसार उपाय और कर्म्म करनेवाले ९ वीरों के आसनपर धर्मकी विधि में प्रवृत्तहैं उनलोगों को यह कर्म्म करना योग्यहै मैदानमें चबूतरेपर सोना वर्षाऋतुमें अपने ऊपर वर्षा का सहना हेमन्तऋतुमें जलकेमध्य निवासकरना ग्रीष्मऋतुमें पंचाग्नितपना १० वायु जल और नदीके शिवारका भोजन करना पत्थर से कूटकर अथवा दांतों से चबाकर खानेवाले प्रतिदिन भोजनपात्रों के नाश करनेवाले ११ वल्कल और मृगचर्म्म धारण करनेवाले वानप्रस्थों को धर्म्म के समय बुद्धि के अनुसार शरीरयात्रा करना योग्य है वनमें उत्पन्न वनचारी वनमेंही प्रवृत्तचित्त सदैव वनवासी वनसे ही आजीविका करनेवाले महात्माओं को गुरूके समान वनको पाकर निवास करना योग्यहै १२।१३ हवनकरना पञ्चाग्निका सेवन वेदोक्त पञ्चयज्ञरूप भागका अनुपालन १४ इष्टीयज्ञ में प्रवृत्त चातुर्मास्य का सेवन पौर्णमास्य आदि यज्ञ नित्य यज्ञ करना १५ स्त्री के सहित रहना और स्त्रीसंग आदि अन्य २ सब प्रकारके संगोंसे रहित होना इत्यादि बातोंसे सब पापोंसे विमुक्त मुनिलोग वनमें विचरते हैं स्रुक्नाम पात्रको उत्तम माननेवाले और सदैव त्रेताग्निकी शरणमें रहनेवाले सन्मार्गमें नियत जो सन्तहैं वह परमगतिको पाते हैं १६।१७ सत्यधर्म्म में आश्रित सिद्धमुनि बड़े पवित्र सनातन चन्द्रलोक और ब्रह्मलोकको जाते हैं १८ हे देवी यह मैंने वानप्रस्थों से सम्बन्ध रखनेवाला शुभ धर्म्म बड़े विस्तारपूर्वक

बर्णन किया १९ उमाबोलीं हे सब जीवोंके स्वामी सम्पूर्ण जड़ चैतन्यों से स्तू-
यमान भगवन् ज्ञानगोष्ठियों में मुनियों के समूहों का जो धर्म्म है उसको आप
कहिये २० ज्ञानगोष्ठियों में वर्त्तमान बनवासी कभी अकेले विचरनेवाले और
कभी स्त्रीके साथ होते हैं उन्होंका धर्म्म कैसे २ कहाहै २१ महेश्वरजीबोले हे देवी
जो तपस्वी अकेले विचरनेवाले हैं उनका यह चिह्नहै शिर मुंडहोना और गेरुवे
वस्त्रोंका धारणकरना और जो स्त्री से बिहारकरनेवाले हैं उनके निवासमें रात्रिही
कारणहै २२ तीनों समयपर मंत्रों से स्नान वनके जल फलसे बड़ा होम समाधी
और सन्मार्ग्ग में नियतता गुरूके उपदेशका सेवन यह उन दोनों के धर्म हैं २३
पूर्व्व में जो मैंने बनवासियों के तुझसे धर्म्म कहे जो लोग उन धर्म्मों को सेवन
करते हैं वह तपके फलको पाते हैं २४ स्त्री पुरुषका धर्म रखनेवाले अपनी स्त्री के
साथ जितेन्द्रिय और ऋतुकालमेंही अपनी स्त्री के पास जानेवाले पुरुष जो कर्म
करते हैं वह शास्त्रमें देखाहुआ कर्म है २५ उन धर्मात्माओं का आर्षधर्म सिद्ध
होताहै उन धर्म्म के ज्ञाताओं को अपनी स्त्री के सिवाय दूसरा अनुचित धर्म्म
करना उचित नहीं है २६ जो मनुष्य सब जीवों में निर्भयतारूपी दक्षिणा को
अच्छीरीति से देताहै और हिंसासे रहितहै वही धर्म्म से संयुक्त होताहै २७ जो
सब जीवोंपर दया करनेवाला सब जीवों के साथ सत्यवक्ता और जीवमात्र का
आत्मारूपहै वही धर्म्म से संयुक्त होताहै २८ सब वेदों में समावर्त्तननाम स्नान
और सबजीवों में सत्यबक्तापन यह दोनोंसमानहैं वा दोनों में सत्यताही अधिक
है २९ सत्यताको धर्म कहते हैं और कुटिलता वा असत्यता को अधर्म कहते हैं
इसलोकमें सत्य बोलनेवाला मनुष्य धर्म से संयुक्त होताहै ३० जो मनुष्य सदैव
सत्यतामें नियत होताहै वह अविनाशी ईश्वरके पास निवास करताहै इसी हेतुसे
जो अपना धर्म्मचाहै उसको सत्यता में नियतहोना उचित है ३१ इन्द्रिय और
क्रोध का जीतनेवाला क्षमावान् धर्म्मरूप हिंसारहित और सदैव धर्म्म में चित्त
लगानेवाला मनुष्य धर्म से युक्त होताहै ३२ आलस्यसे रहित धर्मात्मा सत्मार्ग
में आश्रित उत्तम व्रतवाला ज्ञानीमनुष्य ब्रह्मभावके योग्य होताहै ३३ उमाबोलीं
हे देवता जो तपोधन तपस्वी आश्रम में प्रीति करनेवाले हैं वह किस धर्मचर्य्या
से तेजस्वी होते हैं ३४ हे भगवन् जो राजा वा राजकुमार बड़ेधनी वा निर्धनहैं
वह किस कर्म से बड़ेफलको प्राप्त करते हैं ३५ हे देवता दिव्य चन्दनों से अलं-

कृत वह लोग प्राचीन स्थानको पाकर किस कर्म्म से बड़े फलको पाते हैं अथवा कौनसे कर्म से बनवासी होते हैं ३६ हे त्रिनेत्रधारी त्रिपुरारि तपचर्य्यासम्बन्धी जो यह मेरा उत्तम सन्देह है उसको पूर्णता से वर्णन कीजिये ३७ महेश्वरजी बोले कि उपवास ब्रतों से जितेन्द्रिय हिंसा से रहित सत्यता में पूर्ण सिद्धलोग शरीरको त्यागकरके सब रोगों से छूटकर गन्धर्वों के साथ आनन्द करते हैं ३८ जो धर्मात्मा न्याय और बुद्धिके अनुसार मंडूकयोग शयननाम दीक्षाको करता है वह नागोंके साथ आनन्द करताहै ३९ जो आनन्द से युक्त दीक्षावान् पुरुष मृगोंके साथ उनके जूठे फलोंको भक्षण करताहै वह अमरावती में जाता है ४० जो मनुष्य सदैव शीतका सहनेवाला ब्रतधारी होकर नदीके सिवार और सूखे पत्तोंको खाताहै वह परमगति को प्राप्त करताहै ४१ वायु जलका भोजन करने वाला और फल मूल का खानेवाला मनुष्य यक्ष लोगों में अधिकार को पाकर अप्सराओं के समूहों के साथ आनन्द करताहै ४२ ग्रीष्मऋतु में शास्त्रोक्त कर्म से पञ्चाग्नि तपनेवाला मनुष्य बारहवर्ष ब्रत करके संसारका राजा होताहै ४३ जो मुनि बारहवर्षतक उपायपूर्व्वक आहार नियम करके मरु साधन करता है वहभी पृथ्वी का राजा होताहै भोजन त्याग करने से जो शरीर को त्यागता है वह स्वर्ग्गमें जाकर सुखकी वृद्धिको पाताहै जो मनुष्य मैदानमें शुद्ध आकाश को चारोंओर से धारण करके अर्थात् नंगा बैठकर ४४ । ४५ आनन्दसे बारहवर्ष तक ब्रतमें नियत होताहै वह बड़े २ फलोंको पाताहै अर्थात् सवारी पर्यङ्क आदिक ४६ और चन्द्रमाके समान उज्ज्वल वृद्धोंके योग्य स्थानकोभी पाताहै जो मनुष्य अपने शरीरसे निर्वाह करनेवाला आचारवान् नियम से भोजन करने वाला होकर ४७ शरीर को शयनस्थानपर त्याग करता है वह उत्तम स्वर्ग्गको भोगता है जो मनुष्य बारहबर्षतक केवल अपने शरीरही से निर्वाह करनेवाला होकर ब्रतका नियम करताहै ४८ वह महासमुद्र में शरीर को त्यागकरके वरुण लोकमें निवास करता है जो मनुष्य केवल शरीरसे निर्बाह करनेवाला बारहवर्ष तक ब्रतमें नियत होताहै ४९ वह पत्थर से दोनों चरणों को भेदकर गुह्यकों में निवास करताहै जो मनुष्य आत्मासे आत्माको साधनकरके दुःख सुख आदिक योगोंसे और स्त्री आदिसे पृथक् होके बारहबर्षतक चित्तमें वर्त्तमान ब्रतको नियमपूर्वक करताहै वह स्वर्ग्गलोक को पाताहै और देवताओं के साथ आनन्द

करताहै ५०।५१ जो मनुष्य केवल शरीरही से निर्वाह करताहुआ बारहवर्षतक अग्निमें हवन करताहै वह शरीरके त्यागने पीछे अग्निलोकमें प्रतिष्ठा पाताहै ५२ हे देवी जो ब्राह्मण न्यायके अनुसार दीक्षित नियमवान् होके आत्मा को आत्मामें धारणकर ममताके विना धर्म्मकी इच्छा करता है ५३ वह इस चित्त-रोचक दीक्षा को बारह वर्षतक करके और अरणीसमेत अग्नि को वृक्ष में लय करके नंगे शरीरसे जाताहै ५४ और सदैव वीरमार्ग में नियत वीरोंके आसन पर प्रवृत्त वीरशय्यापर नियत होताहै वह धर्म्मात्मा मनुष्य वीरगतीको प्राप्तहोकर ५५ सब मनोरथोंसे युक्त इन्द्रलोकमें वर्त्तमान दिव्य चन्दन पुष्पादिसे अलंकृत ५६ होकर स्वर्ग में देवताओं के साथ सुखसे विहार करता है जो मनुष्य सदैव वीर योगका सहनेवाला होताहै वह सदैवकेलिये वीरलोकमें नियत होताहै ५७ जो मनुष्य सतोगुण में नियत दीक्षित नियमवान् सबका पवित्र करनेवाला पवित्रात्मा सबको त्यागकर वीरमार्ग्गको प्राप्त करताहै उसके लोक सनातनहैं ५८ सब रोगोंसेरहित शोभायमान होकर वह पुरुष इच्छाके अनुसार उस विमानकी सवारी के द्वारा विचरताहै जोकि इच्छानुकूल चलनेवाला है और इन्द्रलोक में वर्त्तमान होकर आनन्द करताहै ५९॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेउमामहेश्वरसंवादेशतोपरिद्विचत्वारिंशोऽध्यायः॥

एकसौतेतालीसका अध्याय॥

उमाबोलीं हे भगदेवता के नेत्रों के फोड़नेवाले पूषाके दांतोंके गिरानेवाले दक्षके यज्ञको विध्वंस करनेवाले भगवान् शिवजी यह मुझको बड़ा सन्देह है १ कि पूर्वसमयमें भगवान् ब्रह्माजीने इनचारों वर्णोंको उत्पन्नकिया उनमेंसे वैश्य किसकर्म के फलसे शूद्रयोनिमें जन्मको पाताहै २ क्षत्रिय कौनसे कर्म्मसे वैश्य योनिमें और ब्राह्मण किसकर्मसे क्षत्रिय योनिमें उत्पन्नहोताहै अथवा प्रतिलोम जातिवाला किसरीतिसे होताहै हे देवता धर्म किसरीतिसे करनाचाहिये ३ हे प्रभु वेदपाठी ब्राह्मण किसकर्म से शूद्रयोनिमें उत्पन्न होताहै और क्षत्रिय किसहेतुसे शूद्रहोताहै ४ हे जीवमात्रके स्वामी निष्पाप देवता आप इसमेरे सन्देहको भी निवृत्तकरो कि इसलोकमें तीनवर्ण अपने २ कर्मसे कैसे ब्राह्मणके जन्मको पाते हैं ५ महेश्वरजी बोले कि हे शुभ देवी ब्राह्मणभाव होना बड़ा कठिनहै ब्राह्मण

क्षत्रिय वैश्य और शूद्र यह चारों जन्मसे होतेहैं यह मेरा मतहै ६ ब्राह्मण इस लोकमें बुरे कर्मके करनेसे अपने अधिकार से पतितहोताहै इसीसे इसउत्तम ब्राह्मणवर्ण को पाकर अपनी बहुत रक्षाकरे ७ जो क्षत्रिय वा वैश्य ब्राह्मणके धर्ममें नियतहोकर ब्राह्मणोंके गुणोंसे अपनी जीविका करताहै वह ब्राह्मणकी योनिमें जन्मपाताहै ८ जो वेदपाठी ब्राह्मणोंके धर्मको छोड़कर क्षत्रिय धर्म्मको करताहै वह ब्राह्मणवर्ण से पतितहोकर क्षत्रियकी योनिमें जन्म लेताहै ९ जो अल्पबुद्धी ब्राह्मण कठिनतासे प्राप्तहोनेवाले ब्राह्मण वर्णको पाकर वैश्यधर्मको करताहै वह ब्राह्मण वैश्यजन्मको और इसीप्रकार शूद्रकेकर्म करनेसे शूद्रयोनि को पाता है अपने धर्म से पतित होने से पीछे ब्राह्मण शूद्रताको प्राप्तहोता है १०। ११ यहां यह निर्णय है कि वर्णसे भ्रष्टहोनेवाला बाहर कियाजाताहै अर्थात् ब्रह्मलोकसे पतितहोकर शूद्रताको प्राप्त होताहै १२ हे धर्म्मचारिणी जो महाभाग क्षत्रिय अथवा वैश्य अपने २ कर्मोंको त्यागकरके शूद्रके कर्म्मको करते हैं १३ वह अपने स्थान से गिरकर वर्णसंकर होते हैं ऐसे २ प्रकार से ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य शूद्रभावको पाते हैं १४ जो मनुष्य अपने धर्म में सावधान पवित्र ज्ञान विज्ञान वाला धर्मज होकर सदैव धर्म में प्रवृत्तहै वह धर्म्म के फलको पाताहै १५ हे देवी यह दूसरा धर्म ब्रह्माजीका कहाहुआहै जोकि ब्रह्मज्ञान और नैष्ठिक ब्रह्मचर्य्य से सम्बन्ध रखनेवालाहै वह धर्म्म के चाहनेहीवालों से अभ्यास कियाजाता है १६ हे देवी उग्रजातिका अन्न सूतकी श्राद्धकाअन्न और जो बहुतसे मनुष्योंकेलिये तैयार हुआ है अथवा बहुत से मनुष्य उसके मालिकहैं वह सब अन्न निन्दित हैं दुष्ट मनुष्यका और शूद्रका अन्न कभी न खाना चाहिये १७ हे देवी महात्मा लोग शूद्रके अन्नकी सदैव निन्दाकरतेहैं यह प्रमाण ब्रह्माजीके मुखसे निकला है इसी से इसमें मेरा भी मतहै १८ जिस ब्राह्मण के पेट में शूद्रका अन्नशेष है और वह मरता है चाहै वह अग्निस्थापन और यज्ञका भी करनेवाला है तौभी वह शूद्रगति को पाता है १९ उस उदरमें शूद्र अन्नहोने के कारण वह ब्राह्मण ब्रह्मलोकसे बहिर्मुखहोकर निस्सन्देह शूद्रयोनिको पाताहै २० ब्राह्मण जिसजिस के अन्नको पेटमें धरेहुये मरताहै वह चाहे वेदपाठीभी होय तौभी उसी उसी योनि में जन्म लेताहै २१ जो मनुष्य कठिनता से प्राप्तहोने के योग्य शुभ और उत्तम ब्राह्मणवर्णको पाकर किसीका अपमान करताहै और अभक्ष्य अन्नोंको खाताहै

वह ब्राह्मण वर्णसे पतितहोताहै २२ मद्यप ब्रह्महत्या करनेवाला नीच चोर व्रतको खण्डन करनेवाला अपवित्र वेदपाठ और जपसे रहित पापी लोभी छली शठ २३ व्रतोंका न करनेवाला शूद्राकापति रसोई करनेके पात्रमें खानेवाला सोमवल्लीका बेचनेवाला नीचसंगी ऐसे अवगुणोंसेयुक्त वेदपाठीभी ब्राह्मण ब्रह्मयोनिसे नष्टता को पाताहै २४ गुरुकी स्त्रीसे भोगकरनेवाला गुरुका शत्रु और गुरुकी बुराइयों में प्रवृत्तहै वहद्विज चाहै ब्रह्मज्ञानीभी होय तोभी ब्रह्मयोनिसे भ्रष्टताकोपाताहै २५ हे देवी इन शुभकर्म्मोंके द्वारा शूद्र ब्राह्मणवर्णको पाताहै और वैश्य क्षत्रियवर्णको पाताहै २६ जो सदैव सन्मार्ग में नियत देवता और ब्राह्मणों का सत्कार करने वाला सब रीति से अतिथिपूजनका व्रतकरनेवाला प्रसन्नचित्त शूद्र पूरेउपायों से अपने सब कर्म और अपने से उत्तमवर्णवालों की सेवाआदि न्याय और विधि के अनुसार करे २७ । २८ और ऋतुकाल में स्त्री के पास जानेवाला नियमी नियमसे ही भोजन करनेवाला पवित्र और पवित्रही मनुष्यों का खोजनेवाला और बालबच्चों से बचे हुये अन्नका खानेवाला होके २९ निरर्थक मांस को न खाय ऐसे प्रकारका शूद्र वैश्यवर्ण को पाताहै जो सत्यवक्ता सुख दुःखादि योगों से रहित जितेन्द्रिय सावधान ३० जपको उत्तम माननेवाला सबवर्णों में ऐश्वर्य-वान् होने का इच्छावान् नित्य यज्ञों से पूजन करनेवालाहै ३१ अथवा गृहस्थ व्रत में नियत केवल दोही समयपर भोजन करनेवाला आहारका जीतनेवाला इच्छा और अहंकार से रहित ३२ अग्निहोत्रकी उपासना करनेवाला बुद्धि के अनुसार हवन करनेवाला सब के पूजन में तत्पर देवता पितरों से शेष बचेहुये अन्नका खानेवाला ३३ और मन्त्रों के अनुसार त्रेताअग्नि का स्थापन करने वालाहै वह वैश्य ब्राह्मण होताहै अर्थात् वह वैश्य प्रथम क्षत्रियोंके पवित्र और श्रेष्ठ कुलमें जन्म लेताहै ३४ फिर क्षत्रियका जन्म लेनेवाला वैश्य जन्मसे सं-स्कारी यज्ञोपवीतधारी व्रतका करनेवाला होकर प्रतिष्ठावान् ब्राह्मण होताहै ३५ फिर वेद पढ़कर स्वर्गकी चाहना करता सदैव त्रेताअग्निकी शाला रखनेवाला होकर दान करताहै और अच्छी दक्षिणावाला वृद्धियुक्त यज्ञ करताहै ३६ जो सदैव धर्मसे प्रजापालन करताहुआ दुखियाओंको हाथमें दान देनेवाला सत्य-वक्ता सुन्दर दर्शनवाला क्षत्रिय सदैव सच्चे कर्म्मों को करताहै ३७ धर्म्मपूर्व्वक दण्ड देनेवाला धर्मकार्य्य में उपस्थित राज्यके छठे भागका लेनेवाला ३८ राज्य

के कार्य्यों में प्रवीण क्षत्रिय अपनी इच्छासे ग्राम्यधर्म्म अर्थात् परस्त्रीगमनादि कर्म न करे और सदैव ऋतुकालमेंही स्त्रीके पास सोवे ३९ सदैव व्रत करनेवाला नियमी वेदपाठमें प्रवृत्त पवित्र अग्नियोंका सदैव सेवन करनेवाला अग्निशालाही में शयन करनेवाला ४० ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी के आतिथ्यका सदैव करनेवाला सदैव प्रसन्नचित्त और भोजन चाहनेवाले दासों को भोजन से तृप्त करनेवाला ४१ और अपने प्रयोजनकी इच्छासे कुछ नहीं देखे और देवता पितृ और अतिथियों के निमित्त साधन करताहै ४२ तीनों समयपर बुद्धिके अनुसार अग्निहोत्र करनेवालाहो अपने घरमें न्याय के अनुसार भिक्षावृत्ती को उपासना करताहै ४३ वह क्षत्रिय गौ ब्राह्मणकी वृद्धिके लिये युद्धमें सम्मुखहोकर मरनेवाला अथवा मन्त्रों से पवित्र त्रेता अग्निमें प्रवेशकरके ब्राह्मण होता है ४४ जो धर्मात्मा क्षत्रिय ज्ञान विज्ञानसे युक्त अपनेही कर्म के द्वारा ऐसा वेदपाठी ब्राह्मणहोताहै जो ज्ञान विज्ञानसे युक्त संस्कारी और वेदमें पूर्णहोय ४५ हे देवी नीची जातिमें उत्पन्न होनेवाला शूद्रभी इन कर्मों के फलों से संस्कारी और शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होता है ४६ जो दुराचारी सब वर्णसंकरों के अन्नका भोजन करनेवालाहै उसप्रकार का ब्राह्मण भी पवित्र ब्राह्मण वर्णको छोड़कर शूद्र होताहै ४७ हे देवी शुभ कर्मों के द्वारा पवित्रात्मा जितेन्द्रिय शूद्रभी ब्राह्मणके समान सेवन के योग्यहै यह आप ब्रह्माजी ने कहाहै ४८ जिस शूद्रमें आत्मज्ञान और शुभकर्म नियतहै ब्राह्मणसे उत्तम जानना योग्यहै यह मेरामतहै ४९ माता पिता संस्कार शास्त्र सन्तान यह सब ब्राह्मण होनेके हेतु नहीं हैं व्रत अर्थात् बाह्याभ्यन्तरकी शुद्धीआदि गुणही ब्राह्मण होनेके कारणहैं लोकमें उत्तम गुणों से भी ब्राह्मण कहा जाताहै व्रतमें नियत होनेसे शूद्रभी ब्राह्मणभावको पाताहै ५०।५१ हे सुन्दरी ब्राह्म्यस्वभाव सब जीवों में समानहै यह मेरामतहै जिसमें निर्गुण और निर्मल ब्रह्म नियतहै वही ब्राह्मणहै ५२ हे देवी सृष्टिके कर्त्ता बरदाता ब्रह्माजी ने आप अपने मुखसे इन धर्मोंको वर्णन कियाहै जोकि उत्पत्ति स्थानरूप फल रखनेवाले और स्थानों के भेदोंके दिखलाने वाले हैं ५३ ब्राह्मणही बड़ा क्षेत्ररूप होकर संसार में चेष्टावानों के समान घूमताहै जो मनुष्य उसमें बीजको बोताहै वह खेती परलोकमें फलों की देनेवाली है ५४ सन्मार्ग में आश्रित देवता पितृ आदिसे शेष बचेहुये अन्न के खानेवाले मनुष्यको वह फल प्राप्त करनेके योग्यहै

ऐश्वर्य्य के चाहनेवाले को ब्रह्ममार्ग में नियतहोकर उस कर्मका करना योग्य है ५५ संहिताके पाठ करनेवाले सदैव व्रत करनेवाले घरमें रहनेवाले गृहस्थीसे वह फल प्राप्त करनेके योग्यहै ५६ जो ब्राह्मण सदैव सन्मार्ग में नियत अग्नि स्थापन वेदपाठ और जपका करनेवालाहै वह ब्रह्मभावके योग्य होताहै ५७ हे पवित्र मुसक्कानवाली देवी ब्राह्मण वर्णको अच्छीरीति से पाकर नियम में स्थिर चित्तवाले मनुष्य को नीचे लिखे हुये बुरे अवगुणों से उसकी रक्षा का करना योग्यहै अर्थात् अन्य जातिकी स्त्रीके साथ विवाह करने से अयोग्य दान लेने से कुबस्तु के लेनेसे और सब कर्म्मोंसे रक्षा करनी योग्यहै ५८ पर यह गुप्तभेद तुझसे कहा जिसके कारण शूद्र ब्राह्मण होताहै और धर्म्म से च्युत होकर ब्राह्मण शूद्र होताहै ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेउमामहेश्वरसंवादेशतोपरित्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ॥

एकसौचवालिसका अध्याय ॥

उमा बोलीं कि हे सब जीवधारियों के ईश्वर देवता असुरोंसे स्तूयमान षडैश्वर्य के स्वामी प्रभु देवता आप मनुष्यों के धर्म्मको भी वर्णन करिये इसमेंभी मुझको सन्देहहै १ मनुष्य सदैव मन वचन और कर्म्मके कारण तीन प्रकारकी फांसी में फँसता है अथवा उनसे छूटता है २ इस संसार में मनुष्य कैसे स्वभाव चाल चलन आचार और गुणोंसे स्वर्गको जाते हैं ३ महेश्वरजी बोले हे धर्म्म अर्थके मूलोंकी जाननेवाली सदैव धर्म्म में नियत जितेन्द्रीपने में प्रवृत्त तुम उस प्रश्नको सुनो जोकि सब जीवोंका अभीष्ट करनेवाला और बुद्धिकी वृद्धि करनेवालाहै ४ जो पुरुष सत्यधर्म्म में प्रवृत्त सन्तरूप सब आश्रमों के चिह्नसे पृथक् धर्म्म से प्राप्त होनेवाले अन्नके भोजन करनेवाले हैं वह स्वर्ग्गगामी हैं वह निस्सन्देह धर्म्म और अधर्म्म में नहीं फँसते हैं ५ उत्पत्ति और प्रलय के मूल को जाननेवाले सर्वज्ञ और सर्वद्रष्टा संसारकी प्रीतिसे रहित मनुष्य बन्धन कर्म्म से छूटते हैं ६ जो पुरुष मनवाणी और कर्म्म से कोई प्रकारकीभी हिंसा नहीं करते हैं और जो किसी में प्रवृत्तचित्त नहीं होते हैं वह कर्म्म बन्धनको नहीं पाते हैं इन्द्रियों के विषयों से रहित शीलवान और दयावान प्रिय अप्रिय को समान जाननेवाले जितेन्द्रीपुरुष कर्म्मबन्धनसे मुक्तहोते हैं ७। ८ जो मनुष्य सब जीवों

में दयावान् निश्चसित हिंसाके त्यागनेवाले और श्रेष्ठ आचरणवाले हैं वह स्वर्ग-गामी हैं ९ जो मनुष्य सदैव दूसरे के धनमें ममता न करनेवाले अन्यकी स्त्रीसे पृथक् रहनेवाले धर्म्म से प्राप्तहुये अन्नके भोजन करनेवाले हैं वह स्वर्गगामी हैं १० जो मनुष्य दूसरे की स्त्रीको अपनी माता बहिन और पुत्रीके समान मानते हैं वह स्वर्ग्गगामी हैं ११ जो मनुष्य सदैव चोरीसे रहित अपने धनमें सन्तोषी और अपने प्रारब्धसेही जीविका करके निर्वाह करते हैं वह स्वर्ग्गगामी हैं १२ जो मनुष्य अपनीही स्त्रीसे प्रीति करनेवाले ऋतुकालहीं में स्त्री के पास जाने वाले और पवित्र सुखके भोगनेवाले हैं वह स्वर्गगामी हैं १३ जो मनुष्य दूसरे की स्त्रियोंको कुदृष्टिसे न देखनेवाले इन्द्रियों से सावधान और शीलवान्हैं वह स्वर्गगामी हैं १४ यह ईश्वरका रचाहुआ मार्ग्ग पाप मलका नाश करनेवाला सदैव ज्ञानियोंसे सेवनके योग्यहै क्योंकि यह योगके निमित्त उत्पन्न कियागया है इसी से बुद्धिमान् लोगों से सदैव सेवन करना उचित है १५ जो मार्ग्ग कि दान धर्म्म और तपसे युक्त शील पवित्रता और दयालुता है वह सदैव जीविका के लिये अथवा धर्म्मके निमित्त मनुष्यों को सेवन करना चाहिये १६ और जो स्वर्ग में वासी होनेके अभिलाषी हैं उनको भी उस मार्ग्गपरही चलना चाहिये इसके विशेष जो मार्ग हैं वह त्यागनेकेयोग्यहैं १७ उमा बोलीं हे जीवधारियोंके स्वामी पापोंसे रहित शिवजी जिस वचन से मनुष्य अधर्म्म के बन्धनमें पड़ता है अथवा जिस से छूटता है उस कर्म्मको भी मुझसे कहो १८ महेश्वरजी बोले कि जो मनुष्य अपने वा दूसरों के लिये हास्यानन्द में भी मिथ्या वचन नहीं कहते हैं वह स्वर्गगामी हैं १९ जो मनुष्य जीविकाके निमित्त वा धर्मकेलिये और चित्तकी इच्छासे मिथ्या वचन नहीं कहते हैं वह स्वर्गगामी हैं २० जो मनुष्य सब लोगोंसे यह कहते हैं कि आनन्दसे आये वा अच्छे आये इसवचनको पीड़ा और पापसेरहित मधुरता और शीतलता से कहते हैं वह स्वर्ग्गगामी हैं २१ जो मनुष्य कडुये कठोर और रूखेवचनोंको नहीं कहते हैं और रागादिसेरहित सन्तरूपहैं वह स्वर्गगामी हैं २२ जो मनुष्य दयासे रहित और मित्रोंमें शत्रुताकरने वाले वचनोंको कभी किसीसे नहीं कहतेहैं किन्तु अत्यन्त ठीकर मित्रताके करनेवाले वचनों को कहतेहैं वह स्वर्गगामी हैं २३ जो मनुष्य दूसरेसे शत्रुता करनेवाले कठोर वचनों को त्याग करते हैं और सबको समान जाननेवाले होकर

जितेन्द्रिय हैं वह स्वर्गगामी हैं २४ जो मनुष्य धूर्त्तों के समान बार्त्ता करने से घृणा करतेहुये शत्रुओं के संगको त्यागनेवाले हैं और सबकी प्यारी बातों के कहनेवाले हैं वह स्वर्गगामी हैं २५ जो मनुष्य क्रोधसे भी हृदयके फाड़नेवाले बचनको नहीं कहते हैं क्रोधयुक्त होकर भी प्रिय बचनोंकोही कहते हैं वह स्वर्ग-गामी हैं २६ हे देवी यह बचनों से उत्पन्न सत्यताका गुण रखनेवाला शुभधर्म्म सदैव ज्ञानी मनुष्यों से अभ्यास करने के योग्यहै और मिथ्या बोलना सदैव त्याग करना योग्यहै २७ उमाबोलीं हे देवताओं के देवता महाभाग शिवजी मनुष्य सदैव जिस चित्तके कर्म्म से पापकाभागी होताहै उसको भी आप मुझ से कहनेको योग्यहो २८ महेश्वरजी बोले हे कल्याणिनि इस लोकमें मानसी धर्म्म से संयुक्त मनुष्य स्वर्ग को जाते हैं इसको मैं तुमसे कहताहूं २९ हे पार्वती जो मनको कष्टसे भी शुभकर्म्म में युक्तकरे तो उसके कारण से शरीर भी उसी प्रकार का होताहै इसलोक में जिसकर्म्म से मन पापोंके बन्धनमें होताहै उससे सम्बन्ध रखनेवाले मेरेबचनको सुनो ३० जब निर्जन बनमें रक्खाहुआ दूसरेका धन दिखाई देताहै तब जो मनुष्य उसको मनही से लेनानहीं चाहतेहैं वही स्वर्ग-गामी हैं ३१ जो धन ग्राम अथवा घरके मध्यमें दूसरेके खाली मकानमें नियतहै उसको जो मनुष्य कभी लेनानहीं चाहतेहैं वह स्वर्गगामी हैं ३२ इसीप्रकार जो मनुष्य एकान्त में भी संगकी इच्छा करनेवाली दूसरे की स्त्रियों से चित्तसे भी संगकी इच्छा नहीं करतेहैं वह स्वर्गगामी हैं ३३ जो मित्रता करनेवाले मनुष्य मिलापकरके शत्रु मित्रको एकसा चाहते हैं वह स्वर्गगामी हैं ३४ जो मनुष्य शास्त्रज्ञ दयावान् पवित्र और सत्य प्रतिज्ञावाले होकर अपनेही धन आदिमें स-न्तोषी हैं वह स्वर्गगामी हैं ३५ जो मनुष्य शत्रुताके त्यागनेवाले परिश्रम करने वाले सबकी मित्रतामें लगेहुये सब जीवोंपर दया करनेवाले हैं वह स्वर्गगामी हैं ३६ श्रद्धावान् दयावान् पवित्र मनुष्यों के प्यारे और सदैव धर्म्म अधर्म्म के ज्ञाताहैं वह स्वर्गगामी हैं ३७ हे देवी जो मनुष्य कर्मोंके शुभाशुभ फलोंके ज्ञाता हैं वह स्वर्गके गामी हैं ३८ जो मनुष्य न्याय और गुणोंसे युक्त सदैव देवता ब्रा-ह्मणोंके भक्त और वृद्धताके उपाय करनेवाले हैं वह स्वर्गगामी हैं ३९ हे देवी शुभकर्मोंके फलोंसे स्वर्गमार्ग्ग को उत्तम जाननेवाले यह पुरुष मैंने वर्णनकिये अब तुम क्यासुनना चाहतीहो ४० उमाबोलीं हे महेश्वरजी मनुष्यों के बिषय में

एक मेरा बड़ा संशयहै इसहेतुसे अब तुम पूर्णता समेत कहनेके योग्यहो ४१ हे प्रभु देवेश्वर मनुष्य किसकर्म और तपसे बड़ी आयुर्दा को पाताहै ४२ और इस पृथ्वीपर किसकर्म्म से मनुष्य की आयुर्दा क्षीण होती है हे आनन्दित शिवजी आप कर्मफलोंके कहनेके योग्यहो ४३ कोई तो बड़े प्रारब्धी हैं और कोई प्रारब्धसे हीनहैं कोई निकृष्ट कुलवाले हैं कोई उत्तम कुलवाले हैं ४४ कोई मनुष्य काष्ठरूपकुरूप होतेहैं दूसरे सुन्दररूपवाले होतेहैं ४५ कोई दुर्बुद्धी कोई पण्डित मालूमहोतेहैं इसीप्रकार वहुतसे वड़े बुद्धिमान् और ज्ञानविज्ञानसे पवित्रात्माहोते हैं ४६ कोई मनुष्य थोड़े दुःखवाले और कोई बड़े २ दुःखोंमें बँधेहुये दिखाई देतेहैं इसका हेतु आप कहनेके योग्यहैं ४७ महेश्वरजी बोले हे देवी इसमर्त्यलोक में जिसके द्वारा मनुष्य अपने फलको पाताहै उस कर्मफलके उदयको मैं तुमसे कहताहूं तुम चित्तलगाकर सुनो ४८ विषयकी चाहनेवाली इन्द्रियों के होनेपर जो मनुष्य भयानकरूप हाथ में दण्डलिये सदैव उद्यतहोताहै और उसी उद्यत शस्त्रके द्वारा प्रतिदिन सब जीवधारियों को मारताहै ४९ और निर्दयरूप सदैव सबजीवोंके भयका उत्पन्न करनेवाला चेंटी आदि कीट पतंगों का भी रक्षास्थान नहीं है वह मनुष्य बड़ानिर्दयी है ५० हे देवी ऐसा मनुष्य नरकमें पड़ताहै इसके सिवाय जो धर्म्मात्मा है वह प्रतापी प्रकाशवान् उत्पन्न होताहै ५१ हे देवी पापकर्म्म में बँधाहुआ हिंसा में प्रवृत्त सब जीवों का अप्रिय मनुष्य थोड़ी अवस्था वाला उत्पन्न होताहै ५२ हिंसाकरनेवाला नरकको जाताहै और हिंसा न करने वाला स्वर्गको जाताहै वह हिंसा करनेवाला मनुष्य नरकमें दुःखसे संयुक्त भयकारी दंडको प्राप्तकरताहै ५३ और जब किसीसमयपर उस नरकसे छूटताहै और मनुष्य शरीरको पाताहै वहइसजन्ममें थोड़ी आयुर्दाको पाताहै ५४ हे देवी जो कोई मनुष्य पापकर्म में बँधा हिंसामें प्रवृत्त सब जीवोंका अप्रियहोताहै वह थोड़ी अवस्थावाला उत्पन्न होताहै ५५ जो पवित्र और उत्तम जातिवाला मनुष्य जीवों के मारनेवाले शस्त्र दंडआदि का त्यागकरनेवाला होकर कभी हिंसा नहीं करताहै ५६ न मारताहै न दूसरे से बध कराताहै और मारनेवाले को अच्छा नहीं मानताहै और सब जीवोंपर प्रीति करताहै अर्थात् जैसे कि अपनी आत्मा में उसीप्रकार दूसरेकी आत्मामें मानताहै ५७ हे देवी ऐसा पुरुष उत्तम देवभाव को पाताहै और आनन्दयुक्त होकर अपने योग्य प्राप्तहोनेवाले सुखें

है ५८ जो कभी वह इस नरलोकमें आताहै तब वह जन्म लेनेवाला मनुष्य बड़ी आयुर्दावाला होकर सुखसे वृद्धि पाताहै ५९ जीवमात्रकी हिंसाके त्यागने से शुभकर्मी और नेक चलनवालोंका यह मार्गब्रह्माजी से वर्णन कियागयाहै ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेउमामहेश्वरसंवादेशतोपरिचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः १४४

एकसौपैंतालिसका अध्याय ॥

उमा बोलीं कि शील और आचारवाले मनुष्य कौन २ से कर्म और दानों से स्वर्गको प्राप्त होते हैं १ महेश्वरजी बोले कि दानी, ब्राह्मणोंका सत्कार करने वाला दुःखी पीड़ावान् और कंगालोंको भोजन और पानकी बस्तुदेकर बस्त्रोंका देनेवाला २ स्थान सराय कूप बापी तड़ाग और सदैव याचकोंको देनेके योग्य अभीष्टबस्तु ३ आसन, शय्या, सवारी, घर, रत्न, धन और सब अनाजों के पैदा करनेवाले खेत याचककी इच्छा के अनुसार देनेवाला होकर जो मनुष्य सदैव प्रसन्न होताहै हे देवी ऐसा मनुष्य देवलोकमें ऐश्वर्यवान् होताहै ४।५ वहां बहुत कालतक उत्तम भोगों को भोगकर अप्सराओं समेत प्रसन्नतापूर्व्वक नन्दनवन में निवास करता है ६ उस स्वर्गलोक से गिरनेवाला मर्त्यलोक में मनुष्ययोनि में उत्पन्न होताहै और बड़े बंश में धनधान्ययुक्त बड़े भोगों से युक्त होता है ७ वहां वह मनुष्य सब अभीष्ट गुणों से युक्त प्रसन्नमन बड़े सामान और भोगों के ऐश्वर्य्यका प्राप्त करनेवाला होताहै ८ हे देवी पूर्व्वसमय में ब्रह्माजी ने इतने प्रकारके महाभाग दानके अभ्यासी दर्शनीय सबके सुखदायी मनुष्योंका वर्णन किया है इनके सिवाय अल्पबुद्धी दानकरने में कृपण धनके बर्त्तमान होने पर भी जो ब्राह्मणों को दानादि नहीं देते हैं ९।१० वह मनुष्य लोलुप जिह्वासे युक्त होकर दुःखी अंधे निर्धन संन्यासी और अतिथियोंकोभी देखकर उनसे मुखफेर कर उनको कुछ नहीं देते हैं ११ वह लोग किसीसमयपर भी बस्त्र धन भोग सुवर्ण गौ और भोजनोंकी बस्तुओंको भी दान नहीं करते हैं जो अपने कर्म्म में अप्रवृत्त ईश्वर से बहिर्मुख दानको नहीं करते हैं हे देवी ऐसे निर्बुद्धीलोग नरक को जाते हैं १२ । १३ जब वह समयकी लौट पौटसे मनुष्य शरीरको पाते हैं तब वह अत्यन्त निर्बुद्धी और धनहीन वंशमें जन्मको पाकर १४ क्षुधा तृषासे महादुःखी सब लोकों से बहिष्कृत सब भोगों से निराशहो अधर्म्मरूप आजीविका से

जीवन करते हैं अथवा थोड़े ऐश्वर्य्यवाले बंश में उत्पन्न और थोड़ेही भोग में प्रवृत्त होते हैं १५। १६ और जो मनुष्य सदैव नियतकर्म्म से रहितहोकर धनसे अभिमानी होते हैं अथवा अपनी निर्बुद्धिता से आसन के योग्य पुरुषों को आसन नहीं देते हैं १७ वा मार्ग्ग देने के योग्य मनुष्य को मार्ग्ग नहीं देते हैं और जो अभागे पाद्यके योग्य पुरुषों को पाद्य नहीं देते हैं और अर्घ के योग्य पुरुषों को बिधि के अनुसार सत्कार करके पूजन नहीं करते हैं और अर्घ पाद्यादि भी नहीं करते हैं और सम्मुख आनेवाले गुरूको प्रेमसे गुरूके समान पूजन नहीं करते हैं और अभिमान से प्राप्त होनेवाले लोभमें नियत होकर अच्छी रीति से पूजनकेयोग्य मनुष्योंका अपमान करते हैं वा वृद्धोंका हास्य और तिरस्कार करते हैं हे देवी इसप्रकारके सब मनुष्य नरकगामी हैं १८। २२ जब वह मनुष्य बहुत बर्षों में उस नरक से निकलते हैं तब कुत्सित बंशमें जन्मको पाते हैं और गुरू वा वृद्धोंकी प्रतिष्ठाको कम करनेवाले मनुष्य उन कुलों में जन्मलेते हैं जो कि कुत्सितचित्तवाले स्वपाक और पुल्कसादिकों के होते हैं २३ जो मनुष्य अपने नित्यकर्म के करनेवाले निरहंकारी देवता ब्राह्मणों के पूजन करनेवाले लोक में पूज्य सबको नमस्कार करनेवाले नम्रता और मधुरभाषी २४ सब बर्णोंके प्रियकारी सदैव सब जीवों के हितकारी शत्रुतासे रहित प्रसन्नमुख स्वच्छशरीर सदैव सबके प्यारे मधुर बचनोंको कहनेवाले २५ सबकी आव भक्ति करनेवाले सब जीवोंकी हिंसासे रहित और नम्रता पूर्व्वक पूजनकरते नियत होते हैं २६ और मार्ग देनेके योग्यों को मार्ग देते गुरूको गुरूके समान पूजन करना और अतिथिके आदर सत्कारमें प्रवृत्त अभ्यागतके पूजन करनेवाले हैं २७ हे देवी ऐसे मनुष्य स्वर्गको प्राप्त करते हैं फिर स्वर्गके भोगोंको भोगकर मनुष्य शरीरमें जन्मको पाते हैं २८ उस मनुष्य शरीरमें सब रत्नों से युक्त अनेक भोगोंसमेत योग्यताके अनुसार उत्तम पुरुषोंको दान देनेवाले और धर्मचर्या में पूर्णहोते हैं २६ वह लोग सब जीवोंके अंगीकृत सब लोकसे पूजित होकर सदैव अपने कर्म के फलोंको पाते हैं ३० अर्थात् बड़े कुलजाति में उत्पन्न होकर सदैव बड़े संस्कारी होते हैं यह मैंने ब्रह्माजीका कहाहुआ धर्म तेरे आगे बर्णन किया ३१ जो भयकारी कर्म करनेवाला सब जीवोंको भय उत्पन्न करनेवाला मनुष्य हाथ पैर रस्सी दंड ३२ मट्टीका ढेला स्तंभ और अनेक शस्त्रों से जीवधारियों को पीड़ा देता

है हे शोभामान वह छलयुक्त बुद्धिवाला मनुष्य हिंसाके लिये जीवोंको भयभीत करताहै ३३ सदैव भयकारी वह मनुष्य जीवोंको मिलकर भय देताहै ऐसी प्रकृति और कर्म करनेवाला मनुष्य नरक को पाताहै ३४ जब वह जीव समयके विपर्य्ययसे मनुष्य शरीरको पाकर निकृष्ट कुलमें उत्पन्न होताहै ३५ हे देवी तब वह अपनेही कर्मके फलसे अपने सजातीयलोग और भाइयों में संसारका शत्रुरूप निकृष्ट जानना योग्यहै ३६ जो मनुष्य प्रीतिकी दृष्टि रखनेवाला सदैव पितासे शत्रुता न करनेवाला जितेन्द्रिय होकर सब जीवों को देखताहै ३७ और जीवमात्रको भयभीत नहीं करताहै और अपने हाथ पैरों से अच्छा नियमवान् होकर किसीको नहीं मारताहै वह सब जीवधारियों में विश्वासरूप जानना योग्यहै ३८ शुद्धकर्मी दयावान् दंडादि शस्त्र और पाषाण ईंट ढेले आदि से भी जो किसी जीवको नहीं भयभीत करताहै ऐसा स्वभाव और आचार रखनेवाला मनुष्य स्वर्ग में जाताहै ३९ और वहां जाकर दिव्य भवनों में देवताओंकी समान आनन्दपूर्व्वक निवास करताहै ४० और जब वह पुण्यफलके समाप्त होने पर मनुष्यों में जन्म लेताहै तब वह रोग पीड़ासे रहित सुखसे वृद्धिको पाताहै ४१ और सदैव सुखी दुःखों से रहित होकर निर्भय होताहै हे देवी बस सत्पुरुषों का मार्ग है इसमें किसीप्रकार की पीड़ा नहीं है ४२ उमा बोलीं कि जो मनुष्य पूर्व पक्ष और सिद्धान्तमें कुशल ज्ञानी बिज्ञानी बुद्धिमान् और संसारके कार्य्यों में बड़े सावधान दिखाई देते हैं ४३ और कोई दुर्बुद्धी ज्ञानबिज्ञानशून्य हैं सो हे विरूपाक्ष शिवजी मनुष्य किस मुख्यकर्म के करनेसे बुद्धिमान् होताहै और किस कर्मसे निर्बुद्धी होताहै हे सर्व धर्मज्ञों में श्रेष्ठ आप इस मेरे संशयको निवृत्त करिये ४४।४५ हे देवता कोई मनुष्य जन्मांध कोई रोगों से दुःखी और कोई नपुंसक दिखाई देते हैं इन सबके कारणोंको बर्णन कीजिये ४६ महेश्वरजी बोले कि जो सावधान मनुष्य प्रतिदिन वेदज्ञ ब्राह्मण और धर्मज्ञ सिद्धों से कुशलक्षेम पूछते हैं ४७ और बुरे कर्मों के त्याग और शुभकर्मों के आचरणको करते हैं वहलोग सदैव इसलोकमें सुखको पाते हैं और अन्तमें स्वर्ग को जाते हैं ४८ जो ऐसे मनुष्य फिर मनुष्य शरीरको पाते हैं वह शास्त्रोंकेस्मरण रखनेवाले और बड़े बुद्धिमान् होते हैं जिसका शास्त्र बुद्धिके अनुसार होताहै उसका कल्याणहोताहै ४९ जो मनुष्य दूसरेकी स्त्री को कुदृष्टि करते हैं उस नष्ट प्रकृतिसे वह जन्मसेही अंधे

होते हैं ५० जो मनुष्य दोषीचित्त नंगी स्त्री को देखते हैं वह दुष्कर्मी मनुष्य इस लोकमें रोगोंसे दुःखीहोते हैं ५१ जो अज्ञानी दुराचारी मनुष्य नीचजातिकी स्त्रियों के भोग करने में प्रवृत्तहैं वह लोग सब मनुष्यों में दुर्बुद्धी होकर नपुंसक होते हैं ५२ जो मनुष्य पशुओंको क़ैद करते हैं वा मारते हैं और जो गुरूकी स्त्रीसे भोग करनेवाले हैं और वर्णसङ्कर स्त्री से संग करनेवाले हैं वह मनुष्य नपुंसक उत्पन्न होते हैं ५३ उमाबोलीं कि हे देवताओं में बड़े साधू कौनसा कर्म दोषयुक्तहै और कौनसा निर्द्दोष कर्म्म है जिसको करके मनुष्य कल्याण को पाताहै ५४ महेश्वर जी बोले जो धर्म्मका निश्चय करनेवाला और गुणोंका चाहनेवाला मनुष्य कल्याणमार्ग्ग को चाहता हुआ ब्राह्मण से पूछता है वह स्वर्ग्ग को भोगता है ५५ हे देवी जब वह कालपाकर मनुष्य शरीरको पाताहै तब वह बुद्धिमान् और धारणायुक्त उत्पन्नहोताहै ५६ हे उमादेवी यह सत्पुरुषों का धर्म ऐश्वर्य्य उत्पन्न करने वाला मानना योग्य है मैंने संसारी मनुष्यों के उपकारार्थ प्रसन्नता पूर्व्वक तुम से कहा ५७ उमाबोलीं जो निर्बुद्धी धर्म के बिरोधी मनुष्य वेदज्ञ ब्राह्मणों के पास जाना नहीं चाहते हैं ५८ और जो मनुष्य व्रतदान श्रद्धा और धर्म में नियतहैं इसीप्रकार जो अन्यमनुष्य व्रत नियमादि से रहित राक्षसों के समानहैं ५९ कोई यज्ञों के करनेवाले हैं कोई हवनादि कर्मों के त्यागनेवाले हैं वह इसलोकमें ऐसे २ धर्म अधर्मवाले कैसे २ होते हैं वह आप मुझसे कहिये ६० महेश्वरजी बोले कि पूर्व्वसमयमें सब शास्त्र जो कि लोकके धर्मोंकी मर्य्यादहैं प्रकट कियेगये दृढ़व्रत वाले मनुष्य उनशास्त्रों के प्रमाण से कर्म्मकर्त्ता दिखाई देते हैं ६१ और मोहके बशीभूत व्रत न करनेवाले मर्यादा के नाशक जिनलोगोंने अधर्मको धर्म कहाहै वही ब्रह्मराक्षस कहेजाते हैं ६२ और जब वह जीव समयकी लौट पौटसे इससंसार में मनुष्य होते हैं तब वह नीचलोग होम और बषट्कार से रहित होते हैं ६३ हे देवी मैंने तेरे सन्देह के दूर करने के लिये मनुष्यों का यह सब धर्मसागर जो कि मनुष्य की बुद्धिसे वाहर है बर्णन किया ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेउमामहेश्वरसंवादेशतोपरिपंचचत्वारिंशोऽध्यायः १४५

एकसौछियालिसका अध्याय ॥

महेश्वरजी बोले हे सगुण निर्गुण ब्रह्मके जाननेवाली धर्म्मज्ञ तपोधन वन

वासी पतिव्रता सुभ्रूकेशान्त रखनेवाली हिमालयपुत्री १ सावधान इन्द्रियों की जीतनेवाली ममतारहित धर्मचारिणी सुन्दरी मैं तुमसे जो पूंछताहूं उसको कहो कि ब्रह्माजी की पतिव्रता स्त्री सावित्री है और शची इन्द्रकी पत्नी है, सूर्य्यकेपुत्र की पत्नी धूमोर्णा कुबेरजीकी पत्नी ऋद्धिहै, वरुण देवताकी पत्नी गौरी, सूर्य्यकी पत्नी सुवर्चला,चन्द्रमाकी रोहिणी और अग्निकी स्वाहानाम पतिव्रता स्त्री है २।४ कश्यपजी की अदिती है यह सब अपने २ पतिही को देवता माननेवाली हैं हे देवी उनको तुमने सदैव पूजनकियाहै और उपासना किया है ५ हे धर्मज्ञ धर्मवादिनी इसकारण मैं तुम्हारा कियाहुआ स्त्रीधर्म प्रारम्भसे सुना चाहताहूं ६ हे सुधर्मचारिणी तू तेज बल शील और व्रतमें मेरेही समान प्रताप तपोबल रखने वाली है तुमने बड़ा तप कियाहै ७ इसी से हे देवी तुम्हारे मुखसे कहाहुआ स्त्रीधर्म बड़ा गुणकारी होगा और लोकमें तुमसे प्रमाणताको पावेगा ८ पूर्व्वसमय में स्त्रियां मुख्यकरके स्त्रीलोगों की गतीहुई हैं इसी से यह तुम्हारे मुखसेकहाहुआ स्त्रीधर्म सदैव पृथ्वीपर प्रचलितहोगा ९ तेरे आधे शरीरसे मेरा आधाशरीर प्रकट हुआ है तुम देवताओं का कार्यकरनेवाली सनातन लोकोंकी उत्पन्न करनेवाली हो १० हे शुभदेवी तुमको सनातन स्त्रीधर्म अच्छी रीतिसे विदितहै इस हेतुसे तुम अपने धर्मको सम्पूर्णतापूर्व्वक मेरे सम्मुख वर्णनकरो ११ उमाबोली हे षडैश्वर्य्य के स्वामी सब जीवों के ईश्वर तीनोंकालके ज्ञाता देवता यह मेरा बचन आपही के प्रभाव से प्रकट होताहै १२ हे देवेश्वर सब तीर्थों के जलसे संयुक्त यह रूपवान् नदियां आपके स्नानकेलिये सम्मुख से आती हैं १३ मैं इन सबसे मिलकर सलाहके अनुसार क्रमपूर्व्वक वर्णन करूंगी जो अहंकारसे रहितहै वही पुरुष कहा जाताहै १४ हे भूतेश स्त्रीही स्त्रीकी गतिरूप होती है इसीसे इन उत्तमस्त्रियोंको मैं पूजन करूंगी १५ यह सब नदियों में महाउत्तम समुद्रगामी पवित्र सरस्वती नदी है १६ विपाशा, वितस्ता, चन्द्रभागा, ऐरावती, शतद्रू, देविका, सिंधु, कौशिकी, गौतमी १७ इसीप्रकार सब तीर्थों से वृद्धियुक्त सब नदियों में श्रेष्ठ यह देवनदी गंगादेवी आकाश से पृथ्वीपर आई १८ देवताओं के देवता शिवजी की पत्नी उमा भवानी यह कहकर अपनी मंदमुसकानसे उन नदियोंको अपने समक्ष में करके१९ धर्मवत्सला उमादेवी ने नदियों में श्रेष्ठ स्त्रीधर्म्म में सावधान उन गंगा आदि नदियों से कहा कि २० हे श्रेष्ठ नदियो यह स्त्रीधर्मसम्बन्धी प्रश्न सबके ईश्वर

शिवजी महाराजने कियाहै उसको मैं तुम्हारे साथमें अच्छेप्रकार से विचारकर शंकरजी से कहा चाहती हूं २१ हे समुद्रगामिनी नदियो मैं इस पृथ्वीपर वा स्वर्ग में भी इस विज्ञान को किसी से सिद्ध होनेवाला नहीं देखती हूं इसी हेतु से मैं तुमको पूजन करती हूं २२ इस रीति से उमादेवी ने उन पवित्र कल्याणरूप सब नदियों से पूछा तब बहुत नदियों से प्रतिष्ठापूर्व्वक प्रेरणा करीहुई २३ नदियों से मिलीहुई बुद्धियुक्त स्त्रीधर्म्म की ज्ञाता पवित्र मुसकानवाली सुमेरु की पुत्री पापभयकी मोचन करनेवाली २४ बुद्धिसे नम्र सब धर्मोंकी ज्ञाता बुद्धिमान् श्री गंगादेवी ने मंदमुसकानसमेत यहवचन कहा २५ हे पापों से रहित धर्म में प्रवृत्त देवी मैं धन्यहूं और अनुगृहीतहूं जो सब जगत्की मान्यरूप तुम हमारा सन्मान करतीहो निश्चयकरके जो समर्थ होताहै वही प्रश्न करताहै अथवा प्रतिष्ठाको करताहै वही पंडित और धर्मात्मा कहाताहै २६।२७ ज्ञानविज्ञानयुक्त खंडनमंडन में कुशलहोकर जो दूसरे वक्ताओं से पूछताहै वह आपत्ति में नहीं पड़ताहै २८ जो अधिक बुद्धिमान् नहीं है वही सभामें विपरीत वचनको कहताहै और अहंवादी भी विपरीत और दुर्बल वचनोंको कहताहै २९ हे स्वर्ग में श्रेष्ठ दिव्य ज्ञानवाली देवी तुमही हमसे स्त्रीधर्म्म कहनेको योग्यहो ३० भीष्मजी बोले कि इसके अनन्तर श्रीगंगाजी से बहुत गुणों के द्वारा स्तूयमान उस उमादेवी ने सब स्त्रीधर्म को सम्पूर्णताके साथ वर्णन किया ३१ उमाबोली कि यह स्त्रीधर्म जैसा मुझको अपनी बुद्धिके अनुसार विदितहै उस सबको मैं वर्णन करूंगी तुम इसीप्रकार आज्ञा करनेवाली होवो ३२ प्रथमही विवाह में यह स्त्रीधर्म्म बान्धवों से विचार कियागया है वह उस धर्म्मका वचन अग्निके सम्मुख पतिके साथ करनेवाली होतीहै ३३ जो स्त्री सुन्दरप्रकृति श्रेष्ठ वचनवाली सुहृदचित्त नेकचलन प्रियदर्शन दूसरेमें चित्त न लगानेवाली सुन्दरमुखी है वही पतिकेसाथ धर्मकी करनेवाली है ३४ जो पतिव्रता स्त्री नियमसे आहार करनेवाली है और जैसे पुत्र के मुखको देखते हैं उसीप्रकार बराबर जो पतिके मुखको देखनेवाली है वह धर्मचारिणी ३५ स्त्रीधर्म्म को उत्तम माननेवाली और धर्म्मभागी होतीहै जो पतिव्रता स्त्री पतिको सदैव देवता के समान देखती है ३६ और सेवा आज्ञा पालन को देवताके समान करती है प्रीतिसे सुहृद उत्तम व्रतवाली और श्रेष्ठदर्शनहै ३७ धर्म्मको उत्तम माननेवाली पतिकेसमान व्रत करनेवाली वह पतिव्रता अपनेपति

को देवताके समान देखती है यह स्त्री पुरुषका शुभधर्म्म कहागया ३८ जो सेवा परिचर्य्याको देवताकेसमान करनेवाली और बिना वशीकरण प्रसन्नचित्त सुन्दर व्रत उत्तमदर्शन दूसरेमें चित्त न लगानेवाली सुन्दरमुखी और पतिकेसाथ धर्म्म-चारिणी है ३९ और जो स्त्री पतिके कठोरबचन सुननेवाली और क्रोधयुक्तदृष्टिसे देखीहुईभी प्रसन्नचित्त और प्रसन्नाननहै वह स्त्री पतिव्रताहै ४० जो पुल्लिङ्गनाम वाले चन्द्रमा सूर्य्य और वृक्षकोभी नहीं देखती है और पतिसे प्रतिष्ठावती है वह सुन्दरी धर्म्मचारिणी होती है ४१ जो स्त्री अपने रोगी दुःखी निर्धनी मार्ग्ग से थकेहुये पतिको ऐसे सेवा करती है जैसे कि प्रीतिसे पुत्रकी करते हैं वह धर्म्म-भागी है ४२ जो नियमवती सावधान स्त्री पुत्रवती है और जो पति की प्यारी और स्वामी को प्राणोंके समान माननेवाली है वह स्त्रीभी धर्म्मभागिनी है ४३ जो प्रसन्नचित्त स्त्री सदैव सेवा और परिचर्य्या को करती है और अत्यन्त प्रस-न्नता और नम्रता से युक्तहै वह धर्मभागिनी है ४४ भोग ऐश्वर्य्य और सुखों में जिसकी वैसी अभिलाषा नहीं है जैसी कि पतिमें है वह स्त्री धर्म्मभागिनी है ४५ सदैव प्रातःकाल जागने वाली घरके काम पूरे करने में प्रवृत्तचित्त गोबर आदि से लीपकर अत्यन्त स्वच्छ स्थान रखनेवाली ४६ सदैव हवनादिक के कार्य्यों में प्रवृत्त सदा पुष्प बलिकी देनेवाली और पतिके साथ देवता अतिथि पालनयोग्य दासादि को भाग देनेवाली ४७ और उनका भाग देकर शेष बचे हुये अन्नको बुद्धिके अनुसार खानेवाली और बालबच्चों को प्रसन्न और नीरोग रखनेवाली स्त्री धर्म्मसे युक्त होती है ४८ सास श्वशुरके चरणोंको दण्डवत् क-रके प्रसन्न करनेवाली गुणवती होकर जो अपने माता पिताकी आज्ञाकारी स्त्री है वह तपरूप धन रखनेवाली है ४९ जो स्त्री ब्राह्मण दुर्बल बिना मा बापके दुःखी अन्धे और कंगालको अन्नदान से प्रसन्न करती है वह पतिव्रतधर्म्म प्राप्त करने वाली है ५० जो स्त्री अपनी बुद्धि के बल से कठिन आज्ञारूपी व्रतोंको सदैव पालन करती है पति में चित्त लगानेवाली और उसका अभीष्ट करनेवाली है वह पतिव्रत है ५१ जो स्त्री पतिकोही श्रेष्ठ माननेवाली और उसका व्रत करने वाली श्रेष्ठचलन है उसका पुण्यही तप और सनातन स्वर्ग्ग है ५२ जो स्त्रियों का देवता पतिहै वही बन्धुहै वही गतिरूप है जैसा पति होता है उससे अधिक कोई देवता और गति नहीं है ५३ पति की प्रसन्नता के समान चाहे स्वर्गहोय

अथवा न होय परन्तु तुझ महेश्वर के अप्रसन्न होने पर मैं स्वर्ग को भी नहीं चाहतीहूं ५४ निर्धन रोगी आपत्तिमें फँसा शत्रुके पंजेमें वर्त्तमान अथवा ब्रह्मशापसे पीड़ावान् भी पति करनेके अयोग्य अधर्म्म की अथवा प्राणोंके नाश करनेकी भी आज्ञादे उसको किसीप्रकार के अपधर्म्मों का बिचार न करके अवश्य करना योग्य है ५५। ५६ हे देवता मैंने आप की आज्ञा से यह स्त्रीधर्म्म वर्णन किया जो इसरीतिसे पतिके साथ प्रीति करनेवाली स्त्री है वह पतिव्रताहै ५७ भीष्मजी बोले कि पार्वतीजी के इसप्रकार बर्णन करनेपर उन देवेश्वर जी ने पार्वतीका धन्यबाद करके सब साथियोंसमेत संसारके लोगोंको बिदा किया ५८ इसके पीछे भूतगण नदियां गन्धर्व और अप्सराओं के गण शिवजी को शिरसे प्रणामकर २ अपने २ स्थानोंको गये ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेउमामहेश्वरसंवादेशततोपरिषट्चत्वारिंशोऽध्यायः॥

एकसौसैंतालिसका अध्याय॥

ऋषिबोले कि हे पिनाकधनुषधारी भगदेवता के नेत्र फोड़नेवाले सबलोगों से स्तूयमान शङ्करजी हम बासुदेवजी के माहात्म्यको सुना चाहते हैं १ महेश्वर जी बोले कि सब पापोंका नाश करनेवाला सनातनपुरुष बिष्णु ब्रह्माजी से भी श्रेष्ठ और जाम्बूनद नाम सुबर्ण के समान ऐसा प्रकाशित है जैसे कि स्वच्छ आकाश में उदय होनेवाला सूर्य्य होता है २ दशभुजाधारी महातेजस्वी असुरों का मारनेवाला श्रीवत्सचिह्न से अलंकृत आत्मारूप से इन्द्रियों का स्वामी और सब देवताओं से पूजितहै ३ जिसके उदरसे ब्रह्मा उत्पन्न हुये मैं शिरसे उत्पन्नहूं केशजालों से सूर्य्यादिक प्रकाशवान् ग्रह नक्षत्रादि और शरीरके रोमों से देवता और असुर प्रकट हुये हैं ४ ऋषि और सनातन लोक उसके शरीरसे पैदाहैं वही साक्षात् पुरुष ब्रह्मा आदिक सब देवताओं का उत्पत्ति स्थान है ५ वह तीनोंलोकों का ईश्वर इस सम्पूर्ण पृथ्वी का कर्त्ता है और सब स्थावर जंगमजीवों का नाशकर्त्ता है ६ वही देवताओं में श्रेष्ठ साक्षात् देवताओं का स्वामी बड़े तपका करनेवालाहै वही सर्वज्ञ सब जीवमात्रके हृदयोंमें नियत सर्वत्र वर्त्तमान होकर सब ओरको मुख रखनेवालाहै ७ वही परमात्मा इन्द्रियों का स्वामी सर्वव्यापी और महेश्वरहै तीनोंलोकों में उससे उत्तम कोई नहीं है ८ वह

मधु दैत्यका मारनेवाला सनातन गोबिन्द नामसे प्रसिद्धहै वही बड़ाई का देने वाला युद्धमें सब राजाओंको मारेगा ६ वह देवकार्य्य के निमित्त मनुष्य शरीर में प्रकटहोकर नियतहुआहै उस विष्णु के सिवाय सब देवताओंका समूह भी समर्थ नहीं है १० जो अपना स्वामी न रखनेवाला इस संसार में देवकार्य्य करने को प्रकट हुआहै वह सब जीवों का स्वामी और सब देवताओं से प्रतिष्ठा पाने वालाहै ११ इस देवनाथ देवताओं के कार्य्य पूरे करने में चित्तसे प्रवृत्त ब्रह्मरूप सदैव ब्रह्मर्षियों का रक्षास्थान १२ जिसके शरीर के गर्भ में ब्रह्मा सुख से वर्त्तमानहै और रुद्रभी उसीके शरीरमें सुखपूर्व्वक आश्रयीभूतहै १३ और सब देवता उसके शरीरमें सुखपूर्व्वक रक्षितहैं वह कमललोचन देवता श्रीगर्भ लक्ष्मीके साथ नियत १४ शार्ङ्गधनुषसमेत चक्र और खड्ग रखनेवाला गरुड़ध्वज प्रसन्नचित्त जितेन्द्रियपने में संयुक्त है १५ रूप बल और शुभदर्शनवाला उन्नतशरीर यथार्थ ज्ञानरूप धैर्य्य और सत्यतारूपी धन से युक्तहै १६ दया स्वरूप और अतुलबल से सम्पन्नहै अपूर्व्वदर्शन सब दिव्य अस्त्रोंसहित उदय होरहाहै १७ योगमाया का स्वामी सहस्राक्ष निर्दोष महासाहसी शूरबीर मित्रों से स्तुतिमान् बिरादरी और बांधवों का प्यारा १८ क्षमावान् शान्त और अहंकारसे रहित है वही वेद ब्राह्मणोंका रक्षक और स्वामी भयभीत भक्तों के भयका दूर करनेवाला और उन की प्रसन्नताका बढ़ानेवालाहै सब जीवोंका रक्षास्थान दुःखी लोगों के पोषणमें प्रवृत्त शास्त्र और अर्थ से युक्त सब जीवों से स्तूयमान १६ । २० शरण में आये हुये शत्रुओंपर भी बड़ाउपकार करनेवाला धर्मज्ञ नीतिज्ञ ब्रह्मबादी और इंद्रियों का जीतनेवालाहै २१ वह गोबिन्दजी इसलोक में देवताओं के ऐश्वर्य्य के अर्थ अपनी मायाके द्वारा महात्मा मनुजी के बंशमें अवतार लेंगे और प्रजापति मनु के शुभधर्मों से भरेहुये मार्ग में नियत होंगे मनुका पुत्र अङ्गहोगा उसका पुत्र अन्तर्द्धामा होगा २२ । २३ अन्तर्द्धामा का पुत्र दोषों से रहित हविर्धामा नाम अनिन्दित प्रजापति होगा हविर्धामा का बड़ा पुत्र प्राचीनबर्हिष होगा २४ उस के प्रचेतसको आदिलेकर दश पुत्रहोंगे और प्राचेतसका पुत्र दक्षप्रजापतिहोगा और दक्षकी कन्याका पुत्र सूर्यहोगा सूर्य से मनुहोगा और मनुके बंशमें इला और सुद्युम्न उत्पन्नहोंगे २५ । २६ बुधसे पुरूरवा और पुरूरवासे आयु पैदाहोगा उससे नहुष उत्पन्नहोगा नहुषका पुत्र ययातिहोगा २७ उससे बड़ापराक्रमी यदु

उत्पन्नहोगा उससे क्रोष्टा और क्रोष्टासे वृजनीवान्होगा २८ वृजनीवान्का पुत्र उषंगुनाम अजेय महापराक्रमी होगा उषंगु का पुत्र चित्ररथहोगा २९ उसकाछोटा पुत्र शूरनाम होगा उन विख्यातवीर्य्य चरित्र गुणशाली ३० यज्ञ करनेवाले अत्यन्त पवित्रात्मा ब्राह्मणों के अङ्गीकृत क्षत्रियों के वंशमें वह शूर बड़ा पराक्रमी क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ विख्यात कीर्त्ति होगा वह बड़ाई देनेवाले ऐसे पुत्रको उत्पन्नकरेगा जोकि अपने वंशका बढ़ानेवाला ३१ वसुदेवनाम से प्रसिद्ध आनकदुन्दुभी नामहोगा उसका पुत्र चतुर्भुज बासुदेवनाम होगा ३२ जोकि ब्राह्मणों का सत्कार करनेवाला महादानी ब्रह्मरूप ब्राह्मणोंका प्यारा जरासन्धके बन्धनमें पड़े हुये राजाओं को बन्धनसे मुक्तकरेगा ३३ वह यदुबंशी राजाजरासन्ध को गिरि गह्वरमें बिजयकरके सबराजाओंके रत्नोंसे धनाढ्यहोगा ३४ वहपराक्रमी अपनी सामर्थ्य से पृथ्वी पर अजेय होगा पराक्रमसंयुक्त सब राजाओं का राजा ३५ शूरसेन देशों में पालनकरता नीतिमान् प्रभुहो द्वारका में राज्य करताहुआ सब पृथ्वी को विजय करके सदैव पालन करेगा ३६ आप उसको पाकर बचनरूप पुष्प और उत्तम भेटों से न्याय के अनुसार ऐसे पूजनकरो जैसे कि सनातन ब्रह्माजी को करतेहो ३७ जो पुरुष मुझ को और पितामह ब्रह्माजी को देखना चाहै उसीसे वह प्रतापवान् भगवान् बासुदेव दर्शन के योग्यहैं ३८ हे तपोधन ऋषियो उसके दर्शन करनेसे निस्सन्देह मेरा और ब्रह्माजीका भी दर्शन किया हुआ जानो ३९ वह कमललोचन जिसपर प्रसन्नहोगा उसपर ब्रह्मा को आदि लेके सबदेवता प्रसन्नहोंगे ४० जो मनुष्य नरलोकमें उन केशवजीकी शरणलेगा उसको शुभकीर्त्ति विजय और स्वर्ग प्राप्तहोगा ४१ वह धर्मात्मा साक्षात् धर्म्मों का उपदेश करनेवाला होगा वह ईश्वर सदैव सावधान धर्मज्ञ पुरुषोंसे नमस्कार करनेके योग्यहै ४२ उस प्रभुके पूजन करनेसे उत्तम धर्म प्राप्तहोताहै उसी बड़ेतेजस्वी पुरुषोत्तम देवताने संसारकी वृद्धि करनेके अर्थ ४३ धर्म्मके निमित्त किरोड़ों ऋषियों को उत्पन्नकियाहै विधिके अनुसार उससे ऐक्यता करनेवाले वह तपोधन सनत्कुमार ऋषि गंधमादन पर्वतपर नियत रहतेहैं इसीहेतुसे वह उत्तम बचनों का कहनेवाला धर्मज्ञ भगवान् प्रभु नारायण हरि नमस्कार करनेके योग्यहै हे उत्तम ब्राह्मणलोगो वह स्वर्ग में भी श्रेष्ठ लोगोंसे दण्डवत् और प्रतिष्ठा करने के योग्यहै उसको सब देवता मनुष्य पूजन करतेहैं वह ईश्वर बचन मन

वाणी आदिसे स्तुति और धन्यवाद करनेके योग्यहै ४४। ४५। ४६ वह दर्शन करनेवाले को दर्शन देता है और शरणागत को शरणागतवत्सल होताहै चित्तसे ध्यान करनेसे चित्तमें दर्शन देताहै ४७ इसनिर्दोष सबको आदिरूप विष्णु भगवान् का वह वड़ा व्रतहै जोकि उत्तम और सुजन धर्म्मज्ञोंसे अभ्यास किया जाताहै ४८ वह सनातन पुरुष स्वर्गमेंही सदैव देवताओं से पूजन कियागया उसके भक्त अपनी योग्यतासे भक्तीके योग्य होतेहैं ४६ वह सदैव द्विजन्माओं की ओरसे मन वाणी वचन इनतीनों के द्वारा नमस्कारके योग्यहै वह देवकीसुत उपाय करनेवाले भक्तों से समीप नियतहोकर दर्शनके योग्यहै ५० हे वड़े साधु मुनिलोगो मैंने यह मार्ग तुमको दिखलाया उसको देखकर सब देवता उत्तम दर्शन कियेहुये के समान होतेहैं ५१ मैंभी उस जगत्पति और सबलोकों के पितामह महावराहरूप देवताको नमस्कार करताहूं ५२ उसकेही दर्शन से तुमको निस्सन्देह तीनों देवता का दर्शनहोगा क्योंकि हम सब देवता उसके शरीरमें निवास करते हैं ५३ पृथ्वीका धारण करनेवाला श्वेत पर्व्वतों के समूहों की समान जो शेषनागहै वह हलधारी वलदेव नामसे विख्यात उसका वड़ाभाई होगा ५४ उस देवताके रथपर दिव्यध्वजा नियत होगी और उस ध्वजामें तीन शाखा रखनेवाला सुवर्णमय तालका वृक्षहोगा ५५ उस सबलोकोंके ईश्वर महाबाहुका शिर वड़े फणवाले महात्मा नागोंसे व्याप्तहोगा ५६ उसके स्मरण किये हुये अस्त्र शस्त्र प्राप्तहोंगे वह अविनाशी भगवान् हरि अनन्तनाम से प्रसिद्ध होगा ५७ हे ऋषिलोगो तुम उस प्रभु अनन्तका भी दर्शनकरो जिसके परमात्माका अन्त देवताओंकी आज्ञानुसार कश्यपका पुत्र बलवान् गरुड़भी अपने पराक्रमसे देखनेको समर्थ नहीं हुआ वह शेषनाग अपने फणसे पृथ्वीको धारण कर पृथ्वीकेही भीतर विचरताहै ५८। ५६ जो विष्णुहै वही पृथ्वीका धारणकर्त्ता षड़ैश्वर्य्यवान् अनन्तहै जो वलदेव वही कृष्णहै जो विष्णुहैं वही शेषनागहैं ६० वह दिव्य पराक्रमी चक्र और हलके धारण करनेवाले दोनोंपुरुषोत्तम दर्शन और पूजनके योग्यहैं ६१ हे तपोधन ऋषियो मैंने यहतुम्हारा अनुग्रहरूप पवित्र वचन वर्णनकिया है इसकारण तुम वड़े उपायकरके उस श्रीकृष्णका पूजनकरो ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेपुरुषमाहात्म्यंनामशतोपरिसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः॥

एकसौ अड़तालीसका अध्याय॥

नारदजी बोले कि इसकेपीछे बिजली और गर्जनासे युक्त आकाश से बड़ा भारी शब्दहुआ और सम्पूर्ण आकाश नीले बादलों से ढकगया १ और पर्जन्यने वर्षाऋतुमें जलको बरसाया घोर अन्धकारसे दिशा अप्रकाशितहुईं २ उस समय मुनियोंने उस क्रीड़ाके योग्य पवित्र सनातन देव पर्वतमें सब भूतोंके समूहोंको नहीं देखा ३ फिर शीघ्रही आकाश बादलों के बिना निर्म्मलहुआ तब ऋषिलोग तीर्थयात्राको और अन्य २ लोग अपने २ स्थानों को गये ४ उमाके साथ शङ्करजी के उस आपकी कथासे सम्बन्ध रखनेवाले सम्बादको और बुद्धि से बाहर उस आश्चर्य्य को देखकर सब ऋषिलोग अचम्भे से युक्तहुये ५ हे पुरुषोत्तम सो आप सनातन धर्मरूपहो आपही के निमित्त वहां शिवजी महाराज ने हम सबको उपदेश किया ६ अब आपके तेजने यह दूसरा चमत्कार उत्पन्न कियाहै हे श्रीकृष्णजी जिसको देखकर हम आश्चर्य्ययुक्तहोरहे हैं औरहमको वह भूतकालका आनन्द स्मरणहुआ ७ हे महाबाहो प्रभु श्रीकृष्णजी उस देवताओं केभी देवता गिरीश शिवजीका यह माहात्म्य तुमसे कहा ८ तब तपोवनवासी उन ऋषियों के इस वचनको सुनकर देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी ने उन सब ऋषियों का पूजनकिया ९ उस समय अत्यन्त प्रसन्नहोकर उन ऋषियोंने श्रीकृष्णजीसे कहा कि हे मधुसूदनजी आप सदैव वारम्बार हमको दर्शनदो १० हे प्रभु स्वर्गमें हमारी प्रीति वैसी नहीं है जैसी कि तुम्हारे दर्शनमें है हे महाबाहो जो शिवजी ने कहा वह सत्यहै ११ हे शत्रुहन्ता यह सबगुप्त वृत्तान्त मैंने तुमसे कहा तुमही मुख्यबात के ज्ञाताहो जो हमारे कहनेसे हमसे पूछतेहो १२ इसीसे हमने यहगुप्त वृत्तान्त आपकी प्रसन्नताके अर्थ वर्णन कियाहै तीनोंलोकों के सबगुप्त और प्रकट वृत्तान्तोंके आप ज्ञाताहैं अर्थात् सर्वज्ञहो १३ हे प्रभु आप जन्म मरण आदि सब कारणों के जाननेवाले हो हम अत्यन्त चपलतासे उसगुह्य पदार्थके धारण करनेको समर्थ नहीं हैं १४ हे प्रभु इसीकारणसे आपके नियतहोनेपर बड़ी शीघ्रतासे कहते हैं कि ऐसी कोई आश्चर्य्यकारी वार्त्ता नहीं है जिसको आप नहीं जानते १५ हे देवता स्वर्ग और पृथ्वीका सब वृत्तान्त आपको विदित है हे श्रीकृष्णजी हम आशीर्वाद करतेहैं कि आप बुद्धि और पुष्टिको प्राप्तकरो १६ हे

तात आपका पुत्र बड़े प्रभाव और प्रतापसे युक्त उत्तम विख्यात कीर्त्तिका प्राप्त करनेवाला आपके समान सामर्थ्यवान् अथवा विलक्षण होगा १७ भीष्मजी बोले इसके पीछे वह महर्षि उस देवदेव ईश्वर श्रीकृष्णजी को प्रणाम और परिक्रमा करके चलेगये १८ और वह श्रीमान् नारायणजी भी जोकि बड़े तेजसे युक्तथे उस व्रतको विधिके अनुसार पूर्णकरके फिर द्वारकाको आये १९ हे प्रभु फिर दश महीनेके पूरेहोनेपर उनका पुत्र अपूर्वदर्शनीय सबका अंगीकृत प्रतापी शूर और बंशका धारण करनेवाला श्रीरुक्मिणीजी से उत्पन्नहुआ २० हे राजा वह सब जीवोंका कामदेव और भगवद्भक्तहै और सदैव देवता वा असुरों के हृदयमें विचरताहै २१ वह मेघवर्ण चतुर्भुज पुरुषोत्तम प्रेमके वशीभूत होकर पाण्डवों के पास नियतहै और आप इसके शरणमें हैं २२ जहांपर यह त्रिविक्रम विष्णु देवता उपस्थितहोकर वर्त्तमानहैं वहां कीर्त्ति लक्ष्मी धैर्य्य और स्वर्गका मार्गहै २३ यही आदिदेव महादेव सब जीवोंका रक्षाश्रय और इन्द्रसमेत सब तेंतीसकरोड़ देवताओंका रूपहै २४ यह महात्मा आदि अन्तसे रहित अरूप महातेजस्वी मधुसूदन देवताओंके अभीष्ट सिद्ध करनेके लिये वर्त्तमानहुआ है २५ यह माधव जी बड़े गूढ़ और कठिन आशयोंके कहनेवाले होकर सबके कर्त्ता हैं हे युधिष्ठिर तेरी पूर्ण विजयहै और बड़ी शुभ विख्यात कीर्त्तिहै २६ नारायणजी की शरण लेनेसे यह सम्पूर्ण पृथ्वी तेरी है यह तेरा स्वामी श्रीकृष्ण बुद्धि और मनसे भी परे है उसकी गति नारायण है २७ सो आप हवन करनेवाले तुमने रणरूपी अग्नि में प्रलयकालकी अग्निके समय श्रीकृष्णरूपी बड़े श्रुवासे राजाओं को होमा २८ यह दुर्य्योधन पुत्र बांधव और भाइयोंसमेत शोचकरनेकेयोग्यहै क्योंकि उस अज्ञानी ने क्रोधरूप होकर नरनारायण के साथ युद्ध किया २९ बड़े २ पराक्रमी बृहत्शरीरधारी दैत्य और दानवेन्द्रों ने उसके चक्ररूप अग्नि में ऐसे नाशको पाया जैसे कि दावानलमें टीड़ियां नाशको पाती हैं ३० हे पुरुषोत्तम इस संसारमें यह नारायण युद्धमें उन मनुष्यों के सम्मुख लड़ने को योग्य नहीं है जोकि बुद्धिकी शक्ति पराक्रम और बलसे अत्यन्त रहितहैं ३१ हे राजा युद्ध में वर्त्तमान प्रलयकालकी अग्नि के समान योगी और महाविजयी अर्जुन ने पराक्रमसे दुर्य्योधन की सब सेनाको मारा ३२ शिवजी ने हिमालय की पृष्ठपर मुनियों से जो २ प्राचीन वृत्तान्त वर्णनकिया उस सबको मैं कहताहूं तुम चित्त

से सुनो ३३ तेज बल और पराक्रमसे श्रीकृष्णजीकी प्रसन्नताहोय प्रभु श्रीकृष्ण जीमें वह तीनोंगुणहैं जोकि प्रभाव नम्रता और जन्म कहाते हैं ३४ जबकि वह समर्थहोताहै तब कौन पुरुष उसके बिपरीत करसक्ताहै सुनो जहां यह श्रीकृष्णजी बर्त्तमानहैं वहांपर वह पुष्टि है जिससे उत्तम दूसरी नहीं है ३५ यहां हम निर्बुद्धी मनुष्य दूसरे के स्वाधीनहोकर अत्यन्त व्याकुलहैं जो जानबूझकर भी मृत्युके अबिनाशी मार्गमें आकर बर्त्तमानहुये ३६ आप प्रथमही श्रीकृष्णजीकी शरण लेकर सत्यबक्तापनेमें नियतहुये और प्रतिज्ञापालनमें प्रवृत्तहोकर तुम राज्यके चलनको नहीं प्राप्तकरतेहो अर्थात् ब्राह्मप्रकृतिमें उपस्थितहो ३७ हे राजा इसीप्रकार तुम अपने मरणको भी अच्छीरीतिसे मानतेहो हे शत्रुओं के बिजय करनेवाले जो प्रतिज्ञा कीगई उसके त्यागनेको योग्य नहींहो ३८ यह सब मनुष्य युद्धभूमि में काल के हाथसे मारेगये हमभी कालहीं से मारेगये इससे कालही परमेश्वरहै ३९ कालका जाननेवाला पुरुष कालके पंजेमें बँधाहुआहै इससे शोचकरने के योग्य नहीं है जो रक्तनेत्र दण्डधारी कालहै वही कृष्ण हरिहै ४० हे कौरवनन्दन युधिष्ठिर इसी हेतुसे तुम यहां ज्ञातिवालोंको शोच करनेके योग्य नहींहो सदैव शोचसे रहित रहो मैंने जो माधवजी का माहात्म्य कहा वह तुमने सुना ४१ वह उतनाही दृष्टान्त सज्जनके लिये बहुतहै हे महाराज मैंने बुद्धिमान् व्यास और नारदजी का बचन सुनकर ४२ महापूजित श्रीकृष्णजी का और ऋषियों के समूहोंका बहुत बड़ा प्रभाव बर्णनकिया ४३ और शिव पार्बतीजी का संबादभी कहा जो पुरुष उस महापुरुषकी कथाको सुनेगा ४४ पढ़ेगा अथवा बर्णनकरेगा वह बड़े कल्याणको पावेगा और उसके चित्तके सब मनोरथ सिद्धहोंगे ४५ और शरीर त्यागके पीछे वह निस्सन्देह स्वर्ग को पावेगा ४६ कल्याणके चाहनेवाले पुरुषको श्रीकृष्णजी का प्राप्तकरना न्यायके अनुसार उचितहै हे राजा वेदपाठी ब्राह्मणोंने भी इन्हीं श्रीकृष्णजी की स्तुति करी है ४७ हे कुरुराज महेश्वरजीके मुखसे निकलेहुये जो धर्म्म और गुण कहेगये हैं उनको तुम रात्रि दिन सेवन करनेके योग्यहो अर्थात् तुमको सदैव सेवन करना चाहिये ४८ तुम्हनरीके ऐसे शास्त्रके अनुसार कर्मकर्त्ता और प्रजापालनमें दण्डधारणपूर्बक कुशलबुद्धीको स्वर्गलोक प्राप्त होगा ४९ हे राजा तुम धर्म्म से प्रजाकी रक्षा करनेके योग्यहो राजाका जो दण्ड है वह अच्छे धर्म्मवाला कहा जाता है ५० हे राजा जो मैंने

सब सुजन लोगोंके सम्मुख इस शिव पार्व्वती के प्रश्नोत्तररूप संवाद को वर्णन किया जो इसलोकमें ऐश्वर्य्यकी इच्छा रखता है ५१ वह उसको सुनकर अथवा सुननेका इच्छावान् पुरुष पवित्रचित्त से शिवजी का पूजनकरे ५२ और हे पाण्डव उस निर्द्दोष महात्मा नारदजी का जो यह शिवजी के पूजन के विषय में उपदेश है उसको उसी प्रकार से करे ५३ हे युधिष्ठिर इस हिमालय पर्व्वत पर यह अपूर्व आश्चर्य्यकारी प्रभाव वासुदेवजी और शिवजीके स्वभावसे उत्पन्न है ५४ इस सनातन पुरुष ने गाण्डीवधनुषधारी समेत बद्री आश्रम में दशहजार वर्षतक बड़ा घोर तप किया है ५५ यह कमललोचन अर्ज्जुन और वासुदेवजी तीनों युगोंमें अवतार लेनेवाले हैं इन दोनोंका वृत्तान्त मुझको नारदजी और व्यासजी से विदित हुआ है ५६ इस महानुभाव श्रीकृष्णजी ने बाल्यावस्थाही में बिरादरी वालोंकी रक्षाके निमित्त कंसको मारा ५७ हे कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर हम इस सनातन पुराण पुरुषके कर्म्मों की संख्या करने की सामर्थ्य नहीं रखते ५८ हे तात निश्चय करके तेरा उत्तम कल्याण अवश्य होगा क्योंकि जो तेरा सखा यह पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण है ५९ परलोक में वर्त्तमान दुर्म्मति दुर्य्योधन को शोचताहूं जिसके कारणसे घोड़े हाथीआदिसमेत सब पृथ्वीके लोगोंका नाश हुआ ६० दुर्य्योधन कर्ण शकुनि दुश्शासन इन चारोंके अपराधोंसे और अपनी दुर्म्मतियों से कौरवों ने नाशको पाया ६१ वैशम्पायनजी बोले कि इसप्रकार से पुरुषोत्तम भीष्मजी के वार्त्तालाप करते हुये राजा युधिष्ठिर उन महात्माओं के मध्यमें मौन हुआ ६२ धृतराष्ट्र आदि राजालोग उस कथाको सुनकर आश्चर्य्ययुक्तहुये और सबोंने चित्तसे श्रीकृष्णजीको श्रेष्ठरीतिसे पूजकर हाथोंको जोड़ा ६३ और उन नारदादि सब ऋषियों ने उस बचनको श्रवणकरके बड़ी प्रशंसापूर्व्वक आशीर्व्वाद दिये ६४ पाण्डव युधिष्ठिर ने सब भाइयोंसमेत भीष्मजी के इस पवित्र और अद्भुत उपदेश को सुना ६५ बड़े बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिर ने इसके पीछेभी उस शरशय्यापर वर्त्तमान गांगेय भीष्मजीसे प्रश्नकिया ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेमहापुरुषप्रस्तावेशतोपरिअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः १४८ ॥

एकसौउनचासका अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले ॥

जयकरी छन्द ॥

भूप युधिष्ठिर सुनिके धर्म्म। अरु पावन सुनि सुस्तव पर्म्म ॥
फेरि पितामह सों इमि बैन। कहते भये मनीषा ऐन ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥

दो० मुख्य देवता कौनहैं लोक माहिं अभिराम।
अरु सुपरायण है कहा कहौ मोहिं बुधिधाम ॥
केहिको अरचै औ पढ़ै किहिकी स्तुति सु अनूप।
प्राप्त होहिं कल्याण को मानव कहिये भूप ॥
सब धर्म्मन में परम तुम जान लहौ को धर्म्म।
अरु सुजपेका जन्म सों रहित होहिं जन भर्म्म ॥
पाण्डव के यह वचन सुन गङ्गासुत मतिमान।
कहत भये इमि वीरबर धरिके हर्ष महान ॥

भीष्मउवाच ॥

रामगीती छन्द ॥

जगत के प्रभु देव देव अनन्त वर भगवान। भक्तजनको कीर्तिबर्द्धन मोदमान महान ॥ सर्वलोकनके महेश्वर विष्णु आनँदधाम। स्तुति सु तिनकी किये छूटत मनुज दुखसों मान ॥ विष्णुही हैं सर्व्वके उत्पत्ति धाम नरेश। पूजिबे के ध्यायबेके योग्य परम सुवेश ॥ पुरुष अव्यय चारुतिनको स्तुति सुकीबोजौन। सर्व धर्म्मन माहिं हमको अधिक धर्म्म सुतौन ॥ देवतनमें परम देवत विष्णुही हैं जानु। पावननमें परमपावन और मत अनुमानु ॥ सर्बभूतनके पिताहैं नाशरहित अनूप। मङ्गलनमें परममङ्गल विष्णुही हैं भूप ॥ विष्णुहीते होतहैं उत्पन्न भूतक सर्व्व। विष्णुही में होत प्रापित प्रलय माहिं अखर्व्व ॥ सुनहुनाम सहस्र तिनको पाप भयकोहर्ण। कहतहौं मैं तोहिं भूपति परम आनँद कर्ण ॥

विष्णुसहस्रनाम ॥

श्री वैशम्पायनउवाच ॥ श्रुत्वाधर्मानशेषेण पावनानिचसर्वशः ॥ युधिष्ठिरः

शांतनवं पुनरेवाभ्यभाषत १ युधिष्ठिरउवाच ॥ किमेकंदैवतंलोके किंवाप्येकंपराय
णम् ॥ स्तुवंतःकंकमर्चंतः प्राप्नुयुर्मानवाःशुभम् २ कोधर्मःसर्वधर्माणां भवतःपरमो
मतः ॥ किंजपन्मुच्यतेजन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ३ भीष्मउवाच ॥ जगत्प्रभुंदेवदेव
मनंतंपुरुषोत्तमम् ॥ स्तुवन्नामसहस्रेणपुरुषःसततोत्थितः ४ तमेवचार्चयन्नित्यं भक्त्या
पुरुषमव्ययम् ॥ ध्यायंस्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेवच ५ अनादिनिधनंविष्णुं सर्व
लोकमहेश्वरम् ॥ लोकाध्यक्षंस्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगोभवेत् ६ ब्रह्मण्यंसर्वधर्मज्ञं
लोकानांकीर्त्तिवर्द्धनम् ॥ लोकनाथंमहद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ७ एषमेसर्वधर्माणां
धर्मोधिकतमोमतः ॥ यद्भक्त्यापुंडरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरःसदा ८ परमंयोमहत्तेजः परमं
योमहत्तपः ॥ परमंयोमहद्ब्रह्म परमंयःपरायणम् ९ पवित्राणांपवित्रंयो मंगलानांच
मंगलम् ॥ दैवतंदेवतानांच भूतानांयोऽव्ययःपिता १० यतःसर्वाणिभूतानि भवंत्या
दियुगागमे ॥ यस्मिंश्चप्रलयंयांति पुनरेवयुगक्षये ११ तस्यलोकप्रधानस्य जगन्ना
थस्यभूपते ॥ विष्णोर्नामसहस्रंमे शृणुपापभयापहम् १२ यानिनामानिगौणानि
विख्यातानिमहात्मनः ॥ ऋषिभिःपरिगीतानि तानिवक्ष्यामिभूतये १३ ओंविश्वं
विष्णुर्वषट्कारोभूतभव्यभवत्प्रभुः ॥ भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्माभूतभावनः १४
पूतात्मापरमात्माच मुक्तानांपरमागतिः ॥ अव्ययःपुरुषःसाक्षी क्षेत्रज्ञोक्षरएवच १५
योगोयोगविदांनेता प्रधानपुरुषेश्वरः ॥ नारसिंहवपुःश्रीमान्केशवःपुरुषोत्तमः १६
सर्वःशर्वःशिवःस्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ॥ संभवोभावनोभर्त्ता प्रभवःप्रभुरीश्वरः
१७ स्वयंभुःशंभुरादित्यः पुष्कराक्षोमहास्वनः ॥ अनादिनिधनोधाता विधाता
धातुरुत्तमः १८ अप्रमेयोहृषीकेशः पद्मनाभोमरप्रभुः ॥ विश्वकर्मामनुस्त्वष्टा स्थ
विष्ठःस्थविरोध्रुवः १९ अग्राह्यःशाश्वतःकृष्णो लोहिताक्षःप्रतर्दनः ॥ प्रभूतस्त्रिक
कुब्धाम पवित्रंमङ्गलंपरम् २० ईशानःप्राणदःप्राणो ज्येष्ठःश्रेष्ठःप्रजापतिः ॥ हिर
ण्यगर्भोभूगर्भो माधवोमधुसूदनः २१ ईश्वरोविक्रमीधन्वी मेधावीविक्रमःक्रमः ॥
अनुत्तमोदुराधर्षः कृतज्ञःकृतिरात्मवान् २२ सुरेशःशरणंशर्म विश्वरेताःप्रजाभवः ॥
अहःसंवत्सरोव्यालः प्रत्ययःसर्वदर्शनः २३ अजःसर्वेश्वरःसिद्धः सिद्धिःसर्वादि
रच्युतः ॥ वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः २४ वसुर्वसुमनाःसत्यः समा
त्मासमितःसमः ॥ अमोघःपुण्डरीकाक्षो वृषकर्मावृषाकृतिः २५ रुद्रोबहुशिराबभ्रु
र्विश्वयोनिःशुचिश्रवाः ॥ अमृतःशाश्वतःस्थाणुर्वरारोहोमहातपाः २६ सर्वगःसर्व
विद्भानुर्विष्वक्सेनोजनार्दनः ॥ वेदोवेदविदव्यंगो वेदांगोवेदवित्कविः २७ लो

काध्यक्षःसुराध्यक्षोधर्म्माध्यक्षःकृताकृतः ॥ चतुरात्माचतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः २८
भ्राजिष्णुर्भोजनंभोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ॥ अनघोविजयोजेता विश्वयोनिःपु
नर्व्वसुः २९ उपेंद्रोवामनःप्रांशुरमोघःशुचिरूर्जितः ॥ अतीन्द्रःसंग्रहःसर्गो धृतात्मा
नियमोयमः ३० वेद्योवैद्यःसदायोगी वीरहामाधवोमधुः ॥ अतीन्द्रियोमहामायो
महोत्साहोमहाबलः ३१ महाबुद्धिर्महावीर्य्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ॥ अनिर्द्देश्यवपुः
श्रीमानमेयात्मामहाद्रिधृक् ३२ महेष्वासोमहीभर्त्ता श्रीनिवासःसतांगतिः ॥ अ
निरुद्धःसुरानंदो गोविंदोगोविदांपतिः ३३ मरीचिर्दमनोहंसः सुपर्णोभुजगोत्तमः ॥
हिरण्यनाभःसुतपाः पद्मनाभःप्रजापतिः ३४ अमृत्युःसर्व्वदृक्सिंहः संधाताऽसंधि
मान्स्थिरः ॥ अजोदुर्मर्षणःशास्ता विश्रुतात्मासुरारिहा ३५ गुरुर्गुरुतमोधाम
सत्यःसत्यपराक्रमः ॥ निमिषोनिमिषःस्रग्वीवाचस्पतिरुदारधीः ३६ अग्रणीर्ग्राम
णीःश्रीमान्न्यायोनेतासमीरणः ॥ सहस्रमूर्द्धाविश्वात्मा सहस्राक्षःसहस्रपात् ३७
आवर्त्तनोनिवृत्तात्मा संवृतःसंप्रमर्द्दनः ॥ अहःसंवर्त्तकोवह्निरनिलोधरणीधरः ३८
सुप्रसादःप्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः ॥ सत्कर्त्तासत्कृतिःसाधुर्जह्नुर्नारायणो
नरः ३९ असंख्येयोप्रमेयात्मा विशिष्टःशिष्टकृच्छुचिः ॥ सिद्धार्थःसिद्धसंकल्पः
सिद्धिदःसिद्धिसाधनः ४० वृषाहीवृषभोविष्णुर्वृषपर्व्वावृषोदरः ॥ वर्द्धनोवर्द्धमानश्च
विविक्तःश्रुतिसागरः ४१ सुभुजोदुर्धरोवाग्मी महेंद्रोवसुदोवसुः ॥ नैकरूपोबृहद्रूपः
शिपिविष्टःप्रकाशनः ४२ ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्माप्रतापनः ॥ ऋद्धःस्पष्टा
क्षरोमंत्रश्चंद्रांशुर्भास्करद्युतिः ४३ अमृतांशूद्भवोभानुः शशविंदुःसुरेश्वरः ॥ औषधं
जगतःसेतुः सत्यधर्म्मपराक्रमः ४४ भूतभव्यभवन्नाथः पवनःपावनोनलः ॥ काम
हाकामकृत्कान्तः कामःकामप्रदःप्रभुः ४५ युगादिकृद्युगावर्त्तो नैकमायोमहाशनः ॥
अदृश्योव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनंतजित् ४६ इष्टोविशिष्टःशिष्टेष्टः शिखंडीनहुषो
वृषः ॥ क्रोधहाक्रोधकृत्कर्त्ता विश्वबाहुर्महीधरः ४७ अच्युतःप्रथितःप्राणः प्राणदो
वासवानुजः ॥ अपांनिधिरधिष्ठानमप्रमत्तःप्रतिष्ठितः ४८ स्कंदःस्कंदधरोधुर्यो
वरदोवायुवाहनः ॥ वासुदेवोबृहद्भानुरादिदेवःपुरंदरः ४९ अशोकस्तारणस्तारः
शूरःशौरिर्जनेश्वरः ॥ अनुकूलःशतावर्त्तः पद्मीपद्मनिभेक्षणः ५० पद्मनाभोरविं
दाक्षः पद्मगर्भःशरीरभृत् ॥ महर्द्धिऋद्धोवृद्धात्मा महाक्षोगरुडध्वजः ५१ अतुलः
शरभोभीमः समयज्ञोहविर्हरिः ॥ सर्व्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिंजयः ५२
विक्षरोरोहितोमार्गो हेतुर्दामोदरःसहः ॥ महीधरोमहाभागो वेगवानमिताशनः ५३

उद्भवःक्षोभणोदेवः श्रीगर्भःपरमेश्वरः॥ करणंकारणंकर्त्ता विकर्त्तागहनोगुहः ५४ व्यवसायोव्यवस्थानः संस्थानःस्थानदोध्रुवः॥ परर्द्धिःपरमस्पष्टस्तुष्टःपुष्टःशुभेक्षणः ५५ रामोविरामोविरजो मार्गोनेयोनयोनयः॥ वीरःशक्तिमतांश्रेष्ठो धर्मोधर्मविदुत्तमः ५६ वैकुण्ठःपुरुषःप्राणःप्राणदःप्रणवःपृथुः॥ हिरण्यगर्भःशत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः ५७ ऋतुःसुदर्शनःकालःपरमेष्ठीपरिग्रहः॥ उग्रःसंवत्सरोदक्षो विश्रामोविश्वदाक्षिणः ५८ विस्तारःस्थावरःस्थाणुः प्रमाणंबीजमव्ययम्॥ अर्थोनर्थो महाकोशो महाभोगोमहाधनः ५९ अनिर्विण्णःस्थविष्ठोभूर्द्धर्मयूपोमहामखः॥ नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमःक्षामःसमीहनः ६० यज्ञईज्योमहेज्यश्च क्रतुःसत्रंसतांगतिः॥ सर्वदर्शीविमुक्तात्मा सर्वज्ञोज्ञानमुत्तमम् ६१ सुव्रतःसुमुखःसूक्ष्मः सुघोषःसुखदः सुहृत्॥ मनोहरोजितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ६२ स्वापनःस्ववशोव्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्॥ वत्सरोवत्सलोवत्सी रत्नगर्भोधनेश्वरः ६३ धर्मगुप्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम्॥ अविज्ञातासहस्रांशुर्विधाताकृतलक्षणः ६४ गभस्तिनेमिःसत्वस्थः सिंहोभूतमहेश्वरः॥ आदिदेवोमहादेवो देवेशोदेवभृद्गुरुः ६५ उत्तरोगोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यःपुरातनः॥ शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रोभूरिदक्षिणः ६६ सोमपोमृतपःसोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः॥ विनयोजयःसत्यसंधो दाशार्हःसात्वतांपतिः ६७ जीवो विनयितासाक्षी मुकुन्दोमितविक्रमः॥ अम्भोनिधिरनंतात्मा महोदधिशयोंतकः ६८ अजोमहार्हःस्वाभाव्यो जितामित्रःप्रमोदनः॥ आनन्दोनन्दनोनन्दः सत्यधर्मात्रिविक्रमः ६९ महर्षिःकपिलाचार्यःकृतज्ञोमेदिनीपतिः॥ त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गःकृतान्तकृत् ७० महावराहोगोविन्दः सुषेणःकनकांगदी॥ गुह्योगभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ७१ वेधाःस्वांगोजितःकृष्णो दृढःसंकर्षणोच्युतः॥ वरुणोवारुणोवृक्षः पुष्कराक्षोमहामनाः ७२ भगवान्भगहानन्दी वनमालीहलायुधः॥ आदित्योज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः ७३ सुधन्वाखण्डपरशुर्दारुणोद्रविणप्रदः॥ दिवस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ७४ त्रिसामासामगःसाम निर्वाणंभेषजंभिषक्॥ संन्यासकृच्छमःशान्तो निष्ठाशान्तिःपरायणः ७५ शुभांगः शान्तिदःस्रष्टा कुमुदःकुवलेशयः॥ गोहितोगोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षोवृषप्रियः ७६ अनिवर्त्तीनिवृत्तात्मा संक्षेप्ताक्षेमकृच्छिवः॥ श्रीवत्सवक्षाःश्रीवासः श्रीपतिःश्रीमतां वरः ७७ श्रीदःश्रीशःश्रीनिवासः श्रीनिधिःश्रीविभावनः॥ श्रीधरःश्रीकरःश्रेयः श्रीमान्लोकत्रयाश्रयः ७८ स्वक्षःस्वंगःशतानन्दो नंदिर्ज्योतिर्गणेश्वरः॥ विजि

तात्माविधेयात्मा सत्कीर्त्तिश्छिन्नसंशयः ७६ उदीर्णःसर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतः स्थिरः॥ भूशयोभूषणोभूतिर्विशोकःशोकनाशनः ८० अर्चिष्मानर्चितःकुम्भो विशुद्धात्माविशोधनः॥ अनिरुद्धोप्रतिरथः प्रद्युम्नोमितविक्रमः ८१ कालनेमिनिहा वीरः शौरिःशूरजनेश्वरः॥ त्रिलोकात्मात्रिलोकेशः केशवःकेशिहाहरिः ८२ कामदेवःकामपालः कामीकान्तःकृतागमः॥ अनिर्द्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोनन्तोधनंजयः ८३ ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्मब्रह्मविवर्द्धनः॥ ब्रह्मविद्ब्राह्मणोब्रह्मी ब्रह्मज्ञोब्राह्मणप्रियः ८४ महाक्रमोमहाकर्मा महातेजामहोरगः॥ महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञोमहाहविः ८५ स्तव्यःस्तवप्रियःस्तोत्रं स्तुतिःस्तोत्तारणप्रियः॥ पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्त्तिरनामयः ८६ मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेतावसुप्रदः॥ वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमनाहविः ८७ सद्गतिःसत्कृतिःसत्ता सद्भूतिःसत्परायणः॥ शूरसेनोयदुश्रेष्ठः सन्निवासःसुयामुनः ८८ भूतावासोवासुदेवः सर्वासुनिलयोनलः॥ दर्पहादर्पदोदृप्तो दुर्द्धरोत्थापराजितः ८९ विश्वमूर्त्तिर्महामूर्त्तिर्दीप्तमूर्त्तिरमूर्त्तिमान्॥ अनेकमूर्त्तिरव्यक्तः शतमूर्त्तिःशताननः ९० एकोनैकःसवःकःकिं यत्तत्पदमनुत्तमम्॥ लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवोभक्तवत्सलः ९१ सुवर्णवर्णोहेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी॥ वीरहाविषमःशून्यो घृताशीरचलश्चलः ९२ अमानीमानदोमान्यो लोकस्वामीत्रिलोकधृक्॥ सुमेधामेधजोधन्यः सत्यमेधाधराधरः ९३ तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतांवरः॥ प्रग्रहोनिग्रहोव्यग्रो नैकशृङ्गोगदाग्रजः ९४ चतुर्मूर्त्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः॥ चतुरात्माचतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ९५ समावर्त्तोनिवृत्तात्मा दुर्जयोदुरतिक्रमः॥ दुर्लभोदुर्गमोदुर्गो दुरावासोदुरारिहा ९६ शुभांगोलोकसारंगः सुतंतुस्तंतुवर्द्धनः॥ इन्द्रकर्मामहाकर्मा कृतकर्माकृतागमः ९७ उद्भवःसुंदरःसुंदो रत्ननाभःसुलोचनः॥ अर्कोवाजसनःशृङ्गी जयंतःसर्वविज्जयी ९८ सुवर्णविंदुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः॥ महाहृदोमहागर्त्तो महाभूतो महानिधिः ९९ कुमुदःकुंदरःकुंदः पर्जन्यःपावनोनिलः॥ अमृतांशोमृतवपुः सर्वज्ञःसर्वतोमुखः १०० सुलभःसुव्रतःसिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः॥ न्यग्रोधोदुंबरोश्वत्थश्चाणूरांध्रनिषूदनः १०१ सहस्रार्चिःसप्तजिह्वः सप्तैधाःसप्तवाहनः॥ अमूर्त्तिरनघोचिंत्यो भयकृद्भयनाशनः १०२ अणुर्बृहत्कृशःस्थूलो गुणभृन्निर्गुणोमहान्॥ अधृतःस्वधृतःस्वास्यः प्राग्वंशोवंशवर्द्धनः १०३ भारभृत्कथितोयोगी योगीशः सर्वकामदः॥ आश्रमःश्रमणःक्षामः सुपर्णोवायुवाहनः १०४ धनुर्द्धरोधनुर्वेदो द

शुद्धोदमयिंतादमः ॥ अपराजितःसर्व्वसहो नियंतानियमोयमः १०५ सत्यवान्सा त्विकःसत्यः सत्यधर्म्मपरायणः ॥ अभिप्रायःप्रियार्होर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्द्धनः १०६ विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ॥ रविर्विरोचनःसूर्य्यः सविताररविलोच नः १०७ अनन्तोहुतभुग्भोक्ता सुखदोनैकदोग्रजः ॥ अनिर्विण्णःसदामर्षी लो काधिष्ठानमद्भुतः १०८ सनात्सनातनतमः कपिलःकपिरव्ययः ॥ स्वस्तिदःस्वस्ति कृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः १०९ अरौद्रःकुण्डलीचक्री विक्रम्यूर्जितशा सनः ॥ शब्दातिगःशब्दसहः शिशिरःसर्व्वरीकरः ११० अक्रूरःपेशलोदक्षो दक्षि णःक्षमिणांवरः ॥ विद्वत्तमोवीतभयः पुण्यश्रवणकीर्त्तनः १११ उत्तारणोदुष्कृतिहा पुण्योदुःस्वप्ननाशनः ॥ विरहारक्षणःसन्तो जीवनःपर्यवस्थितः ११२ अनन्तरूपो नन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ॥ चतुरस्रोगभीरात्मा विदिशोव्यादिशोदिशः ११३ अनादिर्भूर्भुवोलक्ष्मीः सुवीरोरुचिरांगदः ॥ जननोजनजन्मादिर्भीमोभीमपराक्र मः ११४ आधारनिलयोधाता पुष्पहासःप्रजागरः । ऊर्ध्वगःसत्पथाचारः प्राणदः प्रणवःपणः ११५ प्रमाणंप्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः ॥ तत्त्वंतत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ११६ भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सपिताप्रपितामहः ॥ यज्ञोयज्ञपति र्यज्वा यज्ञांगोयज्ञवाहनः ११७ यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ॥ यज्ञांतकृद्य ज्ञगुह्यमन्नमन्नादएवच ११८ आत्मयोनिःस्वयंजातो वैखानःसामगायनः ॥ देव कीनन्दनःस्रष्टा क्षितीशःपापनाशनः ११९ शंखभृन्नन्दकीचक्री शार्ङ्गधन्वागदा धरः ॥ रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्व्वप्रहरणायुधः १२० ओन्नमइतीदंकीर्त्तनीयस्य के शवस्यमहात्मनः ॥ नाम्नांसहस्रदिव्यानामशेषेणप्रकीर्त्तितम् १२१ यइदंशृणुया न्नित्यं यश्चापिपरिकीर्त्तयेत् ॥ नाशुभम्प्राप्नुयात्किंचित्सोमुत्रेहचमानवः १२२ वेदा न्तगोब्राह्मणःस्यात्क्षत्रियोविजयीभवेत् ॥ वैश्योधनसमृद्धःस्याच्छूद्रःसुखमवाप्नु यात् १२३ धर्मार्थीप्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थीचार्थमाप्नुयात् ॥ कामानवाप्नुयात्कामी प्र जार्थीप्राप्नुयात्प्रजाः १२४ भक्तिमान्यःसदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः ॥ सहस्रंवासु देवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्त्तयेत् १२५ यशःप्राप्नोतिविपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेवच ॥ अ चलांश्रियमाप्नोति श्रेयःप्राप्नोत्यनुत्तमम् १२६ नभयंक्वचिदाप्नोति वीर्य्यतेजश्चविन्द ति ॥ भवत्यरोगोद्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः १२७ रोगार्त्तोमुच्यतेरोगाद्बद्धोमुच्ये तबन्धनात् ॥ भयान्मुच्येतभीतस्तु मुच्येदापन्नआपदः १२८ दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषःपुरुषोत्तमम् ॥ स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यंभक्तिसमन्वितः १२९ वासुदेवाश्रयो

मर्त्यो वासुदेवपरायणः ॥ सर्वपापविशुद्धात्मा यातिब्रह्मसनातनम् १३० नवासु देवभक्तानामशुभंविद्यतेक्वचित् ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिभयंनैवोपजायते १३१ इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ॥ युज्येतात्मसुखक्षांतिः श्रीधृतिस्मृतिकीर्त्ति भिः १३२ नक्रोधोनचमात्सर्यं नलोभोनाशुभामतिः ॥ भवंतिकृतपुण्यानां भक्ता नांपुरुषोत्तमे १३३ द्यौःसचंद्रार्कनक्षत्रा खंदिशोभूर्महोदधिः ॥ वासुदेवस्यवीर्येण विधृतानिमहात्मनः १३४ ससुरासुरगंधर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ॥ जगद्वशेवर्त्ततेदंकृ ष्णस्यसचराचरम् १३५ इंद्रियाणिमनोबुद्धिः सत्वंतेजोबलंधृतिः ॥ वासुदेवात्म कान्याहुः क्षेत्रंक्षेत्रज्ञमेवच १३६ सर्वागमानामाचारः प्रथमंपरिकल्प्यते ॥ आचारप्र भवोधर्मो धर्मस्यप्रभुरच्युतः १३७ ऋषयःपितरोदेवा महाभूतानिधातवः ॥ जंगमाजं गमंचेदं जगन्नारायणोद्भवम् १३८ योगोज्ञानंतथासांख्यं विद्याशिल्पादिकर्मच ॥ वेदाःशास्त्राणिविज्ञानमेतत्सर्वंजनार्द्दनात् १३९ एकोविष्णुर्महद्भूतंपृथग्भूतान्य नेकशः ॥ त्रींल्लोकान्व्याप्यभूतात्मा भुंक्तेविश्वभुगव्ययः १४० इमंस्तवंभगवतो वि ष्णोर्व्यासेनकीर्त्तितम् ॥ पठेद्यइच्छेत्पुरुषःश्रेयःप्राप्तुंसुखानिच १४१ विश्वेश्वरम जंदेवं जगतःप्रभवाप्ययम् ॥ भजंतियेपुष्कराक्षं नतेयांतिपराभवम् १४२ अर्जु नउवाच ॥ पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभसुरोत्तम ॥ भक्तानामनुरक्तानां त्राताभवज नार्द्दन १४३ श्रीभगवानुवाच ॥ योमांनामसहस्रेण स्तोतुमिच्छतिपांडव ॥ सोह मेकेनश्लोकेन स्तुतएवनसंशयः १४४ नमोस्त्वनंतायसहस्रमूर्त्तये सहस्रपादा क्षिशिरोरुबाहवे ॥ सहस्रनाम्ने पुरुषायशाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणेनमः १४५॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेविष्णुसहस्रनाम कथनंनामशतोपरिएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः १४९ ॥

शुभम्भवतु ॥

विष्णुसहस्रनामकी व्याख्या ॥

नत्वेन्दिराकान्तपदारविंदं नखप्रभान्यक्कृतचन्द्रखण्डम् ॥
करोम्यहंविष्णुसहस्रनाम भाषानुवादंकृतिनांप्रसक्त्यै ॥

एकसौउनचासका अध्याय ॥

वैशम्पायनने राजाजनमेजयसे कहा कि हे राजा महाराजायुधिष्ठिर ने पाप के नाशक कल्याण और मोक्षके कारण पवित्र धर्मोंको सम्पूर्णताके सहित सब

रीतिसे सुनकर भीष्मजी से फिर यह आगे लिखेहुये प्रश्नकिये १ प्रश्न १ लोकमें दर्शन के योग्य सर्ब्ब सिद्धान्तों का और बिद्याओं का स्थान महाप्रकाशमान ज्योतिस्वरूप एकही देवता कौनहै प्रश्न २ आवागमन वा संयोगकास्थान और बड़ा मार्गरूप कौनहै प्रश्न ३ मनुकेपुत्र किसके गुणोंका कीर्त्तनकरते और किस का बाह्याभ्यन्तर नामसे पूजन करतेहुये सबस्वर्ग मोक्षादिक फलरूप कल्याणों को पाते हैं २ प्रश्न ४ सब धर्मों में आप कौनसे धर्मको उत्तम मानते हैं बड़े उच्च स्वरसमेत अपने सिवाय दूसरे को श्रवण न होनेवाला मानसी जीवात्मा किस जपको करके जन्म संसारबंधन से मुक्त होताहै ३ भीष्मजी बोले कि जो सदैव सावधान मनुष्य चराचर जगत्के स्वामी देवदेव अनन्त देशकाल बस्तु और कार्य्य कारणसे परे जो पुरुषोत्तमहै उसका सहस्रनामके द्वारा गुण कीर्त्तनकरता है वह पूर्णहोने से आनन्दस्वरूप होकर ४ प्रतिदिन उस अविनाशी सर्वव्यापी सर्वनिवासी परमात्माको भक्तिसे पूजन स्तुति नमस्कार और ध्यानकरके प्रधान फलका भोक्ता होताहै ५ आदि अन्त से रहित सर्व्वव्यापी और सब लोकों के स्वामी ब्रह्मादिकोंके भी ईश्वर सर्वलोकों के महेश्वर सब प्रकाशरूपों के साक्षात् देखनेवाले परमात्माको जो सदैव नमस्कार करताहै वह सब दुःखों से छूटताहै ६ जोकि वेद ब्राह्मण आदिका रक्षक सर्व्वधर्मज्ञ अपनी सामर्थ्य देकर सब जीवों की शुभकीर्त्तिका वृद्धि करनेवाला लोकोंका प्रसिद्ध प्रकाशकर्त्ता और कीर्त्तिवर्द्धक होकर लोकनाथ महद्भूत अर्थात् स्वयंसिद्ध ब्रह्म और सब जीवोंकी उत्पत्ति का हेतुहै ७ इसीधर्म को मैंने सब धर्मों में श्रेष्ठमानाहै जीवात्मा सदैव उसहृदय कमलमें प्रकाशमान बासुदेव को स्तोत्रोंकेद्वारा प्रतिदिन पूजन करताहै ८ वह श्रेष्ठतमतेज कल्याण तपवाला अत्युत्तम महद्ब्रह्म सबसे परे सन्देह और आवागमनसे रहित बक्ताओंका भी वक्ताहोकर देवताओंका भी देवताहै और वही सब प्राणीमात्रोंका अविनाशीकर्त्ता है ९।१० प्रथम युगके प्रारम्भमें सब जीव जिससे उत्पन्नहोते हैं और नियत रहते हैं और फिर प्रलयहोनेपर जिसमें ऐसे लयहोते हैं जैसे कि घरके फूटनेपर प्रतिबिम्ब सूर्य्य में लयहोताहै ११ हे राजायुधिष्ठिर इस लोकप्रधान जगन्नाथ सर्व्वव्यापी ब्रह्म के उस सहस्रनाम को जोकि पाप और भयका दूरकरनेवालाहै तुम मुझसे सुनो १२ उस सहस्रनाममें उस महात्माके जो नाम गुणों से सम्बन्ध रखनेवाले हैं और ऋषिलोग जिनको चारोंओर गाते हैं

उन सबको मैं चारों पुरुषार्थों की अर्थात् अर्थ धर्म काम मोक्षकी सिद्धीके निमित्त वर्णन करताहूं १२ ॥

अथ नामोंकी व्याख्याप्रारम्भः ॥

विश्व १ जगत्को उत्पन्न करके उसमें प्रवेश करनेवाला अथवा जिसमें सब संसार प्रवेश करताहै और जो प्रणवरूपहै इस विश्वनाम से सगुण निर्गुण इन दोनों ब्रह्मोंका वर्णन होता है, विष्णु २ सर्वव्यापी देशकाल और वस्तुके परिच्छेद से रहित, वषट्कार ३ जिसको ध्यान करके वषट् किया जाता है अथवा जिस यज्ञ में वषट्कार किया जाता है वह यज्ञरूप विष्णु, भूतभव्यभवत्प्रभुः ४ भूत भविष्य और वर्त्तमान का स्वामी सन्मात्रके विरुद्ध तीनों कालों को तिरस्कार करके ऐश्वर्य्यवान्, भूतकृत् ५ रजोगुणमें नियत होकर ब्रह्मारूपसे जीवों का उत्पन्न करनेवाला अथवा तमोगुणमें नियत होकर रुद्ररूप से जीवोंका नाश करनेवाला, भूतभृत् ६ सतोगुणमें नियत होकर विष्णुरूपसे जीवोंकी रक्षा और पोषण करनेवाला, भाव ७ प्रपञ्चरूप से प्रकट होनेवाला अथवा केवल वासनात्मक होकर प्रकट होनेवाला, भूतात्मा ८ जीवमात्रकाआत्मा अथवा अंतर्यामी, भूतभावन ९ जीवोंको उत्पन्न और वृद्धियुक्त करनेवाला (१४) पूतात्मा १० गुण जन्म कर्म्म दोष आदि से पृथक् निर्गुण क्योंकि पुरुष का सगुण होना केवल अपनी इच्छासे है, परमात्मा ११ कार्य्य कारणसे विलक्षण नित्यशुद्ध मुक्तिस्वभाव, मुक्तानांपरमागतिः १२ मुक्त पुरुषोंका लयस्थान क्योंकि उसमें लय होकर फिर संसारमें लौटकर नहीं आते, अव्यय १३ नाश और रूपान्तर दशासे रहित, पुरुष १४ ब्रह्मपुररूपी शरीरमें शयन करनेवाला अथवा अनेक ईप्सित फलोंका देनेवाला अथवा प्रलयकालमें भुवनों का नाश करनेवाला, साक्षी १५ अभेद दृष्टिसे सबका देखनेवाला क्षेत्रज्ञ, १६ क्षेत्रनाम शरीरकाज्ञाता, अक्षर, १७ वही अविनाशी है और इसमें जो एवच, यह शब्द है उससे क्षेत्रज्ञ और अक्षर को एकही कहा (१५) योग १८ सब ज्ञानेन्द्रियोंको मनसमेत रोककर एकताके होजानेको नाम योग्य है जोकि वह योगसे प्राप्त होता है इसी हेतुसे योग्यरूप है, योगविदांनेता १९ योगको जाननेवाले और प्राप्त करनेवाले जो योगी हैं उनके योग क्षेमका प्राप्त करनेवाला, प्रधान पुरुषेश्वर २० प्रधान नाम माया और पुरुषनाम जीव इन दोनोंका ईश्वर, नारसिंहवपु २१ नृसिंह अवतार, श्रीमान्२२

जिसके हृदयमें सदैव लक्ष्मी निवास करती है, केशव २३ ब्रह्मा विष्णुको अपने आधीन रखनेवाला अथवा केशी दैत्यका मारनेवाला, पुरुषोत्तम २४ मायाजीव से उत्तम (१६) सर्व्व २५ मायाजीवका उत्पत्तिस्थान सर्व्वज्ञ, शर्व्व २६ संसारका नाशकर्त्ता, शिव २७ तीनोंगुणोंसे पृथक् शुद्ध आनन्दस्वरूप, स्थाणु २८ अचलभूतादि २९ कारणरूप से जीवमात्र का आदि, निधि अव्यय ३० प्रलय के समय सब जगत् जिसमें प्राप्त होताहै और वही अविनाशी शेष रहजाताहै संभव ३१ इच्छाके अनुसार अवतार लेनेवाला, भावन ३२ भोक्ताओं को सब फल का देनेवाला, भर्त्ता ३३ प्रपंचका अधिष्ठाता और उसका धारण करनेवाला, प्रभव ३४ महाभूतोंका उत्पन्न करनेवाला अथवा जिसका जन्म उत्तमहै, प्रभु ३५ सबका कर्त्ता, ईश्वर ३६ उपाधिसेरहित ऐश्वर्यका रखनेवाला (१७) स्वयंभू ३७ अपने आप उत्पन्न होनेवाला सबसे परे अथवा स्वतंत्र, शंभु ३८ भक्तोंका सुख देनेवाला, आदित्य ३९ सूर्य्यमंडल में नियत भर्गनाम प्रकाशरूप अथवा बारह सूर्य्यों में विष्णु वा अखंडित पृथ्वी का स्वामी अथवा जैसे कि एक सूर्य्य बहुत से जलपात्रों में प्रकाशित होताहै इसीप्रकार वही एक सब शरीरों में प्रकाश करनेवालाहै, पुष्कराक्ष ४० जिसके नेत्र कमलके समानहैं अथवा हृदय कमलमें व्याप्त, महास्वन ४१ वेदरूप उत्तम शब्दका रखनेवाला क्योंकि वेद विष्णु की श्वासा हैं, अनादिनिधन ४२ जन्म मरण से पृथक्, धाता ४३ अनन्तादि रूपसे जगत् को धारण करनेवाला, विधाता ४४ कर्म्म और कर्म्म के फल का उत्पन्न करनेवाला अथवा अनन्तादिकों का धारणकर्त्ता, धातुरुत्तम ४५ पृथ्वी आदि धातुओं से वा ब्रह्मा आदि से अथवा कार्य्य कारण से उत्तम चिदात्मा (१८) अप्रमेय ४६ प्रत्यक्ष अनुमान वा उपमा आदि से विदित न होनेवाला केवल एकता से प्रकट होनेवाला, हृषीकेश ४७ साक्षी होने से इन्द्रियों का स्वामी क्षेत्रज्ञरूप अथवा इन्द्रियों को स्वाधीन रखनेवाला परमात्मा सूर्य्य चन्द्रमा रूप संसारकी उत्पत्तिकरनेवाली ज्वालाओंका स्वामी, पद्मनाभ ४८ सब जगत् का कारणरूप कमल जिसकी नाभि मेंहै, अमर प्रभु ४९ देवताओंका स्वामी विश्वकर्मा ५० संसारको उत्पन्न करनाही जिसकी क्रियाहै अथवा विश्वकर्मारूप, मनुः ५१ मन्त्रका मननकरनेवाला अथवा प्रजापति, त्वष्टा ५२ प्रलय के समय सब जीवोंको सूक्ष्म करनेवाला, स्थविष्ठ ५३ अत्यन्त स्थूल, स्थविरोध्रुव ५४ प्रा-

चीन और चेष्टाओं से रहित (१६) अग्राह्य ५५ मन और इन्द्रियों के बंधन में न पड़नेवाला, शाश्वत ५६ सब समयपर वर्त्तमान कृष्ण ५७ कृष् शब्दकाअर्थ संसार और न शब्दकाअर्थ निवृत्ति इसी हेतुसे परब्रह्म कृष्णअवतार श्यामसुन्दर, लोहिताक्ष ५८ रक्तनेत्र, प्रतर्द्दन ५६ प्रलय के समय जीवोंका मारनेवाला, प्रभूत ६० ज्ञान ऐश्वर्य्यआदि गुणों से युक्त, त्रिककुब्धाम ६१ ज्येष्ठ मध्य लघु इन विभागों से तीनोंलोक और तीनों वायु पृथ्वी और तेजका धाम अर्थात् उत्पत्तिस्थान, पवित्र ६२ पवित्र करनेवाला वा करानेवाला ऋषि और देवताओं से भी पवित्र वा वज्रसे रक्षाकरनेवाला, परममंगल ६३ ध्यानमात्रसे पुरुषों को परमानन्द देनेवाला परममंगलरूप (२०) ईशान ६४ सब जीवोंका अधिपति, प्राणद ६५ प्राणदाता अथवा प्राणोंको चेष्टा देनेवाला कालरूप प्राणोंका खण्डनकर्त्ता अथवा प्राणों का पवित्र करनेवाला, प्राण ६६ क्षेत्रज्ञ परमात्मा प्राणोंका प्राण अथवा मुख्य प्राण, ज्येष्ठ ६७ सबके उत्पत्ति का कारण होने से वृद्धतम, प्रजापति ६८ ईश्वर होने से सब सृष्टिका स्वामी, हिरण्यगर्भ ६६ स्वर्णमयी अंडे के मध्यमें वर्त्तमान होने से ब्रह्मा, भूगर्भ ७० जिसके गर्भमें पृथ्वी है, श्रेष्ठ ७१ सबसे अधिक होनेसे उत्तम, माधव ७२ मा नाम लक्ष्मी और धवनामपति अर्थात् लक्ष्मी का पति, मधुसूदन ७३ उस मधु दैत्यका मारनेवाला जोकि विष्णुके कानके मैलसे उत्पन्न हुआथा (२१) ईश्वर ७४ सब शक्ति रखनेवाला, विक्रमी ७५ पराक्रमी, धन्वी ७६ धनुषधारी, मेधावी ७७ बहुतसे शास्त्रों का धारणकर्त्ता, विक्रम ७८ तीन चरण से तीनोंलोकों को उल्लंघन करनेवाला, वामन अवतार, क्रम ७६ गवन शक्तिका देवता, अनुत्तम ८० जिससे उत्तम कोई नहीं, दुराधर्ष ८१ दैत्य आदिकों से अजेय, कृतज्ञ ८२ जीवों के शुभाशुभ कर्मोंका जाननेवाला अथवा पत्र फल पुष्पादि थोड़ी भेंटसे भी मोक्षका दाता, कृति ८३ सबका आत्मा होने से सब कर्म और उपायों में दिखाई देनेवाला, आत्मवान् ८४ अपने ऐश्वर्य्य में नियत (२२) सुरेश ८५ देवताओंका ईश्वर अथवा शुभफल देनेवालों का ईश्वर, शरण ८६ दुःखी लोगोंकी पीड़ा दूर करनेसे रक्षास्थान, शर्म ८७ परमानन्दरूप, विश्वरेता ८८ विश्वकी उत्पत्तिका बीज, प्रजाभव ८६ सब सृष्टि जिस से उत्पन्न होती है अह ६० प्रकाशरूप होनेसे दिवसरूप, संवत्सर ६१ कालरूप से नियत विष्णु, व्याल ६२ सर्प के समान पकड़ने में न आने से व्यालनाम,

प्रत्यय ६३ परिज्ञान ब्रह्म, सर्बदर्शन ६४ सबका आत्मा होने से सर्बज्ञ (२३) अज ६५ भूत भविष्य बर्त्तमान इन तीनोंकालों में कभी जन्म न लेनेवाला सब जीवोंका क्षेत्रज्ञ, सर्वेश्वर ६६ सब ईश्वरोंका भी ईश्वर, सिद्ध ६७ सदैव सिद्धरूप, सिद्धि ६८ सर्बबस्तु में बड़ा फलरूप, सर्बादि ६६ सब जीवों का आदिकारण, अच्युत १०० तीनोंकालमें स्वरूप सामर्थ्य से च्युत न होनेवाला, वृषाकपि १०१ सब अभीष्टोंकी बर्षा करनेसे धर्मको बर्षण कहते हैं कपि बराह को कहते हैं इन दोनों रूपोंका रखनेवाला, अमेयात्मा १०२ अत्यन्तात्म, सर्वयोग १०३ सब संगों से रहित, बसु १०४ सबजीव जिसमें नियतहैं और जो सब जीवों में नियत है अथवा भगवद्गीताके बचनद्वारा विश्वरूप, बसुमना १०५ बसुधनको कहते हैं परन्तु उत्तमताके अर्थको देताहै रागद्वेष आदिक्लेश और अहंकारादि उपक्लेशोंसे शुद्धचित्तवाला, सत्य १०६ सत्यहोनेसे परमात्मा, समात्मा १०७ रागद्वेषसेरहित मनवाला सब जीवों में समान, सम्मित १०८ सब पदार्थों में बर्त्तमान और उनसे पृथक्, सम १०६ सब जीवों में सब रूपान्तरदशासे रहित अथवा लक्ष्मी से युक्त, अमोघ ११० पूजित स्तूयमान और ध्यानकरने से सब फलका देनेवाला और उस कर्मको निष्फल न करनेवाला अथवा सत्यसंकल्प, पुंडरीकाक्ष १११ हृदय कमल में वर्त्तमान और प्राप्त होनेवाला अथवा कमललोचन, वृषकर्मा ११२ जिसका चिह्न धर्म है ऐसा कर्म करनेवाला, वृषाकृति ११३ धर्मकी स्थिरताके निमित्त अवतार लेनेवाला (२४।२५) रुद्र ११४ प्रलयके समय सृष्टिको नाशकरताहुआ रोदनशब्द करनेवाला अथवा दुःख के कारण को भगानेवाला, बहुशिरा ११५ बहुतसे शिर रखनेवाला, बिराट्बभ्रु ११६ सृष्टिको धारण और पोषण करनेवाला, बिश्वयोनि ११७ बिश्वका उत्पत्तिस्थान, शुचिश्रवा ११८ पवित्र और संशयके योग्य नाम रखनेवाला, अमृत ११६ जीवन्मुक्त, शाश्वत, स्थाणु १२० सदैव रहनेवाला और चेष्टा से रहित, बरारोह १२१ जिसका लोक उत्तमहै अथवा जिसमें प्रवेश करना उत्तमहै क्योंकि उसमें प्रविष्टहोकर फिर नहीं लौटकर आताहै, महातपा १२२ तप ज्ञान ऐश्वर्य्य और प्रताप को कहते हैं जिसका ज्ञान सृष्टि की उत्पत्तिसे सम्बन्ध रखनेवालाहै अथवा जिसका ऐश्वर्य और प्रताप बड़ाहै (२६) सर्वग १२३ कारणरूपसे सर्बत्रब्याप्त, सर्बबिद्वानु १२४ सर्बज्ञ अथवा सबको अपने में नियत रखनेवाला और सूर्य्यादिकों में प्रकाश देनेवाला तेज, बिष्वक्सेन

१२५ युद्धमें जिसके पहुंचतेही दैत्योंकी सेना भागजाती है,जनार्द्दन १२६ दुर्जनों का पीड़ादेनेवाला मारनेवाला नरक में डारनेवाला अथवा जिससे सब प्राणी कल्याण लक्षणवाले पुरुषार्थ को चाहते हैं, वेद १२७ वेदरूप और आत्मारूप से सबमें नियतहोकर ज्ञानदीपकसे अज्ञानरूपी अन्धकारका दूरकरनेवाला,वेद-विद् १२८ वेद और वेदार्थोंका जाननेवाला और उसको अपनेही में पानेवाला, अव्यंग १२९ ज्ञानादि अङ्गोंसे पूर्ण अथवा गुप्तवेदांग १३० वेदही जिसके अङ्ग हैं, वेदवित् १३१ वेदोंका बिचारनेवाला, कवि १३२ भूतकालका ज्ञाता, सर्वदर्शी (२७) लोकाध्यक्ष १३३ प्रधानतासे सबलोकोंका द्रष्टा, सुराध्यक्ष १३४ लोक-पालोंकी बिजयआदि मनोरथों के प्राप्तकरने के निमित्त प्रत्यक्ष दर्शन देनेवाला, धर्माध्यक्ष १३५ योग्य फलदेने के लिये धर्माधर्म का देखनेवाला, कृताकृत १३६ कार्य कारणरूप,चतुरात्मा १३७ चारआत्मा रखनेवाला वह चारों प्रत्येक तीन २ प्रकारकी हैं ब्रह्मा दक्ष आदि, काल, सबजीव, यह पहला प्रकार सृष्टिकी उत्पत्ति का कारणहै बिष्णु, मनु आदि, काल, सबजीव यह दूसरा प्रकार सृष्टि के निवास का कारणहै, रुद्र,काल, यमराज और सब जीव यह तीसराप्रकार नाशका कारण है विष्णु पुराणके अनुसार यह लिखाहै, चतुर्व्यूह १३८ उत्पत्तिस्थिति और सृष्टि के नाशके अर्थ आत्माको वासुदेव आदिक चारोंप्रकार की मूर्त्तियों में नियत करनेवाला चतुर्दंष्ट्र १३९ नृसिंहरूप, चतुर्भुज १४० चारभुजाधारी (२८) भ्रा-जिष्णु १४१ प्रकाश एकरस,भोजन १४२ भोगरूपहोने से मायारूप, भोक्ता १४३ पुरुषरूप से उस मायाका भोगनेवाला, सहिष्णु १४४ हिरण्याक्ष आदिदैत्यों का जीतनेवाला, जगदादिज १४५ सृष्टिकी आदिमें हिरण्यगर्भरूप से उत्पन्नहोने वाला, अनघ १४६ पापों से रहित, विजयी, जेता १४७। १४८ ज्ञानवैराग्य और ऐश्वर्य्यादिक गुणों से बिश्वका विजय करनेवाला विश्वयोनि १४९ विश्व जिस का उत्पत्तिस्थानहै अथवा जो विश्वका उत्पत्तिस्थानहै, पुनर्वसु १५० क्षेत्रज्ञरूप से बारम्बार शरीरों में निवास करनेवाला (२९) उपेन्द्र १५१ वामननाम लघुरूप होकर इन्द्रकेपास रहनेवाला अथवा इन्द्रसे बहुत बड़ा, वामन १५२ भजन करने के योग्य नाम अवतार जिसको लेकर राजाबलि से याचनाकरी प्रांशु १५३ वही तीनचरणसे तीनोंलोकोंको उल्लंघनकरके ऊंचाहुआ जब पृथ्वीको उल्लंघनकिया था तब चन्द्रमा और सूर्य छातीके स्थानपरथे और जब आकाशको उल्लंघन किया

वह दोनों नाभिपरथे और जब स्वर्गको उल्लंघनकिया तब वह दोनों जंघाओं पर थे यह हरिबंशपुराणके अनुसार लिखाहै, अमोघ १५४ सफलकर्म्मवाला, शुचि १५५ ध्यान स्तुति और पूजनके करनेवालों को पवित्रकरने से पवित्रतम; ऊर्जित १५६ अत्यन्त पराक्रमी, अतीन्द्र १५७ स्वभावसिद्ध ज्ञान ऐश्वर्य्यादिक गुणों से इन्द्रको उल्लंघनकरके नियत, संग्रह १५८ प्रलयके समय सबको अपने में लय करनेवाला, सर्ग्ग १५९ ब्रह्माण्ड रूप अथवा सब सृष्टिरूप, धृतात्मा १६० जन्म आदिसे रहित एकरूप में आत्मा को धारण करनेवाला, नियम १६१ अपने २ अधिकारोंपर प्रजाको नियत करनेवाला, यम १६२ अन्तर्य्यामी रूपसे चेष्टावान् करनेवाला (३०) वैद्य १६३ कल्याणके इच्छावान् मनुष्योंसे जाननेके योग्य, वैद्य १६४ सब विद्याओंकाज्ञाता, सदायोगी १६५ सदैव प्रकाशरूप होनेसे सदा योगी, वीरहा १६६ धर्म्मकी रक्षाके प्रयोजन से वड़े वीर असुरों को मारनेवाला, माधव १६७ विद्याका स्वामी, मधु १६८ अमृतके समान वड़ीप्रीति करनेवाला, अतीन्द्रिय १६९ पृथक्ता के कारण शब्दादि विषयों से रहित, महामाया १७० मायावी लोगों को अपनी मायामें बन्धन करने से वड़ी मायावाला, महोत्साह १७१ उत्पत्ति स्थिति और सृष्टिके नाशमें प्रवृत्त होनेसे वड़े उत्साहवाला, महाबल १७२ पराक्रमियोंसेभी महापराक्रमी होनेसे बड़ा बलवान् (३१) महाबुद्धि १७३ बुद्धिमानोंका भी बुद्धिमान्, महावीर्य्य १७४ महत्तत्त्वकी उत्पत्तिका कारण जो अज्ञानहै उसी लक्षणवाले पराक्रमका रखनेवाला, महाशक्ति १७५ वड़ी सामर्थ्य रखनेवाला, महाद्युति १७६ बड़ा प्रकाश जोकि सब प्रकाशोंका भी प्रकाश है, अनिर्देश्यवपु १७७ वाणी से परे शरीरवाला, श्रीमान् १७८ ऐश्वर्य्य लक्षण लक्ष्मी रखनेवाला, अमेयात्मा १७९ सब जीवोंकी दृष्टि से असंख्य बुद्धिवाला, महाद्रिधृक् १८० गौओंकी रक्षामें गोवर्द्धन पर्व्वतको और समुद्रमथन में मन्दराचल को धारण करनेवाला (३२) महेष्वास १८१ बड़ा धनुषवाला, महीभर्ता १८२ महासमुद्र में मग्न होकर देवी पृथ्वी को ऊपर उठानेवाला, श्रीनिवास १८३ जिसके हृदय में अचल लक्ष्मी निवास करती है, सतांगति १८४ वैदिक साधूलोगों के पुरुषार्थ साधन की प्राप्तीका कारण, अनिरुद्ध १८५ अवतारोंमें किसीसे पराजय न होनेवाला, सुरानन्द १८६ देवताओंको आनन्द देनेवाला, गोविन्द १८७ गुप्तहुई पृथ्वीका पानेवाला अथवा गोवाणी और पृथ्वी

का स्वामी, गोविदांपति १८८ बक्ताओंके स्वामी (३३) मरीचि १८९ तेजस्वी काभी तेजस्वी होनेसे महातेज, दमन १९० अपने अधिकार में भूलकरनेवाली सृष्टिको दण्ड देनेवाला यमराज आदिका रूप, हंस १९१ संसार बन्धनका तोड़नेवाला अथवा सब पुरीरूप शरीरों में बर्त्तमान, सुपर्णा १९२ सुन्दर पक्षधारी पक्षी शरीररूपी वृक्षपर नियत अथवा ईश्वरकी बिभूति गरुड़ भुजगोत्तम १९३ परमेश्वरकी बिभूति बासुकी वा शेषनाग, हिरण्यनाभि १९४ सुवर्ण की समान कल्याणरूप नाभिवाला अथवा वह सुवर्णकीनाभि जिससे कमल उत्पन्नहुआ, सुतपा १९५ बदरिकाश्रम में नरनारायण रूपसे वह सुन्दर तप करनेवाला जो कि मन और इन्द्रियों की एकाग्रता से होता है, पद्मनाभ १९६ हृदय कमलकी नाभिमें प्रकाशमान प्रजापति १९७ प्रजाओं का स्वामी (३४) अमृत्यु १९८ जिसका नाश मृत्युसे नहीं है, सर्वदृक् १९९ स्वाभाविक ज्ञानसे जीवों के किये और न कियेहुये कर्म्मोंका ज्ञाता, सिंह २०० स्मरण करतेही सब पापोंका नाश करनेवाला, संधाता २०१ कर्म्मफल से जीवों को संयुक्त करनेवाला, सन्धिमान् २०२ फलभोक्ता, स्थिर २०३ सदैव एकरूपसे नियत, अज २०४ चेष्टाकरनेवाला अथवा चेष्टादेनेवाला, दुर्मर्षण २०५ दानवादिकोंसे अजेय, शास्ता २०६ श्रुति स्मृति आदिसे सबको शिक्षा करनेवाला, बिश्रुतात्मा २०७ ईश्वरके पहिंचानने वाले आत्माका धारण करनेवाला, सुरारिहा २०८ असुरोंका मारनेवाला (३५) गुरु २०९ सब विद्याओं का उपदेश करने से वा सबका कर्त्ता होने से गुरुरूप, गुरूत्तम २१० ब्रह्मा आदि को ब्रह्मविद्या का उपदेश करने से वृद्धतम, धाम २११ ज्योतिःस्वरूप अथवा सब संसार के अभीष्टोंका निवासस्थान, सत्य २१२ सत्यकाभी सत्य, सत्यपराक्रम २१३ सत्यपराक्रमी, निमिष २१४ योगनिद्रा से नेत्रों को मीचनेवाला अनिमिष २१५ सदा ज्ञानस्वरूप और स्वच्छरूप होने से नेत्रोंका बन्द न करनेवाला, स्रग्वी २१६ पञ्चभूतकी तन्मात्रा रूप बैजयन्ती नाम मालाका धारण करनेवाला, बाचस्पतिरुदारधी २१७ विद्या का स्वामी और सब सूक्ष्म स्थूलको जाननेवाली बुद्धिका अधिपति (३६) अग्रणी २१८ मोक्षाभिलाषियों को परमपदका देनेवाला, ग्रामणी २१९ जीवसमूहों का अधिपति श्रीमान् २२० सबसे अधिक कान्ति रखनेवाला, न्याय २२१ सिद्धान्त का प्रकट करनेवाला, न्यायशास्त्रनेता २२२ जगत्‌यात्रानिर्बाहक, समीरण २२३ प्रा-

णरूप बायुसे सबजीवों को चेष्टायुक्त करनेवाला, सहस्रमूर्द्धा २२४ हजारों मस्तक रखनेवाला, बिश्वात्मा २२५ बिश्वका आत्मा,सहस्राक्ष २२६ हजारनेत्र रखने वाला, सहस्रपात् २२७ (३७) हजार चरण रखनेवाला, अर्त्तन २२८ संसार चक्रको घुमानेवाला, निवृत्तात्मा २२९ संसारबन्धन से पृथक् रूपवाला, संवृत्त २३० गुप्तकरनेवाली अविद्यासे ढकाहुआ, सम्प्रतर्द्दन २३१ रुद्रकाल आदि बिभूतिसे मर्द्दन करनेवाला,अहस्संवर्त्तक २३२ दिनके जारी करनेसे सूर्यरूप, बह्नि २३३ होमके शाकल्यादि पदार्थोंको धारण करके देवताओंके पास पहुँचानेवाला, अनिल २३४ जगत्का प्राणरूप, धरणीधर २३५ शेष दिग्गज और बराह रूपसे पृथ्वी को धारण करनेवाला (३८) सुप्रसाद २३६ अपमान करनेवाले शिशुपालादिकों को भी मोक्ष देनेसे श्रेष्ठ कृपालु दयालु, प्रसन्नात्मा २३७ रजोगुण तमोगुणसे शुद्ध अन्तःकरण अथवा दयालु रूपसे स्वच्छ मन अथवा सम्पूर्ण अभीष्ट सिद्ध होनेसे प्रसन्नचित्त,बिश्वधृक् २३८ बिश्वका बिजयी, बिश्वभुक् २३९ बिश्वका भोग करने और करानेवाला,बिभु २४० हिरण्यगर्भ आदिरूप से अनेक प्रकार का होनेवाला, सत्कर्त्ता २४१ पूजन करनेवाला सत्कृति २४२ पूजित देवताओं से भी पूजित, साधु २४३ न्यायके अनुसार कर्म्मकर्त्ता, साधक,साध्यरूप, जह्नु २४४ अज्ञानियोंका नाशकरनेवाला और भक्तोंको परमपद देनेवाला, नारायण २४५ नर आत्माको कहते हैं और आत्मासे उत्पन्न आकाशादिक तारा कहलाते हैं उन सब सृष्टियों के कर्त्तारूपसे व्याप्त करताहै इसी हेतुसे वह उसके आश्रय स्थानहोते हैं अथवा जो जीवात्माओं के लयका स्थान है इसलिये उसको नारायण कहते हैं, नर २४६ जीवआत्माओं को अपनेमें लय करनेवाला परमात्मा (३९) असंख्येय २४७ जिसमें संख्याके अनुसार नामरूप आदि वर्त्तमान नहीं हैं, अप्रमेयात्मा २४८ जिसका स्वरूप बाणीकी संख्यासे बाहरहै, बशिष्ठ २४९ बिश्व से श्रेष्ठतर, सृष्टिकृत २५० वेद वचनरूप शिक्षा करनेवाला अथवा श्रेष्ठपुरुषोंको उत्पन्न और पोषण करनेवाला, शुचि २५१ निरञ्जन, सिद्धार्थ २५२ जिसके सब मनोरथ पूरे होनेवाले हैं अर्थात् सत्यकाम, सिद्धसंकल्प २५३ अर्थात् जो इच्छाकरे वही होजाय, सिद्धिद २५४ कर्त्ता लोगों को अधिकारके अनुसार उनके कर्मफलका देनेवाला, सिद्धिसाधन २५५ क्रियाका साधन करनेवाला (४०) वृषाही २५६ धर्मप्रकाशक बारह दिन आदि में होने

धाले वृषाहनाम यज्ञका रूप वृषभ २५७ भक्तोंपर कामनाओंकी बर्षा करनेवाला, बिष्णु २५८ गतिका स्वामी, वृषपर्वा २५६ परमधाममें चढ़नेवालों के लिये धर्मरूप दण्ड रखनेवाली सीढ़ी, वृषोदर २६० जिसका उदर सृष्टि की बर्षा करताहै तात्पर्य यहहै कि सबसृष्टि उसके उदरमें है, बर्द्धन २६१ वृद्धिकर्त्ता, बर्द्धमान२६२ भपञ्चरूप से बढ़नेवाला, बिबिक्त २६३ ऐसे वृद्धियुक्त होकर भी पृथक् नियत रहनेवाला, श्रुतिसागर २६४ जिसप्रकार समुद्रमें जल नियतहै उसीप्रकार उसमें श्रुति नियतहैं (४१) सुभुज २६५ संसार के रक्षा करनेवाली सुन्दर भुजाओंको रखनेवाला, दुर्द्धर २६६ अन्य लोगों से असह्य लोक धारण करनेवाली पृथ्वी आदि को धारणकर्त्ता और आप किसी से धारण न होनेवाला अथवा मोक्षाभिलाषियों के ध्यान के समय बड़ी कठिनता से धारण होनेवाला, बाग्मी २६७ जिससे वेदरूप बचन प्रकटहुआ महेन्द्र २६८ बड़ा इन्द्र अर्थात् ईश्वरों का भी ईश्वर, बसुद २६६ धनका देनेवाला, बसु २७० धनरूप अथवा माया से आत्मस्वरूप को गुप्तकरनेवाला व अन्तरिक्षमें स्थित रहनेवाला सूर्य्यादिकरूप, नैकरूप २७१ मायासे बहुतरूप रखनेवाला बृहद्रूप २७२ बड़े पृथ्वीतलको धारण करनेवाला, शिपिविष्ट २७३ पशुओं में यज्ञमूर्त्ति नियतयज्ञ अथवा किरणों के मध्यमें नियत प्रकाश २७४ सबका प्रकाश करनेवाला (४२) ओजस्तेजोद्युतिधर २७५ बल प्राण शूरताआदि गुण, ज्ञान लक्षणवाला प्रकाश, इन तीनोंको धारणकरनेवाला, प्रकाशात्मा २७६ प्रकाशस्वरूप आत्मावाला प्रतापन २७७ सूर्य्यादि विभूतियों से विश्वका संतप्तकरनेवाला, ऋद्धि २७८ धर्म ज्ञान बैराग्यआदि से संयुक्त, स्पष्टाक्षर २७६ जिसका अक्षर उदात्त प्रणव लक्षणवालाहै, मन्त्र २८० ऋग्यजुसाम लक्षणवाला मन्त्र अथवा मन्त्रसे जानने के योग्य, चन्द्रांशु २८१ संसार व सूर्य्य के तापसे संतप्तचित्ती मनुष्यों को चन्द्रमा की शीत किरणों के समान आनन्द देनेवाला, भास्करद्युति २८२ सूर्य्य के समान प्रकाश करनेका अभ्यासी (४३) अमृतांशूद्भव २८३ समुद्रमथन के समय जो अमृतरूप किरण रखनेवाला चन्द्रमा प्रकटहुआ उसका उत्पत्तिस्थान, भानु २८४ प्रकाशमान जिसके प्रकाश करने से सब प्रकाश्य पदार्थ प्रकाशित होते हैं, शशिविन्दु २८५ चन्द्रमा के समान सब सृष्टिको प्रफुल्लित करनेवाला सुरेश्वर २८६ अभीष्ट सिद्ध करनेवाले देवताओं का ईश्वर औषध २८७ संसार रोगकी औषध, जगतःसेतु

२८८ संसारका पुल अर्थात् संसारसे पारहोने का कारण अथवा वर्णाश्रमी धर्म्म के ओतप्रोत न होनेका कारण, सत्य, धर्म्म, पराक्रम २८६ जिसका धर्म्म ज्ञान आदिक पराक्रम निष्फल नहीं है (४४) भूतभव्यभवन्नाथ २६० भूतभविष्य बर्त्तमान इन तीनोंकाल के जीवों का अभीष्ट और प्यारा और अप्रिय कर्म्मों से चित्त को दुःखदेनेवाला और जिससे सब जीव अपने कल्याण का आशीर्वाद चाहते हैं पवन २६१ पवित्र करनेवाला अथवा तीव्रगामी वायु पावन २६२ अग्नि और वायुआदि रूपसे सब जीवों को पवित्र और चेष्टायुक्त करनेवाला, अनल २६३ प्राणों को आत्मभाव से पूर्ण करनेवाला वा पोषण करनेवाला या गन्धादिक गुणों से पृथक् अथवा असंख्य अपार, कामहा २६४ मोक्षके अभिलाषीभक्तलोग अथवा हिंसकोंकी कामनाओंको नाशकरनेवाला, कामप्रद २६५ भक्तों के अभीष्टोंको अधिकतासे देनेवाला, कामकृत् २६६ इच्छावानोंकी इच्छा पूर्णकरनेवाला अथवा पितारूप होकर प्रद्युम्नको उत्पन्न करनेवाला कान्त २६७ मनोहर ब्रह्माके लयहोनेका स्थान सब संसारका प्रिय, काम २६८ पुरुषार्थ चाहने वालों का अभीष्टकामप्रद २६६ भक्तों के अभीष्ट को अधिकतर देनेवाला, प्रभु ३०० अत्यन्त प्रकट होनेवाला श्रेष्ठ ऐश्वर्य्यवान् सबका स्वामी (४५) युगादिकृत् ३०१ युगादिका कर्त्ता अथवा यज्ञादिकों का प्रारम्भ करनेवाला, युगावर्त्त ३०२ कालरूपसे सतयुग आदिको भ्रमण करानेवाला, नैकमाय ३०३ बहुतसी माया रखनेवाला महाशन ३०४ प्रलयकालमें सबके निगल जानेसे वहुतभोजन करने वाला, अदृश्य ३०५ सब इन्द्रिय और बुद्धिसे परे गुप्तरूप, व्यक्त रूप, ३०६ स्थूल रूप वा स्वयंप्रकाश अथवा योगियोंको प्रत्यक्ष होने से प्रत्यक्ष रूपवाला, सहस्रजित, ३०७ हजारों असुरोंको बिजय करनेवाला, अनन्तजित् ३०८ अनंतशक्ति होने से युद्धक्रीड़ाआदि में सब जीवों को बिजय करनेवाला (४६) इष्ट, ३०६ दूसरोंका आनन्ददाता होने से अथवा यज्ञमें पूजित होने से सबका प्यारा, विशिष्ट, ३१० सबका अन्तर्यामी होने वा सबसे परे होने से श्रेष्ठतम, शिष्टेष्ट ३११ ज्ञानियोंका प्रिय अथवा ज्ञानीही जिसको प्यारे हैं या श्रेष्ठ पुरुषों से पूजित शिखंडी ३१२ मोरमुकुट रखनेवाला गोपसहस्रधारी नहुष ३१३ मायासे जीवों को बाँधनेवाला वृष ३१४ मनोरथों की वृष्टि करनेवाला धर्म, क्रोधहा ३१५ साधुओं के क्रोधका नाश करनेवाला क्रोधकृत्कर्त्ता ३१६ जो असाधुओं पर क्रोध करनेवाला

और संसार का कर्त्ता अथवा क्रोध करनेवाले दैत्यों का मारनेवाला विश्वबाहु ३१७ संसारके स्थिर रखनेके निमित्त विश्वमें जिसकी भुजाहैं,महीधर,पूजा और पृथ्वीका धारण करनेवाला (४७) अच्युत ३१८ छः प्रकारकी बिपरीत दशासे रहित प्रथित ३१९ संसारके अत्यन्त कर्म्म से प्रसिद्ध, प्राण ३२० सूत्रात्मा रूपसे सृष्टिको सजीव रखनेवाला,प्राणद ३२१ देवता और असुरोंको बलका देनेवाला; वासवानुज ३२२ कश्यपजी से अदितीमाताके गर्भ से उत्पन्न इन्द्रका छोटाभाई अपांनिधि ३२३ जलोंका समुद्ररूप निवासस्थान, अधिष्ठान ३२४ उपादानका-रणहोने से सब जीवोंका निवासस्थान ब्रह्म, अप्रमत्त ३२५ कर्त्तालोगों को उन के कर्म्म के अनुसार फलदेने में विस्मरण न होनेवाला, प्रतिष्ठित ३२६ अपनी महान्तामें नियत (४८) स्कन्द ३२७ अमृतरूप से चेष्टावान् अथवा बायुरूप से प्रसन्न करनेवाला स्कन्दधर ३२८ धर्म्मपथका धारण करनेवाला, धुर्य्य, ३२९ सवजीवोंके जन्मादिकका लक्षण बरद ३३० मनवांछित बरोंका देनेवाला,अथवा यजमान रूपसे दक्षिणादेनेवाला बायुवाहन ३३१ सातोंबायुओंको चलानेवाला, बासुदेव ३३२ सबमें स्थित स्थिरता देनेवाला और सबको माया से ढकनेवाला वासु कहाताहै और जो क्रीड़ा अथवा व्यवहार और सबके बिजयकरनेकी इच्छा करता है वह ज्योतिःस्वरूप है और मोक्षाभिलाषियों से स्तूयमान होकर इच्छा कियाजाता है उसको देव कहते हैं इन दोनोंशब्दों के मिलने से बासुदेवनाम हुआ और जैसे सूर्य अपनी किरणों से जगत्को व्याप्त करताहै उसीप्रकार यह भी अपनी बिभूतियों से जगत्को व्याप्त करताहै और जो सब जीवोंका निवास-स्थानहै उसको वासुदेव कहते हैं,बृहद्भानु ३३३ जिसकी किरणें सूर्य और चंद्रमा आदिमें बर्त्तमानहोकर सब सृष्टिभरको प्रकाशित करती हैं आदिदेव, ३३४ सृष्टि की उत्पत्तिका कारण ज्योतिःस्वरूप, पुरन्दर ३३५ असुरोंके पुरोंका चीरने और तोड़नेवाला (४९) अशोक ३३६ शोकादि छः उर्म्मियों से पृथक् तारण ३३७ संसारसागर से तारनेवाला, तार ३३८ गर्भ, जन्म जरा, मरणरूप मृत्युके भयसे छुटानेवाला, शूर ३३९ पराक्रमी, शौरि ३४० शूरकुलमें उत्पन्न होनेवाला जने-श्वर ३४१ जीवात्माओं का ईश्वर अनुकूल ३४२ आत्मरूपसे सबका अनुकूल क्योंकि कोई अपना बिरोधी नहीं होता, शतावर्त्त ३४३ धर्म्मके जारी करने के हेतु सैकड़ों जन्मलेनेवाला अथवा प्राणरूप से सैकड़ों नाड़ियों में बर्त्तमान पद्मी

३४४ हाथमें कमल रखनेवाला पद्मनिभेक्षण ३४५ कमलके समाननेत्र रखनेवाला (५०) पद्मनाभ ३४६ नाभि में कमलपर नियत अथवा चतुर्दशभुवनरूप कमल जिसकी नाभि में है, अरबिन्दाक्ष ३४७ कमललोचन, पद्मगर्भ ३४८ हृदय कमलमें उपासनाके योग्य, शरीरभृत् ३४९ अन्न और प्राणरूपसे अथवा अपनी मायासे जीवात्माओं के शरीरको धारण करनेवाला, महर्द्धि ३५० जिसकी बिभूति महान्है ऋद्ध ३५१ प्रपंचरूपसे वृद्धिपानेवाला, वृद्धात्मा ३५२ जिसका आत्मा पुरातनहै,महाक्ष ३५३ बड़ेनेत्र वा बड़ा छत्र धारण करनेवाला, गरुड़ध्वज ३५४ जिसकी ध्वजामें गरुड़का चिह्नहै (५१) अतुल ३५५ अनूपम क्योंकि उसके समान कोई नहीं है शरभ ३५६ शरीरोंमें चिदात्मारूपसे प्रकाशमान भीम ३५७ जिससे सब भयभीत रहते हैं, समयज्ञ ३५८ उत्पत्ति, स्थिति और लय के समयका ज्ञाता छओंकालका ज्ञाता अथवा सब जीवमात्रों में समदर्शीहोनाही जिसका पूजनहै हविर्हरि ३५९ यज्ञों में हव्यके भागोंका हरनेवाला सब पापोंका नाशकर्त्ता अथवा हरितवर्ण सबलक्षण लक्षण्य ३६० जिसका ज्ञान सबप्रमाणों से कहागया, लक्ष्मीवान् ३६१ जिसके हृदय में लक्ष्मी सदैव निवास करती है, समितिंजय ३६२ युद्धमें बिजय करनेवाला (५२) बिक्षर ३६३ अबिनाशी, रोहित ३६४ अपनी इच्छासे मत्स्यावतार लेनेवाला, मार्ग ३६५ मोक्ष के अभिलाषी जिसको खोजते हैं और जो परमानन्द को प्राप्तकरता है हेतु ३६६ अपादान कारण दामोदर ३६७ जितेन्द्रिय होकर जो उत्तमगति प्राप्त होती है उसके द्वारा मिलनेवाला यशोदाजी ने जो उदर में रस्सी से बाँधा इस हेतु से अथवा जिसके उदर में सृष्टिभर के नाम हैं, सह ३६८ सबको बिजय करनेवाला और सबका सहने वाला महीधर ३६९ पर्व्वत रूप से पृथ्वी का धारण करने वाला, महाभाग ३७० इच्छानुसार अवतार लेकर श्रेष्ठ भोगोंको भोगनेवाला, वेगवान् ३७१ शीघ्रगामी, अमिताशन, ३७२ प्रलयके समय बिश्वका भक्षण करनेवाला (५३) उद्भव ३७३ सृष्टि का उपादान कारण अथवा संसार असंयुक्त, क्षोभण ३७४ उत्पत्ति के प्रकृति पुरुषमें प्रवेशकरके उन सबको चलायमान करनेवाला, देव ३७५ उत्पत्तिके द्वारा क्रीड़ा बाजी करनेवाला असुरादिकों को बिजय करनेवाला आत्मारूप से सब जीवों में व्यवहारी प्रकाशमान स्तोत्रों से स्तूयमान सर्वप्रिय सर्बत्र वर्त्तमान, श्रीगर्भ ३७६ जगत्रूप बिभूति जिसके उदरमें नियत

हैं परमेश्वर ३७७ जो श्रेष्ठ सबसे परे और अपनी आज्ञा करनेका अभ्यासी है करण ३७८ सृष्टि की उत्पत्ति में बड़ा साधक, कारण ३७९ उपादाननिमित्त जैसे कि घटका उपादान मृत्तिकाहै, कर्त्ता ३८० स्वतन्त्रकर्त्ता, बिकर्ता ३८१ बिचित्र भवनोंका उत्पन्न करनेवाला, गहन ३८२ जिसकी स्वरूप सामर्थ्य और कर्मका जानना असंभवहै गुह ३८३ मायासे अपने को गुप्त करनेवाला (५४) व्यवसाय ३८४ सच्चिन्मात्रस्वरूप, व्यवस्थान ३८५ जिसमें सब नियतहों और जो लोकपालों के अधिकार चारोंप्रकारके जीव चारोंवर्ण और चारों आश्रमों के धर्मों को पृथक् २ बिचार करनेवाला, संस्थान ३८६ जिसमें जीवधारी नियत हैं अथवा जो सबकी लयका स्थानहै स्थानद ३८७ ध्रुव आदिकों को उनके कर्म के अनुसार स्थान देनेवाला ध्रुव, ३८८ अबिनाशी, परर्द्धि ३८९ जिसकी बिभूति सर्वोत्तमहै, परमःस्पष्ट ३९० बड़ा शोभायमान अथवा सबसे परे और सिद्धरूप होने से स्वतन्त्र तुष्ट ३९१ परमानन्द एकरूप होने से आनन्दस्वरूप, पुष्ट ३९२ सदैव परिपूर्ण होने से पुष्टरूप, शुभेक्षण ३९३ जिसका शुभदर्शन जीवात्माओंका कल्याण करनेवाला, मोक्षाभिलाषियों को मोक्षका देनेवाला भोगियों को भोग पापियोंको पापभागी करनेवाला सब सन्देहोंका दूर करनेवाला मनकी ग्रन्थीका छेदन करनेवाला सब कर्मोंको पृथक् और अविद्याको दूर करनेवाला, राम ३९४ जिस सच्चिदानन्द स्वरूप में योगीजन रमते हैं अथवा अपनी इच्छा से अवतार लेनेवाला श्रीरामचन्द्र, विराम ३९५ जिसमें जीवोंका अन्त होताहै, विरज ३९६ जिसकी प्रीति स्पर्शादिक विषयों में नहीं है मार्ग ३९७ मोक्षाभिलाषी जिसको जानकर अविनाशी होते हैं वही मार्ग है उसका दूसरामार्ग कोई नहीं है नेय ३९८ पूर्णज्ञान से परमात्मा रूप होनेवाला जीवात्मा, नय ३९९ मुक्ति आदिसे संयुक्त होनेवाला, अनय ४०० जिसपर दूसरा कोई नियन्ता नहीं हैं अथवा जिसके दूसरा आवागमनका नहीं है, बीर ४०१ पराक्रमी, शक्तिमतां श्रेष्ठ ४०२ ब्रह्मादिक कर्त्ताओंका श्रेष्ठकर्त्ता, धर्म ४०३ सब जीवों का धारण, करनेवाला अथवा धर्मों से जिसका पूजनादिक होताहै धर्मबिद्दुत्तम ४०४ श्रुति स्मृतिही जिसकी आज्ञाहैं वही धर्मज्ञोंमें श्रेष्ठहै (५५।५६) वैकुण्ठ ४०५ नाना प्रकारके आवागमनों का बन्द करनेवाला सृष्टिकी उत्पत्तिके समय जुदे २ तत्त्वों को परस्परमें मिलाकर ऐसा नियत करनेवालाहै जैसे कि पृथ्वीको जलसे आ-

काशको वायु से और वायुसे अग्नि को मिलायाहै कि वह पृथक् नहीं होसके पुरुष ४०६ सबसे आदि सब पापों का दूर करनेवाला पुरीरूप शरीरों में निवास करनेवाला, प्राण ४०७ क्षेत्रज्ञरूपसे चेष्टा करनेवाला प्राण, प्राणद ४०८ प्रलयादिकों में जीवधारियों के प्राणों का खण्डन करनेवाला अथवा उत्पत्त्यादिकों में अन्तर्यामी रूपसे प्राणोंका देनेवाला, प्रणव ४०९ देवताओं को जो प्रणाम करताहै वा कियाजाताहै वह प्रणहै अर्थात् बड़ा श्रेष्ठ प्रणव नामहै, पृथु ४१० प्रपंच रूपसे बिस्तार पानेवाला हिरण्यगर्भ, ४११ उत्पत्तिका हेतु हिरण्यगर्भ अथवा सुवर्णरूप ब्रह्माण्ड जिसके वीर्य से उत्पन्नहुआ वह उसका गर्भ है शत्रुघ्न ४१२ देवताओं के शत्रुओं का मारनेवाला, व्याप्त ४१३ कारणरूप से सब कार्य्यों में व्याप्त, वायु ४१४ गन्ध उत्पन्न करनेवाला गन्धरूप क्योंकि भगवद्गीतामें भी कहा है कि पृथ्वी में गन्ध मैंहूं, अधोक्षज ४१५ बुद्धिसे परे इन्द्रियों से बाहर और इंद्रियोंके जीतनेवाले योगियों को प्रत्यक्ष होनेवाला अथवा इस ब्रह्माण्डके दोभाग हैं एक अध अर्थात् पृथ्वी से पातालतक दूसरा अक्ष अर्थात् अन्तरिक्ष से सत्यलोक पर्य्यन्त उनको उत्पन्न करके उनके मध्य में विराटरूप से प्रकट होनेवाला अथवा अपने स्वरूप से च्युत न होनेवाला (५७) ऋतु ४१६ कालात्मारूप होकर ऋतु शब्दसे दृष्टगोचर होनेवाला, सुदर्शन ४१७ जिसका ज्ञान निर्वाण अर्थात् मोक्ष फलका देनेवाला है अथवा जो अपनी इच्छासे सुन्दर शरीर को धारण करनेवालाहै वा भक्तलोगोंको सुखसे दिखाई देताहै, काल ४१८ जो सब की संख्या करताहै वह कालपुरुष, परमेष्ठी ४१९ जो अपनी महानता में वा हृदयाकाश में नियत है परिग्रह ४२० सब स्थान में बर्त्तमान होने से सब ओरसे शरण होनेवालेभक्त जिसकी शरणलेते हैं अथवा जो चारोंओरसे जानाजाता है अथवा भक्तोंके अर्पण कियेहुये पत्र पुष्पोंको अङ्गीकार करनेवाला, उग्र ४२१ सूर्यादिकों के भयका कारण होनेसे भयका उत्पन्न करनेवाला क्योंकि सब उसी के भयसे अपने अपने कर्म में प्रवृत्तहैं, संवत्सर ४२२ जिसमें सब जीव निवास करते हैं, दक्ष ४२३ जगत्रूप से वृद्धिको पाकर सब कर्म्मों के शीघ्र करने में सावधान, विश्राम ४२४ इस संसारसागरमें जो पुरुष क्षुधा तृष्णाआदि छः ऊर्म्मी वा अविद्या आदि महाक्लेश और मदादिक उपक्लेशों में बँधेहुये विश्राम के अभिलाषी हैं उनकी कुशल और मोक्ष का करनेवाला, विश्वदक्षिण ४२५

संसारका स्वामी वा संसार के कर्म्मों में सावधान (५८) बिस्तार ४२६ जिससे सब बिस्तार प्रकट होतेहैं, स्थावरः स्थाणु ४२७ निवास करने का अभ्यासी और पृथ्वीआदि का निवासस्थान प्रमाण ४२८ ज्ञानस्वरूप होने से प्रमाण वा प्रत्यक्षादिक प्रमाण, बीजमव्यय ४२६ अबिनाशी उत्पत्तिका कारण अर्थ४३० आनन्दस्वरूप होने से सबका प्यारा, अनर्थ ४३१ अभीष्ट सिद्धहोने में अनिच्छावान्, महाकोश ४३२ अन्नमयादिक कोश जिसको ढकनेवालेहैं, महाभोग ४३३ जिसका आत्मस्वरूपही बड़ा सुखहै, महाधन ४३४ जिसका धन बड़ेभोगों का साधन करनेवाला है (५६) अनिर्बिन्न ४३५ सब मनोरथ सिद्धहोनेके कारण प्रसन्न, स्थविष्ठ ४३६ बिराट रूपसे नियत अभूत वा अभूः ४३७ अजन्मा अथवा पृथ्वीरूप, धर्मयूप ४३८ जिसरीतिसे यज्ञस्तंभसे बँधेहुये पशु स्वर्गगामी होतेहैं उसीप्रकार उससे मिलनेवाले भक्त संसारबंधनसे छूटजाते हैं महामख,४३६ जिसके अर्पण होनेवाले यज्ञ निर्वाण लक्षण वाले फलको देते हैं और अच्छी वृद्धि पातेहैं, नक्षत्रनेमि ४४० नक्षत्र तारागणोंसमेत चन्द्रमा सूर्य्यादि ग्रह वायु के पाशके द्वारा ध्रुवसे बँधेहुये हैं वह ज्योतिषचक्रको घुमाताहुआ ध्रुव शिशुमार चक्रके पुच्छ स्थानपर नियत है नेमि अर्थात् रथकेसमान घूमता उस शिशुमार चक्रका हृदय विष्णुहै, नक्षत्री ४४१ नक्षत्रोंमें चन्द्रमारूप, क्षम ४४२ सब कर्मोंका कर्त्ता अथवा सहनशील, क्षामः ४४३ सब विनाशवान् सृष्टिमें आत्मारूपसे नियत, समीहन ४४४ संसारकी उत्पत्तिके प्रयोजनसे अच्छी२ चेष्टा करनेवाला (६०) यज्ञ, ४४५ सब यज्ञों का स्वरूप अथवा यज्ञनाम सृष्टिकी उत्पत्तिका हेतु विष्णु ईज्य ४४६ यज्ञका फलदेनेसे पूजनकेयोग्य क्योंकि यज्ञोंमें जो देवताओंका पूजनहै वह उसी विष्णुका पूजनहै, महेज्य ४४७ पूजनीय देवताओं में अधिकतम यही पूजनकेयोग्यहै क्योंकि मोक्षफलका देनेवालाहै, क्रतु ४४८ यज्ञस्तंभसे युक्त यज्ञ, सत्र ४४६ सत्रनाम यज्ञका स्वरूप अथवा सत्पुरुषोंकी रक्षा करनेवाला, सतांगति ४५० मोक्षाभिलाषियों का लयस्थान, सर्वदर्शी ४५१ सब जीवोंकेकिये वा विना कियेहुये कर्म्मों को स्वाभाविक ज्ञानसे देखनेवाला, बिमुक्तात्मा, ४५२ स्वभाव से मुक्त आत्मारूप सर्वज्ञ, ४५३ सर्व्वरूपब्रह्म, ज्ञानमुत्तम ४५४ पूर्णज्ञान स्वरूप (६१) सुव्रत ४५५ सुन्दर व्रतवाला जैसे कि रामायणमें श्रीरामचन्द्रजी ने कहाहै कि मैं तेराहूं ऐसा एकबारभी जो जीव कहते हैं उनको उसी एकबारगी

केही कहने पर निर्भयता देताहूं यही मेरा व्रतहै, सुमुख ४५६ प्रसन्नमुख क्योंकि राज्यसे रहित होकर बनमें जानेवाले श्रीरामचन्द्रजीका चित्त व्याकुल नहींहुआ अथवा सब विद्याओं के उपदेश करने से सुन्दर मुख, सूक्ष्म ४५७ शब्दादिक विषय जो आकाशादि तत्त्वोंकी स्थूलताके कारणहैं उनसे पृथक् होनेसे सूक्ष्म, सुघोष ४५८ जिसका शब्द प्रसन्न वेदरूपहै अथवा मेघकेसमान विशाल और गम्भीरहै, सुखद ४५६ शुभकर्मियों को सुखदायी और अशुभकर्मियों का नाश करनेवाला, सुहृत् ४६० प्रतीकारकी इच्छा बिनाही उपकार करनेवाला, मनोहर ४६१ परमानन्दरूपसे मनको हरनेवाला पूर्णब्रह्म, जितक्रोध ४६२ वेदमार्ग्गको नियत करता हुआ असुरादिकों को मारता है क्रोधसे नहीं मारता है क्योंकि सबका आत्मारूप है, बीरबाहु ४६३ असुरों के मारने और वेदमार्ग के स्थापन में जिसकी भुजा पराक्रमसे शोभायमान हैं, बिदारण ४६४ अधर्मियों का नाश करनेवाला (६२) स्वापन ४६५ मायासे सब जीवों को निद्रारूप मोहमें डालनेवाला, स्वबश ४६६ उत्पत्ति स्थिति और लयका हेतुरूप होने से स्वतन्त्ररूप, व्यापी ४६७ आकाश के समान सबका कारण होने से व्याप्त, नैकात्मा ४६८ सब प्रत्यक्ष सृष्टि से बहुत प्रकार से नियत, नैककर्म्मकृत् ४६९ उत्पत्ति पालनादिक अनेक कर्म्मोंका करनेवाला, बत्सर ४७० यहां सबमें निवास करनेवाला, बत्सल ४७१ भक्तोंपर स्नेह करनेवाला, बत्सी ४७२ जगत्का पिता क्योंकि सब प्रजा उसके बत्सरूपहै, रत्नगर्भ ४७३ रत्नोंसे पूर्ण समुद्रके समान प्रीतिरूप, धनेश्वर ४७४ धनोंका ईश्वर (६३) धर्म्मगुप् ४७५ अवतारलेकर धर्म्मकी रक्षाकरनेवाला, धर्म्मकृत् ४७६ धर्म्माधर्म्मसे रहित होकरभी धर्म्मकी मर्यादा नियत करने के लिये धर्म्मका करनेवाला, धर्म्मी ४७७ धर्मोंको धारण करनेवाला, सत् ४७८ सत्यब्रह्म, असत् ४७९ अपरब्रह्म जोकि बाणीका बिषय है, क्षर ४८० सब जीव, अक्षर ४८१ कूटस्थ ब्रह्म, अबिज्ञाता ४८२ अपनेमें कर्त्ता आदिगुणों को नियत करनेवाला और उससे मिलाहुआ रूप जीवात्मा है और जो उस गुणसे पृथक् है वह बिष्णु है, सहस्रांशु ४८३ सूर्य्यादिकों में जिसकी किरणें बर्त्तमान हैं, बिधाता ४८४ सब जीवों के धारण करनेवाले शेष दिग्गज आदिका धारण करनेवाला, कृतलक्षण ४८५ नित्यशुद्ध चैतन्यस्वरूप वेदशास्त्रोंका प्रकट करनेवाला, सब जीवोंके समान और असमानता के लक्षणों का प्रकट करनेवाला अथवा

हृदयमें श्रीवत्स चिह्न रखनेवाला (६४) गभस्तिनेमि ४८६ चक्रके मध्यमें सूर्य्य-रूपसे नियत, सत्वस्थ ४८७ प्रकाशरूप सतोगुण में प्रधानतासे नियत अथवा सब जीवधारियों में स्थित, सिंह ४८८ पराक्रमी होने से सिंहके समान नियत अथवा नर शब्दके लोपसे नृसिंह अवतार, भूत महेश्वर ४८९ जीवों का बड़ा ईश्वर, आदिदेव ४९० जो सब जीवोंको अपने में लय करताहै अथवा जो सब से प्रथम देवता है, महादेव ४९१ सब प्रत्यक्ष को त्याग करके जो आत्मज्ञान से बड़े योग और ऐश्वर्य्य में महानता को पाताहै, देवेश ४९२ प्रधानता से देवताओंका ईश्वर देवभृद्गुरु ४९३ देवताओंका पोषण करनेवाला जो इन्द्रहै उसका गुरु अथवा देवता और विद्याओंका पोषण करनेवाला (६५) उत्तर ४९४ संसार सागरसे पार करनेवाला अथवा सबसे श्रेष्ठ, गोपति ४९५ गौओंका पालन करने से गोपरूप अथवा पृथ्वीपति, गोप्ता ४९६ सब जीवों का पालन और रक्षा करनेवाला, ज्ञानगम्य ४९७ केवल ज्ञानही से मिलनेवाला क्योंकि ज्ञानमें सब कर्म्म लय होजाते हैं, पुरातन ४९८ कालचक्रसे बाहर प्राचीन, शरीरभूतभृत् ४९९ शरीर उत्पन्न करनेवाले तत्त्वोंका पोषण करनेसे प्राणरूपधारी, भोक्ता ५०० पोषण करनेवाला अथवा आनन्द के स्वरूप का भोगनेवाला, कपीन्द्र ५०१ वराह अवतार अथवा वानरों के स्वामी श्रीरामचन्द्र जी, भूरिदक्षिण ५०२ धर्म्म मर्य्यादा दिखानेवाले यज्ञकर्त्ताही जिस ईश्वरकी बड़ी दक्षिणाहै (६६) सोमप ५०३ पूजनके योग्य होनेसे सब यज्ञोंमें देवतारूपसे सोमपान करनेवाला अथवा धर्म्ममर्य्यादा दिखानेवाले यजमानरूपसे सोमपान करनेवाला, अमृतप ५०४ अपने आतमरसकाही पानकरनेवाला अथवा समुद्रसे निकलेहुये अमृतको असुरों से रक्षाकरके देवताओं को पिलाकर आपभी पीनेवाला, सोम ५०५ चन्द्रमारूप से औषधियों को पोषण करनेवाला अथवा शिव पार्वतीरूप, पुरजित् ५०६ बहुत पुरोंका विजयकरनेवाला, पुरुषोत्तम ५०७ पुरुष विश्वरूपको कहते हैं औ उत्तम श्रेष्ठ और सबसे परेको कहते हैं, विनय ५०८ दुष्टोंको दण्ड देनेवाला, जय ५०९ सबजीवोंका विजय करनेवाला, सत्यसन्ध ५१० सत्यसंकल्प, दाशार्हः ५११ दानके योग्य अथवा दाशार्ह कुलमें जन्मलेनेवाला, सात्वतांपति ५१२ सात्वत नाम तन्त्रको संतत करनेवाला अथवा सात्वतदेशियों के योग क्षेमकाकरनेवाला (६७) जीव ५१३ क्षेत्रज्ञरूपसे प्राणों का धारण करनेवाला जीव, विनयिता ५१४

साक्षी धर्माधर्म में प्रवृत्त प्रजाओंको साक्षात् देखनेवाला अथवा अपनी आत्मा के सिवाय दूसरे पदार्त्थ को न देखनेवाला, मुकुन्द ५१५ मुक्तिका देनेवाला, अमितविक्रम ५१६ जिसके तीनचरण अवरुद्धहैं अथवा जिसका अत्यंत पराक्रम है, अम्भोनिधि ५१७ देवता मनुष्य पितृ और असुरनाम जन्तु जिसमें नियतहैं अथवा समुद्ररूप, अनन्तात्मा ५१८ देशकाल और बस्तुके बिषयसेरहित आत्मा, महोदधिशय ५१६ सब जीवोंका संहारकरके जगत्को एकरसकरके महासमुद्रमें शयन करनेवाला, अन्तक ५२० संसारभरेका नाशकरनेवाला, अज ५२१ बिष्णु से उत्पन्न कामदेव, महार्हः ५२२ पूजनके योग्य, स्वाभाव्य ५२३ नित्यशुद्धरूप होने के कारण स्वभावही से विदित होनेवाला, जितामित्र ५२४ अन्तर्गत रागद्वेषादिक शत्रुओं को और आवरणादिक बाह्यशत्रुओं को विजय करनेवाला, प्रमोदन ५२५ अपने आत्मारूप अमृतरसके स्वादुसे सदैव आनन्द करनेवाला और ध्यानमात्रसे ध्यानियोंको आनन्द देनेवाला, आनन्द ५२६ आनन्दस्वरूप जिसके आनन्दके एक अंशसे सबजीव अपना निर्वाह करते हैं, नन्दन ५२७ आनन्द देनेवाला, नन्द ५२८ बिषयसुखसे परमानन्दरूप, सत्यधर्मा ५२६ ज्ञानादिक सत्यधर्मोंका रखनेवाला और योगकेद्वारा आत्मदर्शननाम धर्मवाला, त्रिविक्रम ५३० तीनचरण से तीनों लोकों को उल्लंघन करनेवाला (६८ । ६६) महर्षिः कपिलाचार्य ५३१ नामअवतार जो सम्पूर्ण वेदके देखनेसे बड़ाऋषि और शुद्ध आत्मतत्त्व बिज्ञाननाम सांख्यशास्त्रके आचार्य हैं भगवान्ने भगवद्गीतामें कहाहै कि सिद्धोंमें कपिलमुनि मैं हूं, कृतज्ञ ५३२ कृतनाम जगत्काहै और ज्ञ आत्माको कहते हैं अर्थात् जगत्का आत्मा, मेदिनीपति ५३३ पृथ्वीपति, त्रिपद ५३४ तीनचरणवाला, त्रिदशाध्यक्ष ५३५ गुणको प्रवेशकरके जो जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति यह तीनदशा प्राप्तहोती हैं उन तीनोंकासाक्षी, महाशृंग ५३६ जलकी प्रलयके समय मत्स्यावतार धारण करके प्रलयकालीन समुद्रमें नौकाको अपने सींग में बांधकर क्रीड़ाकरनेवाला, कृतान्तकृत् ५३७ संसारका नाशकरनेवाला अथवा मृत्युका विध्वंस करनेवाला (७०) महाबराह ५३८ नाम अवतार, गोबिन्द ५३६ वेदवाणी अथवा वेदके वचनों से प्राप्तहोनेवाला, सुषेण ५४० जिसकी गुणरूप सेनाही शोभायमान है, कनकांगद ५४१ स्वर्णमयी बाजूबन्द रखनेवाला, गुह्य ५४२ उपनिषदसे जानने के योग्य होकर हृदयाकाश में शयन करनेवाला, ग-

भीर ५४३ ज्ञानैश्वर्य्यादिक पराक्रमोंसे गम्भीर, गहन ५४४ सबमें प्रविष्टहोने और तीनों अवस्थाओं के भावाभावका साक्षीहोने से गहनरूप, गुप्त ५४५ मनवाणी सेपरे होने के कारण गुप्त, चक्रगदाधर ५४६ संसारकी रक्षाके प्रयोजनसे मनतत्त्व रूप चक्र और विधितत्त्वरूप गदा रखनेवाला, वेधा ५४७ संसारका उत्पन्नकरने वाला, स्वांग ५४८ आपही कार्य्यके कारणरूप अङ्गोंसमेत करनेवाला अजित ५४९ अवतारों में किसी से भी विजय न होनेवाला, कृष्ण ५५० व्यासअवतार क्योंकि विष्णुपुराण में लिखाहै कि व्यासजी को नारायण जानो क्योंकि नारायणजी के सिवाय दूसरा महाभारतको बनासक्ता है, दृढ़ ५५१ स्वरूप सामर्थ्य से च्युत न होनेवाला सङ्कर्षणाच्युत ५५२ प्रलयके समय सृष्टिमात्र को अपने में आकर्षण करनेवाला और अपने स्वरूपसे कभी च्युत न होनेवाला, वरुण ५५३ अपनी किरणों के आकर्षण करने से सायंकाल का सूर्य्य, वारुण ५५४ वरुणका पुत्र वशिष्ठ अगस्त्य अथवा भृगु, वृक्ष ५५५ वृक्षकी समान अचल नियत, पुष्कराक्ष ५५६ हृदय कमल पर ध्यान कियाहुआ स्वरूप से प्रकाश करनेवाला, महामनाः ५५७ संसारकी उत्पत्ति स्थिति लय इन तीनों को चित्त केही संकल्पसे करनेवाला (७१।७२) भगवान् ५५८ सब ऐश्वर्य्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, और मोक्षको भग कहते हैं और इन सबका जो स्वामी है वह भगवान् कहा जाताहै विष्णुपुराण में लिखाहै कि जो जीवों की उत्पत्ति नाश आगति गति विद्या और अविद्याको जानताहै वह भगवान्है, भगहा ५५९ प्रलय के समय ऐश्वर्य्यादिकों का नाश करनेवाला, आनन्दी ५६० सुखरूप सब ऐश्वर्य्यादिकों से वृद्धियुक्त, वनमाली ५६१ भूत तन्मात्ररूप वैजयन्ती मालाका धारण करने वाला, हलायुध ५६२ हलधारी बलदेवरूप, आदित्य ५६३ अदिती में कश्यपजी से उत्पन्न वामन अवतार, ज्योतिरादित्य ५६४ सूर्य्यमंडल में नियत प्रकाश व ज्योति स्वरूप सूर्य्य, सहिष्णु ५६५ शीतोष्णादि योगोंका सहनेवाला, गतिसत्तम ५६६ उत्तम लयस्थान (७३) सुधन्वा ५६७ सुन्दर इन्द्रियरूप शार्ङ्ग धनुष रखनेवाला, खण्डपरशु ५६८ शत्रुओंके नाश करनेवाले परशुके स्वामी परशुराम रूप अथवा अखंडपरशुधारी शिवजी, दारुण ५६९ सन्मार्गविरोधियों का भय उत्पन्न करनेवाला, द्रविणप्रद ५७० भक्तोंका अभीष्ट देनेवाला, दिवस्पृक् ५७१ स्वर्गका स्पर्श करनेवाला, सर्वदृग्व्यास ५७२ सब ज्ञानोंका विस्तार करनेवाला

अथवा सर्वदर्शी होनेसे सब ज्ञानोंका स्वरूप वेदोंको ऋग्वेदादिक नामसे चौदहप्रकारका किया प्रथम वेद इक्कीसप्रकार का किया दूसरा एकसौ एकप्रकारका किया सामवेद हजारप्रकार का किया और अथर्व वेद शाखा भेदसे नवप्रकारका किया और पुराण भी अनेकप्रकारके किये, वाचस्पतिरयोनिज ५७३ विद्याओं का स्वामी विनायोनिके उत्पन्न ब्रह्मा (७४) त्रिसामा ५७४ देवव्रत नाम तीन साममंत्रों से स्तुतिमान्, सामग ५७५ साम गान करनेवाला, साम ५७६ सामवेदरूप, निर्वाण ५७७ सर्व दुःखकी शान्ति वा लक्षण परमानन्द रूप मोक्ष, भेषज ५७८ संसार रोगकी औषधि, भिषक् ५७६ संसार रोग से नीरोग करने वाली परम विद्याका उपदेश करनेवाला, संन्यासकृत् ५८० मोक्षके निमित्त चौथे आश्रमको जारी करनेवाला, शम ५८१ प्रधानतासे संन्यासियों के ज्ञानसाधन जितेन्द्रियोंका उपदेश करनेवाला जैसे कि शास्त्रमें लिखाहै कि संन्यासियों का आन्तर्य्य से जितेन्द्रिय होना बनबासियों का नियम गृहस्थियों का दान और ब्रह्मचारियोंका धर्म गुरुकी सेवा अथवा सब जीवोंको शान्ती देनेवाला, शान्त ५८२ विषय सुखसे पृथक्, निष्ठा ५८३ प्रलयके समय सब जीव जिसमें नियत होते हैं, शान्ति ५८४ सब अविद्याओं से पृथक्ता जोकि ब्रह्मरूप है, परायण ५८५ जोकि बड़ा सबसेपरे आवागमनके सन्देहोंसेरहितहै (७५) शुभांग ५८६ सुन्दर शरीर धारण करनेवाला, शान्तिदः ५८७ रागद्वेष से पृथक् शान्ती का देनेवाला, स्रष्टा ५८८ उत्पत्ति की आदि में सब जीवों को उत्पन्न करनेवाला, कुमुद ५८६ पृथ्वीपर आनन्द करनेवाला, कुवलेशय ५६० शेषशय्या पर सोने वाला वद्रीकलपर शयन करनेवाला तक्षक नाम सर्प्प विभूति परमेश्वर, गोहित ५६१ गौओं के पोषणके निमित्त गोवर्द्धन पर्व्वतका धारण करनेवाला अथवा भूमि का भार उतारने को अवतार लेनेवाला, गोपति ५६२ पृथ्वीपति, गोप्ता ५६३ संसारका रक्षक अथवा मायासे अपनी आत्माका गुप्त करनेवाला, वृषभाक्ष ५६४ जिसके नेत्र सब मनोरथों के बर्षा करनेवाले अथवा धर्मरूप हैं, वृषप्रिय ५६५ धर्म जिसका प्याराहै (७६) अनिवर्ती, ५६६ देवासुरों के युद्धमें मुख न मोड़नेवाला अथवा धर्म्म से पृथक् न होनेवाला, निवृत्तात्मा ५६७ जिसका चित्त स्वाभाविक विषयों से पृथक् है, संक्षेप्ता ५६८ प्रलय के समय स्थूल को सूक्ष्मरूप करनेवाला, क्षेमकृत् ५६६ शरणागतकी रक्षाकरनेवाला, शिव ६००

ध्यान करतेही पवित्र करनेवाला, श्रीवत्सवक्ष ६०१ जिसके हृदयपर श्रीवत्स चिह्नहै, श्रीवास ६०२ जिसके हृदयमें सदैव लक्ष्मी श्री निवास करती है, श्रीपति ६०३ समुद्र मथने के समय लक्ष्मीने सब देवता और असुरोंको त्यागकरके जिस को वरा अथवा परमशक्ति का स्वामी; श्रीमतांवर ६०४ ऋग् यजु साम लक्षण वाली लक्ष्मी के स्वामी ब्रह्मादिकों में श्रेष्ठ (७७) श्रीदः ६०५ भक्तों को लक्ष्मी देनेवाला, श्रीशः ६०६ लक्ष्मीका ईश्वर, श्रीनिवास ६०७ श्रीमानों में निवास करनेवाला, श्रीनिधि ६०८ जिस सर्व्वशक्तिमान्‌में सब श्रीनियतहैं, श्रीविभावन ६०९ कर्म के अनुसार नानाप्रकार की लक्ष्मी सब जीवों को प्राप्त करनेवाला, श्रीधर ६१० सब जीवों की माता लक्ष्मी के हृदय में सोनेवाला, श्रीकर ६११ स्मरण स्तुति और पूजन करनेवाले भक्तोंकी लक्ष्मीको वर्त्तमान करनेवाला; श्रेय ६१२ अविनाशी सुखका लक्षण रखनेवाला कल्याण जोकि ब्रह्मरूप है, श्रीमान् ६१३ लक्ष्मियों का रखनेवाला, लोकत्रयाश्रय ६१४ तीनों लोकों का रक्षास्थान (७८) स्वक्ष ६१५ जिसके नेत्रकमलके समान शोभायमानहैं, स्वंग ६१६ सुन्दर अंगवाला, शतानंद ६१७ एकही परमानन्दको उपाधियोंसे अनेकप्रकारकाकरने वाला, अनन्दिः ६१८ प्राणस्वरूप, ज्योतिर्गणेश्वर ६१९ ज्योतिगणों का ईश्वर क्योंकि सबउसी के तेजसे प्रकाशमानहैं, विजितात्मा ६२० मनका जीतनेवाला, अविधेयात्मा ६२१ जिसके रूपका कोई वर्णन नहीं करसक्ता, सत्यकीर्त्ति ६२२ सत्यकीर्त्तिवाला, छिन्नसंशय ६२३ जिसको हस्तामलकके समान सबविदितहै किसी स्थान में जिसको संशय नहीं है (७९) उदीर्ण ६२४ सब जीवों से महत्तम, सर्वतश्चक्षु ६२५ अपने चैतन्यभाव से सबको देखनेवाला, अनीश ६२६ जिसका दूसरा ईश्वर वर्त्तमान नहीं है, शाश्वतः स्थिरः ६२७ जो प्राचीनहोकर भी कभी विपरीत दशाको नहीं प्राप्तहोकर नियतहै, भूशय ६२८ लंकाके मार्ग के अन्वेषणके लिये समुद्रकी पृथ्वीपर शयन करनेवाला, भूषण ६२९ अपनी इच्छानुसार अवतारों से पृथ्वी को चमत्कारी करनेवाला; भूति ६३० सत्ता अथवा सब विभूतियों का उत्पत्तिस्थान विभूति, विशोक ६३१ परमानन्दरूप होनेसे शोकरहित शोकनाशन ६३२ स्मरण करतेही भक्तोंके शोकका नाशकरनेवाला (८०) अर्चिष्मान् ६३३ जिसकी किरणों से चन्द्रमा और सूर्य्यादिक प्रकाशितहैं, अर्चितः ६३४ लोकपूजित ब्रह्मादिक देवताओंसे भी पूजित, कुम्भ ६३५ घटके स-

मान जिसमें सब नियतहैं, बिशुद्धात्मा ६३६ तीनोंगुणों की पृथक्ता के कारण अत्यंत पवित्रात्मा,विशोधन ६३७ स्मरणकरतेही पापोंसे मुक्त करनेवाला, अनिरुद्ध ६३८ चारोंव्यूहों में अनिरुद्ध अथवा कभी शत्रुओं के आधीन न होनेवाला, अप्रतिरथः६३६ जिसकी सम्मुखता करनेवाला कोई रथी नहीं है,प्रद्युम्न ६४० बड़ा धनाढ्य अथवा चित्रब्यूहात्मा, अमितविक्रम ६४१ जिसका पराक्रम अत्यन्त और अबिनाशी है (८१) कालिनेमिहा ६४२ कालनेमी नाम असुरका मारनेवाला, वीर ६४३ शत्रुओं के समूहों को बिजय करके विराजमान, शौरि ६४४ शूरवंश में उत्पन्न, जनेश्वर ६४५ बड़ा शूरवीर होने से इन्द्रादिक शूरजनों का उपकारी, त्रिलोकात्मा ६४६ अन्तर्य्यामी होनेसे तीनोंलोकों का आत्मा अथवा परमार्थ में तीनोंलोक जिससे पृथक् नहीं होसक्तेहैं, त्रिलोकेश ६४७ तीनोंलोक जिसकी आज्ञासे अपने २ कर्म में प्रवृत्तहैं, केशव ६४८ सूर्य्यादिकों की किरणें जिसके बालहैं अथवा ब्रह्मा विष्णु महेश नाम शक्ति जिसके केशहैं, केशिहा ६४६ केशी दैत्यका मारनेवाला, हरिः ६५० हेतुसंयुक्त संसारको हरनेवाला (८२) कामदेव ६५१ धर्मार्थ आदिक चारों पुरुषार्थ के चाहनेवाले भक्तों का अभीष्ट देवता, कामपाल ६५२ कामियोंकी कामनाओंका पालन करनेवाला, कामी ६५३ पूर्णकाम, कान्त ६५४ मनोहर शरीरवाला अथवा आयुर्दा व्यतीत होनेपर ब्रह्माजी जिसमें लयहोते हैं, कृतागमः ६५५ जिसने श्रुति स्मृति आदि सबशास्त्र बनाये, अनिर्देश्यवपु ६५६ निर्गुण होनेसे जिसको यह नहीं कहसक्ते हैं कि इसका रूप ऐसाहै, बिष्णु ६५७ जिसका प्रकाश तीनोंलोकोंको ब्याप्तकरके अधिकतरनियत है, वीर ६५८ गतिवाला, अनन्त ६५६ सर्व्वब्यापी सनातन और सबका आत्मा होनेसे देशकाल और वस्तुके विषयसेरहित, धनञ्जय ६६० दिग्विजय में बहुतसे धनका विजय करनेवाला अर्ज्जुन क्योंकि गीता में भगवद्वचनहै कि पाण्डवों में अर्ज्जुन मैंहूं (८३) ब्रह्मण्य ६६१ तप वेद सत्य और ज्ञान इन चारोंका नाम ब्रह्महै जो उनका हितकारी अथवा जाननेवालाहै उसको ब्रह्मण्य कहते हैं, ब्रह्मकृत् ६६२ तपादिकों का उत्पन्नकर्त्ता, ब्रह्मा ६६३ ब्रह्मारूप से सबका उत्पन्नकर्त्ता, ब्रह्म ६६४ सच्चिदानन्द स्वरूप जिससे कि उत्तम कोई नहीं है, ब्रह्मविवर्द्धन ६६५ तपादिकों को अच्छी वृद्धि करनेवाला, ब्रह्मविद ६६६ जो वेद और वेदार्थ को ठीक २ जानताहै, ब्राह्मण ६६७ वेदोंके जो ब्राह्मणहैं वह सबभी उसी

के रूपहैं, ब्रह्मी ६६८ ब्रह्मनाम उसके शेषरूप, ब्रह्मज्ञ ६६९ अपने आत्मारूपवेदों काज्ञाता, ब्राह्मणप्रिय ६७० ब्राह्मणकाप्यारा अथवा ब्राह्मण जिसके प्यारे हैं(८४) क्योंकि भगवद्वचन है कि जो प्रहार करनेवाला गालीदेनेवाला और कठोर वचन कहनेवाला मनुष्य ब्राह्मण को दण्डवत् नहींकरे वह पापात्मा ब्रह्म अग्नि में भस्महोनेवाला होकर दण्डदेने और मारने के योग्यहै, महाक्रम ६७१ जिस का चरण प्रक्षेप बहुत बड़ाहै, महाकर्म्म ६७२ सृष्टिकी उत्पत्त्यादि कही जिसका कर्म है, महातेजा ६७३ बड़ा तेज जिसके प्रकाशसे सूर्य्यादिक सब प्रकाशमान हैं अथवा शूरताआदिक महाधर्म्मों से अच्छेप्रकार करके अलंकृत, महोरग ६७४ भगवद्विभूति वासुकीरूप, महाक्रतु ६७५ अश्वमेधादि यज्ञरूप, महायज्वा ६७६ लोक संग्रहकेलिये यज्ञोंका करनेवाला, महायज्ञ ६७७ बड़ा यज्ञस्वरूप, जैसे कि भगवद्वचन है कि यज्ञों में जपरूप यज्ञ मैं हूं, महाहवि ६७८ जिस ब्रह्ममें सब जगत्का हवन होता है क्योंकि वह जगदात्मा है (८५) स्तव्य ६७९ जो सबसे स्तूयमानहै और वह किसीका स्तोता नहीं, स्तवप्रिय ६८० स्तोत्र जिसका प्यारा हो, स्तोत्र ६८१ जिससे स्तूयमान होताहै वह भी उसीका रूप है स्तुति अथवा स्तुत ६८२ स्तवन क्रियाका विषय अथवा स्तवनक्रिया, स्तोता ६८३ वही स्तुति का करनेवाला है, रणप्रिय ६८४ जिसको युद्ध प्याराहै, क्योंकि सदैव संसारकी रक्षाके निमित्त पांचशस्त्रोंको धारण करता है, पूर्ण ६८५ सब अभीष्ट और सब सामर्थियों से पूर्ण है, पूरयिता ६८६ धनादि से सबको पूर्ण अर्थात् निहाल करने वाला, पुण्य ६८७ स्मरण करतेही सबके पापोंका दूरकरनेवाला, पुण्यकीर्त्ति६८८ अपनी कीर्त्तिसे जीवों के पुण्यको बढ़ानेवाला, अनामय ६८९ जो कर्म्मजन्य बाह्याभ्यन्तरीय रोगोंसे पीड़ाको नहीं पाता, मनोजव ६९० सर्वत्र वर्त्तमान होने से जिसका वेगमनके समानहै, तीर्थकर ६९१ चौदह विद्या और उपविद्याओं का वक्ता और उपदेश करनेवाला, हयग्रीव रूपसे मधुकैटभ राक्षसको मारकर उत्पत्ति की आदि में सब श्रुति और अनेक अन्य २ विद्या ब्रह्माजी को शिक्षाकरी और वेदों से बाह्यविद्या असुरों को ठगने के लिये उपदेश करीं, विश्वरेता ६९२ जिस का वीर्य्य सुवर्ण है जैसे कि मनुस्मृतिमें लिखाहै कि आदिमें जलको उत्पन्न कर के उसमें वीर्य्यको छोड़ा उससे अंडाहुआ वह स्वर्णमयी अंडा हजार सूर्य्य के समान प्रकाशमान था, वसुप्रिय ६९३ जो धनको अच्छेप्रकार देताहै साक्षात्

धनाध्यक्षहै दूसरा पुरुष उसकी कृपासे धनाध्यक्ष होताहै, वसुप्रद ६९४ जो मोक्ष-फल नाम धन अपने भक्तोंको देनेवाला है अथवा असुरों के धनोंका विगाड़ने वाला है, वासुदेव ६९५ वसुदेव का पुत्र जिसमें जीव निवास करते हैं, वसु ६९६ जो सव जीवों में निवास करता हुआ मायासे अपने स्वरूपको ढकनेवाला है, वसुमना ६९७सब विषयोंमें नियत होनेवाला और उनमें चित्तसे प्रवृत्त होनेवाला, हविः ६९८ भगवद्गीताकेसमान हव्यभी ब्रह्महै (८६।८७) सद्गति ६९९ जिन सन्तोंने जाना कि यह ब्रह्महै उनकोही प्राप्त होताहै अथवा जिसकी वुद्धि श्रेष्ठतम है वह ब्रह्म,सत्कृति ७०० जिसका शुभकर्म संसारकी उत्पत्ति आदिका चिह्न रखने वाला, सत्ता ७०१ सजातीय और विजातियों के भेदसे पृथक् एक अद्वैत ब्रह्म, सद्भूतिः ७०२ वही परमात्मा वहुत रीतिसे प्रकाशमान होनेसे चिदात्मा, सत्प-रायण ७०३ तत्त्वज्ञों का मुख्यस्थान, शूरसेन ७०४ जिस सेना में हनुमान्‌जी आदिक शूरहैं उस सेनाका स्वामी, यदुश्रेष्ठ ७०५ यदुवंशियोंका प्रधान, सन्नि-वास ७०६ ज्ञानियोंका रक्षास्थान, सुयामुनः ७०७ यमुना से सम्बन्ध रखनेवाले मण्डल और पद्मासन आदि जिसके उत्तम हैं (८८) भूतावास ७०८ जिसमें सवजीव निवास करते हैं, वासुदेव ७०९ जैसे कि सूर्य्य अपनी किरणोंसे संसार को ढकताहै उसीप्रकार अपनी मायाओं से सव स्थावर जंगम जीवों को ढकने वाला, सर्वासुनिलय ७१० जिस अविनाशी जीवात्मामें सव प्राण लय होते हैं, अनल ७११ जिसकी ईश्वरता का अन्त नहीं है, दर्पहा ७१२ अधर्ममार्ग्गगामी जीवों के अहंकारका दूर करनेवाला, दर्पद ७१३ धर्म्ममार्ग्ग में नियत होनेवाले मनुष्यों को अहंकारका देनेवाला, दृप्त ७१४ सदैव आत्मारूपी अमृतका स्वाद लेनेसे अत्यन्त प्रसन्न, दुर्धर ७१५ सव उपाधियों से रहित होनेसे देहाभिमानियों को जिसकी धारणा कठिनहै, अपराजित ७१६ भीतरके रागद्वेषादि शत्रुओं से और वाहर के दानवादिक शत्रुओं से अजेय (८९) विश्वमूर्त्ति ७१७ सवका आत्मा होनेसे विश्व जिसकी मूर्त्ति है, महामूर्त्ति ७१८ जिस शेषशय्यापर श-यन करनेवाले ईश्वर की बड़ी मूर्त्ति है, दीप्तमूर्त्ति ७१९ ज्ञानरूप मूर्त्ति अथवा इच्छा के अनुसार तेजस्वी मूर्त्तिका धारण करनेवाला, अमूर्त्तिमान् ७२० जिस की मूर्त्ति कर्म में आसक्त नहीं है, अनेकमूर्त्ति ७२१ अवतारों में अपनी इच्छा से लोकोंकी उपकार करनेवाली बहुतसी मूर्त्तियोंका धारण करनेवाला, अव्यक्त

७२२ यद्यपि बहुतसी मूर्त्तियोंको धारण करताहै तौभी निराकारही है, शतमूर्त्ति ७२३ जिस ज्ञानस्वरूपकी मूर्त्तियां नानाप्रकारके विकल्प से उत्पन्नहैं, सनातन ७२४ विश्वमूर्त्ति होने से हजारों मूर्त्ति रखनेवाला (९०) एक ७२५ सजातीय विजातीय भेदों से पृथक् अद्वितीय एक परमेश्वर, अनेकः ७२६ मायासे बहुत से रूपोंका रखनेवाला, सवः ७२७ सव नामयज्ञ जिसमें चन्द्रमाकी स्तुति होती है, कः ७२८ यह कः शब्द सुखका अर्थवाची है जिससे वह स्तूयमानहै उसको कः ब्रह्म कहते हैं, किं ७२९ सब पुरुषार्थरूप होनेसे विचारके योग्य ब्रह्म, यत् ७३० जिस शब्द से स्वयंसिद्ध ब्रह्म उपदेश किया जाताहै वहभी उसीका रूपहै, तत् ७३१ वह जगत्को फैलानेवाला क्योंकि तत् शब्दभी उसीका रूपहै, पदमनुत्तम ७३२ जो मोक्षाभिलाषियों से प्राप्त किया जाताहै और जिससे परे कोई नहीं है, लोकबन्धु ७३३ जिस आधाररूप से सब संसार बंधा हुआहै अथवा सबका स्वामी होनेसे संसारके सब जीवमात्रोंका बंधु जिसने अच्छे बुरे जानने के लिये श्रुति और स्मृतियों को उत्पन्न किया, लोकनाथ ७३४ जो सृष्टिका दुःखदायी है उसको दण्ड देताहै और जिससे सब कल्याण में मांगते हैं वह सबका प्याराहै, माधव ७३५ मधुके कुल में उत्पन्न, भक्तवत्सल ७३६ भक्तोंपर स्नेह करनेवाला (९१) सुवर्णवर्ण ७३७ सुवर्ण के समान वर्ण रखनेवाला, हेमांग ७३८ जो सुवर्ण शरीरवाला पुरुष सूर्य्यमंडलके मध्यमें है, वरांग ७३९ जिसके अंग अतिउत्तमहैं, चन्दनांगद ७४० चन्दन और कर्पूरादि से अलंकृत, वीरहा ७४१ धर्मकी रक्षाके अर्थ हिरण्यकशिपुआदि दैत्य और रागादिका नाशकरनेवाला, विषम ७४२ सबसे विलक्षण होनेसे जिसके समान कोई नहीं है, शून्यः ७४३ गुणों से रहित, घृताशी ७४४ अनिच्छावान्, अचल ७४५ स्वरूप सामर्थ्य, ज्ञान और गुणों से पृथक् न होनेवाला कीर्त्तिसेरहित न होनेवाला, चल ७४६ वायुरूपसे चलायमान (९२) अमानी ७४७ जिस शुद्ध ज्ञानस्वरूप का अभिमान अनात्मा वस्तु में नहीं है, मानद ७४८ अपनी मायासे अनात्मामें सबका आत्माभिमान उत्पन्न करनेवाला, भक्तोंका सत्कार करनेवाला अभक्तोंको खंड २ करनेवाला तत्त्वज्ञों के आत्माभिमान को जोकि अनात्मा में उत्पन्न होताहै उसका खंडन करनेवाला, मान्य ७४९ सबका ईश्वर होनेसे सब का पूजित और पूजन के योग्य, लोकस्वामी ७५० चतुर्द्दशभुवनोंका स्वामी, त्रिलोकधृक् ७५१ तीनोंलोकों का धारण

करनेवाला सुमेधा ७५२ सुन्दर बुद्धिवाला, मेधज ७५३ यज्ञमें प्रकट,धन्य ७५४ सिद्धमनोरथ सत्यमेधा ७५५ सत्यबुद्धि, धराधर ७५६ शेषादिक रूपोंसे स्थूल, सूक्ष्मपृथ्वीको धारण करनेवाला (९३) तेजोवृष ७५७ सदैव सूर्य्यकेद्वारा जलको आकर्षणकरके सूर्य्यरूपसे वर्षा करनेवाला, द्युतिधर ७५८ शरीरकी कांति और सत्कीर्त्तियों का धारण करनेवाला,सर्वशस्त्रभृतांवर ७५९ सब शस्त्रधारियोंमेंश्रेष्ठ, प्रग्रह ७६० भक्तोंके अर्पण कियेहुये पत्र पुष्पोंको अंगीकार करनेवाला अथवा चञ्चल इन्द्रियों को रस्सी के समान बांधनेवाला, निग्रह ७६१ स्वभावसे सबको अपने आधीन करनेवाला, व्यग्र ७६२ अविनाशी अथवा भक्तोंके अभीष्ट देनेमें प्रवृत्त, नैकशृङ्ग ७६३ चारशृङ्ग रखनेवाला, गदाग्रज ७६४ मन्त्रसे प्रथम प्रकट अथवा गदका बड़ाभाई श्रीकृष्ण (९४) चतुर्मूर्त्ति ७६५ जिसकी चारमूर्त्ति हैं, बिराट, सूत्रवता, व्याकृत,त्रमी, अथवा चारवर्ण हैं श्वेत, कृष्ण, पीत,रक्त, चतुर्बाहु ७६६ चारभुजा रखनेवाला, चतुर्व्यूह ७६७ छन्दपुरुष, वेदपुरुष, महापुरुष, शरीर पुरुष, यहीचार जिसके व्यूह हैं, चतुर्गति ७६८ चारोंवर्ण और चारों आश्रमकी गति, चतुरात्मा ७६९रागद्वेष से पृथक् होनेसे जिसका मन सावधान है अथवा मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार, जिसके आत्माहैं चतुर्भाव ७७० धर्म्म, अर्थ, काम और मोक्ष जिस्से यहचारों पुरुषार्थ उत्पन्न होते हैं, चतुर्वेदविद् ७७१ चारों वेदों का अर्थ जाननेवाला एकपात् ७७२ जिसका एक चरण बिश्वहै (९५) समावर्त्त ७७३ संसार चक्रको अच्छीरीतिसे घुमानेवाला, निवृत्तात्मा ७७४ जिसका आत्मा सर्वत्र वर्त्तमानहै अथवा जिसका चित्त विषयों से पृथक्है, दुर्जय ७७५ जो विजय नहीं होसक्ता, दुरतिक्रम ७७६ भयका कारण होनेसे सूर्य्यादिक जिसकी आज्ञाके विपरीत कर्म नहीं करसक्ते, दुर्लभ ७७७ दुष्प्राप्य होनेसे भक्तिके द्वारा प्राप्तहोनेवाला जैसे कि व्यासजी ने कहाहै कि हजारों जन्मोंमें तप, ध्यान और समाधि के द्वारा श्रीकृष्ण में अनन्य भक्ति होती है, दुर्गम ७७८ जो दुःख से जानाजाय, दुर्ग ७७९ जिसका योग दुःख से होताहै दुरावास ७८० योगी लोग समाधि के द्वाराभी जिसको कठिनता से चित्तमें धारण करते हैं, दुरारिहा ७८१ दुःखसे सम्मुखताके योग्य और असुरोंका मारनेवाला (९६) शुभांग ७८२ ध्यान के योग्य होने से शुभ अंगोंसे विराजमान, लोकसारंग, ७८३ योगीको अपने में लय करनेवाला अथवा प्रणवके द्वारा प्राप्त होनेके योग्य, सुतन्तु७८४

जिसका बड़ा लम्बा चौड़ा प्रपंचशोभायमानहै, तन्तुवर्धन ७८५ उसीतन्तु प्रपंच को बिजय करनेवाला इन्द्रकर्म्मा ७८६ जिसका कर्म इन्द्रके समानहै महाकर्म्मा ७८७ आकाशादि पंचतत्त्व जिसके उत्पन्न कियेहुये हैं, कृतकर्मा ७८८ कर्म से कृत्कृत्य अथवा धर्म्मरूप कर्म्मों का करनेवाला, कृतागम ७८९ वेदरूप शास्त्र बनानेवाला (९७) उद्भव ७९० जिसका उत्तम जन्म उसकी इच्छा से होताहै अथवा सबकी उत्पत्तिका कारण होनेसे अजन्मा, सुन्दर ७९१ विश्वसे अधिक सौभाग्यशाली होनेसे महासुन्दर, सुन्द ७९२ दयावान्, रत्ननाभ ७९३ रत्नके समान जिसकी सुन्दर नाभिहै, सुलोचन ७९४ जिसके नेत्र अथवा ज्ञान सबसे उत्तम हैं, अर्क ७९५ पूजन के योग्य ब्रह्मादिकों का भी पूज्यतम, वाजसनः ७९६ आकांक्षियों को रत्नोंका देनेवाला, शृङ्गी ७९७ प्रलयके जलमें शृंगधारी मत्स्य अवतार जयंतः ७९८ शत्रुओं को अत्यन्त बिजय करनेवाला अथवा बिजयका हेतु, सर्वविज्जयी ७९९ सबप्रकारका ज्ञान जिसको है और जो आन्तरीय रागादिक शत्रु और बाह्यशत्रु हिरण्याक्षादिक दैत्योंका बिजय करनेवाला है (९८) सुवर्णविन्दु ८०० जिसके अंग सुवर्ण के समान प्रकाशमान हैं अथवा जिसका मन्त्र सुन्दर अक्षर और बिन्दु रखनेवालाहै, अक्षोभ्य ८०१ रागद्वेषादिक वा शब्दादिक बिषय और असुरों से अजेय सर्ववागीश्वर ८०२ ब्रह्मा आदिक वागीश्वरोंका भी ईश्वर, महाह्रद ८०३ योगीजन जिस सदानन्द को मझाकर सुखी रहते हैं, महागर्त्त ८०४ जिसकी बड़ीमाया दुःख से पार होनेके योग्यहै अथवा जो महारथी है, महाभूत ८०५ तीनों कालके बिषयसे बाहर होनेसे बड़ाभारी प्रकाशित तेज, महानिधि ८०६ जिसमें सबजीव नियतहैं और जो श्रेष्ठ और अत्यन्त वृद्धतमहै (९९) कुमुद ८०७ भारके दूर करने से पृथ्वीको प्रसन्न करने वाला, कुंदर ८०८ कुन्दके फूलकेसमान शीघ्रफल देनेवाला वराहरूप में नियत होकर हिरण्याक्ष के मारने की इच्छासे पृथ्वीको फाड़नेवाला, कुन्दः ८०९ परशुराम अवतार लेकर पृथ्वीको कश्यप ऋषिके अर्थ दान करनेवाला, पर्जन्य ८१० वर्षा के समान अध्यात्म आदिक तीनों तापका दूरकरनेवाला और सब अभीष्टों की वर्षा करनेवाला, पावन ८११ स्मरण करतेही पवित्र करनेवाला, अनिल ८१२ सदैव ज्ञानस्वरूप अथवा भक्तोंको सुखसे मिलनेवाला, अमृतांशु ८१३ अपने आनन्दामृत रसकापान करनेवाला अथवा समुद्र से निकलाहुआ अमृत देव-

ताओं को पिलाकर आप भी पीनेवाला, अमृत्यु वपु =१४ जिसका शरीर मृत्यु के आधीन नहीं होता, सर्व्वज्ञ =१५ सबका जाननेवाला, सर्व्वतोमुख =१६ सब ओरको मुखरखनेवाला (१००) सुलभ =१७ पत्र फूल और मूलों की भेटों के द्वारा सब से मिलनेवाला, सुव्रत =१८ जिसका सुन्दर व्रतहै, सिद्ध =१९ स्वतंत्र होने से सिद्ध, शत्रुजित् =२० जो देवताओं के शत्रु हैं वही उसके भी शत्रु हैं उनको मारनेवाला, शत्रुतापन =२१ असुरोंको तपानेवाला, न्यग्रोध =२२ जो मध्यमें उत्पन्न और वर्त्तमान है अर्थात् जिनका आदि अन्त नहीं है उनके भी ऊपर नियत अथवा सब जीवधारियोंको अपनी मायासे ढकनेवाला, उदुम्बर=२३ कारण होनेसे आकाशसे भी परे अथवा भोजन के अयोग्य उदुम्बर फलरूप से बिश्वकापालन करनेवाला, अश्वत्थ =२४ जो आजहै वह कल नियत न रहैगा, वह संसाररूपी वृक्षकेसमान नियत जैसे कि वेदमें लिखाहै कि जिसकामूल ऊर्ध्व को और शाखा बाईंओर है वह वृक्ष प्राचीनहै, चाणूरांध्रिनिषूदन =२५ चाणूर और अंध्रिको मारनेवाला (१०१) सहस्रार्चिः =२६ शास्त्रमें लिखे के अनुसार जिसकी किरणें अत्यन्त हैं कि जो एकबार आकाश में हजार सूर्य्योंकी किरणें प्रकटहोंय वह उस महात्माकी किरणों के समान होंय वा न होंय, सप्तजिह्व =२७ आगे लिखीहुई सातजिह्वाओं को रखनेवाला अग्निरूप, काली, कराली, मनोजवा, सुधूम्रवर्णा, सुलोहिता, स्फुलिङ्गिनी, बिश्वमुखी इति सप्तैधा =२८ जिसके सातप्रकाशहैं, सप्तवाहन =२९ सातघोड़े जिसकी सवारी में हैं अथवा सप्तिनाम अश्वजिसकी सवारी है वह सूर्य्य, अमूर्त्ति =३० जड़ चैतन्यरूप चिह्नवाले धन रूप धारण शक्तिसे जो मूर्त्तिप्रकटहुई उससे पृथक् अथवा शरीरका निवास जिस का चिह्नहै और जिसके अङ्ग अज्ञानी हैं उस मूर्त्तिसे पृथक्, अनघ =३१ जिस का दुख और पाप वर्त्तमान नहीं है, अचिन्त्य =३२ सब परमाणुओं से भी परे और यह ऐसाहै इस प्रपंच लक्षणसे अचिन्त्य, भयकृत् =३३ कुमार्ग चलनेवाले मनुष्यों के भयका उत्पन्न करनेवाला अथवा भक्तों के भयोंको नाश करनेवाला भयनाशन =३४ पूजन और स्मरण करने से वर्णाश्रम के आचार रखनेवालों के भयका दूर करनेवाला (१०२) अणु =३५ अत्यन्त सूक्ष्म, आत्मावृहत् =३६ महान्तमहोने से ब्रह्म, कृश =३७ जो संसार की स्थूल बस्तुओं के समान स्थूल नहीं है, स्थूल =३८ परन्तु सबका आत्मा होनेसे स्थूल, गुणभृत् =३९ संसार

की उत्पत्ति स्थिति और लयकास्वामी होनेसे सत्त्व, रज, तम नाम तीनों गुणों का धारण करनेवाला, निर्गुण ८४० परमार्थ में निर्गुण मायाके तीनोंगुणों से पृथक्, महान् ८४१ शब्दादि रहित अत्यन्त सूक्ष्म सदैव शुद्ध ज्ञानस्वरूप वाणी के विषयसे परे होने महान्तम, अधृत ८४२ (जो ऐसाहै तो किससे धारणकिया जाताहै इस शंका को कहते हैं) स्वधृत, वह अपनी आत्मासेही धारण होताहै और अपनी महान्तामें नियतहै, स्वास्य ८४३ कमल के समान सुन्दर मुख अथवा उपदेश के पुरुषार्थ के लिये वेदरूप बड़ा समूह जिसके मुखसे निकला, अथवा पक्षान्तर करके, अधृत ८४४ धारण करनेवाली पृथ्वी आदिका करनेवाला होनेसे किसी से धारण न होनेवाला, प्राग्वंश ८४५ जो मूल पुरुष सबसे प्रथम है और जिसका वंश प्रपंच दूसरों के वंशसे श्रेष्ठ और उत्तमहै वंशवर्द्धन ८४६ प्रपंच नाम वंशकी वृद्धि करनेवाला अथवा नाश करनेवाला (१०३) भारभृत् ८४७ अनन्तादिक रूपों से भारका उठानेवाला, कथित ८४८ वेदादिकों में सब से श्रेष्ठ कहागया वा जो सबकी लयका स्थान जानने के योग्य इन्द्रियों से भी परे वर्णन कियागया, योगी ८४९ योग नाम ज्ञानसे मिलनेवाला अथवा सबको अपनी आत्मा में धारण करनेवाला, योगीश ८५० जैसे कि अन्य २ योगी योग विघ्नोंसे अपने स्वरूप से मोहितहोते हैं वह वैसा नहीं है इसी से वह योगियों का भी ईश्वरहै, सर्वकामद ८५१ अभीष्टों का देनेवाला, आश्रम ८५२ संसाररूपी वन में घूमनेवाले, जीवों का आश्रमस्थान, श्रमण ८५३ अविवेकियों को दुःख देनेवाला क्षाम ८५४ सब प्रजाको नाश करनेवाला, सुपर्ण ८५५ जिस संसार रूप वृक्षकेपत्ते छन्दरूप हैं, वायुवाहन ८५६ जिसके भयसेवायु चला करती है, धनुर्द्धर ८५७ धनुर्द्धारी रामचन्द्र, धनुर्वेद ८५८ वही धनुर्वेदका ज्ञाता, दंड ८५९ दण्ड देनेवालों में दण्डरूप, दमयिता ८६० यमराज और राजाओं की मूर्त्तिसे प्रजाको दण्ड देनेवाला, दम ८६१ इन्द्रियोंके दण्ड देनेकेद्वारा प्रजाको सन्मार्ग में नियत करनेवाला, अपराजित ८६२ शत्रुओं से अजेय, सर्व ८६३ सब कर्मों का कर्त्ता सब शत्रुओं को सहनेवाला अथवा पृथ्वीरूप से सबको सहनेवाला, नियन्ता ८६४ सबको अपने २ कर्मों में नियत करनेवाला, नियम ८६५ जिसका कोई स्वामी नहीं यम ८६६ जिसकी मृत्यु वर्त्तमान नहीं (१०४।१०५) सत्त्ववान् ८६७ शूरता और पराक्रमादिक जिसको प्राप्त हैं, सात्त्विक ८६८ सतोगुण प्र-

धान सत्य ८६९ सत्पुरुषों में साधू, सत्यधर्म परायण ८७० सत्य वचनादिक धर्म का मुख्य स्थान, अभिप्राय ८७१ पुरुषार्थ चाहनेवाले जिसकी उपासना करते हैं अथवा प्रलयके समय जिसमें सब संसार नियत होताहै, प्रियार्ह ८७२ जो सब अभीष्ट पदार्थों के योग्यहै, अर्ह ८७३ जो आसन अर्घ्य और नमस्कार आदिक पूजन साधनों से पूजाके योग्यहै, प्रियकृत् ८७४ उनस्तुत्यादिकोंसे भजन करनेवालों को अभीष्ट सिद्ध करनेवाला, प्रीतिबर्द्धन ८७५ उनकी प्रीतिको बढ़ानेवाला, बिहायसगति ८७६ जिसकी गति और निवासस्थान आकाश में सूर्य्य मण्डल नाम विष्णुपद है, ज्योति ८७७ स्वयं प्रकाश नारायण, सुरुचि ८७८ जिसके प्रकाश और इच्छादिक सुन्दरहैं, हुतभुक् ८७९ सब देवताओं के निमित्त जो यज्ञ जारी होते हैं उनका भोक्ता और भोगकरानेवाला, बिभु ८८० सर्वत्र स्थानों में वर्त्तमान और तीनों लोकोंका स्वामी होने से बिभु, रबि ८८१ रसका आकर्षण करनेवाला सूर्य्यका आत्मा, बिरोचन ८८२ बहुत प्रकारसे प्रकाशमान सूर्य्य वा अग्नि, सूर्य्य ८८३ सब का कर्त्ता और लक्ष्मीका उत्पन्न करनेवाला, सबिता ८८४ सब संसारका ईश्वर, रबिलोचन ८८५ जिसके नेत्र सूर्य्य हैं, अनन्त ८८६ प्राचीन सर्वत्र बर्त्तमान और देशकाल बस्तुके प्रच्छेद से रहित होने से अनन्त अथवा शेषरूप हुतभुक् ८८७ हुतको भोजन करने वा करानेवाला, भोक्ता ८८८ भोगकेयोग्य जड़रूप प्रकृतिका भोगनेवाला अथवा जगत्का पालन करनेवाला, सुखद ८८९ भक्तोंको मोक्षलक्षण सुखका देनेवाला दुःखोंका दूर करनेवाला, अनेकद ८९० धर्म्मकी रक्षाकेनिमित्त बारम्बार अवतार लेनेवाला, अग्रज ८९१ सबकी आदि में हिरण्यगर्भरूप होकर उत्पन्न होनेवाला, अनिर्बिण्ण ८९२ सब मनोरथ सिद्धहोने और अभीष्ट सिद्धों के अप्राप्ति का कारण रूप न होनेसे जो व्याकुल और दुःखी नहीं है, सदामर्षी ८९३ शरणागत साधुओं पर क्षमाकरनेवाला, लोकाधिष्ठान ८९४ जिसका कोई आधार नहीं है उस आधाररूप ब्रह्ममें तीनोंलोक नियतहैं, अद्भुत ८९५ बहुतसे शास्त्रोंके श्रवणसेभी जो प्राप्तनहीं होता और बहुत श्रवण करनेवाले जिसको नहीं जानते इसका अपूर्ब्ब कहनेवाला पानेवाला सावधान अद्भुतताका जाननेवाला और अपूर्ब उपदेश करनेवालाहै उसको अद्भुत कहते हैं, अथवा अपने स्वरूप शक्ति और व्यापारों से अद्भुत, सनात् ८९६ कालरूप जैसे कि विष्णुपुराणमें लिखाहै कि परब्रह्मके चार

रूपहैं पुरुष, भक्त, अभक्त, काल, सनातनतम ८९७ सबके उत्पत्तिका कारणहोने से ब्रह्मादिक सनातन पुरुषोंका भी सनातन, कपिल ८९८ बड़वानल नाम अग्निका कपिलवर्ण है इसी हेतु से बड़वानलरूप, कपि ८९९ अपनी किरणों से जलों का पीनेवाला अथवा वराह अवतार, अव्यय ९०० प्रलयके मध्य में जिस में जगत् निश्चल होताहै, स्वस्तिदः ९०१ भक्तों को मंगल देनेवाला, स्वस्तिकृत् ९०२ कल्याण करनेवाला, स्वस्ति ९०३ स्वस्तिमंगलस्वरूप परमानन्दलक्षण, स्वस्तिभुक् ९०४ वही कल्याण भोगनेवालाहै अथवा भक्तोंको मंगलभोग कराने वालाहै, स्वस्तिदक्षिण ९०५ कल्याणरूपसे वृद्धिपानेवाला वा कल्याणदेने को समर्थ अथवा शीघ्रही कल्याण देनेको समर्थ (१०६।१०९) अरौद्र ९०६ जो कर्म्म प्रीतियुक्त क्रोधयुक्त और रुद्ररूपहैं उन तीनों को सम्पूर्ण अभीष्ट सिद्धतासे नहीं रखता इसी हेतुसे अरौद्रहै, कुण्डली ९०७ शेषरूप सूर्य के समान कुण्डलीधारण करनेवाला अथवा सांख्ययोगरूप मकराकृतिकुण्डलधारी, चक्री ९०८ सबके चित्तकी रक्षाके निमित्त तत्त्वरूप सुदर्शननाम चक्रधारी जैसे कि बिष्णुपुराणमें लिखाहै चलस्वरूप तीव्रतामें बायुके समान मनरूपी चक्रको हाथमें रखनेवाला, बिक्रमी ९०९ चरण को उठाताहुआ शूरता रखनेवाला जोकि दूसरे लोगोंसे बिलक्षणहै, ऊर्ज्जितशासन ९१० श्रुतिस्मृति लक्षणवाला बड़ीआज्ञाका रखनेवाला जैसे कि भगवद्वचन है किं जो मेरा श्रुतिस्मृति रूप आज्ञाओं को उल्लंघनकरके कर्मों को करताहै वह बिरोधी और शत्रुहै और मेराभक्त होकरभी वैष्णव नहीं है, शब्दातिगः ९११ बाणी और मनसेपरे परमपद, शब्दसह ९१२ सबवेद जिसको कहते हैं, शिशिर ९१३ संसारके तापसे संतप्त लोगोंका विश्रामस्थान, शर्बरीकरः ९१४ संसारियों का रात्रिके समान आत्मा ज्ञानियों की संसाररात्रिके सम तुल्यहैं उन दोनों रात्रियों का उत्पन्न करनेवाला जैसा कि भगवद्वचनहै जो सर्व जीवों की रात्रिहै उसमें योगी जागते हैं और जिसमें जीवधारी जागते हैं वह उनकी रात्रिहै (११०) अक्रूर ९१५ सब अभीष्ट सिद्धहोने और न होनेमें जिस को क्रोध नहीं है क्योंकि क्रूरतानाम चित्तका धर्म्म क्रोधसे उत्पन्न आभ्यन्तरीय शोकरूप है और मृत्युका उत्पन्न करनेवाला भय अज्ञानसे युक्तहै पेशल ९१६ कर्म्म मन बाणी और शरीर से शोभायमान, दक्ष ९१७ जिस परमेश्वरमें शक्ति, शीघ्रकर्मकरना, और समर्थहोना यह तीनोंगुणहैं, दक्षिण ९१८ गतिका स्वामी

और सबका नाशकरने वाला, दक्षिणाम्बर ६१९ भार का उठानेवाला क्षमावान् योगी और पृथ्वी आदि में श्रेष्ठ सब ब्रह्माण्ड को भी धारणकरके भार से पीड़ा न पानेवाला क्षमावान् समर्थ होते हैं यह सबका अद्वैत ईश्वरहोने से सब क्रियाओं के करने को समर्थ है, बिद्वत्तम ६२० उसी का बड़ाज्ञान सबपर जारी है दूसरे किसी का नहीं जारी है, बीतभय ६२१ सबका ईश्वर और नित्यमुक्त होने से जिस को संसार का भय नहीं है, पुण्यश्रवणकीर्त्तन ६२२ जिसका कहना और सुनना पुण्यका उत्पन्न करनेवाला है (१११) उत्तारण ९२३ संसार सागर से पार करनेवाला दुष्कृतिहा ६२४ पापको अथवा पापीजनों को नाश करनेवाला पुण्य ६२५ इतिहास पुराणादिकों के सुननेवालों का पुण्य उत्पन्न करनेवाला अथवा श्रुति स्मृतिरूप वचनों से पुण्यों का प्रकट करनेवाला, दुःस्वप्ननाशन ६२६ जो ध्यान स्तुति,कीर्त्तन कियाहुआ दुःस्वप्न देखने के अशुभ फलों को नाशकरता है, बीरहा ६२७ मुक्तदान से संसारियों के नानाप्रकारकी गतियों का नाश करनेवाला, रक्षण ६२८ सतोगुण में नियतहोकर तीनोंलोकों की रक्षा करनेवाला सन्त ६२९ जो सत्यमार्ग्ग में नियत हैं वह सन्तकहाते हैं इससे वह विद्या की वृद्धि के लिये सन्त है, जीवन ९३० प्राणरूप से सब प्रजाको सजीव रखनेवाला, पर्य्यवस्थित ६३१ सबओर से बिश्वको ब्याप्त करके नियत, अनन्तरूप ६३२ जो अनन्तादिक बिश्व प्रपंचरूपसे नियतहै, अनन्तश्री ६३३ जिसकी शक्ति असंख्यहै, जितमन्यु ६३४ क्रोधका जीतनेवाला,भयापह ६३५ पुरुषोंका जो संसार से भय उत्पन्नहोता है उसका नाशकरनेवाला चतुरस्र ६३६ न्यायके अनुसार मनुष्योंको कर्मके फलका देनेवाला गंभीरात्मा ६३७ जिस का स्वरूप अथवा चित्त गंभीरहै कोई उसका अन्त नहीं पासक्ता, विदिश ६३८ अधिकारियों को नानाप्रकारके अत्यन्त फलोंका दिखानेवाला, ब्यादिश ६३९ इन्द्रादिकों की प्रार्थनाओं को अङ्गीकार करनेवाला, दिश ६४० वेदरूपसे नाना प्रकार के कर्मफलों का उपदेश करनेवाला (११२।११३) अनादि ६४१ सबके उत्पत्तिका कारण होनेसे जिसकी उत्पत्तिका कोई कारण बर्त्तमान नहीं है, भूर्भुवः ६४२ सबका आश्रय स्थान होनेसे पृथ्वी और अन्तरिक्षरूपसे सबजीवों का आधार, लक्ष्मी ६४३ जिसकी आत्मविद्या उन भूर्भुवः लोकोंकी शोभाहै, सुबीर ६४४ जिसकी नानाप्रकारकी गति शोभायमानहै अथवा जिसकी नाना

प्रकारकी चेष्टा प्रकाश देनेवाली है, रुचिरांगद ९४५ जिसके दोनों बाजूबन्द क-ल्याणरूपहैं, जनन ९४६ सब जीवधारियों का उत्पन्नकर्त्ता, जनजन्मादि ९४७ मनुष्य के जन्मका मूलकारण, भीम ९४८ भयका हेतु भीमपराक्रम, ९४९ अ-वतारों में जिसका पराक्रम असुरादिकों के भयका कारणहै (११४) आधारनि-लय ९५० पंचतत्त्वरूप होकर आधारोंका भी आधार, अधाता ९५१ जिसका आधार भी उसीका आत्माहै जोकि प्रलयके समय सब सृष्टिको धारण और भ-क्षण करताहै पुष्पहास ९५२ प्रफुल्लित पुष्पके समान जिसका हास्य प्रपंचके प्रकाशरूपहै, प्रजागर ९५३ सदैव ज्ञानस्वरूप होनेसे बहुत जागनेवाला, ऊर्ध्वग ९५४ सबके ऊपर नियत होनेवाला, सत्पथाचार ९५५ सत्पुरुषों के जो सन्मार्ग नाम कर्म हैं उनका अभ्यास करनेवाला, प्राणदः ९५६ मृतकपरीक्षितादिकोंको जिवानेवाला, प्रणव ९५७ परमात्माका कहनेवाला बड़ानाम जो ॐकारहै उसी कारूपहै, पण ९५८ व्यापारी अर्थात् अधिकारियोंसे उनके पवित्र कर्मोंको अं-गीकारकरके उसका फल देनेवाला (११५) प्रमाण ९५९ ज्ञानस्वरूप स्वयंप्र-काशब्रह्म प्राणनिलय ९६० इन्द्रिय अथवा पंचप्राण जिस जीवात्मामें लयहोते हैं अथवा जिसपुरुषोत्तम में जीव लय होताहै वह पुरुषोत्तम, प्राणभृत् ९६१ अन्न-रूपसे प्राणोंका पोषण करनेवाला, प्राणजीवन ९६२ प्राणों से सजीव करनेवाला अथवा प्राणोंको चैतन्यकरनेवाला, तत्त्व ९६३ परमार्थ से ब्रह्मवाचक शब्द अ-र्थात् परमब्रह्म, तत्त्ववित् ९६४ आत्मस्वरूप को ठीक २ जाननेवाला, एकात्मा ९६५ एकहीआत्मा अद्वैतस्वरूप जन्ममृत्यु, जरातिग ९६६ उत्पत्ति नाश और रूपान्तरदशासे रहित (११६) भूर्भुवःस्वस्तरुः ९६७ होमकेद्वारा तीनों व्याहृ-तियों से तीनोंलोकों का तारनेवाला जैसे कि स्मृतियों में लिखाहै कि अग्निमें जो आहुति दीजाती है वह सूर्य्यके पासजाती है फिर सूर्यसे वर्षाहोती है वर्षासे अन्न और अन्नसे प्रजा उत्पन्नहोती है अथवा त्रिगुणात्मक सृष्टिरूपी वृक्ष जिस को आत्मासे व्याप्तकरके नियतहै, तार ९६८ संसारसागरसे तारनेवाला अथवा प्रणवरूप, सपिता ९६९ सब लोकों का कर्त्ता होनेसे पिताहै, प्रपितामह ९७० ब्रह्माका भी कर्त्ता होने से प्रपितामह, यज्ञ ९७१ यज्ञरूप यज्ञपति ९७२ यज्ञोंका स्वामी और रक्षक जैसा कि भगवद्वचनहै कि मैंहीं यज्ञोंका भोक्ता और स्वामी हूं यज्वा ९७३ यजमानरूप यज्ञांग ९७४ यज्ञही जिसके अंगहैं वह वराह मूर्त्ति

जिसके चरण, वेद, दाढ़, यज्ञकुम्भ, हाथ, क्रतु, मुख, चितौती, जिह्वाअग्नि, रोम, कुशा, शिरब्रह्मा, दोनोंनेत्र, दिन, रात्रि, भूषण वेदोंके अंग और श्रुति, घृत, नाक, शब्द, सामघोष, नख, प्रायश्चित्तादि हरिवंशके अनुसार, यज्ञवाहन ९७५ यज्ञोंके फलोंके प्राप्तहोनेके कारणों का धारण करनेवाला अथवा प्राप्त करनेवाला (११७) यज्ञभृत् ९७६ यज्ञका पोषण और रक्षा करनेवाला, यज्ञकृत् ९७७ जगत्के आदि और अन्तमें यज्ञकरनेवाला अथवा नाशकरनेवाला, यज्ञी ९७८ जिनयज्ञोंसे उस का पूजनादिकहोताहै उनकाप्रधान, यज्ञभुक् ९७९ यज्ञकाभोक्ता और भोगकराने वाला यज्ञसाधन ९८० यज्ञप्राप्ती का साधन, यज्ञान्तकृत् ९८१ फलको देकर यज्ञ का अन्त करनेवाला अर्थात् समाप्त करनेवाला अथवा वैष्णवीऋचाको पढ़कर पूर्णाहुती से पूर्ण करके यज्ञसमाप्त करनेवाला, यज्ञगुह्यम् ९८२ ज्ञान यज्ञ अथवा जिसमें फलकी इच्छानहीं है वह यज्ञ, अन्न ९८३ जो भोजन किया जाताहै अ-थवा जीवोंको भोजनकराताहै वह अन्नहै, अन्नाद ९८४ जो अन्नको भोजनकरता है क्योंकि यह सब जगत् अग्नि सोमरूप है (११८) आत्मयोनि ९८५ जिस का उपादानकारण उसीका आत्माहै दूसरा नहीं है स्वयंजात ९८६ वही निमित्त कारण है इसी हेतुसे अपने आप उत्पन्न होनेवाला अर्थात् प्रकट होनेवाला वै-खानः ९८७ वाराहरूपसे पृथ्वीको अधिकतर खोदकर पातालतलवासी हिरण्याक्ष को मारनेवाला, सामगायन ९८८ साममंत्रों को गानेवाला, देवकीनन्दन ९८९ देवकी माताका पुत्र इसी महाभारत में लिखा है कि प्रकाशरूप शरीरवाला सब का बीजरूप लोकपालोंसमेत तीनों लोक तीनों अग्नि और सम्पूर्ण ब्रह्मादिक देवता देवकी का पुत्रहै, स्रष्टा ९९० क्योंकि सब संसारका कर्त्ता है क्षितीश ९९१ भूमिका ईश्वर राजा रामचन्द्र, पापनाशन ९९२ (११९) कीर्त्तन पूजन और ध्यानकरने से पापोंकेसमूहों का नाश करनेवाला जैसे वृद्ध शातातप का बचन है कि पन्द्रह दिनके व्रतसे और सौ अथवा हजार प्राणायामोंसे जो पाप दूरहोता है वह एक क्षणभरही के ध्यानकरने से नाश होजाता है, शङ्खभृत् ९९३ अहं-काररूप शङ्ख जिसका पांचजन्यनामहै उसको धारणकरनेवाला, नन्दकी ९९४ विद्यारूप नन्दकी नाम खड्ग धारण करनेवाला चक्री ९९५ तत्त्वमणिरूप सुद-र्शन नाम चक्र रखनेवाला अथवा जिसकी आज्ञासे संसारचक्र घूमताहै, शा-र्ङ्गधन्वा ९९६ अहंकाररूप शार्ङ्गधनुष रखनेवाला, गदाधर, ९९७ बुद्धितत्त्वरूप

कौमोदकीनाम गदा रखनेवाला, रथांगपाणि ६६८ रथका अङ्गरूप चक्र जिस के हाथमें नियतहै, अक्षोभ्य ६६६ अजेय, सर्वप्रहरणायुध १००० जोकि संपूर्ण शस्त्रोंका रखनेवालाहै (१२०) ॐनमोनमः यहनाम आदि अन्तमें लियाजाता है और बड़ा मंगलरूपहै क्योंकि उसका फल शास्त्रमें यह लिखाहै कि जो प्रणाम श्रीकृष्ण भगवान्को कियाजाय वह दश अश्वमेधके अवभृथस्नानकी समानहै दश अश्वमेध करनेवाला भी फिर जन्मलेताहै परन्तु श्रीकृष्ण को प्रणाम करने वाला फिर जन्म नहीं लेताहै जो पुरुष इस अलसीपुष्प के वर्ण पीताम्बरधारी गोविन्दजी को नमस्कार करते हैं उनको कहीं भी भय नहीं है तीनोंलोकों के स्वामी अनुपम प्रभाव रखनेवाले ईश्वर प्रभु विष्णुजी को थोड़ाभी प्रणाम करके मनुष्यका वह पाप जोकि हजार कल्पतक के जन्मलेने से उत्पन्न हुआहै नाश होजाताहै यह कीर्त्तनके योग्य महात्मा केशवजी के हजार दिव्यनाम मैंने सं-पूर्णताके साथ वर्णनकिये १२१ जो इसको सदैव श्रवणकरेगा अथवा कीर्त्तनभी करेगा वह मनुष्य इसलोक और परलोकमें किसी प्रकारके अशुभको नहींपाता है १२२ इसके श्रवण और कीर्त्तनसे ब्राह्मण तो वेदपाठ ब्रह्मपाठ और ज्ञान इन तीनों का प्राप्त करनेवाला होगा क्षत्रिय विजय पानेवाला होय वैश्य बड़ाधनी होय और शूद्र जपयज्ञके बिना केवल श्रवणही करने से सुखको पाताहै क्योंकि शूद्र यज्ञ और जप दोनोंका अधिकारी नहीं है १२३ धर्म्मकी इच्छा करनेवाला धर्म्म को पावे धनाकांक्षी धनादिकों को पावे १२४ जो भक्तिमान् पवित्रात्मा और उसमें चित्त लगानेवाला मनुष्य सदैव प्रातःकाल उठकर वासुदेवजी के इस सहस्रनाम को पाठकरे १२५ वह बड़ायशस्वी होकर अपनी जाति में प्रतिष्ठाको पाकर अचल लक्ष्मी को पाता है और उस उत्तम कल्याण को पाता है जिससे श्रेष्ठ दूसरा नहीं है १२६ वह मनुष्य किसी स्थानपर भयको नहीं पाता है तेज और पराक्रम को प्राप्त करता है और नीरोगतापूर्व्वक तेजस्वीपन बल और सुन्दर स्वरूपता को पाता है १२७ जो रोगी अपने रोग से दुःखी है वह अपने रोग से निवृत्त होताहै बँधाहुआ अपने बंधनसे छूटे भयभीत भय से छूटे आपत्तियों में पड़ाहुआ आपत्तियों से छूटे १२८ भक्तियुक्त मनुष्य इसविष्णु के सहस्रनामसे पुरुषोत्तम को स्तुतिकरता शीघ्रही कठिनताओं से निवृत्तहोता है १२६ वासुदेवमें आश्रय और वासुदेवहीको सर्वोत्तम स्थान समझनेवाला सब

पापोंसे अत्यन्त पवित्रचित्त मनुष्य सनातन ब्रह्मको पाताहै १३० बासुदेवजी के भक्तोंको अशुभ कहींभी नहीं बर्त्तमानहै उनका जन्म मरण वृद्धावस्था रोग और भयभी नहीं है १३१ श्रद्धाभक्तिसे युक्त मनुष्य इसस्तोत्रको पाठकरताहुआ आगे लिखेहुये फलोंको पाताहै अर्थात् आत्मसुख,शांती, लक्ष्मी,धैर्य्य, स्मरणता,कीर्त्ति १३२ जो पुरुषोत्तमके भक्तहोकर पवित्रकर्म्म करनेवाले हैं उनमें क्रोध, मत्सरता; अर्थात् ईर्षादिक लोभ, दुर्बुद्धिता यह सब अवगुण नहीं होते हैं १३३ और नक्षत्रोंसमेत चन्द्रमा सूर्य स्वर्ग आकाश सबदिशा पृथ्वी महासमुद्र यह सबमहात्मा बासुदेवजी के पराक्रमसे धारण कियेगये हैं १३४ देवता असुर गन्धर्व यक्ष उरग राक्षस और अन्य जड़ चैतन्य जीवोंसमेत यह सब जगत् श्रीकृष्णजी के आधीन बर्त्तमान है १३५ इन्द्रिय मन बुद्धि बल अथवा सतोगुण तेज धैर्य्य बल क्षेत्र क्षेत्रज्ञ इन सबको बासुदेवरूप कहा है १३६ सब शास्त्रों में आचारही उत्तम कहाजाताहै धर्मआचारसे उत्पन्नहोताहै धर्म के स्वामी बासुदेवजी हैं १३७ ऋषि पितृ देवता पंचमहाभूत सबधातु और यह सब स्थावर जंगम जड़ चैतन्य जगत् नारायणही से प्रकटहै १३८ योग, ज्ञान, सांख्य, बिद्या शिल्प आदिक कर्म्म सब वेदशास्त्र और बिज्ञान यह सब जनार्द्दनजी से ही है १३९ बड़े प्रकाशरूप बिष्णु जी एकहैं और पृथक् २ प्रकट कियेहुये रूप अनेकहैं परन्तु वही न्यूनतासे रहित सब प्रत्यक्ष प्रकटहोने वालोंका आत्मा नारायण तीनोंलोकों को व्याप्तकरके बिश्व को भोगताहै १४० व्यासजीने भगवान् बिष्णुजीका यहस्तव बनायाहै जो पुरुष कल्याण और सुखोंको चाहै वह इस व्यासकृत स्तव को पाठकरे १४१ जो पुरुष इस बिश्वके ईश्वर अजन्मा बड़े तेजरूप संसारके उत्पत्ति और प्रलयस्थान हृदय कमल में बर्त्तमान नारायणको भजते हैं वह नाश को नहीं पाते हैं १४२ जैसे कि स्मृति में लिखाहै कि यज्ञमें मोहसे कर्म्म करनेवाले पुरुषोंकी जो कुछ कर्म्म में न्यूनता होती है वह सब बिष्णुजी के स्मरणसे पूर्णहोताहै और व्यास बचन भी है कि जैसे धनकी इच्छासे धनाढ्यलोगों की प्रतिष्ठापूर्व्वक प्रार्थना करते हैं उसी प्रकारही जब सब संसारके कर्त्ताको बंदनाकरे तो क्यों नहीं संसारके बंधन से छूटेगा १ अर्जुनने प्रश्नकिया कि हे कमलपत्रके समान बिशालाक्ष कमलनाभ देवताओंमें श्रेष्ठ जनार्द्दनजी आप प्रसन्नहोकर अपने भक्तोंके रक्षकहूजिये १४३ श्रीभगवान् बोले हे पांडव जो पुरुष मेरी सहस्रनामसे स्तुति करताहै और उससे

मेरी जितनीप्रसन्नता होती है उतनीही मेरी प्रसन्नता आगे लिखेहुये एकश्लोक से भी निस्सन्देह होसक्ती है १४४ अर्थात् अनन्तकेअर्थ नमस्कार सहस्रमूर्त्तिवाले को नमस्कार सहस्रपाद अक्ष शिर और भुजाधारी केअर्थ नमस्कारहै सहस्रनाम धारण करनेवाले सनातन पुरुषके अर्थ नमस्कार हजारकोटियुगधारी के अर्थ नमस्कार १४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेविष्णुसहस्रनाम रूपशब्द२०व्याख्यामाहात्म्यसंयुक्तअर्थवर्णनेशतोपरिएकोनपंचाशत्तमोऽध्यायः१४९ ॥

अथ गजेन्द्रमोक्षप्रारम्भः ॥

शतानीकउवाच ॥ मयाहिदेवदेवस्य विष्णोरमिततेजसम् ॥ श्रुताःसंभूतयः सर्वागदतस्तवसुव्रत १ यदिप्रसन्नोभगवाननुग्राह्योस्मिवायदि ॥ तदहंश्रोतुमिच्छामि नृणांदुःस्वप्ननाशनम् २ स्वप्नादिषुमहाभाग दृश्यंतेयेशुभाशुभाः ॥ फलानिचप्रयच्छंतितद्गुणान्येवभार्गव ३ तादृक्पुण्यंपवित्रंच नृणामतिशुभप्रदम् ॥ दुष्टस्वप्नोपशमनं तन्मेविस्तरतोवद ४ शौनकउवाच ॥ इदमेवमहाभाग पृष्टवांश्च पितामहम् ॥ भीष्मंधर्मभृतांश्रेष्ठं धर्मपुत्रोयुधिष्ठिरः ५ भीष्मउवाच ॥ जितंतेपुंडरीकाक्ष नमस्तेविश्वभावन ॥ नमस्तेऽस्तुहृषीकेशमहापुरुषपूर्वज ६ आद्यंपुरुषमीशानं पुरुहूतंपुरातनम् ॥ ऋतमेकाक्षरंब्रह्मव्यक्ताव्यक्तंसनातनम् ७ असच्चसच्च यद्विश्वं नित्यंसदसतःपरम् ॥ परंपराणांपरमं पुराणंपरमव्ययम् ८ मङ्गल्यंमङ्गलं विष्णुंवरेण्यमनघंशुचिम् ॥ नमस्कृत्यहृषीकेशंचराचरगुरुंहरिम् ९ प्रवक्ष्यामिमहापुण्यकृष्णद्वैपायनस्यच ॥ येनोक्तेनश्रुतेनापि नश्यतेसर्वपातकम् १० नारायणसमोदेवो नभूतोनभविष्यति ॥ एतेनसत्यवाक्येन सर्वार्थान्साधयाम्यहम् ११ किंतस्यबहुभिर्मन्त्रैः किंतस्यबहुभिर्व्रतैः ॥ नमोनारायणायेति मन्त्रःसर्वार्थसाधकः १२ जज्ञेबहुज्ञंपरमत्युदारं यंद्वीपमध्येसुतमात्मवन्तम् ॥ पराशराद्गन्धवतीमहर्षेस्तस्मैनमोज्ञानतमोनुदाय १३ नमोभगवतेतस्मै व्यासायामिततेजसे ॥ यस्य प्रसादाद्वक्ष्यामि नारायणकथामृतम् १४ वैशंपायनमासीनंपुराणोक्तिविचक्षणम् ॥ इममर्थंसराजर्षिः पृष्टवान्जनमेजयः १५ जनमेजयउवाच ॥ किंजपन्मुच्यतेपापात् किंजपन्सुखमश्नुते ॥ दुःस्वप्ननाशनंपुण्यं श्रोतुमिच्छामिमानद १६ वैशंपायन उवाच ॥ एवमेवपुराप्रश्नं पृष्टवांस्तेपितामहः ॥ भीष्मंवैव्रतिनांश्रेष्ठं तंत्राहंकथयामिते १७ देवव्रतंमहाप्राज्ञं सर्वशास्त्रविशारदम् ॥ विनयेनोपसंगम्य पर्यपृच्छद्

धिष्ठिरः १८ युधिष्ठिरउवाच ॥ दुःस्वप्ननाशनंघोरमवेद्यभरतर्षभ ॥ प्रयतःकिंजपे ज्जाप्यं विबुधःकिमनुस्मरेत् १९ कस्यकुर्य्यान्नमस्कारं प्रातरुत्थायमानवः ॥ किञ्च ध्यायेतसततं किंपूज्यंवाभवेत्सदा २० पितामहप्रसादेनबुध्यश्रेदोभवेन्मम ॥ तदहं श्रोतुमिच्छामि ब्रूहिनोवदतांवर २१ भीष्मउवाच ॥ शृणुराजन्महाबाहो कथयि ष्येहिशान्तिकम् ॥ दुःस्वप्नदर्शनेजाप्यं यद्वैनित्यंसमाहितैः २२ अत्राप्युदाहरंती ममितिहासंपुरातनम् ॥ गजेन्द्रमोक्षणञ्चैव कृष्णस्याद्भुतकर्म्मणः २३ सर्वरत्नमयः श्रीमान्त्रिकूटोनामपर्वतः ॥ सुतःपर्वतराजस्य सुमेरोर्भास्करद्युतेः २४ क्षीरोदजल वीच्यग्रैर्धौतामलशिलातलः ॥ उत्थितःसागरंभित्त्वा देवर्षिगणसेवितः २५ अप्स रोभिःपरिवृतः श्रीमत्प्रस्रवणाकुलः ॥ गंधर्वैःकिन्नरैर्यक्षैः सिद्धचारणपन्नगैः २६ मृगैःसिंहैर्गजेंद्रैश्चवृतगात्रोविराजते ॥ पुन्नागैःकर्णिकारैश्चसुबिल्वैर्दिव्यपाटलैः२७ चूतनिंबकदंबैश्चचंदनागरुचंपकैः ॥ शालैस्तालैस्तमालैश्चतरुभिश्चार्जुनैस्तथा २८ बकुलैःकुंदपुष्पैश्चसरलैर्देवदारुभिः ॥ मन्दारकुसुमैश्चान्यैः पारिजातैश्चसर्वशः २९ एवंबहुविधैर्वृक्षैःसर्वतःसमलंकृतः ॥ नानाधात्वङ्कितैःशृंगैः प्रस्रवद्भिःसमंततः ३० शोभितोरुचिरप्रख्यैस्त्रिभिर्विस्तीर्णसानुभिः ॥ मृगैःशाखामृगैःसिंहैर्मातंगैश्चसदा मदैः ३१ जीवंजीवकसंघुष्टं चकोरशिखिनादितम् ॥ तस्यैकंकाञ्चनंशृंगं सेव्यतेयं दिवाकरः ३२ नानापुष्पसमाकीर्णं नानाशृंगैःसमाकुलम् ॥ द्वितीयंराजतंशृङ्गं सेव्यतेयंनिशाकरः ३३ पाण्डुरांबुदसंकाशंतुषाराचलसन्निभम् ॥ वज्रेन्द्रनीलवै दूर्यतेजोभिर्भासयन्नभः ३४ तृतीयंब्रह्मसदनं प्रकृष्टंशृंगमुत्तमम् ॥ पद्मरागसम प्रख्यं तारागणसमन्वितम् ३५ नैतत्कृतघ्नाःपश्यंतिननृशंसाननास्तिकाः ॥ नात प्ततपसोलोकेयेचपापकृतोजनाः ३६ नानाराधितगोविंदा शैलंपश्यन्तितेनराः ॥ तस्यसानुमतःपृष्ठे सरःकाञ्चनपंकजम् ३७ कारंडवसमाकीर्णं राजहंसोपशोभि तम् ॥ मत्तभ्रमरसंघुष्टं चकोरशिखिनादितम् ३८ कमलोत्पलकह्लार पुंडरीकोप शोभितम् ॥ कुमुदैःशतपत्रैश्च कांचनैःसमलंकृतम् ३९ पद्मैर्मरकतप्रख्यैः पुष्पैः काञ्चनसन्निभैः ॥ गुल्मैःकीचकवेणूनां समंतात्परिवारितम् ४० अत्यद्भुतंमहा स्थानं विचित्रशिखराकुलम् ॥ शतयोजनविस्तीर्णं दशयोजनमायतम् ४१ पंच योजनमूर्धानां सरएतत्प्रमाणतः ॥ हिमखण्डोदकंराजन् सुस्वाद्वमृतोपमम् ४२ त्रैलोक्येदृष्टपूर्वञ्च यत्तत्सरमनुत्तमम् ॥ सुप्रसन्नंसरोदिव्यं देवानामपिदुर्लभम् ४३ खातेनद्विगुणंप्रोक्तं शरद्द्यौरिवनिर्मलम् ॥ उपहारायदेवानां सिद्धाद्यर्चितपंक

जम् ४४ तस्मिन्सरसिदुष्टात्मा विरूपोंतर्जलाशयः ॥ आसीद्ग्राहोगजेन्द्राणां दुराधर्षोमहाबलः ४५ अथदन्तोज्ज्वलमुखः कदाचिद्गजयूथपः ॥ आजगामतृषाक्रांतः करेणुपरिवारितः ४६ मदस्रावीजलाकांक्षी पादचारीवपर्वतः ॥ वासयन्मदगंधेन महानैरावतोपमः ४७ गजोह्यञ्जनसंकाशो मदाचलितलोचनः ॥ तृषितःपानकामोऽयमवतीर्णश्चतत्सरः ४८ पिबन्स्तस्यतत्तोयं ग्राहश्चसमपद्यत ॥ सुलीनःपंकजवने यूथमध्यगतःकरी ४९ गृहीतस्तेनरौद्रेण ग्राहेणातिबलीयसा ॥ पश्यन्तीनां करेणूनां क्रोशन्तीनांसुदारुणम् ५० नीयतेपंकजवने ग्राहेणाव्यक्तमूर्त्तिना ॥ गजोह्याकर्षतेतीरं ग्राहश्चाकर्षतेजलम् ५१ तयोर्युद्धंमहाघोरं दिव्यवर्षसहस्रकम् ॥ वारुणैःसंयतःपाशैर्निष्प्रयत्नगतिःकृतः ५२ वेष्ट्यमानःसघोरैस्तु पाशैर्नागदृढैस्तथा ॥ विस्फूर्जितमहाशक्तिर्विक्रोशंश्चमहारवान् ५३ व्यथितःसनिरुत्साहो गृहीतोघोरकर्मणा ॥ परमापदमापन्नो मनसाचिन्तयद्धरिम् ५४ सतुनागवरःश्रीमान्नारायणपरायणः ॥ तमेवशरणंदेवं गतःसर्वात्मनातदा ५५ एकाग्रोनिगृहीतात्मा विशुद्धेनांतरात्मना ॥ नैकजन्मांतराभ्यासाद्भक्तिमान्गरुडध्वजे ५६ नान्यंदेवं महादेवात्पूजयामासकेशवात् ॥ दिग्बाहुंस्वर्गमूर्धानं भूःपादंगगनोदरम् ५७ आदित्यचन्द्रनयन मनन्तंविश्वतोमुखम् ॥ भूतात्मानञ्चमेघाभं शङ्खचक्रगदाधरम् ५८ सहस्रशुभनामानमादिदेवमजंविभुम् ॥ संगृह्यपुष्कराग्रेण काञ्चनंकमलोत्तमम् ५९ निवेद्यमनसाध्यात्वा पूजांकृत्वाजनार्दनम् ॥ आपद्विमोक्षमन्विच्छन् गजःस्तोत्रमुदैरयत् ६० गजेंद्रउवाच ॥ नमोमूलप्रकृतये अजितायमहात्मने ॥ अनाश्रयायदेवाय निस्पृहायनमोनमः ६१ नमआद्यायबीजाय आर्षेयायप्रवर्त्तिने ॥ अनन्तायचनैकाय अव्यक्तायनमोनमः ६२ नमोगुह्यायगूढाय गुणाय गुणधर्मिणे ॥ अतर्क्यायाप्रमेयाय अतुलायनमोनमः ६३ नमःशिवायशांताय निश्चयायायशस्विने ॥ सनातनायपूर्वाय पुराणायनमोनमः ६४ नमोजगत्प्रतिष्ठाय गोविंदायनमोनमः ॥ नमोदेवाधिदेवाय स्वभावायनमोनमः ६५ नमोस्तु पद्मनाभाय सांख्ययोगोद्भवायच ॥ विश्वेश्वरायदेवाय शिवायहरयेमनः ६६ नमोस्तुतस्मैदेवाय निर्गुणायगुणात्मने ॥ नारायणायदेवाय देवानांपतयेनमः ६७ नमोनमःकारणवामनाय नारायणायामितविक्रमाय ॥ श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधराय नमोऽस्तुतस्मै पुरुषोत्तमाय ६८ गुह्यायवेदनिलयायमहोदराय सिंहायदैत्यनिधनायचतुर्भुजाय ॥ ब्रह्मेंद्ररुद्रमुनिचारणसंस्तुताय देवोत्तमायवरदायनमोऽच्यु

ताय ६९ नागेंद्रभोगशयनासनसुप्रियाय गोक्षीरहेमशुकनीलघनोपमाय ॥ पीतांबरायमधुकैटभनाशनाय विश्वायचारुमुकुटायनमोऽक्षराय ७० नाभिप्रजातकमलासनसंस्तुताय क्षीरोदकार्णवनिकेतयशोधराय ॥ नानाविचित्रमुकुटाङ्गदभूषणाय योगेश्वरायविरजायनमोवराय ७१ भक्तिप्रियायवरदीप्तिसुदर्शनाय फुल्लारविंदविपुलायतलोचनाय ॥ देवेंद्रविघ्नशमनोद्यतपौरुषाय नारायणायवरदायनमोऽच्युताय ७२ नारायणायपरलोकपरायणाय कालायकालकमलायतलोचनाय ॥ रामायरावणविनाशकृतोद्यमाय धीरायधीरतिलकायनमोवराय ७३ पद्मासनाय मणिकुण्डलभूषणाय कंसांतकायशिशुपालविनाशनाय ॥ गोवर्धनायसुरशत्रुनिकृंतनाय दामोदरायविरजायनमोवराय ७४ ब्रह्मायनायत्रिदशायनाय लोकैकनाथायहितात्मकाय ॥ नारायणायार्त्तिविनाशनाय महावराहायनमस्करोमि ७५ कूटस्थमव्यक्तमचिंत्यरूपं नारायणंकारणमादिदेवम् ॥ युगांतशेषंपुरुषंपुराणं तंवासुदेवंशरणंप्रपद्ये ७६ अदृश्यमच्छेद्यमनंतमव्ययं महर्षयोब्रह्ममयंसनातनम् ॥ वदंतियंवैपुरुषंपुरातनं तंवासुदेवंशरणंप्रपद्ये ७७ उत्तिष्ठतस्तस्यजलोरुकुक्षेर्महावराहस्यमहींविदार्थे ॥ विधुन्वतोवेदमयंशरीरं लोकांतरस्थंमुनयोगृणन्ति ७८ योगेश्वरंचारुविचित्रमौलिंज्ञेयंसमस्तंप्रकृतेःपरस्थम् ॥ क्षेत्रज्ञमात्मप्रवरंवरेण्यं तं वासुदेवंशरणंप्रपद्ये ७९ किरीटकेयूरमहार्हनिष्कैर्मण्युत्तमालंकृतसर्वगात्रम् ॥ पीतांबरंकांचनचित्रनद्धमालाधरंकेशवमभ्युपैमि ८० कार्यक्रियाकारणमप्रमेयं हिरण्यबाहुंवरपद्मनाभम् ॥ महाबलंवेदनिधिंसुरोत्तमं तंवासुदेवंशरणंप्रपद्ये ८१ भवोद्भवंवेदविदांवरिष्ठंयोगात्मकंसांख्यविदांवरिष्ठम् ॥ आदित्यचंद्राग्निवसुप्रभावं प्रभुंप्रपद्येऽच्युतमात्मवंतम् ८२ यदक्षरंब्रह्मवदंतिसर्वगंनिशम्ययन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते ॥ तमीश्वरंयुक्तमनुत्तमैर्गुणैः सनातनंलोकगुरुंनमामि ८३ नमस्तस्मैवराहाय लीलयोद्धरतेमहीम् ॥ खुरमध्यगतोयस्यमेरुःखुरखुरायते ८४ श्रीवत्सांकंमहादेवं देवगुह्यमनूपमम् ॥ प्रपद्येसूक्ष्ममचलंवरेण्यमभयप्रदम् ८५ प्रभवंसर्वभूतानांनिर्गुणं परमेश्वरम् ॥ प्रपद्येमुक्तसंगानां यतीनांपरमांगतिम् ८६ प्रभवंतंगुणाध्यक्षमक्षरंपरमंपदम् ॥ शरण्यंशरणंभक्त्याप्रपद्येभक्तवत्सलम् ८७ त्रिविक्रमंत्रिलोकेशंसर्वेषां प्रपितामहम् ॥ योगात्मानंमहात्मानं प्रपद्येऽहंजनार्द्दनम् ८८ आदिदेवमजंविष्णुं व्यक्ताव्यक्तंसनातनम् ॥ नारायणमणीयांसं प्रपद्येब्राह्मणप्रियम् ८९ अकूपाराय देवाय नमःसर्वमहाद्युते ॥ प्रपद्येदेवदेवेश मणीयांसमणोःसदा ९० एकायत्नोक

नाथाय परतःपरमात्मने ॥ नमःसहस्रशिरसे अनन्तायनमोनमः ९१ तमेवपरमं देवमृषयोवेदपारगाः ॥ कीर्त्तयंतिचसर्वेवै ब्रह्मादीनांपरायणम् ९२ नमस्तेपुण्डरीकाक्ष भक्तानामभयंकर ॥ सुब्रह्मण्यनमस्तेऽस्तुत्राहिमांशरणागतम् ९३ तावद्भवतिमेदुःखं चिन्तासागरसागरे ॥ यावत्कमलपत्राक्षं नस्मरामिजनार्द्दनम् ९४ भीष्म उवाच ॥ भक्तिंतस्यतुसंचिंत्य नागस्यामोघसंस्तवान् ॥ प्रीतिमानभवद्राजन् श्रुत्वा चक्रगदाधरः ९५ आरुह्यगरुडंविष्णुराजगामसुरोत्तमः ॥ सान्निध्यंकल्पयामास तस्मिन्सरसिलोकधृक् ९६ ग्राहग्रस्तंगजेन्द्रंच तंग्राहंचजलाशयात् ॥ उज्जहाराप्रमेयात्मा तरसामधुसूदनः ९७ जलस्थंदारयामासग्राहंचक्रेणमाधवः ॥ मोचयामासनागेंद्रं पाशेभ्यःशरणागतम् ९८ सहिदेवलशापेन हूहूर्गंधर्वसत्तमः ॥ इदमप्यपरंगुह्यं राजन्पुण्यतमंशृणु ९९ युधिष्ठिरउवाच ॥ कथंशापोऽभवत्तावद्गंधर्वस्य महात्मनः ॥ एतदिच्छाम्यहंश्रोतुं विस्तरेणपितामह १०० भीष्मउवाच ॥ यथा तौशापितौतेन देवलेनमहात्मना ॥ हाहाहूहूरितिख्यातौ गीतवाद्यविशारदौ १ उर्वशीमेनकारंभातथाऽन्येचाप्सरोगणाः ॥ शक्रस्यपुरतोराजन् नृत्यंतेताःसुमध्यमाः २ ततस्तुतौगायमानौ गंधर्वौराजसद्मनि ॥ अन्योन्यंचक्रतुःस्पर्द्धांशक्रस्यपुरतःस्थितौ ३ आवयोरुभयोर्मध्येयः श्रेष्ठोगीतवाद्ययोः ॥ तंवदस्वसुरश्रेष्ठ ज्ञात्वा गीतस्यलक्षणम् ४ गन्धर्वयोर्वचःश्रुत्वा प्रत्युवाचशतक्रतुः ॥ युवयोर्गीतवाद्येषु विशेषोनोपलभ्यते ५ एकएवमुनिश्रेष्ठो देवलोनामनामतः ॥ युवयोःसंशयच्छेत्ता भविष्यतिनसंशयः ६ ततस्तुतौशक्रवचोनिशम्य प्रणम्यराजन्शिरसासुरोत्तमम् ॥ गतौसुहृष्टौजयकांक्षिणौतौ यत्राश्रमेतिष्ठतिसद्विजाग्र्यः ७ ततोदृष्ट्वामुनिश्रेष्ठं देवलंशंसितव्रतम् ॥ अभिवाद्यमहात्मानमूचतुः पार्श्वसंस्थितौ ८ शक्रेण प्रेषितौदेवत्वत्समीपेद्विजोत्तम ॥ एकस्यनौजयंदेहि यत्तेमनसिवर्त्तते ९ पृथक्च रन्तौगायन्तौ मधुरंमधुराक्षरम् ॥ नकिञ्चिद्वदतेवाक्यं मुनिर्मौनस्यधारणात् १० शृण्वन्नपिपदंतेषां किञ्चिद्वदतेमुनिः ॥ तदातौकुपितौतस्य देवलस्यमहात्मनः ११ ऊचतुस्तौतदावाक्यं गन्धर्वौकालनोदितौ ॥ मूढोऽयंनाभिजानाति निश्चयं गीतवाद्ययोः १२ निशम्यतद्वचस्तेषां गन्धर्वाणांमदान्वितम् ॥ क्रोधादुत्थायवि प्रेन्द्रइदंवचनमब्रवीत् १३ एषहूहूर्दुरात्मातु ग्राहस्त्वंयातुमूढधीः ॥ त्वमेवगजराजस्तु भवस्वगिरिगह्वरे १४ एवंशापंददौक्रुद्धो देवलःसुमहातपाः ॥ ततस्तौशापितौतेन देवलेनमहात्मना १५ प्रणम्यशिरसाविप्रंगन्धर्वाविदमूचतुः ॥ भूमंडलगतौह्यावां

प्रसादंकुरुसुव्रत १६ निश्चयंकुरुविप्रेंद्र येनशापाद्विमुच्यते ॥ ततस्तौपुरुतौदृष्ट्वा उभौशापभयार्दितौ १७ प्रत्युवाचमुनिश्रेष्ठो गंधर्व्वाणांभयापहम् ॥ मेरुपृष्ठेसरोरम्यं बहुवृक्षसमाकुलम् १८ नानापक्षिगणाढ्यश्चद्वितीयइवसागरः ॥ तस्मिन्सरो वरेरम्ये ग्राहोनित्यंभविष्यति १९ तृषार्त्तस्तत्रमातंगोगमिष्यतिनगोत्तमात् ॥ तयो र्मध्येमहद्युद्धं भविष्यतिसुदारुणम् २० ग्राहेणाकृष्यमाणस्तुगजःस्तोत्रंकरिष्यति॥ तदैवदेवदेवेशस्तुष्यतेनात्रसंशयः २१ ततोनारायणःप्रीतः शापात्त्वांमोचयिष्य ति ॥ इत्युक्त्वाऋषिणातेनवरेणैतौप्रमोदितौ २२ ग्राहत्वमगमत्सोऽथवधंप्राप्यदिवं गतः ॥ आपद्विमुक्तोयुगपद्गजोगन्धर्वएवच २३ गजोऽपिमुक्ततांयातःश्रीकृष्णे नविमोचितः ॥ तस्माच्छापाद्विनिर्मुक्तोगजोगंधर्वएवच २४ तौचस्वंस्वंवपुःप्राप्य प्रणिपत्यजनार्दनम् ॥ गजोगन्धर्वराजश्चपरांनिर्वृतिमागतौ २५ प्रीतिमान्पुण्डरी काक्षः शरणागतवत्सलः ॥ अभवद्देवदेवेशस्ताभ्यांचैवप्रपूजितः २६ भजंतंगज राजानमवदन्मधुसूदनः ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ योमांत्वांचसरश्चैव ग्राहस्यचविदा रणम् २७ गुल्मकीचकवेणूनां तथ्वशैलवरंतथा ॥ प्रभासंभास्करंगंगां नैमिषारण्य पुष्करम् २८ प्रयागंब्रह्मतीर्थंचदंडकारण्यमेवच ॥ येस्मरिष्यंतिमनुजाःप्रयताःस्थिर बुद्धयः २९ दुःस्वप्नोनश्यतेतेषां सुस्वप्नश्चभविष्यति ॥ अनिरुद्धंगजंग्राहं वासु देवंमहाद्युतिम् ३० संकर्षणंमहात्मानं प्रद्युम्नंचतथैवच ॥ मत्स्यंकूर्मंवराहंच वाम नंतार्क्ष्यमेवच ३१ नारसिंहंचनागेंद्रं सृष्टिप्रलयकारकम् ॥ विश्वरूपंहृषीकेशं गो विंदंमधुसूदनम् ३२ सहस्राक्षंचतुर्बाहुं मुरारिंगरुडध्वजम् ॥ त्रिदशैर्वंदितंदेवं दृ ढभक्तिमनुत्तमम् ३३ वैकुंठंदुष्टदमनं मुक्तिदंमधुसूदनम् ॥ एतानिप्रातरुत्थाय सं स्मरिष्यंतियेनराः ३४ सर्वपापैःप्रमुच्यंते विष्णुलोकमवाप्नुयुः ॥ श्रीभीष्मउवाच ॥ एवमुक्त्वामहाराज गजेंद्रंमधुसूदनः ३५ स्पर्शयामासहस्तेन गजंगंधर्वमेवच ॥ तौचस्पृष्टौततःसद्यो दिव्यमाल्यांबरावुभौ ३६ तमेवमनसाप्राप्य जग्मतुस्त्रिदशा लयम् ॥ ततोदिव्यवपुर्भूत्वा हस्तिराट्परमंपदम् ३७ गच्छतिस्ममहाबाहो नारा यणपरायणः ॥ ततोनारायणःश्रीमान् मोचयित्वागजोत्तमम् ३८ ऋषिभिःस्तूय मानोऽग्र्यैर्वेदगुह्यपराक्षरैः ॥ ततःसभगवान्विष्णुर्दुर्विज्ञेयगतिःप्रभुः ३९ शंखचक्र गदापाणिरन्तर्धानंसमाविशत् ॥ वैशम्पायनउवाच ॥ गजेन्द्रमोक्षणंश्रुत्वा कु न्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः ४० भ्रातृभिःसहितःसम्यग् ब्राह्मणैर्वेदपारगैः ॥ पूजयामासदे वेशं पार्श्वस्थंमधुसूदनम् ४१ विस्मयोत्फुल्लनयनः श्रुत्वानागस्यमोक्षणम् ॥ ऋ

षयश्चमहाभागाः सर्वेप्राञ्जलयःस्थिताः ४२ अजंवरेण्यंवरपद्मनाभं महाबलंवेदनिधिंसुरोत्तमम् ॥ तंत्वेदगुह्यं पुरुषंपुराणं ववंदिरेवेदविदांवरिष्ठम् ४३ एतत्पुण्यंमहाबाहो नराणांपुण्यकर्मणाम् ॥ दुःस्वप्नदर्शनंघोरं श्रुत्वापापैःप्रमुच्यते ४४ तस्मात्त्वंहि महाराज प्रपद्येशरणंहरिम् ॥ विमुक्तःसर्वपापेभ्यः प्राप्स्यसेपरमंपदम् ४५ यदामहाग्राहगृहीतकातरं सुपुष्पितेपद्मवनेमहाद्विपम् । विमोक्षयामासगजंजनार्दनो दुःस्वप्ननाशंचसुखोदयंसदा ४६ परंपराणांपरमंपवित्रं परेशमीशंसुरलोकनाथम् ॥ सुरासुरैरर्चितपादपद्मं सनातनंलोकगुरुंनमामि ४७ वरंगजस्मरणाद्विमुक्तिहेतुं पुरुषवरंस्तुतिदिव्यदेहगीतम् ॥ सततमपिपठंतियेतुतेषामभिहति मरणांतककिल्विषापहंस्यात् ४८ धर्मदृढःस्मृतिबद्धमूलोवेदस्कंधःपुराणशाखाढ्यः ॥ ऋतुकुसुमोमोक्षफलोमधुसूदनपादपोजयति ४९ नमोब्रह्मण्यदेवायगोब्राह्मणहिताय च ॥ जगद्धिताय कृष्णाय गोविंदायनमोनमः ५० आकाशात्पतितंतोयंयथागच्छतिसागरम् ॥ सर्वदेवनमस्कारः केशवंप्रतिगच्छति १५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेगजेन्द्रमोक्षणंशतोपरिपंचाशत्तमोऽध्यायः १५० ॥

एकसौपचासका अध्याय ॥

गजेन्द्रमोक्षकाअर्थ ॥

शतानीकने कहा कि हे सुन्दर व्रत शौनक मैंने आपके मुखसे देवताओं के भी देवता बड़े तेजस्वी बिष्णुजीकी सब बिभूतियोंको श्रवणकिया १ हे भगवन् जो आप प्रसन्न हैं और मैं अनुग्रहके योग्यहूं तो मैं आपसे मनुष्यों के दुःस्वप्न नाश करनेवाले स्तोत्रको सुना चाहताहूं २ हे महाभाग भार्गवजी स्वप्नों के मध्य में जो शुभाशुभ वृत्तान्त देखने में आते हैं और उनके गुण फलको देते हैं जो उसरीति का महापवित्र बज्रसे भी रक्षाकरनेवाला मनुष्यों का महाकल्याणकारी और दुःस्वप्नादिकों का नाश करनेवालाहो उसको आप कृपा करके बर्णन कीजिये ३ । ४ शौनक बोले कि हे महाराज जन्मेजय इसी प्रश्नको धर्म्म के पुत्र युधिष्ठिरने भी धर्मधारियों में श्रेष्ठ राजा भीष्मपितामह से पूछा था तब भीष्मजी ने कहा कि हे हृदय कमल में निवास करनेवाले तुमने सबको बिजय किया है संसारके कर्त्ता तुमको नमस्कारहै हे सबसे पूर्व्व प्रकट होनेवाले इंद्रियों के स्वामी महापुरुष तुमको नमस्कार है ५ । ६ उस आदिपुरुष स्वामी इन्द्ररूप अथवा

बहुत नाम रखनेवाले प्राचीन, सत्य, प्रणव, वेदरूप, व्यक्त, अव्यक्त, सनातन, सत्, असत्, विश्वरूप, सदैव रहनेवाले सदसत् से परे श्रेष्ठतमों से भी श्रेष्ठतम पुराणपुरुष न्यूनतासे रहित ७। ८ मंगलदाता, मंगलरूप, सर्वव्यापी, प्रधान, पापोंसे रहित, पवित्र, चराचर जगत् के गुरू, इन्द्रियों के स्वामी हरि को नमस्कार करके ९ श्रीव्यासजी के अत्यन्त पवित्र मतको कहूंगा जिसके पढ़ने और सुननेसे सब पातक नाश होते हैं १० पुरी रूप शरीरों में निवास करनेवाले परमेश्वर के समान न हुआहै और न होगा इन्हीं सत्य सत्य बचनों से सब अभीष्टों को सिद्ध करताहूं ११ उसको बहुतसे मंत्र और व्रतों से क्या प्रयोजनहै, ॐनमो नारायणाय, यह मंत्रही सब मनोरथोंका सिद्ध करनेवालाहै १२ गन्धवती माताने द्वीपके मध्यमें पराशर महर्षिसे जिस परम ज्ञानमान श्रेष्ठ बड़े कृपालु बुद्धिमान् पुत्रको उत्पन्न किया उस अज्ञानके अन्धकारों के नाश करने वाले ऋषिको नमस्कारहै १३ उस बड़े तेजस्वी भगवान् व्यासजी के अर्थ नमस्कारहै जिसकी कृपासे इस नारायणकी कथाको वर्णन करूंगा १४ उस राजऋषि जन्मेजयने इस प्रश्नको प्राचीन वृत्तान्तों के कहने में कुशल विराजमान वैशम्पायनजी से पूछा १५ जन्मेजयने प्रश्नकिया कि हे प्रशंसा करने के योग्य कौनसे जपके करनेसे मनुष्य पापों से छूटताहै और किसके जपको करके सुख को भोगताहै और कौनसी पवित्र करनेवाली दुःस्वप्नकी नाश करनेवाली कथा है उस सबको आप वर्णन कीजिये १६ वैशम्पायन बोले की पूर्व्वसमय में तेरे पितामह राजा युधिष्ठिरने इसी प्रश्न को व्रतधारियों में श्रेष्ठ भीष्मजी से पूछाथा वही मैं तुझसे कहताहूं १७ अर्थात् युधिष्ठिरने उस सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ महा ज्ञानी देवव्रत भीष्मजी के पास जाकर नम्रता पूर्व्वक यह प्रश्नकिया कि १८ हे भरतर्षभ नाश और भयके करनेवाले अशुभ स्वप्नोंको देखकर जागनेवाला सावधान मनुष्य कौनसे जपको जपै और किस देवताका स्मरण करे १९ प्रातःकाल उठकर मनुष्य कौनसे देवता को नमस्कार करे सदैव किसका ध्यान करे और सदैव प्रतिदिन किसका पूजन करना योग्यहै २० हे पितामह आपकी कृपा से मेरी बुद्धिमें जैसे एकता प्राप्त होय वही आप कहनेको योग्यहैं हे महाबक्ता उसको आप कृपाकरके मुझसे वर्णन कीजिये २१ भीष्मजी बोले हे महाबाहु राजा युधिष्ठिर मैं दुःस्वप्नके देखने के शान्ती कर्म्म को कहताहूं तुम चित्तसे सुनो कि

जिसका सुनना सावधान मनुष्यको सदैव योग्यहै २२ इस स्थानपर अपूर्बकर्मी श्रीकृष्णजी के इस प्राचीन इतिहास और गजेन्द्रमोक्ष को भी कहताहूं २३ सूर्य के समान प्रकाशमान सुमेरुका पुत्र गिरिराज श्रीमान् त्रिकूटाचलनाम पर्व्वत सब रत्नोंसे पूर्ण है २४ जो क्षीरसमुद के जलकी लहरों से धुलीहुई निर्मल स्वच्छ और पवित्र शिलाओं से युक्त पर्व्वत समुद्रसे निकलकर देव ऋषियों के समूहों से सेवितहै २५ वह अप्सराओं से युक्त महा शोभित झरनाओं से व्याप्त गन्धर्व किन्नर यक्ष सिद्ध चारण पन्नग २६ मृग सिंह और गजेन्द्रों से संयुक्त अंगहोकर अत्यन्त शोभायमानहै पुन्नाग, कर्णिकार, सुबिल्व, चूत, दिव्यपाटल, निंब, कदंब, चंदन, अगर, चंपक, शाल, ताल, तमाल और अर्जुन वृक्षों से २७।२८ बकुल, कुन्द, सरल, देवदारु और मन्दारके पुष्प और अन्य पारिजात आदि वृक्षों के फूलों से इसीप्रकार अन्य २ नाना प्रकारके वृक्षों से चारोंओरको अच्छेप्रकार से अलंकृत और नानाप्रकारकी धातुओंसे चिह्नित चारोंओरसे जलके सुन्दर सोतों समेत २६।३० अत्यन्त उत्तम तीन शिखरों से शोभित जिसमें सदैव मदोन्मत्त हाथी, सिंह, मृग, शाखामृग ३१ जीव जीवक चकोर और मोरों से शब्दायमान है उसके एक स्वर्णमयी शिखरको यह सूर्य्य सेवन करताहै (अर्थात् यह पर्वत सूक्ष्मरूप पृथ्वीपर स्वर्ग में है इस स्थूल पृथ्वीपर नहीं है) ३२ और नानाप्रकार के भवनों से युक्त दूसरे चांदी के शिखर को यह चन्द्रमा सेवन करताहै ३३ बज्र इन्द्र नीलमणि और वैडूर्य्यों के तेजों से आकाशको प्रकाशित करता पांडुवर्ण बादलके समान तुषारी पर्व्वत के तुल्य प्रकाशमानहै ३४ और नक्षत्र गणों से युक्त पद्मरागके समान वर्णवाला श्रेष्ठ सबसे बड़ा तीसरा शिखर ब्रह्माजीका निवास स्थान है इसलोक में जो कृतघ्नी निर्दयी नास्तिक और तपस्या से रहित मनुष्यहैं वह इस पर्व्वत को नहीं देखते हैं ३५ गोविन्दजीके पूजन और ध्यान से रहित जो मनुष्य हैं वहभी इस पर्व्वत को नहीं देखते हैं ३६ उस पर्व्वत के पृष्ठ भागमें सुवर्ण के कमल रखनेवाला एक सरोवरहै ३७ कारण्ड और राजहंस पक्षियों से शोभित मतवाले भौंरे चकोर और मोरों के शब्दों से शब्दायमान कमल उत्पल कल्हार और पुण्डरीक नाम कमलों से शोभायमान स्वर्ण के शतपत्र और कुमुदनाम पुष्पों से अलंकृत ३८।३६ मर्कतमणि के समान पद्म और स्वर्णमयी पुष्पों से और कीचक बांसोंकी लताओं के पुष्पों से चारों

ओरको व्याप्त ४० अत्यन्त अपूर्व बिचित्र शिखरों से शोभित वह स्थान सौयो-जन लम्बा दशयोजन चौड़ा ४१ और पांचयोजन का गम्भीर ऐसे प्रमाण का वह बड़ाभारी सरोवरहै हे राजा उस सरोवरका जलशीतल और मिष्टतासे स्वादु युक्तहोकर अमृतके समान है ४२ जैसा कि वह अनुपम सरोवर है वैसा पूर्व्व में कभी तीनोंलोकों में भी नहीं देखा वह सरोवर अत्यन्त स्वच्छ दिव्य और स्वर्ग के देवताओंको भी दुर्लभहै, और सरोवरके बिस्तारसे द्विगुणित और शरदकाल के आकाशकी समान निर्मलहै और जिसके कमलों को सिद्ध मुनिलोग देव-ताओं की भेंटों के निमित्त पूजित मानते हैं ४३ । ४४ उस सरोवरमें एक ग्राहथा जोकि दुर्बुद्धी कुरूप जलकेभीतर रहनेवाला महापराक्रमी गजेन्द्रों से भी अजेय था ४५ किसीसमयमें दांतों से उज्ज्वलमुख अपनी पत्नियोंसमेत एक पिपासासे युक्त वहां बड़ाभारी गजेन्द्रआया ४६ वह मदका झाड़नेवाला जलपीनेका आ-कांक्षी चलायमान पर्व्वत के समान अपने मद की सुगन्धि को फैलाताहुआ ऐरावतके समान बड़े शरीरवाला ४७ सुरमें के पर्व्वतके रूप मदसे चढ़ेहुये चला-यमान नेत्र तृषायुक्त जलकेपीने की इच्छासे उस सरोवरमें उतरा ४८ और उस के जलपान करनेकीही दशामें वह ग्राहभी आकर बर्त्तमानहुआ और वह क-मलवनके झुंडमें बर्त्तमान हाथी ४९ उन भयभीत शब्दोंकी करनेवाली अपनी हथिनियों के देखतेहुये उस डरावनीसूरत बड़ेपराक्रमी ग्राहकेपंजे में पकड़ागया ५० गुप्तरूपग्राह उसके पैरको कमलों के बनमें मुखमें दाबकर खैंचताथा और ग-जराज किनारेकी ओर खैंचताथा ५१ इसीप्रकार उन दोनों का दिव्य हजारवर्ष पर्य्यन्त बड़ाघोर संग्रामहुआ फिर वह बरुणकी फांसियों में पकड़ाहुआ गजराज चलनेकी गतिसे निरुपाय कियागया ५२ फिर बड़ीदृढ़ और भयकारी नागफां-सियोंमें बँधाहुआ बड़े पराक्रमको प्रकट करताहुआ महान् शब्दोंको करता ५३ भयकारी कर्म करनेवाले ग्राहके मुखमें बँधा वह गजराज उत्साहसे रहित होकर महापीड़ामान हुआ तबतो महाआपत्ति में पड़ेहुये गजराजने उससमय चित्तसे हरिको स्मरणकिया ५४ अर्थात् वह नारायणकाभक्त श्रीमान् गजराज सवआ-त्मासे उस देवताकी शरणमें प्राप्तहुआ ५५ एकाग्रचित्त इन्द्रियों के जीतनेवाले उस गजराजने जोकि अनेक जन्मों के अभ्याससे गरुड़ध्वजका भक्तथा इसीसे अत्यन्त पवित्रात्मासे ५६ देवताओंमें बड़ेदेवता केशवजीके सिवाय किसीअन्य

देवताका पूजन नहींकिया फिर आपत्तिसे मोक्षहोने के अभिलाषी उसगजराज ने अपनी सूंड़की नोकसे एक बहुत उत्तम सुबर्ण का कमललेकर चित्तसे ध्यान पूर्व्वक पूजनकरके उस देवता के स्तोत्रको पाठकिया जिसकी भुजादिशा स्वग मस्तक पृथ्वी चरण आकाश उदर और सूर्य चन्द्रमा यही दोनों नेत्रहैं और जो अनन्त विश्वतोमुख भूतात्मा मेघवर्ण शङ्ख चक्र गदाधारी हजार शुभनाम रखने वाला आदिदेव अजन्माप्रभु और दुष्टों को पीड़ा देनेवाला है ५७।६० गजेन्द्र बोला कि मूल प्रकृति के अर्थ नमस्कार नमस्कार किसी से विजय न होनेवाले महात्मा रक्षाके स्थान अनिच्छावान् देवताके अर्थ नमो नमो ६१ सबका आदि और सबकी उत्पत्ति का बीज कारण वेदरूप अथवा वेदसे जानने के योग्य वेदमार्ग में नियत अनन्त भवरूप अव्यक्तके अर्थ नमस्कार नमस्कार ६२ हृदयाकाश में गुप्तमायासे अप्रकट गुणरूप गुणधर्मी को नमस्कार अतर्क्य असंख्य और अत्यन्त अपार रूपके अर्थ नमस्कार नमस्कार ६३ सुशान्त निश्चय नाम यशस्वी के अर्थ नमस्कार २ सनातन पूर्व्व पुराण पुरुष के अर्थ नमस्कार ६४ जगत् प्रतिष्ठानामके अर्थ नमस्कार गोविंदजी के निमित्त नमस्कार २ देवताओं अधिदेवताके अर्थ नमस्कार ६५ पद्मनाभ और सांख्ययोगसे प्रकट होनेवाले के अर्थ नमस्कार २ विश्वेश शिवदेवता हरिके अर्थ नमस्कार २।६६ उस निर्गुण सगुण देवताके अर्थ नमस्कार देवताओं के स्वामी नारायण देवताके अर्थ नमस्कार ६७ सब जगत्के कारण बड़े पराक्रमी वामन नारायणके अर्थ नमस्कार उस श्री शार्ङ्गचक्र खड्ग और गदाधारी पुरुषोत्तमके निमित्त नमस्कार ६८ उस गुप्तवेदमें नियत महोदर अर्थात् विश्वको उदरमें रखनेवाले दैत्यसंहारी नृसिंह चतुर्भुज वरदाता अच्युत और ब्रह्मा रुद्र मुनि चारणों से स्तूयमान सर्वोत्तम श्रेष्ठ देवताके अर्थ नमस्कार २।६९ शेषके फणरूप आसन और शय्यापर प्रीतिमान् और दूध, गौ, सुवर्ण, तोता और नीले बादलके समान रंग पीताम्बरधारी मधुकैटभके नाश करनेवाले बिश्वरूप सुन्दर मुकुटधारी महा अविनाशी के अर्थ नमस्कार ७० नाभि में उत्पन्न हुये वरकमल पर विराजमान ब्रह्माजी से स्तुतिमान् क्षीरसागर में निवास करनेवाले नानाप्रकारके बिचित्र मुकुट और बाजूबन्दों से अलंकृत रजोगुण रहित बड़े श्रेष्ठ योगेश्वरके अर्थ नमस्कार ७१ भक्तों को प्रिय माननेवाले उत्तम तेजसे सुन्दर दर्शन और प्रफुल्लित कमलके समान

दीर्घायत नेत्रवाले देवराजके विघ्नों के शान्तिके अर्थ उपायों में वर्त्तमान अ-च्युत नारायणके अर्थ नमस्कार ७२ परलोकमें उत्तम स्थान नारायण कालपु-रुष ऋतुके कमलके सदृश विशालनेत्र रावणके नाश करने में उपाय करनेवाले रामचन्द्रके अर्थ नमस्कार बुद्धिके साक्षी श्रेष्ठ ज्ञानियों में प्रधान परमेश्वरके अर्थ नमस्कार ७३ कमलासन मणियों के कुंडलोंसे अलंकृत कंस और शिशुपालके मर्द्दन करनेवाले गोबर्द्धनरूप असुरों के नाशकर्त्ता दामोदर रजोगुण से रहित पुरुषोत्तमके अर्थ नमस्कार ७४ जो ब्रह्मादि सब देवताओं के लयका स्थानहै और सब संसारका एकस्वामी महत्रूप पीड़ाका दूर करनेवाला महावराह ना-रायणहै मैं उसको नमस्कार करताहूं ७५ उस उपाधिरहित अव्यक्त अचिन्त्यरूप उत्पत्तिके कारण आदिदेव नारायण प्रलयके अन्त में आप अकेलेही शेष र-हनेवाले पुराणपुरुष बासुदेवजी की शरण में प्राप्त होताहूं ७६ जिसको महर्षि लोग दृष्टिसे अगोचर अबिनाशी अनंत न्यूनता रहित ब्रह्मरूप सनातन कहते हैं उस पुराणपुरुष वासुदेव की शरणमें प्राप्त होताहूं ७७ मुनिलोग जिस जल-वर्त्ती पृथ्वीके वक्षस्थल को विदीर्ण करके उठानेवाले और लोकके भीतर वर्त्त-मान वेदरूप शरीरको कँपानेवाले महावराहजी की स्तुति करते हैं उस योगीश्वर सुन्दर विचित्र किरीटधारी जाननेके योग्य पूर्णब्रह्म प्रकृतिसेपरे क्षेत्रज्ञ परमात्मा प्रार्थना करनेकेयोग्य वासुदेव भगवान्की शरण लेताहूं ७८ किरीट केयूर वृद्धों के योग्य निष्क और उत्तममणियोंसे अलंकृत सर्बाङ्गमें पीतांबरधारी स्वर्णमयी चित्रों से सुचित्रित मालाधारी केशवजी की शरण लेताहूं ७९।८० कार्य्य और क्रियाओंका कारण अत्यन्त स्वर्णमयी भुजा नाभिमें उत्तम कमलधारी महाबली देवताओं के निवासस्थान देवताओं में श्रेष्ठ श्रीबासुदेवजी की शरणागत हो-ताहूं ८१ संसारकी उत्पत्ति कारण वेदज्ञों में श्रेष्ठ योगरूपके ज्ञाता सांख्य शास्त्र में उत्तम सूर्य्य चन्द्रमा और अग्निमें अपना प्रभाव नियत करनेवाले बुद्धिमान् अच्युतकी शरणमें प्राप्त होताहूं ८२ जिसको सर्वव्यापी अबिनाशी ब्रह्म कहते हैं और जिसके श्रवण करने से मृत्युके मुखसे छूटता है उस ईश्वर अविनाशी गुणोंसे युक्त सनातन लोकों के गुरूको नमस्कार करताहूं ८३ उन वराहजी को नमस्कार है जो पृथ्वीको लीला पूर्व्वकही ऊपरको उठाते हैं और जिसके खुरमें वर्त्तमान मेरुपर्वत खुरखुराताहै ८४ श्रीवत्स चिह्नसे चिह्नित बड़ा देवोंका देवगुह्य

अनुपम सूक्ष्म पवित्ररूप चेष्टासे रहित प्रधान और निर्भयता देनेवालेकी शरण होताहूं ८५ सब संगों से संन्यासियों की परमगति सब जीवों के कर्त्ता निर्गुण परमेश्वर की शरण प्राप्त करताहूं ८६ उस सबके उत्पत्तिस्थान गुणों के स्वामी अविनाशी परमपद शरणकेयोग्य शरण्यरूप भक्तवत्सल को भक्तिसे शरणागत होताहूं ८७ मैं उस त्रिविक्रम त्रिलोकेश सबके प्रपितामह योगात्मा महात्मा दुष्ट-संहारी नारायणकी शरणागत होताहूं ८८ उस आदिदेव अजन्मा सर्व्वव्यापी व्यक्ताव्यक्त सनातन पवित्र ब्राह्मणोंके प्यारे नारायणकी शरणलेताहूं ८९ हेमहा तेजस्वी तुझ कच्छपरूप देवताके अर्थ नमस्कारकरके मैं उस पवित्रोंसेभी पवित्र ईश्वरकी शरणको प्राप्तहोताहूं ९० उस एक लोकनाथसे परेसेपरे परमात्माके निमित्त नमस्कार और सहस्र शिरधारी के अर्थ नमस्कार २।९१ वेदमें पूर्ण जिसको देवऋषि सबसेबड़ा और सबसेपरे ब्रह्मादिक देवताओंका लयस्थान वर्णन करतेहैं ९२ हे भक्तोंको अभयता देनेवाले हृदय कमलमें वर्त्तमान आपको नमस्कार हे वेद ब्राह्मणों के पालक तुमको वारम्बार नमस्कार आपको मुझशरणागतकी रक्षाकरो ९३ इस संसारसागरमें तभीतक मुझको चिन्ता दुःखहोते हैं जब तक कि कमललोचन जनार्द्दनजीको स्मरण नहींकरताहूं ९४ भीष्मजीने कहा कि हे राजा वह चक्रगदाधारी नारायण उसगजराजकी भक्तिको विचारकर और सार्थक सफलस्तुतियों को सुनकर प्रसन्नहुये ९५ और प्रसन्नहोकर देवताओं में श्रेष्ठ श्रीविष्णुभगवान् गरुड़पर सवारहोकर आगये अर्थात् लोकोंके धारणकरने वाले ने उससरोवरपर अपनी वर्त्तमानताकरी९६और असंख्यात्मावाले श्रीमधुसूदन लक्ष्मीपतिजी ने ग्राहकेमुखमें फंसेहुयेगजराजको और उसग्राहको शीघ्रही ऊपरको उठाकर अपने सुदर्शन चक्रसे उस ग्राहके शिरको देहसे काटकर जुदा किया और अपने शरणागत गजराजको बंधनों से छुटाया हे राजा वह गन्धर्वों में श्रेष्ठ हूहूनाम गन्धर्व देवलऋषिके शापसे ग्राह होगयाथा इस दूसरी अपूर्व्व पवित्रतम कथाको भी सुनो ९७।९८।९९ युधिष्ठिर बोले हे पितामह उस हूहू नाम महात्मा गन्धर्वको शाप किसकारणसे हुआ उसको मैं ब्योरेसमेत सुनना चाहताहूं १०० भीष्मजी बोले कि वह गानविद्यामें प्रवीण दोनों हाहा हूहू नाम प्रसिद्ध गन्धर्व जिस हेतुसे उसमहात्मा देवलऋषिसे शापितहुये उसको चित्तसे सुनो १०१ हे राजा उर्वशी, मेनका, रम्भा और अन्य २ सुन्दर अप्सराओंके स-

मूह देवराज इन्द्रके सम्मुख नृत्यकररहे थे १०२ इसके अनन्तर उस राजसभा में इन्द्रके आगे नियतहोकर गानेवाले उनदोनों गन्धर्वोंने परस्पर में एकने दूसरेसे अपने को अधिक समझकर इन्द्रसे कहाकि हे देवताओंमें श्रेष्ठ आप गान लक्षणोंको जानकर हम दोनों के मध्यमें जो गानेबजाने में श्रेष्ठहोय उसको वर्णन करो १०३ । १०४ इन्द्रने उनदोनों गन्धर्वों के बचनों को सुनकर उत्तरदिया कि गानेबजाने में तुम दोनोंमें से किसीकी भी मुख्यता नहीं पाईजाती है १०५ और तुम दोनोंके इस संशयको मुनियों में श्रेष्ठ एकदेवल ऋषिही निस्सन्देह न्याय करके निवृत्तकरेंगे हे राजा इसके पीछे वह अत्यन्त प्रसन्न बिजयाभिलाषी दोनों गन्धर्व इन्द्रके बचनको सुनकर और उस उत्तम देवताको शिरसे प्रणाम करके वहां पहुंचे जहां पर कि वह श्रेष्ठ द्विजोत्तम देवलऋषि अपने आश्रममें नियत थे उनमुनियों में श्रेष्ठ महात्मा देवलऋषिको देखकर उनकेसमीप जाकर दोनोंने यह बचन कहा १०६ । १०७ । १०८ कि हे देवतारूप ब्राह्मणों में श्रेष्ठ हम दोनों आपके पास इन्द्रके भेजेहुये आये हैं हम दोनों में जिसको आप न्यायसे श्रेष्ठ समझें उसको विजयपत्र दीजिये १०९ मुनिने मौनता धारण करने के कारणसे उन पृथक् बिचरनेवाले मधुरभाषी और मधुरअक्षर युक्त शब्दोंके गानेवाले गंधर्वोंसे कुछ वचन नहीं कहा ११० अर्थात् उनके मधुर शब्दों को सुनकर मुनिने कुछ उत्तर नहीं दिया तब वह दोनों गंधर्व्व उस महात्मा देवलऋषिपर कोपयुक्त हुये १११ उससमय कालकी प्रेरणासे उन गन्धर्वोंने देवलऋषिसे यहबचन कहा कि यह मुनि अज्ञानहै और गानेबजाने के निश्चयको नहीं जानताहै ११२ ऋषिने उनगन्धर्वों के अहङ्कारसे भरेहुये बचनोंको सुनकर क्रोधसे उठकर यहबचन कहा कि ११३ कि यह अज्ञान दुरात्मा हूहूगन्धर्व ग्राहके शरीरको धारणकरे और हाहासे कहा कि तू पर्वतीबनमें गजराजहो ११४ इसरीति उसकोपयुक्त महातेजस्वी देवलजी ने शापदिया तबतो उस महात्मादेवलऋषिके शापको सुनकर उन दोनोंने देवलऋषिको शिरसे दंडवत् करके यहवचन कहा कि हे सुन्दर व्रतवाले ऋषि आप भूमंडलमें बर्त्तमानहोकर हम लोगोंपर कृपाकरो ११५ । ११६ हे ऋषि उस बातकाभी निश्चयकरो कि किसके द्वारा शापसे निवृत्तहों इसके अनन्तर भयसे पीड़ित उनदोनों पुरुषोंको देखकर ११७ उसश्रेष्ठ मुनिने उनदोनोंसे भयका करनेवाला यह वचनकहा कि मेरु पर्वतकी पृष्ठपर क्रीड़ाके योग्य सघन वृक्षों

से व्याप्त एक सरोवरहै ११८ वह अनेक पक्षियों के समूहों से युक्त दूसरे समुद्रकी समान है उस सुन्दर समुद्ररूप सरोवरमें तू ग्राहरूप होगा ११६ किसी समय यह गजराज बनाहुआ तृषासे पीड़ित होकर पर्व्वत से उतरकर उस सरोवर में जल पीनेको आवेगा तब तुमदोनों का महाभयकारी द्वन्द्व युद्धहोगा १२० उससमय ग्राहसे खिंचाहुआ गजराज परमेश्वरकी स्तुतिकरेगा तभी तेरे स्वरोंका ईश्वर प्रसन्नहोगा १२१ उसी स्तुतिसे प्रसन्नहोकर नारायण तुमको शापसे मुक्तकरेंगे ऋषि के इसप्रकार के वरदेनेसे यह दोनों बहुत प्रसन्नहुये १२२ ग्राहरूप गन्धर्व ने अपने मरण को पाकर स्वर्ग प्राप्तकिया और गजरूप गंधर्व उसीसमय आपत्तिसे निवृत्त हुआ १२३ और श्रीकृष्णजी के द्वारा उस आपत्ति छुटेहुये गजराजने भी काल पाकर मुक्तिकोपाया और शापसे ग्राहरूप गंधर्व भी छूटा १२४ फिर उनदोनों गंधर्व राजोंने अपने २ शरीर को पाकर दुष्टसंहारी श्रीकृष्णजी को दण्डवत् करके बड़े आनन्द को पाया १२५ हृदय कमलमें नियत शरणागतों के प्यारे देवेन्द्रोंके भी ईश्वर विष्णुजी प्रसन्न होकर उन दोनों से पूजितहुये १२६ मधुसूदनजी ने उस प्रार्थना करनेवाले गजराजसे यह वचन कहा कि जो पुरुष मुझको तुझको और सरोवरके ग्राहके मारने का वृत्तान्त सुनेंगे १२७ और कीचक वेणुओं के गुल्मों सहित अनेक प्रकारके नानावृक्षों से पूर्ण उस पर्व्वत प्रभासक्षेत्र सूर्य्य गङ्गा नैमिषारण्य पुष्कर १२८ प्रयाग ब्रह्मतीर्थ और दण्डक वनको जो सावधान और स्थिर बुद्धी मनुष्य स्मरण करेंगे १२६ उनका दुःस्वप्न नाशको प्राप्तहोगा और सदैव उत्तम स्वप्नहोंगे, अनिरुद्ध, गजराज, ग्राह, बड़े तेजस्वी वासुदेव १३० महात्मा संकर्षण, प्रद्युम्न, मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, गरुड़ १३१ नृसिंहरूप, नागेन्द्र उत्पत्ति प्रलय करनेवाले विश्वरूप इन्द्रियों के स्वामी गोविन्द मधुसूदन १३२ सहस्राक्ष चतुर्भुज मुरारी गरुडध्वज जो कि तीन दशा रखनेवाले जीवात्मासे भी उत्तम स्तुति योग्य प्रकाशमानहैं जिसकी भक्तिदृढ़ है और जिससे उत्तम और परे कोई नहीं है १३३ वह बैकुण्ठ दुष्टदमन अपराधियों का दण्डदेनेवाला और मुक्तिका देनेवाला मधुसूदनहै जो मनुष्य प्रातःकाल के समय उठकर इसको स्मरण करेंगे १३४ वह सब पापों से मुक्तहोकर स्वर्गको प्राप्तकरेंगे भीष्मजी बोले हे राजा मधुसूदनजी ने इसरीतिसे उस गजेन्द्रको कहकर १३५ उस गजरूप गंधर्व को हाथसे स्पर्श किया इसकेपीछे वह दोनोंस्पर्श कियेहुये गन्धर्व दिव्य शरीरों

को धारणकर दिव्यमाला और वस्त्रधारी होके उसी ईश्वर को ध्यान करतेहुये स्वर्गको गये अर्थात् नारायण में प्रवृत्त चित्त वह गजराज दिव्य शरीरवाला होकर परमपदको प्राप्तहुआ हे महाबाहो युधिष्ठिर इसके अनन्तर श्रीमान् नारायणजी उसगजराजको आपत्तिसे छुटाकर १३६। १३८ वेदोक्तगुह्य अक्षरवाली ऋचाओं के द्वारा ऋषियों से स्तूयमान होतेही अन्तर्द्धान होगये वैशम्पायन बोले कि इसरीतिसे कुन्तीनन्दन धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर ने गजेन्द्र मोक्षको सुनकर १३६। १४० सब भाई और वेदज्ञ ब्राह्मणों समेत अपने समीप वर्त्तमान देवेश्वर मधुसूदनजी को अच्छी रीतिसे पूजन किया १४१ इस गजेन्द्रमोक्ष को सुनकर आश्चर्य्ययुक्त नेत्रोंसेयुक्त युधिष्ठिर और सब महाभाग ऋषिलोग हाथ जोड़कर नियतहुये १४२ और प्रार्थना करने के योग्य उस अजन्मा नाभिमें उत्तम कमल धारण करनेवाले महाबली वेदकेभंडार देवताओं के शिरोमणि वेदके आभ्यन्तर के ज्ञाता और श्रेष्ठ उस पुराणपुरुष को प्रणामकिया १४३ हेमहाबाहु पवित्रकर्मी मनुष्यों का यह पवित्र जपहै जो कोई दुःस्वप्न महाभयकारी है वह भी इसके सुनने से शुभकारी होजाताहै १४४ हे महाराज इसीहेतुसे तुम हरिकी शरणागत होकर सब पापोंसे शुद्धता पूर्व्वक परमपदको पावोगे १४५ जब कि दुष्टसंहारी विष्णुजीने अच्छे प्रफुल्लित कमलों के बनमें महाग्राहके आधीन बंधनमें बंधेहुये भयभीत गजराजको बंधनरूपी आपत्तिसे छुटाया इसी से इसके पाठसे दुःस्वप्नादिकों का नाश होकर सुखपूर्व्वक परमपदकी प्राप्ति होती है १४६ उस परेसे परे अत्यन्त पवित्र महेश्वरों के भी ईश्वर देवलोकके स्वामी देवता और असुरों से पूजित चरण कमलवाले सनातन लोकगुरू को नमस्कार करताहूं १४७ गजराजने जिसके द्वारा स्मरणकिया उस हेतुसे तो मुक्तिकारणहै और पुरुषोत्तमकी स्तुतिकरी इसकारण दिव्यशरीरका गीत जो यह स्तोत्रहै उसको जो पुरुष सदैव पाठकरते हैं वह पाठ उनके रोग और कुसमय की मृत्युका दूरकरनेवाला होकर हितकारी होताहै १४८ जो धर्म्म से दृढ़है और जिसका मूल धर्म्मशास्त्रसे बंधा हुआ है वेद जिसकी शाखाहैं और पुराणरूपी शाखाओं से भी युक्त है जिसमें ऋतुफूल और मोक्षफलहै वह विष्णुरूपी वृक्ष विजयकारी है १४६ उन वेदरक्षक के निमित्त नमस्कार गौ ब्राह्मण और जगत्के हितकारी कृष्ण गोविन्द देवता के अर्थ वारम्वार नमस्कारहै १५० जैसे कि आकाशसे गिराहुआ जल सागर में

जाताहै उसीप्रकार सब देवताओंको कियाहुआ नमस्कार भी केशवजीको प्राप्त होताहै अर्थात् सब देवता उसीका रूपहैं १५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेशान्तिपर्व्वणिदानधर्मे गजेन्द्रमोक्षणंनामशतोपरिपंचाशत्तमोऽध्यायः

अथसावित्रीस्तोत्र प्रारम्भः ॥

युधिष्ठिरउवाच ॥ पितामहमहाप्राज्ञ सर्व्वशास्त्रविशारद ॥ किंजप्यंजपतोनित्यं भवेद्धर्मफलंमहत् १ प्रस्थानेवाप्रवेशेवा प्रवृत्तेवापिकर्मणि ॥ दैवेवाश्राद्धकालेवा किंजप्यंकर्मसाधनम् २ शांतिकंपौष्टिकंरक्षा शत्रुघ्नंभयनाशनम् ॥ जप्यंयद्ब्रह्मसमितं तद्भवान्वक्तुमर्हति ३ भीष्मउवाच ॥ व्यासप्रोक्तमिमंमंत्रंशृणुष्वैकमनानृप ॥ सावित्र्याविहितंदिव्यं सद्यःपापविमोचनम् ४ शृणुध्वंचविधिंकृत्स्नं प्रोच्यमानंमयानघ ॥ यंश्रुत्वापांडवश्रेष्ठसर्वपापैःप्रमुच्यते ५ रात्रावहनिधर्मज्ञ जपन्पापैर्नलिप्यते ॥ तत्तेऽहंसंप्रवक्ष्यामि शृणुष्वैकमनानृप ६ आयुष्मान्भवते चैवयंश्रुत्वापार्थिवात्मज ॥ पुरुषस्तुसुसिद्धार्थः प्रेत्यचेहचमोदते ७ समेतंसततंराजन् पुराराजर्षिसत्तमैः ॥ क्षत्रधर्मपरैर्नित्यंसत्यव्रतपरायणैः ८ इदमाह्निकमव्यग्रं कुर्वद्भिर्नियतैःसदा ॥ नृपैर्भरतशार्दूलप्राप्यतेश्रीरनुत्तमा ९ नमोवसिष्ठायमहाव्रतायपराशरंवेदनिधिंप्रणम्य ॥ नमोस्त्वनंतायमहोरगाय नमोस्तुसिद्धेभ्यइहाक्षयेभ्यः १० नमोस्त्वृषिभ्यःपरमंपरेषां देवेषुदेवंवरदंवराणाम् ॥ सहस्रशीर्षायनमःशिवाय सहस्रनाम्नेचजनार्दनाय ११ अजैकपादहिर्बुध्न्यःपिनाकीचापराजितः ॥ ऋतश्चपितृरूपश्चत्र्यंबकश्चमहेश्वरः १२ वृषाकपिश्चशंभुश्चहवनोऽथेश्वरस्तथा ॥ एकादशैतेप्रथिता रुद्रास्त्रिभुवनेश्वराः १३ शतमेतत्समाम्नातं शतरुद्रेमहात्मनाम् ॥ अंशोभगश्च मित्रश्चवरुणश्चजलेश्वरः १४ तथाधातार्यमाचैव जयंतोभास्करस्तथा ॥ त्वष्टा पूषातथैवेंद्रो द्वादशोविष्णुरुच्यते १५ इत्येतेद्वादशादित्याःकाश्यपेयाइतिश्रुतिः ॥ धरोध्रुवश्चसोमश्चसावित्रोथानिलोनलः १६ प्रत्यूषश्चप्रभासश्चवसवोष्टौप्रकीर्त्तिताः ॥ नासत्यश्चापिदस्रश्च स्मृतौद्वावश्विनावपि १७ मार्त्तंडस्यात्मजावेतौसंज्ञानासाविनिर्गतौ ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामि लोकानांकर्मसाक्षिणः १८ अपियज्ञस्यवेत्तारो दत्तस्यसुकृतस्यच ॥ अदृश्याःसर्वभूतेषु पश्यंतित्रिदशेश्वराः १९ शुभाशुभानिसर्वाणि मृत्युःकालश्चसर्वशः ॥ विश्वेदेवाःपितृगणा मूर्त्तिमंतस्तपोधनाः २० मुनयश्चैवसिद्धाश्च तपोमोक्षपरायणाः ॥ शुचिस्मिताःकीर्त्तयतांप्रयच्छंतिशुभंनृणाम् २१ प्रजापतिकृतानेतान् लोकान्दिव्येनतेजसा ॥ वसंतिसर्वलोकेषु प्रयताःसर्व्व

कर्म्मसु २२ प्राणानामीश्वरानेतान् कीर्त्तयन्प्रयतोनरः ॥ धर्मार्थकामैर्विपुलैर्युज्य तेसहनित्यशः २३ लोकांश्चलभते पुण्यान् विश्वेश्वरकृताञ्छुभान् ॥ एतेदेवास्त्रय स्त्रिंशत्सर्व्वभूतगणेश्वराः २४ नन्दीश्वरोमहाकायोग्रामणीर्वृषभध्वजः ॥ ईश्वराः सर्वलोकानां गणेश्वरविनायकाः ॥ सौम्यारौद्रगणाश्चैव योगभूतगणास्तथा २५ ज्योतींषिसरितोव्योम सुपर्णःपन्नगेश्वरः ॥ पृथिव्यांतपसासिद्धाः स्थावराश्चचरा चराः २६ हिमवान्गिरयःसर्वे चत्वारश्चमहार्णवाः ॥ भवस्यानुचराश्चैव हरतुल्य पराक्रमाः २७ विष्णुर्देवोऽथजिष्णुश्चस्कंदश्चांबिकयासह ॥ कीर्त्तयन्प्रयतःसर्वा न् सर्वपापैःप्रमुच्यते २८ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि मानवानृषिसत्तमान् ॥ यवक्रीतश्चरै भ्यश्च अर्वावसुपरावसू २९ औशीजश्चैवकक्षीवान् चलश्चांगिरसःसुतः ॥ ऋषि र्मेधातिथिःपुत्रः कण्वोबर्हिषदस्तथा ३० ब्रह्मतेजोमयाःसर्वे कीर्त्तितालोकभाव नाः ॥ लभंतेहिशुभंसर्वे रुद्रानलवसुप्रभाः ३१ भुविकृत्वाशुभंकर्म मोदंतेदिविदे वताः ॥ महेन्द्रगुरवःसप्त प्राचींवैदिशमाश्रिताः ३२ प्रयतःकीर्त्तयेदेतान् शक्रलो केमहीयते ॥ उन्मुचुःप्रमुचुश्चैव स्वस्त्यात्रेयश्चवीर्यवान् ३३ दृढव्यश्चोर्ध्वबाहुश्च तृणसोमांगिरस्तथा ॥ मित्रावरुणयोःपुत्रस्तथागस्त्यःप्रतापवान् ३४ धर्मराजर्त्वि जःसप्त दक्षिणांदिशमाश्रिताः ॥ दृढेयुश्चऋतेयुश्च परिव्याधश्चकीर्तिमान् ३५ एकतश्चद्वितश्चैव त्रितश्चादित्यसन्निभाः ॥ अत्रेःपुत्रश्चधर्मात्मा ऋषिःसारस्वत स्तथा ३६ वरुणस्यर्त्विजःसप्त पश्चिमांदिशमाश्रिताः ॥ अत्रिर्वसिष्ठोभगवान् क- श्यपश्चमहानृषिः ३७ गौतमश्चभरद्वाजो विश्वामित्रोऽथकौशिकः ॥ ऋचीकतन यश्चोग्रो जदमग्निःप्रतापवान् ३८ धनेश्वरस्यगुरवःसप्तैतेउत्तराश्रिताः ॥ अपरेमु नयःसप्त दिक्षुसर्वास्वधिष्ठिताः ३९ कीर्त्तिस्वस्तिकरानॄणांकीर्त्तितालोकभावनाः ॥ धर्मःकामश्चकालश्च वसुर्वासुकिरेवच ४० अनंतःकपिलश्चैव सप्तैतेधरणीधराः ॥ रामोव्यासस्तथाद्रौणिरश्वत्थामाचलोमशः ४१ इत्येतेमुनयोदिव्या एकैकःसप्त सप्तधा ॥ शांतिस्वस्तिकरालोके दिशांपालाःप्रकीर्त्तिताः ४२ यस्यांयस्यांदिशिह्येते तन्मुखःशरणंव्रजेत् ॥ स्रष्टारःसर्वभूतानां कीर्त्तितालोकपावनाः ४३ संवर्तोमेरुसा वर्णो मार्कण्डेयश्चधार्मिकः ॥ सांख्ययोगोनारदश्च दुर्वासाश्चमहानृषिः ४४ अत्य न्ततपसोदांता स्त्रिषुलोकेषुविश्रुताः ॥ अपरेरुद्रसंकाशाः कीर्त्तिताब्रह्मलौकिकाः ४५ अपुत्रोलभतेपुत्रं दरिद्रोलभतेधनम् ॥ तथाधर्मार्थकामेषु सिद्धिंचलभतेनरः ४६ पृथुंवैन्यंनृपवरं पृथ्वीयस्याभवत्सुता ॥ प्रजापतिंसार्वभौमं कीर्त्तयेद्वसुधा

धिपम् ४७ आदित्यवंशप्रभवं महेन्द्रसमविक्रमम् ॥ पुरूरवसमैलंच त्रिषुलोकेषुवि श्रुतम् ४८ बुधस्यदयितंपुत्रं कीर्त्तयेद्वसुधाधिपम् ॥ त्रिलोकविश्रुतंवीरं भरतंच प्रकीर्त्तयेत् ४९ गवामयेनयज्ञेन येनेष्टंवैकृतेयुगे ॥ इतिदेवंमहादेवं कीर्त्तयेत्परम द्युतिम् ५० विश्वजित्तपसोपेतं लक्षण्यंलोकमंगलम् ॥ तथाश्वेतंचराजर्षिंकीर्त्तये त्परमद्युतिम् ५१ सगरस्यात्मजायेन प्लावितास्तारितास्तथा ॥ हुताशनसमाने तान्महारूपान्महौजसः ५२ उग्रकायान्महासत्वान् कीर्त्तयेत्कीर्त्तिवर्द्धनान् ॥ देवानृषिगणांश्चैव नृपांश्चजगतीश्वरान् ५३ सांख्यंयोगंचपरमं हव्यंकव्यंतथैवच ॥ कीर्त्तितंपरमंब्रह्म सर्वश्रुतिपरायणम् ५४ मंगल्यंसर्वभूतानां पवित्रंबहुकीर्त्तितम् ॥ व्याधिप्रशमनंश्रेष्ठं पौष्टिकंसर्वकर्मणाम् ५५ प्रयतःकीर्त्तयेच्चैतान् कल्यंसायंचभा- रत ॥ एतेवैपांतिवर्षंति भांतिवांतिसृजंतिच ५६ एतेविनायकाःश्रेष्ठा दक्षाःक्षांता जितेन्द्रियाः ॥ नराणामशुभंसर्वं व्यपोहंतिप्रकीर्त्तिताः ५७ साक्षिभूतामहात्मानः पापस्यसुकृतस्यच ॥ एतान्वैकल्यमुत्थाय कीर्त्तयन्शुभमश्नुते ५८ नाग्निचौर भयंतस्य नमार्गप्रतिरोधनम् ॥ एतान्कीर्त्तयतांनित्यं दुःस्वप्नोनश्यतेनृणाम् ५९ मुच्यतेसर्वपापेभ्यः स्वस्तिमांश्चगृहंव्रजेत् ॥ दीक्षाकालेषुसर्वेषुयःपठेन्नियतोद्विजः ६० न्यायवानात्मनिरतः क्षांतोदांतोनसूयकः ॥ रोगार्तोव्याधियुक्तोवा पठन्पापा त्प्रमुच्यते ६१ वास्तुमध्येतुपठतः कुलेस्वस्त्ययनंभवेत् ॥ क्षेत्रमध्येतुपठतः सर्वंसस्यं प्ररोहति ६२ गच्छतःक्षेममध्वानं ग्रामान्तरगतःपठन् ॥ आत्मनश्चसुतानांचदारा णांचधनस्यच ६३ वीजानामोषधीनांच रक्षामेतांप्रयोजयेत् ॥ एतान्संग्रामकालेतु पठतःक्षत्रियस्यतु ६४ व्रजंतिरिपवोनाशं क्षेमंचपरिवर्त्तते ॥ एतान्दैवेचपित्रेचप ठतःपुरुषस्यहि ६५ भुंजतेपितरःकव्यंहव्यंचत्रिदिवौकसः ॥ नव्याधिश्वापदभयं नद्विपान्नहितस्करात् ६६ कश्मलंलघुतांयाति पाप्मनाचप्रमुच्यते ॥ यानपात्रेच यानेच प्रवासेराजवेश्मनि ६७ परांसिद्धिमवाप्नोतिसावित्रींह्युत्तमांपठन् ॥ नचराज भयंतेषां नपिशाचान्नराक्षसात् ६८ नाग्न्यंबुपवनव्यालाद्भयंतस्योपजायते ॥ चतु र्णामपिवर्णानामाश्रमस्यविशेषतः ६९ करोतिसततंशांतिंसावित्रीमुत्तमांपठन् ॥ नाग्निर्दहतिकाष्ठानि सावित्रीयत्रपठ्यते ७० नतत्रबालोम्रियतेनचतिष्ठन्तिपन्न गाः ॥ नतेषांविद्यतेदुःखं गच्छन्तिपरमांगतिम् ७१ येशृण्वन्तिमहद्ब्रह्म सावि त्रीगुणकीर्त्तनम् ॥ गवांमध्येतुपठतो गावोस्यबहुवत्सलाः ७२ प्रस्थानेवाप्रवासे वासर्वावस्थांगतःपठेत् ॥ जपतांजुह्वतांचैव नित्यञ्चप्रयतात्मनाम् ७३ ऋषीणांपर

संजप्यं गुह्यमेतन्नराधिप ॥ याथातथ्येनसिद्धस्य इतिहासंपुरातनम् ७४ पराशर मतंदिव्यं शक्रायकथितंपुरा ॥ तदेतत्तेसमाख्यातं तथ्यंब्रह्मसनातनम् ७५ हृद यंसर्वभूतानां श्रुतिरेषासनातनी ॥ सोमादित्यान्वयाःसर्वे राघवाःकुरवस्तथा ७६ पठन्तिशुचयोनित्यं सावित्रींप्राणिनांगतिम् ॥ अभ्यासेनित्यदेवानां सप्तर्षीणां ध्रुवस्यच ७७ मोक्षणंसर्वकृच्छ्राणां मोचयत्यशुभात्सदा ७८ वृद्धैःकाश्यपगौ तमप्रभृतिभिर्भृग्वंगिरोत्र्यादिभिः शुक्रागस्त्यबृहस्पतिप्रभृतिभिर्ब्रह्मर्षिभिःसेवि तम् ॥ भारद्वाजमतंऋचीकतनयैः प्राप्तंवसिष्ठात्पुनः सावित्रीमधिगम्यशक्र वसुभिः कृत्स्नाजितादानवाः ७९ योगोशतंकनकशृङ्गमयंददाति विप्रायवेद विदुषेचबहुश्रुताय ॥ दिव्यांचभारतकथांकथयेच्चनित्यं तुल्यंफलंभवतितस्यचत स्यचैव ८० धर्म्मोविवर्द्धतिभृगोःपरिकीर्त्तनेन वीर्यंविवर्द्धतिवशिष्ठनमोनतेन ॥ संग्रामजिद्भवतिचैवरघुंनमस्यन्स्यादश्विनौचपरिकीर्त्तयतोनरोगः ८१ एषातेक थिताराजन् सावित्रीब्रह्मशाश्वती ॥ विवक्षुरसियच्चान्यत्तत्तेवदयामिभारत ८२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्म्मेसावित्रीव्रतोपाख्यानेसमाप्तम् ॥

एकसौइक्यावनका अध्याय ॥

अथ सावित्रीस्तोत्रव्याख्याप्रारम्भः ॥

युधिष्ठिर बोले हे बड़े ज्ञानी सर्वशास्त्रज्ञ पितामह किस जप करने के योग्य का जप करने से सदैव बड़ा धर्म्मवाला फल होताहै १ प्रस्थान के समय, प्रवेश के समय और प्रवृत्त करने के समय, देवकर्म्म, श्राद्धकर्म्म इत्यादि शुभ कर्म्मोंके समय कौनसाकर्म्म और साधनकरना मनुष्यको योग्यहै २ और जो जप शांति पुष्टि और रक्षाका करनेवाला शत्रुनाशक भयध्वंसक और वेदके समानहै उस कोभी आप कहने के योग्यहैं ३ भीष्मजी बोले कि हे राजा तुम चित्तको एकाग्र करके व्यासजी के कहेहुये इस मन्त्रको सुनो यह दिव्यमन्त्र पापों से रहित क- रनेवाला और गायत्री के जपके साथमें जपनेसे महाहितकारी है ४ हे निष्पाप पाण्डवों में श्रेष्ठ तुम मेरे कहेहुये सब मन्त्र और उसकी विधिको सुनो जिसको सुनकर मनुष्य सब पापों से निवृत्त होता है ५ हे धर्म्मज्ञ राजा युधिष्ठिर इसको अहर्निश जप करनेवाला मनुष्य कभी पापोंसे लिप्त नहीं होताहै मैं अब उसको कहताहूं तुम एकचित्त होकर श्रवण करो ६ जिसके सुनने से पुरुष पूर्णायुवाला

होके श्रेष्ठ अभीष्ट सिद्धियों को करके इसलोक और परलोकमें आनन्द करता है ७ हे राजा पूर्वसमय में क्षत्रियधर्म्म में प्रवृत्त सत्यव्रत बड़े२ साधू राजर्षियोंने इस मन्त्रको सदैव प्रतिदिन जपाहै ८ हे भरतर्षभ, इस जपको जो नियम करके प्रतिदिन एकाग्रचित्त होकर जपताहै अथवा जो नियमवान् राजा इसको जपताहै उसको सर्वोत्तम लक्ष्मी प्राप्त होती है ९ अब वेदों के उत्पत्तिस्थान पराशर जीको नमस्कार करके बड़े व्रतधारी वशिष्ठजी के अर्थ नमस्कार अनन्त नाम महाउरग के नाम नमस्कार और अविनाशी सिद्धों के अर्थ नमस्कार १० ऋषियोंकेअर्थ नमस्कार जो श्रेष्ठसे श्रेष्ठ देवदेव सबका बरदाताहै उसको नमस्कार सहस्रशिर और सहस्र नामवाले शिव और विष्णुके अर्थ नमस्कार ११ अजैकपाद, अहिर्बुध्न, अपराजित, पिनाकी, ऋतु, पितृरूप, त्र्यंबक, महेश्वर १२ वृषाकपि, शम्भु, हवन, ईश्वर, यह ग्यारहरुद्र तीनों भुवनों के ईश्वर कहेजाते हैं १३ शतरुद्री में महात्माओं के सौनाम वर्णन किये हैं अंश, भग, मित्र, वरुण, जलेश्वर १४ धाता, अर्य्यमा, जयन्त, भास्कर, त्वष्टा, पूषा, इन्द्र यह बारह विष्णु कहे जाते हैं श्रुति के अनुसार कश्यपजी के यह बारह पुत्र द्वादश सूर्य्य कहेजाते हैं धर, ध्रुव, सोम, सावित्र, अनिल, अनल १५।१६ प्रत्यूष, प्रभास यह आठ बसु वर्णन किये हैं, नासत्य और दस्र यह दोनों अश्विनीकुमार वर्णन किये हैं १७ अर्थात् संज्ञानाम स्त्रीसे यह दोनों सूर्य्यकेपुत्र कहेजाते हैं अब सब बातोंकेपीछे लोकों के कर्मसाक्षी वर्णन करूंगा १८ जो कि यज्ञ, दान और शुभकर्मोंके ज्ञाता लोगहैं वह देवेश्वर दृष्टिसेगुप्त सब जीवों में १९ उनके शुभाशुभ कर्मोंको देखते हैं, मृत्यु, काल, विश्वेदेवा, पितृगण, मूर्त्तिमान्, तपोधन, ऋषि २० तप और मोक्ष में नियत मुनि और सिद्धलोग और पवित्र मुसकानवाले देवता लोग कीर्त्तन करनेवाले मनुष्योंको कल्याण देते हैं २१ सबकर्म्मों में पवित्र और सब लोकोंमें नियमवान् यह देवता अपने दिव्य तेजसे उनलोकों में निवास करते हैं जो कि ब्रह्माजीसे उत्पन्न कियेगये हैं २२ जो नियमवान् मनुष्य इन प्राणोंके ईश्वर देवताओंका सदैव कीर्त्तन करताहै वह बड़े धर्म अर्थ और कामको प्राप्तकरताहै २३ और विश्वेश्वर के रचेहुये पवित्र और शुभ लोकोंको पाताहै यह तेंतीसों देवता सब जीवधारियों के ईश्वर हैं २४ बड़ा शरीरधारी नन्दीश्वर, ग्रामणी, वृषभध्वज, सब लोकों के ईश्वर, गणेश्वरों के विनायक, सौम्यगण, रुद्रगण, और योगभूत-

गण २५ तेजरूप शरीरधारी, नदियां, आकाश, सर्प्पोंका ईश्वर गरुड़, पृथ्वीपर तप से शुद्ध स्थावर, जङ्गम, जीव २६ हिमालय आदिक सब पर्व्वत, चारों महासमुद्र, शिवजीकेसमान पराक्रमी उनकेपीछे चलनेवाले २७ विष्णुदेवता, जिष्णु अर्थात् नरदेवता स्कन्दसमेत उमादेवी, नियमी मनुष्य, जो मनुष्य इन सबका कीर्त्तन करताहै वह सब पापों से मुक्तहोताहै २८ अब ऋषियों में बड़े साधु मनुष्यों को वर्णन करताहूं, यवक्रीत, रैभ्य, अर्वावसु, परावसु २९ औषीज, कक्षीवान्, अङ्गिराकापुत्र चल, कण्वकापुत्र मेधातिथि, ऋषि, बर्हिषद ३० यह सब सृष्टिके पितारूप ब्रह्मतेजसे पूर्ण ऋषिलोग मैंने वर्णनकिये यह सब रुद्र अग्निकेसमान महातेजस्वी सब के कल्याणकारी हैं ३१ सब देवतालोग इस पृथ्वीपर शुभकर्मों को करके स्वर्ग्ग में आनन्द करते हैं महेन्द्रसमेत यह सातोंगुरू पूर्व्व दिशा में वर्त्तमान हैं ३२ जो नियमवान् मनुष्य इनका कीर्त्तन करता है वह इन्द्रलोक में प्रतिष्ठाको पाताहै, उन्मुचु, प्रमुचु, और पराक्रमी स्वस्त्यात्रेय, दृढ़व्य, ऊर्ध्वबाहु, तृणसोम, अङ्गिरा, मित्रावरुणका पुत्र प्रतापवान् अगस्त्य, धर्मराजके यह सात ऋत्विज दक्षिण दिशामें वर्त्तमान हैं दृढ़ेयु, ऋतेयु, कीर्त्तिमान् परिव्याध, और सूर्य्य के समान महातेजस्वी एकत, द्वित, त्रित, और अत्रिकेपुत्र महाधर्मात्मा सारस्वतऋषि ३३।३६ वरुणके यह सात ऋत्विज पश्चिमदिशामें वर्त्तमानहोकर निवास करते हैं अत्रिभगवान्, बशिष्ठ, महर्षिकश्यप, गौतम, भरद्वाज, कुशिकके पुत्र बिश्वामित्र और ऋचीकके पुत्र महाप्रतापी उग्ररूप जमदग्नि ३७।३८ और कुवेरजी के यह आगे लिखेहुये सातगुरू उत्तरदिशामें वर्त्तमानहैं और अन्य सात मुनिलोग दिशा विदिशाओं में निवासकरते हैं ३९ इन सृष्टिके कारणरूप महात्माओंका कीर्त्तनकरना मनुष्योंकी कीर्त्ति आयु धन आदि अनेक कल्याणों का देनेवाला है अर्थात् यह सब लोग कल्याणकारी हैं और धर्म्म, काम, काल, बसु, बासुकि ४० अनन्त, कपिल यह सात पृथ्वीके धारणकरनेवाले हैं परशुराम, व्यास, द्रोणाचार्य्यके पुत्र अश्वत्थामा, लोमश ४१ यह दिव्य मुनिहैं इसलोकमें ये प्रत्येकमुनि सात २ प्रकारसे शान्ती और कल्याण करनेवाले दिग्पाल कहेगये हैं ४२ ये जिस दिशामें हैं उस ओरको मुख रखनेवाला शरणागतके समान रक्षाकिया जाताहै यह सबजीवोंके उत्पन्नकरनेवाले महात्मा जिनका कि कीर्त्तन कियाजाता है यह लोकों के पवित्र करनेवाले हैं ४३ साम्वर्त्त, मेरु, सावर्ण, धार्मिक, मार्कण्डेय,

सांख्ययोग,महर्षी दुर्वासा,यह महातेजस्वी और जितेंद्रिय ऋषिलोग तीनोंलोकों में प्रसिद्ध हैं और इनके विशेष अन्य२ ब्रह्मलोकनिवासी ऋषिभी रुद्रजीकेसमान तेजस्वी कहेगये हैं इनका कीर्त्तन करनेवाला जो सन्तानकी कामना करताहै तो सन्तानकी प्राप्ति होती है निर्धन धनकोपाताहै और धर्म्म, अर्थ, काममें सिद्धी को प्राप्तकरताहै ४४।०६ राजाओंमें श्रेष्ठ वेनकापुत्र राजापृथु जिसकीपुत्री पृथ्वी हुई और सम्पूर्ण पृथ्वी और पृथ्वी के सब राजाओं के स्वामी मनुजीका कीर्त्तन करे ४७ सूर्यवंशमें उत्पन्न महेन्द्रके समान पराक्रमी पुरूरवाके समान राजाऐल जिसका यश तीनोंलोकों में विख्यातहै ४८ और जो बुध का प्यारापुत्र है उस राजाका कीर्त्तन करे ४६ जिसने कि सतयुग में गोमेधयज्ञ से पूजनकिया उस बड़े तेजस्वी देवता महादेवको कीर्त्तन करे ५० इसीप्रकार संसारके विजय करने वाले तपोमूर्त्ति लक्षणोंसे युक्त लोक के मंगलकारी महातेजस्वी राजऋषि श्वेत का कीर्त्तनकरे ५१ जिसने राजासगरके भस्मरूप गङ्गामें डूबेहुये पुत्रोंका उद्धार किया ऐसे राजर्षि भगीरथ का कीर्त्तन करे इन अग्नि और सूर्य्य के समान महा तेजस्वी पराक्रमी कीर्त्ति के बढ़ानेवाले देवता ऋषि और महर्षियों के समूहोंका कीर्त्तन करे ५२। ५३ सांख्य परमयोग और हव्य कव्य को भी सब श्रुतियों के अर्थ और मंत्रोंसमेत वर्णनकिया ५४ सब जीवोंका मंगलकारी महापवित्र अशेष रोगोंका नाशक सब उत्तम कर्मोंका पूर्ण करनेवाला जपभी अच्छीरीतिसे वर्णन किया ५५ हे भरतवंशी नियमवान् मनुष्यको इन सबका कीर्त्तन सायंकाल और प्रातःकाल के समय करना योग्यहै यही महात्मा सबकी रक्षा करते हैं यही वर्षा करते हैं यही उदय होते हैं और यही उत्पत्ति और नाश के भी करनेवाले हैं ५६ यह सावधान शान्तवृत्ती इन्द्रियों के जीतनेवाले कीर्त्तन कियेहुये सब लोगों के पाप और आपत्ति आदिकोंको दूरकरते हैं ५७ यही महात्मा पाप पुण्यके साक्षी हैं जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर पवित्रता पूर्व्वक इन सबका कीर्त्तनकरताहै वह सबप्रकारके कल्याणों को पाता है ५८ और उसके अग्नि और चोरका भयभी नहीं होताहै उसको मार्ग में भी कभी रोक नहीं होती और जो इनका कीर्त्तन सदैव करते हैं उनके दुःस्वप्न निष्फल होते हैं ५६ जो जप दीक्षा आदि उत्तम कालों में नियम से इसका पाठकरता है वह सब पापों से छूटकर स्वर्गलोक को अवश्य जाताहै ६० जो न्यायवान् आत्मामें प्रीति करनेवाला जितेंद्रिय दूसरे के

गुणमें दोष न लगानेवाला शरीरके रोगसे खेदित मानसी व्यथासे युक्त मनुष्य इसका पाठकरता है वह देहसे नीरोग होकर मानसी व्यथासे निवृत्त होताहै ६१ जो वास्तुके मध्यमें इसका पाठ करताहै उसके कुलभरे में कल्याण होताहै और जो खेतके भीतर पाठ करताहै उसकी सबप्रकारकी खेती अच्छेप्रकारसे उपजती है ६२ धर्ममार्ग्ग में चलता अथवा अन्यग्राममें बर्त्तमानहोकर जो मनुष्य इसका पाठ करताहै वह अपने शरीर से नीरोगहोकर पुत्र स्त्री और धनको पाताहै ६३ बीज औषधीकी रक्षाकेसमय युद्धकेसमय इनके कीर्त्तन करनेवाले क्षत्रियके ६४ सब शत्रुनाशको प्राप्तहोते हैं और कुशलता भी प्राप्तहोती है यज्ञादिक देवकर्म और श्राद्धमें इनके कीर्त्तन करनेवाले मनुष्यके हव्य कव्योंको देवता और पितर भोजन करते हैं ६५ और हिंसक मांसभक्षी पशु हाथी चोर और रोगादिकों से भी उसको कभी भय नहीं होता ६६ उसका मोह न्यून होजाताहै पापों से निवृत्त होताहै रथआदिकी सवारी में चलताहुआ परदेश बासमें वा राजदरबार में ६७ जो इस श्रेष्ठ साबित्री का पाठ करता है वह परमसिद्धी को पाताहै और न उस मनुष्यको रोग पिशाच और राक्षसादिकों से भय होताहै ६८ अग्नि, जल, बायु और सर्पादिकोंसे भी निर्भय होताहै और न कभी चारोंवर्ण और आश्रमों से भय उत्पन्न होताहै ६९ यह महाउत्तम साबित्रीका पाठ श्रेष्ठ शान्तीको करता है जिस स्थान में इस साबित्री का पाठ होताहै वहां अग्निदेवता लकड़ीआदि किसी बस्तुको भी नहीं जलाता ७० बालक कभी नहीं मरता सर्प नियत नहीं होते और उस स्थानके जीव किसीप्रकारके भी दुःखसे खेदित न होकर परमगति को पाते हैं ७१ इस साबित्री के गुणों के कीर्त्तन करनेवाले इस महामंत्र साबित्री को धारण करते हैं गौओंके मध्यमें पाठ करनेवाले की गौवें गोशालामें वृद्धिता को पाती हैं ७२ इस पाठ को यात्रा में परदेश बास में और सब दशामें करना योग्यहै हे राजा सदैव जप होमादि करनेवाले सावधान चित्तवाले ७३ ऋषियों का यह महागुप्त श्रेष्ठ जपकरने के योग्य मन्त्रहै यह शुद्ध मन्त्रको प्राचीन इतिहास पराशर ऋषिका अङ्गीकृत पूर्व्व समयमें इन्द्रके सम्मुख बर्णन किया गया है यह जैसा सनातन गुप्त उत्तम मन्त्रथा उसीप्रकार तुमसे बर्णन किया ७४।७५ यह मंत्र सब जीवमात्रों का हृदयहै यह सनातन से सुनते आये हैं वह चंद्रबंशी सूर्य्यबंशी सब राघव और कौरवलोग ७६ पवित्र होकर इसजीवों की गतिरूप

साबित्री को सदैव पाठकरते हैं जो कि देवता सप्तर्षि और ध्रुवकेसमीप बर्त्तमान हैं ७७ यह जप सब आपत्तियों से छुटानेवाला और पापों का दूर करनेवाला है ७८ यही जप वृद्ध, काश्यप, गौतम, भृगु, अंगिरा, अत्रि आदि से और इन्द्र, अगस्त्य, बृहस्पति आदि ब्रह्मर्षियों से सेवित होकर भरद्वाजजी का अंगीकृतहै इसको ऋचीक के पुत्रों ने बशिष्ठजी से पाया इन्द्रने वसुओं समेत इस साबित्री को पाकर सबदैत्य और दानव बिजयकिये ७९ जो मनुष्य स्वर्णशृंगी उत्तमबर्ण की गौवें शास्त्रज्ञ ज्ञानी वेदपाठी ब्राह्मण को दान करताहै और जो पुरुष दिव्य महाभारतकी कथाका पाठकरताहै उन दोनोंका फल समान होताहै ८० भृगुजी का कीर्त्तन करने से धर्म्मकी अत्यन्त वृद्धिहोती है बशिष्ठजी को नमस्कार करने में झुकनेवाले मनुष्य के बलकी वृद्धिहोती है और जो मनुष्य राजर्षि रघुको नमस्कार करताहै वह युद्धमें विजयी होताहै अश्विनीकुमारके कीर्त्तनकरनेवाले मनुष्य को कभी रोग नहीं होताहै ८१ हे भरतबंशी राजायुधिष्ठिर यह सनातन वेदरूप साबित्री तेरे सम्मुख बर्णनकरी इसके विशेष जो अन्यबार्त्ता पूछना चाहताहै उसको भी सुनो मैं उसको भी कहूंगा ८२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेसावित्रीव्रतोपाख्यानेशतोपरिएक पंचाशत्तमोऽध्यायः १५१ ॥

इतिसावित्रीस्तोत्रव्याख्यासमाप्तम् ॥

एकसौबावनका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे पितामह कौन पूजन के योग्यहै कौन नमस्कार के योग्य है और किनलोगोंकेसाथ किसरीतिसे बर्त्ताव करे और कैसे मनुष्य में कौनसा आचार नष्ट नहीं होताहै १ भीष्मजी बोले कि ब्राह्मणों का अपमान और अप्रतिष्ठा देवताओंकीभी हानिकारी होती है हे युधिष्ठिर जो मनुष्य ब्राह्मणोंको नमस्कारपूर्व्वक प्रतिष्ठा करते हैं उनका नाश नहीं होताहै २ ब्राह्मणही सर्बथा पूजन और नमस्कार के योग्य हैं उनमें अपने पुत्रकी समान बर्त्ताव प्रीति का रखना उचितहै क्योंकि वह ज्ञानी ब्राह्मणही इस सब सृष्टिको धारण करते हैं ३ धनका त्यागकरके रमनेवाले भजन और धर्म्म में प्रवृत्त ब्राह्मण सबलोकों के धर्म्म के सेतुरूपहैं ४ वह यशस्वी सुन्दर ब्रतवाले उत्तम स्वरूप ब्राह्मण जीवोंके रक्षास्थान

सब लोकोंके प्रभु और शास्त्रोंको उपदेश करनेवाले हैं ५ जिनका तपही धन और बचन महापराक्रमी है वह सूक्ष्म धर्मों के ज्ञाताहैं ब्राह्मणही धर्मों के उत्पत्तिस्थान ६ अपने शुभकर्मों से धर्म के सेतुरूप धर्म के अभिलाषी होकर धर्म में नियत हैं जिनका आश्रय लेकर अंडजादि चारोंप्रकारकी सृष्टि जीवन करती है ७ सबके नियन्ता यज्ञप्राप्त करनेवाले सनातन ब्राह्मण सदैव बाप दादेके भारी धुरको उठाते हैं ८ और जो उस बाप दादे के धुरमें असह्य भूमिके धुरले चलनेवाले बैलों के समान पीड़ा नहीं पाते हैं वह देवता पितृ और अतिथियों के मुखरूप ब्राह्मण हव्य कव्य और प्रथम भोजनको खानेवाले हैं ९ वह भोजनही से तीनों लोकों को बड़े २ भय और उत्पातों से रक्षा करते हैं वह सब संसारके दीपक और नेत्र वालों के भी नेत्रहैं १० सब शिक्षा और श्रुतिरूप धन रखनेवाले सावधान मोक्ष-दर्शी सब जीवधारियों के गतिकेज्ञाता और अध्यात्मगतिका बिचार करनेवाले हैं ११ आदि मध्य अन्तकेज्ञाता संशयसेरहित सगुण निर्गुण ब्रह्मके अच्छेज्ञाता और मोक्षको प्राप्त करनेवाले हैं १२ जीवन्मुक्त पापरहित सुख दुःखादि योगोंसे पृथक् स्त्री आदि परिग्रह न रखनेवाले प्रतिष्ठा के योग्य वह ब्राह्मण सदैव ज्ञानी महात्माओं से पूजितहैं १३ वह चंदन वा कीच और भोजन वा अभोजन इन सब बातों में समान प्रकृतिवाले हैं जिनके शरीरके बस्त्र दुपट्टा रेशमी बस्त्र और मृगचर्म है १४ वह जितेन्द्रिय ब्राह्मण भोजन किये बिनाभी बहुत दिनतक स्व-स्थचित्त रहतेहुये वेदपाठ और जपकरने में अपने शरीरोंको शोषणकरते हैं १५ वह क्रोधयुक्तहोकर बिना देवताके देवता बनावें और देवताकोभी अदेवता बना सक्ते हैं दूसरेलोक और लोकपालोंकोभी उत्पन्न करसक्ते हैं १६ जिन महात्माओं के शापसे समुद्रभी पान करनेके योग्य नहीं है जिनके क्रोधकी अग्नि अबतक भी मंडूक बनमें शान्त नहीं होती है १७ जो देवताओंकेभी देवता कारणकेभी कारण और प्रमाणके भी प्रमाणहैं उनका कौनसा ज्ञानी मनुष्य अपमान कर-सक्ताहै १८ जिन लोगों में वृद्ध और बालक सब पूजनके योग्यहैं वह तप और बिद्याकी मुख्यतासे परस्परमें पूजन करते हैं १९ अज्ञानी ब्राह्मण भी देवता के समान बड़े पवित्रपात्रहैं जो ज्ञानी बुद्धिसे पूर्ण समुद्रकी समानहै वह बहुत बड़ा देवता है २० ब्राह्मण ज्ञानी होय वा अज्ञानी होय नम्रहोय अथवा अनम्र होय वहभी अग्निके समान बड़ा देवता है २१ तेजस्वी अग्नि देवता श्मशानमें भी

दूषित नहीं होताहै वही अग्निदेवता यज्ञमें विधिके अनुसार हव्यको लेताहुआ शोभा पाता है २२ ब्राह्मण यद्यपि अनहित कर्म्मों में भी प्रवृत्तहैं तौभी वह सब प्रकार से पूजनके योग्यहैं उसको भी श्रेष्ठ देवतामानों २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशतोपरिद्विपञ्चाशत्तमोऽध्यायः १५२ ॥

एकसौतिरपनका अध्याय ॥

युधिष्ठिरने पूछा कि हे बड़े बुद्धिमान् राजा भीष्मजी तुम ब्राह्मण पूजन के विषयमें ब्राह्मणके किस कर्म्मको वा फलको देखकर अथवा किस कर्म्मके उदय को मानकर उनको पूजतेहो १ भीष्मजी बोले हे भरतवंशी मैं इस स्थानपर इस प्राचीन इतिहास को भी कहताहूं जिसमें वायु देवता और राजा सहस्रबाहु का प्रश्नोत्तरहै २ कि माहिष्मतीपुरी में महापराक्रमी हजार भुजा रखनेवाला राजा सहस्रबाहु इस संपूर्ण पृथ्वीका स्वामीहुआ ३ उस सत्यपराक्रमी राजा सहस्रबाहु ने इस रत्नोंसे पूर्णसागराम्बरा पृथ्वीको उसके सबद्वीप उपद्वीपों समेत अपने आधीनकिया ४ उसने क्षत्रियधर्म्म नम्रता और शास्त्रज्ञानको मुख्यकरके किसीहेतु से अपना सब धन दत्तात्रेय मुनिको भेटकिया ५ अर्थात् सहस्रबाहु ने उसमुनि का सेवन और पूजन किया तब अत्यन्त प्रसन्न होकर उन दत्तात्रेयजी ने उस को तीन वर मांगनेकी आज्ञाकरी ६ तब ऋषिकी प्रसन्नता देखकर उस राजाने यह बचन कहा कि मैं घरमें तो दो भुजावालारहूं और सेनामें हजार भुजावाला होजाऊं ७ और सब सेनाके लोगों को मेरी हजार भुजा दीखें और तेजब्रत में पूर्ण होकर मैं अपने पराक्रम से सम्पूर्ण पृथ्वीको बिजयकरूं और उस पृथ्वीको पाकर मैं निरालस्य होके धर्म्म से पालन करूं हे बड़े साधू ब्राह्मण इन बरों के सिवाय मैं आपसे चौथा बरभी चाहताहूं ८।९ आप मेरे पोषणके निमित्त वह बर देनेको योग्यहैं अर्थात् यह बर चाहताहूं कि मुझ आपके रक्षा कियेहुये को अनुचित कर्म्म करने में सन्त महात्मा लोग शिक्षा करें १० राजाके इस बचन को सुनकर उन दत्तात्रेय ने कहा कि ऐसाही होय उस प्रतापी राजाको इसीरीतिसे चारोंबर प्राप्तहुये ११ इसके अनन्तर उसने अग्नि सूर्य्यके समान तेजस्वी रथपर सवार होकर मोहकी प्रबलता से यह बचन कहा कि मेरे समान धैर्य्य पराक्रम शुभकीर्त्ति शूरता सामर्थ्य और तेजमें कौनसा राजा होसक्ताहै अर्थात् कोई नहीं

होसक्ताहै उसके उस वचनके कहने के पीछे आकाशसे यह वाणी हुई १२। १३ कि हे अज्ञान तू क्षत्रिय से उत्तम ब्राह्मण को नहीं जानता है इस लोक में सव क्षत्रियलोग ब्राह्मणों के आज्ञावर्त्ती होते हैं १४ सहस्रवाहु ने कहा कि मैं प्रसन्न होकर जीव धारियोंको जीवदानदूं और क्रोधरूप होकर मन वाणी और कर्म्मसे नाशकरूं मुझसे उत्तम कोई ब्राह्मण नहीं है १५ जिसमें ब्राह्मण श्रेष्ठ समझाजाय यह पूर्व पक्षहै और जिसमें क्षत्रिय अधिक समझा जाय वह सिद्धान्तपक्ष है तुमने वह दोनों ब्राह्मण और क्षत्रिय प्रजाकी पालनताके कारणसे साथमें रहने वाले कहे उसमें मुख्यता दिखाई देती है १६ ब्राह्मणलोग क्षत्रियवंश में आश्रित हैं और क्षत्रियकाकुल ब्राह्मणोंका आश्रित नहीं है वेद और यज्ञरूप छलरखने वाले वेदपाठी ब्राह्मण पृथ्वीपर क्षत्रियोंसे अपनी जीविका करते हैं १७ प्रजापालन नाम धर्म क्षत्रियों में आश्रितहै क्षत्रियोंकेही कुलसे ब्राह्मणों की जीविकाहै ब्राह्मण क्षत्रियों से कैसे उत्तम होसक्ताहै १८ मैं सदैव उन वेदपाठी ब्राह्मणों को जोकि सव जीवधारियों में श्रेष्ठ भिक्षावृत्ती रखनेवाले और पवित्रात्माहैं अपनी आधीनतामें रखताहूं १६ इस सरस्वती कन्याने अर्थात् आकाशवाणी ने स्वर्गसे मिथ्यावचन कहाहै मैं इन अस्वतंत्र मृगचर्म्मधारी सव ब्राह्मणोंको विजय करूंगा २० तीनोंलोक में कोई मनुष्य अथवा देवताभी मुझको राज्य से भ्रष्ट नहीं करसक्ताहै इसी हेतुसे मैं ब्राह्मणसे बड़ाहूं २१ अब इसब्राह्मणके प्रधान माननेवाले लोकको क्षत्रिय प्रधान नाम करूंगा कोई पुरुष या देवता युद्धमें मेरे पराक्रमको नहीं सहसक्ताहै २२ सहस्रवाहुके इस वचनको सुनकर सरस्वती और राक्षसलोग भयभीतहुये तब आकाश और पृथ्वीके मध्यमें वर्त्तमान होकर वायुदेवताने उससे कहा २३ कि हे राजा तू इस अपने पापिष्ठ चित्तको त्यागकर और ब्राह्मणोंके अर्थ नमस्कारकर उनका अपराध करने से सम्पूर्ण सृष्टि में महा उपद्रव मचैगा २४ हे राजा वह ब्राह्मण बड़े पराक्रमी हैं तुमको अवश्य दण्डदेंगे और तुझ निरुत्साह को देशसे निकालदेंगे २५ राजाने उनसे कहा कि तुम कौनहो वायुने उत्तरदिया कि मैं देवताओंका दूत वायुहूं तेरी वृद्धिका करनेवाला वचन कहताहूं २६ सहस्रवाहुने कहा कि वड़ा आश्चर्य है कि आपने ब्राह्मणों में प्रीति दिखाई है जैसे पृथ्वीतत्त्वहै वैसेही प्रकारके ब्राह्मण को मुझसे कहो २७ अथवा तुम वायु जल अग्नि सूर्य्य और आकाशके भी समान उत्तम ब्राह्मणको वर्णनकरो २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशतोपरित्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः १५३॥

एकसौचौवनका अध्याय॥

वायुने कहा हे अल्पज्ञ मूर्ख अब तुम महात्मा ब्राह्मणों के थोड़े से गुणोंको सुनो हे राजा जिनको तुमने वर्णन कियाहै उनसे भी ब्राह्मण उत्तम हैं १ यह पृथ्वी राजा अंगकी स्पर्धा से अपने पृथ्वीरूप को त्यागकर गुप्त होगई थी तब कश्यप ब्राह्मणने उसको नियतकिया २ हे राजा पृथ्वी और स्वर्ग दोनों में ब्राह्मण सदैव अजेयहैं पूर्व्व समयमें आय अंगिराऋषि ने अपने तेजसे सम्पूर्ण जलको पानकिया ३ हे राजा बड़ाप्रतापी ऋषि उन जलोंको दूधके समान पीताहुआ भी तृप्तनहीं हुआ फिर बड़े जलके समूह से सब पृथ्वीको भरदिया ४ उस ऋषि के क्रोधरूप होनेपर मैंभी संसार को त्यागकर चलागया और बहुत कालतक अंगिराऋषि के भयसे अग्निहोत्र में नियतहुआ ५ अहल्याको चाहनेवाले भगवान् इन्द्रको गौतमऋषि ने शापही दिया और धर्म के कारण से जीवसे नहीं मारा ६ हे राजा यह मीठे जलका पूर्ण समुद्र भी ब्राह्मणोंकेही शाप से खारी कियागया ७ सुवर्ण के समान वर्णवाली निर्धूम ज्वाला रखनेवाला अग्नि भी इन्हीं गुणों से रहित होने के कारण क्रोधरूप अंगिराऋषि से शाप दियागया ८ राजासगर के पुत्रोंको भी भस्मरूप देखो जोकि समुद्र के समीप आये थे वह सुन्दर वर्णधारी कपिलमुनि करके शापदियेगये ९ हे राजा तुम ब्राह्मणों के समान नहींहो गर्भ में भी वर्त्तमान होनेवाले इन ब्राह्मणों को प्रभु देवता विष्णुजी नमस्कार करते हैं इससे तुम भी अपने कल्याणको समझो १० दण्डकनाम क्षत्रियों का बड़ा राज्य भी ब्राह्मणही से नाश कियागया अकेले और्वऋषि ने तालजंघानाम क्षत्रियों के बड़े कुलका नाशकिया ११ तुमने भी दत्तात्रेयऋषि की कृपासे बड़ी कठिनता से प्राप्त होनेवाले राज्य पराक्रम धर्म्म और शास्त्रके ज्ञानको पाया १२ हे सहस्रबाहु तुम सदैव अग्नि और ब्राह्मणको किसकारण से पूजतेहो वह सब संसार के हव्यको देवताओं के पास प्राप्त करनेवालाहै उसको तुम नहीं जानतेहो १३ अथवा सब सृष्टिके पोषण करनेवाले और जीवलोकको उत्पन्नकरनेवाले ब्राह्मणों में श्रेष्ठ ब्रह्माजीको जानताहुआ तू किस हेतु से भूलको करताहै वह ब्रह्माजी प्रभु प्रजापति अव्यक्त और अविनाशी हैं जिससे कि यह सब स्थावर जङ्गम संसार उत्पन्नहुआहै १४।१५ कोई मूर्ख कहते

हैं कि ब्रह्माजी अंडसे उत्पन्नहैं उस टूटनेवाले अण्डसे पर्व्वत दिशा जल पृथ्वी और स्वर्ग प्रकटहुये १६ अब यह जानना चाहिये कि यह तो अजन्मा है वह जन्म कैसे लेसक्ताहै उस अंडको आकाश कहते हैं उसी से ब्रह्माजी उत्पन्नहुये यह कब होसक्ताहै अर्थात् अज्ञान से चिदात्माका जन्म नहीं होसक्ताहै अंडसे उत्पन्न होना और प्रकारसे भी कहसक्ते हैं १७ जिस दशामें कि कुछभी आधार नहीं है उस निराधारतामें ब्रह्माजी कैसे होसक्ते हैं यहां यह सन्देह हुआ कि वह प्रजापति कौनहै उसका यह उत्तरहै कि सुषुप्ति के समान अव्याकृत आकाशसे जो अहंकार उत्पन्नहुआ उस उपाधि से युक्त अहंकाररूप कहागया वह व्यापक है क्योंकि जल चन्द्रमाआदि न्यायसे सब चैतन्यहैं अर्थात् उसीने आकाशादि सब तत्त्वोंको कल्पित किया इस रीतिकरके शास्त्र और अनुभव से जाननेवाला ब्राह्मण संसार का स्वामी है उसके साथ तेरीसमता ऐसे नहीं होसक्ती है जैसे कि समुद्र के साथ समुद्रकी तरंग की समता नहीं होसक्ती है १८ इसी हेतु से सर्प्प रज्जुके समान अंड नहींहै इस ब्रह्माण्ड की कल्पना करनेवाला ब्रह्मा ब्राह्मणहै यह वायु के वचन सुनकर वह राजा सहस्रबाहु मौनहुआ १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेवायुसहस्रबाहुसम्वादेशतोपरि चतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः १५४ ॥

एकसौपचपनका अध्याय ॥

वायु देवता बोले हे राजा पूर्व्वसमय में राजा अंग इस पृथ्वीको ब्राह्मणों के अर्थ दक्षिणा में देने के लिये अभिलाषी हुआ इसहेतुसे पृथ्वी शोचग्रस्तहुई कि यह उत्तम राजा सब जीवों की धारण करनेवाली मुझ ब्रह्माकी पुत्री पृथ्वी को पाकर किसरीति से ब्राह्मणों को देना चाहताहै १।२ इसी से मैं पृथ्वी के रूप को त्यागकरके ब्रह्मलोक को जाऊंगी और अपने देश समेत इस राजा का नाश होय यह कह पृथ्वीरूप शरीर से निकलकर चली ३ तब उसके पीछे सावधान कश्यपऋषि उस देखतीहुई चलनेवाली पृथ्वीको देखकर शीघ्रही अपने शरीर को त्यागकर उस निर्जीव पृथ्वी में प्रवेश करगये ४ इसके पीछे सब प्रकार से यज्ञ में दानदीहुई तृण औषधियों समेत वह पृथ्वी देवी अपने धर्म्म के बल से ब्रह्मलोक में जाकर निर्भयहुई ५ हे राजा संशय से रहित बड़े ब्रतकरनेवाले क-

श्यपऋषि इसीरीति से तीसहजार दिव्यवर्षतक पृथ्वीरूप में नियतहुये ६ इसके पीछे वह पृथ्वी ब्रह्मलोक से आकर कश्यपजी को नमस्कार करके उस महात्मा की पुत्रीहोकर कश्यपीनाम से विख्यातहुई ७ हे राजा यह कश्यपब्राह्मण ऐसा हुआ अब तुमभी कश्यपसे अधिक किसी उत्तम क्षत्रियको वर्णनकरो ८ राजा मौन होगया फिर बायुने कहा कि हे राजा अब अङ्गिराऋषि के कुल में उत्पन्न होनेवाले उतथ्यऋषि के माहात्म्यको सुनो ९ चन्द्रमाकी पुत्री भद्रानाम स्वरूप में अद्वितीयथी तब चन्द्रमाने उसके पति होने के योग्य उतथ्यऋषिको देखा १० बड़े नियमवाली उस सुन्दरमुखवाली यशस्विनी महाभाग भद्राने उतथ्यऋषिकी प्राप्तिकेलिये उग्रतपकिया ११ उस अत्रि के पुत्र चन्द्रमाने उतथ्यऋषिको बुलाकर उस यशस्विनी भद्रासे विवाह करदिया उस ऋषिनेभी उसको विधिके अनुसार ग्रहणकिया १२ परन्तु श्रीमान् वरुणदेवताने पूर्व्वही उसको चाहाथा इसी से उसने वनके आश्रममें आकर उस भद्राको यमुनाजी में हरणकिया १३ जलोंके स्वामी वरुणदेवता उसको हरणकरके उस अपनेपुरमें लेगये जोकि अत्यन्तअपूर्व्वरूप का छःलालह्रद रखनेवालाहै १४ उससे अधिक क्रीड़ा करने के योग्य कोई पुर उत्तम नहीं है उसके महलभी दिव्य अभीष्टवस्तुओं से व्याप्तहोकर उत्तम २ अप्सराओं से शोभायमानथे १५ हे राजा वहां राजावरुणने उस भद्राकेसाथ क्रीड़ाकरी इसके पीछे नारदजी ने आकर वरुण करके स्त्रीका हरण करलेजाना उतथ्य के आगे वर्णन किया १६ उतथ्य ने नारदजीसे उस सब वृत्तान्तको सुनकर नारदजीसे यह कहा कि तुम जाओ और वरुण से यह कठोर बचन कहो १७ कि मेरे वचन से मेरी स्त्रीको छोड़ो तुमने किसहेतु से उसको हरण कियाहै तुम लोकों के लोकपालहो कि लोकोंके नाशकर्त्ताहो १८ चन्द्रमाने मुझको भार्य्यादी अब तुमने उसको हरण किया उसके वचन के अनुसार नारदजी ने राजा वरुण से कहा कि तुम उतथ्यकी स्त्रीको छोड़ो १९ तुमने किस हेतुसे हरण किया है तब नारदके वचन सुनकर वरुण देवता ने उसको यह बचन कहा कि २० यह मेरी प्यारी भार्य्या है मैं इसके त्याग करने को उत्साह नहीं करसक्ताहूं फिर वरुण के वचनों को सुनकर नारदजी ने सब वृत्तान्त उतथ्यऋषि से आनकर कहा २१ हे महामुनि मुझको ग्रीवा पकड़कर वरुण देवताने पिटवाया है वह तेरी भार्य्या को नहीं देता है अब जो तुम को उचित करना होय सो करो २२ नारदजी के

बचन को सुनकर अङ्गिरावंशी उतथ्यऋषिने क्रोधसे ज्वलितरूप होकर अपनी तपस्याके तेजबलसे सम्पूर्ण जलको निश्चल करके पान करलिया २३ तब सब जलों के पीजानेपर अपने भाईबन्धु इष्टमित्रों समेत महाव्याकुलचित्त होकरभी उस बरुण देवताने उस भार्य्याको नहीं छोड़ा २४ इसके पीछे उस क्रोधरूप श्रेष्ठ उतथ्यनाम ब्राह्मणने देवी पृथ्वी से यह बचन कहा कि हे कल्याणिनि तू मुझ को उस स्थानको दिखलादे जहां कि छःलालह्रद वर्त्तमानहैं २५ तब पृथ्वीकी आज्ञा पाकर समुद्र उस स्थानसे हटगया जिस स्थानपर कि वह छःलालह्रद थे तब इस उत्तम ब्राह्मणने नदी से कहा २६ कि हे भीरु सरस्वती तुम गुप्त होकर मर्त्य देशोंमें जाओ हे शुभ जब तू इस देशको त्यागेगी तब यह देश अपवित्र होगा २७ तब उस भयकारी देशके शुष्क होजानेपर बरुण देवता ने भद्रानाम भार्य्या को लेकर उस उतथ्यऋषि के शरणागत होकर उनकी भार्य्या उनको देदीनी २८ हे राजा सहस्रबाहु उतथ्यऋषि उस भार्य्याको लेकर प्रसन्नहुये और सब संसारसमेत बरुणदेवताको दुःखसे छुड़ाया २९ इसके पीछे उस धर्म्मज्ञ महा तेजस्वी उतथ्यने उस भार्य्याको लेकर जो २ बातें बरुणसे करीं उन सबको तुम मुझसे सुनो ३० हे जलेश्वर आपकी अप्रसन्नता होनेपर भी यह भार्य्या मुझको तपसे प्राप्तहुई है यह कहकर भार्य्या समेत अपने आश्रम को गये ३१ हे राजा यह ब्राह्मणों में उत्तम उतथ्य ऐसा प्रतापी था इसको मैंने कहा अब तुम किसी क्षत्रियको ब्राह्मणसे उत्तम बताओ ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्म्मेउतथ्यमहिमावर्णने शतोपरिपञ्चपञ्चाशत्तमोऽध्यायः १५५ ॥

एकसौछप्पनका अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि वायुके इस रीतिके कहनेपर वह राजा मौनहुआ हे राजा अब तुम अगस्त्यऋषिके माहात्म्य को सुनो १ जब कि असुरोंने देवताओं को विजय किया और उनको उत्साहों से रहित किया और देवतालोगों के सब यज्ञ भाग और पितरोंके स्वधाभागों को हरण किया २ और मनुष्यों की यज्ञशाला भी दानवों ने विध्वंस करदी तब सब देवता अपने २ राज्यों से हत होकर पृथ्वी पर भ्रमण करनेलगे यह श्रुतिहै ३ हे राजा इसके कुछ कालही पीछे उन देवता-

ओंने पृथ्वी पर घूमते हुये एक समय उन अगस्त्यमुनि को देखा जोकि तेजमें प्रकाशमान सूर्यकेसमान महातेजस्वी उत्तमव्रतके धारणकरनेवाले थे ४ हे राजा उन को देवताओं ने प्रणाम पूर्वक उनकी कुशल क्षेम पूछकर समयपाकर उस महात्मासे यह बचन कहा ५ कि हम सब देवता युद्धमें दानवलोगों से पराजय हुये और इसीकारण से अपने २ राज्यसे भी रहित हुये हे मुनियोंमें श्रेष्ठ आप हमारी इस आपत्तिमें रक्षाकरके हमको इस दुःखसे छुटाओ ६ तब देवताओं के बचनोंको सुनकर वह महातेजस्वी अगस्त्यमुनि ऐसे क्रोधसे प्रज्वलितहुये जैसे कि प्रलयकाल की अग्नि होती है ७ हे महाराज तब उनके तेजकी प्रकाशित ज्वालाओंसे वह सब दैत्य भस्महोगये और हजारों दानवलोग अन्तरिक्षसे पृथ्वी पर गिरपड़े ८ उन अगस्त्यजीके तेजसे संतप्तहोकर वह सब बाकी बचेहुये दानव दक्षिण दिशाको चलेगये ९ उस समय पृथ्वीपर बर्त्तमान होकर राजाबलि यज्ञ को कररहा था और पाताल वा पृथ्वीपर बर्त्तमान जो अन्य बड़े२ महाअसुर थे वह सब ऋषिकी कोपाग्नि से भस्महोगये १० इसके अनन्तर देवताओं ने फिर अपने२ लोकोंको प्राप्तकिया और वह ऋषिभी शान्तहोगये इसके पीछे उन सब देवताओं ने ऋषिसे कहा कि आप इन पृथ्वीपर बर्त्तमान राक्षसोंको विजय कीजिये ११ हे राजा देवताओं के इस बचनको सुनकर अगस्त्यजीने देवताओं से कहा कि इन पृथ्वीपर नियत असुरों के नाश करनेको मैं इस हेतुसे समर्थ नहीं हूं कि मेरातप नष्टहोगा इस निमित्त मैं उनको नष्टनहीं करसक्ताहूं १२ हे राजा ऐसे तेजस्वी अगस्त्यजी का भी बृत्तान्त मैंने तुझसे कहा कि जिनके तपकेही तेजसे सब दानवलोग भस्महोगये १३ हे निर्लज्ज ऐसे अगस्त्यजीभी तुमसे बर्णनकिये इनसे उत्तम किसी क्षत्रियका तुम बर्णनकरो १४ भीष्मजी बोले कि तब तो इस रीति के अनेक बचनों को सुनकर वह राजा सहस्रबाहु मौनहोगया फिर बायुने कहा कि हे राजा अब महातेजस्वी बशिष्ठजी के भी उत्तम कर्मको सुनो १५ देवताओं ने बैखानस नाम सरोवर पर यज्ञकी रचनाकरी वहां चित्त से बशिष्ठ और बशिष्ठजी की गौरवताको जानकर चित्तसेही उनको ध्यानकिया १६ तब पर्व्वताकार खलिन नाम दानवोंने उनयज्ञ करनेवाले सब देवताओंको दीक्षाओं से निर्बल शरीर देखकर मारनेकी इच्छाकरी १७ उनके समीपही ब्रह्माजी से बरपानेवाला एक सरोवरथा कि जिसमें मरेहुये राक्षसलोग गोतादिलाने से सजीव

होजातेथे १८ वह दशहज़ार दानव बड़े२ भयकारी पर्व्वत वृक्ष और परिघाओंको लेकर चारसौ योजन ऊंचे उठेहुये जलको ओतप्रोतकरके देवताओं के सम्मुख दौड़े फिर उनसे पीड़ित होकर सब देवता इन्द्रकी शरण में गये १९ । २० इन्द्रभी देवताओं समेत उनसे पीड़ितहोकर बशिष्ठजीकी शरणमें गया तब बशिष्ठऋषि ने उस इन्द्रको निर्भयतादी २१ उस समय दयावान् बशिष्ठमुनिने उन देवताओं को महादुःखी जानकर बिना उपाय किये अपने तेजसेही उन सखलिन नाम दैत्योंको भस्म करदिया २२ और उसी बड़े तपस्वी ने कैलासपर नियत श्रीगङ्गा नदीको उस दिव्य सरोवरमें प्रविष्टकिया उससे वह सरोवर टूटा २३ फिर उसनदी से टूटाहुआ वह सरोवर सरयू नाम नदी हुआ और जिस स्थान में वह खलिन नाम दैत्य मारेगये वह खलिननाम देश बिख्यातहुआ २४ इसरीतिसे इन्द्रादिक सब देवताओंकी बशिष्ठजीने रक्षाकरी और ब्रह्माजी से बरपानेवाले वह सब दैत्य उन महात्मा बशिष्ठजी के तेजही से भस्महोगये २५ हे निर्लज्ज यह मैंने बशिष्ठजी का बृत्तान्त बर्णन किया अब तुम इन बशिष्ठजी से उत्तम किसी क्षत्रिय का बर्णन करो २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेवशिष्ठतेजवर्णनेशततोपरिषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः १५६ ॥

एकसौसत्तावनका अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि ऐसे२ बचनोंको सुनकर राजा सहस्रबाहु मौनहुआ फिर भी बायुनेकहा कि हे राजा सहस्रबाहु अब महात्मा अत्रिऋषिके कर्मको मुझसे सुनो १ देवता दानव घोर अन्धकारमें जब परस्पर युद्धकरनेलगे तब वहां राहुने चन्द्रमा और सूर्य्यको बाणों से घायल किया २ हे राजाओं में श्रेष्ठ उससमय वह इन्द्र समेत सब देवता अन्धकार में घिरेहुये उनके बाणों से महाव्याकुल हुये ३ तब असुरों से घायलहुये पराक्रमसे रहित देवताओं ने तप करनेवाले तपोधन अत्रिऋषिको देखा ४ इसके पीछे देवताओंने इन क्रोधरहित जितेन्द्रिय महात्मा अत्रि मुनिसे कहा कि यह दोनों चंद्रमा और सूर्य्य असुरों के बाणोंसे घायलहुये हैं ५ और अंधेरे से घिरेहुये हम सब देवताभी घायल हैं सुखको नहीं पाते हैं इस से हे प्रभु आप हमारी रक्षाकरो ६ अत्रिने कहा कि मैं आप लोगोंकी कैसे रक्षा करूं वह बोले कि चन्द्रमा हूजिये और अंधेरे और चोरों के नाशकरने के लिये

हमारे सूर्य्य भी हूजिये ७ यह वचन सुनतेही वह अत्रिऋषि अन्धकार के दूर करनेवाले चन्द्रमा हुये और चन्द्रमारूप होकर उस अपूर्वरूप ऋषि ने अपनी अमृतदृष्टी से उनको देखा ८ हे राजा अत्रिऋषि ने चन्द्रमा और सूर्य्यको अप्रकाश देखकर अपने तेजसे युद्धमें प्रकाश किया ९ तब संसार भी अन्धकार से रहित होकर प्रकाशमान हुआ १० और अपने दिव्य तेजसे देवताओं के शत्रुओंको बिजयकिया तब अत्रि के तेजसे सन्तप्तहुये उन असुरों को देखकर ११ उन ऋषि से अच्छे प्रकारसे रक्षितहुये देवताओं ने भी उन असुरोंको अपने पराक्रम से मारा सूर्य्य प्रकाशमानहुये देवताओं की रक्षाहुई असुर मारेगये १२ इन उत्तम तेजवाले सूर्य्य के समान तेजस्वी मृगचर्म के ओढ़नेवाले फल भोजनवाले सृष्टिकर्त्ता अत्रिऋषि ने अपनी सामर्थ्य प्रकटकरी १३ हे राजऋषि अत्रि के कियेहुये कर्म्मको देखो यह मैंने महात्मा अत्रिका कियाहुआ वृत्तान्त तुमसे कहा इनसे विशेष किसी क्षत्रियका कर्म्म तुमभी वर्णनकरो १४ यह सुनकरभी राजा सहस्रबाहु मौनहीरहा इसके पीछे फिर वायुदेवताने कहा कि हे राजा महात्मा च्यवनऋषि के भी बड़ेभारी कर्मको सुनो १५ एकसमय च्यवनऋषि ने दोनों अश्विनीकुमारों से प्रणकरके इन्द्रसे कहा कि तुम इनदोनों अश्विनीकुमारोंको देवताओं के साथमें यज्ञका भागीकरके सोमपान करो १६ इन्द्रने कहा कि यह दोनों हमसे निन्दितहैं हम इनके साथ कैसे सोमपान करें यह दोनों देवताओं के समान नहीं हैं इसहेतुसे आप हमसे ऐसावचन मतकहो १७ हे महाव्रत हम अश्विनीकुमारों के साथ में सोमपान करना नहीं चाहते हैं हे विप्रवर्य्य इसके सिवाय जो आप आज्ञाकरें उसको हम करें १८ च्यवनजी बोले कि हे देवराज यह दोनों अश्विनीकुमार आपलोगों के साथ सोमपानकरें क्योंकि यह दोनों देवताभी सूर्य्य के पुत्रहैं हे देवताओ तुम इस मेरे वचनको जैसा कि मैंने कहाहै उसीप्रकार करो तुम सब कर्म्मकर्त्ताओं का कल्याण होगा और अकर्म्मकर्त्ताओंका कल्याण न होगा १९।२० इन्द्रने कहा हे द्विजवर्य्य मैं अश्विनीकुमारों के साथ सोमपान नहीं करूंगा चाहै अन्य देवतालोग अपने उत्साह से उनके साथ सोमपियें परन्तु मैं उनके साथ सोमपान करने को उत्साह नहीं करताहूं २१ च्यवनऋषिने कहा हे इन्द्र जो मेरे कहेहुये वचन को नहीं करेगा तो यज्ञमें मुझसे प्रमथित होकर तू शीघ्रही सोमपान करेगा २२ वायु देवता कहते

हैं कि इसके पीछे च्यवनऋषि ने अश्विनीकुमारों के अभीष्टके लिये उस कर्म्म को प्रारम्भकिया फिर देवतालोग मंत्रों से पराजित हुये २३ तब क्रोधसे मूर्च्छा-मान इन्द्र उस कर्म्म को प्रारम्भ हुआ देखकर एक बड़ेभारी पर्व्वत को उठाकर च्यवनऋषि की ओर को दौड़ा और उस तपोधन च्यवनऋषि ने उस इन्द्र को बज्र और पर्व्वत समेत आताहुआ देखकर २४। २५ एक जलका छींटा मारकर बज्र और पर्व्वत समेत स्तब्ध अर्थात् निश्चल जड़रूप करके उस इन्द्र के शत्रु बड़े घोररूप ऐसे मदनाम असुर को अपनी आहुति से उत्पन्न किया जिसके फैलेहुये मुखमें हजार दाँत सौ २ योजन लम्बेथे २६। २७ और उसकी महाघोर भयानक डाढ़ दोसौकोस लम्बीथी उसका नीचेका ओष्ठ पृथ्वीपरथा और ऊपर का ओष्ठ स्वर्ग्ग को स्पर्श कियेहुये था उसके मुखमें इन्द्र समेत सब देवता ऐसे नियतहुये जैसे कि महासमुद्र में तिमिनाम जलजन्तुके मुखमें मछलियां वर्त्त-मान होती हैं २८। २९ इसकेपीछे इस मददैत्यके सम्मुख वर्त्तमान उन देवताओं ने परस्पर में दृढ़ सलाहकरके एकसाथही सबने इन्द्रसे कहा कि हे इन्द्र तुम इस ब्राह्मण को नमस्कार करो ३० और हम सबलोग बिगत ज्वरहोकर अर्थात् सुख पूर्व्वक इन अश्विनीकुमारों के साथ सोमपान करें देवताओं के बचन सुनकर उस नम्रीभूत इन्द्रने च्यवनऋषि के उस बचनको किया ३१ तब च्यवन ऋषिने उन अश्विनीकुमारों को सोमपान करनेवाला कहा और इस चरित्र को करके फिर मुनि ने उस अपने यज्ञकर्मको समाप्त किया ३२ और मदनाम दैत्यको उस पराक्रमी ऋषि ने द्यूत आखेट मद्यपान और स्त्रियों में बिभागित करदिया हे राजा मनुष्य ऐसे २ दोषों से अवश्य नाश होते हैं ३३ इसी हेतुसे मनुष्यको उचितहै कि इन द्यूत आदि बातों को दूरहीसे त्यागकरे ३४ हे राजा यह च्यवनऋषिका कियाहुआ कर्म्मभी मैंने तुझसे कहा अब तुम इनसे अधिक कर्मवाले किसी क्षत्रीका वर्णन करो ३५॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेच्यवनप्रतापवर्णने शतोपरिसप्तपञ्चाशत्तमोऽध्यायः १५७॥

एकसौअट्ठावनका अध्याय॥

भीष्मजी बोले कि इस बातको सुनकर राजा सहस्रबाहु मौनहुआ और बा-

युने फिर कहा कि हे राजा ब्राह्मणों में जो उत्तम कर्म हैं उनको तुम मुझसे सुनो १ जब कि वह इन्द्रसमेत देवता उस मदके मुखमें बर्त्तमानहुये तभी च्यवन ऋषि ने उनकी पृथ्वी हरलीन्ही २ देवतालोग दोनों लोकोंको हराहुआ देख शोकसे महापीड़ित होकर महात्मा ब्रह्माजी की शरणमें गये ३ देवता बोले कि हे लोकपूजित प्रभु ब्रह्माजी इस मदके मुखमें बर्त्तमान होनेवाले हम सब देवताओं की पृथ्वी तो च्यवनऋषि ने और स्वर्गको कपों ने हरण करलियाहै ४ ब्रह्माजी ने कहा कि इन्द्रसमेत तुम सब देवतालोग शीघ्रही ब्राह्मणों की शरण में जावो तुम उनकोही प्रसन्न करके पूर्व्व के समान दोनों लोकोंको पावोगे ५ तब वह सब देवता वेदपाठी ब्राह्मणों के शरणमें गये उन ब्राह्मणों ने कहा कि हम किसको बिजयकरें यहबात सुनकर देवताओं ने ब्राह्मणों से कहा कि आप यहां कपोंको बिजय कीजिये ६ ब्राह्मण बोले कि हम अब फिर उन बर्त्तमान कपोंको बिजय करेंगे इसके पीछे ब्राह्मणों ने कपों के नाशकारी कर्म्मको आरम्भ किया ७ यहबात सुनकर कपों ने अपनी ओरसे एक धनीनाम दूतको ब्राह्मणों के पास भेजा उसने कपों के राजाका जो बचनथा वह सब ब्राह्मणों से आकर कहा ८ यहां कौन कर्म बर्त्तमानहै सब कपलोग आपलोगोंकेही समान वेदज्ञ ज्ञानी और सब यज्ञों से पूजन करनेवाले हैं ९ सब सत्य ब्रतधारी और महर्षियों के समान हैं लक्ष्मीजी उनमें क्रीड़ा करती हैं और वह सब लक्ष्मीको धारण करते हैं १० बिना ऋतुकालके स्त्री के पास नहीं जाते हैं यज्ञके बिना मांस नहीं खाते हैं प्रकाशमान अग्निमें हवन करते हैं गुरुओं के बचन में नियत हैं सब नियममें संयुक्त शरीर और बालकों को अच्छीरीति से बिभाग देनेवाले हैं और समीप आकर धीरे से चलेजाते हैं परन्तु रजस्वला स्त्रीका सेवन नहीं करते हैं ११ । १२ और वृद्ध वा गर्भवती स्त्री के भोजन न करनेपर आपभी भोजन नहीं करते हैं दिनके प्रथमभाग जोकि धर्म्मका समय है उसमें किसी प्रकारका व्यसन नहीं करते हैं दिनमें शयन नहीं करते हैं १३ इत्यादि गुणों से युक्त कपों को किस रीति से बिजयकरोगे हे लौटनेवालो तुम लौटो तुमलोगों का आनन्द और सुखहै १४ ब्राह्मण बोले कि हम कपोंको अवश्य बिजयकरेंगे क्योंकि जो देवताहैं वही हमहैं इसी हेतुसे कपलोग हमारे हाथसे वध्यहैं हे धनी तुम जहां से आयेहो वहींको जावो १५ फिर धनी ने जाकर कपों से कहा कि ब्राह्मण बि-

जय करने के योग्य नहीं हैं यह सुनतेही सब कपलोग अस्त्रोंको लेकर ब्राह्मणों की ओर दौड़े १६ तब ब्राह्मणों ने उन ध्वजाधारी कपोंको आता देखकर उन अग्नियोंको छोड़ा जोकि उनके प्राणों की हरनेवालीथीं हे राजा ब्राह्मणों की छोड़ीहुई वह हव्यभोक्ता अग्निदेवता कपोंको मारकर आकाश में जाकर बादलों के समान शोभायमान हुई १७। १८ तब सब देवताओं ने इकट्ठे होकर युद्धमें दानवोंको मारकर ब्राह्मणों से मारेहुये कपोंको नहीं जाना १९ हे राजा इसके पीछे महातेजस्वी नारदजी ने आकर देवताओं से वह सब वृत्तान्त कहा जैसे कि ब्राह्मणों के तेजसे वह सब कप मारेगये २० तब नारदजी के वचनको सुनकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त देवताओं ने ब्राह्मणों की प्रशंसाकरी २१ इसकेपीछे उन देवताओंको तेज और पराक्रमकी वृद्धिहुई और तीनों लोकमें पूजित देव भावको पाया हे महाबाहो युधिष्ठिर राजा सहस्रबाहुने इन वचनों के कहनेवाले वायुदेवता से जो२ बातें कहीं उनको भी सुनो २२। २३ राजा सहस्रबाहु बोले हे प्रभु मैं सब दशामें ब्राह्मणों की समानतामें जीवता हुआ वर्त्तमानहूं मैं ब्राह्मणों का भक्तहोकर सदैव ब्राह्मणों को दण्डवत् करताहूं २४ मैंने दत्तात्रेयी ऋषि की कृपासे यह पराक्रम और संसारमें शुभकीर्त्ति प्राप्तकी और बड़ा धर्मकिया२५ हे वायु देवता मुझ सावधानने आपके मुखसे कहेहुये ब्राह्मणों के सम्पूर्ण कर्मों को सुना २६ वायु देवताने कहा कि तुम क्षत्रिय धर्म से ब्राह्मणोंको और अपनी इन्द्रियों को पोषण करो और इस बातको याद रक्खो कि भृगुबंशियों से तुझको बड़ा कठिन भयहोनेवाला है सो समय पर अवश्य होगा २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेपवनसहस्रार्जुनसंवादोनामशतोपरि अष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः १५८ ॥

एकसौउनसठका अध्याय ॥

युधिष्ठिरबोले हे राजा भीष्मजी आप सदैव इन तेज व्रतवाले ब्राह्मणोंको पूजते हो सो हे महाव्रत महाबाहो तुम उनके कौन से उदय होनेवाले फलको देखकर उनको पूजतेहो उस सबको मुझसे कहो १। २ भीष्मजी बोले कि ब्राह्मणों की पूजा करने के जो २ फलहैं उनको यह बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी सम्पूर्णता के साथ वर्णन करेंगे क्योंकि यह महाव्रत श्रीकृष्णजी उसफलके देखनेवाले हैं ३

अब मैं बलशक्ति श्रोत्रवाणी मन दृष्टिकी शक्तिसे रहित होकर महाव्याकुल हूं और वह शुद्धज्ञानहै और थोड़ेही समयमें शरीरका त्यागना मुझको अङ्गीकार है अब सूर्य्य शीघ्र नहीं चलताहै अर्थात् मुझ दुःखीका यह दिन बड़ाहुआ ४ हे राजा युधिष्ठिर पुराणों में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्रों के जो बड़े२ धर्म्म हैं जिनको कि वह सब अपने२ काममें लाते हैं वह सब मैंने वर्णनकिया बाकी बचे हुओंको श्रीकृष्णजी से सीखो ५ हे कौरवेन्द्र मैं इन श्रीकृष्णजीको उस मुख्यता के साथ कि जैसे हैं और जैसो इनका सनातन पराक्रमहै इन सब वृत्तान्तों को मैं अच्छीरीतिसे जानताहूं अर्थात् श्रीकृष्णजी अत्यन्त ज्ञानवाले हैं वह तेरे सब सन्देहोंको वर्णन करेंगे ६ इन्हीं श्रीकृष्णजी ने पृथ्वी आकाश और स्वर्गको उत्पन्न कियाहै इसके शरीरसे पृथ्वी प्रकटहुई यह भयका उत्पन्न करनेवाला पराक्रमी प्राचीन वराहहै इसीने पर्वत और संसारकी दिशाओं को उत्पन्न किया ७ स्वर्ग पृथ्वी पाताल आकाशादि सब इसके शरीरसे प्रकटहैं इसीने सम्पूर्ण सृष्टि उत्पन्नकरी इसीने इस प्राचीन विश्वको भी उत्पन्न किया ८ इसीकी नाभिमें कमल उत्पन्न हुआ जिसमें बड़े तेजस्वी ब्रह्माजी उत्पन्नहुये हे युधिष्ठिर जिससे कि वह घोर अन्धकार दूरहुआ और वह घोर अथाह समुद्रमें नियतहै ९ हे राजा यह श्री कृष्णजी सतयुगमें सम्पूर्ण धर्म के रूपहुये त्रेतामें ज्ञानरूप द्वापरमें बलरूप हुये कलियुगमें अधर्मरूप पृथ्वीपर हुये १० पूर्वसमय में इन्हीं श्रीकृष्णजी ने दैत्यों को मारा था यही सम्पूर्ण संसार के असुरों का राजाबलिरूप हुआ यही इसजगत् का रक्षकहै ११ जब देवताओं के कुलमें धर्म नाशको पाताहै तब यही श्रीकृष्ण नरलोकों में अवतार लेते हैं वही पवित्रात्मा धर्म्म में नियत होकर सबगुप्त प्रकट संसारकी रक्षाकरताहै १२ हे राजा जो श्रीकृष्ण असुरों के मारने के निमित्त त्याग के योग्योंको त्यागकरके कार्याकार्य और कारणरूप है जो कुछ उत्पन्न था वा वर्त्तमानहै अथवा होनेवाला है वह सब यही देवताहै इसीको राहु चन्द्रमा और इन्द्र जानो १३ यही संसार का कर्त्ता और बनानेवाला है यही बिश्वरूप है यही विश्वका भोक्ताहै यही विश्वको उत्पन्न और विजय करनेवाला है वह शूलधारी बाणों के द्वारा रुधिर को धारण किये करालरूप हैं कर्म्मों से विदित होनेवाले इस ईश्वरकी स्तुति करते हैं १४ नानाप्रकार के अनेक गन्धर्व और अप्सरागण उसको आकर सदैव प्रसन्नकरते हैं राक्षसभी उसीकी स्तुतिकरतेहैं यही अकेला

सबका पालन करनेवाला १५ लक्ष्मी और विजयका चाहनेवाला है स्तुतिक-रनेवाले पुरुष यज्ञ में उसकी स्तुति को करते हैं सामग ब्राह्मण उसको रथन्तर ऋचा में वेद के मंत्रों से स्तुति करते हैं अध्वर्य्य ब्राह्मण उसके निमित्त हव्यका विचार करते हैं १६ हे भरतवंशी प्राचीन ब्राह्मणोंमें से परशुरामरूप इस ईश्वरने सहस्रबाहु को देखा फिर उत्तम कर्मीने दैत्य उरग और दानवलोगोंको पराजय करके पृथ्वी को ऊंचाउठाया १७ इन्द्रदेवता अपनी वृद्धिके लिये वर्षाकाल के बादलों के शब्दों के द्वारा इनकी स्तुतिकरते हैं हे भरतवंशी यही अकेला गौवों का अथवा जीवमात्रों का ईश्वरहै इनके भोजनों को नानाप्रकार का जानते हैं और युद्ध में इसीको विजयका देनेवाला जानते हैं १८ सम्पूर्ण पृथ्वी आकाश और स्वर्ग इसी सनातन पुरुषके आधीनहैं इसी ने मैत्रावरुण के वीर्य्यको घटमें डाला जिसमें वशिष्ठजीको उत्पन्न किया १६ वही आदिदेव प्रभु वायुहै जिसकी इन्द्रियां चलायमानहैं वही किरणों का स्वामी सूर्य्य है इसी सें सब असुर विजय कियेगये इसी के तीन चरणों से तीनोंलोक जीतेगये २० यही देवता मनुष्य और पितरोंका आत्माहै इसीको यज्ञके ज्ञातापुरुष यज्ञोंका विस्तार कहते हैं यही समयपर उदय होताहै इसी के उत्तर और दक्षिण दोनोंस्थानहैं २१ इसीकी कि-रणें पृथ्वी को प्रकाशित करतीहुई ऊपर की ओर बाईं और तिरछी चलती हैं वेदज्ञ ब्राह्मण इसीका सेवन करते हैं इसी के तेजसे संयुक्तहोकर सूर्य्य जगत् में प्रकाश करताहै २२ वही यज्ञ करनेवाला हरमहीने यज्ञरचना करताहै वेदज्ञलोग इसी को यज्ञों में पढ़ते हैं यही वार्षिकरूप चक्र कहाता है जिसकी शीत उष्ण और बर्षारूप तीन नाभि हैं और यही सातघोड़ों से युक्तहोकर शीत को आदि लेकर तीनोंऋतुरूप प्रकारोंको प्राप्त कराताहै २३ बड़े तेजस्वी सर्वव्यापी सर्व्वो-त्तम अकेले श्रीकृष्णजीही लोकोंको धारण करते हैं हे युधिष्ठिर उस सबके कर्त्ता अंधकार के नाशक सूर्य्यरूप वीर श्रीकृष्णजी को तुम सदैव प्राप्तकरो २४ वही महात्मा प्रभु अग्निरूप होकर एकसमय खांडवनाम सूखेवन में बर्त्तमान होकर अच्छेप्रकारसे तृप्तहुआ यह सर्वव्यापी ईश्वर राक्षस और उरगोंको बिजयकरके सबको अग्नि में हवन करता है २५ इसी ने श्वेतघोड़े अर्जुन को दिये इसीने अन्य सब घोड़ोंको उत्पन्न किया यही उस रथका जोड़नेवाला है जिसके सतो-गुण रजोगुण और तमोगुण रूप तीनचक्रहैं वह त्रिवृत्तिशिरा है अर्थात् उत्तम

मध्यम और निकृष्ट गतियोंका फलहै जिसके काल प्रारब्ध ईश्वरकीइच्छा और निज संकल्पनाम चारोंघोड़े हैं और श्वेत कृष्ण धूम्र बर्णवाले होकर कर्म्मरूप गर्भोंको रखनेवाले हैं २६ उस बड़े तेजस्वी अग्निके समान प्रकाशमान इन्द्रियों के स्वामी पंचतत्त्वों के आश्रय स्थान उस परमात्माने पृथ्वी आकाश और स्वर्ग को उत्पन्न किया इसी ने वन और पर्ब्बतों को प्रकटकिया २७ मारनेकी इच्छा करनेवाले जिस ईश्वरने दिव्य नदियों के पारहोकर और वज्र के प्रहार करने वाले इन्द्र को पराजय किया यही अकेला महाइन्द्ररूप होकर हजारों ऋचाओं के द्वारा इन ऋषियों से स्तुति कियाजाताहै २८ हे राजा बड़े तेजस्वी दुर्ब्बासा ऋषिको भी घरमें ठहराना इसीका कामथा दूसरेका नहीं होसक्ताहै इसी एकको पुराणऋषि कहते हैं यही संसार का कर्त्ता अपने प्रभावों को प्रकट करताहै २६ जो अधिदेवता वेदोंको जानकर उपदेश करताहै और जो प्राचीन बिधि से कर्मों को करताहै और वैदिक लौकिक इच्छा में जो फलहै वह सब श्रीकृष्णही है इस को प्राप्तकरो ३० सब लोकमें श्वेत प्रकाशवाला नक्षत्र तीनोंलोक तीनोंलोक-पाल तीनोंअग्नि तीनोंब्याहृती और जितने देवताहैं यह सब श्रीकृष्णही हैं ३१ और यही वर्षका अंतहै यहीऋतुहै यहीपक्ष दिन और रात्रिहै यही सबका निष्ठा है यहीमात्रा मुहूर्त्त लव और क्षणनाम समयहै इस सबके आश्रयको तुम निश्चय करो ३२ चन्द्रमा सूर्य्य ग्रह नक्षत्र तारागण सब पर्व नक्षत्र योग यह सब उत्तम२ पदार्त्थ इसी विश्वक् में से उत्पन्न हुये हैं ३३ एकादशरुद्र द्वादशसूर्य्य दोनों अश्विनीकुमार साध्यगण विश्वेदेवा मरुद्गण प्रजापति देवताओं की माता अदिति और सातोंऋषि यह सब श्रीकृष्णजी से उत्पन्नहुये हैं ३४ यह विश्वरूप वायुहोकर सब विश्वको चलायमान करताहै और अग्निरूप होकर सबको भस्म करताहै और जलरूप होकर सबको डुबोताहै ब्रह्माहोकर सृष्टि को उत्पन्न करता है ३५ जो यही जानने के योग्य को उपदेश करताहै और आपही जानने के योग्य है विधिरूप है और जो करने के योग्य कर्म्म में प्रवृत्त होताहै इस चराचर संसाररूप केशवजीकोही धर्म्म वेद और पृथ्वी में नियतहुआ निश्चयकरो ३६ यह पुरुषोत्तम पूर्व्वही से परमज्योतिरूप है जिसके प्रकाश से यह विश्वरूप प्र-काश करताहै पूर्व्व समय में सब जीवों के उत्पत्ति स्थान इस ईश्वरने जलको उत्पन्न करके सब बसुओंको उत्पन्न किया ३७ सब ऋतु नानाप्रकार की अद्भु-

तता, उत्पात, बादल, बिजली, ऐरावत आदि सब जड़ चैतन्य जीवोंको श्रीकृष्णही से उत्पन्नहुआ जानो इस बिश्वात्माको बिश्वरूपही निश्चय जानो इसको बिश्वका आश्रय स्थान मायाके गुणों से रहित सब शरीरों में निवास करनेवाला संकर्षण जीवरूप कहते हैं ३८ इस संकर्षण से प्रद्युम्न और चौथा अहंकाररूप अनिरुद्ध प्रकटहुआ पंचतत्त्वात्मक पांच प्रकारवाले इस बिश्वके उत्पन्न करनेका अभिलाषी यह ईश्वर उन तीनोंपर प्रेरणापूर्व्वक आज्ञा देताहै यह परमात्मा अपने प्रकाशका आपही कारणहै ३९ हे राजा इसके पीछे इसने पृथ्वी जल अग्नि बायु और आकाशको उत्पन्न किया उसी ने इस स्थावर जंगम संसारको और इस चारप्रकार की सृष्टिको उत्पन्न करके ४० फिर पांच बीज रखनेवाली पृथ्वी अर्थात् चारों प्रकारके जीव और पांचवां उनका कर्म यही पांच बीजहैं और स्वर्ग को प्रकटकिया यही पृथ्वीपर बहुत से जलों को नियत करताहै हे राजा इसी से यह बिश्व उत्पन्न कियागयाहै यही अपने आप प्रकट होनेवाला अपनी आत्मा से उसको सजीव करताहै ४१ इसके अनन्तर सब जीवों का स्वामी संसार की उत्पत्तिका अभिलाषी यह ईश्वर बिधि के अनुसार देवता, असुर, मनुष्य, ऋषि, पितृआदि सब सृष्टि और उनके सम्पूर्ण लोकों को उत्पन्न करताहै ४२ इस सब स्थावर जंगम और शुभाशुभको श्रीकृष्णही से उत्पन्न जानो यहां जो बर्त्तमान और जो आगे होगा इस सबको तुम श्रीकृष्णरूपही जानो ४३ यही धर्मधारी सनातन श्रीकृष्ण प्रलयकालके समय सब जीवमात्रका मृत्युरूप होताहै और जिसकिसी चमत्कार और अद्भुतताको हम नहीं जानते हैं उस सबकोभी श्रीकृष्णही से हुआ जानो ४४ लोकों में जो पवित्र और उत्तमहै अथवा शुभ और अशुभ है वा बुद्धि से परे है उस सबको केशवरूपही जानो इसके सिवाय जो सिद्धान्तहै वह बिरुद्ध है ४५ ऐसे श्रीकृष्णजी सब जीवों के बासी सबसे उत्तम अविनाशी इस जड़ चैतन्यात्मक संसारके आदि मध्य और अन्तरूप ऐश्वर्य्य चाहनेवाले मनुष्यों के अविनाशी कर्त्ता हैं ४६ ॥

भीष्मजी बोले ॥

तोमर छन्द ॥

हम बिकलहैं अब पर्म । सुन पाण्डुपुत्र सधर्म ॥
तेहिते न पूंछहु मोहिं । हम कहत सत्यहि तोहिं ॥

जयकरी छन्द ॥

ब्राह्मण की पूजा अभिराम । कीन्हे जो फल मिलत ललाम ॥
सो जानतहैं कृष्ण अनूप । पूंछो इनसों तुम हे भूप ॥
सबके कर्त्ता हैं सर्वज्ञ । कृष्णचन्द्र सुनि भूपति प्रज्ञ ॥
भीषम की सुनिकै यह बात । भूप युधिष्ठिर कुन्ती तात ॥
कृष्णचन्द्र को ऐसे बैन । कहत भये वर प्रज्ञा ऐन ॥
विप्रन की पूजा में जौन । मिलत कृष्ण फल कहिये तौन ॥
सुनिये बैन भूप के पर्म । कहत भये श्रीकृष्ण सशर्म ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेमहापुरुषमाहात्म्यंनामशतोपरिएकोनषष्टितमोऽध्यायः॥

एकसौसाठका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे मधुसूदनजी तुम ब्राह्मणपूजा में जो फलहै उसको वर्णन करो आपको पितामह जानते हैं कि आप इसके ज्ञाताहैं १ वासुदेवजी बोले कि हे भरतर्षभ कौरवों में बड़े साधू राजायुधिष्ठिर तुम बड़ी सावधानी से ब्राह्मणों के मूलसमेत गुणोंको मुझसे सुनो २ हे कुरुनन्दन पूर्व्व समयमें ब्राह्मणोंपर क्रोधयुक्त प्रद्युम्न ने मुझ द्वारका में बैठेहुये से यह प्रश्नकिया ३ कि हे मधुसूदनजी ब्राह्मणों की पूजामें क्या फलहै उनकी ईश्वरता इसलोक और परलोकमें कहां से है ४ हे मानके देनेवाले ब्राह्मणों के सदैव पूजन करने में क्या फलहै मुझ को इसमें बड़ा सन्देह है इस से आप इनके सब वृत्तान्त को मुझ से कहिये ५ श्रीकृष्ण बोले हे राजा प्रद्युम्न के वचन सुनकर जो मैंने उसका उत्तर दिया उसको तुम सावधानी से सुनो ६ मैंने कहा कि हे प्रद्युम्न ब्राह्मणों के पूजन का जो फलहै उसको सुनो कि यह ब्राह्मण चंद्रमा को राजा रखनेवाले और सुख दुःखकेस्वामी हैं ७ हे पुत्र प्रद्युम्न इस लोक और परलोक दोनों में ब्राह्मणको प्रधान रखनेवाला कल्याणयुक्त है इसको निस्सन्देह तुम समझो ८ ब्राह्मण की पूजासे आयु यश कीर्त्ति और पराक्रम प्राप्त होताहै लोक और लोकों के ईश्वर भी ब्राह्मणों के पूजन करनेवाले हैं ९ वह ब्राह्मण हमारी ओर से धर्म अर्थ काम मोक्ष लक्ष्मी रोग शान्ति और देवपितरों के पूजनमें प्रसन्न करने के योग्यहैं १० हे पुत्र मैं इस ब्राह्मणों के पूजनको कैसे नहीं मानूं क्योंकि मैं ईश्वरहूं हे महाबाहो

तुम ब्राह्मणों पर कभी क्रोधमतकरो ११ ब्राह्मणही इसलोक और परलोकमें बड़े तेजरूप हैं सब वृत्तान्तों के पारदर्शी वह ब्राह्मण जो कदाचित् क्रोधरूप हों तो इस संसारको भस्म करसक्ते हैं १२ अन्य २ लोकोंको भी लोकपालोंसमेत उत्पन्न करसक्ते हैं अच्छे तेजस्वी पुरुष ज्ञानसे उनकेसाथ कैसे नहीं अच्छे बर्त्ताव करेंगे १३ अर्थात् उनकेसाथ अवश्य अच्छाही बर्त्ताव करना उचितहै हे तात मेरे घरमें एक हरिपिंगल वर्ण ब्राह्मण आकर ठहरा जो कि चीर वस्त्र और बिल्वपत्र की यष्टी धारण किये बड़ी २ डाढ़ी मूछसेयुक्त अत्यन्त कृश शरीरवाला था १४ और पृथ्वी के मनुष्यों के प्रमाण से उंचाई में बहुत ऊंचाथा वह दिव्यलोक और दिव्य पुरुषोंके चतुष्पथ और सभाओं के बीच इसकथाको गाताहुआ स्वेच्छाचारी होकर विचरताथा कि कौन पुरुष ऐसे दुर्वासा ब्राह्मणको सत्कार करके घर में ठहरासक्ता है जो कि जीवोंके थोड़ेसे भी अपराध होजानेपर क्रोधयुक्त होताहै इस मेरी बातको सुनकर कौन निवासस्थान देगा १५ । १६ जो कोई मुझको घर में ठहरावे वह मुझको क्रोध न दिलावे और जो किसीका तिरस्कार नहीं करता है मैं उसकेही घरमें निवास करूंगा वह अकेला एकही हजारों मनुष्यों के अन्न को खाताहै १७ एकसमय थोड़ा खाताहै और निकलकर फिर घरमें नहीं आता है अकस्मात् रोताहै उसीप्रकार अकस्मात् हँसताहै १८ उससमय पृथ्वीपर उस की समान अवस्थामें कोई नहींथा वह उत्तम स्थानको पाकर ठहरा और बिस्तरसमेत उत्तम शय्या और अलंकृत कन्याओंको भस्मकरके फिर वहां से गुप्त हो गया इसकेपीछे उस तेजव्रत मुनिने फिर मुझसेकहा १९ । २० कि हे श्रीकृष्ण मैं खीरखाना चाहताहूं उसके चित्तकी जाननेवाले मैंने प्रथमही रसोई के लोगोंको आज्ञादी थी कि २१ सब खानेपीनेकी बस्तु यहां अच्छीरीति से तय्यारहों २२ इसकेपीछे मैंने गरम २ खीर उसको दी उसने शीघ्रही उसको खाकर यह बचन कहा कि २३ हे श्रीकृष्णजी तुम शीघ्रही खीरसे अपने अङ्गोंको लिप्तकरो तब मैंने किसी बात के विचार किये बिना वैसेही किया २४ अर्थात् उस उच्छिष्ट खीरसे अपने शिर और अङ्गोंको मर्द्दनकिया तब उसमें बड़ी शुभमुखी तुम्हारी माताको भी सम्मुख देखा २५ और देखतेही उसको भी खीरसे लिप्तकिया और उसी खीरसेलिप्त शरीरवाली रुक्मिणीको उस मुनिने शीघ्रही एकरथमें जोता २६ वह अग्निवर्ण तेजस्वी बुद्धिमान् ब्राह्मण रथवान् की समान उस रथपर सवार

होकर उसमें घोड़ेकी समान रुक्मिणीको लगाकर मेरे महलसे निकला २७ और मेरे देखतेहुयेही उसने उस रुक्मिणीबालाको चाबुकसे घायल किया तब अधैर्य्यता से उत्पन्न मुझको कुछभी कष्ट नहींहुआ २८ उसीरीति से वह ऋषि बड़े राजमार्गमें होकर निकला वहां उसबड़े आश्चर्य्य को देखकर दाशार्हदेशी लोग मनमें महाक्रोधयुक्त हुये २९ वहां कोई २ मनुष्य परस्पर में सम्मुख होकर यह वार्त्तालाप करनेलगे कि ब्राह्मणही सामर्थ्यवान् हैं दूसरा किसीप्रकारसे भी ऐसा सामर्थ्यवान् नहीं होसक्ता ३० दूसरा कौन पुरुष इस रथमें सवार होकर जीवता रहसक्ता है विषैले सर्पके तेजसे भी ब्राह्मणों का तेज अधिक होताहै ३१ ब्राह्मण के विषैले मुखसे काटेहुये का कोई इलाज नहीं है उस अजेय के चलाने से रुक्मिणी मार्ग्ग में गिरपड़ी वहां वह श्रीमान् उसको न सहसका और शीघ्रही प्रेरणा करी इसके पीछे वह अत्यन्त क्रोधभरे दुर्वासा रथसे उतरकर ३२ । ३३ पैदलही दक्षिण को मुखकरके विषममार्ग में भागे तब मैंभी उस विषममार्ग में दौड़नेवाले ऋषि के पीछे दौड़ा ३४ और उसी प्रकार खीरसे लिप्त शरीर से ही मैंने कहा कि हे भगवन् आप प्रसन्नहूजिये फिर उस तेजस्वी ब्राह्मणने मुझ को देखकर कहा ३५ हे सुन्दरव्रत महाबाहो श्रीकृष्ण तुमने स्वभावही से क्रोध को विजय किया यहां मैंने बड़े अपराधको नहीं देखा ३६ हे गोविन्द मैं तुझपर प्रसन्नहूं जो इच्छाहोय वही अभीष्ट मांगो हे तात मेरी प्रसन्नता के फलको तुम विधि के अनुसार देखो ३७ जबतक खाने पीनेकी वस्तु में देवता और मनुष्यों की प्रीतिहोगी तबतक उसीअन्नके समान तुझमें भी मनुष्योंकी प्रीतिहोगी ३८ जबतक पवित्रलोकों में तेरीकीर्त्ति रहैगी तबतक तीनोंलोकों में प्रतिष्ठा को पावेगा ३९ हे जनार्द्दन तू सब सृष्टिमात्रका प्रियतम होगा जो तेरा स्वामी छोड़ा वा भस्म किया अथवा नाश किया उस सबको वैसाही किन्तु उससे भी उत्तम देखेगा हे मधुसूदन जनार्द्दन जहांतक यह खीर तेरे अंगों में मलीगई ४० । ४१ वहांतक तुझको मृत्युका भय नहीं होगा जबतक जीवतारहना चाहताहै हे धर्म से भ्रष्ट न होनेवाले पुत्र तुमने इस खीरको पैरमें किसहेतुसे नहीं मली ४२ यह तैंने मेरा अप्रिय कियाहै जब उस प्रसन्न ब्राह्मणने मुझसे यहकहा तब मैंने अपने शरीरको बड़ी शोभासेयुक्त देखा ४३ फिर प्रसन्नचित्तने रुक्मिणी जी से भी यह बचन कहा कि हे शोभामान तू सब स्त्रियों में उत्तम कीर्त्तिको अच्छीरीति से प्राप्त

करेगी ४४ हे भामिनी तुझको वृद्धावस्था रोग और शरीर की अप्रभा विजय नहीं करेगी तेरे शरीरमें पवित्र सुगन्धियां उत्पन्नहोंगी और श्रीकृष्णका पूजन और सेवन अच्छीरीतिसे करेगी ४५ तू श्रीकृष्णकी सोलहहजार स्त्रियोंमें श्रेष्ठ होकर उनकी सालोक्यता प्राप्त करनेवाली होगी ४६ तेरीमातासे यहबचन कह कर फिर उस चलनेवाले अग्निके समान तेजस्वीने मुझसे कहा ४७ हे केशव ब्राह्मणों में तेरी ऐसीही बुद्धिहोय हे पुत्र ऐसा कहकर वह ब्राह्मण उसीस्थान में अन्तर्द्धान होगया ४८ हे समर्थ मैंने उसके अन्तर्द्धान होनेपर उपांशुव्रत किया कि जो ब्राह्मण आज्ञादे उस सबको करूंगा ४९ हे पुत्र मैं तेरीमाता समेत इस व्रतको करके अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक अपनेघरमें आया ५० और घरमें आतेही उस सबको जोकि ब्राह्मणने तोड़ा और भस्म करदियाथा नवीन देखा ५१ हे प्र-द्युम्न उस सब टूटे और भस्मीभूत सामान को नवीन देखकर मैंने बड़ाआश्चर्य्य किया और सदैव चित्तसे ब्राह्मणोंको पूजनकिया ५२ हे भरतर्षभ तब मैंने प्रद्युम्न के पूछनेपर उत्तम ब्राह्मणके सब माहात्म्य को वर्णनकिया ५३ हे समर्थ युधिष्ठिर इसीप्रकार तुमभी बचन और दानसे सदैव प्रतिदिन पूजनकरो ५४ इसरीति से मैंने ब्राह्मणोंकी प्रसन्नतासेही सब फलपाया हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ जो इस भीष्म ने कहा वह सब सत्यहै ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेदुर्वासाभिक्षानामशतोपरिषष्टितमोऽध्यायः १६० ॥

एकसौइकसठ का अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हे मधुसूदनजी आपने जो दुर्वासाऋषि की कृपासे विज्ञान प्राप्त कियाहै वह मुझसे आप कहने को योग्यहो १ हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ उस महात्माके जो नामहैं और माहात्म्यहैं उन सबको मैं मुख्यतासमेत आपसे जा-नना चाहताहूं २ वासुदेवजी बोले कि हे राजा बहुतअच्छा मैं शिवजीको नम-स्कार करके तुमसे वह सब वृत्तान्त कहूंगा जैसे२ मैंने कल्याण और यश कीर्त्ति आदिको पायाहै ३ हे राजा प्रातःकाल उठकर नियमपूर्व्वक हाथजोड़कर मैं जिस शतरुद्रीको पाठकरताहूं उसको मैं तुमसे कहताहूं ४ हे तात बड़े तेजस्वी ब्रह्माजी ने तपस्याके अन्तमें उसको प्रकटकिया और उन शंकरजी ने सब स्था-वर जंगम सृष्टिको उत्पन्न किया ५ हे राजा इस त्रिलोकीमें महादेवजी से बढ़कर

कोई प्रतापी देवता नहीं है वही शिवजी सब जीवमात्र की उत्पत्ति के कारणहैं ६ उस महात्माके आगे कोई नियत होनेको उत्साह नहीं करताहै, त्रिलोकी में उसके समान कोई महाप्रतापी तेजस्वी नहीं है ७ युद्धमें शत्रुलोग उस क्रोधयुक्तके शरीरकी सुगन्धिसेही बहुधा अचेत और मृतकहोकर पृथ्वीपर गिरते हैं और बहुतसे कम्पायमान होते हैं ८ उसका भयकारीशब्द बादलकी गर्जनाके समान होताहै उस शब्दको सुनकर युद्धमें देवताओंकाभी हृदय फटजाताहै ९ वह क्रोधयुक्त पिनाकधनुषधारी जिन को घोररूप नेत्रों से देखता है वह नाश होजाते हैं अर्थात् उसके क्रोधित होनेपर गुफामेंभी वर्त्तमान देवता असुर गंधर्व और पन्नगलोग लोकमें सुखसे वृद्धिको नहींपाते हैं दक्षप्रजापति के बड़े विस्तृत यज्ञको, १० । ११ उस क्रोधयुक्तने विध्वंस किया वही निर्भयहोकर धनुषसे बाण को त्यागकर बड़ेशब्दसे गर्जा १२ उनकी गर्जनासे देवता व्याकुलहोकर सुख शांतीआदि से रहितहुये अकस्मात् यज्ञके विध्वंसहोने और शिवजी के क्रोधयुक्त होनेपर १३ उस प्रत्यंचा के शब्द होनेपर सबलोग व्याकुलचित्त हुये अर्थात् देवता और असुर व्याकुल होगये १४ समुद्र व्यथितहुआ पृथ्वी कम्पायमान हुई पर्वत चलायमान हुये सब स्वर्ग कम्पायमान हुआ १५ अँधेरे से गुप्त हुये सबलोग दिखाई नहीं पड़े और हे भरतवंशी सूर्य्यसमेत सब नक्षत्रों का प्रकाश नष्टहुआ १६ अपना और सब जीवोंका हित चाहनेवाले ऋषिलोग भी अत्यन्त भयभीतहुये इसी हेतुसे उन सबों ने शांतिपूर्वक स्वस्तिवाचन किया १७ इसकेपीछे वह रुद्र पराक्रमी शिवजी देवताओंकी ओरको दौड़े और बड़े क्रोध से भगदेवता के दोनों नेत्रोंको प्रहारों से फोड़डाला १८ और उसीप्रकार क्रोधयुक्त शिवजी पूषाकीओरको भी भागे और उस पुरोडास खानेवाले पूषाकेदाँतों को अपने चरणों के प्रहारसे तोड़डाला १९ इसकेपीछे उन कंपायमान देवताओं ने शिवजी को प्रणाम किया तब रुद्रजी ने अपने प्रकाशमान तीक्ष्णबाण को फिर धनुषपर चढ़ाया २० तब ऋषियोंसमेत सब देवता रुद्रजी के पराक्रम को देखकर भयभीत हुये फिर उन उत्तम देवताओं ने रुद्रजी को प्रसन्न किया २१ अर्थात् देवताओं ने हाथजोड़कर शतरुद्रीको जपा देवताओं के इसप्रकार स्तुति करने से शिवजी प्रसन्नहुये २२ अर्थात् हे राजा महाभयभीत होकर सब देवताओं ने उन प्रतापी शिवजीका यज्ञमें बड़ा उत्तमभाग कल्पनासे बिचारकरके उनकी

शरणली २३ फिर वह यज्ञ उन शिवजी के प्रसन्नहोनेपर बड़ी उत्तमता से पूर्ण हुआ और यज्ञमें जिन वस्तुओंका विध्वंस होगयाथा उन सबवस्तुओंको यथा-वस्थितकिया २४ स्वर्ग में पराक्रमी असुरों के तीन पुरथे पहला लोहेका दूसरा चांदीका तीसरा सोनेका २५ उनके विजय करने को इन्द्रदेवता अनेक अपने सब अस्त्रों के भी द्वारा समर्थ नहीं हुआ तबतो देवतालोग महापीड़ित होकर रुद्रजीकी शरणमें गये २६ और वहां इकट्ठेहोकर सब देवताओं ने कहा कि हे रुद्रजी असुरलोग हमलोगों के सब कर्मों में भयकारी हुये हैं २७ हे अभय के देनेवाले शिवजी आप दैत्योंका संहारकरो और देवताओंसमेत लोकोंकी रक्षा करो यहवचन सुनकर शिवजी ने उनकी प्रार्थना को अंगीकार किया और वि-ष्णुको उत्तमबाण २८ अग्निको भाल और सूर्य्यपुत्र यमराज को पक्ष सब वेदों को धनुष और उत्तम गायत्रीको प्रत्यंचा बनाकर २९ ब्रह्माजीको सारथी करके सबप्रकारकी तैयारी के साथ उस तीनपक्ष और तीनभाल रखनेवाले बाणसे उन पुरोंको तोड़ा ३० हे भरतवंशी वहां रुद्रजी ने उस सूर्य्यवर्ण कालाग्निके समान तेजस्वी बाणसे तीनों पुरोंसमेत उन असुरोंको भस्मकरदिया ३१ तब उस पांच शिखा रखनेवाले बगलमें वर्तमान बालकको देखकर परीक्षा करनेकी इच्छा से उमादेवीने कहा कि यह कौनहै ३२ उस बालकने निन्दाकरनेवाले और वज्रके प्रहार करने के अभिलाषी इन्द्रकी परिघके समान भुजाको वज्रसमेत रोका ३३ परन्तु प्रजापतिसमेत सब देवताओं ने उस भुवनेश्वर को नहीं जाना अर्थात् उस ईश्वर में सबने मोहको पाया ३४ इसकेपीछे भगवान् ब्रह्माजी ने उस बड़े तेजस्वी को ध्यानकरके जानलिया कि यह श्रेष्ठहै ऐसाजानकर उन उमापति जीको दंडवत्करी ३५ और सब देवताओं ने रुद्र और उमादेवीको प्रसन्न किया तब इन्द्रकी भुजा पूर्व के समान होगई ३६ वही पराक्रमी दुर्वासानाम ब्राह्मण होकर बहुत कालतक द्वारकापुरी में आकर मेरे घर नियतरहा ३७ मेरे महलमें बड़े २ अप्रिय कर्म किये परन्तु मैंने अपनी उदारता से उन सब कठिन असह्य बातों को सहा ३८ वही रुद्रहै वही शिवहै वही अग्निहै वही सर्वहै वही सबका विजय करनेवालाहै वहीइन्द्र वायु अश्विनीकुमार बिजली ३९ चन्द्रमा और वही ईशानहै वहीसूर्य्य है वही वरुणहै वहीकालहै वही नाशकरनेवाली मृत्युहै वही यमराज वही दिन रात्रि ४० मास पक्ष ऋतु संध्या और वही वर्षकी समाप्ति है

वही धाता वही विधाता वही विश्वकर्म्मा वही सर्व्वज्ञ ४१ वही नक्षत्र ग्रह दिशा और विदिशारूपहै वही अप्रमेयात्मा षडैश्वर्य्यका स्वामी बड़ातेजस्वी और विश्वमूर्त्ति है ४२ वही एक अर्थात् ब्रह्महै वही दो अर्थात् सगुण और निर्गुणहै वही बहुत रूप रखनेवाला लाखों किरोड़ों रूपोंका धारण करनेवालाहै ४३ वह भगवान् महादेव ऐसाहै कि जिस अविनाशी के गुण सैकड़ोंवर्ष में भी कहने सम्भव नहीं होसक्ते ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेईश्वरप्रशंसानामशतोपरिएकषष्टितमोऽध्यायः१६१॥

एकसौबासठका अध्याय ॥

वासुदेवजी बोले कि हे महाबाहु युधिष्ठिर उस अनेकरूप और नाम रखनेवाले महात्मा रुद्रजी के माहात्म्यको मुझसे सुनो १ उस महादेवजीकोही अग्नि कहते हैं इसी प्रकार स्थाणु महेश्वर एकनेत्र त्रिनेत्र विश्वरूप और शिव कहते हैं वेदज्ञ ब्राह्मणों ने उसके दो शरीर वर्णनकिये हैं २ एकघोर दूसरा शिव फिर वह दोनों शरीर बहुत प्रकारके हैं इसके जो उग्र और घोरशरीर हैं वही तो अग्नि बिजली और सूर्य्य हैं ३ उसके जो शिवा सौम्यानाम शरीरहैं वही धर्म जल और चन्द्रमा हैं उसका आधा आत्मा अग्निहै उसीको अर्धचन्द्रभी कहतेहैं ४ इसका जो एक शरीर शिवाहै वह ब्रह्मचर्य्य को करता है इसीप्रकार उसकी घोरमूर्त्ति जगत् का नाश करती है ५ ईश्वर और सबका वृद्धहोनेसे महेश्वर कहाजाताहै जो कि सब का नाश करताहै और तेजवान् उग्ररूप प्रतापवान् ६ होकर मांस रुधिर और मज्जाको भक्षण करताहै इनकारणों से वही रुद्रभी कहा जाताहै और जो कि देवताओं में बड़ाहै और उसकादेशभी बड़ाहै ७ और जिस हेतुसे इस बड़े विश्व को धारण करताहै इसी हेतुसे महादेव कहाजाताहै और जिस निमित्त से उसका रूप धूम्रवर्ण है इसी हेतुसे वह धूर्जटि कहाजाताहै ८ और जिस निमित्त से वह मनुष्यों के कल्याणों को चाहताहुआ सदैव सब लोगोंको सबकर्म्मों से पवित्र करताहै इसी हेतुसे शिव कहाजाताहै ९ और जिस निमित्तसे ऊंचा नियतहोकर मनुष्यों के प्राणोंको हरताहुआ नियतहै और सदैव नियतलिंग अर्थात् ब्रह्मचारी है इस हेतुसे स्थाणुनाम विख्यात हुआ १० जिस निमित्त उसका बहुत प्रकारकारूप भूत वर्त्तमानरूप स्थावर और जङ्गम जगत् हुआ है उसकारण से

सवरूप कहाजाताहै और जिसहेतुसे विश्वेदेवा उसके शरीरवर्त्ती हैं इसी से विश्व-रूप कहागया ११ हजार नेत्रवाला वा सहस्राक्ष अथवा सब ओरको नेत्रोंसे देख-ने वालाहै उसके नेत्रसेही तेज उत्पन्नहुआ जिस के नेत्रों का अन्तनहीं है १२ जिस हेतुसे वह सब दशाओं में पशुकी रक्षाकरताहै और उनकेसाथमें रमताहै वा उन्होंका स्वामी है उसहेतुसे पशुपति कहाजाताहै १३ जिस निमित्त कि सदैव के ब्रह्मचर्य्य से इसका लिंगनियतहै और लोक उसका पूजनकरते हैं और यह पूजन उस महात्माको प्रियतर है १४ जो पुरुष इस महात्माके लिंगस्वरूपकोभी पूजन करताहै वह सदैव लिंगका पूजन करनेवाला बड़ी लक्ष्मीको भोगताहै १५ ऋषि देवता गन्धर्व्व और अप्सराओंने भी उस ऊंचे १६ नियत लिंगको पूजाहै इसी से उसके पूजन करने से वह महेश्वरजी प्रसन्नहोतेहैं वह भक्तोंकाप्यारा प्रस-न्नचित्त होकर सुखको देताहै १७ वही देवता नाशको करताहुआ श्मशानों में निवास करताहै जो मनुष्य बीरस्थानके सेवन करनेवाले हैं वह वहीं उनका पूजन करते हैं १८ वही इस लोकमें शरीरवर्त्ती होकर विषयों में प्रवृत्तहोकर मृत्युहै वही जीवों के शरीर में प्राण अपान नामवायुहै १९ उसके घोर और प्रकाशमान रूप असंख्यहैं लोकमें इसके जिन २ रूपोंको पूजतेहैं उनरूपोंको वेदपाठी ब्राह्मणों ने जानाहै २० इसकी महानता ईश्वरता और कर्मों से इसके अनेक सार्थकनाम देवतालोग कहते हैं २१ वेदपाठी ब्राह्मणों ने वेदमें इसकी शतरुद्री को जानाहै और व्यासजीने भी जो इस महात्मा का उपस्थान बर्णन किया है उसको भी जाना २२ वह सब लोकोंका दाताहै और महान् बिश्वरूप कहा जाताहै ऋषि लोग और अन्य ब्राह्मण लोग इसको सब से ज्येष्ठवर्णन करते हैं २३ इस देव-ताओं के आदिभूतने मुखसे अग्निको उत्पन्न किया यह बहुत प्रकारके ग्रहोंसे ग्रसितकियेहुये प्राणोंको भी निकालताहै यह पवित्रात्मा रक्षाका आश्रय महे-श्वर शरणागतोंको त्यागनहीं करताहै यही ईश्वर आयुर्द्दा नीरोगता ऐश्वर्य्य और अनेक बड़ेबड़े २४।२५ अभीष्ट मनुष्यों को देताहै और फिर लौटाभी लेता है और इन्द्रादिक देवताओं में भी इसीका ऐश्वर्य्य कहाजाताहै २६ यही तीनों लोक के शुभाशुभका कारणहै अर्थात् शुभाशुभ कर्मोंका फल देनेवाला है फिर कामनाओं का ईश्वर होनेसे सबका ईश्वर कहाजाताहै २७ यही लोकोंका महे-श्वर है और बड़े २ देवताओंका भी ईश्वरहै इसी ने अनेक प्रकार के रूपोंसे इस

विश्व संसारको व्याप्त कियाहै २८ समुद्रमें जो बड़वानल नाम अग्निहै वह इस देवता का मुखहै २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेमहेश्वरमाहात्म्यंनामशतोपरिद्विषष्टितमोऽध्यायः १६२

एकसौतरेसठका अध्याय ॥

बैशम्पायन बोले कि देवकीनन्दन श्रीकृष्णजी के इस बचन के कहने पर फिर युधिष्ठिरने भीष्मपितामहसे प्रश्नकिया १ कि हे सब धर्मधारियों में श्रेष्ठ बड़े बुद्धिमान् पितामह निर्णय अर्थात् ठीक निश्चय अथवा प्रत्यक्ष आगम अर्थात् निश्चय ज्ञान इनदोनों में धर्म्मका कारण कौन है २ भीष्मजी बोले कि हे ज्ञानी इसमें मेरे मतसे किसीप्रकारका संदेहनहीं है यह तुमने मुझसे अच्छा प्रश्नकिया है इसको मैं कहताहूं ३ इसमें सन्देह होना तो सहजहै परन्तु उसका निर्णय कठिनहै जिसमें संशय दिखाई देताहै वह बहुत देखागया और सुनागयाहै अपने को बुद्धिमान् माननेवाले तर्कना करनेवाले मनुष्य प्रत्यक्ष कारणको भी देखकर संदेह करतेहैं कि यह इसप्रकार नहीं है और अपने संशयको सच्चामानतेहैं ४।५ और जो अपने को पण्डित माननेवाले मनुष्य हैं वह उसमें निश्चय करलेते हैं हे भरतवंशी फिर जो तुम एक निषेधही को कारण मानतेहो और जानना चाहतेहो कि वह क्याहै ६ तो सुनो कि उस मनुष्यसे भी उसका देखना बहुत काल में संभव होसक्ताहै जो कि योगाभ्यासी निरालस्य बहुत प्रकार की प्राणयात्रा का विचार करनेंवाला होकर ७ उसमें आप प्रवृत्तहोय न कि दूसरे मनुष्य से वृत्तान्त के अन्तको पाकर उत्तम ज्ञान ८ और सम्पूर्ण संसार की बड़ी ज्योति प्राप्त होती है हे राजा सिद्धान्त और वृत्तान्त दोनोंही से उसका प्राप्त करना होसक्ताहै जो वात पकड़ने और बन्धनमें नहीं आसक्ती है उसके कहने को कभी उत्साह न करे ९ युधिष्ठिर बोले कि लोककीसिद्धी प्रत्यक्षहै और शास्त्रको आगे रखनेवाला लोक है श्रेष्ठ लोगोंका आचार बहुत प्रकारकाहै हे पितामह उसको मुझसे कहो १० भीष्मजी बोले कि बलवान् और दुर्बुद्धी लोगोंसे नाशरूप धर्म का स्थापन युक्तिपूर्व्वकही करना योग्यहै क्योंकि उस धर्म्म के स्थापनको काल नष्ट करदेताहै ११ हे युधिष्ठिर जैसे कि तृणों से आच्छादित कूप होताहै उसी प्रकार अधर्म भी धर्म्मसेयुक्त होताहै तब वह सदाचार उन अधर्मियों से बिनाश

को पाताहै उसको मुझसे अच्छीतरह से सुनो १२ जो सदाचार से रहित वेदके त्यागी धर्म्म के शत्रुरूप निर्बुद्धी मनुष्य आचार को भ्रष्ट करते हैं उन्हीं लोगों में ऐसा संशय कहा गयाहै १३ साधुओं के मध्य में जो शास्त्र विधिवाले सदैव अति कष्टवान् होकर भी अत्यन्त तृप्तहैं उनकी उपासनाकरके उनसे पूछो क्योंकि वही श्रेष्ठ पुरुष प्रमाणहैं जो पुरुष लोभ मोहके अनुसार कर्मोंका करने वाला काम और अर्थ को त्यागकरके धर्म्मको अच्छीरीति से जानताहै उसकी उपासना करो और उसीसे पूछो १४।१५ उनलोगोंका वेदपाठ यज्ञ व्रत अथवा जप नाम कर्म बिनाश को नहीं पाताहै आचार कारण प्रत्यक्ष यह तीनों मिल कर यज्ञधर्म्म कहाजाताहै १६ युधिष्ठिर बोले कि फिर भी मुझ अथाह समुद्र के अपारदर्शीकी बुद्धि सन्देहोंसे मोहको प्राप्तहोती है १७ वेदप्रत्यक्ष आचार जो यह तीनों प्रमाणहैं और उनकी पृथक्ता भी पाई जाती है फिर यह तीनों किस प्रकार एकधर्मरूप होसक्ते हैं १८ भीष्मजी बोले कि हे राजा बलवान् और दुर्बुद्धी मनुष्यों से बिनाश कियेहुये धर्म्मको जो तुम ऐसा बिचारतेहो कि उसधर्म्म का बिचार तीनप्रकारका है १९ तो यह जानो कि तीनप्रकारसे धर्मका धारणकरना एकही धर्महै इनतीनोंकी पृथक्ता मानना मेरामत नहीं है २० तीनोंका जैसा२ मार्ग बर्णन कियाहै उसको उसीप्रकार अभ्यासकरो तर्कसे धर्मकी परीक्षाकरना उचित नहीं है २१ हे भरतर्षभ इस धर्म्म में तुझको कभी सन्देह न करनाचाहिये अज्ञान और अन्धेके समानहोकर वेदके बचनों में सन्देह न करनेवाला होकर मैं जो २ कर्म अब तुमसे कहताहूं उनको मतकरना २२ हे ब्रह्मज्ञानी युधिष्ठिर अ-हिंसा सत्य बोलना क्रोधसेबर्जित और दानकरना इनचारोंकाही अभ्यास करो यही प्राचीनधर्म है २३ बापदादों के योग्य जो प्रसिद्धरीति ब्राह्मणों के लिये उ-चितहै उसीको करो हे महाबाहो यह ब्राह्मण धर्मका उपदेश करनेवाले हैं २४ जो अज्ञानी मनुष्य प्रमाणको अप्रमाण करताहै वह प्रमाणताकेयोग्य नहीं है किंतु बादी है २५ सत्कारपूर्वक श्रेष्ठपूजनों से ब्राह्मणोंका भी सेवनकर उनको ऐसा जानो कि इन्हीं में सबलोक नियतहैं २६ युधिष्ठिर बोले कि जोलोग धर्मको दोष लगातेहैं और इसधर्मको काममें लाते हैं ऐसे प्रकारके लोग कहांजाते हैं उनका वृत्तान्त आप बर्णन कीजिये २७ भीष्मजी बोले रजोगुण तमोगुण से ढकेचित्त और धर्मको दोष लगानेवाले मनुष्य नरकको जाते हैं २८ हे महाराज सत्य और

सत्य आचरणों में प्रवृत्त जो सन्तलोग सदैव धर्मका अभ्यास करते हैं वह स्वर्ग-भोगी हैं २६ गुरुकी उपासना से धर्मही उनकी गतिरूप होताहै जो धर्मको अ-भ्यास करते हैं वह देवलोक को पाते हैं ३० लोभ क्रोधसे रहित धर्मके करनेवाले मनुष्य अथवा देवताके अर्थ शरीर को कष्टदेकर सुखपूर्व्वक वृद्धिको पाते हैं ३१ हे पुत्र ज्ञानी ब्राह्मण लोगोंने धर्मकोही श्रेष्ठ कहाहै वह लोग धर्मसेही ईश्वर की ऐसे उपासना करते हैं जैसे कि फल भोजन करनेवाले मनुष्य चित्तसे पके फल का सेवन करते हैं ३२ युधिष्ठिर बोले कि नीच मनुष्योंका मनकैसाहै साधु क्या करते हैं और सन्त वा असन्तोंका क्या लक्षणहै इस सब वृत्तान्तको आप मुझसे कहिये ३३ भीष्मजी बोले कि असाधुलोग दुष्टकर्मी निर्भय और अप्रियमुख हो-तेहैं और साधूलोग प्रसन्नमन होते हैं यही उनका शुभ लक्षणहै ३४ हे राजेन्द्र धर्मात्मा मनुष्य राजमार्ग गोशाला और अनाज आदिमें मूत्र बिष्ठाको नहीं डालते हैं ३५ साधू लोग देवता पितृ भूत अतिथि और कुटुम्बको भोजन देकर शेष बचेहुये को आप भोजन करते हैं भोजन करते में बार्त्तालाप नहीं करते और जलसे भीजेहुये हाथ पैरों से नहीं सोते हैं ३६।३७ जो मनुष्य अग्नि बैल देवता गोशाला चौराहा और धर्मात्मा वृद्ध ब्राह्मण को दक्षिणावर्त्ती करते हैं और जो वृद्ध भाराक्रांत स्त्री ग्रामस्वामी सर्प ब्राह्मण गौ और राजाको मार्ग देते हैं वह साधू हैं ३८ उसीप्रकार शिष्टाचार आदर और सत्कार करनेवाला मनुष्य अतिथि दास कुटुंबी और शरणकी इच्छारखनेवाले इत्यादि सबप्रकारके मनुष्यों का स्वागत पूंछनेवाला और रक्षक होताहै ३९ और प्रातःकाल सायंकालके समय देवनिर्मित भोजन को देताहै यह दोनों समयके भोजन व्रतकी विधि है ४० जैसे कि अग्नि देवता होमके समय मुहूर्त्त बाट देखता है उसीप्रकार स्त्रीभी ऋतुकाल की बाट देखा करती है ४१ जो पुरुष दूसरेकी स्त्रीसे संयोग और भोग नहीं करता है उसको ब्रह्मचर्य्य व्रतवाला कहते हैं अमृत गौ और ब्राह्मण यह तीनों समानहैं ४२ इसी हेतुसे सदैव गौ और ब्राह्मणका बुद्धिके अनुसार पूजन करे और यजुर्वेदकी ऋचाओं से संस्कार कियेहुये मांसखाने में दोष नहीं होता है ४३ अपने देश वा परदेशमें अतिथिको क्षुधित न रक्खे वेदपाठ नाम कर्मको सफलकरके गुरूको दक्षिणा देना उचितहै ४४ दण्डवत् और पूजनकरके गुरूको आसन देना योग्यहै गुरूके पूजन करने से शरीरकी आयुको और लक्ष्मी को

प्राप्तकरके शरीर की शोभा को पाते हैं ४५ वृद्धलोगों की सदैव प्रतिष्ठा करना योग्यहै कभी उनको कामके पूरे करने के लिये खड़ेहोनेपर आप न बैठे इन सब रीतों से मनुष्य की आयु नष्ट नहीं होती है ४६ जो मनुष्य नंगी स्त्री और नंगे पुरुषको कभी नहीं देखताहै वह भोजन और स्त्री के सम्भोगको भी सदैव गुप्त करे ४७ तीर्थों के गुरू तीर्थही हैं पवित्र बस्तुओं में हृदय पवित्रहै शास्त्रों में उत्तम ज्ञान है सन्तोष उत्तम सुखहै ४८ प्रातःकाल सायंकाल के समय वृद्धों के बचनोंको सुने मनुष्य सदैव वृद्धोंकी सेवासे शास्त्रके ज्ञानको पाताहै ४९ वेदपाठ और भोजनमें दाहिनेहाथको ऊंचारक्खे और अपने मनबाणी और इंद्रियों को सदैव अपने स्वाधीन रक्खे ५० संस्कारकी हुई पायस अर्थात् खीर यवागू कृशरनाम हव्य और पितृदेवताओंका अष्टिकाश्राद्ध और खीरआदि से ग्रहों का पूजन यह नित्यकर्म है ५१ हजामत बनवाने में मंगलबचन छींक लेनेवालों को आशीर्बादात्मक दीर्घायुहोने का बचन कहना और रोगियों को पूर्णायु के होनेका आशीर्बाद देकर प्रसन्न करना सब मनुष्योंको उचितहै ५२ आपत्ति में पड़ाहुआ भी कभी वृद्ध मनुष्यको तू का शब्द न कहे तू शब्दका कहना और मारडालना यह दोनों बुद्धिमानोंकी बुद्धिसे समानहैं ५३ अन्य बराबरकी अवस्थावाले और शिष्यलोगोंको भी शुभ आशीर्बाद देना योग्यहै पापकरनेवाले मनुष्यका हृदय सदैव पापकोही कहताहै ५४ असाधुलोग जान बूझकर किये हुये कर्मको गुप्त करते हैं वृद्धलोगों में गुप्त करनेवाले वह पुरुष सबके देखतेहुये ही नाशको पाते हैं ५५ मुझको न कोई मनुष्य देखते न कोई देवता देखते हैं यह बिचारकरके पापों से ढकाहुआ पापीमनुष्य पापकेही सम्मुख ऐसे वर्त्तमान होताहै ५६ जैसे कि ब्याजका खानेवाला मनुष्य दिनके भेदों के समयमें ब्याज की प्रतीक्षा करताहै और धर्म्म से ढकाहुआ पाप धर्म्मकोही वृद्धि करताहै ५७ जैसे कि जलमें डूबाहुआ निमक गुप्त होजाताहै उसीप्रकार प्रायश्चित्तसे ताड़ित वा घायल पापभी शीघ्र नाश होजाता है ५८ इसी हेतुसे पाप को गुप्त न करे क्योंकि गुप्त कियाहुआ पाप बड़ीवृद्धि को पाताहै मनुष्यको पापकरके साधुओं के मध्य में कहना योग्यहै क्योंकि साधुलोग पापको दूर करते हैं ५९ आशा करके इकट्ठा कियाहुआ धन समयपरही भोगाजाताहै उस शरीरधारी के मरने पर उसके संचितधन को अन्यलोगही प्राप्त करते हैं ६० ज्ञानीमनुष्यों ने सब

जीवोंका धर्म मानसीही कहाहै इसीकारण सब जीव धर्म्म में नियत होते हैं ६१ अकेला धर्मको करे कभी अपने धर्म्मको प्रकट न करे जो धर्म्मकोही भोगते हैं वह धर्मका ब्योपार करनेवाले हैं ६२ देवताका पूजन दंभ अर्थात् पाखंडसे रहित होकर करे और गुरुओंका पूजन और सेवन निश्छलतासे करे परलोकमें आनन्द देनेवाले धनको इकट्ठाकरे और पात्रहीको दान देना योग्यहै ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशतोपरित्रिषष्टितमोऽध्यायः १६३ ॥

एकसौचौंसठका अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले कि अत्यन्त पराक्रमी पुरुष भी विना प्रारब्ध के धनको नहीं पाताहै और अत्यन्त दुर्बल अज्ञान मनुष्य भी प्रारब्धवान् होने से धन आदि मनोरथों को पाताहै १ बड़े उपाय के करनेपर भी समय के आये विना कुछ भी नहीं प्राप्त करसक्ताहै जब लाभका समय आताहै तब विनाउद्योग कियेभी बहुत से धनको पाताहै २ सैकड़ों मनुष्य ऐसे देखने में आते हैं जो अनेक उपाय करनेपर भी फलसे रहितहैं और विना उद्योगके वृद्धि पानेवाले भी बहुतसे मनुष्य दिखाई देते हैं ३ जो मनुष्य उपाय करने में समर्थहोय वह सबफलोंको पावे हे भरतर्षभ जो वस्तु मनुष्यों के मिलने के योग्य नहीं है उसको प्राप्त न करसके ४ ऐसे उपाय करनेवाले मनुष्यभी जोकि सैकड़ों उपायों से धन आदिको खोजतेहैं वह निष्फल दिखाई देते हैं और कोई २ धनादिके न खोजनेपरभी धनसे सुखी दिखाई देते हैं ५ मनुष्य नहीं करने के योग्य कर्म्मको भी बारम्बार करके निर्धन दिखाई देतेहैं और कोई अपने कर्ममें नियत मनुष्य भी धनाढ्य दिखाई देते हैं६ कोई नीतिशास्त्रों को पढ़कर नीतियुक्त नहीं दिखाई देताहै और अनभिज्ञ किस हेतुसे प्रधानताको प्राप्तहोताहै ७ विद्वान् अविद्वान् धनी और दुर्मति भी मनुष्य हैं जो मनुष्य विद्याको प्राप्तकरके सुखको पावै ८ उसदशामें विद्वान् मनुष्य जीविकाके निमित्त अविद्वान् मूर्खकी ऐसे शरणको न लेवे जैसेकि मनुष्य जलको पाकर अपनी तृषाको विजय करताहै ६ इसीप्रकार विद्यासेभी मनोरथोंका सिद्ध करनेवाला होताहै मनुष्य विद्याको त्याग न करे सैकड़ों बाणोंसे घायल मनुष्य भी विना समयके नहीं मरताहै समयके तृणाग्रभागसेभी स्पर्श कियाहुआ मृत्यु से नहीं बचसक्ता १० भीष्मजी बोले कि कर्मके प्रारम्भ का चाहनेवाला मनुष्य

धनको नहीं प्राप्तकरे किन्तु कठिन तपस्याको करे क्योंकि बिना बोयाहुआ नहीं उपजताहै ११ दान करने से भोगी होताहै वृद्धोंकी सेवा करने से शास्त्रज्ञ और बुद्धिका स्वामी होताहै ज्ञानीलोग कहते हैं कि हिंसा न करने से बड़ी अवस्था वाला होताहै १२ इसीसे दानकरे किसीसे याचना न करे धर्मके अभ्यासी लोगों का भी पूजनकरे मधुरभाषी सबका प्रियकर्त्ता शान्त और सबजीवों की हिंसासे रहित होय १३ हे युधिष्ठिर जब उत्पत्तिका कारणरूप कर्म्म डांस कीट और चेंटियों तक के सुख दुःखमें प्रमाणहै तब इसीप्रकार अपनाभी सुख दुःख जानकर स्थिरचित्त होना योग्यहै १४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशतोपरिचतुष्षष्टितमोऽध्यायः १६४ ॥

एकसौपैंसठका अध्याय ॥

भीष्मजी बोले कि जो शुभाशुभ कर्म कियाजाताहै वा दूसरेसे करवायाजाता है और जो पूराहोनेवाला वा न पूरा होनेवालाहै उन शुभाशुभ कर्म्मों मेंसे किये हुये शुभकर्मपर तो बिश्वासकरे और अशुभ कर्मपर नहीं विश्वासकरे अर्थात् यह नहीं जाने कि यह मेरा काम सफल करेगा १ हरसमय में कालही पोषणकरताहै और कालही दण्डदेताहै और जीवोंकी बुद्धिमें प्रवेशकरके धर्म अधर्मको जारी करताहै २ जब धर्मके फल दर्शनसे उसकी बुद्धि धर्मको उत्तम माननेवाली होय तब धर्ममें चित्त लगानेवाला यह पुरुष उसमें बिश्वासकरे जो स्थिरबुद्धी नहीं है वह धर्मफल में बिश्वास नहीं करे ३ जीवोंका यह बिश्वास करनाही ज्ञानी होने का लक्षणहै करने और न करने के योग्य कर्मोंका ज्ञाता और कालसे संयुक्त मनुष्य योग्य कर्मको भी फलकी इच्छासे रहितकरे ४ जैसे कि ऐश्वर्यवान् मनुष्य अपने कल्याण में कर्म्मकर्त्ता होते हैं परन्तु अपवित्रात्मा नहीं करते, इसीप्रकार धर्मके अभ्यासी लोग इसलोक में आत्माको आत्मासे पूजते हैं ५ काल किसी दशामें भी धर्मको अधर्मरूपसे नहीं देखताहै इसी हेतुसे धर्म्मचारी पुरुषको अत्यन्त पवित्रात्मा जाने ६ बिस्तार पानेवाला अधर्म इसकालसे रक्षित होकर धर्म के स्पर्श करनेको ऐसे समर्थ नहीं होसक्ताहै जैसे कि प्रकाशमान प्रज्वलित अग्निको कोई स्पर्श नहीं करसक्ता ७ यह दोनों धर्म्मसे करनेके योग्यहैं क्योंकि धर्म्मही संसारमें विजयका देनेवालाहै और वही धर्म तीनों लोकोंका भी कारण

होताहै ८ कोई २ पुरुष ज्ञानी मनुष्य के सत्संग से धर्म्म प्राप्त करसक्ताहै हरएक नहीं प्राप्तकरसक्ताहै क्योंकि संसार के भय दूर करनेके निमित्त बड़े २ उपदेश कियेहुये धर्मके अभ्यासी पंडितलोग भी उसकर्म को नहीं करते हैं ६ किसीको यह विश्वासहै कि मैं शूद्रहूं चारोंआश्रम के धर्मों के आचरण करनेका मुझे अधिकार नहीं है और कोई साधू छलसे रहित हैं और अपने अधिकार के समान धर्मको करते हैं १० अब मैं चारोंवर्ण के धर्म्मको लक्षणों सहित मुख्यतापूर्व्वक वर्णन करताहूं जिसमें पंचतत्त्वोंसे उत्पन्न एकसी आत्मावाले सब जीवोंके लोक धर्म और धर्म में जो मुख्यता और जैसे कि जीव बनावटके धर्म में एकसी रूपता को प्राप्तकरते हैं वह सब उस में ब्यौरेवार है ११ । १२ लौकिक धर्म्म अध्रुव अर्थात् नाशवान् क्यों हैं और अलौकिक धर्म ध्रुव अर्थात् अविनाशी क्यों हैं हेतात जो निष्काम कर्म्म है उसी में सनातन धर्म है १३ एकसे शरीर और आत्मावाले सबजीवोंका सङ्कल्प जो कि धर्म्म से युक्त होय अर्थात् निष्काम होय उसका उदय कैसे होताहै उसका यह उत्तरहै कि संकल्पसे शेषबचाहुआ कर्महीं गुरुहै अर्थात् वह धर्म के पराक्रम से आप उदय होताहै १४ ऐसा होनेपर धर्मसेवन अर्थात् कर्म के फलके भोगमें जीवों का दोष नहीं है क्योंकि पशुपक्षी की योनियों में वर्त्तमान जीवोंका धर्महीं बड़ा माना गया है १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेशतोपरिपंचषष्टितमोऽध्यायः १६५ ॥

अथ नाममालाप्रारम्भः ॥

वैशम्पायनउवाच ॥ शरतल्पगतंभीष्मं पाण्डवोऽथकुरूद्वह ॥ युधिष्ठिरोहितप्रेप्सुरपृच्छत्कल्मपापहम् १ युधिष्ठिरउवाच ॥ किंश्रेयःपुरुषस्येह किंकुर्वन्सुखमेधते ॥ विपाप्मासभवेत्केन किंवाकल्मषनाशनम् २ वैशम्पायनउवाच ॥ तस्मैशुश्रूषमाणाय भूयःशान्तनवस्तदा ॥ दैवंवंशंयथान्यायमाचष्टेपुरुषर्षभ ३ भीष्मउवाच ॥ अयंदैवतवंशोवै ऋषिवंशसमन्वितः ॥ त्रिसंध्यंपठितःपुत्र कल्मषापहरःपरः ४ यदह्नाकुरुतेपापमिन्द्रियैःपुरुषश्चरन् ॥ बुद्धिपूर्वमबुद्धिर्वा रात्रौयच्चापिसंध्ययोः ५ मुच्यतेसर्व्वपापेभ्यः कीर्त्तयन्वैशुचिःसदा ॥ नान्धोनबधिरःकाले कुरुतेस्वस्तिमान्सदा ६ तिर्य्यग्योनिंनगच्छेच्चनरकंसंकराणिच ॥ नचदुःखभयंतस्य मरणेसनमुह्यति ७ देवासुरगुरुर्देवः सर्वभूतनमस्कृतः ॥ अचिंत्योऽथाप्यनिर्देश्यः सर्वप्राणोह्ययोनिजः ८ पितामहोजगन्नाथः सावित्रीब्रह्मणःसती ॥ वेदभूरथकर्त्ता

च विष्णुर्नारायणःप्रभुः ६ उमापतिर्विरूपाक्षःस्कन्दःसेनापतिस्तथा ॥ विशाखो हुतभुग्वायुश्चन्द्रसूर्य्यौप्रभाकरौ १० शक्रःशचीपतिर्देवो यमोधूमोर्णयासह ॥ वरुणःसहगौर्याच सहऋद्ध्याधनेश्वरः ११ सौम्यागौसुरभिर्देवी विश्रवाश्चमहानृषिः ॥ संकल्पःसागरोगङ्गास्तवंत्योथमरुद्गणः १२ बालखिल्यास्तपःसिद्धाः कृष्णद्वैपायनस्तथा ॥ नारदःपर्वतश्चैव विश्वावसुर्हाहाहूहूः १३ तुंबरुश्चित्रसेनश्चदेवदूतश्च विश्रुतः ॥ देवकन्यामहाभागा दिव्याश्चाप्सरसांगणाः १४ उर्वशीमेनकारम्भा मिश्रकेशीरलंबुषा ॥ विश्वाचीचघृताचीच पंचचूडातिलोत्तमा १५ आदित्यावसवोरुद्राः साश्विनःपितरोपिच ॥ धर्म्मश्रुतंतपोदीक्षा व्यवसायःपितामहः १६ शर्वर्योदिवसाश्चैव मारीचःकश्यपस्तथा ॥ शुक्रोबृहस्पतिर्भौमो बुधोराहुःशनैश्चरः १७ नक्षत्राण्यृतवश्चैव मासाःपक्षाःसवत्सराः ॥ वैनतेयाःसमुद्राश्चकद्रुजाःपन्नगास्तथा १८ शतद्रुश्चविपाशाचचन्द्रभागासरस्वती ॥ सिन्धुश्चदेविकाचैव प्रभासंपुष्कराणिच १९ गङ्गामहानदीवेणाकावेरीनर्मदातथा ॥ कुलंपुनाविशल्याचकरतोयांबुवाहिनी २० सरयूर्गंडिकीचैव लोहितश्चमहानदः ॥ ताम्रारुणावेत्रवती पर्णाशागौतमीतथा २१ गोदावरीचवेणाच कृष्णावेणातथाद्रिजा ॥ दृषद्वतीचकावेरीर्वक्षुर्मंदाकिनीतथा २२ प्रयागंचप्रभासंच पुण्यंनैमिषमेवच ॥ तच्चविश्वेश्वरस्थानं यत्रतद्विमलंसरः २३ पुण्यतीर्थैसुकलिलं कुरुक्षेत्रंप्रकीर्त्तितम् ॥ सिंधूत्तमंतपोदानं जंबूमार्गमथापिच २४ हिरण्वतीवितस्ताचतथाप्लक्षवतीनदी ॥ वेदास्मृतिर्वेदवती मालवाथाश्ववत्यपि २५ भूमिभागास्तथापुण्या गंगाद्वारमथापिच ॥ ऋषिकुल्यास्तथामेध्या नद्यःसिंधुवहस्तथा २६ नदीभीमरथीचैव बाहुदाचमहानदी ॥ चर्मण्वतीनदीपुण्या कौशिकीयमुनातथा २७ माहेन्द्रवाणीत्रिदिवानीलिकाचसरस्वती ॥ नन्दाचापरनन्दाच तथातीर्थमहाह्रदः २८ गयाथफल्गुतीर्थंच धर्मारण्यंसुरैर्वृतम् ॥ तथादेवनदीपुण्या सरश्चब्रह्मनिर्मितम् २९ पुण्यंत्रिलोकविख्यातं सर्वपापहरं शिवम् ॥ हिमवान्पर्वतश्चैव दिव्यौषधिसमन्वितः ३० विन्ध्योधातुविचित्रांगस्तीर्थवानौषधान्वितः ॥ मेरुर्महेन्द्रोमलयः श्वेतश्चरजतावृतः ३१ शृंगवान्मंदरोनीलो निषदोदर्दुरस्तथा ॥ चित्रकूटोजनाभश्च पर्वतोगन्धमादनः ३२ पुण्यःसोमगिरिश्चैव तथैवान्येमहीधराः दिशश्चविदिशश्चैव क्षितिःसर्वेमहीधराः ३३ विश्वेदेवानभश्चैव नक्षत्राणिग्रहास्तथा ॥ पांतुनःसततंदेवाः कीर्त्तिताऽकीर्त्तितामया ३४ कीर्त्तयानोनरोह्येतान्मुच्यतेसर्वकिल्बिषैः ॥ स्तुवंश्चप्रतिनंदंश्च मुच्यतेसर्वतोभ

यात् ३५ सर्वसंकरपापेभ्यो देवतास्तवनिन्दकः ॥ देवतानन्तरंविप्रांस्तपसिद्धांस्तपोधिकान् ३६ कीर्त्तितान्कीर्त्तयिष्यामि सर्वपापप्रमोचनात् ॥ यवक्रीतोथरैभ्यश्च कक्षीवानौषिजस्तथा ३७ भृग्वंगिरास्तथाकरवो मेधातिथिरथप्रभुः ॥ वर्हीचगुणसम्पन्नः प्राचींदिशमपाश्रिताः ३८ भद्रांदिशंमहाभागा उल्मुचुःप्रमुचुस्तथा ॥ मुमुचुश्चमहाभागः स्वस्त्यात्रेयश्चवीर्य्यवान् ३९ मित्रावरुणयोःपुत्रस्तथागस्त्यःप्रतापवान् ॥ दृढायुश्चोर्ध्वबाहुश्च विश्रुतावृषिसत्तमौ ४० पश्चिमांदिशमाश्रित्य पराधंतेनिबोधतान् ॥ उषंगुःसहसोदर्य्यैः परिव्याधश्चवीर्य्यवान् ४१ ऋषिर्दीर्घतमाश्चैव गौतमःकाश्यपस्तथा ॥ एकतश्चद्वितश्चैव त्रितश्चैवमहानृषिः ४२ अत्रेःपुत्रश्चधर्मात्मा तथासारस्वतःप्रभुः ॥ उत्तरांदिशमाश्रित्य पराधंतेनिबोधतान् ४३ अत्रिर्वशिष्ठःशक्तिश्च पाराशर्य्यश्चवीर्य्यवान् ॥ विश्वामित्रोभरद्वाजो जमदग्निस्तथैवच ४४ ऋचीकपुत्रोरामश्च ऋषिरौद्दालकिस्तथा ॥ श्वेतकेतुःकोहलश्च विपुलोदेवलस्तथा ४५ देवशर्माचधौम्यश्च हस्तिकाश्यपएवच ॥ लोमशोनाचिकेतश्च लोमहर्षणएवच ४६ ऋषिरुग्रश्रवाश्चैव भार्गवश्च्यवनस्तथा ॥ एषवैसमवायश्च ऋषिदेवसमन्वितः ४७ आद्यःप्रकीर्त्तितोराजन्सर्वपापप्रमोचनः ॥ नृगोययातिर्नहुषो यदुःपूरुश्चवीर्य्यवान् ४८ धुंधुमारोदिलीपश्च सगरश्चप्रतापवान् ॥ कृशाश्वोयौवनाश्वश्च चित्राश्वःसत्यवांस्तथा ४९ दुष्यंतोभरतश्चैव चक्रवर्त्तीमहायशाः ॥ पवनोजनकश्चैव तथादृष्टरथोनृपः ५० रघुर्नरवरश्चैव तथादशरथोनृपः ॥ रामोराक्षसहावीरः शशविन्दुर्भगीरथः ५१ हरिश्चन्द्रोमरुत्तश्च तथादृढरथोनृपः ॥ महोदर्योह्यलर्कश्च ऐलश्चैवनराधिपः ५२ करंधमोनरश्रेष्ठः कध्मोरश्चनराधिपः ॥ दक्षोंवरीषकुकुरौ रैवतश्चमहायशाः ५३ कुरुःसंवरणश्चैव मांधातासत्यविक्रमः ॥ मुचुकुन्दश्चराजर्षिर्जह्नुर्जाह्नविसेवितः ५४ आदिराजःपृथुर्वैन्यो मित्रभानुःप्रियंकरः ॥ त्रसदस्युस्तथाराजा श्वेतोराजर्षिसत्तमः ५५ महाभिषश्चविख्यातो निमिराजातथाष्टकः ॥ आयुःक्षुपश्चराजर्षिः कक्षेयुश्चनराधिपः ५६ प्रतर्दनोदिवोदासः सुदासःकोशलेश्वरः ॥ ऐलोनलश्चराजर्षिर्मनुश्चैवप्रजापतिः ५७ हविध्रश्चपृषध्रश्च प्रतीपःशंतनुस्तथा ॥ अजःप्राचीनवर्हिश्च तथेक्ष्वाकुर्महायशाः५८ अनरण्योनरपतिर्जानुजंघस्तथैवच ॥ कक्षसेनश्चराजर्षिर्येचान्येनानुकीर्त्तिताः ५९ कल्यमुत्थाययोनित्यं संध्येद्वेऽस्तमयोदये ॥ पठेच्छुचिरनावृत्तः सधर्मफलभाग्भवेत् ६० देवादेवर्षयश्चैवस्तुताराजर्षयस्तथा ॥ पुष्टिमायुर्यशःस्वर्गं वि

धास्यन्तिममेश्वरः ६१ माविघ्नंमाचमेपापं माचमेपरिपंथिनः ॥ ध्रुवोजयोमेनित्यः स्यात्परत्रचशुभागतिः ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेवंशानुकीर्त्तनंनामशतोपरिषट्षष्टितमोऽध्यायः १६६॥

एकसौछाछठका अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि अपना और दूसरों का हित चाहनेवाले कौरववंशी पाण्डव युधिष्ठिरने बाणशय्यापर वर्त्तमान भीष्मजी से पापोंका नाश करनेवाला कर्म्म पूछा १ युधिष्ठिर बोले कि इसलोकमें मनुष्य का क्या कल्याणहै किस कर्म के करने से सुखपूर्व्वक वृद्धि पाताहै और पापों से निवृत्त होताहै अथवा कौन-सा कर्म पापका नाशकारकहै २ फिर वैशम्पायन कहते हैं कि हे पुरुषोत्तम तव भीष्मजी ने उस युधिष्ठिर से न्यायके अनुसार देवबंशका वर्णन किया ३ भीष्म जी बोले कि हे पुत्र ऋषिवंशसेयुक्त इस देववंशको जो तीनों संध्याओं में पाठ करे वह महाउत्तमहोकर अपने पापों को नाश करताहै यही पाठ अत्यन्त उत्तम और सब प्रकार के पापोंका विध्वंस करनेवाला है ४ मनुष्य जानकर वा बिना जानकर अहर्निश वा दोनों संध्याओंमेंभी जिस पापकर्मको करताहै ५ वह पवित्रहोकर सदैव उसका कीर्त्तन करनेसे पापोंसे मुक्त होताहै जो समय पर करता है वह अंधा और वहरा नहीं होताहै और सदैव प्रसन्न रहताहै ६ इसके बिशेष पशु पक्षी आदि की योनिको भी नहीं पाताहै न कभी दुःखका भय होताहै और न कभी शरीरत्यागके समय मोहको पाताहै ॥

भीष्मउवाच रामगीतीछन्द ॥

देवतनके ऋषिनकेअरुनृपनकेवरनाम। कहतहौंमैंतुमहिंभूपति परमप्रज्ञाधाम॥ जपैजिनकोहोत कल्मषदूरिसर्वमहान । भूरिआनँदहोत प्रापितधर्मवानसुजान ॥ बिधाता अरुविष्णुशङ्कर कार्त्तिकेयसशर्म । बिशिखिशिखि आदित्यमारुत चंद्र सुरपतिधर्म ॥ सहितगार्गीवरुण धूमोरणासहयमराय । सहित ऋध्याधनेश्वर अरु वालखिल्यसचाय ॥ सुरभिअरुऋषि बिश्रवाबरमहतप्रज्ञावान । व्यासनारद तथा पर्व्वत शुक्रपरमसुजान ॥ बृहस्पति बुधराहुकश्यप शनिसुऔनक्षत्र । अश्विनी सुतभौनअरुवसु अष्टपरमपवित्र ॥ तुंवरसुहाहाऔसुहूहू चित्रसेनसुजान । औ सुविश्वावसु महामति सुरसुगन्धर्वजान ॥ देवकन्या अप्सरा रंभादि सुन्दरिपर्म ।

औरबरबहु देवगणहैं मोदमानसधर्म ॥ विपाशाअरुचन्द्रभागा नदीसिंधुमहानि । नर्मदासरयू विशल्या सुरसरीसुखदानि ॥ वेत्रवति अरुगंडकी ताम्रारुणाअभि-राम । कृष्णवेणीतथवेणाभरीजलसोंमाम ॥ चक्षुऔमंदाकिनी त्यों अद्रिजाग-म्भीर । तिमिहिलोहित महानदवरतासुदोऊतीर ॥ नर्मदाकावेरिका विमलामहा अघहर्णि । देविकाअरुनदीपुण्या पुण्यमयतनकर्णि ॥ हिरण्वतिकापुच्छवति-का वेदस्मृतिसुअमन्द । चर्मण्वतिकाकौशिकी अरुभरीसलिलविलंद ॥ भीमरथि-का बाहुदा यमुनासुपावनरूप । सरस्वतिमाहेन्द्रवानी नीलिकासुअनूप ॥ तिमिहि नन्दाफल्गुत्रिदिवा भूमिभागाचारु । ब्रह्मसर अरु महाह्रदवर भरोनीरसुढारु ॥ ति-मिहि नैमिषपरमपुष्कर चारुधर्मारण्य । कलिलअरुकुरुक्षेत्रशिवसर अरुप्रयाग सुपुण्य ॥ विन्धअरुहिमवान भूधर मेरुनिषधमहान । गन्धमादन अंचनामसु चित्रकूटसुठान ॥ रजतपर्व्वतनीलदर्द्दुर मलयगिरि अभिराम । तिमिहिउन्नत सोमगिरिवर भरो औषधिमाम ॥ दिशाविदिशाभूमि भूरुह लतावृन्द अनूप । कहे तुमसोंतीर्थयहहम परमपावनभूप ॥ सुऋषिकक्षीवा न औषिज तथारैभ्यसधर्म । अंगिराभृगुकएवमेधातिथिसुतिमिही पर्म ॥ सुऋषिअरुवरहों सुगुणसोंभरोपरम सुजान । सुऋषिप्राचीदिशामें ये रहतहैं मतिमान ॥ उन्मुचू और प्रमूचुस्वस्त्य त्रेय वीरसुकाय । सुमूचुऔसुअगस्त्य ऊरधबाहुअरुसुदृढ़ाय ॥ रहतदक्षिण दि शामें येसुऋषि आनँदछाय । रहतभजनानन्दपूर्वक सकलविघ्नविहाय ॥ दीर्घ तम सुउखंगगौतमतथाकश्यप पर्म्म । परिव्याधसुतथा एकतद्वित्तत्रित्तसधर्म्म ॥ सारस्वतऔतिमिह सहसौन्दर्य्य ऋषिअभिराम । रहतपश्चिमदिशामें येसुऋषि वरबुधिधाम ॥ शक्तिअत्रिवशिष्ठपाराशर्य्य विश्वामित्र । भरद्वाजसधर्मअरु जम दग्निपरमपवित्र ॥ विपुलदेवलदेवशर्म्मा परशुरामसुजान । धौम्यकोहलहस्ति काश्यपच्यवनतेजसवान ॥ तिमिहिलोमशलोमहर्षणनाचिकेतसधर्म । श्वेतकेतु सुतिमिहिउग्रश्रवाभार्गवपर्म ॥ लियेतेइनसबनको अभिरामनामसुजान । जात ह्वैसबदूरिकिल्मषप्रभाहोतिमहान ॥ सुनहु अबतुमनृपनके वरनामवरबुधिधाम । महाकल्मषहरण आनँदकरण तेजसधाम ॥ नृपययातिसुनहुषयदुपुरुजनकति-मिहिकुशाश्व । कोशलेश्वरतथान्रृप अनरण्यरजचित्राश्व ॥ हरिश्चन्द्रनृपालरघु अरुभूपदशरथपर्म । रामराक्षस हरणअरु शशाविन्दुमरुतसधर्म ॥ भगीरथअरुऐल दृढ़रथमहोदयवलवान । करंधमकुरुमांधाताऔरदक्ष सुजान ॥ आदिश्रीमहिपाल

पृथुसहधर्म्म अरुमुचुकुन्द। मित्रभानसुजान औत्रसदस्युश्वेतनरेन्द ॥ महा-भिषनिमिआयुक्षुप अरुप्रतर्दनमहिपाल। दिवोदाससुदासशान्तनु अरुप्रतीप विशाल ॥ प्रियंकर प्राचीनवर्हि सुजानुजंघनरेश। कच्छसेनसुतथा वरइत्त्वाकु सूपसुवेश ॥ प्रातउठि अरुतिमिहि सायंकालमाहींनाम। लियेते इन सबनको अघमिटत अतिही माम ॥ विघ्न कौनहु होत नहिं औधर्म प्रापित होत। बढ़त आयुसकीर्त्तिनमें होतपुष्टि उदोत ॥

इतिश्रीमहाभारतेऽऽनुशासनिकेपर्व्वणिदानधर्मेवंशानुकीर्त्तनंनामशतोपरिषट्षष्टितमोऽध्यायः १६६॥

एकसौसड़सठका अध्याय॥

राजा जनमेजय ने प्रश्नकिया कि कौरवों के पालन पोषण करनेवाले शर-शय्यापर वर्त्तमान अर्थात् बीरशय्यापर सोनेवाले भीष्मजी के होनेपर और पाण्डवोंको इकट्ठे होजानेपर १ मेरे बड़े पितामह बड़े बुद्धिमान् युधिष्ठिरने धर्म-शास्त्रको सुनकर सब संशयों से निवृत्त हो २ दानविधिको सुनकर धर्म अर्थ के सन्देहों से रहितहोकर जो २ अन्य कर्म किये वह आप मुझसे कहने को योग्य हैं ३ वैशम्पायन बोले कि तदनन्तर उसराजाके मौनहोनेपर वह सब राजमण्डल एक मुहूर्त्त पर्यन्त ऐसा निश्चेष्ट हुआ जैसे कि बस्त्रपर खिंचाहुआ चित्रहोताहै ४ तब सत्यवती के पुत्र ब्यासजी ने एक मुहूर्त्त ध्यान करके उस शयन करनेवाले राजा भीष्मसे यह वचन कहा ५ हे राजा इस कौरवराज युधिष्ठिर ने सबभाइयों और सहचारी सहायक राजाओंसमेत स्थिरचित्ततापूर्व्वक दृढ़ बिश्वास को पाया ६ यह बुद्धिमान् राजा श्रीकृष्णजी समेत आपकेपास बर्त्तमानहै आपइस को नगर में जानेके निमित्त आज्ञादीजिये ७ भगवान् ब्यासजी के इस बचन को सुनकर राजा भीष्मजी ने युधिष्ठिर और उसके मंत्रियों को भी आज्ञादी ८ अर्थात् राजा भीष्मजीने उस युधिष्ठिर से यह मधुर बचन कहा कि हे राजापुरी में प्रवेश करो और तेरे चित्तका सब संताप निवृत्तहो ९ हे राजेन्द्र युधिष्ठिर तुम श्रद्धासे युक्त जितेन्द्रिय होकर राजा ययाति के समान बहुत अन्न और पूर्णद-क्षिणा रखनेवाले नानाप्रकारके यज्ञोंसे ईश्वरका पूजनकरो १० हे राजा क्षत्रिय-धर्म्म में प्रवृत्तहोकर तुम देवता पितरों को तृप्तकरो तुम्हारा बड़ा कल्याणहोगा और हे पुत्र तेरे चित्तका सब संताप दूरहोगा ११ सब प्रजाको प्रसन्नकरो और

राज्यके कार्यकर्त्ता नौकर चाकरोंको पारितोषिक और मधुर भाषणसे प्रसन्नकरो मित्रोंको सत्कार आदिसे योग्यताके अनुसार पूजन करो १२ हे तात इष्ट मित्र भाई बंधु तेरे सम्बन्धसे ऐसे जीविकाकरें जैसे कि पक्षीगण फलवान् वृक्षके चैतन्य स्थानपर वर्त्तमान होकर अपना जीवन करते हैं १३ हे राजा सूर्यके लौटने से उत्तरायण होनेपर मेरे शरीर त्यागके समय तुमको आना योग्यहै १४ इस वचनको सुनकर और बहुत प्रमाणकरके पितामह को दण्डवत् कर साथियों समेत राजा युधिष्ठिर हस्तिनापुर को गया १५ अर्थात् धृतराष्ट्र और पतिव्रता गान्धारीको आगेकरके सबऋषि भाई बान्धव श्रीकृष्ण १६ पुरबासी देशवासी और बृद्ध मंत्रियों समेत राजा युधिष्ठिर ने हस्तिनापुरमें प्रवेशकिया १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेयुधिष्ठिरपुरप्रवेशोनामशतोपरिसप्तषष्टितमोऽध्यायः १६०

एकसौअड़सठका अध्याय ॥

वैशम्पायन वोले कि इसकेपीछे राजायुधिष्ठिरने पुरबासी और देशवासियों को न्यायके अनुसार पूजकर घरजानेकी आज्ञादी १ उससमय राजा युधिष्ठिर ने उन स्त्रियोंको जिनके बीरपति और पुत्रमारेगये थे बहुत अभीष्टपदार्थों के देनेसे प्रसन्न और विश्वसित किया २ तव वह अभिषेक पानेवाला बड़ाज्ञानी नरोत्तम राजायुधिष्ठिर राज्यको प्राप्तकर और अच्छे २ विश्वासपात्र राज्यके कार्यकर्त्ताओं को नियत करके ३ और बड़े २ ज्ञानी वेदज्ञ शास्त्रज्ञ महात्मा ब्राह्मणोंसे आशीर्वादलेकर ४ पंचाशत्रात्रि नगरमें व्यतीतकरके भीष्मजीके समय और नियम को स्मरण किया ५ दक्षिणायनसे हटकर उत्तरायणमें आनेवाले सूर्यको देखकर याचक और ब्राह्मणों से परिवेष्टितहोकर वह राजायुधिष्ठिर हस्तिनापुर से बाहर निकला ६ वह कुन्तीनन्दन युधिष्ठिर घृत फूलमाला गन्ध पट वस्त्र चन्दन उत्तम अगर और कालीयकनाम कृष्णचन्दन ७ बृद्धों के योग्य माला और नानाप्रकारके रत्नोंको भीष्मजीके संस्कारके अर्थ पूर्व्व में भेजकर धृतराष्ट्र यशस्विनी गांधारी माताकुन्ती और पुरुषोत्तम भाइयोंको आगेकरके ८ । ९ बुद्धिमान् विदुर श्रीकृष्णजी युयुत्सु और सात्विकीको साथ लिये बड़े राजभोग और भाई बन्धु इष्टमित्र नाते रिश्तेदारों से युक्त सूतगणों से स्तूयमान युधिष्ठिर जिसके आगे भीष्मजी की अग्नि जातीथी १० । ११ उस सब सामानसमेत उस पुरसे बाहर

ऐसे निकला जैसे कि देवताओं का स्वामी इन्द्र निकलताहै हे राजऋषि इसके अनन्तर उसने राजा भीष्मपितामह को कुरुक्षेत्रमें १२ पाराशरजी के पुत्र व्यासजी नारद देवल असित १३ और मरने से शेष बचेहुये अन्य २ देशों के अनेक राजाओं से व्याप्त और रक्षकों से चारोंओर से रक्षित देखा १४ फिर वहां समीप जाकर वीरशय्यापर शयन करनेवाले भीष्मजी को देखा फिर धर्मराज युधिष्ठिर ने भाइयोंसमेत रथसे उतरकर १५ और शत्रुविजयी पितामह को प्रणामकरके व्यासादि ऋषिलोगों को दण्डवत्की और उन सबसे आशीर्बाद पाया १६ धर्म से च्युत न होनेवाले धर्म्मराज युधिष्ठिरने ब्रह्मरूप ऋत्विज और भाइयों समेत उस भरतर्षभ ऋषियों से व्याप्त बाणशय्यापर नियत भीष्मजीको पाकर १७। १८ फिर उस भाइयोंसमेत कौरव्यने शयन करनेवाले गांगेय भीष्मजी से यहवचन कहा कि हे गांगेय राजाभीष्मजी मैं आपका पौत्र युधिष्ठिरहूं आपको नमस्कार करताहूं १९ हे महाबाहो प्रभु जो आप मेरे बचनको सुनते हो तो आज्ञाकरिये कि मैं आपकी कौनसी सेवाकरूं हे राजा मैं समयपर आपकी अग्नियोंको लेकर आयाहूं २० आचार्य्य ऋत्विज ब्राह्मण मेरेभाई आपकापुत्र राजाधृतराष्ट्र २१ मंत्रियोंसमेत और पराक्रमी बासुदेवजी आपके सम्मुख बर्त्तमानहैं और मरने से शेषबचे राजालोग और सब कुरुजांगल देशवाले बर्त्तमानहैं २२ हे नरोत्तम नेत्रों को अच्छीरीति से खोलो और इन सबको देखो यहां जो कुछ करने के योग्य है वह सब मैंने कियाहै २३ आपने जैसा २ कहाथा वह सब समयपरही किया बैशम्पायनबोले कि बुद्धिमान् युधिष्ठिरके इसप्रकारके वचनोंको सुनकर भीष्मजी ने २४ अपने चारोंओर को बैठेहुये सब भरतबंशियों को देखा इसकेपीछे बड़े पराक्रमी सुष्टबक्का बादलके समान शब्दायमान भीष्मजीने उसकी बड़ी भुजाको पकड़कर समयपर यहबचन कहा कि हे कुन्तीनन्दन तुम अपने मंत्रियों समेत यहां प्रारब्धसे आयेहो २५।२६ हजारों किरणोंका स्वामी भगवान् सूर्य उत्तरायण गति में आया है अब तीक्ष्ण नोकवाले बाणों पर मुझ शयन करनेवाले की अट्ठावन रात्रि एकसौ वर्ष के समान व्यतीत हुई हैं २७ हे युधिष्ठिर यह चित्तविनोदक माघकामहीना बर्त्तमानहुआ इस शुक्लपक्ष नाम योग्यपक्ष के होने में तृतीयांशबाकी है २८ इसरीति से उस धर्मपुत्र युधिष्ठिर से भीष्मजी ने बचन को कहकर और धृतराष्ट्रको सम्मुख करके समयपर यहबचन कहा २९ हे राजा तुम

धर्मके ज्ञाताहो और सब अर्थ संशयोंका निर्णय करचुकेहो तुमने बड़े २ अनेक ज्ञानी ब्राह्मणोंकी उपासना करी है ३० तुम सब शास्त्र और धर्मोंको जानते हो और चारों वेदोंको सम्पूर्णतासे सांगोपांग समझते हो ३१ हे कौरव्य अब किसी प्रकारका शोच न करना चाहिये यह इसीप्रकार की होतव्यताथी तुमने व्यास जीसे देवताओं की गुप्तवार्त्ताओंको भी सुना ३२ हे राजा धृतराष्ट्र यह युधिष्ठिर आदि जैसे कि पांडुके पुत्रहैं उसीप्रकार धर्म से तेरे भी पुत्रहैं यह वृद्धोंकी सेवामें प्रवृत्तहैं उनको तुम भी धर्म्म में प्रवृत्तहोकर पोषण और पालन करो ३३ यह पवित्रात्मा धर्मराज युधिष्ठिर तेरी आज्ञामें नियतहोगा मैं इसको अत्यन्त करुणावान् और वृद्धों से प्रीति करनेवाला जानताहूं ३४ तेरे पुत्र दुर्बुद्धी क्रोध और मोहमें लिप्त ईर्षा से भरेहुये और दुराचारी थे उनका शोच करने के योग्य नहीं है ३५ वैशम्पायन बोले कि कौरव्य भीष्मजी ने ज्ञानी धृतराष्ट्र से इतना बचन कहकर महाबाहु वासुदेवजी से यहवचन कहा कि ३६ हे षड़ैश्वर्य्य के स्वामी देवों के ईश्वर देवासुरोंसे स्तूयमान त्रिविक्रम शंख चक्र गदाधारी तुमको नमस्कार है ३७ तुम सबजीवों में निवास करनेवाले हिरण्यात्मा पुरीरूप शरीरों में शयनकरनेवाले सबके कर्त्ता विराटरूप जीवरूप अनुरूप परमात्मा और सनातनहो ३८ स्त्री आदि परिग्रह न रखनेवाला मैं तेरा भक्त और तुझी में प्रवृत्तचित्तहूं हेहृदयकमल में नियत पुरुषोत्तम आप सदैव रक्षाकरो ३९ हे पापों से छुटानेवाले बैकुंठ पुरुषोत्तम आप मुझे आज्ञादीजिये यह सब पांडव आपसे रक्षाके योग्यहैं आप इनके रक्षास्थानहो मैंने उस दुर्बुद्धी प्रारब्धहीन दुर्य्योधन से कहाथा ४० कि जिधर श्रीकृष्णहैं उधर धर्म्म है और जिधर धर्म्म है उधरही विजयहै हे पुत्र तीर्थरूप वासुदेवजी के द्वारा पाण्डवों के साथमें सन्धि और मिलापकर तेरे सन्धि करनेका अच्छा समयहै यह मैंने वारम्वार कहा ४१ उस अज्ञानी निर्बुद्धीने मेरे उस वचनको नहीं किया और सब पृथ्वीभरके मनुष्यों को मरवाकर अन्त को आपभी मारागया ४२ हे देवता मैं तुझ देवताको प्राचीन और ऋषियों में श्रेष्ठ जानताहूं तुमने नरसमेत बदरीआश्रममें बहुत कालतक निवास किया ४३ और बड़े तपस्वी व्यास और नारदजी ने भी मुझसे कहाथा कि यह दोनों नर और नारायण मनुष्यों में प्रकटहुये हैं ४४ हे श्रीकृष्णजी आप मुझको आज्ञा दीजिये मैं अब शरीरको त्यागूंगा आपकी आज्ञा से मैं परमगति को प्राप्तक-

रूंगा ४५ वासुदेवजी बोले कि हे राजा भीष्म मैं तुमको आज्ञा देताहूं कि तुम वसुदेवताओं को प्राप्तकरो हेमहातेजस्वी इसलोकमें तुमने कोईपाप नहीं किये ४६ हे राजऋषि तुम पिताके भक्तहो तुम मानों दूसरे मार्कण्डेय ऋषिहो इसी हेतुसे सेवकके समान नम्रीभूत मृत्यु तेरी आधीनता में वर्त्तमान है ४७ बैशम्पायन बोले कि श्रीकृष्णजी के इन बचनोंको सुनकर गांगेय भीष्मजी ने पांडव और धृतराष्ट्र आदि सब अपने प्रिय इष्टमित्रों से यह बचन कहा ४८ कि हे प्रियलोगो मैं अब प्राणों को त्यागना चाहता हूं तुम सब लोगभी मुझ को आज्ञा देनेके योग्यहो तुम सबको सत्यता में उपाय करना उचितहै क्योंकि सत्यताही सर्वोत्तम पराक्रम है ४९ हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ सदैव सावधानचित्त होकर दयावान् बेद ब्राह्मणों के रक्षक धर्म्म के अभ्यासी सदैव तपमें प्रवृत्त तुम लोगोंको मनोरथों का सिद्धकरना योग्यहै ५० उन महाबुद्धिमान् ने सब भाई बन्धु पुत्र पौत्रादि समेत नाते रिश्तेदारोंसे यह वचन कहके और सबसे प्रीतिपूर्व्वक मिलकर फिर युधिष्ठिर से यह बचन कहा कि हे राजा ब्राह्मण और मुख्य करके ब्रह्मज्ञानी आचार्य्य और ऋत्विज लोगों का तुम को सदैव पूजन करना योग्य है ५१ । ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेभीष्मशिक्षावर्णनेशतोपरिअष्टषष्टितमोऽध्यायः १६८॥

एकसौउनहत्तरका अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि हे शत्रुविजयी राजा जनमेजय तब वह कौरव्य भीष्म पितामह सब कौरवों को इस रीति से कहकर एक मुहूर्त्ततक मौनहुये १ और आत्मा को क्रमपूर्व्वक धारणाओं में धारण किया उससमय उस महात्मा के रोकेहुये प्राण ऊपरकी ओरकोचले २ अर्थात् हे प्रभु तब सब ऋषियोंसमेत उन व्यासादिक महात्माओं के मध्यमें यह आश्चर्य्य प्रकटहुआ ३ अर्थात् उसकाल वह भीष्मजी जिस २ अंगको त्याग करतेथे उसयोगी भीष्मका वह २ अंग शल्य से बिशल्य होताजाता था ४ और सब लोगों के देखतेही देखते वह भीष्मजी क्षणमात्रही में अव्रणहोगये अर्थात् घायलपने से रहितहोगये ५ हेराजा तब व्यासादिक सब मुनियोंसमेत वह सब कौरवलोग जिनके अग्रवर्त्ती वासुदेवजी थे सब आश्चर्य्ययुक्तहुये ६ तब सब अंगोंमें भीष्मजीसे रोकाहुआ आत्मा

ऊपर की ओर मस्तकको फोड़कर चला और स्वर्गको उड़ा उस समय सुमनों की वृष्टिसंयुक्त देवताओं की दुन्दुभियों के बड़े शब्दहुये और सिद्ध वा ब्रह्मर्षि धन्यहैं धन्यहै ऐसा कहकर प्रसन्नहुये ७।८ हे राजा भीष्मजी के मस्तकसे आत्मा बड़ी अग्निकी ज्योति के समान निकलकर आकाश में प्रविष्ट होके क्षण मेंही अन्तर्धान होगया ९ हे श्रेष्ठ तब वह भरतबंशियों के कुल में उत्पन्न राजा भीष्म इस रीतिसे कालधर्म में संयुक्तहुआ १० इसके पीछे महात्मा पाण्डव और विदुरजीने लकड़ी और नानाप्रकारकी अनेक सुगन्धियोंको लेकर उनकी चिताबनाई ११ और युयुत्सुभी उसकर्म में प्रवृत्तहुआ और अन्य सब राजाआदिक उस सब के देखनेवाले हुये युधिष्ठिर और बड़े बुद्धिमान् विदुरजी ने उस कौरव भीष्मजीको १२ पट बस्त्र और सुगन्धित उत्तममालाओंसे आच्छादित करदिया फिर युयुत्सुने उसके उत्तम छत्रको धारणकिया १३ भीमसेन और अर्जुन दोनों ने श्वेतचमर और पंखा धारण किया इसीप्रकार नकुल और सहदेवने पगड़ी और किरीट को पकड़ा १४ कौरवनाथकी सब स्त्रियों ने पंखोंको लेकर कौरव्य भीष्मकी पवनकरी इसकेपीछे इसमहात्माके पितृयज्ञको बड़ी बिधिके अनुसार किया १५ अग्निमें बहुतसा हवनकिया सामग ब्राह्मणोंने सामवेदकी ऋचाओं को गाया इसके पीछे चन्दन की लकड़ी कालीयक और काला अगर आदि सुगन्धित वस्तु और अनेकप्रकारकी सुगन्धियों से १६ भीष्मजीको ढककर अग्नि प्रज्वलितकरके धृतराष्ट्र आदिने चिताको दक्षिणकिया १७ फिर वह कौरवों के बड़ेसाधू सबलोग उन गांगेयजीका संस्कारकरके उसपवित्र ऋषियोंसे सेवित श्रीगङ्गाजीकोगये १८ उनके साथमें व्यास नारद असित श्रीकृष्ण भरतवंशियों की स्त्रियां और चारोंओरसे घिरेहुये पुरवासी लोगथे उन उत्तम क्षत्रियोंने और सब मनुष्योंने महात्मा भीष्मजीकी जलांजलीको बिधिके अनुसारकिया१९।२० इसकेपीछे पुत्रकी जलांजलीकरनेपर देवीगङ्गाजी उसअपने जलसे निकलकर रोतीहुई शोकसे व्याकुलहुई और उसीशोकसे रुदनकरतीहुई गंगाजीने कौरवों से कहा कि हे निष्पाप कौरवलोगो वह भीष्म जैसे चलनेवाला और जिसदशामें युक्तथा उसका वृत्तांत तुम मुझसे समझो २१।२२ वह राजवृत्ति अर्थात् राजचलन बुद्धी और कुलसम्बन्धी वृद्ध कौरवोंका सत्कार करनेवाला पिताका भक्त महाव्रतधारीथा २३ पूर्वसमयमें जो अतुलपराक्रमी महाउग्ररूप परशुरामजीके दिव्य

अस्त्रों से भी पराजय नहीं हुआ वह अब शिखण्डी के हाथसे मारागया २४ हे राजालोगो निश्चयकरके मेराहृदय वज्रके समानहै जो अपने प्यारे पुत्रके अदर्शनसे भी नहीं फटताहै २५ काशीपुरी में स्वयम्बरके मध्य में इकट्ठे होनेवाले क्षत्रिय राजाओं को एकही रथसे विजयकरके उसकी कन्या को हरणकिया २६ जिसके समानका सम्पूर्ण पृथ्वीपरभी कोई पराक्रमी नहीं है उस बीरको शिखंडी के हाथसे मृतक सुनकर भी मेराहृदय नहीं फटताहै २७ कुरुक्षेत्र में युद्धके मध्य जिस महात्माके थोड़ेही उपायसे परशुरामजी पीड़ावान् हुये वह अब शिखण्डी के हाथसे मारागया तब प्रभु श्रीकृष्णजीने इसप्रकार बहुतप्रकारका बिलापकरने वाली महानदी गङ्गाजी को विश्वास कराया २८।२९ हे शुभदर्शन कल्याणी तू विश्वासयुक्तहो किसी प्रकार का शोचमतकरो वह तेरा प्रतापी पुत्र निस्सन्देह महाउत्तम लोककोगया ३० हे शोभायमान यह महातेजस्वी बसुदेवताहै इसने शापदोष से मनुष्य शरीर को पायाथा इसका तुम शोच करने को योग्य नहीं हो ३१ हे देवी यह भीष्म क्षत्रियधर्म्म से युद्धभूमिमें महाघोर युद्धकरके अर्जुन के हाथसे मारागयाहै शिखण्डीके हाथसे नहीं मारागया ३२ इस शस्त्रधारी कौरवोत्तम भीष्मको युद्धमें साक्षात् इन्द्रभी मारने को समर्थ नहीं था ३३ हे सुन्दरमुखी तेरा पुत्र अपनी इच्छानुसार स्वर्ग को गया उसको युद्धमें सब देवतालोग इकट्ठे होकरभी मारने को समर्थ नहींथे ३४ हे उत्तमनदी इसीकारण तुम इसकुरुनन्दन का शोचमतकरो हेदेवि यह तेरापुत्र जोकि स्वर्गको गयाहै वह बसुथा तुम अपने संतापको त्यागो ३५ बैशम्पायन बोले कि हे महाराज श्रीकृष्ण और ब्यासजी से इस रीतिपर समझाईहुई वह श्रेष्ठनदी अपने शोकको त्यागकर अपने जलमें गुप्तहोगई ३६ हे राजा इसके अनन्तर वह श्रीकृष्ण आदिक सब राजालोग उन गंगाजीको नमस्कार और सत्कारकरके उसकी आज्ञालेकर लौट आये ३७ जो मनुष्य भक्तिसे युक्तहोकर इस अनुशासनपर्वको सुनेगा वा पढ़ेगा वह नीरोगता पूर्वक आयुकी वृद्धि ऐश्वर्य और अच्छीरीतिसे पुत्रपौत्रादिसे सम्पन्नहोगा ३८॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यां आनुशासनिकेपर्वणिदानधर्मेभीष्म युधिष्ठिरसंवादेभीष्ममुक्तिर्नामशतोपरिएकोनसप्ततितमोऽध्यायः १४९ ॥

वर्षेपयोनिधियुगांकशशाङ्कसंख्ये चौरासियातिलकगोकुलचन्द्रसूनुः ।
एकांतकांतमनुशासनपर्वणोऽस्य भाषानुवादममृतैकसखंव्यधत्त १

महाभारत सबलसिंहचौहान कृत ११-)॥।

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारतकी कथा ई चौपाई आदि छन्दोंमें है यह पुस्तक ऐसी सरलहै कि कमपढ़ेहुये मनुष्यों भी भलीभांति समझमें आती है इसका आनन्द देखनेही से मालूम होगा॥

इसके भी पर्व अलग २ मिल सक्ते हैं

आदिपर्व	=)	७ सौप्तिक, ऐषिकपर्व	।)।
सभापर्व	=)	८ स्त्रीपर्व	)॥
वनपर्व	-)	९ शान्तिपर्व	-)
विराटपर्व	=)	१० अश्वमेधपर्व	≡)॥
उद्योगपर्व	≡)॥	११ आश्रमवासिक, मुशलपर्व	-)
भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, गदापर्व	।)॥	१२ स्वर्गारोहण	)॥

हाभारत बार्त्तिक भाषानुवाद २०)पु० ॥

ह तिलक बार्त्तिक महाभारत संस्कृतसे हुआहै कुछ भी आशय इसमें कम है श्लोकाङ्कभी इसीलिये दिये हुएहैं देखनेहीसे विदित होगा—इसके पर्व ग २ भी मिल सक्ते हैं॥

आदिपर्व	१=)पु०	१० सौप्तिक, स्त्री, ऐषिक और विशोकपर्व	।=) पु०
सभापर्व	॥) पु०	११ अनुशासनपर्व	१॥) पु०
वनपर्व	२=)पु०	१२ शान्तिपर्व....	३) पु०
विराटपर्व	॥) पु०	१३ अश्वमेधपर्व	॥≡)पु०
उद्योगपर्व....	१॥) पु०	१४ आश्रमवासिक, मुशल, महाप्रस्थान और स्वर्गारोहणपर्व	।≡)पु०
भीष्मपर्व	१) पु०		
द्रोणपर्व	१॥)पु०		
कर्णपर्व	१) पु०		
शल्य, गदापर्व	॥) पु०	१५ हरिवंशपर्व	२) पु०

भगवद्गीता नवलभाष्य ३॥) पु० ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगमपुराण स्मृति
इत्यादि सारभूत परमरहस्य गीताशास्त्र का सर्व्व विद्यानिधान सौशील्य
योदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्ज्जुनको
अधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अ...को
भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता बज्रवत् वेदान्त
योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार
पासक्के तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी
मर्थ्यहै वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्के हैं—और यह प्रत्यक्षही है
जबतक किसीपुस्तक अथवा किसी बस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धि
न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिलै इस कारण सम्पूर्ण भारतनिवा
भगवद्भक्त पादाब्ज रसिकजनों के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्म
धुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्व विद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी
नवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने बहुतसा धन ब्ययकर फ़र्रुखाबाद निव
स्वर्गवासि पंडित उमादत्तजीसे इस मनोरञ्जन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक
श्रीशंकराचार्य्य निर्म्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषामें तिलक
नवलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि
को भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्के हैं ॥

जब छपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओं की स
यह बिचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतर उत्त
उससमय पर होगी कि इस शंकराचार्यकृत भाष्य भाषाके साथ और इस
टीकाकारोंकी टीकाभी जितनीमिलें शामिल कीजावें जिसमें उन टीकाकारों
अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसकारणसे श्रीस्वामी शंकराचार्यजी की शं
का तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी
श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थितहै ॥

द० मनेजर अवध अखबार
लखनऊ मुहल्ला ९